॥ श्री ॥

॥ ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अव जन्मपत्र वनावने केअर्थ ग्रंथके आदमें नमस्कारात्मक मंगल ग्रंथकर्ता कहताहै हम जन्मपत्रकों लिखते हें क्याकर्के आकाशमेंस्थित जो आदिदेव सूर्यनारायण तिनकों प्रणाम कर्के कैसे हें सूर्यनारायण स्वर्ग मर्त्य पाताल में स्थित जो लोक तिनों कर प्रणामकों प्राप्तहे फेर नक्षत्र राशी ग्रह इन केकुलमें प्रधान जोचंद्रमा है तिसकों प्रणाम कर्के ओर पूर्व जन्मके कर्मों काजो वीज तिसकों प्रणाम कर्के जन्मपत्रकों वना वता हों किसवास्ते अज्ञान कर अंधजो मनुष्य तिसके अंध कार दूर करणे वास्ते ॥ १ ॥ ओरकहतेहैं ॥ महात्मा जनोंका गतिस्थान जो हरि-

॥ स्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ नत्वाव्योमासनस्थंत्रिभुवननमितंदेवमाद्यंदिनेशंतारानक्षत्रराशिग्रहकुलतिलकंशर्वरीशंचनत्वा नत्वाकर्मस्वभावं प्रतिपदगहनंप्राकृतंकर्मवीजमज्ञानांधस्यजंतोस्तमपटहरणंलिख्यतेजन्मपत्रम् ॥ १ ॥ अचिंत्यमव्यक्तमनंतमव्ययंविभुंप्रभुंभावितभूतभावनम् त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकंहरिंप्रपन्नोस्मिगतिंमहात्मनाम् ॥ २ ॥ प्रोक्तानिहोरागणितानिपूर्वैर्वशिष्टगर्गात्रिपराशराद्यैः वराहलल्लप्रमुखैश्चतेषुफलक्रमोनैवकृतोहियस्मात् ॥ ३ ॥ सारावलीजातकशास्त्रतोपिहोराप्रदीपादपिजन्मदीपात् आदायसारंयवनादिशास्त्रात्फलक्रमार्थंखलुजन्मपत्र्याः ॥ ४ ॥ अथदैवज्ञलक्षणम् ॥ होराशास्त्रसमुद्रपारगमनेनूनंसमर्थोमहान्पाट्यांख्येगणितेचवीजगणितेयोदर्भगर्भाग्रधीः

नारायण हैं तिनकी शरण कों में प्राप्त होता हों जोहरि चिंतन में नहि आवते प्रकट नाहिं हैं ओर अवनाशी हैं प्रभु हैं ओर जगत्कों उत्पन्न कर्के विचार कों कर रहे हैं ॥ २ ॥ अवइसग्रंथकेवनावनेकाप्रयोजन ॥ कहते हैं वशिष्ट गर्ग अत्रि पराशरसें आद ले कर जो ऋषिहैं ओर वराह लल्लसें आद लेकर जो आचार्य तिनके ग्रंथों में क्रम पूर्वक जन्म पत्र लिखनेका क्रम नाहिं कियाहै ॥ ३ ॥ इस वास्ते सारा वली सें आद लेकर ग्रंथों सें ओरयवना चार्य के शास्त्रसें सार २ लेकर क्रम पूर्वक जन्म पत्रके वनावने की रीती इस ग्रंथ में कहता हों येह प्रथम श्लोक काअनुषंग जानणा ॥ ४ ॥ ॥ अवज्योतिषीकेलक्षण कहते हैं ॥ होराशास्त्रका जो समुद्र तिसके पार तरणे में निश्चय कर समर्थ वाला होवे ओर लीलावती के गणित में ओर वीजगणित मेंकुशाके अग्रकी न्याई सूक्ष्म वुद्धि वालाहो

और सिद्धांतके कहने में चतुर होवे और अनेक भेदों करयुक्त जो भूगोल खगोल तिस में चतुर होवे अयसा जो ज्योतिषीहै सो फला देश शुभा शुभ कहने के योग्य होताहे ॥ ५ ॥ और कहते हैं जैसें घृतके विना श्रेष्ट रस वाला भोजन नाहिं शोभता है और जैसें राजा कर हीन राज शोभा नाहिं देताहे और जैसें श्रेष्ट जनों को सभा वक्ता के विना शोभा नाहिं देतीहै तैसेहिं गोलके जानने विना ज्योतिषी कहा है ॥ ६ ॥ फेर कैसा ज्योतिषी होवे त्रिस्कंध जो होरा सिद्धात संहिता तिसके जानने वाला होवे और देहकर सुंदर होवे और शांत चित्त होवे और श्रौत स्मार्त्त की उपासना में लगा है मन जिसका और दंभ सें रहित होवे और सत्य कहने वाला होवे और प्रसन्न मूर्ति होवे सो दैवज्ञ कहा है॥ ७ ॥ और जो अपने कर्म काड में युक्त और होरा गणित कों जानता है अयसे कों जोराजा पूज

सिद्धातस्फुटवासनाप्रकथनैर्भेदैरनेकैर्युते गोलेस्यात्कुशलःसएवगणकोयोग्यः फलादेशके ॥ ५ ॥ भोज्यंयद्वत्सद्रसंवैविनाज्यंराज्यंयद्वद्राजहीनंनभाति नोभात्येवंसत्सभावक्तृहीनातद्वद्दैवज्ञस्तुगोलानभिज्ञः ॥ ६ ॥ त्रिस्कंधज्ञोदर्शनीयःप्रशांतःश्रौतस्मार्त्तोपासनेनिष्ठचित्तः ॥ निर्दंभोयःसत्यवादीप्रसन्नोदैवज्ञोवैसस्मृतो नेतरश्च ॥ ७ ॥ कृत्स्नांगोपांगकुशलंहोरागणितनैष्ठिकम् ॥ योभिपूजयतेराजासवृद्धिमुपगच्छति ॥ ८ ॥ वनंसमाश्रितायेपिनिर्ममानिःपरिग्रहाः ॥ अपितेपरिपृच्छंतिज्योतिषांगतिकोविदम् ॥ ९ ॥ नासांवत्सरिके देशेवस्तव्यंभूतिमिच्छता चक्षुर्भूतोहियत्रैवपापंतत्रनविद्यते ॥ १० ॥ ग्रंथतश्चार्थतश्चैवकृत्स्नंजानात्यसौद्विजः ॥ अग्रभुक्सभवेच्छ्राद्धेपूजितःपंक्तिपावनः ॥ ११ ॥ म्लेच्छाहियवनास्तेषुसम्यक्शास्त्रमिदंस्थितं ॥ ऋषिवत्तेपिपूज्यंतेकिंपुनर्दैवविद्विजाः ॥ १२ ॥

ता है सोराजा वृद्धि कों प्राप्त होता हे ॥ ८ ॥ और कहते हैं जो मनुष्य गृहसुखोंकों त्यागकर निर्मम और निष्परिग्रह होयकर वनमें वासकर्ते हे निश्चयकर सो मनुष्य वी ग्रह नक्षत्रादि गति कों पूछतेहे ॥ ९ ॥ और कहते हें जिस देशमे समय फलके कहने वाला ज्योतिषी न होवे तिस देशमें ऐश्वर्य की इछा वाले मनुष्यने नाहिं वासकरणे योग्य और जिस देशमे नेत्ररूप ज्योतिषी होवे तहापापनहि प्रकट होताहै ॥ १० ॥ ग्रथो सें अर्थ सें सपूर्ण ता कर्के जो ब्राह्मण ज्योतिष शास्त्रकों जानता है सोब्राह्मण पूजया हूया पंक्तिकों पवित्र कर्ताहे और श्राद्धमें ब्राह्मणोंके प्रथम पूजने योग्य है ॥ ११ ॥ और कहते हें यवनम्लेछ हें निश्चय कर्के परतु तिनमें भलो प्रकार शास्त्र स्थित होनेसें ऋषियोंकी न्याई मानेजाते हें और ब्राह्मण होयकर जो इसशास्त्रकों जानते है तिनकी क्यावात कहनी है ॥ १२ ॥

जैसेंदीपक विना रात्रि है और जैसें सूर्यके विनाआकाश है तैसें हिं ज्योतिषीकेविना राजा है जैसेंमार्गमेंअंध भ्रमता है तिसकी न्याईहै ॥ १३ ॥ जितनावलहजार हाथीका और चारहजार घोडे का नहिंहै तितनावल एक देशकाल के चिंतनकरणेवाले ज्योतिषीका होताहै ॥ १४ ॥ तिसकारणसें राजयोंकी विद्वानों में ज्योतिषी कों मुख्य जानने योग्यहै जिसराजा कों जयकी यशकी कल्याणकेसमूह की भोगोंकी इच्छा होवे तिसने ॥ १५ ॥ औरकहतेहैं जो भली प्रकार होरागणित और संहिताकों जानता होवे सो राजानें पूजने योग्यहै और जयकी इछावाले ने अपना वनायलेणे योग्यहै ॥ १६ ॥ अवज्योतिःशास्त्रकाप्रशंसाकहतेहैं श्रीभागवतमें गर्गाचार्यकेप्रति नंदराजकहते भये यो आपने ज्ञान कहाहैं सो साक्षात् ग्रहनक्षत्रादियोंका स्थानहै और अतींद्रिय मनवाणीके विषयमें नहिंहै जिस्के जाननें करकें पुरुष ग्रहादियोंकों और मरीच्यादियोंकों जानताहै ॥ १७ ॥ और सूर्यारुणकेसंवादमेंकहतेहै काल यो है सो साक्षात् विष्णुहै अनंतहै परमेश्वर कहा है

अप्रदीपायथारात्रिरनादित्यंयथानभः ॥ तथासांवत्सरोराजाभ्रमत्यंधइवाध्वनि ॥ १३ ॥ नतत्सहस्रंकरिणांवाजिनांचचतुर्गुणम् ॥ करोतिदेशकालज्ञोयर्देकोदैवचिंतकः ॥ १४ ॥ तस्माद्राज्ञाभिमतव्योविद्वान्सांवत्सरोग्रणीः ॥ जयंयशःश्रियंभोगान्श्रेयसश्चयमभीप्सिता ॥ १५ ॥ यस्तुसम्यग्विजानातिहोरागणितसंहिताः अभ्यर्च्यःसनरेन्द्रेणस्वीकर्तव्योजयैषिणा ॥ १६ ॥ अथज्योतिःशास्त्रप्रशंसा ॥ श्रीमद्भागवते ॥ ज्योतिषामयनंसाक्षाद्यत्तद्ज्ञानमतींद्रियम् प्रणीतंभवतायेनपुमान्वेदपरावरम् १७॥ सूर्यारुणसंवादे कालोयोभगवान्विष्णुरनंतःपरमेश्वरः तद्वेत्तापूज्यतेसद्भिःपूज्यःकोन्यतमोयतः १८॥ सचलग्नाश्रयःकालस्तस्माल्लग्नंचयद्भवेत् प्रश्नेवाजन्मकालेवातस्माद्ज्ञेयंशुभाशुभम् १९ अप्रत्यक्ष्याणिशास्त्राणिविवादस्तेषुकेवलंप्रत्यक्षंज्योतिषंशास्त्रंचंद्रार्कौयत्रसाक्षिणौ २० मूलसूत्रे यथाशिखामयूराणांनागानामणयोयथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणांज्योतिषंमूर्द्धन्यवास्थितम् २१

तिसकालके जानने वाला यो मनुष्य है सो श्रेष्ट जनोंने पूजनेयोग्यहैं अरलेकर तिसके विना पूजनेयोग्य कोनहै ॥ १८ ॥ सो काल लग्नों का आश्रय है जिसकालसें लग्न सिद्धहोता है प्रश्न में अथवा जन्म काल में जिसलग्नसें शुभाशुभफलका ज्ञान होताहै ॥ १९ ॥ और कहते हैं संपूर्णशास्त्रोंमें फल प्रकट नाहिंहै तिनोंमें केवल विवादसिद्धहै और ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षहै जिसमें चंद्रमासूर्य साक्षीहैं ॥ २० ॥ और मूलसूत्रमें कहते हैं जैसें मोरोंके शिरमें शिखाहै और जैसें सर्पोंके शिरमणीहोतीहै तिसकीन्याई वेदांगशास्त्रोंके ज्योतिष शिरोमणीहै ॥ २१ ॥

औरकहतेहैं ज्योति शास्त्रमे सूर्यचद्रमा का ग्रहण सारहे और गारुडीविद्याके जानने वाल्यों मे विषका भक्षण करणा सारहे और शैवोंमें घटवती नाम करके प्रसिद्ध दीक्षा सारहे और कौलों में शाप वर देना सारहै ॥ २२ ॥ और गर्ग्यकहताहे यो मनुष्य विनाशास्त्रकेजाने ज्योतिषी कहावता है सो पंक्तिके बाहिर नकालने योग्यहे तिसका नाम नक्षत्रसूचक कहाहै ॥ २३ ॥ और कहतेहैं नक्षत्रसूची करके दिखाये व्रतकों जो मनुष्य करतेहैं सो तिस नक्षत्रसूचीके सहित अंधतामिश्र नरककों जाते हैं ॥ २४ ॥ और सिद्धांतशिरोमणीमें कहतेहैं तिस कारणसें ब्राह्मणोंनें ज्योतिःशास्त्र अवश्यमेव पठनेयोग्यहे पवित्रहे परमरहस्यहे और तत्वरूपहे जो मनुष्यज्योतिः शास्त्र कों जानता है सो भली प्रकार धर्म अर्थ काम मोक्ष और यश कों प्राप्त होता है ॥ २५ ॥ अबइसशास्त्रकाप्रयोजनकहतेहैं जो ब्रह्माने मनुष्यके मस्तकमें प्रारब्धकर्म

१ ज्योतिषेग्रहणंसारंगारुडेविषभक्षणम् शैवेघटवतीदीक्षाकौलकेग्रहनिग्रहौ २२ ॥ गर्ग्यः ॥ अविदित्वैवय शास्त्रंदैवज्ञत्वंप्रपद्यते सपंक्तिदूषकःश्राद्धेज्ञेयोनक्षत्र सूचकः ॥ २३ ॥ नक्षत्रसूचकोद्दिष्टमुपवासंकरोतियः सव्रजत्यंधतामिश्रंसार्धं मृक्षविडंविना ॥ २४ ॥सिद्धांतशिरोमणौ तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेवपुण्यंरहस्यं परंसंततत्वम् योज्योतिषंवेत्तिनरःससम्यग्धर्मार्थमोक्षान्लभतेयशश्च ॥ २५ ॥ अथास्यशास्त्रस्यप्रयोजनम् याब्रह्मणाविलिखितानरभालपट्टेप्रारब्धकर्मसदसत्फ लपाकपंक्तिः ॥ होराप्रकाशयतितामिहवर्णपंक्तिंदीपोयथानिशिघटादिकमंधकारे २६ ॥ जनुषःसमयेधृतंनयंत्रंनमयाप्यत्रनिवेशिताचनाडी अपरैरुपदिष्टजन्म कालाज्जनिपत्रीहिविलिख्यतेमयैषा ॥ २७ ॥ प्रथमंआशीर्वादात्मकाःश्लोकाले ख्या ॥ अथाशीर्वादव्याजेनश्रीरामकृष्णजन्मसमयद्वाराआशीर्वादश्लोकौ ॥
१ श्रीरामश्चैत्रमासेदिनदलसमयेपुष्पभेकर्कलग्नेजीवेन्द्वो कर्कराशौमृगभगतकुजेज्ञे वृषेभेषगेर्के मंदजूकेंगनायांतमसिशफरगेभार्गवेयोनवम्यांपंचोच्चस्थैर्वती र्णोवतुसतमियमुत्पत्तिपत्रीचयस्य ॥ २८ ॥

रूप शुभाशुभफलकी पंक्ति लिखीहे तिनों अक्षरोंकी पंक्तिकों होराशास्त्र प्रकाश करताहै जैसे अंधकारयुक्तरात्रीमें घटादिकवस्तूका ज्ञान दीप कर्ताहे ॥ २६ ॥ और जन्मपत्रीके लिखनेवालाकहताहे जन्मकालमे यत्रघटी मेने नहि धरी औरोंकरके कहाजो इष्टकाल तिससेंइहेजन्म पत्री लिखता हो ॥ २७ ॥ अबजन्मपत्रीकेआदमें श्रीरामकृष्णजीकेजन्मकथा पूर्वकआशीवादके दोश्लोकहहेहे श्रीरामचंद्रजी चैत्रमासमे नवमीतिथिमें औरमध्यान्हसमयमें औरपुष्य नक्षत्रनें औरककर्टलग्नमें उत्पन्नहोतेभये और लग्नमें चंद्रमाबृहस्पति दोनो कर्क राशिमें स्थित होनेभये और मकरराशीमें मगल, औरवृषमें बुध, और मेषमे सूर्य और तुलामें शनि और कन्यामें राहु और मीनम शुक्र होताभया और पाचग्रहउच्चमें स्थितहोया यो श्रीरामचद्र अवतारकों धारतेंभये सो रामचंद्र जिनको इहजन्मपत्रीहे तिसकोरक्षाकर ॥ २८ ॥

श्रीकृष्णजी रोहिणी नक्षत्रमें और वृषलग्नमें और वृषकेचद्रमामें और भाद्रपदमासमें कृष्ण पक्षमें और अष्टमीतिथिमें और अर्द्धरात्रकेसमयमें और सिंहकेसूर्यबुधमें और कर्कके बृहस्पति में और मकरकेमंगलमें और तुलाके शुक्रमें और लग्नमें शनि के स्थितहोय। और बुधवारमें और कन्या के राहु में यो हरि अपने अंशों कर आपसाक्षात् पूर्णावतारहोतेभये सो कृष्ण जिस्की इहेजन्मपत्रीहै तिसकोरक्षाकरें ॥ २९ ॥ अबपूर्वजन्मकेकर्मोंकाप्रशंसा कहतेहै ॥ योपूर्वलेजन्मके शुभाशुभ कर्महै तिन कोंनिश्चयकर दैवकहतेहैं सोदैवससाररूपरथका एकचक्रहै और दूसराचक्र प्रयत्नहै जिसकों उद्यमकहतेहै- दोनोचक्रोंकर रथका गमनहोताहै अयस श्रीयाज्ञवल्क्यमुनि अपनि स्मृतिमकहतेहै ॥ ३० ॥ और कहतेहैं पूर्वकर्मकेअनुसारफलसिद्धहोताहै इसमेंदृष्टान्तदेतेहै जैसे इसलोकमें कोई अंधापुरुषहै पैरोंक युक्तभीहै परंतु दूसरेके हाथविनाचल नाहिंसकताहै इसकारणसे चतुरमनुष्य शास्त्रोक्तआचारकोंकर्ताहै जैसेंब्राह्म-

श्रीकृष्णोरोहिणीभेवृषतनुशशिनो श्रावणस्यासितेभूदष्टम्यांमध्यरात्रेहरिग
रविविदोष्कार्किणीज्येमृगारे जूकस्थेभार्गवेचजननगरविजेचान्द्रिवारेंगनास्थेराहौ
यज्जन्मपत्रीतमवतुहरिरंशावतीर्णः स्वयंयः ॥ २९ ॥ अथप्राकृतकर्मप्रशंसा
यत्पूर्वकर्मतदिदंखलुदैवमाहुस्ससाररक्षणरथस्यतदेवचक्रम् यत्नोऽपरंतदुभ
येनगतिस्तुवेद्याश्रीयाज्ञवल्क्यमुनिराहनिजस्मृतौच ॥ ३० ॥ प्राक्कर्मसंचित
फलप्रभवानुरूपोयत्नोपिस यमुनयद्वदिहांधपुंसः स्यादन्यहस्तगतिरङ्घ्रियुजो
पितस्माच्छास्त्रोक्तमाचरणमाचरतीहसुज्ञः ३१ ॥ संहितादीपके नदेशकालव्य
वसायवर्ज्यंभवेत्फलाप्तिः सतिचापिदैवे तथाफलेसत्यपिजातकस्यभवेत्फलाप्ति
स्तिथिभोदयाद्यैः ॥ ३२ ॥ अथकल्पयुगशकसंवत्सरमासादितिथ्यादिलग्नां
शहोरादिभिर्जन्मसमयोलेख्यः जन्मसमयोनाम जन्मनिकालावयवः कालो
नामकितदुच्यते तथाचगार्गिः कालः सृजतिभूतानिकालः संहरतेप्रजाः कालः सुप्ते
पुजागर्तिकालोहिदुरतिक्रमः ॥ ३३ ॥

ण विद्याभ्यासकरें क्षत्री शस्त्रविद्याभ्यासकरें इत्यादि ॥ ३१ ॥ औरसंहितादीपकमेंकहतेहै दैवकेहोयांवी- देशकालउद्यमकेविना फलकोंप्राप्ति नाहिहोतीहै और तैसेंहि जन्मके फलमेंहोय। तिथिनक्षत्रलग्नकेवलसें फलप्राप्तिहोतीहै इसमकहतेहैं कि जिसमनुष्यकों जन्मसंबंधिफलखोटाहै औरयात्राविवाहादिकर्म शुभ- महूर्त्तमेंकर्त्ताहै तिसकोंफलप्राप्ति तिसीतरेंन्याईहै ॥ ३२ ॥ आशीर्वाद लिखनेके उपरंत कल्प युग- संवत्सर शक मास तिथ्यादि लग्नांशहोरादि जन्मसमयकों लिखे जन्मसमय किसकों कहतेहैं- जन्मकालमे क्षणादिकालके अंगहै काल किसका नामहै ॥ सो कहतेहै भगवान्गार्गि ॥ काल- यो है सो प्रजाकों उत्पन्न कर्ताहै और काल हि प्रजाका संहार कर्ताहै और सोए रहेंजो मनुष्यादि- तिनमें कालहि जागताहै सो काल अति सूक्ष्मसेंसूक्ष्महै जानया नहिं जाताहै ॥ ३३ ॥

॥ अवसंज्ञाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमेंप्रथमसूर्यादिग्रहनक्षत्रोंकीउत्पत्तिकहतेहैं जिसकालमेंइहवि श्वचराचरकर्कैयुक्तअंधकारकेसमूहककैंव्याप्तथा उसकालमेंपरमात्मानेंसहितराशिऔरनक्षत्र चनावर्त्ते कैंप्रथमसूर्यंउत्पन्नभयाहे ॥ १ ॥ अवसूर्यसें कालकी उत्पत्तिकहतेहे जिस कालमें सूर्यना रायण प्रकटभये तिससें शुभाशुभ फलके जनानें वालाअहोरात्र नामककै कालहोताभया जि सकोंहैं॥होराकहतेहें सो पूर्वापरवर्णलोपसें अहोरात्र कर्के उत्पन्न हे ॥ २ ॥ अवकाल के अंगोंकाविभागकहतेहैं ॥ मेपराशि शिर वृप मुख मिथुन बाहु कर्क हृदय सिंह उ दर कन्या कटि तुला वस्ति वृश्चिक गुदा धनु पट्ट मकर जानू कुंभ जंघा मीन पाद इहेकालपुरुपके अंगोंमें मेषादि राशियां कहिहैं ॥ ३ ॥ अवमेपादिराशियांक्हतेहैं मेष ॥१ वृप ॥ २ मिथुन ॥ ३ ॥ कर्क ॥ ४ ॥ सिंह ॥ ५ ॥ कन्या ॥ ६ ॥ तुला ॥ ७ ॥ वृश्चिक॥८॥ धन ॥ ९ ॥ मकर ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ मीन ॥ १२ इहे वारांराशि हैं ॥ ४ ॥ अवराशियों

अथसंज्ञाध्यायोव्याख्यायतेतत्रादौग्रहोत्पत्तिः ॥तमस्तोमावृत्तेविश्वेजगदेतच्चरा चरम् राशिग्रहोडुसंघातंसृजन्सूर्योभवत्तदा ॥१॥ अथकालोत्पत्तिः ततःप्रभृति जंतूनांसदसत्फलसूचकः॥होराख्योवर्त्ततेकालोह्यहोरात्रेणलोपतः २ अथका लस्यांगविभागः शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसज्ञानिऊरूजानूजं घेचरणाविितिराशयोजायाः ३ ॥ अथराशिकथनम् मेषवृषमिथुनकर्कटसिंहाः कन्यातुलाथवृश्चिकभम् धनुरथमकर कुंभोमीन इतिराशय.कथिताः ॥ ४ ॥ अथराशिस्वरूपम् सप्तविंशतिभिर्ज्योतिश्चक्रं तिमितवायुगम् तदंकांशोभवेद्रा शिर्नवर्क्षचरणांकितः ५ ॥ अथराशिनक्षत्रविभाग. अश्विनीमघमूलादौमेषार्सिं हहयादयः ॥विषमर्क्षान्निवर्त्ततेपादवृद्धायथोत्तरम् ६ अथराशीनामधिष्ठातृरू पम् ॥ मत्स्यौघटीनृमिथुनसगदंसवीणंचापीनरोश्वजघनोमकरोमृगास्यः ॥

केस्वरूपकहतेहैं अश्विनीसेलेकर्केसत्ताईजोनक्षत्रहैं तिन्हका द्वादशांशएकराशिहोतीहै नक्षत्रोंकेन वपादों कर्के अंकितहे ॥ ५ ॥ अवराशिकेनक्षत्रोंकाविभागकहतेहैं अश्विनी और मघा और मूला नक्षत्रसें लेकर्के चार चार राशियोंकी प्रवृत्ति है और तीसरे तीसरे नक्षत्रकों य थोत्तर पादवृद्धिकर्के निवृत्त होताहै ॥ ६ ॥ अवराशियोंकेअधिष्ठानुरूपकहते हैं मीनरा शि दो मत्स्य जैसे परस्परमुखमें पुछग्रहणकर्के वृत्तक्षेत्रकोन्याई स्थितहोवे और कुंभराशि जै सें घटी पुरुष जलके वास्ते जाताहै तिसकी न्याई और मिथुनराशि स्त्रीपुरुष दोनों मि लेहुये पुरुपके हाथ में गदा स्त्रीके हाथमें वीणा अयसा रूपहै और धनराशि घोडेकी न्याईजया ॥ ४ ॥ जिसकिया और धनुषधारी पुरुषकी न्याई हे और मकरराशि हरणकी न्याई, मुख जिसका अयसा मत्स्यरूपहै

॥ औरसूर्यारुणमेंकहतेहैं ॥ यो इहे तीनलोकका स्वामी कालात्मासूर्यनारायणहै तिसकी इछा करके सपूर्ण कर्म होते हें और ग्रह वी तिसकालात्माकी छायाकी न्याईं हें ॥ ३४ ॥ जो जो स पूर्ण दृश्य वस्तू है सो सो सं पूर्ण काल के अधीन है सो काल क्षणादि है और दृ. ष्टि में आवता है वर्ष मासादि करके यो व्यतीत होता है तिसकालकी कलना ज्योतिःशास्त्र है ॥ ३५ ॥ औ. ग्रहोंको फलकर्तृत्व १ और नहिं फलकर्तृत्व २ इहे स शय दोनो हे और कईक तिनग्रहों कों कहतें हे यो पूर्व जन्म के कर्म हें तिनकों सूचन कर्ते हें ३६ ॥ तैसेंहिंकहतेहैं ॥ जब पूर्वजन्मकों प्रकट कर्ते हैं ग्रह तब इन में भक्ति कैसें करते हे. पूर्व कर्मोंका जो भोग तिस के दूर करणे वास्ते इस जन्म के भोगों कों कहते हैं और कोईं मुनि श्रयसें कहते हैं जगदीश जोविष्णु तिनकी जो भक्तिकरणी सो पापोंकों पूर्व जन्म के दोषोंकों दूरकर्ती है और कोईं श्रयसें

सूर्यारुणे कालात्माकालरूपोयंयोयंत्रिजगदीश्वरःतस्येच्छानुचरंकर्मच्छायाप्रकृतिवत्खगाः॥ ३४ ॥ कालायत्तमिदंसर्वंतत्कालोदृष्टिगोचरः तत्कालकलनाच्छास्त्रंवक्ष्येज्योतिषमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ ग्रहाणांफलकर्तृत्वमस्तिनोवेतिसंशयः केचिद्वदंतितेपांतुकर्मसूचकतामिति ॥ ३६ ॥ तथाच प्राक्कर्मसूचकखगाःकथमेषुभाक्तिःप्राक्कर्मभोगशमनायहिभोगमूचुः केचित्तुपादुरितहज्जगदीशभक्तिःकिन्नोग्रहाभिगतएवसएवविष्णुः ३७ ॥ तथाचशार्ङ्गधरः देवताग्रहरूपेणमनुष्याणांशुभाशुभम् फलंप्रागर्जितंयत्नतद्ददातिस्वकीयकम् ॥ ३८ ॥ सूर्यारुणे यात्रासमयेव्दे ग्रहणेचैवाथखेटवैषम्ये गोभूहिरण्यवस्त्रैःसंपूज्यःश्रद्धयात्रदैवज्ञः ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्राजाधिराजमहाराजरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेशास्त्रोपनयाध्यायःप्रथमः १

कल्पना कर्ते हैं जोविष्णु सूर्यादि ग्रहों में स्थित नहिं है क्या इसवास्ते ग्रह पूजने यो ग्यहै ॥ ३७ ॥ ॥ तैसेंशार्ङ्गधरकहताहै ॥ जिस जिस देवताकी मनुष्य भक्ति कर्ता है सो सो देवता ग्रहरूप होय कर मनुष्याकों शुभाशुभफलकों देता है जो पूर्व जन्म में कर्म किये हैं सो सो फल जन्म समय में लग्नादिस्थानों में स्थित होय कर ग्रह अपने फल को देता है ३८ ॥ औरसूर्यारुणमें कहते हें यात्राके समयमें और जन्मदिनमें और विवाहादि शुभदिनोंमें और ग्रहण सिद्धकरणे में और जव खोटे स्थान में ग्रह आवे और जव खोटिदशा आवे तिस समय में गौओं करके भूमि.करके स्वर्ण करके वस्त्रों करके वडीश्रद्धा कर देवज्ञ यो ज्योतिसी तिसका पूजनकरे ॥ ३९ ॥ ॥ इतिइहेजातकखंडमेंशास्त्रकोविचारकाप्रथम अध्यायभयाहै ॥ १

॥ अवसंज्ञाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमेंप्रथमसूर्यादिग्रहनक्षत्रोंकीउत्पत्तिकहतेहैं, जिसकालमेंइहवि श्वचराचरकर्केयुक्तअंधकारकेसमूहककेंव्याप्ततथा उसकालमेंपरमात्मानेंसहितराशिऔरनक्षत्र,चनाकर्केप्रथमसूर्यउत्पन्नभयाहै ॥ १ ॥ अवसूर्यसें कालकी उत्पत्तिकहतेहैं जिस कालमें सूर्यनारायण प्रकटभये तिससें शुभाशुभ फलके जनानें वालाअहोरात्र नामककें कालहोताभया जिसकोंहिं॥होराकहतेहैं सो पूर्वापरवर्णलोपसें अहोरात्र करकें उत्पन्न है ॥ २ ॥ अवकालके अंगोंकाविभागकहतेहैं ॥ मेपराशि शिर वृप मुख मिथुन बाहु कर्क हृदय, सिंह उदर कन्या कटि तुला वस्ति वृश्चिक गुदा धनु पद्द मकर जानू कुंभ जंघा मीन पाद इहेकालपुरुपके अंगोंमें मेपादि राशियां कहिहैं ॥ ३ ॥ अवमेपादिराशियांकहतेहैं मेष ॥१ वृप ॥ २ मिथुन ॥ ३ ॥ कर्क ॥ ४ ॥ सिंह ॥ ५ ॥ कन्या ॥ ६ ॥ तुला ॥ ७ ॥ वृश्चिक ॥ ८ ॥ धन ॥ ९ ॥ मकर ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ मीन ॥ १२ इहे बाराराशि हैं ॥ ४ ॥ अवराशियों

अथसंज्ञाध्यायोव्याख्यायतेतत्रख्याद्युत्पत्तिः ॥तमस्तोमावृत्तेविश्वेजगदेतच्चराचरम् राशिग्रहोडुसंघातंसृजन्सूर्योभवत्तदा ॥ १ ॥ अथकालोत्पत्तिः ततःप्रभृति जंतूनांसदसत्फलसूचकः॥होराख्योवर्त्ततेकालोह्यहोरात्रेणलोपतः २ अथकालस्यांगविभागः शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसंज्ञानिऊरूजानूजंघेचरणाविितिराशयोजाद्याः ३ ॥ अथराशिकथनम् मेषवृषमिथुनकर्कटसिंहाः कन्यातुलाथवृश्चिकभम् धनुरथमकरःकुंभोमीन इतिराशयःकथिताः ॥ ४ ॥ अथराशिस्वरूपम् सप्तविंशतिभिर्ज्योतिश्चक्रं तिमितवायुगम् तदंकोशोभवेद्राशिर्नवर्क्षचरणांकितः ५ ॥ अथराशिनक्षत्रविभागः अश्विनीमघमूलादौमेषार्सिंहहयादयः ॥विषमर्क्षान्निवर्त्तंतेपादवृद्धायथोत्तरम् ६ अथराशीनामधिष्ठातृरूपम् ॥ मत्स्यौघटीनृमिथुनसगदंसवीणंचापीनरोश्वजघनोमकरोमृगास्यः ॥

केस्वरूपकहतेहैं अश्विनीसेंलेकर्केसताईजोनक्षत्रहैं तिन्हका द्वादशांशएकराशिहोताहै नक्षत्रोंकेनवपादों कर्के अंकितहै ॥ ५ ॥ अवराशिकेनक्षत्रोंकाविभागकहतेहैं अश्विनी और मघा और मूला नक्षत्रसें लेकर्के चार चार राशियोंकी प्रवृत्ति है और तीसरे तीसरे नक्षत्रकों यथोत्तर पादवृद्धिकर्के निवृत्त होताहै ॥ ६ ॥ अवराशियोंकेअधिष्ठातृरूपकहते हैं मीनराशि दो मत्स्य जैसें परस्परमुखमें पुछग्रहणकर्के वृत्तक्षेत्रकीन्याईं स्थितहोवे और कुंभराशि जैसें घटी पुरुप जलके वास्ते जाताहै तिसकी न्याईं और मिथुनराशि स्त्रीपुरुप दोनों मिलेहुये पुरुषके हाथ में गदा स्त्रीके हाथमें वीणा असा रूपहै और धनराशि घोडेकी न्याईंजंघा ॥ ४ ॥ जिसकियां और धनुपधारी पुरुपकी न्याईं है और मकरराशि हरणकी न्याईं मुख जिसका असा मत्स्यरूपहै

और तुलराशि जैसें तुलाकों हाथलियें पुरुष होताहे और कन्याराशि जैसें किस्तीमें स्थितकन्या एकहाथनें धान्यमंजरी और एकहाथमेंदीपक वलता लिया होवे तिसकी न्यांई है और मेष भिड्डुकी न्यांई और वृष बैलकी न्यांई और कर्ककमठकी न्यांई जोजलमें रहताहै वाउली खूहे में और सिंह शेरकी न्यांई और वृश्चिक विच्छुकी न्यांई इहे संपूर्ण आकाशमें विचरतीहैं ७ ॥ अबराशियोंकीद्विपदचतुष्पदादिसंज्ञाऔर मेषादिराशियांकेस्थानकहतेहैं मिथनऔर तुला औरकन्या औरधनराशिका पूर्वभाग द्विपद राशिहैं और मकरकापूर्वार्द्ध और धनका उत्तरार्द्ध और वृष और मेष और सिंह इहे चतुष्पद राशिहैं ॥ ८ ॥ और वृश्चिकराशि मुनियोंने सरीसृपसंज्ञा कहिहै ॥ ९ ॥ रात्रिमें मिथुन तुला कन्या धन कुंभ राशिया ग्रामचारीहैं और वृष और मेष और मकर का पूर्वार्ध और सिंह और वृष और मेष राशिवनचारीहै ॥ १० ॥ औरकर्कटऔरमीनऔरमकरका पश्चिमार्द्धऔरशिवकेमतमेंकुंभइहेजलचरराशिहैं इहेराशियोंके स्वरूप मार्कंडेयादि योंऋपि चिर-

तौलीससस्यदहनाप्लवगाचकन्याशेपास्स्वनामसदृशाःखचराश्चसर्वे ॥ ७ ॥ अथराशीनांद्विपदचतुष्पदादि तथामेषादीनांस्थानकथनम् ॥ मिथुनतुलाधर कन्याद्विपदाख्याश्चापपूर्वभागश्च मृगधनुराद्यांत्यर्धंवृषाजसिंहाश्चतुश्चरणाः ८ वृश्चिकराशिर्मुनिभिस्सरीसृपत्वेननिर्दिष्टः ॥ ९ ॥ ग्राम्यामिथुनतुलास्त्रीचापा लिघटानिशासुवृषमेषौ मकरादिमार्द्धसिंहौवन्यौदिवसेजवृषभौच ॥ १० ॥ जलजौकर्कटमीनौमकरांत्यर्द्धंचशिवमतेकुंभः राशिस्वरूपमेतन्मार्कंडेयादिभिः कथितम् ११ ॥ अथमेषादीनांवर्णकथनम् अरुणसितहरितपाटलपांडुविचित्राःसितेतरापिशंगौ पिंगलकर्बुरबभ्रुकमलिनारुचयोयथासंख्यम् १२ ॥ अथराशीनां क्रूरसौम्यादिविवेकः क्रूरोथसौम्यःपुरुषोंगनाचओजोथयुग्मंविषमःसमश्च चर स्थिरद्व्यात्मकनामधेयामेषादयोमीक्रमशःप्रदिष्टाः १३ अथसामान्यतोराशिसंज्ञा राशिनामानिचक्षेत्रंभमृक्षंगृहनामच मेषादीनांचपर्यायैर्लोकादेवाविचिंतयेत् ॥ १४

जीवी तिन्होंनें कहेहैं ॥ ११ ॥ ॥ अबमेषादिराशियोंकेवर्णकहते है ॥ मेषराशि रक्तवर्ण वृष श्वेत मिथुन सब्ज कर्क गुलाबीसिंहपाडुवर्ण श्वेतपीत मिलाहुया होता हैऔर कन्या विचित्र वर्ण और तुला कृष्णवर्ण और वृश्चिक पिशंगवर्ण और धन पिंगल वर्ण और मकरकर्बुरवर्ण और कुंभ बभ्रुक नकुलवर्णकी न्यांई है और मीनराशिमलिन वर्ण है इहे मेषादिराशियों के वर्ण कहे हैं ॥ १५ ॥ अब मेषादिराशियोंका क्रूर सौम्यादिविचारकहते हैं मेष क्रूर वृष सौम्य इत्यादि और मेष पुरुष वृषस्त्री इत्यादि और मेष ओजवृषयुग्म इत्यादि और मेष विषम और वृष सम इत्यादि और मेष चर वृष स्थिर मिथुन द्विस्वभावइत्यादि इहे मेषादिराशियां क्रमसें कहिहैं ॥ १३ ॥ अब सामान्यता सेंराशियोंकीसंज्ञाकहते हैं राशियोंके नाम क्षेत्र और भ ऋक्ष और गृह और मेषादिराशियोंके पर्यायनाम और ग्रथोंसें चिंतन करे ॥ १४ ॥

अवराशियोंकी विशेषसंज्ञा कहते हैं ॥ क्रिय मेष और तावुरि वृष और जितुम मिथुन और कुलीरा कर्कट और लेय सिंह और पाथोन कन्या और जूक तुला और कौर्प्य वृश्चक और तौक्षिक धन और आकोकेरो मकर और हृद्रोग कुंभ और अंत्यभ मीन इहे मेषादि द्वादशराशियोंकी विशेष संज्ञा कहि है १५ अववेशिस्थानादि संज्ञा कहते हैं सूर्यकी राशिसें दूसरी राशिकी वेशि संज्ञा है और स्वामीकर्के द्वयो राशिहै तिसकीध्रुवसंज्ञा कहि है और राशियोंके उदयकों लग्न कहते है और राशिके अर्धभागकों और लग्नकों होरापद कर्के कहते हैं १६ अव पुण्यादिसंज्ञाकहतेहैं नवमभावसेंयो तीन राशिहै ९ १० ११ तिसकी पुण्यसंज्ञाहै और पुष्कलसंज्ञा और निधानसंज्ञा कहि है तिसका स्वामी योगकर्के विशेष फलकों देताहै १७ अवराशियोंकेस्वामीकहतेहैं मेषका स्वामी भोम वृषका शुक्र मिथुनका वुध कर्कका चद्रमा सिंहका सूर्य कन्याका वुध तुलाका शुक्र वृश्चिककाभौम धनका गुरु

अथराशिविशेषसंज्ञा क्रिय १ तावुरि ॥ २ ॥ जितुम ३ कुलीर ॥ ४ ॥ लेय ५ पाथोन ६ जूक ७ कौर्प्याख्याः ८ तौक्षिक ९ आकोकेरो १० ॥ हृद्रोग ११ ॥ अांत्यभं १२ चेत्थम् ॥ १५ ॥ अथवेशिस्थानादिकथनम् ॥ वेशिः सूर्याद्द्वितीयर्क्षेस्वामिद्वक्संज्ञितःध्रुवः राशीनामुदयोलग्नंहोराराश्यर्द्धलग्नयोः १६ अथपुण्यादिसंज्ञा ॥ पुण्योभवेत्पुष्कलनामधेयस्ततोभवेत्तत्रनिधानसंज्ञः ॥ तस्याधिपोयोगकृतप्रयत्नस्सएवजन्मफलमाददाति १७ ॥ अथराश्याधिपकथनम् ॥ कुजशुक्रवुधेंद्वर्कसौम्यशुक्रावनीभुवाम् ॥ जीवार्किभानुजेज्यानांक्षेत्राणि स्युरजादयः ॥ १८ ॥ अथोच्चनीचकथनम् ॥ सूर्यागुच्चान्क्रियवृषमृगस्त्रीकुलीरांत्यजूके ॥ दिग्वन्हींद्रद्वयातिथिशरान्सप्तविंशांश्चविंशान् ॥ अंशानेतान्वदति यवनश्चातितुंगान्सुतुंगान् ॥ तानेवांशान्मदनभवनेष्वाहनीचान्सुनीचान् ॥ १९ ॥ अथमूलत्रिकोणकथनम् सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुंभधराः सूर्यादीनांमूलत्रिकोणभवनान्यनुक्रमशः ॥ २० ॥

मकरका और कुंभका शनि : मीनका गुरुः इहे क्रमसें मेषादिराशियोंके स्वामी कहे हैं ॥ १८ ॥ ॥ अवग्रहोंकीउच्चनीचराशिकहते हैं ॥ सूर्यादिग्रहोंके उच्चस्थान क्रमसें कहे हैं मेषमें सूर्य और वृषमें चंद्रमा और मकरमें मंगल और कन्यामें वुध और कर्कमें वृहस्पति और मीनमें शुक्र और तुलामें शनि उच्च होता है और पूर्वोक्तराशियोंमें यथाक्रमकर्के दश ॥ १० ॥ तीन ॥ ३ ॥ अठाई ॥ २८ ॥ पंद्रा ॥ १५ ॥ पांच ॥ ५ ॥ सताई ॥ २७ ॥ वीस ॥ २० ॥ अंशोंपर्यंत परमोच्चमें होते हे और उच्चराशिसें सप्तमस्थानमें सूर्यादिग्रहनीचहोते हैं और पूर्वोक्तअंशोंमे परमनीच होते हैं १९ ॥ अव ग्रहोंकियां मूलत्रिकोणराशियां कहतेहैं ॥ सूर्यकी सिंहराशि और चंद्रमाकी वृष और मंगलकी मेष और वुधकी कन्या और गुरुकी धन और शुक्रकी तुला औरशनिकी कुंभ इहे यथाक्रमसेंसूर्यादिग्रहोंकेमूलत्रिकोण भवनहैं ॥ २० ॥

अब स्वक्षेत्रादिभ्रम दूरकरणे वास्ते मूलत्रिकोणके अंशोंको व्यवस्था कहतेहैं ॥ सूर्य सिंहके वीस अंशो कर्के मूलत्रिकोणमें स्थितहोताहे और उपरंत स्वक्षेत्री कहाहै औरवृषके तीन अंशसें उपरंत और तेरांअंश पर्यंत मूलत्रिकोणमें चंद्रमा होताहे और मंगल मेषके बारा अंश मूलत्रिकोण और उपरंत स्वक्षेत्री होताहै और बुध कन्याके पंद्रां अंशकेउपरंत और पंजी अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें होताहे उपरंत स्वक्षेत्री होताहै और गुरु धनके दश अंश मूलत्रिकोणमें उपरंत स्वक्षेत्रीहोताहै औरशुक्र मीनके पंद्रा अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें उपरंत उच्चहोताहै और शनि कुंभके वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें उपरंत स्वक्षेत्री होताहै ॥ २१ ॥ अवनवांशकहतेहैं ॥ नक्षत्रके पादका एक नवांश कहाहे सो नवांश चरराशियोंमें अपनी राशिसें लेकर्के नवराशि पर्यंत होताहै और स्थिर द्विस्वभाव राशियोंमें नवम और पंचम स्थानमें जो चरराशिहे तिससें लेकर्के नवांशहोताहे अर्थात्संपूर्ण राशियोंमें चरराशिसें लेकर्के नवांश कहाहे और अपनी राशिके न

अथ मूलत्रिकोणांशव्यवस्था ॥ रविभौमजीवभार्गवशनैश्चराणांत्रिकोणभागाःस्युः नखरविदिक्तिथिनखभागाइंदोर्दिग्भांशकाःस्वोच्चात् २१ ॥ अथ नवांशकथनम् चरणांशत्रिकोणानांतच्चराद्यानवांशकाः राशीनांस्वनवांशोयःसवर्गोत्तमसंज्ञिकः ॥ २२ ॥ अथहोराद्रेष्काणद्वादशांशव्यवस्था ॥ होरेविषमेर्केंद्वोः समराशौचंद्रतीक्ष्णांश्वोः स्वगृहाद्वादशभागाद्रेष्काणाःप्रथमपंचनवपानाम् । २३ । अथजलदहनमिश्रद्रेष्काणव्यवस्था ॥ सदसद्ग्रहद्रेष्काणाजलदहनाख्याः प्रकीर्तिताःक्रमशः पापयुता सलिलाख्यामिश्रादहनाश्चसौम्ययुताः॥ २४ ॥ अथसौम्यरूपद्रेष्काणव्यवस्थाः ॥ नृयुग्ममीनयोराद्यौमध्येकर्कटचापयोः कन्यांतःसौम्यरूपाख्याःद्रेष्काणाःपंचकीर्तिताः २५ ॥ अथ फलपुष्पयुतरत्नभांडान्वितद्रेष्काणव्यवस्था ॥ द्रेष्काणःकर्कटाद्यस्तु फलपुष्पयुतःस्मृतः रत्नभांडान्वितौज्ञेयौ धनुर्मध्यतुलादिमौ ॥ २६ ॥

वांशको वर्गोत्तमकहतेहैं ॥ २२ ॥ अबहोरा और द्रेष्काण और द्वादशांश कहतेहैं ॥ विषम राशियोंमें प्रथम ॥ १५ ॥ अंश सूर्यकी होरा उपरंत चद्रमा की होतीहै और समराशियोंमें प्रथम १५ अंश चद्रमा की उपरंत सूर्यकी होरा होतीहै और द्वादशांश अपनी राशिसें ढाई ॥ २ ॥ अंश प्रमाण कर्के होताहै और द्रेष्काण प्रथम और पंचम और नवम राशिके स्वामियों के दश अंश होतेहै २३ अब जलदहनमिश्रसंज्ञक द्रेष्काण कहतेहैं ॥ शुभग्रहोंके द्रेष्काण जलसंज्ञक होतेहैं और पापग्रहोंके द्रेष्काण दहनसंज्ञक होतेहैं और पापग्रहोकर्के युक्त जलद्रेष्काण और शुभग्रहों कर्के युक्त दहनद्रेष्काणमिश्रसंज्ञक होतेहैं २४ अब सौम्यरूपद्रेष्काण कहतेहै मिथुन और मीन राशिके प्रथम द्रेष्काण और कर्क और धनराशिके मध्यद्रेष्काण और कन्या राशिका अंत्यद्रेष्काण इहे पांच सौम्यरूपद्रेष्काण कहेहैं २५ अब फल पुष्पयुत और रत्नभांडयुतद्रेष्काण कहतेहैं कर्कट राशिका पूर्व द्रेष्काण फलपुष्पयुक्तसंज्ञक होताहै और तुलाका पूर्वद्रेष्काण और धनराशिकामध्यद्रेष्काण दोनों रत्नभांडयुक्त कहेहैं

अवरौद्रसंज्ञक द्रेष्काणकहतेहै मेषराशिके और मकरराशिके और वृश्चिकराशिके मध्यद्रेष्काणऔर अंत्यके द्रेष्काण और कुंभराशिके तीनहि द्रेष्काण औरमिथुन तुला राशिके अंत्यके द्रेष्काणओरमीनराशिके मध्यका द्रेष्काण और सिंहराशिका पूर्व औरमध्यके द्रेष्काण इहे सोला द्रेष्काण रौद्रसंज्ञककहेहैं ॥ २७ अव उद्यतायुध संज्ञक द्रेष्काण कहतेहैं कन्या ॥ और मिथुन और मेष और मकर औरकुंभ राशियोंकेतीनहि द्रेष्काण और धन राशिका पूर्व और अंत्यका द्रेष्काण औरतुलाराशिका अंत्यका द्रेष्काण और मध्यका द्रेष्कण और सिंहराशिका अंत्यका द्रेष्काण इहे वीस द्रेष्काणकी उद्यतायुधसंज्ञा कहि है ॥ २८ ॥ अवसर्पनिगडसंज्ञकद्रेष्काणकहतेहै मीन और कर्क राशिके अंत्यके द्रेष्काण और वृश्चिक राशिके प्रथम और मध्य द्रेष्काण इहे चार द्रेष्काण सर्पनिगडसंज्ञक कहेहैं २९ ॥ अव

॥ अथ त्रिंशांशचक्रम् ॥

ग्रहाः	शु	बु	गु	श	मं
विषमराशौ	५	७	८	५	५
समराशौ	५	५	८	७	५

अथ रौद्रद्रेष्काणव्यवस्था रौद्रामेषमृगालीनांमध्यांताःकुंभजास्त्रयः नृयुक्तुलान्तिमौमीनमध्यःसिंहादिमध्यमौ ॥२७॥ अथोद्यतायुधद्रेष्काणव्यवस्था उद्यतास्त्रीनृयुङ्मेष मृगकुंभभवास्त्रयः चापाद्यंतौतुलांत्यश्चमध्यौसिंहांत्यसंभवौ २८ ॥ अथसर्पनिगडद्रेष्काणव्यवस्था मीनकर्कटयोरंत्यौ वृश्चिकस्यादिमध्यमौ सर्पाश्चत्वारएवैतेद्रेष्काणानिगडाश्चते २९ अथ व्याडद्रेष्काणव्यवस्था व्याडाःकुंभालिमध्याद्याःकर्किमीनांत्यसंभवौ सिंहाद्यंतौमृगाद्यश्चतुलामध्यांतसंभवौ ३० अथपाशधरपक्षिद्रेष्काणव्यवस्था वृषाद्योमकराद्यंतौ द्रेष्काणाःपाशधारिणः तुलामध्यांतसिंहाद्यंकुंभाद्याःपक्षिणःस्मृताः ३१ ॥ अथत्रिंशांशविवेकः कुजयमजीवज्ञसिताःपंचेंद्रियवसुमुनींद्रियांशानाम् विषमेषुसमेषूत्क्रमतास्त्रिंशांशकाःकल्प्या. ॥ ३२ ॥

व्यालद्रेष्काण कहतेहैं ॥ कुंभ और वृश्चिक राशिके पूर्व और मध्य द्रेष्काण और कर्क और मीन राशिके अंत्यके द्रेष्काण और सिंह राशिके आद्य और अंत्यके द्रेष्काण और मकर राशिका पूर्व द्रेष्काण और तुलाराशिके मध्य और अंत्यके द्रेष्काण इहे एकादश द्रेष्काण व्याडसंज्ञक कहेहैं ॥ ३० ॥ ॥ अव पाशधरपक्षिसंज्ञकद्रेष्काणकहतेहैं वृषका पूर्व द्रेष्काण और मकरके आद्यंत्यके पाशधरक हेहै और तुलाके मध्य और अंत्यके द्रेष्काण और सिंहके आदका द्रेष्काण और कुंभका पूर्वद्रेष्काण इहे पक्षिसंज्ञक कहेहै ॥ ॥ अवत्रिंशांश कहतेहैं विषम राशियोंमे क्रमसे पाच अंश भौमके और आगे पांच शनिके आगे आठ गुरुके आगे सात बुधके आगे पाच शुक्रके होतेहैं और समराशियोंमें उलटे क्रमसे अंशहोतेहै सो चक्रमेंस्पष्टहैं ॥ ३२ ॥

अब सप्तांश कहतेहैं विषमराशियोंमेंराशिके स्वामीसें और समराशिमें वर्त्तमानलग्नराशिसें सप्तमराशि के स्वामी सें सप्तांशहोताहै जैसें मेषराशिमें मेषसें लेकर्के तुलापर्यंत राशिहोतीहै और वृषलग्नमें वृश्चिक सें लेकर्के वृषपर्यंत होतीहै सप्तांशस्वरूपम् ४ । १७ । ८ इतिसप्तवर्गः अथदशमांशषोडशांश कह तेहैं दशमांश विषमराशियोंमें अपनीराशीके स्वामिसें चलताहै और समराशियोंमें अपनेसेंनवमराशिसें चलताहै और षोडशांश विषमराशियोंमें अपनी राशिसें लेकर्के बारा राशियोंके अगे ब्रह्माविष्णुशिवसूर्य

॥ अथ सप्तांशविवेकः ॥ सप्तांशपास्त्वोजगृहेतदीशाद्युग्मेगृहेसप्तराशिपात्तु ॥ इतिसप्तवर्गः ॥ अथ दशमांशषोडशांशयोर्विवेकः दशांशकानामधिपा स्तदीशादोजेसमेतन्नवमेश्वाराद्याः ओजेकलानामधिपास्तदीशाच्चतुर्मखो विष्णुहरौदिनेशः युग्मेक्रमाद्व्यत्ययमेवराशाविति ॥ ३४ ॥ अथ षष्ट्यंशवि वेकः ॥ षष्ट्यंशकानामधिपास्त्वयुग्मे घोरांशको राक्षस देवभागो कुवेर रक्षोगण किन्नरांशाः ॥ ३५ ॥ भ्रष्टः कुलघ्नो गरला ग्निसंज्ञा वाऽऽपांशकः प्रेतपुरीपभागः अपांपति देवगणेशभागः कालाऽहिभागा वमृतांश चंद्रौ ३६ मृदंशकः कोमल पद्मभागो लक्ष्मीश वागीश दिगंबरांशाः देवार्द्र भागौ कलिनाशभागः क्षितीश्वरांशः कमलाकरांशः ॥ ३७ ॥ क्रमेणमंदात्मजमृत्यु काल दवाग्नि घोराऽधम कंटकाश्च सुधामृतांशः परिपूर्ण चंद्रविप प्रदग्धौ कुलनाश मुख्यौ ॥ ३८ ॥ वंशक्षयो त्पातकरालरूपाः सौम्य श्चमृदंश सुशीतलांशो दंष्ट्राकरालें दुमुख प्रवीण कालाग्नि दण्डा युधानिर्मलांशाः ३९

चार देवताकेअंश होतेहैं और समराशियोंमें ब्रह्मासें लेकर अपनी राशिपर्यंत विलोमकर्के होतेहैं ३४ षोडशांशस्वरूपम् ॥ १ । ५ । ३० अब एक राशिमें साठ अंशोंके स्वामी कहतेहैं तिसका स्वरू प ॥ ० । ३० । ०० ॥ त्रिंशत्कलात्मक साठ अंशोंकेस्वामी घोरांशसेंलेकर्के विषमराशियोंमें पाठक्रमसें जानने योग्यहैं और समराशियोंमें उलटे क्रमसें इंदु रेखादि घोरांश पर्यंत जानने योग्यहैं

॥ अवषष्ट्यशकेफलका विचार कहतेहैं ॥ साठ ॥ ६० ॥ अशोंके स्वामी यो है तिन्हमें छवी ॥ २६ ॥ क्रूर हैं उौर एक ॥ १ ॥ मध्यम है उौर तेतरी ॥ ३३ ॥ देवांश शुभ है तिन्हमें वक्ष्यमाण षड्विधवलकर्के युक्त वी संपूर्ण शुभाशुभ ग्रह स्थित होवें उौर अपने उच्चादि स्थानों में वी स्थित होवें तववी छवी ॥ २६ ॥ कहे यो घोराद्यादि क्रूरांश तिन्हमें स्थित होनेसें अशुभ फल हि देतेहैं इसमें इहे अभिप्राय कहाहे उच्चादिस्थानोंमें गतशुभग्रहोंका अत्यंत शुभफलकी प्राप्ति नाहिं होतीहे क्रूर षष्ट्यंशमें स्थितहोने कर्के उौर क्रूरग्रहोंका योस्वोच्चादिस्थानों में स्थितहोनेका यत्किंचित् अशुभ नाहिं होताहे उौर इसीप्रकार कर्के तेत्री ॥ ३३ ॥ यो देवभग है तिन्हमें स्थित होनेसें क्रूरग्रहोंके शुभफलकी हानि होतीहे उौर देवभागोंमें शुभग्रहस्थितहोवें तव अत्यंत शुभफ-लकों देतेहैं तिसकर्के दशवर्गसिद्धिमें षष्ट्यंशकों मुख्यता प्रतिपादन करीहे ४० ॥ उौर कहते हैं क्रूर षष्ट्यशमें संपूर्ण ग्रह जव वलकर्केवी युक्तहोवें उौर अपने उच्चराशियोंमें उौर मित्रक्षेत्रमें उौर मूल-

५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

शुभा ऽ शुभांशावतिशीतलांशः सुधापयोधिभ्रमणेंदुरेखाः ज्ञेयाः क्रमाद्व्य त्ययमेवयुग्मे शुभाश्रितांशोयदिशोभनाप्तिः ४० क्रूरषष्ट्यंशगाः सर्वे नाश्रयं तिखचारिणः यदिपूर्णवलैर्युक्ताः स्वोच्चमित्रत्रिकोणगाः ४१ अथोत्तमांशादि भेदाः मूलत्रिकोणकोणोच्चस्वक्षर्केंद्रोत्तमांशकाः सप्तवर्गोद्भवाश्चान्येस्वाधिमि त्रांशकान्विताः ४२ वर्गास्तुयेदशप्रोक्ताः पूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः भवंतिवर्गसंयो गे पारिजातादिसंज्ञकाः ४३ दुः स्थारिनीचमूढस्थाग्रहावलविवर्जिताः मरणा वस्थगाश्चेत्तुपारिजातादिनाशकाः ४४ उत्तमंतुत्रिवर्गैक्यंचतुर्वर्गेतुगोपुरम् वर्गपं चकसंयोगेसिंहासनमिहोच्यते ४५ वर्गद्वयंपारिजातंषण्णांपारावतांशकम् सप्त मेदेवलोकस्यादष्टमंचामरंभवेत् ४६ ऐरावतंतुनवमंफलंनामानुसारतः

त्रिकोणमें वी स्थितहोवें तव शुभफल नाहिंकर्ते हे उौर जिस भावमें युक्तदृष्टहोवें तिसका नाशकर्ते हैं ४१ ॥ अव उत्तमांशादि भेद कहते हैं यो ग्रह सप्तवर्गमें मूलत्रिकोणमें उौर उच्चमें उौर स्वक्षेत्रमें उौर केंद्रकोणमें उौर मित्राधिमित्रराशिमें स्थित होता है तिसकी उतमाशसंज्ञा होतीहे ४२ उौर कहते हैं यो ग्रह छठे उौर अष्टम उौर द्वादश स्थानमें स्थित होते हे उौर नीचराशिमें उौर योग्रह अस्तहो ते हैं उौर वलहीन यो ग्रहहोते हैं ओर योग्रहमरणाऽवस्थामें स्थित होते हैं सो पारिजातादि शुभयो गोंकानाशकर्ते हैं ४४ ॥ उौर कहते है दशवर्गमें स्वोच्चमित्रादि तीनवर्गमें यो ग्रहस्थित होवे तिसकी उत्तमांशसंज्ञा है उौर चारवर्गमें यो स्थितहोवे तिसकी गोपुरसंज्ञाहे उौर पांचवर्गके संयोगमें सिंहासन-संज्ञा होतीहे ४५ ॥ उौर दोवर्गके संयोगकर्के पारिजातसंज्ञा होतीहे उौर छेवर्गके योगकों पाराव-तांश कहते हैं उौर सातवर्गकों देवलोक उौर आठवर्गैक्यकों चामरांश कहते है ॥ ४६ ॥ उौर नववर्गैक्यकी ऐरावतसंज्ञा है उौर इन्होंके नामतुल्य फलहोता है

॥ अवग्रहोंकियां वालादि पांच अवस्था कहतेहैं ॥ विषम राशियोंमें क्रमसें छै छै अंशप्रमाणकर्के प्रथम वाल दूसरी कुमार तीसरी युवा चउथी वृद्धा पाचमी मृत्यु इहे पाच अवस्था होतीहैं और समराशियोंमें विपरीत प्रथम छे अंश मृत्यु फेर वृद्ध । फेर युवा फेर कुमार फेर वाल इसक्रमसें होतीहै ४७ अवमेषादिराशियोंकियांदिशाकहतेहैं ॥ मेषसें लेकर्के तीनत्रावृत्तिभ्रमणसें पूर्वादिदिशाके पति कहेहैं जैसें पूर्वका स्वामी मेष सिंह धन इत्यादि ॥ ४८ ॥ अवराशियोंकीपृष्टोदयादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ वृष और मेष और धन और कर्क और मिथुन और मकर इहे छैराशि पृष्ठोदयकहिहैं और रात्रिमें वलीहोतीहैं और मिथुनपृष्टोदय नहिंहै केवल रात्रिमें वलीहै शेषराशि योहैं सिंह और कन्या और तुला और वृश्चिक और कुंभ इहे दिनमें वलीहैं और शीर्षोदय हैं इन्हमें मिथुन वी शीर्षोदय है और मीनराशि उभयोदय कहिहै ॥ ४९ ॥ अवस्वामीऔरशुभग्रहादियोगसेंराशियोंकावलावलकहतेहैं ॥ स्वमी और मित्र

॥ अथवालाद्यवस्था ॥ वालाद्यवस्थाक्रमशोग्रहाणामोजेसमेतद्विपरीतमाहुः ॥ वालाकुमारोथयुवाचवृद्धामृत्युर्लवानामृतुभिःक्रमेण ॥ ४७ ॥ अथराशीनांदिग्विवेकः -प्रागादिककुभांनाथायथासंख्यंप्रदक्षिणम् ॥ मेषाद्याराशयोज्ञेयास्त्रिरावृत्तिपरिभ्रमात् ४८ ॥ अथपृष्टोदयादिविवेकः ॥ गोजाश्वकर्किमिथुनाःसमृगाःनिशाख्याःपृष्टोदयाविमिथुनाःकथितास्तएव ॥ शीर्षोदयादिनवलाश्चभवंतिशेषालग्नेसमेत्युभयतःपृथुरोमयुग्मम् ॥ ४९ ॥ अथपत्यादियोगादिना राशिवलावलम् ॥ पतिप्रियसौम्योच्चस्थैर्युतवीक्षितोवलीराशिः ॥ स्वल्पवलोन्यैर्मिश्रैर्मध्यःसर्वायुतवीक्षितस्त्ववलः ॥ ५० ॥ अथराशीनांस्थानवलम् ॥ केंद्रस्थान्प्रवलान्राशीन्मध्यान्पणफराश्रितान् ॥ आपोक्लिमगतान्गर्गःसर्वान्हीनवलान्वदेत् ॥ ५१ ॥ अथराशीनांदिग्वलम् नरास्तुबलिनोलग्नेचतुर्थेजलराशयः ॥ सप्तमेवृश्चिकश्चैवदशमेपशवस्तथा ॥ ५२ ॥

और शुभग्रह और उच्चादि स्थनमें स्थितग्रहकर्के युक्तदृष्टराशि वली होतीहै और पापग्रहों कर्के और शुभग्रहों कर्के दोनोंसें युक्तदृष्टहोवे तवथोडे वलवाली होतीहै और किसी ग्रहकर्के युक्तदृष्ट नहिंहोवे तव निर्वल होतीहै ॥ ५० ॥ अवमेषादिराशियोंका स्थानवलकहतेहैं योराशियांकेंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० । स्थानमें स्थित होतीयाहे सो वली होतीयाहैं और योराशिपणफर । २ । ५ । ८ । ११ स्थानमें स्थित होतींहै सो मध्यवली होतीहैं और यो राशि आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमे स्थित होतीहैं सो हीनवल होतीहै ऐसें गर्गऋषि कहता है ॥ ५१ ॥ अव राशियोंका दिग्वल कहते हैं मनुष्यराशिया लग्नमें वलीहोतीया है और जलचरराशिया चतुर्थस्थानमें वली होतीयांहै और सप्तमभावमें वृश्चिकराशि वली होतीहै और दशमस्थानमें चतुष्पदराशि वली होतीहैं ५२ ॥

॥ अथराशियोंकाकालबलकहतेहैं ॥ मनुष्यराशिया दिनमें और चतुष्पदराशियां रात्रिमें शेपजलचर और कीटराशि संध्याकालोंमें बली होतीहैं ॥ ५३ ॥ अथबलाबलकाविभागकहतेहैं और यो राशि बली होती है तिसीके बलसें नवांश तिसका बली होताहै और राशिके निर्बल होनेसें अंश वी निर्बल होताहै और राशिके मध्यबलसें मध्यबली होताहै ॥ ५४ ॥ अथराशियोंके वश्यावश्यकहतेहैं ॥ द्विपद राशियोंके सिंहराशि विना संपूर्ण चतुष्पद वश्यहै और जलचर भक्ष्यहैं और सरीसृप राशिया वश्यहैं ५५ और वृश्चकराशिकों छोडकर्के सिंहराशीके संपूर्ण राशिया वश्यहैं और नहि कहा यो राशियोंका व्यवहार सोलोकव्यवहारसें जाननेयोग्य है ५६ अथलग्नादिभावोंकाविवेक कर्तेहैं लग्नभावकोंसामर्थ्य और तनु और उदयनाम कर्के कहतेहैं और धनभावकों वित्त और कुटुंबकर्के कहते हैंऔर भ्रातृभावकोंसहज और विक्रम और तृतीय और युद्धकहतेहैं और चतुर्थभावकोबंधु और वाह्य औरसुख

॥ अथराशीनांकालबलम् दिवाभागेमनुष्यास्तुनिशायांतुचतुष्पदाः॥संध्याद्वयेऽवशेषास्तुबलिनःपरिकीर्तिताः ५३ ॥ अथांशबलाबलविभागः ॥ यस्तुयस्यांशकोराशेस्तद्बलादंशकोबली अबलस्तस्यदौर्बल्येमध्यमेमध्यमःस्मृतः ५४ अथ राशीनांवश्यावश्यविवेकः द्विपदवशगाःसर्वेसिंहंविहायचतुष्पदाः सलिलनिलया भक्ष्यावश्याःसरीसृपजातयः ५५ मृगपतिवशेतिष्ठेयुरेतोविहायसरीसृपान् अकथितगृहेपूह्यंवश्यंजनव्यवहारतः ॥ ५६ ॥ अथतन्वादिभावविवेकः सामर्थ्यं तनुकल्प्यंतेसमुदयेवित्तंकुटुंबंततोविक्रांतंसहजंतृतीयभवनेयोधंचसंचिंतयेत् बंधु वाह्यसुखालयानिचततोधीमंत्रपुत्रांस्ततःपष्ठेथक्षतिविद्विपोमदगृहेकामंस्त्रियंवर्त्मच ॥ ५७ ॥ रंध्रायुर्मृतयोष्टमेगुरुतपोभाग्यानिचित्तंततोमानाज्ञास्पदकर्मणांदशमभेकुर्यात्ततश्चिंतनम् ॥ प्राप्त्यायावथचिंतयेद्भवगृहेरिष्फेथमंत्रिव्यथे सौम्यस्वामियुतेक्षणैरुपचयस्तेपांक्षतिस्त्वन्यथा ॥ ५८ ॥ अथारात्यादिभावापवादः॥ अरातिव्रणयोःपष्ठेचाष्टमेमृत्युरंध्रयोः व्ययस्यद्वादशस्थानेवैपरीत्ये

॥ नाचिंतनम् ॥ ५९ ॥

औरगृहकर्के कहतेहैं और पंचमभावकों बुद्धि और मंत्र और पुत्रकर्के कहतेहैं और छठेभावकों क्षति और शत्रुकर्के कहतेहैं और सप्तमभावकों काम और स्त्री और मार्गकर्के कहतेहैं ॥ ५७ ॥ और अष्टमकों छिद्र और आयु और मृत्यु कहतेहैं और नवमकों गुरु और तप और भाग्य और चित्त कहतेहै और दशमकों मान और आज्ञा और अस्पद और कर्म कहतेहैं और एकादशकों प्राप्ति और आयकर्के कहतेहै और द्वादशभावकों रिष्फ और मंत्री और पीडा कहतेहै और यो भाव शुभग्रह और स्वामी कर्के युक्तदृष्ट होताहै तिसकीवृद्धि होतीहै और अन्यथा हानि होतीहै ॥ ५८ ॥ ॥ अथअरात्यादिभावकहतेहैं ॥ छठे भावकों अराति और व्रण कहतेहैं और अष्टमकों मृत्यु और रंध्रकहतेहैं और द्वादशकों व्यय कहतेहैं इन्हका विचार विपरीत कहाहै स्वामी और शुभग्रहकर्के दृष्टयुक्तहोवैं तव शुभनाहिं होतेहैं ॥ ५९ ॥

॥ अथउपचयादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ तीसरे और छठे और दशमे और ग्यारहमे स्थानोंकी उपच यसंज्ञा कहिहे जब पापग्रहोंकर और स्वामिकर्के और शत्रुग्रहोंकर्के दुष्ट नहिंहोवें तववृद्धिको करतेहैं स्वामी उपचयस्थानोंका द्वादशाष्टमस्थानमें और पापग्रहोंकर्के पीडित नहोवे तव उपचय फल करतेहैं ६० अथकेन्द्रादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ लग्न और चतुर्थ और सप्तम और दशम स्थानोंको केन्द्र और चतुष्टय और कंटकसंज्ञा कहिहे और केन्द्रोंके आगेके स्थानोंकी पणफरसंज्ञाहे और पणफरोंके आगेके स्थानोंकी आपोक्लिमसंज्ञा कहिहे ॥ ६१ अथत्रिकोणादिसंज्ञाकहतेहैं नवम और पंचमस्थानोंका त्रिकोण कहतेहैं और चतुर्थ और अष्टमस्थानोंको चतुरस्रकहतेहे अथदशमादिस्थानविशेषोंकीसंज्ञा कहतेहे ख और मेषूरण और आस्पद दशमभावको कहतेहैं और मदन और यामित्र और अस्त और द्युन और द्यून सप्तमभावको कहतेहैं और सुहृद और गृह और हिबुक और पाताल और जल चतुर्थ भावको

॥ अथोपचयादिविवेकः ॥ अथोपचयसंज्ञास्यात्त्रिलाभरिपुकर्मणाम् नचेद्भवंतिते दुष्टा पापैस्वपतिशत्रुभिः ॥ ६० ॥ अथकेंद्रादिविभागः ॥ केंद्रचतुष्टय कंटकलग्नास्तदशमचतुर्थानाम् ॥ संज्ञापरत पणफरमापोक्लिमसंज्ञकंचतत्प रत ॥ ६१ ॥ अथत्रिकोणादिविवेकः ॥ पंचमंनवमंचैवत्रिकोणसमुदाहृतम् चतुर्थमष्टमंचैवचतुरस्रंविदुर्बुधाः ॥ ६२ ॥ अथदशमादिस्थानविशेषाणांसंज्ञा ॥ खंमेषूरणमास्पदंमदनमेयामित्रमस्तद्युनेद्यूनंचाथसुहृद्गृहंतुहिबुकंपातालमंभो पिच ॥ दुश्चिक्यंसहजंवदंतिमुनयोरिष्फंतथाद्वादशे ॥ षट्कोणरिपुमंदिरेनव मभेत्र्याद्यंत्रिकोणंपुनः ॥ ६३ अथ कालनरस्यात्मादिव्यवस्था ग्रहाणांनृपादि व्यवस्थाच ॥ कालात्मादिनकृन्मनस्तुहिमगु सत्वंकुजोज्ञोवचोजीवोज्ञानसु खेसितश्चमदनोदुःखंदिनेशात्मजः राजानौरविशीतगूक्षितिसुतोनेताकुमारोवुधः सूरिर्दानवपूजितश्चसचिवौप्रेष्य सहस्रांशुज ॥ ६४ ॥ अथात्मादिग्रहाणांवला वलवशात्पुरुषस्यात्मादीनांवलावलनिर्णय वलावलाद्ग्रहाणांस्यादात्मादीनांव लावलम् नृपाद्या प्रवला कुर्युः स्वरूपंशनिरन्यथा ॥ ६५ ॥

कहतेहे दुश्चिक्य और सहज तीसरे भावको कहतेहैं और रिष्फ द्वादशभावको कहतेहे और षट्कोण छठे भावका कहतेहे और त्रिकोण और त्र्याद्य नवमभावका कहतेहे ६३ अथ कालपुरुषको आत्मादि व्यवस्था और ग्रहोंको नृपादि व्यवस्था कहतेहैं सूर्य काल पुरुषका आत्माहे और चन्द्रमा मनहे और मंगल पराक्रमहे और वुध वाणीहे और वृहस्पति विद्याहे और सुखहे और शुक्र कामदेवहे और शनि दुःखहे और सूर्य चन्द्रमा राजाहे और मंगल सेनापति हे और वुध कुमारहे और वृहस्पति और शुक्र मन्त्रीहे और शनि दूतहे ६४ अथ आत्मादि ग्रहोंके वलावलसे पुरुषके आत्मादिकोंका वलावलकहतेहैं सूर्यादि ग्रहोंके वलावलसे आत्मादिकोंका वलावल होताहे, और नृपादि ग्रह वली होवें तव अपने रूपको प्रगटकरतेहे और शनि अन्यथा, विपरीत, करताहे निर्वलहोनेसे भृत्यादि, गुणकरताहे ॥ ६५ ॥

॥ अवग्रहोंकेरंगकहतेहैं सूर्य रक्त श्याम हैं और चन्द्रमा गौर वर्णहै और भौम अत्यंत ऊंचा नहिहै और रक्तवर्णहै और बुध दूर्वाश्यामवर्णहै और बृहस्पति गौर वर्णहै और शुक्र श्याव शुक्लवर्णहै और शनि कृष्ण वर्णहै ॥ ६६ ॥ अवग्रहोंकीसंज्ञाकहतेहैं हेलिसंज्ञा सूर्यकी है और शीतरश्मी चन्द्रमाको और हेम्ना कहतेहैं और बुधको वित् और ज्ञ और बोधन और चन्द्रमाका पुत्र कहतेहैं और मंगलको आर और वक्र और क्रूरदृक् और महीसुत कहतेहैं और शनिका कोण और मंद और सूर्यका पुत्र और कृष्ण कहतेहैं ६७ और बृहस्पतिको जीव और आंगिरस और सुरगुरु और वागीश और इज्य कहतेहैं और शुक्रका भृगु और भृगुसुत और सित और आस्फुजित् कहतेहैं और राहुको तम और अगु और असुर कहतेहैं और केतुको शिखी और केतु कहतेहैं और इन्होंके अनेक नाम पर्याय अन्यशास्त्रसें विचारकरके कहे ॥ ६७ अवसौम्यपापग्रहोंकाविचारकहतेहैं अर्द्धसें

अथग्रहाणांवर्णकथनम् रक्तश्यामोभास्करोगौरइंदुर्नात्युच्चांगोरक्तवर्णश्चभौमः दूर्वाश्यामोज्ञोगुरुर्गौरगात्र श्यामःशुक्रोभास्करिःकृष्णदेहः ॥ ६६ ॥ अथग्रहाणांसंज्ञा हेलिःसूर्यश्चंद्रमाःशीतरश्मिर्हेम्नाविद्ज्ञोबोधनश्चेंद्रपुत्रः आरोवक्रःक्रूरदृक्चावनेयः कोणोमन्दःसूर्यपुत्रोऽसितश्च ॥ ६७ ॥ जीवांगिराःसुरगुरुर्वचसांपतीज्यौशुक्रोभृगुर्भृगुसुतःसितआस्फुजिच्च राहुस्तमोगुरसुरश्चशिखीचकेतुः पर्यायमन्यदुपलभ्यवदेच्चलोकात् ॥ ६७ ॥ अथसौम्यपापविवेकः अर्द्धोनेंद्वर्कसौरारा पापाज्ञस्तद्युतोपरे शुभाःपापौतमःकेतूविष्णुधर्मोत्तरोदितौ ॥ ६८ ॥ अथदिक्पतिविवेकः सूर्यःशुक्रःक्षोणिपुत्रःसैंहिकेयःशनिःशशी सौम्यस्त्रिदशमंत्रीचप्राच्यादिदिगधीश्वराः ६९ ॥ अथजात्यधिपकथनम् ब्राह्मणौशुक्रवागीशौक्षत्रियौभौमभास्करौ चंद्रोवैश्योबुधःशूद्रःपतिर्मंदोन्त्यजेजने ॥ ७० ॥ अथवेदाधिपकथनम् ॥ ऋग्वेदाधिपतिर्जीवोयजुर्वेदपतिःसितः सामवेदाधिपोभौमःशशिजोऽथर्ववेदराट् ॥ ७१ ॥

ऊनचंद्रमा और सूर्य और मंगल इन्होंकी पापसंज्ञाहै और बुध शुभग्रहकरके युक्त शुभहोताहै और पापीकरकेयुक्त पापी होताहै और अर्द्धसें अधिकचन्द्रमा और पापरहितबुध और बृहस्पति और शुक्र इन्हे शुभग्रह कहेहैं और राहुकेतू विष्णुधर्मोत्तरमें पापी कहेहैं ॥ ६८ अवदिक्पतिग्रहकहतेहैं पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य और अग्निकोणका स्वामी शुक्र और दक्षिणका स्वामी भौम और नैर्ऋतका स्वामी राहु और पश्चिमका स्वामी शनि और वायुकोणका स्वामी चन्द्रमा और उत्तरका स्वामी बुध और ईशानका स्वामी बृहस्पतिहै ६९ अवजातियोंकेस्वामीग्रहकहतेहैं शुक्र और बृहस्पति ब्राह्मणोंके स्वामीहै और मंगल और सूर्य क्षत्रयजातीकेस्वामीहैं और चन्द्रमा वैश्यजातिका स्वामीहै और बुध शूद्रजातिका स्वामीहै और शनि चांडालजातिका स्वामी कहाहै ७० अवबेदोंकेस्वामीकहतेहैं ऋग्वेदका स्वामी बृहस्पतिहै और यजुर्वेदका स्वामी शुक्रहै और सामवेदका स्वामी मंगलहै और अथर्वणवेदका स्वामीबुधहै ७१ ॥

॥ अथपुरुषादियोंकेस्वामीकहतेहैं ॥ सूर्य और मंगल और बृहस्पति पुरुषोंके स्वामीहैं और चंद्रमा और शुक्र स्त्रीयोंके स्वामीहैं और बुध और शनि नपुंसकोंके स्वामीहैं ॥ ७२ ॥ देवलोकका स्वामी बृहस्पति मनुष्यलोकके स्वामी चंद्र शुक्र पितृलोकके स्वामी सूर्य भौम और नरकके स्वामी बुध शनी कहेहैं ॥ ७२ ॥ अथअप्रकाशग्रहकहतेहैं ॥ चारराशि और त्रयोदश अंश सूर्यमें धूमनाम कर्के ग्रह रहिताहै और धूमको बारां ॥ १२ ॥ राशिमें घटायदेवें तव व्यतीपातनाम कर्के ग्रह होताहे और व्यतीपातमें छेराशि मिलायदेवें तव परधि नाम कर्के ग्रह होताहे औरपरधि कों बाराराशिमें घटायदेवें तव चापनाम कर्के ग्रह होताहे और धनुग्रहमें सतारां १७ अंशमिलाय देवें तव शिखीनाम कर्के ग्रह होताहै इहे पाच अप्रकाश ग्रह कहेहैं इन्होंके उदयकालमें जातकमें डोर प्रश्नमें फल कहाहै ॥ ७३ ॥ अत्रोदाहरणम् ॥ सूर्यः । ६ । १७ । १६ । ४६ । एतत् । ॥ १३ । ० । ० । युतः- जातोधूमः । ११ । ०० । १६ । ३६ अयंमंडल ॥ १२ शुद्धः ॥ पातोजातः

॥ अथपुरुषाद्यधिपकथनम् ॥ पुंसांसूर्यारवागीशायोषितांचंद्रभार्गवौ क्लीवानांवु धर्मदौचपतयःपरिकीर्त्तिताः॥ ७२ अथस्वर्गाद्यधिपकथनम् ॥ सुरपूज्यःशशिशु क्रौदिनकरभौमौवुधार्कजौनाथाः विवुधमनुष्यपितॄणांतिर्यक्नाकादिवासिनांक्र मशः ७२. अथाप्रकाशग्रहाःकेरलशास्त्रे धूमोर्कोविश्वभागश्रुतिभवनयुतोमंड लाच्छोधितोसौपातःषड्राशियुक्तःपरिधिरथभसंशोधितश्चापनामा शैलक्ष्मा भागयुक्तंधनुरथचशिखीपंचतेत्वप्रकाशाःप्रादुर्भावेचतेषांफलमिहकथितंजात कप्रश्नयोःस्यात् ॥ ७३ ॥ अथाप्रकाशग्रहाणांफलविचारः ॥ अप्रकाशग्रहा स्त्वेतेदोषाःपापग्रहाःस्मृताः भान्विदुलग्नगेष्वेपुवंशायुर्ज्ञाननाशनम् ॥ ७४ ॥ एषांवत्हर्कदोषाणां स्थितिःपद्मासनोदिता ॥ अत्रजन्मकालीनसूर्यचंद्रलग्नानां पृथक्परिवेषादिपापत्रययोगेत्रयाणांनाशः द्वयोर्द्वयस्यएकेनैकस्यनाशनंफलम् ॥ एषामुच्चनीचादिकमपितत्रैवोक्तम् नृयुग्मंपरिवेषस्यसिंहोधूमस्यवृश्चिकः राहोश्चापस्यचापश्चकुंभोगोरुच्चमुच्यते ॥ ७५ ॥

॥ ०० । २९ । ४३ । १४ । अयसषड्भः । ६ । २९ । ४३ । १४ ॥ परिधिः परिवेषोभ १२ । सशुद्धः इंद्रधनुः । ५ । ०० । १६ । ४६ । अयंशैलक्ष्मा १७ भागयुतः । ५ । १७ । १६ । ४६ । जातःकेतुः एकराशियुतेपूर्वसमसूर्योजातः । ६ । १७ । १६ । ४६ । अवइन्हकेफलकाविचारकहतेहैं ॥ इहे पाच अप्रकाश ग्रह पापी कहेहें इहे सूर्यके दोषहैं जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्यके सगमिलके स्थितहोवें तिसके वंशका नाश करदेतेहै और चद्रमाकेसाथ स्थितहोवें तव आयुषा नष्टकर्तेहैं और जन्मलग्नमें स्थितहोवें तव विद्याका नाशकर्तेहैं इहे कमलासनऋषिनें बहुत सूर्यकेदोषोंमें पाच विचारकर्के ग्रहरूपमानेहैं जन्मसमयमें सूर्य और चद्रमा और लग्न इन्हमें भिन्न भिन्नपरिवेषादि तीनपा पियोंका योगहोवे तव तीनोंहि वंशआयुज्ञान नष्टहोतहैं और दोकेयोगसें दोका नष्टहोताहै और एकपा पीके योगसें एकका नाशहोताहै डोर इन्हकीयाउच्चनीचराशियांबिकहियांहैं नृयुग्मपरिवेपस्यइत्यादि ७५

अथलग्नादिद्वादशभावोंके स्थिरकारककहतेहैं लग्नका कारक सूर्यहै और धन भावका कारक वृहस्पतिहै और भ्रातृ भावका कारक मंगलहै और मातृभावके कारक चंद्रमा बुध दोनों हैं और पुत्र भावका कारक वृहस्पति है और शत्रु भावके कारक शनि भौम दोनों हे और स्त्री भावका कारक शुक्र है और मृत्यु भावका कारक शनि है और धर्म भावके कारक सूर्य वृहस्पति दोनों है और कर्म भावके कारक वृहस्पति सूर्य बुध शनि चार ग्रह है और लाभ भावका कारक वृहस्पति है और व्यय भावका कारक शनि है ७६ अथसूर्यादिग्रहोंको कारकत्वनिरूपणकहतेहैं सूर्य सें आत्माका और पिताका उोर स्वभावका उोर नीरोगताका उोर देहकी शक्तिका और लक्ष्मीका चितनकरे १ और चंद्रमासें चित्तका और बुद्धिका और राजप्रसादका और माताका और संपदाका चितनकरे २ और मंगलसें पराक्रमका और रोगका और गुणोंका और भ्राताका और पृथ्वीका और पुत्रोंका और ज्ञातीका चितनकरे ३ और बुधसें विद्याका और संबंधियोंका और विवेकका और मातुलका

अथतन्वादिभावेषुस्थिरकारकानाह ॥ द्युमणिरमरमंत्रीभूसुतःसोमसौम्यौगुरुरिनतनयारौभार्गवोभानुपुत्रः ॥ दिनकरदिविजेड्यौजीवभानुज्ञमंदाःसुरगुरुरिनसूनुःकारकाःस्युर्विलग्नात् ७६ ॥ अथसूर्यादिग्रहाणांकारकत्वनिरूपणम् ॥ सूर्यादात्मपितृस्वभावनिरुजः शक्तिश्रियौचिंतयेच्चेतोबुद्धिनृपप्रसादजननीसंपत्करश्चंद्रमाः ॥ सत्वंरोगगुणानुजावनिसुतान्ज्ञातिंधरासूनुनाविद्याबंधुविवेकमातुलसुहृत्वाक्कर्मकृद्बोधनः ॥ ७७ ॥ प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानिवागीश्वरात् पत्नीवाहनभूषणानिमदनव्यापारसौख्यंभृगोः ॥ आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाताशनिःसर्पेणैवपितामहंतुशिखिनामातामहंचिंतयेत् ॥ ७८ ॥ अथस्थानविशेषेणग्रहाणांविफलत्वमाह ॥ सभानुरिंदुःशशिजश्चतुर्थेगुरुःसुते भूमिसुतःकुटुंबे ॥ भृगुःसपत्नेरविजःकलत्रेविलग्नतस्तेविफलाभवंति ॥ ७९ ॥

और मित्रोंका और वाणीका चितनकरे ४ । ७७ और वृहस्पतिसें विशेषबुद्धिका और धनका और देहकीपुष्टिका और पुत्रोंका और विद्याका चितनकरे ॥ ५ ॥ उोर शुक्रसें स्त्रीका उोर वाहनोंका उोर भूषणोंका उोर कामचेष्टाका उोर व्यापारका उोर सुखका चितनकरे ॥ ६ ॥ उोर शनिसें आयुषाका उोर जीवनका उोर मृत्युके कारणका उोर विपदाका उोर संपदाका चितनकरे ॥ ७ ॥ उोर राहुसें पितामह दादेका सुखदुःख चितनकरे ॥ ८ ॥ उोर केतुसें मातामह नानेका सुखदुःख चितनकरे ९ ७८ ॥ अथस्थानविशेषताकरकेग्रहोंकोनिष्फलताकहतेहैं सूर्यकरकेयुक्तचंद्रमा निष्फलहोताहै उोर चतुर्थस्थानमें बुध निष्फल होताहै उोर पंचमस्थानमें वृहस्पतिनिष्फल होताहै उोर दूसरेस्थानमें मंगल निष्फल होताहै उोर छठेस्थानमें शुक्र निष्फल होताहै उोर सप्तमस्थानमें शनिनिष्फल होताहै जन्मलग्नसें लेकरके पूर्वोक्तस्थानोंमें निष्फल ग्रह कहेहैं ॥ ७९ ॥

अवग्रहोंकेरिष्टकोंहरणेवालेग्रहकहतेहैं जिसकेजन्मकालमें राहुकारिष्टहोवे और बुधकेंद्रत्रिकोणमें स्वोच्चादिराशीमें स्थितहोवे तब राहुके दोषकों दूरकताहे और राहुबुध दोनोंरिष्टकारक होवें शनि ३।६।११ स्थानमें स्वोच्चादिराशियमें होवें तब राहु और बुधके दोषोंको दूरकताहे और इसी प्रकारकके राहु बुध शनि तीनोंके दोषकों मंगल दूरकताहे और ॥ राहु बुध ॥ शनि ॥ मंगल इन्हां चार-

अथग्रहाणांरिष्टहरत्वमाह राहुदोषंबुधोहन्यादुभयोस्तुशनैश्चरः ॥ त्रयाणांभूमिजोहंतिचतुर्णांदानवार्चितः ॥ ८० ॥ पंचानांदेवमंत्रीचषण्णांदोषंतुचंद्रमाः ससदोषंरविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे ॥ ८१ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितजोतिर्महानिबंधे जातकखंडसंज्ञाध्यायोद्वितीयः २

ग्रहोंके दोषकों शुक्र दूरकता हे ॥ ८० ॥ और राहु बुध । शनि । मंगल । शुक्र इन्हांपांचग्रहों के दोषोंको बृहस्पति दूरकताहे और राहु । बुध शनि । मंगल । शुक्र बृहस्पति ॥ इन्होंछिग्रहोंके दोषकों चंद्रमा दूरकताहे और सातग्रहोंके दोषकों विशेषकर्के उत्तरायणमें सूर्य दूरकताहे ॥ ८१ ॥ इति •

॥ अथप्रथमसंवत्सरादिपंचांगफलयवनजातकमेंकहतेहैं प्रभवनामसंवत्सरसे लेकर ६० संवत्हैं तिनमेंप्रथम प्रभवकाफलकहतेहैं जो मनुष्य प्रभवसंवत्सरमें जन्मताहै तिसकोसंपूर्णपदार्थवहुतमिलतेहैं और पुत्रसंपदा होतीहैं और वडीआयुषाकर्के भोगोंको भोगताहै १ ॥ और जो मनुष्य विभवसंवत्सरमें जन्मताहै सोप्राप्तभये जो भोग तिनको भोगताहै और लालीकरसंयुक्तकालेनेत्रोंवाला होताहै और पंडितहोताहै और राजाकर्के मानको प्राप्तहोताहै २ ॥ और जो मनुष्य शुक्लसंवत्सरमें जन्मताहै सोश्रेष्ठभागोंवाला होताहै और शांतस्वभाव वाला होताहै और भोगोंकोभोगताहै और स्त्रीपुत्रोंकर्के युक्तहोताहै और विद्यावान्संपूर्णगुणोंकरयुक्त होताहै ॥ ३ और जो प्रमोदसंवत्में जन्मताहै सो सर्वदाकाल संपूर्णोंको आनंदकर्ताहै और सत्यकहताहै और चतुरहोताहै और सुवर्णकीन्याई तिसकी आभाहोतीहै और सुखी वडेमानवाला होताहै ॥ ४ ॥ और जो प्रजापतिसंवत्में जन्मताहै

अथप्रथमंपंचांगफलानि यवनजातके तत्रादौसंवत्सरफलानि॥ प्रभूतसर्ववस्तूनांपुत्रसंपत्तिरेवच ॥ दीर्घायुर्भोगसंपन्नःप्रभवेजायतेनरः १ ॥ उत्पन्नभोगभोगीस्यात्कृष्णश्चारुणलोचनः पंडितोराजपूज्यश्चविभवेब्देनरोभवेत् २ ॥ सुभगःशोतिमान्भोगीपुत्रदारसमन्वितः विद्वान्सर्वगुणोपेतःशुक्लसंवत्सरेभवेत् ॥ ३ ॥
सदानंदयितसत्यवादीविपश्चितोनरः स्वर्णकांतिःसुखीमानीप्रमोदेजायतेनरः ४
प्रजानांपालकोधर्मीकृपासत्यसमन्वितः गुणवान्देवभक्तश्चप्रजापतिसमुद्भवः ५
कामीसुखीचमानीचभोगवान्प्रियवल्लभः दीर्घायुर्बहुपुत्रश्चअंगिरोवत्सरेभवेत् ६
श्रीमांश्चसुमतिःशांतःसोपरागःशुभप्रियः ॥ दीर्घायुर्बहुपुत्रश्चश्रीमुखेब्देभवेन्नरः ७ ॥
यशस्वीदाननिरतःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ भावसंवत्सरेजातोनरोभवतिसौख्यभाक् ८ ॥
कीर्तिसर्वगुणोपेतोदीर्घायुर्दानतत्परः ॥ शांतःशुभमतिःशौचीयुवाब्देपुरुषोभवेत् ९
दीर्घायुःशुभगोदक्षोवेदाध्ययनतत्परः ॥ सुरूपोजायतेमर्त्योधातृसंवत्सरेयदि १० ॥

सो प्रजाकोपालताहै और धर्मवालाहोताहै और दयासत्यकर्के युक्तहोताहै और गुणवान् होताहै, और देवताकाभक्तहोताहै ५ और जो अंगिरासंवत्में जन्मताहै सो कामी और सुखी और मानी और भोगी और मित्रका प्यारा और वडीआयुषावाला और बहुतपुत्रोंवाला होताहै ६ जो मनुष्य श्रीमुखसंवत्में जन्मताहै सो श्रीमान् और श्रेष्ठबुद्धिवाला और शांतस्वभाववाला और प्रीतिवाला और शुभमेंप्रीतिवाला और वडीआयुषावाला और बहुतपुत्रोंवाला होताहै ७ और जो भावसंवत्में जन्मताहै सो यशस्वी और दानकरणेवाला और संपूर्णलक्षणोंवाला और सुखके भोगनेवाला होताहै ८ और जो युवसंवत्में जन्मताहै तिसका यशसंपूर्णगुणों करयुक्त होताहै और वडीआयुषावाला और दानकरणेवाला और शांत शुभबुद्धिवाला पवित्रताकरयुक्तहोताहै ९ जो धातृवर्षमें जन्मताहै सो वडीआयुषावाला शुभ चतुर वेदकेपठनेवाला और सुंदररूपवाला होताहै १०

जोईश्वरवर्षमें जन्मताहे सोसंपूर्णकार्योंको जाननेवाला और गुरोंकाभक्त और अतिसुंदर और क्रोधकरकेयुक्त होताहे ११ और जो बहुधान्यवर्षमें जन्मताहे सोबावडीयांखूहें तलावआदिके करनेसे धर्मोंके करणेवाला और दाताहोताहे १२ और जो प्रमाथीवर्षमें जन्मताहे सो सेनाका स्वामी और राजाका मंत्री होताहे और शिवजीसेवरको प्राप्तहोताहे और शास्त्रकेजाननेवाला और धनके संग्रहकरणेवाला होताहे १३ और जो विक्रमवर्षमें जन्मताहे सो बडेउग्रप्रतापवाला और क्रूरस्वभाववाला होताहे और पापकर्म कों कर्ताहे और शूरवीर होताहे १४ और जो वृषवर्षमें जन्मताहे सो मंदबुद्धि और आलसी औ र महामूर्ख केवल भारके उठानेवाला और पापधर्ममें युक्तहोताहे १५ और जो चित्रभानुवर्षमें जन्मताहे सो विद्याका समुद्र होताहे और नीतिवाला धैर्यवाला लक्ष्मीवाला और स्वामीकाभक्त

[illegible]

सर्वज्ञःसर्वकार्येषुगुरुभक्तोतिसुंदरः ईश्वरेजायतेमर्त्यःसदाक्रोधपरोभवेत् ॥ ११
वापीकूपतडागादिकृतधर्मसमन्वितः दाताधनसमृद्धश्चबहुधान्येप्रजायते ॥ १२
सेनानीर्नृपमंत्रीचवरलब्धपिनाकधृक् ॥ शास्त्रज्ञःसंग्रहीचैवप्रमाथिवत्सरेभवेत्
१३ ॥ उग्रप्रतापशीलश्चपरराजविमर्शकः पापकर्मरतःशूरोविक्रमाब्देभवेन्नरः
१४ मंदोलसोमहामूर्खोभारवाहीचकेवलम् पापकार्यरतोजातेवृषाब्देजायते
नरः १५ चित्रभानुसमुद्भूतोनरोविद्यानिधिर्भवेत् नीतिमान्धृतिमान्श्रीमान्स्वा
मिभक्तः प्रियंवदः १६ पिंगदृक्पिंगकेशश्चगौरवर्णोविभुर्नयी सुभानुवत्सरेजातः
॥ कांतिमानतिदुर्जनः १७ चंचलश्चपलोधृष्टस्तारणाब्देनरोभवेत् धूर्तःपापरतः
शूरोदरिद्रोनिष्ठुरःसदा १८ मृदुभाषीराजमान्योराजसःशुभलक्षणः कांतिमान्
समृद्धश्चपार्थिववत्सरेनरः ॥ १९ द्यूतमद्यरतस्त्रीणांव्यसनैर्धनवर्जितः व्ययसे
वत्सरेजातश्चौरःपापमतिर्भवेत् २० ॥ [illegible]

[illegible]

और मीठाबोलनेवाला होताहे १६ और सुभानुवर्षमें जो जन्मताहे तिसके पिंगलवर्णके नेत्रहोतेहें और पिंगल केशहोतेहें और गौर वर्ण होताहे और स्वामी होताहे और न्यायकरणेवाला होताहे और देहकी शोभावाला होताहे और अत्यंतदुष्टताकरनेवाला होताहे १७ और जो तारणवर्षमें जन्मताहे सो चंचल चपल ढीठ धूर्त पापमेंरत होताहे और शूरवीर और दारिद्री और कठोर होताहे १८ और जो पार्थिव वर्षमें जन्मताहे तिसकी कोमलवाणी होतीहे और राजमान्य रजोगुणस्वभाववा ला और शुभलक्षणोंवाला और कांतिवाला और धनकीसमृद्धिवाला होताहे १९ और जो व्यय वर्षमें जन्मताहेसो जूएमें और मद्यमें और परस्त्रीके व्यसनमें धनको नाशकर्ता है और चोर होता है और पापमें तिसकीबुद्धिहोताहे २० [illegible]

और जो सर्वजित् वर्षमें जन्मताहै सो अपने कर्ममेंरत होताहै और शास्त्रके पढ़नेवाला और रोगोंके जाननेमें चतुरहोताहै ह्रस्व वामनहोताहै और मोटेदेहवाला और श्यामतनु वृद्ध वी युवाके चिन्हकोंधारताहै २१ और सर्वधारिणिवर्षमें जो जन्मताहै सोवहुत चाकरोंवाला औरधनवाला और कामी और भोगी और मिष्टान्नकेभोजनकरणेवाला होताहै औरसंपूर्णकी रक्षाकरणेवाला होताहै २२ और जो विरोधीवर्षमें जन्मताहै सोकुटुंबमें कलहके करणेवाला और परस्त्रीमेंरत और संपूर्णलोकोंसें विरोधकरणेवाला होताहै २३ और जो विकृतवर्षमें जन्मताहै तिसका कालारंग होताहै और युवाहोताहै और कलाभ्यासमें चंचलहोताहै और निर्गुणहोताहै और देहतिसकारूखाहोताहै २४ औरजो खरवर्षमें जन्मताहै सो धूड़कर धूड़ेअंगोंवाला और वड़ी आयुवाला और दूसरके सत्यके करणेवाला और वड़ाकामीऔर नि

स्वकर्मनिरतःशास्त्रपाठीरोगविचक्षणः ह्रस्वःस्थूलतनुःश्यामःसर्वजित्युद्भवोभवेत् २१ वहुभृत्योधनीकामीभोगीमिष्टान्नभुक्प्रभुः सर्वधारिणिनाजातःसर्वाधारपरोभवेत् २२ कुटुंवकलहकर्त्तापरदाररतःसदा सर्वलोकविरोधीचविरोधिवर्षसंभवः २३ कृष्णवर्णतनुःश्यामःकलालोलस्तुनिर्गुणः विकृष्टपर्वारूक्षश्चनरोविकृतवर्षजः २४ धूलिधूसरसर्वांगोदीर्घायुःपरसत्यकृत् कामेश्वरश्चनिर्लज्जः खरसंवत्सरेनरः २५ सदानंदेनसंतुष्टःप्रपाकूपतड़ागकृत् अभिन्नदीनशीलश्चनरोनंदनवर्षजः २६ शूरःसमरदुर्धर्षःख्यातःकीर्तियशोन्वितः पृथ्वीपतिर्जयीभोगीविजयाब्देनरोभवेत् ॥ २७ ॥ विद्वान्मानीलोकमानीसर्वशास्त्रविशारदः प्रजांप्राप्नोतिसर्वत्रजयवर्षेप्रजायते॥ २८ ॥ उत्पन्नभोगभोक्ताचकामीचाप्रियवादनः सुखाभरणशोभाढ्योमन्मथेवत्सरेभवेत् ॥ २९ ॥ शठःक्रूरमतिर्दुष्टोहिंस्रोग्रोवृषलीपतिः वक्रास्यवाहुचरणोदुर्मुखाब्देभवेन्नरः ॥ ३० ॥

र्लज्जहोताहै २५ और जो नंदनवर्षमेंजन्मताहै सो सदा आनंदकर प्रसन्नरहिताहै और वाउलीया खूह तलायकेवनावनेवालाहोताहै औरदरिद्रीयोंका दरिद्र दूरकर्ताहै २६ और जो विजयवर्षमें जन्मताहै सो शूरवीर रणमे वड़ेतेजवाला और प्रसिद्ध यशवाला होताहै और पृथ्वीकास्वामी जयवाला भोगोंकोंभोगनेवाला होताहै २७ और जो जयवर्षमें जन्मताहै सो विद्यावान् और मानी और लोकमें मानकों प्राप्त और संपूर्णशास्त्रोंमें चतुरहोताहै और प्रजाकों प्राप्तहोताहै २८ और जो मन्मथवर्षमें जन्मताहै सो प्राप्तभया जो भोग तिसकों भोगताहै और कामी और मीठा वोलताहै और सुखकर्के भूषणोंकर्के शोभायमानहोताहै ॥ २९ ॥ और जो दुर्मुखवर्षमें जन्मताहै सो शठ और क्रूर बुद्धिवाला और दुष्ट हिंसाके करणेवाला वड़ाउग्र वृषलीपति होताहै और टेढेमुख भुजापेर तिसके होतेहैं ॥ ३० ॥

और जो हेमलंववर्षमें उत्पन्न होताहै सो सुवर्ण धन और अन्नसें आदले कर और पशु वस्त्र इनकीसमृद्धि वालाहोताहै और स्त्रीपुत्रोंके सुखकर्के युक्तहोताहै ३१ और जो विलंववर्षमें जन्मताहै सो मंदभागी वालाहोताहै लोभी और आलसी और दुःखी और श्लेष्मरोगवाला और ठग होताहै और अपनेकार्यमें रतहोताहै और पापी होताहै ॥ ३२ ॥ और जो विकारीवर्षमें जन्मताहै सो विवेककर्के हीन और बडेगर्ववाला और विवादमें चतुरहोताहै औरदुष्टहोताहै और दूसरेकों ठगनेवाला होताहै ३३ और जो शर्वरी वर्षमें जन्मताहै सो व्यापारमें शूरहोताहै और सबंधियोंसें द्वेषकर्त्ताहै और लंबेदेहवाला और कृशहोताहै और निद्राकर्के तिसकेनेत्रघूर्णितरहतेहैं ॥ ३४ ॥ और जो प्लववर्षमें जन्मताहै सो चंचल चपल बडाकामी पराईसेवा करणेवाला होताहै और हलकर्म कर्त्ताहै और छोटेदेहवाला होताहै ॥ ३५ ॥ और जो शुभकृत्वर्षमें जन्मताहै सो शुभकर्म कर्त्ताहै और कामी होताहै और विद्याधर्ममें तत्परहोताहै और बडीआयुषावाला और धनकर्के पुत्रोंकर्केयुक्त होताहै ॥ ३६ ॥ और जो शोभनवर्षमें जन्मताहै सो सर्वत्रजयको प्राप्तहोताहै और कामी होताहै और सुंदररूपकर्के युक्तहोताहै और गुणयुक्तहोताहै और कृपाकरणेवाला होताहै ३७ ॥ और जो क्रोधीवर्षमे जन्मताहै सो पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला और राजाकेकोपकोप्राप्त और मंदबुद्धि और कामी स्त्रीलंपट और दूसरेका कार्यहतकरणेवाला होताहै ॥ ३८ ॥ और जो विश्वावसुवर्षमें जन्मताहै सो शांतस्वभाव और संपूर्णगुणोंकरयुक्त और दाता और मिष्टान्नभोगी और पवित्र और संतानवाला और सुखी होताहै ३९ ॥ और जोपराभववर्षमें जन्मताहै सो परस्त्रीरत शठ और अपनेसें वैर दूसरेका सबंधि होताहै और धनधान्यकेवधावनेवाला होताहै ॥ ४० ॥

सुवर्णधनधान्यादिपशुवस्त्रसमृद्धिमान् ॥ कांतापत्यसुखाढ्यश्चहेमलंबसमुद्भवः ॥ ३१ ॥ मंदोलुब्धोलसोदुःखीश्लेष्मलश्चापिवंचकः ॥ स्वकार्याभिरतःपापी विलंबवत्सरेशिशुः ॥ ३२ ॥ अविवेकीमहागर्वीविवादकुशलःखलः ॥ विकारिवत्सरेजातःप्राणीभवतिवंचकः ३३ ॥ वणिक्शूरःसुहृद्द्वेषीदीर्घःकृशतनुस्तथा निद्राघूर्णितनेत्रश्चशार्वर्य्यब्दसमुद्भवः ॥ ३४ ॥ चंचलश्चपलःकामीपरसेवारतः सदा हलत्राताह्रस्वतनुर्जातोवर्षेप्लवाभिधे ॥ ३५ ॥ शुभगःशुभकामीचविद्याधर्मपरायणः दीर्घायुर्धनपुत्राढ्यःशुभकृद्वर्षसंभवः ॥ ३६ ॥ सर्वत्रविजयी कामीचारुरूपोगुणान्वितः कृपालुः शोभकृद्वर्षेजातोभवतिमानवः ३७ पिंगाक्षो राजकोपश्चमंदः कामीस्त्रीलोलुपःपरकार्यनिहंताचक्रोधिसंवत्सरेनरः ॥ ३८ ॥ शांतःसर्वगुणोपेतोदातामिष्टान्नभुक्शुचिः विश्वावसुसमुद्भूतःप्रजावांश्चसुखीभवेत् ३९ परदाररतश्चैवशठःस्वापरबांधवःपराभवेसमुद्भूतोधनधान्यविवर्जितः ४०

और प्लवंगवर्षमें जो जन्मताहै सो दुष्ट पापमें रतहोताहै और अपने आचारको हतकर्ताहै और अपवित्रहोताहै और पापी होताहै ॥ ४१ ॥ और जो कीलकवर्षमें जन्मताहै मध्यमरूपको धारताहै और कामी होताहै और क्षुधातृषाकरकेपीड़ित होताहै और तिसका हृदयस्थूल होताहै और गुप्तकामी होताहै ४२ ॥ और जो सौम्यवर्षमें जन्मताहै सो पंडितहोताहै और धनके भोगनेवाला होताहै और ब्राह्मणोंको अभ्यागतोंको पूजनेवाला होताहै और तपस्या करताहै और देहको सुकावताहै ॥ ४३ ॥ और जो साधारणवर्षमें जन्मताहै सो नीचवृत्तिको करताहै और पवित्ररहिताहै कामकर हीन होताहै और परदेशमें रहिताहै और देवताकेदेखनेमें क्रोधको धारताहै ॥ ४४ ॥ और जो विरोधकृत् वर्षमें जन्मताहै सो संपूर्णलोकोंसे विरोध करताहै और पितरोंकीभक्तिसे हीनहोताहै और अपनीजातिवाल्योंकी सेवामें तत्परहोताहै ॥ ४५ ॥ और जो परिधावीवर्षमें जन्मताहै सो विद्यावान्

खलः पापरतोदुष्टः स्वाचारहतकोशुचिः प्लवंगवत्सरेजातोनरोभवतिकिल्विपी ॥ ४१ ॥ मध्यरूपधरः कामीक्षुत्पिपासार्दितोनरः कीलकेजनितोवर्षेस्थूलहृत्कूटमन्मथः ॥ ४२ ॥ पंडितोधनभोक्ताचभूदेवातिथिपूजकः तापसःकृशकृद्देहोनरः सौम्येप्रजायते ॥ ४३ ॥ नीचवृत्तिः शुचिः कामरहितः परदेशगः देवावलोकनेक्रोधीसाधारणसमुद्भवः ॥ ४४ ॥ विरोधीसर्वलोकानांपितृभक्तिविवर्जितः विरोधकृज्जातनरोजातिसेवाकरोभवेत् ॥ ४५ ॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञोव्यापारकुशलः सुधीः राजमानीदानशीलः परिधाविसमुद्भवः ॥ ४६ ॥ कुटुंवघातकोलुब्धः परकर्मरतः सदा प्रमादिवत्सरेजातोनरोवंधुविरोधकृत् ॥ ४७ ॥ वहुभार्योतिचतुरः सर्वानंदकरः क्षमी आनंदवत्सरे जातः पुत्रमित्रसमन्वितः ॥ ४८ ॥ सर्वभक्षीकृतघ्नश्चधर्माधर्मविवर्जितः हिंस्रकः परसंतापी राक्षसेब्देभवेन्नरः ॥ ४९ ॥ वैश्यवृत्तिर्धनीचैवकुटुंववहुलः शुचिःजलाशयकरो ॥ जातोनलसंवत्सरेनरः ॥ ५० ॥

संपूर्णकलोंके जाननेवाला होताहै और व्यापारमें श्रेष्ठहोताहै और श्रेष्ठबुद्धिवाला होताहै और राजाके मानवाला होताहै और दानकरणेमें तिसका स्वभाव होताहै ॥ ४६ ॥ और जो प्रमादीवर्षमें जन्मताहै सो कुटुंबके मारणेवाला लोभी होताहै सर्वदा परकार्यके करणेवाला होताहै और वंधुओंसे विरोध कर्त्ताहै ॥ ४७ ॥ और जो आनंदवर्षमें जन्मताहै सो बहुतस्त्रीयोंवाला और वड़ाचतुर और संपूर्णआनंदके करणेवाला और क्षमाकरणे वाला और पुत्रमित्रोंकरयुक्त होताहै ॥ ४८ ॥ और जो राक्षसवर्षमें जन्मताहै सो सर्वभक्षी होताहै और कृतघ्न और धर्माधर्मसे रहित होताहै और हिंसाके करणेवाला और दूसरेको संतापकरणे वाला होताहै ॥ ४९ ॥ और जो नलवर्षमें जन्मताहै सो वैश्यवृत्ति होताहै और धनीहोताहै और वड़ेकुटुंववाला होताहै और पवित्रहोताहै और जलाशय खूहे वाउलीयां तलाके लगाउणेवाला होताहै ॥ ५० ॥

और जो पिंगलवर्षमेंजन्मताहै सो टेढीदृष्टिवाला और थोडेरोमोंवाला और बडेउद्यममें तत्परहोताहै और कार्यसिद्धकरके कार्यके फलकात्यागकरणेवाला होताहै ॥ ५१ और जो कालयुक्तवर्षमें जन्मताहै सो लोकोंके उपकारकरणेवाला होताहै और भक्षाभक्षकाविचार समयमें नहिंकर्त्ताहै औररोगकेकरणे वाला होताहै ॥ ५२ और जो सिद्धार्थीवर्षमें जन्मताहै सो नित्यंप्रतिऋद्धिसिद्धिकोंप्राप्तहोताहै और भोगों कों भोगताहै और रागरंगमें चतुरहोताहै और मंत्रीहोताहै और यशवाला होताहै और उदासीनवृत्तिवाला होताहै ५३ और जो रौद्रवर्षमें जन्मताहै सो भयानक स्त्रीवाला और पापी और चुगल और घातकरणेवाला और थोडीआयुपावाला होताहै ॥ ५४ ॥ और जो दुर्मति वर्षमें जन्मताहै सो मूर्ख क्रूरताकरकेयुक्त कामी होताहै और अपनेवाक्यका प्याराहोताहै और धनवान होताहै और दाननहि कर्ताहै ॥ ५५ ॥ और जो दुंदुभिवर्षमें जन्मताहै सो नित्यप्रति उत्साहकरयुक्त होताहै और पृथ्वीका

कृशरोमांचोमहोद्यमपरोभवेत् फलकालफलत्यागीपिंगलेब्देभवेन्नरः ॥५१
लोकोपकारकःकालेभक्ष्याभक्ष्यंनसंत्यजेत् कालयुक्तसमुद्भूतोनरोभवतिरोगकृत्
५२ ऋद्धिसिद्धियुतोनित्यंभोगीगीतविशारदः मंत्रीकीर्त्तिपरोदासीसिद्धार्थिवर्षसं
भवः५३ भयंकरवधूःपापीपिशुनोघातकृद्भवेत् रौद्रसंवत्सरेजातोनरः स्वल्पायुषो
भवेत् ॥ ५४ ॥ मूर्खःक्रूरयुतःकामीस्वकीयवचनप्रियः अदाताधनवांश्चैवदुर्म
तौवत्सरेभवेत् ॥ ५५ ॥ नित्योत्साहीक्षितिपतिर्गजाश्ववहुधान्यकः वादित्रधन
सौख्याढ्योदुंदुभिवर्षसंभवः ॥ ५६ कामलोभीमहादोषीशस्त्रपीडाविपीडितः
दुःकर्माकुनखीजातोरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ५७ ॥ नेत्ररोगीसदामंददृष्टिर्मदपरः
सदा दुर्जनःकामवहुलोरक्ताक्षिवर्षजोनरः ॥ ५८ ॥ तापसोनिर्गुणःक्रूरोधातुवादी
भयंकरः क्रोधनाब्देनरोजातोवंचकःपापवुद्धिमान् ॥ ५९ उत्पन्नरोगरूपश्चपर
सेवारतःखलः क्षयसंवत्सरेजातोनरोधर्मविवर्जितः ॥ ६० इतिसंवत्सरोत्पन्नफलम्

स्वामी और हाथी घोडे धनधान्य करयुक्त होताहै वाजेयोंके सुख और धनके सुखककें युक्तहोताहै ॥ ५६ ॥ और जो रुधिरोद्गारी वर्षमें जन्मताहै सो कामी और लोभी और वडेदोषवाला और शस्त्रोंकी पीडाकरके पीडितहोताहै और खोटेकर्मकरणेवाला और कुनखीहोताहै ॥ ५७ ॥ और जो रक्ताक्षीवर्षमें जन्मताहै सो नेत्ररोगी सदामंददृष्टिवाला होताहै और गर्वकरके युक्तहोताहै और दुष्ट नहोताहै और वडाकामीहोताहै ॥ ५८ ॥ और जो क्रोधनवर्षमें जन्मताहै सो ठगहोताहै और पापवुद्धिवाला होताहै और निर्गुण तपस्वी होताहै और क्रूरहोताहै और धातुवादी होताहै और भयकेकरणेवाला होताहै ॥ ५९ और जो क्षयवर्षमें जन्मताहै जन्मता हि रोगरूपहोताहै और परसेवाके करणेवाला और दुष्टहोताहै औरधर्मकरके रहितहोताहै ६० इति० येहसाठसंवत्सरोंकेफलकहेहै शिवम्

अब उत्तरायण और दक्षिणायनमें जन्मनेकाफलकहतेहैं जोमनुष्य उत्तरायणसूर्यमें जन्मताहै सो स्त्रीकरके युक्तहोताहै और सुखकरके गुणाकरके युक्तहोताहै और वडीआयुवाला और आचार वुद्धिवालाऔर चतुरहोताहै और देवता ब्राह्मण आचार्य्य इनकेचरणोंकी सेवाकरणेवाला और यशवाला होताहै ॥ १ ॥ और जो मनुष्य दक्षिणायनसूर्यमे जन्मताहै सो क्रूर और शठ और रोगोंकरयुक्त तिसका देहहोताहै। और पापी और क्रूरवुद्धिवाला और चोरीमें रत और देहसेंक्लेश और परस्त्रीमें सक्त होताहै और वडीनिद्रावाला होताहै ॥ २ ॥ अवछेऋतूमेंजन्मने. काफलकहतेहैं जो मनुष्य शिशिरऋतुमें जन्मताहै सो वलवान् और सुखी और चिरकालआयुवाला होताहै और मिष्टान्नभोजनकरणेवाला और शुभआचारवाला और दतमें रोगवाला होताहै ॥ १ और

॥ अथायनजफलम् ॥ त्रियायुतःसौख्यगुणान्वितश्चदीर्घायुराचारमतिःप्रवीणःदेवद्विजाचार्य्यपदानुरक्तःसौम्यायनेजातनरोयशस्वी ॥ १ क्रूरःशठोरोगयुतप्रदेहःपापात्मकश्चौर्यरतःकृशश्च पौंश्चल्यकृत्क्रूरमतिःशिशुश्चस्याद्दक्षिणाख्यायनजोतिनिद्रः ॥ २ ॥ अथऋतुफलम् ॥ शिशिरेजायतेमर्त्योबलसौख्यचिरायुषः मिष्टान्नाशीशुभाचारोदंतरोगीप्रजायते ॥ १ ॥ सुखीभोगीगुणीकांतः सत्यव्यसनकृद्भवेत् वसंततौनरोजातोदानकीर्तिपरोभवेत् २ वापीकूपतडागादिदेवतालयकृद्भवेत् ॥ शास्त्रविज्ञानदाताचग्रीष्मतौजायतेनरः ॥ ३ ॥ देशग्रामपुराध्यक्षःकृषिकर्ताभवेत्सदा शास्त्रसंग्रहणेदक्षोवर्षाजातोनरोभवेत् ४ व्यापारकुशलोमंत्रीज्वररोगविवर्जितः ॥ पंडितोगुणवान्धीरःशरदीहनरोभवेत् ॥ ५ ॥ सौधागारनिवासीचधर्मिष्ठःसत्यवाक्शुचिः ॥ भुंजतेमिष्टमाहारंनरोहेमंतसंभवः ॥ ६

जो मनुष्य वसंतऋतुमें जन्मताहै सो सुखी और भोगी और गुणी और स्वामी और सत्यव्यसनी सत्यबोलनेवाला और दानमें और यशमें तत्परहोताहै ॥ २ ॥ और जो मनुष्य ग्रीष्म ऋतुमें जन्मताहै सो वाउली खूहे तलायसे आदले करके और देवताके मंदिरवनावनेवालाहोताहै और शास्त्रके जाननेवाला और ज्ञानकेउपदेशकरणेवाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो मनुष्य वर्षाऋतुमें जन्मताहै सो देशोंका ग्रामोंका और पुरोंका स्वामी होताहै और सर्वदा काल खेतीके कर्मको कर्ताहै और शास्त्रके संग्रहकरणेमें चतुरहोताहै ॥ ४ ॥ और जो शरदऋतुमें-जन्मताहै सो व्यापारमें चतुरहोताहै और मंत्रीहोताहै और ज्वररोगसें रहितहोताहै और पंडित गुणवान् धैर्यवाला होताहै ॥ ५ ॥ और जो हेमंतऋतुमें जन्मताहै सो महलोंमें निवासकरणेवाला और-धर्मात्मा और सत्यकहने वालाहोताहै और पवित्रहोताहै औरमिष्टान्नभोजन कर्ताहै ॥ ६ ॥

अथमासोत्पन्नकाफलकहतेहैं जो मनुष्य चैत्रकेमहीनेमें जन्मताहै सो नित्यप्रति ब्रह्मचर्यमें रहिताहै और वेदकेपढ़नेमें तत्परहोताहै और गुरु देवता ब्राह्मण इनोंको भक्तिकरणेवाला होताहै ॥ १ और जो मनुष्य वैशाखमहीनेमें जन्मताहै सो सपूर्णलक्षणोंकर युक्तहोताहै और दीर्घदृष्टिवाला और कलाके जाननेमें समुद्रहोताहै और सात्विकस्वभाववाला और चिरकालजीवनेवालाहोताहै ॥ २ ॥ और जो ज्येष्ठमासमें जन्मताहै सो चतुर संपूर्णकार्योंमें होताहै और बुद्धिवाला और परीक्षाकरणेवाला होताहै और नित्यप्रति वस्तुक खरीदने और वेचनेवाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो आषाढमासमें जन्मताहै सो निर्धन और वहुतभोजनकरनेवाला और कुष्ठी और हलकर्ममें सर्वदायुक्तहोनेवाला और व्याधियुक्त और मूर्खबुद्धिहोताहै ॥ ४ ॥ और जो श्रावणमासमें जन्मताहै सो वेदकर्ममें चतुरहोताहै

॥अथमासोत्पन्नजफलम् ब्रह्मचर्यरतोनित्यंवेदाध्ययनतत्परः, गुरुदेवद्विजातीनां भक्तश्चैत्रसमुद्भवः ॥ १ ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तोदीर्घदर्शिकलानिधिः सात्विकश्चिरजीवीचवैशाखेजायतेनरः ॥ २ ॥ निपुणःसर्वकार्येषुमतिमांश्चपरीक्षकः ॥ क्रयविक्रयकृन्नित्यंभवेज्ज्येष्ठेचमानवः ॥ ३ ॥ निर्धनोवहुभुक्कुष्ठीहलकर्मरतःसदा ॥ व्याधितोमूर्खबुद्धिश्चभवेदाषाढजोनरः ॥ ४ ॥ श्रावणेजायतेमर्त्योवेदकर्मसुकौशलः पुत्रदारधनैर्युक्तःसर्वलोकेप्रपूजकः ॥ ५ ॥ भोगीदाताकृशोदीर्घोगौरः कामीवहुस्त्रिकः ॥ पुत्रवान्धनवान्श्रीमान्नरोभाद्रपदेभवेत् ६ ॥ आश्विनेचनरो जातोविभुर्भूपप्रियोभवेत् वहुभृत्यःस्त्रियायुक्तोवव्हपत्योल्पजीवितः ॥ ७ वाचालोवक्रबुद्धिश्चकुंचिताग्रकचोलसः ॥ कार्तिकेजायतेनित्यंब्रह्मचर्यरतोभवेत् ॥ ८ तीर्थयात्रापरोनित्यंमंत्रदीक्षापरायणः मार्गमासेभवेन्मर्त्यःसदाशास्त्रार्थसंचकः ९

और पुत्रस्त्रीधनकरकेयुक्त और सपूर्णलोकोंकरपूज्य होताहै ॥ ५ ॥ और जो भाद्रपदमासमें जन्मताहै सो भोगी और दाता और देहसेकृश और लंबाहोताहै और गौर वर्णका होताहै और कामी और वहुतस्त्रीयोंवाला होताहै और पुत्रोंवाला और धनवाला और शोभावाला होताहै ॥ ६ ॥ और जो आश्विनमासमें जन्मताहै सो ऐश्वर्यवाला और राजाका प्यारा होताहै और वहुतचाकर और स्त्रीयोंकरके युक्तहोताहै और वहुतसंतानोंवाला और अल्पजीवी होताहै ॥ ७ ॥ और जो कार्तिकमासमें जन्मताहै सो वाचाल और उलटीबुद्धिवाला और कुंचितकेशोंवाला और आलसी और ब्रह्मचर्यमेंरतहोताहै ॥ ८ ॥ और जो मार्गशीर्षमें जन्मताहै सो नित्यप्रतितीर्थयात्रामें तत्परहोताहै और मंत्रदीक्षामें तत्परहोताहै और सर्वशास्त्रार्थका संचयकर्ताहै ॥ ९ ॥

और जो पौषमासमें जन्मताहै सो दुःखदेनेवाला होताहै और नित्यप्रति संपूर्णरोगोंकरके युक्तहोताहै और पापमार्गमें युक्तहोताहै १० और जो माघमासमें जन्मताहै सो तपस्वी और वेदवेदांगोंके जानने वाला होताहै और शांतचित्त और दयाकरके युक्त और चतुरहोताहै ११ और जो फाल्गुणमासमें जन्म ताहै सो सुकुमारस्वरूप होताहै और सर्वदाकालभोगोंको भोगताहै और कामी और स्त्रीयोंका प्यारा और सुखीहोताहै हाथीघोड़े और श्रेष्ठभूषणोंवाला होताहै १२ अबपक्षकाफलकहतेहैं जो मनुष्य शुक्लपक्षमें जन्मताहै सो बड़ीआयुवाला और पुत्रोंवाला और बहुतजीवोंके पालनेवाला और दाता और मित्रोंका मानकरणेवाला और स्त्रीकरके वश्यहोताहै १ और जो कृष्णपक्षमें जन्मताहै सो आलसी और मलीन और द्वेषी और निंदक और ग्वार बातोंके करणेवाला और संपूर्णधर्मोंसे निकालया हुवा होताहै ॥ २ ॥ अबप्रतिपदादितिथ्युत्पन्नकाफलकहतेहैं और जो प्रतिपदातिथिमें जन्मताहै सो

पुष्यमासेसमुत्पन्नोनरोदुःखप्रदोभवेत् सर्वरोगयुतोनित्यंपापमार्गरतःसदा॥ १०
योगीश्वरस्तपोनिष्ठोवेदवेदांगपारगः शांतोदयान्वितोदक्षोनरोमाघेप्रजायते
॥ ११ ॥ सुकुमारःसदाभोगीकामीस्त्रीवल्लभःसुखी फाल्गुनेजायतेबालोगजा
श्ववरभूषणः ॥ १२ ॥ अथपक्षोत्पन्नफलम् ॥ शुक्लपक्षेनरोजातोदीर्घायुःपुत्र
वान्भवेत् ॥ बहूनांपालकोदातासुहृन्मानीप्रियाजितः ॥ १ ॥ अलसोमलिनोद्वे
षीनिंदकग्राम्यभाषणः कृष्णपक्षेभवन्मर्त्यस्सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ २ अथतिथ्यु
त्पन्नफलम् प्रतिपद्दिवसेजातस्त्रिदिनेचत्रिमासकम् जीवितःसन्महातेजावर्षा
शीतिचिरायुषः ॥ १ ॥ द्वितीयादिवसेजातोनरःसत्यवचोभवेत् ॥ जनानंदकरः
श्लाघ्यः स्वकर्मनिरतःसदा॥ २॥ तृतीयायांनरोजातः स्त्रीलोलःकृपणश्चलः
व्रतोपवासनिरतोमूर्खोवादीबलान्वितः ॥ ३ ॥ चतुर्थ्यांतुनरोजातोलुब्धः
पिशुनवाग्भवेत् चंडःसाहसिकः शूरश्चलचित्तः सुखान्वितः ॥ ४ पंचम्यां
चनरोजातोमानीदीर्घायुषोभवेत् ॥ महामतिः स्थिरः शूरःसत्यवादीजितेंद्रियः ५

तीनदिन अथवातीनमास जीवतारहे तब बड़ेतेजवाला अशीति ८० वर्षपर्यंतआयुवाला होताहै १ और जो द्वितीयामें जन्मताहै सो सत्यबोलनेवाला होताहै और लोकोंको आनंदकेकरणेवाला होताहै और स्तुतिकरणेयोग्य होताहै और आपनेकर्ममें रतहोताहै ॥ २ ॥ और जो तृतीयातिथिमें जन्मताहै सो स्त्रीलंपट होताहै और दीन और चलचित्तहोताहै और व्रतोपवासोंके करणेवाला और मूर्ख वादकरणे वाला और बलीहोताहै ॥ ३ ॥ और चतुर्थीमें जन्मता जोहै सो लोभी और चुगलीकरणे वालाहोता है और प्रचंडतेजवाला और हठकरणेवाला और शूरवीर और चलचित्त और सुखकरके युक्तहोताहै ४ और जो पंचमीमेंजन्मताहै सो मानकरणेवाला और बड़ीआयुवाला होताहै और बड़ीबुद्धिवा ला और स्थिरस्वभाववाला और शूरवीर और सत्यबोलनेवाला और इंद्रियोंकोजीतनेवालाहोताहै ५

॥ और जो षष्ठी मे जन्मताहै तिसका देहफोड्यों कर चिन्हत और स्थिरहोताहे और स्त्रीलंपट और श्रेष्ठभागोवाला और विद्यामे यशमे तत्परहोताहै ॥ ६ ॥ और जो सप्तमीमें जन्मताहै सो धनवानगुणवान और गुरुदेवताके पूजनेवाला और सदाचारमें दृढव्रतहोताहै ॥ ७ ॥ और जो अष्टमीमें जन्मताहै सो अपनीस्त्रीमें तर होताहै और बहुभाषी और अतिचपल चलचित्तऔर कठोरहोताहै ॥ ८ ॥ और जो नवमीमेंजन्मताहै सो कामकालोभी और वड़ाशूरवीर और गीतनृत्यमें रत और शत्रुयोंकानाशकरणेवाला और वड़ाक्रोधीहोताहै ॥ ९ ॥ और जो दशमीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै और शस्त्रोंकर और फोड्योंकर तिसका देहचिन्हत होताहै और पवित्रहोताहै और वड़ेभागों वालाहोताहै और चलचित्तहोताहै ॥ १० ॥ और जो एका

षष्ठ्यांचैवनरोजातोव्रणांकिततनुःस्थिरः ॥ स्त्रीलोलुपोतिसुभगोविद्याकीर्तिपरोभवेत् ॥ ६ सप्तम्यांजायतेमर्त्योधनवान्गुणवान्भवेत् ॥ गुरुदेवार्चनपरः सदाचारदृढव्रतः ॥ ७ ॥ अष्टम्यांतुनरोजातः स्वदारनिरतोभवेत् ॥ बहुभाषीतिचपलश्चलचित्तोतिनिष्ठुरः ॥ ८ ॥ कामलुब्धोमहाशूरोगीतनृत्यरतस्तथा शत्रुघ्नश्चमहाक्रोधीनवम्यांजायतेनरः ॥ ९ ॥ दशम्यांतुनरोजातः स्त्रीजितोस्त्रव्रणांकितः शुचिरत्यंतशुभगश्चलचित्तोमहामतिः ॥ १० ॥ एकादश्यांचजनितोलोकव्यापारकोविदः कलाशास्त्रेपुकुशलःसत्यवादीदृढव्रतः ॥ ११ द्वादश्यांतुनरोजातःसदाचारोतिदुःसहःसुभगोरतिलोलश्चवस्त्रभोजनतत्परः॥ १२ त्रयोदश्यांनरोजातःस्त्रीजितोज्ञानवान्भवेत् व्रतोपवासनिरतोमतिमान्गुणवान्भवेत् ॥ १३ ॥ चतुर्दश्यांनरोजातःसशुद्धःसर्वकर्मसु बुद्धिमान्व्याधिनिर्मुक्तः सदाबंधुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णिमायांनरोजातः पूर्णांगः सुस्थिरोभवेत् सदाहृष्टमनाःकामीसुभगोतिरणोभवेत् ॥ १५

दशीको जन्मताहै सो लोकव्यवहारमें चतुरहोताहै और कलाशास्त्रोंमें कुशलहोताहै और सत्यवादी और दृढव्रतहोताहै ॥ ११ ॥ और जो द्वादशीको जन्मताहै सो सर्वदा आचारीहोताहै और वडेक्रोधवाला होताहै औरश्रेष्ठभागों वाला और रतिमेंचंचल और वस्त्रभोजनमे तत्परहोताहै ॥ १२ ॥ और जो त्रयोदशीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै और ज्ञानीहोताहै और व्रतोपवासोंमें रतहोताहै और बुद्धिमान्गुणवान्होताहै ॥ १३ ॥ और जो चतुर्दशीको जन्मताहै सो संपूर्णकर्मोंमेंशुद्धचित्तहोताहै और बुद्धिमानहोताहै और व्याधिकर्के रहितहोताहै और सदासंबंधियोंकर्के युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ और जो पूर्णमासीकाजन्मताहै सो पूर्णअंगवाला और स्थिरस्वभाववाला होताहै और सर्वदाप्रसन्नमन औरकामी और श्रेष्ठभागोवालाहोताहै ॥ १५ ॥

उौर जो अमावस्यामें जन्मताहै सो इंद्रियोंकर्केदुःखीहोताहै उौर सुखकर्केरहितहोताहै और मंद भागों वालाहोताहै उौर वलकर्केहीनहोताहै उौर चित्तमें वहुतव्याकुलहोताहै १६ अववारोत्पन्नका फलकहतेहैं जो मनुष्यआदित्यवारमेंजन्मताहै सो स्थिरस्वभाववाला उौर वड़ेतेजवाला उौर रक्तश्या मदेहवाला उौर पवित्रहोताहै उौर तिसकेदेहमें पित्तअधिकहोताहै उौर अतिचतुरहोताहै १ उौर जो सोमवारमेंजन्मताहै सो सत्वगुणवाला उौर देहकर्के वधनेघटनेवाला उौर मदरा उौरगौर वर्ण वाला उौर वड़ीछातीवाला उौर बुद्धिमानहोताहै २ उौर जो मंगलवारमेंजन्मताहै सो शस्त्रधारीयोंकी वृत्तीकर्ताहै लालरंगकेविशालनेत्रोंवाला होताहै उौर वाणीकोंरोकनेवाला उौर मीठेस्वभाववाला और क्षमाकरणेवालाहोताहै ३ उौर जो बुधवारमेंजन्मताहै सोचतुरगोलशिर वाला उौर गोलपैरोंवाला

अमायांतुनरोजातः इंद्रियार्त्तिगतो सुखी दुर्भगोवलहीनश्चचित्तेवहुसमाकुलः ॥ १६ ॥ अथवारोत्पन्नफलानि स्थिरःप्रचंडः शूरस्तुरक्तश्यामतनुःशुचिः ॥ पित्ताधिकोतिचतुरोजायतेसूर्यवासरे १ ॥ सोमवारेनरोजातःसात्विकःक्षयवृद्धि मान् ह्रस्वकायोतिगौरश्चपृथुवक्षाःसुवुद्धिमान् २॥ क्षात्रवृत्तिसमायुक्तोजनयेद्भौ मवासरे रक्तायतलोचनश्चवाग्यतोमधुरोक्षमी ३॥ निपुणोतिवृत्तशिरःपादश्चैव तथाकविः रूपवान्मतिचापल्योजनितोवुधवासरे ४॥ सुधीःसद्बहुलोकज्ञःकाल शास्त्रविदःशुचिः प्रगल्भःकुशलोधीरःसंभवेद्गुरुवासरे ५ ॥ प्रच्छन्नकार्य्यःसुम. तिर्जातःशुक्रस्यवासरे ॥ सुधीःसद्बहुलोकज्ञःकलाशास्त्रविदःशुचिः ॥ ६ ॥ रूक्षोदुर्वलदेहश्चमलिनोतिचलःखलः ॥ रौद्रःक्रोधपरोनित्यंजनितःशनिवास रे ७ ॥ अथनक्षत्रफलानिहोराप्रदीपे ॥ विभूषणेप्सुर्मतिमान्शशांकेदक्षःसु रूपःसुभगोश्विनीषु दक्षःशुचिःसत्यवचोभरण्यांभवेदरोगःकृतनिश्चयश्च ॥ १ ॥

उौर कविताकरणेवाला रूपवाला उौर चपलवुद्धीवालाहोताहै ४ उौर जो बृहस्पतिवारमें जन्मताहै सो श्रेष्ठवुद्धिवाला वहुतलोकोंमें प्रसिद्ध कालशास्त्रमें चतुर उौर पवित्र प्रगल्भ उौर धीर्यवालाहोता है ५ उौर जो शुक्रवारमें जन्मताहै सो गुप्तकार्यकरणेवाला श्रेष्ठवुद्धिवाला श्रेष्ठमुखवाला उौर लो कोंमेंप्रसिद्ध उौर कलाशास्त्रके जाननेवाला उौर पवित्रहोताहै ६ और जो शनिवारमें जन्मताहै सो रूक्ष और दुर्वलदेहवाला और मलीन और अत्यंतचलचित्त और दुष्टहोताहै और वड़ाभयानक और नित्यहि क्रोधकर्के युक्तहोताहै ७ अथनक्षत्रमेंजन्मनेकाफलहोराप्रदीपग्रंथमेंकहतेहैं जो मनुष्य अश्विनीनक्षत्रमें जन्मताहै सो भूषणोंकी इच्छावाला और बुद्धिमान् और श्रेष्ठरूपवाला और चतुर श्रेष्ठभागों वालाहोताहै ॥ १ ॥ और भरणीमें जो जन्मताहै सो चतुरपवित्र सत्यबोलने वाला और रोगराहित और निश्चयवालाहोताहै २ ॥

॥ श्रीर जो षष्ठी में जन्मताहै तिसका देहफोड़यों कर चिन्हत श्रीर स्थिरहोताहै श्रीर स्त्रीलंपट श्रीर श्रेष्ठभागोंवाला श्रीर विद्यामें यशमें तत्परहोताहै ॥ ६ ॥ श्रीर जो सप्तमीमें जन्मताहै सो धनवानगुणवान श्रीर गुरुदेवताके पूजनेवाला श्रीर सदाचारमें दृढव्रतहोताहै ॥ ७ ॥ श्रीर जो अष्टमीमें जन्मताहै सो अपनीस्त्रीमें तत्पर होताहै श्रीर बहुभाषी श्रीर अतिचपल चलचित्तश्रीर कठोरहोताहै ॥ ८ ॥ और जो नवमीमेंजन्मताहै सो कामकालोभी और बड़ाशूरवीर और गीतनृत्यमें रत और शत्रुओंकानाशकरणेवाला और बड़ाक्रोधीहोताहै ॥ ९ ॥ और जो दशमीमें जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै और शस्त्रोंकर श्रीर फोड़योंकर तिसका देहचिन्हत होताहै और पवित्रहोताहै और बड़ेभागों वालाहोताहै और चलचित्तहोताहै ॥ १० ॥ और जो एका

षष्ठ्यांचैवनरोजातोव्रणांकिततनुःस्थिरः ॥ स्त्रीलोलुपोतिसुभगोविद्याकीर्तिपरोभवेत् ॥ ६ सप्तम्यांजायतेमर्त्योधनवान्गुणवान्भवेत् ॥ गुरुदेवार्चनपरः सदाचारदृढव्रतः ॥ ७ ॥ अष्टम्यांतुनरोजातः स्वदारनिरतोभवेत् ॥ बहुभाषीतिचपलश्चलचित्तोतिनिष्ठुरः ॥ ८ ॥ कामलुब्धोमहाशूरोगीतनृत्यरतस्तथा शत्रुघ्नश्चमहाक्रोधीनवम्यांजायतेनरः ॥ ९ ॥ दशम्यांतुनरोजातः स्त्रीजितोस्त्रव्रणांकितः शुचिरत्यंतशुभगश्चलचित्तोमहामतिः ॥ १० ॥ एकादश्यांचजनितोलोकव्यापारकोविदः कलाशास्त्रेषुकुशलःसत्यवादीदृढव्रतः ॥ ११ द्वादश्यांतुनरोजातःसदाचारोतिदुःसहः सुभगोरतिलोलश्चवस्त्रभोजनतत्परः ॥ १२ त्रयोदश्यांनरोजातःस्त्रीजितोज्ञानवान्भवेत् व्रतोपवासनिरतोमतिमान्गुणवान्भवेत् ॥ १३ ॥ चतुर्दश्यांनरोजातःसशुद्धःसर्वकर्मसु बुद्धिमान्व्याधिनिर्मुक्तः सदाबंधुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णिमायांनरोजातः पूर्णांगः सुस्थिरोभवेत् सदाहृष्टमनाःकामीसुभगोतिरणोभवेत् ॥ १५

दशीकों जन्मताहै सो लोकव्यवहारमें चतुरहोताहै और कलाशास्त्रोंमें कुशलहोताहै और सत्यवादी और दृढव्रतहोताहै ॥ ११ ॥ और जो द्वादशीकों जन्मताहै सो सर्वदा आचारीहोताहै श्रीर बड़ेक्रोधवाला होताहै औरश्रेष्ठभागों वाला और रतिमेंचंचल और वस्त्रभोजनमे तत्परहोताहै ॥ १२ ॥ और जो त्रयोदशीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै श्रीर ज्ञानीहोताहै और व्रतोपवासोंमें रतहोताहै और बुद्धिमान्गुणवान्होताहै ॥ १३ ॥ और जो चतुर्दशीकों जन्मताहै सो संपूर्णकर्मोंमेंशुद्धचितहोताहै और बुद्धिमानहोताहै और व्याधिककें रहितहोताहै और सदासंबंधियोंकर्के युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ और जो पूर्णमासीकोंजन्मताहै सो पूर्णअंगवाला और स्थिरस्वभाववाला होताहै और सर्वदाप्रसन्नमन औरकामी और श्रेष्ठभागोंवालाहोताहै ॥ १५ ॥

और जो मूलानक्षत्रमें जन्मताहै सोसुखीनहींहोताहै और हिंसाके करणेवाला होताहै और धन मान भोगकर्केयुक्त और स्थिरस्वभाववाला होताहै १९ और जो पूर्वाषाढामें जन्मताहै सोविशेषकर्के आनंद और स्त्री और मानवाला और दृढमित्रोंवाला होताहै २० और जोउत्तराषाढामें जन्मताहै सो श्रेष्ठ बहुतमित्रोंकर और धर्मकरयुक्त होताहै और कृतज्ञ और श्रेष्ठभागोंवाला होताहै २१ और जो श्रवणमें जन्मताहै सो बड़ाउदार होताहै और श्रुतज्ञ होताहै और धनीहोताहै और प्रसिद्ध लक्ष्मीवाला होताहै २२ और जो धनिष्ठामेंजन्मताहै सो धनकादाता होताहै और शूर वीर होताहै और धनीहोताहै और रोगोंकर्के रहितहोताहै और रतिका प्याराहोताहै २३ और जो शतभिषामें जन्मताहै सो स्पष्टवाणीवाला और रसिक और दुर्ग्राह्य और व्यसनी और शत्रुयोंके जीतनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और पूर्वाभाद्रपदामें जो जन्मताहै सो उदासचित्तवाला और धनी और चतुर

सुखीनहिंस्त्रोधनमानभोगयुतःस्थिरोमूलगतेशशांके व्यभीप्सितानंदकलत्रमानोनरोंबुदैवेदृढसौहृदश्च १० वैश्वेविनीतोवहुमित्रधर्मयुतःकृतज्ञःसुभगःशशांके उदारसारःश्रुतवान्धनीचश्रीमान् प्रसिद्धःश्रवणेनरःस्यात् ११ शूरोर्थदाता धनवांस्त्वरोगीरतिप्रियोवासवभेप्रजातः ॥ स्यात्स्पष्टवाक्स्वारसिकोंवुपर्क्षे दुर्ग्राह्यइन्दौव्यसनीजितारिः १२ ॥ उद्विग्नचित्तोधनवान्पटुश्च अजांघ्रिभेस्त्रीविजितस्त्वदाता वक्ताप्रजावान्सुसुखोमृगांकोहिर्वुध्न्यभेधर्मरतोजितारिः १३ ॥ संपूर्णदेहःशुभगोतिशूरःशुचिर्द्धनीपौष्णगतेशशांके विज्ञेयमेतन्निरुपद्रवेभेफलंवलिधेरजनीपतौच १४ अथचरणफलम् अश्विन्याःप्रथमेपादेजातोभवतितस्करः द्वितीयेचाल्पकर्माचतृतीयेसुभगोभवेत् ॥ १ ॥ पादेचतुर्थकेभोगीदीर्घायुर्जीयतेनरः त्यागीयाम्याद्यपादेस्याद्द्वितीयेधनवान्सुखी ॥ २ ॥

और सोजित और दाननहिंकरणे वालाहोताहै ॥ २५ ॥ और जो उत्तराभाद्रपदामें जन्मताहै सो वक्ता और पुत्रोंवाला और श्रेष्ठसुखवाला और धर्ममेंरत और शत्रुयोंको जीतनेवाला होताहै ॥ २६ और जो रेवतीमें जन्मताहै सो सपूर्ण अंगोंवाला और श्रेष्ठभागोंवाला और शूरवीर पवित्रहोताहै २७ इहेजन्मनक्षत्रोंका फलहोताहै परंतु कैसेनक्षत्रहोवें उपद्रवकर्के ग्रहणग्रहयुद्धभूकंपादिदोषोंकर रहितहोवें और चंद्रमावलीहोवे तव यथोक्तफल होताहै १४ अवनक्षत्रोंकेचरणोंकाफलकहतेहैं अश्विनीके प्रथमचरणमेंजन्मे तो चोर होताहै और दूसरेचरणमें थोड़ेकर्मकरणे वालाहोता है और तीसरेमें श्रेष्ठभागों वाला होताहै और चउथेमें भोगी और बड़ी आयुवाला होताहै १ और भरणीके प्रथमपादमें त्यागी और दूसरेमें धनवान् सुखी

और जो कृतिकामें जन्मताहै सोपरस्त्रीगामी और बहुतरोगों वाला और जगतमें प्रसिद्धतेजवाला होताहै ३। और जो रोहिणीमें जन्मताहै सो मीठाबोलनेवाला और सुंदररूपवाला और स्थिरचित्त वाला पवित्र और सत्यबोलनेवाला होताहै ४ और जो मृगशिरामें जन्मताहै सो उत्साहवालाऔर भोगभोगनेवाला और धनकर्केयुक्त और डरनेवाला और चतुरऔर चलचित्तहोताहै ५ और जोआर्द्रामे जन्मताहै सो शठऔर दुष्ट पापी कृतघ्न हिंसाके करणेवाला और अभिमानी होताहै ६ और जो पुनर्वसुमे जन्मताहै सो इंद्रियोंके रोकनेवाला श्रेष्ठस्वभाव बुद्धिवाला और तृषाकीइच्छावालाऔर रोगयुक्तभी सुखी रहिताहै ७ और जोपुष्यमेजन्मताहै सो पंडित शांतचित्तवाला औरसौभाग्यकर्के युक्त और धर्मार्थकर्केयुक्तहोताहै ८ और जो श्लेषानक्षत्रमें जन्मताहै सो धूर्त और शठ और पापमें रत और कृतघ्न औरसर्वभक्षी होताहै ९ और जो मघानक्षत्रमें जन्मताहै सो उद्यमी और भोग और चाकर और धनकर्के युक्त और पितरोंका देवताका भक्त होताहै १० और जो पूर्वाफाल्गुणीमें जन्मताहै सो मीठाबोलने

स्यात्कृत्तिकास्वन्यकलत्रगामीप्रभूतरुक्ख्यातियुतःसुतेजाः ॥ प्रजापतेभेंप्रियवाक्सुरूपःस्थिरःशुचिःसत्यवचाःशशांके ॥ २ ॥ उत्साहभोगार्थयुतोमृगांकेभीरुःपटुःस्याच्चतुरश्चलश्च ॥ शठःखलःपापरतःकृतघ्नोहिंस्रोतिगर्वीशिवभेशशांके ३ ॥ दांतःसुशीलःसुमतिःपिपासुःसरुक्सुखीचादितिभेल्पतुष्टः स्यात्पण्डितःशांतमनाःशशांकेसौभाग्यधर्मार्थयुतश्चपुष्ये ॥ ४ ॥ धूर्त्तःशठःपापरतःकृतघ्नःस्यात्सर्वभक्ष्योभुजगर्क्षसंस्थे ॥ चंद्रेमघास्वुद्यमभोगभृत्यधनान्वितःस्यात्पितृदेवभक्तः ५ प्रियंवदोभूपतिसेवकश्चदातानरःकांतियुतोभगर्क्षे विद्यार्थयुक्तःसुखभोगभोगीसौभाग्ययुक्तोर्यमभेशशांके ६ चौरोघृणीपापरतोतिधूर्त्तःउत्साहवान्शीतकरेकरस्थे ॥ चित्रासुचित्रांबरमाल्यधारीसुलोचनांगःपुरुषश्चजातः ७ ॥ दाताकृपालुःप्रियवाक्धनीचधर्माश्रितःशीतकरेनिलर्क्षे ॥ ईर्ष्युर्नरःकांतियुतोतिलुब्धोद्विदैवतेवाक्चतुरःकुलेप्सुः ८ ॥ विदेशवासीधनवान्क्षुधालुश्चंद्रेनुराधाप्रभवोनरःस्यात् ज्येष्ठासुसंतोषरतोतिकोपोनभूरिमित्रोनिरतश्चधर्मे ॥ ९

वाला और राजाका सेवक और दाता और शोभाकर्के युक्तहोताहै ११ और जो उत्तराफाल्गुणीमे जन्मताहै सो विद्याकर्के धनकर्के युक्तहोताहै और सुखकेभोगोंकोभोगनेवाला होताहै और सौभाग्यताकर्के युक्तहोताहै १२ और जो हस्तमें जन्मताहै सो चोर और निर्लज्ज और पापमेंरत और धूर्त उत्साही होताहै १३ और जो चित्रामें जन्मताहै सो विचित्रवस्त्र और पुष्पमाला धारताहै और श्रेष्ठनेत्र और अंगोंवाला होताहै १४ और जो स्वातीमें जन्मताहै सो दाता और दयावान् और मीठाबोलनेवाला और धनी और धर्ममें स्थितहोताहै १५ और जो विशाखामें जन्मताहै सो ईर्षावाला और शोभावाला और लोभी और वाणी कर्के चतुरहोताहै १६ और जो अनुराधामें जन्मताहै सो विदेशरहणे वाला और धनी और क्षुधायुक्त होताहै १७ और जो ज्येष्ठामें जन्मताहै सो संतोषमे रतहोताहै और वडेक्रोधवाला होताहै वहुतमित्रों वाला नहिंहोताहै और धर्ममें रतहोताहै १८

और हस्तके प्रथमपादमें जन्मे तो शूरवीर होताहै और दूसरेमें वादकरणेवाला और रोगी होताहै और तीसरेमें धनधान्यकर्के युक्तहोताहै और चउथेमें लक्ष्मीवाला शोभाकर्के युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ और चित्राके प्रथमपादमें चोर दूसरेमें चित्रकार तीसरेमें परस्त्रीगामी चउथेमें पंडित होताहै ॥ १५ और स्वातीके प्रथमपादमें चोर और दूसरेमें थोड़ी आयुषावाला और तीसरेमें धर्मी चउथेमें राजा होताहै ॥ १६ ॥ और विशाखाके प्रथमपादमें नीतीके जाननेवाला दूसरेमें शास्त्रके जाननेवाला तीसरेमें वादकरणेवाला चउथेमें वड़ी आयुषावाला होताहै ॥ १७ ॥ और अनुराधाके प्रथमपादमें वड़े तेजवाला दूसरेमें धर्मी तीसरेमें चिरकाल जीणेवाला चउथेमें व्यभिचारी होताहै ॥ १८ ॥ और जो ज्येष्ठाके प्रथमपादमें जन्मताहै सो क्रूरहोताहै और दूसरेमंभोगीहोताहै और तीसरेमें विद्यावान् हो-

हस्तेजातोयदाबालःशूरोवादीचरोगवान् धनधान्ययुतःश्रीमान्फलंस्यात्प्रथमादितः ॥ १४ ॥ चित्रायांप्रथमात्पादात्फलंजातस्यकथ्यते । चोरश्चित्रकरःसस्यात्परदारीचपंडितः १५॥स्वात्याद्यपादतःपुत्रसंभवस्यफलंक्रमात् तस्करोल्पायुषोधर्मीनृपतिःस्यान्नसंशयः ॥ १६ ॥ विशाखाजातपुत्रस्यफलंपादचतुष्टये नीतिज्ञःशास्त्रवेत्तात्रवादीदीर्घायुषोभवेत् ॥ १७ ॥ तीव्रोधर्मपरोदीर्घजीवी पुंश्चल्यसंयुतः अनुराधादिपादादिजातस्यचक्रमादिदम् ॥ १८ ॥ क्रूरोभोगीचविद्वांश्चपुत्रवान्जायतेनरः ज्येष्ठापादचतुष्टस्यजा तस्यचफलंक्रमात् ॥ १९ मूलपादादिजातस्यनरस्यचफलंक्रमात् भोगीत्यागीसुमित्रश्चनृपतिर्जायतेनरः २० ॥ पूर्वाषाढाद्यपादादिजातस्यचयथाक्रमम् श्रेष्ठोराजप्रियोवादीधनीभवतिनिश्चितम् २१ वैश्वपादादिजातस्यफलंज्ञेयंचतुष्टये नृपोमित्रविरोधीचमानीधर्मरतोभवेत् २२ शुभमानीशुभगुणोविद्वांश्चधार्मिकोभवेत् श्रवणस्यचतुः पादजातस्यचफलंक्रमात् ॥ २३ ॥ दीर्घायुःपीड़ितोभीरुर्महानारीवरोभवेत् धनिष्ठाप्रथमात्पादादुत्पन्नस्ययथाक्रमम् ॥ २४ ॥

ताहै और चउथेमें पुत्रोंवाला होताहै ॥ १९ ॥ और मूलाकेप्रथमपादमें भोगी दूसरेमें त्यागी तीसरेमें श्रेष्ठमित्रोंवाला चउथेमें राजा होताहै २० ॥ और पूर्वाषाढ़ाके प्रथमपादमें श्रेष्ठहोताहै दूसरेमें राजाका प्याराहोताहै तीसरेमें वादकरणेवाला होताहै चउथेमें धनी होताहै ॥ २१ और उत्तराषाढ़ाके प्रथमचरणमें राजा और दूसरेमें मित्रकेसाथ विरोधकरणेवाला और तीसरेमें मानकरणेवाला और चउथेमें धर्ममें रतहोताहै ॥ २२ ॥ और श्रवणके प्रथमपादमें श्रेष्ठमानी दूसरे में श्रेष्ठगुणोंवाला तीसरेमें विद्यावान् चउथेमें धर्मीहोताहै ॥ २३ ॥ और धनिष्ठाके प्रथमपादमें वड़ी आयुषावाला दूसरेमें पीड़ाकर्केयुक्त तीसरेमें डरणेवाला चउथेमें श्रेष्ठस्त्रीवाला होताहै ॥ २४ ॥

और तीसरेमेंक्रूरकर्मकरणेवाला और चउथेमें दरिद्रीहोताहै ॥ २ ॥ और कृतिकाके प्रथमचरणमें तेजस्वी और दूसरेमें शास्त्रके ज्ञानवाला और तीसरेमें ऐश्वर्यवाला और चउथेमें बड़ी आयुषा और बहुतपुत्रों वालाहोताहै ३ और रोहिणीके प्रथमचरणमें जन्मे तो सौभाग्यवाला और दूसरे चरणमें पीड़ावाला और तीसरेमें डरनेवाला और चउथेमें सत्यबोलने वालाहोताहै ॥ ४ ॥ और मृगशिराके प्रथमचर्णमें जन्मे तो राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें भोगी चउथेमें धनधान्यकर्के युक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और आर्द्राके प्रथमचर्णमें जन्मे तो व्ययी बहुतखर्चकरने वाला और दूसरेमेंदरिद्री और तीसरेमें थोड़ीआयुषावाला और चउथेमें चोर होताहै ६ ॥ ७ ॥ और पुनर्वसुके प्रथमपादमें जन्मे तो सुखी दूसरेमें विद्यावान् तीसरेमें रोगकर्के युक्त चउथेमें कोमल

तृतीयेक्रूरकर्माचचतुर्थेंथोदरिद्रभाक् वन्ह्यर्क्षप्रभवोवालस्तेजस्वीप्रथमांशके ३ द्वितीयेशास्त्रविज्ञानीतृतीयेसौख्यंभाग्भवेत् दीर्घायुर्वहुपुत्रश्चचतुर्थेचरणेभवेत् ४ सौभाग्यंचतथापीड़ाभीरुत्वंसत्यवादनम् रोहिणीसंभवस्यैवफलंपादचतुष्टये ५ नृपतिस्तस्करोभोगीधनधान्यसमन्वितः क्रमेणमृगशीर्षस्यफलंपादचतुष्टये ६ रौद्रर्क्षप्रभवोवालोभवेत्पादचतुष्टयेव्ययीदरिद्रीस्वल्पायुस्तस्करस्तुयथाक्रमम् ७ पुनर्वसुभवोवालःसुखीविद्वान्रुजान्वितः मृदुभाषीभवेन्नित्यंक्रमात्पादचतुष्टये ॥ ८ ॥ दीर्घायुस्तस्करोभोगीवुद्धिमान्जायतेनरः क्रमात्पादचतुर्णांतुपुष्यभस्य प्रकीर्तितम् ॥ ९ ॥ अप्रजाःपरकार्यश्चरोगीचसुभगोभवेत् सार्पर्क्षांघ्रिचतुर्जातो गंडांतेस्वल्पजीवनः ॥ १० ॥ मघापादचतुर्जातश्चापुत्रःपुत्रवान्भवेत् तीव्ररोगीपंडितश्चजायतेनात्रसंशयः ११ ॥ समर्थोधार्मिकोराजारोगीक्रूरोल्पजीवितः पूर्वाफाल्गुणीजातस्यफलंपादचतुष्टये १२ ॥ उत्तराफाल्गुणीपादचतुर्णांतद्भवस्यच पंडितःपृथिवीपालोविजयीधार्मिकोभवेत् ॥ १३ ॥

वाणीवाला होताहै ॥ ८ ॥ और पुष्यके प्रथमपादमें बड़ीआयुषावाला दूसरेमें चोर तीसरेमें भोगी चउथेमें वुद्धिमान् होताहै ॥ ९ ॥ और श्लेषाके प्रथमपादमें सतानकर्केरहित दूसरेमें परकार्यके करणेवाला तीसरेमें रोगी चउथेमें,श्रेष्ठभागोंवाला होताहै ॥ १० ॥ और श्लेषाके गडांतोंमें जन्मनेवाला थोड़ाचिर जीवताहै और मघाके प्रथमपादमें संतानकर्केरहित और दूसरेमें पुत्रोंवाला और तीसरेमें कठनरोगवाला और चउथेमें पंडितहोताहै ॥ ११ ॥ और पूर्वाफाल्गुणीके प्रथमपादमें समर्थवाला और दूसरेमें धर्मी और तीसरेमें राजा और चउथेमें रोगी और क्रूर और थोड़ाकाल जीवनेवाला होताहै ॥ १२ ॥ और उत्तराफाल्गुणीके प्रथमपादमें पंडित दूसरेमें राजा तीसरेमें जयवाला चउथेमें धर्मी होताहै ॥ १३ ॥

और जो आयुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला और स्थिरचित्त वाला और बहुत दान करणे वाला और संपूर्ण कृत्यमें तत्पर और संपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३ और जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा और अत्यंत भार्गो वाला और बहुत कहने वाला और श्रेष्ठ धनवाला और गुणोंकररहित और शुभवाणी वाला और श्रेष्ठबुद्धि वालाहोताहै ४ और शोभन योगमें जो जन्मताहै सो बुद्धि वाला और गुणोंकर्के युक्त और अकस्मात् शोककर्कें युक्त और मलरहित पवित्र चित्तवाला होताहै ५ और जो अतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी और शूरवीर होताहै और सत्य कर्के युक्त और धर्मके जानने वाला होताहै और परस्त्रीमें रत होताहै और कामी होता है ६ और जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्योंमें चतुर और धन धान्य कर्के युक्त और व्यापारमें चतुर होताहै ७ और जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा और धनी और वादमेंर

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चवहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेवालःसर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ वहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्ये जनितोनरः ॥ ४॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातो धौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररतःकामीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वितःव्यापारकुशलो नित्यंसुकर्मणिनरोभवेत् ॥ ७॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलसः परदाररतो नित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयोगेनरोजातःशूलवाञ्जायतेध्रुवम् ९ वाचालोपिमहासत्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठःसुशुभवान्गंडेनरोजातःसमाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्यवादीजितेंद्रियःवृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशाः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढशक्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शनः ध्रुवयोगेचयोजातःसर्वदाकर्मतत्परः ॥ १२ ॥

त और आलसी और परस्त्रीमें रत होताहै ८ और जो शूलयोगमें जन्मताहै सो पराक्रम कर्के युक्त और श्रेष्ठ कर्मकि करणे वाला गुणवान् होताहै और निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ और जो गंडयोगमें जन्मताहै सो वाचाल और बड़े पराक्रम वाला और गंभीर और गर्वी और श्रेष्ठ और शुभलक्षणों वाला होताहै १० और जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो बड़ी बुद्धिवाला और स्थिर और शूरवीर और सत्यबोलने वाला और इंद्रियोंके रोकने वाला और दृढवाक्य वाला और बड़े यशवाला होताहै ११ और जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै और दृढ पराक्रमवाला होताहै और बड़ी आयुषवाला होताहै और सुंदररूपवाला होताहै और संपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

श्रीर शतभिषाके प्रथमपादमें सुंदरवाणीवाला दूसरेमें लक्ष्मीवाला तीसरेमेंसुखी चउथेमें पुत्रवान्होताहै २५ श्रीर पूर्वाभाद्रपदाके प्रथमपादमें शूर दूसरेमें चोर तीसरेमें श्रेष्ठबुद्धिवाला चउथेमें पुरका स्वामी श्रीर भोगी होताहै ॥ २६ ॥ उत्तराभाद्रपदाके प्रथमपादमें राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें पुत्रवान् चउथेमें सुखी होताहै ॥ २७ ॥ श्रीर रेवतीके प्रथमपादमें ज्ञानी दूसरेमें चोर तीसरेमें युद्धमें क्षयहोनेवाला चउथेमें क्लेशवाला होताहै इहे नक्षत्रोंके प्रत्येकपादका फलकहाहै २८ ॥ श्रवनक्षत्रोंकेप्रत्येकपादकाइकइाफलकहतेहे जो मनुष्य पहले अंशमें जन्मताहै सो चतुर होताहै श्रीर धर्मवालाहोताहै श्रीर सत्यबोलने वाला श्रीर इंद्रियोंके जीतनेवाला होताहै श्रीर विद्यावान् होताहै १ श्रीर जो दूसरे अंशमें जन्मताहै सो धनवान् और भोगके भोगनेवाला श्रीरसग्राम युद्धमेंनाहिंहारणेवाला श्रीर नीति

शतभिषक्प्रथमांघ्रौवाग्मीश्रीमान्द्वितीयके सुखीतृतीयकेपादेचतुर्थेपुत्रवान्भवेत् ॥ २५॥ शूरश्चौरोमहाबुद्धिः पौरोभोगीभवेन्नरःपूर्वाभाद्रपदापादचतुष्केक्रमशःफलम् ॥ २६ ॥ अहिर्बुध्न्येक्रमात्पादचतुष्कसंभवांत्फलम् राजाचतस्करश्चैवपुत्रवांश्चसुखीभवेत् ॥ २७ ॥ ज्ञानीचतस्करोयुद्धेक्षयीचक्लेशवान्भवेत् क्रमात्पादचतुष्कस्यरेवत्यांजायतेफलम् ॥ २८॥ विनीतोधर्मशीलश्चसत्यवादीजितेंद्रियः विद्याव्यसनशीलश्चजायतेप्रथमांशके ॥ १ ॥ उत्पन्नविभवोभोक्तासंग्रामेष्वपराजितः नीतिज्ञःप्रमदाशक्तोद्वितीयेजायतेंशके ॥ २ ॥ उत्पन्नभोगभोक्तास्याच्छास्त्रविद्याविशारदः स्वधर्मप्रमदासक्तःतृतीयेजायतेंशके ३ ॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्चमायासक्तोनपुंसकः ॥ वीरविद्याविचारज्ञश्चतुर्थेजायतेंशके ॥ ४ ॥ इतिनक्षत्रचरणफलम् अथयोगफलम् ॥ कांताबंधुरतस्त्रीपुगृहदाररतस्तथा ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुविष्कुंभेजायतेनरः ॥ १ ॥ प्रीतियोगेपिसंजातोयोषितां वल्लभस्सदा महोत्साहःकृतज्ञश्चपरार्थैकमतिःसदा ॥ २ ॥

के जाननेवाला श्रीर स्त्रीमेंशक्त होनेवाला होताहै २ श्रीर जो तीसरे अंशमें जन्मताहै सो वो उत्पन्नभोगके भोगनेवाला श्रीर शास्त्रविद्यामें चतुर श्रीर अपनेधर्ममें श्रीर अपनीस्त्रीमें शक्तहोताहै ॥ ३ श्रीर जो चतुर्थअंशमें जन्मताहै सो स्त्रीजित श्रीर संतानककेरहित श्रीर मायाककै आसक्त श्रीर नपुंसक श्रीर वीरविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ ४ ॥ इहेनक्षत्रोंकेचरणोंकाफलकहाहै अवविष्कुंभादियोगोंकाफलकहतेहैं जो मनुष्यविष्कुंभयोगमें जन्मताहै सो स्त्रीकेभ्रातामें प्रीतिकर्त्ताहै अन्य स्त्रीयोंमें श्रीर घरमेंरतहोताहै श्रीर संपूर्णकार्योंमें चतुर होताहै ॥ १ ॥ श्रीर जो प्रीतयोगमें जन्मताहै सो स्त्रीयोंका प्यारा होताहै श्रीर बड़े उत्साहवाला श्रीर कृतज्ञ श्रीर दूसरेके कार्य करणेमें बुद्धिवाला होताहै ॥ २ ॥

और जो आयुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला और स्थिरचित्त वाला और बहुत दान करणे वाला और संपूर्ण कृत्यमें तत्पर और सपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३ और जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा और अत्यत भार्गो वाला और बहुत कहने वाला और श्रेष्ठ धनवाला और गुणोंकररहित और शुभवाणी वाला और श्रेष्ठबुद्धि वालाहोताहै ४ और शोभन योगमें जो जन्मताहै सो बुद्धि वाला और गुणोंकर्के युक्त और अकस्मात् शोककर्के युक्त और मलरहित पवित्र चित्तवाला होताहै ५ और जो अतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी और शूरवीर होताहै और सत्य कर्के युक्त और धर्मके जानने वाला होताहै और परस्त्रीमें रत होताहै और कामी होता है ६ और जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्योंमें चतुर और धन धान्य कर्के युक्त और व्यापारमें चतुर होताहै ७ और जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगधकाप्यारा और धनी और वादमेंर

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चबहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेबाल सर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ बहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्ये जनितोनरः ॥ ४ ॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातो धौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररत कामीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वित.व्यापारकुशलो नित्यंसुकर्मणिनरोभवेत् ॥ ७ ॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलस परदाररतो नित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयोगेनरोजात.शूलवान्जायतेध्रुवम् ९ वाचालोपिमहासत्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठ सुशुभवान्गंडेनरोजात समाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्य वादीजितेंद्रिय वृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढश क्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शन. ध्रुवयोगेचयोजात सर्वदाकर्मतत्पर. ॥ १२ ॥

त और आलसी और परस्त्रीमें रत होताहै ८ और जो शूलयोगमें जन्मताहै सो पराक्रम कर्के युक्त और श्रेष्ठ कर्मोंके करणे वाला गुणवान् होताहै और निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ और जो गडयोगमें जन्मताहै सो वाचाळ और वड़े पराक्रम वाला और गभीर और गर्वी और श्रेष्ठ और शुभलक्षणों वाला होताहै १० और जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो वड़ी बुद्धिवाला और स्थिर और शूरवीर और सत्यबोलने वाला और इंद्रियोंके रोकने वाला और दृढवाक्य वाला और वड़े यशवाला होताहै ११ और जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै और दृढ पराक्रमवाला होताहै और वड़ी आयुषावाला होताहै और सुदररूपवाला होताहै और सपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

और शतभिषाके प्रथमपादमें सुंदरवाणीवाला दूसरेमें लक्ष्मीवाला तीसरेमेंसुखी चउथेमें पुत्रवान्होताहै २५ और पूर्वाभाद्रपदाके प्रथमपादमें शूर दूसरेमें चोर तीसरेमें श्रेष्ठबुद्धिवाला चउथेमें पुरका स्वामी और भोगी होताहै ॥ २६ ॥ उत्तराभाद्रपदाके प्रथमपादमें राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें पुत्रवान् चउथेमें सुखी होताहै ॥ २७ ॥ और रेवतीके प्रथमपादमें ज्ञानी दूसरेमें चोर तीसरेमें युद्धमें क्षयहोनेवाला चउथेमें क्लेशवाला होताहै इहे नक्षत्रोंके प्रत्येकपादका फलकहाहै २८ ॥ अबनक्षत्रोंकेप्रत्येकपादकाङकहाफलकहतेहे जो मनुष्य पहले अंशमें जन्मताहै सो चतुर होताहै और धर्मवालाहोताहै और सत्यबोलनेवाला और इंद्रियोंके जीतनेवाला होताहै और विद्यावान् होताहै १ और जो दूसरे अंशमें जन्मताहै सो धनवान् और भोगके भोगनेवाला औरसंग्राम युद्धमेंनाहिंहारणेवाला और नीति

शतभिषक्प्रथमांशेवाग्मीश्रीमान्द्वितीयके सुखीतृतीयकेपादेचतुर्थेपुत्रवान्भवेत् ॥ २५ ॥ शूरश्चौरोमहाबुद्धिः पौरोभोगीभवेन्नरःपूर्वाभाद्रपदापादचतुष्केक्रमशःफलम् ॥ २६ ॥ अहिर्बुध्न्येक्रमात्पादचतुष्केसंभवात्फलम् राजाचतस्करश्चैवपुत्रवांश्चसुखीभवेत् ॥ २७ ॥ ज्ञानीचतस्करोयुद्धेक्षयीचक्लेशवान्भवेत् क्रमात्पादचतुष्कस्यरेवत्यांजायतेफलम् ॥ २८ ॥ विनीतोधर्मशीलश्चसत्यवादीजितेंद्रियः विद्याव्यसनशीलश्चजायतेप्रथमांशके ॥ १ ॥ उत्पन्नविभवोभोक्तासंग्रामेष्वपराजितः नीतिज्ञःप्रमदाशक्तोद्वितीयेजायतेंशके ॥ २ ॥ उत्पन्नभोगभोक्तास्याच्छास्त्रविद्याविशारदः स्वधर्मप्रमदासक्तःतृतीयेजायतेंशके ३ ॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्चमायासक्तोनपुंसकः ॥ वीरविद्याविचारज्ञश्चतुर्थेजायतेंशके ॥ ४ ॥ इतिनक्षत्रचरणफलम् अथयोगफलम् ॥ कांताबंधुरतस्त्रीपुगृहदाररतस्तथा ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुविष्कुंभेजायतेनरः ॥ १ ॥ प्रीतियोगेपिसंजातोयोषितांवल्लभस्सदा महोत्साहःकृतज्ञश्चपरार्थैकमतिःसदा ॥ २ ॥

के जाननेवाला और स्त्रीमेंशक्त होनेवाला होताहै २ और जो तीसरे अंशमें जन्मताहै सो धनी उत्पन्नभोगके भोगनेवाला और शास्त्रविद्यामें चतुर और अपनेधर्ममें और अपनीस्त्रीमें शक्तहोताहै ॥ ३ और जो चतुर्थअंशमें जन्मताहै सो स्त्रीजित और संतानकरकेरहित और मायाकर्के आसक्त और नपुंसक और वीरविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ ४ ॥ इहेनक्षत्रोंकेचरणोंकाफलकहाहै अबविष्कुंभादियोगोंकाफलकहतेहैं जो मनुष्यविष्कुंभयोगमें जन्मताहै सो स्त्रीकेधातामें प्रीतिकर्त्ताहै अन्यस्त्रीयोंमें और घरमेंरतहोताहै और संपूर्णकार्यांमें चतुर होताहै ॥ १ ॥ और जो प्रीतयोगमें जन्मताहै सो स्त्रियोंका प्यारा होताहै और बड़े उत्साहवाला और कृतज्ञ और दूसरोंके कार्य करणेमें बुद्धिवाला होताहै ॥ २ ॥

और जो आयुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला और स्थिरचित्त वाला और बहुत दान करणे वाला और संपूर्ण कृत्यमें तत्पर और सपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३-और जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा और अत्यत भागों वाला और बहुत कहने वाला और श्रेष्ठ धनवाला और गुणोंकररहित और शुभवाणी वाला और श्रेष्ठबुद्धि वालाहोताहै ४ और शोभन योगमें जो जन्मताहै सो बुद्धि वाला और गुणोंकर्के युक्त और अकस्मात् शोककर्के युक्त और मलरहित पवित्र चित्तवालाहोताहै ५ और जो अतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी और शूरवीर होताहै और सत्य कर्के युक्त और धर्मके जानने वाला होताहै और परस्त्रीमें रत होताहै और कामी होता है ६ और जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्यांमें चतुर और धन धान्य कर्के युक्त और व्या पारमें चतुर होताहै ७ और जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगधकाप्यारा और धनी और वादमें र

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चबहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेबालःसर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ बहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्ये जनितोनरः ॥ ४॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातो धौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररतःका मीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वितः व्यापारकुशलो नित्यंसुकर्मणिनरोभवेत् ॥ ७॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलसः परदाररतो नित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयो गेनरोजातःशूलवान्जायतेध्रुवम् ९ बाचालोपिमहासत्त्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठःसुशुभवान्गंडेनरोजातःसमाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्य वादीजितेंद्रियःवृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढश क्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शनः ध्रुवयोगेचयोजातःसर्वदाकर्मतत्परः ॥ १२ ॥

न और आलसी और परस्त्रीमे रत होताहै-८ और जो शूलयोगमे जन्मताहै सो पराक्रम क र्के युक्त और श्रेष्ठ कर्मोके करणे वाला गुणवान् होताहै और निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ और जो गंडयोगमें जन्मताहै सो वाचाल और बड़े पराक्रम वाला और गभीर और गर्वी और श्रेष्ठ और शुभलक्षणों वाला होताहै १० और जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो बड़ी बुद्धिवा ला और स्थिर और शूरवीर और सत्यबोलने वाला और इंद्रियोंके रोकने वाला और दृढवाक्य वा ला और बड़े यशवाला होताहै ११ और जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै और दृढ पराक्रमवाला होताहै और बड़ी आयुषावाला होताहै और सुंदररूपवाला होताहै और संपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

और जो व्याघातयोगमें जन्मताहै सो मूर्ख और मलीनचित्रकर्मोंके करणेवाला और निडर और बड़ागर्वी होताहै १३ और जो हर्षणयोगमें जन्मताहै सो कुटिल और हर्षक कैं युक्त और अमृतकीन्याईं मीठाबोलनेवाला और बड़ाबली और खेतीके करणेवाला होताहै १४ और जो वज्रयोगमें जन्मताहै सो धनकरयुक्त होताहै और दान नहींकर्ताहै और कृपणहोताहै और स्त्रीयोंसें वार्ताकरणेवाला होताहै और क्रूरहोताहै और संतानसें हीन होताहै १५ और जो सिद्ध योगमें जन्मताहै सो भोगी और धनवान् और थोड़ाबोलनेवाला और सुखी और सिद्धकर्मा और सत्यबोलनेवाला होताहै १६ और जो व्यतीपातयोगमें जन्मताहै सो चंचल और झूठबोलनेवाला और कुमंत्री होताहै और भोजनसिद्धकरणमें तत्परहोताहै औरकलाहीन और मूर्ख होताहै १७ ॥ और जो वरीयान् योगमें जन्मे सो बहुतया करकें पूज्य होताहै और धनकरकें युक्त होताहै और

मूर्खश्चमलिनश्चित्रकर्मणाभिरतःसदा ॥ निष्ठुरोथमहागर्वीव्याघातेजायतेनरः । ॥ १३ ॥ कुटिलःसौख्यसंपन्नोमृतवाचोमहाबलः कृषिकर्ताभवेन्नित्यंहर्षणेजायतेनरः ॥ १४ ॥ अदाताचधनाढ्यश्चकृपणोग्राम्यभाषणः क्रूरश्चैवानपत्यश्चवज्रयोगेभवेन्नरः ॥ १५ ॥ भोक्ताचधनवांश्चैवजायतेस्वल्पवाक्सुखी सुसिद्धःसत्यरक्तश्चसिद्धयोगेप्रजन्मतः ॥ १६ ॥ अस्थिरःसत्यरहितोमंत्री पाचनतत्परः कलाहीनोपिमूर्खश्चजनितोव्यतिपातके ॥ १७ ॥ बहुपूज्यो धनाढ्यश्चस्वकर्मनिरतोभवेत् ॥ जनानंदकरःश्लाघीवरीयसिनरःस्मृतः ॥ १८ ॥ दानद्युतिर्दुराचारःसुलुब्धःसाहसश्चलः ॥ परिघाख्येनरोजातः स्वकुलेमतिकारकः ॥ १९ ॥ तीर्थयात्रारतोनित्यंपुत्रवान्धनवान्भवेत् ॥ ब्रह्मचर्यरतोनित्यंशिवयोगेप्रजन्मतः ॥ २० ॥ विबुधश्छन्नमंत्रीचसर्वव्यापारकोविदः ॥ सुचित्तोनीतिमांश्चैवसिद्धियोगेप्रजायते ॥ २१ ॥ विविधव्यवसायीचस्वामिभक्तोमहामतिः गंधप्रियोमहोदारस्सुसाध्यस्साध्यजन्मतः २२

अपने कर्ममें रत होताहै और जनों कों आनंद कर्ताहै और स्तुतियोग्य होताहै ॥ १८ ॥ और जो परिघ योगमें जन्मताहै सो दान करणेमें दुष्ट होताहै और लोभी और हठी और चंचल होताहै और अपने कुलमें बुद्धिवालाहोताहै ॥ १९ ॥ और जो शिव योगमें जन्मताहै सो तीर्थयात्रामें रत होताहै और पुत्रवान् और धनवान् होताहै और नित्यप्रति ब्रह्मचर्यमेंरत होताहै ॥ २० ॥ और जो सिद्धि योगमें जन्मताहै सो पंडित होताहै और गुप्त मंत्री होताहै और संपूर्ण व्यापारमें चतुर होताहै और श्रेष्ट चित्तवाला और नीतिवाला होताहै ॥ २१ ॥ और जो साध्य योगमें जन्मताहै सो अनेक प्रकारोंके उद्यम करणे वाला होताहै और स्वामिकाभक्त और बड़ी बुद्धिवाला होताहै और सुगंधका प्यारा और बड़ा उदार और सुसाध्य होताहै

और जो शुभ योगमें जन्मताहे सो सत्य वोलने वाला और श्रेष्ठ भागों वाला और वक्ता और धर्मी और क्रोध रहित और निर्मल और नम्र और दूसरे कों प्रसन्न करणे वाला होताहे ॥ २३ ॥ और जो शुक्ल जोगमें जन्मताहे सो सत्य वोलने वाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला और सुंदर और प्रसिद्धता वाला और वेदोंके जानने वाला और कला शास्त्रोंमें चतुर होताहे ॥ २४ ॥ और जो ब्रह्म योगमेंजन्मताहे सो मीठा वोलने वाला और वड़े पराक्रम वाला और ब्रह्मण्य और ब्राह्मणों का प्यारा और प्रगल्भ उोर निर्मल उोर पंडित होताहे ॥ २५ ॥ और जो ऐंद्र योगमें जन्मताहे सोवि जय करणे वाला उोर दौड़ने वाला होताहे उोर संपूर्ण कार्योंके जाननेवाला उोर धनी उोर प्रसि द्ध उोर मीठावोलने वाला होताहे ॥ २६ ॥ और जो वैधृति योगमें जन्मताहे सो लोभी और चुगल वहुत वोलने मेंतत्पर होताहे और प्रथम अवस्थामें चलचित्त होताहे ॥ २७ ॥ इहेयव ॥ नजातकमेंयोगोंकाफलकहाहे ॥ अवकरणोंकाफलकहतेहे ॥

सत्यवाक्शुभगोधर्मीक्रोधहीनःसुनिर्मलः ॥ प्रणतःप्रियकारीचशुभयोगेप्रज न्मतः ॥ २३ ॥ सत्यवाक्सुमतिःकांतःस्यातिमान्श्रुतिपारगः ॥ कलाशास्त्रेषु कुशलःशुक्लयोगेप्रजन्मतः ॥ २४ ॥ प्रियवाक्योमहासत्वोब्रह्मण्योब्राह्मणप्रियः ॥ प्रगल्भोनिर्मलोधीरोब्रह्मयोगेप्रजन्मतः ॥ २५ ॥ ऐंद्रयोगेनरोजातोविजयीधाव कोभवेत् ॥ प्रभूतःसर्वकार्येषुधनीस्यातःप्रियंवदः ॥ २६ ॥ लुब्धःपिशुनचित्तश्च वहुभाषणतत्परः ॥ प्रथमेचलचित्तश्चयोगेवैधृतिजन्मतः ॥ २७ ॥ इतियवन जातकेयोगोत्पन्नफलम् ॥ अथकरणफलानि ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिकरणानांचजा तकम् ॥ शृणुकश्यपयत्नेनयथोवाचप्रजापतिः ॥ १ ॥ मदतीव्रउदाराढ्यःसु खवान्धनवर्जितः ॥ ववास्येकरणेजातःसेनापालोभवेन्नरः ॥ २ ॥ सुधीरःसु भगस्त्यागीवाललीलारतःसुखी ॥ वालवेयदिजननंवालकर्मरतःसदा ॥ ३ ॥ प्रसूतःकौलवेयस्तुकौतुकानंदवर्द्धनः ॥ पापकर्मरतःसौख्यःप्रच्छन्नःकौलवेयकः ॥ ४ ॥ साधकःसत्यसंपन्नःस्थिरश्चंडःप्रतापवान् तामसोमलिनस्तुघोजातस्तै तलकेनरः ॥ ५ ॥

हेकश्यप तू यत्न कर्केश्रवण कर जैसे ब्रह्मा कहताहे सोसुण १ ॥ जो मनुष्य वव नामक रणमें जन्मताहे तिसकों वड़ा मदहोताहे और उदारहोताहे और सुखी होताहे और धनकर्के हीन- होताहे उोर सेनापतिहोताहे २ और जो वालव करणमें जन्मताहे सो श्रेष्ठ धैर्य वाला और श्रेष्ठभागों वाला और त्यागी और वालकोंकी खेलमें रत उोर सुखी और सदा वालकों केकर्ममें युक्तहोताहे ३ और जो कोलव करणमें जन्मताहे सो कौतुक कर्के जो आनंद तिसकों वधावने वाला होताहे और पापकर्ममें रत होताहे और सुखी होताहे और गुप्त कोलवोंके धर्मको कर्ताहे ॥ ४ ॥ और तैतल करणमें जो जन्मताहे सो साधक और सत्य कर्के युक्त होताहे और स्थिर वुद्धि वाला और वड़े उ प्रताप वाला होताहे और तमोगुणी होताहे और मलीन होताहे ॥ ५ ॥

और जो गर करणमें जन्मताहै सो मत्रके जानने वाला और नीतिके जानने वाला और चतुर और दुर्बल और बहुत बोलने वाला और चपल युद्धके करणे वाला होताहै ६ ॥ और जो वणिज करणमे जन्मताहै सो अनेक व्यवहारोंके जानने वाला और व्यापार कर्के जीवका करणे वाला होताहै ७ और जो भद्रा करणमें जन्मताहै सो क्रूर हठी उग्र पापमें रत और चचल और सपूर्ण कार्योंके जानने वाला होताहै ॥ ८ ॥ और जो शकुनि करणमें जन्मताहै सो तातकाल उद्योगके करणे वाला और शात और सर्वदा काल भ्रमणे वाला और बड़ी वुद्धि वाला और शकुनोंके जानणे वाला होताहै ९ और जो चतुष्पद करणमें जन्मताहै सो खेती और व्यापार करणेवाला और उद्यमी और खेदकर्के रहित और आलस कर्के रहित और पराक्रम कर्के युक्त होताहै १० और जो नागकरणमें जन्मताहै सो धनकों और धातुयोकों विशेषकर्के जानने वाला होताहै और आपने कर्मोकर्के गुणवान् होताहै और नागोंके पालने वाला होनाहै ॥ ११ ॥ और जो किंस्तुघ्नकरणमें जन्मताहै सो

मंत्रविन्नीतिमान्दक्षोदुर्वलोवहुभाषणः ॥ चपलोविग्रहरतोगराख्येजायतेनरः ॥ ६ ॥ नानापण्यविशेषज्ञोवणिक्कर्माभिजीवकः ॥ वणिजाख्येनरोजातोवाणिज्यात्तिःसदाभवेत् ७ ॥ क्रूरःसाहसिकश्चंडःपापकर्मरतश्चलः प्रभूतःसर्वकार्येषु विष्ठाख्येचप्रजन्मतः ८ ॥ सद्योयोगकरःशांत.सदाभ्रामीमहामतिः शकुन्याख्येजातनरःशकुनज्ञोविशेषतः ९ ॥ कृषिवाणिज्यकारीचसोद्योगीविगतक्लमः निरालसःसत्वयुतोजातश्चैवचतुष्पदे ॥ १० ॥ धनधातुविशेषज्ञःस्वकर्मगुणवान्भवेत् नागाख्येकरणेजातोनागानांपालकोभवेत् ॥ ११ ॥ किंचिद्धर्मरतोनित्यंकिंचित्पापरतोभवेत् किंचिद्रोगार्दितोदेहेकिंस्तुघ्नेजायतेनरः.१२ ॥ इतिकरणफलम् अथयोनिजफलम् ॥ चपलश्चंचलदृशःशीघ्रगामीरणप्रियः अश्वयोनौतुसंजातोवलवान्स्वामिवल्लभः ॥ १ ॥ मंदगामीवलाढ्यश्चवव्हाशीराजवल्लभ.सत्यवाग्ज्ञानवांश्चैवगजयोनौभवेन्नरः ॥ २ ॥ दुर्घटंदुर्लभंस्थानंभेदयत्यविशंकित.अजायोनिसुजातोसौवहुवुद्धिप्रदोभवेत् ॥ ३ ॥ दर्शनंभीतिदंनित्यं घटाटोपेनवर्तनम् परवेश्मापहारीचसर्पयोनौप्रजापते ॥ ४ ॥

थोडे धर्मकर्के नित्ययुक्तहोताहै और थोडेपापकर्के युक्तहोताहै और थोडे रोगकर्के तिसका देहपीडाकों प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ इहेकरणोंकाफलकहाहै ॥ अवयोनियोंकेफलकहतेहैं ॥ जोमनुष्य घोड़ेकी योनिमें जन्मताहै सो चपल और चचल दृष्टिवाला और सतावी चलनेवाला और युद्धमें प्रीतिवाला होताहै और वली होताहै और स्वामीका प्यारा होताहै १ ॥ और जो हाथीकी योनिमें जन्मताहै सो मदमद चलनेवाला और वली और वहुत भोजन करणेवाला और राजाका प्यारा और सत्यवोलने वाला और ज्ञानी होताहै ॥ २ ॥ और जो वकरे की योनिमें जन्मताहै सो दुर्घट दुर्लभ कठनस्थानकों भेदकर्ताहै और मनमें शंका नहिंकरताहै और वहुतवुद्धिके देने वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो सर्पकी योनिमें जन्मताहै तिसका दर्शन भयको देताहै और प्रपचकरणेवाला और पराए घरके हरणेवाला होताहै ॥ ४ ॥

और जो कुत्तेकीयोनिमें जन्मताहै सो सर्वभक्षी और वृथावादी और दूत और स्वामिकेहितमें युक्तहोताहै और वनमें दुःखको सहारताहे और शूरवीरहोताहै ॥ ५ ॥ और जो विल्लेकी योनिमें जन्मताहै सो पिंगवणके नेत्रोंवाला और सर्वभक्षी और चपल और द्वेषकरणेवाला और वृथाहिक्रोधकरणेवाला और डरणेवाला होताहै ॥ ६ ॥ और जो मूसेकीयोनिमें जन्मताहै सो धूर्त्त और अपनेकार्यके करणेवाला और दूसरेके कार्यका नाशकरणेवाला और शत्रुयोंकामूलकष्टदेनेवालाहोताहै ॥ ७ ॥ और जो गौकी योनिमें जन्मताहै सो वहुत गौयोंकरयुक्त होताहै और दुग्धका आहार करताहै और सुदर रूपवाला होताहै और परोपकारके करणेवालाहोताहै ८ और जो महीषीकी योनिमें जन्मताहै सो मदमंद चलताहै और मोटे देहवाला होताहै और वहुतभोजन कर्त्ताहै और वलीहोता और

सर्वभक्षीवृथावादीदूतःस्वामिहितेरतः अरण्येदुःसहोवीरः श्वानयोनौभवेन्नरः ॥ ५ ॥ पिंगाक्षीसर्वभक्षिचचपलोद्विपकारकः मार्जारयोनिसंजातोवृथाकोपीभयान्वित· ॥ ६ ॥ धूर्त्तःस्वकार्येनिरत.परकार्यविनाशकः शत्रूणांमूलविच्छेत्तानरो मूखकयोनिजः ॥ ७ ॥ गोधनैर्वहुभिर्युक्तः क्षीराहारोतिसुंदरः परोपकार कर्त्ताचपशुयोनौभवेन्नरः ॥ ८ ॥ मंदगामीस्थूलतनुर्वह्वाशीवलवान्धनी वहुक्षीराज्यभोजीचमहिपीयोनिसंभवः ९ ॥ कृतांतःसर्वभक्षीचविद्यावान्कुशलोनर· व्याघ्रयोनौभवेन्नित्यंदर्शनाद्भयदोमहान् १० ॥ गीतवाद्यप्रियोनित्यं सुंदरश्चारुदर्शनः ॥ मृगयोनिरतोधूर्त्तोमृगयोनौभवेन्नरः ॥ ११ ॥ पिंगाक्षश्चपलोरण्यगामीफलभुजोभवेत् ॥ नविश्वासंव्रजेत्काश्चित्कपियोनिसमुद्भवः ॥ १२ ॥ चारुदर्शनकार्यार्थीपरकार्यार्थसादरः विलवासीचिरायुःस्यान्नरो नकुलयोनिजः ॥ १३

धनीहोताहै और वहुत दूधके और घृतके खाणेवालाहोताहै ॥ ९ ॥ और यो भगेयाड़की योनिमें जन्मताहै सो सभको भयदेनेवाला और सर्वभक्षी और विद्यावान् होताहै और देखनेसें हिं वड़ेभयके देनेवालाहोताहै १० और जो हरणकी यो निमें जन्मताहै सो गाउणेवजाउणेमें नित्यप्रसन्न-होताहै और देखनेमें सुंदरहोताहै और मृगयोनिमें रतहोताहै और धूर्त्त होताहै ११ ॥ और जो वानरकी योनिमें जन्मताहै सो पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला और चपल और वनमें गमनकरणे वाला-और फलोंको भक्षणकरणेवाला और किसीका विश्वास नहिंकरणे वालाहोताहै ॥ १२ ॥ और जो नकुलकी योनिमें जन्मताहे सो देखनेमें सुंदरहोताहे और कार्यार्थीहोताहै और पराए कार्यमें आदरयुक्त होताहै और खुड्डमें रहताहे और वड़ी आयुपावालाहोताहै ॥ १३ ॥

श्रौर जो सिंहयोनिमें जन्मताहै सो वड़ावली श्रोर पिंगलनेत्रों वाला श्रौर पतले लक्कवाला उौर भयकेदेनेवाला श्रौर सर्वभक्षी होताहे १४ श्रवगणोंकाफलकहतेहैं जोदेवताका गणहोताहै सो गुरोंका श्रौर देवताका श्रौर ब्राह्मणोंका भक्तहोताहै श्रौर शास्त्रकेविचारणेवाला श्रौर देवताके तुल्य रूपवाला होताहै १ श्रौर जो राक्षसका गणहोताहै सो तमोगुणी पापके करणेवाला क्रोधी गर्वी श्रोर लड़ाई के करणेवाला कठोर गुप्तपापी होताहै २ श्रौर जो मनुष्यका गणहोताहै सो श्रन्नदाताश्रौरधनी श्रौर संतानवालाश्रौर देवताकेपूजनेवाला श्रोर श्रेष्ठस्त्रीके सुखको भोगनेवाला होताहै ३ इहेगणोंकाफलकहाहै श्रवदिनरात्रिमेंजन्मकाफलकहतेहैं जो मनुष्य दिनमें जन्मताहै सो तेजस्वी उौर पिताके तुल्यहोताहै उौर सुंदरदृष्टिवाला उौर राजाका प्यारा होताहै उौर वंधुयोंमे श्रेष्ठहोताहै ॥ १ ॥ उौर जो रात्रिमें-

महावलीचपिंगाक्षः कृशमध्योभयानकः ॥ सिंहयोनिप्रजातस्तुसर्वभक्षकरोभवेत् ॥ १४ इतियोनिफलम् ॥ अथगणजफलम् ॥ गुरुदेवद्विजातीनांभक्तः शास्त्रविमर्शकः ॥ देवतासदृशोमूर्त्तौजातोदेवगणेनरः ॥ १ ॥ तामसःपापकृत्क्रोधीगर्विष्ठःकलहप्रियःनिष्ठुरश्छिन्नपापश्चगणेस्याद्राक्षसेनरः॥२॥ अन्नदाताधनाढ्यश्चप्रजावान्देवपूजकः मनुष्यर्क्षेनरोजातोवरस्त्रीसुखभोगकः ३ इतिगणफ० अथादिवारात्रिजातस्यफलम् तेजस्वीपितृसदृशश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः वंधुपूज्योधनाढ्यश्चदिवाजातोनसंशयः ॥ १ ॥ मंदहग्वहुकामार्त्तःक्षयरोगीमलीमसः क्रूरात्माच्छन्नपापश्चानिशिजातोभवेन्नरः ॥ २ ॥ नन्वेवमुदाहृतानांसंवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात् निराधारकत्वेन फलादेशः कथंसम्यक्घटतीति व्यर्थमेवकिमर्थमुक्तमितिचेन्न समयनियमोप्यस्ति तथाहि जातकाभरणे उक्तानिसंवत्सरपूर्वकाणांफलानितत्प्राप्तिरितिप्रकल्प्या सांवत्सरंसावनवर्षपस्यपाकेऽयनर्तुप्रभवंखरांशोः ॥ १ ॥ मासोद्भवंमासपतेस्तथैवंरोगेणोडुपक्षप्रभवंचयत्स्यात् तिथिप्रभूतंकरणोद्भवंचचंद्रांतरेर्कस्यदशाविभागे ॥ २ ॥

जन्मताहै सो मंददृष्टिवाला उौरकामकर्के वहुतदुःखीहोताहै उौर क्षय रोगवाला उौर मलीन होताहै उौर क्रूरात्मा उौर गुप्तपापी होताहै ॥ २ अवइसमें संशयकर्तेहै कहेजो संवत्सरादिफल तिनका प्राप्तिकसमयदशाकालके नाहिंहोनेसे निराधारहोणेसे भलीप्रकाराफलादेश कयसें घटेगा इसकर्केव्यर्थकहाहै जव श्रयसेंकहे तव इहे वात नाहिंहै इनमें समयका नियम- जातकाभरणग्रंथमेंकहाहै ॥ कहे जो संवत्सरादिफल तिनकी प्राप्ति श्रयसें कल्पना करणी संवत्सरकाफल सावनवर्षपतिकी दशामें होताहै उौर श्रयनका उौर ऋतुका फल सूर्यकी दशामेंहोताहै १ उौर महीनेका फल मासपतिकी दशामें होताहै उौरगणोंका फल श्रौरपक्षका फल श्रौर नक्षत्रोंका फल चंद्रमाकी दशामेंहोताहै श्रौर तिथिका फल श्रौर करणका फल चंद्रमाके मध्यमें जवसूर्यकी श्रंतर्दशाहोवे तव होताहै ॥ २

और वारका जो फलहै सो जन्मदिनमें जोवारहै तिसकी दशामें होताहै और योगका जो फलहै सो चंद्रमासूर्यकेमध्यमें जोवलीहै तिसकीदशामें होताहै और लग्नका जो फलहैसोलग्नेशग्रहकीदशामें होताहै और इसीप्रकार दृष्टिफलऔर भावफल और योगफल और राशिफल विचारणे योग्यहैं जैसें जो ग्रह जिसग्रहको देखताहै सो दृष्टिफल तिसकी अंतर्दशामें देताहै और जो ग्रह जिसभावमें स्थितहै और जो ग्रह जिसराशीमें स्थितहै सो तिस राशीके स्वामिकी अंतर्दशामें फल कर्ताहै ३ अथसंसंवत्सरादिफलोंको लिखकर्के उपरंत जन्मकालीन अहर्गण सिद्धकर्के लिखे और मध्यमग्रह और स्पष्टग्रहलिखे और जन्मलग्नकुंडलीलिखे और होराद्रेष्काणादि औरचंद्रनवांशकुंडलियोंको लिखे कहाहै जन्मकालमें और प्रश्नादि

वाराद्भववारविभावाचिंत्ययोगोत्थमिद्धकेवलान्वितस्य लग्नोद्भवलग्नपतेर्दशायां दृग्भावयुग्राशिजमेवमूह्यम् ॥ ३ ॥ अथजन्मकालकोऽहर्गणः मध्यस्पष्टग्रहालेख्याः जन्मलग्नकुंडलीलेख्या होराद्रेष्काणादिकुंडल्योलेख्याः चंद्रराशिनवांशकुंडलीचलेख्या उक्तंच जातकादिषुसर्वत्रग्रहैर्ज्ञानंप्रजायते तस्माद्गणितदृक्तुल्यात्स्वतंत्रात्साधयेद्ग्रहान् ॥ १ ॥ विवाहेविग्रहेयात्राप्रश्नकालव्रतादिषु ॥ ज्योतिःशास्त्रात्फलंसर्वंप्रस्फुटंद्युचराश्रयम् ॥ २ ॥ तथाचवाशिष्टः ॥ यस्मिन्पक्षेयत्रकालेयेनदृग्गणितैक्यकम् ॥ दृश्यतेयेनपक्षेणकुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥ ३ ॥ सौरभाष्येपि ॥ संसाध्यंस्पष्टतरंबीजंनलकादियंत्रेभ्यः तत्संस्कृतास्तुसर्वपक्षगसाम्यंभजंत्येव ॥ ४ ॥ ब्रह्मसिद्धांतेपि ॥ ध्यातग्रहोपदेशाद्बीजंज्ञात्वाचदैवज्ञैः ॥ तत्संस्कृतग्रहेभ्यःकर्त्तव्यौनिर्णयादेशौ ॥ ५ ॥

कालमें ग्रहोंकर्के फलका ज्ञान होताहै तिसकारणसें जिसग्रंथके ग्रह दृष्टिकर्के गणितके तुल्यमिलें तिसग्रंथके मतसें स्पष्टकरे १ और कहतेहैं विवाहमें और युद्धमें और यात्रामें और प्रश्नकालमें और व्रतादियोंमें ज्योतिःशास्त्रसें जो संपूर्ण फलहै सो स्पष्टग्रहोंके अधीनहै ॥ २ ॥ तैसेंहिवशिष्टकहतेहैं जिसकालमें जिससिद्धांत वाकरणके ग्रह गणितके बराबर आकाशमें देखनेमें आवें तिसीग्रंथकर्के तिथ्यादियोंका निर्णयकरे ॥ ३ ॥ और सौरभाष्यमेंकहतेहै नलिकादियंत्रोंसे धनऋणरूपबीजको सिद्धकरे तिसबीजकरसंस्कृत ग्रह संपूर्णपक्षोंके तुल्यताको प्राप्तहोतेहैं ४ और ब्रह्मसिद्धांतमेंकहतेहैं ज्योतिषियोंने शास्त्रकरकेतेसें ग्रहोंका बीज जाननेयोग्यहै तिसबीजकर्केसंस्कारको प्राप्तजोग्रह तिनोंसें निश्चयकर फल कथनकरे ॥ ५ ॥

और ज्योतिर्विवरणमें कहतेहैं ब्रह्मसिद्धांतसें लेकर पवित्रयोसिद्धांतहैं तिनसें भी जन्मकालमें ग्रह साधनकरे और प्रयत्नकर जिसकालमें जिसग्रंथके दृष्टिके बराबर देखनेमें ग्रह आवें तिससें सिद्धकरे ६ और इसमें दृष्टांत देतेहैं जोसुवर्ण कानकों तोड़देवे तिसकरके क्याहै और जो प्रत्यक्षदेखनेमें नहिं आवे तिसशास्त्रकरके क्या प्रयोजन है ७ और दामोदरपद्धतिमें कहतेहैं जिसग्रंथसेंसिद्ध हुये ग्रह दृष्टि और गणितमें एकजैसेहोवें तिसीग्रंथकरके तात्कालिक ग्रह स्पष्टकरे ॥ ८ ॥ सो ग्रहसाधन भलीप्रकारकरके इष्टकालके आधीन है सो इष्टकाल यंत्रादिकों करके स्पष्टहोताहै सो कहतेहैं प्रथमदिनमें इष्टकालसाधन कहतेहैं हाथीके दंतका सारा अंगुल १२ प्रमाण शंकु बनावे कैसा बनावे जो आगेसें सूचीकी न्याई सूक्ष्महोवे और

ज्योतिर्विवरणे पैतामहादयः पुण्याः क्रियाकालविनिर्णये । सद्यंत्रैर्जनुषः काले दृक्तुल्यगणितात्खगा. ६ ॥ किंतेनापिसुवर्णेनकर्णघातंकरोतियः तथाकिंतेन शास्त्रेणयत्रप्रत्यक्षताऽस्फुटम् ७ । दामोदरपद्धतौ यांतियत्साधिताःखेटायेनदृग्गणितैक्यताम् तेनपक्षेणतत्कार्याःस्पष्टास्तत्समयोद्भवाः ॥ ८ ॥ तत्रग्रहसाधनस्म्यगिष्टकालाधीनंभवतितत्कालोयंत्रादिभिःस्पष्टोभवति तदुच्यते ॥ अथदिवेष्टकालज्ञानम् ॥ सूचीमुखोद्वादशभिस्तथांगुलैरधःपृथुस्तिष्ठतियोमहीतले ॥ विना निखातंगजदंतनिर्मितःकीलःसशंकुर्नरइत्युदीरितः ९ । परमदिनंदिनमानविहीनं सप्तभिराहतपंचविभक्तम् आर्यभटेनविनिर्मितयाभासाचभवेद्दिनमध्यमछाया १० । यायत्रकालेभवतीहछायामध्यान्हहीनास्फुटशंकुयुक्ताताया दिनंषड्गुणितंविभाज्यपूर्वापरार्द्धंगतगम्यनाड्यः ११ ॥ अत्रोदाहरणम् जंबूपुरेपरमदिन ३५ । २० दिनमान ३० हीन ५ । २० सप्तभिराहत ३७ । २० पंचविभक्त ७ । २८ इयंमध्यान्हछाया इष्टछायांगुलयोमध्यान्हादुपरि १० मध्यछायया हीना २ । ३२ शंकुयुता १४ ३२ पश्चात्सवर्णितोजातोभाजकः ८७२ दिनमानंषड्गुणितं १८० पश्चात्सवर्णितोजातोभाज्यः १०८०० भाजकेनभाज्येभक्तेलब्धा १२ । १६ मध्यान्होपरिगम्यघटिका सूर्योदयादिष्टम् ॥ १७ । ४४ ॥

नीचेसे भागहोवे सोबिना गर्तके पृथ्वीमें स्थितहोवे सो शंकु नर कहाहै ॥ ९ ॥ परमदिन जो जिसदेशमें होवे सो वर्तमान दिनमानस्य हीनकरे और सातसेंतिसकों गुणदेवे और पांचसें भागदेवे जो लब्ध होवे सो तिसदिनमें मध्यान्हकालकी छाया होतीहै १० यह आर्यभट्टने कहिहै और जिसकालमें जितनी शंकु की छाया आवे सो मध्यान्हछायाकरके हीनकरे और तिसमें बारां १२ का प्रक्षेपलावे तिसकरके छैसें गुणित जो दिनमान तिसको भाग देवे जो लब्धहोवे सो इष्टघडीयां होतीहैं सो उदाहरणमें स्पष्टकरा है मध्यान्हके पूर्वगत और मध्यान्हकेउपरंतगम्य होतीहैं ११

अथजलघटीस्थापनकीविधिनारदकेहताहै प्रथम ज्योतिषी शास्त्रको विचारकेलग्न सिद्ध करे १२ सोलग्न जलयंत्रकके सिद्धहोताहै इसवास्ते प्रथमघटीयंत्र सिद्ध करतेहैं दशपल ताम्रकी पात्र जैसे शिरकोखोपरीहोतीहै तिसकी न्याई वनावे और छैअंगुलप्रमाण तिसकी ऊंचाकरे और वारा ॥ १२ ॥ अंगुलविस्तारकरे ॥ १३ ॥ और अपनेतीसरेभागककेयुक्त माषमात्र जो सुवर्ण तिसकी चारअंगुल ४ प्रमाण शलाका वनायकके तिसपात्रको वेधकरेसो पात्र साठ ६० पलोंकके जलसे पूर्ण होजाताहै और एकदिनमें सो घड़ीसाठवारी जलमें डूबतीहै ॥ १४ ॥ और तिसको ताम्रके पात्रमें अथवा मृत्तिकाके

॥ अथजलघटीस्थापनम् ॥ नारदः ॥ पूर्वंसंचिंत्यगणितंशास्त्रोक्तंलग्नमानयेत् ॥ तल्लग्नंजलयंत्रेणदद्याज्ज्योतिषकोत्तमः ॥ १२ ॥ षडंगुलमितोत्सेधंद्वादशांगुलमायतम् ॥ कुर्यात्कपालवत्ताम्रपात्रंचदशभिःपलैः ॥ १३ ॥ पूर्णंषष्ट्यात्वथपलैःषष्टिमज्जतिवासरात् ॥ माषमात्रत्र्यंशयुतस्वर्णवृत्तशलाकया ॥ १४ ॥ चतुर्भिरंगुलैरायतयाविद्धमितिस्फुटम् ॥ ताम्रपात्रेजलैःपूर्णेमृत्पात्रेवाथवाशुभे ॥ १५ ॥ गंधपुष्पाक्षतैःसार्द्धरलंकृत्यप्रयत्नतः ॥ तंडुलस्थंस्वर्णयुतंवस्त्रयुग्मेनवेष्टितं ॥ १६ ॥ मंडलार्द्धोदयंवीक्ष्यरवेस्तत्रविनिक्षिपेत् ॥ मंत्रेणाऽनेनपूर्वोक्तलक्षणंयंत्रमुत्तमम् ॥ १७ ॥ एकांतपक्षेनिलवर्जितस्मिन्दध्यक्षतैः पूजितमंडलेचंग ॥ कुंडेंवुपूर्णेघटिकांप्रवाह्यासूर्यार्द्धविंवेउदितेस्तगेवा ॥ १८ ॥ मुख्यत्वमसियंत्राणांब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ भवाभवायमर्त्यानांकालसाधककारणमिति ॥ १९ ॥ अथजन्मसमयेनिषेकसमयज्ञानपूर्वकजन्मसमयज्ञानोदाहरणंलिख्यते ॥ संवत् ॥ १७२७ ज्येष्ठशुदि ९ वुधे श्रीसूर्योदयाद्गतघटी ३६ पल ४६ तत्रराश्यादिकेधनुर्लग्ने ८ । ४ । २७ । १६ । एवंवृषस्थेसूर्ये १ । १८ । ४३ । ३९ । एवंकन्यागतेचंद्रे । ५ । ९ । ४४ । २८ । जन्मसूर्यगतिः । ५७ । । १७ ॥ चंद्रगतिः । ८१७ । ४२ तत्रायनांशः १९ । ८ चरं १२३ चक्रं १३

अहर्गणः २६३९

पात्रमें जल पायकर स्थापनकरे ॥ १५ ॥ और प्रस्थप्रमाण चाउलोंके ऊपर तिसको धरे और गन्धपुष्पअक्षतोंसे प्रथम तिसकी पूजाकरे और वस्त्रदोतिसपात्रके ऊपरवेष्टतकरे ॥ १६ ॥ और सूर्य अर्द्धोदय वा अर्द्धास्त देखकर तिसघडीको जलमें स्थापनकरे ॥ १७ ॥ और एकांतमें जहां वहुत वायु नहोवे ॥ तहां दहीं और अक्षतोंकर कुंडको पूजके कहा जो मंत्र तिसको पढके घडीजलमें धरे १८ ॥ हेघडीपत्र तू सपूर्णयंत्रोंमे मुख्यहै पूर्वतेरोको ब्रह्माने वनायाहै और मनुष्योंका जो शुभाशुभज्ञान तिसमें समयसाधनेका तूकारणहै ॥ १९ ॥

अबजन्मसमयमेंनिषेककालकेज्ञानपूर्वकइष्टकालशोधनकाउदाहरणलिखतेहैं । तिसमें माईदासमि॰ श्रने कहे जो श्लोक सो कहतेहैं प्रथमस्पष्टचंद्रमामें स्पष्ट लग्नको घटावे फेर तिसकिया कला वनावे दोस्थानमेंधरे फेर तिनकाचुराशीया ॥ ८४ ॥ भागलेवें तिसकों दूसरेस्थानके अंकमें मिलावे फेर तिसमें उन्नीलक्ष छेहजार सतसठो सोलाकेअंक तिसमेंमिलावे और संपूर्ण ॥ अंककोंआठसउोसें भागलेवे जो लब्ध आवे सो गर्भस्थितिकालसे लेकर गर्भमोक्षप र्यंतअहर्गण होताहै १ ॥ जो अहर्गण आवे तिसको सावयव नलेवे केवल निषेककालकेवारका

अस्माज्जन्मसमयान्निषेकसमयाहर्गणो यथाश्रीमाईदासमिश्रोक्तः ॥ व्यंगाब्जलिप्तास्वाब्ध्यष्टांशा ॥ ८४ ॥ द्याष्टिनगांगनवेंदुभिः १९६७१६ युक्ताः खाभ्रगजै ८०० भक्तागर्भस्थोहर्गणस्थिरः ॥ १ ॥ उदाहरणम् ॥ चंद्रः ५। ९। ४४। २८ लग्नं ८। ४। २७॥ १५ एतदूनोब्जः ९॥ ५॥ १७ ॥ १३ ॥ एतस्यालिप्ताः ॥ १६५१७ ॥ द्विस्थाः ॥ १६५१७ ॥ अस्याब्ध्यष्टांशालब्धाः ॥ १९६ अनेनतएवयुताजाताः १६७१३ ॥ अथ्यगांगनवेन्दुभिः १९६७१६ युताजाताः २१३४२९ खाभ्रगजै ८०० भक्ताजातोऽहर्गणः जन्मसमये २६६ सावनःसप्त ७ तष्टेतलस्थेशून्य०वारःअनेनहीनोजन्मवारोबुधः ४ शेषं ४ अस्माज्जातोबुधवारोनिषेकसमये । अथजन्मसमयादाधानतिथ्यानयनम् व्यंगाब्वांशा.पृथक्त्रिघ्ना.खाब्ध्या ॥ ४० ॥ तोनाइनो १२ हृता.खतत्वा २५० द्याहितिथयोगर्भाज्जन्मावधिस्फुटाः २ ॥ चंद्रः ५। ९। ४४। २८। लग्नेन ८। ४। २७। १५। हीनः। ९। ५। १७। १३। अस्यांशा. २७५ । १७ । १३ पृथक्स्था. २७५। १७। १३। त्रिघ्ना. ८२५। ५१। ३९ खाब्ध्या ४० माप्तलब्धा. २०। ३८। ४७ अनेनहीना.पृथक्स्थाः २५४ । ३८ । २६ ।

ज्ञानकरणे वास्ते कहाहै और अहर्गणके तुल्य दिन मानको कुक्षिमे निवासकर्त्ताहै इहे निश्चय प्रथमकरे उपरं निषेकके वारका निश्चयकरु फेर निषेककालकी तिथिका निश्चयकरे उदाहरणकर्के स्पष्टकहाहै अब गर्भकालमें तिथिका ज्ञानकहतेहैं स्पष्टचद्रमामें स्पष्टलग्नकों घटावे और तिसके अंश वनावे उपर तिनाअंशोंको दोस्थानमे स्थितकरे एकस्थानमेंअंशोंको तीनसे गुणे और तिनकों चाली ४० स भाग लेवे जो लब्ध होवे सो तिसका दूसरे स्थानके अंकमें रहित करे

और शेषकों बारा १२ सें भाग लेवे और जो लब्धआवे तिसमें ढाईसौ २५० केअंककों मिलावे तवगर्भसमयसेंलेकर जन्मकालपर्यंत तिथिया होतियाहे २ तिनोंकों तीस ३० सें भागलेवे तवलब्धम हीनेहोतेहैं इसतिथिके अंककों सावयव नलेवे केवल तिथिका ज्ञान करलेवे और प्रथम जन्मकालमें जो मासतिथिका अंकहै तिसकों कर्मभूमिमें स्थापन करके तिसमें गर्भके जो मासादिक मासदिन तिनकों घटाय देवे यो शेष रहे सो शुक्लादिमास क्रमसें गर्भकालमें गतमासादि जानलेवे और ति सदिनमें सूर्योदयकालीन मध्यम सूर्यबनावे और निषेक कालमें सूर्य स्पष्टकरे और जन्म लग्नकोंच द्रमा कल्पनाकरे और जन्मचंद्रमा कों निषेक कालमें लग्न कल्पनाकरे और जो जन्मका चद्रमा हो

इनो । १२ । हृताल्लब्धाः । २१।१३ । १२ । खतत्वा । २५० । ढ्याः । २७१ । जातास्तिथयएतास्त्रिंश । ३० । द्भक्ताजातामासाः । ९ । तिथिः ।१ एतत्संख्यांकसमेनहीनाजन्ममासतिथयः तद्यथा ज्येष्ठशुक्लनवम्यांजन्मास्य ज्येष्ठशुक्लांकोमासात्मकः । २ । ९ । एतेमासाद्यागर्भमासाद्येन । ९ । १ । हीनेकृतेजातं ५ । ८ । अतोलब्धाःशुक्लादिक्रमेणपंचगताःवर्षस्यभाद्रपदस्या ष्टमीगताविद्यमानानवमी ॥ तद्दिनेऔदयिक.सूर्योमध्यमः । ४ । २४ । ५१ । ४८ । निषेकसमयेसूर्यः ४ । २२ । ५६ । ५६ । चंद्रः । ८ । ४ । । २७ । १५ । लग्नं । ५ । ९ । ४४ । २८ । चक्रं । १३ । अहर्गणः । २३७३ । अत्रजन्मचंद्रंलग्नंप्रकल्प्यपुनर्जन्मलग्नंचंद्रंप्रकल्पयेत्इत्युक्त्वा तज्जन्मचंद्रं ५ । ९ । ४४ । २८ । इदंनिषेकलग्नं ॥ जन्मलग्नं ८ । ४ । २७ । १५ । इदमेवचंद्रोनिषेकसमये ॥ अस्मान्निषेकचद्रात् निषेकस्येष्टकालान यनम् ॥ जन्मलग्नकलापिंडमिति॥ १४६६७ ॥ खखनागे. ॥ ८०० ॥ वि भाजितेलब्धं ॥ १८ ॥ गतंनक्षत्रज्येष्ठास्ययवर्त्तमानंमूल भाजितेशेष ॥ २६७ अत्रमूलस्यसर्वर्क्षघटिका ॥ ६० ॥ अस्माच्छेषेपघ्नि ॥ १६०२० ॥ तदुर्वरि तविकलाभिः । १५ । युतं । १६०३५ । खखनागै ॥ ८०० ॥ भाजिते लब्धामूलस्यभुक्तघटयः । २० । प । २ ।

ताहै सो निषेक कालमें लग्न होताहै और जो जन्मकालमें लग्न होताहै सो निषेक कालमें चद्रमा होताहै इसी अर्थका उदाहरण करके स्पष्ट कहाहै ॥ अवइससेंनिषेककालके चद्रमासेंनिषेककालका इष्टसाधनकहतेहैं जन्मकालका यो लग्न सोइ निषेककालका चद्रमाहोताहै तिसकारणसें जन्मलग्नकें पा कलाबनावे और आठ ८०० ॥ सडौसें भागलेवे जो लब्धहोताहै सो गतनक्षत्र होताहै और जो शेष बचताहै सो वर्त्तमान नक्षत्र होताहै इसनेंशेषकों साठसें गण और विकलाके अंककों तिसमें मि लाय देवे और आठसडौ ८०० सें भागलेवे लब्ध जो हैं सो वर्त्तमाननक्षत्रकिमी भुक्तघड़ियांहोतीयाहै

श्रोर जो प्रातःकालमें वर्त्तमाननक्षत्रकिया भुक्तघड़िया होवें तिनमें घटायदेवे तवनिषेककाल सिद्धहो ताहै सूर्योदयसें लेकर निषेकका इष्टकाल होताहै तिसकालमेंमध्यमसूर्यको चालन यथोक्तप्रकारकर्के सूर्यस्पष्टकरे फेर तिससमयमें मध्यमचद्रमा वनावे श्रोर चद्रोच्चको वनावे श्रोर त्रिफलसंस्कृतचद्रमा वनावे श्रोर चद्रमाका मंदफल सिद्धकर्के स्पष्टचद्रमा वनावे सो चद्रमा जन्मसमयमें लग्नहोताहै फेर जन्मके सूर्यसें श्रोर निषेकके चद्रमासें इष्टघड़िया ल्यावें श्रवइष्टल्यावनेकीरीतिकहतेहैं प्रथमजन्मके सूर्यको सायनकरे फेर निषेककेचद्रमाको सायनकरे इनोंसेंइष्टकालसिद्धकरे सूर्यकाभोग्य-

प्रातःकालेमूलस्यभुक्तघटिकाः१३।५७। एतदूनस्यमूलस्यभुक्तघट्यःजातो निषेकस्येष्टकालः ।६।५। अत्रचालितोमध्यमोरविः।४।२४।५७।४८ मंदफ०ऋ०।२।०।१६।संस्कृतोरविः।४।२२।५७।३२॥ चरंऋणं ।३६। तत्संस्कृतःस्पष्टोरविः।४।२२।५६।५६। तत्रमध्यमश्चद्रः ८। ।७।३४।३२।चंद्रोच्चं।४।६।२।३५। त्रिफलसंस्कृतश्चंद्रः।८।८ २९।१४। मंदफलंऋणं।४।१४।९। संस्कृतःस्पष्टश्चंद्रः।८।४।१५। ०५। गतिः७५५।७। अयंचंद्रोजन्मसमयेलग्नं पुनर्जन्मार्कनिषेकचंद्रभ्या मिष्टकलानयनम् यथाजन्मार्कःसायनः।२।७।।५१।३९। निषेकचं द्र.सायनः८।२३।३३।०५। आभ्यामिष्टकलानयनंयथा अर्कभोग्यस्त नोर्भुक्तकालान्वितोयुक्मध्योदयोभीष्टकालोभवेदिति अर्कभोग्यकालः।२२३ ।३६।२०। तनोर्भुक्तकालः।२६।९।१६।१५। मध्योदयानिकर्क टतोवृश्चिकांतानामैक्यम्। १७१७।एतानिजातंसूर्योदयादिष्टपलात्मकं।२२१०। पष्ठ्याभक्तंजातंसूर्योदयादिष्टघट्यः॥३६।५०॥ दिनमानं ३४।४६॥ ऊ नितोजातोरात्रीष्टकालः २।४॥ अथवासूर्यःसायनः॥२।७।५०।३९ षड्राशि६ युतः ८।७।५०।३९॥ यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशांतरह तउदय स्यात्वाग्निहृत्विष्टकालइति लग्नं ८।२३।३३।०५॥ तदंशांतरं १५।४२।२६॥ उदयपलानि ३४३ तदंशांतरेणगुणितानि५३६।२।३८ खाग्नि ३० भक्तेलब्ध.इष्टकालः १७९ षष्ठि६० भक्तेघटिकाद्यः२।५९इदंसूर्येष ड्राशियुतत्वाद्रात्रिगतघटिकाः॥२।५९॥ अत्रसूर्यः॥१।१८।४२।३७

काल वनावे श्रोर लग्नका भुक्तकाल वनावे श्रोर मध्यमें जो उदय पलहैं तिनको जोड़देवे श्रोर साठ ६० सें भागलेवे तव सूर्योदयकालसें इष्टकाल होताहै श्रोर तिसइष्टकालमें दिनमानकोघटायदेवे तवरात्रि गतघटिकाहोतीहै अथवा सायनसूर्यमें छे ६ राशीमिलायकर यदितनुदिननाथावेकराशौतदं शांतरहतइत्यादि रीतिकर्के इष्टकाल ल्यावे तव रात्रीष्टकालश्राजावेगा सो सूर्यमें छैराशी जोड़नेकर्के रात्रि गतघटिकाहोतीहै फेर तिसकालमें सूर्यस्पष्टकरे

और लग्नस्पष्टकरे और चंद्रमास्पष्टकरे इसी प्रकार चंद्रमा कर्क और निषेककालकेसूर्यकर्के गर्भइष्टकाल कोंसिद्धकरे फेर तिसकालमेंलग्नस्पष्टकरे और चंद्रमास्पष्टकरे और सूर्यस्पष्टकरे फेर चंद्रमाकर्के और जन्मके सूर्यकर्के इष्टकाल सिद्धकरे असकृत्कर्मकर्के जितनाचिर पूर्वकेतुल्य नहिंइष्टआवे तितनाकाल असकृत्कर्मकरे अबनित्यानंदोक्तइष्टकालकाशोधनकहतेहै चंद्रमामे लग्नकों घटायकर्के कला बनावे और तिनमें अपनें चुराशी ८४ में भागकों मिलावे और तिसमें उन्नीलक्ष छेहजार सत्तसउ सोलांके अंक ११,६७,१६ कोंमिलावे फेर आठसउ ८०० का भागदेवे जो लब्धआवे सो गर्भस्थअहर्गणहो ताहै १ औरप्रकारांतरकहतेहैं लग्नमेंचंद्रमाकोंघटायकर्के कला बनावे फेर अपने ८४ भागकों मिलावे

लग्नं ॥ ८ । ४ । १६ । ४३ ॥ चंद्रः ॥ ५ । ९ । ४४ । ०१ ॥ अतश्चंद्रेणगर्भा र्केणलब्धोगर्भेष्टकालः ३ ॥ ९ ॥ अत्रलग्नं ॥ ५ ॥ ९ ॥ ४० ॥ ३० ॥ चंद्रः ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३८ ॥ १० । सूर्यः । ४ ॥ २२ ॥ ५४ । ०४ । अतश्चंद्रेणजन्मार्केणाच इ ष्टकालोरात्रिगतः ॥ २ ॥ ५८ ॥ अत्रलग्नं ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४८ । ५२ । चंद्रः ॥ ५ ॥ ९ ॥ ४३ ॥ २६ ॥ अतःसाम्यताजातःशुद्धः इष्टकालः ॥ अथेष्टकालशोधनं नित्यानंदकृततदेवोच्यते व्यंगावुलिप्ताःस्वाब्ध्यष्टांशा ८४ ढ्याष्टिनगांग नवेदुभिः ॥ ११ ६७ १६ ॥ युक्ताः ॥ खाभ्रगजे ॥ ८०० ॥ भक्तागर्भस्थोऽ हर्गण.स्थिरः ॥ १ ॥ विचंद्रांगकलाःस्वाब्धिगजांशा ८४ ढ्याविहीनताः त्रिनगाक्षाष्टभूपक्षा ॥ २ १ ८ ५ ७ ३ ॥ खखाष्ट ८०० साप्तहर्गणः ॥ २ व्यंगाब्जांशाःपृथक्त्रिघ्नाःखाब्ध्या ॥ ४० ॥ सोनाइनो १२ हृताः ॥ खतत्वा ॥ २५० ॥ ढ्याहितिथयोगर्भाज्जन्मावधिस्थिराः ३ जन्मतोनवमेमासेदशमेवा स्मृतोपुरा ॥ जन्मलग्नसमेब्जेगेजन्मेन्दुसममत्रतु ॥ ४ ॥ ग्लोर्मंजन्मलग्नं स्यात्तस्मात्कालस्ततोविधुः कर्मैतदसकृत्तावद्यावत्सर्वंस्थिरंभवेदिति ॥ ५ ॥ इतिनिषेकादीष्टकालज्ञानम् ॥

फेर तिनकों इकीलक्षअठहजारपाचसओत्रिहत्र २१८५७३ के अंकमें घटावे फेर आठसओ ८०० का भागदेवे तब गर्भकालका अहर्गण होताहै २ और चंद्रमासें लग्नकों घटावे फेर अंश बनावे तिनकों पृथक् धरे एकस्थानमेंत्रिगुणकरे और चाली ४० सें भाग लेकर दूसरेस्थानमें घटायदेवे फेर तिसमें बारा १२ का भाग लेवे फेर लब्धमें ढाई सउके २५० अंकर्को मिलावे तब गर्भका लकी तिथिसें लेकर जन्मकालकी तिथिपर्यंत तिथियांहोतीयांहै ३ आगे पूर्वकोन्याई इष्टशोधनकरे ४ ५ इहनिषेकादीष्टकालकाज्ञानकहाहै

अवप्रसंगसेंनिषेककाकारणसारावलीमेंकहतेहैं स्त्रीयोंकी जन्मराशीसें जब चंद्रमा । १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥ राशीमें स्थित होवे और मंगलकर्के देख्याहोवे तब स्त्रीयोंको प्रत्येकमहीनेंमेंरजोदर्शन होताहै कपित्थयसेंकहतेहैं ॥ १ ॥ चंद्रमाजलरूपहै और मंगल अग्निरूपहै जल और अग्निकेसंयोगकर्केपित्त उत्पन्न होताहै इसीप्रकार पित्तकर्के रक्तक्षोभकों प्राप्तहोकेस्त्रीयोंमेंरज उत्पन्न होताहै ॥ २ ॥ सो रजोदर्शन गर्भका कारण कहाहै और जब स्त्रीयोंकों ॥ ३ ॥ ६ ॥ १० ॥ ११ स्थानमें चंद्रमा मंगलकर्के देख्या होवे तब सो रज विफल होताहै गर्भका कारण नहिंहोताहै सो अन्यथा बाला वृद्धा बंध्यास्त्रीयोंमें होताहै ॥ ६ ॥ अवस्त्रीपुरुषकासंयोगहोणाऔरनहिंहोणाइहवादरायणऋषिकहताहै स्त्रीकेरजोदर्शनसमयमें पुरुषकों ॥ १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥

अथात्रप्रसंगेननिषेकस्यकारणमाह सारावल्याम् अनुपचयराशिसंस्थेकुमुदाकरबांधवेरुधिरदृष्टे ॥ प्रतिमासंयुवतीनांभवतीहरजोत्रवंत्स्येके ॥ १ ॥ इंदुर्जलंकुजोग्निर्जलमिश्रंत्वग्निरेवापित्तस्यात् ॥ एवंरक्तेक्षुभितेपित्तेनरजःप्रवर्त्ततेस्त्रीषु ॥ २ ॥ एवंयद्भवतिरजोगर्भस्यनिमित्तमेवकथितंतत् ॥ उपचयसंस्थेविफलंप्रतिमासंदर्शनंतस्य ॥ ३ अन्यत्रबालवृद्धातुरबंध्याभ्यः एवंगर्भग्रहणयोग्यमार्त्तवंप्रदर्श्यस्त्रीपुरुषसंयोगसंभवासंभवौचाह ॥ बादरायणः ॥ पुरुषोपचयगृहस्थोगुरुणायदिदृश्यतेहिममयूखः ॥ स्त्रीपुरुषसंयोगंतदावदेदन्यथानैव ॥ ४ ॥ नन्वत्रस्त्रियाउपचयस्थःकथनोक्तः अयुक्तमेतत्प्राधान्यात्पुरुषस्यैवकस्मिन्कालेयंविचारः उच्यते चतुर्थदिनेस्नातायामिति अथान्यदाहग्रंथान्तरे बलान्वितावर्कसितौस्वभांशेपुंसांयदाचोपचयेभवेताम् ॥ तथांगनानांशशिभूमिजौवा तदाभवेद्गर्भसमुद्भवश्च ॥ ५ ॥

स्थानमेंजन्मराशीसें चंद्रमाहोवे और बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तबस्त्रीपुरुषका संयोगहोताहै अन्यथा नहिंहोताहै अवइसमेंशंकाकरतेहैं स्त्रीयोंको उपचय । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमेंचंद्रमा पुरुषसंयोगकेदूरकरणवास्ते क्यों नहिंकहा पुरुषका क्योंकहाहै इहे अयुक्तहै तब कहतेहैं गर्भमें प्राधान्यता पुरुषहीकाहै इहेविचारचतुर्थदिनमें जबस्त्रीस्नानकरलेवे तबकहाहै ॥ ४ ॥ अबऔरग्रंथांतरकेमत मेंकहतेहैं ॥ निषेकसमयमें पुरुषकों । ३ । । ६ । १० । ११ । स्थानमें जन्मराशीसें सूर्य और शुक बलकर्केयुक्त अपनेनवांशमास्थित होवें और तैसेंहि स्त्रीयोंकी जन्मराशीसें । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमें चंद्रमाऔर मंगल स्थितहोवें तब गर्भ स्थित रहताहै । ५ ।

और कहतेहे स्त्रीयोंको । २ । ६ । । १० । ११ । स्थानम वी चंद्रमा मगलकके देख्याहोवे तवगर्भग्रहणकरणेके जोग्यहोतीहै और पुरुषों कोंउपचय । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमे चंद्रमाहोवे और वृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे तवस्त्री पुरुपका सयोगहोताहै इसकेविना नहिंहोताहै ॥ ६ ॥ अवआधानकालमेंचंद्रमासेंप्रसूतीकासमयकहतेहें आधा

स्त्रीणांविधौचोपचयेकुजेनदृष्टेपिगर्भग्रहणेपियोग्या ॥ पुसांतथागीष्पतिना प्रदिष्टेस्त्रीपुंसयोर्योग्यमतोन्यथान ॥ ६ ॥ अथाधानकालेचंद्रवशात्प्रसव कालज्ञानमाह ॥ आधानंयदिदृश्यतेस्थिरगतेचंडीशचूडामणौनारीणाप्रस वस्तदाखलुभवेद्युग्मांकपक्षे ॥ २९२ ॥ दिनैः ॥ सप्ताशीत्यधिकेश्च पक्षसहिते ॥ २८७ ॥ स्तस्मिश्चरक्षेत्रगे ॥ चद्राष्टाश्वि ॥ २८१ ॥ दिनैरसातलभुजे॥ २७६ ॥ वाद्वि स्वभावेविधाविति ॥ ७॥ इतिश्रीमहाराजाधिराज श्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिवंधेजातकखडेसंवत्सरादिफलकथनंनिषेकादिष्टशोधनंचनामतृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

नकालमें स्थिरराशियोंमें । २ । ५ । ८ । ११ । चंद्रमाहोवे तव स्त्रीयोंको प्रसूति दोसउोवानूम २९२ दिनोंकर्के होतीहै और चद्रमा । १ । ४ । ७ । १० । चरराशीमहोवे तव दोसउो सताशी । २८७ । दिनों कर्के होतीहै और चद्रमा द्विस्वभावराशीमें । ३ । ।६।९। १२ । होवे तव दोसउोएकाशी । २८१ । दिनोंमें प्रसूतीहोतीहै ॥ ७ ॥



अवप्रयोजनग्रहसाधनेकाहै तिसमेंकल्पसें लेकर गतवर्षोका ओर अहर्गणका मध्यमग्रहसाधनके निमित्त सुगमउपायकर्के कृष्णज्योतिर्वित् के तीन श्लोकोंकर्के कहाहै प्रथमग्रहलाघवकरणके अहर्गणकों ब्रह्मसिद्धांतके अहर्गणतुल्य करणाकहतेहै ग्रहलाघवकाजो अहर्गण तिसमें वागलक्ष तीनहजार एकसऊ तेरां १२३११३ के अंककों मिलावे फेर वर्त्तमान जो चक्राक तिसकर्के गुणिन जो चारहजार सोलाके अंककों ४०१६ तिसमें मिलायदेवें तव ब्रह्मसिद्धांतके तुल्यअहर्गण होजानाहै तिसके आगे फेर कल्पादि अहर्गण सिद्धकर्तेहै सो उदाहरणमें स्पष्टलिखते

अथग्रहभावसाधनाध्यायः तत्रादौग्रहलाघवीयादहर्गणाद्ब्रह्मतुल्यकरणादहर्गणानयनप्रकारः श्रीमद्गणेशदैवज्ञैरभिहितः तथा विश्वेद्रग्न्यरुणैर्युक्तोग्रहलाघवजोगणः चक्रघ्ननृपखाब्ध्याढ्योब्रह्मतुल्यगणोभवेत् ॥ १॥ तत्रकल्पादितोगताब्दानांदिनगणानांच मध्यग्रहसाधनार्थं सुगमोपायेन कृष्णज्योतिर्विदांश्लोकत्रयम् ॥ तद्यथा करशरयुगसप्ताभ्राभ्रषड्वन्हिषट्खद्वितुरग ॥ ७२०६३६००७४५२ ॥ साहितश्चेद्ब्रह्मतुल्यद्युपिंडः इहसभवतिकल्पांतावदंकाद्रिभूमीनगयुगखगपक्षाब्ध्यंकभू ॥ १९७२९४७१७९ युकूशकोव्दः ॥ १ ॥ शररसगुणभूपण्नागरामाभ्रवेदाम्बुधिशशिनग ७१४४०३८६१३६५ ॥ युक्तोब्रह्मतुल्यद्युपिंडः ॥२ ॥ नागरामनगवेदषट्शरक्ष्मा ॥ १५६४७३८॥ युतोदिनगणःकुतूहले ॥ स्यादयंकलिमुखोथगोद्रिभूराम ३१७९ संयुतशकोत्रवत्सराः ॥ ३ ॥ उदाहरणम् ब्रह्मतुल्यद्युपिंडः २४८२६१ ॥ करशरयुगसप्तादिभिरेतैरंके ७२०६३६००७४५२ युक्तोजातःकल्पाद्यहर्गणः ॥ ७२०६३६२५५७१३ ॥ तथाअंकाद्रिभूम्यादिभिरंके १९७२९४७१७९ .युक्तःशकः १७८४ जाताःकल्पादितोगताब्दाः १९७२९४८९६३ ॥ एवंशररसगुणादिभि ७१४४०३८६१३६५ युक्तोहर्गणः २४८२६१ जातःसृष्ट्यहर्गणः

हैं ॥ तत्रग्रहलाघवीयोहर्गणः ६५२ विश्वादिभिरंके १२३११३ युतोजातः १२३७६५ चक्र ॥ ३१ अनेनगुणितानृपखाब्धयः ४०१६जातः १२४४९६ युतोजातोब्रह्मतुल्योहर्गणः २४८२६१ अव उदाहरणकहतेंहै ब्रह्मसिद्धांतके तुल्य जो अहर्गण तिसमें करशरादिअंकोंकों मिलावें तव कल्पसें लेकर अहर्गणहोताहै तैसेंहि अंकाद्रिभूम्यादि अंकोंकर्केशककोंमिलावे तवकल्पसेंलेकर गतवर्षहोतेहैं और शररसाद्यादिअंकों कर्के अहर्गणकों युक्तकरे तव सृष्टिकालसें लेकर अहर्गण होताहै और तैसेंहि गोत्पाद्रिरामादिअंकोंकर्के शककों युक्तकरे तव सृष्टिसें गतवर्षहोतेहैं

और अयसेहिं नागरामनगादिअंकों कर्के अहर्गणको युक्तकरें तब कलियुगके आरंभसेंअहर्गण होताहे और तैसेंहिं गोद्रिभूरामादि अंकोंको शकमें मिलावें तब कलियुगसें लेकर गतवर्षहोतेहैं अब उदाहरणका क्रमलिखतेहे तिसमें इष्टश्रीमहाराजाधिराजजीकी आज्ञानुसाररखतेहै श्रीरघुवंशके जो राजा तिनके कुलमें श्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहधर्मावतारप्रभुउत्पन्न भयाहै और कैसावीहे श्रेष्ट जो शास्त्र तिनका श्रवण और मनन और निध्यासनमें उत्कंठाको प्राप्तहै मनजिसका तिसकीआज्ञाकर्केपंडितोंने ज्योतिःशास्त्रका समुदाय रचाहै किससमयमें सतारासउंचुराशी शकमें किसवास्ते श्रेष्ठबुद्धिवालोंकीप्रसन्नतावास्ते १ श्रीवीरविक्रमादित्यकेराज्याभिषेकसेंसंवत् १९१९ और शाकः

७१४४०४१०९६२६ तथा गोत्याद्रिरामादिभि १९५५८८३१७९युक्तः शकः१७८४ जाताःसृष्टिगताब्दाः१९५५८८४९६३ एवंनागरामनगादिभिः १५६४७३८ युक्तोहर्गणः २४८२६१ जातःकलिमुखोहर्गणः१८१२९९९ तथागोद्रिभूरामैः ३१७९ युक्तःशको १७८४ जाताःकलिगताब्दाः ४९६३ अथोदाहरणक्रमोलिख्यते श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतिर्जातोरघूनांकुले सच्छास्त्रश्रवणादिषूत्सुकमनाधर्मावतारःप्रभुः ज्योतिःशास्त्रसमुच्चयोविरचितस्तस्याज्ञयासूरिभिः शाकेवेदगजाद्रिभू १७८४ परिमितेसद्धीमतांप्रीतये १ तत्रश्रीनृपतिवीरविक्रमादित्यराज्यात्संवत् १९१९ शाकः १७८४ तत्रसकलपंडितमंडलीसमाश्रयविश्रांतिकल्पपादपस्यपरमाभिधेयप्रधानपुरुषस्यसकलमहाराज्यकलापरंपराभाजनस्यधर्ममार्गप्रवर्त्तकधुरीणस्यसकलमंडलेश्वरोपयुक्तपादपीठस्यश्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहस्यराज्याभिषेकात्संवत् ७ अत्राब्दावधिकल्पगताब्दाः १९७२९४८९६३ शेषाब्दाः २३४७०५१०३७ कलियुगगताब्दाः ४९६३शेषाब्दाः ४२७०३७ एतेषांसंवत्सराणांमध्येकरणकर्तृभिर्ज्योतिर्वित्तिलकैःशालिवाहनशाकएवाभिमतः

१७८४ और संपूर्णपंडितजनोंकी जो मंडली तिनके विश्रामके वास्तेकल्पवृक्षकी न्याई परमप्रधान पुरुष और संपूर्णमहाराज्यकीकलापरंपरासें लेकर धर्ममार्गमें जो प्रवृत्त तिनमें अतिचतुर और संपूर्ण राजयोंकरयुक्तपादपीठजिनको अयसे श्रीराजाधिराजमहाराजरणवीरसिंहजीके राज्याभिषेकसेंसंवत् ७ इनोंवर्षोंपर्यंतकल्पसे लेकर गतवर्षभये १९७२९४८९६३ और शेषवर्षरहे २३४७०५१०३७ ॥ और कलियुगसेंलेकरगतवर्षभये ४९६३ और शेषवर्षरहे ४२७०३७ इहेजो संवत्सरहे तिनके मध्यमें ग्रहलाघवकरणके बनावने वाले जो गणेशनामकर्केज्योतिषि तिनोंनेशालिवाहनका शकमानकर्के करणग्रंथरचाहै

और ग्रहलाघवकीटीकामें विश्वनाथज्योतिषि जो हैतिसनेश्रयसें कहाहै जिसग्रथमें कल्पसें लेकरग्रहों-काश्र्आनयन कियाहै तिसकानामसिद्धांतहै औरजिसग्रंथमें युगसें लेकरग्रहोंकाआनयनकियाहैतिसकानाम तंत्रकहाहै और जिसग्रथमें शकसेंआदलेकर ग्रहसिद्धकियेहैं तिसकानामकरणकहतेहैं अववइसग्रथमेंजन्म पद्धति साधनकेवास्तेग्रहलाघवकरणसें ग्रहसाधनकर्त्तेहैं तिनोंकेनिमित्तउपपत्तिके सहितदोश्लोकों करके अहर्गणकहतेहैं अब भाषाकर्के अहर्गण ल्यावनेका प्रकार कहतेहैं शकजो है शालिवाहनके राज्यसें गतवर्ष समूहतिसमें चउदा सैबेतालीके १४४२अंकको घटावे शेष जो बचें सो सिद्धांतरहस्यकरण नामग्रंथके आरभसें गतवर्ष होतेहैं अर्थात् १४४२ शकमें करणका आरंभ भया फेर शेष वर्षांको ग्यारां ११ सें भागलेवे जोफल लब्धहोवे तिसकी चक्रसंज्ञा कहीहै इसमें चक्र संज्ञाकरणेका-प्रयोजन कहतेहैं आचार्यने शिष्योंके क्लेशभयके दूरकरणे वास्ते ग्यारा २ वर्षका अपवर्त्तन वर्षगण‘ मे दियाहै और ११ के भागलिये शेष जो वर्षहैं तिनकों बारा १२ के अंकसें गुणे गुणेपीछे चैत्रशुक्लपक्षसें लेकर इष्टकालपर्यंत जोगतमासहैं तिनकों मिलावे तब चक्रकालसेंलेकर मासगण

यदुक्तंसिद्धांतरहस्यविवरणेविश्वनाथदैवज्ञेन यत्रकल्पादेर्ग्रहानयनंससिद्धांतः यत्रयुगादेर्ग्रहानयनंतत्तंत्रम् यत्रशकाद्ग्रहानयनंतत्करणमिति अत्रजन्मपद्धतिसाधनार्थंसिद्धांतरहस्यकरणतोग्रहसाधनंक्रियते तदर्थमहर्गणंसोपपत्तिकंवृत्तद्वयेनाह द्व्यब्धीन्द्रोनितशकईशहृत्फलंस्याच्चक्राख्यंरविहतशेषकंतुयुक्तम् ॥ चैत्राद्यैःपृथगमुतःसदृग्घ्नचक्राद्दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥ खत्रिघ्नगततिथियुङ्निरग्रचक्राड्रांशाढ्यंपृथगमुतोऽधिपट्कलब्धे ॥ ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो ॥ भवेद्वारःस्याच्छरहतचक्रयुग्गणोब्जात् ॥ २ ॥

होताहै अब इसमें सौर वर्षमासोंमे चांद्र मासोंका योगकरणेसें क्रियामें दोष पडताहै इसवास्ते आचार्यने सौरमासोंसे अधिकमास निकालकर सौर मासोंमें जोडकर्के चांद्रमासकिये तिनमें चैत्रादिगतमासोंका योग कियाहै ॥ फेर मासगणकों दूसरेस्थानमें धरे और चक्रकों दो २ के अंकसे गुणे फेर तिसमे दश १० के अंकको मिलावे फेर तिसमें अमर ३३ के अंकसें भाग लेवे जोलब्धहोवे तिसकी अधिमास संज्ञा कहिहै तिसकों दूसरे स्थान स्थितजो मासगण तिसमें-युक्तकरे तब स्पष्ट मासगण होताहै १ फेर तिसमासगणकों त्रिंशत् । ३० । के अंकसें गुणे तिसमें मासगणमें लेकर इष्टकाल पर्यंतगततिथियोंको मिलावे फेर तिसमें चक्रकों छै ६ । का भागदेकर जो लब्धहोवे सो मिलावे शेषका त्यागकरे फेर तिसकों दूसरे स्थानमें स्थापनकरे और चहुट । ६४ । के अंकसें भागलेवे जो लब्धआवे तिनकी अवमदिन संज्ञाहे तिनोंकर्के दूसरेस्थान जो-अंकस्थितहै तिनमें घटाय देवे तब अहर्गण होताहै इस प्रकार सावना अहर्गण उत्पन्न होताहै और वारके ज्ञानवास्ते फिर अहर्गणमें पाच । ५ । कर गुणित चक्रकों मिलावे और सात । ७ ।

कर भाग लेवे भागलिएपीछे जो शेष वचे सो चंद्रवारसे लेकर्के वार होताहै जहां शून्य शेष वचे तहां सोमवार होताहै जिस्सें ग्रंथके आदमें सोमवार था ॥ अव उदाहरण कहतेहै जैसें सतांरासऊचुराशी ॥ १७८४ ॥ शकमें चउदासऊविताली ॥ १४४२ ॥ वर्षघटाए दिये तो वा की तीनसउविताली ॥ ३४२ ॥ वर्षकरणग्रंथसें भये उौर तिनकों ग्यारां ॥ ११ ॥ का भागदिया तो लब्ध एकत्री ॥ ३१ ॥ चक्रभये शेषएक १ वचा तिसकों वारां १२ सें गुणदिया १२ उौर चैत्रशुक्लप्रतिपदासें लेकरइष्टमासपर्यंत सात ७ मास गतभये तिनकों जोडदिया नवउन्नी १९ भये तिनकों दूसरी जगास्थितकिया १९ उौर चक्र ३१ कों दो २ के साथ गुणः तो वाहट ६२ भये तिनकों मिलाया तो एकाशी ८१ भये फेर तिनमें दश १० कों मिलाया तो एकानमें ९१ भये फेरतिनकों तेत्री ॥ ३३ ॥ कर भागलियातोलब्धदो ॥ ॥ २ ॥ ऽधिमासभये इनों कों दूसरे स्थानके अकों में ॥ १९ ॥ जोड दियातोमासगण भया ॥ २१ ॥ फेर मास गण कों तीस ॥ ३० ॥ सेंगुणदिया तोछे सौ तीसभये ॥ ६३० ॥ फेरतिनमें शुक्ल प्रतिपदा सें लेकर गततिथियां सताईं । २७ । तिनों कर युक्ताकिया तोछे सौ स तवुंजा ॥ ६५७ ॥ भये फेर चक्र में ३१ छेका ६ भाग लिया तव लब्धभये पांच ५ तिनकों मिलायदिया ६६२ उौर चक्रके शेष का त्याग किया इन कों दूसरी जगा में स्थितकिया ६६२ तिन में चउंह ६४ सेंभाग लिया तो लब्धभये क्षयदिन दश १० तिन कों दूसरी जगा स्थित जो अंक ६६२ ति न में हीन कियातव सावन अहर्गण सिद्धभया ६५२ अभीष्ट वारके वास्ते चक्र ३१ कों पां च ५ सेंगुण दिया १५५ अहर्गण में मिलाय दिया ८०७ सात ७ सेंभाग लिया लब्ध का त्या गकिया शेष दो २ वचे इससें वुधवार भया तव अहर्गण शुद्धभया है ॥ उौर इससें विशेष कहते है ॥ अहर्गणसाधनके समयमें जव पूर्व वर्ष की अपेक्षा सें अधिमास अधिक आवे सो नाहिं ग्रहण करणा तिसका त्यागकरणा जैसें शाकः १५ ५५ चैत्रशुक्ल १ भृगौ अहर्गणः साध्यते उौर इसवर्षमें वैशाखमें आगें अधिमासहै उदाहरणम् शाकः १५५५ चउदांसौ विताली १४४२ सें हीन किया ११३ ग्यारां ११ कर भागलिया लब्ध चक्र १० शेष ३ वारांसें १२ गुणे ३६ चैत्रसें गतमास ० जोडे ३६ दूसरी जगा में धरे ३६ चक्र १० कों द्विगुण २० कर दश १० मिलाय ३० कर तिस में मेलें ६६ तेतरी ३३ सेंभागलिया लब्ध आधिमासाः २ इसमें वैशाखसें पूर्वहि अधिमास प्राप्त भ या सो नाहिं ग्रहणकरना अपसे स्थानमें एककर हीन अधिमास लेणा अपसें करणेसें अधिकमासः १ इसकर्के युक्ताकिया दूसरे स्थानका अंक तव सतत्री भये ३७ त्रिंशत् ३० गुणितं ११1० गते तिथि ० युक्तं १११० चक्रस्य षडंशेन १ युक्तं ११११ द्विस्थं ११११ चतुःषष्ट्या ६४ भक्तंलब्धं क्षयाहाः १७ इनोंकर हीनकिये पृथक् स्थित तव अहर्गणभया १०९४ अभीष्टवारके वास्ते एक युक्ताकिया तव अहर्गण १०९५ शुद्धभया उौर जव दो २ अधिमाससें अहर्गण सिद्धकरें तो अहर्ग णः ११२४ अभीष्टगारार्थनिरेकाकिया ११२३ इहे अशुद्धभया इससेंउत्पन्नग्रह अशुद्धहोणेसें ॥ यदुक्तं सिद्धांतशिरोमणौ ॥ स्पष्टोधिमासःपतितोप्यलब्धोयदायदावाऽपतितोपिलब्धः ॥ सैकैर्निरेकैः क्रमशोधिमासैस्तदादिनौघःसुधयाप्रसाध्यइति । १ । एवंस्पष्टाधिमासोत्तरमहर्गणानयने यद्यधिकोधिमो

सो नलभ्यते, तथापिसंग्राह्यः यथा शाकः १५१२० द्व्यब्दैः १४४२ ऊनः ७८ एकादश ११ भक्तं लब्धं चक्रं ८, शेषं १० द्वादशगुणित १२० चैत्रतो ६ गतमासैः ७ युत ७ द्विस्थं ७ द्विगुणाचक्र १६ युक्त २२ दश १० युक्त ३२ त्रयस्त्रिंशताभक्त लब्ध अधिमासः १ अत्राधिमासो धिको नलभ्यते तथापिग्राह्यः तथाकृतेधिमासाः २ अनेन युक्त द्विस्थं ९ त्रिंशत्गुणित २७० गततिथियुक्त २७० चक्रस्यषडंशेन १ युत २७१ द्विस्थं २७१ चतु षष्ठ्या ६४ भक्त ४ अनेनहीनं द्विस्थजातोहर्गण २६७ अभीष्टवारार्थंनिरेक कृतः शनिवारे जातोहर्गण. २६६ यदितु यथागतेराधिमासे अहर्गणः क्रियतेतदाय २९८ मशुद्ध. उक्तंचाशिरोमणौ अभीष्टवारार्थमहर्गणश्चेत्सैकोनिरेकस्तिथयोपितद्वत् इतिअत्रान्योविशेषः जिसवर्षमें अधिमास पडे तिस अधिमासके पूर्व अहर्गण साधनेमें अधिमास निरेक एककररहित ग्रहणकरणा और अधिमासकेमध्यमें अहर्गण साधनेमे अधिमासकिया गततिथिया ग्रहण करणियां अधिमासनहीं गिणना और अधिमासके उपरत मासोंमें अहर्गण सिद्ध करणे में यद अधिमास अधिकमासनहींबी आवे तब बी अधिमास एक कर युक्त ग्रहण करणा और बी कहतेहैं जब वर्षांकों चक्रलेणे वास्ते ग्यारांसे भागलिये पीछे शेष शून्य० रहे तब अहर्गण सें उत्पन्न जो वार तिन

अथसारिण्यांमध्यमग्रहसाधनमाह अहर्गणाच्छीग्रहलाघवोक्तंकृत्वाबुधैः खाग्निमितैर्विभाज्यम् लब्धंपुनर्द्वादशभिर्विभक्तं राश्यादिकास्तेचततोविधाय १

अथध्रुवक्षेपसंस्कारमाह निजध्रुवोनोनिजक्षेपकांकागणजोद्भवांकामिलितःप्रकाशी सूर्योदयेतेखचराभवंतिचाल्येष्टकालेप्रविधायनान्यादिति २

में दोदो का अंतर पडताहै जैसें शाक १५७४ चैत्र शुक्ल प्रतिपदि १ रवौ अहर्गणः साध्यते तत्र चक्रं १२ शेषं शून्यं० अहर्गणः १२ अत्रागतो भौमवारःअपेक्षित स्तु रविवारः एतादृश स्थले अहर्गणोद्वाभ्यां रहितः सहितो वा कार्यः इतिशिवं॥ अब सारणीकर्के मध्यम ग्रहोंका साधन कहतेहैं श्रीग्रहलाघव ग्रंथोक्त रीतीसें सिद्धकिया जो अहर्गण तिसकों बुद्धिमानों नेत्रीह ३० के अंकसें भाग लेणा और जो लब्धहोंवे तिसकों फेर बारा १२ सें भागलेणा तिस अहर्गण कों राशी अंशकला रूप कर्के विधान करणा तिसराश्यादि अंक ल्यावने का प्रकार एह है प्रथम एकस्थानके अंकों कों टेढी पंक्ति में लिखे और तिसके नीचे दशाकादि अंकों को लिखे और तिसके नीचे शताकादि और तिसके नीचें सहस्राकादि अंकों को लिखे और तिनकों यथा स्थानप्रति विकलादि अंकों में मिलाय कर जोडदेवे तिसकों राश्यादि बनावें सो दिन गण भवखेट होताहै और ध्रुवक्षेप अंकोंका संस्कार कहतेहैं अपने अपने ध्रुवाकों कर्के रहित जो अपने अपने क्षेपाक जो सारणीके उपरि कोष्ठमें वीसचक्रसें लेकर पंचाश चक्रपर्यंत बनाय धरेहै तिनमें इष्टचक्रके अंककों दिनगण भवखेटमें मिलावे तब मध्यम ग्रह सिद्ध होताहै ॥ २ ॥

अथ नूतनेनमध्यमसूर्यबुधभृगुसाधनम ॥खखतग । ७० । लवहीनोद्युजोंकहृन्शुक्राःखतिथिहृतगणोनोलि प्तिकास्वंशकायाः अथध्रुवकक्षेपकयोःसंस्कारमाह ॥ दिनगणभवखेटश्चक्रनिघ्नध्रुवोनोदिनकृदुदयेरदक्षेपयु क्तमध्यमःस्यादिति । १ । अहर्गणकों दो जगा धरे एकजगामें सत्तर । ७० । सें भागलेकर अंशादि फल अंशकलाविकलारूप तीनस्थानमें स्थितकरे फेर तिसफलकों अहर्गणसें घटावे फेर अहर्गणकों डेढसउ १५० के अंकसाथ भागलेवे जो फललब्धहोवे तिसकों कला विकलामें घटावेतव अंशा दि सूर्य बुध शुक्र होतेहैं फेर चक्रांकके साथगुणित जो ध्रुवांक तिनकों घटावे फेर अपने क्षेपांककों मिलावे तव मध्यम ग्रह होताहै । १ । रवेर्ध्रुवांकः । ० । १ । ४९ । ११ । रवेःक्षेपांकः ११ । १९ । ४१ । ०० । रवेर्मध्यमागतिः ५९ । ८

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१३	११	९	७	६	४	२	००	२८	२६	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२
१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१
२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१९	८	५७	४६	३५	२४	१२

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च	[illegible]
९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	[illegible]	क्रां	[illegible]
१०	८	६	५	३	१	२९	२७	२५	२४	२२	२०	१८	काः	[illegible]
३२	४२	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	२०	३१	४१	[illegible]	[illegible]
०२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१५	०४	५३		[illegible]

रवेर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१९	२९	९	१९	२९	८	१८	२८
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२
८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	४३	०५	२६	४८	१०	३२	५३	१५
१०	२०	३०	४१	५१	०१	१२	२२	३२	४२	२५	०८	५१	३४	१७	०	४३	२५

शत १०० सहस्राणि १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
३	६	९	१	४	७	१०	२	५	८	५	२	११	८
८	१७	२५	४	१२	२१	२९	८	१७	२५	२१	१६	१२	८
३३	७	४०	१४	४८	२१	५५	२८	२	३६	१२	४८	२४	०
३७	१४	५१	२८	५	४२	२०	५७	३४	११	२२	३४	४५	५७
८	१७	२५	३४	४२	५१	[illegible]	८	१७	२५	५१	१७	४२	८

अथचंद्रोच्चसाधनम् नव ९ हृतदिनसंघश्चंद्रतुंगलवाद्यं भवतिखनग ७० भक्तयुक्तजोपेतालिप्तः, अहर्गण जो है तिसकों नव ९ के अंकसाथ भागलेवे जो अंशादिकफल आवेसो चद्रमाका उच्चहोताहे फेर दूसरीवार अहर्गणतें सतर ७० के अंकसें जोकलादिकफललेवे तिसफलकों पहले अंशादिचंद्रोच्च में कलास्थानमेंघटावे फेर चक्रगुणितध्रुवांककों घटावे और क्षेपांकको मिलावे तव अंशादिचंद्रोच्चहोताहे चंद्रोच ध्रुवकः १ २ ४५ ०० चंद्रोच्चक्षेपकः५ १७ ३३ ०० चंद्रोच्चगतिः ६ ४१

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
९	६	९	०	३	६	९	०	३	५	८	११	२	५	८	११	२	५
२२	१९	१७	१४	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१९	१६	१४	११	८	५
३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१३	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
८	११	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	क्रां
३	०	२७	२४	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	०	कः
३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अथचंद्रोच्चसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५	६	७	८	१०
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१
४०	२१	२	४३	२४	५	४५	२६	७	४८	३७	२५	१४	२	५१	३९	२८	१७
५१	४२	३४	२५	१७	८	५९	५१	४२	३४	८	४२	१७	५१	२५	५९	३४	८

शत १०० सहस्राणि १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	७	११	२	६
११	२२	३	१४	२५	६	१७	२९	१०	२१	१२	४	२५	१६
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	४१	२	२३	४४
५	११	१७	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	५४	५१	४८	४५
४२	२५	८	५१	३४	१७	५९	४२	२५	८	१७	२५	३४	४२

अथचंद्रमध्यमसाधनम गणमनु १४ हतिरिद् स्वाद्रिभूभागहीन खमनु १४०, हृतगणोनोलिप्तकास्व ग्रपूर्वा अथचंद्रस्यत्रभुंनफलसंस्कारअयनांशसाधनचाह देयतृचरमस्योविलिप्तिकासुमध्येदोर्द्विगुणनवो- द्धृतकलासु भार्तचप्रमाणिफलत्वे स्वेदा० पृ० नून ४४४ स्वरसहृत शकोनांशा ० अथचंद्रस्यदेशांतर संस्कारमाह निजनिजपुरेग्रांतस्थिनाद्यो नर्नोघाद्रसलब्धमितलिप्ता० स्वणमिदौपरेप्राक् अबचंद्रमाकेम ध्यमसाधनकाप्रकारकहतेहैं अहगणकोचउदा १४ सेंगुणेदूसरोजगाथके तिसकोसतारा १७ सेभाग लेवैलब्धभयाजो अंशादिफल तिसकोंदूसरेस्थानके अहगणमे घटावे फेर अहगणमें एकसउचौदाली १४०सेंभागेलब्ध जो कलादिफलतिसकों कलास्थानमेंहीनकरे फेरचक्रगुणितध्रुवाककोंघटावै और क्षेपरुकामिलवितवअंशादिचंद्रमध्यमहोताहै और चंद्रमाकोंदेशांतरसंस्कारकहतेहैं अपने २ देशसेंजित नेयोजनरेखानगरहोवे तिसकेछठे ६ भागतुल्यकलारेखास पश्चिमधनकरे और पूर्वऋणकरे तवदेशा तरसंस्कृतचंद्रमाहोताहै चंद्रध्रुवक ०।३।४६।११ चंद्रक्षेपक ११।१९।६।० चंद्रमध्यमागति ७९० । ३५

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३[illegible]
९	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	६
३	२९	२६	२२	१८	१४	११	७	३	२९	२६	२१	१८	१४	१०	७	३	२[illegible]
४२	५६	९	२३	३७	५३	५	१९	३२	४६	०	१४	२८	४७	५५	९	२३	३[illegible]
२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१९	८	५७	४६	३५	२४	१३

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च०
६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	का
२५	२२	१८	१४	१०	७	०३	२९	२५	२१	१८	१४	१०	का
५१	४	१८	३२	४६	०	१३	२७	४१	५५	०९	२२	३६	
०२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१२	१	५०	

चंद्रमध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९[illegible]
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	८	१	५	९	२	६	११	३
१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२२	५	१७	२८	१०	२२	४	१
१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	३१	१७	२	४८	३४	२०	६	५
३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	३७	२२	१४	३	५१	४०	२९	१[illegible]
५३	४२	३३	२४	१५	११	३	५५	४७	३९	१[illegible]	०१	३१	१६	५०	३५	१८	५[illegible]

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	[illegible]	६	४	०
२१	२५	२२	२०	१८	१५	१३	११	८	६	१२	१९	२५	१
३०	१६	४३	३३	१०	३८	२६	४	४०	-३	४२	३	२१	४२
६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	५	१०	१६	२१	२७
३३	६	३९	१२	४३	१६	४१	२३	५६	२९	५९	२३	५३	२८

अथभौममध्यमसाधनम् दिग्घ्नो १० द्विघादिनगणोंककुभि १९ त्रिशैलै ७३ भंकःफलांशकलिकावि वरंकुजःस्यादिति अवभौममध्यमसाधने काप्रकारकहतेहै अहर्गणकोंदश १० केअंकसाथगुणे फेरदोस्थानमेंस्थितकरेएकस्थानमेंउन्नी १९ केअंकसेंभागलेवे लब्धअंशादिफलकों भिन्नस्थापनकरे और दूसरे स्थानमें त्रिहत्र ७३ केअंकसेंभागलेकरकलादिफलभिन्नस्थापनकरफेरतिनकाआपसमें अंतरकरेतव अंशादिदिनगणभवभौमहोताहै फेर अंशोंकों तीस ३० केअंकसेंभागलेकर राश्यादिकरे और चक्रगुणितध्रुवा ककोंघटावे क्षेपाककों मिलायदेवेंतवमध्यमहोताहै भौमध्रुवकः ११२५।३२।०० भौमक्षेपकः १०।७।८।००भौमस्योच्चरविःभौमस्यमध्यमागतिः ३१२६

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
९	७	५	३	१	११	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	६	४	२
६	१०	१५	१९	२४	२८	३	७	१२	१६	२१	२५	०	४	९	१३	१७	२२
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	
०	११	९	७	५	३	१	११	९	७	५	३	१	चक्रांकाः
२६	१	५	१०	१४	१९	२३	२८	४	९	१३	१७	२२	
५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३२	०	२८	५६	२४	
०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

भौममध्यमसाधनम्　　एक १　　दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	१०	१५	२०	२६	१	६	११	१७
३१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९
२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५०	१५	४०	५	३१	५६	२१	४६
३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५

शतम् १००　　सहस्रम् १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
१	३	५	६	८	१०	१	१	३	५	१०	४	९	३
२२	१४	७	२९	२२	१४	६	२९	२१	१४	२८	१२	२६	१०
२४	४८	१२	३६	०	२५	४९	१३	३७	१	३	५	७	९
११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	५५	५२	५०	४८
४५	३१	१७	३	४९	३५	२१	७	५३	३९	१९	५९	३९	१९

॥ अथबुधकेंद्रसाधनम् ॥ त्रि३घ्नोगणःस्ववसुहृल्लव २८ युग्गशीघ्रकेंद्रंलवाद्यहिगुणा ३८ ॥ गणोनालितम् ॥ अथबुधशीघ्रकेंद्रकासाधनकहतेहैं ॥ अहर्गणकों तीन ३ सें गुणे दोस्थानमें स्थितकरे एकस्थानमें अठाई २८ के अंकसें भागलेकर अंशादिफल स्थापनकरे और दूसरेस्थानमें स्थित अहर्गणमें मिलावे फेर अहर्गणकों अठत्री ३८ केअंकसें भागलेकर कलादिफलकों कलास्थानमें हीनकरे फेर चक्रगुणितध्रुवाककोंघटावे और क्षेपकांककों मिलावे तब अंशादिबुधशीघ्रकेंद्र होताहे ॥ बुधस्यमध्यमोरविः ॥ स्वीयप्रथमाशुकेंद्रउच्चः ॥ बुधस्य ध्रुवकः । ४ । ३ । २७ । ०० ॥ बुधस्यक्षेपकः ८ । २१ । ३३ । ० ॥ बुधस्यमध्यमागतिः ५९ । ८ बुधस्यकेंद्रगतिः १८६ । २४ ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३[illegible]
१०	६	२	१०	६	२	९	५	१	९	५	१	९	५	१	८	४	०
२०	१७	१३	१०	६	३	२९	२६	२२	१९	१६	१२	९	५	२	२८	२५	२[illegible]
३३	६	३९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३०	३	३६	९	४२	१५	४८	२१	५[illegible]
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
८	४	०	८	४	०	७	३	११	७	३	११	७	का
१८	१५	११	८	४	१	२७	२४	२०	१७	१३	१०	७	
२७	०	३३	६	३९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३०	३	काः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

बुधशीघ्रकेंद्रसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९[illegible]
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	१	२	३	४	५	६	७	८	९
६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६
२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१३	३७	०१	२	४	५	६	८	९	१०	१२
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१३	२१	४२	०३	२४	४६	७	२८	४९	१[illegible]

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
१०	८	७	५	३	२	०	१०	९	७	३	१०	६	१
१०	२१	२	१२	२३	४	१४	२५	६	१६	३	२०	६	२३
४०	२०	०	४०	२१	०१	४१	२१	२	४२	२४	६	४९	३१
१३	२७	४०	५४	७	२१	३४	४८	०१	१५	३०	४६	०१	१६
३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	४०	०	२१	४१

॥ अथगुरोर्मध्यमसाधनम् ॥ द्युपिंडोऽर्कभक्तोलवाद्योगुरुःस्यात्द्युपिंडात्खशैला ७० प्तलिप्ताविहीनः अहर्गणको बारा १२ के अङ्कसें भागलेकर अशादिफलको सिद्धकरे फेर अहर्गणको सत्तर ७० के अङ्कसें भागलेकर कलादिफलको सिद्धकर्के कलास्थानमें हीनकरे तव अंशादि गुरु होताहै अंशोंमें तीस ३० का भागदेकर राश्यादिबनावे फेर चक्रगुणितध्रुवाकको तिसमें घटायदेवे और क्षेपाकको मिलायदेवे तव राश्यादि गुरु मध्यम होताहै गुरोस्पष्टम् ॥ रविःगुरोर्ध्रुवकः । ० । २६ । १८ । ० ॥ गुरोःक्षेपकः ॥ ७ ॥ २ ॥ १६ ॥ ० ॥ गुरोर्मध्यमागतिः ॥ ५ । ०० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
१	०	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	१	०	११	१०
१६	४९	२२	२७	१	४	८	१२	१५	१९	२३	२६	०	४	८	११	१५	१९
१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	८	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
९	८	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	११	क्रा
२२	२६	०	३	७	११	१५	१८	२२	२६	२९	३	७	काः
५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

गुरोर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७
४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	३९	२९	१९	९	५९	४९	३८	२८
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२
८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	५	८	११	१
८	१६	२४	३	११	१९	२८	६	१४	२३	१६	९	२	२५
१८	३७	५५	१४	३२	५१	१०	२८	४७	५	११	१७	२२	२८
३४	८	४२	१७	५१	२५	०	३४	८	४२	२५	८	५१	३४
१७	३४	५१	८	२५	४२	०	१७	३४	५१	४२	३४	२५	१७

॥ अथभृगोःप्रथमाशुकेंद्रसाधन् त्रि ३ ॥ निम्नाद्युपिंडाद्द्विधाक्षेः । ५ किभाज्वै १८१ र वाप्ताशयो गोभृगोराशुकेंद्रम् ॥ अवशुक्रशीघ्रकेंद्रकासाधनकहतेहैं ॥ अहर्गणकों तीन ॥ ३ ॥ से गुणे और दो-स्थानमें स्थितकरे एकस्थानमे पाच ५ का भागलेकर अशादिफल सिद्धकरे और दूसरे स्थानमें एकसउएकाशी १८१ के अकसे भागलेकर अशादिफल सिद्धकरे फेर दोनोंका योगकरे तब अंशादि शुक्रहोताहे फेर तीस ३० से भागलेकर राश्यादिबनावे फेर चक्रगुणित ध्रुवांककों घटावे फेरक्षेपाककों मिलावे तब शुक्रकाशीघ्रकेंद्र होताहे शुक्रस्यमध्यमोरविः स्वयभृगूच्चः शुक्रध्रुवकः १ ॥ १४ २।० ॥ शुक्रस्यक्षेपकः ॥ ७ ।२० ११० ॥ भृगोर्मध्यमागतिः ॥ ५९ । ८ ॥ शुक्रस्यकेंद्रगतिः ॥ ३७ । ० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
२	०	११	९	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१
९	२५	११	२७	१३	२९	१५	१	१७	३	१९	५	२१	७	२३	८	२४	१०
२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
११	१०	८	७	६	४	३	१	०	१०	९	७	६	क्रा
२६	१२	२८	१४	०	१६	२	१८	४	२०	६	२२	८	काः
५३	५१	४९	४७	५४	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३०	२९	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

भृगोराशुकेंद्रसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	१२	१८	२४	०	६	११	१९	२५
३६	११	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
५९	५९	५९	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३६	३३	३०
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	९

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	५	१	१०	६
१	३	४	६	[illegible]	९	११	१३	१४	१६	३	१९	६	२२
३१	१८	५८	३७	१०	४६	१६	१५	५७	३३	[illegible]	४३	१७	५२
२६	५३	२०	[illegible]	१४	४९	०	३२	१	२७	५७	२५	५४	२८
५१	४२	३३	४२	[illegible]	५६	५७	४८	३९	३०	०	३१	५	३३

॥ अथशनेर्मध्यमसाधनम् ॥ स्रग्न्नु ॥ ३० ॥ कृतोदिनगणोशमुद्धःशनिःस्यात्पट्ंचभू ॥ १५६ हृत गणात्फललिप्तिकाढ्यः ॥ अबशनिमध्यमसाधनकाप्रकारकहतेहै ॥ अहर्गणकोंतीस ॥ ३० ॥ वे अं कें भागलेवे लब्धअंशादिफलकों स्थापनकरे फेर अहर्गणकों एकसउछपुजा ॥ १५६ ॥ के अंक सें भागलेवे लब्धकलादिफलकों कलास्थानमें जोडदेवे तव अंशादि शनिहोताहै तीस ॥ ३० ॥ सें भागकर राश्यादि बनावे फेर चक्रकरगुणितध्रुवाककों घटायदेवे और क्षेपाककों तिसमें जोडदेवे तव राश्यादि मध्यम शनिहोताहै शनेश्चंरावेः शनेर्ध्रुवकः ॥ ७ ।१५ ।४२।०० । शनेः क्षेपकः ।९ । १५ २१ । ०० ॥ शनेर्मध्यमागतिः ॥ २ । ०० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७
१	१५	२९	१४	२८	१२	२७	११	२५	१०	२४	८	२२	७	२१	५	२०	४
२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
११	४	८	१	५	१०	२	६	११	३	[illegible]	००	५	क्रा
१८	३	१७	१	१५	०	१४	२८	१३	२७	११	२६	१०	का:
४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

शनेर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	७	११	१५	१९	२३	२६	३०	३४
२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	४१	३२	२३	१३	४	५५	४६	३६

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१७
२०	४१	१	२२	४३	३	२४	४५	५	२६	५२	१९	४५	१२
३८	१६	५५	३३	१२	५०	२९	७	४६	२४	४९	१२	३८	३
२७	५५	२२	५०	१८	४६	१३	४१	९	३६	१३	५०	२७	४

अथराहुसाधनम् ॥ नवकुभि ॥ १९ ॥ ाि पुवेदै ॥ ४५ धंसंघाद्द्विशात्फललवकलकेवचंरयादगुश्च क्र ॥ १२ ॥ शुद्धः ॥ अवराहुकासाधनकहतेहैं अहर्गणकों दो स्थानामें धरके एकजगा उन्नी १९ के अंकसें भागलेकर अंशादिफल स्थापनकरे और दूसरेस्थानके अहर्गणकों पैंचताली ॥ ४५ ॥ के अंकसों भागलेकर कलादिफलकों कलास्थानमें जोडे फेर अंशोंकों तीस ॥ ३० ॥ काभागदे कर राश्यादिकरे फेर बारां ॥ १२ ॥ राशीमें घटायदेवे तव दिनगणसें उत्पन्न राहु होताहै फेर चक्रकरगुणित ध्रुवांककों तिसमेंघटावे और क्षेपांककों मिलावे तव राहु होताहै राहोर्ध्रुवकः ७ २ ५० ० ० ० राहोः क्षेपकः ॥ २७ ३८ ॥ राहोर्गतिः ॥ ३ ॥ ११ ॥

२०	२९	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
३	[illegible]	०	५	१०	३	८	१	६	११	४	८	१	६	११	४	९	२
०	२९	२५	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	२९	२६	२४	२१	१८	१५	१२
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	२८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	
७	०	५	१०	२	७	०	५	१०	३	८	१	६	च
९	७	४	१	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	क्रां
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	काः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

राहुसाधनम् — एक १ — दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२८	३८	२७	२७	२६	२६	२५	२५
५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८	५६	२४	५२	२०	४९	१७	४५	१३
२९	३८	२७	१६	५	५५	४४	३३	२२	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७
११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	५१	४७	४३	३८	३४	३०	२६	२२

शत १०० — सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	८	६	[illegible]	३
२४	१३	१४	८	३	२८	२२	१७	१२	६	१९	२०	२७	४
४१	२३	५	४७	२९	११	५३	३५	१७	५९	५९	५९	५९	५९
५९	५८	५७	५७	५६	५५	५५	५४	५३	५२	४५	३८	३१	२४
१७	३५	५३	११	२९	४७	५	२३	४१	५८	५७	५६	५५	५४

अवमूलककेंसूर्यस्पष्टकर्त्तेहै प्रथमभुजकोटिपदज्ञानकहतेहैं तीनराशीसें हीनभुज होताहै और तीनराशी- सें अधिक ग्रह होवे तब छे ६ में घटायकर भुज होताहै और नऊोराशी ९ सें अधिक ग्रह होवेतव वारा ॥ १२ ॥ राशिमें घटायकर भुज होताहे और भुजकर्के हीन जो तीनराशी उसकी कोटीसंज्ञा कहिहैं और तीन ॥ ३ ॥ राशीकी एकपदसंज्ञाक हिहैं और दोराशी अठारां अ्शसूर्यका मदोच्चकहा है २ । १८ । ०० अवचरवनावनाकहतेहे सायनसूर्यका भुजवनावे तिसभुजकेराशीके तुल्य चरखंडेकायोगकरे और अशादिर्योंकों भोग्यखंडके साथगुणदेवे फेर तीस ३० का भागलेकर भुजखडेमें जोडे तब चर पल होतेहै सो चरतुलासें छे ६ राशीपर्यंत सूर्यमें धन देवे और मेषसें छे ६ राशी पर्यंत ऋण देवे और सायकालमे उलटादेवे धनका ऋण और ऋणका धन २ अवसूर्यकामदफलसाधतेहैं मदोच्चमें ग्रहघटावे तिसकीमंद केंद्रसंज्ञाकहिहै सूर्यका जो मदकेंद्र तिसका भुजवनावे फेरभुज-

अथमूलेनसूर्यस्पष्टीकरणम् तत्रभुजकोटिपदानांज्ञानमाह दोस्त्रिभोनांत्रिभोर्द्धे विशोध्यंरसैश्चक्रतो ॥ १२ ॥ काधिकंस्याद्भुजोनंत्रिभम् कोटिरेकैककंत्रित्रिभैः स्यात्पदंसूर्यमंदोच्चमष्टाद्रयोंशाभवेत् ॥ १ ॥ अथचरसाधनंतत्संस्कारंचाह स्यात्सायनोष्णांशुभजर्क्षसंख्याचरार्द्धयोगोलवभोग्यघातात्. खाग्न्याप्तयुक्तस्तुचरधनंणतुलाजपट्कतपतेन्यथास्ते ॥ २ ॥ अथकेंद्रज्ञानंमंदफलसाधनं फलसंस्कारंचाह मंदोच्चग्रहवर्जितंनिगदितंकेंद्रंतदाख्यंबुधैः केंद्रेस्यात्स्वमृणंफलंक्रियतुलाद्येथोविधेयंरवेः केंद्रंतद्भुजभागखेचर ९ लवोनघ्नानग्वा ॥ २० ॥ स्तेपृथकृतद्गोंशो ॥ ९ ॥ ननगेपुभि ॥ ५७ ॥ परिहृतस्तेंशादिकंस्यात्फलम् ३ अथचंद्रस्पष्टीकरणम् ॥ तत्रफलत्रयसंस्कृतचंद्रसाधनमाह ॥ स्वस्वदेशाद्यदा रेखायोजनानांतदंतरात् ॥ षडाद्ध्तंप्रददेच्चंद्रेकलास्वंणपरेपुरे ॥ १ ॥ भास्तं २७ द्युमणिफलंचंद्रेसूर्यवांशेष्वत चरद्वि२घ्नंगो ९. हृतदेयंकलासुतत्फलत्रयम्२

के अशुबनावे अशोका नवमभागलेकर तिससे वीस २० के अककों ऊनकरे और तिसीके साथ फेर गुणदेवे गुणितांक कों दूसरे स्थानमेंधरे एकजगामें तिसके नवमाशकर ऊन जो सतुजा ५७ तिनकरके दूसरीजगाके अककों भागे जो लब्धआवे सो अशादि सूर्यका मदफल कहाहै ३ ॥ अवचंद्रस्पष्टकरणेकाप्रकारकहतेहै तिसमे प्रथम त्रिफलसंस्कृतचंद्रमा कहतेहै अपनेअपनेदेशसें मध्यरेखा जितनेयोजन होवे तिनकाछैसें भागलेकर जो लब्धहोवे सो कलारूपजान तिनको रेखासेपश्चिमदेशोंमें धन और पूर्वदेशोमेंऋण मध्यमचंद्रमामे करे १ और सूर्यका जो मंदफलतिसकोसताई २७ सें भागलेवे जो फलआवेसो सूर्यकीन्याईधनऋणमध्यमचंद्रमामेअशोंमे देवे और चरपलोंकों दिगुणकरे और नव ९सेंभागलेकर लब्ध यो फल तिसकों मध्यमचंद्रमामें कलारथानमेमिलावे तव त्रिफलसंस्कृतचंद्र

मा होताहै ॥ २ ॥ अबचंद्रमाकामंदफलसिद्धकरतेहैं चंद्रमाकों अपने उच्चमें घटायकर केंद्रसिद्धकरे और केंद्रके भुजांशा बनावे और तिनोंका पष्टांशलेवे तिसकर्के तीस ३० के अंककों ऊनकर्के तिसोंके साथगुणे तिसकों दूसरे स्थानधरके फेर तिनका वीसमां २० भागलेवे तिसकर्के छपुंजा ५६ के अंककों हीनकरे और तिसकर्के दूसरे स्थानके अंककों भागे जो लब्धहोवे सो अंशादि चंद्रमाका मंदफल होताहै तिसकर्के त्रिफलचंद्रमा संस्कृत स्पष्टहोताहे ॥ ३ ॥ अबसूर्यचंद्रमाकीगतिस्पष्टकरते हैं केंद्रकी कोटीबनाय कर अंशबनावे और तिसका वीसमां२०भागलेवे तिसकर्के ग्यारांकेअंककों ऊनानिघ्नकरे और सूर्यकीगतिका फलसिद्धकरणेमें तेरांसें १३भागे और चंद्रमाकों द्विगुणकर्केअपनेप ष्टांशकरयुक्तकरे सो गतिफल कर्कादिकेंद्रमेंधन मकरादिकेंद्रमें ऋण मध्यमगतिमें करे तब सूर्यचंद्रमाकी स्पष्टगती होतीहै ॥ ४ ॥ अबमूलकर्केभौमादिग्रहोंकास्पष्टकरणाकहतेहैं ॥ मंगल शनिः बृह

॥ २ ॥ अथचंद्रस्यमंदफलसाधनम् ॥ विधोःकेंद्रदोर्भागषष्ठोह्ननिघ्नःखरामा ३०पृथक्तन्नखां२०शोनितैश्च ॥ रसाक्षै५६र्हतास्तेलवाद्यंफलंस्याद्रवींदुस्फुटौ संस्कृतौस्तश्चताभ्याम् ॥ ३ ॥ अथरवींदोर्गतिस्पष्टीकरणम् ॥ केंद्रस्यकोटिलवखाश्वि २०लवोनानिघ्नारुद्रा ११ रवेस्त्रिकु १३ हताःशशिनोद्वि २ निघ्नाः स्वांगां ६ शकेनसहिताश्चगतौधनर्णं केंद्रेकुलीरमृगषड्भगतेस्फुटास्यात् ४ ॥ अथमूलेनभौमादिस्पष्टीकरणम् भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्यादाशुकेंद्रंतुवितृभृग्वोरुक्तमिदंरसोध्विमिनभाच्छुद्धंतदंशादिनै१५भक्तःखादिफलक्रमादिहगतांकोसौक्षयद्वयंहताच्छेषाद्वाणकु१५लब्धहीनयुगयंदिग्ह१०ल्लवाद्यं फलम् ॥ १ ॥ मृदुकेंद्रभुजांशकादिना१५प्ताःफलमंकःप्रगतस्तदूनितैष्यात् ॥ परशेषहतादिना १५ त्तयुक्तोदश१०भक्तःफलमंशकादिमांदम् ॥ २ ॥

स्पतिःइनोंकोमध्यमसूर्यमें घटायदेवेतब इनके शीघ्रकेंद्र होतेहै और बुध शुक्रकाशीघ्रकेंद्र अहर्गणसे उत्पन्नाकियाहैसो शीघ्रकेंद्र छैराशीसे अधिकहोवे तबबारांराशीमें घटायदेवे और तिसके अंश बनावे अंशोंकों पद्रां १५ सेंभागे शून्यादिजो अंकलब्धआवे सो गतांक होताहै गतांककेनीचे जो अंकहै तिसकों भिन्नस्थानमें धरे और अंतरसें कलादियोंकों गुणे फेर तिसकोंपंद्रांका भागदेवे जो धन ऋण फलआवे सो गतांकके फलमेंधन और ऋणकरे फेर तिसकों दश १० सें भागलेवे तब अंशादिफल होताहै ॥ १ ॥ फेर मंदकेंद्रके भुजांशबनायकर पंद्रांसें १५ भागलेवे जो शून्यादिफल आवे तिस अंकके नीचे चक्रमें जो फलहै सो भिन्नस्थानमें धरे और अंतरसें कलादिगुणे और पंद्रां १५ सेंभाग लेकर गतांकके फलमेंजो इदेवे फेर दश १० सेंभागलेवे तब अंशादि मंदफल होताहै ॥ २ ॥

भौमादियोंकेमंदकेंद्रऔर फलसंस्कारविधिकहतेहैं मंगलसें लेकर पाचताराग्रहोंके ४ । ७ । ६ । ३ । ८ राशियामंदकेंद्रकहाहै॥ प्रथममध्यमग्रहमें चरफलकाअर्धकेंद्रवशसें धन ऋण देवे और पीछेसें अर्धफल संस्कृतग्रहमें मंदफल संपूर्णदेवे और पूर्व जो शीघ्रकेंद्रतिसमें मंदफलविपरीतदेवे तव द्वितीयशीघ्रकेंद्र होताहैऔर तिससेंशीघ्रफलसिद्धकर्के सपूर्णमंदस्पष्टग्रहमें केंद्रवसमें धनऋणदेवे तव स्पष्टग्रहहोताहै ३॥

अथभौमादीनांमंदकेंद्राणि ॥ शुद्धोऽब्ध्यद्रिपडग्निनागग्रहतःस्यान्मंदकेंद्रंकुजात् ॥ प्राङ्मध्यमेचरफलस्यदलंप्रदध्यात्तस्माच्चमांदमखिलंविदधीतमध्ये द्राक्केंद्रकेपिचविलोममतश्चशीघ्रम् सर्वंचतत्रविदधीतभवेत्स्फुटोसौ ॥ ३ ॥

अथगतिसाधनमादाकातरमाकर्ण्यसृग्गुरूणाभकवाणनगैः ७५ शरैः ५ खरामैः ३० विद्भृगोर्हि २ हतशरो ५ द्भृतंतद्दत्वाभाग्वदितौमृदुस्फुटासा ४ भौमाच्चलांकविवरंशर ५ हृत्स्ववाणा ५ शाढचंत्रि ३ हृत्स्त

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
म	०	५८	११७	१७४	२२८	२७९	३२५	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
अंतर	५८	५९	५७	५४	५१	४६	४०	२८	७	ऋ०	३२	११९	२४९
बु	०	४१	८१	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	००
अंतर	४१	४०	३६	३३	२८	२१	१३	००	ऋ०	१७	४०	६६	८९
व	०	२५	४७	६८	८५	९८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	००
अंतर	२५	२२	२१	१७	१३	८	२	ऋ०	६	१३	२३	३०	३६
शु	०	६३	१२६	१८६	२४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	००
अंतर	६३	६३	६०	६०	५६	५२	४८	३८	२१	ऋ०	१८	११७	३२६
श	०	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	००
अंतर	१५	१३	११	९	६	३	०	ऋ०	४	८	१२	१५	१८

(भौमाद्यलांशफलकोष्ठकाः)

	०	१	२	३	४	५	६
म	०	२९	५७	८७	१०९	१२४	१३०
अंतर	२९	२८	२८	२४	१५	६	०
बु	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६
अंतर	१२	९	७	५	२	१	०
बृ	०	१४	२७	३५	४८	५५	५७
अंतर	१४	१३	१२	९	७	२	०
शु	०	६	११	१३	१४	१५	१५
अंतर	६	५	२	१	१	०	०
श	०	१९	४०	६०	७७	८९	९३
अंतर	१९	२१	२०	१७	१२	४	०

(भौमादीनांमंदकेंद्रकाभीति)

४ हृतंद्विहता २ क्षभक्तम् तद्धीनयुक्सयचयेचमृदुस्फुटास्यात् स्पष्टाथचेद्दृक्ऋणात्पतिताचवक्रा ५ कुजबुधभृगुजानाचेच्चलांकोत्यमःस्याद्दश १० हृतपरिशेषाशानगा ७ ब्ध ७ ग्नि ३ भक्ताः फलमिपुदहने ३५ युक्सप्तगोभि १७ र्खिवाणै ५३ र्भवतिगतिफलंतत्स्याच्चदाने वपूर्वम् अवभाषाकर्केभौमादिग्रहोंकीगतिसिद्धकर्तेहे शनि मंगल वृहस्पतिके मंदफलसाधनेमें जो अंशोके अंतरहै तिसको क्रमसेंतीन ३ जगाधरे एकस्थानमें पजत्तर ७५ सें दूसरे में पाच ५ सें तीसरे मे तीस ३० सें भागलेवे और जो कलादिफलआवे सोक्रमसें शनि भौम गुरुकामदगति फलकहाहै और बुधशुक्रकेमादाकांतरकों दो २ सेंगुणे और पांच ५ सें भागलेवे जो लब्धआवे सो वुधशुक्रका मदगतिफलहोताहै तिसकों मध्यमगतीमे कर्कादि केंद्रमें धन और मकरादिकेंद्रमें ऋणकरे तव मंदस्पष्टा गतिहोतीहै ४ और भौ

मादियोंका अंतिमशीघ्रफलसाधनमें शीघ्रांशांतरहै तिनमें भौमके अंतरकों पाच ५ सें भागे और बुध के अंतरकों अपनें पंचमांशसें युक्तकरे और बृहस्पतिके अंतरकों तीन ३ से भागे और शुक्रके अंतर कों चार ४ सें भागे और शनिके अंतरकों द्विगुणककें पाचसें भागलेवे जोलब्धआवे सो क्रमसें भौमादिग्रहोंकी गतियोंका शीघ्रफलहोताहै तिसकों मंदस्पष्टगति में चलाकके अधिकहोया धनकरे और हीनहोयाऋणकरे और ऋणफल अधिकहोने सें ग्रहवक्री होताहै ५ ॥

अवसूर्यादियोंकेउच्चकहतेहें दोराशीअठाराअंश २ । १८ । ० । ० सूर्यका उच्चकहाहै और चंद्रमा का उच्च अहर्गणसें सिद्धकियाहै और बुधशुक्रका उच्च भी अहर्गणसें कहाहै और मंगल बृहस्पति शनि इनका उच्च मध्यम सूर्य होताहै १ अवसारणीसेंसूर्यचंद्रस्पष्टकरणेकहतेहें मंदोच्चसें घटाया जो

अथसूर्यादीनामुच्चमाह व्यर्कांशोच्चंत्रि ३ भा २ । १८ । ० । ० त्सूर्यश्चंद्रस्य गणजस्तथा ज्ञभृग्वोर्गणजौकेंद्रंशेषाणामुच्चस्याद्रविः १ अथरवींदोःस्पष्टीकरणम् मंदोच्चात्तुच्छोधितः सूर्योम्रुदुकेंद्रस्तदुच्यते तद्भुजांशमितिकोष्ठात्फलंग्राह्यं लवादिकं २ गुण्यांतरेणलिप्तानांरवषड्भक्तं फलंयुतं तत्फलंमध्येमस्वर्णकेंद्रेमेषतुलादिके ३ अथचंद्रस्पष्टीकरणम् आदौफलत्रयसंस्कृतचंद्रसाधनंपूर्वमुक्तम् अथमंदफलसाधनम् मंदकेंद्रस्यदोर्भागात्तंम्रुदुफलंददेत् फलत्रिसंस्कृतेकेंद्रवशाच्चंद्रस्फुटंस्मृतम् ४ अथगतिसाधनं ऊर्धस्थांशमितिकोष्टंतस्याधोंशादिकं फलम् तस्याधोगतिफलंज्ञेयंसारिण्यांसाबुधैःस्मृतम् ५ स्वर्णगतिफलंकार्यंगतौमध्यस्फुटाचसा केंद्रेकर्कमृगेषड्भे ६ रवींदोस्तेगतीस्फुटे ॥ ६ ॥

सूर्यहै सो मंदकेंद्र होताहै और तिसके भुजांशकरे तिनौंअंशोके तुल्य नीचे मंदफलसारणीमें लिखा है और आगेके अंकसें अंतरलेकर कलादिगुणदेवे साठ ६० सें भागलेकर अंशादिफलमें मिलावे सो फल मध्यमसूर्यमें मेषादि केंद्रमें धन और तुलादि केंद्रमें ऋणदेवे और चरदेवे तब स्पष्टसूर्य होताहै३ अवचंद्रस्पष्टकहतेहैं पूर्व कहाजो त्रिफलसंस्कृतचंद्रमातिसकोंउच्चमें घटावे तब मंदकेंद्र होता है तिसके भुजांशकरे तिनके तुल्यकोष्टका फल सूर्यकी न्याई सिद्धकरे और तिसअंशादिफलकों त्रिफलसंस्कृतचंद्रमामें केंद्रवशसें धनऋण करे तब स्पष्ट चंद्रमा होताहै४अवगतिस्पष्टकरतेहैं जिसकोष्टका मंदफललिया तिसीके नीचे गति फल लिखाहै सारणीमें तिसफलकों मध्यमगतिमें कर्कादिकेंद्रमें धन और मकरादिकेंद्रमें ऋणकरे तब स्पष्टगति होतीहै

अवभौमादिग्रहोंकास्पष्टसारणीसेंसाधनकहतेहैं प्रथमग्रहकों अपनेंउच्चमें घटावे जब उच्चसेंघटाए पीछें-छराशीसे अधिकरहे तब चक्रमें बारांराशीमें तिसकों शोधे फेर तिसके अंश बनावे तिनों अंशोकी संख्याककें जोकोष्टहे तिसका अंशादिफल एकजगा स्थापनकरे और दूसरे कोष्टका जो अंतर तिससें कलाविकलाकों गुणे साठ ॥ ६० ॥ सें भागलेकर अंशादिफलमें मिलावे फेर तिसफलकों अर्धककें धरे फेर मेषादिकेंद्रहोवे तब ग्रहमें धनकरे और तुलादिकेंद्रमें ऋणकरे इसीप्रकार प्रथममध्यम ग्रहमें शीघ्रफलार्ध देवे फेर मंदफलसाधनककें संपूर्ण देवे तब मंदस्पष्ट ग्रह होताहै और मंदफल जैसे मध्यमग्रहमें दियाहोवे तिससें उलटा शीघ्रकेंद्रमें देवे तब द्वितीय शीघ्रकेंद्र स्पष्टहोताहै और दूसरे शीघ्रकें द्रसें शीघ्रफलसाधनककें संपूर्णफल मंदस्पष्टग्रहमें चयकोष्टमें धन और क्षयकोष्टमें ऋणदेवे तब स्पष्टग्रह होताहै ॥ ८ ॥ अवभौमादियोंकीगतिस्पष्टकहतेहे कोष्टके नीचे लिखा जो गतिफल तिसकों प्रथममंदफलके कोष्टमेंगतिफल मध्यमगतिमें कर्कादिकेंद्रमें धन और मकरादिकेंद्रमें ऋणदेवे तब मंदस्पष्टगति होतीहै १ और दूसरे शीघ्रकेंद्रके कोष्टसें गतिफललेकर मंदस्पष्टगतिमें अग्रि-

अथभौमादिस्पष्टीकरणम् ग्रहोनमुच्चात्वरितंविधेयंरसा ६ धिकेभेरवि १२ तेविशोध्यम् तदंशसंख्यागतकोष्टकंफलं कलादिशेषंविवरेणानिघ्नम् ॥ ७ ॥ षष्ठ्य ६० धृतंभोग्यकहानिवृध्यास्वर्णंग्रहकेंद्रवशात्फलंच आदौचरार्द्धंप्रविधायपश्चान्मांद्यंचसर्वंविदधीतमध्ये ॥ ८ ॥ अथभौमादिनांगतिसाधनम् मंदगतिफलंचादौगतौदेयंमृदुस्फुटा भवत्याशुगतेर्लब्धंदेयंकोष्टवशात्स्फुटम् ९ वक्रखेटगतिर्व्यस्तादेयाचायन्नशुध्यति पूर्वस्पष्टागतिः शोध्यातदाधिक्याहणात्मकात् ॥ १० ॥ अथकचित्स्थलेभृगुभौमयोः संस्कारविशेषः शुक्रारयोश्चलभवोंत्यगतोंयदांकः शेषांशकाश्चपतिताः पृथगक्षभू ॥ १५ ॥ भ्यः येल्पाभूभौखि ३ विहता असृजोक्ष ५ भक्ता देयाः स्वशीघ्रफलवत्स्फुटयोः स्फुटौस्तः १

मचयकोष्टमें धन और क्षयकोष्टमें ऋणदेवे तब भौमादियोंकी स्पष्टगति होतीहै वक्रीग्रहकी गतिउलटी जब मंदस्पष्टगतिमें घटजावे तब सो ग्रह उलटा चलताहै तिसीकों वक्री कहतेहै ॥ १० ॥ अथशुक्रभौममेंविशेषसंस्कारकहतेहै शुक्र भौमके दूसरे शीघ्रफलसाधनमें शीघ्रकेंद्रके भुजांशा पंद्रा ॥ १५ ॥ सें भागलियेसें अन्त्यगतखंड प्राप्तहोवे अर्थात् एकसऔपेंसठ ॥ १६५ ॥ सें अधिकहोवे तब इससंस्कारकों वी करे प्रथमशीघ्रफल सिद्धकरलेवे और फेर जब शुक्र मंगलका शीघ्रका गतांक यारमा ॥ ११ ॥ आवे तब शेषबाकीरहे जो अंशादि तिनकों भिन्नस्थानमें धरके पंद्रा ॥ १५ ॥ के अंकमें घटायदेवे और घटाए पीछे जो अंशादि थोडेहोवे तिनका फलसिद्धकरे सो कहतेहे जो शुक्रके अंशादिहै तब तिनकों तीनसें भागकर अंशादिफललेवे और जब भौमके अंशादिहोवे तब तिनकों पांच ॥ ५ ॥ सें भागकर अंशादिफललेवे सो फल पूर्वस्पष्टभया जो ग्रह तिसमें पूर्वकीन्याई धनऋण करे तब शुक्र भौम स्पष्ट होतेहैं ॥ १ ॥

रवेर्मंदफलसारणीयम् ॥ रवेर्मंदोच्चराश्यादि ॥२।१८।७।०॥ रवेर्मध्यमागतिःकलादिः ॥५९।८

कों०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कं०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२९	३१	३४
वि०	२०	४०	५९	१८	३६	५५	१२	२९	४६	२	१७	३२	४६	५९	१२
अंतर	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२।२०	२६	१९	१९	१८	१९	१७	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१३	१३
गफ	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०।०	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	१०	९	९	८	७	७	६	५
कों-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
क-	३६	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५
वि-	२३	३५	४५	५४	२	११	१७	२२	२८	३२	३४	३६	३७	३६	३४
अंतर	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१
	१२	१०	९	९	८	६	५	६	४	२	२	१	५९	५८	५७
गति	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फ-	४	३	२	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५१	५०
कों	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कं	६	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२
वि.	३१	२७	२०	१५	७	५८	४७	३५	२१	६	५०	३१	१२	५०	२७
अंत	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
र-	५६	५५	५३	५२	५१	४९	४८	४६	४५	४४	४१	४१	३८	३७	३६
ग.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ति	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४२	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३२	३०
कों-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कं-	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	४५	४७	४८	४९	५०	५२	५३
वि-	३	३७	९	३९	८	३४	५९	२२	४४	३	३०	३६	४३	०	९
अंतर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	३४	३२	३०	२९	२६	२५	२३	२२	१९	१७	१६	१३	१२	९	८
ग	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फ-	२९	२७	२६	२४	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१३	१०	९	७	५

को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क०	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	२	३	४	५	५	६
वि	१८	२३	२६	२७	२६	२३	१८	११	१	४९	३५	१९	०	३९	१६
अंत	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
र-	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४१	३९	३७	३४
ग-	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ति	३	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	३९	३७	३५

को-	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क-	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वि-	५०	२२	५२	२०	४५	७	२८	४६	१	१४	२५	३४	४०	४३	४५
अंत	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
र-	३२	३०	२८	२५	२२	२१	१८	१५	१३	११	९	६	३	२	०
ग-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
फ	३३	३१	२८	२६	२४	२१	१९	१७	१४	१२	१०	७	५	२	०

चंद्रस्यमंदफलसारणीयम् ॥ चंद्रस्यमध्यमागतिःकलादिः ॥ ७९० । ३५ ॥

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
क०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५८	३	८	१३	१८
वि०	२०	४१	०	१९	३७	५३	९	२४	४०	५१	०	९	१७	२३	२८
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
र-	२१	१९	१९	१८	१६	१६	१५	१३	११	९	९	८	६	५	३
ग-	६७	६७	६७	६७	६६	६६	६६	६५	६५	६५	६४	६४	६४	६३	६३
फ-	५८	४४	२८	१२	५५	३७	१८	५९	३८	२०	५६	३५	१२	४९	२५

को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं-	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
क-	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	२	७	१२	१६	२१	२६	३०
वि-	३१	३३	३२	३१	२६	२०	१२	२	५०	३५	१८	५८	३६	१२	४५
अंत	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
र-	२	०	५८	५५	५४	५२	५०	४८	४५	४३	४०	३८	३६	३३	३०
ग-	६३	६२	६२	६१	६१	६०	६०	५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६
फ-	०	३४	८	४०	१५	४४	१६	४६	१६	४५	१३	४०	७	३२	०

को॰	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं॰	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
क॰	३५	३९	४४	४८	५२	५७	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३२
वि॰	१५	४२	७	२८	४७	२	१५	२४	३०	३२	३२	२७	१९	८	५२
अंतर	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३
	२७	२५	२१	१९	१५	१३	९	६	२	०	५५	५२	४९	४४	४१
गफ	५५	५४	५४	५३	५२	५२	५१	५०	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५
••	२२	४७	१०	३३	५५	१६	३६	५६	१४	३५	५०	०८	२४	४०	५५
को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
क-	३६	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२०
वि-	३३	१०	४३	१२	३८	५८	१५	२८	३६	४०	१९	३४	२५	११	५२
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२
	३७	३३	२९	२६	२०	१७	१३	८	४	५९	५५	५१	४६	४१	३६
गति	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५	३४	३३
फ-	९	२२	३५	४६	०	८	१९	२८	३७	४५	५२	५८	४	८	१५
को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क-	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	४९	५१
वि.	२८	०	२७	४९	६	१८	५०	२७	२४	१५	२	४३	१९	५०	१५
अंत	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१
र-	३२	२७	२२	१७	१२	७	२	५७	५१	४७	४१	३६	३१	२५	२०
ग.	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१७
ति	१६	२०	२२	२४	२५	२५	२४	२३	२०	२०	१४	११	६	१	५५
को-	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं-	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
क-	५२	५३	५४	५६	५७	५७	५८	५९	०	०	०	१	१	१	१
वि-	३५	५०	५९	३	१	५३	४१	२३	०	३०	५५	१५	२९	३७	४०
अंतर	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	९	४	५८	५२	४८	४२	३७	३०	२५	२०	१४	८	३	०
ग.	१६	१५	१४	१३	१२	११	९	८	७	६	५	३	२	१	०
फ-	४८	४०	३२	२२	१५	२	५०	४०	२८	१५	१	४६	३१	१४	०

भौमस्यशीघ्रफलसाधनम् ॥ भौमस्यपूर्वोदयकेंद्रम् ॥ १ ० । २८ । ० । ० । भौमवक्रकेंद्र ॥ ५।१३।०।० ॥ भौममार्गिकेंद्रं ६।१७।०।० ॥ भौमपश्चिमास्तकेंद्रं ११।२।०।० ॥

ध.	को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अ	०	•	०	•	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
त	२३	•	२३	४६	९	३२	५६	१९	४२	५	२८	५२	१५	३८	१	२४	४८
र	१२	•	१२	२४	३६	४८	•	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ध-	ग	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
	फ	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४३	४४	४५	४६	४७	४७
	को-		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	ध-०		६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	२३		११	३५	५८	२२	४६	९	३३	५६	२०	४४	७	३१	५४	१८	४२
	३६		३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	००
	गफ-		११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
	ध-		४८	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३८	३५	३४	३२	३१	२९	२८	२६
	को		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	०		१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७
	२२		४	२७	०५	१३	३६	५८	२१	४४	७	३०	५२	१५	३८	१	२४
ध,	४८		४८	३६	२४	१२	•	४८	३६	२४	१२	•	४८	३६	२४	१२	•
ध.	ग-		११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०
	फ-		२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	•	५८	५५	५३	५१
	को-		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	• ध-		१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२२
	२१		४५	७	२८	५०	१२	३३	५५	१६	३८	०	२१	४३	४	२६	४८
	३६		३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	•
	ग-		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	फ-ध-		४८	४६	४४	४१	३९	३७	३४	३१	२९	२६	२४	२२	१९	१७	१५
	को		६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
	०		२३	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७
ध,	२०		८	२८	४९	९	३०	५०	१०	३१	५१	१२	३२	५२	१३	३३	५४
	२४		२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•
	ग.		१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	फ ध-		१२	८	४	•	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६

को॰	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
०घ-	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२
१८	१२	३०	४९	७	२६	४४	२	२१	३९	५८	१६	३४	५३	११	३०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
ध-	१२	७	२	५७	५३	४८	४३	३८	३३	२९	२४	१९	१४	९	५

भौमपूर्वोदयःशीघ्रफलसाधनम् ॥ ०।२८।०।० ॥ भौमवक्रकेंद्रम् ॥ ५।१३।०।० मार्गीकेंद्रम् ६।१७।०।० ॥ पश्चिमास्तकेंद्रम् ॥ ११।२।०।० ॥ भौममध्यमागतिः ॥ ३१।२६ ॥

को-	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
०घ-	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६
१६	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	८	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६	५	५
ध-	०	५१	४१	३२	२२	१३	३	५४	४४	३५	२५	१६	६	५७	४७

को॰	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
०घ	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
११	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	५	५	५	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	१	१
ध-	३६	१९	२	४५	२८	१२	५५	३८	२१	४	४६	३१	१४	५७	४०

को-	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
०घ.	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
२	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०	४३	४६	४८	५१	५४	५७	०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६
ध.	२४	४४	[illegible]	२४	४४	४	२४	४४	४	२४	४४	४	२४	४४	४

को-	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
०ऋ-	३९	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३७	३७	३६
१२	४७	३४	२१	८	५६	४३	३०	१७	४	५२	३९	२६	१३	०	४८
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२
ऋ-	२४	३३	४३	५२	२	११	२१	३१	४१	५०	०	९	१९	२६	३८

को	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
० ऋ	३६	३५	३४	३३	३२	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४
४७	०	१२	२५	३७	५०	०२	१४	२७	३९	५२	४	१६	२९	४१	५४
३९	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३३	३४	३५
ऋ	४८	३८	२९	१९	१०	०	५१	४१	३२	२२	१३	३	५४	४४	३५

को-	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
१ऋ-	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१३	११	९	८	६	४	३	१	०
३९	१४	३४	५५	१५	३६	५६	१६	३७	५७	१८	३८	५८	१९	३९	०
३९	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	३६	३७	३९	४०	४२	४३	४५	४६	४७	४९	५०	५२	५३	५५	५६
ऋ-	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५

अंतिमशीघ्रफलसाधनेशीघ्रकेंद्रभुजांशाःपंचषष्ठिशतेभ्यअधिकास्तदाशुक्रारयोरित्युक्तफलंपुनर्देयम् भौमस्यमंदफलसाधनम् भौमस्यमंदोच्चम् ॥ ४।०।०।० भौमस्योच्चरविःभौमस्य मध्यमागति·३१।२६

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध ऋ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
११।०	११	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४
३६।०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
ग- ५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
घ-४८	४८	४७	४६	४६	४५	४४	४३	४३	४२	४१	४०	३९	३९	३८	३७

को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५
ध-११	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग-	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
फ-ध-	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६

को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अंतर	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
ध-११	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	३०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४
फध-	३६	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	८	४	१	५८	५५	५२

कों०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९-	२१	४३	५८	८	१८	२७	३६	४६	५६	६	१५	२५	३४	४४	५४
२६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फ-	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५८	५१	४४	३७	३०	२२	१५	८
कों-	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अंतर	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
६८-	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	३	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
ध-	०	५३	४६	३९	३१	२४	१७	१०	२	५४	४८	४१	३३	२६	१९
कों०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३
२ध	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
२४	२४	४८	१२	३६	००	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
फ-	१२	७	२	५७	५२	४७	४१	३६	३१	२६	२१	१६	१०	५	०

बुधशीघ्रफलसाधनम् ॥ बुधस्पष्टरम रवि· ॥ मध्यभाग तः ५३.८ ॥ बुधकेन्द्रगतिः १८६ । २४
पश्चमोऽपः ॥ १ ॥ २० ॥ ०० ॥ वक्रकेन्द्र. ॥ ४ ॥ २५ ॥ ० ॥ ० ॥

कों०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंध.०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
१६ ०	१२	३२	४९	५	२२	३८	५४	११	२७	४४	००	१६	३३	४९	६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
ग ४९	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
फ-१२	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	४
कों०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं० -	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८
१२	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	४३	५०	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफः	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४४	४३	४३
ध-	०	४१	२२	३	४४	२४	५	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२

को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं॰	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
घ-१४	२०	३४	४३	३	१८	३२	४६	१	१५	३०	४४	५८	१३	२७	४२
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	४३	४३	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४१	४०	४०	४०	४०	३९
ध-	१२	५८	४३	२९	१५	०	४६	३१	१७	३	४८	३४	१९	५	५१

को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-२-	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५
१३	५५	८	२१	३४	४८	१	१४	२७	४०	५४	७	२०	३३	४६	०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	३९	३९	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३६	३६	३६	३५	३५	३४	३४
ध-	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०

को॰	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-ध-	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८
११	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	३३	३३	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	२८	२८	२७	२६	२६	२५
ध-	३६	३	२९	५६	२२	४८	१५	४१	८	३४	०	२७	५३	२०	४६

को	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
८ ध-	५६	४	१३	२१	३०	३८	४६	५५	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४७	१२	३६	०
ग-	२५	२४	२३	२३	२२	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१८	१७	१६	१६
फ ध-	१२	३४	५५	१७	३९	०	२२	४३	५	२७	४८	१०	३१	५२	१५

बुधशीघ्रफलसाधनम् ॥ पश्चिमास्तम् ५ । ५ । ० । ० ॥ पूर्वोदयः ॥ ६ । २५ । ० । ० मार्गिकेन्द्रम् ॥ ७ । ५ । ० । ० ॥ पूर्वास्तम् ॥ १० । १० । ० । ० ॥ मध्यमागति. ॥ ५९ ८ ॥

को	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अंतर	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१
ध ५	५९	४	९	१४	२०	२५	३०	३५	४०	४६	५१	५६	१	६	१२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	०
फध-	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	०

को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
०घ	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
अंतर	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९
६ऋ-	५	५८	५१	४४	३८	३१	२४	१७	१०	४	५७	५०	४३	३६	३०
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३६	३८	४०	४२	४४	४६
ऋ-	२४	१४	५	५५	४५	३६	२६	१७	७	५७	४८	३८	२९	१९	९

को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	२४९	१५०
अंतर	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५
१६ऋ.	१४	५८	४२	२६	१०	५४	३८	२२	६	५०	३४	१८	२	४६	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०
गफ-	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७५	७७
ऋ-	०	५	१०	१५	२०	२४	२९	३४	३९	४४	४८	५३	५८	३	८

को.	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अंतर०	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	८
२६ऋ.	३	३७	१०	४४	१८	५१	२५	५८	३२	६	३९	१३	४६	२०	५४
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	७९	८०	८१	८३	८४	८५	८६	८८	८९	९०	९२	९३	९४	९५	९७
ऋ-	१२	२९	४६	३	२०	३७	५४	१०	२७	४४	१	१८	३५	५२	९

को-	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	८	७	७	६	५	५	४	४	४	२	२	१	१	०	०
३५ऋ.	१८	४२	७	३१	५६	२०	४४	९	३३	५८	२२	४६	११	३५	०
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	९८	९९	१०१	१०४	१०५	१०७	१०८	१०९	१११	११२	११४	११५	११७	११८	११८
ऋ-	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५

बुधस्यमंदफलसाधनम् बुधस्यमंदोच्चम् ७।०।०।०बुधस्यमध्यमागतिः५९।८बुधस्यकेंद्रगतिः१८६।२४

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
४ ०	४	९	१४	१९	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	२	७	१२
४८०	४८	३६	२४	१२	८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३
ध-	४९	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	४	०	५५	५०	४५	४०
को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं.ध-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
३	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५८	२	६
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२
ध-	३६	३२	२९	२६	२३	२०	१६	१३	१०	७	४	०	५७	५४	५१
को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अ-ध-	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२	८	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४२	४५	४८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
ध-	४८	४४	४१	३८	३५	३२	२८	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३
को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२ध-	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ग-	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
फध-	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२
को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०ध-	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
फध-	४८	४६	४४	४३	४१	४०	३८	३६	३५	३३	३२	३०	२८	२७	२५

को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०ध.	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२४	२२	२०	१८	१७	१५	१३	१२	१०	८	६	५	३	१	०

गुरोः शीघ्रफलसाधनम् गुरोरुच्चंरविः गुरोःपूर्वोदयः ० । १४ ० । ० ॥ वक्रकेंद्रम् ॥ ४ । ५ । ० ०
मार्गिकेंद्रम् ॥ ७ । २ ५ । ० । ० ॥ पश्चिमास्तम् ११ । १६ । ० । ० ॥

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंध०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
१०।०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०
० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ध.२०	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४

को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५
८ ध	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	६	१५	२४	३३	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ध-	२०	१९	१८	१६	१५	१४	१२	११	१०	८	७	६	४	३	३

को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अंतर	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
८ ध-	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४८
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	७	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५
ध-	०	५४	४९	४४	३८	३३	२८	२२	१७	१२	६	१	५६	५०	४५

को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
६ ध-	५४	१	८	१५	२२	२८	३५	[illegible]	४९	५६	२	९	१६	२३	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४
ध-	४०	३४	२९	२४	१८	१३	८	२	५७	५२	४६	४१	३६	३१	२५

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अंध.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
५	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२
ध.	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६

को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
३ ध.	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	३६
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	०	०
ध-	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८

गुरोःशीघ्रफलसाधनम् गुरोरुच्चंरविः गुरोर्मध्यमागतिः ५।००।गुरोःपूर्वोदयः ०।१४।०।० वक्रकेंद्रम् ४।५।०।० मार्गिकेंद्रम्७।२५। ०। ० पश्चिमास्तम् ११।१६।०।० ॥

को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अं-ध	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
०.	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध-	४०	४५	५०	५६	१	६	१२	१७	२२	२८	३३	३८	४४	४९	५४

को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
२ऋ-	४५	४३	४०	३८	३६	३३	३१	२८	२६	२४	२१	१९	१६	१४	१२
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४
ध-	०	९	१८	२८	३७	४६	५६	५	१४	२४	३३	४२	५२	०१	१०

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
अंतर	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८
५ऋ	६	१	५६	५१	४६	४०	३५	३०	२५	२०	१४	९	४	५९	५४
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
ऋ-	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६

को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
अंतर	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६
१ ऋ.	४४	३५	२६	१७	८	५८	४९	४०	३१	२२	१२	३	५४	४५	३६
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९
ऋ-	४०	४९	५८	८	१७	२६	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०

को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अ. ऋ	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३
१३	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११
ऋ.	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२

को०	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०
१४ ऋ	२४	१२	०	३८	३४	९	५५	४०	२६	१२	५७	४२	२८	१४	०
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
ऋ-	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२

गुरोर्मंदफलसाधनम् ॥ गुरोर्मंदोच्चम् ॥ ६। ०। ०। ०। गुरोरुच्चरविः ॥ गुरोर्मध्यमागति। ५। ००

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अ. ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
ध५ ०	५	११	१६	२२	२८	३३	३९	४४	५०	५६	१	७	१२	१८	२४
३६ ०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
५ ध-	२९	३४	३९	४४	५०	५५	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५

को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अध.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४९	५४
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	१९	१९	१९
को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३ ध.	५७	१	४	८	१२	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५
को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अ-ध	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२	५०	५३	५६	५९	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१४	१३	१२	११	११	१०	१०	९	८	८	७	६	६	५	४
को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
०ध-	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३८	३९	४०	४१	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	४	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०

भृगोःशीघ्रफलम् ॥ भृगोर्मध्यमारवि॰ ॥ भृगो.पश्चिमोदयः । ० । २४ । ० । ० । भृगोर्वक्रम् ॥ । ५। १७ । ० । ० ।॥ पश्चिमास्तम् ॥ ५ । २७ । ० । ० । पूर्वोदयः । ६ । ३ । ० । ०

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अध-	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
२५-	२५	५०	१५	४०	६	३१	५६	२१	४६	१२	३७	२	२७	५२	१८
१२-	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५

को॰	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
घ २५	४३	८	३३	५८	२४	४९	१४	३९	४	३०	५५	२०	४५	१०	३६
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३
को॰	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं.घ	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८
२४	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ,	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
को॰	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४
२४घ	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
ध-	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
को॰	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं.घ	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२९	२९	२९	३०
२२	५८	२०	४३	५	२८	५०	१२	३५	५७	२०	४२	४	२७	४९	१२
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
ध.	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
को॰	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३४	३४	३४	३५	३५
२४घ	३२	५३	१४	३५	५६	१६	३७	५८	१९	४०	००	२१	४२	३	२४
४८	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ध-	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

भृगोःशीघ्रफलम् भृगोर्मध्यमोरविः भृगोर्मध्यमागतिः ॥ ५९ ॥ ८ ॥ केंद्रगतिः ॥ ३७ ॥ ०० मा
र्गिकेंद्रम् ६ १३ । ० । ० ॥ पूर्वास्तं ॥ ११ ॥६ । ० । ० ॥

कों॰	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अंध.	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३९	३९	४०
१९	४३	२	२१	४०	०	११	३८	५७	१६	३६	५५	१४	३३	५२	१२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	१२	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९
ध.	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०
कों॰	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४४
१५व	२७	४२	५७	१२	२८	४३	५८	१३	२८	४४	५९	१४	२९	४४	०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	९	९	८	८	८	८	७	७	७	६	६	६	६	५	५
ध-	३०	१३	५६	३९	२२	५	४८	३१	१४	५७	४०	२३	६	४९	३२
कों॰	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
अं-ध	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
८	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४
ध-	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३
कों॰	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
अंतर	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४४	४४	४४
७ऋ-	५८	५१	४४	३७	३०	२२	१५	८	१	५४	४६	३९	३२	२५	१८
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	४	[illegible]	६	९	११	१२	१४	१६	१७	१९	२१	२२	२४	२५	२७
ऋ-	३०	९	४८	२७	६	४५	२४	३	४२	२१	०	३९	१८	५७	३६
कों॰	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अऋ	४३	४२	४१	४१	४०	३९	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३२
४६	३१	३४	५७	१०	२४	३७	५०	३	१६	३०	४३	५६	९	२२	३५
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ	२३	२९	३२	३४	३६	३८	४०	४१	४३	४५	४५	४३	५०	५२	५४
ऋ	१५	३	५१	४०	२८	१६	५	५३	४१	३०	१८	६	५५	४३	३१

को०	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
२ अंश	३०	२८	२६	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१०	८	६	४	२	०
१० अं	२५	१५	४	५४	४४	३३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२०	१०	०
२४	३६	१२	४६	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
ग-	५६	५९	६३	६६	६९	७३	७६	७९	८३	८६	८९	९३	९६	९९	१०३
फ अं	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

अंतिमशीघ्रफलसाधने केंद्रभागाः पंचाशदशतेभ्यश्चाधिकस्तदाशुकारयोरित्यादिसंस्कारःकार्यः ॥

भृगोर्मंदफलम् ॥ भृगोर्मंदोच्चन् ३ । ० । ० । ० भृगोर्मध्यमागतिः ५९ । ८ भृगोःकेंद्रगतिः ३७।०

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंश ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२ ०	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२८	३१	३३	३६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
ध-	२४	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	९	८	६	४	३	१
को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
२ ध	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
ध-	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२
को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं.ध-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	४८	४६	४४	४३	४१	४०	३८	३६	३५	३३	३२	३०	२८	२७	२५
को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
० ध	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अध.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	३०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	२४	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	९	८	६	४	३	१

को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं। ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध ०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनेः शीघ्रफलम् शनेरुच्चरवि ॥ शनेर्मध्यमागति. २ ० ॥ शने पूर्वोदय ॥ ० १७ ० ० शनेर्मार्गि ८ ७ ० ० शनेर्वक्रम् ३ २३ ० ० ॥

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अ ।०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
ध६।०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०
० ।०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ग- ६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
ध- ०	०	५७	५४	५१	४८	४४	४१	३८	३५	३२	२८	२५	२२	१९	१६

को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
५ ध-	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
ध-	१२	९	६	३	०	५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८

को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अध	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	५२	५६	१	५	१०	१४	१८	२३	२७	३२	३६	४०	४५	४९	५४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३
ध	२४	२१	१८	१५	१२	८	५	२	५९	५६	५३	४९	४६	४३	४०

को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं ध	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३	५७	१	४	८	१२	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
फग-	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२
ध-	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-ध-	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२	५०	५२	५५	५७	०	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ,	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध-	२४	१९	१४	९	४	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६

को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१ ध	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	०

शनेःशीघ्रफलसाधनम् ॥ शनेरुच्चंरविः शनेर्मध्मागतिः २।०। शनेःपाश्चिमास्तकेंद्रम् ११।१२।०।०।

को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अं-	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
०	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२१

को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१ ऋ	४०	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१८
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
ऋ.	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३०	१३५
अ.ऋ.	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	१४	११	८	५	२	५८	५५	५२	४९	४६	४२	३९	३६	३३	३०
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
अ.ऋ	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४
३।१२	१२	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१
को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१३९	१५०
अं-ऋ	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	२५	२०	१५	१०	६	१	५६	५१	४६	४२	३७	३२	२७	२२	१८
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
ऋ-	४८	५३	५८	३	८	१२	१७	२२	२७	३२	३६	४१	४६	४८	०
को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अ.ऋ	२	२	२	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१
६	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
ऋ-	०	५	१०	१५	२०	२४	२९	३४	३९	४४	४८	५३	५८	३	८
को०	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७ऋ.	४०	३३	२६	१९	१२	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७	०
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ऋ-	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३	५७

शनेर्मदफलसाधनम् ॥ शनेरुच्चंरविः ॥ शनेर्मदोच्चम् ॥ ८।०।०।० ॥ शनेर्मध्यमागतिः २।००

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंध०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
७।°	७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
० ग	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५ध	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५

को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं ध	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
८	२	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं-ध-	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६
८	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ,	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३
को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७
६ध	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१३	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९
को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अ-ध.	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
४	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४९	५४
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	९	८	८	७	७	७	६	६	५	५	५	४	४	३	३
को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१ ध,	५५	५७	५८	०	२	३	५	६	८	१०	११	१३	१४	१६	१८
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०

अवलग्नादिद्वादशभाव सिद्धकरणेकाप्रयोजनसुधानिधिग्रंथमेंकहतेहैं जन्म वर्ष प्रश्न सें लेकरके योशुभाशु भफलहै तिनमें विद्वानोने द्वादशभाव सिद्धकरणेयोग्यहें तिनों लग्नादिभावोंसें तनुधनादियोंका यो शुभा शुभफलहै सो ग्रहदेतेहैं ॥ १ ॥ तिसमेंप्रथमचरखडादिलकोदयस्वोदयदिनार्द्धनतोन्नतकासाधन जातक मित्रसेनपद्धतिमेंकहतेहै ॥ यो यो अपनेदेशकी पलभाहै तिसकों तीनस्थानमें धरे फेर क्रमकर्के प्रथ मस्थानमें दश१०कर्के दूसरेस्थानमें आठ८कर्के तीसरेस्थानमें दशकर्के गुणदेवे और अंत्यकेखंडेका तीसरा भागलेवे तब चरखंडे अपनेअपनेदेशके सिद्धहोतेहैं ॥ और लकोदयकहतेहै मे ॥ २७८ वृ २९९ ॥मि ३२३ कं ३२३ सिं२९९ क २७८ ॥ एहिउलटे तुलासें लेकर मीनपर्यंत कहे

अथतन्वादिद्वादशभावसाधनम् ॥ तत्रभावसाधनप्रयोजनं सुधानिधौ ॥ जन्मा ब्दपृछादिशुभाशुभेपुभावाविधेयासुधियायतोत्र ॥ तत्तद्ग्रहेनैवदिशंतिनित्यंशु भाशुभंभावफलंनभोगाः १ तत्रचरखंडादिलंकोदयस्वोदयदिनार्द्धादिनतोन्नतसा धनमुक्तं मित्रसेनपद्धतौ त्रिस्थाक्षभादि१०ग्वसु८दिग्वि १० निघ्नीचरस्यखंडा निगुणांश । ३ । मंत्यम् ॥ अष्टर्क्ष२७८मंकांकभुजा २९९ स्त्रिदंता३२३व्यक्षो दयाःस्युःक्रमशोत्क्रमस्थाः ॥ २ ॥ क्रमोत्क्रमोनयुक्तास्तैश्चरखंडैःक्रियादिकाः ॥ व्यस्तास्तुतेतुलात्ज्ञेयानिजदेशोदयाःस्मृताः ३ ॥ रवेर्दोर्लिवाःखाग्नि३०ल ब्धाश्चखंडाश्चरस्यांशशेषघ्नभोग्याद्विभक्तम् ॥ खरामैस्तदैक्यंचरंस्यात्तिथौ १५तद्धनर्णक्रमात्सौम्ययाम्यंदिनार्द्धम् ॥ ४ ॥

है ॥ २ ॥ अवस्वदेशीयउदयकहतेहैं ॥ मेषसें लेकर जो लंकोदयहै तिनकों क्रमकर्के मिथुनपर्यंत चरखंडेमिलावे और कर्कसें लेकर उलटेमिलावे तब कन्यापर्यंत स्वोदयहोतेहे और सोई उलटे तुलासें मीनपर्यंतहोतेहे ३ अवचरसिद्धकरतेहै सायनसूर्यके भुजाशाःकरे तिनकों तीस३०सें भागलेवे यो ल ब्धहोवे उतने चरखंडेका योगकरे और शेषखंडेकर्के भोग्यांशोंको गुणे फेर तिसमें तीस३०का भाग लेकर खंडयोगमे मिलावे सो चरहोताहै ॥ अवदिनमानसिद्धकरतेहे तिस चरको पंद्रामें १५धनऋण करे तो दिनार्द्धहोताहै ॥ सायनसूर्य मेषादिछैराशीमे होवेतब धनकरे और तुलादिछैराशीमें स्थित होवे तब ऋणकरे तब दिनार्द्धसिद्धहोताहै ४

अबवारप्रवृत्तिहोरेशकेवास्तेकहतेहैं ॥ लंकापुरीसेंलेकरके कुरुक्षेत्र कों स्पर्शकर्ती रेखा मेरूपर्वत पर्यंत जो है तिसकों भूमध्यरेखा कहते है तिसरेखाके पश्चिम और पूर्वदेशमें वारप्रवृत्ति इसप्रकारकर्के होती है जब अर्द्धरात्री में पंद्रां १५ घडियां मिलाय देवें और रेखास्थानसें जितने योजन अपना देशहै तिनों योजनों का असीति ८० भाग लेकर्के पश्चिमदेशमें ऊन करे और पूर्व देशमें युक्त करे तब वार प्रवृत्ति नित्यस्पष्ट होतीहै ५ अबनतोन्नतस्पष्टकहतेहैं मध्यान्हसमयसें लेकर्के पूर्वदिनकी अर्द्धरात्रि पर्यंत पूर्वनत होताहै और मध्यान्ह सें लेकर अर्द्धरात्रिपर्यंत पश्चिमनतहोताहै और तिस नतकों तीस में ३० घटायदेवें तब तिसकी उन्नत संज्ञा कहिहै सो नत और उन्नत चतुर्थ दशम भावसाधनमें इष्ट होताहै ६ अब लग्नस्पष्ट करते हैं तात्कालिकसूर्य में अयनांशा मिलावें फेर तिसके भोग्यांशो कर्के स्वोदय पलों कों गुणे फेर तीस ३० सें भागलेवे तब सूर्यका भोग्यकाल पलादि सिद्धहोता है तिसकों इष्टकालके पलो में शुद्धकरे घटायदेवे जो-

कोदयः			स्वोदयः		
२७८	मी		मे	२०३	मी
२९९	कुं		वृ	२३९	कुं
३२३	मं		मि	२९८	म
३२३	ध		कं	३४८	ध
२९९	वृं		सिं	३५९	वृं
२७८	तु		कं	३५३	तु

लंकाकुरुक्षेत्रसुमेरुशैलभूमध्यरेखापरपूर्वदेशे ॥ वारप्रवृत्तिस्तिथियुङ्निशीथेस्याद्योजनाशीतिलवोनयुक्ते ॥ ५ ॥ मध्यंदिनात्प्राक्परतस्तुपूर्वापरंनतंरात्रिदलावधिस्यात् ॥ त्रिंशत् ३०च्युतंचोन्नतसंज्ञमाहुस्तूर्याभ्रभावानयनेतादिष्टम् ६ तत्कालार्कोयनांशैर्युतउदयपलैःसंगुणाभोग्यभागास्त्रिंश ३० द्धर्कोर्कभोग्यःपलमयसमयःशोधयेदिष्टकालात् तच्छेपादग्रतश्चाऽपतिततनुपलैर्भाजितात्खत्रि ३० निघ्नादंशाद्यंतच्च रात्रौरस ६ भयुतरवेःपूर्ववच्चायनोनम् ७ रवे र्भोग्यपलादिष्टकालो भवति हीनकः खाग्नि ३० भि र्गुणितो भक्तः स्वोदये रंशकादियुक्। ८। लग्नं स्यादिति ॥ अथ दशम लग्नानयनम् ॥ पद्धतिचिंतामणौ ॥ युक्तायनांशार्कगतैष्यभागा लंकोदयघ्नाः खगुणो। ३० द्धृतातत्

शेपरहे तिसमें आगेकी राशीके उदय पलघटावे जिस राशिके उदयपल न घटें तब शेपकों तीस ३० सें गुणकर्के तिस राशिके उदय पलों कर्के भागलेवे जो लब्धआवे सो अंश कला विकला लग्न के होतेहैं जिस राशीके स्वो दय कर्के भाग लियाहै तिसके पूर्वराशियां कों जोडदेवे, और अयनांशा घटायदेवे तब लग्नस्पष्टहोताहै और रात्रिमें सूर्यमेंछेराशीजोडदेवे और रात्रीष्टकालमान कें पूर्वकीन्याई लग्नस्पष्ट होताहै अब भोग्यकालसें हीन इष्टकाल होवे तिसमें लग्नस्पष्ट कहतेहैं ॥ जब सूर्यके भोग्यकालपलों सें इष्ट थोडा होवे तब तिसकों तीस ३० सें गुणे और अपने उदयपलों सें भागलेकर अंशादि स्पष्ट सूर्यमें जोड देवे तब स्पष्ट लग्न होताहैं ८ अथदशमलग्नपद्धतिचिंतामणीसेंसिद्धकरतेहैं ॥ सायनसूर्यके जो भुक्त भोग्य अंशादि हैं सो सूर्यकी राशीके लंकोदयसेंगुणे फेर तीस ३० सेंतिनकोंभागे

अवसप्तवर्गोंकेफलकहतेहे लग्न होरा द्रेष्काण सप्ताश नवमाश द्वादशाश त्रिंशाश ऽहसात पदलग्नमें कहेहैं १ लग्नमें देहके आकारकी विचारणाकरे और होरामें मनुष्यके धनसपदा औरविपदाकाविचारकरे और द्रेष्काणमें कर्म फलकोंविचारे और सप्तमाशमें भ्राताकाविचारकरे २ औरनवांशचक्रमें सन्तान कों विचारे ओर द्वादशा शमेंस्त्रीका विचारकरे ओर त्रिंशाशचक्रमे मृत्युकाशुभाशुभस्थानमेंविचार करे ३ तिसमे प्रथमवाराह्लग्नोंके फल जातका भरणसेंकहतेहैं जोमनुष्य मेपलग्नमेंजन्मताहे सो वडेअभिमानवालाहोताहै औरगुणवान् औरक्रोधीहोताहे और अपने मित्रोंसे विरोधकर्त्ता और लोकोंसेमित्रभावकर्त्ताहै और अपनेपराक्रम करके विशेषयशकोंप्राप्तहोताहे ४ और जिसमनुष्यके जन्मकालमें वृपलग्नहोवे सोगुणोंमे अग्रणी बचामुल्य होजाताहे और धनकरके पूर्ण होताहै और गुरोंका भक्त होताहे

अथशारीरकाध्यायोव्याख्यायते ॥ तत्रसप्तवर्गफलानि ॥ लग्नहोराथद्रेष्काणः सप्तभागोनवांशकः द्वादशांशोथत्रिंशांशोलग्नः सप्तपद स्मृतः १ लग्नेदेहाकारोहोरायामर्थसंपदोविपदः द्रेष्काणेकर्मफलंसप्तांशेवंधुसंज्ञाच.२ पुत्रंनवांशभागेद्वादशभागेविचिंतयेत्पत्नीं · त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाऽशुभंसर्वजंतूनाम् ३ तत्रलग्नफलानिजातकाभरणे ॥ चंडाभिमानीगुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधीचसखापरेषाम् पराक्रमप्राप्तयशोविशेषोमेषोदयेयः पुरुषोतिरोपः ४ गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेन पूर्णोभक्तोगुरुणांहिरणप्रियश्च धीरश्चशूर.प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पूरुषोयस्यवृषोविलग्ने ५ भोगीवदान्योवहुपुत्रमित्रः सुगूढमंत्रःसधनःसुशीलः तस्यस्थिति.स्यान्नृपसंन्निधाने लग्नेभवेन्नामिथुनाभिधाने ६ मिष्टान्नभुक्साधुरतोविनीतोविलोमवुद्धिर्जलकेलिशीलः प्रकृष्टसारोतितरामुदारोलग्नेकुलीरेहिनरोभवेत्सः ७ कृशोदरश्चारुपराक्रमश्चभोगीभवेदल्पसुतोल्पभक्षः संजातवुद्धिर्मनुजोभिमानीपंचाननेसंजननेविलग्ने ८

ओर युद्धकाप्याराहोताहे और धीर औरशूरवीर और मीठाबोलनेवाला और शांतस्वभाववालाहोताहे ५ और जोमनुष्य मिथुनलग्नमें जन्मताहै सोभोगीवका और बहुतपुत्रोंवाला ओर मित्रोंवाला होताहै और गुप्त मंत्री और धनकरके युक्त और श्रेष्ठस्वभाववाला और राजाकेपासरहणेवालाहोताहै ६ और जोमनुष्यकर्कटलग्नमेंजन्मताहै सोमिष्टान्नखानेवालाऔरसाधूजनोंसेप्रीतिकरणेवालाऔर नम्रहोताहै और उलटीबुद्धिवाला और जलक्रीडाकरणेमेंमतिसकारस्वभावहोताहे और वडे सारवाला और वडाउदार होताहै ७ और जोमनुष्यसिंहलग्नमें जन्मताहै सोमनुष्य पतले पेटवाला ओर वडे पराक्रमवाला और भोगोके भोगनेवाला और थोडेपुत्रोंवाला और थोडाभोजनकरणेवालाऔरवडेअभिमानवालाहोताहै ॥ ८

अबकन्यालग्नकाफलकहनेहैं जिसमनुष्यकेजन्मसमयमेंकन्यालग्नहोताहै सोमनुष्यकामक्रीडाऔरश्रेष्ठगुण और ज्ञान और पराक्रमऔर चातुरीसें लेकरकेअनेकगुणोंवाला होताहै और प्रसन्नताककें युक्तहोताहै और श्रेष्ठलक्ष्मीकों नित्यंप्रतिप्राप्तहोताहै ९ और जोमनुष्यतुलालग्नमेंजन्मताहैं सो अपने कुलमें भूषण रूपहोताहै और बडेगुणोंवाला और धनकेलाभवाला और व्यापारमेंअतिचतुरहोताहै और तिस के घरमेंलक्ष्मीस्थिरहोतीहै १० और जो मनुष्यवृश्चिकलग्नमेंजन्मताहै सोशूरवीरऔर बडे विचारवाला और बडी निर्दोष विद्यावालाहोताहै और सर्वदाकालकलहःकेकरणेवालाहोताहै ११ औरजोमनुष्यध नुः लग्नमें जन्मताहै सो चतुर और राजाकी सेवा करणेवाला और सत्य प्रतिज्ञावाला और मनकी बातजाननेवाला होताहै और चतुर और कलाके जाननेवाला और धनुर्विद्याके जाननेवाला होताहै ॥ १२ ॥ जोमनुष्यमकरलग्नमें जन्मताहै सोबडेकठोरदेहवाला और शठहोताहै और जोअपनेमन

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः लग्नंकन्यायस्यजन्यां सधन्यःकन्यांक्षीराब्धेरवाप्नोतिनित्यम् ९ गुणाधिकत्वंद्रविणोपलब्धिर्वाणिज्य कर्मण्यतिनैपुणत्वं पद्मालयातन्निलयेनलोलालग्नतुलाचेत्सकुलावतंसः १० शू रोनरोत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः प्रसूतिकालेकिललग्नशालीभ वेदलिस्तस्यकलिःसदैव ११ प्राज्ञश्चराज्ञःपरिसेवनज्ञःसत्यप्रतिज्ञःसुतरांमनो ज्ञः सुज्ञाकलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्यजनुस्तनुःस्यात् १२ कठिनमूर्तिरतीव शठःपुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः सुचतुरोपिचलुब्धतरोवरोयदिनरोमकरो दयसंभवः १३ लोलस्वांतोऽत्यंतसंजातकामश्चंचद्देहःस्नेहकृन्मित्रवर्गे सस्यैरं भःसंभवैर्युक्तदंभश्चेत्स्यात्कुंभेसंभवोयस्यलग्ने १४ दक्षोल्पभक्षोऽल्पमनोभव श्चसद्रत्नहेमाचपलोतिधूर्तः स्यान्नाचनानारचनाविधानेमीनाभिधानेजननेविल ग्ने १५ भवेदलंलग्नबलेयथोक्तंविलग्नकालेप्रबलेप्रसूतौ तस्मिन्बलोनेयदिवा विलग्नेयुक्तेक्षितेक्रूरखगैस्तथाल्पं १६

की इच्छाहोवे सोकरताहै औरबहुतसंतान वाला होताहै और बडाचतुर और बडालोभीहोताहै १३ और जो मनुष्यकुंभलग्नमें जन्मताहै तिसका मनचंचलहोताहै और बडाकामी होताहै और सुंदर देहवालाहोताहै और मित्रों सें प्रीतिकरणेवाला और जलकेकेंउत्पन्नजोवृक्षादियोंकेफलतिनोंककेंयुक्त और दंभी होताहै ॥ १४ ॥ और जो मनुष्य मीनलग्नमें जन्मताहै सो बडाचतुर होताहै और थोडा भोजन कर्ताहै और थोडे कामवाला होताहै और श्रेष्टरत्नों कर्के और स्वर्ण कर्के युक्त होताहै और बडा चपल और धूर्त होताहै और अनेक प्रकारोंकिया रचनारचनेकी विधिकों जानताहै १५ और इहेजो बारालग्नोका फलकहाहै जबलग्नपूर्णबलीहोवे तबयथोक्तफलकरणेकों समर्थहोताहै और लग्नहीनबल होवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त वादृष्ट होवे तब थोडा फलकर्ताहै १६

९९

फेर भुक्तकालकों [illegible] सो सूर्यका भुक्त और भोग्यकाल होताहै ॥ फेर भुक्तकालकों [illegible] और भोग्यकालकों पश्चिम नतके पलों में घटावे और फेर [illegible] पलों में घटावे और भोग्यमें ऐष्य राशियोंके उदय घटावे फेरशेषकोंतीससें [illegible] राशीयोंके उदय घटावे और भोग्यमें ऐष्य राशियोंके उदय पलों सें भाग लेवे अंशादि फल ग्रहणकरे फेर तिसफलकोंभुक्तमें [illegible] और [illegible] राशीके उदय पलों सें भाग लेवे और भोग्यमें शुद्धराशीयां मेपसें लेकर मिलावे और अयनांशा घटाय देवें तब [illegible] राशीमें घटावे और भोग्यमें शुद्धराशीयां मेपसें लेकर मिलावेऔर अयनांशा घटाय देवें तब [illegible] स्पष्ट होताहै ९ और लग्नमें छे राशी मिलावें तब सप्तम भाव होताहैऔरदशममें छे राशी [illegible] तब चतुर्थ भाव सिद्ध होताहै १० और पूर्व नतमेंबीधनदशमानयन कहतेहैंपूर्वनतकों [illegible] और सूर्यके साथ छे राशीमिलावे फेरलंकोदयोंसे धन कर्मकके दशम स्पष्ट होताहै ११ [illegible] संधियोंकर्केयुक्तद्वादशभावसिद्धकरणेकहतेहैं चतुर्थभावसेंलग्नकोंघटायदेवे जोशेपराश्यादिरहे तिसका

स्याद्भुक्तभोग्यंतपनस्यजह्यात् ॥ पलीकृतात्प्रागपरान्नतात्तत् क्रमाद्गते
ष्यानुदयांश्चशेषमशुद्धहृत्खाग्नि३०गुणंलवाद्यं विशुद्धपूर्वापरभैर्विहीनयुतंखभं
स्यादयनांशहीनम् ९ ॥ लग्नं सषड्भं मदनाभिधानंतुर्याभिधंस्याद्दशमात्स
षड्भात् ॥ १० अथपूर्वनते पि धनदशमानयनम् प्राङ्नतस्योन्नतं कृत्वा
रविं कृत्वा सषड्भकम् लंकोदयैर्द्धनाख्येन कर्मणास्यात्खभं स्फुटम् ॥ ११ ॥
अथससंधिसर्वभावानयनम् लग्नंचतुर्थात्संशोध्यंशेषंषड्भिर्विभाजितम् राश्याद्यं
योजयेल्लग्नेसंधिःस्याल्लग्नवित्तयोः ॥ १२ संधिःषडंशसंयुक्तोधनभावोभवेत्स्फुटः
धनभावःषडंशाढ्यःसंधिर्धनतृतीययोः ॥ १३ षडंशसंयुतःसंधिस्तृतीयोभावउ
च्यते षडंशाढ्यस्तृतीयःस्यात्संधिर्भ्रातृचतुर्थयोः तृतीयसंधिरेकाढ्यःसंधिःपाता
लपुत्रयोः १४ ॥ द्व्याढ्यस्तृतीयभावोपिपुत्रभावोभवेत्स्फुटः त्र्याढ्योद्वितीयसंधिः
स्यात्संधिःपंचमभावजः १५ धनभावोवेदयुतोरिपुभावस्तुजायते लग्नसंधिःपंच
युतःसंधिस्याद्रिपुभावजः १६ लग्नाद्याःसंधिसहिताभावाःषट्राशिसंयुताः सप्त
माद्याभवंतीहभावाःसर्वेससंधयः १७

षडंश६छठाभागराश्यादिफललेवे तिसकोंलग्नमेंजोडदेवे तवलग्नऔरधनभावकोसंधिस्पष्टहोतीहै १२औ तिसीसंधिमेंछठेभागकों मिलावेतवधनभावस्पष्टहोताहै औरधनभावमेंषडंशकोंमिलावें तवधनभावकी और तृतीयभावकीसंधिहोतीहै १३ और तिससंधिमेंषडंशमिलावेतवतृतीयभावस्पष्टहोताहै औरतृतीयभाव मेंषडंशकोंमिलावे तवतृतीयचतुर्थभावकीसंधिहोतीहै और तृतीयभावकीसंधिमेंएकराशिमिलावेंतवचतुर्थ पंचमभावकीसंधिहोतीहै १४औरतृतीयभावमेंदोराशिमिलावें तवपंचमभावस्पष्टहोताहै औरदूसरेभावकीसं धिमेंतीनराशिमिलावें तवपंचमभावकीसंधिहोतीहै १५औरधनभावमेंचारराशीमिलावेंतवरिपुभावहोताहै औरलग्नकीसंधिमेंपांचराशीमिलावे तवछठेभावकीसंधिहोतीहै १६इसीप्रकारलग्नसेंलैकर्केछैभावसंधियोंक करसंयुक्तस्पष्टहोतेहै औरलग्नादिछैभावजोहैसंधियोंकर्केयुक्ततिनमेंछैछैराशीमिलानेसें द्वादशभावस्पष्टहोतेहैं

अवलग्नसें इष्टकालसिद्धकरणाकेशवार्ककहताहै सूर्यकेभोग्यांशऔरलग्नकेभुक्तांशोंकायोगकरे औरमध्य केउदयपलमिलावेतवइष्टकालहोताहै पलात्मक औरजवलग्नऔरसूर्यएकहिराशिमेंहोवेंतवतिनकेअंशादि योंकाअन्तरस्वोदयकरगुणे औरतीस ३० सेंभागलेवेतवइष्टकालहोताहै औररात्रीकेइष्टकालमेंछैराशीकरयु क्तसूर्यसेंलग्नसिद्धकियाहोवे तवसूर्यास्तसेंलेकेंइष्टकालसिद्धहोताहै ॥ १८ ॥ अवभावफलसिद्धकरणा कहतेहै ॥ योग्रहसंधियोंकेतुल्यस्थितहोताहै तिसकाफलशून्यहोताहै अर्थात्शुभाशुभभावफलनहिंकर्त्ता हैऔर योग्रहभावकेतुल्यहोताहै सोभावकाशुभाशुभफलपूर्णकर्त्ताहै और मध्यमेंअनुपातसेंफलकर्त्ताहै भा

अथलग्नादिष्टकालानयनमाह केशवार्कः॥ अर्कस्यभोग्यस्तनुभुक्तयुक्तोमध्योदया ढ्याःसमयोविलग्नात् ॥ यदैकभेलग्नरवीतदातद्भागांतरघ्नोदयखाग्निभागः रात्रीष्टकालेतुसषड्भसूर्यात्लग्नततोप्युक्तवदिष्टकालः १८ ॥ अथभावफल साधनं ॥ शून्यंसंधिपुभावगेखिलफलंस्याद्भावसंध्यंतरेणाप्तंसंधिखग्रांतरं क्षयचयेभावाधिकेल्पेखगे ॥ १९ ॥ अत्रविशेषोदामोदरपद्धतौ भावो नकः खगः पूर्वसंधिनारहितस्तदा · अधिकश्चेद्द्विरामाख्यसंधेःशोध्य स्तदंतरं २० भावसंध्यंतरेणाप्तंतद्भावफलमुच्यते तदारोहंपूर्वसंधेरवरोहंतथां तिमं २१॥इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्म हानिबंधेजातकखंडेग्रहभावसाधननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

यऔर संधिकेअंतरकर्केग्रहसंधिकेअंतरकोंभागे योलब्धआवेसोभावफलक्षयऔरचयसंज्ञकहोताहै जबग्रह भावसेंअधिकहोवेतवक्षयफलहोताहै औरजवभावसेंहीनहोवेतवचयफलहोताहै १९ औरदामोदरपद्धतिमें विशेषकहतेहै योग्रहभावसेंऊनहोवेतिसकापूर्वसंधिसेंअंतरकरे औरजोअधिकहोवेतिसका आगेकीसंधिसें अंतरकरे २० औरभावसंधिकेअंतरसेंभागलेवेजोलब्धफलआवे सोभावफलहोताहै औरपूर्वसंधिकेअंतरसे आरोहऔरअंतिमसंधिकेअंतरसेंअवरोहसंज्ञकफलहोताहै २१ इतिजातकखंडेग्रहभावसाधनाध्यायः ४

अबसप्तवर्गोंकेफलकहतेहें लग्न होरा द्रेष्काण सप्तांश नवमांश द्वादशांश त्रिंशांश एहसात पदलग्नमें-कहेहैं १ लग्नमे देहके आकारकी विचारणाकरे और होरामें मनुष्यके धनसंपदा औरविपदाकाविचारकरे और द्रेष्काणमें कर्म फलकोंविचारे और सप्तमांशमें भ्राताकाविचारकरे २ औरनवांशचक्रमें संतान कों विचारे और द्वादशांशमेंस्त्रीका विचारकरे और त्रिंशांशचक्रमे मृत्युकाशुभाशुभस्थानमेंविचारकरे ३ तिसमे प्रथमबारालग्नोंके फल जातका भरणसेंकहतेहैं जोमनुष्य मेषलग्नमेंजन्मताहै सो बडेअभिमानवालाहोताहै औरगुणवान् औरक्रोधीहोताहै और अपने मित्रोंसें विरोधकर्त्ता और लोकोंसेंमित्रभावकर्त्ताहै और अपनेपराक्रम करके विशेषयशकोप्राप्तहोताहै ४ और जिसमनुष्यके जन्मकालमें वृषलग्नहोवे सोगुणोंमे अग्रणी वचामुख्य होजाताहै और धनकरके पूर्ण होताहै और गुरोंका भक्त होताहै

अथशारीरकाध्यायोव्याख्यायते ॥ तत्रसप्तवर्गफलानि ॥ लग्नंहोराथद्रेष्काणः सप्तभागोनवांशकः द्वादशांशोथत्रिंशांशोलग्नः सप्तपदःस्मृतः १ लग्नेदेहाकारोहोरायामर्थसंपदोविपदः द्रेष्काणेकर्मफलंसप्तांशेबंधुसंज्ञाच २ पुत्रंनवांशभागेद्वादशभागेविचिंतयेत्पत्नी त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाऽशुभंसर्वजंतूनाम् ३ तत्रलग्नफलानिजातकाभरणे ॥ चंडाभिमानीगुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधीचसखापरेषाम् पराक्रमप्राप्तयशोविशेषोमेषोदयेयः पुरुषोतिरोषः ४ गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेनपूर्णोभक्तोगुरुणांहिरण्यप्रियश्च धीरश्चशूर प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पूरुषोयस्यवृषोविलग्ने ५ भोगीवदान्योवहुपुत्रमित्रः सुगूढमंत्र सधनःसुशीलः तस्यस्थिति स्यान्नृपसंन्निधाने लग्नेभवेन्नामिथुनाभिधाने ६ मिष्टान्नभुक्साधुरतोविनीतोविलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः प्रकृष्टसारोतितरामुदारोलग्नेकुलीरेहिनरोभवेत्सः ७ कृशोदरश्चारुपराक्रमश्चभोगीभवेदल्पसुतोल्पभक्षः संजातबुद्धिर्मनुजोभिमानीपंचाननेसंजननेविलग्ने ८

और युद्धकाप्याराहोताहै और धीर औरशूरवीर और मीठाबोलनेवाला और शांतस्वभाववालाहोताहै ५ और जोमनुष्य मिथुनलग्नमें जन्मताहै सोभोगीवक्ता और बहुतपुत्रावाला और मित्रोंवाला होताहै और गुप्त मैत्री और धनकरके युक्त और श्रेष्ठस्वभाववाला और राजाकेपासरहणेवालाहोताहै ६ और जोमनुष्यकर्कटलग्नमेजन्मताहै सोमिष्टान्नखानेवालाऔरसाधूजनोंसेंप्रीतिकरणेवालाऔर नम्रहोताहै और उलटीबुद्धिवाला और जलक्रीडाकरणेमेंतिसकास्वभावहोताहै और बडे सारवाला और बडाउदार होताहे ७ और जोमनुष्यसिंहलग्नमें जन्मताहै सोमनुष्य पतले पेटवाला और बडे पराक्रमवाला और भोगोंके भोगनेवाला और थोडेपुत्रोंवाला और थोडाभोजनकरणेवालाऔरवडेअभिमानवालाहोताहै ॥ ८

अथकन्यालग्नकाफलकहतेहैं जिसमनुष्यकेजन्मसमयमेंकन्यालग्नहोताहै सोमनुष्यकामक्रीडाऔरश्रेष्ठगुण और ज्ञान और पराक्रमऔर चातुरीसें लेकरकेअनेकगुणोंवाला होताहै और प्रसन्नताकर्के युक्तहोताहै और श्रेष्ठलक्ष्मीकों नित्यंप्रतिप्राप्तहोताहै ९ और जोमनुष्यतुलालग्नमेंजन्मताहै सो अपने कुलमें भूषण रूपहोताहै और वडेगुणोंवाला और धनकेलाभवाला और व्यापारमेंअतिचतुरहोताहै और तिस के घरमेंलक्ष्मीस्थिरहोतीहै १० और जो मनुष्यवृश्चिकलग्नमेंजन्मताहै सोशूरवीरऔर वडे विचारवाला और वडी निर्दोष विद्यावालाहोताहै और सर्वदाकालकलहःकेकरणेवालाहोताहै ११ औरजोमनुष्यध नुः लग्नमें जन्मताहै सो चतुर और राजाकी सेवा करणेवाला और सत्य प्रतिज्ञावाला और मनकी बातजाननेवाला होताहै और चतुर और कलाके जाननेवाला और धनुर्विद्याके जाननेवाला होताहै ॥ १२ ॥ जोमनुष्यमकरलग्नमे जन्मताहै सोवडेकठोरदेहवाला और शठहोताहै और जोअपनेमन

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः लग्नेकन्यायस्यजन्या सधन्यःकन्यांक्षीराब्धेरवाप्नोतिनित्यम् ९ गुणाधिकत्वंद्रविणोपलब्धिर्वाणिज्य कर्मण्यतिनैपुणत्वं पद्मालयातन्निलयेनलोलालग्नंतुलाचेत्सकुलावतंसः १० शू रोनरोत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः प्रसूतिकालेकिललग्नशालीभ वेदलिस्तस्यकलिःसदैव ११ प्राज्ञश्चराज्ञःपरिसेवनज्ञःसत्यप्रतिज्ञःसुतरांमनो ज्ञः सुज्ञाकलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुधनुर्यस्यजनुस्तनुःस्यात् १२ कठिनमूर्तिरतीव शठःपुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः सुचतुरोपिचलुब्धतरोवरोयदिनरोमकरो दयसंभवः १३ लोलस्वांतोऽत्यंतसंजातकामश्चंचद्देहःस्नेहकृन्मित्रवर्गे सस्यैरं भःसंभवैर्युक्तदंभश्चेत्स्यात्कुंभेसंभवोयस्यलग्ने १४ दक्षोल्पभक्षोऽल्पमनोभव श्चसद्रत्नहेमाचपलोतिधूर्तः स्याद्राचनानारचनाविधानेमीनाभिधानेजननेविल ग्ने १५ भवेदलंलग्नबलेयथोक्तंविलग्नकालेप्रबलेप्रसूतौ तस्मिन्बलोनेयदिवा विलग्नेयुक्तेक्षितेक्रूरखगैस्तथाल्पं १६

की इच्छाहोवे सोकर्ताहै औरवहुतसंतान वाला होताहै और वडाचतुर और वडालोभीहोताहै १३ और जो मनुष्यकुंभलग्नमें जन्मताहै तिसका मनचंचलहोताहै और वडाकामी होताहै और सुंदर देहवालाहोताहै और मित्रों सें प्रीतिकरणेवाला और जलकर्केउत्पन्नजोवृक्षादियोंकेफलतिनोंकर्केयुक्त और दंभी होताहै ॥ १४ ॥ और जो मनुष्य मीनलग्नमें जन्मताहै सो वडाचतुर होताहै और थोडा भोजन कर्ताहै और थोडे कामवाला होताहै और श्रेष्ठरत्नों कर्के और स्वर्ण कर्के युक्त होताहै और वडा चपल और धूर्त होताहै और अनेक प्रकारोंकिया रचनारचनेकी विधिकों जानताहै १५ और इहेजो वारालग्नोंका फलकहाहै जवलग्नपूर्णवलीहोवे तवयथोक्तफलकरणेकों समर्थहोताहै और लग्नहीनवल होवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त वादृष्ट होवे तव थोडा फलकर्ताहै १६

अथहोराकाफलकहतेहैं होराचक्रमें रूप और मित्रभावकाविचाराकियाहै चंद्रमाकी होरामें जन्मे और वहुतग्रहदूसरेस्थानमें स्थितहोवे तव वडासुंदर और वडेधनवाला श्रेष्ठहोताहै और सूर्यकीहोरामें जन्मे- और वहुतग्रह द्वादश १२ स्थानमें होवे तव मध्यम रूप मित्र धन वाला होताहै ॥ १७ ॥अब- सारावलीसें प्रत्येकहोराकाफलकहतेहै जोमनुष्य मेष लग्नकी प्रथम होरामें जन्मताहै सो लालनेत्रों- वाला और तीक्ष्ण दृष्टिवाला और शूरवीर और धनवान् और तोतेकीन्यांई नासिकावालाहोताहै और श्रेष्ठस्त्रीसें प्रीतिकर्ताहै और पुष्ट और ऊंचेदेहवाला और चोरोंकास्वामी होताहै ॥ १८ ॥ और जो मेषकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सो चोर और वडीमस्तीवाला और कठन पैरोंवाला और कठन अंगु- लीयोवाला और स्निग्धवडेविशालनेत्रोंवाला और चतुर और पुष्टदेहवाला और श्रेष्ठवुद्धिवालाहोताहै. ॥ १९ ॥ और जो वृषलग्नकीप्रथमहोरामेंजन्मताहैसोसौम्यस्वभाववाला और वडेनेत्र और मस्तक.

अथहोराफलम् होरायांरूपसौहार्दंपश्येजन्मनिसर्वदा वहवोधनगाःश्रेष्ठास्तथानेष्टाव्ययेग्रहाः १७ सारावल्यां रक्तोत्कटदृक्शूरोधनवान्शुकनासिकोथ्रिदाररतः पीनोन्नतःप्रचंडःतस्करनाथःक्रियादिहोरायां १८ चौरःप्रमादवहुलःखरोग्रपादांगुलिर्द्वितीयायां स्निग्धायताक्षचतुरःपृथुपीनतनुःसुमेधाच १९ सौम्योविशालचक्षुर्ललाटवक्षाश्चयानरतिवश्यः स्थूलाक्षितनुवृषभेप्रथमार्धेस्यात्प्रकोपनवपुष्मान् २० पृथ्वायतपीनतनुंह्युदारसत्वंसुमूर्धजंजनयेत् व्यस्तकटिंवृषभास्यंवृषस्यहोराद्वितीयाच ॥२१॥ मध्यायताक्षमध्यमतनुमूर्तिर्दृढाशीर्षाङ्घ्रिश्च मिथुनार्धेशूरोनावाग्मीमतिमान्सुरतिशीलः ॥ २२ ॥ स्वक्षःकामीशूरोमृदुवल्गुकथोमनस्वीच चार्वोष्ठदंतदेहोभवेन्नृमिथुनेद्वितीयहोरायां २३ ॥ उद्वृत्तमूर्तिःसुशिरःप्रगल्भमंदस्वरश्चलोतिशठः श्यामतनुश्चकृतघ्नोभग्नाग्रदःकुलीरपूर्वार्धे ॥ २४ ॥

और छाती वाला होताहै और वाहनोंमें प्रीतीवाला और वश्य होताहै और वडेमोटे देहवाला और वडेक्रोधवाला होताहै ॥ २० ॥ और जो वृषकी दूसरी होरामें जन्मताहै सो वडे भारे पुष्टदेहवाला और वडे पराक्रमवाला और सुंदर केशों वाला और टेडे लक वाला और वैलकी न्यांई मुख वाला होताहै ॥ २१ ॥ और मिथुनकी पूर्व होरामें जन्मेतो मध्यम रूप और विशालनेत्र और छोटी मूर्तिः और दृढ शिर और पाद होतेहैं और शूरवीर वक्ता वुद्धिमान् कामचेष्टामें स्वभाव वाला होताहै २२ और जो मिथुनकी दूसरी होरामें जन्मताहै सो सुंदर नेत्रोंवाला कामी शूरवीर कोमल सुंदर वार्ता करणे वाला मनस्वी और सुंदर ओष्ट दंत देहवाला होताहै ॥ २३ ॥ और जो कर्कट की पूर्व होरामें जन्मताहै सोवर्तुलाकारदेहवाला और श्रेष्ठशिरवाला और प्रगल्भ और मंदस्वर वाला और चंचल और शठ होताहै और सुंदरदेह वाला और कृतघ्न और आगेकेदंद तिसके टूट जातेहैं ॥ २४ ॥

औरजोकर्कट कीदूसरी होरामें जन्मताहै सो जूआखेलने वाला और मार्गमें चलने वाला औरमोटे मुख वाला और समदेह वाला और कठोर देह वाला और क्रोधी होताहै ॥ २५ ॥ और जो सिंह की प्रथम होरामें जन्मताहै सो लाल कोणें वाले विशाल नेत्रों वाला प्रगल्भ वडे देह वाला कपट स्वभाववाला और अत्यअवस्थामेंसुपभोगनेवाला और स्थिरपराक्रमवाला और स्थिरकर्मोंवालाहोता है २६ और जो सिंहकीदूसरी होरामें जन्मताहै सो स्त्रीमें और मिष्टपान और मिष्ट भोजनमेंरतहो ताहै और श्रेष्ठवस्त्रोंकीइच्छावाला और अनेकचेष्टाकरनेवाला और कठोर अंगोंवाला और दाता और मार्गमेंरत और भोगी और स्थिरमित्रोंवालाहोताहै ॥ २७ ॥ और जो कन्याकी पूर्वहोरामेंजन्मताहै सो वडेकोमलदेहवाला और कांतिवाला और श्रेष्ठवाणीवाला और श्रेष्ठगायनकरणेवालोस्त्रीसेरतहोताहै और मखोरकोन्याईनेत्रहोतेहैं और गायनविद्याकेजानने,

द्यूतरतोध्वनिनिरतः पृथुवक्त्रः प्रमाणसंपन्नः कठिनशरीरः क्रोधीजातनरो द्वितीयहोरायां ॥ २५ ॥ रक्तांतदृक्प्रगल्भोगुरुरायतदृष्टिदेहइनभाद्ये जिह्मस्वभावःसुखभागंतेस्थिरसत्वकर्मा च ॥ २६ ॥ स्त्रीमिष्टपानभोजनव स्त्रेप्सुर्वहुविचेष्टकठिनांगः दाताध्वरतोभोगीस्थिरसुहृदश्चैवचांत्यिर्धे ॥ २७ ॥ सुकुमारमूर्तिकांतिः सुवाक्सुगीतांगनारतिर्मधुदृक् गांधर्वविद्विनीतः सुभगः पूर्वार्द्धजःषष्ठे ॥ २८ ॥ कन्यांत्यर्द्धेह्रस्वः सेवागांधर्वलेख्यलिपिविज्ञः स्थूल शिरःसविपादःपापार्द्धिसुखभाक्सुतीर्थश्च ॥ २९ ॥ वृत्ताननउच्चनसःपटुर्वि लासीधनीसुधीर्मंत्री पीनायतोऽस्थिसारोधनवान्प्रियसंयुतस्तुलाद्यर्धे ॥ ३० ॥ वह्वर्थभाक्स्थिरार्थः श्यामः कुंचितशिरोरुहश्चशठः वृत्ताक्षस्त्वपरार्धेस्वसत्व भिन्नाग्रपादश्च ॥ ३१ ॥

वाला और वडा नम्र और श्रेष्ठभाग्योंवालाहोताहै ॥ २८ ॥ और जो कन्याकी दूसरीहोरामेंजन्मता है सो छोटेदेहवाला और सेवा और गायन विद्या और लिखनेकी विद्याके जाननेवालाहोताहै और मोटे शिरवाला और पापकर्के धनकेसुखवाला और श्रेष्ठतीर्थयात्राकरणेवालाहोताहै ॥ २९ ॥ और- जो तुलाकी प्रथमहोरामें जन्मताहै सो गोलमुखवाला और ऊंचीनासिकावाला और चतुरविलासक रणेवाला और धनी और श्रेष्ठबुद्धिवाला मन्त्री और पुष्ट विशाल देहवाला और अस्थिसार और ध नी और श्रेष्ठमित्रोंवाला होताहै ॥ ३० ॥ और जोतुला कीदूसरी होरामें जन्मताहै सो बहुतधनवा- ला और स्थिरधनवाला और सुंदरदेहवाला और कुंडलोंवालेकेशोंवाला औरशठऔर गोलनेत्रोंवाला और अपनेपराक्रमकर्के भेदकोप्राप्तभये पादजिसके असा होताहै ॥ ३१ ॥

श्रीर जोवृश्चिककीप्रथमहोरामेंजन्मताहैसोलालकोणेवालेपिंगलवर्णके नेत्रोंवालाऊौरउत्साहवालाऊौर युद्धमेंशूरवीरऊौरदुष्टस्वभाववाला ऊौरमित्रकेधनकोंलेनेवाला होताहै ३२ ऊौरजोवृश्चिककीदूसरीहोरामें जन्मताहै सोवडेविशालपुष्टदेहवाला ऊौर राजाकोसेवाकरणेवाला ऊौर वहुतऋणवालाऊौरमित्रोंकर्के युक्तऊौर वडेनेत्रोंवाला होताहै ३३ ऊौर जो धन की पूर्व होरामेंजन्मताहै सो दलितपृष्ट श्रौरमुख ऊौर छातीवाला ऊौर हाथीकीन्याई निमीलित नेत्रोंवाला श्रौर पुष्टकपोलोंवाला होताहै ऊौर वाल्यावस्थामेंघरके वडेजोहैं तिनोंकात्यागकरकेतपस्वीहोताहै ३४ ऊोर जोधनकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सोकमलदलकीन्याई विशालनेत्रोंवाला ऊौर वडीलंवियोंभुजोंवाला ऊौर शास्त्रार्थकेजाननेवाला ऊौर श्रेष्ठनीतिकेजाननेवाला ऊौर श्रेष्ठवाणीवाला ऊौर धर्ममेंतत्पर ऊौर वीशेपकर्केपूर्ण यशवालाहोताहै

रक्तांतपिंगदृष्टिःसाहसवपुरपिरणेशूरः दुष्टस्वभावनामाप्रियार्थभाग्वृश्चिकाद्यर्धे ॥ ३२ ॥ विस्तीर्णोपचितायतपीनांगःक्ष्माधिपोपसेवीस्यात् वव्हृणमित्रसमेतःस्फुटिताक्षोवृश्चिकापरार्धेच ॥ ३३ ॥ दारितपृष्टमुखवक्षाः करिकुंचितनेत्रपीनगंडःस्यात् वाल्येत्यक्तात्मगुरुश्चापाद्यर्धेतपस्वीच ॥ ३४ ॥ पद्मायताक्षोगुरुदीर्घवाहुः शास्त्रार्थवित्सुनीतःस्यात् वाक्सुभगोधर्मपरस्त्वपरेनिभृतोयशस्वीच ॥ ३५ ॥ श्यामसृगाक्षोधन्यःस्त्रीष्वजितःसौम्यमूर्तिशठःश्राद्ये मूढाटनःसुरोषेमृगाद्यभगेतनूच्चनसः ॥ ३६ ॥ रक्तांतदृष्टिरलसस्तनुदीर्घांगोभवतिमूर्खः श्यामोरोमचितांगःसाहसिकोरौद्रकर्माच ३७ स्थिरमित्रलाभसक्तोमृदुसत्वोल्पसुतःसद्गुणःशूरः ताम्रप्रभासुवर्णःपापरतस्ताम्रदृग्घटाद्यर्धे ३८

॥ ३५ ॥ ऊौर जो मकरकी पूर्वहोरामेंजन्मताहै सो सुंदरकाले हरिणकीन्याई नेत्रोंवाला ऊौरधन्य ऊौर स्त्रीयोंमे नहिंजीत्याजानेवाला ऊौर सौम्यमूर्तिः ऊौर प्रथमावस्थामेंशठ ऊौर मूढ ऊौर वहुतश्रमणेवाला श्रौर वडेक्रोधवाला श्रौर ऊचीनासिकावाला होताहै ॥ ३६ ॥ श्रौर जो मकरकीदूसरी होरामेजन्मताहै सो लालकोणेवालेनेत्रोंवाला श्रौर श्रालसी श्रौर सूक्ष्मदेहवाला श्रौर लंवेश्रंगोवाला श्रौर मूर्खहोताहै श्रौर नवीनश्रवस्थावाला श्रौर श्रगोंमेंरोमोंवाला श्रौर हठकर्केक्रूरकर्मोंकेकरणेवालाहोताहै ॥ ३७ ॥ श्रौर जो कुंभकीपूर्वहोरामेंजन्मताहै सो स्थिरमित्रतावाला श्रौर लाभयुक्त श्रौर कोमलपराक्रमवाला श्रौर थोडेपुत्रोंवाला श्रौर श्रेष्ठगुणोंवाला श्रौर शूरवीर श्रौरतावेकीन्याई ललवर्णवाला श्रौर लालदृष्टिवाला श्रौर पापकर्ममेंरतहोताहै ॥ ३८ ॥

औरजो कुंभकीदूसरी होरामें जन्मताहै सो कृष्णऔरकृशदेहवाला और व्यस्तअंगोंवाला औरशठ और आलसी औरनहिंकिसेकीवातमाननेवाला औरविषादकरणेवालाहोताहै औरतिसकाअंतनहिंपायाजाताहै औरतांबेकीन्याई लालनेत्रोंवालाहोताहै ३९ औरजोमीनकीपूर्वहोरामें जन्मताहै सो छोटेदेहवाला औरमोटेसुंदरनेत्रोंवाला औरसुंदरदेहवाला और बडेमाथेवाला और बडीछातीवाला औरस्त्रीकाप्यारा और श्रेष्टयशवाला और क्रियामेंचतुर औरशूरवीरहोताहै ॥ ४० ॥ औरजोमीनकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सो श्रेष्टऔरस्थिर औरश्रेष्टबुद्धिवाला औरउदारस्त्रीका औरराजाकाप्याराहोताहै औरसुंदरवाणीवाला और ऊचीनासिकावाला और सुंदरमूर्त्तिवालाहोताहै ॥ ४१ ॥ जिसकेनिषेककालमें वा. जन्मकालमें चद्रमा अथवासूर्य वलीहोयकर्के केंद्रगतलग्नकेस्वामीकोंदेखे तवहोरायथोक्तफलकोंदेतीहै ॥ ४२ ॥ और जवहोराकास्वामीपूर्णबलीहोरामें स्थितहोवे तवहोराकेगुणकोंजातकप्राप्तहोताहै और

असितकृशव्यंगतनुःशठोलसोनैष्कृतीविषादीच घटपरदलेदुरंतोदारिततांम्रेक्षणःपुरुषः ॥ ३९ ॥ ह्रस्वःपृथुचारुतनुर्महाललाटश्चपृथुवक्षः स्त्रीदयितोमीनेर्धेप्रथमेसुयशःक्रियापटुःशूरः ॥ ४० ॥ श्रेष्टःस्थिरःसुमेधाभृतोदारांगनानृपतिदयितः शुभवागुन्नतघोणोझपपरार्धेसुमूर्त्तिःस्यात् ॥ ४१ ॥ चंद्रार्कयोरेकतमोवलिष्टोहोरापतिंपश्यतिकेंद्रगंवा होरायथोद्दिष्टफलप्रदात्रीस्याद्गर्भसंस्थासुसमुद्भवेषु ॥ ४२ ॥ होरापतौपूर्णवलेचहोरेहोरागुणंस्वंलभतेप्रसूतः स्वस्वामियोगेक्षणतःफलंस्याद्भावोद्भवंश्रेष्टमऽतोन्यथान्यत् ॥ ४३ ॥ इतिहोराफलानि ॥ अथद्रेष्काणफलं ॥ द्रेष्काणेकेंद्रगःकुर्यादुच्चस्थोभूपतिंग्रहः स्वक्षेत्रगश्चमूनाथंमित्रगश्चापिवाग्मिनम् ॥ ४४ ॥ दाताहंतादीर्घःक्षयोदयीसंगरप्रचंडः स्यात् प्रियविग्रहास्त्रिभागेमेषाद्येवंधुपूज्यदंडश्च ॥ ४५ ॥ स्त्रीचपलःशास्त्ररतः स्त्रीमित्रार्थभाक्सुवाक्सुतनुः प्रियगीतश्चमनस्वीमेषस्यांशेद्वितीयेस्यात् ४६

जिसभावमेंहोरापति भावकेस्वामीकर्के युक्त वा दृष्टहोवे तवतिसभावकाशुभफलहोताहै और भावेश कर्केयुक्तदृष्टनाहिंहोवे तवतिसभावकानेष्टफलहोताहै ४३ ॥ इतिहोराफलम् अवद्रेष्काणकाफलकहतेहै द्रेष्काणचक्रमें उच्चग्रहहोवेसोराज्यप्राप्तकर्ताहे और जोअपनेक्षेत्रमेंग्रहहोवेसोसेनाकापतिकर्ताहै और जोग्रहमित्रकेघरमेंहोवेसोश्रेष्टवाणी कावक्ताकर्ताहे ॥ ४४ ॥ अवप्रत्येकराशिगतद्रेष्काणफल कहतेहै जोमेषकेपूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहै सो दाता औरहर्ता औरक्षयकों औरवृद्धिकों वारंवारप्राप्तहोताहै औरलंवाहोताहै युद्धमेंप्रचंडहोताहै मित्रविरोधी औरसंवंधियोंमेंउग्रदंडकर्ताहै ॥ ४५ ॥ और जोमेषकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो स्त्रीयोंमेंचपल औरशास्त्रमेंरत और स्त्रीके औरमित्रकेधनकोंभोगनेवालाऔर सुंदरवाणीवाला और सुंदरदेहवाला और गीतविद्याकाप्यारा और मनस्वीहोताहै ४६

और जोमेपकेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो गुणी और दूसरेकोंदोपकरणेवालाऔर वलपराक्रमकर्केयुक्त और राजाकीसेवाकर्त्ताहै और मित्रोंकात्याग और धर्ममेंवुद्धिवाला और सज्जनोंकेआदरकोंजाननेवालाहोताहै ॥ ४७ ॥ और जोवृपकेपूर्वद्रेष्काण में जन्मताहै सोमित्र औरभोज्यवस्तु औरस्त्रीयोंके वियोगसें संतप्तहोता है और वस्त्रभूपणोंमेंरत और स्त्रीकेस्वभावके अनुसारचलता है ॥ ४८ ॥ और जोवृपकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सोकोमलदेह वाला और स्त्रीके सौ भाग्यवाला और वडाधनी- और रूपवान् और भोगवल कर्केयुक्तहोताहै और स्नानमें और भूपणोंमें रतहोताहै और स्थिर और- मनस्वी होताहे ४९ और जो वृपके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो चतुर और चर,और ,स्थिर देहवाला और मानकोंप्राप्तहोताहै और गौर वर्ण और मलीनरहणे वाला और डरणे वाला होता है और धनकर्के रहितहोताहै और खोटे ,चरित्रों कर्के संतापकों प्राप्तहोताहै.॥ ५० ॥ और जो

गुणवान्परदोपकरोबलसत्वयुतोनरेंद्रसेवीस्यात् स्वजनप्रियधर्ममतिस्तृतीय भागेप्रियादराभिज्ञः ॥ ४७ ॥ प्रियमानभोज्यनारीवियोगतप्तोवृपस्यपूर्वेण वस्त्रालंकाररतोयुवतिप्रकृतानुसारीस्यात् ॥ ४८ ॥ सौम्यवपुःस्त्रीसुभगोमहाधनोरूपभोगवलयुक्तः ॥ स्नानविभूपणनिरतः स्थिरोमनस्वी द्वितीयेस्यात् ॥ ४९ ॥ चतुरश्चरस्थिरतनुर्मान्योगौरोमलीनसोभीरुः विगतधनःकुचरित्रैःप्रतप्यतेचवृपस्यांते ५० मिथुनादिकेत्रिभागेपृथूत्तमांगोधनान्वितःप्रांशुः कितवोगुणीविलासीनृपात्तमानोवचस्वीस्यात् ५१ मृदुसौम्यसुरूपोवपुर्ह्रस्वमुखःसुक्ष्ममूर्धजोनास्यत् धन्योमृदुर्महारिर्द्वितीयभागेप्रतापवान्सुयशः ५२ स्निग्धेक्षणोवपुष्मान्महाशिरःशत्रुयुतः प्रांशुःरूक्षनखःकरपादश्चलार्थविभृतोटनस्तृतीयेस्यात् ५३ कर्कटकाद्येभागेदेवब्राह्मणरतश्चलोगौरः कृत्यकरश्चपरेपांसुधीःसुमूर्तिःसुनांगनासुभगः ॥ ५४ ॥

मिथुनके पूर्व द्रेष्काणमें जन्मताहै सो मोटे शिरवाला और धनयुक्त औरलंवेदेहवाला और धूर्त और गुणी और विलासी और राजमान कों प्राप्त और अपने वचन के करणे वालाहोताहै ५१ और मिथुनके मध्यद्रेष्काणमेंजोजन्मताहै सोकोमलसुंदररूपवाला और छोटादेह औरछोटेमुख वाला और सूक्ष्मके शोंवाला और सूक्ष्मजंघावालाहोताहै और धन्य और वडे शत्रुयोंवाला और प्रतापी और श्रेष्ठयशवालाहोता है ५२ और जो मिथुनके तीसरेद्रेष्काण में जन्मता है सो स्निग्ध नेत्रों वाला और सुंदरदेहवाला और वडे शिरवाला और शत्रु युत और लंवे देहवाला होताहै और रूक्ष नखों वाला और कठोरपैरो वाला और चलधन कों प्राप्त होताहै और भ्रमणेवाला होताहै ५३ और कर्कके पूर्व द्रेष्काणमें जन्मे तो देवता और ब्राह्मणोंमें प्रीति वाला और चंचल और गौरवर्ण होता है और दूसरे कार्यकरणे वाला और श्रेष्टवुद्धिवाला और सुंदर मूर्तिः और पुत्रनीके सुखवाला होता है ५४

और जो कर्कट के मध्य द्रेष्काण में जन्मताहै सो धनका लोभी और दानमें रत और बहुस्वप्न देखने वाला और स्त्रीजित और अभिमानी होताहै और भाईयों करयुक्त और विलासी और चपल और बहुत रोगों वाला होताहै ५५ और जो कर्कके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो वनमें और जलोंमें रत होताहै और विदेशगामीहोताहै और धन. को प्राप्त होताहै और साधुहोताहै और वृथाहि शठता कर्ताहै और सुगंधादि द्रव्यमें तिसकी रुचि होतीहै ५६ और जो सिंहके प्रथमद्रेष्काणमें जन्मताहै सो दाता और हर्ता और बहुतधन और बहुतस्त्रीयों और शत्रुयोंवालाऔर राजाकासेवक और शत्रुजीतनेकीइछावालाहोताहै और स्थिर मित्रता और पराक्रमकरकेयुक्तहोताहै ॥ ५७ ॥ और जो सिंहकेदूसरेद्रेष्काणमें जन्मताहै सो श्रेष्ठरुचिवाला और कामी और दाता और स्थिरस्वभाववाला और सुंदरदेहवाला और भूषणोंकिइछावाला

लुब्धार्थोदानपरःस्वप्नपरःस्त्रीजितोभिमानीस्यात् सहजान्वितोविलासीचपलोबहुरुग्द्वितीयेच ५५ काननतोयानुरतोविदेशगस्त्रीवलोर्थभाक्साधुः कर्कटकांत्यत्र्यंशेदृथाशठोभवतिमाल्यरुचिः ५६ दाताहर्त्ताबहुधनदारोरिनृपसेवकोरिपुजिगीपुः स्थिरमित्रसत्त्वयुतःसिंहस्याद्यदृकाणेस्यात् ५७ सुरुचिःकामीदातास्थिरविपुष्मान्विभूषणेप्सुःस्यात् सुखभाक्श्रुतिधर्मरुचिर्विस्तीर्णमतिर्द्वितीयेपि ५८ लुब्धःस्थिरायततनुस्तब्धः परवित्तहरसुधीःकितवः सिंहस्यांतेनैकसुतःस्त्रीणां नेष्टःप्रगल्भश्च ५९ सुकुमारतनुःश्यामोमधुदृक्मधुरसुवाक् सुधीःसुनयः स्त्रिभ्योर्थभाग्दृकाणेकन्यायेदीर्घकंठश्च ६० समरोत्कटोविलासीसुतयुग्मुनिसमगतिर्विदेशरतःधीरोव्ययीचाल्पकलाकथारताःषष्टमध्यांशे ॥ ६१ ॥

और सुखकों भोगनेवाला और वेदधर्ममेंरुचिवाला और बडीबुद्धिवालाहोताहै ॥ ५८ ॥ और सिंहके तीसरेद्रेष्काणमें जोजन्मताहैसो लोभी स्थिर बडेदेहवाला और अनम्र और दूसरेकाधनहरणेवाला और श्रेष्टबुद्धिवाला और धूर्तहोताहै और अनेकपुत्रोंवाला और स्त्रीयोंको नेष्टफलकरणेवाला और प्रगल्भहोताहै ५९ और जोकन्याकेपूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो सुंदरकोमलदेहवाला और मधुकीन्याईनेत्रोंवाला और मीठीवाणीवाला और श्रेष्टबुद्धीवाला और श्रेष्टनीतिकेजाननेवालाऔर स्त्रियोंकाधनभोगनेवाला और लंबेगलेवालाहोताहै ॥ ६० ॥ और कन्याकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो युद्धमें प्रबलहोताहै और विलासीहोताहै और पुत्रोंकरयुक्तहोताहै और मुनियोंकेतुल्यगतिवाला और विदेशगामीहोताहै और धीर्यवाला और बडेखर्चवाला और थोडीकलाके जानने वाला और थोडीयों वार्ताकरणेवाला होताहै ६१

और जो कन्याकेतीसरे द्रेष्काण मे जन्मताहे सो छोटे सुदरदेहवाला और दूसरे केधनकों भोगनेवाला और गायनमें प्रीतिवाला और वडेनेत्रोंवाला और राजाकीआज्ञामाननेवाला और त्यागी और स्थिरस्वभाव वाला और सुंदररूपवाला और तीव्रस्वभाववाला होताहे ॥ ६२ ॥ और जो तुलाके पूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहे सो नवीनअवस्थावाला और सेवाकर्के कलाकों प्राप्तहोनेवाला और व्यापारमेंचतुर और वुद्धिवालाहोताहे और मंत्रके जाननेवाला और कामदेवकीन्याईरूपवालाहोताहे ॥ ६३ ॥ और जोतुलाके मध्यद्रेष्काणमें जन्मताहे सो कमलदलकी न्याईविशालनेत्रोंवाला और सुंदररूपवाला और राजाका मित्रहोताहे और वहुतवाताकर्ताहे और प्रसिद्धहोताहै और अपनेवशकोवधावताहे और वहुतचाकरोंवाला और चतुरहोताहे ॥ ६४ ॥ और जोतुलाकेतीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहे सोनष्टमित्र और नष्टधन और नष्ट यशवाला और थोडीवुद्धिवाला और

नतसुतनुःपरधनभाग्गीतरतिःपृथुदृगवनिपाभिमतः त्यागीस्थिरःसुरूपश्चंडाकन्यांत्यदृकाणे ६२ श्यामःसेवाप्तकलापण्यानियोगेपुनिपुणवुद्धिःस्यात् मंत्रज्ञःस्मररूपस्तुलादिमेभवतिदृक्काणे ६३ पंकजविशालनेत्रःसुरूपवान्नृपसखःप्रलापीस्यात् ख्यातःस्ववंशवर्धितवव्हानुचरःपटुर्द्वितीयेच ॥ ६४ ॥ चपलःशठोकृतघ्नोविरूपजिव्होपचारतनुमूर्तिः नष्टसहृत्द्रविणयशःस्वल्पमतिःपाथिरतस्तृतीयेस्यात् ॥ ६५ ॥ गौरःस्थिरःप्रचंडोरणोत्कटःस्यान्नरोविशालाक्षः स्थूलविशालशरीरःकलिप्रियोवृश्चिकाद्यंशे ॥ ६६ ॥ मिष्टान्नपानचतुरश्चलेक्षणोहेमगौरमूर्तिःस्यात् कांतःपरवित्तयुतोऋजुक्रियावान्द्वितीयांशे ॥ ६७ सुभुजोमधुपिंगाक्षोमहोदरःश्मश्रुरोमरहितश्च सहजवियुतःप्रहर्ताहिंस्रःकृष्णोलिनस्तृतीयेंशे ६८

मार्गमेंरतहोताहे और चपलऔर शठ और कृतघ्न और रूपकरकेंरहित और छोटेदेहवालाहोताहे ६५ और जोवृश्चिकके पूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहे सो गौरवर्ण और स्थिरस्वभाववाला और वडाप्रचंड और युद्धमें तकडा और विशालनेत्रोंवालाहोताहे और वडेमोटेदेहवाला और कलहकेकरणेवाला होताहे ६६ और जोवृश्चिकके मध्यद्रेष्काणमें जन्मताहे सोमिष्टान्नपानमें चतुरहोताहे औरचंचलनेत्रोंवालाहोताहे और सुवर्णकीन्याई गौरवर्णवालाहोताहे और सुंदर और दूसरेकेधनकरकेंयुक्तहोताहे और सरलक्रियावाला होताहे ॥ ६७ ॥ और जोवृश्चिककेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहे सोश्रेष्ठभुजोंवाला और मधुपिंगलनेत्रोंवाला और वडेउदरवाला और थोडीदाढीवाला और भाईयोंसेंरहित और हरणेवाला और मारणेवालो और कालेवर्णवालाहोताहे ॥ ६८ ॥

डोर जोधनके पूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहै सो गोलनेत्रोंवाल और गोलछातीवाला और गणोंमे प्रधान और धनी होताहै और अपने साधु आचारमें युक्त और कोमल हृदय वाला होताहै ६९ और जो धनके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो शास्त्रार्थके जाननेवाला और वक्ता और सैकडेहि यज्ञ करणेवाला और ऐश्वर्यवाला होताहै और मंत्रियोंमे वडाश्रेष्ट और अनेकतीर्थ और देवस्थानोंमें विचरणे वाला होताहै ७० और जोधनके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो वंधुयोंमें प्रधान और चतुर और श्रेष्ठजनोंकी गतिकास्थान और धर्मी होताहै और मानी और परस्त्रीकोंनाहिं सेवनेवाला और रूप और यशकापात्र और वडाश्रेष्ट होताहै ७१ और जोमकरके पूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहै सो विशेषकर्के लंवीयोंभुजोंवाला और कोमलस्वरूपवाला और वडेनेत्रोंवाला और वडेपट्टोवाला और शठ और श्रेष्ठ जनोंका स्वामीहोताहै और हास्यकर्के संयुक्तवोलनेवाला और

परिमंडलाक्षिवक्षागणेपुमुख्योधनीत्रिकोणाद्ये स्वोचितसाध्वाचारस्तथामृदुर्भवति सःजातः ॥ ६९ ॥ शास्त्रार्थवित्प्रवक्ताक्रतुशतकर्ताविभुर्द्वितीयेस्यात् मंत्रभृतां श्रेष्ठतमस्त्वनेकतीर्थायतनचारी ॥ ७० ॥ वंधुप्रधानचतुरःसतांगतिर्धर्मभाक्तृतीयेपि मानीपरांगनाऽभाक्रूपयशोभाजनंविजिष्णुश्च ॥ ७१ ॥ व्यालंवभुजःश्यामःपृथुनयनोरूशठःसुकांतःस्यात् स्मितभापीमकराद्येस्त्रीप्वजितोवल्गुचेष्ठधनयुक्तः ७२ श्यामःशठोल्पवचनःचलःपरस्त्रीधनापहर्तास्यात् उद्बद्धजंघःपिशुनोदुरुक्तवादःप्रवासशीलश्च ७३ मृगमध्येइतिशेपः ॥ घोणाललाटशोभनकलुपःकृशदीर्घःपितृवियोगीच लभतेविदेशगमनात्प्रायोव्यसनानि चाप्यंते ७४ स्त्रीमानरतःप्रांशुःस्थिरकर्मासुखरतोधर्मोरिपुमान् कुंभादिमेदृकाणेप्रियंगुकुसुमप्रभोभवति ७५

स्त्रीयोंमें अजित और सुंदरचेष्टावाला और धनीहोताहै ७२ और जोमकरकेमध्यद्रेष्काणमें जन्मताहै सो कोमलदेह और शठ और थोडावोलनेवाला और चलचित्त और परस्त्री और परधनकेहरणेवाला होताहै और जंघामेंवंधनवाला और चुगल और दुष्ट वचनकहनेवाला और प्रवासीहोताहै ७३ और मकरकेतीसरेद्रेष्काणमें जन्मताहै सोसुंदरनासिका और सुंदरमस्तकवाला होताहै और पापी और कृशदेहवाला. और पिताकेवियोगवालाहोताहै और विदेशयानेसें व्यसनोंकोंप्राप्तहोताहै ७४ और कुंभकेपूर्वद्रेष्काणमें जोजन्मताहै सोस्रीकेमानमेरतहोताहै और लंवेदेहवालाहोताहै और स्थिरकर्मकरणेवाला और सुखमेरत और अधम और शत्रुयोंवाला होताहै और तिसका देहलालवर्णकाहोताहै ७५

और कुंभकेमध्यद्रेष्काणमें जन्मेसोवहुतहास्यक्रीडाकरणे वाला और श्रेष्ठवाणीवाला और श्रेष्ठच रित्रकरणेवालाहोताहै और गंधर्वविद्याकाप्यारा और लोभी और मधुपिंगलनेत्रोंवाला और साम र्थवालाहोताहै ७६ और जोकुंभकेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहैसो लंबा और शठ और प्रलापकरणेवाला और कृशदेहवाला और छोटियांभुजावाला और श्रेष्ठधनकोंप्राप्तहोनेवाला और अनम्रहोताहै और बहुतझूठकहनेवाला और अंतःकरणमें कपटी और बडेनेत्रोंवाला और रतिकेजाननेवालाहोताहै ७७ और जोमीनकेपूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहै सोगौरवर्ण औरमधुकीन्याईनेत्रोंवाला और श्रेष्ठबुद्धिवाला और कृतज्ञहोताहै और ज्ञानक्रियामेंरत और सुखी. और नम्र और प्रसिद्धहोताहै ७८ और जो मीनके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो धनी योंके उपचारकों जानने वाला और धनकों

रतिहास्यघनोघटधरमध्येचोत्कृष्टवाक्सुचरित्रकरः प्रियसंगीतोलुब्धोमधु गौरः पिंगदृक्समर्थश्च ७६ दीर्घः शठः प्रलापीकृशोल्पबाहुः सतार्थभाक्स्त ब्धः बव्हनृतोंतर्विषमोविदारिताक्षोरातिविदंत्स्येच ७७ मीनाद्येदृक्काणेगौरोम धुदृक्सुधीः कृतज्ञश्च ज्ञानक्रियारतिनिरतः सुखीविनीतः सुवाक्ख्यातः ७८ धनिनोपचारवेत्तापरधनभुङ्मिष्टमन्नमाकांक्षी मुखरःस्वजनानुमतोज्ञानीज्ञप मध्यमत्र्यंघशे ७९ श्यामः पृथुकरपादः सदन्नपानः सुहृद्वरश्चापि हास्यकला. विभ्रष्टोप्रियोज्ञपांत्येचदृक्काणे ८० इतिरितोयंस्वगुणस्वभावै द्रेष्काणका नांगुणचिन्हकल्पः द्रेकापतौवीर्यवतीष्टदृष्टेद्रेकाफलंनिर्विकलंविदध्यात् ८१ इतिद्रेष्काणफलम् ॥ अथसप्तांशफलं ॥ सप्तांशेबंधुसंज्ञाचेति ॥ सप्तांशल ग्नात्सहजाधिनाथः क्रूरोथसौम्यः शुभपापदृष्टः पापैर्निजभ्रातृभिहीनएवसौ म्यै र्बहुभ्रातृयुतोनरः स्यात् ॥ ८२ ॥

भोगने वाला और मीठे अन्नकी इच्छावाला और मुखर और संबंधियोंकी सलाह वाला और ज्ञा- नीहोताहै ७९ और जो मीनके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो कोमल देहवाला और बडे हाथ- पैरों वाला और श्रेष्ठ अन्नपानकरणेवाला और मित्रोंमें श्रेष्ठ होताहै और हास्यकलाके जानने वा- ला होताहै ८० और इहे कहाजो द्रेष्काणोंका फलस्वभाव गुण चिन्हों करके जब द्रेष्काणका- स्वामी बलवान् होवे और मित्र ग्रहोंकरके देख्या होवे तब पूर्ण फल होताहै ८१ इतिद्रेष्काणफ- लानि ॥ अथसप्तांशकाफलकहतेहैं ॥ सप्तसचक्रमें भ्राताकाविचार करणा कहाहै सप्तांशलग्नसें तीसरे घरकास्वामी क्रूरग्रहहोवे अथवाशुभग्रहहोवे शुभदृष्ट युक्त अथवा पापग्रहों करके दृष्टयुक्त हो- वे जरपपग्रहोंकरकेंदृष्टयुक्तहोवे तब भ्रातृ हीन होताहै और शुभग्रहों करके दृष्ट युक्त होवे तब बहुतयों भाईयों करके युक्तहोताहै ८२

अवप्रत्येकराशिमेंसप्तांशफलकहतेहें ॥ वक्ष्यमाणपड्बलमेंचंद्रमा बलीहोवे तव चंद्रमाकी राशिसें और लग्नबलीहोवे तव लग्न सें सप्तांशफल मेषादि राशियोंमें सप्तांशके क्रमकर्के स्वरूप और लक्षण जो जन्मकालमें पुरुषोंके यवनाचार्योनेंकहे हें सो मै कहताहां ८२ जोमनुष्य मेषके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो छोटीदाढीवाला और वडाप्रचंड और लालनेत्रों वाला और लडाई कर्ने में श्रेष्ट होताहे और युद्धकरणे वाला और चोरी करणे वाला और कृश देहवाला होताहे, ८३ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो भारे माथेवाला और गंडस्थलोंवाला और वडेमुखवाला और छोटे माथे वाला और सुंदर ठोडीवाला और सुंदरदाढिवाला होताहे और भोगमें और दानमेंरतहोताहै और वडेपुष्टमोंडयों वाला और गूढमंधियोंवाला और कृशसंधियोंवाला होताहे ८४ और जो तीसरेसप्तांशमें जन्मताहै सो चतुराई और चोरी और लडाई पापकर्के युक्त होताहे और लिखने वाला और शास्त्रके जानने वाला और कामी होताहै और सुदर रूपवाला और भ्रमणे वाला और वक्ता और कोमल देहवाला होताहे ८५ और जो चतुर्थ सप्तांशमेंजन्मताहै सो मोटे नेत्र और कपोला और उदर और मोटेहाथों वाला होताहे और गौरवर्ण होताहे और भारा होताहै और धर्ममें रत होताहे और सुगंधवस्तूयोंमें और स्नान और भूषणों में प्रीतिवाला होताहे ॥ ८६ ॥

अथपृथक्सप्तांशफलानि गृहेगृहेचंद्रविलग्नयुक्तैःसप्तांशकैराकृतिलक्षणानि योनिप्रसूतौयवनैःपुराणैः स्मृतानिपुंसांकथयामितानि । ८२ । तनुमुखकूर्चश्चंडोरक्तांताक्षःकलिक्षतार्थ्यश्च रणकर्मचौर्यनिरतःकृशःक्रियेपूर्वसप्तांशे ८३ पृथुभालगंडमुखोन्हस्वललाटःसुजत्रुकःशुभदक्पृथुपीनांशनतपर्वोद्वितियभागे कृशांशसंधिश्च । ८४ । दाक्षिण्यचौर्य्यविग्रहपापाढ्योविलेख्यशास्त्रवित्कृशः कामी कांतोटनःप्रवक्ताश्यामोमेषेतृतीयसप्तांशे । ८५ । पृथुनयनकपोलोदर पाणिर्गोरोगुरुश्चधर्मरतः ॥ माल्यस्नानविभूषणरतःक्रियेतूर्यसप्तांशेः ८६ । ताम्रद्युतिःप्रचंडो वृहद्भुजभ्रूशिरोललाटनसः अजपंचमसप्तांशेशूरस्ताम्रांतमध्वक्षः ॥ ८७ ॥ आयतमूर्तिर्गौरः कांतपृथुमधुविलोचनोधनवान् शुभवाग्वुद्धिर्ज्ञानी स्वधीतविद्योजषष्टसप्तांशे ॥ ८८ ॥

और जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो तावेकीन्याई काति वाला और प्रचंड और वडीभुजोंवालाऔर बडीभ्रुवोंवाला और वडाशिर और वडे मस्तक और वडी नासिकावाला और लालकोणवाले मधुवर्णके नेत्रोंवाला होताहे ॥ ८७ ॥ और जोछठेसप्तांशमे जन्मताहै सो विशालदेह और गौरवर्ण और सुंदरमोटेमधुवर्णके नेत्रोंवाला और धनी होताहे और श्रेष्टवाणी और वुद्धिवाला और ज्ञानी और वियाकोंपढलेणेवाला होताहे ॥ ८८

और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटी और लंबी औरकाली मूर्तिवाला होताहै औरलडाईका प्यारा और भिन्ननख और दंत और विरले शिरकेबाल तिसके होतेहै और कठोरवाणीवाला औरप्रगल्भ और चुगल होताहै ॥ ८९ ॥ इतिमेषस्थ ॥ और जोवृषके प्रथम सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटे मस्तकवाला और मोटे गंडस्थलोंवाला और बडीछातीवाला और बडे मोंढयोंवाला और बडे पट्टोंवाला और बडीयों भुजोवाला और कोमल देहवाला होताहै और सूक्ष्म केशोंवाला और टेढी दृष्टिवाला होताहै ॥ ९० ॥ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो स्निग्धकांतिवाला औरविशाल दृष्टिवाला औरमीठा बोलनेवाला और सुंदरनेत्रोंवाला सुंदरदेहवाला और कामी और विशेषकर्केज्ञानमें और कलामें रत होताहै ॥ ९१ ॥ और वृषके तीसरे सप्तांशमें-जोजन्मताहै सोचतुर और पीत गौर वर्ण और कोमल दृष्टिवाला और श्रेष्ठभागोंवाला और रति

पृथुदीर्घासितमूर्तिः कलिप्रियोभिन्ननखरदाश्चकेशाग्रः निष्ठुरवाक्प्रगल्भो पिशुनोजेसप्तमेभागे ८९ इतिमेषः पृथुभालगंडवक्ष स्कंधकपोलोरुबाहुकःश्यामः अतिसूक्ष्मकचोव्यस्ते क्षणोवृषेप्रथमसप्तांशे ९० स्निग्धद्युतिरायतदृङ्मधुरवचनश्चारुलोचनःसुतनुः कामीविज्ञानकला निरतोवृषेद्वितीयसप्तांशे ९१ प्राज्ञश्चपीतगौरो मृगदृक्सुभगोरतिप्रियोदाता मृदुतनुकचोवचश्वी वृषत्रितीयेचसप्तांशे ॥ ९२ ॥ उच्चमुखगंडघोनो धनभाक्स्फुटदृक्पृथुवचोगौरः रक्तनखो भिन्नकटिःखरोवृषभस्यतूर्यसप्तांशे ॥ ९३ ॥ ताम्राभ्रपिंगलाक्षः सुकुमारस्तीक्ष्णवाक्परस्वेच्छुः मृतदारोरोगीगविसप्तांशेपंचमेभवति ९४ पृथुकर्णायततनु रसितदृगुन्नतसक्रियादक्षः अभिमानीगविषष्ठे सप्तांशेह्यापदार्त्तश्च ॥ ९५

काप्यारा और दाता और कोमल देह और छोटेकोमल केशोंवाला और अपनीवाणीकों प्रमाणकरणेवा ला होताहै ॥ ९२ ॥ और वृषके चतुर्थ सप्तांशमें ऊंचामुख और गंडस्थल और नासिकावाला होताहै और धनी और स्पष्टदृष्टिवाला और मोटी बोलीवाला और गौर वर्ण-और लालनख और टेढेलकवालाहोताहै और कठोरदेहवालाहोताहै ॥ ९३ ॥ और जोपंचम सप्तांशमें जन्मताहे सो तावेकीन्याई लालरंगका जोबादर तिसकीन्याई पिंगलेनेत्रोंवाला-और सुकुमारमूर्ति और तीक्ष्णवाणीवाला और दूसरेकेधनकी इछावाला होताहै और स्त्रीतिसकी मरजातीहै और रोगी होताहै ॥ ९४ ॥ और वृषकेछठे सप्तांशमे जो जन्मताहै सोतिसकेकर्णपर्यंत सुंदरविशालनेत्र और कार्य करणेमें चतुरहोताहै औरअभिमानी और आपदाकरपीडित होताहै ॥ ९५ ॥

ओरजोसातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो भ्रांतकीन्याई मुख ओर श्वेतकोणेवालेनेत्र ओर कोमलदेह ओर कृशदेहवाला ओर शूरवीर ओर लोभी ओर क्रोधी ओर वक्ता ओर चंचल ओर थोडेपराक्रमवाला ओर भ्रमणेवाला ओर शठहोताहै ॥ ९६ ॥ इतिवृषस्य ॥ ओर जो मिथुनके पूर्वसप्तांशमेंजन्मताहै सो ज्ञानी ओर कवि ओर अपना किहा करणेवाला ओर कोमल सुंदर देहवाला ओर पवित्र ओर विलासी ओर प्रीतिमेंओर गीतमें रत ओर प्रसिद्धहोताहै ॥ ९७ ॥ ओर दूसरे सप्तांशमें धनी ओर मोटा ओर गोर वर्णके देहवाला होताहै ओर मोटे नेत्रोंवाला ओर चतुर होताहै ओर आलसमेंप्रीतिवाला ओर कोमल होताहै ओर गायन विद्यामें ओर धर्ममें रतहोताहै ॥ ९८ ओर तीसरे सप्तमांशे वडेलालनेत्रोंवाला ओर विशाल मुखवाला ओर वडी ठोडी वाला ओर उदार कर्मोंके करणेवाला ओर शूरवीर ओर हरणेवाला ओर वक्ता ओर हास्ययुक्त होताहै ॥ ९९ ॥

गोंत्यांशेभ्रांतमुखः सितांतदृक्श्यामकृशतनुःशूरः ॥ लुब्धःक्रोधी वक्ता चलोल्पसत्वोटनश्चशठः ॥ ९६ ॥ इतिवृषः ॥ ज्ञानीकविर्वचस्वी श्यामःकांत.शुचिर्विलासीच रतिगीतरतःस्यातो मिथुनादिमसप्तमांशेस्यात् ९७ धनवान्पृथुगौरतनुः पृथुदृक्प्राज्ञःप्रियालसश्चमृदुः संगीतधर्मनिरतो द्वितीयसप्तांशकेमिथुने ॥ ९८ ॥ पृथुदृक्ताम्रविदारित मुखोमहाहनुरुदारकर्मा च शूरोहर्त्तावक्ता प्रहसोमिथुनतृतीयसप्तांशे ९९ ॥ आयततनुःसुदृक् श्यामःपण्येप्रयोगमार्गपटुः शूरःसुभगःसम्मितवाग्मिथुनेचतुर्थसप्तांशे १०० रक्तनखाधरनेत्रश्चंडोवक्ताविभक्तभुजः रतिचौर्यकुटलकृत्पंचमसप्तांशकेमिथुने ॥ १०१ ॥ गुर्वायतगौरतनुःस्वक्षनसःशास्त्रकाव्यधर्मरतः मधुरःसुधीर्विशिष्टः षष्टेसप्तांशकेमिथुने ॥ १०२ ॥ स्त्रीशस्यकथाद्यूताल्पसत्वरोगाध्वभाक्लोमिथुने युतसस्निग्धसमासितदीर्घांगोंत्यसप्तांशे १०३ इतिमिथुनः

ओर जो चतुर्थ सप्तांश में जन्मताहै सो विस्तृत देहवाला ओर सुंदर दृष्टिवाला ओर कोमल रूप ओर व्यापार मार्गमेंचतुर ओर शूरवीर ओर श्रेष्ट भार्गोंवाला ओर थोडाबोलनेवाला होताहै ॥ १०० ॥ ओर पंचम सप्तांश में लालनख ओरलालओठ ओर लालनेत्रोंवाला ओर प्रचंड ओर वक्ता ओर शिथल भुजोंवाला होताहै ओर रति ओर चोरी ओर कुटिलताके करणे वाला होताहै ॥ १०१ ॥ ओर जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे विशाल नेत्रोंवाला ओर गौरवर्णवाला ओर सुंदर नासिका वाला ओर शास्त्रोंमें ओर काव्योंमें ओर धर्ममें रत होताहै ओर मीठी बोलीवाला ओर श्रेष्ट बुद्धिवाला होताहै ॥ १०२ ॥ ओर जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो श्रेष्ट स्त्रीकथा ओर जूएमें रत ओर थोडे पराक्रमवाला ओर रोगयुक्त ओर मार्गमें भ्रमणेवाला ओर स्निग्धवर्ण ओर श्यामरंग ओर लंबेअंगों वालाहोताहै ॥ १०३ ॥ इतिमिथुनस्य

॥ और कर्कके प्रथम सप्तांशमें जन्मेतोबहुविस्तृत केश और पट और छाती वाला और लंबेदेह वाला और वर्तुल देहवाला और पंडित और बडिवस्तिवाला विशाल नेत्रोंवाला और लंबीयों भुजोंवाला होताहे ॥ १०४ ॥ और जोदूसरे सप्तांशमें जन्मे तो मोटेऊोष्ट और गल्हांऔर कंठवाला और शूरवीर और तांबेकी न्याईलालकांतिवाला और कृश और उन्नत और प्रफुल्लत कमलकीन्यांई मुख और पिंगले नेत्रोंवाला होताहे. ॥ १०५ ॥ और तीसरे सप्तांशमें विद्वान् और सूक्ष्म देहवाला और विशाल दृष्टिवाला और संगीतार्थके जानने वाला और कविःऔर चतुर और कोमल देहवाला और सुंदर होताहे- ॥ १०६ ॥ और जो चतुर्थसप्तांशमेंजन्मताहे सो मोटे नेत्रोंवाला और कोमल और सूक्ष्मकेशोंवा

उपचि तत्कचोरुवक्षाःश्यामःप्रांशुःसुवृत्तधीरश्च वस्त्यायतदृक्कार्किणि दीर्घभुजःप्रथमसप्तांशे ॥ १०४॥ स्थूलोष्ठगंडकंठः शूरस्ताम्रद्युतिःकृशः प्रांशुः ॥ प्रहसोजास्यःपिंगाक्षः कुलीरराशेर्द्वितीयसप्तांशे १०५ विद्वांस्तनु रायतदृक्संगीतार्थविदःकविश्चतुरः कार्किणिमृदुस्तृतीयेसप्तांशेभवतिसुकुमारः १०६ पृथुदृग्मृदुसूक्ष्मकचःस्वतोलसःसुघोणश्च ॥ गीतज्ञोलंबभुजः कार्किणिसप्तांशकेचतुर्थेच १०७ उन्नंडघोणस्ताम्रःकृशतनुपिंगदृक्शूरः ॥ अन्यस्त्रीछुःकार्किणी पंचमसप्तांशकेलग्नात् १०८ दीर्घास्याक्षिनसःपृथुकर्णोमान्यश्चबंधुभिर्गौरः ॥ सुतनुर्मतिवचनकर्मा कार्किणिसप्तांशकेषष्ठे १०९ खरवाक्केशक्लेशोदीर्घकृशासिततनुःखलस्त्वटनः ॥ तीव्रदृगुन्नतनसःकार्किणिसप्तांशकेप्रांत्ये ११० इतिकर्कटः

ला और आलसी और सुंदर नासिका वाला और गीतके जाननेवाला और लंबीयों भुजो वाला होताहे ॥ १०७ ॥ और जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहे सो ऊचे गंडस्थल और ऊची नासिका वाला और लालवर्ण और कृशदेहवाला और पिंगल दृष्टिवाला और शूरवीर और दूसरेकी स्त्री की इछावाला होताहे ॥ १०८ ॥ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहे सो लंबेमुख और लंबे नेत्रोंवाला और लंबी नासिका वाला होताहे और बडेकर्णोंवाला और बंधुयोंकेमान्य औरगौर वर्ण और सुंदरदेहवाला औरबुद्धिसेंकहने वाला बुद्धिसें कर्मकरणेवालाहोताहे १०९ और कर्कके सप्तांशमें जन्मेतो कठोरवाणी और केशोंमें क्लेशवाला और लंबा और कृश और कालेदेहवाला होताहे और दुष्ट और भ्रमणेवाला और तीक्ष्ण दृष्टिवाला और ऊचीनासिका वाला होताहे ॥ ११० इतिकर्कटस्य

और जो सिंहके पूर्व सप्तांशमें जन्मे तो लालदेह और लाल नेत्रों वाला-होताहै और लंबा और प्रचंड और चतुर और बडीनासिकावाला और अस्थिसार और खर-रोमोंवाला होताहै ॥ १११ ॥ और जो सिंहके दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे तीक्ष्णनखों-वाला और लंबा और वक्ता और ढीठ और शास्त्र और शस्त्रोंके उपचार और नीतिके जानने वाला-होताहै ॥ ११२ ॥ और जो सिंहके तीसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे पुष्टदेहवाला और विशाल देहवाला और वडे माथे वाला और वडे नेत्रों वाला और वडे शिरवाला और धनसचयकरणेवाला होताहै और धैर्य और पराक्रम और स्त्रीकर्के युक्तहोताहै ॥ ११३ ॥ और जो सिंहके चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो लडाई करणे वाला और खोटे स्वभाववाला और चंड और टेढी दृष्टिवाला और कवि-और सुखी और वडे उंचेदेहवाला और लालावर्ण वाला पुष्ट देहवाला और थोडे पराक्रमवाला होता

रक्तांगाक्षोदीर्घश्चंडः सुपटुःप्रवृद्ध घोणश्च सिंहादिमेस्थिसारःसप्तांशेतु गखररोमः ॥ १११ ॥ अभ्युन्नत तीक्ष्णनखोदीर्घोवक्ताद्वितीयसप्तांशे धृष्टोर्थशास्त्रास्त्रोपचारनयविद्भवेत्सिंहे ॥ ११२ ॥पृथुपीनायतदेहःपृथुभालाक्षशिरोर्थसंचयकः धृतिसत्त्वदारसंहितोहरेस्तृतीयेचसप्तांशे ॥ ११३ ॥ कलिदु.शीलश्चंडः केकरदृक्कविःसुखीनात्युच्चः रक्तघनतनुरसत्त्वःसिंहस्यतुरीयसप्तांशे ॥ ११४ ॥ सोत्साहवाक्स्थिरयशो मानप्रतापयुक्सुदृशः हरिपंचमसप्तांशे गौरोनाप्टथुशिरालश्च ॥ ११५ ॥ शिशिरायतवृत्ततनुर्भ्रांत्यल्पदृगोनरोत्यटनः हरिषष्ठेसप्तांशेन्यासेविहितः सुदीर्घघोणश्च ॥ ११६ ॥ मृदुरुन्नतगौरांगःप्राज्ञोल्पनसोल्पवाक्सुवेषश्च सिंहांत्येसप्तांशेगीतस्त्रीरतःकांतः ॥ ११७ ॥ इतिसिंहः॥ कन्यादिमसप्तांशे वाग्मी

प्राज्ञःसुधीर्विनीतश्च आयतदृक्तनुश्यामो निभृतःसमवंशघोणःस्यात् ॥ ११८

है ॥ ११४ ॥ और जो पंचम सप्तांश में जन्मता है सो उत्साहवाली वाणी वाला और स्थिरयशवाला और मान प्रताप कर्के युक्त और सुंदर दृष्टि वाला और वडे शिरवाला होताहै ॥ ११५ ॥ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो शीतल और विशाल गोल देहवाला और भ्रमकोन्याईं छोटेनेत्रों-वाला और भ्रमणे वाला और न्यासकर्ममें श्रेष्ठ और वडी नासिकावाला होताहै ॥ ११६ ॥ और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो कोमल और ऊंचे गौरवर्ण के अगों वाला और चतुर और छोटीनासिकावाला और श्रेष्ट वाणीवाला और सुंदर वेशवाला और गीत में और-स्त्रीमेंरत और सुदर होताहै ॥ ११७ ॥ इतिसिंहस्य ॥ और जो कन्याके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो-वक्ता और चतुर और श्रेष्ट वुद्धिवाला और नम्रहोताहै और विशाल दृष्टि वाला और सुदर कोमल-देहवाला परिपूर्ण और समवश और समान नासिकावाला होताहै ॥ ११८ ॥

और जो दूसरे सप्ताशमें जन्मता है सो पुष्ट पट्ट और वश और भुजा और उदर वाला और अपने वचनकोंप्रमाणकर ऐवाला और कोमल और परि पूर्ण मुख और सुकुमार और रति में आसक्त होताहै ११९ ॥ और जो ती सरे सप्ताशमें जन्मताहै सो अभिमान वाले कुटुवमें जन्मता है और चोरीकरताहै लाल देह और चचलनेत्रोंवाला होताहै और छोटे रोम और मुख और अल्प चित्तवाला होताहै ॥ १२० ॥ और जो चतुर्थसप्ताशमें जन्मता है सो शिल्प और वेद धर्मशास्त्रादि कर्मोंके करणे वाला और वडी ठोडी और वडे मोंडे और वडे शिर वाला और चतुर होताहै और दान करणेकी रुचि वाला और प्रकट धनवाला और स्फुटवक्ता होताहै १२१ और जो पचम सप्ताशमें जन्म ताहै सो आलसी और भययुक्त वाणी वाला और क्रोधी और पुष्टठोडी वाला और लंवे मुखवाला और नाडीयों वाले देह वाला और हरिणकी न्याईं नेत्रों वाला होताहै १२२ और जो छठे सप्ताशमे जन्मता

पीनोरुवंशभुजोदरोवचस्वीमृदुस्तुपूर्णमुखः सुकुमारोरतिसक्तोंगनाद्वितीयेच सप्तांशे ॥ ११९ ॥ अभिमानकुटुंवस्तेयरतोरक्तगात्रदृक्चपलः तनुरोमोच्चकमुखोल्पकचित्तःकन्यातृतीयसप्तांशे ॥ १२० ॥ शिल्पश्रुतिमुखकर्मामहाहनुस्कंधदृक्‌शिरःप्राज्ञः दानरुचिस्फुटधनवा कन्यासप्तांशकेतूर्य्ये १२१ कन्या पंचमसप्तांशेनरोलसोभीरुवाक्क्रोधी पीनहनुर्दीर्घमुखःस्नायुतनुर्मृगदृक् १२२ पूर्णैश्वर्यसमेतोदृढश्रुतिवचनेरतोधर्मी कन्याषष्ठेसप्तांशेकृष्णाक्षोवक्रमायतभ्रूः १२३ तनुपिंगकचोमध्वायतदृक्स्थूलोष्टगंडगलदंष्ट्रः उग्रःक्रुद्धस्ताम्ररुचिः कन्यायाःसप्तमांशेंत्ये ॥ १२४ इतिकन्या ॥ पद्मास्यउच्चघोण स्तरुणांकुरसन्निभःसुदृक्सुतनुः वक्ताधनार्जनज्ञ स्तुलादिमेसप्तांशेसुधर्निभृत् १२५ वृत्तास्यःकृषिकर्माध्वनिरतोन्नतनसोष्टः हिंस्रोरक्तश्यामस्तुलाद्वितीयेचसप्तांशे १२६

है सो पूर्ण ऐश्वर्य कर्के युक्त होताहै और दृढता कर्के वेद वचनोंमें रत और धर्मी होताहै और श्याम नेत्रोंवाला और विशाल मुख और विशाल टेढोंयों भुवों वाला होताहै १२३ और जो सप्तम नवाशमें जन्मताहै सो छोटे छोटे पिंगले केशों वाला और मधुवर्णके विशाल नेत्रोंवाला और मोटे ओष्ट और गंडस्थल और गल और दाढों वाला और उग्र और क्रोधी और तावेकीन्याईं प्रभा वाला होताहै १२४ ॥ इतिकन्यायाः ॥ और जो तुलाके पूर्वसप्ताशमें जन्माताहै सो कमलकीन्याईं मुख वाला और ऊंची नासिका वाला और नवीन अंकुरकीन्याईं कोमल और दृढ सुदर देह वाला और वक्ता और धन उत्पन्न कर जानने वाला और मनुष्योंके पालने वाला होताहै १२५ और जो दूसरे सप्ताशमें जन्मताहै सो गोल मुखवाला और खेतीके करणेवाला और मार्गमें रत और ऊंची नासिका वाला और ऊचेहोठों वाला और हिंसाकरणे वाला और रक्त श्याम वर्णवाला होताहै १२६

और तीसरे सप्तांशमें धर्मके जानने वाला और धन, उत्पन्न करणे वाला और शस्त्र और अ-स्त्रोंकी विद्या जानने वाला और ऊंची नासिका वाला और वडे केशों वाला और मोटे मुखवाला और मोटे नेत्र और मोटे देह वाला होताहै १२७ और जोचतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो काले रंग-वाला और कठोर स्वर वाला और कठोर अंगों वाला और लंवे मुख वाला और चपल और उग्र कर्मा और उलटे नखों वाला होताहै १२८ और जो पचम सप्तांशमें जन्मताहै सो श्रेष्ट भ्रुवों वा. ला और श्रेष्ट मुख वाला और सुंदर नेत्रों वाला होताहै और कोमल सुंदर देह वाला होताहै और कला क्रियामें चतुर होताहै और लंवे मुख वाला और श्रेष्ट जनों कर्के सेव्या होताहै १२९ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो नतपक्ष और काले नेत्रों वाला और सममूर्ति और स्त्रीकेवल-वाला और श्रेष्ट वाणी वाला और चतुर होताहै और सुंदर मुख और सुंदर वोलने वाला और श्रेष्ट

धर्मार्थशस्त्रास्त्रवि तुंगनसःशिरालश्चमहान् पृथुवदननयनमूर्ति स्तुलातृ तीयेचसप्तांशे १२७ कृष्णःखरस्वरांगो दीर्घमुखःपीनकठवक्षोष्टः जिह्मश्चली ग्रकर्मा वक्रनखस्तुलाचतुर्थसप्तांशे १२८ शुभ्रूाननाक्षिनेत्रः श्यामःसुत नुःकलाक्रियानुपटुः दीर्घमुखःसत्सेव्यःसप्तांशे पंचमेतुलिनि १२९ नत पक्षासितनेत्रःसममूर्तिःस्त्रीवलःसुवाक्चतुरः तुलषष्टेसप्तांशे भवतिनरःसुमुख घोषकोष्टश्च १३० स्थूलोष्टास्थिरदो मधुपिंगकेशःस्वल्पदृक्शूरः वालाब्ज कोमलांगः सप्तमसप्तांशकेतुलिनि १३१ ॥ इतितुला ॥ घातानृतभेदाहवरतो न्नतश्चपिंगरक्ताक्षः अलिपूर्वसप्तमांशे खरापिंगकचःप्रचलदेहः १३२ पृथुदृक्स्तनु रंध्रिःसुनसःकौर्पेद्वितीयसप्तांशे धृतपीतारुणकांतिःशास्त्रविधिज्ञःकलाज्ञश्च १३३

ओष्टों वाला होताहै १३० और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटे ओष्टों वाला और मोटियों हड्डीयों वाला और मोटे दंतो वाला और मधु पिंगलेकेशों वाला और छोटे नेत्रों वाला और शूरवीर और छोटे कमलकी न्याई कोमल अंगो वाला होताहै ॥ १३१ ॥ इतितुलायाः ॥ और जो वृश्चिक के पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो घातमें और झूठ वोलनेमें और भेद करणेमें और युद्धमें रत होताहै और ऊंचे देहवाला और पिंग रक्त नेत्रों वाला और कठोर पिंगले केशों वाला और चलदेह वाला होताहै ॥ १३२ ॥ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्म-ताहै सो मोटे नेत्रोंवाला और सूक्ष्म पैरों वाला होताहै और सुंदर नासिका वाला और पीत रक्त क्रांति वाला और शास्त्र विधिकेजाननेवाला और कलाके जानने वाला होताहै ॥ १३३ ॥

और जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहे सो वात करणेमें प्रथम तिसकी वाणी रोकी जातीहे और वा-
णी चातुरीकी वोलताहे और वृद्ध देहवाला होताहे और कालारंग होताहे और कठिन अंगों वाला
होताहे वडयोंकी लज्जा नाहीं करणे वाला होताहे ॥ १३४ ॥ और जो चतुर्थ सप्तांशमें जन्म
ताहे सो वडे गडस्थलों वाला और वडी नासिका वाला और वडे पेटवाला और वक्रोक्तिवोलने
वाला और उद्धत वाणी वाला होताहे और मानी होताहे और अपने हितकी वात कहने वाला
होताहे और वडीयों भुजो वाला होताहे ॥ १३५ ॥ और जो पाचमें सप्तांशमें जन्मताहे सो
पतले पेटवाला और वडो छातीवाला और वक्ता और जूएका प्यारा और सुंदर मुखवाला और श्रेष्ट
भुजोंवाला और सेवा करणेवाला और थोडा चतुर होताहे ॥ १३६ ॥ और छठे सप्तांशमें कोम-
ल कमल दलकी न्याईं नेत्रों वाला और बुद्धिमान् और सूक्ष्माग्र ऊची नासिका वाला और थोडा

पटुवाक्रिरुद्धपूर्वार्द्ध-वृद्धकायोसिताधिकृतमूर्तिः कठिनोघृणोगुरूणा मलिनित्
तीयसप्तांशे ॥ १३४ ॥ पृथुगंडघोणजठरो वक्रवचःकोपतुर्यसप्तांशे उद्ध
तवचनोमानिचात्महितभाषिमहावाहुः ॥ १३५ ॥ कृशजठरपृथुवक्षा
वक्ताद्यूतप्रियःसुमुखवाहुः सेवायुक्तोल्पपटुः सप्तांशेपंचमेष्टमभे ॥ १३६ ॥
वालोत्पलदृग्मतिमां स्तनुतुंगनसोल्पवाग्मृदुर्धर्मी - अलिषष्ठेसप्तांशेसकोमलो
दारसत्वतनुः ॥ ३६७ ॥ समरेछुःप्रांशुनसः पृथुशीर्षस्फिक्पिंगरोमाक्षः
अलिसप्तांशेंत्येचरूयातःस्थिरधीरसत्वश्च ॥ १३८ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ स्थू
लोष्ठगंडनसा पृथूदरोरशश्चसत्ववान्मधुदृक् तुंगशिरःस्थूलपादश्चापादिमस
प्तमांशेच ॥ १३९ ॥ मृगदृक्सुवृत्तजंघो न्यार्थहृद्विशेषविषमज्ञः

बोलने वाला और कोमल देह वाला और धर्मी और कोमलता करके युक्त वडाउदार और वडे परा
क्रम वाला होताहे ॥ १३७ ॥ और जो सातमें सप्तांशमे जन्मताहे सो युद्धकी इछा वाला और ऊंची
नासिका वाला और वडे शिर वाला और ऊचेकटिमासपिंडोंवाला और पिंगले रोमोंवाला और
पिंगले नेत्रों वाला और प्रसिद्ध और स्थिर बुद्धि वाला और अल्प अंतःकरण वाला होताहे ॥ १३८
॥ इतिवृश्चिकस्य ॥ और जो धनके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहे सो मोटे ओठों और मोटे गंडस्थल और
मोटी नासिका और वडा उदर और वडी छाती वाला होताहे और पराक्रम वाला और मधुकीन्या
ईं नेत्रो वाला होताहे और ऊचे शिरवाला और मोटे पैरों वाला होताहे ॥ १३९ ॥ और दूसरे
सप्ताशमे हरिणकी न्याई नेत्रों वाला और गोल जघो वाला और दूसरेके धनकों हरणे वाला और वि

शेषके उौर विषमके जानने वाला उौर लंबेहाथों वाला उौर मोटे कान उौर मोटी नासिका वाला होताहे ॥ १४० ॥ उौर तीसरे सप्तांशमें क्रोधी श्रोर वक्ता श्रोर त्यागी श्रौर कृश सारकी न्याईं देहवाला श्रोर स्त्रीयोंमें लडाईं करणे वाला श्रोर ईर्षा वाला श्रोर लाल देह श्रोर लाल नेत्रों वाला श्रोर वामना श्रोर वन्हिकी न्याईं शब्दवाला होताहे ॥ १४१ ॥ उौर जो धनके चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहे सो ऊंची सुंदर नासिका वाला उौर ऊंचे मोंढयो वाला उौर मोटे देह वाला उौर वडी ठोडी वाला श्रौर हरिणकी न्याईं नेत्रों वाला उौर वानरकी न्याईं ऊंचे शिरवाला उौर गीतका प्यारा होताहे ॥ १४२ ॥ श्रोर जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो कठोर देह वाला श्रोर विशाल मूर्ति श्रोर सुंदर नासिका वाला श्रोर विशाल दृष्टिवाला श्रोर इंद्रियोंके रोकने वाला श्रोर काव्य शास्त्रादि कलाकों जानने वाला होताहे ॥ १४३ ॥ श्रोर जो छठे सप्तांशमें जन्मताहे सो तपस्वी होताहे श्रोर कोमल वाणी वाला श्रोर श्रेष्ट कर्म क

दीर्घकरःपृथुश्रुतिघोणश्चापद्वितीयसप्तांशे १४० क्रोधीवक्तात्यागी कृशसार वपुःप्रियासुकलिरीर्ष्यः ताम्रांगाक्षोऽन्हस्वोवन्हिरवोधनुपितृतीयसप्तांशे १४१ उन्नतसुनसस्कधःस्थूलतनुहनूर्मृगेक्षणःपुरुषः कपितुंगशिरोगीतप्रियश्चतुर्थेध नुपिसप्तांशे १४२ तनुकठनायतमूर्तिःसुनसोदारितदृक्प्रसमश्च स्थितिकाव्यादिकलाज्ञःसप्तांशेपंचमेधनुषि १४३ हयपष्ठेसप्तांशे तपोभिरामोमृदुवचःसुक र्माच पृथुमुखनयनोगुणधनो मृणालगौरोऽपालितशीर्षः ॥ १४४ ॥ दीर्घोष्ठना सिकाक्षः सुसत्यवाग्यातितनुर्धनुपिशूरः सप्तांशेंत्येत्यागीमहाललाटश्रवण दंतः ॥ १४५ ॥ इतिधनुः ॥ तनु वंशघोणोजिह्मः दीर्घास्यः कीर्तिभाक्श्यामः खरकृष्णवर्णवासो भीरुर्मकरादिसप्तांशे ॥ १४६ ॥ गौरोपचितोरुतनुःसुमु खोधनीसमदचेष्टः दक्षश्चलोयुयुत्सु द्वितीयसप्तांशकेमकरे ॥ १४७ ॥

तांहे श्रोर मोटे मुख श्रोर मोटे नेत्रों वाला होताहे श्रोर गुणोंकाधनी होताहे श्रोर भयेकी न्याईं गौर वर्ण वाला श्रोर काले केशों वाला होताहे ॥ १४४ ॥ श्रोर जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहे सो लंबे उोष्ट श्रोर लंबी नासिका श्रोर लंबे नेत्रों वाला होताहे श्रोर सत्यवाणी वाला श्रोर शूरवीर श्रोर त्यागी श्रोर वडे माथे वाला श्रोर वडे कर्णों वाला श्रोर वडे दांतो वाला होताहे १४५ ॥ इतिधनुः ॥ श्रोर जो मकरके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहे सो छोटे वंशवाला श्रोर छोटी नासिका वाला श्रोर जिह्म श्रोर लंबे मुख वाला श्रोर यश वाला श्रोर नवीन श्रवस्था वाला श्रोर कठोर श्रोर काले देह वाला श्रोर मलीन वस्त्रो वाला श्रोर डरणे वाला होताहे ॥ १४६ ॥ श्रोर मकर के दूसरे सप्तांशमें जन्मताहे सो गौर वर्ण श्रोर सुंदर वडे देह वाला श्रोर सुंदर मुख वाला श्रोर धनी श्रोर मस्ती वाला होताहे श्रोर चतुर श्रोर चंचल श्रोर युद्धकी इछा वाला होताहे ॥ १४७ ॥

श्रोर जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो लाल श्रंग श्रोर लाल नेत्रों वाला श्रोर प्रचंड श्रोर कृश होताहै श्रोर परस्त्री कर्के श्रोर दूसरेके धनकर्के मस्तीको प्राप्त होताहै श्रोर खोटे स्वभाव वाला श्रोर सुंदर होताहै ॥ १४८ ॥ श्रोर चतुर्थ सप्तांशमें जन्मेतो हासी कर्के युक्त कोमल वचन कहने वाला श्रोर बुद्धिमान् श्रोर वडे शिर श्रोर वडे गंडस्थल वाला श्रोर वडी नासिका वाला श्रोर वडे नेत्रों वाला श्रोर स्त्रीकी इछा वाला श्रोर कमलकी न्यांई कोमल पेट वाला श्रोर कोमल श्रंगों वाला होताहै ॥ १४९ ॥ श्रोर जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो गंधर्व विद्यामें श्रोर शिल्प विद्यामें श्रोर युद्धमें उौर सेवामेंप्रीति वाला होताहै श्रोर विशेषकर्के मानवाला होताहै श्रोर लंबे श्रोर काले देहवाला श्रोर वडे गंडस्थलों वाला होताहै ॥ १५० ॥ श्रोर जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो स्वर्ण की न्यांई प्रभा वाला श्रोर विशाल देहवाला श्रोर श्रेष्ठ जनोंका प्यारा

रक्तांगाक्षश्चंडःकृशःपरस्त्रीधनःसमदचेष्टः विषमस्वभावःकांतस्तृतीयसप्तांशकेम करे,१४८ स्मितमृदुभाषीमतिमान् वृहत्शिरोगंडघोणनेत्रश्च मृगतूर्यसप्तमांशे स्त्रीच्छुःपद्मोदरश्यामः॥१४९ ॥ संगीतशिल्पविग्रहसेवानिरतोविशेषतोमान्यः मृगपंचमसप्तांशे दीर्घासितमूर्त्तिरुरुगंडः ॥ १५० ॥ हेमप्रभोविशालःश्रेष्ठजनानांप्रियःकुवलयाक्षः मृगषष्ठेसप्तांशेतपःश्रुतिज्ञानवांश्चमृदुः ॥ १५१ ॥ वृद्धोरुतनुश्चंडो ऽनपत्योरक्तचक्षुरभिमानी पृथुकंठास्यनसाभ्रु रटनोंत्यिमकर सप्तांशे १५२ इतिमकरः निःकृतिरबलोसत्वःखरकेकरदृग्वृहच्छिरालः दीर्घश्चादिम सप्तांशेघटस्य विनतघोणः १५३ पक्कामलकनिभःपृथुरल्पकथोदारितास्यनासाक्षः कुंभद्वितीयसप्तांशेपिपासुः शूरोमनस्वीच १५४

श्रोर कमल दलकी न्यांई नेत्रों वाला श्रोर वेदके जानने वाला श्रोर कोमल होताहै १५१ उौर जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहैसो वृद्ध उौर वडेदेहवाला उौर प्रचंड उौर संतान कर्के रहित उौर लाल नेत्रोंवाला उौरअभिमानीहोताहै उौर वडे गलवाला उौर वडे मुखवाला उौर वडी नासिका वाला उौर वडियोंभ्रुवों वाला उौर भ्रमणे वाला होताहै १५२ इतिमकरस्य॥ उौर जो कुंभके पूर्व सप्तांशमें जन्मेतो नपुंसक उौर वलहीन उौर तीक्ष्ण टेढी दृष्टि वाला उौर वडे शिरवाला उौर लंबा उौर नीमी नासिका वाला होताहै १५३ उौर जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै से पक्के हुवे श्रावलेकी प्रभा वाला होताहै उौर मोटा उौर थोडा बोलने वाला उौर वडे मुखवाला उौर वडी नासिका वाला श्रोर वडे नेत्रोंवाला होताहै श्रोर तृषा वाला श्रोर शूरवीर श्रोर मनस्वी होताहै १५४

श्रोर जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो बिल्लीकी न्याईं नेत्रोंवाला श्रोर चलस्वभाव और तांवेकी न्याईं देह वाला और थोडीबुद्धिवाला और भेद और युद्ध श्रोर चोरी श्रोर झूठके करणे वाला श्रोर धूडे कपिले केशों वाला होताहै १५५ और जो चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो कोमल थोडा बोलनेवाला और तृषाकीइच्छा वाला और ऊची नासिका वाला श्रोर रक्त गौर वर्ण वाला श्रोर हरिणकीन्याईं नेत्रोंवाला श्रोर नील वस्त्र धारणेवाला श्रोर चतुर श्रोर नीति वाला होताहै १५६ श्रोर कुंभके पंचम सप्तांशमें जन्मे तो रूखे केशों वाला और व्यस्त अंगों वाला और गौर श्याम वर्ण श्रोर सुवर्णकी प्रभा वाला होताहै श्रोर श्रेष्ट वाणी वाला श्रोर विदेशकी इच्छा वाला श्रोर शिल्पकी रुचिवाला और पानकी रुचिवाला होताहै १५७ और छटे सप्तांशमें जन्मे तो श्वेत गौर वर्ण और मोटा देह श्रोर सुंदर मुख श्रोर नेत्र श्रोर नीतिके जानने वाला होताहै श्रोर वेद व्रत

मार्जारदृक्चलमन स्ताम्रांगःस्वल्पधीर्घटतृतीये भेदाहवचौर्य्यानृतकृत्सप्तांशेस
धूम्रकपिलकचः १५५ मृद्वल्पवाक्पिपासुस्तुंगनसोरक्तगौरएणाक्षः नीलां
बरश्चतुर्थेघटसप्तांशेचपटुर्विनीतः १५६ रूक्षकचोविततांगो गौरश्यामःसरु
क्मसुखवचनः घटपंचमसप्तांशे प्रवासरुचिः शिल्पपानरुचिः १५७ गौरो
च्छःपृथुगात्रसुमुखेक्षणोविनीतश्च घटषष्ठेसप्तांशेवेदव्रतदेवतादिकथः १५८ दी
र्घस्ताम्राक्षतनुः स्यातःसत्वाधिकपृथुनसोष्ठः उद्धतवाग्वपुष्मान्पिंगकेशोघ
टांत्यसप्तांशे १५९ इतिकुंभः स्वक्षःसुघोणदशनः कुवलयदलप्रभःसुमतिः
श्रुतिसत्वरतःस्वच्छो मीनादिमसप्तमेभागे. १६० चूतांकुरारुणतनु स्तनुरो
ममुखश्चकरकंजो युधिवैरिहाद्वितीये झषसप्तांशेसुदृढसत्वः १६१

वाला श्रोर देवता कों मानने वाला होताहै १५८ श्रोर जो सातमें सप्तांशमें जो जन्मताहै सो लंबा श्रोर तांवेकी न्यांई नेत्र श्रोर देह वाला श्रोर प्रसिद्ध श्रोर बडे पराक्रम वाला श्रोर मोटी नासिका श्रोर मोटे ओष्ठों वाला श्रोर उद्धत वोलने वाला श्रोर सुंदर देह वाला होताहै श्रोर पिंगले केशों वाला होताहै १५९ इतिकुंभस्य श्रोर मीनके पूर्व सप्तांशमें जन्मे तो सुंदर नेत्रों वाला श्रोर सुंदर नासिका वाला श्रोर सुंदर दांतों वाला श्रोर कमल दलकी न्यांई प्रभावाला श्रोर श्रेष्ट बुद्धि वाला होताहै श्रोर वेदके सारमें युक्त श्रोर निर्मल होताहै १६० श्रोर जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो श्राम्रके अंकुर की न्याईं लाल वर्ण वाला श्रोर छोटे रोमों वाला श्रोर छोटे मुख वाला श्रोर छोटे हाथों वाला श्रोर युद्धमें शत्रुयोंको मारणे वाला श्रोर दृढ पराक्रम वाला होताहै १६

और जो तीसरे सप्ताशमें जन्मताहै सो मोटे सुंदर मुखवाला और वृद्ध और व्यस्तअंगो वाला और गधर्वविद्याके जानने वाला और नीतिकेजाननेवाला और सुंदर भ्रुवों और सुंदर नासिका और सुंदरके शों वाला होताहै १६२ और जो चतुर्थ सप्ताशमें जन्मताहै सो मंत्री और अर्थके निश्चय वाला और पूर्णमुख वाला और सुंदर वाणीवाला और श्रेष्टबुद्धि वाला होताहै और पालाशपत्र की न्याई भिन्न भिन्न अंगों वाला होताहै १६३ और जो पंचम सप्ताशमें जन्मताहै सो गोर प्रभाकर्के लालवर्ण वाला और नील कमलकी न्याई नेत्रोंवाला होताहै और कोमल और पवित्र और चतुर होताहै और मासकर्के पुष्टमुखवाला और क्षमावाला होताहै १६४ और जो छठे सप्ताशमें जन्मता सो धर्मकर्के युक्त और चतुर और कमलदलकीन्याई वर्णवाला और गोलदेहवाला और मोटे नेत्र और मोटे मोंढे और मोटे दांतो वाला होताहै १६५ और जो सातमें सप्ताशमें जन्मताहै सो रूक्षअं

पृथुसुमुखाख्योवृद्धोपचितांगोगीतविद्विनीतश्च सुभ्रुनासाकेशो झपसप्तांशे तृतीयेच १६२ मंत्रीसुनिश्चितार्थःपूर्णास्योवल्गुवाक्सुबुद्धिश्च झषतूर्ये सप्तांशेपलाशदलवद्विभक्तांगः १६३ गौरप्रभारुणवर्णो नीलोत्पलदृङ्मृदुःशुचिर्दक्षः मांसलवक्त्रतनु र्क्षपपंचमसप्तांशकेक्षांतः १६४ धर्मयुग्दक्षोवारिजदलवर्णनिभोविवृत्तदेहः पृथुसुदृगंसदशनोमीनर्क्षेषष्ठसप्तांशे १६५ रूक्षांगोमलिनरूपःभग्ननसोविविक्तदृष्टिश्च जिह्मोनशुद्धवेशो झपराशौचांत्यसप्तांशे ॥ १६६ ॥ इतिमीनः ॥ तथाचयवनः ॥ शूरःप्रचंडःस्थिरसभ्यकर्मा सप्तांशकेर्कस्यवलीप्रसिद्धः, शुचिर्मुहुर्धर्मपरोविनीतोरतिप्रियःस्याच्छशिनः सुधीश्च ॥ १६७ ॥ दुर्मर्षणःसत्त्वबलाभिमानीस्यात्सप्तभागेक्षितिनंदनस्य कविःकथाशिल्पकलाभिरामो विद्वान्सुवाक्योनिपुणोबुधस्य १६८

गों वाला और मलिनरूप और नीमी नासिका वाला और पवित्र दृष्टिवाला और कपटी नहिं होताहै और शुद्धवेशवाला होताहै १६६ ॥ इतिमीनस्य ॥ और यवनाचार्य कहताहै जो मनुष्य सूर्य के सप्तांशमें जन्मताहै सो शूर वीर और बडे तेजवाला और स्थिर और सभाके कर्मकर्णवाला और प्रसिद्ध वली होताहै और जो मनुष्य चद्रमाके शप्तांशमें जन्मताहै सो पवित्रहोताहै और वार वार धर्मके करणे वालाहोताहै और नम्र और रतिका प्यारा होताहै १६७ और जो मनुष्य भौमके सप्ताशमें जन्मताहै सो वडे क्रोधवाला और पराक्रम के अभिमान वाला होताहै और जो मनुष्य बुधके सप्ताशमें जन्मताहै सो कविः और कथाके करणे वाला और शिल्पविद्याके जानने वाला और विद्यावान् और श्रेष्ट वाक्य कहने वाला और चतुर होताहै १६९

और जो वृहस्पति के सप्तांशमें जन्मताहै सो वडा चतुर और स्थिर पराक्रम वाला और स्थिर बुद्धि वाला और ज्ञानीयों में श्रेष्ठ होताहै और जो शुक्रके सप्तांशमें जन्मताहै सो कामी और विलासी और क्रीडा हास्यलीला के करणे वाला और गंधर्व विद्यामें प्रीति वाला होताहै १६९ और जो शनिके सप्तांशमें जन्मताहै सो मूर्ख और आलसी और कपटी और खोटे कर्म करणे वाला और पापमें रत होताहै और जो ग्रह अपने उच्च अपने मित्रके घर और अपने क्षेत्र मेंहोवे सो यथार्थ श्रेष्ठ फलको कर्त्ताहै और जो ग्रह नीच राशिमें और शत्रुक्षत्रेमें स्थितहोवे सो नेष्ट फल कर्त्ताहै ॥ १७० ॥ इतिसप्तांशफलानि ॥ अब नवांशका फल कहतेहैं नवांश चक्रमें पुत्रका विचार कहाहै नवांश लग्नसें पांचमें घरका स्वामीशुभग्रह होवे और शुभग्रहोंकर्के युक्त और दृष्टहोवे तव वहुतपुत्रहोतेहैं और पांचमे घरका स्वामी

विशारदःस्यात्स्थिरसत्ववुद्धिर्गुरोर्मतोज्ञानवतांवरिष्ठः कामीविलासीरतिहास्यलीलागंधर्वगीताभिरतिर्भृगोःस्यात् ॥ १६९ ॥ मूर्खोलसोजिह्ममतिर्विकर्मासौरस्यपापाभिरतोनरःस्यात् ॥ स्वक्षेत्रनीचोच्चविधानियानिज्ञेयानि चैषांतुफलानितानि ॥ १७० ॥ इतिसप्तांशफलानि ॥ अथनवांशफलानि पुत्रं नवांशभावेइति ॥ नवांशलग्नात्सुतपश्चसौम्यशुभाशुभैर्युक्तावि‌लोकितोवा ॥ शुभैःसुताःस्युःप्रचुरानरस्यक्रूरैर्नसंतानसुखंतदाभवेत् ॥ १७१ अथमेषादिनवांशफलम् चोरःक्रियांशेसुखभाक्वृषांशेपुण्णातिविद्यांमिथुनांशकेवा कर्कांशकेस्याद्धनवान्महांशःसिंहांशकेक्लीवसमोंगनांशे ॥ १७२ ॥ शूरस्तुलांशेभृतकोष्टमांशेदासोहयांशेहिमगौवलिष्ठे पापोमृगांशेपिशुनोग्रचेष्टः कुंभांशकेमीनलवेप्रधानः ॥ १७३ ॥ इतिलग्नगतनवांशफलम्

क्रूरहोवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त और दृष्टहोवे तव संतानका सुख नहिं होताहै १७१ अव जन्मलग्नगतमेषादिनवांशका फल कहतेहैं और जो मेषके नवांशमें जन्मताहै सो चोर होताहै और वृषके नवांशमें सुख भोगनें वाला होताहै और मिथुनके नवांशमें विद्यावान् होताहै और कर्कटकेनवांशमें धनवान् और सिंहकेनवांशमेंवडे मोंढयों वाला होताहै और कन्याके नवांशमें नपुंसककीन्याई होताहै १७२ और तुलके नवांशमें शूरवीर होताहै और वृश्चिककेनवांशमें भृत्यचाकरी करणेवालाहोताहै और धनके नवांशमें सेवाकरणेवाला होताहै और मकरके नवांशमें पापी होताहै और कुंभके नवांशमें चुगल और उग्ररूप होताहै और मीनके नवांशमें प्रधानपुरुष होताहै १७३

और जब चद्रमा बली होवे तब चंद्रराशि गत नवांशका फल होताहै इतिचंद्रराशिगत नवांशफलम् अब भिन्नभिन्न नवांशफल सारावलीमें कहतेहैं अब चंद्रराशिगत नवांशसें वर्ण और स्वभाव और स्वरूपऔर लक्षण कहतेहे जब पूर्ण बलीचद्रमाहोवेअथवा नवांशपति बलीहोवे तब वक्ष्यमाणफल यथार्थहोताहै १७४ और जोमेपके पूर्व नवांशमें चंद्रमास्थित होया जन्मताहै सो भिडूंकीन्याई मुखवाला और छोटीनासिका वाला और कृशदेह और थोडेरोमों वालाहोताहै और बडी टाटी स्वर वाला और नेत्रोंकों सकोच करणे वाला होताहै १७५ और जो दूस रे नवांशमें जन्मताहै सो लंबेमुख और लंबेगलवाला और कोमल अगोंवाला और पतलीयांजघों वाला और विशाल नेत्रों वाला और बादरकी न्याई वाणी वाला और नाहिंहै स्थूलमस्तक और कक्षमोंढयो के अंतरालकी अस्थिजिस की और बडेमोंढे वाला होताहै १७६ और जो तीसरे नवांशमे जन्मताहै सो बहुत रोमो करकेयुक्त छो टी भुजा और छोटे मोंढयों वाला और वाणीकर्के पंडित और रोमोंवालेमोंढेतिस्के होतेहै-

अथपृथक्नवांशफलंसारावल्यां ॥ अतोंशकोत्थेंदुगतेपुवक्ष्येवर्णस्वभावाकृतिल क्षणानि प्रधानवीर्यांशगतःशशीयत्तत्स्वामिनापिक्रमजंविधत्ते१७४ मेषजां शेजमुखस्तनुनासाग्रःकृशोल्परोमाच चंडध्वनिःशशांकेकृशसंकुचिताक्षपां गश्च ॥ १७५ दीर्घास्यगलःश्याम‍कृशांघ्रिःस्फुटेक्षणोंबुदवाक् नचपृथुलला टजत्रुणि गुर्वंसक्रियेंशेवृषभभागे १७६ रोमन्यस्ततनुजांसोवाक्पंडितःसरो मांसः कृशजंघजानुरालुप्तकुंतलोजेनमिथुनांशे १७७ भ्रांताननदृक्खंजो रक्तवपुर्ह्रस्वभालनासश्च ॥ अटनःखरांघ्रिरोमःकृशत्वचाढ्य.क्रियेचतुर्थांशे १७८ हयदृग्गजाकृतिशिरःपीनोवृत्तोग्रमूर्तिरल्पकचः खरवक्रांघ्रिश्चक्रियेसिं हांशेपृथुनसोललाटश्च १७९ ॥ मृद्वात्मवान्वपुष्मान्स्फुटाग्रनासःस्फुटाग्रदृ हदंसः यज्ञाग्निकर्मनिरतःकृशःसुनिपुणोभवेत्षष्ठे ॥ १८० ॥

और पतलीया जंघा और जानु और केशोंकर्के रहित होताहै १७७ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो भ्रांतकी न्याई मुख और दृष्टिवाला और लंडा और लाल देहवाला और छोटे मथे और नासिका वाला और भ्रमणे वाला और कठोर पाद और कठोर रोमों वाला और पतले चमडेवाला होताहै १७८ और जो पाचमे नवांशमें जन्मताहै सो घोडेकी न्याई नेत्रोंवाला और हाथीकी न्याई बडे शिरवाला और पुष्ट और गोल देहवाला और क्रूर मूर्ति और थोडे वालों वाला और कठोरमुख और कठोर पादों वाला और बडी नासिका और बडे माथेवाला होताहै १७९ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो कोमल मनवाला और सुंदर देहवा ला और ऊची नासिका वाला और बडे मोंढयों वाला और यज्ञ और अग्निहोत्रके करणे वाला और कृश देहवाला और चतुर होताहै १८०

ओर मेषके सप्तम नवांशमे जन्मताहे सो सुंदरनासिका वाला ओर कालेनेत्रो वाला ओर दूर्वांकुर की न्याईं वर्ण ओर विलासकरणे वाला ओर धनलाभवाला ओर अपनी स्त्रीमे रत ओर शांतस्वभाववा लाहोताहे ॥ १८१ ॥ ओर मेषके अष्टमनवांशमे जोजन्मताहे सो वानर कीन्याईं मुखवाला ओर वहुतवकवादकरणे वाला ओर कठोर चमडे वाला ओर ऊचेदेह वाला ओर गुह्यरोगी ओर हिंसाके करणे वाला ओर झूठवोलने वाला ओर घातकरणे वाला ओर मित्रोंकाप्यारा ओर क्रूर होताहे ॥ १८२ ॥ ओर जोमेषकेनवम नवांशमें जन्मताहे सो लंवा ओर कृशदेह वाला ओर विहारकरणे-वाला ओर टेडेमस्तकवाला ओर टेडे ओष्ठ ओर कर्णो वाला ओर टेडेमुखवाला होताहे ओर वहुत-कहने वाला ओर सरल ओर क्रोधी ओर विद्यावाला होताहे ॥ १८३ ॥ इतिमेष ॥ ओर जोवृषके पूर्वनवांशमें जन्मताहे सो कालेदेहवाला ओर खोटीदाष्टिवाला ओर लोभी ओर परकर्म करणे वाला

सुनसःकृशोसिताक्षोदूर्वांकुरसन्निभोविलासतनुः लब्धधनोजसप्तमभागेना रीरतः शांतः ॥ १८१ ॥ वानरमुखःप्रवक्ताखरत्वगुन्नततनुश्चगुह्यगद. हिंसा नृतघातरतःसुहृत्प्रियोग्रस्सदाष्टमजः ॥ १८२ ॥ दीर्घः कृशोविहारीव्यस्तल लाटश्चवोष्ठवदनश्च वहुवाग्ऋजुश्चकोपीविद्वान्स्यान्मेषनवमांशे १८३ इतिमेषः असितसमांगोविषमेक्षणोविलुब्धोन्यकर्मकृन्नीचः ॥ तत्पूर्वार्द्धेसुखप्रकृतिवि रुद्धोवृषप्रथमभागेच॥ १८४ ॥ पृथुवदनांसश्रवणोगंभीरदृगल्पधीरानृतभार्षी अलसोविरुद्धदारः प्रतिकूलोवृषद्वितीयांशे ॥ १८५ ॥ गौरांगः स्तब्धाक्षोवहुः भाषीवित्तशीलसंयुक्त. धर्मज्ञोवहुभृत्योवृषभतृतीयेभवेन्मनुजः ॥ १८६ ॥ ह्रस्वोटनः सरोषोमेषाक्ष. पिंगलस्त्वमर्षयुतः परधनहरणाभिरतश्चतुर्थभागेच वृषभस्य ॥ १८७ ॥

ओर नीच ओर पूर्वावस्थामे सुख का ओर स्वभावका विरोधीहोताहे ॥ १८४ ओर दूसरेनवांशमें जन्मताहे सोमोटेमुख वाला ओर मोंढेवाला ओर मोटेकर्णो वाला ओर गंभीर दृष्टिवाला ओर थोडीवुद्धिवाला ओर झूठवोलने वाला ओर आलसी ओर विरुद्धस्त्री वाला ओर उलटे स्वभाववा-ला होताहे ॥ १८५ ॥ ओर जोवृषके तीसरेनवांशमें जन्मताहे सो गोर अंगों वाला ओर अनम्रने-त्रोवाला ओर वहुतवाताकरणे वाला ओर धनकरके ओर सुदरस्वभावकरके युक्त होताहे ओर धर्मकेजा-ननेवाला ओर वहुतचाकरों वाला होताहे ॥ १८६ ॥ ओर जोचतुर्थ नवांशमे जन्मताहे सो छोटेदे-हवाला ओर भ्रमणे वाला ओर क्रोधवाला ओर भिडूंकीन्याईं नेत्रों वाला ओर पिंगलवर्ण ओर-दूसरेकाधनहरणे वाला होताहे ॥ १८७ ॥

और जोचतुर्थ नवांश में जन्मता है सो गोल और विशाल नेत्रों वाला और सुंदर देह वाला. और स्त्रीयोंमे अतिसकहोताहै और वहुनकहने वाला और खोटी स्त्रीमें रत होताहै ॥ १८८ ॥ और जोछठे नवांशमें जन्मताहै सो कोमल चित्त वाला और सुरट-रदेह वाला और ऊचीनासिका वाला और वडेमोंठयो वाला और यज्ञ और अग्निहोत्रकेकरणे वाला और कृश देह वाला और चतुर होताहै ॥ १८९ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तिसकी नवीन स्त्री मरतीहै और मौनरहताहै और लवीनासिका वाला और समनेत्रों वाला और अगतिसकेवधनकोंप्राप्तहोतेहैं और मित्रों का वैरी और वडे पयरों वाला औरसूक्ष्मकेशों वाला होताहै १९० और जो वृषके अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो शेरकीन्यांई क्रूरदृष्टि वाला और सुदर रूप और चंचल और ऊची नासिकावाला और अल्प कर्मों केकरणेवाला होताहै और राक्षसकी न्यांई स्वभव

परिमंडलायताक्षःश्यामतनुःस्त्रीष्वतिप्रसक्तश्च वृषभस्यपंचमांशेवहुप्रलापी विरुद्धदाररतः ॥ १८८ ॥ मृद्वात्मवान्वपुष्मान्स्फुटाग्रनासःस्फुटाग्रवृहदसः यज्ञाग्निकर्मनिरतः कृशः सुनिपुणोभवेत्पष्ठे॥ १८९ मृतनवयुवतिःपुरतोमना गिवंलवितनसोमिताक्षःस्यात् उद्धांगःस्वजनद्वेषीगुरुपाद.सूक्ष्मकेशश्च १९० व्याघ्रेक्षणःसुदर्शनश्चलितःस्फुटनासिकोल्पकर्मास्यात् क्रव्याच्छीलःकेशाग्र नखैःसुखरैस्तथाष्टमजः ॥ १९१ ॥ मंदस्मितोल्पसत्वोभीरुःसमरुचिरमूर्ति कितवःस्यात्ः अनिश्चितधनःप्रसिद्धःकृशस्त्वधस्तात्प्रलाप्यंते ॥ १९२ ॥ ॥ इतिवृषः ॥ रोमसभुजोशिताक्ष.कृशांघ्रिहस्तस्तथोच्चनसः दूर्वाकांडश्यामो मिथुनेपूर्वांशजःपुरुषः ॥ १९३ ॥ घटशीर्षश्चविकर्माघातरुचिर्मध्यलग्नघोणःस्यात् वहुभाषीवहुचेष्टोद्वितीयभागेसुविग्रहाधिपतिः ॥ १९४ ॥

वाला और केश और नख तिसके करडे होतेहैं ॥ १९१ ॥ और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो मंदमंद हसने वाला और थोडे पराक्रम वाला और डरणे वाला और समरुचि देहवाला और धूर्त होताहै और तिसके धनका निश्चय नहिहोताहै और प्रसिद्धहोताहै और अधोभाग से कृशहोताहै और वहुत वार्ता करणेवाला होताहै ॥ १९२ ॥ इतिवृषस्य ॥ और जो मिथुनके पूर्व नवांशमें जन्मताहै तिसकी भुजों मे रोमहोतेहैं और कालेनेत्र और कृशपाद और हाथ और ऊची नासिका वाला होताहै और दूर्वाश्याम वर्णहोताहै ॥ १९३ ॥ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो घडेकी न्यांई शिरवाला और खोटेकर्म करणेवाला और घातकरणेमे इच्छावाला और चिपडी नासिकावाला और वहुत कहनेवाला और वहुत चेष्टाकरणेवाला और युद्धकरणेमे मुख्यहोताहै ॥ १९४ ॥

औरजोतीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गोरवर्णवाला औरअत्यंतलालनेत्रोंवाला और श्रेष्ठनासिकावाला और समदेहवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला और लंबेमुखवाला और कालीयों भ्रुवोंवाला और वाणी चातुरीसें वोलणेवाला होताहै ॥ १९५ ॥ औरजो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहैसो सुंदर भ्रुवोंवाला और सुंदर माथे वाला और कामी और नीलकमलकी न्याईं मूर्तिवाला और वडी छातीवाला ओर श्वेतदांतोंवाला और हरिण कीन्याईं मुखवाला और श्रेष्ठरोमावलीवाला होताहै ॥ १९६ ॥ और जो पांचमें नवांशमें जन्मताहै सो मोटे नेत्रोंवाला और वडेकटिमास पिंडो वाला और पुष्टछाती वाला और पुष्टभुजों वाला और दुष्ट और काले वर्णवाला और मोटे शिरवाला और मायाके जानने वाला और श्वेत कमलो की न्याईं नेत्रोंवाला होताहै ॥ १९७ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो मधुवर्णके नेत्रों वाला और प्रलाप करणेवाला और उलटे माथे वाला और उलटे हृदेवाला और समअंगोवाला और श्रेष्ठदेह वाला और धूर्त्त और लाल ओठ और लाल दांतों वाला और पराक्रमी होताहै १९८ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तांबेकी न्याईं लालवर्ण वाला और वडे पेटवालाऔर सुंदर ऊंचे नेत्रोंवाला और वडी छाती वाला और शिक्षा और अस्त्रों के जननेवाला और शिल्पमें और हास्यमें रत होताहै ॥ १९९ ॥ और जो अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो तरुण अवस्थावाला और भारे देहवाला और मनस्वी और सुंदर और मीठी वोलीवाला और उलटा वृद्धिकों प्राप्तभया देह जिसका तिसकीन्याईं और लंबा और कालेनेत्रों वाला और कलाके जाननेवाला होताहै २०० और जो नवमनवांशमें जन्मताहै सो गोल कालेनेत्रों वाला और सुंदर देह वाला और स्निग्ध औरबुद्धिकेवलवाला और रतिके जानने वाला और विद्यावान् और काव्यमें रत वडा श्रेष्ठ होताहै २०१ इतिमिथुनः

गौरोतिरक्तनयनःसुनासिक.समतनुःसुमेध.स्यात् दीर्घाननोसितभ्रूर्वाक्चतुरस्तृतीयेंशे ॥ १९५ ॥ सुभ्रूललाटःकामीनीलोत्पलमूर्तिर्विपुलवक्ष स्यात् सितदंतोमृगवक्रःप्रशस्तरोमांचितश्चतुर्थेंशे ॥ १९६ ॥ पृथुलोचनोबृहत्स्फिक्पीवरवक्षोभुजःखलःकालः स्थूलशिरामायावीसितांबुजनयनस्तुपंचमजः ॥ ॥ १९७ ॥ मध्वेक्षणःप्रलापीव्यस्तललाटहृदयःसम सुतनुः कितवश्चरुधिरोष्टरदस्तुषष्टेतुसत्वयुतः ॥ १९८ ताम्रारुणोरुजठरःसमुन्नताक्षोविशालवक्षः स्यात् शिक्षास्त्रशिल्पनिरतोहास्यरतिःसप्तमेजातः ॥ १९९ ॥ श्यामोगुरुर्मनस्वीललितोमधुराभिधानश्च व्यस्तविवृद्धशरीरोदीर्घोसितदृक्कलाविदष्टमजः २०० वृत्तासितदृक्सुतनुःस्निग्धोमेधाबलारतिज्ञःस्यात् विज्ञानकाव्यनिरतोनवमांशेनाभवेच्छ्रेष्ठः ॥ २०१ ॥ इतिमिथुनः ॥

॥ ओर जो कर्कटके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो निर्मल जलकीन्याई गोर वर्ण वाला ओर सुंदर केशों वाला ओर विशाल लाल नेत्रों वाला ओर गोल मुख वाला ओर ऊचे नेत्रों वाला ओर श्रेष्ठ छाती वाला होताहै २०२ ओर जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो लाल प्रभा वाला ओर युद्धमें बडा क्रूर ओर लडाईका प्यारा ओर बिल्लीकी न्यांई मुख ओर नेत्रों वाला ओर त्यागी ओर कृशजानू ओर कृश जंघों वाला होताहै ॥ २०३ ॥ ओर तीसरे नवांशमें गोर वर्ण वाला ओर सुंदर नेत्रों वाला ओर वक्ता ओर विद्यावान् ओर स्थूलस्त्री वाला ओर स्थूल अंगों वाला ओर बुद्धिमान् ओर कोमल कर्मके करणे वाला ओर आलसी होताहै ॥ २०४ ॥ ओर जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो तरुण प्रभावाला ओर नीमियों भुवों वाला ओर विशाल ओर पुष्ट ओर ऊचे देह वाला ओर श्रेष्ठ नासिका ओर श्रेष्ठ नेत्रों वाला ओर आगेकेदंतोसें हीन ओर दाता ओर अपने जातीमें शठता के करणे वाला होताहै ॥ २०५ ॥ ओर कर्कटकेपाचमें नवांशमें जो जन्मताहै सो मोटीकु

निर्मलवारिसुगौरः सुमूर्द्धजःस्याद्विशालरक्ताक्षः मंडलमुखोन्नताक्षस्तनु वक्षानाकुलीराद्ये ॥ २०२ ॥ रक्तच्छवीरणोग्रःकलिप्रिय स्याद्विडालमुखनेत्रः कर्किणिद्वितीयभागेत्यागीकृशजानुजंघश्च ॥ २०३ ॥ गौरःसुनेत्रोवाग्मी प्रज्ञानवान्स्थूलयोषिदंगश्च ॥ धीमान्मृदुकर्मरतस्तृतीयभागेभवेदलसः ॥ २०४ ॥ श्यामच्छविर्नतभ्रूर्विशालपीनोच्चतनुःसुनासाक्षः क्षीणाग्रदो दातास्वजातिकार्येशठःचतुर्थेस्यात् ॥ २०५ ॥ पृथुकुक्षिरुग्रःकर्किणि मध्यंशियानपोविकर्माच घटशिरोल्पमतियुतोनताननोदीर्घदृक्चलत्सुभ्रूः २०६ दीर्घविशालशरीरःप्रशस्तनयनोवहुप्रतापःस्यात् गौरःसुवंशघोणोवक्तापृथुच पृथुदंतः ॥ २०७ ॥ भिन्नशिरोरुहरोमाचलद्धनुःस्यात् सिरालरोमजंघश्च परगृहनिवासशीलःकाकाकारश्चसप्तमजः ॥ २०८ ॥ घटशिरःकुशिल्पीकृशाश्वमुखजानुजंघक कुमतिः मध्यविलग्नःस्यादष्टमभागेतुकृष्णश्च ॥ २०९ ॥

क्षि वाला ओर क्रूर ओर वाहनोंका स्वामी ओर खोटे कर्म करणे वाला ओर घडेकी न्याई शिर वाला ओर थोडी बुद्धि वाला ओर नीमें मुख वाला ओर लंबेनेत्रों वाला ओर चंचल सुंदर भुवों वाला होताहै ॥ २०६ ॥ ओर जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो लंबे ओर विशाल देहवाला ओर श्रेष्ठ नेत्रों वाला ओर वडे प्रतापवाला ओर गोर वर्ण वंशवाला ओर सुंदर नासिकावाला ओर वक्ता ओर मोटे दांतो वाला होताहै ॥ २०७ ॥ ओर जो सातमे नवांशमें जन्मतासो भिन्नकेशों वाला ओर चचल ठोडी वाला ओर वहुनाडीवा ओर जंघोंमें रोमों वाला ओर दूसरेके घरमें रहनें वाला ओर काककी न्याई होताहै २०८ ॥ ओर जो आठमे नवांशमें जन्मताहै सो घटकी न्याई शिर वाला ओर कुशिल्पी ओर कृश घोडेकी न्याई मुख वाला ओर कृश जानु ओर कृश जंघा वाला होताहै ओर खोटी बुद्धि वाला ओर चिपटी नासिका वाला ओर कृष्ण वर्ण होताहै २०९

और जोनवमें नवमनवांशमे जन्मताहै सो गौर वर्ण और मछकी न्याई नेत्र और वडे पेट वाला और मोटी पुष्ट छाती वाला और लंबी ठोडी वाला और लंबेउोठों वाला और वडे पेट वाला औरदृश जानु और दृश गिटेयों वाला होताहै ॥ २१० ॥ इतिकर्कटः ॥ और जो सिंहके पूर्व नवांशमे जन्मताहै सो मदोदर और प्रचड और लालनासिकावाला और वडि यों नाडियों वाला और शूरवीर और ऊचीछातीवालाहोताहै ॥ २११ ॥ जो सिंहके दूसेरनवांशमेज न्मताहै सो ऊचे वडे माथे वाला और चारकोणवालादेह विशालतिसकाहोताहै और वडेनेत्रोंवाला और लवीयोंभुजोंवाला और ऊचोछातीवाला और वडीनासिकावाला होताहै ॥ २१२ ॥ और जो सिंहकेतीसरेनवांशमेजन्मताहै सो वहुतरोमों वाला और विशालभुजों वाला और चकोरकी न्याई नेत्रों वाला और सुदर चचल देहवाला और त्यागीहोताहै और ऊचीनासिकावाला और स्निग्धदेह

गौरोझपसमनयनोगुरूदरःपृथुपीनवक्ष स्यात् दीर्घहनुर्लंवोष्ठोमहोदरःसुकृश जानुगुल्फोंत्ये ॥ २१० ॥ इतिकर्कटः ॥ मंदोदरःप्रचंडोरक्ताग्रनसो वृहच्छिरा शूरः ॥ उन्नतमांसलवक्ष सिंहेप्रथमेभवेद्भागे ॥ २११ ॥ उन्नत विततललाटश्चतुरस्रतनुर्विशालनेत्रगुरुः ॥ दीर्घभुजोन्नतवक्षःपृथुरग्रघोणो द्वितीयेंशे ॥ २१२ ॥ रोमाचितायतवाहुश्चकोरनयन शुभश्चलस्त्यागी उन्ना सिकस्तृतीयेस्निग्धतनुवाहुर्वृत्तगलः ॥ २१३ ॥ घृतमंडगौरदेहोदीर्घासि तलोचनोमृदुशरीरः ॥ भिन्नध्वनिश्चतुर्थेपृथुचरणोभेककुक्षिःस्यात् ॥ ॥ २१४ ॥ घाटाशिरोल्पकेशोसितघोणाक्षश्चलोमशोर्ध्वतनुः ॥ लंवोदरःप्रचं डोदंष्ट्रोत्कटोह्येरमध्ये २१५ ॥ स्रस्तोल्परोममूर्त्तिः स्निग्धसमोसितविलोचनो दीर्घः श्याम.स्त्रीणांचतुरोवाक्तुरोवाक्यमंडित.पद्ये ॥ २१६ ॥

वाला और स्निग्धभुजा वाला और गोल गल वालाहोताहै २१३ और जो सिंहके चतुर्थनवांशमे जन्मता है सो घृतमडकीन्यांई गोरदेहवाला और लंबे और काले नेत्रों वाला और कोमलदेहवाला और भिन्नस्वर और मोटेपैरोंवाला और डिड्डू कीन्यांई कुक्षियोंवालाहोताहै ॥ २१४ ॥ और जोसिं हके पाचमे नवांशमें जन्मताहै सो घडे कीन्याइ शिरवाला और थोडे केशों वाला और श्वेत नासिकावाल और श्वेतनेत्रोंवाला और ऊर्द्धभागमें वहुतरोमोंवाला और लंवेउदरवाला और प्रचड और वडीया दाढोंवाला होताहै ॥ २१५ ॥ और जो सिंहके छठे नवांशमें जन्म ताहै सो स्रस्त ढीले अगोंवाला और थोडे रोमो वाला होताहै और स्निग्ध देहवाला और सममूर्त्तिः और काले नेत्रों वाला और लवा और तरुणरूप और स्त्रीयोंमे चतुर और वाणीकर्के चतुर होताहै और श्रेष्ट वाणीवालापडित होताहै ॥ २१६ ॥

और जो सातमे नवांशमें जन्मताहै सो लंबेमुखवाला और वडेकेशोंवाला और पुष्टठोडीवाला और स्त्रीयोंमें खोटे भाग्यों वाला और काला और पराक्रमी और वहुत रोमों वाला और कुटिल और कठोर वचन कहने वाला होताहै ॥ २१७ ॥ और जो आठमें नवांशमें जन्मताहै सो टीठोंकी न्यांई वाणीवाला और वहुत केशों वाला और मित्रों सें हीन और थोडी चेष्टा वाला और कृष्णवर्ण और स्थिर और कठोर अंगों वाला और खोटे कर्म और खोटे स्वभाव वाला होताहै ॥ २१८ ॥ और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो लंवीयों भुजों वाला और कठोर मुखवाला और कालेनेत्रों वाला और दृढजंघा वाला और दृढ पार्श्वों वाला होताहै और पीडितनेत्रोंवाला और देह पीडा वाला और दूर्वावतश्याम वर्णवालाहोताहैं २१९ इतिसिंहः और जो कन्याके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो टेढेमुख और ऊचे मुखवाला और पुष्ट अंगों वाला

दीर्घाननःशिरालःपीनहनुःस्त्रीपुदुर्भगःकृष्णः स्यात्सप्तमेससत्वोरोमाचितःकुटिल निष्ठुराभाषी २१७ उद्धृष्टवाक्शिरालोविसुहृज्जनोल्पचेष्टःस्यात् कालःस्थिरः खरांगोविकर्मशीलोष्टमेहरेर्भागे २१८ लंवभुजःखरवदनोसितनेत्रःसुदृढजंघपार्ष्णिःस्यात् पीडितचक्षुशरीरोदूर्वाश्यामोहरौनवमे २१९॥ इतिसिंहः ॥ वक्रोन्नतपीनांगःसारंगमुखोधनीप्रदाताच संभोगरुचिःश्यामःकन्याप्रथमांशकेजातः २२० श्यामोघटसमकुक्षिःपिशुनःकलहप्रियःसुगूढवचः ॥ भार्याचपलाचस्याद्द्वितीयभागेमहोदरश्चैव ॥ २२१ ॥ स्फुटनासिकःस्फुटःस्यात्प्रशस्तसमुचितगौरवाव्हंसः वाग्मीमुहृत्तृतीयेश्रुतवाक्यःस्त्रीरतिःस्यातः ॥ २२२ ॥ सुकुमारमूर्तिमधुरोल्परोमदीर्घोविभक्तपृथुवाहुः ॥ आताम्रगौरसुवपुश्चतुर्थजोधःकृशःसुमूर्धाक्षः ॥ २२३ ॥

हरण की न्यांई मुखवाला और धनी और दाता होताहै और भोगकी रुचि वाला और तरुण रूपहोताहै और जो कन्याके दूसरे नवांशमें जन्मताहैं सो तरुण रूप और घडेकी न्यांई कुक्षिवाला और चुगल और लडाई काप्यारा और गूढ वचन श्रेष्ठ वोलने वाला और चंचल स्त्रीवाला होताहै और वडे उदर वाला होताहै ॥ २२१ ॥ और जो कन्या के तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो वडी नासिका वाला और वडे मुख वाला और सुंदरगौरवर्ण और श्रेष्टभुजा औरवडेमोंढयों वाला होताहै और श्रेष्ट वाणीवाला औरमित्र भाव वाला और श्रवणकर्के वचनकों धारणेवाला और स्त्रीमें प्रीति वाला और प्रसिद्ध होताहै ॥ २२२ ॥ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर कोमल मूर्तिवाला और मीठी वोली वाला और थोडे रोमों वाला और लंवा और मोटीयों भुजों वाला और तांवेकी न्यांई लालवर्ण के देह वाला और अधोभागसें कृश होताहै ॥ २२३ ॥

औरजोपांचमेंनवांशमेंजन्मताहै सोमोटे ओठो और मोटीयों भुजों वालाऔर ऊचे और पुष्ट और मोटे शिर वाला और वडे मोंडयोंवालाहोताहै और वडीछातीवाला. और दूसरे के आश्रयमें रहणे वालाऔरवांधेकीन्याई जंघोंवालाहोताहै २२४ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सोस्निग्धप्रभाव वाला और अपने वाक्यकों मानने वाला और ढीले देहवाला और शास्त्रके वनाने वाला और वडी वुद्धिवाला और लिखने की कलाके जानने वाला और विहारी होताहै ॥ २२५ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो छोटे मुख वाला और ऊचे मोंढयों वाला और स्निग्ध और को मल देह वाला और सुंदर केशों वाला और वडे पेट वाला और मोटे हाथ और मोटे पैरों वाला और जलसें ड रणे वाला होताहै ॥ २२६ ॥ और जो आठमें नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर कोमलदेह वाला और गौर वर्ण और लंवा और सुंदर दृष्टिवाला और प्रचंड और मानकरणे वाला और वडीयां लंवीयां पुष्ट भुजोंवाला और पिंगल वर्णके रोमों वाला होताहै ॥ २२७ ॥ और जो नवमे नवांशमें जन्मताहै सो प्रसिद्ध और कोमल और सुंदर देह वाला और वडे नेत्रों वाला और निर्वल और तुल्यअंतस्करण वाला और चतुर और नीमें मोंढयों वाला और लिखने वाला और विद्वान् होताहै ॥ २२८ ॥ ॥ इतिकन्या ॥ और जो तुलाके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण और वडे नेत्रों वाला और श्लाघने योग्य और धन जोडने वाला और वडी दाढी वाला और धर्मात्मा और भ्रमणे वाला और प्रसिद्ध होताहै ॥ २२९ ॥ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो गोल नेत्रोंवाला और विकराल दांतोंवाला और मध्यभागसें कृश और प्रभा वाला लालतांवेकी न्याई वर्ण जिसका और कालीयों जंघों वाला औरमिलिन भ्रुवों वाला होताहै ॥ २३० ॥

स्थूलोष्ठवाहुरुन्नतपीनपृथुशिरामहांसःस्यात् ॥ पंचमजःपृथुवक्षाःपराश्रयो हृढजंघश्च ॥ २२४ ॥ स्निग्धछविःस्ववाक्यःस्रस्ततनुःशास्त्रकृतमतिः प्रचुरः ॥ लिपिलेख्यकलाभिज्ञःसुमतिःषष्ठांशजोविहारीच ॥ २२५ ॥ ह्रस्ववदनोन्नतांसःस्निग्धमृदुः सुजातकेशःस्यात् । सप्तमजःपृथुजठरःपृथुकर चरणोम्वुभीरुश्च ॥ २२६ ॥ सुकुमारगौरदीर्घदेहःशुभदृक्प्रचंडमानीस्यात् व्यालंवपीनवाहुःपिंगलरोमोष्टमेजातः ॥ २२७ ॥ स्यातोमृदुःसुमूर्तिर्विशालनेत्रोऽवलःसदृशसत्वः ॥ चतुरोनवमांशेस्यान्नतांसलेख्यादिविद्वांश्च ॥ २२८ ॥ ॥ इतिकन्या ॥ गौरोविशालनेत्रःश्लाघीदीर्घाननोर्थगोप्तास्यात् ॥ धनकूर्चपुण्यकुशलस्तुलाधरांशजोटनःस्यातः ॥ २२९ ॥ प्लुतमंडलनेत्रःस्यात्करालदंतो विलग्नमध्यश्च ॥ विस्तृतरुचिमांस्ताम्रोसिततरजघनः संहतभ्रूश्च ॥ २३० ॥

और जो तुलाके तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण और घोडेकी न्यांई दांतोवाला और सुंदर-मुखवाला और मधुवर्ण ऊंचे नेत्रोंवाला और सुंदर केशोंवाला और बहुत धनको प्राप्तहोताहै और-लंबे केशों वाला और लंबी नासिका वाला होताहै और शरणागतकी रक्षाकर्त्ताहै ॥ २३१ ॥ और जो चतुर्थनवांशमें जन्मताहै सो सूक्ष्म अंग और सूक्ष्म भुजोंवाला डरणेवाला और नीमें दांतो वाला और कृशदेहवाला और हरिणकी न्यांई सूधी दृष्टि वाला और छोटी नासिका वाला और विषाद करणेवाला और तरुण रूप और खोटे स्वभाव वाला होताहै ॥ २३२ ॥ और जो पाचमें नवांशमें जन्मताहै सो गंभीर दृष्टि वाला और बडे केशों वाला और मित्रोंका प्यारा और बडी बुद्धिवाला और कठोर केश और कठोर चमडा और कठोर दृष्टि वाला और चिपडी नासिका वाला होताहै ॥ २३३ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो पुष्ट मोढेओं वाला और बडे देह वाला और बडी कुक्षिवाला और सुंदर नासिका वाला सुंदर वंशवाला और स्निग्ध नखोंवाला और

गौरोश्वरदःसुमुखोमधून्नताक्षःकृशोतिलब्धयशः दीर्घशिरोरुहघोणस्तृतीयजःस्याच्छरण्यश्च ॥ २३१ ॥ तन्वंसबाहुभीरुर्नतदंतकृशोमृगतरलदृक्च स्यात् ऱ्हस्वनसःसविषादीश्यामोशीलश्चतुर्थजोभवति ॥ २३२ ॥ गंभीरदृक्शिरालःसुहृत्प्रियःपंचमेतिमानीस्यात् खरकेशत्वक्नेत्रोमध्यविलग्नघोणश्च ॥ २३३ ॥ पीनांसोरुतनुःस्याद्विशालकुक्षिःसुनासिकावंशः स्निग्धनखःसुनयज्ञःषष्ठेशास्त्रार्थशिक्षावित् ॥ २३४ ॥ रक्तावदातामतिमान्गुरुरल्पतनुर्महाललाटश्च दंडोधस्ताद्विवलःसप्तमजःस्याद्यशस्वीच ॥ २३५ तुंगांशगंडभोक्ताकठिनःपृथुतरजघनोसितभ्रूःस्यात् निर्णीतवाक्प्रशांतः सद्वक्षः स्कंधमस्तकोष्टमजः ॥ २३६ ॥ स्वक्षःप्रसन्नगौरः समचारुतनुः पटुःकलानिरतः दाक्षिण्यहास्यनिरतोविट्स्वभावो भवेन्नवमे ॥ २३७॥ इतितुला

नीतिके जानने वाला और शास्त्रोंके और शिक्षाके जानने वाला होताहे ॥ २३४ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो रक्तगौर वर्ण और बडी बुद्धि वाला और भारे और छोटे देह वाला. और बडे माथे वाला और अधो भागमें निर्वल और यशवाला होताहै ॥ २३५ ॥ और जो, आठमें नवांशमें जन्मताहै सो ऊंचे मोंढे और गंडस्थलों वाला और भोगी और कठिन और मोटीयों जंघो वाला और कालीयोंभ्रुवों वाला और निश्चयकर्के वचन कहने वाला और शांत स्वभाव-और श्रेष्ट छाती वाला और श्रेष्ट माथे वाला होताहै ॥ २३६ ॥ और जो नवम नवांसमें जन्मताहै सो सुंदर नेत्रों वाला और प्रसन्नमूर्त्तिः और गौर वर्ण और सम सुंदर देह वाला और चतुर कलाके जानने वाला और चतुराई से हास्य करणे वाला और व्यापारीके स्वभाव वाला होताहै ॥ २३७ ॥ इतितुला ॥

और जो वृश्चकके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो छोटे देहवाला और ऊंचे ओठों और ऊंची नासिका वाला और सुंदर माथेवाला और दृढअंगों वाला और गौर वर्ण और डिड्डूकी न्याईं लाल नेत्रों वाला और घडेकी न्याईं शिरवाला होताहै ॥ २३८ ॥ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो गौर वर्ण और भारे विशाल हृदे वाला और विशाल भुजों वाला और लाल नेत्रों वाला और वडे वलवालेकों मारणे वाला और हठ करणे वाला और थोडे केशों वाला होताहै ॥ २३९ ॥ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो चतुर और दृढ मोंढ यों भुजों वाला और प्रसन्न मूर्त्ति और श्रेष्ट वाक्य कहने वाला होताहै और दासी में रत और सुंदर देह वाला और चोर और लाल ओठों वाला होताहै ॥ २४० ॥ और जो

ह्रस्वोन्नतोष्ठघोणःसुललाटःस्याद्दृढांगगौरश्च ॥ दर्दुररक्ताक्षिघटशिरोष्ट मे प्रथमनवमांशे ॥ २३८ ॥ गौरःपृथ्वायतहृद्बाहुस्ताम्राक्षदृग्द्वितीयेस्यात् उद्धृत्तवलनिहंतासाहसनिरतोल्पकेशश्च ॥ २३९ ॥ प्राज्ञोदृढांसवाहुःप्रस न्नकोशोविवुद्धवाक्यःस्यात् दासीरतोवपुष्मांश्चौरोरुधिराधरोष्ठश्च ॥ २४० परदारद्रोहरतिःक्षितोधीरश्चतुर्थजोदीर्घः श्यामोसितकेशाक्षःप्रगल्भपीनोद रे तुंगः २४१ गंभीराताम्राक्षोभग्ननसःपंचमेविरोधवशः दृप्तोह्युदुग्रकर्मा व्यस्तदृढांसोयशस्वीस्यात् २४२ सुनयःप्रचंडकर्मापदृष्ठेक्षाल्पकचघनभ्रू श्च दारितमुखःसिरालःप्रकीर्णरदःसिरावबद्धांगः २४३

चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सोपरस्त्रीमें और द्रोहमें रत और धीर्यसें रहित और लंबेदेहवा ला और तरुण रूप और श्याम केश और श्याम नेत्रोंवाला और प्रगल्भ और पुष्ट पेटवाला और ऊचा होताहै २४१ और जो पाचमें नवांशमें जन्मताहै सो गंभीर और तावेकीन्याईं ला, लनेत्रोंवाला और चिपटी नासिका वाला और विरोधी होताहै और वडा अभिमानी और क्रूर कर्मोंके करणे वाला और उलटे वडे दृढ मोंढयों वाला और यशवाला होताहै २४२ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर नीतिवाला और प्रचंड कर्म करणेवाला और छोटे नेत्रों वाला और थोडेकेशोंवाला और वडीयों भुजों वाला होताहै और वडेमुख वाला और वडे शिरवाला और प्रकीर्ण दांतोंवाला और नाडियों करके वांधेहैं अंगजिसके ऐसा होताहै २४३

श्रोर जो सातमें नवांशमे जन्मताहै सोनीमे पेटवाला श्रोर नीमे लकवाला श्रोर मोटे नेत्रोवा ला श्रोर माडेदातोंवाला श्रोर वडेमुख वाला श्रोर कृष्ण वर्ण लंवा श्रोर छोटी ठोडीवा ला श्रोर वडी छाती वाला होताहै २४४ श्रोर जो अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो चि पटी नासिका वाला श्रोर वडेशिरवाला श्रोर वंधुयोंसे वैर करणेवाला श्रोर भ्रांत दृष्टिवा. ला श्रोर वहुतकहनेवाला श्रोर गुरोंकी आज्ञाको करणे वालाहोताहै २४५ श्रोर जो नव. म नवांशमे जन्मताहै सो गौर वर्ण श्रोर मछकी न्याई दृष्टिवाला श्रोर शांतचित्त पिंगलव- र्णके नेत्र श्रोर अगेमेंहि दृष्टिवाला श्रोर पुष्ट श्रोर श्रेष्ठ कर्मोंमें रत श्रोर दाता श्रोर गुरु देवताकी भक्तिवाला होताहै २४६ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ श्रोर जो धनके पूर्वनवांशमे जन्मताहै. सो सुंदर वडी नासिका वाला श्रोर वकरेकी न्याई दृष्टिवाला श्रोर स्फुट हास्य करणेवाला श्रोर.

निम्नोदरकटिस्तुनाक्षःकुरदोदारितमुखोसितोदीर्घः तनुहनुःपृथुवक्षःसप्तमभागेलिनिसिरालः २४४ चिपिटाग्रनासिकःस्याद्विस्तीर्णशिराःस्ववंधुवैरश्च विभ्रांतदृक्प्रभाषीगुरुष्वभिमतोष्टमांशकज ः२४५ गौरोझषकेकरदृक्प्रशांतपिंगाग्रदृक्पीनः सत्कर्मरतोदातागुरुदेवरतोलिनोंतिमेंभागे २४६ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ सुबृहन्नसोजदृष्टिःस्फुटाग्रहासःप्रभिन्नरोमाचगौरःसुवद्धवृषणःचापाद्यंशेप्रचंडःस्यात् २४७ प्रोतुंगशिरःस्थिरधीर्विस्तीर्णाक्षोगुरुतरश्च विकृताग्रनसोदीर्घोमहातनुःस्याद्वितीयेंशे २४८ शिक्षाशास्त्रार्थमतिःप्रगल्भःसंपूर्णमूर्तिःसुभगश्च स्त्रीवल्लभोमनस्वीतृतीयजोहास्यशिल्पज्ञः २४९ दक्षोमधुमंडलदृग्गौरःकछपविवद्धकुक्षिःस्यात् प्राज्ञोटनःसुकेशःपृथुशुभकीर्तिश्चतुर्थांशे २५०

भिन्नरोमों वाला श्रोर गौर वर्ण श्रोर वद्धवृषण श्रोर प्रचंड होताहै २४७ श्रोर जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो ऊंचे शिरवाला श्रोर स्थिर बुद्धिवाला श्रोर विशालनेत्रों वाला श्रोर वडा भारा होताहै श्रोर टेढी नासिकावाला श्रोर लंवा श्रोर वडेदेहवाला होताहै २४८ श्रोर जो तीसरे नवांशमे जन्मताहै सो शिक्षा शास्त्रमे बुद्धिवाला श्रोर प्रगल्भ श्रोर पूर्णमूर्तिः श्रोर श्रेष्ठ भाग्योंवाला श्रोर स्त्रीका प्यारा श्रोर मनस्वी श्रोर हासीके श्रोर शिल्पके जानने वाला हो ताहै २४९ श्रोर जो चतुर्थ नवांशमे जन्मताहै सो चतुर श्रोर मधुपिंगल वर्णके नेत्रोंवा ला श्रोर गौर वर्ण श्रोर कछपकी न्याई वडीकुक्षियो वाला श्रोर चतुर श्रोर भ्रमणे वाला श्रोर श्रेष्ठ केशोंवाला श्रोर मोटा श्रोर श्रेष्ठ यशवाला होताहै २५०

और जो पांचमे नवांशमें जन्मताहै सो मोटे कर्ण और मोटे नेत्र और मोटे मुख वाला और वडे शत्रुओंके साथ लडने वाला और वडियों भ्रुवोंवाला और पुष्ट औरऊचेमोंढयों वाला और वडे हार्थो वाला और सुंदर रोमों वाला और निश्चयवुद्धिवाला होताहै ॥ २५१ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो स्निग्धकाले कोणे वाले वडे नेत्रों वाला और वडे माथेवाला और सुंदर देहवाला और काव्यशास्त्रमें रत और मोटे पुष्ट मुख वाला और विद्यावान् और कथामें रत होताहै ॥ २५२ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तरुणरूप और दृढ और अपनेवचनकों प्रमाण करणे वाला और ऊचे शिरवाला और संग्रह करणे वाला और संधिकरणेवाला और लंवा और विशाल नेत्रोंवाला और वडाचतुर होताहै ॥ २५३ ॥ और जो अष्ठम नवांशमें जन्मताहै सो चिपटी नासिकावाला और वडे विस्तारवालियों नाडियोंवाला और आपने वंधुयोंमें वैर करणेवाला और भ्रांतनेत्रोंवाला और वहुतकहने वाला और गुरों की आज्ञा करणे वाला होताहै ॥ २५४ ॥ और

पृथुकर्णनेत्रवदनःप्रवृद्धमहारिविग्रहोमहाभ्रूःस्यात्. पीनोन्नतांसहस्तःपंचमजो रूपरोमदृढवुद्धिः ॥ २५१ ॥ स्निग्धासितांतपृथुदृङ्महाललाटःसुमूर्तिःकाव्यरतः पृथुपीनमुखोनापष्ठेविद्वान्कथासुरतः २५२ ॥ स्यामोदृढोवचस्वीतुंगाशिराःसंग्रहानुसंधिरतः दीर्घोविशालनयनोदाक्षिण्यपटुश्चसप्तमजः ॥ २५३ ॥ चिपिटाग्रनासिकःस्याद्विस्तीर्णशिराःस्ववंधुवैरश्च विभ्रांतदृक्प्रभापीगुरुप्वभिमतोष्टमांशकजः२५४ गौरोहयाकृतिमुखोदीर्घासितदृक्कथासुवाक्यःस्यात् सभ्यःसतांविवादीनवमेजटिलोरुजंघश्च ॥ २५५ ॥ इतिधन्वी ॥ विरलाग्ररदःश्यामः प्रभिन्नवाक्खरशिरोरुहःस्यातः पीताभ्रहास्यनिरतोमकराद्येचलधनःकृशांगः स्यात् ॥ २५६ ॥ प्रचुरांगधनःप्रवासीशठोलसःकुटिलनासिकःसुवहुरोमः श्यामतनुर्मंदसितोवहुगीतरतिर्द्वितीयजःकल्प्यः ॥ २५७ ॥ गांधर्वरसिकःस्यातो गौरोनितांतदृक्सुनसः वहुमित्रवंधुरतिमांन्तृतीयजास्त्विष्टकर्मा च ॥ २५८ ॥

जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो गौर वर्ण और घोडेकी न्याईं मुखवाला और लंवे काले नेत्रों वाला और श्रेष्ठवाक्य कहनेवाला और सभामें मुख्य और श्रेष्टोंसे वादकरणेवालाऔर जटिल और वडियों जघांवाला होताहै ॥ २५५ ॥ इतिधनुः ॥ और जो मकरके पूर्वनवांशमें जन्मताहै सो तिसके आगेके दांत विरले होतेहैं और तरुण रूप होताहै और भिन्न वाणीवाला और रूखेकेशों वाला और प्रसिद्ध होताहै और पीले वादलोंकी न्याईं हासिमें रतहोताहै और अस्थिर धनवाला और दृश अंगो वाला होताहै ॥ २५६ ॥ और जोदूसरे नवांशमें जन्मताहै सो वडे अंगों वाला और धनी और विदेशवासी और शठ और आलसी और टेडी नासिकावाला और वहुत रोमोंवाला और तरुण रूप और गीतमें प्रीति वाला होताहै ॥ २५७ ॥ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गंधर्वविद्याके जानने वाला और प्रसिद्ध और गौर वर्ण निवद्धदृष्टिवाला और सुंदर नासिकावाला और वहुत मित्रों और भाईयों वाला और वुद्धिमान् श्रेष्टकर्म करणेवाला होताहै ॥ २५८

और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो लाल और कृष्ण और गोलनेत्रोंवाला और वडे माथेवाला और दुर्वल अंगों वाला और विकीर्ण केशोंवाला और विरले दांतों वाला और विरली वाणी वाला होताहै ॥ २५९ ॥ और जो पाचमें नवांशमें जन्मताहै सो वडे गंडस्थलोंवाला और खोटी-स्त्रीका स्वामी और भोग भोगने वाला और श्रेष्ठ नासिका वाला और तरुण रूप और गोल भुजों वाला और स्थिर रंभी होता है ॥ २६० ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो स्निग्ध प्रभा वाला और सुंदर वेश वाला और काममें प्रीति, वाला और सूक्ष्म दांत और सूक्ष्म वचन वाला और वडी ठोडी वाला और वडे माथे वाला होता, है ॥ २६१ ॥ और जो सातमें नवांश में जन्मताहै सो तरुण रूप और आलसी और थोडा बोलने वाला और कुंडलों वालेकेशों वाला और वडे देह वाला और कठन अंगों वाला और

रक्तासितवृत्ताक्षोमहाललाटस्तुदुर्वलांगकरः ॥ भवतिचविकीर्णकेशश्चतुर्थ जोविरलदंतवाक्यश्च ॥ २५९ ॥ उद्दंडघनःकुस्त्रीपतिःप्रभोक्तासुन सिकावंशः श्यामोवृत्तोरुभुजःपंचमभागेस्थिरारंभः ॥ २६० ॥ स्निग्धछविः सुवेशः कामरतिः सूक्ष्मदंतवाक्यश्च षष्ठांशजः पृथुहनुर्महाललाटः पुमां न्भवति २६१ ॥ श्यामोलसोल्पभाषीकुंचितकेशोदृढतनुः कठिनः मृदु पाणिपादोमतिमान् सप्तमजःशीलसंपन्नः ॥ २६२ ॥ गंभीरदृक्प्रघो णोवक्रास्योभिन्ननखाशिरोजःस्यात् ॥ उद्धतनु सुवाक्यश्चाष्टमजोघटललाटः स्यात् ॥ २६३ ॥ विपुलसुहन्मेदासृक्पूर्णमुखोगीतनृत्यनिरतश्च साध्वा र्यसत्वयुक्तः साधुर्नवमेभवेत्सुनयः ॥ २६४ ॥ इतिमकरः ॥ श्यामोमृ दुकृशांगः पीततनुःकाव्यशास्त्रविपुलमतिः कामीरतिमान्दाताकुंभस्याद्येभवे जातः ॥ २६५ ॥

कोमल हाथ पेरों वाला और बुद्धिमान् और श्रेष्ठ स्वभाव वाला होताहे ॥ २६२ ॥ और जो आठमें नवांशमें जन्मता है सो गंभीर नेत्रों वाला और वडी नासिका वाला और उलटे मुख वाला औरभिन्ननख और भिन्नकेशों वाला और वाघेकी न्याई देह वाला और सुंदर वाक्य वाला और घटकीन्याई माथे वाला होताहे २६३ और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो वहुत मित्रोंवाला और वहुत मिंझ और रुधिर वाला और पूर्ण मुख और गीतमें और नृत्यमें रत और मीठा बोलने वाला और श्रेष्ठ पराक्रमवाला और नीति वाला होताहै २६४ इतिमकरः और जो कुंभके पूर्व नवांशमें जन्मता है सो तरुण रूप और कोमल और कृशअंगों वाला और पीले वर्ण वाला और काव्यशास्त्रोंमें वडी बुद्धि वाला और कामी और प्रीति वाला और दाता होताहै ॥ २६५

उौर जो दूसरे नवांशमें जन्मताहे सो कठोर चमडे श्रौर मुख श्रौर कठोरनेत्र श्रोर कठोर केशोंवाला होताहै श्रौर दीनोंकाप्यारा श्रोर साधु श्रोर लंवी गरदनवाला होताहे श्रौर लंवे मुखवाला होताहे ॥ २६६ ॥ श्रोर जो तीसरे नवांश में जन्मताहे सो भोगी श्रौर पुष्ट देहवाला श्रोर तेजस्वी श्रोर मोटे दांतोंवाला श्रोर थोडाबोलनेवाला श्रोर लालकोणे वाले मोटे नेत्र श्रोर वडी नासिकावाला होताहे ॥ २६७ ॥ श्रोर जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहे सो स्त्रीमें रत श्रोर गौर वर्ण श्रोर वडे मुखवाला श्रोर शत्रुयोंको तपावने वाला श्रौर वडागंभीर श्रोर धैर्य श्रोर पराक्रम वाला श्रोर भोगी श्रोर प्रीतिकर्के युक्तहोताहे ॥ २६८ ॥ श्रोर जो पांचमे नवांशमें जन्मताहे सो स्पष्टश्रर्थके जाननेवाला श्रोर कलाके जाननेवाला श्रोर कठिनरोम श्रोर कठिन हाथ पैर श्रोर कठिन केशों वाला श्रोर वडीनासिका वाला श्रोर काले नेत्रोंवाला होताहे ॥ २६९ श्रोर जो छ

त्वगास्यदृष्टिशिरोजैः खरैश्चमुविपन्नवत्सलःसाधुः दीर्घशिरो धरसुमुखोद्वितीयभगेतुकुंभस्य ॥ २६६ ॥ भोक्ताचपीनदेहस्तेजस्वीपृथुरदोल्पकचः पृथुरक्तांत.पृथुदृक्प्रचंडघोणातृतीयेंशे ॥ २६७ ॥ कांतानुरतोगौरोविदारितास्यो रिपुप्रतापकरः गंभीरधीरसत्वश्चतुर्थजो भोगरतियुक्तः ॥ २६८ स्पष्टार्थविस्कलाज्ञ·खररोमकरांघ्रिकेशनिकरःस्यात् संरुद्धपटघोण.पंचमज. कृष्णनयनश्च ॥ २६९ ॥ व्याघ्रानन.प्रगल्भ·कुंचितकेश·स्वनिश्चितार्थश्च व्याघ्रमृगोरगहंता षष्ठांशेवल्लभोनृपतेः ॥ २७० ॥ कृशदेहोल्पश्मश्रुर्दीर्घमुखाक्षोन्नताग्रनासश्च विरलांगुलिरदलोहितदेहःस्यात्सप्तमेस्खलितः २७१ मेषाक्षिवदनतीक्ष्णोनरेंद्रभोगीधनेश्वरःसुभगः ॥ स्थूलरदोविरलाक्ष कुतनु·स्यादष्टमेमनुजः ॥ २७२ ॥ श्याम श्यामाग्ररदोविश्लेषितसुखोधनपुत्रदारयुतः नवमांशजःसुवाक्यःप्रथित.शक्तोभवेत्पुरुषः ॥ २७३ ॥ इतिकुंभः

ठेनवांशमें जन्मताहे सो चित्रेकी न्याई मुख श्रौर प्रगल्भ श्रौर कुंडलोंवाले केशोंवाला होताहै श्रोर निश्चयवालाहोताहैश्रौर चित्रेमृग सर्पडनोंके मारणे वाला होताहे श्रौर राजाका प्याराहोताहै २७० श्रोर जो सातमें नवांशमेंजन्मताहेसो कृशदेह श्रौर थोडीदाडीवाला श्रोरलंवे मुखवाला श्रौर श्रागेसें ऊंची नासिकावालाश्रौर विरलीया श्रंगुलिया श्रौर विरलेदांत श्रौर लालवर्ण श्रौर ढीलेश्रंगोंवाला होताहे२७१उौर जोश्रष्टमनवांशमें जन्मताहे सोवकरेकीन्याई नेत्रोंवाला उौरक्रूरमुखवाला उौरराजाकी न्याई भोगभोगने वाला उौर धनी उौर श्रेष्टभाग्योंवाला उौर मोटे दांतोंवाला उौर माडे देहवाला होताहे २७२ ॥ उौर जो नवम नवांशमें जन्मताहे सो तरुणरूप उौर कालेदांतों वाला उौर मुखकके विश्लेपको प्राप्त होने वाला उौर धन उौर पुत्र उौर स्त्रीकके युक्त होताहे उौर सुंदर वोलनेवाला उौर प्रसिद्ध उौर समर्थ वाला होताहे ॥ २७३ ॥ इतिकुंभ· ॥

और जो मीनके पूर्वनवांशमें जन्मताहैसोगौरवर्ण औरभिन्नभिन्नअंगोंवाला और चंचल और कोमल- और स्त्रीके स्वभाव वाला और चलचित्त होताहै और छोटी गरदनवाला और पतले लकवाला होताहै २७४ औरजो दूसरेनवांशमें जन्मताहै सो मोटे पुष्ठमुखवाला और मोटी नासिकावाला औरक्रियामें चतुर और चतुराईसें बोलनेवाला औरसुंदरदेहवालाऔर वनपर्वतोंमें विचरणेवाला और वडेशिरवाला होताहै२७५ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण और शठ और सुंदर नेत्रोंवाला और ढिल्लेदेहवाला और धर्मी और विद्यावान् और बोलनेमें चतुर और नम्र और रूपवाला और चतुर होताहै ॥ २७६ ॥ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो गुणवान् और सुंदर स्वभाववाला और वृद्धोंकीसेवा करणे वाला और क्रियामें चतुर और पंडित होताहै और वडे पराक्रमवाला और नीतिके जानने वाला और ऊचीनासिका वाला होताहै ॥ २७७ ॥ और जो पाचमे नवांशमें जन्मताहै सो लंबे

गौरोविभक्तदेहश्चलोमृदुःस्त्रीमतः प्रचलचित्तः ॥ ह्रस्वगलः कृशमध्यो मीनाद्यंशेभवेत्पुरुषः ॥ २७४ ॥ पृथुपीनमुखाग्रनसःक्रियापटुवाक्रुचिरदेहः काननपर्वतचारीवृहच्छिराःस्याद्द्वितीयेंशे ॥ २७५ ॥ गौरःशठःसुचक्षुः स्त्रस्ततनुर्धर्मवान्सुविद्वांश्च दाक्षिण्यवान्विनीतस्तृतीयजोरूपवांश्चतुरः ॥ ॥ २७६ ॥ गुणवान्विपन्नशीलःप्रवृद्धसेवीक्रियापटुर्धीरः सत्वाधिकोनयज्ञस्तुंगनसःस्याच्चतुर्थेंशे ॥ २७७ ॥ दीर्घोसितःप्रतापीप्रशांतधीःस्वल्पनासिकः स्वक्षः हिंसानुरतःसुभगोदुष्प्रसहःपंचमेप्रतापीस्यात् ॥ २७८ कांतःप्रतापगुणवान्प्रसन्नवेशोश्वनासिकोमानी तिर्यङ्नयनःस्यातःषष्ठेस्यात्प्रियकथानिपुणः ॥ २७९ ॥ पुरुषोभिमानकर्त्ताधर्मरुचिःश्रेष्ठसाचिवःस्यात् ॥ प्रचलोविषादशीलःशठस्थितिःसप्तमेभागे ॥ २८० ॥ दीर्घोवृहच्छिराःस्यात्कृष्णालसरूक्षनेत्रकेशश्च मंदात्मजोध्वनिरतोरणकुशलश्चाष्टमेभवति २८१

देहवाला और कृष्णवर्ण और प्रतापी और श्रेष्ठ बुद्धि वाला और छोटी नासिकावाला और सुंदर नेत्रों वाला और हिंसामें रत और श्रेष्ठ भाग्यों वाला-और वडे तेजवाला होताहै ॥ २७८ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर रूपवाला और प्रताप और गुणवाला और श्रेष्ठ वेशधारणे वाला और घोडेकीन्याईंनासिकावाला और मानवाला होताहै और टेढी दृष्टिवाला और प्रसिद्ध होताहै और प्रीती वालियों कथोंमें रतहोताहै ॥ २७९ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहे सो अभिमानके करणे वाला और धर्मी और श्रेष्ठमंत्री और चंचल और खोटे स्वभाव वाला और शठता करणे वाला होताहै २८० और जोअष्टम नवांशमें जन्मताहै सो लंवा और वडे शिर वाला और कृष्णवर्ण और आलसी और कठोरदृष्टि और कठोर केशोंवाला और खोटे पुत्रवाला और मार्गमें रत और युद्धमें श्रेष्ठहोताहै ॥ २८१ ॥

और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो छोटे देहवाला और कोमल और श्रेष्ठपंडित विशालछाती वाला और वडेनेत्र और वडीनासिका वाला और स्निग्ध होताहै और श्रेष्ठअंग और श्रेष्ठबुद्धि औरगुणों वाला और प्रसिद्ध होताहै २८२ इतिमीनः ॥ और जो राशियोंकाफल आगेंकहनाहै द्वादशांश में सोफल कहने जोग्यहै और त्रिंशांशमें सप्तांशके तुल्य फलकहाहै २८३ अव द्वादशांशका फल कहतेहै द्वादशांश कुंडलीमें स्त्रीका विचार कहाहै जन्मसमयमें द्वादशांश लग्नसेंसप्तमका स्वामी शुभ अथवाअशुभहोवेक्रूरदृष्टवाशुभग्रहकर्केदृष्टहोवे तवशुभोंकर्केदृष्ट और युक्तहोवे तवस्त्री पुत्रोंकर्के युक्त और एकहि होतीहै और क्रूरोंकर्के स्त्रीभावकादुःख रहताहै २८४ और द्वादशांशमें चंद्रमाकी राशिके समान फल होताहै और स्वभाव और अंगोंके लक्षण पूर्व कहाजो सप्तांशकाफल तिसके तुल्य जाननेयोग्यहै और पारिजातमें विशेषकहतेहैं जोमनुष्य मेषके द्वादशांशमें जन्मताहै सो दुष्टात्मा और चोर और पापी होताहै और जो वृषके द्वादशांशमें जन्मताहै सो स्त्री

ह्रस्वोमृदुःसुधीरोविशालवक्षोक्षनासिकःस्निग्धः विहितांगवुद्धिर्गुणवान्नवमांशेस्यात्समाख्यातः २८२ यत्प्रोक्तंराशिफलंद्वादशभागेपितत्फलंवाच्यम् सप्तमभागसमानंशेदपुविनिर्दिशेत्प्राज्ञः २८३ इतिमीनः ॥ अथद्वादशांशफलं ॥ द्वादशांशेचिंतयेत्पत्नीमितिपूर्वप्रतिज्ञामालोच्योच्यते स्याद्वादशांशादशुभाःशुभावा जायाधिपःक्रूरशुभेक्षितोवाभार्याशुभैःपुत्रयुतातथैकास्त्रीदुःखमेवाप्यपरैर्नरस्य ॥ २८४ अत्रचंद्रराशितुल्यफलंवक्ष्यमाणम् प्रकृतिवर्णलक्षणानिसप्तांशतुल्यज्ञेयानीति अत्रपारिजातेविशेषः ॥ जातोमेषद्वादशांशेखलात्माचौरःपापाचारधर्मानुरक्तः स्त्रीवित्ताढ्योरोगवानुक्षभांशेयुग्मांशेतुद्यूतकृत्यःसुशीलः २८५ दुष्टाचारःकर्कटांशेतपस्वीसिंहेभागेराजकृत्यःसशूरः द्यूताचारःस्त्रीरतःकन्यकांशेव्यापारीस्यात्तौलिभांशेधनाढ्यः २८६ कीटांशकेवधरुचिर्विटचोरनथश्चापांशकेपितृमहीसुरदेवभक्तः सस्याधिपोमृगमुखांशभवःसुभृत्यः कुंभेखलस्त्वनिमिषेधनिकश्चविद्वान् २८७

और धनकर्के युक्त और रोगी होताहै और मिथुनके द्वादशांशमें जूआ खेलनवाला और सुशील होताहै २८५ और कर्कटके द्वादशांशमें दुष्ट आचार वाला तपस्वी होताहै और सिंहके द्वादशांशमें राजकृत्यके करणेवाला और शूरवीर होताहै और कन्याकेद्वादशांशमें जूऐमें और स्त्रीमें रतहोताहै और तुलाके द्वादशांशमें व्यापारी और धनी होताहै १८६ और वृश्चिकके द्वादशांश में वधकरणेवाला और चोरोंका स्वामी होताहै और धनके द्वादशांशमें पितरोंका और ब्राह्मणोंका और देवताका भक्त होताहै और मकरकेद्वादशांशमें खेतीयोंका स्वामी और श्रेष्ठ चाकरोंवाला होताहै और कुंभके द्वादशांशमें दुष्ट होताहै और मीनके द्वादशांशमें धनी और विद्वान् होताहै २८

अब त्रिंशांशका फल कहतेहै त्रिंशांशकी कुंडलीमें संपूर्ण मनुष्योंका शुभाशुभ मृत्युका लक्षण विचारणा कहाहै सो कहतेहै त्रिंशांशलग्नमें अष्टम गृहका स्वामी शुभग्रहहोवे और शुभग्रह करके युक्त अथवा दृष्ट होवे तब तीर्थस्थानमें और शुभस्थानमें दान धर्मादियों करके मृत्यु होताहै और जो त्रिंशांश लग्नसें अष्टमका स्वामी क्रूरग्रह होवे और पापग्रहों करके युक्त और पापग्रहों करके दृष्टहोवेतब अग्नि करके वा जलादियोंकरके अपमृत्युको प्राप्त होताहै २८८ और मृत्युकालमें विशेष विचार अष्टम भावमें कहेंगे और पारिजातमें त्रिंशांशफल कहतेहै जोमनुष्य मंगलके त्रिंशांशमें जन्मताहै सो चप

अथत्रिंशांशफलम् त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाशुभंसर्वजंतूनामिति पूर्वप्रतिज्ञा अत्रोच्यते त्रिंशांशलग्नान्निधनाधिपश्चक्रूरोथसौम्यःशुभपापदृष्टः तीर्थेशुभेक्रूरतरेनरस्यमृत्युंवदेदग्निजलादितश्च २८८ अत्रापिविशेषमष्टमभावेकथयिष्यामि तथाच पारिजाते त्रिंशांशेधरणीसुतस्यचपलःकाठिन्यवाक्क्रूरधीर्मंदस्याटनतत्परोमालिनधीर्जीवांशकेवित्तवान् सौम्यांशेगुरुदेवभक्तिनिरतःसाधुप्रियोबंधुमान्कामीकांतवपुःसुखीचभृगुजस्त्रिंशांशकेजायते २८९ इतित्रिंशांशफलम् ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेपड्वर्गफलनिरूपणंनामशारीरकाध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥ ॐ ॐ ॐ

ल और कठोर बोलने वाला और क्रूर बुद्धिवाला होताहै और शनिके त्रिंशांशमें जन्मेतो भ्रमणशील होताहै और मलीन बुद्धि वाला होताहै और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें धनी होताहै और बुधके त्रिंशांशमें गुरु देवता पितर तीनोंका भक्त होताहै और साधुयोंका प्यारा और भाईयों वाला होताहै और शुक्रके त्रिंशांशमें कामी और सुंदर देहवाला और सुखी होताहै ॥ २८९ ॥ इतित्रिंशांशफलम् ॥ इतिश्रीजातकखंडेशारीरकाध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अवसूर्यादिग्रहोंके भावादि फलोंका अध्यायकहतेहैं तिसमें प्रथम सूर्यका भाव फल कहतेहैं जिस मनुष्यको लग्नमें सूर्यस्थितहोवेतोथोडेकेशोंवाला और क्रत्यमें आलसी देहवाला और वडे प्रचंडक्रोध वाला और लंवेदेह वाला और कंडूरोगवाला और नेत्र रोग वाला और कठोर देहवाला और शूरवीर और क्षमायुक्त और निर्लज्ज होताहै और कर्कट राशीमें होवे तव कमलकीन्याईं नेत्रवाला और मेषराशीमें होवे तव स्थितिके हरणेवाला और सिंहराशीमें स्थित होवे तव रात्र्यंध दीपवालाऔर तुला राशीमें स्थित होवे तव दरिद्री और नष्ट पुत्रोंवाला होताहै १ और जवसूर्यदूसरे भावमें स्थित होवे तव धनकर्के और पुत्रकर्केऔर श्रेष्ट वाहन कर्के रहित होताहै और वुद्धिहीन और मित्रभावसें रहित होताहै और दूसरेके घरमें निवासकर्ताहै २ और जव तीसरे भावमें सूर्यस्थित होवे तव मीठा वोलने वाला और धन और वाहनोंकर्के युक्त होताहै और श्रेष्ट कर्मोंमें चित्त

अथग्रहभावादिफलाध्यायः तत्रतन्वादिभावेसूर्यफलम् लग्नेर्केल्पकचःक्रियालसतनुःक्रोधीप्रचंडोन्नतोपामीलोचनरुक्सुकर्कशतनुःशूरोक्षमीनिर्घृणःफुल्लाक्षःशशिभेक्रियेस्थितिहरःसिंहेनिशांधःपुमान् दारिद्र्योपहतोविनष्टतनयःसंस्थस्तुलासंज्ञिके १ धनसुतोत्तमवाहनवर्जितोहतमतिःसुजनोज्झितसौहृदः परगृहोपगतोहिनरोभवेद्दिनमणौद्रविणादिसंस्थितिः २ प्रियंवदःस्याद्धनवाहनाढ्यःसुकर्मचित्तोनुचरान्वितश्च मितानुजःस्यान्मनुजोवलीयान्दिनाधिनाथेसहजोधिसंस्थे ३ सौख्येनयानेनधनेनहीनंतातस्यचित्तोपहतप्रवृत्तं चलन्निवासंकुरुतेपुमांसंपातालशालीनालिनीविलासी ॥ ४ स्वल्पापत्यंशैलदुर्गेशभक्तंसौख्यायुक्तंसत्क्रियार्थैर्विमुक्तम् ॥ भ्रांतस्वांतंमानवहिप्रकुर्यात्सूनुस्थानेभानुमान्वर्त्तमानः शश्वत्सौख्येनान्वितःशत्रुहंतासत्वोपेतश्चारुयानोमहौजाः पृथ्वीभर्त्तुःस्यादमात्योहिमर्त्यःशत्रुक्षेत्रेमित्रसंस्थेथवादिस्यान् ॥ ६ ॥

लगाने वाला औरचाकरों कर्के युक्त होताहै और थोडे भाईयों वाला और वडावलवानहोताहै ३ और जव चतुर्थ भावमें सूर्य स्थित होवे तव मनुष्य को सुखकर्के और वाहनों कर्के और धन कर्के हीन कर्ताहै और पितासें विरोधकर्ताहै और अपने घरमें स्थित नहिं रहणे देताहै ॥ ४ ॥ और जिसको पंचम भावमें सूर्य स्थितहोताहै सो मनुष्य थोडी संतान वाला और वन दुर्गा की भक्ति और शिवजीकी भक्ति कर्ताहै और सुखसें रहितहोताहै और श्रेष्ठकर्म और श्रेष्ट धनोंकर्के हीन होताहै और भ्रांतचित्त होताहै ॥ ५ ॥ और जिसको छठे भावमें सूर्य स्थित होताहै सो निरंतर सुखको प्राप्तहोताहै और शत्रुयों को हतकर्ताहै और पराक्रमकर्के युक्त होताहै और सुंदर वाहनोंवाला और वडे तेज वाला होताहै और राजाका मंत्री होताहै ॥ ६ ॥

और जिसकों सप्तमभावमें सूर्य स्थित होताहै सो लक्ष्मी कर्केरहित औरदेहकी शोभाकर्के हीन और भय कर्के औररोगोंकर्के पीडित औरखोटे स्वभाव वाला होताहै और राजाके कोप कर्के दुखकों प्राप्त होना है ७ और जिसकों अष्टमभावमें सूर्यस्थितहोताहैसोमदहृष्टिवालाऔर बहुतशत्रुयों वाला और बुद्धि हीन और बडे क्रोध वाला होताहै और थोडे धन वाला और विशेष से दुष्ट अंगों वाला होताहै ॥ ८ ॥ और जिसकों नवम स्थान में सूर्य स्थित होवे सो धर्म कर्ममें रत और श्रेष्ट बुद्धि वाला और पुत्र मित्रके सुख कर्के युक्त सदाहोताहै और माताके वर्गमें विरोधी होताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमें सूर्य स्थित होताहै सो निश्चय कर्के श्रेष्ट बुद्धि वाला

श्रियाविमुक्तोहतकायकांतिर्भयामयाभ्यांसहितःकुशीलः नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यःसीमंतिनीसद्मनिपद्मनीशे ७ नेत्राल्पत्वशत्रुवर्गाभिवृद्धिंबुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः अर्थाल्पत्वकाश्यमंगेविशेषादायुःस्थानेपद्मिनीप्राणनाथे ८ धर्मकर्मनिरतश्चसन्मतिःपुत्रमित्रजसुखान्वितःसदा मातृवर्गविषमोभवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवनेदिवामणौ ॥ ९ ॥ सद्बुद्धिवाहनधनागमनानिनूनंभूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि साधूपकारकरणंमणिभूषणानिमेपूरणेदिनपतिःकुरुतेनराणां १०, गीतप्रीतिंचारुकर्मप्रवृत्तिंचंचत्कीर्तिवित्तपूर्तिंनितांतं भूपात्प्राप्तिंनित्यमेवप्रकुर्यात्प्राप्तिस्थानेभानुमान्मानवानाम् ॥ ११ ॥ तेजोविहीनेनयनेभवेतांतातेनसाकंगतचित्तवृत्तिः विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयातेकांतेनलिन्याःफलमुक्तमार्यैः ॥ इति रवेः ॥ १२ ॥

और वाहनों वाला और धन लाभ वाला होताहै और राजा की कृपा और पुत्रोंके सुख वाला होताहै और साधूयों में उपकारोंके करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश भावमें सूर्य स्थितहोताहै सो गीतमें प्रीति वाला और श्रेष्ट कर्मोंमें प्रवृत्ति वाला और बडे यश वाला और बडे धन वाला होताहै और राजा से नित्य प्रति लाभ वाला होताहै ॥ ११ ॥ और जिस मनुष्य को सूर्य व्ययभावमें स्थित होताहै सो तिसके नेत्र तेज कर्के हीनहोतेहै अर्थान्मंद दृष्टि वाला होताहै और पिताके साथविरोध बुद्धि वाला होताहै और लोकों के साथ भिविरोध कर्ताहै इहे व्य भाव [illegible] ने कहाहै ॥ १२ ॥ इतिरवेः ॥

अबचंद्रमाकाभावफलकहतेहे जिसमनुष्यकों कर्कटऔर वृपराशीका चंद्रमालग्नमेंस्थितहोवे सो चतुरऔर रूपवान् और धनी और भोगी और श्रेष्ठगुणोंवालाहोताहे और कर्कट वृपराशीकेविना और राशियोंमेंस्थितहोवे तब उन्मत्त और नीच और बोला और विकलांग अथवा जल्हाहोताहे ॥ १ ॥ औरजिसकों दूसरेभावमेंचंद्रमाहोताहे सो सुख और पुत्र और धन कर्कयुक्त और श्रेष्ठहोताहे जबचंद्रमा पूर्णहोवेतब यथोक्तफलकर्ताहे और जबक्षीणचंद्रमादूसरे भावमेंहोवेतबगदगदवाणीवाला और धनहीनऔर बुद्धिहीनहोताहे और चंद्रमाकेहीनकला और अधिककलाहोणेसें अनुपात करकेंखोटा औरचंगाफलहोताहे ॥ २ ॥ श्रोर जिसकोंतीसरेभावमें चंद्रमाहोताहे सो हिंसाकरणे वाला श्रोर गर्ववाला श्रोर कृपण श्रोर थोडीबुद्धिवाला श्रोर बंधुजनोंके आश्रयरहणे वाला होताहे श्रोर दयासें श्रोर भयसेंरहितहोताहे ॥ ३ ॥ श्रोर जिसकोंचतुर्थभावमें चंद्रमाहोताहे सो जलस्थानसें उत्पन्न

अथचंद्रभावः दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्यश्चंद्रेकुलीरवृषभाजगतेविलग्ने उन्मत्तनीचबधिरोविकलोऽथमूकः शेषेपुनाभवतिहीनतनोविशेषात् ॥ १ ॥ सुखात्मजद्रव्ययुतोविनीतोभवेन्नरःपूर्णविधौद्वितीये क्षीणेस्खलद्वाक्विधनोल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वेफलतारतम्यम् ॥ २ हिंस्रःसगर्वःकृपणोल्पबुद्धिर्भवेज्जनोबंधुजनाश्रयश्च दयाभयाभ्यांपरिवर्जितश्चद्विजाधिराजेसहजेप्रसूतौ ॥ ३ ॥ जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिकृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम् प्रसूतिकालेकुरुतेकलावान् पातालसंस्थोद्विजदेवभक्तिम् ॥ ४ ॥ जितेंद्रियःसत्यवचाःप्रसन्नोधनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः सुसंग्रहीस्यान्मनुजःसुशीलःप्रसूतिकालेतनयालयेब्जे ॥ ५ ॥ मंदाग्निःस्यान्निर्दयःक्रौर्ययुक्तोनाल्पालस्योनिष्ठुरोदुष्टचित्तः रोपावेशोत्यंतसंजातशत्रुक्षेत्रेरात्रिनाथेनरःस्यात् ॥ ६ ॥ महाभिमानीमदनातुरश्चनरोभवेत्क्षीणकलेवरश्च धनेनहीनोविनयेनचंद्रेचंद्राननस्थानविराजमाने ॥ ७ ॥ नानारोगैःक्षीणदेहोतिनिस्वश्चौरारातिक्षोणिपालाभितप्तः चित्तोद्वेगैर्व्याकुलोमानवःस्यादायुःस्थानवर्तमानेहिमांशौ ॥ ८ ॥

जोधनतिसकोंप्राप्तहोताहे श्रोर खेतीकासुख श्रोर स्त्रीकासुख श्रोर वाहनोंके सुखकर्केयुक्तहोताहे ४ श्रोर जिसकों पचम भावमें चद्रमास्थितहोताहे सो इंद्रियोंकों जीतनेंवाला श्रोर सत्यबोलनेवाला श्रोर प्रसन्नमूर्तिः श्रोर धन श्रोर पुत्रोंके सुखवाला श्रोर श्रेष्ठसंग्रहकरणेवाला होताहे ॥ ५ श्रोर जिसकोंछठे भावमेंचद्रमा होताहे सो मंदाग्निवाला श्रोर दयाकर्के रहित और क्रूरताकर्केयुक्त औरबडा आलसी और कठोर और दुष्टस्वभाववाला औरक्रोधी और बहुतशत्रुयोंवालाहोताहे ॥ ६ ॥ और जिसकोंसप्तमभावमेंचद्रमाहोताहे सो बडाअभिमानी श्रोर कामातुर श्रोर दृशदेहवाला श्रोर धनकर्के श्रोर नम्रताकर्के हीनहोताहे ॥ ७ ॥ श्रोर जिसकों अष्टम भावमें चंद्रमाहोताहे सोअनेकप्रकारोंकेरोगोंकर्के कृशदेहवालाहोताहे और निर्धनहोताहे श्रोर चोरोंकर्के और शत्रुयोंकर्के और राजाकर्केसंतापकों प्राप्तहोताहे और चित्तकेउद्वेगो कर्केव्याकुलहोताहे ॥ ८ ॥

और जिसकों नवमभावमें चंद्रमा होताहै सो स्त्रीपुत्र और धनकर्के युक्त होताहै और पुराण श्रवण करणेमें प्रीतिवाला और श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ तीर्थ करणेमें तत्पर होताहै ९ और जिसकों दशम भावमें चंद्रमा स्थित होवै सो राजासें धनकी लब्धिवाला और श्रेष्ठ यशवाला और श्रेष्ठ देहवाला होताहै और पराक्रम और संतोषकर्के युक्त होताहै और बडे प्रकाशवाली स्थिर-लक्ष्मीकों प्राप्त होताहै १० और जिसको एकादश भावमें चंद्रमा स्थित होताहै सो श्रेष्ठ मानकों प्राप्त होताहै और अनेक प्रकारोंकेवाहनोंकों प्राप्त होताहै और यशकों प्राप्त होताहै और श्रेष्ठगुणोंकों प्राप्त होताहै और प्रसन्नताकों प्राप्त होताहै ११ और जिसकों व्ययभावमें चद्रमा स्थित होताहै सो श्रेष्ठस्वभाव कर्के हीन होताहै और मित्रोंकर्के हीन होताहै और नेत्रोंमेंविकलतावाला होताहै और वहुत शत्रुयों वाला होताहै और क्रोधवाला विशेषसें होताहै १२ इतिचद्रस्य

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नःपुराणवार्त्ताश्रवणानुरक्तः सुकर्मसत्तीर्थपरोनरःस्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ९ क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशालाकीर्त्तिर्मूर्त्तिःसत्वसंतोषयुक्ता चंचल्लक्ष्मीःशीलसंशालिनीस्यान्मानस्थनेयामिनीनायकश्चेत् १० सन्माननानाविधवाहनाप्तिःकीर्त्तिश्चसद्भोगगुणोपलब्धिः प्रसन्नतालाभविराजमानेताराधिराजेमनुजस्यनूनम् ११ हीनत्वंवैचारुशीलेनमित्रैर्वैकल्यंस्यान्नेत्रयोःशत्रुवृद्धिः रोषावेशःपूरुषाणांविशेषात्पीयूषांशौद्वादशेवेश्मनीह १२ इति चंद्रस्य ॥ अथभौमभावफलं ॥ अतिमतिभ्रमतांचकलेवरक्षतयुतंवहुसाहसमुग्रताम् तनुभृतांकुरुतेतनुसंस्थितोऽवनिसुतोगमनागमनानिच १ अधनतांकुजनाश्रयतांतथाविमतितांकृपयाऽतिविहीनतां तनुभृतांविदधातिविरोधितांधननिकेतनगोऽवनिनंदनः २ भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारतांचारुपराक्रमश्च धनानिचभ्रातृसुखोज्झितत्वंभवेन्नराणांसहजेमहीजे ३ दुःखंसुहृद्वाहनतःप्रवासोकलेवरेरुक्वलताबलत्वं प्रसूतिकालेकिलमंगलाख्येरसातलस्थेफलमुक्तमार्यैः ४

अथभौमकाभावफलकहतेहै जिसकोंतनुभावमें मंगलस्थित होताहै तिसकोंवुद्धिमें अत्यंत भ्रम होताहै और तिसकादेहघाओंकर्के और व्रणोंकर्केयुक्त होताहै और बडे उग्र हठवाला होता है और गमनागमनमें भ्रमता रहताहै १ और जिसकों दूसरेस्थानमें मंगलहोताहै सो निर्धनताकों और खोटेजनके आश्रयकों और खोटीवुद्धिकोंप्राप्तहोताहै और दयाकर्के हीन होताहै २ और जिसकों तीसरे भावमें मंगल होताहै सो राजाकी कृपाकों प्राप्त और श्रेष्ठसुखकों प्राप्त और वडी उदारता वाला और वडे श्रेष्ठपराक्रम वाला होताहै और धनकों प्राप्त होताहै और भ्राताके सुखसें हीन होताहै ३ और जिसकों चतुर्थभावमें मगलस्थित होताहै तिसकों मित्रोंसें और वाहनोंसें दुःख होताहै और विदेशमें वास होताहै तिसकेदेहमें रोगप्रवल होताहै और निर्वलहोताहै इहेजन्मलग्नमें चतुर्थ भावमें मंगलकाफल श्रेष्ठजनोंने कहाहै ४

उौर जिसकों पंचमभावमेंमंगलस्थितहोवे तिसकों कफऔरवायुककेंदेहमेंव्याकुलताहोतीहै उौर स्त्रीसें उौर मित्रोंसें उौर पुत्रसेंसुखकी हानिहोतीहै उौर तिसकीबुद्धिचंचलहोतीहै स्थिरनहिं होतीहै ५ उौर जिसकोंछठेभावमेंमंगलस्थितहोवे तिसकाजठराग्निविशेषसेंप्रबलहोताहै उौरकों धहोताहै उौरशत्रुयोंकानाशकर्त्ताहै उौर श्रेष्ठजनोंकोसंगतिकर्त्ताहै उौर कामकीवृद्धिवालाहोताहै ६ उौर जिसकोंसप्तमभावमेंमंगलस्थितहोताहै,,तिसकादेहअनेकप्रकारोंके अनर्थोंककेंउौरव्यर्थाचिंता करकेंक्षीणहोताहै उौरशत्रुयोंकेसमूहोंककेंपीडितहोताहै उौर स्त्रीसेंउत्पन्नभयाजोदुःखतिसककेंअत्यंतत प्तहोताहै ७ उौरजिसकोंअष्टमभावमेंमंगलहोवे तिसकेनेत्रोंमेंविकलताहोतीहै उौरदुर्भगताहोतीहै उौर तिसकों रक्तसें पीडाउौर नीचकर्ममें प्रवृत्तिहोतीहै उौर तिसकी बुद्धिमें अंधताहोतीहै श्रोर श्रेष्ठजनों कीनिंदाकर्ताहै ८ श्रोर जिसकों नवमभावमें मंगल होताहै तिसकामन हिंसाकरणेमें स्थितहोताहै

कफानिलाद्याकुलताकलत्रान्मित्राच्चपुत्रादपिसौख्यहानिः मतिर्विलोलावि पुलात्मजेऽस्मिन्प्रसूतिकालेतनयालयस्थे ५ प्रावल्यंस्याज्जाठराग्नेर्विशेषा त्क्रोधावेशःशत्रुवर्गोपशांतिः सद्भिःसंगोऽनंगवृद्धिर्नराणांगोत्रापुत्रेशत्रुसंस्थेप्र सूतौ ६ नानानर्थैर्व्यर्थचिंतोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवहीनदेहं दारारागात्यंतदुःख प्रतप्तंदारागारांगारकोऽयंकरोति ७ वैकल्यंस्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वंरक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः बुद्धेरांध्यंसज्जनानांचानिंदारंध्रस्थानेमेदिनीनंदनेस्मिन् ८ हिंसाविधानेमनसाप्रवृत्तिभूमीपतेर्गौरवतोल्पलब्धिम् क्षीणंचपुण्यंद्रविणंनरा णांपुण्यस्थितःक्षोणिसुतःकरोति ॥ ९ ॥ विश्वंभरापतिसमत्वमतीवतोषंसत्त्सा हसंपरजनोपकृतौप्रयत्नम् चंचद्विभूषणमणिद्विविधागमाश्चमेपूरणेधरणिजः कुरुतेनराणां ॥ १० ॥ ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमंसुललितानि चवाहनानि भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानिदद्यादवाप्तिभवनेहिसदावनेयः ११ स्वामित्रवैरंनयनातिवाधांक्रोधाभिभूतांविकलत्वमंगे धनव्ययंवंधनमल्पतेजो व्ययेधराजोविदधातिनूनम् ॥ १२ ॥ इतिभौमस्य ॥

श्रोरराजासें गौरवता थोडी प्राप्तहोतीहै श्रोर पुण्य श्रोर धन क्षयकों प्राप्तहोताहै ॥ ९ ॥ श्रोर जिस कों दशमभावमें मंगल स्थितहोताहै सो राजाके समान प्रसन्नताकों प्राप्तहोताहै श्रोर दूसरे के उप कार करणेमें श्रेष्ठ उत्साहसें यत्नकरणे वाला होताहै श्रोर सुंदर भूषण मणियां करकेंयुक्तहोताहै श्रोर दोप्रकार करकें धर्म धर्मकरकें लाभकों प्राप्तहोताहै ॥ १० ॥ श्रोर जिसकों एकादश भावमें मंगल होताहै तिसकों तांबेका श्रोर मुंगेयोंका श्रोर स्वर्णका श्रोर वस्त्रोंका लाभहोताहै श्रोर सुंदर वाह- नोंका लाभहोताहै श्रोर राजाकी कृपा श्रोर वडे कौतक श्रोर मंगलोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ११ ॥ श्रोर जिसकों व्यय भाव में मंगल स्थित होताहै तिसकों मित्रों सें विरोध उौर नेत्रोंमें अत्यंत पीडा उौ- र क्रोधकरकें युक्त उौर अंगोंमें निर्बलता कर्त्ताहै उौर धनका नाश उौर वंधन उौर थोडे तेजवालाम नुष्यकों कर्त्ताहै ॥ १२ ॥ इतिभौमस्य ॥

अथबुधकाभावफलकहतेहैं जिसकों जन्मकालमें लग्नमे बुधहोवे सो वडाशात औरनम्र औरवडाउदार चित्तहोताहै और सर्वदाकालआचारमें तत्पर और पंडितहोताहै औरविद्यावान् औरकलाकेजाननेवाला औरवहुतपुत्रोंवालाहोताहै १ औरजिसकोंदूसरेभावमेंबुध होताहै सोनिर्मलस्वभाववाला औरगुरोंकाप्यारा औरकुशलताकरकेयुक्त औरवडेसुखवालाहोताहै औरवडीशोभाकरके औरउच्चपदवी करके युक्त होताहै २ औरजिसकों तीसरे भावमे बुधहोताहैसो हठसे अपने संवाधियोंकरयुक्तहोताहै औरचित्तकी शुद्धिसें रहित औरसुखसें रहितहोताहै और अपनी इच्छाकरके शुभकर्मकों कर्ताहै ३ औरजिसकोचतुर्थ भावमे बुधहोवे सो श्रेष्ठ वाहनों करके युक्त और धन धान्य करके युक्त होताहै और संगीतमे और नृत्यमेंरुचिवाला और विद्या औरभूषणों कीप्राप्तिवालाहोताहै ४ औरजिसकोंपंचमस्थानमेंबुधहोवे

॥ अथबुधभावफलम् ॥ शांतोविनीतःसुतरामुदारोनरः सदाचारपरोऽतिधीरः विद्वान्कलाज्ञोविपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौजननेतनुस्थे १ विमलशीलयुतोगुरुवत्सलःकुशलताकलितार्थमहत्सुखः विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतोधन निकेतनगेशशिनंदने २साहसान्निजजनैःपरियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितोहतसौख्यः मानवःकुशलितेप्सितकर्ताशीतभानुतनयेनुजसंस्थे ॥ ३ ॥ सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतःसंगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः विद्याविभूपागमनाधिशालीपातालगेशीतलभानुसूनौ ४ पुत्रसौख्यसहितंवहुमित्रं मंत्रवादकुशलंचसुशीलम् मानवंकिलकरोतिसलीलं शीतदीधितिसुतःसुतसंस्थः ५ वादप्रीतिःसामयोनिष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रेरात्रिनाथात्मजेस्मिन् ६ चारुशीलविभवैरलंकृतःसत्यवाक्यनिरतोनरोभवेत् कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनींदुजे ७ भूतप्रसादाप्तसमस्त सपन्नरोविरोधीसुतरांसुगर्वः सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्तारंध्रेभवेच्चंद्रसुतः प्रसूतौ ८

सो पुत्रकेसुखकोंप्राप्तहोताहै और वहुतमित्रों वालाहोताहै औरमंत्रवादमें कुशल औरश्रेष्ठस्वभाववाला होताहै औरनिश्चयकरके लीला करके युक्तहोताहै ५ औरजिसकोंछठेभावमे बुध स्थितहोवे सो वादमे प्रीतिवाला और रोगकरकेयुक्त और कठोरहृदयवाला और अनेकउपद्रवोंकरके पीडित और नित्यप्रति आलस्यकरके व्याकुलचित्तवालाहोताहै ६ और जिसको सातमें भावमे बुधस्थितहोवे सो सुंदरस्वभाव और ऐश्वर्योंकरके युक्तहोताहै औरसत्यवोलनेवालामनुष्यहोताहै औरस्त्री औरस्वर्ण और पुत्रोंकरकेयुक्त होताहै ७ औरजिसको अष्टमभाव मेबुधस्थितहोवे सोमनुष्य भूतोंकीदयामें सपूर्णसंपदाको प्राप्तहोताहै और विरोधकरनेवाला होताहै और वडेगर्ववाला होताहै और सपूर्णयत्नोंकरकेदूसरेकेद्रव्यकोहरणे वाला होताहै ८

श्रोर जिसको नवमभाव मे वुधस्थितहोताहै सो उपकारके करणेवाला श्रोर श्रेष्ट विद्याके जानने वाला श्रोर श्रादर करणेवाला श्रोर चाकरोंका सुख श्रोर धनका सुख श्रोर पुत्रों के सुखवाला श्रोर विशेषकर्के संसारके तरणेकी इछावाला होताहै ॥ ९ ॥ श्रोर जिसको दशमस्थानमें वुधस्थित होवे सो ज्ञानवुद्धिवाला श्रोर श्रेष्ट कर्मो वाला श्रोर श्रनेक संपदा कर्केयुक्त श्रोर राजमान्य होताहै श्रोर सुंदरलीलाकर्केवाग् विलासके करणे वालाहोताहै १० श्रोर जिसकोंएकादशस्थानमें वुधस्थित होवे सो भोगोंमें युक्त श्रोर वडे धनवाला श्रोर नम्र श्रोर नित्य श्रानंदमें प्राप्त श्रोर श्रेष्ठस्वभाववाला श्रोर वडे वलवाला होताहै श्रोर श्रनेक विद्यामे श्रभ्यास करणे वाला होताहै ॥ ११ ॥ श्रोर जिसकों व्ययभावमें वुधहोवे सो दयाकर्के हीन श्रोर मित्रों कर्केहीन श्रोर श्रपने कार्यमे चतुर श्रोर श्रपने पक्षको जीतने वाला श्रोर धूर्त्त श्रोर मलीन होताहै ॥ १२ ॥ इतिवुधस्य ॥ श्रथवृहस्पतिका

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादर स्यादनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षोविशेषात् वितरणकरणोद्यन्मानसोमानवश्चेदमृतकिरणजन्मापुण्यधामागमोयम् ॥ ९ ॥ ज्ञानप्रज्ञ श्रेष्ठकर्मामनुष्योनानासंपत्संयुतोराजमान्यः चंचल्लीलावाग्विलासाधिशालीमानस्थानेवोधनेवर्त्तमाने ॥ १० ॥ भोगासक्तोऽत्यंतवित्तोविनीतोनित्यानंदश्चारुशीलोवलिष्ठः नानाविद्याभ्यासकृन्मानव स्याल्लाभस्थानेनंदनेशीतभानोः ॥ ११ ॥ दयाविहीन.स्वजनोज्झितश्चस्वकार्यदक्षोविजितात्मपक्षः धूर्त्तोनितांतंमलिनोनर.स्याद्व्ययोपपन्नेद्विजराजसूनौ ॥ १२ इतिवुधस्य ॥ श्रथगुरुभावः॥ विद्यासमेतोभिमतोहिराज्ञांप्राज्ञःकृतज्ञोनितरामुदारः नरोभवेच्चारुकलेवरश्चतनुस्थितेचित्रशिखंडिसूनौ ॥ १ ॥ सद्रूपविद्यागुणकीर्त्तियुक्तःसंत्यक्तवैरोपिनरोगरीयान् त्यागीसुशीलोद्रविणेनपूर्णोगीर्वाणवंद्येद्रविणोपयाते ॥ २ ॥ सौजन्यहीन.कृपण कृतघ्न कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च नरोग्निमांद्याबलतामेत.पराक्रमेशक्रपुरोहितेस्मिन् ॥ ३ ॥ सन्माननानाधनवाहनाद्यैः सजातहर्षं पुरुष सदैव नृपानुकंपासमुपात्तसपद्भोलिभृन्मंत्रिणिभूतलस्थे ४

भावफलकहतेहै जिसकोंवृहस्पति तनुभावमें स्थितहोताहै सो विद्याकर्के सयुतहोताहै श्रोर राजाकी श्राज्ञामानने वाला श्रोर चतुर श्रोर कृतज्ञ श्रोर उदारचित्त होताहै श्रोर सुंदर देहवाला होताहै १ ॥ श्रोर जिसकों वृहस्पति दूसरे भावम स्थित होताहै सो श्रेष्ट रूप श्रोर विद्या श्रोर गुण श्रोर यश कर्क युक्तहोताहै श्रोर वैभावको त्यागनें वाला श्रोर त्यागी श्रोर श्रेष्ठ स्वभाववाला श्रोर धनकर्के पूर्ण होताहै ॥ २ ॥ श्रोर जिसको तीसरे भावमें वृहस्पति होताहै सो सुहृद्भावकर्केहीन श्रोर कृपण श्रोर कृतघ्न श्रोर स्त्री श्रोर पुत्रोंमें प्रीतिसें रहित श्रोर मंदाग्निकर्के वलहीन होताहै ॥ ३ ॥ श्रोर जिसको चतुर्थभावमे वृहस्पति स्थितहोवे सो सन्मानको प्राप्तहोताहै श्रोर श्रनेक प्रकारों काधन श्रोर वाहनादियो कर्के युक्तहोताहै श्रोर सर्वदाकाल राजाकी कृपासें संपदाकों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥

श्रौर जिसकों पंचम भावमें बृहस्पति स्थितहोवे सो श्रेष्टमित्र श्रौर पुत्र श्रौर श्रेष्ट मत्रशास्त्र श्रौर अनेक प्रकारोंके श्रेष्ट वाहण श्रौर अनेक प्रकारोंके धनकों प्राप्त होताहै श्रौर कोमल वाणी कर्के वाग्विलासकों कर्ताहै ५ श्रौर जिसकों छठे भावमें बृहस्पति स्थित होवे सो श्रेष्ठ गीत श्रौर श्रेष्ट विद्यामे चित्त हत होताहै अर्थात् गीत श्रौर विद्यामें तिसकी चित्तवृत्ति नहि लगतीहै यशमें प्रीति कर्ताहै शत्रुजनोंकों हत कर्ताहै श्रौर प्रारब्ध कार्यमें आलस्य करणेवाला होताहै ६ श्रौर जिसकों सप्तम भावमें बृहस्पति होवे सो शास्त्रअभ्यासमें चित्तकों लगावणेवाला श्रौर नम्र श्रौर स्त्री श्रौर धनका अत्यंत सुख करणे वाला श्रौर मंत्री श्रौर काव्यके करने वाला होताहै ७ श्रौर जिसकों अष्टम भावमें बृहस्पति स्थित होवे सो दूतवृत्तिकों कर्णेवाला श्रौर मलीन दीन श्रौर विवेककर्केही न होताहै श्रौर नम्रतासें रहित श्रौर आलस्य कर्के सहित श्रौर कृशदेह वाला होताहै ८ श्रौर जि

सन्मित्रपुत्रोत्तममंत्रशास्त्रमुख्यानिनानाधनवाहनानि दद्याद्गुरुःकोमलवाग्विलासंप्रसूतिकालेतनयालयस्थः ५ सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिःकीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता प्रारब्धकार्यालसकृन्नरःस्यात्सुरेंद्रमंत्रीयदिशत्रुसंस्थः ६ शास्त्राभ्यासासक्तचित्तोविनीतःकांतावित्तात्यंतसंजातसौख्यः मंत्रीमर्त्यःकाव्यकर्ताप्रसूतौजायाभावेदेवदेवाधिदेवे ७ प्रेष्योमनुष्योमलिनोतिदीनोविवेकहीनोविनयोज्झितश्च नित्यालसःक्षीणकलेवरःस्यादायुर्विशेषेवचसामधीशे ८ नरपतेःसचिवःसुकृतीकृतीसकलशास्त्रकलाकलनादरः व्रतकरोहिनरोद्विजतत्परःसुरपुरोधसिवैतपसिस्थिते ९ सद्राजचिन्होत्तमवाहनानिमित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि यशोभिवृद्धिंबहुधाविधत्तेराज्येसुरेज्योविजयंनराणाम् १० सामर्थ्यमर्थागमनानिनूनंसद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि भूपप्रसादंकुरुतेनराणांगीर्वाणवंद्योयदिलाभसंस्थः ११ नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपंपापात्मानंसालसंत्यक्तलज्जम् बुद्ध्याहीनंमानवंमानहीनंवागीशोयंद्वादशस्थःकरोति ॥ १२ ॥ इतिगुरोः ॥

सकों बृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे सो राजाका मंत्री श्रौर धर्मात्मा श्रौर यज्ञकरणेवाला श्रौर संपूर्ण शास्त्रके विचारमें चित्तकों धारणे वाला श्रौर व्रतोंके करणे वाला श्रौर ब्राह्मणोंके पालने वाला होताहै ९ श्रौर जिसकों दशम भावमें स्थित बृहसपति होवे सो श्रेष्ठराजलक्षणोंकों धारणे वाला श्रौर श्रेष्ट वाहनो वाला श्रौर मित्र श्रौर पुत्र श्रौर धन स्त्री के सुखकों प्राप्त होताहै श्रौर अनेक प्रकारोंके यशकों प्राप्तहोताहै १० श्रौर जिसकों एकादशभावेंमंबृहस्पति होताहैसो बडीसमर्थाकर्केयुक्तश्रौर धनके लाभकों निश्चयकर्के प्राप्त होताहै श्रौर श्रेष्ठवस्त्र श्रौर श्रेष्ठवाहणोंवाला होताहै श्रौरराजाको रुपावालाहोताहै ११ श्रौर जिसकोंव्ययभावमें बृहस्पतिस्थितहोवे सो अनेकप्रकारोंके चित्तके उद्वेगोंकर्के क्रोधकों प्राप्त होताहै श्रौर पाप करणे वाला श्रौर आलस्य कर्के युक्त श्रौर लज्जाकों त्याग करणेवाला श्रौर बुद्धि श्रौर मानकर्के हीन होताहै १२ ॥ इतिगुरोः ॥

॥ अवशुक्रकाभावफलकहतेहैं ॥ जिसकों तनुभावमें शुक्रस्थितहोवे सो वहुतकलाके जानने में श्रेष्ट होताहै और निर्मलवाणी वाला और श्रेष्ट स्त्रीकर्के काम चेष्टा कों करणे वाला होताहै और राजमा. नकों और धनकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंदूसरे भावमें शुक्रहोवे सो श्रेष्ट अन्न और पानादि पदार्थों में प्रीतिवाला और श्रेष्ठ वस्त्र और भूषण और धन और वाहनों कर्के युक्तहोताहै और वि चित्रविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरेभावमे शुक्रहोवे सो कृश अंगों वाला और कृपण और दुष्टचित्तवाला और धनकर्के हीन और कामदेव कर्के पीडित होताहै और श्रेष्ट. जनोंकों क्लेशदेने वाला और वहुत खोटे व्यवहार करणे वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें शुक्र स्थित होवे सो मित्रोंका और भूमिका और ग्रामोंका और श्रेष्टवाहनोंका अनेकप्रकारों के सुखकों भोगने वाला और देवताकों वंदनाकरणेवाला और नित्यं प्रति आनंदकर्के युक्तसोमनुष्य

॥ अथशुक्रभावः ॥ वहुकलाकुशलोविमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवःपुमान् अवनिनायकमानधनान्वितोभृगुसुतेतनुभावगतेसति ॥ १ ॥ सदन्नपानाभिर तंनितांतंसद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यं विचित्रविद्यंमनुजंप्रकुर्याद्धनोपपन्नोभृगुनंद नोयम् ॥ २ ॥ कृशांगयष्टिःकृपणोदुरात्माद्रव्येणहीनोमदनानुतप्तः सतामभि घोवहुदुष्टचेष्टोभृगोस्तनूजेसहजेनरःस्यात् ॥ ३ ॥ मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानांनाना सौख्यंवंदनंदेवतानाम् नित्यानंदंमानवानांप्रकुर्यात्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थि तोयम् ॥ ४ ॥ सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः नरप्र तेर्गुरुगौरवभाङ्नरोभृगुसुतेसुतसद्मनिसंस्थिते ॥ ५ अभिमतोनभवेत्प्रमदाज नेननुमनोभवहीनतरोनरः विवलताकलितःकिलसंभवेभृगुसुतेरिगतेरिभया न्वितः ॥ ६ ॥ वहुकलाकुशलोजलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः अलि तरांनटिनीकृतसौहृदःसुनयनाभवनेभृगुनंदने ७ प्रसन्नमूर्तिर्नृपलब्धमानःश ठोतिनिःशंकतरःसगर्वः स्त्रीपुत्रचिंतासहितःकदाचिन्नरोष्टमस्थानगतेसितास्ये ८

होताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों पंचम भावमें शुक्र स्थित होताहै सो संपूर्ण काव्यों कर्के युक्त और पुत्र और वाहन और धान्योंकर्के युक्तहोताहै और वडे राजमान कों प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिस कों छठे भावमें शुक्रस्थितहोताहै सो स्त्रीजनोंका प्यारा नहिं होताहै और कामकर्के हीन होताहै और निर्वलताकर्के संयुक्तहोताहै और शत्रुयों के भयकर्के युक्तहोताहै ॥ ६ ॥ और सिसकों सप्तम भावमें शुक्रस्थितहोवे सो वहुतकलामे श्रेष्ठ होताहै और जलक्रीडाके करणे वाला और रतिविलास केकरणेमें वडाचतुर होताहै और अत्यंत चंचलस्त्रीसें सुहृद्भाव करणे वाला होताहै ॥ ७ ॥ और जिसकों अष्टमभावमें शुक्रस्थितहोताहै सो प्रसन्नमूर्त्ति और राजाके मानकों प्राप्त और शठ और नि शंकवोलनेवाला और गर्व कर्केयुक्त होताहै और स्त्रीकीऔर पुत्रकींचिंताकर्के कदाचित् युक्तहोताहै ८

और जिसकों नवम भावमे शुक्रहोताहै सो अभ्यागतोंमे और गुरु देवता की पूजामे और तीर्थ यात्रा में धन खर्च कर्ताहे और नित्य प्रति धन और वाहनों के सुख कों प्राप्तहोताहै और मुनियों की न्याईं रूप कों धारताहै और क्रोध कर्के रहित होताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमे शुक्र होवे सो सौ भाग्यता और सन्मान कर्के सोभा को प्राप्त होताहै और स्नान पूजन ध्यानमें चित्तकों लगाताहै और धनी होताहै और स्त्री पुत्र मे नित्य प्रति प्रीति करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसको एकादश भाव में शुक्र होवे सो श्रेष्ट गीत नृत्यमें प्रीति कों प्राप्त होताहे और नित्य प्रति यात्राकों चिंता कों प्राप्तहोताहै और श्रेष्ट कर्म और धर्म और वेदमें चित्त की वृत्तिको लगावताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्यय भाव में शुक्र स्थित होवें सो श्रेष्ट कर्मोंके मार्ग कों त्याग देताहे और विरोध करणे वाला होताहै और कामदेवके आराधनमे चित्तकोधारताहै और दया और

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः प्रतिदिनधनयानात्यतसंजातहर्षः मुनिजनसमवेष.पूरुषस्त्यक्तरोपो भवतिनवम भावेसंभवेभार्गवेस्मिन् ॥ ९ ॥ सौभाग्यसन्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमनाधनाढ्यः कांतासुतप्रीतिरतीवनित्यंभृगोःसुतेराज्यगतेनराणाम् ॥ १० ॥ सद्गीतनृत्यादरतानितांतं नित्यंचचिंतागमनानिनूनम् सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोःसुतोलाभगतोयदि स्यात् ॥ ११ ॥ संत्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधीमनोभवाराधनमानसश्च दयालुतासत्यविवर्जितःस्यात् काव्येप्रसूतौव्ययभावयाते ॥ १२ ॥ इतिभृगो. ॥ ॥ अथशनिभावः ॥ प्रसूतिकालेनलिनीशसूनु.स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतोविलग्ने कुर्यान्नरंदेशपुराधिनाथंशेषेष्वभद्रंसरुजंदरिद्रम् ॥ १ ॥ अन्यालयस्थोव्यसनाभिभूतोजनोज्झितः स्यान्मनुजश्चपश्चात् देशांतरेवाहनराजमानो धनाभियानेभवनेर्कसूनौ २ राजमानशुभवाहनयुक्तोग्रामपोवहुपराक्रमशाली पालकोभवतिभूरिजनानांमानवोहिरविजेसहजस्थे ३ पित्तानिलक्षीणवलंसुशीलमालस्ययुक्तंकलिदुर्वलांगं मालिन्यभाजंमनुजंविदध्याद्रसातलस्थोनलिनीशजन्मा ४

सत्यकर्के रहितहोताहै ॥ १२ ॥ इतिशुक्रस्य ॥ अवशनिकाभावफलकहतेहै जिसको जन्मसमयमें तनु भावमें शनि स्थित होवे और तुला मकर कुंभ राशिमेंस्थितहोवे सो मनुष्य देशोंका और पुर ग्रामों का स्वामी होताहै और शेष जो राशी हैं तिनमें तनु भाव गत शनि होवे तो नीच और रोगी और दरिद्री होताहै ॥ १ ॥ और उच्चस्वक्षेत्र के विना धनभावमें जिसकों शनि स्थित होताहै सो व्यसनों कर्के पीडित और मनुष्यों कर्के त्यक्त और विदेशमे वाहन कों और राजमान को प्राप्त होताहै २ और जिसकों तीसरे भावमे शनि स्थित होवे सो राजमान कर्के और श्रेष्टवाहनों कर्के युक्त होताहै और ग्रामका स्वामी और वडे पराक्रम वाला होताहै और वहुत जनोंकी पालना करणेवाला होताहै ३ और जिसकों चतुर्थभावमेशनिस्थितहोताहैसोपित्त और वायुकर्केक्षीणवलवाला और खोट स्वभाववालाऔर आलस्य कर्केयुक्त औरलडाई कर्के दुर्वलांग और धनहीन मनुष्यहोताहै ४

और जिसको पंचम भावमें शनि स्थित होताहे सो सर्वदा कालरोग कर्के कृश देह वाला होताहे और धन कर्के और कामकर्के रहितहोताहै और पुत्रकों पीडा करणे वाला होताहै ॥ ५ ॥ और जिसकों छठे भावमें शनि स्थित होता है सो शत्रुयोंके समूहकों जीतने वाला और गुणके जानने वाला और श्रेष्ठ कर्मों के जाननेवाला और अनेकोंकों परि पालन करणे वाला और पुष्ट देह वाला और प्रबल जठराग्नि वाला और बडा बलवान् होताहै ॥ ६ ॥ और जिसकों सप्तम भावमें शनिस्थित होवे सो रोग कर्के निर्बलताकों प्राप्त होताहै, और उपजीविका कर्के और मनुष्योंसें मिलाप कर्के रहित होताहै और स्त्री और घर और अन्नकों चिंतासें दुःखी होता है ॥ ७ ॥ और जिस कों अष्टमभाव में शनि स्थित होवे सो कृश देह वाला और निश्चय कर्के दद्रू और फोडेयों कर्के पीडित और संतोष सें रहित और आलस्य कर्के युक्त होताहै ॥ ८ ॥ और जिसकों नवम

सदागदक्षीणतरंशरीरंधनेनहीनत्वमनंगहानिम् प्रसूतिकालेनलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितःपुत्रभयंकरोति ॥ ५ ॥ विनिर्जितारातिगणोगुणज्ञःसुज्ञाभ्यनुज्ञा परिपालकःस्यात् पुष्टांगयष्टिःप्रबलोदराग्निर्नरोर्कपुत्रेसतिशत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥ आमयेनबलहीनतांगतोहीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः कामिनीभवनधान्यदुःखितःकामिनीभवनगेशनैश्चरे ॥ ७ ॥ कृशतनुर्ननुदद्रूविचर्चिकाप्रभवतो भयतोपविवर्जितः अलसतासहितोहिनरोभवेन्निधनवेश्मनिभानुसुतेस्थिते ॥ धर्मकर्मसहितोविकलांगोदुर्मतिर्हिमनुजोऽतिमनोज्ञः संभवस्यसमयेयदिकोणस्त्रित्रिकोणभवनेयदिसंस्थः ॥ ९ ॥ राज्ञःप्रधानमतिनीतियुतंविनीतंसद्ग्रामवृंदपुरभेदनकाधिकारम् कुर्यान्नरंसुचतुरंद्रविणेनपूर्णमेपूरणेहितरणस्तनुजः करोति ॥ १० ॥ कृष्णाश्वानींद्रनीलोर्णकानांनानाचंचद्वस्तुदंतावलानाम् प्राप्तिंकुर्यान्मानवानांबलीयान्प्राप्तिस्थानेवर्त्तमानेर्कसूनौ ॥ ११ ॥ दयाविहीनोविधनोव्ययार्त्तःसदाऽलसोनीचजनानुयातः नरोऽगभंगोज्झितसर्वसौख्योव्ययस्थितेभानुसुतेप्रसूतौ ॥ १२ ॥ इतिशनेः ॥

भावमें शनि स्थित होताहै सो धर्म कर्म कर्के युक्तहोताहै और व्याकुल अंगों वाला और खोटी बुद्धि वाला और अत्यंतता कर्के अपने मनकों मानने वाला होताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमें स्थित शनिहोवे सो राजाका मंत्री और नीति कर्के युक्त और नम्र होताहै और श्रेष्ठ ग्राम और पुरों के समूहों कों भेद करणे के अधि कारकों प्राप्त होताहै और चतुर और धन कर्के पूर्ण होता है ॥ १० ॥ और जिसको एकादशभावमें स्थित शनिहोवे सो काले रंगके घोडे और नीलें द्रमणियां और ऊर्ण वस्त्र और हाथीयों के लाभ वाला होताहै जब बल युक्त एकादशमें शनिहोवें तब अयसाहोताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्ययभावमें शनि स्थितहोवे सों दयासें हीन और धन से हीन और खर्च कर्के पीडित और सदा आलसी नीचों की संगति करणे वाला और अंगहीन और सुख हीन होताहै ॥ १२ ॥ इतिशनेः ॥

और कहतेहैं तन्वादि द्वादश भावों काफल शनिका जो कहाहै सोई फल शनिकी न्यांई राहुका जानने योग्यहै मुनियों के मतमें अयसें कहाहै ॥ १३ ॥ और जो ग्रह अपने उच्च में स्थित होताहै सो भावफल पूर्ण देताहै और जो ग्रह अपने क्षेत्र में और मित्रके क्षेत्रमें स्थित होताहै सो अर्द्ध भावफल देताहै और जो शत्रु क्षेत्र में स्थित होताहै सो चतुर्थांश भावफल देताहै और जो ग्रह अस्त होताहै अर्थात्सूर्यके समान अंशादि होताहै सो भावफल थोडा वी नाहिं देताहै ॥ १४ ॥ ॥ अथराहुकाभिन्नभावफलकहतेहैं ॥ जिसकों लग्नमें राहुस्थित होवे सो दुष्ट बुद्धि वाला और खोटे स्वभाववाला और संबधियों के ठगने वाला होताहै और शिरपीडा करकें युक्त और काम चेष्टा करकें पीडित कर्त्ताहै और विवादमें जयकर्त्ताहै और रोगककें युक्तकर्त्ताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंराहु दूसरे भावमें स्थित होताहै सो मनुष्यकों कठोर कर्त्ताहै और धनहीन और दरिद्री और निश्चयकर्के भ्रमणे वाला कर्त्ताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरे भावमें राहु स्थित होताहै सो शत्रुयोंके ऐश्वर्य

तन्वादिस्थशनेःप्रोक्तंयच्चभावोद्भवंफलम् राहोस्तदेवविज्ञेयंमुनीनामपिसंमतम्१३
स्वोच्चस्थितःपूर्णफलंहिधत्तेस्वर्क्षेहितर्क्षेहिफलार्धमेव फलांघ्रिमात्रंरिपुमंदिरस्थं
श्चास्तंप्रयातःखचरोनकिंचित् ॥ १४ ॥ अथराहुभावफ० ॥ लग्नेतमोदुष्टमतिस्वभावंनरंचकुर्यात्स्वजनानुवंचकम् शीर्षव्यथाकामरसेनसंयुतंकरोतिवादेविजयंसरोगम् ॥ १ ॥ धनगतोरविचंद्रविमर्दनोमुखरतांकितभावमथोभवेत् धनविनाशकरोहिदरिद्रतांखलुतदालभतेमनुजोटनम् ॥ २ ॥ दुश्चिक्येरिभवोद्भवंविनिहतेलोकेयशस्वीनरः श्रेयोवादिभवंतदाहिलभतेसौख्यंविलासादिकम् भ्रातॄणांनिधनंपशोश्चमरणंदारिद्रभावैर्युतंनित्यंसौख्यगणैःपराक्रमयुतंकुर्याच्चराहुःसदा ॥ ३ ॥ सुखगतेरविचंद्रविमर्दनेसुखविनाशनतांमनुजोलभेत् स्वजनतांसुतमित्रसुखनरोनलभतेचसदाभ्रमणंनृणाम् ॥ ४ ॥
गतसुखोनहिमित्रविवर्धतामुदरशूलविलासनिपीडनम् खलुतदालभतेमनुजोभ्रमंसुतगतेरविचंद्रविमर्दने शत्रुक्षयंद्रव्यसमागमंचपशूपुपीडांकटिपीडनंच समागमंम्लेछजनैर्महावलंप्राप्नोतिजंतुर्यदिपष्ठगेतमे ॥ ६ ॥

कों नाशकर्त्ताहै और लोकमें यशवाला होताहै और कल्याणता कों और ऐश्वर्य कोंप्राप्त होताहै और सुख और विलासकों प्राप्तहोताहै और भ्राता जो है तिनकों मृत्युकर्त्ताहै और पशुयों कानाशकर्त्ताहै और दारिद्रकर्कें युक्तकर्त्ताहै और नित्यं प्रति सुखके समूहों कर्के युक्त और पराक्रम कर्के युक्तकर्त्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें राहुस्थित होताहै सो सुखके नाशकों प्राप्तहोताहै और मित्र और पुत्र के सुखकों नाहिं प्राप्त होताहै और सदाभ्रमण कर्त्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों पंचमभावमें राहुस्थित होताहै सो सुखकर्के रहित और मित्रताकर्के रहित और पेटमें शूल कों प्राप्तकर्त्ता है और विलास में पीडा कर्त्ताहै और भ्रमकों उत्पन्नकर्त्ताहै ५ और जिसकों छठेभावमें राहुस्थित होवे सो शत्रुयोंकाक्षय और द्रव्यके समागमकों प्राप्तहोताहै औरपशुयों कों पीडा कर्त्ताहै और लक्ष पीडा कर्के युक्त होताहै और म्लेच्छोंके समागमकों प्राप्त होताहै और वडेवलकों प्राप्तहोताहै ॥ ६ ॥

उौर जिसकोंसप्तमभावमें राहुस्थितहोताहै सो निश्चयकर्कें स्त्रीसें विरोध अथवास्त्रीके नाशकों कर्त्ताहै अथवा प्रचंडरूप वडे क्रोधवाली स्त्रीकों प्राप्तकर्त्ताहै अथवा विवाद करणेवाली अथवा रोगनी स्त्रीकोंप्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥ और जिसकों अष्टमस्थानमें राहुस्थितहोवे सो नाशकों प्राप्त और गुदामें पीडा और प्रमेह रोग अथवा अंडवृद्धि रोगकों प्राप्तहोताहे और शत्रुभावकर्कें व्याकुलहोताहै ॥ ८ ॥ और जिसकों नवमभावमें राहुस्थितहोताहै सो धर्म और धनके नाशकों प्राप्तहोताहै और थोडासुख और निश्चयकर्कें भ्रमणहोताहै और दरिद्रभाव और संबंधियोंका थोडा सुख होताहै और देहपीडाहोतीहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशमभावमें राहुहोताहेसो पिताकेसुखकों नहिंप्राप्तहोताहै और खोटे भाग्योंवाला होताहे और शत्रुयोंकानाशकर्त्ताहै और रोगी और वाहन हीन और वातरोगी होताहे जब मीन राशिका दशममें स्थितहोवे तवघरकों भोगने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश-

जायाविरोधंखलुवाप्रणाशंप्रचंडरूपामथकोपयुक्ताम् विवादशीलामथरोगयुक्तां प्राप्नोतिजंतुर्मदनेतमेच ॥ ७ ॥ अनिष्ठनाशंखलुगुह्यपीडांप्रमेहरोगंवृषणस्य वृद्धिं प्राप्नोतिजंतुर्विकलारिलाभंसिंहीसुतेवाखलुमृत्युगेहे ॥ ८ धर्मार्थनाशः किलधर्मगेतमेसुखाल्पतावैभ्रमणंनरस्य दारिद्रताबंधुसुखाल्पताचभवेच्चलोके किलदेहपीडा ॥ ९ ॥ पितुर्नोसुखंकर्मगोयस्यराहुःस्वयंदुर्भगःशत्रुनाशंकरोति रुजोवाहनेवातपीडांचजंतोर्यदासौखगोमीनगःकष्ठभाजम् १० ॥ लाभगतेयदितमेसकलार्थलाभंसौख्याधिकंनृपगणाद्विविधंचमानम् वस्त्रादिकांचनचतुष्पद सौख्यभावंप्राप्नोतिसौख्यविजयंचमनोरथंच ॥ ११ ॥ नेत्रेचरोगंकिलपादघातं प्रपंचभावंकिलवात्सलत्वम् दुष्टेरतिंमध्यमसेवनंचकरोतिजातंव्ययगेतमेवा १२ इतिराहोः ॥ अथकेतोर्भावफलं ॥यदालग्नगश्चेच्छिखीसूत्रकर्त्तासरोगादिभोगी भयंव्यग्रताच कलत्रादिचिंतामहोद्वेगताचशरीरेप्रवाधाव्यथामारुतस्य ॥ १

भावमें राहुस्थितहोवे सो संपूर्ण अर्थलाभकों प्राप्त और अधिकसुखकों प्राप्तहोताहै और राजवर्गसें अनेकप्रकारके सुखकों प्राप्तहोताहै और वस्त्रादियोंका और स्वर्णका और चतुष्पदोंके लाभकों प्राप्त होताहै और जयकों और मनोरथोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्ययभावमें राहुस्थितहोताहे सो मनुष्य नेत्र रोगी और पादमे घात वाला और वडाप्रपंची और निश्चयकर्कें प्रीति करणे वाला होताहै और दुष्ट जनसें प्रीति वाला और मध्यम पुरुषकी सेवाकरणे वाला होताहै ॥ १२ ॥ ॥ इतिराहोः ॥ अवकेतूकाभावफलकहतेहै ॥ जिसमनुष्यकों लग्नमें केतुस्थितहोताहै सो सूत्रकर्ताहोताहै और रोगादियों कर्कें भयकों प्राप्तहोताहे और चित्तशुद्धिकों नहि प्राप्तहोताहै और स्त्रीकी चिंता- और वडे उद्वेगकों प्राप्तहोताहे और देहमें वायुकीपीडाकर्कें युक्तहोताहै १ ॥

और जिसमनुष्यकों दूसरेभावमें केतुस्थितहोताहै सो धान्य और धनकेनाशकों प्राप्तहोताहै और कुटुं वसें विरोधकोंप्राप्त होताहै और राजासें धनकी चिंताकों प्राप्तहोताहै और मुखरोगवाला सर्वदाकाल होताहै और जब केतु अपने घरमें और शुभग्रहके घरमें स्थितहोवे तब बडे सुखवाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरे भावमें केतुस्थितहोवे सो शत्रुओंका नाश और शत्रुयोंसें विवादकर्ताहै और धन और भोग और ऐश्वर्य और बडातेजकर्ताहै और भ्राताकानाश और बाहोंमें पीडाकर्ताहै और अपने उच्चराशीमें केतुस्थितहोवे तब सुख और संसारमें उदासी नताकर्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें केतुस्थितहोवे सो तिसकों माताका सुख कदाचित् नहिं होताहै और मित्रवर्गसे और पिताके वर्गसे नाशकों प्राप्तहोताहै और भ्राताकर्के रहित होताहै और जबकेतु अपने उच्चका होवे अर्थात् वृश्चिकराशीमें अथवा सिंहराशिमें होवे तबमाता और पिता और मित्रादियों

धनेचेच्छिखीधान्यनाशोधनंचकुटुंबाद्विरोधोनृपाद्व्यचिंता मुखेरोगतासंततंस्या त्तथाचयदास्वेगृहेसौम्यगेहेतिसौख्यम् ॥ २ ॥ शिखीविक्रमेशत्रुनाशंचवादंधनं भोगमैश्वर्यतेजोधिकंच भवेद्बंधुनाशःसदाबाहुपीडासुखंस्वोच्चगेहेभवोद्विगताच ३ चतुर्थेचमातुःसुखंनोकदाचित्सुहृद्वर्गतःपित्ततोनाशमेति शिखीबंधुहीनःसुखं स्वोच्चगेहेचिरंनैतिसर्वैःसदाव्यग्रताच ॥ ४ ॥ यदापंचमेयस्यकेतुश्चजातः स्वयंस्वोदरेघातपातादिकष्टं सुबंधुप्रियासंततिःस्वल्पपुत्रःसदासंभवेद्वीर्ययुक्तो नरश्च ॥ ५ ॥ शिखीयस्यषष्ठस्थितोवैरिनाशोभवेन्मातुलात्पक्षतोमानभं गः चतुष्पात्सुखंद्रव्यलाभोनितांतंनरोगोस्यदेहेसदाव्याधिनाशः ॥ ६ ॥ शिखीसप्तमेमार्गतश्चित्तवृत्तिंसदावित्तनाशोऽथवावारिभूतः भवेत्कीटगेसर्वदाला भकारी कलत्रादिपीडाव्ययेत्युग्रताच ॥ ७ ॥

कासुखहोताहै परंतु चिरकाल सुख नहिंहोताहै और सदाचित्त उदासीनरहिताहै ॥ ४ ॥ और जिसको पंचमभावमें केतु होताहै तिसके पेटमे घात और डिगने सें कष्ट होताहै और संबंधि. यासें प्रीतिवाला और थोडे पुत्रों वालाहोताहै और सर्वदाकाल कल्याणकर्के युक्त और बलवान होता है ५ और जिसकों छठेभावमें केतुहोताहै सो शत्रुयों कानाशकर्त्ताहै और मामयों के पक्षसें मान भगकों प्राप्तहो ताहै और चतुष्पद जोहै गौवा और महिषिया और घोडेयोंसें लैकर्के तिनका सुख होताहै और निरंतरधनकों प्राप्तहोताहै और देहसें आरोग्य सर्वदाकाल व्याधियोंसें रहित होताहै ६ ॥ और जिसकों सप्तमभावमे केतुहोताहै तिसको रस्ते सें चिंताकर्के चित्तवृत्ति रहितीहै और सदा. शत्रुयों कर्के धनकानाश होताहै और वृश्चिकराशिमेंस्थितहोवे तब सदा लाभकरणे वाला होताहै और स्त्री आदिकों की चिंता और सदा चित्तके विकारको प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥

और जिसमनुष्यकों अष्टमभावमें केतुस्थितहोताहै तिसकोंगुदामेरोगहोताहै और जववृश्चिक और कन्या और मिथुनराशीमें और मेष और वृषरा शीमें स्थित होवे तव वडे द्रव्य कालाभकर्त्ताहै ८ और जिसमनुष्य को नवमभावमें केतु स्थित होवे तिसके क्लेशकानाश कर्त्ताहै और सो मनुष्य पुत्र की इछावाला होताहै और म्लेछ के प्रसगसें तिसके भाग्यों कीवृद्धि होतीहै और कारण सें तिसकों पीडा होतीहै और वाहुयों में पीडा होती हैं और तप और दानमें तिसकी श्रद्धा नाहीं होती है ॥ ९ ॥ और जिसमनुष्य कोंदशम भावमें केतुस्थित होताहै तिसकों पिताका सुख नहिंहोताहै और खोटे भाग्योंवाला और वहुनशत्रुयों केनाशकरणे वाला होताहै और रोगी और वाहन कीपीडा वाला और वायुविकार वाला होताहै और जवकन्या राशीमें होवे तव सुख और दुःख दोनों के करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश भावमें केतुहोवे सो सुंदर वोलने वाला और श्रेष्ठ विद्या

गुदेपीडनंवाहनैर्द्रव्यलाभंयदाकीटगेकन्यकेयुग्मगेवा भवेच्छिद्रगेराहुछायायदा स्यादजेगोलिगेजायतेचातिलाभः ८ यदाधर्मगःकेतवःक्लेशनाशःसुतार्थीभवेन्म्लच्छतोभाग्यवृद्धिः सहेतुव्यथावाहुरोगंविधत्तेतपोदानतोहास्यवृद्धिंकरोति ९ पितुर्नोसुखंकर्मगोयस्यकेतुःस्वयंदुर्भगःशत्रुनाशंकरोति रुजोवाहनेवातपीडांच जंतोर्यदाकन्यगःसौख्यगःकष्टभाजं ॥ १० ॥ सुभाषीसुविद्याधिकोदर्शनीयःसुभोगःसुतेजाःसुवस्त्रोपियस्य गुदेपीड्यतेसंततेर्दुर्भगत्वंशिखीलाभगःसर्वकालंकरोति ११ शिखीरिःफगःपादनेत्रेचपीडांस्वयंराजतुल्योव्ययंवैकरोति रिपोर्नाशनंमानसेनैवशर्मरुजापीड्यतेवस्तिगुह्यांगरोगं १२ इतिकेतुफ०

अथमेषादिगृहेरवौग्रहदृष्टिफलम् ॥ दानधर्मवहुभृत्यसंयुतःकोमलामलतनुर्गृहप्रियः आविनयभवनेविरोचनेशीतदीधितिनिरीक्षितेसति॥ १ क्रूरोनरःसंगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलंवलीयान् भवेदवश्यंकुजगेहसंस्थेदिवामणौक्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २ ॥

वाला और रूपवान् और श्रेष्ठ भोगीवाला और तेजस्वी श्रेष्टवस्त्रों वाला और गुदामें रोग वाला और खोटी संतानवाला होताहै ११ और जिसकों व्ययभावमें केतु होताहै सो पैरोंमें और नेत्रोंमें पीडावाला और आपराजाकी न्याई खर्चकरणे वाला होताहै और शत्रुयों कानाशकर्त्ताहै और तिसके चित्तमें सुखनाहीं होताहै और वस्तिमें और गुदामें रोगकर्के पीडित होताहै ॥ इतिकेतोः

अवमेषादिराशियोंमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहोंकीया दृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमेंसूर्यस्थितहोवे और चंद्रमाकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य दान औरधर्मकर्के युक्त और वहुत चाकरोंवाला और कोमलनिर्मल देह वाला और घरमेंप्रीति वालाहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंमंगलकेगृहमेंसूर्यहोवे और मगलदेखताहोवे सो क्रूर और युद्धमेंधीर्यवाला और लालनेत्रोंवाला और लालपैरोंवाला और वडावली निश्चयकर्केहोताहै ॥ २ ॥

और जिसकों मंगल केघरमें सूर्य बुधकर्के दृष्टहोवे सो बलकर्के और सुखकर्के और धन कर्के रहितहोताहै और दूत और प्रदेशमे रहणे वाला और मलीन सदारहताहै और अवश्यमेव शत्रुयों वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों मंगलके घरसूर्यबृहस्पतिकर्के दृष्टहोवे सो दाता और दयावान् और वडेधनकर्केयुक्त और राजाकामंत्री और कुलमे प्रसिद्ध होताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों मंगलकेघरमेंसूर्य शुक्रकर्के दृष्टहोवेसोहीनवर्णकी स्त्रीसेंप्रीति कर्ताहै और वडादीन और धनकर्केहीनहोताहै और खोटेमित्रवाला और त्वचामें दद्रुस्फोटादिदोष. कर्केयुक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमे भौमकेघरमें सूर्य शनिकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य उत्साहकर्के रहित और मलीन और वडादीन और दुःखकर्केयुक्त और बुद्धिहीनहोताहै ॥ ६ ॥ अव-

सुखेनसत्वेनधनेनहीनःप्रेष्यःप्रवासीमलिनःसदेव भवेदवश्यंपरवान्मनुष्यः सहस्त्ररश्मौकुजभेज्ञदृष्टे ॥ ३ ॥ दातादयालुर्वहुलार्थयुक्तोनृपालमंत्री कुलधुर्यवर्यः स्यान्मानवोभूतनयालयस्थेपत्यौनलिन्याःकिलजीवदृष्टे ॥ ४ हीनांगनाप्रीतिरतीवदीनोधनेनहीनोमनुजःकुमित्रः त्वग्दोषयुक्तःक्षितिपुत्रगेहेमित्रेऽधिसंस्थेभृगुपुत्रदृष्टे ॥ ५ ॥ उत्साहहीनोमलिनोतिदीनोदुःखाभिभूतो विमतिर्नरःस्यात् कांतिर्नलिन्याःक्षितिजालयस्थेप्रसूतिकालेरविजेनदृष्टे ॥ ६ वरांगनाप्रीतिकरोनितांतंस्याद्भूरिभार्यःसलिलोपजीवी दिनाधिराजेभृगुजालयस्थेकलानिधिप्रेक्षणतांप्रयाते ॥ ७ ॥ संग्रामधीरोतितरांमहौजाःसुसाहसंप्राप्तधनोरुकीर्त्तिः क्षीणोनरःस्याद्भृगुमंदिरस्थेसहस्त्ररश्मौकुसुतेनदृष्टे ॥ ८ ॥ संगीतसत्काव्यकलाकलापेलेखक्रियायांकुशलोनरःस्यात् प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयातेप्रद्योतनेसोमसुतेनदृष्टे ॥ ९ ॥ वंशानुमानान्नृपतिप्रधानःसद्रत्नभूषाद्रविणान्वितोवा भीरुर्नरःशुक्रगृहंप्रपन्नेदृष्टेरवौदेवपुरोहितेन ॥ १० ॥

शुक्रकेघरमें स्थितसूर्यमेंग्रहोंकीदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्रकेघरसूर्यस्थितहोवे और चद्रमाकर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठस्त्रीसेंप्रीतिकरणेवाला और बहुतस्त्रीयोंवाला और जलके प्रसंगसें उपजीविकावालाहोताहै ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रके घरमेंसूर्यमंगलकर्के देख्याहोवे सो युद्धमेंधीर्य वाला और वडेतेजवाला और वडेहर्षकर्केधन और यशकोंप्राप्तहोताहै और देहकर्केक्षीणहोताहै ॥ ८ ॥ और जिसकोंशुक्रके घरमेंसूर्यबुधकर्केदेख्याहोवे सो गीतविद्या और श्रेष्ठकाव्यसमूहके करणेवाला और लिखनेमेंचतुर और प्रसन्न मूर्तिहोताहै ॥ ९ ॥ और जिसकोंशुक्रकेघरमे सूर्य बृहस्पतिकर्के देख्याहोवेसो अपने वंशके अनुमानसें राजाकामत्रीहोताहै और श्रेष्टरत्न और भूषणऔर द्रव्यकर्केयुक्तहोताहै और भयकर्केयुक्तहोताहै ॥ १० ॥

और जिसके जन्मसमयमेंशुक्रकेघरमेंसूर्य शुक्रकर्के देख्याहोवैसो सुंदरनेत्रोंवाला और सुंदरदेहवाला और प्रधानपुरुषहोताहै औरमित्रों औरशत्रुयोंकर्के युक्तहोताहै औरचिंताकर्केयुक्तहोताहै ११ औरजिसके जन्मकालमें शुक्रके घरमें सूर्य शनि कर्के देख्याहोवे सोमनुष्य दीन और धनकर्केहीन और आलसकर्केबडामलीन औरस्त्रीकेसाथ चित्तवृत्तिसेंहीनहोताहै औरखोटीवृत्तिवाला.और रोगकर्केयुक्तहोताहै१२ अबबुधकेघरमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसमनुष्यकोंजन्मकालमेंबुधकेघरसूर्यचंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो मित्रोंकर्के और शत्रुयों कर्केपीडितहोताहै और विदेशरहणेवाला औरधनकर्केहीनहोताहै औरनिरंतर सदाउदासीनरहिताहै १३ औरजिसके जन्मकालमें बुधकेघरमें सूर्य मंगलकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य शत्रुयोंकेभयकर्के और कलहादियोंकर्के संयुक्तहोताहै और अत्यंतदीनहोताहै औरयुद्धमें जयविधिसेंहीनहोताहै और वडीलज्जाकों प्राप्तहोताहै और आलसकर्के युक्तहोताहै १४ औरजिसमनुष्य

सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः भवेन्नरोदैत्यगुरोर्गृहेर्के संवीक्षितेदैत्यपुरोहितेन ११ दीनोर्थहीनोलसतांप्रपन्नोभार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेर्केर्कसुतेनदृष्टे १२ मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्चविदेशजातोऽपिधनेनहीनः निरंतरोद्वेगकरोनरः स्यात्सौम्यालयेर्केहरिणांकदृष्टे १४ रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोत्यंतदीनो रणजयविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः भवतिननुमनुष्यःसालसश्चापिहंसे बुधभवननिवासेलोहितांगेनदृष्टे १४ भूपप्रसादोन्नतिमात्मजानांसंहंतिनोशत्रुजनात्तमित्राः प्रसूतिकालेनालिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थेचबुधेनदृष्टे १५ सुगुप्तमंत्रोतितरांस्वतंत्रः कलत्रपुत्रादिजनेसगर्वः भवेन्नरःशीतकरात्मजर्क्षेदिवाकरेदेवगुरुप्रदृष्टे १६ विदेशवासीचपलोनिवासीविषाग्निशस्त्रांकितमूर्तिवर्ती पृथ्वीपतेर्दौत्यकरोनरः स्यादर्केबुधर्क्षेभृगुपुत्रदृष्टे १७ धूर्तोतिभृत्योगतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमनामनुष्यः दिवाकरेशीतकरात्मजर्क्षेनिरीक्षितेभास्करिणाप्रसूतौ १८ पण्यैश्चपानीयभवैर्महार्थोपृथ्वीपतिर्वासाचिवश्चरौद्रः भवेन्नरोजन्मनिचंडरश्मौ कर्काटकस्थेशिशिरांशुदृष्टे- १९

केजन्मसमयमें बुधकेघरमें सूर्य बुधकर्कोहिदेख्याहोवे सो राजाकीप्रसन्नताकर्के तिसकेपुत्रोंका ऐश्वर्य शत्रु और मित्रनहींसहारसक्तेहै १५ और जिसकोंबुधकेघरमें सूर्य बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्य गुप्तमंत्री और भलीप्रकार स्वतंत्रहोताहै और स्त्रीपुत्रादि जनोंकर्के गर्वकों प्राप्तहोताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें बुधके घरमें सूर्य शुक्रकर्के देख्याहोवे सो विदेशमेंरहिताहै औरचपल औरविलासकरणेवालाहोताहै और विष और अग्नि और शस्त्रोंकर्के तिसकेदेहमें चिन्हहोतेहैं और राजाकादूतहोताहै १७ और जिसकेजन्मसमयमें बुधके घर सूर्य शनिकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य धूर्त्त और बहुतचाकरोंवाला और बुद्धिकर्केहीन और सर्वविधियोंसें उदासीनरहिताहै १८ अबकर्कटराशिमेंस्थितसूर्यमें ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहै जिसके जन्मसमय में कर्कटराशिका सूर्य चंद्रमा कर्केदेख्याहोवे सो जलकेसंबंध कर्के व्यापारसें वडे धनको प्राप्तहोताहै और राजा अथवा राजाका मंत्री वडा क्रूरहोताहै ॥

और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशीमें सूर्यमंगलकर्के देख्याहोवे सो अपने संबंधियों सेंचित्तकी शुद्धिसें रहित होताहै और शोथ रोगादियों कर्के भगंदरादि रोगों कर्के पीडित होताहै २० और जिसके जन्म कालमें कर्क राशीमें स्थित सूर्य बुध कर्के देख्या होवे सो विद्या और यश और मानकर्के शोभाकों प्राप्तहोताहै और राजाकी कृपाकर्के मनाकयां अभिलाषा कों प्राप्तहोताहै और शत्रुयोंकर्के रहितहोताहै २१ और जिसके जन्मसम में कर्कमें सूर्यबृहस्पति कर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य कुलमें प्रधान और बडेयशवाला और राजासें बडेपदार्थोंकों प्राप्तहोताहै २२ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशीमें सूर्यशुक्रकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य स्त्रीके प्रसंगसें वस्त्र और धनकेलाभकोंप्राप्तहोताहै और दूसरेकेकृत्यमें हृदयसें दुःखीहोताहै २३ अब सिंहराशीमें स्थितसूर्यकों ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें सिंहराशी का

स्वबंधुवर्गैर्गतचित्तशुद्धिःशोफादिरोगैश्चभगंदरैर्वा पीडानराणांहिकुलीरसंस्थेदिवामणौक्षोणिसुतेनदृष्टे २० विद्यायशोमानविराजमानोभूपानुकंपाप्तमनोभिलाषः निरस्तशत्रुश्चबुधेनदृष्टेकर्कटकस्थेद्युमणौनरःस्यात् २१ कुलाधिकश्चामलकीर्त्तिशालीभूपालसंप्राप्तमहत्पदार्थः भवेन्नरःशीतकरर्क्षयातेदिवामणौवाक्पतिवीक्ष्यमाणे २२ स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिःपरस्यकृत्येहृदयेविपादः निशाकरागारकृताधिकारेदिवाकरेशुक्रनिरीक्ष्यमाणे २३ धूर्त्तोगभीरःक्षितिपालमान्योधनोपलब्धार्थयुतःप्रसिद्धः मित्रेनिजक्षेत्रगतेप्रसूतौनक्षत्रनाथेननिरीक्ष्यमाणे २४ कफानिलार्त्तःपिशुनोन्यकार्यैस्यादंतरायश्चपलस्वभावः क्लेशीनरःशीतकरर्क्षसंस्थेदिवामणौमंदनिरीक्ष्यमाणे २५ नानांगनाप्रीतिरतीवधूर्त्तःकफात्मकःक्रूरतरश्चशूरः महोद्यमःस्यान्मनुजःप्रधानःसिंहस्थितेर्केकुसुतेनदृष्टेः २६ धूर्त्तोनृपानुव्रजनःसुसत्वोविद्वत्प्रियोलेखनतत्परश्च भवेन्नरःकेसरिणिप्रयातेदिवामणौसौम्यनिरीक्ष्यमाणे २७

सूर्यचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य धूर्त्त और गंभीर और राजाके मानकों प्राप्त और धनकेलाभवाला और प्रसिद्धहोताहै २४ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशीमें सूर्यशनिकर्के देख्याहोवे सो कफ और वायुकर्केपीडित और चुगलहोताहै और दूसरेका कार्य बिगाडनेवाला और चपलस्वभाववालाहोताहै औरक्लेशभोगनेवाला होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशीका सूर्य मंगलकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य अनेक स्त्रीयोंसें प्रीतिकर्त्ताहै और अत्यंत धूर्त्त होताहै और कफके स्वभाववाला औरबडा क्रूरशूरवीरहोताहै और बडा उद्यमी और प्रधानहोताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें सिंह राशीका सूर्य बुध कर्के देख्याहोवे सो धूर्त्त और राजा की आज्ञामें चलनेवाला और बडे पराक्रमवाला और विद्वानोंसेंप्रीतिकरणेवाला और लिखने वाला होताहै २७

और जिसके जन्मकाल में सिंहराशिका सूर्य वृहस्पति करके देख्याहोवे सो देवताके मंदिर और बाग और बाउली यों के लगावनें वाला और सबधियों सें प्रीत करणे वाला होताहै ॥ २८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकासूर्य शुक्रकरके देख्या होवे सो चमडे के दोष वाला और क्रोधकरके अपयशको प्राप्तहोताहै और उत्सवकरके रहित होताहै औरअपने जनों करकेत्यागको प्राप्तहोताहै २९ और जिसके जन्मकालमें सिंहकासूर्यशनिकरकेदेख्याहोवे सोमनुष्यशठ और कार्यकेनाशकरणेवाला और संबधियोंको निश्चयकरके संतापकोदेने वाला होताहै ॥ ३० अबवृहस्पतिकेघरमें स्थितसूर्यको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकोंवृहस्पतिकेघरमें अर्थात् ॥ ९ ॥ १२ ॥ राशिमेंस्थितसूर्य चद्रमाकरके देख्याहोवे सोदेहकीशोभाकरके और पुत्रकेसुखकरके युक्तहोताहै और वाग्विलासमें चतुर और कुलीन

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्त्तास्वजनप्रियश्च भवेन्नरोदेवपुरोहितेनानिरीक्षितेर्केमृगराजसंस्थे ॥ २८ ॥ त्वग्दोषरोपापयशोभिभूतोगतोत्सवःस्वीयजनोज्झितश्च स्यान्मानवःसत्वदयाविहीनः पंचाननेर्केभृगुजेनदृष्टे ॥ २९ ॥ शठोनरःकार्यविघातकर्त्तासंतापयेदात्मजनांश्चनूनम् नरोमृगेंद्रोपगतेदिनेशेदिनेशपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणे ॥ ३० ॥ कायकांतिसुतसौख्यसमेतोवाग्विलासकुशलःकुलशाली स्यान्नरःसुरपुरोहितभस्थेभास्करेहिमकरेणहिदृष्टे ॥ ३१ ॥ संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषोवक्ताविमुक्तानुजनानुसंगः स्थिराश्रयोजीवगृहस्थितेर्केभौमेनदृष्टेपुरुषःप्रचंडः॥ ३२॥ धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञःसद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः सतांमतःस्यात्पुरुषोदिनेशेसौम्येक्षितेजीवगृहोपयाते ३३ नृपालमैत्रीकुलभूमिपालः कलाविधिज्ञोधनधान्ययुक्तः विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहेसंदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३४ ॥

होताहै ॥ ३१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमे स्थितसूर्य मंगलकरके देख्याहोवे सोमनुष्य युद्धकर्मसें विशेषकरके यशको प्राप्तहोताहै और वक्ता होताहै और सबंधियोंसें रहित होताहै और स्थिरजीविकावाला होताहै ॥ ३२ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमे स्थितसूर्य बुधकरके देख्या होवेसो धातुक्रियाके और काव्यकलाके और कथाके जानने वाला और श्रेष्ठवाणी वाला और मंत्रादिविधिमें चतुर और श्रेष्ठजनोंकीसमति वाला होताहै ॥ ३३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमें स्थितसूर्य वृहस्पति करके देख्याहोवेसो राजाकामंत्री और अपनेकुलमे राजा होताहै और कलाविधिकेजानने वाला और धनधान्यकरके युक्त और विद्यावान् होताहै ॥ ३४ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिकेघरमें सूर्य शुक्रकर्केदेख्याहोवेसो मनुष्यसुगंधिवाले पुष्प श्रोरसुगंधिवालेवस्त्र सुंदरधारताहे श्रोर स्त्रीकासुख श्रोर भूषणोंकासुखविशेषकर्के भोगताहै ॥ ३५ ॥ श्रोर जिसकों बृहस्पतिकेघरमें सूर्य शनिकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य पराया श्रन्न भोजनकर्ताहे श्रोर नीच कर्मोंके करणे वाला श्रोर चतुष्पदजोहे घोडे महिषीयोंसें लेकर तिनमें प्रीतिकरणे वाला होताहै ३६ श्रव शनिकेक्षेत्रमें स्थितयोसूर्य तिसमें ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें शनिके घरमेंसूर्य चंद्रमाकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य स्त्रीकेप्रसंगकर्केधन श्रोर सुखके नाशकों प्राप्तहोताहै श्रोर मायामेंचतुर चंचलचित्तकीवृत्तिवालाअर्थात् चित्तकों रोक नहिं सकताहे ३७ श्रोर जिसकेजन्मसमयमें शनिकेघरमे सूर्यमंगलकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्य शत्रुयोंसें लडाई कर्के धनके नाशकोंप्राप्तहोताहै श्रोर व्याधियोंकर्के औरशत्रुयोंकर्के संतापकोंप्राप्तहोताहै श्रोर श्रत्यंतव्याकुलदेहवाला श्रोर वडीचिंताकर्के

सुगंधमाल्यांवरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः भवेन्नरोदेवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतनेदानववंद्यदृष्टे॥ ३५॥ परान्नभुङ्नीचतरःप्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरोनरः स्यात् सूर्येसुराचार्यगृहप्रयातेनिरीक्षितेभानुसुतेनसूतौ ॥ ३६ ॥ नारीप्रसंगे नगतार्थसौख्योमायापटुश्चंचलचित्तवृत्तिः भवेन्मनुष्यःशनिवेश्मनिस्थेसहस्रर इमौहिमरश्मिदृष्टे ३७ परकलहगतार्थोव्याधिवैरिप्रतप्तस्त्वतिविकलशरीरोऽत्यंतचिंतासमेतः भवतिननुमनुष्यःसंभवेतिग्मरश्मौगतवतिसुतगेहेदृष्टदेहेकुजेन ३८ क्लीवस्वभावःपरचित्तहारीसाधूज्झितःशूरतरोनरःस्यात् दिवाकरेशीतकरात्मजेनदृष्टेप्रसूतौशनिमंदिरस्थे ॥ ३९ ॥ सत्कर्मकर्त्तामतिमान्वहूनांसमाश्रयश्चारुयशोमनस्वी स्यान्मानवोभानुसुतालयस्थे भानौवचाचस्पतिनाप्रदृष्टे ॥ ४० ॥ शंखप्रवालमणिरत्नवित्तंवरांगनाभ्योऽपिधनोपलब्धिम् करोतिभानुर्ननुमानवानांशन्यालयस्थोभृगुजेनदृष्टः । ४१ ॥ प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षःक्षोणीपतिप्रीतिमहत्प्रतिष्ठः प्रसन्नमूर्त्तिःप्रभवेन्मनुष्यःशन्यालयेर्केशनिनाप्रदृष्टे ॥ ४२ ॥ इतिमेषादिगृहेरवौदृष्टिफलम् ॥

युक्तहोताहे ३८श्रोर जिसके जन्मसमयमें शनिकेघरमे सूर्यबुधकर्के देख्याहोवे सो नपुंसकों के स्वभाववाला श्रोर दूसरे के चित्त कों हरणे वाला श्रोर साधुयों कर्के रहितश्रोर वडा शूरवीर होताहे ३९ श्रोर जिसके जन्मसमयमें शनिकेघरमें सूर्य बृहस्पति कर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठ कर्म करणेवाला श्रोर बुद्धि मान् श्रोर वहुत मनुष्यों के पालने वाला श्रोर श्रेष्ठ यशवाला श्रोर मनस्वी होता है ॥ ४० श्रोर जिसके जन्मसमयमें शनिके घरमें सूर्यशुक्र कर्के देख्याहोवे सो सख श्रोर मुंगे श्रोर मणियों श्रोर रत्नों वाला होताहे श्रोर श्रेष्ठ स्त्रीयोंसें धनके लाभकों प्राप्त होताहै ॥ ४१ ॥ श्रोर जिसमनुष्यके जन्मसमयमे शनिके घरमें सूर्य शनिकर्के देख्या होवे सो वडे प्रतापकर्के शत्रुयोंके पक्षकों जीतताहै श्रोर राजाकी प्रसन्नता कर्के वडी प्रतिष्टा कों प्राप्तहो ताहै श्रोर प्रसन्नमूर्त्ति वाला मनुष्य होताहै ४२ इहमेषादिद्वादशराशियोंमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहदृष्टियोंकाफलकहाहै ॥ शिवम् ॥

अथमेषादिराशियोंमें स्थितजो चंद्रमाति सर्मे ग्रह दृष्टि योंकाफलकहतेहे ॥ जिसमनुष्यके जन्मसमयमें मेषराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्याहोवे सो मनुष्य क्रूरस्वभाववाला वीनम्रजनों के ऊपरकोमल होता हे श्रोर पंडित श्रोर राजमानको प्राप्त होताहै श्रोर युद्ध में डरणे वाला होताहे १ श्रोर जिसकों मेषराशीमें स्थित चंद्रमामंगलकर्के देख्या होवे सोमनुष्य विष श्रोर श्रग्निःश्रोर वायुः श्रोर शस्त्रा स्त्रों के भयकों प्राप्तहोताहे श्रोर कदाचित् मूत्रकृच्छ्रकों प्राप्तहोताहे श्रोर वडे श्राश्रय वाला होताहै श्रोर दंतो में श्रोर नेत्रोंमे पीडा वाला होताहे ॥ २ श्रोर जिसकों मेषराशीमें चंद्रमावुध कर्के देख्याहोवे सो वडे प्रकाशवाले यशकों प्राप्तहोता है श्रोर संपूर्ण विद्यामें प्रवीण होता

अथमेषादिगृहेचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः उग्रस्वभावोऽपिमृदुर्नतानांधीरोधराधीश्वरगौरवाढ्यः नरोभवेत्संगरभीरुरेवमेषेशशांकेनलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥ विषाग्निवातास्त्रभयकदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रंमहदाश्रयश्च दंताक्षिपीडानिविडाजडांशौमेषस्थितेभूमिसुतेनदृष्टे ॥ २ ॥ विलसदमलकीर्तिःसर्वविद्याप्रवीणोद्रविणगुणगणाढ्यःसंमतःसज्जनानाम् भवतिननुमनुष्योमेषराशौशशांकेशशधरसुतदृष्टेश्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥ नृपप्रधानःपृतनापतिर्वाकुलानुमानाद्बहुसंपदाढ्यः भवेन्नरःकैरविणीवनेशेमेषस्थितेगीष्पतिनाप्रदृष्टे ॥ ४ ॥ योषाविभूषाधनसूनुसौख्योभोक्तासुवक्तापरिभुक्तरोषः स्यात्पूरुषोमेषगतेऽमृतांशोनिरीक्ष्यमाणेभृगुणागुणज्ञः ॥ ५ ॥ गदयुतंहतचित्तसमुन्नतिंविगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ॥ क्रियगतोऽर्कसुतेननिरीक्षितोहिमकरोहिनरंकुरुतेखलम् ६

हे श्रोर धन श्रोर गुणों के समूहोंसें युक्त होताहे श्रोर श्रेष्ठ जनों कीसंमति कर्के युक्तहोताहै ॥ ३ ॥ श्रोर जिसकों मेषराशी में चंद्रमा वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो मनुष्य राजाका मंत्री श्रथवा सेनाकास्वामी होताहे श्रोर श्रपने कुलके श्रनुमानसें वडी संपदाकर्के युक्तहोताहै ॥ ४ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमे मेषराशिमे स्थितचंद्रमा शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो स्त्री श्रोर भूषण श्रोरधन श्रोर पुत्रकेसुखकोंप्राप्तहोताहे श्रोर भोगी श्रोर श्रेष्टवक्ता श्रोर क्रोधसेंरहित श्रोर गुणकेजाननेवाला होताहे ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मेषमेंचंद्रमाशनिकर्केदेख्याहोवेसो रोगकर्केयुक्त श्रोर नष्टचित्तवृत्तिवाला श्रोर धनराहित श्रोर झूठवोलने वाला श्रोर खोटे पुत्रवालाहोताहे ॥ ६ ॥

अबवृषराशिमें चंद्रमाकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसकेजन्मसमयमेंवृषराशिमेंचंद्रमासूर्यककेदेख्याहो वेसोखेतीयोंकीक्रियामेंरत और खेतीयोंकेविधानकोंजाननेवालाऔर मंत्रीहोताहे और वाहनोंककें और धान्योंककेंयुक्तहोताहे और अपनेकार्यमेंचतुर होताहे ७ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशीमेंचंद्रमामंगलककेंदेख्याहोवेसो कामातुर और स्रीयों के चित्त कों हरणेवाला और साधुयोंकामित्र और वडापवित्र और प्रसन्नमूर्त्तिहोताहे ॥ ८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशिमें चंद्रमा बुधककें देख्याहोवेसोचतुर और विधिकेजाननेवाला और दयाककें युक्त और हर्षककें युक्त और संपूर्ण जीवोंमें हितकरणेवाला और गुणोंककेंयुक्तहोताहे ९ औरजिसकेजन्मसमयमें वृषराशिमेंचंद्रमा वृहस्पतिककेंदेख्याहोवे तिसकोंस्रीपुत्रकेआनंदककेंयुक्त और श्रेष्ठयशककें और धर्मक्रियामें युक्त और मातापिताकीभक्तिमें युक्तकर्ताहे ॥ १० और जिसके जन्मसमयमें वृष राशिमें चंद्रमाशुक्रककें देख्याहोवे तिसकों भूषण और वस्त्र और घर और भोजनके पदार्थ और शय्याकासुख और

कृषिक्रियायांनिरतोविधिज्ञः स्यान्मांत्रिकोवाहनधान्ययुक्तः नरोनितांतंचतुरः स्वकार्येदृष्टेदिनेशेनवृषेशशांके ॥ ७ ॥ कामातुरश्चित्तहरोंगनानांस्यात्साधुमित्रःसुतरांपवित्रः प्रसन्नमूर्तिश्चनरोवृषस्थेशीतद्युतौभूमिसुतेनदृष्टे ॥ ८ प्राज्ञंविधिज्ञंकृपयासमेतंहर्षान्वितंभूतहितेरतंच गुणाभिरामंमनुजंप्रकुर्यात्वृषेशशांकःशशिजेनदृष्टः ॥ ९ ॥ जायात्मजानंदयुतंसुकीर्तिंधर्मक्रियायांनिरतंचपित्रोः भक्तौप्रसक्तंमनुजंप्रकुर्यात्वृषास्थितेंदुर्गुरुणाप्रदृष्टः १० भूषणांबरगृहाशनशय्यागंधमाल्यचतुरंघ्रिसुखानि आतनोतिसततंमनुजानांचंद्रमावृषगतोभृगुदृष्टः ११ कलानिधिःपूर्वदलेवृषस्यशनीक्षितश्चेन्निधनंजनन्याः करोतिसत्यंमुनिभिर्यदुक्तंतथापरार्द्धेखलुतातघातम् १२ प्राज्ञंसुशीलंद्रविणेनहीनंक्लेशाभिभूतंसततंकरोति नरंचसर्वोत्सवदंचसूतौद्वंद्वेस्थितोभानुमताचदृष्टः ॥ १३ ॥ उदारदारंचतुरंचशूरंप्राज्ञंचसुज्ञंधनवाहनाद्यैः युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेंदुर्निरीक्षितोजन्मनिभूसुतेन ॥ १४ ॥

सुगंधिद्रव्यऔर पुष्प और चारपाएजोहे गोमहिषीसिंलेकेकेंतिनकासुखप्राप्तहोताहे ११ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशिकाचंद्रमाशनिककें देख्याहोवेतवअयसेंफलकर्ताहे जबवृषराशिके पूर्वलेअर्धमेंचद्रमाकोंशनिदेखेतब तिसकीमाता मरतीहे औरवृषकेउत्तरभागमें चंद्रमाकों शनिदेखे तबतिसकेपिताकोंमारताहे अयसे मुनियोंनेकहाहे ॥ १२ ॥ अब मिथुनमेंस्थितचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसकेजन्मकालमे मिथुनकाचद्रमासूर्यककेंदेख्याहोवेतिसकों चतुर और श्रेष्ठस्वभावककें युक्त और धनककेंहीनऔर निरंतरक्लेशककें युक्तकर्ताहे और संपूर्णउत्सवोंकोंदेताहे १३ और जिसकेजन्मकालमें मिथुनकाचंद्रमामंगलककेंदेख्याहोवे तिसकोंउदारतावाला और चतुर औरशूरवीर और विशेषबुद्धिवाला और भलीप्रकारककेंजाननेवाला औरधन औरवाहनादियोंककेंयुक्तकर्त्ताहे १४

और जिसके जन्मसमयमे मिथुनराशिमे चंद्रमा बुधकर्के देख्याहोवे सो बडे धैर्य वाला और सर्वदा काल आचारवान् और उदारचित्त और राजासे धनलाभकों कर्त्ताहे ॥ १५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनराशिमें चद्रमावृहस्पति कर्के देख्याहोवे तिसकों विद्या और विवेक और धनकर्के. युक्त और नम्रताकर्के युक्त और बडे पुण्यो वाला कर्त्ताहे ॥ १६ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनराशिमें चद्रमा शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों वस्त्र और पुष्प और श्रेष्ट स्त्रीयोंकालाभ कर्त्ताहे और श्रेष्ठ वाहनोंका और भूषणोकासुखकर्त्ताहे ॥ १७ ॥ और जिसके जन्मसमयमे मिथुनराशिमें चद्रमाशनि कर्के देख्याहोवे सो मनुष्यधन और स्त्री और वाहन और पुत्रोंसें लेकरपदार्थोंसें हीनहोत्ताहे और निंदाको प्राप्तहोताहे ॥ १८ ॥ अबकर्कटराशिमेंस्थित चद्रमाको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहते

धीरंसदाचारमुदारसारंनरंनरेंद्राप्तधनंकरोति निशाधिनाथोमिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेनदृष्ट ॥ १५ ॥ विद्याविवेकान्वितमर्थवंतंख्यातविनीतंसुतरांसुपुण्यम् करोतिमर्त्त्यंमिथुनेधिसंस्थोनिशीथिनीशोगुरुणाप्रदृष्टः॥ १६ ॥ वस्त्रप्रसूनान्नवरांगनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्चविभूषणेभ्यः करोतिसौख्यंहिसुधामयूखोद्वंद्वस्थितोजन्मनिशुक्रदृष्टः॥ १७ ॥ धनांगनावाहननंदनाद्यैर्विश्लेषमायातिविगर्हितत्वम् नरोहिनीहारकरैर्नृयुग्मेनिरीक्षितेभानुसुतेनसूतौ ॥ १८ ॥ निरर्थकक्लेशकरंविकीर्णंनृपाश्रयंदुर्गकृताधिकारम् कुर्यात्कलावान्परिसूतिकालेकुलीरसंस्थोनलिनीशदृष्टः ॥ १९ ॥ दक्षंचशूरजननीविरुद्धंक्षीणांगयष्टिमनुजंकरोति कुलीरसंस्थःपरिसूतिकालेदृष्टःकलावान्किलमंगलेन ॥ २० ॥ दाराधंपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यंसेनापतिंवासाचिवंमनुष्यम् कर्काधिरूढ कुरुतेहिमांशुर्हिमांशुपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणः ॥ २१ ॥ नृपाधिकारंगुणिनंनयज्ञंसुखान्वितंचारुपराक्रमंच करोतिजातंयदिचक्रवर्तीपीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः ॥ २२ ॥

हे जिसकेजन्मसमयमे कर्कटका चंद्रमा सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसकों निरर्थक क्लेशहीनजातीके लोकोंकर्के कर्त्ताहे और राजाके आश्रयकरके किलेकोटोंकी रक्षाकरणे वाला कर्त्ताहे १९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमे चद्रमा मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों चतुर और शूरवीर और मातासें विरोधी और दुर्बलदेहवाला कर्त्ताहे ॥ २० ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका चंद्रमा बुध. कर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीके और धनके सुखवाला और सेनापति अथवा राजाका मंत्रीकर्त्ताहे ॥ २१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका चद्रमा वृहस्पति कर्के देख्याहोवेतिसकों राजाका अधिकार प्राप्तकर्त्ताहे और गुणवान् और नीतिके जानने वाला और सुखकर्के युक्त और श्रेष्ट पराक्रम वाला कर्त्ताहे और चक्रवर्तीकर्त्ताहे ॥ २२ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें कर्कटका चंद्रमा शुक्रकर्केदेख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट रत्नों कर्के युक्तश्रोर सुवर्ण कर्के युक्त श्रोर भूषण श्रोर श्रेष्ट स्त्रीयोंका निरंतरसुखकर्ताहै ॥ २३ ॥ श्रोर जिसके जन्म समयमें कर्कट राशिमें चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तिस को सत्य कर्के हीन औरमाता सें विरोधी और सर्वदाकाल भ्रमणे वाला श्रोर धन कर्के हीनश्रोर पापमें रत कर्ताहै ॥ २४ ॥ ॥ श्रवसिंहराशिमेंचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका चंद्रमा-सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसको गुणयुक्त और निरंतरराजाकाप्यारा और श्रेष्ट अधिकार प्राप्तहोताहै और-संतानमें विलंबकर्ताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकाचंद्रमा मंगल कर्के देख्याहोवे सोराजा-का वजीर होताहै और धन और वाहन और पुत्र और स्त्री इनके सुखकों निश्चय कर्के प्राप्त होताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका चंद्रमा वुधकर्के देख्या होवे तिसकों धन और स्त्री और वाहन

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावरांगनासौख्ययुतंनितांतम् नरंनिजागारगत.करोति सुधाकरःशुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ २३ ॥ सत्येनहीनंजननीविरुद्धंसदाटनंपापर तंगतार्थं करोतिजातंनिजगेहगामीचेद्यामिनीशोरविजेनदृष्टः २४॥ गुणयुतं सततंनृपतिप्रियं वरपदंचविलंवितसंततिम् हरिगतोवितनोतिनिशा-करः खरकरप्रवलोकनसंयुतः २५ नरपतेः सचिवोधनवाहनात्मजकलत्रसु; खोहिभवेन्नरः हरिणलक्ष्मणिकेसरिणिस्थितेक्षितिसुतेनतनुप्रविलोकिते २६ धनांगनावाहननंदनेभ्यः सुखप्रपूर्णंहिनरंकरोति द्विजाधिराजोमृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः २७ वहुश्रुतविस्मृतसाधुवृत्तकुर्यान्नरभूमिप-तेःप्रधानम् चंद्रोमृगेंद्रोपगतोऽमरेंद्रोपाध्यायदृष्टः •पारिसूतिकाले २८ स्त्रीवै-भववैगुणिनंगुणज्ञंप्राज्ञविधिज्ञंकुरुतेमनुष्यं पीयूषरश्मिर्जननेयदिस्यात् पंचाननस्थोभृगुपुत्रदृष्टः २९ कांतावियुक्त.कृपिकर्मदक्षोदुर्गाधिकारोहिनरोल्प-कार्थः सिंहोपयातेसतिशीतभानौ निरीक्षितेसूर्यसुतेनसूतौ ३० भूमीशकोशाधिकृतसुवृत्तं भार्यावियुक्तंगुरुभक्तियुक्तम् जातंचकन्यास्थितशीतरश्मिस्त-नोतुजंतुंखररश्मिदृष्टः ३१

और पुत्रोंसें सपूर्णसुखवाला होताहै २७ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशिमें चंद्रमा वृहस्पति कर्के देख्याहोवे तिसकों वहुश्रुत और विशेषकर्के साधु और राजाके प्रधानताको प्राप्तहोताहै २८औरजिस-के जन्मसमयमें सिंहराशिका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे सो स्त्रीके ऐश्वर्यवाला और गुणी और गुणके जानने वाला और चतुर और विधिके जाननेवाले मनुष्यको कर्ताहै २९ और जिसके जन्म-समयमें सिंहराशिमे चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे सो स्त्रीकर्के रहित और खेतीयोंके कर्ममें चतुर और किलेकोटोंका अधिकारवाला और थोडेधनवालाहोताहै ॥ ३० ॥ श्रवकन्याराशिमेंचंद्रमाको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें कन्याराशिका चंद्रमा सूर्यकर्के देख्या होवे तिस कों भंडारका अधिकारवाला और श्रेष्ठवृत्तिवाला और स्त्रीसेंरहित औरभक्तिमें युक्त कर्ताहै- ३१

और जिसके जन्मसमयमें कन्याकाचद्रमामंगल कर्केदेख्याहोवे तिसकों हिसाकरणेमें तत्पर और बडा सूरवीर और बडाक्रोधी राजाके आश्रयवाला और युद्धादियोंमें जयको प्राप्त करणे वाला होताहै ३२ और जिसकेजन्मसमयमे कन्याकाचंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो ज्योतिःशास्त्रकोंऔर काव्य औरसंगीत विद्यामे चतुर होताहै और युद्धमें श्रेष्ट यशकों प्राप्त होताहै। ३३ और जिसके जन्मसमयमें कन्याका चद्रमा बृहस्पति कर्के देख्या होवे सो-बहुतभाईयोंवाला और राजाका प्यारा और श्रेष्ठवृत्तिवाला और श्रेष्टयशवाला होताहै ॥ ३४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कन्याराशिका चंद्रमाशुक्र कर्के देख्या होवे तिसकों वेश्याके विलासमें चित्तकों करणे वाला और स्त्रीका वशवर्त्ती और राजासें धनलाभ वाला कर्ताहै ३५ और जिसके जन्मस

हिंसापरंशूरतरसकोपंनृपाश्रयंलब्धजयंरणादौ कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टोमनुजंकरोति ३२ ज्योतिर्विद्यांकाव्यसंगीतविद्याप्राज्ञंयुद्धेलब्धकीर्तिंविनीतं कुर्यान्नूनंमानवंमानवंतंकन्यास्थेंदुश्चेंदुजेनप्रदृष्टः ३३ भूरिबंधुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्त्तिसंयुतं मानवंहिंकुरुतेंगनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ३४ विलासिनीकेलिविलासचित्तकांताश्रितंभूपतिलब्धवित्तम् कुर्वन्नरंशीतकर.कुमारीसंस्थःसितेनप्रविलोकितश्च ॥ ३५ ॥ निष्किंचनंहीनमतिंनितांतस्त्रीसंश्रयादात्मधनंजनन्याः हीनप्रकुर्यात्खलुकन्यकायांगतोमृगांकोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥ सदाटनःसौख्यधनैर्विहीनःसदंगनासूनुधनैर्विहीनः मित्रैरमित्रैश्चनरोतितप्तस्तुलाधरेशीतकरेर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥ बुध्यापरार्थाकरणैकचित्तंमायासमेतंविषयाभितप्तं करोतिजातंहितुलागतेंदुर्निरीक्ष्यमाणोधरणीसुतेन ॥ ३८ ॥ कलाविधिज्ञंधनधान्ययुक्तवक्तृत्वविद्याविभवै.समेतं कुर्यान्नरंशीतकरस्तुलास्थःप्रसूतिकालेशशिजेनदृष्टः ॥ ३९ ॥

मयमें कन्याकाचंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तिसकों धन कर्के हीन और बुद्धि कर्के हीन और निरंतर स्त्रीके आश्रय धनवाला और माता सें हीन होताहै ३६ अवतुलाराशिमें चंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें तुलाराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे सो सर्व दाकाल भ्रमणेवाला और सुख कर्के और धनों कर्के रहितहोता है और श्रेष्टस्त्रीपुत्रों कर्के रहित होताहै और मित्रों कर्के और शत्रुयों कर्के तप्ताहै ३७ और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे सो बुद्धि कर्के दूसरे के धन में चित्तकोंधारताहै और माया कर्के युक्त और विषयों कर्के तप्ता है ३८ और जिसके जन्मकाल में तुलाका चंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो कलाविधिके जानने वाला और धन धान्य कर्के युक्त और वक्ता और विद्याके ऐश्वर्यो कर्के युक्त होताहै ३९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो वस्त्र भूषणों में चतुर और ख रीदकरणे में और वेचणे कीविधिमें चतुर होताहे ४० और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा शुक्र कर्के देख्या होवे सो वडा चतुर और अनेक प्रकारोंके उद्यम कर्के अर्थ सिद्धकरणे वाला और राज यों कीकृपाकर्के युक्त और प्रसन्नमन और पुष्ट देहवाला होताहे ४१ और जिसके जन्मसम यमें तुलाका चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवेसो धनों कर्के और धान्यों कर्के और वाहनों कर्के युक्त होताहे और विषयभो गों कर्के रहितहो ताहे ४२ अबवृश्चिकराशिमें चंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलक- हतेहैं ॥ जिसके जन्मकाल में वृश्चिकका चंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठवृत्ति से हीन और धन कर्के युक्त और मनुष्यों कीवात नहि सहारणे वाला और उद्यमी और सेनामें रहिने वाला होताहे ४१ और जिसके जन्मसमयमें वृश्चिकका चद्रमा मंगल कर्के देख्याहोवे सो युद्धमें विशेष यशकों प्रा

विचक्षणोवस्त्रविभूषणेषुक्रयेथवाविक्रयताविधाने तुलाधरेशीतकरेनरःस्याद्दृष्टे शुनासीरपुरोहितेन ४० प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थःस्यात्पार्थिवानांकृपयासमेतः हृष्टोनरःपीनकलेवरश्चजूकेमृगांकेभृगुजेनदृष्टे ॥ ४१ ॥ धनैश्चधान्यैर्वरवाहनै श्चयुतोऽपिहीनोविषयोपभोगैः ॥ भवेन्नरस्तौलिनिजन्मकालेकलानिधौभानुत नूजदृष्टे ॥ ४२ ॥ सद्वृत्तिहीनंधनिनंजनानामसह्यमत्यंतकृतप्रयासम्. बल निवासमनुजंप्रकुर्यात्ताराधिपःकौर्प्यगतोर्कदृष्टः ४१ रणांगनावाप्तयशोविशे षोगभीरतागौरवसंयुतश्च भूपानुकंपासमुपात्तवित्तोनरोऽलिनींदौक्षितिजेनदृष्टे ४४ वाग्विलासकुशलोरणशीलोगीतनृत्यनिरतश्चनितांतम् कूटकर्मणिनरोनिपुणः स्याद्वृश्चिकेशशिनिचंद्रजदृष्टे ४५ लोकानुरूपः सुतरांसुरूपः सत्कर्मकृद्वित्त- विभूषणाढ्यः स्यान्मानवोजन्मनिशीतरश्मौसंस्थेऽलिनीज्येननिरीक्ष्यमाणे ४६ प्रसन्नमूर्तिःसमुदारकीर्त्तिः कूटक्रियाज्ञोधनवाहनाढ्यः कांताहतार्थःपुरु- षोऽलिजाते शीतद्युतौदैत्यगुरुप्रदृष्टे ४७ स्थनभ्रंशद्रव्यनाशाल्पवित्तं नीचा- पत्यासत्वयक्ष्मप्रकोपं कुर्याच्चंद्रः सूतिकालेलिसंस्थ.छायापुत्रप्रेक्ष्यणत्वंप्रयातः४८

प्तहोता है और गंभीरता और गौर वताकर्के युक्त और राजा कीकृपा कर्के धनकों प्राप्तहोताहे ४४ और जिसके जन्मसमयमें वृश्चिकराशिमें चद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो वाग्विलासमें श्रेष्ठ और युद्धकरणे वाला और निरंतर गीतनृत्यमें रत और झूठेकर्मोंमें चतुर होताहे ४५ और जिसके जन्मस- मयमे वृश्चिकका चद्रमा वृहस्पतिकर्के देख्या होवे सो लोकोंकी इछासें वर्तने वाला और अत्यंतरूप- वाला और श्रेष्ठकर्मकरणे वाला और धन और भूषणों कर्के युक्तहोताहे ४६ और जिसके जन्मसम- यमें वृश्चिकका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे सो प्रसन्नमूर्त्ति और वडे यशवाला और कठिन कृत्य- के जानने वाला और धन और वाहनों कर्केयुक्त और स्त्रीकर्के नष्टधन तिसका होताहे ४७ और- जिसके जन्मसमयमें वृश्चिकका चद्रमा शनिकर्के देख्या होवे तिसकों भ्रष्ट और धनका नाश और- थडे धनवाला और नीच संतान वाला और पराक्रमकर्के रहित और यक्ष्मरोग वालाकर्ताहे ४८

॥ अथधनराशिमें चंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें धनराशिमें चंद्रमा सूर्य-कर्के देख्या होवे सो वडे प्रतापवाला और ऐश्वर्यशकर्के युक्त और संपदा कर्के युक्त और वाहनों-कर्के युक्त और युद्धमें जयकों प्राप्त और राजाकी कृपावाला कर्ताहै ४९ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिमें चंद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे सो सेनाकास्वामि और वडे प्रतापकों प्राप्तहोताहै और-लक्ष्मी और भूषणोंके लाभवाला होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें धन राशिका चंद्रमा-बुधकर्के देख्या होवेसो श्रेष्ठवाग्विलासकरणे वाला और वहुत चाकरों कर्के युक्त और ज्योतिषविद्या-और शिल्पविद्याके जानने वाला कर्ताहै ५१ और जिसके जन्मसमयमें धनका चद्रमा वृहस्पति-कर्के देख्या होवे सो वडे अधिकारमें स्थितहोताहै और धनवान् और श्रेष्ठवृत्ति वाला होताहै और सुंदरदेहवाला होताहै ५२ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनान्याहवजंजयंच नृपप्रसादंकुरुतेनराणांतारा धिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ४९ सेनापतित्वंचमहत्प्रतापंपद्मालयालंकरणोपल ब्धिम् कुर्यान्नराणांहरिणांकएषःशराशनस्थोऽवनिजेनदृष्टः ५० सद्वाग्वि लासंवहुभृत्ययुक्तंकुर्यान्नरंज्योतिषशिल्पविद्यम् तुरंगजंघेहिकुरंगजन्माकुरंग-लक्ष्मप्रभवेनदृष्टः ५१ महत्पदस्थोधनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः धनुर्धरेशीतकरेप्रयाते निरीक्षितेशक्रपुरोहितेन ५२ संतानार्थात्यंतसंजात-धर्मः शश्वत्सौख्येनान्वितोमानवः स्यात् तारास्वामीचापगामीप्रसूतौ दैत्या-मात्यप्रेक्ष्यणत्वंप्रयातः ५३ सत्त्वोपेतंनित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारंमानवंचप्र-चंडम् कोदंडस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौशीतरश्मिःकरोति ५४ गतधनोमलिनश्चलनप्रियोहतमतिःखलुदुःखितमानसः हिमकरेमकरेचदि वाकरेक्षिततनौहिनरःप्रभवेद्यदि ५५ ॥ अतिप्रचंडोधनवाहनाढ्यः प्राज्ञः श्चदारात्मजसौख्ययुक्तः स्यान्मानवोवैभवभाक्नितांतंमृगेमृगांकेवनिसूनुदृष्टे ५६

सो संतान और धन और अत्यंतधर्मकों प्राप्तहोताहै और निरंतरसुख कर्के युक्त होताहै ५३ और-जिसके जन्मसमयमें धन राशिमें चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे सो सत्व कर्के युक्त और नित्यप्रति-शास्त्रमें अनुरक्त और श्रेष्ठवक्ता और वडे प्रचंडप्रताप वाला होताहै ॥ ५४ ॥ अथम कराशिमें चद्रमा कों ग्रह दृष्टियोंका फल कहतेहै जिसके जन्मसमयमेंमकरराशिकाचंद्र-मासूर्य कर्के देख्याहोवे सो धनरहित और मलीन और भ्रमणमें प्रीतिवाला और बुद्धिहीन और निश्च-यकर्केदुःखित और दीनहोताहै ५५ और जिसकेजन्मसमयमें मकरका चंद्रमा मंगलकर्केदेख्याहोवे सो वडाप्रचंड और धन और वहानों कर्के युक्त और चतुर और स्त्रीपुत्रके सुखकर्के युक्त और निरंतरऐश्व-र्यके भोगने वाला होताहै ५६

और जिसके जन्मसमयमें मकरका चंद्रमा बुधकर्के देख्याहोवे सो बुद्धि करके हीन और निधन और घरके त्याग करणे वाला और स्त्रीपुत्रों कर्के त्याग कियाहुवा होताहे ॥ ५७॥ और जिसके जन्मसमयमें मकरका चंद्रमा बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सो राजा कापुत्रहोताहे और सत्यकर्के युक्त और गुणकेजानने वाला और स्त्रीपुत्रादियोंकर्के युक्त होताहे ५८ और जिसके जन्मसमयमें मकरकाचंद्रमाशुक्रकर्के देख्या होवे सो श्रेष्ठनीतिकेजानने वाला और धनऔर वाहनोंकर्के युक्त और पुत्र और भूषण और वस्त्रों के सुखकर्के युक्त होताहे ५९ और जिसके जन्मसमयमें मकर राशिमें चंद्रमा शनिकर्के देख्या होवे सो वडा आलसी और धन हीन और पराक्रम रहित और मलीन और व्यसनों कर्के संतप्त होताहे ६० ॥ अबकुंभराशिमें स्थितचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे सो खेचीया करणे वाला होताह

बुद्ध्याहीनोनिर्धनस्त्यक्तगेहोगेहिन्याद्यैरुज्झितःपूरुषःस्यात् आकोकेरस्थानगेशीतरश्मौपीयूषांशोरात्मजेनप्रदृष्टे ५७ नृपात्मजःसत्ययुतोगुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतोनरःस्यात् मृगाननेजन्मनियामिनीशेवाचामधीशेननिरीक्ष्यमाणे ५८ सुनयनोधनवाहनसंयुतःसुतविभूषणवस्त्रसुखोनरः कुमुदिनीदयितेमृगसंस्थिते भृगुसुतेनजनौननुवीक्षिते ५९ महालसोमंदधनस्त्वसत्योमलीनसःस्याद्व्यसनाभिभूतः पीयूषमूर्तिर्यदिनक्रवर्तीत्रिमूर्तिपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणः ६० कृपीवलःकैतवसंयुतश्चनृपाश्रितोधर्मरतोनरःस्यात् पीयूषमूर्तिर्यदिकुंभगामीत्वंभोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः ६१ धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तोविषमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः भवतिमलिनचित्तोऽत्यंतधूर्तोहिमर्त्यःशशिनिकलशयातेवीक्षितोभूसुतेन ६२ विषयसौख्यरतोशनसंविधौरुचिरतीवशुचिःप्रियभाषणः युवतिनीतसुगीतकृतादरोघटगतेंदुरिहज्ञनिरीक्षितः ६३ महीपुरग्राममुखादिसौख्यंभोगान्वितंसाधुजनप्रवृत्तिं कुर्यान्नरंश्रेष्ठतरंघटस्थेनिशाकरःशक्रगुरुप्रदृष्टः

और आश्चर्यकर्मकेकरणे वाला और राजाके आश्रयवाला और धर्ममें रत होताहे ६१ और जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिमें चद्रमामंगल कर्केदेख्या होवे सो धनऔरघरऔर माता और पिताकेवियोगकोप्राप्त होताहे और वडे कठिन पदार्थांकोंउत्पन्न करणे वालाऔर वहुत बोलनेवाला होताहेऔरमलीनचित्तवाला और वडाधूर्तहोताहे६२जिसके जन्मसमयमे कुंभकाचद्रमाबुध कर्के देख्या होवेसो विषयोंकेसुखमें रत और भोजनमें विधानके जानने वाला और अत्यंत पवित्र और मीठाबोलने वाला और स्त्रीयाकेनीतिके जानने वाला और गीतकीप्रीति वाला होताहे ६३ और जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमा बृहस्पति कर्के देख्या होवे सो पृथ्वी और पुरग्रामादिसुखकोंप्राप्त होताहे और भोगोंकर्केयुक्त औरसाधु जनोंकी प्रवृत्तिवाला और वडा श्रेष्ट होताहे ॥ ६४

ओर जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्याहोवे सो मित्र और पुत्र और स्त्री और घरके सुखसें रहितहोताहै और दीन और गौरवसें हीन होताहै ॥ ६५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमाशनिकर्के देख्याहोवे सो गधे और ऊंट और नवीन घोडे खचरों केलाभकों प्राप्त होताहै और खोटीस्त्रीमें रत और धर्ममें विरुद्धवृत्ति वाला होताहै ॥ ६६ ॥ अबमीनराशिमें चंद्रमाकोंग्रहदृष्टिकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा सूर्य कर्के देख्याहोवे सो कामदेवके-सुखकों प्राप्त होताहै और सेनापति होताहै और श्रेष्टकर्म की सिद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ६७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा मंगलकर्के देख्याहोवे सो शत्रुयोंकर्के युक्त और कुलटास्त्रीकेसंगकों प्राप्त होताहै और सुखसें रहित और निरंतरपापमें रत होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके जन्मस

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनोदीनोजनोत्सारितगौरवः स्यात् निशाकरेकुंभधरेप्रसूतौसंवीक्षितेदानवपूजितेन ॥ ६५ ॥ खरोष्ट्रवालाश्वतरादिलाभंकुस्त्रीरतंधर्मविरुद्धवृत्तिं करोतिपुंसांहिघटेऽधितिष्ठन्निशाकरोभास्करसूनुदृष्टः ॥ ६६ ॥ मनोद्भवोत्कर्षमतीवसौख्यंसेनापतित्वंवहुवित्तवृद्धिं सत्कर्मसिद्धिंकुरुतेहिमांशुर्झषेदिनेशेननिरीक्ष्यमाणः ॥ ६७ ॥ पराभिभूतंकुलटाधिसख्यंसौख्योज्झितंपापरतंनितांतम् करोतिजातंहिनिधिःकलानां मीनस्थितोभूमिसुतेन दृष्टः ६८ ॥ वरांगनासूनुसुखानिनूनंमानंधनंभूमिपतेःप्रसादं कुर्य्यान्नराणांहरिणांकएपोवैसारिणस्थोज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥ ६९ ॥ उदारदेहंसुकुमारदेहंसद्गेहिनीसूनुधनादिसौख्यं नृपांविदध्यात्पृथुरोमगामीतमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥ ७० ॥ सद्गीतविद्यादिरतंसुवृत्तंविलासिनीकेलिविलासशीलं करोतिमर्त्यंतिमियुग्मसंस्थः शीतद्युतिर्जन्मनिशुक्रदृष्टः ॥ ७१ ॥ कामातुरंदारसुतैर्विहीनंनीचांगनासख्यमविक्रमंच नीहाररश्मिः शफरंप्रपन्नोनरंविदध्याद्रविसूनुदृष्टः ७२ इतिचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः

मयमें मीनका चंद्रमा बुधकर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्टस्त्री और पुत्रके सुखकोंप्राप्त होताहै और मानकों और धनकों और राजाकी प्रसन्नताकों प्राप्त होताहै ६९ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा बृहस्पति कर्के देख्याहोवे सो तिसकों उदार देहवाला और सुंदर कोमलदेहवाला और श्रेष्टस्त्री पुत्रकेसुख वाला और धनादिसुख वाला और अपनेकुलमेंराजाकर्ताहै ७० और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमाशुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्टगीतविद्यामें रत और श्रेष्टवृत्तिवाला और वेश्याके विलासवाला और श्रेष्टस्वभाववालाकर्ताहै ॥ ७१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमाशनिकर्के देख्याहोवे सो तिसकों कामातुर और स्त्रीपुत्रों कर्के हीन और नीचस्त्रीमें सक्त और पराक्रमसें हीनकर्त्ताहै ॥ ७२ ॥ इतिचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः ॥

अथस्वक्षेत्रमें स्थितमंगलकोंग्रहदृष्टियों काफल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमे मेष वृश्चिकराशिमें मंगलसूर्य करके देख्याहोवे सो चतुरहोताहै और श्रेष्ठवक्ता होताहै और पितामाताकाभक्त होताहै और धनी और मंत्री और उदार होताहै ॥ १ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका मंगल चंद्रमाकरके देख्याहोवे सो दूसरे की स्त्रीमें सक्त होताहै और वडाशूरवीर होताहै और कृपासें रहित होताहै और चोरोंकेमारणे वाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमे स्थित मंगल बुधकरके देख्याहोवे सो वेश्याजनोंके भूषण-वस्त्रोंमें एक वृत्तिवाला और चतुर और दूसरेके द्रव्यके हरणे वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसके-जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल वृहस्पति करके देख्या होवे सो अपने वशमें राजा होताहै

अथस्वभेभौमेग्रहदृष्टयः प्राज्ञःसुवक्तापितृमातृभक्तोधनीप्रधानोतितरामुदारः नरोभवेदात्मगृहेमहीजेसरोजिनीराजानिरीक्ष्यमाणे १ अन्यांगनासक्तमतीवशूरंकृपाविहीनंहतचोरवर्गं नरंप्रकुर्यान्निजधामगामीभूमीतनूजाद्विजराजदृष्टः॥ २ पण्यांगनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी भवेन्नरःस्वर्क्षगतेप्रसूतौ क्षोणीसुतेसोमसुतेनदृष्टे ३ वशेऽवनीशोधनवान्सकोपोनृपोपचारःकृतचौरसख्यः आरेनिजागारगतेनरःस्यात्सूतौसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ४ भूयोभूयोऽशोभनोत्सुक्यसक्तःकांताहेतोर्यानचिंतानितांतम् प्राणीपुण्येकर्मणिप्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षेभौमेभार्गवेणप्रदृष्टे ५ ॥ मित्रोज्झितंमातृवियोगतप्तं कृशांगयष्टिंविपमंकुटुंबे ईर्षाविशेषंपुरुषंविदध्यात् कुजःस्वभेस्थोर्कसुतेनदृष्टः ६ इतिस्वर्क्षेभौमफलम् अथशुक्रगृहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः कांतामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिंविपक्षं प्रचंडकोपंकुरुतेमनुष्यं कुजःसितागारगतोऽर्कदृष्टः १

और धनी होताहै और क्रोध करके युक्त होताहै और राजयों के चिन्हों वाला और चोरोंसे मैत्री करणे वाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमे मेष वृश्चिकका मंगल शुक्र करके देख्याहोवे सो वारवार श्रेष्ठ उत्सवोंको देखताहै और स्त्री के निमित्त जात्रा की चिंताकों निरंतर प्राप्त होताहै और पुण्य कर्ममे प्रीति वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमे मंगल शनि करके देख्याहोवे सो मित्र करके हीन और माता केवियोग करके तप्त और कृशदेहवाला और कुटुंबसे विरोधी और ईर्षा करके युक्तहोताहै ६ इतिस्वर्क्षेभौमफलम् अथशुक्रगृहेभौमेग्रहदृष्टयः जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाराशिमे मंगल सूर्य करके देख्याहोवे सो स्त्रीके मनकी वृत्तिसें हीनहोताहै और वन और पर्वतोंमें रहणेकी रुचि वाला और शत्रु हीन होताहै और वडे प्रचंड क्रोध वाला होताहै ॥ १ ॥

श्रोरजिसकेजन्मसमयमें वृषतुला राशिमें मंगलचंद्रमा कर्केदेख्याहोवेसोमाताकाविरोधीश्रोरयुद्धमेंडरणे बालाश्रोर वहुत स्त्रीयोंकास्वामि होताहे २ श्रोरजिसकेजन्मसमयमेंवृषतुलाराशिमें मंगल वुध कर्के देख्या होवे तिसकी शास्त्रमें प्रवृत्ति होतीहे श्रोर लडाई करणेमें प्रीति होतीहे श्रोर वहुत वार्ता कर्ताहे श्रोर तिसकों धनका लाभ थोड़ा होताहे श्रोर देहकी श्रेष्ट शोभा होतीहे ३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाका मगल वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो संबंधियोंकी प्रीति में रत होताहे श्रोर वडे भाग्यों वाला होताहे श्रोर श्रेष्ठ गीत नृत्यादि विधिके जानने वाला होताहे ४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलका मगल शुक्र कर्के देख्या होवे सो वडे भाग्यों वाला श्रोर राजाका मंत्री अथवा सेनाका स्वामी श्रोर वडे सुख कर्के युक्त होताहे ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाका मगल शनि कर्के देख्या होवे सो प्रसिद्ध श्रोरनम्र श्रोर धनी श्रोर श्रेष्ठमित्रोंवाला श्रोरपवित्र

श्रंबाविरुद्धःखलुयुद्धभीरुर्वव्हंगनानामपिनायकश्च स्यान्मानवोभूतनयेसितर्क्षेनक्षत्रनाथेननिरीक्ष्यमाणे २ शास्त्रप्रवृत्तिःकलहप्रियःस्यादनल्पजल्पोल्पधनागमश्च सत्कायकांतिः परिसूतिकालेसितालयस्थोशशिजेनदृष्टः ३ बंधुप्रियेस्यान्निरतोऽतिभाग्यःसद्गीतनृत्यादिविधिप्रवीणःक्षोणीतनूजेभृगुजर्क्षयाते संवीक्ष्यतेवाक्पतिनाप्रसूतौ ४ सुखाढ्यनामाक्षितिपालमंत्रीसेनापतिर्वाविहुसौख्ययुक्तः स्यान्मानवःशुक्रगृहोपयातेनिरीक्षितेभूमिसुतेसितेन ५ स्यातोविनीतो धनवान्सुमित्रःपवित्रबुद्धिःकृतशास्त्रयत्नः नरःपुरग्रामपतिःसितर्क्षेभूनंदनेभानुसुतेनदृष्टे६ इतिशुक्रगृहेभौमेग्रहदृष्टयः अथवुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः विद्याधनैश्वर्ययुतंसुसत्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलं कुर्यान्नरंसोमसुतालयस्थःक्षोणीसुतःसूर्यनिरीक्ष्यमाणः १ संरक्षणेभूपतिनानियुक्तंकांतारतिंसत्वयुतंसतोपम् भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यंवुधर्क्षसंस्थःशशिनाप्रदृष्टः २ अनल्पजल्पंगणितप्रगल्भंकाव्यप्रियंचानृतचारुवाक्यं दौत्येप्रयासैःसहितंप्रकुर्याद्धरातनूजोज्ञगृहेज्ञदृष्टः॥ ३ ॥

बुद्धि वालाश्रोरशास्त्रमेंश्रभ्यासकरणेवाला श्रोरपुरग्रामोकास्वामीहोताहे ६ इतिशुक्रगृहेभोमेग्रहदृष्टयः अथवुध क्षेत्रमें जोमंगलतिसमेंग्रहोंकीदृष्टिकाफलकहतेहें ॥ जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमेंमंगल सूर्यकर्केदेख्याहोवे तिसकों विद्याऊौरधन ऊौरऐश्वर्यकर्केयुक्त ऊौरश्रेष्ठपराक्रम ऊौरवनपर्वतकिलेकोटोंकेदेखना श्रयसेस्वभाववालाकर्ताहे ॥ १ ॥ ऊौरजिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमेंमगलचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सोराजानेश्रपनीरक्षाकेवास्तेस्थापनकरीदाहे ऊौरश्रपनीस्त्रोमेंप्रीतिकरणेवालाऊौरपराक्रमयकेयुक्त ऊौरसतोपकर्केयुक्त होताहे ॥ २ ॥ ऊौरजिसकेजन्मसमयमेंमिथुनकन्याराशिमेंमंगलवुधकर्केदेख्याहोवे सोवहुतवोलनेवाला ऊौरगणितशास्त्रमेचतुरऊौरकाव्यमें प्रीतिवाला ऊौर झूठेवनायकर सुंदरवचनकहनेवाला ऊौर दूतकर्ममें वडाउद्यमकरणेवालाहोताहे ॥ ३ ॥

उरोजिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मंगल बृहस्पति करके देख्याहोवे सो मनुष्यव्यसनादियोंकरके अपनेदेशकोंत्यागके और देशकोंजाताहै और तिसकोंउच्चस्थानमें युक्तकर्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मंगल शुक्रकरकेदे ख्याहोवे तिसकोंवस्त्र और अन्नजलकेसुखककरकेयुक्त और अपनीस्त्रीमेंसक्त और वडीसमृद्धिकों प्राप्त कर्ताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मंगल शनिकरकेदेख्याहोवे सो अत्यंतशूरवीर और मलीनऔरआलसी और किलेकोट पर्वत औरवनोंमें विलासकरणेवालाहोताहै ॥ ६ ॥ इति बुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अबकर्कराशिमेंस्थित मंगलकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामंगलसूर्यकरकेदेख्याहोवे सो पित्तकेकोपकरकेपीडितहोताहै और वडेधैर्यवाला और द

अन्यदेशगमनव्यसनाद्यैःसंयुतंहिकुरुतेनरमुच्चैः सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेनचदृष्टः ॥ ४ ॥ वस्त्रान्नपानीयसुखैःसमेतंकांताप्रसक्तंसुतरां समृद्धम् कुर्यान्नरोभूमिसुतोबुधर्क्षसंस्थःप्रदृष्टोभृगुनंदनेन ॥ ५ ॥अतीवशूरो मलिनोऽलसश्चदुर्गाचलारण्यविलासशीलः भवेन्नरोभास्करसूनुदृष्टेधरासुतेसोमसुतालयस्थे ॥ ६ ॥ इतिबुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथकर्कस्थभौमेग्रहदृष्टयः॥पित्तप्रकोपार्त्तियुतोऽतिधीरोदंडाधिकारीसुतरांमहौजाः भवेन्नरःकर्कगते महीजेनिरीक्ष्यमाणेरविणाप्रसूतौ १ गदाभिभूतोगतवस्तुशोकोविहीनवेषोगतसाधुवृत्तः भवेन्नरःकर्कटगेमहीजेसोमनसूतौचनिरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥ मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुंबभारःपापप्रचारःखलचितवृत्तिः बुधेनदृष्टेसतिकर्कटस्थेभौमेनरःस्याद्व्यसनाभिभूतः ३ नरेंद्रमंत्रीगुणगौरवाढ्योमान्योवदान्योमनुजःप्रसिद्धः कुलीरसंस्थेतनयेधरित्र्यानिरीक्षिताचित्रशिखंडिजेन ४ अर्थक्षयोदुर्व्यसनेननूनं निरंतरानर्थसमुद्भवःस्यात् भवेन्नराणांभृगुणाप्रदृष्टेत्वंगारकेकर्कटराशिसंस्थे ५

डके अधिकारकोंप्राप्त और वडेवलवालाहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंकर्कराशिका मंगल चंद्रमाकरकेदेख्याहोवे सो रोगोंकरकेयुक्त और नष्टवस्तुके शोककरकेयुक्त और वेशकरकेहीन और साधुवृत्तिसें रहितहोताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमें मंगलबुधकरके देख्याहोवे सो मित्रोंकरके रहित और थोडेकुटुंबवाला और पापकरणेवाला औरदुष्टचित्तवृत्तिवालाहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामंगलबृहस्पतिकरकेदेख्याहोवे सोराजाकामंत्री और गुण और गौरवकरकेयुक्तऔरवडामानवाला औरप्रसिद्धहोताहै ४ औरजिसकेजन्मसमयमेंकर्कराशिकामंगलशुक्रकरकेदेख्याहोवेसोनिश्चयकरकेखोटेविषयोंसें धनकोंप्राप्तहोताहैऔरतिसकोंनिरंतरअनर्थोकीउत्पत्तीरहतीहै ५

और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामंगलशनिकर्केदेख्याहोवेसो जलधान्यजोहै शाली. संलेकरकेधनकोंप्राप्तहोताहै औरसुंदरदेहकीसोभावाला औरराजासेंधनकोंप्राप्तहोताहै ६ इतिकर्कट- स्थेभोमेग्रहदृष्टयः अवसिंहराशिकेभौमकोंग्रहग्रदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसकेजन्मसमयमें सिंहरा- शिमेंस्थित मंगलसूर्यकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्यअपनेमित्रों और संवाधियोंसेंप्रीतीकरणेवालाहोताहै और शत्रुयोंसेंवैरकरणेवालाहोताहै और वनपर्वतोंमेंनिवासकरणेवालाहोताहै १ और जिसकेज- न्मसमयमेंसिंहराशिमें मंगलचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे सोमाडेरूपवाला और कठिनस्वभाववालाहो. ताहे और माताकेसाधनम्र और अपनेकार्यमेंचतुर और तीक्ष्ण और सुंदरवुद्धिवालाहोताहै २ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशिमेंमंगलबुधकर्केदेख्याहोवेसो श्रेष्ठकाव्य और कलाकेसमूहोंकें.

कीलालधान्यादिधनःसुकांतिर्महीपतिप्राप्तधनोमनुष्यः महीसुतेकर्कटराशियातेनि रीक्षितेसूर्यसुतेनसूतौ ६ इतिकर्कटस्थभौमेग्रहदृष्टयः॥ अथसिंहस्थभौमेग्रहदृष्टयः हितप्रकर्त्ताऽभिमतेपुनूनंद्विपज्जनानामहितप्रदाता . वनाद्रिकुंजेपुकृतप्रचारः सिंहेमहीजेरविणाप्रदृष्टे १ अपुष्टमूर्त्तिःकठनस्वभावश्चांवाविनीतोनिपुणःस्व कार्ये तीव्रःपुमांश्चारुमतिःप्रसूतोसिंहेमहीजेद्विजराजदृष्टे २ सत्काव्यशि ल्पादिकलाकलापेऽभिज्ञोपिलुब्धश्चलचित्तवृत्तिः स्वकार्यसिद्धौनिपुणोनरः स्यात्सिंहेमहीजेशशिजेनदृष्टे ३ प्रशस्तवुद्धिर्नृपतेःसुहृच्चसेनाधिनाथोभिम तोवहूनां विद्याप्रवीणोहिनरःप्रसूतौजीवेक्षितेसिंहगतेमहीजे ४ गर्वोन्नतो त्यंतशरीरकांतिर्नानांगनाभोगयुतःसमृद्धः भूमीसुतेसिंहगतेप्रसूतोनिरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ५ भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽन्यचिंताग्रद्धाकृतिस्त्वंद्रविणोज्झितस्त्वं भवेन्नराणांधरणीतनूजेसिंहास्थितेभानुसुतेनदृष्टे ६ इतिसिंहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः

जाननेवाला और लोभी और चंचलचित्तवृत्तिवाला और अनेककार्यकीसिद्धिमेंचतुरहोताहै ३ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहकामंगलवृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोश्रेष्ठवुद्धिवाला और राजाकामि. त्र और सेनाकास्वामि और वहुतजनोंकोइच्छाकरणेवाला और विद्यामें चतुरहोताहै ४ और जिस. केजन्मसमयमें सिंहकामंगलशुक्रकर्केदेख्याहोवे सोअभिमानकर्केवडाउंचाजाताहै और अतिसुंद. रदेहकीसोभावालाहोताहै और अनेकस्त्रियोंकेभोगकर्केयुक्त और समृद्धिकर्केयुक्तहोताहै ५ और. जिसकेजन्मसमयमेंसिंहराशिकामंगलशनिकर्केदेख्याहोवे सोदूसरेकेघरनिवासकरणेवाला और न. ष्टोचिंताकर्केयुक्त और वृद्धस्वरूपवाला और द्रव्यकर्केहीनहोताहै ६ इतिसिंहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः

अथवृहस्पतिकेक्षेत्रमेंमंगलकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्म समयमें धन मीनराशिमें मंग. ल सूर्यकर्के देख्याहोवेसो वनपर्वत किलेकोटोंमें निवासकर्त्ताहै और क्रूरस्वभाववाला और भाग्योंवा-का और जनोंकर्के पूजितहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनकामंगल चंद्रमाकर्के दे-ख्याहोवेसो विद्वानोंकीविधिकेजाननेवाला और राजाकोंनहिंसहारणेवाला और लडाईमेंप्रीतिवाला और संपूर्णो कर्केसाज्य और चतुरहोताहै॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें धन मीनराशिमें मगल वुध कर्केदेख्याहोवे तिसकों चतुर और शिल्पविद्यामें निपुण और श्रेष्टस्वभावकर्केयुक्त और संपूर्णविद्यामें-श्रेष्ट और नम्रस्वभाकर्केयुक्तकर्त्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनराशिका मंगल वृहस्प तिकर्के देख्याहोवे तिसकोंस्त्रीकीचिंताकर्केयुक्त और निरंतरशत्रुवर्गमें लडाईकर्केयुक्त और स्थानमेंभ्रष्ट

अथजीवभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः वनाद्रिदुर्गेपुकृताधिवासंक्रूरंसभाग्यंजनपूजितं च ॥ करोतिजातंधरणीतनूजोजीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ १ ॥ विद्वद्विधिज्ञंनृ पतेरसह्यंकालिप्रियंसर्वनिराकृतंच ॥ प्राज्ञंप्रकुर्यान्मनुजंधराजोजीवर्क्षगःशीत करप्रदृष्टः ॥ २ ॥ प्राज्ञंचशिल्पेनिपुणंसुशीलंसमस्तविद्याकुशलंविनीतम् ॥ करोतिजातंखलुलोहितांगः सौम्येनदृष्टोगुरुगेहयातः ॥ ३ ॥ कांतातिचिंतास हितंनितांतमरातिवर्गैःकलहानुरक्तं ॥ स्थानच्युतंभूमिसुतःप्रकुर्यात्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः ॥ ४ ॥ उदारचित्तोविपयानुसक्तोविचित्रभूपापरिभूपितश्च भाग्यान्वितःस्यात्पुरुपोऽवनीजेजीवर्क्षगेदानवपूज्यदृष्टे ॥ ५ ॥ कायकांतिरहि तश्चनितांतंस्थानसंचलरतोऽपिचदुःखी ॥ अन्यकर्मनिरतश्चनरःस्यात्जीवधा म्निकुसुतेऽर्कजदृष्टे ॥ ६ ॥इतिजीवर्क्षस्थेभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथशन्यागारगत भौमेग्रहदृष्टयः ॥ कलत्रपुत्रार्थसुखैःसमेतंश्यामंसुतीक्ष्णंसुतरांचशूरं कुर्यान्नरं भूतनयोर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतःप्रसूतौ ॥ १॥ सत्भूपणंमातृसुखेनहीनंस्था नच्युतंचचलसौहृदंच ॥ उदारचित्तंप्रकरोतिजातंकुजोर्किगेहेशनिनाप्रदृष्टः २

कर्त्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनका मगल शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो उदारचित्त और विपयोंमेंयुक्त और अनेकप्रकारोंकेभूपणोंकर्केभूषितहोताहै औरभाग्योंकर्केयुक्तहोताहै ॥ ५ और जिसकेजन्मसमयमें धन मीन राशिका मंगल शनि कर्के देख्याहोवे सो देहकीशोभासेंरहित और एकस्थानसें दूसरेस्थानमें भ्रमणा इसमेंरत और दुःखी और परकार्यमेंरतहोताहै ॥ ६ ॥ इतिजीव क्षेगेभौमेग्रहदृष्टयः॥ अथशनिकेक्षेत्रमें मंगलकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभरा शिकामंगलसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसकोस्त्रीपुत्र धन सुखकर्के युक्तऔरतरुणरूप और तीक्ष्ण और वडाशूर वीरकर्त्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मकर कुंभका मंगल चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसकोंश्रेष्टभूष णोंवालाकर्त्ताहै औरमाताकेसुखसेंरहितऔरस्थाननाशकोंप्राप्त औरचंचलमित्रता और उदारचित्तकर्त्ताहै २

जिसके जन्मसमयमे मकरकुंभराशीका मंगल बुध करके देख्याहोवे सो मीठा बोलनेवाला और भ्रमणने धन की लब्धीवाला और पराक्रमकरकेयुक्त और आश्चर्य कर्मोंकरकेयुक्त और भयकरके रहित होताहै ३ ॥ और जिसके जन्म समयमे मकर कुंभ राशिका मंगल बृहस्पति करके देख्याहोवे तिसकावडी आयुवाला और राजाकीकृपावाला और गुण करकेयुक्त और भाइयोंकी प्रीतिवाला और सुंदरदेहकी शोभावाला और रूपमें बहुतबोलनेवाला कर्त्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमय में मकर कुंभका मंगलशुक्र करके देख्याहोवे सो श्रेष्ठभाग्य और सौभाग्यके सुखोंकरकयुक्तहोताहै और स्त्रीकेवश्यहोताहै और अत्यंतलडाईमे प्रीतिवालाहोताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिका मंगल शनिकरके देख्याहोवे सो राजासे धनकोप्राप्तहोताहै और स्त्रीकाविरोधीहोताहै और बहुश्रुतहोताहै और बडीबुद्धिवाला और कष्टकरकेयुक्त और युद्धमे प्री

प्रियोक्तियुक्तोऽटनलब्धवित्तःसत्वान्वितःकैतवसंयुतश्च अभीर्नरोमंदगृहंप्रयातेपृथ्वीसुतेचंद्रसुतेनदृष्टे ॥ ३ ॥ दीर्घायुषंभूपकृपागुणाढ्यंबंधुप्रियंचारुशरीरकांतिं ॥ कार्यप्रलापंजनयेन्मनुष्यंजीवेक्षितोमंदगृहेमहीजः ॥ ४ ॥ सद्भोगसौभाग्यसुखैःसमेतःकांतावशोऽत्यंतकलिप्रियश्च क्षोणीसुतेमंदगृहेप्रयातेनिरीक्ष्यमाणेभृगुणानरःस्यात् ५ नृपाप्तवित्तोवनिताविपाढोबहुश्रुतोऽत्यंतमतिःसकष्टः रणप्रियःस्याद्धरणीतनूजेमंदेक्षितेमंदगृहप्रयाते ६ इति मंदागारगतभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमगेहेबुधग्रहदृष्टयः. बंधुप्रियंसत्यवचोविलासंनृपालसद्गौरवसंयुतंच करोतिजातंक्षितिसूनुगेहेसंस्थोबुधोभानुमताभिदृष्टः ॥ १ सङ्गीतनृत्यादिरुचिं प्रकामंकांताररतिर्वाहनभृत्ययुक्तः कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षेसोमात्मजेशीतकरप्रदृष्टे २ ॥ भूपप्रियंभूरिधनंचशूरंकलाप्रवीणंकलहोद्यतंच क्षुधान्वितंसजनयेन्मनुष्यंसौम्यःकुजर्क्षेकुसुतेनदृष्टः ३

तिवालाहोताहै ६ ॥ इतिशनिगृहगतभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अबमंगलकेगृहमे बुधकोग्रहोंकिदृष्टिकाफल कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमे मेष वृश्चिकराशिमें बुध सूर्यकरकेदेख्याहोवे तिसका बंधुओंकाप्यारा और सत्यबोलनेवाला और विलासकरणेवाला और राजासे श्रेष्ठगौरवकेलाभवालाकर्त्ताहै १ ॥ और जिसके जन्मसमयमे मेष वृश्चिकराशिमें बुध चन्द्रमाकरकेदेख्याहोवे सो श्रेष्ठगीतनृत्यादिकोंमे इच्छावालाहोताहै और कामकरकेयुक्त और स्त्रीमेंप्रीति और वाहन और चाकरोंकरकेयुक्तहोताहै और कुटिलताकरणेवालाहोताहै २ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका बुध मंगलकरके देखताहै तिसकाराजाकाप्यारा और बडेधनकरकेयुक्त और शूरवीर और कलामेंचतुर और लडाईकरणेमेंउद्यत और क्षुधाकरके पीडितकर्त्ताहै ३

श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका वुध वृहस्पतिककेंदेख्याहोवे तिसकोंसुखी श्रौर चतुर श्रौर श्रेष्ठवाणीककेंयुक्त श्रौर स्त्रीपुत्रादिकोंककें सहित श्रौर प्रसन्नमूर्त्तिकर्त्ताहै ४ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक का वुध शुक्रककें देख्याहोवे तिसकों स्त्रीकेविलासककें युक्त श्रौर गुण श्रौर गौरवककेंयुक्त श्रौर मित्रोंकाप्यारा श्रौर श्रेष्ठवुद्धिवाला श्रौर नम्रकर्त्ता है ५ श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिमें वुध शनिककेंदेख्याहोवे तिसकों सुंदरउत्साहवाला श्रौर वडेक्रूरस्वभाववाला श्रौर कुलमेंविरोधकरणेवाला श्रौर श्रेष्ठवुद्धिसेंहीनकर्त्ताहै ॥ ६ इतिभौमर्क्षेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ श्रवशुक्रकेक्षेत्रमें वुधकोंग्रहदृष्टिकाफलकहतेहै श्रौर जिसके जन्मसमयमे वृषतुलाराशिमें वुध सूर्यककेंदेख्याहोवे तिसकों दरिद्र श्रौर दुःख श्रौर रोगककें तप्तदेहवाला श्रौर निरतर परोपकारमें रत श्रौर शातस्वभाव श्रौर श्रेष्ठचित्तककेंयुक्तकर्त्ताहै ॥ १

सुखोपपन्नंचतुरंसुवाक्यंकांतासुताद्यैःसहितंप्रसन्नं करोतिमर्त्यंकुजगेहगामी सोमात्मजोवाकूपतिनाप्रदृष्टः ४ कांताविलासंगुणगौरवाढ्यंसुहृत्प्रियंचारु मतिंविनीतं करोतिजातंशशिजःकुजर्क्षेसंस्थश्चशुक्रेणनिरीक्ष्यमाणः ५ ॥ सुसाहसचोग्रतरस्वभावंकुलोत्कलिप्रीतिमसाधुद्यत्तिं करोतिमर्त्यंहरिणांकसूनुर्भौमर्क्षसंस्थःशनिनाप्रदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिभौमर्क्षेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ ॥ अथशुक्रर्क्षगेवुधे ग्रहदृष्टयः ॥ दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहपरोपकाराभिरतं नितांतं शांतंसुचित्तंपुरुषंप्रकुर्यात्सौम्योभृगुक्षेत्रगतोर्कदृष्टः ॥ १ ॥ वहुप्रपंचंधनधान्ययुक्तंदृढव्रतंभूमिपतिप्रधानं ख्यातंप्रकुर्यान्मनुजंहिसौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थःशशिनाप्रदृष्टः ॥ २ । राजापमानादिगदप्रतप्तंत्यक्तंसुहृद्भिर्विषयैश्च नूनं कुर्यान्नरंसोमसुतःसितर्क्षेसंस्थोधरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ३ ॥ देशोत्तमग्रामपुराधिराजंप्राज्ञंगुणज्ञंगुणिनंसुशीलं कुर्यान्नरंचंद्रसुतेसितर्क्षेसंस्थेसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ४ अतिसुललितवेषंवस्त्रभूषाविशेषैर्युवतिजनमनोज्ञमन्मथोत्कर्षहर्षं अतिचतुरमुदारंचारुभाग्यंप्रकुर्यात्भृगुगृहगतसौम्योभार्गवेणप्रदृष्टः ५ ॥

श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृष तुला राशिमें वुध चन्द्रमा ककें देख्याहोवे तिसकोंवडाप्रपंची श्रौर धन धान्य ककें युक्त श्रौर दृढव्रत श्रौर राजाकामंत्री श्रौर प्रसिद्ध कर्त्ताहै २ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका वुध मगल ककें देख्याहोवे सो राजाके श्रपमानों ककें श्रौर रोगककें तप्तहोताहै श्रौर मित्रों ककेंत्याज्य श्रौर विषयोंसें निश्चयककें रहितहोताहै ३ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिका वुध वृहस्पतिककें देख्याहोवे तिसकोंश्रेष्ठदेशश्रौर पुरग्रामोंकाराजाकर्त्ताहै श्रौर चतुर श्रौर गुणोंकेजाननेवालाश्रौर गुणोंवाला श्रौर श्रेष्ठस्वभाववालाकर्त्ताहै ४ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका वुध शुक्र ककें देख्याहोवे तिसकों श्रत्यंतसुंदरवेशवाला श्रौर वस्त्र भूषणों ककें युक्त श्रौर स्त्रीजनोंके मनकोंजाननेवाला श्रौर वडेकामककेंहर्षकोंप्राप्त श्रौर वडाचतुर श्रौर उदार श्रौर श्रेष्ठभाग्योंवालाकर्त्ताहै ॥ ५ ॥

उौर जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाकाशुक्र शनिकर्केदेख्याहोवे तिसकोंस्त्री उौर मित्र उौर पुत्र उौर वाहनोंकादुःखहोताहै श्रोर सततचित्त श्रोर सुख श्रोर धनकर्के हीनकर्ताहै ६ ॥ इतिशुक्रर्क्षगेवुधेग्रह दृष्टयः ॥श्रवश्रपनेक्षेत्रमेंजोवुध तिसकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशि में वुध सूर्यकर्केदेख्याहोवे तिसकोंसत्यकर्के युक्त उौर श्रेष्ठलीलाविलासकर्केयुक्तकर्त्ताहै उौर राजासेंमान कोवृद्धिकर्ताहै उौर चंचलताकोंहीनकर्ताहै १ उौर जिसकेजन्मसमयमेंमिथुनकन्याराशिकावुधचंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो वहुतवार्ताकरणेवाला उौर श्रमृतकीन्याईवाणीवाला उौरलडाईमेंप्रीतिवाला उौर राजाकेपासरहणेवालाहोताहै २ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याकावुधमंगलकर्केदेख्याहोवेति सकोंप्रसन्नदेहवाला उौर कुटिल उौर कलाकेजाननेवाला उौर राजाकेकृत्यमें भलीप्रकारचतुर उौर लो

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तंसुखवित्तहीनं ॥ कुर्यान्नरंशत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितोज्ञःसितधामगामी ६ ॥ इतिशुक्रर्क्षगेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथस्वक्षेत्रस्थ वुधंप्रतिग्रहदृष्टयः ॥ सत्योपेतंचारुलीलाविलासंभूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिंच चंचत्क्षीणंचापिकुर्यान्मनुष्यंस्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोर्कदृष्टः १ ॥ अनल्पजल्पोऽमृ ततुल्यभाषीकलिप्रियोराजसमीपवर्त्ती भवेन्नरःसोमसुतेस्वगेहेनिरीक्ष्यमाणेमृ गलांछनेन ॥ २ प्रसन्नगात्रंकुटिलंकलाज्ञंनरेंद्रकृत्येसुतरांप्रवीणं जनप्रियंसं जनयेन्मनुष्यंभौमेक्षितोज्ञःस्वगृहेधिसंस्थः ३ ॥ वव्हर्थसामर्थ्यविराजमानंस द्राजमानाप्तपदाधिकारं ॥ श्रुतंप्रकुर्यान्निजमंदिरस्थःसौम्यःप्रदृष्टःसुरपूजितेन ४ ॥ नरेंद्रदूतोविजितारिवर्गःसंधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः वरांगनासक्तमनो भिलाषःशुक्रेक्षितज्ञेनिजभेनरःस्यात् ॥ ५ ॥ प्रारंभसिद्धिंविनयंविशेषात्सद्व स्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मास्वेमंदरस्थोरविसूनुदृष्टः ६ इतिस्वक्षेत्रस्थवुधेग्रहदृ० ॥

कोंमेंप्रीतिवालाकर्ताहै ॥ ३ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याकावुधवृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे ति सकों वहुतधन उौर समर्थकर्केशोभायुक्तकर्ताहै उौर श्रेष्ठराजाकेमानसें श्राधिकारकों प्राप्तहोताहै उौर वहुश्रुतकर्ताहै ४ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याका वुधशुक्रकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्यराजा कादूत उौर शत्रुपक्षकों जीतनेवाला उौर दोनोंकीसंधिकरानेमें वडाचतुर उौर श्रेष्ठस्त्रीमेंश्रासक्तचित्तवा लाहोताहै ५ श्रोर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याका वुधशनि कर्के देख्याहोवे सोप्रारंभ कार्यकों सिद्धकर्त्ताहैश्रोर विशेष कर्के नम्रहोताहै श्रोर श्रेष्ठवस्त्र भूषणादि समृद्धिकोंप्राप्तहोताहै ६ इतिस्वक्षेत्रस्थवुधेग्रहदृष्टयः

॥ अवकर्कराशिमें स्थितबुधकोंग्रहदृष्टियों काफलकहते हे जिसके जन्म समयमें कर्क राशिमें बुधसूर्य कर्के देख्याहोवे सो वस्त्रादि शुद्धि में और मणियों के संचयकरणेमें और घर सें लेकर जोवस्तुहैं तिनके बनाने में चतुर और पुष्पमालाग्चने.में चतुरहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका बुध चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो स्त्रीके निमित्तवडे कपट कों प्राप्तहोताहै और धन के व्यय कोंप्राप्तहोताहै और कृशदेहवाला होताहे और बहुत रोगों कर्के पीडितहोताहै २ और जिसके जन्मसमयमें कर्ककाबुध मंगल कर्के देख्याहोवे तिसकों अल्पश्रुत और चौरों में प्रीति वाला और शूरवीर और मीठा बोलने वाला और झूठकहने में चतुरकर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका बुधबृहस्पति कर्के देख्या होवे सो बडा चतुर विधिके जानने वाला

अथकर्कस्थेबुधेग्रहदृष्टयः वस्त्रादिशुद्धौमणिसंग्रहेचगृहादिनिर्माणविधौप्रवीणः प्रसूनमालाग्रथनेपिमर्त्यःकुलीरगेज्ञेनलिनीशदृष्टे १ कांतानिमित्तात्तमहद्व्यलीकोद्रव्यव्ययात्यंतकृशांगयष्टिः बहूपसर्गोऽपिभवेन्मनुष्यःकुलीरगेज्ञेशशिनाप्रदृष्टे २ स्वल्पश्रुतंचौर्यरतंचशूरंप्रियंवदंकूटविधौप्रवीणम् कुर्यान्नरंशीतकरस्यसूनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः ३ प्राज्ञोविधिज्ञोविधिनाऽधिशालीसद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः स्यान्मानवोजन्मनिसोमसूनौकुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे॥ ४ प्रियंवदश्चारुशरीरभाक्चसद्गीतवाद्यादिविधौप्रवीणः स्यान्मानवोदानववंद्यदृष्टेकर्कटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ५ गुणैर्विहीनंस्वजनैर्वियुक्तमलीकदंभानुरतंकृतघ्नम् करोतिनर्त्यंपरिसूतिकालेकुलीरगोज्ञोरविसूनुदृष्टः ६ इतिकुलीरगामिनिबुधेग्रह० ॥ अथसिंहगतेबुधेग्रहदृष्टयः कृपाविहीनंचचलस्वभावंसेर्ष्यंचहिंसाभिरतंचरौद्रम् क्षुद्रंप्रकुर्यान्मनुजंप्रसूतौबुधोर्कदृष्टोमृगराजसंस्थः १

और बडे भाग्यों वाला और श्रेष्ठ वाग्विलास करणे वाला और राजा कर्के मान्य होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका बुध शुक्र कर्के देख्या होवे सो मीठा बोलने वाला और सुंदर देहवाला और श्रेष्ठ गीत और बाजे तिनकी विधि जानने में चतुर होताहै ५ और जिसके जन्मसमय में कर्कका बुध शनि कर्के देख्या होवे तिसकों गुणों कर्के रहित और संबंधियों से रहित और झूठ और दंभमें रत और रुतघ्नकर्त्ताहै ६ इतिकुलीरगामिनिबुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहराशिमेंबुधकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकाबुध सूर्य कर्के देख्याहोवे तिसकोंदया कर्के हीन और चंचलस्वभावकर्के युक्त और ईर्षा कर्के युक्त और हिंसामें रत और क्रूर और क्षुद्रकर्त्ताहै ॥ १ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकावुध चंद्रमा कर्के देख्या होवे तिसकों रूपकर्के युक्त श्रोर श्रेष्ट-वुद्धि कर्के युक्त श्रोर नम्र श्रोर संगीतविद्या श्रोर नृत्यमेंरत श्रोर श्रेष्टवृत्तिवाला कर्ताहै २ श्रोर जिसके जन्मसमयमें सिंहकावुध मंगलकर्के देख्या होवे सो कामकर्के श्रोर पराक्रम कर्के श्रोर वृत्ति कर्के रहितहोताहै श्रोर जख्मों कर्के तिसका देह श्रंकितहोताहै श्रोर हीन वुद्धि श्रोर श्रनेकदुःखों-कर्के युक्त होताहै ३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका वुध वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो कोमल श्रोर निर्मल स्वभाववाला श्रोर कुलीन श्रोर सुंदर नेत्रों वाला श्रोर समर्थ वाला श्रोर श्रेष्टवाहनों वाला होताहै ४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें सिंहका वुध शुक्र कर्के देख्या होवे सो श्रेष्ट रूप वाला उोर प्रीति कर्के वाग्विलास करणे वाला उोर राजाके श्राश्रित रहणे वाला उोर वाहन

रूपान्वितंचारुमतिंविनीतं संगीतनृत्याभिरतंनितांतं सद्वृत्तवृत्तंकुरुतेहिमर्त्यं-चंद्रेक्षितोसिंहगतोवुधाख्यः २ कंदर्पसत्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षतांकितंहीनमतिंविचित्रम् सदुःखितंसंजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतःशशीजः ३ कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्चसमर्थः वाहनोत्तमधनोमनुजःस्यादिंदुजेहरिगतेगुरुदृष्टे ४ सद्रूपशालीप्रियवाग्विलासोनृपाश्रितोवाहनवित्तयुक्तः भवेन्नरःसोमसुतेप्रसूतौ सिंहस्थितेदानववंद्यदृष्टे ५ स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंध विस्तीर्णगात्रंचकुरूपमुग्रम् सुखेनहीनंमनुजंप्रकुर्यान्मदेक्षितःसिंहगतोयदिज्ञः ६ इतिसिंहगतेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ श्रथगुरुभवनस्थेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ शूलाश्मरीमेहनिपीडितांगोभंगोज्झितःशांतिमुपागतश्च स्यात्पूरुषोगीष्पतिवेश्मसंस्थोनिशीथिनीस्वामिसुतेर्कदृष्टे १ लेखक्रियायांसुतरांप्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानां नरःसुखीशीतमयूखपुत्रेचंद्रेक्षितेजीवगृहंप्रयाते २

उोर धन कर्के युक्त होनाहै ५ उोर जिसके जन्मसमयमें सिंहका वुध शनि कर्के देख्या होवे सो मनुष्य दुर्गंधि देह वाला तिसके प्रसीने सें दुर्गंधि होतीहै उोर वडेदेहवाला उोर कुरूप उोर उग्र-उोर सुख कर्के हीनहोताहै ॥ ६ ॥ इतिसिंहगतेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ श्रवगुरुभवनमेंस्थितवुधकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसकेजन्म समयमें धन मीनराशिका वुध सूर्यकर्के देख्या होवे सो शूल-पथरी उोर प्रमेह रोगकर्के पीडित होताहै उोर मनोद्वेगकी निवृत्तिसेंशांतिकोंप्राप्तहोताहै १ उोर जिसके जन्मसमयमें धन मीनका वुधचंद्रमा कर्के देख्याहोवेसोलिखनेकाममेंभलीतरां सें चतुरहोताहै उोर साधुयोंकी उोर मित्रजनों की सगति करणे वाला उोर सुखीहोताहै २

और जिसके जन्मसमयमें धन मीनका वुध मंगल करके देख्या होवे सो परंपराके चिरकाल वनमेंस्थित जो चोरहैं तिनके लेखकहोतेहैं और अन्न और धनों करके रहितहोतेहै ३ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिमें वुध कों वृहस्पतिदेखताहे सो मनुष्य विशेष करके ज्ञानीहोताहै और अपनेकुलकाभूषणहोताहै औरराजाकाजोभंडारहैतिसमेंलिखनेवालाहोताहेऔरवहुतजनोंके पालनेवालाहोताहै ४ और जिसकेजन्मसमयमें धनमीनराशिकावुध शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों राजाकी वजीरीका और लिखनेका अधिकार प्राप्तहोताहै और चोरीमें सक्तहोताहै और कोमलदेहवाला और द्रव्यकर्केयुक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनराशिका वुध शनिकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य वहुतअन्नकेभोजन करणेवाला और मलीन और खोटीवृत्तिवाला और वन पर्वतों में निवासकीइच्छावाला और कार्यमेंउपयोगीनाहिंहोताहै ॥ ६ ॥ इतिजीवर्क्षेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथशनिकेक्षेत्रमेंवुधकोंग्रहदृष्टियोंके.

परंपराचोरवनस्थितानांस्युर्लेखकाधान्यधनैर्विहीनाः नरस्तुनीहारकरप्रसूतौजीवालयेमंगलदृष्टदेहे ३ विज्ञानशालीस्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्त्ता भर्त्तावहूनांमनुजस्तुसौम्येजीवेक्षितेजीवगृहंप्रयाते ॥ ४ ॥ भूपामात्यापत्यलेखाधिकारंचौर्यासक्तंसौकुमार्येणयुक्तः द्रव्योपेतंमानवंसोमसूनुर्जीवर्क्षस्थःशुक्रदृष्टःकरोति ॥ ५ ॥ वव्हन्नभोक्तामलिनःकुवृत्तःकांतारदुर्गाचलवासशीलः कार्योपयुक्तोनभवेन्मनुष्योजीवर्क्षगेज्ञेऽर्कसुतेनदृष्टे ॥ ६ ॥ इति जीवर्क्षस्थेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथशन्यालयस्थेज्ञे ग्रहदृष्टयः ॥ प्रारब्धकार्योकलितप्रतापंसन्मल्लविद्याकुशलंकुशीलं कुटुंविनंसंजनयेन्मनुष्यंवुधःशनिक्षेत्रगतोर्कदृष्टः ॥ १ ॥ जलोपजीवीधनवांश्चभीरुःप्रसूनकंदोद्यमतत्परश्च पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थेवुधेसुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे २ व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यःसुखीवाक्चपलोर्थयुक्तः स्यान्मानवोभानुसुतर्क्षसंस्थेदृष्टेव्जसूनौक्षितिनंदनेन ॥ ३ धान्यवाहनधनान्वितःसुखीग्रामपत्तनपतिर्महामतिः भानुसूनुभवनेव्जनंदनेदेवदेवसचिवेक्षितेनरः ॥ ४ ॥

फलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिका वुधसूर्यकर्केदेख्याहोवे सो अपनीप्रारब्धकर्के हि प्रतापीहोताहै और श्रेष्ठमल्लविद्यामेंचतुर और खोटेस्वभाववाला और कुटुंवीहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभका वुधचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो जलकेसवंधकर्केउपजीवकावाला और धनी और भयकरणेवाला और पुष्प और कंदमूलमें उद्यमकरणेवालाहोताहै ॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंमकरकुंभराशिमेंवुध मंगलकर्केदेख्याहोवेसोलज्जाऔर आलस्यकर्के अनम्रस्वभाववालाऔर सौम्यमूर्त्तिः और चपलवाणीवाला और धनकर्केयुक्तहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकावुध वृहस्पतिकर्केदेख्याहोवेसो धान्य और वाहन और धनकर्केयुक्त और सुखकर्केयुक्तहोताहै और ग्रामपुरोंकास्वामी और वडीवुद्धिकर्केयुक्तहोताहै ॥ ४

॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकाबुधशुक्रकर्केदेख्याहोवे सो वहुतसंतानकेउत्पत्तकरणेवाला, और माडेरूपवाला और श्रेष्ठवुद्धिकर्केरहितऔर नीचजनोंकीसंगतिकरणेवाला और वहुतकामकर्केयु क्तहोताहै ५ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिमें वुध शनिकर्केदेख्याहोवे तिसकोसुखकर्केरहितऔर पापमेंयुक्त और दीन और धनकर्केहीन और खोटेजनोंकीसंगतिमेंलीन कर्ताहै इतिशन्यालयेवुधेग्रहदृष्टयः

अथमंगलकेक्षेत्रमेंस्थितवृहस्पतिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकरा शिका गुरुसूर्य कर्के देख्याहोवे सो झूठसें डरणे वाला और वहुत धर्मों के करणे वाला और प्रसि द्ध और श्रेष्ठ भार्यो कर्के युक्त और नम्र होताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका गुरुः चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो प्रसिद्ध और नम्र और स्त्रीकाप्यारा और श्रेष्ठ जनोंकीसंमति वाला औ र धर्म में रत और शांतस्वभाववाला होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका गुरुः

वहुप्रजासंजनकंकुरूपंप्रज्ञोज्झितंनीचजनानुजातं कामाधिकंसंजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितोज्ञःशनिगेहसंस्थः ॥ ५ ॥ सुखोज्झितंपापरतंचदीनमकिंचनं हीनजनानुजातं करोतिमर्त्यंशनिधामगामीसौम्यस्तमोहंतृसुतेनदृष्टः ॥ ॥ ६ ॥ इतिशन्यालयगामिनिवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमक्षेत्रे गुरोर्ग्रहदृष्टयः ॥ असत्यभीरुर्वहुधर्मकर्त्ताख्यातश्चसद्भार्ययुतो विनीतः भवेन्नरोदेवगुरोप्रयातेभौमस्यगेहेरविदृष्टदेहे १ ख्यातोविनीतोवनि तानुयातःसतांमतोधर्मरतःप्रशांतः जातोभवेद्भूमिसुतर्क्षयातेवाचांपतौशीतकरे क्षिते २ क्रूरोतिधूर्तःपरगर्वहर्तानृपाश्रियाजीवनवृत्तिकर्त्ता भर्त्तावहूनांननुमा नवःस्यात्जीवेकुजर्क्षेचकुजेनदृष्टे ३ सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनःच्छिद्रप्रतीक्षी प्रणतानुयातः मर्त्योभवेत्कैतवसंप्रयुक्तोवाचस्पतौभौमगृहेज्ञदृष्टे ४ गंधमा ल्यशयनासनभूषायोषिदंवरनिकेतनसौख्यं संप्रयच्छतिनृणांभृगुणाचेद्वीक्षितः सुरगुरुःकुजसंस्थः ५ लुब्धंरौद्रंसाहसैःसंयुतंचमित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितंच कुर्यान्मित्रेनिष्ठुरंदेवमंत्रीधात्रीपुत्रक्षेत्रगोमंददृष्टः ६

मंगल कर्के देख्याहोवे सो क्रूर और वडा धूर्त्त और दूसरे के अभि मानकों दूरकरणे वाला और राजाकेआश्रयसें जीवका करणे वाला और वहुत जनोंके पालने वाला होताहै ३ और जिसके ज न्मसमयमें मेष वृश्चिककागुरुः वुध कर्के देख्या होवे सो श्रेष्ठ वृत्ति और सत्य और श्रेष्ठ वाणी सें रहितहोताहै और दूसरेकेछिद्र देखने वाला और जोमनुष्य नम्रहोवे तिसकी संमति वाला और धूर्त्त कर्म करणे वाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका गुरुः शुक्र कर्केदेख्याहोवे सोसु गंध माल्य और शय्या और आसन और भूषण और स्त्री और वस्त्र और घरके सुखोंवाला होताहै ५ और जिसके जन्म समयमें मेषवृश्चिक राशिमें गुरु शनि कर्के देख्याहोवे तिसकों लोभी और क्रूर और हठकर्के युक्त और मित्र और संतानके सुखसें रहित औरमित्रमेंकठोरताकर्केयुक्तकर्ताहै ६

इतिभौमर्क्षेगेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथशुक्रकेगृहगतगुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्म समयमें वृष तुलाराशिका गुरु सूर्य कर्के देख्याहोवे तिसकों युद्ध कर्के जयप्राप्तकर्त्ताहै और अंगोंमें घातकर्त्ताहै और रोगकर्के युक्तकर्त्ताहै और वहुतवाहन और वहुतचाकरों कर्के युक्त कर्त्ताहै और राजाका मंत्री कर्त्ताहै, १ और जिसके जन्मसमय में वृषतुला राशिका गुरुः चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसकों सत्यकर्केयुक्त और सदानम्र और परो पकारमें रत और श्रेष्ट चित्तकर्के युक्त कर्त्ताहै और श्रेष्ट भाग्यों वाला कर्त्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिकागुरुः मंगलकर्केदेख्याहोवेतिसकों वडेभाग्योंवालाऔरपुत्रोंकेसुखवालाऔरमीठावोलनेवालाऔरराजासेंमानकोंप्राप्तहोनेवालाकर्त्ताहै ३ ओर जिसके जन्मसमयमें वृषतुला राशिका गुरुः वुध कर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट विद्यामें रतओर

इतिभौमर्क्षेगेगुरौग्रहदृष्टयः अथशुक्रागारस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ संगरात्तविजयंक्षतगात्रंसामयंचवहुवाहनभृत्यम् मंत्रिणंहिकुरुतेसुरमंत्रीदैत्यमंत्रिगृहगोरविदृष्टः १ सत्येनयुक्तंसततंविनीतंपरोपकाराभिरतंसुचित्तम् सद्भाग्यभाजंकुरुतेमनुष्यंजीवःसितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः २ भाग्योपपन्नंसुतसौख्यभाजंप्रियंवदंभूपतिलब्धमानं नरंसदाचारपरंकरोतिभौमेक्षितेज्योभृगुजालयस्थः ३ सन्मंत्रविद्यानिरतंनितांतंभाग्यान्वितंभूपतिलब्धवित्तम् चंचत्कलाज्ञंपुरुषंप्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥ धनान्वितंचारुविभूषणाढ्यंसद्वृत्तचित्तंविभवैःसमेतं करोतिमर्त्यंसुरराजमंत्रीशुक्रालयस्थोभृगुसूनुदृष्टः ५ सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतंप्राज्ञंपुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् नरंप्रकुर्याच्चतुरंसुरेज्योदैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेनदृष्टः ६ ॥ इतिशुक्रागारस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथवुधवेश्मसंस्थेगुरौखगदृष्टयः ॥ सत्पुत्रदारंधनमित्रसौख्यंश्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् नरंप्रकुर्यात्सुरराजमंत्रीरविप्रदृष्टोवुधवेश्मनिस्थः १

सदा भाग्यों कर्के युक्त और राजासें धनलाभ कर्के युक्त और सुंदर कलाकेजानने वाला कर्त्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका गुरुः शुक्र कर्के देख्याहोवे तिसकों धन और श्रेष्ट भूषणों कर्के युक्त और श्रेष्ट वृत्तिमें चित्तकरणे वाला और ऐश्वर्यों कर्के युक्त कर्त्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिमें गुरुः शनिकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट पुत्र ओर स्त्रीसें लेकर्के सुखकों प्राप्तकर्त्ताहै ओर चतुर और पुरग्रामोंके उत्सवों कर्के युक्त कर्त्ताहै ६ ॥ इतिशुक्रगृहेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ ॥ अथवुधकेक्षेत्रमेंस्थितवृहस्पतिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिमें स्थित वृहस्पतिकों सूर्य देखताहोवे तिसकों श्रेष्ट पुत्र और स्त्री और धन और मित्रका सुख और श्रेष्ट प्रतिष्ठा कर्के विराजमान कर्त्ताहै १

॥ और जिसके जन्मसमय में मिथुनकन्याका गुरु चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसको गुणों कर्के युक्त और ग्रामपुरों में उपकारकरणे वाला और वडे गौरव कर्के विराजमान कर्ताहे ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका गुरुः मंगलकर्के देख्याहोवे तिसको युद्धमें जयकोंप्राप्त कर्ताहे और देहमेंघातकर्ताहे और धनकर्के और पराक्रमकर्के युक्त कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका गुरुः बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसको श्रेष्ठ मित्र और स्त्री पुत्र और धनके सुखको प्राप्तहोताहे और चतुर और ज्योतिष शास्त्र और शिल्पविद्याके जानने वाला होताहे और श्रेष्ठ बोलने वाला और कामीहोताहे ४ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें गुरुः शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसको धनस्त्री पुत्रके सुखकर्के युक्त औरवडी मल्हायत बाउलीया और खेतीयोंमें चित्तवाला और प्रसन्नहोताहे ५ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका गुरुःशनि कर्कदेख्याहोवे तिसको राजासें गौरव कर्के युक्तकर्ताहे और नित्यप्रतिउत्सवों कर्के युक्त और गुणों कर्के पूर्ण और पुरग्रामोंका स्वामीकर्ताहे ६ इतिबुधवेश्मसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥

गुणान्वितंग्रामपुरोपकारंविराजमानंवहुगौरवेण कुर्यान्नरंदेवगुरुर्बुधर्क्षेसंस्थोनिशानाथनिरीक्षमाणः २ संग्रामसंप्राप्तजयंक्षतांगंधनेनसारेणसमन्वितंच करोतिजातंविबुधेंद्रमंत्रीबुधालयस्थःक्षितिसूनुदृष्टः ३ सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्योदक्षोभवेद्ज्योतिषशिल्पवेत्ता स्याच्चारुभाषीपुरुषःप्रकामंजीविबुधर्क्षेचबुधेनदृष्टे ४ धनांगनासूनुसुखैरुपेतःप्रासादवापीकृषिकर्मचित्तः भवेत्प्रसन्नःपुरुषःसुरेज्येदैत्येज्यदृष्टेबुधवेश्मसंस्थे ५ नरेंद्रसद्गौरवसंप्रयुक्तंनित्योत्सवंपूर्णगुणाभिरामं। नरंपुरग्रामपतिंकरोतिगुरुर्ज्ञगेहेशनिनाप्रदृष्टः ६ इतिबुधवेश्मसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथकुलीरसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिःपूर्वंचपश्चात्खलुतत्सुखानि कुर्यान्नराणांहिगुरुःसुराणांकुलीरसंस्थोरविणाप्रदृष्टः ॥ १ ॥ नरेंद्रकोशाधिकृतिंसुकांतिंसद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् सद्वृत्तचित्तंजनयेन्मनुष्यंकर्केस्थितेज्यःशशिनाप्रदृष्टः ॥ २ ॥ मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिःसद्वृत्तबुद्धिर्विलसत्प्रतापः मंत्रीनरःकर्कटराशिसंस्थेगीर्वाणवंद्येशशिसूनुदृष्टे ॥ ३ ॥

अथकर्कराशिमें गुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसकेजन्मसमयमेंकर्कराशिमें गुरुसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसको स्त्री और पुत्र और धनकेसुखकोप्रथमहानि कर्ताहे और पीछेसें स्त्री पुत्र धनकासुखहोताहे ॥ १ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिका गुरु चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो राजाकेभंडारकाअधिकारीहोताहे और सुंदरशोभावालाहोताहे और श्रेष्ठवाहन और धनादियों कर्के युक्त और श्रेष्ठवृत्तिमे चित्तवालेकोंकर्ताहे २ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिमें गुरुबुध कर्के देख्याहोवे सो मित्रके सबबकर्के संपूर्णसिद्धिकोउत्पन्नकर्ताहे और श्रेष्ठबुद्धिमेंवृत्तिकोंलगानेवाला और वडेप्रतापवाला और मंत्रीहोताहे ३ ॥

ओर जिसके जन्मसमय में कर्कटराशि कागुरुशुक्रकर्के देख्याहोवे सो बहुतस्त्रीयोंकेऐश्वर्यकों भोगताहै ओर अनेकसुखोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ओर जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिमेंगुरुशनिकर्के देख्याहोवे सो सन्मान औरभूपण ओर गुण ओर श्रेष्टस्वभावकोंप्राप्तहोताहै ओर सेना ओर पुरग्रामकास्वामीहोताहै ओर बहुतबोलनेवालाहोताहै ५ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिकागुरु मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बालक ओर स्त्रीया ओर वस्त्र ओर सुंदरभूपणोंवालाओरगुणी ओर शूरवीर ओर चतुरहोताहै ६ इतिकुलीरस्थगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अबसिंहकेगुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशिका गुरुसूर्यकर्केदेख्याहोवे तिसकों खर्चकर्केयुक्त ओरप्रसिद्धता कर्केयुक्तओर अत्यत धूर्त ओर राजासेंधनलाभयुक्त ओर शुभकर्ममें चित्तवालाकर्ताहै १ ओरजिसके जन्मसमयमें सिंहका

बव्हंगनावैभवमंगनानांनानासुखानामुपलब्धयःस्युः कुलीरयातेवचसामधीशेनिरीक्षितेदैत्यपुरोहितेन ४ सन्मानभूपागुणचारुशीलःसेनापुरग्रामपतिर्नरःस्यात् अनल्पजल्पःखलुकर्कटस्थेवाचस्पतौसूर्यसुतेनदृष्टे ५ ॥ कुमारदारांबरचारुभूपाविशेपभाजंगुणिनंचशूरं प्राज्ञंक्षतांगंकुरुतेमनुष्यंकर्कस्थितेज्योऽवनिजेनदृष्टः ६ ॥ इतिकुलीरस्थगुरौग्रहाणांदृष्टयः ॥ अथसिंहयातेजीवेग्रहदृष्टयः॥ व्ययान्वितंस्यातमतीवधूर्तं नृपाप्तवित्तंशुभकर्मचित्तं नरंप्रकुर्यात्सुरराजमंत्रीसूर्येणदृष्टोमृगराजसंस्थः १ ॥ प्रसन्नमूर्तिंगतचित्तशुद्धिंस्त्रीहेतुसंप्राप्तधनंवदान्यम् कुर्यात्पुमांसंवचसामधीशःशशांकदृष्टःकरिवैरिसंस्थः ॥ २ ॥ मान्योगुरूणांगुरुगौरवेणसत्कर्मनिर्माणविधौप्रवीणः प्राणीभवेत्केसरिणिस्थितेस्मिन्गीर्वाणवन्द्येऽवनिजेनदृष्टे ३ गृहादिनिर्माणविधौप्रवीणोगुणाग्रणीस्यात्सचिवोनृपाणां वाणीविलासप्रचुरोनरःस्यात्सिंहस्थितेदेवगुरौज्ञदृष्टे ४ भूमीपतिप्राप्तमहत्पदस्थःकांताजनप्रीतिकरोगुणज्ञः भवेन्नरोदेवगुरौहरिस्थेनिरीक्षितेचासुरपूजितेन ५

गुरुचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे तिसकों प्रसन्नवदनओर चित्तशुद्धिसेंरहितओरस्त्रीकेनिमित्तसेंधनकोंप्राप्तहोताहै २ ओर जिसके जन्मसमयमें सिंहकागुरु मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बडेगौरवकर्के ओर बडोंकर्के मानकोंप्राप्तहोताहै ओर श्रेष्टकर्मकरणेमें चतुरहोताहै ३ ओर जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकाबृहस्पति बुधकर्केदेख्याहोवे सो घरसेंआदलेकरबनानेमेंचतुरहोताहै ओर गुणवानोंका अग्रणीहोताहै ओर राजयोंकामंत्रीहोताहै ओर वाणीविलासमें चतुरहोताहै ४ ओर जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकागुरु शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो राजाकर्के दीयेहुवेबडेअधिकारमेंस्थितहोताहै ओर स्त्रीजनोंसें प्रीतिकरणेवाला ओर गुणके जानने वाला होताहै ॥ ५ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सिंहका बृहस्पति शनिकर्के देख्याहोवे सोसुखकर्केहीनऔर मलीन-श्रेष्ठवाणीवाला और कृशदेहवाला और उत्सवकर्केरहितहोताहे ६ ॥ इतिसिंहगुरोग्रहदृष्टयः अथस्वक्षेत्रस्थगुरुकांग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिमें बृहस्पतिसूर्यकर्केदेख्याहोवे सो राजासेंविरोधबुद्धिवाला और निश्चयकर्के मित्रोंसेंविमनहोताहैं और निरंतर-शत्रुनिसऊपरखडेरहतेहै १ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनका गुरु चंद्रमाकर्के देख्याहोवे-सो भाग्य और धनकीवृद्धिकर्के गर्वकोंप्राप्तहोताहे और स्त्रीमित्रकाप्याराहोताहे २ और जिसके-जन्मसमयमें धनमीनकागुरुः मंगलकर्के देख्याहोवे सो फोडेयों और घस्मोंकर्के अंकितहोताहे और-युद्धमें चतुर होताहे और हिंसाकरणे वाला और बडेक्रूरस्वभाव वाला होताहै और परोपकारमेंरत-

सुखेनहीनंमलिनंसुवाचंकृशांगयष्टिंविगतोत्सवंच करोतिमर्त्यंमरुतामभात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेनदृष्टः ॥ इतिसिंहयातेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथस्वगृहयातेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ राज्ञाविरुद्धत्वमतीवनूनंसुहृज्जनेनापिचवैमनस्यं शत्रूद्गमः स्यान्नियतंनराणांजीवेर्कदृष्टेस्वगृहंप्रयाते ॥ १ ॥ सुगर्वितंभाग्यधनाभिवृद्ध्याप्रियाप्रियत्वाभिमतंविशेषात् करोतिजातंसुखिनंविनीतंचंद्रेक्षितोदेवगुरुःस्वभस्थः ॥ २ ॥ व्रणांकितंसंगरकर्मदक्षंहिंसापरंक्रूरतरस्वभावं परोपकाराभिरतंप्रकुर्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेनदृष्टः ॥ ३ ॥ नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारोदाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः परोपकारादरतैकचित्तोनरोगुरौस्वक्षेगतेज्ञदृष्टे ४ सुखोपपन्नंधनिनंप्रसन्नंप्राज्ञंसदैश्वर्यविराजमानम् नूनंप्रकुर्यान्मनुजंसुरेज्योदैत्येज्यदृष्टोनिजमंदिरस्थः ५ पदच्युतंसौख्यसुतैर्विहीनंसंग्रामसंजातपराभवंच करोतिदीनंस्वगृहेसुरेज्यःसूर्यात्मजेनप्रविलोक्यमानः ६ इतिस्वगृहेगुरौग्रहदृष्टयः

होताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धनमीन राशिका गुरु बुधकर्के देख्याहोवे सो राजाके-आश्रयसें बडे अधिकारकों प्राप्त होताहे और स्त्री और धन के ऐश्वर्यकर्के सुखकों प्राप्त होताहै और-परोपकारके वास्ते एकचित्त होताहे ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें ॥ धन मीनकागुरु शुक्रकर्के-देख्याहोवे सो सुखऔर धन और प्रसन्नताकोंप्राप्त होताहै और चतुर और सदा ऐश्वर्यकर्के विराज-मान होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिका गुरु शनि कर्के देख्याहोवे सो अधिका-रसें गिडताहै और सुख और पुत्रोंकर्के रहित होताहै और युद्धमें त्रस्कारकों प्राप्तहोताहै ६ ॥ इति-स्वगृहेगुरौग्रहदृष्टयः ॥

अथशनिकेक्षेत्रमेंगुरुको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिमें गुरु सूर्य करके देख्याहोवे तिसको प्रसन्नवदन और शुभवाग्विलास करकेयुक्त और परोपकारमें आदरकरणे वाला और राजाके कुलमें प्राप्तकर्ताहै १ औरजिनकेजन्मसमयमें मकरकुंभ राशिकागुरुचंद्रमाकरके देख्याहोवे सोकुलके धारणे वाला और तीव्र बुद्धिवाला और श्रेष्टस्वभाववाला और धर्मक्रियामें भली प्रकार करके उदार और अभि मानी और पितामाताकाभक्त होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें मकर कुंभराशिका गुरु मंगल करके देख्याहोवे तिसको राजा कीकृपा करके धनकीसिद्धि होतीहै और. यश और सुखकी प्राप्तिवालाहोताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभ राशिका गुरु बुध करके देख्याहोवे तिसको शांतस्वभाव और निरंतर स्त्रीके वश्य और धर्म कृत्यमें रतकर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें म

॥ अथशनिगृहगतेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ प्रसन्नकांतिशुभवाग्विलासंपरोपकारादरतासमेतम् कुलेनृपालंकुरुतेसुरेज्योमंदालयस्थोयदिभानुदृष्टः १ ॥ कुलोद्वहस्तीव्रमतिःसुशीलोधर्मक्रियायांसुतरामुदारः नरोऽभिमानीपितृमातृभक्तोजीवेशनिक्षेत्रगतेंदुदृष्टे २ स्यादर्थसिद्धिर्नृपतिप्रसादात्कीर्तेःसुखानामुपलब्धिरेव सूतौसुरेज्येशनिमंदिरस्थे निरीक्ष्यमाणेधरणीसुतेन ३ शांतंनितांतंवनितानुकूलंधर्मक्रियायांनिरतंनितांतम् करोतिमर्त्यंमरुतांपुरोधाबुधेनदृष्टःशनिमंदिरस्थः ४ विद्याविवेकार्थगुणैःसमेतःपृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलाषः स्यात्पूरुषःसूर्यसुतर्क्षसंस्थेजीवेप्रसूतौभृगुजेनदृष्टे ५ कामंसकामंसुगुणाभिरामंसद्मार्थप्राप्तिंधनधान्ययुक्तम् ख्यातंविनीतंकुरुतेमनुष्यंमंदेक्षितोमंदगृहस्थजीवः ६ इतिमंदगृहयातेगुरौग्रहदृष्टयः॥ अथकुजगेहयातेशुक्रेग्रहदृष्टयः कृपाविशेषन्नृपतेर्नितांतमतीवजायाजनितव्यलीकं कुर्यान्नराणांत्तरणिप्रदृष्टः शुक्रोहिवक्रस्यगृहप्रयातः १ श्रेष्टप्रतिष्टंचलचित्तवृत्तिंकामातुरत्वाद्विकृतिंप्रयातम् करोतिमर्त्यंकुजगेहयातोभृगोःसुतःशीतकरेणदृष्टः २

कर कुंभराशिका बृहस्पति शुक्रकरके देख्याहोवे तिसको विद्या और विवेक और धन और गुणोंकरके युक्त कर्ताहै और राजासें मनो भिलपितप्राप्ति कर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिका गुरु शनि करके देख्याहोवे तिसकीयांकामना सिद्धहोतीयाहै और श्रेष्ठगुणों करके युक्तहोताहै और लक्ष्मी और धन और धान्य करके युक्त होताहै ॥ ६ ॥ इतिशनिगृहेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथमंगलकेगृहमेंशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिक राशिमें शुक्र सूर्य करके देख्याहोवे तिसको राजाकी निरंतरकृपावाला कर्ताहै और अत्यंत स्त्रीजनित कपटको प्राप्तहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिका शुक्र चंद्रमा करके देख्याहोवे तिसको श्रेष्टप्रतिष्टा युक्तकर्ताहै और चंचलचित्तवृत्तिकर्ताहै और कामातुरहोंनेसेंविकारको प्राप्तकर्ताहै २

जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिका शुक्र मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों धनकर्के और मान कर्के और सुख कर्के हीन कर्ताहे और दीनकर्ताहे और विशेष कर्के मलीन कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिका शुक्र बुध कर्के देख्याहोवे तिसकों दुष्टजनकर्ताहे और धन और अपने सबंधियों कर्के हीन कर्ताहे और अपनी बुद्धि और सामर्थ्यसें रहितकर्ताहे और क्रूर और प्राये धन के हरणे वाला कर्ताहे ४ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिका शुक्र बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे तिसकों स्त्रीपुत्रादिसुखों कर्के युक्त कर्ताहेऔर श्रेष्ठ देहकी शोभाकर्ताहे और भलीप्रकार नम्रकर्ताहे और उदार चित्तकर्ताहे ५ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिक राशिका शुक्र शनिकर्के देख्याहोवे तिसकों गुप्तधनवाला कर्ताहे और अपनेमनमेंशांत होताहै और मानकों प्राप्त और चतुर और मित्र

धनेनमानेनसुखेनहीनंदीनंविशेषान्मलिनंकरोति ॥ नूनंधरित्रीतनयालयस्थःशुक्रोधरित्रीतनयेनदृष्टः ३ अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनंस्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखंच क्रूरंपरार्थापहरंनरंहिकरोतिशुक्रःकुजभेज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥ कलत्रपुत्रादिसुखैःसमेतंसत्कायकांतिंसुतरांविनीतम् उदारचित्तंप्रकरोतिमर्त्यंजीवेक्षितोदैत्यगुरुःकुजर्क्षे ॥ ५ ॥ सुगुप्तवित्ताभिमतप्रशांतंमान्यंवदान्यंस्वजनानुयातम् करोतिजातंक्षितिपुत्रगेहेसंस्थःसितोभानुसुतेनदृष्टः ६ ॥ इतिकुजगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथनिजवेश्मगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ वरांगनाभ्यो धनवाहनेभ्यःसुखानिनूनंलभतेमनुष्यः प्रसूतिकालेनिजवेश्मयातेसितेपतंगेननिरीक्ष्यमाणे १ विलासिनीकेलिविलाससक्तःकुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली नरःसुशीलःशुभवाग्विलासःस्वीयालयेस्यात्स्फुजितींदुदृष्टे ॥ २ ॥ गृहादिसौख्योपहतंनितांतंकलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् कुर्यान्नराणादनुजेंद्रमंत्रीस्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ३ गुणाभिरामंसुभगप्रकामं सौम्यंसुसत्वं धृतिसंयुतंच स्वक्षेत्रगोदैत्यगुरुःप्रकुर्यान्नरंतुपारांशसुतेनदृष्टः ४

कीसंततिवाला कर्ताहे ६ इतिभौमगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथस्वक्षेत्रेशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंवृषतुलाकाशुक्रसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसकोंश्रेष्ठस्त्रीयोंकाऔरधनऔरवाहनोंका निश्चय करसुखकर्ताहे १ औरजिनकेजन्मसमयमेंवृषतुलाराशिकाशुक्रचंद्रमाकर्केदेख्याहोवेंसोवेश्याकेविलासमें सक्तहोताहैऔरकुलकेपालनेवालाऔरनिर्मलबुद्धिवालाऔरसुशीलऔरशुभवाग्विलासकरणे वालाहोता है और जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाराशिका शुक्र मंगल कर्के देख्या होवे तिसकोंगृहादि सुखों-कर्के रहित कर्ताहे और लडाई केप्रसंगसें अपमानकों प्राप्त कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें-वृष तुला राशिका शुक्र बुध कर्के देख्या होवे तिसकों गुणों कर्के युक्तऔर श्रेष्ठ भाग्योंवाला और कामी कर्ताहे और सौम्य सुभाववाला और श्रेष्ट पराक्रम वाला और दृढता कर्के युक्त कर्ताहे ४

श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुला राशिका शुक्र वृहस्पति कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठ वाहनोंका श्रोर स्त्रीके सुखोंका श्रौर धनादियोंका लाभकर्ताहै ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाराशिका शुक्र शनि कर्के देख्या होवे तिसकों रोग कर्के युक्त श्रोर साधु वृत्तिसें हीन श्रोर सुख श्रोर धन कर्के रहितकर्ताहै ॥ ६ ॥ इतिस्वक्षेत्रगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अबबुधकेक्षेत्रमेंशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहते है जिसकेजन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र सूर्य कर्के देख्या होवे सो राजाके अंतःपुरका अधिकारी होताहै श्रोर नम्रहोताहै श्रोर गुण कर्के युक्त होताहै श्रोर शास्त्रके जाननेवाला होताहै १ श्रोर जिसकेजन्मसमयमें मिथुन कन्याराशिका शुक्र चंद्रमा कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठरत्न श्रोर वस्त्रादि सुखों कर्के युक्त कर्ताहै श्रोर नीलकमलकी न्याई सुंदर नेत्रोंवाला कर्ताहै २ श्रोर जि-

सद्वाहनानांगृहिणीगुणानांसुमित्रपुत्रद्रविणाविकानाम्करोतिलब्धिंनिजवेश्मयातःसितःसुराचार्यनिरीक्षितश्चेत् ५ गदाभिभूतोहतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिदीनः भवेत्प्रसूतौनिजवेश्मयाते भृगोःसुतेभानुसुतेनदृष्टे ६ इतिनिजवेश्मगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ नृपावरोधाधिकृतं विनीतंगुणान्वितंशास्त्रकृतप्रवेशं कुर्यान्नरंदैत्यगुरुः प्रसूतौसौम्यर्क्षसंस्थेरविणाप्रदृष्टः १ सद्रत्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् सुकेशपाशंमनुजंप्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थोभृगुरिंदुदृष्टः २ भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणःकांतानिमित्तंद्रविणव्ययःस्यात् नरोहिनीहारकरात्मजर्क्षेस्थितेसितेभूमिसुतेनदृष्टे ३ प्रज्ञांमहद्वाहनवित्तवृद्धिंसेनापतित्वंपरिवारसौख्यं कुर्यान्नराणामुशनाप्रकामंबुधर्क्षसंस्थश्चबुधेनदृष्टः ४ सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरांविनीतः मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टेसितेदेवपुरोहितेन ॥ ५ ॥ पराभिभूतंचपलंविविक्तंसदुःखितंसर्वजनोज्झितंच मर्त्यंकरोत्येवभृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षेरविजेनदृष्टः ॥ ६

सके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र मंगल कर्के देख्या होवे तिसकों भाग्योंकर्के युक्त श्रोर कामविधिमें चतुर श्रोर स्त्रीके निमित्त द्रव्यखर्चनेवाला कर्ताहै ३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका शुक्र बुध कर्के देख्या होवे तिसकों वडी बुद्धि वाला श्रोर वाहन श्रोर धनकी वृद्धिवाला श्रोर सेनाकास्वामि श्रोर परिवारके सुखवाला कर्ताहै ४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो श्रेष्ठ बुद्धिकीवृद्धिसें वडे ऐश्वर्य कर्के युक्त होता है श्रोर प्रसन्नचित्त श्रोर भली प्रकार नम्रहोताहै ॥ ॥ ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका शुक्र शनि कर्के देख्या होवे तिसकोअपमानकर्केयुक्तश्रोरचपलस्वभावकर्केयुक्तश्रोर दुः खितश्रोर संपूर्णजनोंकर्केरहितकर्ताहै ॥ ६ ॥

इतिबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथकर्कराशिमेंस्थितशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसके जन्म समयमें कर्क राशिका शुक्र सूर्य कर्के देख्या होवे सो स्त्रीकेक्रोध कर्के हर्षकेनाशकों प्राप्तहोताहै और शत्रुजनों कर्के पीडित होताहे १ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र चद्रमा कर्के देख्या होवे तिसकों पूर्वकन्या और पीछेसें पुत्रलाभ होताहे और माताकों और विमाताकों बहु मानोंके करणे वाला होताहे २ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका शुक्र मंगल कर्के देख्या होवेसो मनुष्य कलाके जाननेमें चतुर होताहे और शत्रुपक्षमें रहितहोताहे और बुद्धि कर्के सुखकों प्राप्तहोताहे और स्त्रीकर्के चिंतातुररहिताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्रबुध कर्केदेख्या होवे तिसकोविद्या मे प्रवीण और गुणी और गुणके जाननेवाला कर्ताहे और स्त्रीपुत्रों कर्के उत्पन्नजोदुःखतिसकर्केतप्त कर्ताहे और

॥इतिबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथकर्कटगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ ॥ सरोपयोषाकृतहर्षनाशःस्यात्पूरुषःशत्रुजनाभिभूतः दैत्यार्चितेकर्कटराशियाते निरीक्षितेहर्पतिनाप्रसूतौ ॥ १ ॥ कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमंवासपत्नींवहुगौरवाणि कुर्यान्नराणांहरिणांकदृष्टः कुलीरगोभार्गवनामधेयः २ कलासुदक्षोहतशत्रुपक्षो बुध्याचसौख्येनयुतोमनष्यः परंतुकांताकृतचिंतयार्त्तो भौमेक्षितेकर्कटगेसितेस्यात् ॥ ३ ॥ विद्याप्रवीणगुणिनंगुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तं जनोज्झितंचापिकरोतिमर्त्यं काव्यःकुलीरोपगताज्ञदृष्टः ४ अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तंविनीतंमतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यं प्रियवचनविलासंमानुषंसंविधत्ते सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवःकर्कटस्थः ५ सद्वृत्तसौख्योपहतंगतार्थं व्यर्थप्रयत्नंवनितान्वितंच स्थानच्युतंसंजनयेन्मनुष्यंमंदेक्षितःकर्कगतः सिताख्यः ६ इतिकर्कराशिस्थितेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहेसितेग्रहदृष्टयः ॥ स्पर्धातिसंवर्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनोमनुष्यः क्रमेलकाद्यैर्यदिवायुतःस्यादर्केक्षितेसिंहगतेसिताख्ये १

जनोंसें रहितकर्त्ताहे ४ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र बृहस्पति कर्के देख्या होवे तिसकों बडाचतुर और उदार और श्रेष्ट बृत्ति वाला और नम्र और बुद्धि और ऐश्वर्य कर्के युक्त और स्त्रीपुत्रका सुख कर्ताहे और श्रेष्ट वाग्विलास करणे वाला कर्ताहे ५ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र शनि कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ट बृत्ति और सुखसें रहित कर्ताहे और धन रहित और व्यर्थ उद्यम वाला कर्ताहे और स्त्रीजित कर्ताहे और स्थानसें भ्रष्ट कर्ताहे ६ इति-कर्कस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहराशिमेंस्थितशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहें ॥ जिसके जन्मसमयमें सिंहराशीका शुक्र सूर्य कर्के देख्या होवे सो दूसरेकी स्पर्धासें चित्त बृत्तिकों वधावताहे और स्त्रीके आश्रयकर्केधनलाभकोंप्राप्तहोताहेअथवाऊठांकर्केओरखचरोंखोतयोंकर्केधनलाभकों प्राप्तहोताहे १

और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र चंद्रमा करके देख्याहोवे तिसकी माता की सौकनानिश्र गकर्के होतीहै और स्त्रीसें विरोध होताहै और ऐश्वर्यकाउदय होताहै २ और जिसके जन्मसमय में सिंहराशिका शुक्र मंगल करके देख्याहोवे तिसकों राजाकाप्यारा और धान्य धनों करके युक्त और कामसें उत्पन्नजो व्यसन तिनों करके संतप्तकर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शुक्र बुध करके देख्याहोवे सो धन करके युक्त और संग्रहकरणेवाला और लोभी और कामकी वृद्धिसें निंद्यवि कारकों प्राप्त कर्त्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र बृहस्पति करके देख्याहोवे सोराजाका मंत्री और धनवाहनों करके युक्त और बहुतसी पुत्र और चाकरोंके सुखवाला होताहै और प्रसिद्ध कामोंके करणे वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र शनि करके देख्याहोवे सो राजाके तुल्य संपूर्ण समृद्धि वाला अथवाराजा करके दंडके अधिकार में स्थित

नूनंजनन्याश्चभवेत्सपत्नीपत्नीविरोधोविभवोद्भवश्च यस्यप्रसूतौदनुजेंद्रमं त्रीचंद्रेक्षितःसिंहगतोयदिस्यात् २ नृपप्रियंधान्यधनैरुपेतंकंदर्पजातव्यस नाभिभूत करोतिमर्त्यंमृगराजसंस्थोभृगोस्तनूजोऽवनिजेनदृष्टः ३ धनान्वि तंसंग्रहचित्तवृत्तिंलुब्धस्मराधिक्यविकारनिंद्यम् दैत्येंद्रमंत्रीकुरुतेमनुष्यंसिंह स्थितःसोमसुतेनदृष्टः ४ नरेंद्रमंत्रीधनवाहनाढ्योवव्हंगनानंदनभृत्यसौख्यः विख्यातकर्माचभृगोस्तनूजेजीवेक्षितेसिंहगतेनरःस्यात् ५ नृपोपमंसर्वसमृ द्धिभाजंदंडाधिकारेप्यथवानियुक्तं करोतिमर्त्यंमृगराजवर्त्तीदैत्यार्चितःसूर्यसु तेनदृष्टः ६ इतिसिंहस्थेसितेग्रहदृ० अथजीवभवनेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ रौद्रं प्राज्ञंभाग्यसौभाग्यभाजंसत्त्वोपेतंवित्तवंतंविशेषात् ननादेशप्राप्तयानंमनुष्यंकु र्याच्छुक्रोजीवभेभानुदृष्टः १ सद्राजमानेनविराजमानंख्यातंविनीतंबहुभोगयुक्तं धीरंससारंहिनरंकरोतिभृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः २ द्विषामसह्यंधनिनंप्रस न्नंकांताकृतप्रेमभरंसुपुण्यं सद्वाहनाढ्यंकुरुतेमनुष्यंभौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः ३

होताहै ६ इतिसिंहस्थसितेग्रहदृष्टयः ॥ अथजीवभवनमें शुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिकाशुक्र सूर्य करके देख्याहोवे तिसकों क्रूर और चतुर और भाग्य के सौभाग्य करके युक्त कर्त्ताहै और पराक्रमकर्के युक्त और विशेष करके धनवान् कर्त्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिका शुक्र चंद्रमा करके देख्याहोवे सो श्रेष्ठ राजमान करके विराजमान होताहै और प्रसिद्ध और नम्र होताहै और बहुत भोगों करके युक्त और धीर और पराक्रमकर्के युक्त कर्त्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिका शुक्र मंगल करके देख्याहोवे तिसकों शत्रुयोंकों नहिं सहारणे वाला कर्त्ताहै और धनी और प्रसन्न और स्त्रीके प्रेमसें धन प्राप्त और श्रेष्ठ पुण्योंवाला और श्रेष्ठ वाहनों करके युक्त कर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें यु

मीनिका शुक्र बुध करके देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट वाहन श्रोर धन श्रोर वस्त्र श्रोर भूषणोंकरके युक्त कर्त्ताहे श्रोर निश्चय करके श्रेष्ट अन्नोंकासुखकर्त्ताहे ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमय में धनमीनकाशुक्र वृहस्पतिकरके देख्याहोवे तिसकों घोडे और घर और वस्त्र और भूषण और हाथियोंकासुखकर्ता है ॥ ५ ॥ और जिसके जन्मसमय में धनमीनका शुक्र शनिकरकेदेख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट भोगके सुखों वाला और नित्यं प्रतिउत्सवों करकेयुक्त और श्रेष्टधनकरकेयुक्तकर्ताहे ॥ ६ ॥इतिजीवगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अवशनिकेगृहमेंशुक्रकं.ग्रहदृष्टियोंकाफ लकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकाशुक्रसूर्यकरके देख्याहोवे तिसकों स्थिरस्वभाववाला श्रोर ऐश्वर्यवालाकर्त्ताहे १ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभ राशिकाशुक्र चंद्रमाकरके देख्याहोवे

सद्वाहनार्थांवरभूषणानांलाभंसदन्नानिसुखानिनूनं ॥ कुर्यान्नराणांगुरु मंदिरस्थोदैत्यार्चितःसोमसुतेनदृष्टः ॥ ४ ॥ तुरंगगेहांबरभूषणानां महागजानांवनितासुखानाम् ॥ करोत्यवाप्तिंभृगुजःप्रसूतौजीवेक्षितोजी वगृहाश्रितश्च ॥ ५ सद्भोगसौख्योत्तमभोगभाजंनित्योत्सवोत्कर्षयुतंसुवित्तम् करोतिमर्त्यंगुरुगेहजातोदैत्यार्चितोभानुसुतेनदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिजीव गेहशुक्रेग्रहदृष्टयः अथशनिक्षेत्रगतेसितेग्रहदृष्टिः ॥ स्थिरस्वभावंविभवोपपन्नं महाधनंसारविराजमानं कांताविलासैःसहितंप्रकुर्यात्भृगुःशनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः १ श्रोजस्विनचारुशरीरयष्टिप्रकृष्टसत्वंधनवाहनाढ्यम् करोतिमर्त्यंशनि गेहयातोभृगोःसुतःशीतकरेणदृष्टः २ श्रमामयाभ्यामतितप्तमूर्तिमनर्थतीर्थे क्षतिसंयुतंच कुर्यान्नरंदानवराजपूज्यःकुजेक्षितःसूर्यसुतालयस्थः ३ विद्वद्वि धिज्ञंयानिनंसुतुष्टंप्राज्ञंसुसत्वंबहुलप्रपंचं ॥ सद्वाग्विलासंमनुजंप्रकुर्यात्भृगुःश निक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ४ सद्गंधमाल्यावरचारुवाद्यसंगीतसंजातरुचिःशुचिश्च स्यान्मानवोदानवराजपूज्येसुरेज्यदृष्टेशनिमंदिरस्थे ५

तिनकों तेजस्वी और सुंदरदेह वाला और श्रेष्ठ पराक्रमवाला कर्त्ताहै और धन औरवाहनोंकरके युक्तकर्त्ताहे २ ॥ और जिसकेजन्म समयमेंमकर कुंभराशिकाशुक्रमंगलकरकेदेख्याहोवे तिसकोंश्रमकरके और रोगोंकरकेतप्तकर्त्ताहै और अनर्थके करणेवाला और तीर्थों के करणमें खेदयुक्तकर्त्ताहे ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभका शुक्रबुधकरकेदेख्याहोवे तो विद्वानों की विधि को जानने वाला और धनी और भलीप्रकार प्रसन्न और चतुर और प्रपंची और श्रेष्टवाग्विलासीहोताहे ॥ ४ ॥ श्रोर जिसकेजन्मसमय में मकरकुंभराशिकाशुक्र बृहस्पतिकरकेदेख्याहोवे तो श्रेष्टगंधमालाकरकेयुक्त और श्रेष्टवस्त्रोंकरकेयुक्त और बाजे और संगीतविद्यामें इच्छावालाहोताहे ५

औरजिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकाशुक शनिकर्केदेख्याहोवेतिसकों प्रसन्नदेहवालाऔरअनेकप्रकारकेलाभवाला औ धन और स्त्रीऔर वाहन और पुत्रोंकेसुखवाला कर्ताहै ६ इतिशनि क्षेत्रगतशुक्रे ग्रहदृष्टयः अथभौमक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमेंमेषवृश्चकराशीकाशनि सूर्यकर्केदेख्याहोवे सो महिषीया औरगोयाऔर बकरियाऔर भेडोंकीसमृद्धिवालाहोताहै और खेतीयोंकेकर्ममेंसदारतहोताहे और श्रेष्ठकर्मकरणेवालाहोताहै १ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चक का शनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो नीचकीसंगतिवाला और चपल और खोटेस्वभाववाला और दुष्ट और सुखकर्के और धनोंकर्के रहितहोताहै ॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशि का शनि मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बहुत बकवादकरनेवाला और धनसंपदासें रहित और कार्यक्षयकोंप्राप्त और विशे

प्रसन्नगात्रंचविचित्रलाभंधनांगनावाहनसूनुसौख्यम् कुर्यान्नरंदानववृंददेवो मंदक्षितोमंदगृहेऽधिसंस्थे ।६ ॥ इतिशनिक्षेत्रगतशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमालयस्थेशनौग्रहदृष्टयः॥ लुलायगोजाविसमृद्धिभाजंकृपिक्रियायांनिरतःसदैव सत्कर्मसक्तंजनयेन्मनुष्यंभौमालयस्थो शनिरर्कदृष्टः १ ॥ नीचानुयातंचपलंकुशीलंखलंसुखार्थैः परिवर्जितंच कुर्यादवश्यंरविजोमनुष्यंशशीक्षितोभूसुतगेहसंस्थः ॥ २ अनल्पजल्पंगतसत्पदार्थंकार्यक्षतिंजातविशेपवित्तं करोतिजातंतनुभानुसूनुःकुजेनदृष्टःकुजवेश्मसंस्थः ॥ ३ ॥ चौर्यकर्मकलहादितत्परंकामिनीजनगतोत्सवंनरम् ज्ञेक्षितोहिकुरुतेऽर्कनंदनोभूमिसूनुभुवनाधिसंस्थितः ॥ ४ ॥ सुखधनैःसहितंनृपमंत्रिणंनृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोऽवनिजवेश्मगतःकुरुतेनरम् ॥ ॥ ५ ॥ बहुप्रयाणाभिरतांविकांतिपापांगनासक्तमतिं विचित्तम् ॥ करोतिमर्त्यंक्षितिजालयस्थोभानोस्तनूजोभृगुजेनदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिभौमालयस्थेशनौग्रहदृष्टयः अथशुक्रवेश्मगेशनौग्रहदृष्टयः ॥ विद्याविचारेप्रचुरोतिवक्तापरान्नभोक्त विधनश्चशांतः भवेन्नरस्तिग्मकरेणदृष्टेसूर्यात्मजेभार्गववेश्मसंस्थे ॥ १ ॥

षपनसेंरहितहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकका शनि बुधकर्के देख्याहोवे सो चोरी और लडाईकरणेमें तत्परहोताहे और स्त्रीजनोंकेउत्सवसेंरहितहोताहे ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चकराशिका शनि बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोसुखधनकर्केयुक्त और राजाकामंत्रीकर्ताहै और राजकेआश्रयकर्के मुख्यताकोंप्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिकाशनिशुक्रकर्के देख्याहोवे सो बहुत कर्के यात्रामेंरतहोताहे और शोभारहितहोताहे और खोटीस्त्रीमेंरत और चित्तसेंदुरहोताहै ॥ ६ ॥ इतिभौमगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथशुक्रकेगृहमें शनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका शनि सूर्यकर्केदेख्याहोवे सो विद्याके विचारमें बडाचतुर और बका और पराया अन्नभोजनकरणेवाला और धनहीन और शांतस्वभाववालाहोताहै १ ॥

और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका शुक्र चंद्रमाकर्के देख्याहोवेसोराजाको छ्पासेंवढेअधिकारकों प्राप्तहोताहै और स्त्रीभूषणोंकेसुखकों प्राप्तहोताहै और वलकर्के युक्तहोताहै ॥ १ ॥ और जिनके जन्मसमयमें वृषतुलाका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों युद्धकार्यमें रत और वहुतवकवादी और वडी प्रसन्नताकर्के युक्त कर्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका शनि वुधकर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीमें रत और नीचजनोंकी संगतिवाला और हास्यविनोदमेंरत और धनहीन और नपुंसकोंसें मैत्रीवाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाकाशनि वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सोपरोपकारमें चित्तवृत्तिकर्ताहै औरपरायेदुखकर्केदुःखी होताहै और दाता और उद्यमकरणे वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमदमें वृषतुलाराशिका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे सोरत्नादिलाभकों और स्त्रीके विलासकों और जलके लाभकों और राजासें गौरवलाभकों प्राप्तहोताहै ६

नृपप्रसादाप्तमहाधिकारंयोषाविभूषांवरजातसौख्यं वलान्वितंसंजनयेन्मनुष्यंमंदः सितर्क्षेहरिणांकदृष्टः २ संग्रामकार्याभिरतंनितांतमनल्पजल्पंचमहत्प्रसाद कुर्यान्नरंतिग्मकरस्यसूनुर्भूसूनुदृष्टोभृगुजालयस्थः ३ कांतारतोनीचजनानुयातोविनोदहास्याभिरतोगतार्थः क्लीवादिसख्यश्चभवेन्मनुष्य.शनौसितर्क्षेशशिसूनुदृष्टे ४ ॥ परोपकारेकृतचित्तवृत्तिःपरस्यदुःखेनसुदुःखितश्च दातोद्यमीसर्वजनाप्रियश्चमंदेसितर्क्षेगुरुणाप्रदृष्टे ५ रत्नादिलाभंवनिताविलासंजलाधिकत्वंनृपगौरवाप्तिम् कुर्यान्नराणांतरणेस्तनूजःशुक्रेक्षितःशुक्रगृहंप्रयातः ६ इतिशुक्रगृहेशनौग्रहदृष्टयः अथवुधमंदिरेशनौखेटदृशः ॥ सुखाझितंनीचरतंसकोपमधार्मिकंद्रोहकरंसुधीरम् कुर्यान्नरंतिग्मकरस्यसूनुर्भानुप्रदृष्टोवुधमंदिरस्थः ॥ १ ॥ प्रसन्नमूर्त्तिर्नृपतिप्रसादप्राप्ताधिकारोन्नतिरार्यवृत्तिः कांताधिकारोपदिवानरःस्यान्मंदेझभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे २ प्रकृष्टवुद्धिर्गुतरांविधिज्ञःस्यातंगभीरंचनरंकरोति सोमात्मजक्षेत्रगतोर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टःपरिसूतिकाले ३ धनान्वितंचारुमतिंविनीतगीताप्रियंसंगरकर्मदक्ष शिल्पेऽप्यभिज्ञंमनुजंप्रकुर्यात्सौम्येक्षित.सौम्यगृहस्थमंदः ४

इतिशुक्रगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अब वुधकेक्षेत्रमें शनिमें ग्रहदृष्टियोंका फल कहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसकों सुखरहित और नीचकर्ममेंरत और क्रोधकर्केयुक्त और अधर्मी और द्रोहके करणेवाला कर्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याकाशनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तिसकों प्रसन्नमूर्त्ति और राजाकी प्रसन्नताकर्के अधिकारकों प्राप्त और श्रेष्ठवृत्तिवाला अथवा स्त्रियोंके आधिक कों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ठ वुद्धि और विधिकेजाननेवाला और प्रसिद्ध और गंभीरताकर्के युक्त कर्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याकाशनि वुधकर्के देख्याहोवे तिसकों धनयुक्त और सुंदर वुद्धियुक्त और नम्र और गीतमें प्रीतिवाला और युद्धकर्ममें चतुर और शिल्पके जानने वाला कर्ताहै ४

ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सो राजाके आश्रय वाला ओर सुंदरगुणोंकर्के युक्त ओर श्रेष्ठजनोंका प्यारा ओर गुप्तधनवाला ओर मनस्वी होताहै ५ ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीयोंके भूषणकरणेमें चतुर ओर श्रेष्ठ कर्म ओर धर्ममें रत ओर स्त्रीमें सक्तचित्तवालाबत्ताहै ६ इतिबुधगृहे शनी ग्रहदृष्टयः ॥ अब कर्कराशिमें स्थित शनिकों ग्रहदृष्टियोंका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो आनंद ओर स्त्री ओर धनोंकर्के रहित होताहै ओर सर्वदा-कालअन्नभोगों कर्के रहित ओर माताकों बडाक्लेशकरणेवाला होताहै १ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कका शनि चद्रमाकर्के देख्याहोवेसो सबंधियोंकों निश्चयकर्के पीडा कर्त्ताहै ओर माताकों पीडा-कर्त्ताहै ओर धनोंकी वृद्धि कर्त्ताहै २ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शनि मंगल कर्के देख्याहोवे सो बलकर्के हीन ओर देहकर्के क्षीण होताहै ओर राजाकर्के दीयाजो धन तिसकर्के ऐश्वर्यवाला होताहै ३ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि बुधकर्के देख्याहोवे सो वाग्विलासमें कठिन होताहै ओर भ्रमणकरणेमें बुद्धि वाला ओर इछाके मनोरथों कर्के युक्त होताहै ओर दंभकरणेमें चतुर होताहै ४ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों क्षेत्र ओर पुत्र ओर स्त्री ओर धनोंकर्के ओर रत्नोंकर्के ओर वाहनों कर्के ओर, भूषणों कर्के युक्त होताहै ५ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे सो उदारताकर्के ओर गौरवकर्के ओर सुंदरमानों कर्के ओर सौंदर्यता कर्के ओर निर्मलवाणीके विलासोंकर्के निश्चयमें हीन होताहै ६ इति कर्कस्थ शनौ ग्रहदृष्टयः

राजाश्रितश्चारुगुणैःसमेतःप्रियःशतांगुप्तधनोमनस्वी भवेन्नरोमंदचरोयदि स्यात्तृराशिसंस्थःसुरपूज्यदृष्टः ५ योषाविभूषाकरणेप्रवीणसत्कर्मधर्मानुरतनितांतम् स्त्रीसक्तचित्तंप्रकरोतिमर्त्यंसितेक्षिताभानुसुतोङ्गगेहे ६ इतिबुध गेहेशनौग्रहदृ० अथकुलीरोपगतमंदंप्रतिग्रहदृष्टिः ॥ आनंददारद्रविणैर्विहीनःसदान्नभोगैरपिवांछितश्च मातुर्महत्क्लेशकरोनरःस्यान्मंदेकुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे १ निपीडनंबंधुजनेजनन्यांनूनंधनानामभिवर्द्धनंच कुर्यान्नराणांद्युमणेस्तनूजःकुलीरसंस्थोद्विजराजदृष्टः २ गलद्बलक्षीणकलेवरश्चनृपार्पिताथोत्तमवैभवोपि स्यान्मानुपोभानुसुतेप्रसूतौकर्कस्थितेक्षोणिसुतेनदृष्टे ३ वाग्विलासकठिनोटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपियुक्तः दंभकृत्तिचतुरोपिनरःस्यात्कर्कगामिनिशनौबुधदृष्टे ४ क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनैरत्नवाहनविभूषणैरपि संयुतोभवतिमानवोजनौजीवदृष्टियुजिकर्कगेशनौ ५ उदारतागौरवचारुमानैः सौंदर्यवर्यामलवाग्विलासैः नूनंविहीनामनुजाभवेयुः शुक्रेक्षितेकर्कगते र्कसूनौ ६ ॥ इतिकर्कोपगतेशनौग्रहदृष्टयः ॥

अब सिंहके शनिकों ग्रहदृष्टियों काफलकहतेहैं॥ जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशीका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो धनकर्के और धान्योंकर्के और वाहनों कर्के और श्रेष्टवृत्तिकर्के और श्रेष्टचरित्रोंकर्केहीनहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिमें शनि चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो श्रेष्टरत्न और भूषण और वस्त्रोंकर्के युक्त सुंदर यशवालाहोताहै और मित्र और पुत्र और स्त्रीके सुखसें पूर्णहोताहै और प्रसन्न मूर्त्ति होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे सो युद्ध कर्म में बडाचतुर होताहै और दयासें रहित और क्रोध कर्के युक्त होताहै और क्रूरस्वभाववाला होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि बुधकर्के देख्याहोवे तिसकों धन और स्त्री पुत्रके सुख कर्के हीनकर्ताहै और नीचव्यसनोंकर्के युक्त और दीन कर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्टमित्रपुत्रादिगुणोंकर्के युक्त और प्रसिद्ध और श्रेष्ट

अथसिंहोपगतेशनौग्रहदृष्टयः ॥ धनेनधान्येनचवाहनेनसद्वृत्तसत्योसमचेष्टितैश्च भवेद्विहीनोमनुजःप्रसूतौसिंहस्थितेभानुसुतेर्कदृष्टे १ सद्रत्नभूषांबरचारुकीर्तिकलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् प्रसन्नमूर्तिंकुरुतेऽर्कसुनुर्नरंहरिस्थोहरिणांकदृष्टः २ संग्रामकर्मण्यतिनैपुणःस्यात्कारुण्यहीनोमनुजःसकोपः क्रूरस्वभावोननुभानुसूनौपंचाननस्थेऽवनिसूनुदृष्टे ३ धनांगनासूनुसुखेनहीनंदीनंचनीचव्यसनाभिभूतम् करोतिजातंतपनस्यसूनुःसिंहस्थितःसोमसुतेक्षितश्च ४ सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतंख्यातंसुवृत्तंसुतरांविनीतं नरंपुरग्रामपतिंकरोतिसौरिर्हरिस्थोगुरुणाप्रदृष्टः ५ धनैश्चधान्यैरपिवाहनैश्चसुखैरुपेतंवनिताप्रतप्तम् कुर्यान्मनुष्यंतपनस्यसूनुःपंचाननस्थोभृगुसूनुदृष्टः ६ ॥ इतिसिंहोपयातेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथगुर्वागारेशनैश्चरेग्रहदृष्टयः ख्यातिंधनाप्तिंबहुगौरवाणिस्नेहप्रवृत्तिंपरनंदनेषु लभेन्नरोदेवगुरोरगारे शनैश्चरेपद्मिनिनाथदृष्टे १ सद्वृत्तशालीजननीवियुक्तोनामद्वयालंकरणप्रयातःसुखार्थभार्यासुखभाङ्नरःस्यात्सौरेसुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे २

वृत्तिवाला कर्ताहै और विशेष कर्के नम्र कर्ताहै और पुरग्रामका स्वामी कर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों धनोंकर्के और धान्योंकर्के और वाहनों कर्के और सुखों कर्के युक्त कर्ताहै और स्त्रीकर्के तप्त कर्ताहै ६ ॥ इतिसिंहस्थितेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथबृहस्पतिकेक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशीका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो प्रसिद्धताकों और धन प्राप्तिकों और गुणोंकों और गौरवकों प्राप्त होताहै और प्रायेपुत्रोंमें प्रीति करणेवाला होताहै १ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनका शनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्टवृत्तिवाला और मातासें रहित और दो नामोंकर्के भूषित और पुत्र धन स्त्री इनके सुखभोगने वाला होताहै २

श्रोर जिसके जन्मसमयमें धनमीनका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों वातरोगकर्के युक्त श्रोर लोकोंमें विरुद्धवर्त्तने वाला श्रोर विदेश रहनेवाला श्रोर वडादीन कर्ताहै ३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिका शनि वुधकर्के देख्याहोवे सो गुणोंकर्के युक्त श्रोर धनवान् श्रोर कामी श्रोर राजासें वडेश्रधिकारकों प्राप्त श्रोर सदाचारमें विराजमान होताहै ४ उोर जिसकेजन्मसमयमें धनमीनराशिका शनि वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों राजाकामंत्री श्रथवा सेनापति उोर संपूर्णकर्मोमेंयुक्त उोर वलवान् उोर सुशीलहोताहै ५ श्रोर जिसकेजन्मसमयमें धनमीन काशनिशुक्रकर्केदेख्याहोवे सोविदेशवासी उोर वहुतकार्योंमेंसक्त उोर दोमाताकापुत्र उोर वडापविन्नहो ताहै ६ इतिगुरुगृहेशनोग्रहदृष्टयः श्रथस्वक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमय

वातान्वितंलोकविरुद्धचेष्टंप्रवासिनंदीननरंकरोति नरंधरासूनुनिरीक्ष्यमाणोमा र्तंडपुत्रःसुरमंत्रिणोभे ३ गुणाभिरामोधनवान्प्रकामीनराधिराजाप्तमहाधिकारः नरःसदाचारविराजमानःशनौज्ञदृष्टेगुरुमंदिरस्थे ४ नृपप्रधानःपृतनापतिर्वा सर्वाधिशालीवलवान्सुशीलः स्यान्मानवोभानुसुतेप्रसूतौजीवेक्षितेजीवगृहं प्रयाते ५ विदेशवासीवहुकार्यसक्तोद्विमातृपुत्रःसुतरांपवित्रः ॥ स्यान्मानवो दानवमंत्रिदृष्टेमंदेऽमराचार्यगृहंप्रयाते ६ इतिगुर्वागारेशनैश्चरेग्रहदृ ष्टयः ॥ श्रथनिजागारगतमंदप्रतिग्रहदृष्टयः कुरूपभार्यश्चपरान्नभो क्तानानाप्रयासामयसंयुतश्च विदेशवासीप्रभवेन्मनुष्योमंदेनिजागारगतेऽर्क दृष्टे ॥ १ ॥ धनांगनाढ्यंद्विजिनानुजातंचलस्वभावंजननीविरुद्धं कामातुरं चापिनरंप्रकुर्यान्मंदःस्वभंस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ २ ॥ शूरःक्रूरःसाहसीसद्गुणा ढ्यःसर्वोत्कृष्टःसर्वदाहृष्टचित्तः स्यातोमर्त्यश्चात्मभस्थेऽर्कपुत्रेधात्रीपुत्रप्रेक्षण त्वंप्रयाते ३ सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्वान्धीरांश्चनानाविधकार्यसक्तान् करोतिमर्त्यान्ननुभानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थःशशिपुत्रदृष्टः ४

समकरकुंभराशिकाशनिसूर्यकर्केदेख्याहोवेसोकुरूपस्त्रीवाला उोर प्रायेश्रन्नकोंभोजनकरणेवाला उोर श्र नेकप्रयत्नोंकर्के उोर रोगोंकर्केयुक्तहोताहै उोर विदेशवासीहोताहै १ उोर जिसकेजन्मसमयमें मकर कुंभराशिकाशनिचंद्रमाकर्केदेख्याहोवेसो धन उोर स्त्रीयोंकर्केयुक्त उोर दुःखकर्केजन्मयाहुया उोर च पलस्वभावकर्केयुक्त उोर मातासेंविरुद्ध उोर कामातुरहोताहै २ उोर जिसकेजन्मसमयमेंमकरकुंभराशिका शनि मंगलकर्केदेख्याहोवेसोक्रूरउोर शूरवीर उोर हठी उोर श्रेष्टगुणोंकर्केयुक्त उोर सपूर्णोमें उत्कृष्ट उोर सदाप्रसन्नमन उोर प्रसिद्धहोताहै ३ उोर जिसकेजन्मसमयमेंमकरकुंभकाशनिवुधकर्केदेख्याहोवेतिसकों श्रेष्टवाहनोंवाला उोर उत्साहकर्केयुक्त उोर पराक्रमकर्केयुक्त उोर धीर्यताकर्केयुक्त उोर श्रनेककार्योंमेंसक्त करताहै ४

और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभकाशनि बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे तिसकोंभाग्योंकर्केयुक्त और राजाकामंत्री और रोगकर्केरहित और सुंदरदेहवालाकर्त्ताहै ५ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभ काशनिशुक्रकर्केदेख्याहोवे तिसकोंकामातुर और श्रेष्ठनियमकर्केरहित और भाग्योंकर्केयुक्त और सुखी औरधनोंकर्त्ताहै और भोगभोगनेंवाला और लक्ष्मीकास्वामीहोताहै २ इतिस्वगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ इति श्रीजातकखंडेग्रहभावादिफलाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥ अब ग्रहोंका बलसाधन करणेका अध्यायक हतेहैं ॥ तिसमें प्रथम दृष्टिका सिद्धकरणा मित्रसेनपद्धतिमें कहतेहैं होराशास्त्रके जान नेवाल्योंने तीसरे और दशमेंस्थानमें पाददृष्टि एकचरणदृष्टि ग्रहकी कहिहै और त्रिकोणमें नवमें पांचमें स्थानमें अर्धदृष्टि दोचरणदृष्टि कहिहै और चतुर्थ अष्टम स्थानमें

गुणान्वितंक्षोणिपतिप्रधानंनिरामयंचारुशरीरयष्टिं कुर्यान्नरंदेवगुरुप्रदृष्टश्चं डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ५ कामातुरंसन्नियमेनहीनंभाग्योपपन्नंसुखिनंधना ढ्यम् भोक्तारमीशंकुरुतेस्वभस्थोरवेःसुतोभार्गवसूनुदृष्टः ६ इतिनिजा गारगतमंदप्रतिग्रहदृष्टयः ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञया महेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेग्रहभावादिफलाध्यायःषष्ठः ॥ ६ ॥ अथग्रहाणांबलसाधनाध्यायः ॥ तत्रादौदृष्ट्यानयनंमित्रसेनपद्धतौ खभेविक्रमे १०।३ पाददृष्टिर्ग्रहेस्यात्त्रिकोणे ९।५ ऽर्द्धदृष्टिर्द्युने ७ पूर्णदृष्टिः त्रिपादायतूर्या ष्टमे ॥ ४ ॥ ८ दृष्टिरेवंस्मृताहोरिकज्ञैर्य्यथाशास्त्रदृक्षा १ गुरोःपूर्णदृष्टिस्त्रिको णे ९ ॥ ५ यथास्यात्तथासूर्यपुत्रस्यखेविक्रमे १० ॥ ३ च ॥ चतुर्थेखिलानैध ने ४ ॥ ८ भूसुतस्यविशालाःस्मृतादृष्टिरेवंग्रहज्ञैः २ केशवार्कः खैका ० १

त्रिपाद तीनचरण दृष्टि कहिहै और सातमें स्थानमें पूर्ण चारपाद दृष्टिकहिहै ॥ १ ॥ और बृहस्पति की नवम और पंचममें पूर्ण दृष्टि कहिहै और तैसेंहि तीसरे दशमें स्थानमें शनिकी पूर्ण दृष्टिहोती. है और मंगलकी चतुर्थ और अष्टममें पूर्ण दृष्टि होतीहै ॥ २ ॥ अब केशवोंसेंस्पष्टदृष्टि करतेहैं च क्रमें एकराशिसें लेकर बाराराशियोंके नीचे शून्यसें लेकर्के दृष्टिफलके अंक धरेहैं तिसमें इहरीतिहै योदेखने वाला ग्रहहै तिसकी द्रष्टा संज्ञाहै और जिसकों देखताहै तिसकी दृश्यसंज्ञाकहीहै तब रा श्यादि दृश्यग्रहमें राश्यादि द्रष्टाकों घटायदेवे योराश्यादि अंक शेषरहे तिसके नीचे दृष्टिकाफल लिखाहै तिसफलकों पृथक् स्थिनकरे आगेके कोष्टसाथ अंतरकर्के शेषअंशादिगुणदेवे फेरतिसमेंती स ३० का भाग देकर जोधन ऋण फलकों लब्धि होवे तिसकों पूर्व दृष्टिफलमें धनऋणकरे फेरति

सकों चारके अंकसें भागलेवे तवस्पष्टदृष्टि होजातीहै और बृहस्पति और शनि और मंगलकी दृष्टिमे- विशेष चक्रमें लिख्याहे जब गुरुकी दृष्टिसाधनेमे राश्यादि अंक आठ और चार ८ ॥ ४ आवे तव पूर्णदृष्टिहोतीहै और शनिकी दृष्टि साधनेंमें राश्यादि अंक नव और दो ९ ॥ २ होवें तव पूर्णदृष्टिहो तीहै और भौमकी दृष्टि साधनेंमें राश्यादि सात और तीन ७ ॥ ३ अंक होवें तवपूर्ण दृष्टि होतीहै- और सूर्यादि सातग्रहोंके राश्यादि छै ६ अंकके नीचे पूर्ण चारपाद ४ दृष्टि कहिहै ३ और ग्रथांतर में राहुकेतुकी उच्चमूलत्रिकोणसंज्ञाकहिहै राहुका उच्च वृषराशि और केतुका उच्च वृश्चिक और राहु का मूलत्रिकोण कुंभराशि और मेष मित्रराशिहै और केतुका सिंहराशि मूलत्रिकोण और तुलामि

अग्नि ३ द्वि २ ख ० वेद ४ राम ३ यम २ भू १ खा० भ्रा० भ्र० मेकादिभे १।२।३।४।५।६।७।८।९।१० ११। १२।द्रष्टावर्जितदृश्यक स्यगुरुणाचेदष्टवेदैकृताः॥मंदेनांकयमेऽसृजानगगुणैंकाभादिजाःसंस्कृताः॥ भा गघ्नक्षयवृद्धिखानललवेनाब्ध्युद्धृताद्दृग्भवेत् ३ अथग्रंथांतरे राहुकेत्वोरुच्चमू लंत्रिकोणसंज्ञोच्यते राहोर्वृषश्चकेतोस्तुवृश्चिकंतुंगसंज्ञकम् मूलत्रिकोणंकुंभं चक्रियामित्रभ मुच्यते १ एतत्सप्तमराशिस्तुकेतोर्मूलत्रिकोणक- मिति

दृष्टिसाधनचक्रमिदम्												
अंकाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूचंबुशु	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०	०
भौ	०	१	४	२	०	४	४	२	१	०	०	०
जी	०	१	३	४	०	४	३	४	१	०	०	०
श	०	४	३	२	०	४	३	२	४	०	०	०

त्रक्षेत्रकहाहे राहुकेतुका उपयोग पद्धतिकारोंने आयुषाके विचारमें नाहि कहाहै और मेने और ग्रथोंके फलादे शवास्ते इहां इनके उच्चमूलत्रिकोणकीसंज्ञा कहिहै ॥ अत्रोदाहरण ॥ द्रष्टाचद्रः ॥ ५ ॥ १२ ॥ २५ २८ ॥ दृश्योरविः २ ॥ १४ ॥ २० ॥ ५८ अयद्रष्टा हीनोजातः ९ ॥ १ ॥ ५५ ॥ २० नवराश्यधों कः १ अनयोरंतरंक्षयः अंतरेणभागाद्य १ ॥ ५५ ॥ ३० गुणित १ ॥ ५५ ॥ ३० त्रिंशद्भिर्भक्तलब्ध ० ॥ ३ ॥ ५१ ॥ अनेनभादिजोंकःसंस्कार्यः कथंपरक्षयेहीनः कार्यःपरवृद्धौयुक्तःकार्यः अत्रपरहीनो- स्तिअतःकारणाल्लब्धेन ० ॥ ३ ॥ ५१ भादिजोंकः १ हीनःऊनः ० ॥ ५६ ॥ ९ चतुर्भक्तोजातासूर्यो परिचंद्रदृष्टिः ०० ॥ १४ ॥ २ एवमन्येषाम्

अवकहतेहैं विनाग्रहोंके बलजाननेसें आयुषाका ज्ञान नहिंहोताहै तिस कारणसें छैप्रकारका ग्रहोंका बल अब कहतेहैं १ स्थान १ दिक् २ काल ३ चेष्टा ४ निसर्ग ५ दृग् ६ इहे छै बल कहेहैं पांचप्रकारका स्थानबलहै तिसमें प्रथम उच्चबलसिद्धकर्तेहैं सूर्यसें लेकर शनिपर्यंत ग्रहोंकियां उच्च-राशिया १ २ १० ६ ४ १२ ७ इहे चक्रमें स्पष्टलिखीहैं ऊंर इनके परमोच्चांश बी चक्रमें लिखेहैं श्रोर नीचराशियां श्रोर नीचांश कहेहैं २ अब ग्रहोंके मूलत्रिकोण राशियां कहतेहैं सूर्यतेलेकर ५ २ १ ६ ९ ७ ११ इहे मूलत्रिकोण राशियां च क्रमेंस्पष्टकर्केलिखियांहैं ऊंर इसमें विभागकर्के विशेष कहते हैं सूर्यसिंहके वीस अंश मूलत्रिको ण ऊंर दश अंश स्वक्षेत्री होताहैं ऊंर चंद्रमा वृषके तीनअंश उच्च उपरंत मूलत्रिकोण होताहै

। उच्चमूलत्रिकोणस्वभवनसंदेहेचक्रमेतत्								
ग्र०	सू	चं	म	बु	वृ	शु	श	ग्रहाः
रा०	सिं	वृ	मे	कं	ध	तु	कु	राशयः
उ०	मे१०	३	म२८	१५	कं५	मी२७	तु२०	उभागः
मू०	२०	२७	१२	५	१०	१५	२०	मूलत्रि-
स्व०	१०	कंस्व	१८	१०	२०	१५	१०	स्वगृह-

स्वर्क्षे	०।३०।०
समभे	०।७।३०
मूलत्रि	०।४५।०
मित्रर्क्षे	०।१५।०
ऽधिमित्रभे	०।२२।३०
शत्रुभे	०।३।४५
ऽधिशत्रुभे	०।१।५२।३०

बलज्ञानंविनायस्मादायुर्ज्ञानंनजायते तस्माच्चपड्विधंवीर्यंग्रहाणामुच्यतेऽधुना १ अथोच्चादिभवनानिर्णयः अर्कादितुंगभवनान्यज १ गो २ मृगास्य १० क न्या ६ कुलीर ४ झष १२ यूकधराः ७ क्रमेण ॥ आशा १० कृशाणु ३ न रका २८ हरि १५ पुट्ठ २७ विंश २० द्वागैस्तथास्मर ७ गृहेपुभवंतिनी चाः २ मूलत्रिकोणभमिनान्मृगराज ५ गो २ ज १ कन्या ६ हयांग ९ घ ट ७ कुंभधरा ११ स्तदंशाः विंश २० द्व २७ मित्र १२ शर ५ दिक्तिथ यो १५ नखा २० श्चर्क्षेद्वानिजोच्चबलवतःपरतःस्वभांशाः ३ अथोच्चबलसप्त वर्गजबलसाधने केशवार्कः नीचोनोभगणात्च्युतःषडधिकश्चेत्षट्हृदोच्चबलं

ऊंर मंगल मेषके वारां अंश मूलत्रिकोण उपरंत स्वक्षेत्री होताहै ऊंर बुध कन्याके १५ अंशउच्च ऊंर तिसकेआगे ५ अशमूलत्रिकोण ऊंर १० अश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर बृहस्पति धनके दश १० अंश मूलत्रिकोण श्रोर २० अंश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर शुक्र तुलाके १५ अश त्रिकोण श्रोर १५ अंश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर शनि २० अंश कुंभके त्रिकोण श्रोर १० अंश स्वक्षेत्री होताहै ३ अब उच्चबल श्रोर सप्तवर्गजबल साधनमें केशवार्क कहताहै ग्रहकों अपने परमनीचक रें ऊनकरे श्रोर जब छराशिसें अधिकहोवे तब वारांराशिमें घटावे श्रोर जब छैराशिसें ऊनहोवे तब यथास्थित सिद्धरहने देवे फेर तिसकों छे ६ सें भागलेवे जोलब्धहोवे सो राश्यादि उच्चबल हो ताहै इसमें भागलेनेका प्रकार कहते हैं जब ग्रह छै राशिके तुल्यहोवे तब रूप १ बल होताहै

और छैराशिसे हीन होवे तब रूपके स्थानमे प्रथम शून्य ० लेवे सो राशिजाने और शेषकों स
ट ६० से गुणे और नीचेके अंककों द्विगुणकर्के तिसमे मिलावे फेर तिसको छेसे भागलेके दू
सराफल शून्यके नीचे धरे इसिप्रकारकर्के विकला पर्यंत चारस्थानमे फल उच्चवलहोताहे अब सतव
र्गज बल कहतेहे लग्नादि सप्तवर्गोका स्वामी स्वक्षेत्रादि जिसे स्थानमे स्थित होवे तिसका फल च
क्रसे ग्रहणकरे फेर सप्तवर्गके फलकों एकत्र करे तिसकानाम सप्तवर्गजबल कहाहे ४
और मित्रादिस्थानोंमेंजानने केवास्ते चक्रमे सूर्यादि सातग्रहों के मित्रसम शत्रुग्रहलिखेहे और तात्का
लिक मित्रा ऽमित्रादि पांचप्रकारके ग्रहकहतेहे योग्रह जिसग्रहसे तीसरे ३ ग्यारमे ११ दूसरे २

स्वर्क्षे द्वंसमभेष्टमस्त्रिचरणामूलत्रिकोणेवलं मित्रर्क्षेघ्रिरधीष्टभेत्र्य इभांशावैरिभे ष्टांशकोद्दंतांशोध्यरिभेग्रहाधिपवशात्खेटस्यसप्तैक्यजम् ४ अथमित्रामित्रादिग्र हामित्रसेनेनोक्ता. अर्कात्स्युःसुहदःकुजेंदुगुरवोज्ञार्कौरवीज्येंदवः शुक्रार्कौदिव सेश्वरारविधवो ज्ञार्कौ ज्ञशुक्रौक्रमात् अर्कात्स्युःक्रमतोरयः सितशनी क श्चिन्न सौम्यो विधुः शुक्रज्ञौ सितगूज्ञगू शशिकुजार्काः स्यु· समा श्चापरे ५

॥ अथमित्रसमशत्रुचक्रम्

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रहाः
चंमबृ	बुसू	सूचबृ	सूशु	सूचम	बुश	बुशु	मित्राणि
बु	मंबृशुश	शुश	मंबृश	श	मंबृ	बृ	समाः
शुश	०	बु	च	बुशु	सूचं	सूचमं	शत्रवः

अथतात्कालिकामित्राऽमित्रादयोग्रहाः पराक्रमायस्वसुखांत्यखस्थाः । ३ । ११ । २ । ४ । १२ । १० । तत्का लामित्राण्यपरयोन्यभावे १ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । मित्रसुमित्रंचसमो हितोरिःसमस्तथैवरिपवोविचिंत्य· ॥ ६ ॥ अथोपचयादिसंज्ञाः पापग्र हपुंस्त्र्यादिग्रहसंज्ञामाह गृहाण्युपचयाख्यानित्र्यायारिदशमानिच ।३ । ११ । ६ । १० । लग्नांबुखास्तं ॥ १ । ४ । १० । ७ । केंद्राणित्रिकोणंनवं । ९ । ५ । पंचमं ॥ ७ ॥ पापाशनीनभौमास्ते संयुक्तोज्ञोविधुःकृशः क्लीबोसौम्यशनीना र्यौशुक्रेंदूचापरेनराः ॥ ८ ॥ अत्रचंद्रस्यपापत्वाऽभाव.क्षीणचंद्रयोगेबुधस्यशु भत्वमिदं अतःपद्धतौसर्वत्रदृग्बलानयने चक्राद्दहानोचतनुगेखले इत्यादि

चतुर्थ ४ बारमे १२ दशमे १० स्थानमे स्थितहोवे सोतात्कालिक मित्र होताहे और उनसे
लग्न । १ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । स्थानमे स्थित होवे सो तात्कालिक शत्रु होताहे और दोनों
स्थानमे सोमित्र होवे सो अधि मित्र जानना और दोनो स्थानमे शत्रु अधि शत्रु जानना और
मित्रशत्रुसमहोताहे और समभित्र मित्र होताहे और समशत्रुशत्रुहोताहे । ६ । और ३ । ११ । ६
। १० । स्थान की उपचय संज्ञाकहिहे और १ । ४ । ७ । १० । स्थानकी केंद्रसंज्ञाकहिहे और
। ९ । ५ । स्थानकीत्रिकोणसंज्ञाकहिहे ॥ ७ ॥ और शनिसूर्यमंगल येपापग्रहहे और उनके स-

युक्त बुध पापीहोताहै और क्षीण चंद्रमा पापी कहाहै और बुधशनी नपुंसक कहेहै और चंद्रशुक्र स्त्रीग्रह कहेहै और सूर्य मंगल बृहस्पति पुरुष ग्रहकहेहैं ॥ ८ ॥ अथयुग्मायुग्म और केंद्रादिद्रेष्काण बलकहतेहै ॥ शुक्र चंद्रमा दोनों समराशिमें और समराशिमें नवांशमें पाद । ० । १५ । बलदेतेहै और सूर्य मंगल बुध गुरु शनैश्चर इहेपांचग्रहविषम राशिमें वा विषमनवांशमें पाद । ० । १५ बल देतेहैं ॥ इसमें श्रीपतिपद्धतिकेटीकाकारने अंशोंमें मुख्यता कहिहै सोझूठहै जिससे और संपूर्ण जातककारोंका मत नहिहै उक्तंचलघुजातके चंद्रसितौस्त्रीक्षेत्रेपुरुषक्षेत्रोपगाः शेषा एवमंश्येष्वपि ग्रंथेयुक्षेत्रराशिरेवस्यात् अत्रापिराशिरेवग्राह्या और सूर्यादिग्रह क्रमसे केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानमेंरूप । १ । और । पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । स्थानमेंरूपार्ध । ० । ३० । और । आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें पाद । ० । १५ । बलसंपूर्णग्रह देतेहे और स्त्रीग्रह चंद्र शुक्र तीसरे द्रेष्काणमें और पुरुषग्रह सूर्य मंगल गुरु प्रथम द्रेष्काणमें और नपुंसक बुध शनि मध्य द्रे-

स्थलेचंद्रस्यशुभत्वं एतेषांमतेरिष्टयोगादौयत्रचंद्रस्यपापत्वाभिधानंतत्रअल्पबलत्वंबोध्यम् अथयुग्मायुग्मबलकेंद्रादिबलद्रेष्काणबलंचाह शुक्रेंदूसमभांशकोह्निविषमेन्येदद्युरंघ्रिंबलंकेंद्राद्येषुचरूपकार्द्धचरणान्यछंतिखेटाःक्रमात् स्त्रीखेटौचरमेनराःप्रथमकेक्लीबौचमध्येतथा द्रेष्काणेवितरंतिपादमुदितंस्यात्स्थानवीर्यंत्विदम् ९ ॥ इतिपंचधास्थानबलम् ॥ अथदिग्बलम् मंदाल्लग्नमिनात्कुजाच्चहिबुकंशोध्यंविधोर्भार्गवान्माध्यंज्ञाद्गुरुतोस्तमत्रखसभात्पृष्ठंत्यजेच्चक्रतः दिग्वीर्यंरसहृत्त्वथोसमयजंरूपंसदास्याद्विदः त्रिंशद्धृत्कनतान्नतेशशिकुजार्कीणांपरेषांबलम् १० शुक्लेत्येतिथिहृद्गतेष्यतिथयोवीर्यंसतांभूच्चुतंपापानांद्विगुणंविधोरिदमथान्हर्क्षंशकेषुक्रमात् ॥ सौम्यार्कीकभुवांनिशाशशिसितारायांचरूपंसदज्यस्याथांघ्रि

काणमें पाद । ० । १५ । बलदेतेहैं । ९ । इहेपांचप्रकारकास्थान बलकहाहै ॥ १ ॥ अब एकप्रकारका दिग्बल कहतेहैं ॥ शनैश्चरसे लग्नको शोधे और सूर्य मंगलसे चतुर्थभावको शोधे और चंद्रमा शुक्रसे दशमभावको शोधे और बुधगुरुसे सप्तमभावकोशोधे और शोधनकरियेसेपीछे राशि से अधिककी वरा ॥ १० ॥ में घटायकर शेषका छे ६ कर्कभागलेवे और उच्चबलकी न्याई शेष को साठसे गुणके और द्विगुणित नीचेके अंकको मिलावे औरछेसेभागलेवेतबदिग्बल स्पष्ट होताहै अब चारप्रकार का कालबल कहतेहैं ॥ बुधका सदा दिनरात्रिमें रूप १ बल होताहै और नतको तीस ३० से भागेतब चंद्रमा मंगल शनिका बल होताहै और उन्नतको तीस ३० से भागेतो सूर्य गुरु शुक्रकारूपादिबलहोताहै भागलेनेकाप्रकारउच्चबलकीन्याईशेषांककोसाठगुणकरके नीचेके अंककोद्विगुण करकेमिलावे उदाहरणनत २४।५६ त्रिशद्धृत्लब्धं ० ।४९। ५२ शशिकुजार्कीणाबल ॥ उन्नत ५ ४ त्रिशद्धृत रविगुरुशुक्रणांबलम् १० और कालबलकेतीनभेदकहतेहैं ॥ शुक्लपक्षमें गततिथियोंको साथ

यवग्रहण करे तिन कों पंद्रा १५ कर्केभागे लब्धरूपादिशुभग्रहोंका चंद्र बुध गुरु शुक्रकापक्षवलहो ताहै ऊर शिसंवलकोंरूप १ संघटावेतव पापग्रहोंका सूर्य भौम शनिकापक्षवलहोताहै ऊर बुधपापग्र हकर्केयुक्तपापी ऊर शुभग्र कर्केयुक्त शुभहोताहै ऊर कृष्ण पक्षमें शेषतिथियों सें पूर्वकीन्याईपक्षवल सिद्धहोताहै ॥ ऊर चंद्रमाका पक्षवलद्विगुणकरे चंद्रमाकाचेष्टावलवक्ष्यमाणपक्षवलकेतुल्यहोताहै इस कर्केइहांद्विगुणकरणाकहाहै अवपक्षवलमें त्रैराशिककहतेहैं चंद्रमामें सूर्यकोंघटायकर्के अंशवनावे ऊर अंशोंकों वारा १२ सेंभागे लब्धगततिथियां ऊर शेषकों साठ ६० सेंगुणे वारा १२ सेंभागे लब्धघ टिका शेषंषष्टिगुणं द्वादशभक्तंलब्धं पलानि इति अवत्रिभागवलकहतेहैं दिनके प्रथम त्र्यंश मेंजन्मेतो बुधका रूप १ वल ऊर दूसरे त्र्यंशमें सूर्यकारूप १ वल ऊर तीसरे त्र्यंशमें शनिकारूप १ वलहो ता है इसिप्रकार रात्रीके प्रथमत्र्यंशमें चंद्रमाका दूसरेमें शुक्रकातीसरेमें मंगलका रूपवलहोताहै अरु गुरुका सर्वदाकालरूप १ वलहोताहै अरु वर्षपतिका पाद ० १५ अरु मासपतिकादोपाद ० । ३०

चयाद्बलीकिलसमामासद्युहोरेश्वराः ॥ ११ ॥ अथवर्षेशमासेशयोरानयनम् ॥ ग्रहलाघवाहर्गणात् द्विष्ठोयंग्रहलाघवाह्निचयश्चक्राहतैःषट्शरैः षट्दस्त्रैश्च युतःसवाणतपनःसेषुश्चखांगाग्निभिः खाज्याशैर्विहतःफलेगुणयमघ्नेचक्रानिघ्ना क्षखेपितेद्वित्रियुतेनगैर्विहतकेस्तोर्कात्समामासपौ ॥ १२ ॥ अत्रकल्पितोदाह रणम् ॥ तत्रचक्रम् ॥ ग्रहलाघवद्युनिचयः ९६ द्विष्ठः ९६ एकत्रचक्राहतैःषट् शरैः३३६ युक्तः ४३२ अपरत्र चक्राहतैः षट्दस्त्रे १५६ युतः २५२ प्रथमः सवाणतपनैः १२५ युक्तः ५५७ द्वितीयःसेषुः २५७ प्रथमःखांगाग्नि३६०ह त्फल १ द्वितीयःखाज्याशैः ३० हत्फलं ८ प्रथमं १ गुणघ्नं ३ द्वितीयं ८ यमघ्नं १६ प्रथम ३ चक्रानिघ्नाक्षयुतं ३३ द्वितीयं१६ चक्रनिघ्नशून्ययुतं १६ प्रथमं३३ द्वियुतं ३५ द्वितीयं १६ त्रियुतं १९ उभयत्रसप्ततष्टेशेषं ० । ५ वर्षेशोर्कः मासेशःशुक्रः एवंयथेष्टाहर्गणेसाध्यौ

अरुदिनपतिकातीनपाद ०।४५ अरु होरा पतिकारूप १ वलहोताहै ११ इसमेंकल्पितउदाहरणकहते हैं ग्रहलाघवके अहर्गणकों ९६ दोस्थानमेंधरे ९६ एकस्थानमेंचक्र ६ कर्के गुणिततीनसौ छत्ती ३३६ केअककोंयुक्तकरे ४३२ अरु दूसरेस्थानमें चक्रकर्के गुणितछवी २६ केअकमें १५६ युक्तकरे २५२ अरु प्रथमाककोएकसौपचीस १२५ संयुक्तकरे ५५७ अरु दूसरे कों पांचसें ५ युक्तकरे २५७ प्रथम कों तीनसौसाठ ३६० सेंभागलेकर्केफलग्रहणकरे १ अरु दूसरेकों तीस ३० सेंभागलेकरफल ८ ग्रह णकरे अरु प्रथमकों १ त्रिगुणकरे ३ अरु दूसरेकों ८ दोसें २ गुणे १६ प्रथम कों चक्र ६ कर्के गु णित पाच ३० कोंयुक्तकरे ३३ दूसरेकों १६ चक्रकर्केगुणितशून्यकों ० युक्तकरे १६ अरु प्रथमकों दोका २ अंकमिलावे ३५ अरु दूसरेमेंतीन १६ मिलावे १९ अरु दोनोंस्थानोंमें सात ७ कर्के तष्टत करेपीछेशेष ० ५ अत्रवर्षेशःसूर्यः ० मासेशःशुक्रः ५ इसीप्रकारकर्के यथेष्टाहर्गणमें वर्षमासपतिसिद्धकरे

अब होरेशकेवास्ते वारप्रवृत्तिकहतेहैं चरार्द्धका और देशांतरपलोका वियोग अथवा योग करे जैसें चरऋणहोवे और देशांतरपल धनहोवे तववियोग अंतरकरणा और चरार्द्ध धनहोवे और देशांतरपलवी धनहोवें तवयोगकरणा जवऋणफलरहे तव सूर्योदयसें उपरत उतने कालकर्के वारप्रवृत्ति होतीहे और जवधनफलरहे तवसूर्योदयके पूर्व उतनेकालकर्के वारप्रवृत्ति होतीहे ॥ १३ और वारप्रवृत्तिसें लेकर्के घडियोंको द्विगुणकरे और पाचसेभागलेवे तवकालहोराकेस्वामियोंकीलब्धीहोतीहे सो कालहोरेश अपनेअपनेवारसेउठाछठाहोताहे जेसेंप्रथमसूर्यहोराहोवेतवक्रमसेंसूर्य १ शुक्र २ बुध ३ चन्द्र ४ शनि ५ गुरु ६ भोम ७ इह होरेश होतेहे अवइसमेंउदाहरणदेतेहैंपश्चिमेरेखातोयोजनानि ३६ स्वाङ्गुनानि २७ जातानिदेशांतरपलानि धनानि २७ चरपलानि धनं ८४ धनधनयोर्योगः १११ सूर्योदयादधोधनेइत्युक्तत्वात् सूर्योदयादधःआभिः १ ॥ ५१ जातावारप्रवृत्तिः अथेष्टकालः १३ वारप्रवृत्तेर्धनघटीभिः १ ॥ ५१ युक्ताअथैतावारप्रवृत्तेःसकाशाद्गतघटिकाः १४ ॥ ५१ द्विघ्नाः २९

अथहोरेशानयनं ॥ तत्रादौवारप्रवृत्तिः ॥ चरार्द्धदेशांतरयोर्वियोगयोगोत्थमानीयपलैश्चसम्यक् ॥ सूर्योदयादूर्द्धमृणेधनेधोवारप्रवृत्तिंमुनयोवदन्ति १३वारप्रवृत्तेर्घटिकाद्विनिघ्नाःकालस्यहोरापतयःशराप्ताः दिनाधिपाद्यारविशुक्रसोम्यशशांकसौरेज्यकुजाःक्रमेण १४ ॥ अथायनवलंचेष्टावलंच ॥ तत्रादावयनवलम् ॥सदाक्रांतिभागेर्युताह्नस्यसिद्धाः २४ शनींदोर्युतोनाक्रमाद्याम्यसोम्यैः विलोमंपरेपांगजाभाधि ४८ भक्ताभवेदायनंवीर्य्यमर्कस्यदृघ्नम् १५ इहायनवलार्थंप्रथमतोग्रहाणांक्रांतय.कर्तव्याः॥ तत्करणप्रकारश्चग्रहलाघवे॥ स्युःखंडानिखवार्द्धयोंबरकृताःशैलाग्नयोब्ध्ययश्त्रिंशत्तत्वधृतीनवारिनिधयरते: सायनांशग्रहात् वाव्हंशाभ्रकु १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	खंडानि
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४	क्रांति
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०	योगा

२१ द्वाराताआगताःकालहोराः ५ शेष ४ ॥ ४२ वर्तमानहोरायाभुक्त यथादिनेशवारोभौम तदुक्तक्रमेण भौमरविशुक्रबुधचंद्राः ५ गतावर्त्तमानाशनेर्होरा तस्याःभुक्त ४ । ४२ अवअयनवल और चेष्टावलकहतेहे ॥ प्रथमअयनवलकहतेहै ॥ बुधक्रांतयशयाम्यअथवासौम्यहोवेतिनमेंसिद्ध २४ अंशमिलावे ॥ और शनिचन्द्रमाके याम्यक्रांतिभागोंमें २४ अंशयुक्तकरे और सौम्यक्रांतिभागोंमे ऊनकरे और परेषा सूर्यमंगलगुरुशुक्रके सौम्यक्रांतिभागोंमे २४ युक्तकरे और याम्यक्रांतिभागोंमेऊनकरे और संपूर्णोंको अठतालि ४८ सें भागलेवेलब्धरूपादि अयनवल होताहे और सूर्यके अयनवलको द्विगुणकरे जिसमें वक्ष्यमाण चेष्टावल सूर्यका अयनवलके तुल्यहोताहे १५ अव क्रांत्यानयनेकाप्रकार ग्रहलाघवसें कहतेहे ग्रहकोंसायनकर्केनिसकेभुजाबनावे और तिसका दशमभागलेवे योलब्धांक आवे तिसकेतुल्याकोंका योग चक्रसें लेकर युदाकरे और शेषकोंगतखंडके अनगसें गुणदेवे और तिसको दशसें भागलेकर खंडयोगमें मिलावे और फेर निमकोंदशसें १०

भागलेवे योलब्धआवे सो तिस ग्रहके क्रांतिभाग होतेहे सो ग्रहसायनकिया मेषादि छेराशी में उत्तर और तुलादि छेराशियोंमें दक्षिणक्रांतिवाला कहाहै अवमुख्यचेष्टावल और नैसर्गिक वलकहतेहे प्रथम मध्यग्रहका और स्पष्टग्रहका योगकरे फेर तिसकाअर्धकरे और तिसकर्के नि सीके शीघ्रोच्चकों हीनकरे तव भोमादि पंचताराग्रहोंके चेष्टाकेंद्र होतेहें अवशीघ्रोच्चकह तेहें भौम गुरु शनिकामध्यमसूर्यशीघ्रोच्चहोताहै और वुध शुक्र के अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकें द्रमें मध्यमसूर्यकों मिलानेसें शीघ्रोच्चहोतेहें और केंद्र छे ६ राशिसें अधिकहोवे तव वारा १२ राशि में घटायकरधरे फेर तिसकों छेका भागदेकर पूर्वोक्त उच्चबलकीन्याई शेष कों साठ ६० गुणित कर्के और द्विगुणितनीचेके अंककों मिलावे तवरूपादिचेष्टावल सिद्धहोताहै अवनैसर्गिकवलकहते है रूप १ कों सात ७ सें भागें तव शनिका और दो २ कों सातसे भागें तो भौमका और तीन

भागसंख्यकयुतिःशेषेष्वघातादशाप्ताढ्या दिग्विहृतालवादिरपमस्तद्दिक्स्वगोला द्भवेत् १६ अथमुख्यंचेष्टावलंनैसर्गिकवलंचाह मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलंचेष्टाख्यकें द्रंकुजात्स्याच्चेतद्भगणाश्युतंपडधिकंपट्हृच्चचेष्टावलं स्यादेकोत्तररूपमद्रिविहृतं नैसर्गिकंस्याद्बलंमन्दारज्ञसुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनांक्रमात् १७ युद्धेवा णवियोगहृत्खचरयोर्वीर्यैक्ययोरंतरंस्वंसौम्यस्थखगेक्षयंचयमदिक्संस्थस्य कुर्याद्बलम् सद्दृष्ट्यंघ्रिगुग्रदृष्टिचरणोनंखेटवीर्यंभवेत्भावानांवलमीशजंचनृ चतुष्पादाख्यकीटांवुजाः १८ जायांब्वायखभोनिताःखलुततोदिग्वीर्यवत्तद्युतं

३ कों सातसें भागें तो वुधका और चार ४ कों सातसें भागेंतो गुरुका और पांच ५ कों सातसें भागेंतो शुक्रका और छे ६ कों सातसें भागेंतो चंद्रमाका और सात ७ कों सातसें भागेंतो सूर्यका रूपादि निसर्गवलहोताहे १७ और कदाचित् जन्मसमयमें ग्रहयुद्धहोवे तव तिनोंग्रहोंके वलका अं तरकर्के और तिनोंके कलात्मक शरवनावे और वाणोंके अंतरसें वलके अंतरकों भागे योलब्धआवे तिसफलकों उत्तरदिशाके ग्रहमें धन और दक्षिणदिशाके ग्रहमें ऋणकरे यहे संस्कार चेष्टावलका भे दहें और दृग्वल कहतेहें जिसग्रहमें योयोशुभदृष्टिहे तिसका चतुर्थांश धन दृग्वल होताहे और पापीग्रहोंकी दृष्टिका चतुर्थांश ऋणदृग्वलहोताहै और धनऋणदृग्वलोंका अंतरस्पष्ट दृग्वल होताहै अव तन्वादिभावोंकावल कहतेहे ॥ भावोंके स्वामीयोग्रहहे तिनोंका योयोवलहे सोसोभावोंकावल कहाहे

अब तन्वादिभावोंका दिग्बल कहनेहैं योनरराशियां मिथुन कन्या तुल कुंभ राशिके यो भावहैं तिनकों सप्तमभावकर्के रहितकरे और यो चतुष्पदराशिमेष वृष धनुकाउत्तरभाग सिंह मकरकापूर्वभाग तिनकों चतुर्थभावकर्के रहितकरे और जोकीटराशियांकर्कट वृश्चिकहै तिनकों लग्नकर्के रहितकरे और यो जलचरराशिहे मकरकापश्चिमार्ध और मीनातिनकों दशमभावकर्केरहित करे औरतिसके अनंतर दिग्वीर्यकीन्यांई बलसाधनकरे पूर्ववत् ॥ और भावोंके दृग्बल कहनेहे भावोंमें योदृष्टियांहैंतिनमें शुभग्रहदृष्टियोंका चतुर्थांश युक्तकर्के और पापग्रहोंका हीनकरे और फेर बुधगुरुकीदृष्टिकों युक्त करदेवेतब भावोंका स्पष्टदृग्बलहोताहै अब रश्मीष्टकष्टसाधनके वास्ते सूर्यचंद्रमाकेचेष्टाकेंद्रबलकहतेहै सूर्यकर्के रहित यो चंद्रमा है सो चद्रमाका चेष्टाकेंद्र होताहै और अयनांशकर्के युक्त और तीन राशियोंकर्के सहित यो सूर्यहै सो सूर्यका चेष्टाकेंद्र होताहै फेर केंद्रोंसे पूर्वकीन्यांई छे राशिसें अधिकोंकों बारा १२ में घटाय छे ६ सें भाग लेकर चेष्टाबलकी रीतिसें बलबनावे किसवास्ते रश्मि

सदृश्यंघ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनंज्ञेज्यदृग्युक्पुनः अथरश्मीष्टकष्टसाधनार्थमर्कचंद्रयोश्चेष्टाकेंद्रबलेचाह त्र्यर्केन्दुस्त्रिभयुक्तसायनरविश्चेष्टाख्यकेंद्रतयोर्गोकष्टविधौबलंकुरुततःप्राग्वन्नवीर्यायते १९ अथरश्मिसाधनम् येचेष्टोच्चबलेरसैर्विनिहतेसैकेनिजारश्मयश्चेष्टातुंगबलाहतेपदमिहेष्टंस्याद्बलेनैकयोः घातान्मूलमिदंहिकष्टमथतद्रूपंदशायाःफलंवीर्यंदृग्पृथगिष्टकष्टगुणितंद्वेचेष्टकष्टाव्हये २० ॥ अथसप्तवर्गजशुभाशुभबलमाह ॥ स्वेच्चेरूपंत्रिकोणेचरणविरहितंस्वर्क्षगेर्द्धत्रयोष्टांशाश्चाधीष्टर्क्षइष्टर्क्षयुजिचचरणःस्यात्समर्क्षेष्टमांशः भूपांशोवैरिगेहेध्यरिभयुजिरदांशश्चनीचेखमीशादिदृंगेहेतद्रूनैकमसद्थदलं पद्सुका

और इष्टकष्टकी सिद्धिके वास्ते १९ अबरश्मिसाधनकहतेहै ग्रहोंके यो चेष्टाबल और उच्चबल है तिनकों छे ६ सें गुणे और एक तिसमें मिलावे तब ग्रहोंकिया अपनी अपनी रश्मियां होतीहै चेष्टाबलसें चेष्टारश्मियां और उच्चबलसें उच्चरश्मियां होतीहै अब इष्टकष्ट सिद्धकरतेहै चेष्टाबल और उच्चबलकों आपसमें गुणे तिसका मूल इष्टहोताहै और चेष्टाबलकों उच्चबलकों एकरूप १ सें घटायके घातकरणेमें जो मूलहे सो कष्टहोताहै और मूललेनेका प्रकार लीलावतीमें स्पष्ट कहाहैऔरइष्टकष्टकेअनुसारग्रहदशाकेफलकोंकहेंऔरग्रहोंकेबलऔरदृष्टियांइष्टकष्ट कर्केगुणितइष्टौ म्कष्टरूपहोताहैं २० अबसप्तवर्गसेशुभाशुभफलकहतेहैलग्नोदयसप्तवर्गमेंयोग्रहउच्चमेंस्थितहोवैतिसका रूप१बलग्रहणकरे और मूलत्रिकोणमें पादहीन • ४५ और स्वक्षेत्रमें अर्ध • ३० औरअधिमित्रमेंतीन अष्टमांश • २२ ३० और मित्रक्षेत्रमें पाद • १५औरसमगृहमें अष्टमांश • ७।३० और शत्रुकेगृह में षोडशांश ० ३ ४ और अधिशत्रुकेगृहमें द्वात्रिंशांश ० १ ५२ ३० और नीचमेंशून्य • और उच्ची,

चयग्रहमें और मित्रादिग्रहोंका विचार न करे उक्तेग्रहोंका शुभवलकहाहै इसकर्के रहित एकरूप १ गृहमें शुभवलहोताहै जैसें लग्नका स्वामी जिसउच्चादिस्थानमें स्थितहोवे तिसस्थानका वलग्रहमें ग्रहण करणा इहेवल वर्गेशकेवशसें होताहै शुभकहाहे और तिसशुभफलकर्के रहितरूप १ गृहमें अशुभवल होताहै ॥ और होरादिछे ६ वर्गमें गृहाधिपकर्कैयो शुभवलप्राप्त भयाहै तिसका अर्ध स्थापनकरे जेसैंहो रादि स्वामि उच्चादिगृहमें होवें तिनके उक्तशुभवलकों रूप १ मेंघटाय कर्के अशुभस्थापनकरे फेर दोनों शुभाशुभवर्गोंका ऐक्य करे इसप्रकार सप्तवर्ग जवलकायोगकरणाकहाहै और इसमें कई क आचार्यकहतेहै क्रियमाणवलके वर्गाधिपजैसें स्थानमें स्थितहोवे तैसा फलग्रहणक णा सो असत्है पदा र्थजोहै जैसेंइसग्रथमें कहाहै तैसेंहीहै ॥ अवग्रहोंकीशुभाशुभपंक्ति सिद्धकरणी कहतेहै प्रथमनव ९ रेखा ऊर्ध्वदेवे और दश १० रेखाटेढीयाखेंचे तवसप्तवर्गी चक्रवनताहै तिसके प्रथमजोसातकोष्टहे शुभे क्यके और अशुभऐक्यके तिन दोनोंकों चार ४ भागदेकर लब्धकों शुभाशुभपंक्ति के प्रथम कोष्टमें गृह स्थानमें स्थापनकरे और होरादिहोरा द्रेष्काण सप्तांश नवांश द्वादशांश त्रिंशांश केस्थानोंमें तिसशुभाशु

भैक्यफलके अर्धकों दोनोंपंक्तियोमें छेस्थान मेंहि स्थापनकरै इसमें उदाहरण दरवातेहै जेसेंसूर्यका शुभैक्य १ । २ । ४ चतुर्भक्त । ० । १५ । ४२ । गृहकोष्टेस्थाप्यं और अस्यार्थ ० । ७ । ५१ । होरादिछैकोष्टो मे शुभपंक्तिमें स्थापनकरे अयसेही सूर्यका अशुभैक्यं । २ । ५७ । ५२ । चतुर्भक्तं । ० । ४४ । १८ । अशुभपंक्तिके गृहकोष्टमें स्थापनकरे और तिसका अर्ध । ० । २२ । ९ । होरादिछैकोष्टोंमें स्थापनकरे अयसेहिंचद्रादिग्रहोकास्थापनकरे ॥ अवशुभाशुभपंक्तीकोंस्पष्टकरतेहे ॥ वर्गपानामिति ॥ गृहहोरादि सप्तवर्गस्वामियोंका भिन्नभिन्न उक्त प्रकार कर्के अपने २ शुभाशुभकायोग तिस कर्के अपने अपने वर्गमें स्थित शुभाशुभवलकों गुरूपदिष्टरीतिसेंगुणे योयहजिसराशिमें स्थितहोवे तिसके स्वामीका योवर्गस्थ शुभाशुभवलहैतिसकर्केगुणे और एकस्थानमें भिन्नस्थापनकरे. और वर्गेश और वर्गमेंस्थितग्रहतिनको शुभाशुभवलकेघातका मूल शुभाशुभपंक्ति सिद्धहोतीहै तिसमे वर्गेश और वर्गमें स्थितग्रह केशुभवलके घातकामूलशुभपंक्ति और अशुभवलकेघातकामूल अशुभपंक्तिहोतीहै ॥ २२ ॥ इतिजातकखंडेपड्वलाध्यायः ॥ ७ ॥

चैतदैक्ये २१ अत्रगृहस्वामीयस्मिन्स्वोच्चादिस्थानेस्तितत्रोक्तंशुभंगृहेग्राह्यं एतदीशाद्वर्गेशाद्गृहेइष्टज्ञेयं ॥ अथदलंहोरादिपट्सुदलमिति ॥ होरादिवर्गस्वामीयस्मिन्स्वोच्चादिभेस्तितदुक्तंशुभंग्राह्यं ॥ तद्रूपाच्छोध्यमशुभंस्यात् ॥ तदैक्येकार्यं ॥ एवंसप्तवर्गोत्पन्नानांशुभाशुभानामैक्यकार्यमिति ॥ अथशुभाशुभपंक्तिमाह ॥ पंक्त्योः सप्तसुकोष्टयोःप्रथमयोरिष्टासदैक्येकतापृथ्येस्थाप्येभदलादिपट्सुचतदर्द्धंवर्गपानांपृथक् ॥ कृत्योक्तृयासदसद्युतीनिजनिजतान्निघ्नइष्टाशुभेवर्गेट्तनुस्थखगोजसोःसदसतोर्घातात्पदघ्नेस्फुटे ॥ २२ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेपड्बलेष्टकष्टसाधनाध्यायःसप्तमः ॥ ७ ॥

अत्र ग्रहों केषड्वलका फल और उच्चराशियोंका फल कहतेहें विनाग्रहवलके जातकफलकानिर्णय-नहिं होताहै तिसकर्के यो पूर्वाचार्योंने छैप्रकारका ग्रहवलकहाहै तिसकाफलमें कहताहा ॥ १ ॥यो-ग्रह उच्चवलमें स्थित होताहे सो परमलक्ष्मी प्राप्त कर्त्ताहे और जोग्रह मूलत्रिकोणमें वली होताहै सो सेनापति कर्ताहे और योग्रह स्वक्षेत्रमें वली होताहे तिसकर्के राजाकी प्रसन्नता और श्रेष्ठलक्ष्मीकों-मनुष्य प्राप्त होताहे ॥ २ ॥ और योग्रहराशिवलमें स्थित होताहे सो कलामें चतुर कर्त्ताहे और परलोकके भय वाला और सुंदररूप वाला कर्त्ताहे और यो ग्रह नीचमें और शत्रुकेक्षेत्रमें वली होताहै सो पराजयकों और अत्यंत दीनभावकों प्राप्त कर्त्ताहे ॥ ३ ॥ और यो ग्रह दिग्वलकर्के युक्त होताहे

अथग्रहाणांषड्वलोच्चराशिफलाध्यायः सर्वजातकफलस्यनिर्णयोनोभवेद्ग्रहवलेन विनाहिषड्विधग्रहवलस्यनिर्णयंतेनवच्मियदुदीरतमाद्यैः ॥ १ ॥ स्यात्तुंगवीर्य्येप रमाचलक्ष्मीवलाधिपत्यंचत्रिकोणवीर्य्ये स्वर्क्षादिवीर्य्ये नृपतेः प्रसादंश्रेष्ठांच लक्ष्मींलभतेमनुष्यः ॥ २ ॥ कलासुदक्षः परलोकभीरुर्वरांगनाराशिवलेसुरूपः स्याद्राशिवीर्य्येचपराजयः स्यान्नीचारिगेदैन्यमतीवखेटे ॥ ३ ॥ विभूषणंस्वांव रवाहनाद्यंककुव्वलिष्ठस्यदिशिप्रदः स्यात् दिवारात्रिवलेदद्यात्खेचरोभूगजा न्वितां लक्ष्मींसौख्यं सुखंपुंसांवैरिणांचपरिक्षयम् ॥ ४ ॥ क्वचिद्राज्यंक्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यंक्वचिद्व्ययं ददातिविहगश्चित्रंचेष्टावीर्य्यसमन्वितः ॥ ५ ॥ स्त्रीसुवर्ण महीवस्त्रगजरत्नादिसंपदाम् शत्रुनाशंसुखंकीर्त्तिंदद्यात्पक्षवलान्वितः ६ वक्रि णश्चमहावीर्य्याः शुभाराज्यप्रदाग्रहाः पापाव्यसनदाः पुंसांकुर्वंतिचवृथाटनम् ७

सो अपनी दिशासें भूषण वस्त्र वाहनोंका लाभकर्त्ताहे और दिनरात्रिवलमें यो ग्रहस्थित होताहै सो पृथ्वी और हाथी और लक्ष्मी और ऐश्वर्य और सुख कर्त्ताहे और शत्रुयोंका नाश कर्त्ताहे ॥ ४ ॥ और यो ग्रहचेष्टा वली होताहे सो किसिस्थानमें राज्य और किसिस्थानमें मान और किसिस्थानमें धनप्राप्त-और किसिस्थानमें धनका खर्च करदेताहे ॥ ५ ॥ और जोग्रह पक्षवलकर्के युक्त होताहे सो स्त्री और सुवर्ण और पृथ्वी और वस्त्र और हाथी और रत्नादिसंपदा और शत्रुनाश और सुख और यशकों देताहे ॥ ६ ॥ और शुभग्रह वक्री होकर्के वली होवें सो राज्यकों देतेहे और पापीग्रह वक्रीहोकर्के-वली होवें तव मनुष्योंकों दुर्व्यसन और वृथाभ्रमण देतेहे और योग्रह शत्रुकों युद्धमें जीतताहे सो ग्रह

सुख और जयकों देताहै और योग्रहदृग्वली और आकाशमें प्रकाशकों कररहाहै सो ग्रह राज्यकों. और आरोग्यताकों देताहै ॥ ८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पापीग्रहों सें शुभग्रह वली होवें सो. आचार और सत्य और सुख और पवित्रताकर्के युक्त और श्रेष्ठरूपवाले और तेजस्वी और कृत्यके जाननेवाले और ब्राह्मण देवताके भक्त और श्रेष्ठवस्त्र पुष्प मणियोंके भूषणों कर्के प्रीतिकों प्राप्तहोतेंहे ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पापीग्रह वली होतेहै सो लोभी और खोटे कर्मोंमें रत और अपनेकार्यकों करणेवाले और पापकर्के युक्त और लडाई करणेवाले और अपनें संवंधियों कर्के हीन और क्रूर शठ और प्रायेधनवाले और कृतघ्न और मलीन होताहे ॥ १० ॥ अव रश्मियोंके फल कहतेहैं ताजकशास्त्रके जानने वाले जो मणित्थहे तिनके शास्त्रमें रश्मिफलमु

योग्रहोनिर्जितारातिः सकरोतिसुखंजयं प्रस्फुरन्मंडलोराज्यमारोग्यंदृग्वलान्वितः ॥ ८ ॥ आचारसत्यसुखशौचरताःसुरूपास्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः सद्वस्त्रमाल्यमणिभूषणसंप्रियाश्चसौम्यग्रहैर्वेलयुतैःपुरुषाभवंति ९ ॥ लुब्धाःकुकर्मनिरतानिजकार्यनिष्ठाःपापान्विताःसुकलहाःस्वजनैर्वियुक्ताः क्रूराःशठाः परधनामलिनाः कृतघ्नाः पापग्रहैर्वेलयुतैः पुरुषाभवंति १० अथरश्मिफलम् रश्मिप्रधानमेतद्यस्माच्छास्त्रंवदंतिमणित्थाः ॥ तस्मात्प्रयत्नतोहंकथयामियथामतंतेषाम् ॥ ११ ॥ स्वोच्चस्थेदशसूर्येनवचंद्रेपंचभूमिपुत्रेच ॥ पंचेंदुजेतथेज्येसप्ताष्टौभार्गवेशनेःपंच ॥ १२ ॥ एवंहिमहाशास्त्रेमणित्थमयवादरायणप्रोक्ते ॥ सप्तप्रत्येकस्थानिर्दिष्टारश्मयोग्रहेंद्राणाम् ॥ १३ ॥ सर्वप्रमाणमेतेमुनिवचनात्किंतुसप्तसंख्यैव ॥ वहुमतवादोस्माकंनीचगतःस्याद्विगतरश्मिः ॥ १४ ॥ अभिमुखराशिर्नीचाद्भ्रष्टःस्वोच्चात्पराङ्मुखोज्ञेयः अंतरगतेनुपातोयथातथासंप्रवक्ष्यामि ॥ १५॥

रुप कहाहे तिसकारणसें तिनके शास्त्रसें यत्नसें निकालकर्के जैसें तिनका मतहे तैसें मे कहताहं ॥ ११ ॥ अपने उच्चमें सूर्यकिय दश रश्मि और चंद्रमाकिया नव ॥ ९ ॥ और मंगलकिया पाच ५ और वुधकियां वी पाच ॥ ५ ॥ और तैसेंहि वृहस्पति किया सात ॥ ७ और शुक्रकियाआठ ॥ ८ ॥ और शनिकियापांच ॥ ५ ॥ १२ ॥ इसप्रकार कर्के वडेशास्रो में मणित्थ और मयासुर और वादरायण कहतेहैं ॥ और प्रत्येकग्रहाकिर्णासात ॥ ७ ॥ रश्मियाहोतीहै ॥ १३ ॥ और संपूर्ण मुनियों के मत मेंवीसातहिकहियाहै और जोग्रहनीचमें स्थितहोताहे सोरश्मियोंकर्केहीनहोताहे ॥ १४ ॥ जो ग्रह नीचसें और उच्चसें भ्रष्ट होताहे अर्थात् नीचमें और उच्चमें नाहिं है और अतरगतराशियों में स्थित है तिसकियां रश्मिया स्पष्ट करणेमें जो अनुपात त्रैराशिक है सो में कहता हं ॥ १५ ॥

अब रश्मियास्पष्टकरते हैं ॥ राश्यादि स्पष्टग्रहकों अपने नीच कर्के हीनकरे शेष छैराशिसें अधिकरहे तब चक्रमें वारा १२ राशिमें शुद्धकरे फेर तिसकों अपनीरश्मियोंसेगुणे पूर्व कहियाजो मध्यम राशियातिनसें गुणें उौर छै ६ का भाग लेवे यो लब्धहोवे सो ग्रहकिया स्पष्टरश्मिया होतीहैं ॥ १६ उौर सो ग्रह मित्रके द्वादशांशमें अथ वा अपने द्वादशांशमें अथवा अपने उच्चमें होवे तब रश्मियोंकों द्विगुण करे उौर स्वक्षेत्रमें वी द्विगुणकरे ॥ १७ ॥ उौर शत्रुके द्वादशांशमें उौर अपने नीचमें ग्रहहोवे तब रश्मियोंकों षोडशांश कर्के ॥ १६ ॥ रहित करे उौर शनि उौर शुक्रके विना यो ग्रह अस्त होवे सो रश्मिहीन होताहे तिसग्रहकिया शून्य ० राश्मिधरे ॥ १८ ॥ उौर वक्रके मध्यमें द्विगुण उौर वक्रके त्यागमें अष्टमांशहीन रश्मिया करे इस प्रकाररश्मियोंका विधान पूर्वाचार्योंनें दिखाया है ॥ १९ जिसके जन्मकालमें एकसेंलेकर्के पाच पर्यंत रश्मिया होवें सो दुःखी कुलककें हीन उौर दूसरे कों तर्ककरणेवाला उौर दरिद्री नीचकर्ममें रत होताहे ॥ २० ॥ उौर जिनके जन्ममें पाचसेंले

नीचविहीनश्चक्रात्पतित.पड्भवनतोयदाभ्यधिकः आत्मीयरश्मिगुणित.पड्भक्तो रश्मयस्तस्मात् ॥ १६ ॥ मित्रद्वादशभागेस्वेवास्वोच्चेथवातस्य ॥ द्विगुणाः स्युर्दीधितयःस्वराशिगेतद्भवत्येवम् ॥ १७ ॥ वैरिद्वादशभागेनीचेभवं निषोडशांशोनाः अस्तंगतोविरश्मि शनिसितवर्ज्योग्रहोज्ञेयः ॥ १८ ॥ वक्रांतस्थेद्विगुणावक्रत्यागेष्टभागहीनाश्च एवंरश्मिविधानंपूर्वाचार्यैः समुद्दिष्टम् ॥ १९ ॥ एकादिपंचयावद्रश्मिभिरतिदुःखिता.कुलविहीनाः ॥ परतर्ककादरिद्रानीचरता.सभवतिनराः ॥ २० ॥ परतोदशकंयावत्सूर्यादीनांविदेशगमनरता. ॥ जायंतेत्रमनुष्या.सौभाग्यपरिच्युतामलिना. ॥ २१ ऊर्ध्वंपंचदशातेर्यावतोवहुजनाःसुजनाः धर्माभिरता.सुसुखा.कुलस्यतुल्या.प्रजायंते २२ आविंशतर्भवेयु कुलाधिकाधनयुताजना स्याताः कीर्तिकराश्च मनुष्यायथाक्रमंस्वजनसंपूज्याः २३ पूज्याःसुभगा क्रतिनोधीरा स्यु शरकृतियावत् परतोभवतिमनुजा ससाधितसकलकरणीया· २४ ॥

कर दशपर्यंत रश्मिया होवें सो विदेशवासकरणेमे रत होतेहे उौर सौभाग्यसें रहित उौर मलिन होतेहें ॥ २१ और जिसके जन्मसमयमे दश १० सें अधिक और पचदश १५ यावत् रश्मिया ग्रहोंकिया होतीहे सो प्रासिकर्के युक्त और वहुत मवधियोंवाले और धर्ममेरत और श्रेष्टसुखवाले और अपने कुलके तुल्य जन्मतेहे २२ और जिसके जन्मसमयमे पद्रा १५ सें लेकर वीसपर्यंत रश्मिया होतीहे सो मनुष्य अपने कुलसें अधिक और धनकर्के युक्त और प्रसिद्ध होतेहे और यशके करणे वाले और सर्वधियोंकर्के मानेहुये होतेहे २३ और जिसके जन्मसमयमे वीससें २० अधिक और पचीसके भीतर रश्मिया होवें सो पूज्य और श्रेष्ट भाग्यों वाले और यज्ञकरणेवाले और पडित होतेहे और पचीस २५ के उपरत और वीसपर्यंत जिसके जन्मसमयमे रश्मिया होवें सो मनुष्य सपूर्ण कार्यसिद्धकरणेवाले होतेहे २४

श्रोर राजाश्रित श्रोर राजासे सुखकोप्राप्तहोतेहे ॥ श्रोर राजाके मन्त्री श्रोर सपूर्णो कर्के-पूज्यहोतेहै ॥ २५ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें एकत्री ॥ ३१ ॥ रश्मिया होवें सो श्रेष्ट-प्रसिद्ध श्रोर राजयोंके इष्ट होतेहे श्रोर जिसके जन्मसमयमें वत्री ३२ रश्मियां हो-वे सो पाचसौ ५०० ग्रामकास्वामी होताहै ॥ २६ ॥ श्रोर जिसके जन्ममें तेत्री ३३ रश्मियाहोवें सो एकहजार १००० ग्रामका स्वामी होताहे श्रोर जिसके जन्मसमयमें चौत्री ३४ रश्मिया होवें सो तीनहजार ३००० ग्रामकास्वामी होताहै २७ श्रोर जिसके जन्मकालमें पेत्री ३५ रश्मिया होवें सो मडलेश होताहै श्रोर वडेखजाने वाला श्रोर वडे पराक्रम वाला होता है श्रोर वडेयश श्रोर सोभाग्यकेकरण वाला लोकोकोहोताहे २८ श्रोर जिसके जन्ममें छित्री

श्रनउत्तरणचंडान्नृपाश्रितान्नृपतिलब्धसौख्याश्च त्रिंशद्यावत्साचिवा.पूज्याश्चवं जंतूनाम् २५ एकत्रिंशत्सस्थे प्रवरा स्यातामहीभुजामिष्टाः द्वात्रिंशद्भि पुरुषाः पचशतग्रामपतय स्यु· २६ ग्रामसहस्राधिपतित्रिशत्र्याधिक.करोतिरश्मीनां त्रिसहस्रग्रामाणांपुरुपसूतौचतुस्त्रिशत् २७ परतोमडलभाजोवहुकोशसमान्वि तामहासत्त्वाः प्रख्यातकीर्त्तियशमाभवतिसुभगाश्चलोकानाम् २८ त्रिंशत्पड्भिः सहितारश्मीनांयस्यजन्मसमयेस्यात् सार्धभुनक्तिलक्षग्रामाणांसपुमान्नियतम् २९ त्रिशत्सप्तकसहितारश्मीनांसभवेभवेयेपाम् लक्षत्रितयप्रभुत्वंग्रामाणां जायतेतेपाम् ३० त्रिशद्वसुभिःसहितागावोयेपांभवतिपुरुपाणाम् मुनिस मितलक्षाणांग्रामाणांतेधिपास्त्रिया· ३१ त्रिशत्सनवागावोजन्मनियेपांग्रहो त्थिताःपुंसां सतोपितसकलजनाभवतिपृथ्वीश्वरा पुरुपाः ३२ दशजलधि गुणायारश्मिसख्यानराणांदिशतिपृथुलभूमे.पालकत्वचतेपां हतरिपुवनिता भिर्गीयतेतीवकीर्त्ति करुणारुदितशब्दैरुध्यताक्रांतसारम् ३३

३६ रश्मिया होवें सो मनुष्य डेढलक्ष १५०००० ग्रामका स्वामी होताहे २९ श्रोर जिस के जन्मसमयमें सतत्री ३७ रश्मिया होवे सो तीनलक्ष ३००००० ग्रामोंका पति होताहै ३० श्रोर जिसके जन्मसमयमे श्रठत्री ३८ रश्मिया होवें सो सातलक्ष ७०००००० ग्रामोंका स्वामी होताहै ३१ श्रोर जिनोंके जन्मसमयमें उनताली ३९ रश्मिया ग्रहोंकिया होवें सो संपूर्णजनोंको प्रसन्न करणे वाले पृथ्वीके राजाहोतेहें ३२ श्रोर जिनमनुष्योंके जन्मसमयमें चाली ४० रश्मि या ग्रहोंकिया होवें तिनकों सारीपृथ्वीका राज्य प्राप्तहोताहै श्रोर हतकिये यो शत्रु तिनाकियां स्त्रीयों नेंगायन कीयायश जिनका श्रोर शत्रुओं किया स्त्रीयोंके रोणेकरके भरेगएहै पर्वतों केविवर जिनसें ॥ ३९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें दकताली ४१ रश्मियांहोवे सो दो समुद्र पर्यंत पृथ्वीका राजकर्ताहै और जिसके जन्ममें चिताली ॥ ४२ ॥ रश्मियां होवें सो तीन समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा होताहै ॥ ३४ ॥ और तैसेंहि त्रिताली ॥ ४३ ॥ रश्मियोंका फल कहाहै और जिसके जन्मसमयमें चुताली ॥ ४४ ॥ रश्मियां होवें सो सारी पृथ्वीका राजाहोताहै और सौम्यमूर्ति और देवता और ब्राह्मणोंकिभक्ति वाला होताहै और बडी आयुषा वाला और पराक्रमी होताहै ॥ ३५ ॥ और चुरताली-रश्मियोंसें अधिक अधिक एक जिसके जन्मकालमें होवें सो शत्रुवोंसें रहित दीपांतरों काराजा होताहै और संपूर्ण करके पूज्य इंद्रके तुल्य प्रतापी होताहै ॥ ३६ ॥ और पंजताली ॥ ४५॥ सें अधिक अठताली पर्यंत जिसके जन्ममें रश्मियां होवें तिसकों मृत्युका ग्रिह जानना अथवा कदाचित

शशिजलनिधिसंख्यैरश्मिभिःसूयतेयोद्विजलधिरसनायाःपार्थिवःस्यात्सभूःमेत्रिजलधिरसनायाःपक्षवेदाख्यसंख्यैस्त्रिजलधिरसनायारामवेदैस्तथैव ३४ वेदाब्धितुल्यैश्चमयूखजालैर्जातानरेन्द्राःखलुसर्वभूमेः ॥ सौम्याःसुरब्राह्मणभक्तिशीलादीर्घायुषःसत्वयुताभवंति ३५ परतःपरतःकिरणैर्द्वीपांतरपालकानिरुपसर्गाःसर्वनमस्याःसुभगामहेंद्रतुल्यप्रतापाश्च ३६ चत्वारिंशद्युक्तःपंचादिभिरत्रयस्यसूतौस्यात् ॥ ज्ञेयंतस्यारिष्टंसर्वक्षितिपालकत्वंवा ३७ भुवनभरसहिष्णोःसर्वतःक्षीणशत्रोस्त्रिदशपतिमहिम्नःसर्वलोकैस्तुनम्यःविदधतिविहगानांरश्मयोतीवदीप्तास्तुरंगकृतिसमानाश्चक्रवर्तित्वमेव ३८ अभिमुखकरप्रवाहःफलप्रयच्छंतिपुष्टतरमत्र तद्विपरीतंपुंसांपराङ्मुखस्थग्रहेंद्राणाम् ३९ जन्मसमयेग्रहेभ्योरश्मीनांसंक्षयोभवति ॥ दृष्टोवृद्धिर्न्दृणांपरमोच्चगताःक्रमेणैव ४०

चित तब सारी पृथ्वीका राज्यकर्ताहै॥ ३७ ॥ और जिसके जन्ममें उनुंजा ॥ ४६ ॥ रश्मियां होवें सो अवतार होताहै भुवनके भारकों सहारणे वाला और शत्रुओंसे रहित और इंद्रकीन्याई संपूर्ण लोकों करके पूजित चक्रवर्ती होताहै ॥ ३८ ॥ और यो ग्रह सन्मुखदेखनेमें आवे तिसके यो रश्मियां पुष्टफलकों देताहै और यो ग्रह पराङ्मुख स्थानकों प्राप्त होवे तिसकोभी रश्मियां विपरीत उलटा फल खोटा करताहै ॥ ३९ ॥ और जन्मसमयमें ग्रहों किया रश्मियोंका क्षय होवे देखनेमें नहिं होवें तब क्षयहोताहै और रश्मियोंकी वृद्धिहोवे तब जिनों मनुष्यों की वृद्धिहोवेहै और परम उच्चमें स्थित ग्रह इसिक्रमसें वृद्धिकर्ताहै ॥ ४० ॥

इतिरश्मिफलम् ॥ अब ग्रहोंकी अवस्थाका फल कहतेहै सारावलीसें दीप्त १ स्वस्थ २ मुदित ३ शांत ४ शक्त ५ प्रपीडित ६ दीन ७ विकल ८ खल ९ इहे नवप्रकारकी अवस्थाकहियाहे १ यो ग्रह अपने उच्चमें स्थितहोताहै सो दीप्त कहाहे और अपने क्षेत्रमें स्वस्थ और मित्रके क्षेत्रमें मुदित और शुभग्रहके वर्गमें शांत और प्रकट रश्मियों वाला शक्त और सूर्य करके लुप्त विकल और पापग्रहोंकरके युक्त पीडित होताहै औरनीचराशिमें स्थित दीन होताहै अब अवस्थोंका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें दीप्तावस्थामें ग्रह होताहै सो अपनी दशामें पुरुष को प्रतापी और प्रतापके अग्निमें शत्रुओंके समूहको दग्धकर्ताहै और लक्ष्मीकरके युक्त और हाथियोंके

॥ इतिग्रहाणांरश्मिफलानि ॥ अथदीप्तादिफलान्युच्यंते ॥ सारावल्यां ॥ दीप्तःस्वस्थोमुदितःशांतःशक्तःप्रपीडितोदीनः ॥ विकलःखलश्चकथितोनवप्रकारोग्रहोहरिणा १ स्वोच्चेभवतिचदीप्तःस्वस्थःस्वगृहेसुहृद्गृहेमुदितः ॥ शांतःशुभवर्गस्थःशक्तःस्फुटकिरणजालश्च २ विकलोरविलुप्तकरोग्रहाभिभूतःप्रपीडितश्चापि ॥ पापगणस्थश्चखलोनीचोदीनःसमाख्यातः ३ स्वोच्चेविचरतिपुरुषःप्रतापमहदाग्निदग्धरिपुनिचयः ॥ लक्ष्म्यालिंगितदेहोगजमदसंसिक्तभूपृष्ठः ॥ ४ ॥ स्वस्थःकरोतिजन्मनिसुखेननरंसरत्नपरिवारम् नृपतेर्दंडपतित्वंगृहधान्यकुटुंबपरिवृद्धिम् ॥ ५ ॥ उदयास्तश्चेज्जातःसूर्य्याद्दक्षिणवामगोग्रहःकश्चित् ॥ पापंप्रथयतिफलंदक्षिणगश्चोत्तरेशुभदः ॥ ६ ॥ मुदितोविलसतिमुदितोविलासिनीकनकरत्नपरिपूर्णः ॥ विजितसकलारिपक्षःसमस्तसुखभाजनःपुरुषः ॥ ७ ॥ शांतेप्रशांतचेताःसुखधनभागीमहीपतेःसचिवः विद्वान्परोपकारीधर्मपरोजायतेसुभगः ॥ ८ ॥

मदसें सो पृथ्वीको सिंचन कर्ताहै ४ और स्वस्थावस्थामेंस्थित ग्रह मनुष्यको सुखकर्के और रत्नोंकर्के और परिवारकर्के युक्तकर्ताहै और राजासें दंडके अधिकारको प्राप्तकर्ताहै और गृह और धान्य और कुटुंबकीवृद्धिको देताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें कोईग्रह उदयअथवा अस्त होवे सो सूर्यके दक्षिणमें पापफल कर्ताहै और उत्तरमें शुभफलदेताहै ६ और मुदितावस्थामें ग्रह वेश्याका और स्वर्णका और रत्नोंका सुखकर्ताहै और संपूर्णशत्रुओं को जीतकर्के संपूर्णसुखको भोगताहै ७ और शांतावस्थामें ग्रह शांतचित्त और सुख धन कर्के युक्त राजाका मंत्री कर्ताहै और विद्यावान् और परोपकार करणेवाला और धर्ममें तत्पर और श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै ८

श्रोर सक्तावस्थामें ग्रह स्त्री श्रोर गंधमाल्यपुष्प मालाकर्केविलासकों प्राप्त कर्ताहै श्रोर वडे यशवाला श्रोर संपूर्णोंका प्यारा होताहै ९ श्रोर पीडितावस्थामें स्थितयो ग्रहहै सो दुःखोंकर्के श्रोर व्याधियोंकर्केपी डित कर्ताहै श्रोर पुरुष देशसें देशांतरकों विचरताहै श्रोरशक्तिकर्के श्रोर प्रसिद्धताकर्केरहित होताहै १० श्रोर जिसके जन्ममें दीनावस्थामें स्थित ग्रह होवे सोराजावी श्रपने बहुत साधनोंवाला शत्रुश्रोंकर्के सेनाके नाशकों प्राप्त होताहै श्रोर परमदीनताकर्के तप्ताहै ११ श्रोर जिसके जन्मसमयमें विकलावस्थाकों ग्रह प्राप्त होताहै सो श्रपनी दशामें स्थानसेंभ्रष्ट श्रोर मलीन श्रोर परदेशमें गमनकरणे वाला श्रोर धनके नाशकों प्राप्त श्रोर शत्रुश्रोंके भयकर्के चकतचित्तवाला होताहै १२ श्रोर जिसके जन्मसमयमें खलश्र

स्त्रीस्रग्गंधमाल्यैर्विलसतिपुरुषःसदावितत्तकीर्तिः ॥ दयितःसर्वजनस्यच शक्ता स्येभवतिविख्यातः ॥ ९ ॥ दुःखैर्व्याधिभिरारिभिःप्रपीडितेपीडितःपुरुषः ॥ देशाद्देशंविचरतिशक्त्यारहितोगतख्यातिः १० बहुसाधनोपिराजाप्रध्वस्तव लप्रपीडितोरिपुणा ॥ नाशमुपयातिविजितेदीनेदैन्यंपरंप्राप्तः ॥११ ॥ स्वस्थान परिभ्रष्टोमलिनश्चासौप्रयातिपरदेशं ॥ विध्वस्तधनोविकलोरिपुभयसंचाकित चित्तश्च ॥ १२ ॥ स्त्रीहरणदुःखतप्तःसमस्तधनवान्पीडितमनस्कः ॥ नजहा तिशोकभारंकथमपिखलसंज्ञिकेपुरुषः १३ इतिग्रहाणांदीप्तादिश्रवस्थाफलानि श्रथग्रहाणामंतश्चर्यालक्षणम् ॥ श्रात्मारविःशीतकरश्चचेतःसत्वंधराजःशशि जश्चवाणी ॥ ज्ञानंसुखंचेंद्रगुरुर्मदश्चशुक्रःशनिःकालनरस्यदुःखम् १ श्रत्रचफ लघटनाविचारोयथा ॥ श्रात्मादयोगगनगैर्बलिभिर्बलवत्तराः ॥ दुर्बलैर्दुर्बलास्ते तुविपरीतंशनेःस्मृतम् २

वस्थामें ग्रह स्थितहोवे सो श्रपनीदशामें स्त्रीहरणके दुःखकर्के तप्त श्रोर संपूर्ण धनकर्केयुक्तभी पीडित मन होताहै श्रोर कदाचित् शोककेभारकोंनहिं त्यागसक्ताहै १३ इतिदीप्तादिश्रवस्थाफलानि श्रवग्रहोंकी श्रंतश्चर्याका लक्षण कहतेहैं कालनरयोहै मनुष्य जिसका श्रात्मा सूर्यकहाहै श्रोर चंद्र मा मनकहाहै श्रोर सत्वप राक्रम मंगल कहाहै श्रोर वाणी बुधकहाहै श्रोर ज्ञानसुख बृहस्पति कहा है श्रोर मदवीर्य शुक्रकहाहै श्रोर दुःख शनैश्चर कहाहै १ श्रव इसमें फलका विचार श्रयसें कहा है श्रात्मासेंलेकर्के जोग्रह कहेहै सो वलीहोवें तव श्रात्मादि संपूर्ण वलवान् होतेहैं श्रोर निर्वलहो वे तो दुर्वलहोवेहैं श्रोर शनिका विपरीत फल कहाहै निर्वलहोना शुभ होताहै २

अब ग्रहोंकोवाह्यचर्याका लक्षणकहतेहैं सूर्यचन्द्रमा राजाहैं और बुधकुमार नववर्षकेबालककीन्याईहै और मंगल सेनापतिहै और शुक्रबृहस्पति वजीरहै और शनैश्चर चाकरहै इहे ग्रह जन्मसमयमें बलवान् होवें तब अपने स्वरूपकों तिसके देहमें प्रकट करतेहै इहां पूर्वोक्त प्रकार करकें बलवत्वताजाननी ७ इतिश्रीजातकखंडेग्रहाणांषड्बलादि फलनिरूपणाध्यायः अष्टमः ॥ ८ ॥ अबरिष्टाध्यायकहतेहै आयुपाकेज्ञानबिनासंपूर्णजन्मपत्रकाफलनिष्फलहै तिसकारणसें आयुपाके जानने वास्ते प्रथम रिष्टाध्यायकहताहै ॥ १ ॥ और जातकपारिजातमें विशेषकहनाहै कलियुगमें योनिजन्मायोमनुष्य तिनका आयु बा

श्रथग्रहाणांबाह्यचर्यालक्षणम् ॥ राजारवि शशधरश्चबुधःकुमारःसेनापतिःक्षितिसुतःसचिवौसितेज्यौ ॥ भृत्यस्तथाचरविजःसबलानराणांकुर्वंतिजन्मसमयेनिजमेवरूपम् ३ अत्रचोक्तप्रकारेणबलवत्त्वंज्ञेयम् ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबन्धे जातकखंडेग्रहाणांषड्बलादिरश्मिफलनिरूपणाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥ अथारिष्टाध्यायः ॥ आयुर्ज्ञानाभावेसर्वंविफलंप्रकीर्तितंयस्मात् ॥ तस्मात्तद्ज्ञानार्थमरिष्टाध्यायंप्रवक्ष्यामि १ जातकपारिजातेविशेषः आद्वादशाब्दांतरयोनिजन्मनामायुःकलौनिश्चयितुंनशक्यते ॥ मात्राचपित्राकृतपापकर्मणाबालग्रहैर्नाशमुपैतिबालकः २ आद्येचतुष्केजननीकृताघैर्मध्येतुपित्रार्जितपापसंघैः बालस्तदंत्यासुचतुःशरत्सुस्वकीयदोषैःसमुपैतिनाशम् ३ सारावल्याम् त्रिविधमिह शास्त्रकारानियतमनियतंचयोगजमाहुः ॥ योगसमुत्थतावद्वक्ष्येपश्चात्तुपरिशेषं ॥ ४ ॥

वर्षके अंदर नहिंजानाजाताहै इनमें हेतुकहतेहै माता और पिताके पापकर्मोकरकें और पूतनादि बालग्रहोंके पीडाकरकें बीमृत्युकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ प्रथमके चारवर्षमें माताके पापोंसें और चारसें आगे आठवर्ष पर्यंत पिताके पापोंसे और आठमें लेकर बारवर्ष पर्यंत पूतनादि बालग्रहोंके पीडासें बालक अपनेदोषसें नाशकों प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ और सारावलीमें कहतेहै तीनप्रकारका आयुर्शास्त्रकारकहतेहै एक नियतएक अनियत और एक योगज इनमें सें प्रथम रिष्टज्ञानके वास्ते योगज कहतेहै और पीछेसें नियत और अनियकहेंगे ॥ ४ ॥

और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें वृहस्पति मेषवृश्चिकराशिमें अष्टमस्थानमे स्थितहोवे और सूर्य चंद्रमामगलशनिकीदृष्टिकर्केयुक्तहोवेऔरशुक्रकीदृष्टिकर्केरहितहोवेतवतीनवर्षकर्केमारदेताहै ५ औरजिसकेजन्ममें वक्रीहोकर शनि मेष वृश्चिकराशिमें स्थितहोवे अष्टम वाछठे वाकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० मेंस्थितहोवे और वलवान्मंगल कर्केदेख्याहोवे तव दोवर्षमें मारताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्रमा कर्के युक्त शनि होवे तव सोवालकवर्ष पर्यंतजीताहै अयसें ब्रह्मशर्मादि आचार्यकहतेहैं ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अष्टम और छठेस्थानमें मगल सूर्य शनि एकत्र मिलकेस्थितहोवें सो वालक यम कर्के रक्षा कराहु वावी एक महीने कर्के मरताहै ॥ ८ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंएकपापीग्रहलग्नसेंअष्टमवाछेठस्थानमेंस्थितपापग्रहकर्के देख्याहोवेसोनिश्चयकर्केजिसनेंअमृतपानबीकीयाहोवेएकवर्षकेअंदर तिसकोंमारदेताहै ९ औरजिसकेजन्ममेंमासिंहकर्कराशिकाशुक्रवार

वृहस्पतिर्भौमगृहेष्टमस्थःसूर्येंदुभौमार्कजदृष्टियुक्तः अब्दैस्त्रिभिर्भार्गवदृष्टिहीनोलोकांतरंप्रापयतिप्रजातम् ॥ ५ ॥ वक्रीशनिर्भौमगृहेप्रपन्नाच्छिद्रेथषष्ठेथचतुष्टयेवा कुजेनसंप्राप्तबलेनदृष्टोवर्षद्वयंजवियातिप्रजातम् ॥ ६ ॥ भास्करहिमकरसहितःशनैश्चरोमृत्युदः प्रसवकाले वर्षंजीवतिजातस्त्वित्याहुर्ब्रह्मशर्माद्याः ॥ ७ ॥ भौमदिवाकरसौराःछिद्रेजातस्ययस्यशत्रुगृहे म्रियतेवश्यंसनरोयमकृतरक्षोपिमासेन ॥ ८ एकःपापोष्टमगःशत्रुगृहेपापवीक्षितोलग्नात् मारयतिनरंप्रजातंसुधारसोयेनपीतोपि ॥ ९ ॥ रविशशिभवनेशुक्रोद्वादशरिपुगोऽशुभैःसर्वैः दृष्टःकरोतिषड्भिर्वर्षैर्मरणंकिमत्रचित्रंहि ॥ १० ॥ कर्कटधामनिसौम्यःषष्ठाष्टमसंस्थितोविलग्नर्क्षात् चंद्रेणदृष्टमूर्त्तिर्वर्षचतुष्केणमारयति ॥ ११ ॥ तीव्रफलराजयोगायवनाद्यैर्येविनिर्मितास्तेषु जायंतेखलकुलजारिष्टंतेपुप्रसूतानाम् ॥ १२ केतुर्यस्मिन्नृक्षेभ्युदितःतस्मिन्प्रसूयतेयोहि मासद्वयेनमरणंनिर्देश्यतस्यजातस्य ॥ १३ ॥ गगनस्थोदिवसकरःपापैर्बहुभिर्निरीक्षितःसद्यः मारयतिभौमधामनिशनिर्भेचनसंशयोभवति १४ ॥

मेंछठे स्थानमें स्थितहोवे औरपापग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव छै वर्षकर्के मृत्युकर्ताहै इसमे कोई आश्चर्यनहींहै ॥ १० ॥ और कहतेहै कर्क राशिमे वुध जन्मलग्नसें छठे और अष्टम स्थानमें स्थितहोवे और चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तव चारवर्षमें मारताहे ॥ ११ ॥ और कहतेहैं वडे तीव्रफल करसे वाले जोराज योग यवनादि आचार्योंने कहेहै तिनराजयोगोंमें नीचकुलमें यो जन्मतेहैं तिनकों रिष्टहो ताहै ॥ १२ ॥ और कहतेहैं जिसनक्षत्रमें धूम्रकेतुउदयहोवे तिसनक्षत्रमें यो जन्माहै तिसकों निश्चयकर्के दोमहीने कर्केमृत्युकहे १३ और जिसके जन्मकालमें मेष वृश्चिक मकरकुंभ राशिकासूर्य दशमस्थानमें स्थितहोवे और वहुत पाप ग्रहों कर्के देख्या होवे सो तात्काल मृत्युकों प्राप्तकर्ताहै ॥ १४ ॥

और कहतेहै जन्मलग्नमें निगडसर्प पाश विहंग इहेकूर द्रेष्काणमें सें कोई द्रेष्काणहोवे और कूर कर्के युक्त और स्वामी दृष्टिसें रहितहोवे तव सातवर्षमें मृत्यु होताहै ॥ १५ ॥ मीनकर्कटराशि के अत्यके द्रेष्काण और वृश्चिकके आद और मध्यके इहेचारसर्पनिगडसज्ञाहे और वृषका आद और मकरके आद और अत्यमें और तुलाके मध्य और अंत्यका और सिंह कुभ के आदके इहेसातद्रेष्काण पाशधर पक्षिसज्ञाहे ॥ १६ ॥ और कहते है जिसके जन्मसमयमे केंद्र१ । ४ । ७ । १० ।।में राहु पापग्रहों कर्के देख्याहोवे तिसको दशवर्षकर्के और कईक आचार्यसोला वर्षमें मृत्युकहतेहे १६ और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें पापीग्रह सूर्य मगल शनि राहु त्रिकोण ९ ५ और केंद्र १ । ४ ७ १० में स्थितहोवें और शुभग्रह चद्रबुधगुरुशुक्र छठे अष्टम वारमें ६ ८ १२ स्थानमें होवें और सूर्यके उदयमें जन्मे सो तात्कालप्राणोंकों त्यागताहै १७ और कर्क वृष मेष राशिके विना और राशिमें क्षीणचद्रमालग्नमें स्थितहोवे और क्रूरग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव तात्काल मृत्युकर्त्ताहै १८ और

लग्नेयेद्रेष्काणानिगडाहिविहंगपाशधरसंज्ञाः मरणायसप्तवर्षैःक्रूरयुतानस्वपतिदृष्टाः ॥ १५ राहुश्चतुष्टयस्थोमरणायनिरीक्षितोभवतिपापैः वर्षैर्वदतिदशभिःषोडशभिःकेचिदाचार्याः ॥ १६ ॥ पापास्त्रिकोणकेंद्रेसौम्याःषष्ठाष्टमव्ययगताश्च सूर्योदयेप्रसूतःसद्यःप्राणांस्त्यजतिजंतुः ॥ १७ ॥ क्षीणशरीरश्चंद्रोलग्नस्थःक्रूरवीक्षित.कुरुते स्वर्गगमनहिपुंसांकुलीरगोजान्परित्यज्य ॥ १८॥ वर्षान्मारयतिशशीपष्ठाष्टमसंस्थितोविलग्नक्षात् सद्यःक्रूरैर्दृष्ट.सौम्यैरष्टाष्टकेनैव १९ अशुभशुभैःसंदृष्टोवर्षचतुष्केणनिर्दिशेदत्यम् अनुपात. कर्त्तव्यः प्रोक्तादूनग्रहैर्दृष्टे २० सौम्यःषष्ठाष्टमगा.क्रूरैर्वक्रोपसंगतैर्दृष्टा मासेनमरणदास्तेयदिनशुभैस्तत्रसंदृष्टाः २१लग्नात्द्वादशधनगे.क्रूरैर्म्रियतेचरश्चरिपुसस्थैः शुभसपर्कमयातैर्मासेषष्ठेऽष्टमेवापि २२ रंध्राधिपजन्मपतीषष्ठाष्टमरिष्फगौप्रसवकाले अस्तमितौमरणकरौराशिप्रमितैर्वदेद्वर्षैः २३

छठे और अष्टममें स्थित चंद्रमा वर्ष कर्के मृत्युकर्त्ताहै और क्रूरग्रहोंकर्के देख्याहुवा तात्काल मारताहै और शुभग्रहोंकर्के देख्या होवे तव आठवर्षकर्के मृत्युकों प्राप्तकर्त्ताहै १९ और शुभाशुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव चारवर्षमें मारताहै और शुभाशुभदृष्टि अधिक ऊनहोवे तव अनुपात कर्के त्रैराशिककर्के मरणकहे २० और शुभग्रह छठे और अष्टममें स्थित होवे और वक्रीहोयकर्के पापग्रहोंनें देखेहोवे और शुभग्रहोंकर्के नाहिं देखेहोवें तव महीनेकर्के मारतेहैं २१ और जिसके जन्मलग्नसें दूसरे वारमें स्थानमें पापग्रह स्थितहोवे अथवा छठे अष्टमें स्थानमें क्रूरग्रह स्थित होवें और शुभग्रहोंकर्के युक्त नाहिं होवें तव छठे वा आठमें महीनेंमें मृत्यु कर्तेहै २२ और जिसके जन्मकालमें अष्टमेश और लग्नेश दोनों मिलके छठे आठमें वारमें स्थानमें स्थितहोवें और अस्तगत होवें तव जिसराशिमें स्थितहोवें तिसके ...

श्रोरकहतेहैजन्मलग्नकास्वामीसप्तममेंस्थितपापग्रहोंकर्केजीत्याहोवेतवएकमहीनेकर्केमृत्युकर्ताहैश्रोरति सकीन्यांई जन्मराशिका स्वामि अष्टममें स्थितशुभदृष्टिकररहितमहीनेमें मृत्युकर्ताहै २४ श्रोरकहतेहै चंद्रमा मिथुन कन्याराशिका सूर्यमंगलकर्के युक्त श्रोर शुभग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे तववालककों नवम वर्षमें मृत्यु कर्ताहे इसमें संशय नहिंहे श्रोर कहतेहै जिसके जन्मकालमें सूर्य शनि शुक्र तीनों पापग्रहोंकर्के युक्त होवें श्रोर यदवृहस्पतिकर्केवी देखे होवें तववी नवमवर्षमें मृत्यु कर्तेहैं २५ श्रोर कहतेहे लग्नकास्वामी अष्टमस्थानमें स्थितहोवे श्रोर वलवान्संपूर्णपापियों कर्के देख्या होवे तव बालककों निःसंदेह चतुर्थमासमें मृत्यु कर्ताहे २६ श्रोर कहतेहै जन्मलग्नकास्वामी सूर्य होवे श्रोर शनिकर्के युक्त अष्टममें स्थितहोवे श्रोर शुक्रकर्के देख्याहोवे तव अपनीराशिके समानवर्षोंमें मृत्युक

होराधिपतिर्द्यूनेपापजितोमरणमेवविदधाति मासेनजन्मराशेस्तद्वच्छिद्रेनशुभदृष्टा २४ चंद्रःकुजरवियुक्तःस्वसुतस्थानेनचापिशुभदृष्टः मरणंशिशोःप्रयच्छतिवर्षेनवमेनसंदेहः भानुभानुतनयोशनसःस्युश्चेत्प्रसूतिसमयेखलयुक्ताःयद्यपींद्रगुरुणापरिदृष्टारिष्टदास्तनुभृतांनवमेब्दे २५ होरेश्वरस्तुमृत्यौपापैःसकलैश्च दृश्यतेवालिभिः मासिचतुर्थेमरणंजातस्यकरोतिनसंदेहः २६ जन्माधिपतिःसूर्यःस्वपुत्रसहितेष्टमेभवतिराशौ वर्षैराशिप्रतितैर्मरणायासितेनसंदृष्टाः २७ द्यूनचतुरस्त्रसंस्थेपापद्वयमध्यगेशशिनिजातःविलयंप्रयातिनियतंदेवैरपिरक्षितोवालः२८ व्ययाष्टसप्तोदयगेशशांकेपापेनयुक्तेशुभदृष्टिहीने केंद्रेपुसौम्यग्रहवर्जितेपुप्राणैर्वियोगंव्रजतिप्रजातः २९ चक्रस्यपूर्वभागेपापाःसोम्यास्तथोत्तरेचैव वृश्चिकलग्नेजातोगतायुषोवज्रमुष्टियोगेस्मिन् ३० क्षीणेशशिनिविलग्नेपापैः केंद्रेपुमृत्युसंस्थैर्वा भवतिविपत्तिरवश्यंयवनाधिपतेर्मतंचैतत् ३१ राश्यत

र्ताहै २७ श्रोर कहतेहै सातमें ७ चतुरस्त्र ४ ८ स्थानमें दो पापी ग्रहोंके मध्यचंद्रमा स्थित होवे तब देवत्योंकर्के रक्षाकिया निश्चयकर्के चंद्रमाकीराशिके तुल्य वर्षोंमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै ॥ २८ ॥ ऊेर जिसके जन्मलग्नसें वारमे १२ आठमें ८ सातमें ७ लग्नमें १ पापग्रहों कर्के युक्तचंद्रमाहोवे ऊेर शुभग्रहों कीदृष्टि कर्के रहितहोवे ऊेर केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० । शुभग्रहों कर्के रहित होवें तव शीघ्रहिप्राणों कोंत्यागताहै ॥ २९ ॥ ऊेर जिसके जन्मकालमें लग्नसें सप्तमभाव पर्यंत पापग्रह स्थितहोवें ऊेर सप्तमसें लग्नपर्यंत शुभग्रह स्थितहोवें ऊेर वृश्चिक लग्नमें जन्में तव इहेवज्र मुष्टि योगकहाहे इसमे जन्माहुवा आयुषाकर्के रहित होताहै ॥ ३० ॥ ऊेर क्षीणचंद्रमालग्नमें होवे श्रोर पापग्रह केंद्र स्थानोंमें अथवा अष्टममेंहोवें तव यवनाचार्यके मतसें शीघ्र मरताहै ३१

और संध्याकालमें चंद्रमाकी होरामें जन्म और राशिके अंत्यमें पापग्रहहोवें और चंद्रमाकर्के युक्त किसीक केंद्रस्थानमें स्थितहोवे तब शीघ्र मृत्युहोताहै ३२ और पापग्रहोंके मध्यमें चंद्रमा लग्न सप्तम अष्टम स्थानमें स्थितहोवे और वलवान् शुभग्रहोंकर्के नहिं देख्याहोवे तब निश्चयकर्के शीघ्रमृत्युको प्राप्तहोताहै ३३ और जिसके जन्मलग्नसें छठे आठमें स्थानमें क्रूरग्रहस्थितहोवें और पापग्रहोंकर्के देखे होवे तिसको माताके सहित मृत्युको प्राप्तकर्तेहै और शुभग्रहों कर्के देखे होवें तवव्याधि पीडाकरतेहै इहेसत्याचार्यकेमतमेंकहाहै ३४ और कहतेहै ग्रहणसमयमें क्रूरयुक्तचंद्रमा लग्नमे स्थितहोवे और अष्टमस्थानमें मगल होवे तव माताकर्के युक्त मृत्युको प्राप्तहोताहै और ग्रहणकालमे क्रूरयुक्त सूर्यलग्नमें होवे तव माताकर्के युक्तशस्त्र कर्के मृत्यु होताहै ३५ और कहतेहै क्षीण चद्रमालग्नमें स्थितहोवे और केंद्रमें और अष्टममें पापग्रहस्थितहोवें और शुभग्रहों कर्के नहिं देखे हो

गतैःपापैःसंध्यायांतुहिनरश्मिहोरायाम् मृत्युःप्रत्येकस्थैःकेंद्रेषुशशांकपापैश्च ३२ पापद्वयमध्यगतेहोरासप्ताष्टसंस्थितेचंद्रे सौम्यःसबलैरनिरीक्षितेयदातदाजातोध्रुवंम्रियते ३३ द्यूनाष्टमगैःपापैःक्रूरग्रहवीक्षितैःसहजनन्याम्रियते शुभसंदृष्टैःसत्यस्यमाताद्वदेद्व्याधिम् ३४ ग्रहणोपगतेचंद्रेसक्रूरेलग्नगेकुजेष्टमगे मात्रासार्धंम्रियतेचद्रवदर्केसशस्त्रेण ३५ क्षीणशशिनिविलग्नेकंटकनिधनाश्रितैस्तथापापैः सौम्यादृष्टैर्मृत्युःसद्योजातस्यनिर्देश्यः ३६ द्यूनगतेर्केलग्नयमेकुजेवाविपर्ययेवापि अन्यतरयुतेथवेंदौशुभैरदृष्टेऽचिरान्मृत्युः ॥ ३७ ॥ होरानिधनास्तगतैःपापैःक्षीणेव्ययस्थितेचंदो जातस्यभवतिमरणंसद्यःकेंद्रेषु चेन्नशुभाः ३८ लग्नांत्यनवमनैधनसंयुक्ताश्चंद्रसौरीसूर्यारा: जातस्यवधकृतः स्युःसद्योगुरुणानचेद्दृष्टाः ९३ लग्नेचंद्रेर्केवापापावलिनस्त्रिकोणनिधनेषु सौम्यैरयुक्तदृष्टाःसद्योमरणायकीर्तितोयवनैः ४०

वें तवतारकालमृत्युकोंप्राप्त होताहै ३६ और कहतेहै सातमें ७ सूर्यस्थितहोवे और लग्नमें शनिवामंगलहोवे अथवालग्नमें सूर्यसातमे शनिवामगलहोवे अथवा दनों स्थानोंसे और स्थानमे चद्रमा शुभग्रहोंकर्के नहिं देख्याहोवे तव थोडे कालकर्के मृत्युकर्त्ताहै ३७ और कहतेहै लग्नमें द्वादश नवम अष्टम स्थानमें चद्रमा सूर्य शनि मगल इहे चारग्रहास्थित होवें और वृहस्पतिकर्के नदेखेहोवें तव तारकाल मृत्युकर्तेहै ३८ और लग्न अष्टम सप्तमस्थानमे पापीग्रहहोवे और क्षीण चंद्रमाबारमें स्थितहोवे और केंद्रमें शुभग्रहनहोवें तवतारकाल मृत्युको प्राप्त होताहै ३८ और लग्नमें चद्रमावा सूर्यस्थित होवे और पापीग्रह वलीहोयकर्के त्रिकोण ९ । ५ । में और अष्टम में स्थितहोवें और शुभयुक्तशुभदृष्टनहिं होवें तवतारकालमृत्युकर्तेहै ४०

और जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमाकर्के युक्त शुक्रहोवे और वृहस्पति कर्के न देख्याहोवे तिसको नववर्षा ९ कर्के मृत्युकों प्राप्त कर्ताहे इसमे संदेह नहिंहै ४१ और अष्टम ८ सप्तम ७ बारमे १२ लग्न १ मे त्रिकोण ९ । ५ में क्षीणचद्रमा कर्के युक्त वली पापग्रह स्थित होवें तव तिसजातककों आयुषासें हीन कहतेहे ४२ अव अनुक्तकालमें रिष्टयोगकों एकवर्षकेम ध्यमे रिष्टकालकहतेहे जिस रिष्टयोगमें कालका नियम नहिं कहाहे तिसमें योगकरणे वाल्यो ग्रहोंके मध्यमें यो वलीग्रहहै तिसके स्थानमें राशिमें जव चंद्रमा आवे तव मृत्युकर्त्ताहे अथवा-चंद्रमा जन्मकालमें जिसराशिकाहे तिसमें फेर चारवशकर्के आवे तव मृत्यु कर्ताहे अथवा जव तिनकों वउवान्पापग्रह देखे तवमृत्युकर्ताहे ४३ और जिसकेजन्मकालमें सूर्य चंद्रभौमगुरुवा भौम सूर्य चंद्रमाशुक्रवासूर्य शनि भौम चद्रमा एकत्रस्थित होवें तव पाच ५ वर्षकर्केमृत्युकर्तेहे ४४ और

शुक्रोरविशशिसहितोमारयतिनरंसदाप्रसवकाले ॥ दृष्टोनदेवगुरुणानवभिर्वर्षैर्नसंदेहः ४१ निधनास्तव्ययलग्नत्रिकोणगाःक्षीणचंद्रसंयुक्ताः ॥ पापावलिनःशुभदैरदृश्यमानागतायुषंप्राहुः ४२ योगेवलिनःस्थानंस्वंवालग्नंगतेपिवाचद्रे ॥ वलवतिवाशुभदृष्टेह्यावर्षान्मृत्युकालःस्यात् ४३ रविचंद्रभौमगुरुभिःकुजभृगुसूर्येन्दुभिस्तथैकस्थैः रविशनिभौमशशांकैर्मरणंखलु पंचभिर्वर्षैः ४४ राशिप्रमितैर्वर्षैर्मारयतिविलग्नपोरिपुस्थाने मासैर्द्रेष्काणपतिर्दिवसैरंशाधिपोहंति ४५ मारयतिषोडशाहाच्छनैश्वरःपापवीक्षितोलग्ने संयुक्तोमासेनतुवर्षाच्छुद्धस्तुमारयति ४६ रविशशियुक्तःशशिजःसौम्यैर्दृष्टो विनाशयतिनून एकादशभिर्वर्षैःशक्रेज्योपिस्थितेजातम् ४७लग्नेरविसौरकुजैः शत्रुग्रहेसप्तमेशशीक्षीणः दृष्टोनदेवगुरुणासप्तभिरब्दैर्विनाशयति ४८

लग्नकास्वामीछठे स्थानमें जिसराशिमें स्थित होवे तिसके तुल्य वर्षांकर्के मृत्युकर्ताहे और द्रेष्काणका स्वामि छठेस्थानमें जिसराशिमें होवे उतनें महीने कर्के और नवांसकास्वामि उतने दिनोंकर्के मृत्युकर्त्ताहे और पापग्रहोंकर्के देख्या लग्नमे शनि सोलादिनकर्के मारताहे और पापकर्के युक्त लग्नमें शनि महीनें कर्के मारताहे और शनिशुद्ध होवेजिसको शुभाशुभदृष्टियोग रहित होवे तव वर्षमें मारताहे ४६ और जिसके जन्मकालमें सूर्य चद्रमा कर्के युक्त वुध शुभग्रहो कर्के देख्या होवे तव निश्चसे जाहरमें ११ वर्षमे मृत्युकर्त्ताहे जव वृहस्पतिकर्के युक्तवी होवे तव वी मारताहे ४७ और कहतेहे जन्मलग्नमें सूर्य शनि मंगल स्थित होवे और छठे सातमे स्थानमे क्षीणचद्रमा वृहस्पति कर्के देख्यान होवे तव सातवर्षा कर्के मृत्यु कर्त्ताहे ४८

और सूर्यकी रश्मियों करके युक्त चंद्रमाकेंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवे और मंगलऔर-शनिकरके देख्याबा युक्तहोवे तब दोवर्षकरके वालककों मारताहै ४९ और लग्नेश होयकरकेक्षीणचंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थित होवे और क्रूर ग्रहोंकरके देख्याहोवे और शुभग्रहोंकी दृष्टिसेंरहित होवे तब तीन वर्षकरके मारताहै ५० और लग्नकास्वामी पापग्रहहोवे और चंद्रमाके नवांशमें चंद्रमासें बाहरमें १२ स्थानमें स्थितहोवे और क्रूर ग्रहोंकरके देख्याहोवे तवनव ९ वर्षोंकरकेमारताहै ५१ और जिसकेजन्म समयमें चक्रके दृश्यभागमेंशुभग्रह और अदृश्यभागमें पापग्रहः स्थित होवें और लग्नमें राहु स्थितहोवेतब पांचवर्षकरके मृत्युकों प्राप्तहोताहै ५२ और जन्मलग्नसें सातमें ७ स्थानमें राहुसूर्यचंद्रमाकरकेदेख्याहोवे और शुभग्रहोंकरके नाहिं देख्याहोवे तब निश्चयकरके बाहरमें १२ वर्षमें मारताहै ५३

केंद्ररविमुपिततनुक्षितिसुतमंदावलोकितोथयुतः वर्षद्वयेनचंद्रोमारयतिकिम त्वगणितेन ४९ लग्नाधिपतिश्चंद्रोमरणपदस्थोतिकृष्णतांजातः क्रूरैःसकलैर्दृष्टोनशुभैर्वर्षैस्त्रिभिस्तुमारयति ५० लग्नाधिपतिःपापःशशिनोंशेरिष्फगोयदा चंद्रात् क्रूरैर्विलोक्यमानोमारयतिशिशुंनवभिरब्दैः ५१दर्शनभागेसौम्याःक्रूराश्चादृश्यगाःप्रसवकाले राहुर्लग्नोपगतोयमक्षयंनयतिपंचभिर्वर्षैः५२राहुःसप्तमभवनेशशिसूर्यनिरीक्षितोनशुभदृष्टः दशभिर्द्वाभ्यांसहितैरब्दैर्नूनंविनाशयति ५३ घटसिंहवृश्चिकोदयकृतस्थितिर्जीवितंहरतिराहुः पापैर्निरीक्ष्यमाणःसप्तमितैर्निश्चितंवर्षैः ५४ केतोरुदयःपूर्वपश्चादुल्कातिपवननिर्घातः रौद्रेसार्पमुहूर्त्तेप्राणैःसंत्यज्यतेजातः ५५ क्षीणंयदाशशांकंपश्येद्राहुःसमागतःक्रूरैः मारयतितदादिवसैर्निर्व्याजंकतिपयैरेव ५६ तथा मातंगे ८ नवभि ९ श्चरामनयने २३ नेत्राश्वि २२ भिः सायके ५ रेकेनां १ बुधिभि ४ स्त्रिलोचनमिते २३

और कहतेहै कुंभ सिंह वृश्चिक राशिमें राहु स्थितहोवे और पापग्रहोंकरके देख्याहोवे तब निश्चयकरके सातमें ७ वर्षमें मृत्युकर्त्ताहै ५४ और कहतेहै धूम्रकेतुके उदयकालके पूर्व वा पीछे उल्कापात और प्रचंडवायुः और निर्घातशब्द होवे और जिसकालमें रौद्र और सार्प मुहूर्तमें जन्मे तब शीघ्र मरजाताहै ५५ और जब क्षीणचंद्रमाकों क्रूरयुक्त राहुदेखे तब निसंदेह महीनेके अंदर मृत्युकर्त्ताहै ५६ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें कुंभके छवीमें २६ अंशमें और इकीस २१ में अंशमें और सिंहके पांचमें ५ अंशमें और वृषके नवम ९ अंशमें ५७ और वृश्चिकके त्रयोविंशति २३ अंशमें और मेषके अष्टम ८ अंशमें और कर्कटके बाईमें २२ अंशमें और तुलाके चतुर्थ ४ अंशमें और मकरके वीमें २० अंशमें ५८ और कन्याके प्रथम १ अंशमें औरधनके अठारमें १८

अंशमेंऔरमीनकेदशमें १० अंशमें औरमिथुनकेवाईमें २२ अंशमें चंद्रमास्थितहोवेतवमृत्युकर्त्ताहै ५९ कितनेकालमें चंद्रमा मृत्युकर्त्ताहै सो कहतेहैं जन्मसमयमेंजितने अंश चंद्रमाकेभुक्तहोवें उतनेवर्षोंकर्के मृत्युकों प्राप्तकर्त्ताहै जब धर्मराजवी रक्षातिनकोंवाधे तववी मृत्युकों प्राप्तहोतेहे ६० अव प्रसंगसें पितासेंलेकर संवंधियोंकों रिष्टयोगकहतेहै यवनजातकमें पिता सूर्य और माता चंद्रमा और भाई मंगल और मामें वुध और नाना वृहस्पति और मासीयां शुक्र और पुत्र शनिः इहे सूर्यादिग्रह त्रिकोणमें १ ५ स्थितहोवें और पापग्रहकर्के युक्त और दृष्टहोवें तव क्रमकर्के पित्रादि संवंधियोंको हतकतेहै १ और कहतेहैंदिनमें शनि औररात्रिमें सूर्य पितृव्य पिताके भाईकहे तिनकों पापग्रह योग

धृत्या १८ चविंश २० न्मितैः भूनेत्रैः २१ दंशभिर्लवैः १० येदिभवेन्मेपादिसंस्थोविधुर्वर्षैर्भागसमैःकरोतिनिधनंकालोयमत्रोदितः कुंभविंशतिषट्केभागेमृत्युस्तथैकविंशाख्ये सिंहेचपंचमांशेवृपेचनवमेतथैवोक्तः ५७ अलिनित्रिविंशतियुतेमेपतथाष्टमेदिशतिमृत्युं कर्कटकेद्वाविंशेतुलनिचतुर्थेमृगेविंशे ५८ कन्यायांप्रथमेंशेधनुर्धरेष्टादशेझपेदशमे मिथुनेचद्वाविंशेशशीप्रसूतस्यमरणकरः ५९ येभुक्ताःशशिनोंशाजन्मनिवर्षैर्गतिस्तुतावद्भिः मरणंहिजन्मभाजामप्यंतकवद्धरक्षाणाम् ६० अथात्रप्रसंगात्पित्रादीनामरिष्टयोगानाह यवनजातके तातांविकासोदरमातुलाश्चमातामहोमातृस्वसाचसूनुः सूर्यादिखेटाःक्रमशःप्रदिष्टास्त्रिकोणगास्तेपिचतान्निहन्यु १ सौरोन्हिरात्रौतपनःपितृव्यस्तेषान्ययोगात्तुपितृव्यनाशः दिवसेमातापितरौशुक्ररवीशशिशनीनिशायांच मातृभगिनीपितृव्योविपर्ययात्कीर्तितौयवनैः २ पापग्रहयुक्तश्चेत्तदानाशयतिनियमेन पंचस्वरायांविशेपः भ्राताद्दिवाकरोरात्रौदिवसेचशनैश्चरइतिसोमसिद्धांते भौमाद्रंध्रनिधनेचंद्रःपापयुक्तोभवेद्यदि पितृघातपरोक्षेचमाताचाम्रियतेध्रुवम् ३ रंध्रेर्केसप्तमेभौमोनिधनस्थेचसूर्यजे

होनेसें पितृव्यकानाशहोताहै और दिनमें माता पिता शुक्र और सूर्य होतेहे और रात्रिमें चंद्रमा शनि होतेहै और मासी और चाचाइहे विपर्यय कर्के यवनाचार्योंनेंकहेहैं रात्रीमेंशुक्र मासीऔर सूर्य चाचा और दिनमें चंद्रमामासी और शनि चाचा होताहै इहे पापग्रहकर्केयुक्त होवें तव निश्चयकर्के मारतेहे और पंचस्वरामें विशेपकहाहै रात्रिमें सूर्य और दिनमें शनि भ्राताहोताहै और सोमसिद्धांतमें कहतेहै जिसके जन्मसमयमें मंगलसें अष्टमस्थानमें चंद्रमा पापग्रहो कर्के युक्तहोवेसो पिताकों मारताहै और पिताविदेशगत होवें तव निश्चय कर्के माताकों मारताहै ३ और जिसकेजन्मसमयमें अष्टम सूर्य और सप्तममंगल और अथवा अष्टम शनि स्थितहोवें

और यद शुभग्रहों कके नाहि देखेहोवेंतिसके पिताकामृत्युकहे ४ और जबजन्मसमयमे सूर्यसेंसप्तमराशि मे शनिमंगलस्थितहोवेंअथवा शनिमगलकेमध्यमे सूर्यहोवेपिताकेमारणेवालाहोताहै ५ औरजन्मलग्नसें दशमस्थानमेंशनिहोवे तवथोडेकालकरकेपुत्रकोमारताहै अर्थात् जातकआपमर्त्ताहै और सूर्यपिताको औरचद्रमा माता कों हतकर्त्ताहै ६ इसमें क्षीणचंद्रमादशमहोवेंतवमाताकोंहतकर्त्ताहैऔर जिसका दिन मे जन्महोवे और शुक्र पापीग्रहकक युक्त वा देख्या होवे तव तिसकी माता निश्चयकरकें मृत्युके प्राप्त होतीहै ७ और रात्रिमे जन्महोवे और चद्रमा पापीकेघर होवे और यद पाप ग्रहो करकें देख्या होवे तव तिसकी माता मृत्युकों प्राप्तहोतीहै ८ अथवा जिसके जन्मसमयमे क्षीणचंद्रमा को सपूर्णपापी ग्रह देखें और शुभग्रह न देखतेहोवें तव तिसकी माता मृत होतीहै ९ और जन्मलग्नसें वा चद्रमासे चतुर्थ स्थानमें पापीग्रह वडेवलककरकें युक्त स्थितहोवे तव माताकों मृत्यु कर्त्ताहै १० और जिसकेजन्मसः

पितृमृत्युर्वदेत्तस्यशुभैर्नयादिदृश्यते ४ सूर्याच्चसप्तमेराशौशनिभौमौयदास्थितौ तदापितृवधोज्ञेय.स्तयोर्मध्येथवारवि· ५ उदयाद्दशमेमंदोनाशयेदचिरात्सुत पितरभास्करोहन्यान्मातरंहिमदीधितिः ६ अत्रदशमस्थचद्रनिषेध.क्षीणचद्र विषयइति प्रसवेचदिवाभागेशुक्रेवापापसंयुते अथवापापसदृष्टेमाताचम्रियतेध्रु वम् ७ प्रवसेरात्रिसमयेचंद्र पापगृहेस्थितः माताचम्रियतेतस्ययदिपापैः समीक्षितः ८ अथवाक्षीणचंद्रंचपापा पश्यंतिसर्वथा शुभग्रहानपश्यंतिमा ताचम्रियतेतदा ९ निधनारिगतश्चद्रोभौमश्चसप्तमेस्थितः तस्यमातृविना श स्याद्यदिपापै.समन्वित. १० लग्नाच्चतुर्थग पापोयदिस्याद्बलवत्तर· त दामातृवधकुर्याच्चंद्राच्चैवविशेपतः ११ अथारिष्टानियवनजातके ॥ शनि क्षे त्रेगतोभानुर्भानुक्षेत्रेशनैश्चर ॥ द्वादशेवत्सरेमृत्यूरक्षितायदिशंकर· १ भौ मक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेक्षिते सुत द्वादशेवत्सरेमृत्यूरक्षितायदिशकरः २ शुक्रक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेचभार्गव. अष्टादशेभवेन्मृत्यूरक्षितायदिशंकरः ३ भूमिपुत्रेयदाजीवेपष्ठाष्टमतृतीयके अष्टमेदशमेमृत्यूरक्षितायदिशकरः ४

मयमे अष्टम और छठे स्थानमे चंद्रमा स्थित होवे और पापीग्रहो करकें युक्त होवे तव माताको मृत्यु कर्त्ताहै ११ अव यवनजातकसे रिष्टयोगकहतेहे जिसके जन्मसमयमें मकरकुभराशिमे सूर्यस्थितहोवे और सिंहराशिमे शनिहोवे तव जिसका शिव रक्षाकरणेवालेहोवें सो वी वाहरमे १२ वर्षमे मृत्युको प्राप्तहोताहै १ और जिसके जन्ममें मेष वृश्चिकराशिमे गुरु और धन मीनराशिमें मंगल होवे सोवी शिवकरके रक्षाकियाभी वाहरमे १२ वर्षमेंमृत्युहोताहे २ और जिसके जन्मकालमे वृषतुलाराशिका गुरु और धनमीनराशिका शुक्रहोवे सो शिवकरके रक्षितवी अठारमें १८ वर्षमे मृत्युको प्राप्तहोताहै ३ और जिसके जन्ममे मगल और गुरु दोनो छठे आठमे तीसरे स्थानमे होवे तव शिवकरके रक्षतवी आठमे वा वाहरमे १२ वर्षमे मृत्यु होताहे ॥ ४ ॥

श्रीर जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ श्रीर दशम स्थानमें राहु स्थितहोवे श्रीर केंद्रमें १ ४ ७ १० श्रीर छठे आठमें स्थानमें चंद्रमा होवे तब जातकका सोहलमें १६ वर्षमें मृत्युहोताहै इसमें संशय नहिंहै ५ श्रीर जिसके जन्मकालमें राहु छठा श्रीर चंद्रमा अष्टम होवे सो बालक जन्मताहि मि रगी रोगकर्के युक्त होताहै ६ श्रीर जिसके जन्मकालमें बाहरमें १२ आठमें स्थानमें बृहस्पति हो वे श्रीर लग्नमें चंद्रमा होवे सो अपने आपको श्रीर माताको श्रीर पिताको हत कर्ताहै ७ श्रीर जिसके जन्ममें लग्नमें क्रूरराशि स्थितहोवे श्रीर लग्नकास्वामी अस्तहोवे सो भाग्यहीन जन्मताहै श्रीरआठवर्षजीताहै ८ अबश्रीररिष्टकहतेहै पूर्णा ५।१०।१५ श्रीर नंदा १।६।११ तिथियोंके मध्यमें दोघटीतिथिगंडहोतेहै श्रीर कर्क सिंहराशिकेमध्यमें एकघटी श्रीर वृश्चिक धनराशिके मध्यमें एकघडी श्रीर मीन मेषके मध्यमें एकघडी राशिगंड होतेहै १ श्रीर मूला मघा अश्विनी इनके आ

चतुर्थेदशमेराहुःकेंद्रेषष्ठेष्टमेशशी षोडशेब्देभवेन्मृत्युर्जातकस्यनसंशयः ५ ज न्मकालेयदाराहुःषष्ठेष्टमेचचंद्रमाः अपस्मारीभवेद्बाल सद्योजातोनसंशयः ६ रिष्फेऽष्टमेयदाजीवोलग्नेभवतिचंद्रमाः आत्मानमातरंतातंहंतिजातोनसंशयः ७ क्रूरक्षेत्रेयदालग्नेअस्तंयातिचलग्नपे अकर्मणस्तदाजातोह्यष्टवर्षाणिजीवति ८ अथान्यद्रिष्टमप्याह मध्येपूर्णानदयोर्नाडिकेद्वेस्याद्गंडांतंकीटहर्य्योस्तथैका को दंडाद्वौवृश्चिकांतेझषांतेमेषस्यादौराशिगंडांतमेव १ चतुर्घटीमूलमघाश्विनाद्यै गंडांतमंतेचफणींद्रपौष्णे आद्यनाड्यांतुजातस्यपितामरणमाप्नुयात् द्वितीया यांतथामातातृतीयायांमथान्वयः २ चतुर्थ्यांजायमानस्तुहंतिभ्रातृन्नसंशयः तिथ्यृक्षगंडेपितृमातृनाशोलग्नस्यसंधौतनयस्यनाशः सर्वेपुनोजीवतिहंतिवंशं जीवेत्पुनःस्याद्बहुवारणाश्वः ३ विघ्नांद्वारिद्र्यमाप्नोतिकुलिकेंगस्यवैकृतिं यम घंटेफलंरुक्स्याद्रिक्तायांखंडितामियात् ४

दकिया चारघडिया ४ श्रीर श्लेषा ज्येष्टा रेवती इनके अंत्यकिया ४ घडिया गंडांत होतेहै श्रीर ति नमे पूर्वघडीमें जन्मेतो पिता श्रीर दूसरीमें माता श्रीर तीसरीमें जातीके संबंधि श्रीर चतुर्थमें जन्मे तो भाइयोंको हत कर्ताहै श्रीर कहतेहै तिथिके श्रीर नक्षत्रोंके गंडोंमे पिता माताका नाशहोताहै श्रीर लग्नकी संधिमें पुत्रका नाशहोताहै श्रीर तिथि नक्षत्र लग्नकी संधियोंमे जन्माहुवा प्रथम जीता नहिंहै श्रीर जीवे तब वंशका क्षय कर्ताहै श्रीर कदाचित् श्रीर राजयोगादि शुभग्रहोंके वल्युक्तहोवे तब प्रतापी बहुत हाथियोंघोडोंवाला होताहै ३ श्रीर जोभद्राकरणमें जन्मताहै सो दरिद्री होताहै श्रीर जो कुलिकयोगमें जन्मताहै सो अंगविकारको प्राप्तहोताहै श्रीर जो यमघंटमें जन्मताहै सो रोगीहोताहै श्रीर रिक्तातिथिमें जन्मे सो खंडिताको प्राप्तहोताहै ४

श्रौरव्यतीपातमेंजन्मेसोअंगहीनहोताहेश्रौरपरिघयोगमेंजन्मेसोमृत्युकोप्राप्तहोताहेश्रौरवैधृतयोगमेंज न्मेसोपिताकानाशकर्ताहेश्रौरश्रमावास्याकोंजन्मेसोत्रधनकोंप्राप्तहोताहे ५ श्रौरशूलयोगमेंजन्मेसोसमूल नाश कर्त्ताहे श्रौर उलटाजन्मे श्रौर नाभिनालकर्के वेष्टितहोवे ६ सो राष्ट्रमें श्रौर राजयोंकों श्रौर धनकों नाश कर्त्ताहे श्रौर तैसेंहि हीनाधिक श्रगोकर्केचकारसेंयमलजन्मे श्रौर संधियोंमें ७ श्रौर पर्वदिनोंमें जन्मे सो रिष्टभयकों देताहे तैसेंहि दंतोसहित जन्मे श्रौर पेरोकर्के जन्मे सो रिष्टकर्त्ताहे ८ श्रौर तिससे क्रूरग्रहोंकी शांतिकरे श्रौर तिसमें ज्योतिषीका पूजन करे श्रौर शांतिकरणेसें रिष्टशांत होताहे ॥ ९ ॥ श्रौर कहतेहे चंद्रमा विषघटिकाशमें स्थित होवे तिसकालमें जो जन्मताहे सो तात्काल मृत्युकों प्राप्त होताहे श्रौर जिसके जन्ममें विषांशमें सूर्यहोवे तिसका पिता मृत्युकों प्राप्त होताहे

व्यतीपातेंगहानिःस्यात्परिघेमृतिमादिशेत् वैधृतेपितृहानिःस्यान्नष्टेंदौवध्यतांव्रजेत् ५ शूलेसमूलनाशःस्यात्कुलनाशश्चवैधृतौ विपरीतप्रसूतौतुनाभिनालेनवेष्टितं ६ राष्ट्रस्युनृपतेश्चैवस्वस्यापिचाविनाशकः अधिकांगेचहीनेचसंधयोरुभयोरपि ७ पर्वण्यपिप्रसूतौचसर्वारिष्टभयप्रदः तद्वत्सदंतजातश्चपादजातःतथैवच ८ तस्माच्छांतिंप्रकुर्वीतग्रहाणांक्रूरचेतसाम् दैवज्ञंपूजयेत्तत्रशांत्याशांतिर्भविष्यति ९ विषांशकगतेचंद्रेजातोयमपुरंव्रजेत् ॥ आदित्यांशेपितुर्मृत्युश्चंद्रांशेमातुरेवच १० भौमांशेमातुलस्यैवंसौरांशेभ्रातुरेवच ॥ अन्यांशेविषसंस्पृष्टेजातोयमपुरंव्रजेत् ११ स्ववर्गेमित्रभेस्वोच्चेशुभयुक्तेशुभेक्षिते ॥ गंडांतदोषसंभूतंसद्यएवव्यपोहति १२ गर्गः कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेषड्विधफलं ॥ चतुर्दशींचषड्भागान्कुर्यादादौशुभंस्मृतं १३ द्वितीयेपितरंहंतितृतीयेमातरंतथा ॥ चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् १४

श्रौर चंद्रमाहोवे तव माता मृत्युकों प्राप्तहोतीहे श्रौर विषांशमें मंगलहोवे तव माता श्रौर विषांशमें शनिहोवे तव भ्राता मृत्युकों प्राप्त होताहे श्रौर शेषग्रह विषांशमें होवें तव बालक मृत्युकों प्राप्त होताहे ॥ ११ ॥ श्रौर विषांश जानने काप्रकार पूर्व सज्ञाध्यायमें षष्ट्यंशके मध्यमें तीस ॥ १० ॥ कलाकर्के विषांश स्पष्ट कियाहे श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा उच्चमें श्रौर श्रपने वर्गमें श्रौर मित्रके क्षेत्रमें शुभग्रह कर्के युक्त दृष्टहोवे तव गंडांत दोषकों तात्काल दूरकर्त्ताहे ॥ १२ ॥ श्रौर गर्गकृष्णपक्षकी चतुर्दशीके छेभागकर्के फलकहताहे सामान्य दशघडीका एकभाग होताहे प्रथम भागमें जन्मे तो शुभहोताहे ॥ १३ ॥ श्रौर दूसरेमें पिताकों हतकर्त्ताहे श्रौर तीसरेमें माताकों हतकर्त्ताहे श्रौर चउथेमें मामेकों हतकर्त्ताहे श्रौर पांचमेंमें वंशका नाशकर्त्ताहे श्रौर छठेमे सर्वनाश कर्त्ताहे ॥ १४ ॥

औरवी रिष्टका उपाय कहतेहैं ग्रंथांतरमें अपने इष्टदेवताके पूजनसें संपूर्ण दोष नाशकों प्राप्त होताहै और॥ जोजो दोष ग्रह राशि नक्षत्र अंशोंकर्के उत्पन्नहै सोसो दान पूजा व्रतादि कर्नेकर्केसंपूर्णशांत होतेहै २ और पूर्वकहेयो-यवनजातकमें बालरिष्टयोग महारिष्ट तिनका उपाय इसविधकर्के करणा सो कहतेहै ॥ तिसदोषके दूरकरणेवास्ते अनेक वस्तूयोंकर्के बारां १२ तुला करावे भक्तिकर्के ३ तांबेकी १ और लोहेकी २ और घृतकी ३ और गोहेकी ४ और मृत्तिकाकी ५ और सुरमेकी ६ और कमलोंके फूलोंकी ७ औरअनेकफलोंकी ८ और भस्मकी ९ और लकडियोंकी १० और वृक्षोंके कडयोंकी ११ और वृक्षोंके पत्रोंकी १२ इहे यथाक्रमपूर्वक बारां तुलाकरावे और गोमयादि वस्तूके तुल्य ब्राह्मणकों अन्नतोलके पीछेसें देदेवे ५ इतिश्रीजातकखंडेरिष्टाध्यायोनवमः ९ अब रिष्टभंगाध्याय कहतेहैं ॥ एक बृहस्पति अतिबली होयकर्के और अपनीया किरणोंकर्के प्रका

पेष्टेनुसर्वनाशःस्याच्चतुदर्श्यां फलंक्रमात् ॥ अथात्ररिष्टप्रतीकारःकिंचिदुच्यते ग्रंथांतरे ॥ पूजनेनेष्टदेवस्यदोषोनश्यतिनान्यथा ॥ ग्रहराश्यंशभेदेनतिथिवारर्क्षयोगतः ॥ १ ॥ येयेदोषाःसमुत्पन्नास्तेषांशांतिःप्रजायते ॥ जपहोमनमस्कारदानपूजाव्रतादिभिः ॥ २ ॥ अथयवनजातकोक्तमहारिष्टप्रतीकारः ॥ तद्दोषपरिहारार्थंतुलादानंतुकारयेत् ॥ द्वादशपरिमाणंचनानाद्रव्यैस्तुभक्तितः ॥ ३ ॥ ताम्रजलोहजचाज्यंगोमयंचमृदंजनम् ॥ पद्मपुष्पैःफलैर्भस्मजैंधनैःकुंटकैस्तथा ॥ ४ ॥ वनस्पतीनांपत्रैस्तुकुर्य्याच्चसर्ववस्तुभिः गोमयादिसमपश्चाद्धान्यदद्याद्द्विजातये ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिबन्धेजातकखंडेरिष्टाध्यायोनवमः ९

अथरिष्टभंगाध्यायः सर्वानिमानतिबलःस्फुरदंशुजालोलग्नोपगःप्रशमयेत्सुरराजमंत्री एकोबहूनिदुरितानिसुदुस्तराणिभक्त्याप्रयुक्तइवशूलधरप्रणामः १ सौम्यग्रहैरतिबलैर्विबलैश्चपापैर्लग्नेचसौम्यभवनेशुभदृष्टियुक्ते सर्वापदाविरहितोभवतिप्रसूतःपूजाकरःखलुयथादुरितग्रहाणाम् ॥ २ ॥ पापायदिशुभवर्गेसौम्यैर्दृष्टाःशुभांशवर्गस्थैः निघ्नंतितदारिष्टपतिंविरक्तंयथायुवतिः ३

शकोंप्राप्त लग्नमें स्थितहोवे तब एकहि बृहस्पति पूर्वोक्त संपूर्णरिष्टोंकों दूरकर्त्ताहै किसकीन्याई जैसें भक्तिकर्के शिवजीकों प्रणाम करणेसें पापदूर होतेहे १ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुभग्रहबलीहोवें और पापीग्रह निर्बलहोवें और लग्नमें शुभग्रहकी राशिहोवें और शुभग्रहकर्के दृष्टियुक्तहोवे तब संपूर्ण रिष्टोंसें रहित होताहै जैसें कोई खोटेग्रहोंका पूजनकर्के सुखीहोताहै २ और जिसके-जन्मकालमें पापीग्रह शुभवर्गमें स्थितहोवें और शुभनवांशमें और शुभवर्गमें स्थितहोयकर्के शुभग्रह-तिनकों देखरेहोवें तब रिष्ट नाश होताहै जैसें विरक्तस्वामीकों स्त्रीनाशकों प्राप्तहोताहै ३ और जिसकेजन्मलग्नमें तीसरेछठे ग्यारहमें स्थानमें राहुस्थितहोवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे सो तात्कालरिष्ट दूरकर्त्ताहै जैसें रूईके समूहकों वायुदूरकर्त्ताहै ४ और जिसके जन्मकालमें शीर्षोदयराशियों। ३

।५।६।७। ८। ११। में संपूर्ण ग्रह स्थित होवें और अस्तनीचहोवें तब रिष्टनाशकों प्राप्त होताहै जैसें अग्निमें घृत दग्ध होताहै ५ और जन्मकालमें जयकों प्राप्तशुभग्रह होवे और शुभग्रहों करकें देख्याहोवे तब सपूर्ण रिष्टकों दूरकर्त्ताहै जैसें प्रबलवायु वृक्षोंकों तोडदेताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें स्निग्धकोमल पवनचलतीहोवे और कुलदेवता और सूर्यादिग्रह स्वस्थहोवें और श्रेष्ठक्षण शुभनक्षत्रका मुहूर्त्तहोवे तब रिष्टदूरहोताहै जैसें जलकी धारोंसें धूलिशमन होतीहै ७ और कहतेहैं अगस्त्यमुनिके उदयकालमें और वसिष्ठादि सप्तऋष्योंके उदयकालमें सपूर्ण रिष्ट दूरहोतेहैं जै

राहुस्त्रिषष्ठलाभेलग्नात्सौम्यैर्निरीक्षितःसद्यः नाशयतिसर्वदुरितंमारुतइवतूलसघातम् ॥ ४ ॥ शीर्षोदयेपुसर्वैर्गगनाधिनिवासिभिःसूतौ प्रकृतिस्थैश्चारिष्टविलीयेतघृतमिवाग्निधृतम् ॥ ५ ॥ तत्कालेयदिविजयीशुभग्रहःशुभानिरीक्षितोवश्यम् भंजयतिसर्वरिष्टंमारुतइवपादपान्प्रबलः ॥ ६ ॥ स्निग्धमृदुपवनभाजःकुलजाश्चतथैवखेचराःस्वस्थाः शस्ताःक्षणाश्चरिष्टंशमयंति रजोयथांबुधारौघाः ॥ ७ ॥ उदयेगस्त्यस्यमुनेःसप्तर्षीणांवसिष्ठपूर्वाणां सर्वंनश्यतिरिष्टंतमइवसूर्योदयेजगति ॥ ८ ॥ अजवृषकार्कीणिलग्नेरक्षति राहुःसमस्तपीडाभ्यः पृथ्वीपतिःप्रसन्नःकृतापराधंयथापुरुषम् ॥ ९ ॥ बहवोयदिशुभफलदायोगास्तत्रापिनेष्यतेरिष्टं सूर्यात्त्रिकोणइंदौयथाचयात्रानरेंद्रस्य ॥ १० ॥ अथचंद्ररिष्टभंगानाह ॥ उडुपतिकृतरिष्टानांभंगस्तावन्निरुच्यतेसम्यक् शेषाणामपियवनाद्यथामतब्रह्मपूर्वाणाम् ॥ १

सें सूर्योदयमें जगतका अधकार दूरहोताहै ८ और जन्मकालमें मेष वृष कर्क राशिमे स्थित राहु सपूर्ण पीडासें रक्षाकर्त्ता जैसें राजा प्रसन्नताको प्राप्तहोके अपराधी पुरुषकों छोडदेताहै ९ और जिसके जन्मसमयमें शुभफलके देनेवाले योग बहुत होवें तब वोरिष्ट नहिं होताहै जैसें राजाकी यात्रासमयमें सूर्यसें त्रिकोण । ९ । ५ । चंद्रमा शुभहोताहै १० अब चंद्रमाके रिष्टभग योग कहतेहैं चंद्रमाके किये रिष्टहै प्रथम तिनके भंगजोग यवना चार्य और ब्रह्मगुप्तादि मतसें कहताहा और शेष रिष्टोंके भंग वीक्हताहां १

और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा संपूर्णग्रहों करके देख्याहोवे सोरिष्टों को हरताहै जैसेंशत्रुके धन-कों राजाहरताहै २ और कहतेहै पूर्णचद्रमा मित्रके नवांशमें स्थितशुक्रकरके देख्या होवे सोरिष्टकों दूरकर्ताहै जैसें वातके हरणेमें वस्तिकर्महै तैसें वस्तिकर्म वैद्यशास्त्रमें प्रसिद्धहै शिरोवस्ति नेत्रवस्ति इत्या दिः ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मकालमें परमोच्चमें चंद्रमा स्थित शुक्रकरके देख्याहोवे सो रिष्टकानाशक-र्ताहै जैसें पित्तकफरोगकों दस्त और वमनकराणे सेरोगदूरकर्तेहै ४ और कहतेहै क्षीणचंद्रमा भी शुभ ग्रहों केवर्गमें स्थित और शुभग्रहों करके देख्याहुआरिष्टकों दूरकर्ताहै जैसें महाअतिसाररोगकों जायफल का क्वाथदूरकर्ताहै ५ और चद्रमासें सप्तम अष्टम षष्ठ ॥ ७।८।६ ॥ स्थानमें स्थितशुभग्रह पापग्रह करके युक्तनहोवें तब रिष्टहरतेहै जैसें कल्याणघृत उन्मादरोग कों हरताहै उन्मादघृतवैद्यशास्त्रमें कहाहै ६ और शुभफलके देनें वाले ग्रहसें युक्तचंद्रमा रिष्टोंकों हरताहै और शुभग्रहोंके द्रेष्काणमें स्थित.

सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टश्चंद्रोविनाशयतिरिष्टम् ॥ आपूर्यमाणमूर्तिर्यथान्पःस्वंनये त्तद्वित्ती २ चंद्रःसंपूर्णतनुःशुक्रेणनिरीक्षितःसुहृद्भागे ॥ कष्टहराणांश्रेष्ठोवातह राणांयथावस्तिः ३ परमोच्चेशिशिरतनुःशुक्रेणनिरीक्षितोहरतिरिष्टम् ॥ सम्यग्विरेकवमनंपित्तकफार्तिंयथावैपाम् ४ चंद्रःशुभवर्गस्थःक्षीणोपिशुभे क्षितोहरतिरिष्टम् ॥ जलमिवमहातिसारंजातीफलवल्कलक्वाथितम् ५ सप्ताष्ट मषष्ठस्थाःशशिनःसौम्याहरंतिकष्टफलं ॥ पापैरमिश्रचाराःकल्याणघृतंयथो न्मादम् ६ युक्तःशुभफलदायिभिरिंदुःसर्वाणिहंतिरिष्टानि तेषामिवत्र्यंशेलवणमृ तिपूरणंनयनशूलम् ७ आपूर्यमाणमूर्त्तिर्द्वादशभागेशुभस्ययदिचंद्रः रिष्टंनय तिविनाशंतक्राभ्यासोयथागुदजान् ८ सौम्यक्षेत्रेचंद्रोहोरापतिनाविलोकितो हंति ॥ रिष्टंनवीक्षितोन्यैःकुलांगनाकुलमिवान्यगता ९ क्रूरभवनेशशांकोभु वनेशनिरीक्षितस्तदनुवर्गे ॥ रक्षतिशिशुंप्रजातंकृपणइवधनंप्रयत्नेन १०

सोरिष्टहर्ताहै जैसें लवणकी मृति नेत्रशूलकोंहरतिहै ७ लवणमृतिवैद्यशास्त्र में प्रसिद्धहै और कहतेहै पूर्णचद्रमा शुभग्रहके द्वादशांशमें स्थितहोवे तब रिष्टकों नाशकर्ताहै जैसें तक्रपानकरणे वाले मनुष्यके गुदाके रोग संग्रहणी अतिसारादि दूर होतेहै ॥ ८ ॥ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें शुभग्रहकी राशिमें स्थित चंद्रमा लग्नके स्वामि करके देख्याहोवे और पापी ग्रहोंकी दृष्टि करके रहित होवे तब रिष्टनाश होताहै जैसें श्रेष्ठकुलकीस्त्री दूसरेपुरुषकों प्राप्तहोकरके कुलनष्ट कर्ताहै ९ और कहतेहै क्रूरराशिमें चद्रमा स्थित होवे और तिसि राशिके वर्गमें होवे और तिसि लग्नके स्वामीकरकेदेख्याहोवे सोबालककी रक्षाकर्ताहै जैसेंकृपण पुरुष धनकी रक्षाकर्ताहै यत्नकरके तिसकीन्याई १०

और कहतेहैं जन्मलग्नकास्वामी बली होवे और मित्रग्रहों कर्के देख्याहोवे और शुभग्रहों कर्के युक्तहोवेतबरिष्ट दूरकर्त्ताहै जैसेंभीरुपुरुषसग्रामकों प्राप्तहो कर्के नष्ट होताहै ११ और जन्मलग्नकास्वामी लग्नमे स्थितहोवे और सपूर्णग्रहों कर्के देख्या होवे सो रिष्टदूरकर्त्ताहै जैसें पिष्टोषण और विदलकर्के प्रत्येक कत्र्प्रजनकर्नेसेंजीर्णं दूर होताहै ॥ १२ ॥ और जिसके जन्मसमयमे पूर्ण चंद्रमा अपने उच्चमें शुभराशिमें वा स्वक्षेत्रमें कर्कटराशिमें और मित्रग्रहोके वर्गमें वा शुभवर्गमें वा अपने वर्गमे स्थित होवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और शत्रुग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे तब वडे रिष्टकों हतकर्त्ताहै जैसें अधकारकों सूर्यदूरकर्त्ताहै ॥ १३ ॥ और कहतेहैं क्रूरग्रह चंद्रमाके नवांशमें बुधशुक्रके एकादश ॥ ११ ॥ वा लग्न १ वा दशम ॥ १० ॥

जन्माधिपतिर्बलवान्सुहृद्भिरभिवीक्षितःशुभैर्युक्तः॥ रिष्टोस्यनश्यतितदाभीरुरिवत्रासससग्रामः ११ जन्माधिपतिर्लग्नेदृष्टःसर्वैर्विनाशयतिरिष्टं ॥ पिष्टोषणविदलाभ्यांप्रत्येककृतांजनंयथाजीर्णम् १२ स्वोच्चस्थःस्वगृहेथवापिसुहृदांवर्गेथसौम्यस्यवासंपूर्णःशुभवीक्षितःशशधरोवर्गेस्वकीयेथवा ॥ शत्रूणामवलोकनेनपतितःपापैरयुक्तेक्षितोरिष्टंहन्तिसुदुस्तरांदिनपतिःप्रालेयराशिंयथा ॥ १३ ॥ शशिनोंशेबुधसितयोरायेक्रूरस्थवाकृतोगगने ॥ दुरितंचातुर्थिकइवनश्यतिमुक्तिकुमुमरसनस्यैः ॥ १४ ॥ लग्नेश्वरश्चंद्रःषट्त्रिदशायाष्टहिबुकेषुशुभदृष्टः ॥ क्षपयतिसमस्तरिष्टाननुयातोनिरपराधइव १५ एकोजन्माधिपतेःपरिपूर्णफलःशुभग्रहैर्दृष्टः ॥ हंतिनिशाकररिष्टंव्याधइववने मृगंमतम् १६ केंद्रेशनायुर्भृगुजेगुरौवारिष्टंचचंद्रग्रहजंविनश्येत् ॥ एकोवलीलग्नपतिर्निहंतिदृष्टःशुभैश्चद्रकृतंचरिष्टम् १७

स्थानमें होवे तब रिष्ट दूर होताहै जैसें मोतीनेके पुष्पोके रससे नस्य लेनेसें चातुर्थिक ज्वर दूर होताहै ॥ १४ ॥ और लग्नकास्वामी और चंद्रमा लग्नसें छठे तीसरे ग्यारमें अष्टमें चतुर्थ स्थानमें शुभग्रहोंकर्के देखे होवें सो सपूर्ण रिष्टकों त्यागदेतेहै जैसें कोई निरपराधपुरुषकों त्यागताहै ॥ १५ और एक जन्मलग्नकास्वामी पूर्णबली शुभदृष्टहोवे सो चंद्रमाके रिष्टकों हत करताहै जैसें वनमें वडे मदसेंहुवे मृगकों व्याध मारताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्ममें केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ में शुक्र बृहस्पति होवे सो पूर्ण आयुर्दावाला होताहै और चंद्रमाके रिष्टकों नाशकर्त्ताहै और एकलग्नका स्वामी शुभग्रहोंकर्के देख्याहुवा बली चद्रमाकर्के कियाजो रिष्ट तिसकों हत कर्त्ताहै ॥ १७ ॥

और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें चंद्रमासे बाहरमें ॥ १२ ॥ शुक्रबुधहोवें और जाहरमें ॥ ११ ॥ पापग्रहहोवें और दशम ॥ १० ॥ में बृहस्पति स्थित होवे तब रिष्टका नाश होताहै और कहतेहैं कृष्णपक्षमें दिनमें जन्म और शुक्लपक्षमें रात्रिको जन्महोवे तब छठे ६ अष्टमे ८ स्थानमें भी चंद्रमा रिष्ट नाहिं करताहै ॥ १८ ॥ और पूर्ण चंद्रमा बृहस्पतिशुक्रकर्के युक्तहोवे और क्रूरग्रहोंकर्के न देखाहो वे और कर्क वृषराशिमें होवे सो त्रिकोण ॥ ९ ॥ ५ ॥ में स्थित माताके सुखवास्ते होताहै अर्थात् माताका रिष्ट दूरकरताहै और तैसें ही सूर्य सिंह मेषराशिमें पापग्रहोंकी दृष्टिरहित त्रिकोण ॥ ९ ॥ ५ में स्थित होवे तब पिताको रिष्ट नहिं करताहै ॥ १९ ॥ और दिनमें शुक्र और चंद्रमा और शनि युग्म ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥ १० ॥ १२ ॥ और अयुग्म ॥ १ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥ ११ ॥ राशियोंमें स्थित होवें तब माता पिताकी रक्षा करतेहैं और उलटे स्थित होवें तब चाचे और मासीयोंकी रक्षा

चंद्राद्व्ययेशुक्रबुधौचलाभेपापागुरुर्व्योम्निवरिष्टनाशः ॥ कृष्णेदिवाचेन्निशिशुक्लपक्षेशशीनरिष्टोरिपुरंध्रगोपि १८ संपूर्णइंदुर्गुरुशुक्रयुक्तःक्रूरैरदृष्टःस्वगृहेस्वतुगे सपचमस्थोपिसुखायमातुःपितुश्चतद्वत्खलुभास्करोपि १९ दिवासिताकौंनिशिचंद्रमंदौयुग्मौजसंस्थौजननीचतातः ॥ संरक्षितोव्यत्ययतस्तदन्यौपितृव्यमातृष्वसृरक्षकौतौ २० एतेत्रसर्वभंगामयानिरुक्ताःपुरातनाःसिद्धाः ॥ यैर्ज्ञातैर्दैवविदोनरेंद्रबाल्लभ्यमुपयांति २१ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबन्धेजातकखंडसर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायोदशमः १०

अथसुनफाऽनफादिनानाविधयोगाध्यायः सुनफानफाधुरधुराःक्रमेणयोगाभवंतिरविरहितैः वित्तांत्योभयसंस्थैःकैरवणीबांधवाद्विहगैः ॥ १ ॥ एतेनयदायोगाःकेंद्रग्रहवर्जितशशांकश्च केमद्रुमोतिकष्टःशशिनिसमस्तग्रहाऽदृष्टे ॥ २ ॥ सुनफानफाःस्वरूपास्त्रिंशद्योगास्त्रिंशद्गुणाःषष्टिः संख्याधौरधुराणांप्रस्तारविधौसमाख्याता ॥ ३ ॥

करतेहै २० और इहे रिष्टयोगके भग यो मैंने कहेहैं सो पुरातनग्रंथोंमें सिद्धहैं जिसके जानने करकेंज्योतिषी राजाको प्रसन्नताको प्राप्त होतेहैं १२ इतिश्रीजातकखंडटीकायांसर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायोदशमः १० अथ सुनफा नफादि अनेक योगोंकाऽध्याय कहतेहैं ॥ चंद्रमासे दूसरे और बाहरमें स्थानमें सूर्यके- विना और ग्रह स्थित होवे तब सुनफा नफा योग होतेहैं और दोनों स्थानोंमें ग्रहहोवें तब धुर धुरा योग होताहै जैसे चद्रमाके दूसरे सुनफा और बाहरमें अनफा और दोनोंस्थानोंमें ग्रहस्थितहोनसें धुरधुरा योग होताहै १ और जबइहे तीनयोगमें कोई योग नाहिं होवे तब केमद्रुम नाम योग होताहै और जब केंद्रस्थान ।१।४।७।१०। में कोई ग्रह और चंद्रमा नहोवे और चंद्रमा को संपूर्ण ग्रह देखते न होवें तब केमद्रुम बडे दुष्ट फलको देताहै २ और सुनफादि योगोंके भेदप्रस्तार विधिमें एकहजार आठसो १८०० कहाहै ३

अब इनके फलकहतेहै ॥ जो मनुष्य सुनफायोगमें जन्मताहै सोलक्ष्मीवाला और अपने पराक्रमकर्के ऐश्वर्यवाला और बहुतधर्मके स्वभाववाला और शास्त्रके जानने वाला और बडे यशवाला और अपने गुणों कर्के युक्त और सुंदर और सुखी और राजाका मन्त्री बडी बुद्धिवाला होताहै ४ और जोऽनफायोगमें जन्मताहै सो श्रेष्ठवाणीवाला और प्रभु और धनका स्वामी और रोगरहित और श्रेष्ठ स्वभाववाला और अन्नपान पुष्प वस्त्र और स्त्रियोंके भोगने वाला और प्रसिद्ध स्थिर बुद्धिवाला और संपूर्ण इसके जानने वाला होताहै ५ अब दुरधुरा योगका फल कहतेहै योमनुष्य धुरधुरायोगमें जन्मताहै सो वाणी और बुद्धि और पराक्रम और गुणोंकर्के प्रसिद्ध होताहै और पृथ्वीमें स्वतंत्र भोगों को भोगताहै और दाता और कुटुंबजनोंके पालनमेंखेदयुक्त और श्रेष्ठवृत्तिवाला और कुटुंबमें नियुक्तहोताहै ६ ॥ और जो केमद्रुम योगमें जन्मताहै सो स्त्री धनबंधु मित्र जन और गृहवस्त्रोंकर्के रहित और दरिद्रता और

अथैषांफलानि ॥ श्रीमान्स्वबाहुविभवोबहुधर्मशीलःशास्त्रार्थवित्पृथुयशाःस्वगुणाभिरामः कांतःसुखीचनृपतेःसचिवोथवास्याज्जातःपुमान्विपुलधीःसुनफाभिधाने ॥ ४ ॥ वाग्मीप्रभुर्धनपतिर्विरुजःसुशीलोभोक्तान्नपानकुसमांबरकामिनीनाम् ख्यातःसमाहितमतिश्चसमस्तचित्तोयोगेनिशाकरकृतेऽनफजेसुवेशः ॥ ५ ॥ वाग्बुद्धिविक्रमगुणैःप्रथितःपृथिव्यांस्वातंत्र्यसौख्यधनवाहनभोगभागी दाताकुटुंबजनपोषणलब्धखेदःसद्वृत्तवान्धुरधराप्रभवोधुरिस्थः ॥ ६ ॥ कांतार्थबंधुगृहवस्त्रसुहृद्विहीनोदारिद्र्यदैन्यगददुःखमलैरुपेतः प्रेष्यःखलःसकललोकविरुद्धबुद्धिःकेमद्रुमेभवतिपार्थिववंशजोपि ॥ ७ ॥ केंद्रादिस्थैर्ग्रहैर्योगाःकीर्तितायेनफादयः तेप्रधानाःसमाहृस्वाश्चंद्राल्पादैर्विचिंतयेत् ॥ ८ ॥ अथ कुजादिग्रहयुतसुनफायोगफलम् विक्रमवित्तप्रायोनिष्ठुरवचनश्चभूपतिश्चंडः हिंस्रोडिम्भविरोधीसुनफायांभौमयोगेन ॥ ९ ॥ श्रुतिशास्त्रगेयकुशलोधर्मरतःकाव्यकृन्मनस्वीच सौक्षेत्रसर्वहितोरुचिरतनुःसोमजेभवति ॥ १० ॥

दैन्य ताकर्के युक्त और रोगदुःखकर्के युक्त और दूत और दुष्ट और संपूर्ण लोकोंसे विरुद्धबुद्धि वाला और राजाके कुलमेंभी जन्माहुआ अयसा होताहे ७ और जो सुनफादि योगकहेहे सो ग्रहकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित पूर्णबल और पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । मे मध्यफल और आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें अल्पफलकर्ताहै ॥ ८ ॥ अब भौमादिग्रहोंका सुनफायोगकाफल कहतेहै जिसके जन्मकालमें चद्रमासें दूसरे स्थानमें मंगल होवे सो बडापराक्रमी और धनी और निष्ठुरवाणीवाला और सेनापति और प्रचंड हिंसाके करणेवाला और बालकोंका विरोधी होताहै ॥ ९ ॥ और जिसके जन्ममें बुधचद्रमासें दूसरे स्थानमें होवे सो वेद शास्त्र और संगीतमें चतुर और धर्ममें रत और काव्यकरणे वाला और मनस्वी और सौमें और क्षेत्रमें हितवाला और सुंदररूप वाला होताहै ॥ १० ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाके दूसरेस्थानमें वृहस्पति होवे सो अनेक विद्याकर्के प्रसिद्ध राजा वा राजश्रीकर्केयुक्त श्रौर श्रेष्ठकुटुंब श्रोर धनकी समृद्धिकर्के युक्त होताहै ११ श्रौर जिसके जन्ममें चंद्रमाकेदूसरे शुक्रहोवे सो स्त्री श्रौर क्षेत्रकर्के युक्त श्रौर गृहपति होताहै श्रोर चुपायेजीवो कर्के युक्त श्रौर बडे पराक्रमवालेहोताहै श्रोर राजाके सत्कारकोंप्राप्त श्रौर श्रेष्ठवेशवाला श्रौर चतुरहोता है १२ श्रौर चंद्रमाके दूसरेस्थानमें शनिहोवेतव चतुरबुद्धिवाला श्रौर ग्रामपुरोंमें मान्य श्रौर धनकी समृद्धिवाला होताहै श्रौर क्रियामें गुप्त श्रौर मलीनहोताहै १३ अवभौमादिग्रहोंके अनफायोगकेफ लकहतेहे जिसके जन्ममें चद्रमाके बाहरमें स्थानमें मगलहोवे सो चोरोंकास्वामी श्रौर धनी श्रौर मानी श्रौर युद्धमेंप्रबल श्रौर ईर्षाकर्केयुक्त श्रौर क्रोधि श्रौर सुंदरदेहवालाहोताहै १४ श्रौर चंद्रमासें बाहरमें १२ बुधहोवेतनगंधर्वविद्याकेजाननेवाला श्रौरलिखनेमेंचतुर श्रोर कवि श्रौर वक्ता श्रौर रा

नानाविद्याख्यातंनृपंनृपश्रीयुतंतथावापि सुकुटुंबधनसमृद्धंसुनफायांसुरगुरुः कुरुते ११ स्त्रीक्षेत्रवित्तगृहपश्चतुष्पदाढ्यःसुविक्रमोभवति नृपसत्कृतःसुवेशो दक्षःशुक्रेणसुनफायाम् १२ निपुणमतिर्ग्रामपुरैर्नित्यंसंपूजितोधनसमृद्धः सुनफा यांरविपुत्रेक्रियासुगुप्तोभवेन्मालिनः १३ ॥ अथकुजादिग्रहयुतानफायोगफ० चौरस्वामीदृप्तःसुधनीमानीरणोत्कटःसेर्प्यः क्रोधीश्लाघ्यःसुतनुःकुजोऽनफा यांप्रगल्भश्च १४ गांधर्वलेख्यपटुःकविःप्रवक्तानृपाप्तसत्कारः रुचिरःसुभगो नयवान्प्रसिद्धकर्मोबुधेनभवेत् १५ गांभीर्यसत्वसेवास्थानयुतोबुद्धिमान्नृपाप्त यशाःअनफायांत्रिदशगुरौसंजातःसत्कविर्भवतिः १६ युवतीनामतिसुभगःप्रण यीक्षितिपस्यगोपतिःकांतः कनकसमृद्धश्चपुमानऽनफायांभार्गवेभवति १७ विस्तीर्णभुजःसुभगोगृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः दुर्वनितागणभोक्तागुणसहि तःपुत्रवान्रविजे १८

जाकेसत्कारकोंप्राप्त श्रौर श्रेष्ठ भाग्योंवाला श्रौर नीतिके जाननेवाला होताहै १५ श्रौर चंद्रमासें बाहरमें १२ वृहस्पतिहोवे तव गंभीर श्रौर सत्वकर्केयुक्त सेवामेंयुक्तहोताहै ॥ श्रौर बुद्धि वाला रा जासें यशकों प्राप्तहोनें वाला श्रोर श्रेष्ठ कविहोताहे १६ श्रौर जिसके जन्मसयमें चंद्रमासें बाहरमें १२ शुक्रहोवे सो स्त्रियोंके सोभाग्य वाला श्रोर राजाकीप्रीति वाला श्रौर गौवोंकास्वामी श्रौर सुंदररूपवाला श्रोर सुवर्णकीसमृद्धी वाला होताहै १७ श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासें बा- हरमें १२ शनि होवे सो बडेविस्तारवालीयोंभुर्यो वाला श्रौर शूरवीर श्रौर वाक्यकोंप्रमाण क रणे वाला श्रोर चतुष्पदोंकी समृद्धी वाला श्रोर दुष्ट स्रीयोंके भोगने वाला श्रोर गुणों कर्के युक्त- श्रौर पुत्रोंवाला होताहै १८

॥ अथदुरधुरायोगकेफलकहतेहे ॥ जिसके जन्मकाल में चंद्रमा मंगल बुध केमध्यहोवे सो झूठबोलने वाला और बहुतधनवाला और बडाचतुर और गुणोंकर्के युक्त और लोभी और वृद्धस्त्रीमें सक्त और कुलमें मुख्यहोताहै ॥ १९ ॥ और जिसके जन्ममें मंगलबृहस्पति- के मध्यमें चंद्रमा होवे सो कर्मोंमें प्रसिद्ध और धूर्त्त और बहुनधन और शत्रुयों कर्के युक्त और क्रोधी और ढीठ होताहै और रक्षाकरणे वाला और संग्रहकरणे वाला होताहै २० और जिसके जन्ममें मंगल शुक्रके मध्यमें चंद्रमाहोवे सो श्रेष्ठ भाग्यो वाला और विषादी और शस्त्रास्त्रोंके जान ने वाला और शूरवीर होताहै और व्यायामकरणे वाला और युद्ध करणे वाला होताहै और जिसके जन्ममें शनिमंगलके मध्यमें चद्रमा स्थितहोवे सो निंद्यस्त्रीके रमणे वाला और बहु-

अथधुरधुराफलानि ॥ अनृतकोवहुवित्तोनिपुणोतिशठोगुणाधिकोलुब्धः वृद्धा सतीप्रसक्तःकुलाग्रणीःशशिनिभौमबुधमध्ये १९ ख्यातःकर्मसुकितवोबहुधनवैर- स्त्वमर्षणोधृष्टः आरक्षकःकुजगुर्वोःसंग्रहशीलःशशिनिमध्ये २० उत्तमरामा सुभगोविषादशीलोस्त्रविद्भवेच्छूरः व्यायामीरणशीलःसितारयोर्मध्यगेचंद्रे २१ कुत्सितयोपिद्रमणो बहुसंचयकारकः श्वसनतप्तः क्रोधीपिशुनोरिपुमान्यमा रयोः स्याद्धुरधुरायाम् २२ धर्मपरः शास्त्रज्ञोवाचाटः सत्कविर्भवेन्नृपतिः ॥ त्यागयुतेविख्यातोगुरुबुधमध्यस्थितेचंद्रे २३ प्रियवाक्सुभगः कांतः प्रनृत्य गेयादिविक्रयीनृपतिः सेर्प्यः सूरोमंत्रीबुधसितयोर्धुरधुरायोगे २४ देशादेशं गछतिवित्तवरोनातिविद्यासाहितः चंद्रेन्येषांपूज्यः स्वजनविरोधीज्ञमंदयोर्म ध्ये २५

तसंचयकरणे वाला और वायु कर्के तप्तहोताहै और क्रोधी और चुगल और शत्रुयों कर्के युक्त होताहै २२ और जिसकेजन्ममें बुध बृहस्पतिके मध्यमें चद्रमास्थितहोवे सो धर्ममें तत्पर और शास्त्रके जान नेवाला और वाचाल और श्रेष्ठकविः और राजा और त्याग कर्के युक्त और प्रसिद्धहोताहै २३ और जिसके जन्ममें बुध शुक्र केमध्य चद्रमाहोवें सो मीठाबोलनेंवाडा और श्रेष्टभाग्योवाला और सुंदर और नृत्यगीतोंके वेचनेवाला और बहुत मनुष्यों कालामि और ईर्षा कर्के युक्त और शूरवीर और मंत्री होताहै २४ और जिसके जन्ममें बुध शनिके मध्य चद्रमाहोवे सो देशदेशातरमें फिरणेवाला और धन वाला और वडीविद्या कर्के नाहयुक्त होताहै और मित्रोंकाविरोधी और जनों कर्के पूज्यहोताहै २५

ओर जिनके जन्ममें गुरुशुक्रके मध्यमेंचंद्रमा होवे सो धैर्यबुद्धिवाला और सुखकर्केयुक्त और नीतिके. जाननेवाला ओरसुवर्णरत्नों कर्केपूर्ण और प्रसिद्ध और राजकेकरणेवालाहोताहे २६ और जिस केजन्ममें गुरुशनिकेमध्यमें चंद्रमाहोवे सो सुख और नीतोविद्याकर्के युक्त ओर मीठोवाणीवाला ओर विद्वानोंकाप्यारा ओर मान कर्केयुक्त ओर धनी ओर सुंदररूपवालाहोताहे २७ और जिसकेज न्मसमयमें शुक्र शनिके मध्यमें चंद्रमाहोवे तिसकोंवृद्धस्त्रीवाला ओर कुलमेंप्रधान ओर चतुर ओर स्त्रीकाप्यारा ओर धनकीसमृद्धिवाला कर्ताहे और राजाके सत्कारकों कर्ताहे २८ अबकेमद्रुमयोग. मेंविशेषकहतेहे जातकपारिजातसें जिसकेजन्मकालमे लग्नमे चंद्रमावा सप्तमस्थानमे स्थितहोवे ओर बृहस्पतिकीदृष्टिसे रहितहोवे तबकेमद्रुमहोताहे और जिसकेजन्मसमयमे संपूर्णग्रह अष्टवर्गमे चारोंसे दुसेंहीनहोवे ओर षड्बलमे पंचरूपसे हीनहोवे तबकेमद्रुमयोगहोताहे २९ और जिसकेजन्मसमय

धृतिमेधासौख्ययुतोनीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः ख्यातोनृपकृत्यकरोगुरुसि तयोर्धुरधुरायोगे ॥ २६ ॥ सुखनयविज्ञानयुतः प्रियवाग्विद्वान्सुवत्सलो. मान्यः स्वतोधनीसुरूपः चंद्रेगुरुभानुजांतःस्थे ॥ २७ वृद्धवनितंकुलाढ्यंनिपु णं स्त्रीवल्लभंधनसमृद्धम् नृपसत्कृतंविधेयंकुरुतेचंद्रःसितासितयोः २८ अथात्र प्रसंगात्केमद्रुमयोगेविशेषोक्तं जातकपारिजाते लग्नस्थितेहिमकरे यदिवास्म दस्थेकेमद्रुमोभवतिजीवदृशाविहीने अत्यल्पबिंदुसहितायदिखेचरेंद्राः केम द्रुयोगफलदाविबलाश्चसर्वे २९ चंद्रेसभानौयादिनीचदृष्टे पापांशकेयातिद रिद्रयोगंक्षीणेंदुलग्नान्निधनेनिशायांपापेक्षितेपापयुतेतथास्यात् ३० विधुंतुदा दिग्रहपीडितेंदौ पापेक्षितेचाशुदरिद्रमेति लग्नाच्चतुष्केंद्रग्रहेसपापेनिशाकरा द्वायदितद्वदंति ३१ चंद्रेपराजितशुभग्रहदृष्टियुक्तेराह्वादिपीडिततनौतुदरि द्रएव नीचारिवीक्ष्यणयुतेरिपुराशिवर्गेचंद्रेतुलाधरगतेतुतथावदंति ३२ ॥

में चंद्रमा सूर्य कर्के युक्त वृश्चिकराशिमें और पापीग्रहके नवांशमेंस्थितहोवे तब दरिद्रयोगके मद्रुमहो ताहे और क्षीणचंद्रमा रात्रिके जन्ममें जन्मलग्नसें अष्टमहोवे ओर पापीग्रहों कर्के देख्या होवे तब केमद्रुमयोगकों प्राप्तहोताहे ३० और राहुसेंलेकर पापग्रहों कर्के चंद्रमापीडितहोवे ओर पापग्रहों कर्के देख्या होवे तब शीघ्रहिदरिद्रयोगकों प्राप्तहोताहे और लग्नसें वार्चद्रमासें केंद्रस्थानोंमें १।४।७।१०। पापग्रहस्थितहोवें तब दारिद्रयोगहोताहे ३१ और कहतेहें जिसके जन्मसमयम चंद्रमा राहुसें लेकर पापग्रहोंकर्के युक्तहोवे और पराजितजोशुभग्रहतिसकर्के देख्याहोवे तब दरिद्रयो गहोताहे और जिसके जन्ममें तुलाराशिकाचंद्रमाशत्रुवर्गमे स्थितओरनीचग्रहकर्के औरशत्रुग्रहकर्के देख्याहोवे तब दरिद्रीहोताहे ३२

और जिसके जन्मसमयमेंकेंद्रमेंवा त्रिकोण ९ ५ में चंद्रमाहोवेऔर नीचऔर शत्रुकेवर्गमेंहोवे और चंद्रमासेंबाहरमें १२आठमें ८ छठे ६ स्थानमेंवृहस्पतिहोवेतवदरिद्रीहोताहै और चरराशिचरनवांशमें वापापीकेनवांशमें स्थितचंद्रमाशत्रुकर्केदेख्याहोवे और वृहस्पतिकीदृष्टिसेंहीनहोवेतवदरिद्रीहोताहै ३३और नीच शत्रु पापग्रहके वर्गमें स्थित शनि औरवृहस्पति आपसमेंदेखते होवैंअथवा एकराशिमें स्थित होवें तवराजाके वंशमें जन्मनेवाला वीकेमद्रुमयोगकोंप्राप्तहोताहै ३४ और जिसके जन्मका लग्नमें पापग्रहकी राशिमें और पापग्रहकर्के युक्तचंद्रमाहोवे वापापीके नवांशमें चंद्रमा रात्रिमें जन्ममें होवे और हीनवलीहोवे और दशमेश कर्के देख्याहोवे तवकेमयोगहोताहै और नीचनवांशमें स्थित चंद्रमापापीग्रहकर्के युक्तहोवे और नवमेशदेखताहोवे तवकेमद्रुमहोताहै और रात्रिके जन्ममें क्षीणच द्रमा वृश्चिकराशिमें होवे तवकेमद्रुमयोगहोताहै ३५ अवकेमद्रुमयोगकाभंगकहतेहे जिसके जन्म

केंद्रेवायदिकोणगेहिमकरेनीचारिवर्गस्थितेचंद्रादंत्यसपत्नरंध्रगृहगेजीवेदरिद्रो भवेत् पापांशेरिपुवीक्षितेचरगृहेचंद्रेचरांशेथवा जातोयातिदरिद्रयोगमतुलंदेवेड्य दृग्वर्जिते ३३ अन्योन्यदृष्टौशनिदानवेड्यौनीचारिपापग्रहवर्गयातौ एकर्क्षगौवा यदिराजवंशेजातोपिकेमद्रुमयोगमेति ३४चंद्रेपापयुतेतुपापभवनेपापांशकेवानि शिव्योमेशनिरीक्षितेगतवलेकेमद्रुयोगोभवेत् भाग्यस्थानपतीक्षितेखलयुतेनी चांशकेव्जेतथा चंद्रेनीचयुतेनिशिक्षयतनौजातस्यकेमद्रुमः ३५ अथकेमद्रुमभंगः निशाकरेकेंद्रगतेभृगौवाजीवेक्षितेनैवदरिद्रयोगः शुभान्वितेवाशुभमध्यगेवाजी वेक्षितेनैवदारिद्रयोगः ३६ चंद्रेतिमित्रनिजतुंगगृहांशकस्थेजीवेक्षितेयदिदरि द्रतयावहीनः पूर्णेतनौशुभयुतेविदितुंगजातेजीवेक्षितेहिमकरेनभवेद्दरिद्रः ३७ योगेकेमद्रुमेप्राप्तेयस्मिन्कस्मिंश्चजातके राजयोगाविनश्यंतिहरिंदृष्ट्वायथाद्विपाः ॥ इतिचंद्रयोगप्रकरणम् अथवोसिवेस्युभयचरीयोगाः ॥ सूर्याद्व्ययगैर्वोसि· द्वितियगैश्चंद्रवर्जितैर्वेसिः उभयस्थैर्ग्रहैद्रेरुभयचरीनामतःप्रोक्तः १

समयमें चंद्रमावा शुक्रकेंद्र १ ४ ७ १० स्थानमें स्थितहोवें और वृहस्पतिकर्के देखेहोवें तव दरिद्रयो गनहिंहोताहै और अथवाचंद्रमा शुभग्रहकर्के युक्त वाशुभग्रहोंके मध्य वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रयोगनहिंहोताहै ३६ और चंद्रमा अधिमित्रके वा अपने उच्चकी राशिवानवांशमें स्थितहोवें और वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रताकर्के रहितहोताहै और पूर्णचंद्रमा शुभग्रहकर्के युक्त वुधके उच्चमें स्थितहोवे और वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रयोगनहिंहोताहै ३७ और कहतेहे जिसकि सीकेजन्मकालमें केमद्रुमयोगहोवे तवराजयोगनाशकोंप्राप्तहोतेहै जैसेंशेरकों देखकर्के हाथीभागतेहै ३८ इतिचंद्रयोगप्रकरणम् अववोसिवेश्युभयचरीयोग कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमाकेविनाकोई ग्रहसूर्य सें वाहरमें १२ स्थानमें स्थितहोवे तवदो सियोगकहाहै और सूर्यमें दूसरे स्थानमें कोई ग्रहचंद्रमाके विनास्थितहोवे तव वेशियोगहोताहै और सूर्यके दोनोंतर्फ ग्रहहोवें तव उभयचरीनामककेयोगकहाहै

अथवोस्यादियोगोंकाफलकहतेहे शुभग्रहके वोसिमे यो जन्मताहै सो चतुर और दाता और विद्या के आनंद कर्के युक्त और सुख धन यश बल कर्के युक्त होताहै और पापग्रहके वोसियोगमें जन्मे तो विदेश रत और बडामूर्ख और कामातुर और वधकीरुचिवाला और विकराल मुखवालाहोताहै २ और यो शुभग्रहके वेशियोगमें जन्मताहे सो श्रेष्ठवाणीवाला और धनी और भयरहित और शत्रुरहितहोताहे और पापग्रहकी वेशियोगमें दुष्टजनोंसें प्रीतिवाला और पापकरणेवाला और धन सुखादियोंकर्के रहितहोताहे ३ और शुभग्रहोंकी उभयचरीयोगमें जन्मतेयोहे सो राजाके तुल्य धन सुख स्वभाव दयाकर्के युक्तहोतेहे और पापग्रहोंकी उभयचरीयोगमें पापकरणेवाले और रो

अथैषांफलानि वोसौशुभग्रहयुतेनिपुणःप्रदाताविद्याविनोदसुखवित्तयशोव लाढ्यः पापान्वितेयदिविदेशगतोतिमूर्खःकामातुरोवधरुचिर्विकृताननःस्यात् २ जातःसुशीलःशुभवेसियोगेवाङ्मीधनीवीतभयोजितारिः पापग्रहेदुष्टजना नुरक्तःपापात्मकोवित्तसुखादिहीनः ३ सौम्यान्वितोभयचारिप्रभवानरेंद्रास्तत्तु ल्यवित्तसुखशीलदयानुरक्ताः पापान्वितोभयचरोयदिपापकृत्यारोगाभिभूत परकर्मरतादरिद्राः ४ अथांतरेविशेषः सूर्याद्व्येद्वितीयेऽमृतधरविगताःसौम्य पापाश्चखेटायोगोयंभूपतुल्योप्युभयचरिवरोभाषितोज्ञानदोहैः अत्येवोसिप्रासि द्धोधननिलयगतोवेसियोगःप्रशस्तः तस्यप्रांत्येद्वितीयेभवतिनखचरःकर्त्तरी सानशस्ता ५ इतिवोस्यादियोगाः अथनाभसायोगाः यवनाद्यैर्विस्तरतःकथिता योगास्तुनाभसानाम्नाअष्टादशशतसंख्यास्तेषांद्वात्रिंशादिहवक्ष्ये १ नौच्छत्रकू टकार्मुकशृंगाटकवज्रदामनीपाशाः वीणामुरजोमुसलोवापीहलशरसमुद्रच क्राणि २ मालामर्दोर्धेंदुःकेदारगदाविहंगयूपाश्च युगशकटयूपदंडारज्जुःश क्तिर्यवोनलोगोलः ३

गकर्के युक्त और परकर्ममेंरत और दरिद्रीहोतेहैं ४ और ग्रंथांतरमें विशेषकहतेहे सूर्यसें बाहरमें १२ और दूसरे २ स्थानमें चद्रमाके विना शुभपापी कोईग्रहस्थितहोवें तब उभयचरीयोग राजयोगके तु ल्य मुनियोंनेकहाहे और केवलसूर्यसें बाहरमे ग्रहहोवें तबवोसि और दूसरे स्थानमें होवें तबवेशि एहेशुभयोगहोतेहे और बाहरमें दूसरेस्थानमें सूर्यसें कोईग्रहनहिंस्थितहोवे तबकर्त्तरीयोगकहाहै सोशु भनहिंहोताहे ५ ॥ इतिवोस्यादियोगाः ॥ अथनाभसादियोगकहतेहैं यवनाचार्यादिकोंनें विस्तारकर्के अठारांसौ १८०० नाभसनामकर्के योगकहेहै तिनमें वत्ती ३२ योगमें इसग्रंथमें कहताहा १ नौ का १ छत्र २ कूट ३

धनुः ४ शृंगाटक ५ वज्र ६ दामनी ७ पाश ८ वीणा ९ मुरुज १० मुसल ११ वापी १२ हल १३ शर १४ समुद्र १५ चक्र १६ माला १७ मर्द १८ अर्द्धशशी १९ केदार २० गदा २१ विहंग २२ यूप २३ युग २४ शकट २५ और यूप २६ दंड २७ रज्जु २८ शक्ति २९ यव ३० नल ३१ गोल ३२ इनौंवत्रीयोंयोगोंमें चराचर जगतका जन्महोताहै और माणित्थ ताजक के जाननेवाले मुसल और नल और रजुयोगोंको आश्रयजनककहतेहै ४ और गोल युग शूल केदार पाश दामनी वीणा इहेसातयोगपूर्वाचार्योंनें संख्यासंज्ञककहेहैं ५ और दल और भुजंगमाला पराशरनेकहेहैं और वीसयोग औरोंनें सूर्यादियोंनें आकृतिसंज्ञावालेकहेहे ॥ ६ ॥ और कहतेहैं आश्रययोगमें जोजन्माहै सो राजा वासुखधनलाभकर्के युक्त होताहै और योगकर्त्तग्रह और किसीग्रहकर्के मिले होवें तव आश्रययोगकाफलनाहिंकर्तेहै ७ और जो मनुष्य आकृतियोगों

सचराचरस्यजगतोयेगैरेतैःप्रकीर्त्यतेप्रसवः आश्रयजातान्प्राहुर्माणित्थामुसलरज्जुनलयोगान् ४ गोलयुगशूलकेदाराख्याःपाशास्तुदामनीवीणाःसप्तैतेसंख्याताःपूर्वाचार्यैःसमुद्दिष्टाः ५ द्वेचदलयोगसंज्ञेभुजंगमालेपराशरेणोक्ते आकृतिजाताविंशतिरपरैःकथिताश्चसावित्रैः ॥ ६ ॥ आश्रययोगेजातोभूपतिरपि सौख्यधनलाभयुतः ॥ अन्येनामोश्रितास्तेविगतफलाःस्युस्तथायोगाः ७ नंदंतिस्वैर्भाग्यैर्नृपलब्धधनान्नृपप्रियाःख्याताः ॥ प्रायेणसौख्ययुक्ताश्चाकृतियोगेषुयेजाताः ८ परभाग्यलब्धसौख्याः परभाग्यैरेवजीवनंतेषाम् ॥ संख्यासंज्ञैर्जातायेपुरुषाःसर्वतोविकलाः ९ क्वचित्स्वभाग्यैःक्वचिदेवमेवक्वचित्परंभूपतितःफलंच ॥ क्वचित्सुखंदुःखमतीवकष्टंदलाख्ययोगेपुरुषोलभेत ॥ १० ॥ होरादिकंटकेभ्यःसप्तर्क्षगतैःक्रमेणयोगाःस्युःनौछत्रकूटकार्मुकानिर्दिष्टाःपूर्वयवनेंद्रैः ॥ ११ ॥

में जन्मतेहै सो विशेष कर्के सुखी और अनेकभाग्यों कर्के आनंदको प्राप्त और राजासें धनलाभकों प्राप्त और राजाके प्यारे और प्रसिद्ध होतेहे ॥ ८ ॥ और जो मनुष्य संख्यासंज्ञिक योगों में जन्मतेहैं सो दूसरेके भाग्यों कर्के सुखकों प्राप्त होतेहै और दूसरेकेभाग्यों कर्के जीवकाकर्तेहैं ॥ ९ ॥ और योमनुष्य पराशरोक्तदलयोगमें जन्मताहै सो किसीस्थानमें अपने भाग्योंसें और किसीस्थानमें दूसरेके भाग्योंसें और किसीकालमें राजाके सुखकों और कवीसुख और कवी दुःखकों प्राप्त होताहै १० अवनौकादिचारयोगकहतेहे चारजोकेंद्रहैं तिनमें लग्नकेंद्रसें लेकर्के एकएककें द्रसें सातराशियोंमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवे तब नौकादिचार योगहोतेहे जैसें । १ । २ । ३ । । ४ । ५ । ६ । ७ । स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह होंमें तब नौका योग होताहै और अयसेंहि । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ ॥ १० स्थानमें छत्र और ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १ ॥ स्थानमें कूट और ॥ १० ॥ ११ ॥

१२ । १ । २ । ३ । ४ । स्थानमे कार्मुक चापयोग यवनाचार्योनेकहेहै । ११ । अवयूपादिचारयो गकहतेहै लग्नादिचारकेंद्रस्थानोसें क्रमकर्के चारघरमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवें तव क्रमसें यूप शर श क्ति दंड नाम कर्के योग होतेहे जैसें १ । २ । ३ । ४ । स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवें तव यूप योग और । ४ । ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ स्थानोमें शर योग और ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ स्थानोंमें शक्ति योग और ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १ ॥ स्थानोमें दंडयोगहोताहै ॥ १२ ॥ अवअर्धश शीयोगकहतेहैं पणफर ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ॥ और आपोक्लिम ॥ ३ ॥ ६ ॥ ९ ॥ १२ ॥ सेंलेकरसातघरोंमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवे तव अर्द्धशशीयोग होताहै सो आठप्रका. रकाकहाहै ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवे तव एक ॥ १ ॥ और तीसरे सें नवम पर्यंत ॥ २ ॥ और पांचमेसें एकादशपर्यंत ३ और छठेसेंद्वादशपर्यंत ॥ ४ ॥ और अष्टमसेंदूसरे पर्यंत ५ और नवमसें तीसरे पर्यंत ६ और एकादशसें पांचमें पर्यंत ७ और द्वादश सें छठेस्थान पर्यंत संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव आठमा अर्धशशीयोग होताहै और गदायोगकहतेहैं समी

लग्नादिकेंद्रगेभ्यश्चतुर्भिरेकस्थितैर्ग्रहैर्योगाः ॥ यूपशरशक्तिदंडाःसत्याचार व्रतानित्यम् ॥ १२ ॥ सप्तर्क्षगैर्ग्रहेंद्रैःकेंद्रादन्यत्रकीर्त्तितोर्धशशी ॥ केंद्रस्र स्यासन्नैर्भवनद्वयगैर्गदानाम १३ लग्नास्तयोश्चसौम्यैःपापैःसुखकर्मगैर्भव तिवज्रम् ॥ विपरीतैर्यवयोगोमिश्रैःपद्मोवहिःस्थितैर्वापी ॥ १४ ॥ होरास्तगतैःशकटंचतुर्थदशमाश्रितैर्विहगः उदयान्यगैस्त्रिकोणेहलंशृंगाटकं तदुभयस्थैः ॥ १५ ॥

पवर्त्तीदो केंद्रस्थानोंमें संपूर्णग्रहस्थित होवें तव गदानामयोग होताहै सोचार प्रकारकाहै लग्नचतुर्थमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवेतव १ चतुर्थसप्तममें २ सप्तम दशममें ३ दशम लग्नस्थानमें संपूर्ण ग्रहहोवें तव ४ योगहोतेहै १३ अववज्रादिचारयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्न १ और सप्तमस्थानमें शुभग्र ह और चतुर्थ दशमस्थानेंम पापीग्रहहोवें तव वज्रयोग होताहै और विपरीत उलटे ग्रहहोनेंसे यवना मयोगहोताहै और शुभपाप दोनोंग्रहहोनेसें पद्मयोग होताहे और नवमैकादश और द्विद्वादश और त्रिपंचषष्ठाष्टमस्थानोंमें संपूर्ण ग्रहहोवें तव वापीयोग होताहै १४ और जिसके जन्मस मयमे लग्न । १ । और सप्तम । ७ ॥ स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव शकट नामकर्के योग होताहै और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ ४ दशम १० स्थानमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवें तव विहग पक्षीयोग होताहै और जिसके जन्मकालमें लग्न १ पंचम ५ नवम ९ स्थानमें संपू र्ण ग्रहस्थितहोवें तव हल योगहोताहै और लग्नकेविना और स्थानोंमें संपूर्ण ग्रहपरस्परत्रिकोण । ९ ५ में स्थितहोवें तव शृंगाटक योगहोताहै ॥ १५ ॥

सोतीनप्रकारका कहाहै । २ । ६ । १० ॥ स्थानमें । १ । और । ३ । ७ । ११ । में २ । और । ४ । ८ । १२ । स्थानमे ३ तीसरा होताहै और लग्नसें लेकर एक २ राशिके अंतरमें छै स्थानों में ग्रह स्थितहोवें तव चक्र योगहोताहै जैसे । १ । ३ । ५ । ७ । ९ । । ११ । स्थानों में संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव चक्र योगहोताहै और तैसेंहि धनभावसें लेकर । २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । स्थानमे सपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव जलधि समुद्रयोगहोताहै ॥ १६ ॥ इहेविंशति । २० । संख्याककें आकृतिज योग लग्नकुंडलीमें इनयोगोंके नामस्वरूपककें जानेजातें हैं इसककें इनयोगोंकीसंज्ञा आकृतिजकहिहैं सोमेने इसग्रंथमें कहेहै और आश्रयजात योगोंको जैसें वृद्धगर्गके मतमें कहेहै तैसेंहिकहताहो ॥ १७ ॥ और नलमुसल रज्जु इहेतीनयोगकहतेहें द्विस्वभावराशिमें और चरराशिमें और स्थिरराशिमें क्रमककें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवे तव नलमुसल रज्जु इहेयोग क्रमककें होतेहें जेसें एकद्विस्वभाव राशिमे वा दो द्विस्वभावराशिमे वा तीनद्विस्वभावराशिमें वा चार द्विस्वभावराशियों में सपूर्ण ग्रह स्थितहोवें और चरस्थिर राशिया ग्रहों ककें रहितहोवें तव नलयोगहोताहै और तैसेंहि एक चरराशिमे वा चारहि चरराशियों में संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव मुसल

राश्यंतरितैर्लग्नात्षड्ग्रहसंस्थैर्भवेच्चक्रम् अर्थात्तथैवयातैश्चक्राकारोभवेज्जलधिः १६ इत्याकृतिजाएतेविंशतिसंख्यामयासमुद्दिष्टाः आश्रयजातान्वक्ष्येयथाम तंवृद्धगर्गस्य १७ उभयचरस्थिरसंज्ञैःसर्वैर्नलमुसलरज्जवःक्रमशः केंद्रेषुसौम्य पापैर्मालासर्पश्चदलयोगौ १८ एकभवनादिसंस्थैःसख्याख्याःस्युर्यथाक्रमंयोगाः गोलयुगशूलकेदाराख्याःपाशस्तुदामनीवीणा १९ एतेषांफलयोगंकथयामियथाक्रमंमुनिभिरुक्तम् सर्वदशास्वपिफलदाःसकलाह्येतेवुधैश्चित्याः २०

योगहोताहै और तैसेंहि एक स्थिर राशिमें वा दो तीन चार स्थिर राशियोंमें संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव रज्जु योगहोताहै अवमाला सर्प दल योग कहतेहै जिसके जन्मसमयमें केंद्र । १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमे शुभग्रहस्थितहोवे तवमाला योगहोताहै और केंद्रस्थानों में पापीग्रह स्थितहोवें तव सर्प योगहोताहे जैसें केंद्रमें शुभग्रहहोवें और राशिया ग्रह रहित होवे तव माला योगकहाहै और पाप ग्रहहोवें तव सर्पयोगहोताहै और केंद्रमेहिशुभाशुभसपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव दलयोगहोताहै ॥ १८ ॥ अवगोलादिसातयोग कहतेहें जिसके जन्मकालमें सातग्रह एकस्थानमें स्थितहोवें तव गोलयोगहोताहै और सातग्रह दो राशिमें स्थितहोवें तव युग योगहोताहै और सातग्रह तीनराशिमें स्थितहोवें तव शूल योगहोताहै और सातग्रह चारराशिमें स्थितहोवें तव केदारयोगहोताहै और सातग्रह पांचराशिमे स्थितहोवें तव पाशयोगहोताहै और सातग्रह छै राशिमें होवें तव दामनी योगहोताहै और सातग्रह सातराशिमें होवें तव वीणायोगहोताहै ॥ १९ ॥ और इनों योगोंका फलयथा क्रमककें जैसें मुनियोंने कहाहै तैसें कहताहो इहेयोग सर्वदाकाल फलदेतेहें ॥ २० ॥

अवपूर्वोक्तयोगोंकाफलकहतेहैं ॥ जोमनुष्यनौकायोगमेजन्मताहैसोजलकर्केउपजीवकाकरणेवालाऔ रऐश्वर्यकोप्राप्तहोताहै औरवडाउद्यमकरणेवाला औरयशवाला औरप्रसन्नहोताहै औरकृपण औरवली औ रलोभीहोताहै ॥ २१ ॥ औरजोकूटयोगमै जन्मताहै सोझूठवोलनेवाला औरधूर्त औरवंधनकोप्राप्त औरवलवान् औरधनहीन औरशठ औरक्रूर औरपर्वत औरवनोंमेंवासकरणेवालाहोताहै ॥ २२ ॥और- योछत्रयोगमेजन्मताहै सोअपनेसंबंधियोंसेमिलनेवाला औरदयावान् औरदाता औरराजाकाप्याराऔ रश्रेष्टवुद्धिवाला औरप्रथम और अंत्यअवस्थामेश्रेष्टभाग्योंवाला औरवडीआयुषावालाहोताहै २३॥ औरयोकार्मुकयोगमे जन्मताहै सोझूठवोलनेवालाऔरगुप्तपापकरणेवाला औरचोरऔरधूर्तऔरवन मेंरत और मध्य अवस्थामें भाग्योंकर्केरहितहोताहै ॥ २४ ॥ और यो अर्धचंद्रयोगमेंजन्मतेहैं सो

अथपूर्वोक्तयोगफलानि ॥ सलिलोपजीविविभवाव्हायासख्यातकीर्तयोहृष्टाः कृपणावलिनोलुब्धानोसंभूताश्चलाःपुरुषाः ॥ २१ ॥ आनृतिककितववंधनम क्षानिष्किंचनाःशठाःक्रूराः ॥ कूटसमुत्थानित्यंभवंतिगिरिदुर्गवासिनोमनुजाः ॥ २२ ॥ स्वजनाश्रयोदयावान् दातानृपवल्लभःप्रकृष्टमतिः ॥ प्रथमेंत्येवय सिनरःसुभगोदीर्घायुरातपत्रीस्यात् २३ आनृतिकगुप्तपापाश्चौराःकितवा श्चकाननेनिरताः ॥ कार्मुकयोगेजाताभाग्यविहीनावयोमध्ये ॥ २४ ॥ सुभ गाःसेनापतयःकांतशरीरानृपप्रियावलिनः मणिकनकभूषणयुताभवंतियोगे र्धचंद्राख्ये ॥ २५ ॥ आद्यंतवयःसुखिनःशूराःसुभगानिरोगदेहाश्च ॥ भाग्य विहीनामध्येवज्रेजाताःखलैर्विरुद्धाश्च ॥ २६ ॥ व्रतनियममंगलरतावयसोम ध्येसुखार्थपुत्राढ्याः दातारःस्थिरचित्तायवयोगभवाःसदापुरुषाः ॥ २७ ॥ स्फीतयशाःसुगुणाढ्याश्चिरायुषोविपुलकीर्त्तयःकांताः शुभशतकृतपृथिवीशाः कमलभवामानवानित्यं ॥ २८ ॥

श्रेष्टभाग्योंवाले और सेनाकेस्वामि और सुंदरदेहवाले और राजाकेप्यारे और वलीहोतेहैं और मणिया सुवर्ण भूषणोंकर्केयुक्तहोतेहैं ॥ २५ ॥ और जोवज्रयोगमें जन्मतेहैं सो आद्य और अंत्य अवस्थामें सुखी और शूरवीर और श्रेष्टभाग्योंवाले और निरोगदेहवालेहोतेहैं और मध्यअवस्थामें भाग्यों कर्केरहितहोतेहैं और दुष्टोंकर्के विरोधीहोतेहैं ॥ २६ ॥ और जोमनुष्ययवयोगमें जन्मतेहैं सोव्रत- और नियमोंकेमंगलमेंरतहोतेहैं और मध्यअवस्थामें सुख धन पुत्रोंकर्केयुक्तहोतेहैं और दाता और स्थिरचित्तवालेहोतेहैं ॥ २७ ॥ और जोमनुष्यकमलयोगमें जन्मतेहैं सोवडेयशवालेऔरश्रेष्टगु- णोंकर्केयुक्त और वडीआयुषावाले और वडेसुंदरदेहवालेऔरअनेकशुभकर्मोंकर्केदृढराजाहोताहै २८

और जोमनुष्यवापीयोगमें जन्मतेहैं सोनिधिउत्पन्नकरणेमेंचतुरबुद्धिवालेहोतेहैं और स्थिर धन और सुख और संपदाकरकेयुक्त और भलीप्रकारतृप्तहोतेहे और नीतिकेसुखकरकेप्रसन्नहोतेहैं ॥ २९ ॥ और जोमनुष्यशकटयोगमेंजन्मतेहै सो रोगकरकेपीडित और खोटीस्त्रीयोंवाले औरमूर्ख और गड्डा वाहककै जीवकाकरणेवाले और धनहीन और सबंधियोंकरके और मित्रोंकरकेहीनहोतेहैं ३० ॥ और यो मनुष्य विहगयोगमें जन्मतेहे सो भ्रमणेकी इच्छावले और निंद्य और दूरवृत्तिके करणे वाले और अधिकारियों के आगे कामकरणेवाले और प्रसन्नरहने वाले और लडाई करणेमें प्रीतिवाले होतेहैं ३१ और योमनुष्यगदायोगमें जन्मतेहे सो निरंतर उद्योगकरके धनवान्होतेहैं और यज्ञ करणे वाले और शास्त्रमें और गायनमें चतुर होतेहैं और धन रत्न संपदा करके युक्त होतेहैं ३२ ॥

निधिकरणेनिपुणधियःस्थिरार्थसुखसंयुताःसुतृप्ताश्च ॥ नयनसुखसुहृष्टा वापीयोगेनराजाताः ॥ २९ ॥ रोगार्त्ताःकुकलत्रामूर्खाःशकटानुजी विनोनिःस्वाः ॥ स्वजनैर्मित्रैर्हीनाःशकटेजाताभवंतिनराः ॥ ३० ॥ भ्रमणरुचयोनिकृष्टादूताःसुरतानुजीविनोहृष्टाः कलहप्रियाश्चनित्यंविहगेयो गेनराजाताः ३१ सततोद्युक्तार्थपरायज्वानःशास्त्रगेयकुशलाश्च धनकन करत्नसंपत्संयुक्तामानवागदायांतु ३२ प्रियकलहसमरसाहससुखिनोनृप तिप्रियाःसदाकांताः आढ्यायुवतिद्वेष्याःशृंगाटकसंभवामनुजाः ३३ बव्हा शिनोदरिद्राःकृषीवलादुःखिताश्चसोद्वेगाः बंधुसुहृद्भिस्त्यक्ताःप्रेष्याहलसंज्ञि तेपुरुषाः ३४ प्रणताशेषनराधिपकिरीटरत्नप्रभास्फुरत्पादः भवतिनरें द्रोमनुजश्चक्रेयोजायतेयोगे ३५ बहुधनरत्नसमृद्धैर्भोगैर्युवतीजनाप्रियावि सुताः उदधिसमुत्थाःपुरुषाःस्थिरचित्ताःसाधुशीलाश्च ३६

और योमनुष्य शृंगाटकयोगमे जन्मतेहैं सो लडाईमें प्रीतिवाले और युद्धके उत्साहकरके सुखी और सर्वदाकालराजाके प्यारे और सुंदर देहवाले होतेहै और धनाढ्य और स्त्रीके द्वेषी होतेहै ॥ ३३ ॥ और योहलयोगमे जन्मतेहैं सो बहुत भोजनकरणे वाले और दरिद्री और खेतीके करणेवाले और, दुःखी और उद्वेगकरके युक्त और मित्र बंधुयों करके त्यागकिये हुये होतेहैं ॥ ३४ और यो मनुष्य चक्रयोगमे जन्मताहै सो अनेक राजयोंके किरीट मुकुटों करके शोभायुक्त होतेहै पाद जिसके अर्था त् बडे बडे राजाप्रणामकरैं जिसको अयसा राजाहोताहै ॥ ३५ और जोसमुद्रयोगमे जन्मते हैं सो बहुत धन और रत्नों को समृद्धि करकेयुक्त और स्त्रीजनोंकेप्यारे और पुत्रहीनहोतेहैं और स्थिर चित्त और श्रेष्ट स्वभाववाले होतेहै ॥ ३६ ॥

श्रौरयोमनुष्ययूपयोगमेजन्मताहैसोआत्मवेत्ताहोताहे श्रौरयज्ञकर्ममेंरतहोताहैश्रौरत्यागीहोताहैश्रौर सत्य शौचकर्केयुक्तहोताहेश्रोरव्रत श्रोरनियम श्रोरमत्रमेरतहोताहैश्रोरश्रेष्ठहोताहे ३७ श्रौरयोमनुष्यशरयोगमे जन्मताहैसो वाणवनानेवालाश्रौरचौरादियोंकोवाधने वाला श्रौर मृगों केसाधनकोंसेवनेवाला श्रौर मांस भोजनकरणे वाला श्रौर हिंसाके करणे वाला श्रौर खोटे घाएके करणे वाला श्रौर खोटे स्व भाववाला होताहै ॥ ३८ ॥ श्रौर यो मनुष्यशक्तियोगमे जन्मताहै सो धनकर्क रहित श्रौर व्या, कुल श्रौर दु:खीहोताहै श्रौर नीच श्रौर आलसी श्रौर वडी आयुपवालाहोताहै श्रौर संग्रामकर्म. मेंचतुर श्रौर स्थिरभाग्यों वाला होताहै ॥ ३९ ॥ श्रौर यो मनुष्यदडयोगमें जन्मताहै सो विष. मस्वभाववाला श्रौर क्रूर श्रौर धन हीन श्रौर निर्लज्ज श्रौर श्रेष्ठजनोंसे वाहर श्रौर दुःखी श्रौर नीच; श्रौरदूरवृत्तिवालाहोताहै ४० श्रौरयोमनुष्यमालायोगमेंजन्मताहैसोनित्यप्रतिसुखकोंप्राप्तश्रौरवाहनश्रौर

आत्मविद्विद्यानिरतास्त्यागयुताःसत्यसौख्यसंपन्नाः व्रतनियममंत्रनिरता यूपेजाताविशिष्टाश्च ३७ ॥ इषुकरणदस्युवंधनमृगसाधनसेविनोतिमां सादाः हिंस्रा.कुशल्पकराःशरयोगेसाधुशीलाश्च ॥ ३८ ॥ धनरहिताविकल दु:खितनीचाअलसाश्चिरायुपःपुरुषाः ॥ संग्रामयुद्धनिपुणाःशक्त्यांजाताः स्थिरा.सुभगाः ॥ ३९ ॥ विषमाःक्रूराःनि.स्वाःसर्वेसुनिर्घृणाःसुजनवा ह्याः दुःखितनीचप्रेष्यादंडप्रभवाभवतिनराः ॥ ४० ॥ नित्यंसुखप्रधाना वाहनवस्त्रार्थभोगसंपन्नाः सुभगाःसुवहुस्त्रीकामालायांसंप्रसूताःस्युः ॥ ४१ विषमाःक्रूरानि.स्वानित्यंदु.खार्दिता.सुदीनाश्च ॥ परभक्ष्यपानानिरताःसर्पे ज्ञाताभवतिनराः ४२ अधमप्रियाःसुरूपा.परदेशेष्वर्थभाजिनोमनुजाः ॥ क्रूराःखलस्वभावारज्जुप्रभवःसदाकथिताः ४३ मानज्ञाधनयुक्ताःकर्मोद्युक्ता नृपप्रिया ख्याताः ॥ वहुपुत्रा स्थिरचित्तामुसलसमुत्थाभवंतिनराः ४४ क्रू रातिरिक्तदेहाधनसंचयभागिनोतिनिपुणाश्च ॥ वन्धुहिताश्चसुरूपानलयोगे संप्रसूयंते ४५

वस्त्रश्रौरधनश्रोर भोगोंकर्केयुक्त होता है श्रौर श्रेष्ठ भार्योंवाला और वहुतस्त्रीयोंवाला होताहै ॥ ४१ श्रौर जो मनुष्य सर्प योगमें जन्मतेहै सो खोटेस्वभाववाले श्रौर क्रूर श्रोर नित्यप्रतिदु.खकर्के पीडित श्रौर दीनहोतहै श्रौर दूसरोंके अन्नजलको भक्षण करणेवाले होतेहैं ॥ ४२ ॥ श्रोर जो रज्जुयोग- मे जन्मतेहैं सो नीचोंसे प्रीतिकरणे वाले श्रौर सुदररूपवाले श्रौर परदेशमें धनको प्राप्त होनेवाले- श्रौर क्रूरदुष्टस्वभाववाले होतेहैं ४३ ॥ श्रोर जो मनुष्य मुसलयोगमें जन्मतेहै सोमानकेजाननेवा. ले श्रौर धनकर्के युक्त श्रोर कर्मोमे उद्यमकरणे वाले श्रौर राजाकेप्यारे श्रोर प्रसिद्ध श्रोर वहुतपुत्रों. वाले श्रौर स्थिर चित्तवाले होतेहैं ॥ ४४ ॥ श्रौर जो मनुष्य नल योगमें जन्मतेहैं सो वडेक्रूर श्रौर कृशदेहवालेश्रोरधनसचयकरणेवालेश्रोरवडेचतुरहोतेहैंश्रोरवंधुयोंकेप्यारेश्रौरसुदररूपवाले होतेहैं ४५

श्रोर जो गोलयोगमें जन्मतेहैं सो वलकर्के युक्त श्रौर धनरहित श्रौर वियामा. नकर्के रहित श्रोर मलीन होतेहैं श्रोर नित्यप्रतिदुःखी श्रौर दीनहोतेहैं ॥ ४६ ॥ श्रौर जो युगयोग, में जन्मतेहै सो पखंडी श्रोर धनहीन श्रोर जातिसें वाह्य श्रोर पुत्र मानधर्मसें रहित होतेहै ॥ ४७ ॥ श्रोर योमनुष्य शूलयोगमें जन्मतेहै सो वडे तीक्ष्ण श्रोर धनकर्के हीन श्रोर हिंसाके करणेवाले श्रोर श्रंगोंमें घाओं वाले श्रोर वडे शूरवीर होतेहै श्रोर युद्धकरणे कीइछावाले होतेहै ॥ ४८ ॥ श्रोर योम नुष्य केदारयोगमें जन्मतेहै सो वहुत जनोकर्के युक्त श्रोर खेतीयों के कृत्यमें वली श्रोर सत्यवादी श्रोर श्रेष्टभाग्योंवाले श्रोर धनकर्के युक्त होतेहै ॥ ४९ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें पाशयोग होताहै

वलसंयुक्ताविधनाविद्याज्ञामानवर्जितामलिनाः ॥ नित्यंदुःखितदीनागोले योगेभवंतिनराः ॥ ४६ ॥ पाखंडभागिनोवाधनरहितावावहिष्कृतायोगे सुतमानधर्मरहितायुगयोगेमानवाजाताः ॥ ४७ ॥ तीक्ष्णालसाध नहीनाहिंस्राःसुवहुक्षतामहाशूराः ॥ संग्रामलब्धशब्दाःशूलेयोगेप्रसूयंते ४८ सुवहूनामुपयोज्याःकृपीवलाःसत्यवादिनःसुभगाः ॥ केदारेसंभूताश्चलप्रभा वाधनैर्युक्ताः ४९ पाशेवंधनभाजःकार्येदक्षाःप्रपंचकाश्चैव ॥ वहुभागिनोवि शीलावहुभृत्याःसंप्रसूताःस्युः ५० दामिन्यामुपकारीपशुगणयुक्तोधनेश्वरो मूढः ॥ वहुसुतरत्नसमृद्धोधीरोवैजायतेविद्वान् ५१ प्रियगीतनृत्यवाद्या निपुणाःसुखिनश्चधनवंतः ॥ नेतारोवहुभृत्यावीणायांकीर्तिताःपुरुषाः ५२ ॥ इतिनाभसयोगप्रकरणम् ॥

सो वंधन को प्राप्त होताहै श्रोर कार्यमें चतुर होताहै श्रोर प्रपंची होताहै श्रोर वहुभागी होताहै श्रोर खोटे स्वभाववाला होताहै श्रोर वहुत चाकरों वाला होताहै ॥ ५० ॥ श्रोर योमनुष्य दामिनी, योगमें जन्मताहै सो उपकारी होताहै श्रोर पशुयोंके समूहसें युक्त होताहै श्रोर मूढ होताहै श्रोर धन कास्वामी होताहै श्रोर वहुत पुत्र श्रोर रत्नोंकीसमृद्धि वाला श्रोर धैर्य वाला श्रोर विद्वान् होताहै ५१ श्रोर जो मनुष्य वीणा योगमें जन्मतेहै सो गीत श्रोर नृत्य श्रोर वाद्य कर्के प्रीतिवाले होतेहै श्रो चतुर श्रोर सुखी श्रोर धनवाले होतेहैं श्रोर नीतिके जाननेवाले श्रोर वहुत चाकरोंवाले होतेहैं ५२ इतिनाभसयोगप्रकरणम् ॥

अवताजकमें शुभाशुभयोगकहतेहैं तिसमें प्रथम नेत्रनाशनेत्रचिन्हयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्न में स्थित चंद्रमा कर्क और मेषके नवांशमेंहोवे और वृषके नवमांशमें और धनके पूर्वनवांशमें होवे तव दृष्टिकरके हीन होताहै. और वृषके उनीमें अंशमें और मीनके वीमें अंशमें लग्न गतचंद्रमाहोवे. तव दृष्टिहीन होताहै और जिसके जन्मकालमें कर्क राशिके सूर्य चंद्रमा लग्नमें स्थित होवें और सिंहके दशअंशसें लेकर सतारां अंशपर्यंत स्थित होवे तव दृष्टिहीन होताहै अथवा सूर्य चंद्रमाक' न्यालग्नमें स्थित चतुर्थ ४ और एकोन विंशति विंशति एकविंशति ॥ ४ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ अंशोंमें स्थित होवें तव दृष्टिहीन होताहै १ और धनराशिमें सूर्य चंद्रमा लग्नगतहोवें और नवमें एकविंशति और द्वाविंशति अंशमें स्थित होवें तव दृष्टिहीन होताहै और कुंभराशिमें लग्नगत सूर्य चंद्रमा विंशति एकविंशति और द्वाविंशति और पांचमें अंशमें स्थित होवे तव दृष्टिहीन होताहै

अथताजकेशुभाशुभयोगाः ॥ तत्रनेत्रनाशनेत्रचिन्हयोगाः ॥ कर्केजोऽक ९ लवेवृषेचनवमेचापादिकेह्यंशकेथोलग्नस्थविधोवृषांऽत्यलवयोश्चैकोनविंशाद् द्वये १९ । २० ॥ कर्केसूर्यविधूतनौहरिदिगंशात्सप्तभागस्थितौ कन्यालग्नग तौयुगातिधृतिविंशस्वर्गभागस्थितौ १ गोस्वर्गाकृतिभागगौतनुगतौतौचापविं शात्त्रये कुंभाद्येचलवेशरेपुचतथानिःप्राणदृष्टिःस्मृता क्षीणेंदुंचगुरुर्नपश्यति शनिःपश्येद्धनेर्केखलौस्थेइनभाद्द्युनगौचस्वगतइंदुर्वीक्ष्यतेल्पाक्षिणी २ क्रूरे तनौतनुपतावशुभास्थितेचक्रूरद्वयांतरगतौयदिचंद्रसूर्यौ जातस्तदांधइनराञ्चि पयोद्युनेसृक्कंद्रात्तुपष्ठउदितश्चभवेत्तदांधः ३ कर्मप्रकाशेविशेषः ॥ षड्भ्योद शांतंवृषभेग्रहेभ्यस्तिथ्यंतमंधामिथुनेचभागाः ॥ कर्केहरौचस्मृतिभाष्टविंशा अलोभनागाक्षिमृगांककाष्टा ४

और जिसके जन्मसमयमें क्षीण चंद्रमाकों वृहस्पतिनदेखता होवे और शनिदेखताहोवे तव थोडी दृष्टि वाला होताहै और धन २ स्थानमें सूर्य स्थित होवे अथवा सूर्यसें दूसरे स्थान दोपापीग्रह होवें अथवा धन २ स्थानमें स्थित चंद्रमाकों पापीग्रहदेखे तव थोडीदृष्टिवालाहोताहै २ और जिसके जन्मकालमें लग्नपतिक्रूरराशिमें अष्टमस्थानहोवे अथवा चंद्रमा सूर्य क्रूरग्रहोंके अथवा सूर्य चंद्रमासें सातमें ७ स्थान मंगलहोवे तव अंध होताहै और चंद्रमासें छठेस्थानमें भोमउदितहोवे तव अंधहोताहै ३ अवकर्मप्रकाशमें अधकारयोग जाननेकेवास्ते अंध अंशकहतेहैं वृपराशिमें छठे अंशसें लेकर दश पर्यंत अंधभागहोतेहैं और मिथुनमें नव अंशसें लेकर पंद्रांअंश पर्यंत अंधभागहोतेहैं और कर्क और सिंहराशिमें अष्टादश १८ सप्तविंशति २७ अष्टाविंशति २८ इहे अंधभागहोतेहैं और वृश्चिकमें सप्तविंशति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशति ॥ २८ प्रथम १ दशम १० अंधभागहोतेहैं ४

और मकरमें छवीसे ॥ २६ ॥ लेकर उन्नी ॥ १९ ॥ पर्यंत त्रयी अध भागहोतेहैं और वृभ राशिमें अष्टम । ८ । दशम । १० । अष्टादश १८ एकोनविंशति १९ इहे अवभागहोतेहे इहे, यो अंधभागकहेहे सो चंद्रमा सूर्यकेजानने योग्यहैं ५ और क्षीण चद्रमामें विशेष कहतेहैं वृषमें एकविंशति १२ द्वाविंशत् २२ एकोनत्रिंशत् २९ अवभागहोतेहे और कर्कराशिमे एकोनविंशति १९ विंशति ॥ २० ॥ अंधभागहोतेहैं और सिंहराशिमें दशसें लेकर सोलापर्यंत अधभागकहेहैं और कन्यामें उन्नीसें लेकर इकी पर्यंत अधभागहोतेहैं ॥ ६ ॥ और धन राशिमें वीससें लेकर त्रयी पर्यंत अंधभागहोतेहे ॥ और कुंभमें प्रथम १ द्वितीय २ चतुर्थ ४ पचम अधभागहोतेहे और चंद्रमा सूर्यकी राशिमें स्थित अधभागोंको भली प्रकार देखके, और ग्रहोंकी दृष्टिसें फलकों कहे ॥ ७ ॥ अवफलकहतेहै इहेपूर्वकहेजो अधभागइनमे स्थित चंद्रमा और सूर्यलग्नगतहोवें अथवादूसरे वाहरम स्थानमें स्थित होवें तवनेत्राकानाशकर्त्ताहे ८ उौर जव चद्रमा सूर्य गुरु उौर शुक्रकर्के देखे होवें तव

मृगेंद्रवाहप्रभृतंनवद्विप्रांतोघटेष्टौदशहस्तिचंद्राः ॥ नवोडुपैचेतिविवस्वतोंटौ भागाभवेयुर्द्वितयस्यचांधाः ५ क्षीणविधोचैककरवाहुनेत्रग्रहद्विचांशाद्वृषभेथकर्के नवेंदुविंशोदशतोन्नृपांतंहरोस्त्रियांनंदरशत्रयंच ६ चापेनखाद्यंत्रिभुजांत्यमाद्यद्वि तुर्यपंचापिघटेंधभागाः सम्यग्विलोकयेंदुरविस्थराशीन्फलंवदेद्दृष्टिवशाद्ग्रहा णाम् ७ एतेपुचांधभागेपुचंद्रसूर्यौतुलग्नगौद्वितीयद्वादशस्थौचेन्नेत्रनाशस्तथाभवेत्
[८ यदातौगुरुशुक्राभ्यांदृष्टौचेत्स्वल्पदोपत· वुधेनतिमरांधः स्यात्पापैर्दृष्टैर्विना शकृत् ९ भूर्द्धेखेवाक्रूरितायेशदग्धास्तेभ्योदोप·स्यात्स्फुटोभूम्यधोन्यः सूर्येंदुभ्यांचेतिपापानुसारात् व्यक्ताव्यक्तौदक्षवामाक्षिदोपौ १० भूर्द्धेचंद्रे क्रूरितेनक्तमक्ष्णोर्दक्षस्यार्तिर्भास्करेचापरस्य पष्ठेचेदोसौम्यदृग्योगवर्ज्ये लग्नेपष्ठेशेसितेरुक्शुभैश्च ११ पष्ठाधीशेवक्रतक्षेंक्षिरोगोलग्नेवास्मिन्म दृष्टेकफात्मा

धोंडादोपकर्तहै उौर वुधकर्के देखेहोवे तव रात्रिमे अधताकतेहै और पापीग्रहों कर्के देखेहोवें तवने त्रनाशकर्तहै ९ और कहतेहै भूर्द्धेति चतुर्थभावके भुक्तांशसें लेकर दशम भोग्यांश पर्यंत क्षीणचद्रमा वा दग्धनष्टचद्रामा स्थितहोवे तव वामनेत्रका नाशकर्त्ताहै और चतुर्थ भावके भोग्यांशसें लेकरदश मभावके भुक्तांशपर्यंत चद्रमास्थितहोवे तव वामनेत्रमे प्रगट दोपकर्त्ताहे और इसीप्रकार कर्के सूर्यस्थि तहोवे तवदक्षिणनेत्रम चिन्हकर्त्ताहे और इसीप्रकार सूर्य चद्रमासे दक्षिणवामनेत्रमें पापग्रहोंकीदृष्टि से प्रगट और गुप्तचिन्हकहे १० और चद्रमा भूर्द्धेम स्थित और पापीग्रहकर्के पीडितरात्रिके जन्म में दक्षिणनेत्ररोग कर्त्ताहे और इसीप्रकार सूर्य होवे तव वामनेत्रम रोगकर्त्ताहे और छटेस्थानमें चद्र माशुभ दृग्योग हीन नेत्ररोगकर्त्ताहै और पष्ठेशशुक्रलग्नमें स्थितहोवे और शुभग्रहदर्कोहोकर्के ६ । ८ । १२ स्थानमें होवें तवनेत्ररोगीहोताहे ११ और पष्ठेशचंद्रमा वक्रीग्रहकीराशिमे होवे तवने त्ररोगीहोताहे

और षष्ठेशचंद्रमा शनिकर्के देख्याहोवे तव श्लेष्मविकारसें और मंगल कर्के देख्याहोवे तव तापसें और गुरु शुक्र बुध कर्केदेख्याहोवे तव क्रमसें सोफादिविकार कर्के अंध होताहै १२ और कहतेहे लग्नादित्येति लग्न और चंद्रमा सूर्य क्रूरग्रहोंकर्के युक्त होवें तव अंध योगहोताहै और लग्न शुभस्थानमें होवे और लग्नेश और सूर्यक्रूर युक्त छठे स्थानमें होवें तव अंधयोगहोताहै और क्रूरलग्न षष्ठेश कर्के वा मगल कर्के युक्त होवे तव अंधयोगहोताहै और लग्नेश वक्रीहोय कर्के चंद्रमार्मे वाहरमें स्थानमें स्थितहोवे तव अंधयोगहोताहै २१ चद्रादित्याविति चंद्रमासूर्य तीसरे वाकेंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थितहोवें तव अंधयोगहोताहै अथवा मंगल केंद्रमें स्थितपापग्रहोंकर्के देख्या होवे तव अंधयोगहोताहै और शुभग्रह छठे अष्टमें वाहरमें स्थानमें होवें और चद्रमासूर्य तीसरे वा केंद्रमें स्थित क्रूरदृष्ट होवें तव अंधयोगहोताहै और मकरकुंभराशिमे सातमें स्थनमें सूर्यस्थित होवे तव अंधयोगहोताहै १४ सूर्यइति सूर्य वा चंद्रमा अधकाराशमें स्थितहोवें तव अंधयोगहोताहै और दिनके जन्ममें भृगुपरि सूर्य चतुर्थसें दशमपर्यंत सूर्यस्थितहोवे क्रूर कर्के देख्याहोवे तव दक्षिण नेत्रनें काणा होताहै और षष्ठेश चद्रमा होवें क्रूरोंकर्के दृष्ट और शुभदृष्टिसें हीन तवदक्षिण नेत्रसें

भौमेजेवेभार्गवेज्ञेसचंद्रेतापाच्छोफात्श्लेष्मतः शस्त्रतोंधः ॥ १२ लग्नादित्याव्जत्रयेक्रूरमध्येलग्नाधीशेक्रूरितेनोदयेशे. षष्ठेक्रूरेलग्नगेतद्वभौमेषष्ठेशेवावक्रतेस्मिन्विधूधे १३ चंद्रादित्यौविक्रमेकेंद्रगौवाभौमेकेंद्रेचेदसौम्यर्क्षगेवा क्रूरैर्दृष्टैरंध्रषष्ठांत्यगाः स्युःसौम्यःसूर्येऽस्तेर्कपुत्रगृहेवा १४ सूर्येचंद्रेवांधकारांशमध्येचक्षुर्नाशोऽब्जेसभौमेन्हिशुक्रे युक्तेमंदेनासितेर्केचपुण्येसौम्येदृष्टेवामकाणोनिशायाम् १५ सूर्येभूर्द्वेचान्हिदक्षाक्षिकाणश्चंद्रेरीशेभूसुतेचेतिलग्ने; सूर्याधःस्यात्ज्ञारयोश्चिन्हमक्ष्णोरेकांशेवाभौमशीतांशुयोगात् ॥ १६ ॥ सूर्येनष्टेवक्रराशिस्थितेचभौमाक्रांतेवाकुलीरस्थितेऽब्जे नंदांशांतश्चापगेचाद्रिमेंशेनक्तंभानौचान्हिमंदेक्षितेंधः १७ क्षीणेचंद्रेनीश्वरैर्किप्रदृष्टेचापस्थितौवांधतत्स्थेद्वयोर्वा

काणा होताहै और षष्ठेश भौमलग्नमें होवे शुभदृष्टि राहित और पापदृष्टि युक्त तव पुष्प युक्तकाणादक्षिणनेत्रसे होताहै और चंद्रमा मगल कर्के युक्त अष्टमहोवे और दिनेजन्महोवे तव काणाहोताहै और रात्रिजन्ममें नवमस्थानमें सूर्य शनि होवे और शुभग्रहन देखें तव वामनेत्रसें काणाहोताहै १५ और चतुर्थसें क्रूर दशमपर्यंत सूर्य दिवाजन्ममें होवे तव दक्षिणनेत्रसें काणाहोताहै और षष्ठेशचद्रमा वा मगल लग्नमें होवे और सूर्यसें वाहरमें मंगल वुध होवे तव नेत्रोंमें चिन्हहोताहै वा मंगल चद्रमा एक अशमें होवे तव चिन्हहोताहै ॥ १६ ॥ और कहतेहे सूर्येनष्टइति दिनके जन्ममेंसूर्यनष्टसज्ञामें स्थितहोवे और मंगलकोराशिमें वामगलकर्के युक्त तव अंधयोगहोताहे और ककराशिमें अंशांशोंकेमध्य चद्रमाहोवे तवअंधयोगहोताहैऔर रात्रिके जन्ममें धनराशिमें और अंशांशोमेंस्थित चद्रमाहोवे तव अंधयोगहोताहै और सूर्यदिवाजन्ममें धनके प्रथमांशमें स्थितशनिकर्केदेख्याहोवे तव अंधयोगहोताहै १७ क्षीणचद्रइति क्षीणचंद्रमाशनिकर्के दृष्टधनराशिमें स्थितहोवे और गुरुशुक्रकर्के अदृष्टहोवे तव अंधहोताहै

सूर्यसें दूसरेस्थानमें चंद्रमाक्रूरयुक्तहोवे तव अंधहोताहै औरदशमस्थानमेंचंद्रमापापदृष्टऔरशुभदृष्टिही नहोवेतव अंधहोताहै १८ नीचाब्जइति नीचराशिमें चंद्रमा छठेवाहरमें होवे और क्रूरदृष्टहोवे तव अंधहोताहै और अस्तमंगल लग्नमें स्थितहोवे तव अंधाहोताहै और जलराशियोंमें अष्टमनवमगत चद्रमासूर्यकेंद्रस्थानमें होवें तव अंधहोताहै और अस्तहोयकर्कशनी नीचमेंस्थितहोवे औरसूर्यग्रहणके समयमें जन्मे सो अंधहोताहै १९ अवपराशरीमेंकहतेहैं धनभावकास्वामी शुक्रकर्के युक्तहोवे अथवा शुक्रकेक्षेत्र मूलत्रिकोण उच्चराशियोंमें स्थितहोवे और लग्नेशकर्के संवधकोंप्राप्तहोवे तव नेत्र हीनकर्त्ता है २० और तिसरस्थानमें चंद्रमासूर्यस्थितहोवें तव रात्र्यंधहोताहै और धनेशलग्नेश और सूर्यएकस्थानमें स्थितहोवें तव अंधहोताहै और पितामाता भ्रातादिलग्नोंके स्वामी धनेश और सूर्यसें मिलकर्के एकस्थानमें स्थितहोवें तव पित्रादियोंकों अंधताकहे २१ ॥ इतिनेत्ररोगप्रकरणम् ॥ अववाग्दोषप्रकर

सूर्यैध्यर्क्षेक्रूरयुग्मार्दितेचव्योमस्थेंदुप्रेक्षितेचाल्पदृष्टिः ॥ १८ ॥ नीचाब्जे चांत्याद्विषो.क्रूरदृष्टेभूमिपुत्रेभगतेकोस्तगेच केंद्रेकैंद्वोरंध्रभागेवुराशौनीचेमं देकोशुगेकोंपरागे १९ पराशरीये शुक्रेणयुक्तोयदिनेत्रनाथःशुक्रस्यवार्क्षादिगृहत्रयस्थः संवंध्यपिस्याद्यदिदेहपेननेत्रंविधत्तेविपरीतभावं २० तत्रस्थितौचंद्ररवीनिशांध्यंजात्यंधतांतित्रपदेहपार्कोः पैत्र्यर्क्षनाथेनयुतास्तदांध्यंकुर्वंतिमात्रादिफलंतथेदृक् २१ ॥ इतिनेत्रदोषप्रकरणम् ॥ अथवाग्दोषप्रकरणम् ॥ ॥ तत्रहोराशंभुप्रकाशे ॥ कर्काल्यंत्यगतैःपापैर्भांत्यस्थैर्वाह्येपविधौ मूकःपापेक्षितेसद्भिर्दृष्टेगीःस्याच्चिरेणतु १ क्रूरग्रहैःसंधिगतैःशुभालोकनवर्जितैः हिमांशुसहितैर्वालोजडःस्यान्नात्रसंशयः ३ ॥ कर्मप्रकाशेपि ॥ ज्ञेकर्कटालिझषगेतरणेरधःस्थेचंद्रेक्षितेरिपुपताविहपापदृष्टे वह्निष्णुचंद्रमसिभौमयुतेचलग्नेतुंगस्वरोरिपुवुधेरसनाविनाशः ४

ण कहतेहैं तिसमेंप्रथम शंभुहोराप्रकाशमें कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें कर्क और वृश्चिक और मीन राशिमें पापीग्रहस्थित होवें और राशिके अंत्यमें वात्रपराशिमें चंद्रमास्थितहोवे और पापदृष्टहोवे सो मूक अर्थात्गुगाहोताहै और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे चंद्रमा तव चिरकालकर्केवोलने वाला होताहै अर्थात्पाचवर्षके उपरंतवाताकरताहै १ और जिसके जन्मसमयमें क्रूरग्रहसंधिगतहोवे और शुभदृष्टिकर्के रहितहोवें अथवाक्रूरग्रहचंद्रमाकर्के युक्तहोवें तव वालकजडकीन्याईहोताहै ३ और कर्मप्रकाशमें कहतेहैं ज्ञइति जिसके जन्मसमयमें कर्कटवृश्चिकमीनराशिमें स्थितवुधसूर्यसें अधस्थनीचेचंद्रमाकर्के देख्याहोवे तव जिह्वादोषहोताहै और छठेस्थानकास्वामीवुधनिः शब्दराशि ४ । ८ १२ में स्थितहोवे और पापीग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव गुंगाहोताहै और शुक्लपक्षमें चद्रमामंगलकर्के युक्तलग्न में स्थितहोवे तव गुंगाहोताहै और षष्ठेशवुधलग्नमें स्थितपापीग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव गुंगाहोताहै ४

और कहतेहैं सोमारमजेति बुध शनिके गृहमें अर्थात् मकरकुंभराशीमें स्थितहोवे तब गद्गदवाणी वा ळाहोताहै और बुधनवमस्थानमें और शुक्रदशमस्थानमें स्थितहोवे तब ळछ्छोकिवाला अटककर्के बोलनेवालाहोताहै और बुधशनिकर्के सप्तमदृष्टिसें देख्याहोवे तब कफकर्के ळछ्छोकिवालाहोताहै और दोपापीग्रहएक अंशमें स्थितहोवे तब ळछ्छोकिवालाहोताहै ५ और सर्वार्थचिंतामणीमेंकहाहै जिसकेजन्मसमयमेंधन भावकास्वमीशुभग्रहोंकर्केयुक्त त्रिकोण ९ ५ और केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमेंस्थितहोवे वाउच्चमेंस्थितहोवे शुभग्रह और पुरुषग्रहोंकिदृष्टिकर्के युक्तहोवे सो युक्तिकर्के सहितश्रेष्ठवाणी बोलने वालाहोताहै ६ और धनभावकास्वामी बृहस्पतिकर्केयुक्त अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तब मूकअर्थात् गुंगाहोताहै और इसिप्रकार पित्रादि धनभावकेस्वामी बृहस्पतिकर्केयुक्तअष्टममें स्थि

सोमात्मजेशनिग्रहेधृतगद्गदोक्तिर्मार्गेस्थितेथचासितेविदिलळ्ळोक्तिः ज्ञकोरयोःसमदृशाकफवाक्तथैकभागस्थयोरशुभयोरसनाविनाशः ५ सर्वार्थचिंतामणौ वाक्स्थानपेसौम्ययुतेत्रिकोणेकेंद्रस्थितेतुंगसमन्वितेवा शुभाक्षितेपुंग्रहदृष्टियुक्तेवाग्मीभवेद्युक्तिसमन्वितोसौ ६ वाक्स्थानपेदेवपुरोहितेनयुक्तेयदानाशगतेत्रमूकः पित्रादिकानामियमेवरीतिरुक्तामुनीन्द्रैर्बहुशास्त्रविद्भिः ७ अथ मुखरयोगः क्षीयमाणविधुरत्रभौमयुक्चाशुभेतुमुखरःप्रजायते लग्नआरफुजितिसप्तमदृष्ट्याज्ञःप्रपश्यतितदामुखरःस्यात् ८ अथहास्यमस्करयोगो यज्ञेहास्यपरःकुजेथसबलेभेकोक्षितौवित्कुजौ याज्यातांखलुहास्यपेत्परजनात्तद्वच्छनेर्भेपितौ षष्ठाष्टांत्यविधुश्चपश्यतिसितंचेल्लोकविस्मापता वाक्स्फुरतिर्मिथ आरसौम्यशशिनश्चावीर्यवाक्दृग्युताः ९

नहोवें तब बहुतशास्त्रोंके जाननेंवाल्यो मुनियोंने पित्रादियोंको मूकताकहिहै ७ अबमुखरयोगताजकमें कहतेहैं क्षीणचंद्रमंगलकर्केयुक्त और पापग्रहकर्केयुक्तहोवे तब मुखरहोताहै और लग्नको और शुक्रको सप्तमदृष्टिकर्के बुधदेखताहोवे तब भीमुखरहोताहै ८ अबहास्यमस्करयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मंगलबलवान्राशिमेंस्थितहोवे और सूर्यकर्केदृष्टबुधमंगलदोनों ग्रहहोवें सो यज्ञमें हास्यके करणेवालाहोताहै और दोनोंबुधमंगल मकर कुंभराशिमें स्थितहोवें और मंगलबलवान्होवे तब यज्ञ करणेवाल्योंको दूसरेकिसीमनुष्यसें हास्यको प्राप्तकर्ताहै और जिसके जन्ममें छठे आठमें बारहमें स्थानमें चंद्रमास्थितहोयकर्के शुक्रकोंदेखे तब लोकोंको आश्चर्यकोंप्राप्तकर्ताहै और मंगलबुधचंद्रमा बलीहोयकर्के आपसमेंयुक्त और देखते होवें तब वाक्स्फुरतीवाला शीघ्रबोलनेंवालाहोताहै ९

औरकहतेहैं योग्रह अपने उच्चमें औरअपनेक्षेत्रमेंस्थितहोताहैसोदोषकरणेवालानहींहोताहैअर्थात्पापीग्रहवी उच्चस्वक्षेत्रमेंदोषनहींकर्त्ताहै और उच्चस्वक्षेत्रकेविनाछठे आठमें बाहरमें स्थानमें शुभग्रहवीदोषकर्त्ता है इहे संपूर्णयोगोंमें विचारहै १० इतिवाग्दोषप्रकरणम् अथमतिहीनयोगकहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें शनि बुधदोनोंस्थितहोवें-और सप्तमदृष्टिकर्के मंगलदेखताहोवे सो मनुष्यबुद्धिहीनहोताहै और जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाके मध्यमें मंगलस्थितहोवे तव बुद्धिहीनहोताहै ॥ १ ॥ और कहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें चंद्रमा स्थित होवे और अधिकारकर्के युक्त दशम स्थानमें शनि स्थित होवे और सप्तमदृष्टिकर्के बुधदेखताहोवे तव बुद्धिहीन होताहै और जिसके जन्मलग्नमें मंगल चंद्रमा दोनों स्थित होवें और पूर्ण दृष्टिकर्के बुध देखे तव बुद्धिहीन होताहै २ और लग्नेश्वर होय-

दोषकृन्नचसर्वत्रस्वोच्चस्वर्क्षगतोग्रहः षडादित्रयसंस्थश्चेत्तद्विनादोषकृच्छुभः १० ॥ इतिवाग्दोषप्रकरणम् अथमतिहीनयोगाः लग्नगौशनिबुधौद्युनदृष्टौ सूक्ष्मपश्यतितदामतिहीनः चंद्रभानुविवरेयदिभौमोयास्यतीहखलुबुद्धिविहीनः१ लग्नसंस्थहिमगोदशमस्थेसाधिकाररविजेद्युनदृष्टौ ॥ ज्ञेक्षितेतितदयुग्बुधपूर्णेक्षणक्षेतिमतिनाशनकुजेन्दू २ लग्नेश्वरेशशिनिभौमनिपीडितेचबुद्ध्याविहीनउदभेसगुयेपिनद्वत् ॥ एकर्क्षगैकलवगौरिपुगौशनीनौदृष्टौखलैर्गतमतिःशुभदृष्टिहीनौ ३ पंचमेमंदसंयुक्तेलग्नेवामंदवीक्षिते ॥ तदीशेपापसंयुक्तेबुद्धिजाड्यंभवेत्तदा ४ मंदमांद्यगुसंयुक्तेपंचमेशुभवर्जिते ॥ तदीशेपापसंदृष्टेविस्मृतिःप्रायशोभवेत् ५ नीचमूढारिगेहस्थेपापखेचरवीक्षिते ॥ बुद्धिविस्मृतिपूर्वास्यात्कारकेऽशुभसंयुते ६ ॥

कर्के चंद्रमा मंगलके साथ युक्त होवे तव बुद्धिहीन होताहै और तैसें हिलग्नकास्वामी चंद्रमा बुध कर्के युक्त लग्नमें होवे तव बुद्धिहीनहोताहै औरशनि सूर्य एकराशिमें और एक नवांशमें स्थित छठे स्थानमें होवें और शुभदृष्टि कर्के हीन और पापग्रहों कर्के देखेहोवें तव बुद्धिहीन होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें पंचमभावशनिकर्के युक्तहोवे अथवाशनि कर्के देख्याहोवे और पंचमेश पापीग्रहों कर्के युक्त होवे तव बुद्धिमें जडताकर्त्ताहै ४ और पंचमभावशनि और गुलिक और राहुकर्के युक्त होवे और शुभग्रहकर्के हीन होवे और पंचमेश पापग्रहोंकर्के देख्याहोवेतव बुद्धिविस्मृतिकर्त्ता है ५ और जिनके जन्मसमयमें बृहस्पति नीच औरअस्तऔरशत्रुकेघरमेंस्थितपापग्रहोंकर्केदेख्याहोवे युक्तहोवेतवबुद्धिविस्मृतिवालाहोवाहैअथवाचरकारकपापग्रहोंकर्केयुक्तहोवेतव बुद्धिहीनहोताहै ६

इतिवुद्धिहीनयोगप्रकरणम् अबकर्णदोषकेयोगकहतेहैकर्मप्रकाशमें ॥ सौम्यइतिपष्ठेशबुध छठे आठमे बारहमें स्थानमें स्थित होवे और शनिक्रूरदृष्टिकर्के देखताहोवे तव बोलाहोताहै और षष्ठेशबुधकों और षष्ठभावकों सतनदृष्टिकर्के शनिदेखे तव बोलाहोताहै और धनराशिका वृहस्पति शनिकीह ष्टीमें स्थित बुध शुक्रकर्के युक्तहोवे तव बोला होताहै और मंगलकर्के युक्त पूर्णचंद्रमा छठे स्थान में स्थित होवे तब बोलाहोताहै १ नक्त मिति रात्रिकेजन्ममें छठे स्थानमें बुध होवेतब वाम कर्णसें बोला होताहैइसीप्रकार रात्रिके जन्ममें दशम स्थानमें शुक्रहोवे तव वामकर्णसें बोला होताहै २इति कर्णदोषयोगाः अबखंजयोगकहतेहैं जिसकों भाषामें लूल्हाकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेष वृश्चिककर्क कंट मकर मीन राशिमें शनि चंद्रमा दोनों स्थित होवें,औरक्रूरग्रहकर्केयुक्त होवेंतवलूल्हाहोताहै और जिसके जन्मसमयमें गुरुसहममें कर्क वृश्चिक मीन मकर मेष लग्न स्थित होवेंतब खंजा होताहै ॥ ३

इतिवुद्धिहीनयोगप्रकरणम् ॥ अथवधिरयोगाः ॥ कर्मप्रकाशे ॥ सौम्येरिपेचकुगृहे ६।८। १२ शनिनातुरीयदृष्टेरिपैसमदृशाबधिरत्वदोषः ॥ चापस्थवक्रशनिहृग्गवाक्पतौज्ञशुक्रान्वितेचारिपुभेकुजपूर्णविध्वोः १ नक्तंवुधेरिपुगृहोसितेचव्योमसंस्थिते ॥ उच्चैःस्वरेणशृणुतेश्रवणेदक्षिणेतरे २ ॥ इतिश्रवणदोषयोगाः ॥ अथखंजयोगाः ॥ मेषालिकर्कमृगमीनगतौशर्नीदूक्रूरान्वितौभवतितत्रनरस्तुखंजः कर्कालिमीनमृगमेषविलग्नसंस्थेगुर्वाख्यसद्मनितदाभवतीहखंजः ३ होराशंभुप्रकाशेपि लग्नेझषेचंद्रयुतेचयद्वासिंहाजचापांतगतश्चपापैः ॥ वृषेविधावर्कयमारदृष्टेपंगुर्नरःस्याच्छुभदृष्टिहीने ॥ ४ ॥ अथकुष्ठयोगाः चंद्रोमेषवृषरुथःशनिभौमाभ्यांयुतस्तदासगदकुष्ठी ॥ मीनालिकर्कटस्थाःशनिशुक्रकुजेंदवोरुधिरकुष्ठी ५ क्रूराःकुलीरझषवृश्चिकराशिसंस्थालूतादिकंचपरिवर्त्तकजातकुष्ठं षष्ठाधिपोयदिगुरुरिपुपःसितोवाक्रूरेक्षितस्तनुगलोवदनस्थशोफी ६

और शंभुहोराप्रकाशमेंकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें मीनलग्न मेंचंद्रमाहोवे और सिंह और मेष और धनके अंत्यार्ध में पापीग्रहस्थितहोवें तब पंगु होताहै और वृषराशिमेंचंद्रमासूर्य शनि मंगलकर्केदेखाहोवे और शुभग्रहोंकीदृष्टीसेंहीनहोवे तव पंगुहोताहै ४ अबकुष्ठयोगकहतेहैं जिसकेजन्मकालमें मेष वृष राशिमें चंद्रमास्थितहोवे और शनिमंगलदोनोंकर्केयुक्तहोवेतवरोगयुक्तकुष्ठीहोताहै और मीन वृश्चिक कर्कटराशिमें शनि शुक्र मंगल चंद्रमा स्थितहोवें तवरुधिरकर्के कुष्ठीहोताहै ५ और जिसकेजन्मकालमें क्रूरग्रह मीन वृश्चिक कर्कराशिमें स्थितहोवें तवलूता और मंडालों कर्केयुक्तकुष्टहोताहै और जिसकेजन्मकालमें छठेभावकास्वामी वृहस्पति वा शुक्रहोवे और क्रूरग्रहकर्केदेखाहोवें तब गल और मुख में सोजाकर्केकुष्ठहोताहै ६

और जिसकोंवाहरमेंस्थानमें वृहस्पतिहोवेतव गुप्त रोगीहोताहै और शनिमंगलवाहरमें वाछठेस्थानमें स्थितहोवें तवफोडयोंकर्केयुक्तहोताहै ७ और कर्कवृश्चिकमीनराशिमेंचंद्रमासूर्यदोनोंक्रूरग्रहकर्केयुक्तहोवें तवश्वेतकुष्ठीहोताहै और पापग्रहकर्केयुक्तचंद्रमाहोवे तव कुष्ठी सुखकर्के रहितहोताहै ८ अवकुब्ज योगकहतहैं आद्यंतमइति चंद्रमाकीराशिके प्रथम १ अंशमें वा अंत्यकोंतीमें ३० अंशमें शनि स्थितहोवे और क्रूरग्रहोंकर्केदेख्याहोवेतवकुब्वाहोताहै और लग्नकास्वामी मंगल शनिके ऊर्ध्वभूमि केंद्रमें स्थितहोवे और वक्रग्रहकीराशिमें होवे तवकुब्वाहोताहै और भूमिकेंद्रकहतेहैं शनि सें लेकरचतुर्थराशिभूमिकेंद्रहै तिससेंदशमपर्यंत ऊर्ध्वकेंद्रकहाहै और चक्राल्पराशि यों मीन मेषहै तिन

द्वादशस्थोयदाजीवोगुप्तरोगीतदाभवेत् ॥ शनिभौमौरिष्फसंस्थौषष्ठस्थौ वालदाव्रणी ॥ ७ ॥ सक्रूरौचंद्रयुक्तौचकर्कवृश्चिकमीनगौ श्वेतकुष्ठीखलाद्यं दौकुष्ठीसुखविवर्जितः ८ अथकुब्जयोगाः आद्यंतिमेंथदरजेशशिराशियातेसूर्यात्म जेचात्रभवेच्चकुब्जः भूस्थार्कजोपरिगतेचविलग्ननाथेचक्राल्पराशियुजिभूतन येचकुब्जः ९ अथवामनरूपयोगः यदिपृष्ठोदयराशिगंविधुंराविजोवेश्मगतः प्रपश्यति लघुकोथोदयपेत्यमाजभेप्रवदंत्यत्रजनुर्लघीयसः १० अथनिर्बल योगः चंद्रंविरूपयादृष्ट्यायदिपश्येच्छनैश्चरःनिःप्राणश्चतदाजंतुर्निवलश्चभवेद्ध्रु वम् ॥ ११ ॥ अथांगछेदयोगः चंद्रभौमौयदालग्नेअंगछेदःप्रकीर्तितः लग्नगेंदौ कलत्रस्थेभौमेंगछेदईरितः १२

में लग्न का स्वामि होय कर्के मंगल स्थितहोवे तव कुब्वाहोताहै ९ अववामन योग कहतेहैं जिस केजन्मकालमें पृष्ठोदय १।२।४।८।१० राशियोंमेंचंद्रमास्थितहोवे तिसकों मकर कुंभ मेंस्थि तशनि देखे तव वामना होताहै और जिसके जन्ममें लग्नस्वामि मेषराशिमें वाहरमें स्थानमें स्थितहोवे सोवामनरूपहोताहै १० अवनिर्बलयोगकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा कों क्रूरदृष्टिकर्केवल हीन शनैश्चरदेखताहोवेसोनिश्चयकर्केनिर्वलहोताहै ११ अव अंगछेदयोगकहतेहैं जिसके लग्नमें चंद्र मा भौम दोनों लग्नमें स्थितहोवें तव अंगछेदहोताहै और लग्नमें चंद्रमा और सप्तममें मंगलस्थितहोवे त व अंगछेदकहाहै ॥ १२ ॥

अबचोर योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें बुध सूर्य मंगल तीनों जन्मलग्नसें सप्तमस्थानमें स्थितहोवें और चंद्रमा चतुर्थ दृष्टिकर्के और सप्तम दृष्टिकर्के देखदाहोवे तब सर्वदाकाल चोरकर्त्ताहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासें केंद्रस्थानों १ । ४ । ७ । १० ॥ मेंमंगलस्थितहोवे और शुभग्रहोंक के देखपानहोवे तबचोर होताहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शनि मंगलबुधचंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो चोर होताहै १३ अबपुंश्चलयोगकहतेहैं जिसके जन्मलग्नसें सप्तम शुक्रबुध दोनों होवे सो पुंश्चलहोताहै और मंगलशुक्रदशममें वा सप्तममें स्थितहोवे तब परस्त्रीगामी होताहै और, मंगल शुक्र जन्मलग्नेनें चतुर्थस्थित होवें तबपरस्त्री गामी होताहै और शनि सूर्य बुध शुक्र च, तुर्थस्थितहोवें तब परस्त्रीगामी होताहै और शनिसूर्य बुध शुक्र चतुर्थ स्थित होवें वास्वक्षेत्रीहोवें तब परस्त्रीगामी होताहै और जिसके जन्मकालमें दशमसप्तममें बुध शुक्र शनिहोवें अथवादिने जन्ममें

अथचौरयोगाः ॥ ज्ञार्क्याऽसृजाद्युनगताविधुनाचतुर्थपूर्णेक्षिताःप्रजनयंतिसदैवचौरं केंद्रेकुजेचशशिनश्चशुभैर्नदृष्टेचौरःकुजज्ञविधुवीक्षितएनिरस्ते ॥ १३ ॥ अथपुंश्चलयोगाःशुक्रज्ञौद्युनगौतथास्मृगदृशांस्यात्पुंश्चलोऽसृक्सितौखेस्तेवापरदारगः कुजसितौतुर्येचखेपुंश्चलः मंदेनेंदुजआस्फुजित्सुखगतःस्वस्थोपिवापुंश्चलःखेचास्तेज्ञसितार्कजाअथादिनेस्वर्क्षेसितःपुंश्चलः १४ अथरूपद्वययोगः दग्धःसूर्यास्तभागेचेद्रूपद्वयमुदाहृतं भगंलिंगंचविज्ञेयंजंतोर्जातस्यानिश्चितम् १५ दग्धस्यलक्षणं कर्मप्रकाशे योभानोर्भवनंगतोजिगमिषुर्वासौविरश्मिर्मतइति. अथषंढत्वयोगाः ॥ शुक्रशनिनायुक्तेदशमेरंध्रेथशुभदृशाहीने ॥ मंदेषष्ठांत्यगतेजलराशौषंढत्वभाग्भवति १६ सिताढ्यमंदेदशमेनपुंसकंषष्ठेव्ययेचार्कसुतेंबुराशौ ॥ नपुंसकंवैखलुशुक्रतःस्यात्प्रकीर्तितंताजकरोमकाद्यैः १७

स्वक्षेत्रमें शुक होवे तब परस्त्रीगामी होताहै १४ ॥ अबरूपद्वययोगकहतेहैं योग्रहदग्धसंज्ञाकों प्राप्त होयकर्के सूर्य केसप्तमांशमें स्थित होवें सो दोरूप पुरुष स्त्री दोनोके चिन्हतिसमनुष्यकों होतेहैं १५ अबदग्धग्रहकालक्षण कहतेहैं योग्रहसूर्य साथ एक अंशमें होताहै तिसकी दग्धसंज्ञाकहिहै अबक्लीव योगकहतेहै जिसके जन्मसमयमें शनिकर्के युक्त शुक्र दशम ॥ १० ॥ वा अष्टम ॥ ८ ॥ स्थानमें स्थित होवें और शुभग्रहोंकी दृष्टिकर्के हीन होवें तब क्लीवहोताहै और जिसके जन्ममें कर्क वृश्चिक मीनराशिमें छठे बाहरमें स्थानमें शनि स्थित होवे तब नपुंसकहोताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्ममें शुक्र कर्के युक्त शनि दशम स्थानमें होवे तब नपुंसकहोवे और जलराशिमें शुक्रसें शनि छठे बाहरमें स्थानमें स्थित नपुंसककर्त्ताहै इहेताजक शास्त्रके जानने वाल्योंनें रोमकादियोंनेकहाहै ॥ १७

श्रीर जातकालंकारमें विशेषकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा आपसमें परस्परदेखें तब क्लीब होताहै १ श्रीर बुध शनि परस्परदेखे तब क्लीब होताहै २ श्रीर मंगल समराशिगत सूर्य को देखे तब क्लीव होताहै ॥ ३ ॥ श्रीर लग्न श्रीर चद्रमा दोनो ओजराशियोंमें स्थित होवें तब क्लीव होताहे ४ श्रीर बुध ओजराशिमें स्थित होवे श्रीर चद्रमा समराशिमें होवे श्रीर मंगल इनकों दोनो देखे होवे तब क्लीव होताहै ५ श्रीर पुरुष राशिमें ओजराशि लग्न गतहोवे श्रीर चद्रमा तिसमेंस्थित होवे तब क्लीवहोताहै६ १८ अथकामातुर श्रोर अल्पप्रजायोगकहतेहे जिसकेजन्मसमयमें शुक्रअप्रसूतिराशियोंमें मिथुनसिंह कन्या धनु· इहेअप्रसूतिराशियांहें इनमेंस्थितहोवे श्रीर मिथुनके परार्द्धमें होवे श्रीर कुग्रह षष्ठ अष्ट म द्वादशस्थानमें स्थितहोवे तब कामातुरकर्त्ताहै श्रीर शुक्र मीन राशिमेंस्थितहोवे श्रीर षष्ठेश मंग लकर्के हतहोवे अर्थात् छठे भावके स्वामीको मंगलनें युद्धमें जीत्याहोवे तब मृतापत्य वा अल्पाप

जातकालंकारेविशेष अन्योन्यंपश्यतश्चेत्तरणिहिमकरौतत्तनूजौमिथोवाभूसूनुः पश्यतीनंसमभवनगत लग्नचंद्रौयदौजे ओजर्क्षेयुग्मराशौशशिसुतशशिनौभू सुतेनेक्षितौचेत् पुंराशौलग्नशुक्रौतदनुहिमकरःक्लीवयोगाःषडेते ॥ १८ ॥ अथकामातुराल्पप्रजायोगाः शुक्रेप्रसूतिगमनान्मिथुनापरार्द्धेस्वांशेहारिप्रथम कार्द्धगत कुगेहे कामातुरंजनयतेझषगस्तथास्मिन्षष्ठेश्वरेकुजहतेचमृताल्प सूतिम् १९ अथाश्चर्यविकारयोगा, भूमीपुत्रशशिशरवियुतेदर्शपूर्णेष्टकालेमदेत्य स्थेकुजतनुभुजोर्योगतोस्तेदृशावा भौमेचालौगुरुसितदृशावर्जितौतौवलग्नेमू र्त्तौमंदेकुजयुजिमदेसम्यगश्चर्यविकार. २० क्रूरेविनाशनस्थेमदगेशुभदृष्टिव र्जितेश्चर्यरुक् अन्त्यरतगेहेमदेवाल्लौपुष्ट्येसभूमिसुते ॥ २१ ॥ अथव्रणयोगाः

त्यकोंप्राप्तकर्त्ताहै १९ अव आश्चर्यविकारकेयोगकहतेहैं भूमीपुत्रइति जन्मकालमें जोगतपर्वांतपलग्न है तिसम जन्म श्रोर मगल सूर्यकर्के वा चंद्रमाकर्कें युक्तहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै श्रीर जन्मलग्न से वाहरमे स्थानमें शनि स्थितहोवे श्रोर पापग्रहोकर्क देख्याहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै श्रीर लग्ने श जोहे सो मगलकर्के देख्याहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै श्रीर वृश्चिक राशिमें मगलहोवे श्रीर ज न्मलग्न गुरुशुक्रकादृष्टिसे हीनहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै श्रीर लग्नमें शनि श्रीर सप्तममें मंगलहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै २० क्रूरइति अष्टमेश क्रूरग्रहसप्तममें होवे श्रीर शुभदृष्टिहीनहोवे तब आश्चर्यरो गीहोताहै श्रीर दिनमें जन्में श्रीर सप्तमशनिहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै श्रीर वृश्चिक राशिमें नवमें स्थानमगलहोवे आश्चर्यरोगीहोताहै २१ आश्चर्यरोग भाषया ममेसीया इति ॥ अबव्रणयोगकहतेहैं

भूपुत्रइति जिसके जन्मसमयमें वृश्चिक राशिका मंगललग्नमेंस्थितहोवे और वृहस्पतिऔर शुभकीदृष्टि सें रहितहोवे तब व्रणपिटकादि रोगयुक्तहोताहै और वृश्चिकराशिका मंगल चतुर्थस्थानमें स्थितहोवे अथवा वृश्चिककेनवांशमें चतुर्थस्थितहोवे अथवा केतुकर्केयुक्त चतुर्थस्थानमें होवे तब व्रणादि रोगहोतेहैं और केतुकर्केयुक्त शनि सप्तमस्थानमें होवे तब व्रणादिहोतेहैं और छठेस्थानमें शनि और बारहमें स्थानमें मंगलहोवे तब व्रणादिहोतेहैं २२ अबदद्रुयोगकहतेहैं स्निग्धभइति स्निग्धराशियोंहैं कर्क वृश्चिक मीन इनोंमें शनि कर्के युक्त चंद्रमा भूमिनवांश २।६।१० वृषकन्या मकरराशिके नवांशमें सप्तमस्थानमें स्थितहोवे तब दद्रुरोगवाला होताहै अबअंडवृद्धियोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मंगल शुक्रकर्के युक्त अष्टममेंस्थितहोवे तब वायुकर्के अंडवृद्धिवालाहोताहै २३ और मंगलकर्के युक्त शुक्र वृश्चिक राशिमेंहोवे तब पार्थिवभागकर्के अंडवृद्धिहोतीहै और मेदवृश्चिकराशिमें बुधशुक्रदोनों

भूपुत्रेगुरुसितदृष्टिवर्जितेलग्नेजायंतेव्रणपिटकास्तनौविशेषात् भुव्यस्मिन्नथचतदंशकेसपुच्छेमंदेवास्तयुजितथाद्वयोर्व्ययारौ २२ अथदद्रुयोगाःस्निग्धभेशुनगतेरजनीशिभूमिभागगतभास्करियुक्तेदद्रिणोभवतिभौमसितावृजैरंडवृद्धिरलिगेमृतिभागे २३ अथांडवृद्धियोगाःसारेसितेष्टमगतेनिलभूतमंडंकौर्प्येकुजान्वितासितेक्षितिभागमंडंभौमक्षेगौवुधसितौशशिजीवदृष्ट्याहीनौतदारुधिरकोपजमंडमुक्तम् २४ अथप्लीहयोगाः दृष्टेक्रूरखगैःशुभैर्नचविधौपष्ठेश्वरेप्लीहकृत् दृष्टेसप्तमलग्नपेखलखगैःस्यात्प्लीहरोगीपुमान् जन्मन्येवविनष्टदग्धकशनिःसूर्येमहाप्लीहता लग्नस्वामिनिचोग्रपीडितशनौप्लीहार्थसांगेस्थिते ॥ २५ ॥ अथमुखदुर्गंधियोगाः शनिगृहेशनिहृद्गतेपिवाभवतिचंद्रगृहेत्वथभार्गवे अजगतेवपुर्षीदुयुतेवुधेरिपुपतौचमुखस्यविगंधिता ॥ २६ ॥ अथकपटयोगाः

स्थितहोवें और चंद्रमा गुरुकीदृष्टिसें हीनहोवें तब रुधिरकर्के अंडवृद्धिहोतिहै ॥ २४ ॥ अबप्लीहयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें छठे घरकास्वामी चंद्रमाहोवे और क्रूरग्रहों कर्के देख्याहोवे और शुभग्रह नहिंदेखतेहोवें तब प्लीहरोगकर्त्ताहै और जिसके जन्म समयमें सप्तमलग्नका स्वामी पापीग्रहों कर्के देख्याहोवे तब प्लीहरोगी होताहै और जिसके जन्म समयमें शनिनष्ट और सूर्य कर्के दग्धहोवे सो वडीप्लीहकर्के युक्त होताहै और जिसके जन्म समयमें लग्नेश पापग्रहों कर्के पीडितहोवे अथवा शनिजन्मलग्नमें स्थितहोवे सो प्लीहकर्के युक्तहोताहै ॥ २५ ॥ प्लीहकों भाषामें तिल्ल कहतेहैं अबमुखदुर्गंधियोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्र मकर कुंभ राशिमें स्थितहोवे वा शनिकीहृदामें स्थितहोवे वा कर्कराशिमें होवे तब मुखदुर्गंधि कर्त्ताहै और जिसकेजन्ममें षष्ठेश बुध चंद्रमाकर्केयुक्तमेषराशिमें लग्नगतहोवे तब मुखमें दुर्गंधिकर्त्ताहै २६ अबकपटयोगकहतेहैं

जिसके जन्मसमयमें बुधकर्के युक्त मंगलहोवे सो कपटी होताहे और वली बुध क्रूरग्रह कर्के युक्त नवमस्थानमें होवे तव कपटी होताहे और मंगल तीसरे स्थानहोवे और चतुर्थेश और नवमेश दोनों छठे स्थानमें होवें और मेपराशिमें बुधहोवे तव कपटकर्के लिखने वाला हो ताहे ॥ २७ ॥ अवअसत्ययोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें कृष्णाष्टमीसें अमावास्यापर्यंत चंद्रमा भौमसें बुधके साथयोगकरे अर्थाद्भौम युकराशिकों त्यागकर्के बुधयुक्त राशिमें प्रवेशकरे सोमनुष्य झूठ बोलने वाला होताहै और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध एक अंशमें केंद्रस्थानमें स्थित होवें सो झूठबोलने वाला होताहै ॥ २८ ॥ अवद्रोहयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंदशम स्था नमें बुधस्थितहोवे और चतुर्थस्थानमें चंद्रमाहोवे सो छल कर्के दूसरे केद्रव्यकों हर्ताहै और जि

सज्ञेकुजेकपटकृच्चबुधेखलाढ्येक्रूरान्वितेऽध्वयुजिभूमिसुतेतृतीये भूकेंद्रपेषुनव माधिपतौचषष्ठेमेपेबुधेकपटलेखकरोनरःस्यात् २७ अथासत्ययोगाःअपररा त्रकृतभ्युदयेविधावबनिजाद्व्रजतिज्ञमसत्यवाक् ज्ञकुजयोर्दरजैकगकेंद्र योर्वितथवागथरंजयतेजनान् ॥ २८ ॥ अथद्रोहयोगाः खस्थेबुधेतुर्यगतेच चंद्रेद्रोहात्परद्रव्यमुपाददाति कुजेतृतीयेथबुधेसचंद्रेरिपौविलग्नाधिपतौबुधेवा ॥ २९ ॥ अथपरदारयोगाः द्यूनेथखेसितबुधार्किंयुवारभृग्वोस्तुर्येथखेभृ गुसुतेशशिसौरिदृष्टे क्रोडारयोररिगयोर्निजवर्गभौमेदृष्टाकवेःसकलयापरदा रगामी ॥ ३० ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविर चितजातकखंडे सुनफानफादिनानाविधयोगाध्यायएकादशः ॥ ११ ॥

सके जन्मसमयमें तीसरे मंगल होवे और चंद्रमा कर्के युक्त बुधहोवे और छठेस्थानमें लग्नकास्वा मी बुध स्थितहोवे तव द्रोहकर्ताहे ॥ २९ ॥ अवपरस्त्रीकेयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मं गल और शनिसें सप्तम दशम स्थानमें शुक्र बुध शनि तीनग्रहहोवें सो परस्त्रीगामी होताहै अ थवा शुक्र चतुर्थ वा दशममें स्थितहोवे और चंद्रमा शनिकर्के दृष्टहोवे तव परस्त्रीगामी होता है और जिसके जन्मसमयमें शनि मंगल छठे स्थानमें स्थितहोवें और अपने वर्गमें भौमहोवे और पूर्ण दृष्टिकर्के शुक्रदेखताहोवे तव परस्त्रीगामीहोताहै ॥ ३० ॥ इतिश्रीजातकखंडेसुनफान फादिनानाविधयोगाध्यायएकादशः ॥ ११ ॥

॥ अथद्विग्रहादियोगाध्यायसारावलीसेंकहतेंहें ॥ वृद्धयवनाचार्योनेंद्विग्रहादियोगोंमेंयेःफलकहाहै ॥ सो फल इसग्रंथमें मत्सरोंकों त्यागकर्के विशेषकर्के कहताहों १ जिसकेजन्मसमयमें सूर्यचंद्रमादोनों एकराशीमें स्थितहोवें सो स्त्रीयोंकेवश्यहोताहे श्रोर नम्रतासेंरहित होताहे श्रोर कूटके जाननें वाला होताहे श्रोर लघुचित्तवाला होताहे श्रोर स्त्रीयोंमें श्रेष्ठ श्रोर मद्यके वेचनेमें चतुर श्रोर क्रियामें चतुर होताहे २ श्रोर जिसकेजन्ममें सूर्य मंगलकायोगहोवे सो तेजस्वी श्रोर हठी श्रोर धूर्त्त श्रोरबली श्रोर झूठबोलनेवाला श्रोर पापबुद्धि श्रोर वधकरणेवाला श्रोर प्रचंडहोताहे ३ श्रोर जिसकेजन्ममें सूर्य बुधकायोगहोताहे सोसेवाकरणेवाला श्रोर तिसकेपास धन स्थिरनहिंरहताहे श्रोर मीठाबोलनेवाला श्रोर यशकीइछावाला श्रोर श्रेष्ठ श्रोर राजाकी प्रीतिवाला श्रोर श्रेष्ठ जनोंका प्यारा श्रोर बल रूपविद्याकर्के युक्तहोताहे ४ श्रोर जिसके जन्ममेंसूर्यबृहस्पतिकायोगहोवे सो बहुतधर्म

॥ अथद्विग्रहादियोगाध्यायः ॥ सारावल्यां ॥ यवनाचार्यैर्दृष्टैर्द्विग्रहयोगेपुयत्फलंप्रोक्तम् तदहमपहायमत्सरमधुनावक्ष्योविशेषेण १ युवतीनांवशगःस्यादवनीतःकूटवित्प्रलघुचित्तः स्त्र्यासवविक्रयकुशलोरव्युडुपत्योःक्रियानिपुणः २ तेजस्वीसाहसिकोधूर्तोबलसंयुतोनृतवाक् पापमतिर्वधनिष्ठोरविकुजयोःस्यात्प्रचंडश्च ३ सेवाकृदस्थिरधनोरविज्ञयोःप्रियवचायशोर्थीस्यात् आर्यःक्षितिपतिदयितःसतांचबलरूपविद्यावान् ४ बहुधर्मोनृपसचिवःसमृद्धिमान्मित्रसंश्रयात्तार्थः सूर्येबृहस्पतियुतेभवेदुपाध्यायसंज्ञश्च ५ शस्त्रप्रहरणविद्याशक्तियुतोनेत्रदुर्बलोभवति रंगज्ञोरविसितयोःस्त्रीसंगमलब्धबंधुजनः ६ धातुज्ञोथर्ममयःसुकर्मनिरतःप्रनष्टसुतदारः निजवंशगुणैःशुद्धःशनिरव्योरात्तशीलश्च ७ शूरोरणप्रतापीमल्लोऽसृग्वेदनार्त्तदेहश्च मृच्चर्मधातुशिल्पीकूटज्ञश्चंद्रकुजयोगे ८

करनेवाला श्रोर राजाकामंत्री श्रोर समृद्धिवाला श्रोर मित्रोंसेंधनकी प्राप्तिवाला श्रोर विद्याकेभढाउनेवाला होताहे ५ श्रोर जिसकेजन्ममें सूर्य शुक्रकायोगहोताहे सो शस्त्रप्रहारोंकीविद्यामेंशक्तिकर्के युक्त होताहे श्रोर दुर्बलदृष्टिवाला होताहे श्रोर रंगकेजाननेवाला श्रोर स्त्रीसंगमकों प्राप्त श्रोर सबाधजनोंकों प्रस होताहै ६ श्रोर जिसके जन्ममे सूर्य शनिका योगहोताहे सोधातुयोंके जाननेवाला श्रोर धर्मवाला श्रोर श्रेष्ठ कर्मोमेंरत श्रोर स्त्रीपुत्रसेंरहित श्रोर अपनेवंशके गुणोंकर्के शुद्ध श्रोर श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहे ७ श्रोर जिसके जन्ममें चद्रमामंगलकायोगहोवे सो शूरवीर श्रोर युद्धमें प्रतापी श्रोर मल्लोंसहान श्रोर रुधिरकीपीडाकर्के दुःखीदेहवाला श्रोर मृत्तिका श्रोर चर्म श्रोर धातुके शिल्पवाला श्रोर कूटकेजानेनवाला होताहे ८

और जिसके जन्ममें चंद्रमाबुधका योगहोवे सो काव्यकथामें अत्यंत चतुर और धनवके युक्त और स्त्रीयोंकी संमतिवाला और सुंदररूपवालाहो ताहै और प्रफुल्लतमुखवाला और धर्ममें रुचिवाला और विशेष गुणों वाला होताहै ९ और जिसके जन्ममें चंद्रमाबृहस्पतिका योगहोवे सो दृढ मित्रतावाला और नम्र और संबंधियोंका मानकरणेवाला और श्रेष्ठ वेशके धारणे वाला और देवताओर ब्राह्मणोंके पूजने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा शुक्रदोनों एकराशिमें स्थितहोवें सो माला और धूपऔर वस्त्रोंमें सक्त होताहै और क्रियाविधिके जाननेवाला और कलहकाप्यारा और बहुतभोजनकरणेवाला होता है और वस्तुके वेचने और खरीदनेमेंचतुरहोताहै ११ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाशनि एकराशिमें स्थितहोवें सो वृद्धस्त्रीयोंके रमणेवाला और हाथी और घोडयोंकेपालनेवाला और खोटेस्वभा

काव्यकथास्वतीनिपुणःसधनःस्त्रीसंमतःसुरूपश्च स्मितवदनःशशिबुधयोर्धर्मरुचिःस्याद्विशिष्टगुणः ॥ ९ ॥ दृढसौहृदोविनीतःस्ववंधुसंमानकृत्सुवेशश्च गुर्विंद्वोस्त्वतिशीलःसुरद्विजेज्यारतःपुरुषः ॥ १० ॥ स्रग्धूपांवरसक्तः क्रियाविधिज्ञः कलिप्रियोत्यशनः क्रयविक्रयेषुकुशलः शशिभार्गवयोःसदा योगे ॥ ११ ॥ जीर्णवधूजनरमणोगजाश्वमपालकोविगतशीलः वश्यो विधनः पुरुषः परात्मकः स्याच्छशांकशनियोगे १२ स्त्रीदुर्भगोतिवित्तः सुवर्णलोहादिवद्धमतिः दुष्टस्त्रीविधवानांबुधकुजयोरौषधिक्रियानिपुणः १३
शिल्पश्रुतिशास्त्रज्ञोमेधावीवाग्विशारदोमतिमान् अस्त्रप्रियः प्रधानः सुरगुरुकुजयोः समागतयोः १४ पूज्योगुणप्रधानोगणितज्ञः परयुवतिगोधूर्तः द्यूतानृतशाठ्यरतोविदः सितेरधिरसंयु भवति १५

थवाला होताहै और वश्य और धनरहित और परकर्मके करणेवाला होताहै १२ और जिसके जन्ममें मंगलऔर बुधकायोगहोताहै सो स्त्रीके सुखसे रहित और बडे धनवाला होताहै और दुष्ट स्त्रीयोंमें और विधवा स्त्रीयोंमें सुवर्ण और लोहादियोंकी न्याई कठन चित्त वाला होताहै और औषधके रचनेमें चतुरहोताहै १३ और जिसके जन्ममें मंगल और बृहस्पति कायोगहोता है सो शिल्पके जानने वाला और वेदके और शास्त्रके जानने वाला और श्रेष्ठ वाणीवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला और शस्त्रोंमें प्रीतिवाला और प्रधानपुरुषहोताहै १४ और जिसके जन्ममें मंगलशुक्रकायोगहोवे सो पूज्य और गुणमें प्रधान और गणितके जानने वाला और परस्त्री में रत और धूर्त होताहै और जूयेमें और झूठबोलनेमें और शठतारनेमें रतहोताहै ॥ १५ ॥

और जिनकेजन्मसमयमें मंगलशनिकायोगहोताहै सो धातुवादमें और इंद्रजालमें श्रेष्ठ होताहै और प्रपंची होताहै और चोरीकरणेवाला होताहै और धर्मसे रहितहोताहै और शस्त्र करके और विषकरके घात करणेवाला और लड़ाईकरनेमें रुचिवालाहोताहै १६ और जिसके जन्ममें बुधबृहस्पतिकायोग होताहै सो नृत्यकर्मकेजाननेवाला और चतर और गीत और वाज्योंके जाननेवाला और धैर्यवाला और अवश्यसुखको प्राप्तहोताहै १७ और जिसके जन्ममें बुधशुक्रका जोग होताहै सो निश्चयकरके धनी होताहै और नीतिकेजाननेवाला और अनेकशिल्पकेजाननेवाला और वेदके जाननेवाला और श्रेष्ठवाक्यबोलनेवाला और हास्यमेंरत और सुगंधमाल्य मेंरुचिवालाहोताहै १८ और जिसके जन्ममें गुरुशुक्रकायोग होताहै सोसर्व दाकालविद्याकरके पंडितहोताहै और पंडितोंकरके वार्ताकरताहै और पुत्रमित्रधनकरके युक्तहोताहै १९ और जिसके जन्ममें शनिबुधकायोगहो

धात्विंद्रजालकुशलःप्रपंचकःस्तेयकर्मनिरतश्च कुजसौरयोर्विधर्मः शस्त्रविषघ्नः कलिरुचिःस्यात् १६ नृत्यविधौविज्ञातःप्राज्ञोपिचगेयवाद्यविन्मनुजः गुरुबुधयोगेधृतिमान्सौख्ययुतोजायतेवश्यम् १७ अतिशयधनोनयज्ञोबहुशिल्पोवेदवित्सुवाक्यःस्यात् नीतिज्ञोहास्यरतोबुधसितयोगेंधमाल्यरुचिः १८ गुरुसितयोगफ ॥ विद्ययाभवतिपंडितःसदापंडितैरपिकरोतिविवादं पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतोमानवःसुरगुरौभृगुयुक्ते १९ ऋणवान्दंभप्रायःप्रपंचकस्तेयकर्मनिरतश्च निपुणःशोभनवाक्यःशनिबुधयोगेपुमान्भवति २० शूरोवित्तसमृद्धो नगराधिपतिर्यशस्वीच शनिजीवयोः प्रधानःश्रेणीसभाग्रामसंघानाम् २१ चारुविचारणदक्षस्त्वक्षरचित्रादिकर्मविच्छिल्पी मल्लोटनः पशुपतिः शनिसितयोगेपुमान्जातः २२ उक्तफलगगनगाद्यन्योन्यगणस्थिताः ॥ अधमादिविकल्पेनकुर्वंतिविकृतिंतदा २३ इतिद्विग्रहयोगप्रकरणम् ॥

गाहैसोऋणवाला और दंभी और प्रपंची और चोरीमेंरत और सुंदरबोलने वाला होताहै २० और जिनके जन्ममें बृहस्पति शनिकायोगहोवे सो शूर वीर धनकी समृद्धि वाला और नगरकास्वामी और यशवाला और प्रधान और ग्रामोंके समूहोंको प्राप्त होने वाला होताहै २१ और जिसके जन्ममें शुक्रशनिकायोगहोताहै सो श्रेष्ठ विचारमें चतुर होताहै और अक्षर और चित्रकारीके कर्मोंको जानने वाला शिल्पीहोताहै और मल्लविद्याके जाननेवाला और भ्रमणेवालाऔर पशुओंकास्वामीहोताहै २२ इहांदिग्योगोंका जोफलकहाहै जबग्रहअपनेअपनेस्थानमें बलकरके युक्तहोवें तब यथार्थ जैसाफलकहाहै तैसाहीकरतेहैं और नीचास्तादिस्थानोंमेंविकल्पकरके विरुद्धफलकरतेहैं २३ इतिद्विग्रहप्रकरणम् ॥

॥ अथतीनग्रहकेयोगकाप्रकरणकहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमा मंगलतीनों एकराशिमें स्थितहोते हैं सो निर्लज्ज और पापकरणे वाला और यंत्रोंके जानने वाला और शत्रुयोंके हरणेमें शूरवीरहोताहै और पाषाणके कृत्यमें चतुरश्रेष्ठ होताहै १ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमाबुधतीनों एकराशिमें स्थितहोवें सो तेजस्वी और चतुरबुद्धि वाला और शास्त्रकलाके जाननेवाला और साधुयोंकीसंगति करणेवाला और वाहनोंमें रत और राजकृत्यकेकरणेवाला और धैर्यवाला होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाबृहस्पतिएकराशिमें स्थितहोतेहैं सो क्रूर और मायामें चतुर और सेवाकरणेमेंश्रेष्ट और विदेशवासकरणेवाला और श्रेष्ट बुद्धिवाला और चंचलबुद्धिवाला होताहै ३ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रशुक्रकायोग होताहै सो परधनके हरणेमें चतुर और परस्त्रीमें रत और शस्त्रवृत्तिकेकरणेवाला होताहै ४ और जिसके

निर्लज्जःपापरतोयंत्रज्ञःशत्रुहारणेशूरः अश्मक्रियासुकुशलःसहास्थितैःसूर्यशशिभौमैः १ तेजस्वीनिपुणमतिःशास्त्रकलासाधुगोष्ठियानरतः नृपकृत्यकरोधीरोरविशशिशशिजैस्तथैकस्थैः २ क्रूरोमायानिपुणःसेवाकुशलोविदेशगमनरतः मेधावीचपलमतिःसहस्थितैरर्कशशिजीवैः ३ परधनहरणेनिपुणःपरदाररतःशस्त्रवृत्तिश्च रविचंद्रदैत्यपूज्यैरेकस्थैर्जायतेमनुजः ४ धातुविवादेनिरतोमूर्खःपरतर्ककोदरिद्रश्च सूर्यनिशाकररविजैरेकस्थैर्जायतेमनुजः ५ भवतिख्यातोमल्लःसाहसिकोनिष्ठुरोविगतलज्जः धनसुतकलत्ररहितःसहस्थितैरर्ककुजसौम्यैः ६ वचसिनिपुणोमहार्थःक्षितिपतिमंत्रीचमूपतिर्वापि सत्यवचनःप्रचंडःसहास्थितैर्भौमगुरुसूर्यैः ७ नयनातुरःकुलीनःसुभगोवात्सल्यसंयुतोमनुजः वक्रभृगुदिवसनाथैःसंयुक्तैःस्याद्विभवयुतः ८

जन्ममें सूर्य चंद्रमाशनिकायोगहोवे सो धातुवादमें रत और मूर्ख और दूसरे का तर्ककरणे वाला और दरिद्रीहोताहै ५ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुध कायोगहोवेसो प्रसिद्धमल्लभलोहानहोताहै और हठकरणे वाला और कठोर बोलने वाला और लज्जासें हीन और धनपुत्र स्त्रीसें रहित होताहै ६ और जिसके जन्ममें सूर्य मंगल बृहस्पति कायोगहोवे सो वाणीकर्के चतुर और बडे धन कोंप्राप्तहोताहै और राजाकामंत्री अथवासेनाकास्वामीहोताहै और सत्यबोलने वाला और बडाप्रचंडहोताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगल शुक्र कायोग होवे सो नेत्रों कर्के पीडितहोताहै और कुलीनहोताहै और श्रेष्ठभाग्यों वाला और प्रीतिकर्के युक्त होताहै और ऐश्वर्यकर्के युक्तहोताहै ॥ ८ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगलशनिका योगहोताहै सो व्याकुल अंगोंवाला और धनहीन और नित्यहि रोगकर्के पीडित और लडाई के करणे वाला और अपने संबधियोंसें रहित और बडामूर्ख होताहै ९ और जिसके जन्ममें सूर्य बुध बृहस्पति कायोगहोताहै सो नेत्ररोगी और धनवाला और शास्त्रकला और काव्यकथा और शिल्पकर्के युक्त और लिखने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बुधशुक्र कायोगहोवे सो अत्यंत शास्त्रके जानने वाला और बडावाचाल और पित्रादियोंकर्के त्याज्यदेशदेशांतरोंमें भ्रमणेवाला और स्त्रीके निमित्तकर्के संतापकों प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बुध शनिका योगहोवे सो क्लीवकीन्याईं और द्वेषी और संपूर्णोंकर्केजीत्याहुयाऔर संबधियोंकर्के त्याज्य होताहै ॥ १२ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बृहस्पति शुक्रका योगहोवे सोदुर्बलपक्षवाला औरशूर वीर होताहै और धनकर्के रहित और राजाकामंत्रीहोताहै और नित्यप्रति

विकलांगोधनरहितोनित्यंरोगार्दितःकलहयुक्तः ॥ स्वजनरहितोतिमूर्खःक्षितिजार्कजभानुभिःसहितैः ९ नेत्रातुरोतिधनवान्शास्त्रकलाकाव्यगोष्ठीशिल्पयुक्तः ॥ वाचस्पतिबुधसूर्यैरेकस्थैर्लिपिकरःपुरुषः १० अतिशास्त्रोवाचाटोभ्रमतिचदेशान्निराकृतोगुरुभिः ॥ स्त्रीहेतोःसंतप्तःशशिसुतरविभार्गवैःसहितैः ११ क्लीवाचारोद्वेष्यःसर्वजितोबंधुभिःपरित्यक्तः ॥ सौरादित्येंदुसुतैरेकस्थैर्जायतेमनुजः १२ दुर्बलपक्षःशूरःप्राज्ञोनिस्वश्चभूपतेःसचिवः ॥ परकार्यपरोनित्यंभार्गवगुरुभास्करैर्मिलितैः १३ असदृश्यश्वरकार्यःपूज्यस्वजनःसुदारसुतमित्रः ॥ नृपतीष्टोविगतभयोजीवार्कजदिनकरैःसहितैः १४ शत्रुभयात्सोद्वेगोमानकलाकर्मवर्जितोमनुजः ॥ कुत्सितचरितःकुष्ठीसितार्किरविसंयुतैर्भवति १५ पापकराजायंतेनीचाचाराःसुहृत्स्वजनहीनाः ॥ आजीविनश्चपुरुषाःशशांकबुधभूमिजैःसहितैः १६ व्रणितांगःस्त्रीलोलश्चौरःकांतश्चसंमतःस्त्रीणां भौमशशांकसुरेज्यैरेकस्थैश्चंडरोषश्च १७

परकार्यमें तत्पर होताहै ॥ १३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य गुरु शनि का योग होताहै सो अपने तुल्यसें शीघ्रकार्य के करणे वाला और श्रेष्ठ संबंधियों वाला और स्त्री पुत्र मित्रों वाला होताहै और राजाकीप्रीति वाला और भयसें रहित होताहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य-शुक्र शनि का योग होवे सो शत्रुयों के भयसें उद्वेगवाला होताहै और मान और कला और कर्मोंसें रहित होताहै और निंद्यचरित्रों वाला और कुष्ठी होताहै १५ और जिसके जन्ममें चं[illegible] मंगल बुध कायोगहोवे सो पापके करणे वाला होताहै और नीच आचार वाला और [illegible] सज्जनोंसें रहित और आजीविकाकेकरणेवाला होताहै १६ और जिसके जन्ममें चंद्रमा [illegible] कायोगहोताहै सो अंगोंमें व्रणों फो ड्योंवाला और स्त्रीमें चंचल और चोर [illegible] और स्त्रीयोंके मतवाला और बडे चंडक्रोध वाला होताहै ॥ १७ ॥

और जिसके जन्ममें चंद्रमामंगल शुक्रकायोग होवे सो खोटे स्वभाववाली मात
का पुत्र होताहै और भ्रमणमे इच्छावाला और शीतसें डरनें वाला होताहै ॥ १८ ॥
और जिसके जन्ममें चद्रमा मंगल शनि कायोगहोवे सो वाल्यावस्थामें माताकी मृत्युकी कर्ताहै
और क्षुद्रहोताहै और विषमस्वभाववाला और चलचित और कवि और द्वेषकरणेवाला होताहै
१९ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा बुध बृहस्पतिका योगहोताहै सो धनवान् और श्रेष्ट वाणी
वालाओरतेजस्वीऔरप्रसिद्धतावालाऔर बडेयशवाला और बहुते मित्रों औरभाइयों और पुत्रोंवाला
होताहै २० और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा बुध शुक्रका योगहोवे सो विद्याकर्के संस्कृतबुद्धिवाला

दुःशीलायाःपुत्रःपतिश्चतस्याःसदैवानिर्दिष्टः ॥ कुजभृगुशशिभिःसहितैर्भ्रमणरु
चिःशीतभीरुश्च ॥ १८ ॥ वाल्येमृतजननीकःक्षुद्रोविपमश्चलोक
विद्विष्टः जायेतनरोयोगेभूसुतशशिभास्करसुतानाम् ॥ १९ ॥ धन
वान्कल्पोवाग्मीतेजस्वीख्यातिमान्विपुलकीर्त्तिः ॥ वहुमित्रभ्रातृसुतोवुधेंदुसु
रपूजितैर्युक्तैः ॥ २० ॥ विद्यासंस्कृतमतिरापनीचाचारोभवेत्पुमान्
जातः सेर्ष्योधनप्रलुब्धोवुधभार्गवचंद्रसयोगे ॥ २१ ॥ असुतोविकलःप्रा
ज्ञोवाग्मीचसुपूजितःक्षितिपः भवतिनरःसंयोगेसौरेंदुशशांकपुत्राणाम् २२
साध्वीतनयःप्राज्ञःकलास्वभिज्ञोवहुश्रुतःसाधुः भार्गवगुरुशशियोगेजातःपुरुषो
भवेत्सुभगः २३ शास्त्रार्थवुद्धिनयवान्वृद्धश्रीसंगतोविगतरोगः शशिवाचस्प
तिसौरैरेकस्थैःश्रीयुतोभवति २४ लिपिकरपुस्तकवाचकपुरोधसांभवतिजन्म

नीचा चारमेंस्थित होताहै और ईर्षाकर्के युक्त और धनकालोभी होताहै २१ और जिसके जन्ममें
द्रमा बुध शनि कायोगहोवे सो पुत्ररहित और कलारहित और चतुर और वक्ता और पूज्य और
अप फलमें राजाहोताहै २२ और जिसके जन्ममें चद्रमा बृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो श्रेष्टमाता
कापुत्रहोता है और चतुरहोताहै और कलोंके जानने वाला और बहुश्रुत और साधुहोताहै और श्रे
ष्टभार्य्यावाला होताहै २३ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा बृहस्पति शनि कायोगहोवे सो शास्त्रा
र्थकेजानने वाला और बुद्धि वाला और नीतिके जाननेवाला और वृद्धलोके सेवनेवाला और रोग
रहितहोताहै और लक्ष्मीकर्के युक्तहोताहै २४ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा शुक्र शनिका योगहो

ताहै सो लिखने वाला और पुस्तकवाचनवाला और पुरोत और पुन्यात्मा होताहै और ज्योतिषीहो ताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध बृहस्पतिकायोगहोताहै सो श्रेष्टकविऔर युवाकांताका स्वामी और श्रेष्टस्त्रीकास्वामी और दूसरेकेधनका उद्योगकरणे वाला और गंधर्व वेदमें श्रेष्टहोताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुधशुक्रकायोगहोताहै सो अकुलीन और विकृत अंगोंवाला और चपल और ढीठ और मुखर और नित्य उत्साहकर्के युक्तहोताहै २७ और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध शनिकायोग होताहै सो प्रेष्य होताहै दूतवृत्तिके करणे वाला और नेत्ररोगी होताहै और विदेशवासकरणेवाला और मुखरोगी होताहै नम्रकी वार्त्ताकों सहारणे वाला होताहै २८

सुमतीनां दैवविदांपुरुषाणांशशिभार्गवसौरसंयोगे ॥ २५ ॥ सुक विःस्त्रीणीनाथःसद्युवतिपतिःपरार्थउद्युक्तः गांधर्ववेदकुशलोबुधगुरुक्षितिसूनु भिःसहितैः ॥ २६ ॥ अकुलीनोविकलांगश्चपलोधृष्टश्चजायतेमनुजः मुखरोनित्योत्साहीकुजबुधभृगुनंदनैःसहितैः २७ प्रेष्यःसामयनेत्रःप्रवासशी लोभवेद्वदनरोगी नमतेप्रसहनशीलोबुधार्किरुधिरैःसहैकस्थैः ॥ २८॥ नृपतीष्टःसत्सुतवान्विलासिनीभ्यःसदाप्तबहुसौख्यः सकलजनानंदकरोभार्ग वगुरुभूमिजैःसहितैः २९ नृपसंमतःकृशांगोनीचाचारोविगर्हितोमित्रैः भव तिनरोविगतघृणःसुरेज्यकुजसौरिसंयोगे ३० चारित्रविहीनायाःपुत्रोभर्त्ताथ वासुखविहीनः नित्यंप्रवासशीलःसयुक्तैःकुजशशिसितैर्मनुजः ३१

और जिसके जन्मसमयमें मंगलबृहस्पतिशुक्र का योगहोताहै सो राजाकाप्यारा और श्रेष्ट पुत्रव ला और वेश्याजनों केश्रेष्ट सुखवालाहोताहै और सर्वदा बहुतसुखकों प्राप्तहोताहै और संपूर्णज नोंकों आनंदके करणेवाला होताहै २९ और, जिसके जन्मसमयमें मंगल बृहस्पति शनिकायो गहोवे सो राजाकी संमती वाला और कृशदेहवाला और नीचाचार में स्थित और मित्रोंकर्के निंदाकोंप्राप्त और लज्जासें रहितहोताहै ३० और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा मंगल शुक्र कायो गहोवे सोगुणहीनमाताकापुत्रहोताहै और गुणहीनस्त्रीकास्वामीहोताहै और सुखकर्केरहितहोता है और नित्यंप्रतिविदेशमें इच्छावालाहोताहै ३१

औरजिसकेजन्मसमयमेंबुधबृहस्पतिशुक्रकायोगहोवेसोशत्रुओंकेसमूहकानाशकरणेवालाऔरराजाहोताहै औरश्रेष्ठभाग्योंवाला औरशूरवीर बडेयशवाला औरसत्यबोलनेंवालाहोताहै ३२ औरजिसकेजन्मसमयमें बुधबृहस्पति शनिका योगहोवेसोस्थान धन ऐश्वर्य करकेयुक्तहोताहै और चतुर और बहुत भोगों केभोगनेवाला और दानकरणेवाला और धैर्य और सुखकरकेयुक्तहोताहै ३३ और जिसकेज न्मसमयमें बुध शुक्र शनिकायोगहोताहै सो माडेमुखवाला और धूर्त और झूठबोलनेवाला और पर स्त्रीमें रत और खोटेस्वभाववालाहोताहै और कलाके जाननेवाला और अपनेदेशमेंरतहोताहै ३४ और जिसकेजन्मसमयमें बृहस्पति शुक्र शनि का योगहोवे सो हीनकुलमें जन्मकों प्राप्त होयकेवी

क्षपितारिगणोन्नृपतिःसुभगःशूरस्तथाविपुलकीर्त्तिः बुधजीवशुक्रसहितेभवति नरःसत्यवचनश्च ३२ स्थानधनैश्वर्ययुतप्राज्ञबहुभोगिनंप्रदानरतम् धृतिसौ ख्ययुतंसुभगंजनयंतिबुधार्किजीवाख्याः ३३ विमुखोधूर्तोनृतवाक्परयुवतिरतो भवेद्विषमशीलः बुधशुक्रसूर्यतनयैःकलास्वभिज्ञःसुदेशरतः ३४ न्यूनकुलेपि चजातोभूपतिर्विपुलकीर्त्तिः गुरुभार्गवदिनकरजैरेकस्थैःशूलसंपन्नः ३५ पापैर्यु क्तेचंद्रेमातुरभावःप्रकीर्त्तितःप्रायः सूर्येपितुरन्यथान्यैःशुभंवदेन्मिश्रितैर्मिश्रम् ३६ प्रायःशुभाःसमेताधनभूतियशोन्वितंनृपतिचेष्टम् उत्पादयंतिमनुजंभूमंड लमंडनंश्रेष्ठम् ३७ पापास्त्रयोपिसहिताःकुर्वंतिनरंदुर्भगंलोके दारिद्र्यदुःखत प्तंगर्हितरूपंविनयहीनम् ३८ इतित्रिग्रहयोगप्रकरणम्

बडेयशवालाराजाहोताहै और शूल करकें युक्तहोताहै ३५ और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा पापग्र होंकरकेंयुक्तहोवे तबतिसकी माताका नाशहोताहै और सूर्यपापग्रहोंककें युक्त होवे तब पिताकानाश होताहै और चंद्रमा सूर्यशुभग्रहोंकरकें युक्तहोवें तब मातापिताकों शुभफल होताहै और शुभपाप दोनोंकरकें युक्तहोवें तब मातापिताकों मिश्रित फलकर्तेहैं ३६ और जिसकेजन्ममें शुभग्रहोंका योग बहुतेंयोंराहोवे सो धनऐश्वर्य यशकरकें युक्तराजाकीन्याई होताहै और भूमंडलकों श्रेष्ठ प्रकाशकर्णे वाला होताहै ३७ और बहुतपापग्रहोंके योग होनेसें मनुष्यदुर्भग और दरिद्री और दुःखकरकें संतप्त और निंद्यरूप और नम्रतासें हीनहोताहै ३८ इतित्रिग्रहयोगप्रकरणम्

अवचतुर्ग्रहयोगका फलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मंगल बुध कायोगहोवे सो लिखनेमेंचो री करण वाला और मुखरोगी और माया प्रपंचमे कुशल होताहै ॥ १ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्रमा मंगल बृहस्पति कायोगहोवे सो धनीहोताहै और नित्यप्रति नम्रहोताहै और तेजस्वी होताहै और नीतिक जाननेवाला और शोक कर्क रहितहोताहै और कृत्यमें समर्थवाला होताहै और चतुरहोताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्र मगल बृहस्पति शुक्र कायोगहोताहै तिस कों विनासुखसे बलनेसें हिलाभहोताहै और सुखके भोगने वाला और चतुर और धनसग्रह करणे वाला होताहै और विद्या और पुत्र और स्त्रीवक युक्तहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मगल शनिकायोगहोवे सो माडे देहवाला और वहुत छोटेदेहवाला और धनहीन और याचना

लिपितस्करमुखरोगीमायाप्रपंचकुशलश्च वुधरविभौमशशांकैरेकर्क्षगतै पुमान्भवति ॥ १ ॥ धनधान्विनतोनित्यंतेजस्वीनीतिमान्विगतशोकः कर्मसमर्थोनिपुण शशिकुजगुरुभास्करैःसहितैः ॥ २ ॥ आयोजितवाग्व्याप्ति सुखभाङ्निपुणोथसंग्रहशीलः विद्यासुतदारयुत शशिकुजगुरुभार्गवै सहितैः ॥ ३ ॥ विषमशरीरोन्हस्वोधनरहितोयाचितस्तथामूर्खः गर्ह्य सर्वस्यतथारविशशिकुजसौरिसंयोगे ॥ ४ ॥ सौवर्णिकःपुटाक्ष शिल्पिपुरोधामहाधनोधीरः जात स्याद्विरुजतनुः शशिबुधगुरुभास्करैःसहितैः ॥ ५ ॥ विपुल सुभगोवाग्मीन्हस्वोनृपसमतोभवेन्मनुजः जात स्यादेकरथैरविशशिवुधभार्गवे सततम् ६ मातापितृवियुक्तोधनसौख्यविवर्जितोभ्रमणशीलः भिक्षाशनोन्यभृतकोरविदुसौम्यार्किभिर्विकलनत्रः ॥ ७ ॥

करणेवाला और मूर्ख और सबपुरुषोंके निंदाको प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र बुध बृहस्पति कायोगहोवे सो सुवर्ण कर्के युक्तहोताहै और मोटे नेत्रावाला और शिल्पविद्या केजाननेवाला और बडेधनवाला और पंडित और रोगरहित होताहै ॥ ५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र बुध शुक्र कायोगहोवे सो बडे ऐश्वर्यां वाला और वक्ता और मधुरे देहवाला और राजाको समानवाला होताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र बुध शनिकायोगहोवे सो माता पिताकर्के रहित और धन सुखकर्के रहित और भ्रमण करणे वाला और भिक्षाकर्के भोजनकरणे वाला और दूसरे कीचाकरी करण वाला होताहै और विकलनेत्रोंवाला होताहै ॥ ७ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र बृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो जल जीवोंका और वनके मृगोंका स्वामीहोताहै और सुखके भोगने वाला और राजाकर्के पूज्यहोताहै ८ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र बृहस्पति शनिकायोगहोताहै सो नेत्ररोग वाला और तीक्ष्ण स्वभाववाला और बहुत पुत्र वाला और धनवाला और श्रेष्ठस्त्रीक सौभाग्यवाला होताहै ९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रशुक्रशनिका योगहोवे सो स्त्रीयोंके तुल्य आचार वाला और वडेदुर्बलदेहवाला और सपूर्णोंसे डरणवाला होताहै १० और जिसके जन्ममें सूर्यमंगल बुध बृहस्पतिका योगहोवे सो शूरवीरअथवा सूत्रधार प्रधानवा सुद्धारहोताहै और धनस्त्रीक सुखसें रहित और दुःखकर्के पीडित और भ्रमणेवाला होताहै ११ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुधशुक्रकायोगहोवे सो परस्त्रीमें रत और चोर और खोटीदृष्टिवाला और

सलिलमृगारण्यानांस्वामीस्यात्सौख्यभाङ्नृपतिपूज्यः शुक्रार्कगुरुशशांकैरेक क्षेगतैः पुमान्निपुणः ८ ॥ सामयनेत्रस्तीक्ष्णोबहुसुतवित्तोवरांगनासुभगः सूर्ये न्दुचंद्रसौरैरेकस्थैर्जायतेमनुजः ॥ ९ ॥ वनितासदृशाचारः पुरस्सरोत्यंतदु र्बलशरीरः भीरुःसर्वत्रभवेदर्केन्दुसितासितैःसहितैः ॥ १० ॥ शूरो थसूत्रधारश्चकधरोविपन्नधनदारः दुःखाटनशीलः समंगतैरर्कजीमवुध भौमैः ११ परदाररतश्चौरोविषमाक्षोविगतसत्वईर्ष्यालुः भवतिप्रसवेपुरुषोर विसितभौमदुजैःसहितैः १२ योधःआढ्यः तिष्ठोनीचाचारः रवि प्रधानश्च मंत्री चमूपतिर्वाबुधार्ककुजसौरिसंयोगे १३ सुभगःपूज्योलोकेधनवान्नृपसमतोभवे त्कुरात रविभौमजीवशुक्रैरेकस्थैर्नीतिमान्पुरुषः १४सोन्मादोगणमान्य सिद्धा र्थोबहुमित्रसम्पृक्तः भानुकुजजीवसौरैरेकस्थे स्यान्नृपाभिमतः १५ विकलो नीचाचारोविषमाक्षोलोकवध्रुविद्विष्टः

पराक्रमहीन और ईर्षाकर्के युक्तहोताहै १२ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुधशनिकायोगहोवे सो योधा और चतुर और स्त्रीका पात्र और नाच चारसम युक्त और रवि और प्रधानहोताहै १३ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो श्रेष्ठ भाग्यवाला और लोकमें पूज्य और धनी और राजाके समानवाला और नीतिवालाहोताहै १४ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमंगलबृहस्पतिशनिकायोग होवे सो उन्मादकर्के युक्त और बहुतमनुष्यों मान्य और कार्यसिद्धकरणेवाला और बहुतमित्रोंवाला और राजाकेसमतवालाहोताहै १५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमंगलशुक्रशनिकायोगहोवे सो व्याकुल और नीचाचारवाला और खोटीदृष्टिवाला और सबकेंयाल देषकरणवाला

और संपूर्णस्थानोंमेंतिरस्कारकोंप्राप्तहोनेवालाहोताहै १६ औरजिसकेजन्ममें सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रकायोग होवेसो धनवाला और सुखीऔर प्रधान और अर्थसिद्धकरणवाला और बहुतबुद्धिवालाऔर श्रेष्ठहो ताहै १७ और जिसके जन्ममें सूर्यबुधबृहस्पतिशनिकायोगहोवे सो क्लीवकीन्याई और मानकरणे वाला और लडाईकीइच्छावाला और भार्यावाला और उत्साहसें रहितहोताहै १८ और जिसके जन्ममें सूर्यबुधशुक्रशनिकायोगहोवे सो मुखरहोताहै और श्रेष्ठभाग्यवाला और चतुर और कोमल सुखवाला और सत्यशौचकरकेयुक्त और धैर्यवाला औरमित्रोंकेसहायतावाला होताहै १९ और जो सके जन्ममें सूर्यबृहस्पतिशुक्रशनिकायोगहोवे सो लोभी और कवि और प्रधान और कारकका और नीचोंकास्वामी और राजाकाप्याराहोताहै २० और जिसके जन्ममें चंद्रमंगलबुधबृहस्पतिका

सूर्यकुजशुक्रसौरैःपराभवंसर्वतोयाति ॥ १६ ॥ धनवान्सुखीप्रधानः सिद्धा र्थोबहुमतःप्रकृष्टश्च भानुबुधजीवशुक्रैर्भवतिपुमानेकराशिगतैः ॥ १७ ॥ क्लीवाचारोमानीकलहरुचिः सहजवान्निरुत्साहः अर्कार्किबुधसुरेज्यैरेकस्थैर्जा यतेपुरुषः ॥ १८ ॥ मुखरःसुभगः प्राज्ञोमृदुसौख्यःसत्यशौचसंपन्नः धीरोमित्रसहायोरविसितबुधसौरिसंयोगे ॥ १९ लुब्धःकविःप्रधानःकारक नाथोधिपश्चनीचानां आदित्यार्किसितेज्यैरेकोजातोभवेदिष्टः २० शास्त्रकु शलोनरेंद्रःसमहामात्रोथवामहाबुद्धिः शशिकुजसोमजजीवैरेकस्थैर्यःपुमांज्जातः कलहरुचिर्निद्रालुर्नीचःस्याद्बंधकोपतिःसुभगः बंधुद्विष्टोनसुखोशशिकुजबुध भार्गवैःसहितैः २२ शूरोद्विमातपितृकोदुष्कुलजोबहुकलत्रमित्रयुतः भव तिसुकर्माभिरतःशशिबुधकुजसौरिसंयोगे २३ विकलांगःसुकलत्रःसाहसि कोतीवमानसंपुक्तः प्राज्ञोबहुमित्रयुतःशशिकुजबुधभार्गवैःसहितैः २४

योगहोवे सो शास्त्रमें कुशल और राजा और दंडी बुद्धि वालाहोताहै ॥ २१ ॥ और जिसकेजन्ममें चंद्र मंगल बुध शुक्र कायोगहोवे सो लडाई की इच्छावाला और बहुत निद्रा वाला और नीच और कुलटाओंकास्वामी और श्रेष्ठभाग्यवाला और बंधुवोंकाद्वेषी और सुखही नहींताहै २२ और जिसकेजन्ममें चंद्र मंगल बुध शनिकायोगहोवे सो शूरवीर और दोमाता और दोपिताका होताहै और माडे कुलमें जन्मकेवी बहुतस्त्रीओं और मित्रों करकेयुक्तहोताहै और श्रेष्ठकर्मोंमें रतहोताहै २३ और जिसके जन्ममे चंद्र मंगल बुध शुक्र कायोगहोवे सो व्याकुल अंगोंवाला और श्रेष्ठस्त्रीवाला और हठकरणेवाला और बडेमानकरकेयुक्त और चतुर और बहुत मित्रोंकरकेयुक्तहोताहै २४

और जिसके जन्ममें चंद्र मंगल बृहस्पति शनि का योगहोवे सो बोलाहोताहै ॥ और धनीहोताहै और शूरवीरहोताहै और उन्मादकर्केयुक्तहोताहै और वाणीमें चतुरहोता है और स्थिरचित्त और बुद्धिमान् उदारचित्तहोताहै २५ और जिसके जन्ममें चंद्र मंगल शुक्र शनिकायोगहोवे सो कुलटास्त्रीकापतिहोताहै और प्रगल्भ होताहै और मध्य और अंत्य अवस्थामें नित्य उदासरहताहै २६ और जिसके जन्म समयमें चंद्र बुध बृहस्पति शुक्र का योगहोवे सो विद्वान् और क्रोधी और दोषितामातापितावालाहोताहै और क्रोधकर्केयुक्त और श्रेष्ठभार्यावाला होताहै और शत्रुओंकर्के रहितहोताहै २७ और जिसके जन्ममें चंद्र बुध बृहस्पति शनि कायोगहोवे सो कृतबुद्धि और पंथवालयों में श्रेष्ठ और तेजस्वी और बंधुओंकाप्यारा और बुद्धिवाला होताहै

बधिरोधनवान्छूरःसोन्मादोवाक्पटुःस्थिरप्रकृतिःमतिमानुदारचित्तोभौमेंदुशने श्चरसुरेज्यैः २५ कुलटापतिःप्रगल्भोमध्यान्तेनित्यमेवसोद्वेगः जातःपुरुषोवश्यंशशियमकुजभार्गवैर्भवति २६ विद्वान्द्विमातृपितृकःसक्रोधोधनयुतस्तथासुभगः भवतिनरोविगतारिपुर्बुधगुरुशशिभार्गवैःसहितैः २७ कृतबुद्धिर्कीर्तिरग्रस्तेजस्वीबंधुवल्लभोमतिमान् नृपसेवकोवरकविःशशिबुधजीवार्किभिःसहितैः २८ मात्रारहितःसुभगस्त्वग्दोषीभ्रमणशीलश्च बहुभाषीसत्यपरःशशिबुधभृगुसौरिभिर्युक्तैः २९ परदारगमनशीलोविशीलभार्योविधनबंधुश्च प्राज्ञोलोकद्विष्टःशशांकविबुधेज्यभृगुसौरैः ३० स्त्रीकलहरुचिर्धनवान् प्राज्ञोलोकेचशीलसम्पन्नः भवतिपुमान्विरुजतनुर्बुधेंदुगुरुभार्गवैःसहितैः ३१

और राजा का सेवक और श्रेष्ठकवि होताहै २८ और जिसके जन्ममें चंद्र बुध शुक्र शनिका योगहोवे सो मातार्के रहित और श्रेष्ठभाग्यवाला और त्वचा केदोषवाला दद्रुकोढादिदोषवाला और भ्रमण करणे वाला और बहुतकहनेवाला और सत्यकर्के युक्तहोताहै २९ और जिसके जन्म समयमें चंद्र बृहस्पति शुक्र शनिकायोगहोवे सो परस्त्रीके गमनकरणवाला और खोटेस्वभाववाली स्त्रीवाला और धन और बंधुओंकर्केरहित और चतुर और लोकोंकेद्वेषकरणेवाला होताहै ३० और जिसके जन्ममें चंद्र बुध बृहस्पति शुक्र का योगहोवे सो स्त्रीसे लडाई करणे वाला और धनी और चतुर और लोकों में श्रेष्ठस्वभाववाला और रोगकर्के रहितहोताहै ३१

श्रौर जिनके जन्ममें मंगलवुधवृहस्पति शनि कायोगहोवे सो शूरवीर श्रौर विद्यावान् श्रौर वक्ता श्रौर धन रहित श्रौर वादी श्रौर दुःखके सहारणे वाला श्रौर वुद्धि वाला होताहै ३२ श्रौर जिसके जन्ममें मंगलवुधशुक्रशनिकायोगहोताहै, सो भलवान् श्रौर पुष्ट श्रौर काठिन श्रगों वाला श्रौर युद्ध मेंवड़ा दुर्मद श्रौर प्रसिद्ध श्रौर कुत्तयों करके रमणे वाला होताहै ३३ श्रौर जिसके जन्ममें मंगल वृहस्पति शुक्रशनिकायोगहोवे सो वडे.वलवाला श्रौर धनवाला श्रौर स्त्रीमेंचंचल श्रौर हठमें प्रीति वाला श्रौर चंचल श्रार धूर्त होताहै ३४ श्रौर जिसके जन्ममें वुध वृहस्पति शुक्र शनिका योग होवे सो वुद्धि मान् शास्त्र मेंरत श्रौर काममें युक्त श्रौर विधिके जानने वाला चाकर श्रौर तीव्रसंयोगवाला होताहै ३५ इतिचतुर्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥ श्रवपचग्रहयोगकहतेहैं जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र मं

शूरोविद्वान्वाग्मीधनरहितःसत्यशौचसम्पन्नः वादीद्वंद्वसहिष्णुर्मतिमान्संहितैर्वुधारगुरुसौरैः ३२ स्यान्मल्लःपरिपुष्टःकठिनांगोयुद्धदुर्मदःख्यातः रमतेचसारमेयैर्वुधारयमभार्गवैःसहितैः ३३ ओजस्वीवित्तयुतःस्त्रीलोलःसाहसप्रियश्चपलः भौमगुरुशुक्रसौरैरेकस्थैर्जायतेकितवः ३४ मेधावीशास्त्ररतःकामाशक्तोविधेयभृत्यश्च वुधजीवशुक्रसौरैःसहस्थितैस्तीव्रसंयोगः ३५ इतिचतुर्ग्रहयोगप्रकरणम् दुःखीवहुप्रपंचोजायाविरहेनतापितशरीरः भवतिपुमानेकगतैरवींदुकुजजीवचंद्रसुतैः १ कर्मकरश्चपरेषांविसुहृद्विकृतोविगतसत्वः क्लीवैर्यातिचसस्थैरविन्दुकुजसोमशुक्रैश्च २ अल्पायुर्नचधनभाग्दीनोभवतिचसर्वसुखहीनः विकलत्रोसुतमित्रःसूर्यशनिवुधेंदुभूमिसुतैः ३ जात्यंधोवहुदुःखीमातृपितृभ्यांसदैवसंत्यक्तः भवतिनरोगेयरुचिःकुजेंदुगुरुभार्गवार्कैश्च ४

गलवुधवृहस्पतिकायोगहोताहै सो दुःखी श्रौर वहुतप्रपंचवालाश्रौरस्त्रीकेवियोगकरकेसंतप्तदेहवालाहोताहै १ श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मंगलवुधशुक्रकायोगहोवे सो परकर्मकरणेवालाश्रौर मित्रोंसेरहित श्रौर विकारकोंप्राप्त श्रौर पराक्रमसें हीनहोताहै श्रौर नपुंसकोंसे सत्वाभावकरणेवाला होताहै २ श्रौर जिसके जन्ममें सूर्य चद्र मगल वुधशनिकायोगहोताहै सो थोडी श्रायुषावाला श्रौर धनरहित श्रौर दीन श्रौर संपूर्ण सुखों करके हीन श्रौर स्त्रीपुत्रमित्रसें हीनहोताहै ३ श्रौर जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमगलवृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो जन्मताहि श्रंधाहोताहै श्रौर वहुतदुःखी होताहै श्रौर माता पिताकरकें सदात्यागकों प्राप्तहोताहै श्रौर गायन विद्याकीरुचिवाला होताहै ४

और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमामंगलबृहस्पति शनिकायोगहोताहै सो युद्धकरणेमें श्रेष्ठ समर्थ वाला होताहै और प्राये धन को हारणेवाला और संतापके देने वाला और चुगल और दुष्ट होताहै ५ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र मंगलशुक्रशनिका योग होवे सो मान और धन और ऐश्वर्य करके हीनहोताहै ॥ और मलीनआचारवाला और स्त्रीमें आसक्तहोताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बुध बृहस्पति शुक्रका योग होवे सो यंत्रोंके जानने वाला और बडे ऐश्वर्य वाला और राजाकामंत्री वा दंडकानेता होताहै और प्रसिद्ध और श्रेष्ठ यशकरके युक्त होताहै ७ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बुध बृहस्पति शनिका योग होवे सो डरणेवाला और मित्रोंसे रहित और उन्मादी और ठगीकरणेमेंचतुर और उग्र और परान्न भोजनकरणेवाला होताहै ८ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रबुधशुक्रशनिका योगहोवे सो दीर्घदेहवाला और रोमोंसेरहितदेहवाला और

युद्धेकुशलसमर्थःपरवित्तहरःपरोपतापीच पिशुनःखलश्चपुरुषःशनिशशिकुजजीवदिवसेशैः ॥ ५ ॥ मानार्थविभवहीनोमलिनाचारःपरांगनाभिरतः पंचभिरेकस्थैःस्याद्दिनेशशशिशुक्रशनिभौमैः ॥ ६ ॥ यंत्रज्ञोवहुविभवो नृपसचिवोदंडनायकोवास्यात् ख्यातःशुभकीर्तियुतोवुधेंदुरविजीवशुक्रैश्च ॥ ७ ॥ भीरुःप्रियसत्यक्तःसोन्मादोवंचनेसुनिपुणश्च उग्रःपरान्नभोगी वुधेंदुगुरुसूर्यरविपुत्रैः ॥ ८ ॥ दीर्घोलोमशगात्रोमंदोत्साहीसुतार्थसुखहीनः स्यात्पचभिरेकस्थैरविचद्रवुधार्किभृगुपुत्रैः ॥ ९ वाग्मींद्रजालनिरतश्चलचित्तःस्त्रीपुवल्लभोमातिमान् वहुशत्रुर्विगतयशोरवींदुगुरुशुक्रभानुसुतैः १०॥ कामीवहुतुरगनरःस्फीतःसेनापतिर्विगतशोकः राज्ञांप्रियोतिसुभगोवुधाररविजीवशुक्रैःस्यात् ११ निरुद्वेगीरोगीभुक्तोभिक्षांगृहाद्गृहगत्वा जीर्णमलीनमवासाराविवुधकुजजीवपुत्रैः १२ व्याधिभिरभिसंग्रस्तःस्थानभ्रस्तोऽतिदुःखसंततः भ्रमतिक्षुधितःसकलैःकुजार्करविपुत्रशशिभृगुजैः १३

उत्साहस रहित और पुत्र और धनसे रहित होताहै ९ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रबृहस्पति शुक्रशनिका योग होवे सो वक्ता और इन्द्रजालमें रत और चलचित्त और स्त्रीका प्यारा और बुद्धिवाला और बहुशत्रुवोंवाला और यशहीन होताहै १० और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुध बृहस्पति शुक्रका योग होवे सो कामी और बहुतघोडयोंवाला और प्रसिद्ध सेनाकास्वामी और शोकहीन और राजाका प्यारा और बडे श्रेष्ठ भार्यावाला होताहै ११ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगल बुध बृहस्पति शनिका योग होवे सो निरुद्वेगवाला और रोगी और घरघरमें भिक्षाकरके अन्नभोजनकरणे वाला और पुराण मलीन वस्त्रोंवाला होताहै १२ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रमंगलशुक्रशनिका योग होवे सो व्याधिपीडाकरके ग्रस्त और स्थानक दुःखकरके संतप्त और क्षुधाकरकेयुक्तभ्रमणकरनाहोताहै १३

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्रशनिका योगहोवे सो पाताल यंत्र और धातु पारेमें लेकर्के रसायनोंमें बड़ा चतुरहोताहै और रसायनों कर्के प्रसिद्ध होताहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बुध बृहस्पति शुक्रशनिका योग होवे सो बहुत शास्त्र ज्ञानमें चतुर होताहै और मित्रसें प्रीतिवाला और बड़े यों की संमति वाला होताहै और धर्ममें तत्पर दयावान् होताहै १५ और जिसके जन्ममें चंद्रमंगलबुध बृहस्पति शुक्रका योगहोवे सो साधुवृत्तिवाला और पापसें रहित और विद्या और धन सुख और सत्य कर्के युक्त और बंधुयों का प्यारा और बहुतमित्रोंवालाहोताहै १६ और जिसके जन्ममें चंद्र बुधबृहस्पति शुक्रशनिकायोगहोवे सो बहुतशत्रु और मित्रोंकेपक्षवाला और प्रायेपनमें हितकरणे वाला और खोटे स्वभाववालाहोताहै १७

विलयंत्रधातुपारदरसायनेष्वतिपटुःपुमान्भवति एभिःप्रसिद्धकर्माक्षितिसुतरविजीवसितसौरैः १४ बहुशास्त्रज्ञानपटुर्मित्रहितःसंमतोगुरूणांच धर्मपरःकारुणिकःसूर्यासितशुक्रबुधजीवैः १५ साधुःकल्मषहीनोविद्याधनसौख्यसत्यसंपन्नः बंधुहितोबहुमित्रोबुधेंदुकुजजीवभृगुपुत्रैः १६ बहुशत्रुमित्रपक्षःपरार्थहितकृद्ववेद्विगतशीलः एकस्थैरतिमानीबुधेंदुगुरुशुक्ररविपुत्रैः १७ प्रेष्योमूर्खःक्लीबोमलिनाचारोतिदुर्भगोविकलः भवतिनरोधनरहितःशशिकुजगुरुशुक्ररविपुत्रैः १८ नृपमंत्रीनृपतिसमोगणनाथःसर्वलोकपूज्यश्च सैन्योभवतिनरश्चेंद्रेंदुजशुक्रशनिजीवैः १९ सतमस्कःसोन्मादोराज्ञामतिवल्लभोविगतशोकः निद्रातुरोदरिद्रःकुजगुरुबुधशुक्ररविपुत्रैः २० इतिपंचग्रहयोगप्रकरणम्

और जिसके जन्ममें चंद्रमंगल बृहस्पतिशुक्र शनिका योग होवे सो दूतवृत्तिके करणेवाला और मूर्ख और नपुंसक और मलीन आचारवाला और अत्यंत खोटे भाग्योंवाला और व्याकुल और धन हीन होताहै १८ और जिसके जन्ममें चंद्रबुधबृहस्पतिशुक्रशनिका योग होताहै सो राजाका मंत्री और राजाके समान और सेनाका स्वामी और संपूर्णलोकोंकर्के पूज्य और सेनाके युक्तहोताहै १९ और जिसके जन्ममें मंगलबुधबृहस्पतिशुक्रशनिका योग होवे सो अंधकाररूप बड़े उन्मादवाला और राजाका अत्यंतप्यारा और शोकसे रहित और निद्राकर्केआतुर औरदारिद्री होताहै २० इतिपंच ग्रहप्रकरणम्

अब छै ६ ग्रहयोगका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्रमंगल बुधबृहस्पति शुक्रकायोग होवे सो विद्या और धन और धर्ममेंरत होताहै और क्षमाकरणेवाला और बहुतबोलने वाला और श्रेष्ठबुद्धिवाला होताहै १ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमगलबुधबृहस्पतिशनिकायोग हो वे सो दाता और परकर्ममेंरत और चचलस्वभाववाला और श्रेष्टपराक्रमकर्केयुक्त और विजनदेशमें रमणेवाला होताहै २ और जिसके जन्ममें सूर्य चद्रमगलबुधशुक्रशनिकायोग होवे सो धनसंचयकर. णेवाला और श्रेष्ठभाग्योंवाला और मानवाला और शत्रुयोंकेहरणेमें प्रसिद्धऔर वन और पर्वतोंमेंरह. णेवाला होताहै ३ और जिसके जन्ममें सूर्यचद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रशनिका योगहोवे सो श्रेष्ठ जनों, काप्यारा और वडेतीव्रक्रोधवाला और लोभी होताहै और चुगलोंसें प्रीतिकरणेवाला और अत्यत.

विद्याधनधर्मरत-क्षमीचबहुभाषकोविकृष्टमतिः एकभवनोपयातैर्बुधदुरव्यारगुरुशुक्रैः १ दातापरकर्मरतःचलस्वभावोविशुद्धसत्वसंयुक्तः रमतेविजनेदेशे रवींदुवक्रज्ञगुरुरविजैः २ संचयशीलःसुभगोमानीरिपुहारणेतिविख्यातः वन पर्वतेपुरमतेरविशशिभौमज्ञसितसौरैः ३ आर्यजननांदयितोनरोत्कटस्तीव्ररोपणोलुब्धः पिशुनप्रियोतिसुभगोरविभौमेज्यैंदुसितसौरैः ४ मंत्रीनृपस्यसुभगः क्षांतियुतोभवतिशोकपरितप्तः अकलत्रोधनरहितोरवींदुबुधजीवसितसौरैः ५ तीर्थेभ्रमतिसदायःपुत्रैर्दारैर्धनेनरहितश्च पर्वतवनोपसेवीबुधाररविजीवसितसौरैः ६ प्रायोदारिद्यदुःखोमूर्खःषट्पंचभियुतैर्विहगैः अन्योन्यदर्शनादपिफलमेवंस्कंदिलःप्राह ७ ॥ इतिषट्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥

श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै ४ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रमंगलबुधबृहस्पतिशुक्रशनिकायोग होताहै. सो राजाकामत्री श्रेष्ठभाग्योंवाला और क्षमाकर्केयुक्त और शोभाकर्के सतप्त और स्त्रीकर्केरहित और धनकर्के रहित होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमगलबुधबृहस्पतिशुक्रशनिकायोग होताहैसो पुत्र स्त्री और धन कर्के रहित सर्वदाकाल तीर्थोंमें भ्रमताहै और पर्वत और वनकेसेवनेवाला होताहै ६ और जिसके जन्ममें पांचग्रहोंका वा षट्ग्रहोंकायोग होताहै अथवा पाच छै ग्रह परस्परदेखते होवें सो मनुष्य बहुत दरिद्री होतेहैंऔर मूर्ख होतेहैंऔर दुःखी होतेहैंअयसेंज्योतिःशास्त्रके जाननेवालेकहतेहैं ७ ॥ इति षट्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥

अत्र चारपांच षट्ग्रहादि योगोंकर्के प्रव्रज्यायोग कहतेहैं ॥ चतुर्ग्रहादि यो योगकहेहैं तिनमें निश्च यकर्के तपस्वीयोंका जन्म होताहै सो तिनों तपस्वीयोंके जन्मके फल अनेक प्रकारके योमुनियोंने कहेहैं सो विचित्रताकर्के मैं इसग्रंथमें कहताहा ॥ १ ॥ जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाशुक्रवृहस्पति मगल इहे पाचग्रह एकराशिमें स्थितहोवें वा सूर्यचद्रमाबुधमंगलइहे चार ग्रहास्थितहोवें वा सूर्यमंग लशनिबुधशुक्रइहे पांचग्रह स्थितहोवें सोमनुष्य गृहस्थ छोडके तपस्वी होताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्ममें मंगलचंद्रमासूर्यवृहस्पति एकराशिमें होवें और सूर्यचंद्रशनिबुधएकराशिमें होवें और सूर्यचंद्र मंगलशनिएकराशिमें होवें सोगृहस्थधर्मको त्यागकर्के संन्यासी होताहै ॥ ३ जिसके जन्मसमयमें

योगानिरुक्ताश्चतुरादिसंस्थैर्व्यासोग्रहैःकैरपितापसानां जन्मेहतेषामपरैर्मु नींद्रैःसंसेवितांस्तान्कथयामिचित्रान् १ सूर्येन्दुशुक्रेज्यमहीसुतेषु सूर्येन्दु सोमात्मजभूमिजेषु एकस्थितेषुप्रभवेत्तपस्वीसूर्यारमंदज्ञसितेषुचैवम् २ कु जेंदुसूर्येन्द्रपुरोहितैश्चतीक्ष्णांशुचंद्रार्किशशांकजैश्च सूर्येन्दुभूपुत्रशनैश्चरैः स्यादेकस्थितैःप्रव्राजितोमनुष्यः ३ आदित्यभूजार्कशशांकपुत्राभौमार्कचंद्रात्म जसूरयश्च एकर्क्षसंस्थास्तपसःस्थितानांकुर्वंतिजन्मप्रभवंनरेंद्राः ४ चंद्रार्क भौमार्किसितामहाबलाःसुरेज्यभूम्यात्मजसूर्यसौरयः ॥ कुजेंदुवागीशशनै श्चराइमेजन्मप्रदास्तेपिभवंतितापसाः ५ कुजार्किसोमात्मजदेवनंदनैःकुजा र्किचंद्रात्मजसूरिभार्गवैः ॥ रवींदुभौमासितदानवप्रियैर्भवंतिसूतौव्रतसंस्थि तानरः ६

सूर्यमंगलशनिबुधएकराशिमें और मंगलसूर्यबुधवृहस्पतिएकराशिमें स्थितहोवें सोतपस्वीजनोंमें राजाहोताहै ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमासूर्यमंगलशनिशुक्र बडेबलकर्केयुक्त एकराशिमेंस्थि तहोवें और वृहस्पतिमंगलसूर्यशनि एकराशिमेंहोवें और मंगलचंद्रवृहस्पतिशनि एकराशिमें स्थित- होवें सोतपके करणेवाला होताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मंगलसूर्यबुधवृहस्पति एकराशि में और मंगलशनिबुधवृहस्पतिशुक्र एकराशिमें स्थित और सूर्यचंद्रमंगलशनिशुक्र एकराशिमें स्थितहो वें तब व्रतमें स्थित होताहै ॥ ६

॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रमंगलशनिबृहस्पति सूर्य एकराशिमेंस्थित और मंगलचंद्रबृहस्पतिबुधशनि एकराशिमें स्थित और शुक्रचंद्रबुधशनिमंगलएकराशिस्थितहोवें सो तपस्वी वनऔरपर्वतोंमें रहने वाला होताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध मंगलबृहस्पति सूर्यएक राशिमें स्थितहोंवें और चंद्रमा सूर्य बुध शुक्र मंगल एकराशिमेंस्थितहोवें सो मनुष्यदृढव्रतके धारणेवालेमुनिहोतेहैं ८ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्र एक राशिमें स्थित होवें और चंद्र मंगल शनि बुध गुरु सूर्य एकराशिमें स्थितहोवें और मंगल चंद्र सूर्य शनि शुक्र बुध एकराशिमें स्थित होवें सो मनुष्य सेनाकर्के युक्त अर्थात् जमात वाला महंत होताहै ॥ ९ ॥ और जिसके जन्ममें

सितारसूर्यात्मजजीवभास्करैःकुजेंदुदेवेज्यबुधार्कनंदनैः सितेंदुपुत्रार्किशशांकभूसुतैर्भवेत्तपस्वीवनपर्वतालयः ७ चंद्रेंदुपुत्रारसुरेज्यभास्करैःशशांकसूर्येन्दुजशुक्रभूमिजैः स्थितैरमीभिःसहितैर्नृसंभवाभवंतिहत्यामुनयोदृढव्रताः ८ रवींदुभौमेंदुजजीवभार्गवैः शशांकभौमार्किबुधेज्यभास्करैः ॥ कुजेंदुसूर्यार्किसितेन्दुसंभवैर्भवेद्बमूभिःसहितोनरोव्रती ९ सितेंदुसूर्यार्कजजीवलोहितैःसितार्किभौमार्कशशांकसोमजैः ॥ एकत्रयातैर्गगनेचरैःसदाभवंतिजातामुनयस्तपस्विनः १० कुजज्ञवागीशसितार्किभास्करैःसितार्किजीवेंदुजचंद्रभूमिजैः ॥ बलप्रधानैःसहितैर्विहंगमैर्व्रजंतिजाताःपुरुपास्तपस्विनाम् ११ रवींदुवागीशशनैश्वरैश्चशनैश्वरेंद्वर्कसितैरवश्यं ॥ रवींदुपुत्रक्षितिजेंद्रपूज्यैस्तपस्विनःस्युःफलकंदभक्ष्याः १२

शुक्र चंद्र सूर्य शनि गुरु मंगल एकराशिमें स्थित होवें और शुक्र शनि मंगल सूर्य चंद्र बुध एकराशिमें स्थित होवें सो मुनि और तपस्वी होताहै १० और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि सूर्य एकराशिमें स्थित होवें और शुक्र शनि गुरु बुध चंद्र मंगल एकराशिमें स्थित होवें और बलकर्के युक्त होवें तब सो पुरुष तपस्वी होताहै ॥ ११ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बृहस्पती शनैश्वर एकराशिमें होतेहैं और शनि चंद्र सूर्य शुक्र एकराशिमें होतेहैं और सूर्य बुध मगल बृहस्पति एकराशिमें स्थित होतेहैं सोअवश्यकर्केफलकंदमूलभक्षणकरणेवालेतपस्वी होतेहैं॥ १२ ॥

और जिसके जन्ममें मंगल सूर्य बुध शुक्र एकराशिमें होतेहैं और मंगल चंद्र बृहस्पति बुध एकराशिमें स्थित होतेहैं सो व्रती और वृक्षोंके छिल्लोके वस्त्र धारणे वाला होताहै ॥ १३॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध मंगल शनि एकराशिमें स्थित होवें बुध मंगल बृहस्पति शनि एकराशिमें स्थित होवें तिसको तपस्वीयोंका नायक कर्तेहैं १४ और जिनोंके जन्मसमयमें चंद्रमा शनि शुक्र बुध वलयुक्त एकराशिमें स्थित होवें और मंगल बुध शुक्र शनि एकराशिमें स्थित होवें और शनि चंद्र सूर्य शुक्र एकराशिमें स्थित होवें सो तपस्वी फलशाक भक्षणकरणेवाले होतेहैं ॥ १५ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य मंगल चंद्रमा शुक्र एकराशिमें स्थित होवें और चंद्र मंगल बुध सूर्य एकराशिमें होवें और बृहस्पति शुक्र सूर्य चंद्रमा एकराशिमें स्थित होवें और शुक्र जीव बुध

वक्रार्कसोमात्मजदानवेज्यैर्भौमेंदुवागीशशशांकपुत्रैः ॥ एकर्क्षगैर्जन्मनियस्य जंतोर्भवेद्व्रतीवल्कलचीरधारी १३ शशींदुपुत्रक्षितिजार्कपुत्रावुधक्षमापुत्रसुरेज्यसौराः ॥ एकत्रगायस्यनरस्यसूतौकुर्वंतितंतापसमेवकांतम् १४ चंद्रार्किभार्गवशशांकसुतावलस्थाभौमेंदुपुत्रासितभास्करनंदनाश्च । मंदेंदुभास्करसितानि यतंयतीनांकुर्वंतिजन्मफलशाककृताशनानाम् १५ रविकुजशशिशुक्रैश्चंद्रभौमज्ञसूर्यैःगुरुसितरविचंद्रैःशुक्रजीवेंन्दुपुत्रैः । कुजवुधसितचंद्रैरेभिरेकेक्षया तैर्भवतिगिरिवनौकास्तापसःसर्ववंद्यः १६सितशशिकुजगुरुसौरैश्चेंद्रन्दुजभौमदेवगुरुशुक्रैः॥ रविकुजवुधशनिजीवैर्भवतियतिर्दुःखितोदीनः ॥ १७ ॥ कुजार्किदेवेज्यसितेंदुपुत्रैःशनीज्यसोमात्मजचंद्रभौमैः समागतैःस्युःसबलैर्यथोक्तैर्जटाधरोवल्कलचीरवासाः १८

एकराशिमें स्थित होवें और मंगल बुध शुक्र चंद्रमा एकराशिमें स्थित होवें सो तपस्वी संपूर्णोंकर्के वंदनाकों प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्र चंद्रमा मंगल बृहस्पति शनि एकराशिमें स्थित होवें और चंद्रमा बुध मंगल बृहस्पति शुक्र एकराशिमें स्थित होवें और सूर्य मंगल बुध शनि बृहस्पति एकराशिमें स्थित होवें सो संन्यासी वडेदुःखकों प्राप्त और वडादीन होताहै १७ और जिसके जन्मसमयमें मंगल शनि बृहस्पति शुक्र बुध एकराशिमें स्थित होवें और शनि बृहस्पति बुध चंद्रमा मंगल एकराशिमें स्थित होवें और वलकर्के युक्त होवें सो तपस्वी जटाके धारणे वाला और वृक्षोंके छिल्लड़ोंके वस्त्रधारणे वाला होताहै १८

श्रौरजिसके जन्मसमयमेंसूर्य बुधचंद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रएकराशिमेंस्थितहोवेंश्रौरसूर्यचंद्रमंगलबृहस्पति शुक्र शनिएकराशिमेंस्थितहोवेंसोतपस्वीयोंकारूपधारकेवडाश्रेष्ठहोताहै १९ श्रौरजिसकेजन्मसमयमें दशमघरकास्वामी सूर्य कर्के युक्तहोवेसो संन्यासीभक्ति कर्केयुक्तहोताहैश्रौरप्रव्रज्याकेकारकग्रहवलीहोवें तववो भक्तियुक्तहोताहै श्रौर जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण ग्रह नवमस्थानमें स्थित होवें वा चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें सो संन्यासी ग्रहोंके बलके अनुसार होताहै २० श्रौर जिसके जन्मसमयमें दशमघरका स्वामी सूर्यकर्के युक्त होवे अथवा श्रौर ग्रहों कर्के देख्याहोवे सो याचनाकर्के दीक्षित होताहै इहे यव नाचार्यका वाक्यहै २१ श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा शनि के द्रेष्काणमें स्थित होवे श्रौर मंग ल सूर्य कर्के देख्या होवे सो तपस्वी होताहै अथवा मंगलके नवांशमें चंद्रमा शनिकर्के देख्याहोवे तव

भान्विदुजेन्दुकुजजीवसुरारिपूज्यैःसूर्येंदुभौमगुरुशुक्रशनैश्चरैश्च ॥ प्राप्नो त्यवश्यमिहतापसरूपमेभिरेकर्क्षगैर्गगनवासिभिरार्यतज्ञः ॥ १९ ॥ प्रव्र ज्येशेदिनकरगतेभक्तिवंतोतिमात्रं ॥ प्रव्रज्यायाःस्वबलसहितैर्वीर्यमाहुर्ग्रहें द्रैः ॥ संपूर्णैर्वानवभवनगतैःप्रच्युतिस्थैर्बहुत्वं ॥ वीर्योपेतैर्भवतिवहुभिः स्याद्बलस्यानुपूर्व्या ॥ २० ॥ प्रव्रज्यायाःस्वामीरविमुपिततनुर्निरीक्षितो वान्यैः याचितदीक्षोभवतियवनाधिपतेर्यथावाक्यम् २१ शशीदृकाणेरविजस्य संस्थितःकुजार्कदृष्टःप्रकरोतितापसं कुजांशकेवारविजेनदृष्टोनवांशतुल्यंकथयं तितंपुनः २२ जन्माधिप.सूर्यसुतेनदृष्टःशेषैरदृष्टःपुरुषस्यसूतौ श्रामीयदी क्षांकुरुतेह्यवश्यंपूर्वोक्तमत्रापिविचारणीयम् २३ जन्मपतिर्विकलांगःपश्यति सौरिंचतुष्टयेप्रबलम् यस्यसभाग्यविहीनःप्रव्रज्यांप्राप्नुयात्पुरुषः २४ गुरुहि मगुरवीणामेकपूर्वोदयस्थोगगनतलगतोवावारिजात्मालपमूर्त्तिः श्रविकलबल भाजासूर्यपुत्रेणदृष्टोजनयतिखलुजातंतापसंदुःखभाजम् २५

नवांशपतिग्रहके समान तपस्वी कहतेहैं २२ श्रौर जिसके जन्मलग्नका स्वामी शनिकर्के देख्या होवे श्रौर शेष श्रौर कोई ग्रहनहीं देखता होवे तव तिस पुरुषको श्रात्मदीक्षामें श्रवश्य युक्त कर्ताहै श्रौर पूर्वोक्त लक्षणतिसमें विचारणे योग्यहै गृहस्थ या वानप्रस्थ इत्यादि २३ श्रौर जिसके जन्मलग्नका स्वामी निर्बलहोयकर्के केंद्रमें स्थित बलवान् शनिको देखे सो पुरुष भाग्योंकर्के हीन प्रव्रज्यामें प्राप्त होताहै २४ श्रौर जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति चंद्रमा सूर्यके मध्यमें एक ग्रहवी पूर्वोदयमें स्थित होवे श्रौर श्राकाशमें स्थित शत्रुग्रहोंकर्के रश्मि मूर्त्तिको प्राप्तहोवें श्रौर श्रल्प बलको प्राप्तहोवें श्रौर शनिकर्के देख्या होवे सो तपस्वी कोंदुःखके भोगने वाला कर्ताहै २५

और जिसके जन्मसमयमें सूर्यको शुभग्रहके नवांशमें वा अपने उच्चमें वा पंचमस्थानमें स्थित हुवेको शनि देखताहोवे वलीहोयकर्के तव सो दीक्षित भवनोंकास्वामी होताहै और चित्तकर्के दीक्षित होताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें शुक्लपक्षमें पूर्णवली होयकर्के चंद्रमा और वलकर्केहीन लग्नेशको देखे तवतपस्वी वडादुःखी और शोककर्केयुक्त और धनकर्के संबंधियोंकर्के हीन और वडे क्लेशकर्के अन्नपानको प्राप्त होताहै २७ और जिसके जन्मसमयमें शनि शुभग्रहके नवांशमें स्थित होयकर्के चंद्रमाको देखे और तयसेंहि और ग्रहोंको देखे और चंद्रमासें लेकर्के ग्रह उच्चनवांशमें स्थित नहिं होवें तव पुरुषको दीक्षाकर्के युक्त कर्तेहैं २८ और जिसके जन्मसमयमें एकराशि में संपूर्णग्रह स्थितहोवें और लग्नकास्वामी तिनको देखता होवे तव तिसपुरुषको अवश्यमेव दीक्षा होतीहै अपसें

कुमुदगहनवंधुसौम्यभागेवलस्थंवियतिगमनशीलंस्वोच्चगेपंचमेवा यदिदिनकरपुत्रःपश्यतिप्राप्तवीर्योभवतिभुवननाथोदीक्षितःस्वांतएव २६ अतिशयवलयुक्तःशीतगुःशुक्लपक्षेवलविरहितरिक्तंप्रेक्ष्यतेलग्ननाथम् यदिभवतितपस्वीदुःखितःशोकतप्तोधनजनपरिहीनःकृच्छ्रलब्धान्नपानः २७ सौरःशुभभागस्थःपश्यतिचंद्रंग्रहांस्तथैवान्यान् तुंगांशेष्वप्रसंजनयतिदीक्षान्वितंपुरुषम् २८ एकर्क्षगतैःसर्वैर्जन्माधिपतिर्निरीक्ष्यतेयस्य दीक्षातस्यावश्यंभवतीहपुरातनैःकथितम् २९ अग्नीनांपरिचारकागिरिनदीतीराश्रमेतापसाःसूर्याराधनतत्परागणपतेर्भक्ताउमायाश्चये गायत्रींजपतांवनेनियमिनांगंगाभिषेकार्थिनांकौमारव्रतधारिणामधिपतिस्तेषांचवैभास्करः ३० वृद्धाःश्रावकभस्मधूलिधवलाःशैवेव्रतेयेस्थितावाह्योपासकृतोवनेनियमिनांभक्ताश्चनिःसंगिनः सिद्धांतेखलुसोमनान्निनिरताःकापालकानंवरास्तेषांनायकतांगतःशशिधरःशंखांवुयोनिद्युतिः ३१

पुरातन ऋषियोंने कहाहै २९ अव प्रव्रज्याके स्वामी ग्रह कहतेहैं यो तपस्वी अग्निहोत्रके करणेवाले और पर्वत नदीके कनारे आश्रमवनायकर तपस्या करतेहैं और यो सूर्यके आराधनमें तत्परहोतेहैं और यो गणेशके और पार्वतीके भक्तहैं और वनमें स्थितहोयकर्के गायत्रीका जपकर्तेहै और श्रीगंगाजीका स्नान नित्यप्रति कर्तेहैं और नैष्टिक ब्रह्मचर्यकोंधारतेहैं तिनोंका स्वामी सूर्यनारायणहै ३० और यो वृद्ध श्रावकधर्ममें स्थित हिंसादि दोषोंसें रहित और भस्मकर्के श्वेतवर्णके देह जिनके और शिवदीक्षावाले उपवासव्रतोंकेकरणेवाले और वनमें नियम धारकर्के वासकरणेवाले और संगसें रहित और सोमसिद्धांतमें रत और कपालोंके धारणेवाले और नग्नव्रतके धारणेवाले और शंख और कमलकी न्याई शोभाजिनकी अपसे तपस्वीयोंका स्वामी चंद्रमा होताहै ३१

और यो वुद्धिके आश्रयहोयकर्के देवताकी उपासना कर्तेहैं और यो शिखाके विना पांडुरवस्त्रोंकर्के युक्त और भिक्षाकेमांगणेवालेजो हैं और लालवस्त्रधारणे वाले और ईंद्रियोंकों जीतनेवाले तिनों कास्वामी मंगल होताहै ३२ और यो कपटकर्के जीविकाकरणेवाले और यो गारुडमंत्रोंकर्के दीक्षितहैं और यो मयूरतंत्रके मतमें स्थित और कचे मांसकेभोजनकरणेमें युक्त तिनोंका स्वामी वुध होताहै ३३ और जो तपस्वी एकदंडकों अथवा तीनदंडकों धारणकर्तेहैं और कषायांवर गेरीके रंगके वस्त्र धारतेहैं और वानप्रस्थ धर्ममें स्थित होतेहैं और जोगृहस्थधर्ममें यज्ञोंका नियम करणेवालेहै और जो श्रेष्ठब्रह्मचर्यमें प्राप्तहोतेहैं और जो तीर्थमें स्नानकरणेवाले हैं तिनोंका स्वामी वृहस्पतिकहाहै

उपासकावुद्धिसमाश्रयंगताःशिखांविनापांडुरभिक्षुकाश्चये सवाससोरक्तपटा जितेंद्रियाःप्रभुःसचैषांक्षितिजःप्रकीर्त्तितः ३२ आर्जीविनांकुहकिनांसमयाधिकारियेदीक्षितास्तनुभृतःखलुगारुडेच तंत्रेमयूरपिशिताशनयुक्तियुक्तास्तेषांशशांकतनयोधिपतिर्निरुक्तः ३३ एकंत्रीनथवावहंतिमुनयोदंडान्कषायांवरा वानप्रस्थमुपागताःफलपयोभक्षाश्चसंन्निक्षवः गार्हस्थ्यक्रतुसंज्ञितानियमिनःसद्ब्रह्मचर्यंगतास्तेषांदंडपतिःसुरेंद्रसचिवस्तीर्थेषुयेस्नातकाः ३४ पाशुपतयज्ञदीक्षाव्रतेषुयेनित्यमेवसंयुक्ताः वैष्णवचरकाणामपितेषांनेताप्रकीर्त्तितःशुक्रः ३५ पाषंडव्रतनिरतादिगंवराःश्वेतभिक्षवोयेच तेषामधिपतिरार्किःश्रावकलंविनःसुदुस्तापसाः ॥ ३६ ॥ प्रकथितमुनियोगेराजयोगोयदिस्यादशुभफलविपाकंसर्वमून्मील्यपश्चात् जनयतिपृथवीशंदीक्षितंसाधुशीलं प्रणतनृपशिरोभिर्घृष्टपादाव्जयुग्मम् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधजातकखंडेद्विग्रहादियोगाध्यायोद्वादशः ॥ १२ ॥

---

३४ और जो पशुपति यज्ञकी दीक्षामें स्थितहैं और नित्यप्रति व्रतोंमें संयुक्तहैं और वैष्णवचरकोंके जाननेवाले जोहैं तिनका स्वामी शुक्रकहाहै ३५ और जो पखंडव्रतमें स्थितहै और दिगंवरजो हैं नग्नतके धारणे वाले और श्रावक मतमें स्थित होनेंवाले और वडे कठिनतपके करणे वाले जो तपस्वीहै तिनका स्वामी सूर्यकापुत्र जो शनिहै सो कहाहै ३६ और कहतेहैं कहेयो मुनियोगहैं इनमें जब राजयोगहोवे तब संपूर्ण अशुभफलकों दूरकर्के पीछेसें वडे प्रतापकर्के युक्त राजा होताहै कैसाराजाहोताहै दीक्षाकर्के युक्त और साधुस्वभावकर्के युक्त और वडेवडे राजा तिसके कमलरूपीचरणोंकों अपने शिरोंकर्के नम्र होयकरस्पर्शकरतेहैं ३७ इतिश्रीजातकखंडेद्विग्रहादियोगफलाध्यायोद्वादशः १२

अब राजयोगाध्याय कहतेहैं इहे शास्त्र राजयोंका उपयोगीहै जिससें विशेषसें राजयोगोंककें राजा जन्मतेहैं तिसकारणसें राजयोगोंका चिंतनककें इसग्रंथमें कहताहां १ और जिसके जन्मसमयमें तीन अथवा चार ग्रह अपने उच्चमें वा मूलत्रिकोणमें स्थितहोवें और बलककें युक्त होवें सो राजाके वंशमें जन्माहुया राजा होताहै और जिसके जन्ममें पाचवाछे ग्रह उंच और मूलत्रिकोणमें स्थित बली होवें सो सामान्यकुलमेंवी जन्माहुया राजा होताहै और उच्चत्रिकोणमें ग्रह हीनबलहोवें तब राजा केतुल्य होताहै औरपृथ्वीके पालनेंवाला राजा होताहै और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पापीग्रह

अथराजयोगाध्यायः राजोपयोगिशास्त्रंयस्मात्प्रभवोविशेपतस्तेपाम् संचिंत्यचनृयोगैस्तानेवातःप्रवक्ष्यामि १ स्वोच्चत्रिकोणभगतैर्बलसंयुतैश्चत्र्याद्यैर्नृपोभवतिभूपतिवंशजातः पंचादिभिर्जनपदेपिभवंतिसेद्धैर्हीनैःक्षितीश्वरसमोनतुभूमिपालः २ अशुभगगनवासैःस्वोच्चगैःक्रुरचेष्टंकथयतियवनेंद्रोभूपतिविक्रमोत्थम् नतुभवतिनरेंद्रोजीवशर्मोक्तपक्षेभवतिनृपतिपुण्यैरुत्कटैर्भूमिपालः ३ येष्विहभवंत्यवश्यंभूपतियोगेपुनीचकुलपुरुषाः तानग्रतःप्रवक्ष्येयथामतंशास्त्रकाराणाम् ४

उच्चमें स्थितहोवें सो राजा क्रूर स्वभाववाला और अपनेक्रमककें राजकर्त्ताहै अयसें यवनाचार्यके मतसेंकहाहै और जीवशर्मा आचार्यकेमतसेंसो राजा नहि कहाहै जिसककें क्रूरग्रहोंके उच्चहोनेंसें बली और लोकोंके सितावने वालाहोताहै और पूर्वजन्मके वडे पुण्यों ककें पृथ्वीके पालनेवाला होताहै ३ और कहतेहै जिनराजयोगोंमें जन्माहुया नीचकुलमें वी अवश्यमेव राजा होताहै सोराजयोगपूर्व कहताहै जैसें शास्त्रकारोंके मतमें कहेहैं ४

श्रीर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य शनि मंगल वृहस्पति चारग्रह वा तीन ग्रहवी उच्चमें स्थित होवें तव षोडशवृद्धयवनों केमतसें राजा कहेहैं श्रीर दोग्रह वा एकग्रह उच्चमें स्थित होवेंश्रीर वृषराशिका चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तववी षोडशयवनोंके मतसें नीचकुलमें जन्मकी पायकेवी पृथ्वीकों एक वाडीकीन्याई पालताहै ५ श्रीर जिसके जन्मसमयमें श्रेष्टगणकानवांश जन्मलग्नमें स्थितहोवे श्रीर अथवाचद्रमावीश्रेष्ट नवांशमें स्थितहोवे श्रीर चारग्रह चंद्रमासेंरहित वलीहोवें श्रीर तिनोंकर्के चंद्रमा देख्या होवे तव नीचकुलमें जन्मावी राजा होताहै ६ श्रीर जिसके जन्म

स्वोच्चस्थैरविसौरभौमगुरुभिः सर्वैस्त्रिभिश्चैककैर्लग्नेषोडशवृद्धयावनमतेसंदर्शिताःपार्थिवाः द्वाभ्यांचैकतमोदयेस्वभवनेचंद्रेपुनःषोडशःसर्वैर्नीचकुलोद्भवोपिवसुधांपात्येकवाटीमिव ॥ ५ ॥ गणोत्तमोलग्ननवांशकोद्गमोनिशाकरश्चापिगणोत्तमेथवा चतुर्ग्रहैश्चंद्रविवर्जितैर्बलीनिरीक्षितः स्यादधमोद्भवोनृपः ॥ ६ ॥ उदयगिरिनिविष्टैर्मेषसंस्थैर्ग्रहेंद्रैः शशिरुधिरसुरेज्यैर्जायतेपार्थिवेंद्रः त्रिजलधिरसनायाःपालकोयस्यभूमेर्हतरिपुपरिवारःसर्वतःफूत्करोति ७ स्वोच्चेरवावथकुजेकियगेविलग्नेमेषोदयेचसकुजेवचसामधीशे भूयान्महीभृदिहयस्यविपक्षसैन्यंतिष्टेन्नजातुपुरतः सचिवस्ययस्य ॥ ८ ॥

समयमें मेषराशिमें स्थित चंद्रमा श्रीर मंगल श्रीर वृहस्पति उदयकों प्राप्तहोवें सो राजाधिराजहोताहै श्रीर तीनसमुद्रपर्यंत पृथ्वीके पालने वाला होताहै श्रीर जिसकी भूमिमें हतहोयेगएहै शत्रुओंके समूह श्रीर चारदिशोंमें वडे श्वासोंकोंलेतेहैं ७ श्रीर जिसके जन्मसमयमें उच्चराशिमें सूर्य स्थित होवे श्रीर अथवा मेषराशिकामंगल वृहस्पति कर्के युक्त लग्न में स्थितहोवेतिसराजाके आगें कोईवीशत्रुपक्षकीसेना स्थित नहिं होयसकीहै श्रीर तिसके मंत्रीके आगेंवी शत्रुयों कीसेना नहिं स्थितहोय सकीहै ८

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा धनराशिमें स्थित होवे शुक्र और बृहस्पति कर्कयुक्त होवे और मंगल उच्चराशिमें स्थित होवे और मकरराशिके पूर्वभागमें शनि स्थित होवे और कन्यालग्नमें बुध स्थित होवे तब अवश्यनेत राजाहोताहै कैसा वीहोताहै बहुतविद्यामें कुशल श्रेष्ठ होताहै ९ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा कर्कराशिमें स्थित होवे और शुक्लपक्षमें जन्मलग्नमेंस्थितहोवे और सप्तमस्थानमें बुधस्थितहोवे और छठे स्थानमें सूर्यस्थितहोवे और चतुर्थस्थानमें शुक्रस्थितहोवे और बृहस्पति दशम स्थानमें स्थित होवे और मंगल और शनि तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो राजा चंद्रमा कीन्याईं श्वेत वैरियोंको झुलावताहै और राज्यलक्ष्मीको भोगताहै १० और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वृषराशीका जन्मलग्नमें स्थित होवे और कुंभराशिमें शनि स्थित होवे और सिंहराशिमें सूर्य स्थित

निशाभर्त्ताचापेभृगुतनयदेवेज्यसहितःकुजःप्राप्तःस्वोच्चंमृगमुखगतःसूर्यतनयः विलग्नेकन्यायांशिशिरकरसूनुर्यदिभवेत्तदावश्यंराजाभवतिबहुविज्ञानकुशलः९ स्वर्क्षेनक्षत्रनाथःस्फुटकरनिकरालंकृतः प्राप्तलग्ने द्यूनेसोमस्यपुत्रोयादिरिपुभवनंभास्करःसंप्रयातः पातालेदानवेज्योगुरुरपिगगनेसौरभौमौतृतीयेस्याद्भूपालोवहेद्यः शशिधवलचलच्चामरांराज्यलक्ष्मीम् १० शिशिरकिरणःस्वोच्चलग्नयथांबुनिधेः समो घटधरगतोभानोः पुत्रोमृगाधिपतौरविः अलिग्रहगतोवाचांनाथः स्फुरत्करराजितोयदिनरपतिः स्फीतश्रीकस्तदाबहुवाहनः ११ मृगमदेलग्नेकुमदवनबंधुश्चतिमिगस्तथा कन्यांमुक्त्वाबुधभवनसंस्थःकुतनयः स्थितोनार्य्यांसौरिर्धनुषिसुरमंत्रीयादिभवेत्तदाजातोभूपः सुरपतिसमावाप्तमहिमा १२ उदयतिमीनेशशिनिनरेंद्रः सकलकलाढ्यः क्षितिसुतउच्चे मृगपतिसंस्थेदशशतरश्मौघटधरगेस्यादिनकरपुत्रे १३ ॥

होवे और वृश्चिकराशिमें बृहस्पति स्थित होवे और उदयको प्राप्तहोवे और यदप्रभाकरके युक्त होवे तब राजा बडीलक्ष्मी वाला और बहुत वाहनोंकरके युक्त होताहै ११ और जिसके जन्मसमयमें मकरलग्नमें शनिस्थित होवे और चंद्रमा मीनराशिमें स्थित होवे और मिथुन राशिमें मंगलस्थित होवे और कन्या राशीमें शनि स्थित होवे और धनराशिमे बृहस्पति यद स्थित होवे तब इंद्रके तुल्य महिमा वाला राजा होताहै १२ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें मीनलग्नमें चंद्रमा उदयहोवे और मंगल उच्चराशिमें मकरमेंस्थित होवे और सिंहराशिमें सूर्य स्थित होवे और कुंभराशिमें शनि स्थित-होवे तब राजासंपूर्णकलाओंकरके युक्त होताहै १३

और जिसके जन्मसमयमें लग्नमेंमंगल स्थित होवे और चंद्रमाकर्के युक्त बुध सप्तमस्थानमें स्थित होवे और प्रकटकिरणों कर्के दिशोंकोंप्रकाशकरे तब राजाशत्रुयोंकर्के नहि जीत्या जाताहै और वेदार्थके जानने वाला और अनेक कारणोंकेजानने वलाहोताहै १४ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य और चंद्रमाउच्चराशिमें स्थित होवें तब राजा तैसेंही संपूर्णलोकोंके हृदयमें आनदकोंउत्पन्न कर्त्ताहै और तिसकोंस्मरणकर्केशत्रुयोंकियां स्त्रीयानिरंतरनेत्रोंसें जलधाराकों त्यागतियाहें और शोकरूप अग्निके हृदयमें दग्धहोतियाहैंऔर जिसकेजन्मसमयमें कुंभराशिमेंशुक्र और मेषराशिमें मगल और कर्कटराशि में बृहस्पतिस्थितहोवे तब राजानिश्चयकर्के अपनेयश कर्के चारदिशा कों प्रकाशकर्त्ताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिकर्कराशिमें स्थितहोवेस्वर्णकीन्याईप्रभायुक्तहोवेऔर मेषराशिमें सूर्यस्थित

लग्नेकुजोज्ञःसशशीयदास्तेस्फुटांशुसंभारविराजिताशः राजातदाशत्रुभिरत्रधृष्येवेदार्थविद्धेतुशतानुवादी ॥ १४ ॥ करोत्युत्कृष्टोच्चेदिनकृदमृतामोदानिलयः स्थितिस्तादृग्भूपंसकलभवनानंदजननम् अपूर्वोयंस्मृत्वानयनजलसिक्तोसि सुतराम् रिपुस्त्रीशोकाग्निर्ज्वलतिहृदयेतीवसततम् ॥ १५ ॥ शुक्रोघटेकुजो मेषेस्वोच्चेदेवपुरोहितः यदिराजाभवेन्नूनंस्वयशोधौतदिङ्मुखः ॥ १६ ॥ उदयतिगुरुरुच्चेतप्तहेमप्रभाभोहरिततुरगनाथोऽव्योममध्यावगाही गविशशि वुधशुक्रायस्यसूतौनरस्यस्वभुजविजितभूमिःसर्वतःपार्थिवेंद्रः १७ धनुषिसुरेज्यःशशभृदुपेतोमृगमकरस्थःक्षितितनयश्च उदयतितुंगेसुररिपुवंद्यःशशितनयोवायदिनृपतिःस्यात् १८ चापार्धेभगवान्सहस्त्रकिरणस्तत्रैवताराधिपोलग्नेभानुसुतोथवीर्य्यसहितःस्वोच्चेथभूनंदनः यद्येवंभवतिक्षितेरधिपतिःसंश्रित्य शौर्यंभवाद्दूरादेवनमंतियस्यरिपवोदग्धाःप्रतापाग्निना ॥ १९ ॥

होवेऔर वृषराशिमें चद्रमा बुध शुक्र स्थित होवें सो राजाअपने भुजोंके बलकर्के पृथ्वीकोंजीतताहै और सर्वत्र राजाधिराज होताहै ॥ १७ ॥ और जिसके जन्मसमयमे धनराशिमें बृहस्पति चंद्रमा कर्के युक्तस्थितहोवे और मकर राशिके पूर्वभागमें मंगलस्थितहोवे और मीनराशिमें शुक्र स्थितहोवे अथवा कन्याराशिमें बुधस्थित होवे तब राजा होताहै ॥ १८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धनराशि के पूर्वार्धमें सूर्यचद्रमास्थित होवें और लग्नमें शनि बलकर्केयुक्त स्थितहोवे और मकरराशिमें मगल स्थितहोवे यव इसप्रकारका राजयोग जिसकों होवे सो वडेप्रतापकों प्राप्त होताहै और तिसके प्रताप रूपअग्निकर्के दग्धभयेजो शत्रु सो दूरसेंहि तिसकों वंदना कर्तेहें ॥ १९ ॥

और जिसकेजन्मसमयमेंचंद्रमासेंसतम औरषष्ठ औरअष्टमस्थानमें स्थितसंपूर्णग्रह शुभहोतेहैं और क्रूरग्र होंसेंसूर्यादि दूरस्थानमें स्थितशुभहोतेहैं ऐसे योगमें जन्मतायोराजाहै तिसकीसेनाके जो मत्तहाथीहैं तिनके मदका जो जलहै तिसकों समुद्रके कनारेयोंके वनोंमें भौरेपानकर्तेहैं २० और कहतेहै जो राजा अधियो गमेंजन्मताहै तिसकों शीघ्रजरावस्थानहिंप्राप्त होतीहै और तिसकों शत्रुयोंका भय नहिं होताहै और सौभाग्य और सुखकों भोगताहै ॥ २१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कन्याराशिमें उच्च कों प्राप्त बुधस्थितहोवे और मीनराशिमें चंद्रमा और शुक्रहोवें और मकरराशिमें शनि स्थितहोवे और मिथुनराशिमें शुक्र स्थितहोवे तिसकों राजयोंके मारणे वाला वडाराजाकर्तेहैं और तिसके हाथियों

द्यूनंषष्ठमथाष्टमंशिशिरगोःप्राप्ताःसमस्ताःशुभाः क्रूराणांयदिगोचरेणपतितो भान्वादयोदूरतः भूपालः प्रभवेत्सयस्यजलधेर्वेलावनांतोद्भवैःसेनामत्तकरींद्रदा नसलिलंभृंगैर्मुहुःपीयते २० नप्राप्नोतिजरामाशुनोभवत्यरिजंभयम् जातःस्या दधियोगेचनृपःसौभाग्यसौख्यभाक् ॥ २१ ॥ बुधःस्वोच्चेलग्नेतिमियुगलसं स्थौशशिभृगुमृगेमंदःसौरोजितुमग्रहगोदानवसुहृत् नृपंकुर्याद्यस्यक्षितिभृद हितध्वंसनिरतोनिरालोकोलोकश्चलितगजसंघातरजसा ॥ २२ ॥ कार्मुकेत्रि दशनायकमंत्रीभानुजोवनिजचंद्रसमेतः मेषगश्चतपनोयदिलग्नेभूपतिर्भवति सोतुलकीर्तिः ॥ २३ ॥ स्वर्क्षात्केंद्रेपुयातैर्गुरुबुधभृगुजैर्मंदभान्वारयुक्तैःस्वो च्चेचंद्रेपितिष्ठन् जनयतिनृपतिंकीर्तिशुक्लीकृतांगम् अत्युच्चेलग्नसंस्थोरविरपि भगवान्पार्थिवंक्रूरचेष्टं यातायातैःसमंताच्चतुरुदधिजलंयस्यसेनाःपिबंति ॥ २४

की धूडसें लोकालोक पर्वत व्याप्तहोताहै २२ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिमेंबृहस्पतिस्थितहोवे शनि मंगल चंद्रमाकर्केयुक्त होवे और मेषराशिमें लग्नगतसूर्यहोवे सो राजावडेयशवाला होताहै २३ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें अपनी राशीसें केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें बृहस्पति और बुध और शुक्र क्रमकर्के शनि सूर्य मंगल कर्के युक्त होवें और अपने उच्चराशिमे २ चंद्रमास्थित हो वे तव वडेयशकर्के युक्त राजाहोताहै और जिसके जन्ममें परमोच्चस्थानमें सूर्य लग्नगतहोवे सो क्रूरस्व भाववाला राजा होताहै और गमनागमनकर्के चारो ओर सें समुद्रकेजलकों तिसकियां सेना पानकार्तियांहैं ॥ २४ ॥

और जिसके जन्मसमयमें जलचरराशीके नवांशमें चतुर्थस्थानमें चंद्रमा स्थित होवे और लग्नमें शुभग्रह स्ववर्गमें स्थित होवे और केंद्र १।४।७।१० स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित न होवे. तब कला और यश करकेयुक्त राजा होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमाको शुक्र बृहस्पतिबुध देखते होयें और लग्नकास्वामी बडे बलकरके युक्तहोवे और लग्नमें वर्गोत्तम नवांश अर्थात् लग्नराशि का नवांश होवे तबराजा होताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें तीनग्रहोंसे लेकर वर्गोत्तममें और केंद्र १।४।७।१०। में स्थितहोवे वा शुभग्रहों करके युक्तहोवें और रूक्ष धूम्र विवर्ण देहवाले नहोवें तब राजा करतेहैं २७ और जिसके जन्मसमयमें एकग्रह भी अपने उच्चमें स्थितहोवे अथवा वर्गोत्तममें स्थित होवे और बलवान् होवे और मित्रग्रहकरके देख्याहोवे सो राजा कर्ताहै ॥ २८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्णग्रह शीर्षोदय ३।५।६।७।८।११ राशि

उदकचरनवांशकेसुखस्थःकमलरिपुःसकलाभिरामकीर्तिः उदयतिविहगेशुभेसुवर्गेभवतिनृपोयदिकेंद्रगानपापाः ॥ २५ ॥ आपूर्णमंडलकलाकलितशशांकंपश्यंतिशुक्रसुरपूजितसोमपुत्राः लग्नाधिपोतिबलवान्पृथिवीश्वरःस्याद्वर्गोत्तमश्चनवमःखलुचद्विलग्ने ॥ २६ ॥ वर्गोत्तमेत्रिप्रभृतिर्ग्रहेंद्राःकेंद्रस्थितावाशुभसंयुताश्च नीरूक्षधूम्रानविवर्णदेहाःकुर्वंतिराज्ञःप्रसवंग्रहेंद्राः ॥ २७ ॥ एकएवग्रहःस्वोच्चेवर्गोत्तमगतोपिवा, बलवान्मित्रसंदृष्टःकुरुतेचमहीपतिम् २८ शीर्षोदयर्क्षेषुगताःसमस्तानीचारिवर्ज्यस्वगृहेशशांकः सौम्येक्षितोन्पूनकलोविलग्नेदद्यान्महींरत्नगजाश्वपूर्णाम् २९ उपचयगृहसंस्थोजन्मपोयस्यचंद्राच्छुभगृहमथवांशंवीर्ययुक्ताश्चसौम्याः सकलबलवियुक्तायेचपापाभिधानाः सभवतिनरनाथःशक्रतुल्योबलेन ३० अत्युच्चस्थःसुरुचिरवपुःसर्वएवग्रहेंद्रोमित्रैर्दृष्टोयदिरिपुदृशांगोचरनप्रयातः कुर्यान्नूनप्रसभमरिभिर्वर्जितोगौरवाढ्यैर्नागेंद्राश्वैश्चलविचलितैर्यस्यतंपार्थिवेंद्रम् ३१

योंमें स्थित होवें और नीच और शत्रुकी राशिसे रहित होवें और चद्रमाकर्क राशिमेंस्थितहोवे और शुभग्रह करके देख्याहोवे और पूर्ण चंद्रमालग्नमें स्थित होवे सो रत्न और हाथि और घोडयोंकरके युक्त पृथ्वीको देताहै २९ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमासेउपचय ३।६।१०।११ स्थानमें जन्मलग्नकास्वामी होवे शुभराशिमें वा शुभनवांशमें स्थित होवे और शुभग्रहबलीहोवें और पापी ग्रहबलहीन होवें सो राजाबलकरके इंद्रके तुल्य होताहै ३० और जिसके जन्मसमयमें शुभ और पापी ग्रह परमोच्चमें स्थित होवे और प्रकाश करके युक्त होवे और मित्र ग्रहोंकरके देख्याहोवे और शत्रु ग्रहो कीदृष्टिसे रहित होवे सो ग्रह राजाको बलवान् शत्रु से रहित और बडे गर्व वाले हाथियों घोडयों करके युक्त कर्ताहै ३१

ओर जिनके जन्मसमयमें परमोच्चमें चंद्रमा स्थित होवे ओर शुक्र कर्के देख्याहोवे ओर पापीग्रह आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें स्थित होवें तब निश्चयकर्के राजा कर्त्तहे ॥ ३२ ॥ ओर जिसक जन्मसमयमें शुभ ग्रहकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमे मित्रग्रहोंकर्के देखेहोवें ओर शुभ ग्रहयुद्धमें शत्रुयोंकर्के नाहिं जीतेहोवें ओर वलकर्के युक्त जन्मलग्न जन्मराशिके स्वामी होवे तव राजा होताहै ओर जिनको जन्मराशिकास्वामी नवमस्थानमें स्थित होवे ओर कर्कटराशिमें स्थित होवे तब यशवाला होताहै ओर जिसके हाथियोंके मदके पानकरणे वाले जो भ्रमरे तिनोंकर्के चार दिशा गायनकरी जातीहैं ॥ ३३ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें उच्चराशिमें होरा स्थित होवे तिस-

परमोच्चस्थितश्चंद्रोयादिशुक्रेणदृश्यते कुर्यान्महीपतिंपूर्णंपापैरापोक्लिमोपगैः ३२ ॥ दृश्यतेशुभदैःस्वकेंद्रभवनेमित्रैश्चपापैरपि ॥ युद्धेनोरिपुनिर्जितौवलयुतौजन्मोदयर्क्षाधिपौ भूप.स्यान्निजराशिनाथनवमेचंद्रोदयेचेद्यशोयस्येभश्रुतदानलब्धमधुपैश्चांतार्दिशंगीयते ॥३३ ॥ उच्चराशौभवेद्धोरायस्यासौकुरुतेनृपम् ॥ स्वांशयसुहृदश्चांशेदृष्ट.केंद्रोपगे शुभैः ॥ ३४ ॥ स्थितोभानो पुत्रोविरचयतिवलःपश्चिमांशेमृगस्यरविःसिंहेशुक्रस्तुलिनिरुधिरोमेपगःकर्कटेंदुः ॥ कुमारींसंप्राप्तेयदिभवतिवाशर्वरीनाथसूनुः प्रजातोभूपालस्तदवतिमहींमेकशुक्लातपत्राम् ॥ ३५ ॥ वर्गोत्तमेस्ववर्गेषुगताग्रहेंद्राः सर्वेयदारुचिररश्मिशिखाकलापाः ॥ उत्पाद्यतेजलधिसीमवतींधरित्रींयःपालयेत्क्षितिपतिर्जितशत्रुवर्गः ॥ ३६

कों राजा करताहे ओर अपने अंशमें वा मित्रके अंशमे होवे ओर केंद्रगत शुभग्रहोंकर्के दृष्ट होवे तब राजा होताहै ॥ ३४ ॥ ओर जिसके जन्म समयमें शनि बलवान् होयकर्के मकरके पश्चिमार्द्धमें स्थित होवे ओर सिंहराशिमें सूर्य स्थित होवे ओर तुलाराशिमें शुक्र स्थित होवे ओर मंगल मेषराशिमे ओर कर्कटराशिमें चद्रमा होवे ओर अथवा कन्याराशिमें बुध स्थित होवे तब राजा होताहै केता एकहिपृथ्वीमें राजाहोताहै अर्थात्सार्व भौम राजा होताहै ॥ ३५ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण ग्रह वर्गोत्तममें स्थित होवें ओर प्रकाशकर्के युक्त उदयका प्राप्तहोवें सो राजा समुद्रपर्यंत पृथ्वीको पालनेवाला ओर शत्रुयोंके समूहको जीतने वाला होताहै ॥ ३६ ॥

श्रौरजिसकेजन्मसमयमेंलग्नकास्वामीकेंद्र १ । ४ । ७ । १० । स्थानमेंस्थितहोवेश्रौरीमित्रग्रहोंकरकेंदेखा होवे श्रोर लग्नमें शुभग्रह स्थितहोवें इसयोगमें निश्चय करकेंराजा होताहै ॥ ३७ श्रोर जिसके जन्म-समयमें बृहस्पति चंद्रमाकरकें युक्त वृषलग्नमें स्थित होवे श्रौर यद लग्नका स्वामी वलीहोयकर्के त्रिको-ण ॥ ९ ॥ ५ ॥ स्थानमें स्थित होवे श्रोर सूर्य शनि मंगल वलीहोयकरकें जिसको नाहिं देखते होवें सो राजा यशकरकेंयुक्त श्रोर सपूर्णशत्रुओंके नाशक णे वाला होताहै ॥ ३८ ॥ श्रोर जिसके जन्मस-मयमें तीनग्रह नीचराशिमें स्थित न होवें श्रौर शत्रुकीराशिमें स्थित नाहिं होवें श्रोर श्रपनी राशिमें अथवा श्रपने नवांशमें श्रोर यद श्रपने उच्चके नवांशमें स्थित होवें श्रोर चंद्रमा पूर्णहोवे श्रौर पूर्वोक्ततीनों ग्रह मित्रग्रहों करकें देखे होवें सो राजा करैंहैं ॥ ३९ ॥

केंद्रेविलग्ननाथःसुहृद्भिरथवीक्षितोविहगैः ॥ लग्नस्थितेचसौम्येभूपतिरिहजायतेनियतम् ॥ ३७ ॥ सुरपतिगुरुःसेंदुर्लग्नेवृषेसमुपस्थितोयदिवलयुक्तोलग्नेशश्चत्रिकोणगृहंगतः ॥ रविशनिकुजैर्वीर्योपेतैर्नयस्यनिरीक्षितोभवति ॥ सनृपःकीर्त्यायुक्तोहताखिलकंटकः ॥ ३८ ॥ ननीचगृहसंस्थितानचरिपोर्भमप्यागताःस्वराशिमथवांशकंत्रयइहोच्चमंशंयदि ॥ कलाभिरिहपूरितंकुमुदखंडबोधप्रदंसुहृद्भिरभिवीक्षिताःक्षितिपतिंविदध्युर्ग्रहाः ॥ ३९ योयः पूर्णोशिशिरकिरणंप्राप्तवर्गोत्तमांशं सुस्पष्टार्चिर्गगनगमनः पश्यतिस्वोच्चसंस्थः सक्षोणीशंजनयतिसदास्वांदशांप्राप्यसौम्यः स्यातिंलोकेयदिवलयुताः कंटकस्थानपापाः ॥ ४० जन्मोदयलग्नपतीवलसहितौकेंद्रगौहिबुकेइंदुर्जलगृहगश्चेत्त्रिकोणगोवामहीपालः ॥ ४१ स्वगृहेमित्रभागेषुस्वांशेवामित्रराशिषु कुर्वंतिचनरंसूतोसार्वभौमंनराधिपम् ॥ ४२ ॥

श्रौर जिसके जन्मसमयमें वर्गोत्तमनवांशमें स्थित पूर्णचंद्रमाको उच्चराशिमें स्थित श्रोर उदयप्रातहोयकरकें यो शुभग्रह देखता होवे सो श्रपनीदशामें राज्यप्राप्त कर्ताहै श्रोर जगतमें प्रसिद्धताकर्ताहै जब वलीहोयकरकें कंटक । १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमें पापीग्रह नाहिं स्थित होवें तब राजा होताहै ॥ ४० ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्न श्रोर जन्मलग्नका स्वामी दोनों वलकरकेंयुक्त होवें श्रौर चंद्रमा चतुर्थस्थानमें श्रथवा त्रिकोण । ९ । ५ । में जलचरराशिमें स्थित होवे तब राजा होताहै ॥ ४१ श्रौर जो ग्रह श्रपने क्षेत्रमें श्रौर मित्रके नवांशमें वा श्रपने नवांशमें वा मित्रकी राशिमें स्थित होवें सो चक्रवर्ती सारी पृथ्वीका राजा करैंहैं ॥ ४२ ।

श्रौरजिसकेजन्मसमयमेंसंपूर्ण ग्रहपरमोचमेंस्थितहोवेंश्रौरबुधअपनेउच्चांशमें होवैतिसदेवतोंकरकेवंदनीय तीनोंलोकोंका स्वामीकरतेहोइश्रौरदेवताश्रौरदैत्योंकेवंदना कोप्राप्तहोताहै ४३ श्रौरजिसकेजन्मसमयमेंउत्तरदिशामेंवशिष्ट श्रौरपूर्वदिशामेंबृहस्पतिश्रौरपश्चिमदिशामेंशुक्र श्रौर दक्षिणदिशामेंअगस्त्य इहे चारहि उदयको प्राप्त होवें सोसंपूर्ण राक्षस श्रौर ऋक्ष श्रौर सर्प श्रौर वानरोंका स्वामीहोताहै ४४ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वृषराशिमें अथवा कर्क राशिमें स्थितहोवे श्रौर बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित श्रौर केंद्रस्था नमें स्थित शुक्र करके देख्या होवे श्रौर अपने नवांशमें लग्नगत सूर्य होवे श्रौर वह करकेयुक्तलग्नकोंदेखे तब राजा होताहै जिसराजाके हाथियोंकरके चार समुद्रके किनारेमें कटकंवालेवन भग्नक दिये ॥ ४५ । श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा संपूर्ण ग्रहोंकरके देख्याहोवे सो चिरकालजीवने वाला श्रौर

परमोच्चगताःसर्वेस्वोच्चांशेयदिसोमजः त्रैलोक्याधिपतिंकुर्युर्देवदानववंदितम् ४३ यस्योत्तरस्यांभगवान्वशिष्ठोवृहस्पतिःप्रागपरेचभार्गवःअगस्त्यनामाखलु दक्षिणस्यांसोराक्षसर्क्षोरगवानराधिपः ४४ शशीपूर्णःस्वोच्चेस्वगृहमथवास्वो च्चभंवाप्रयातो दिवंपातुर्मंत्रीदितिजगुरुणावीक्षितः केंद्रसंस्थः रविर्लग्नेस्वांशे यदि बलयुतःपश्यतिस्यात्सभूपः प्रभग्नंयस्येभैश्चतुरुदधिभूशल्यकीनामरण्यम् ४५ ॥ कुमुदगहनबंधौवीक्ष्यमाणेसमस्तैर्गगनगृहनिवासैर्दीर्घजीवीविनाश्य फलमशुभसमुत्थयच्चकेमद्रुमोत्थंभवतिमनुजनाथः सार्वभौमोजितारिः ॥ ४६ उच्चाभिलाषीसवितात्रिकोणेस्वर्क्षेशशीजन्मनियस्यजंतोः सशास्तिपृथ्वींवहुर त्नपूर्णांवृहस्पतिः कंटकगोयदिस्यात् ॥ ४७ ॥ तुंगेपुनद्विवुधमार्गचराउपेताः स्वर्क्षेमयूखकिरणैःपरिपूरितांगाः ॥ उत्पादयंतिकुलिशांकितपाणिपादंपृथ्वी पतिंसगरवेणुययातितुल्यम् ४८ ॥

संपूर्ण अशुभ फलकों श्रौर केंमद्रुमयोगकों दूरकरके सारी पृथ्वीका राजकरणेवाला होताहै श्रौर शत्रु योंके जीतनेवाला होताहै ४६ श्रौर जिसके जन्मसमयमें उच्चका अभिलाषीहोयकरके सूर्य त्रिकोण ९।५ णमें स्थित होवे श्रौर कर्कटराशिमें चद्रमा स्थित होवे श्रौर बृहस्पति कंटक । १ । ४ । ७ ॥ १० में स्थित होवे सो राजा संपूर्णरत्नोंकरके युक्त पृथ्वीको शासना करताहै अर्थात् सारी पृथ्वीका राज्यकर णेवाला होताहै ॥ ४७ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें छैग्रह उच्चकों प्राप्तहोवें श्रौर स्वक्षेत्रमेंउदयकों प्राप्तहोवें सो कुलिशकरकेचिन्हित हाथपैरोंकरकेहैं श्रौर सगर वेणु ययाति इन्होंराजा योंके तुल्यहोताहै ॥ ४८ ॥

और जिनके जन्मसमयमें शुभग्रह केन्द्र राशियोंमें और शुभग्रहोंके नवांशोंमें शुभग्रह स्थित होवें और अपनी रश्मियों करके प्रकाशको प्राप्त होवें और पापीग्रह सूर्यकी किरणोंके साथ आछादित होवें और शत्रुयोंकर्के युक्त होवें सो राजा पर्वत और वनोंमें रहनेवाला तपस्वी होताहै ॥ ४९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह चंद्र बुध गुरु शुक्र पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । स्थानोंमें स्थित होवें और पापीग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० और आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें स्थित होवें सो राजा अपने भुजोंके बलकर्के शत्रुयोंको हनन कर्ताहै और बृहस्पतिके तुल्य बुद्धिवाला होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें लग्न का स्वामी दशम और चतुर्थ और सप्तमस्थानमें स्थित होवे और मित्रग्रहोंकी राशियोंमें और मित्र ग्रहोंकरके देखा होवे सो पृथ्वी तलका राजा कर्ताहै और बडे शत्रुओंके नाशकरणे वाला कर्ताहै ५१ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचद्रमा मेषके नवांशमें स्थित और बृहस्पति कर्के देख्याहोवे और बृ

शुभभवनसमेतैःसौम्यभागेषुसौम्यैःस्फुटरुचिरकरौघैःप्रस्फुरद्भिर्विलग्ने रविमु षितमयूखैस्तैश्चपापैरमित्रैर्गिरिगहननिवासीतापसःस्यान्नरेंद्रः ४९ इह पणफरगाः शुभग्रदाउभयगृहेयदिपापसंचयःस्वभुजहतरिपुर्महीपतिःसुरगुरुतुल्यमतिःप्र कीर्तितः ५० विलग्ननाथःखजलास्तसस्थ सुहृद्गृहे मित्रदृशांपथिस्थितः करोति नाथंपृथिवीतलस्यदुर्वारवैरिपरिनाशशीलं ५१ संपूर्णमूर्तिर्भगवांश्छशांकोमे षांशकस्थोगुरुणाचदृष्टः ॥ नीचैर्नकाश्चिदुरुवीक्षितोन्यैःप्राहक्षितीशयवनाधि राजः ५२ लग्नाच्छशांत्रिरिपुलाभनभस्तलेषुसूतावखंडितवपुःपृथिवीश्वरःस्या त् ॥ दृष्टःसुरेंद्रसुहृदानहिवीक्षितोन्यैर्जन्माधिपादशमितात्स्मरगोथवास्यात् ५३ विभ्रद्रश्मिकरालपूर्णपरिधिर्नक्षत्रसपालकस्तुंगांशेसमवस्थितश्चसकलैः र्दृष्टोक्षितिव्योमगैः कुर्याद्भूमिपतिंसयस्यचलितंहस्त्यश्वसैन्यंमहद्दध्याच्छेषफ णीकयकथमपिक्ष्माभाररखिन्नःश्वसन् ॥ ५४

हस्पतिको कोई नीचग्रह नहिं देखता होवे तिसकों यवनाधिराजजोहै यवनाचार्य सो राजा कहताहै अर्थात् यवनाचार्यके मतसें राजा होताहै ५२ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें चंद्रमा तीसरे छठे ग्यारवें दशवस्थानमें स्थित होवे और पूर्ण देहवाला होवे और बृहस्पति कर्के देख्याहोवे और पापग्रहों कर्के नहिं देख्याहोवे अथवा पूर्ण चद्रमा शत्रुके विना जन्मलग्नके स्वामीसें पूर्वोक्तस्थानोंमें स्थित होवे सो राजा होताहै ५३ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा रश्मियोंकर्के प्रकाशहोयरहा होवे सो उच्चके नवांशमें वृषराशिके नवांशमें स्थित होवे और संपूर्ण ग्रहोंकर्के देख्याहोवे तिसकों राजा कर्ताहै कैसाको राजा होताहै जिसकी सेना हाथी औरघोडियोंके चलने कर्के पृथ्वीके भारकर्के शेषनाग पीडित होयकर्के श्वासकों लेताहै अर्थात् बडी सेना वाला राजा होताहै ॥ ५४ ॥

श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाश्वेतविवककै शोभाकोप्राप्त सूर्यकेनवांशमें स्थितहोवे तवराजावहुव हाथियों वाला होताहै यदशुभग्रहकेंद्रमें १ । ४ । ७ । १० स्थित पापग्रहोंककें नहिं देखे होवें तव राजा होताहै ५५ जिसके जन्मसमयमें तीनग्रह नीच श्रौर शत्रुकी राशीमें स्थितहोवें श्रौर उच्चन राशीमें वलककें युक्त होवें श्रौर शुभग्रहोंकी दृष्टिककें युक्त होवें श्रौर चंद्रमा गौकेदुग्धकोन्याई श्वेतविवककें आकाशकोप्राप्तहोवे सो राजा शत्रुयोंके जीतनेवाला होताहै ५६ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमाशुभग्रहके नवांशमें स्थित होवे श्रौर जव वलीहोयककें दशमघरकास्वामीतिसको देखता होवे श्रौर लग्नमें पापीग्रह श्रोर नीचग्रह स्थितनहोवें तव राजा सारीपृथ्वीका राज्यकरणेवाला श्रौर सुंदरदेहवाला होताहै ५७ श्रौर जिसके जन्मसमयमें जलचरराशिके नवांशमें चंद्रमा लग्नमें स्थित

सुधामृणालोपमबिंबशोभीशशीनवांशेनलिनीप्रियस्य यदीक्षितोसौवहुह स्तिपूर्णं शुभाश्चकेंद्रेयुनपापदृष्टाः ॥ ५५ ॥ नीचारिराशिसहितैर्विहगै स्त्रिभिश्चतुंगांशकैर्वलयुतैःशुभदृष्टियुक्तैः गोक्षीरशंखधवलोमृगलांछनश्चस्या यस्यजन्मनिसभूमिपतिर्जितारिः ॥ ५६ ॥ कुमुदगहनवंधुश्रेष्टमशंप्रपन्नंय दिवलसमवेतःपश्यतिव्योमचारी उदयभवनसंस्थः पापकोनैवनीचोभव तिमनुजनाथःसार्वभौमःसुदेहः ५७ जलचरराशिनवांशकइंदौतनुभवनेशुभ देस्वकवर्गे अशुभफलैःखलुकंटकहीनैर्भवतिनरोवहुवाहननाथः ॥ ५८ ॥ वर्गोत्तमेहिमकरःसकलःस्वकेंशेकुर्यान्महीपतिमपूर्वयशोभिरामम् यस्याश्व दंदखरपादरजोभिभूतोभानुःप्रशांतशिशिरोनुकरोतिरूपम् ५९ सर्वग्रहक्ष तेयोगेचक्रवर्तीश्वरोभवेत् एकैकेनतथाजातामंडलानामधीश्वराः ६० एको पिविहगःकुर्यात्पंचमांशगतोनृपम् समस्तवलसंपूर्णंचक्रवर्तित्वमेववा ६१ ॥

होवे श्रौर शुभग्रह अपने वर्गमें स्थितहोवें श्रौर पापीग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानसें रहितहोवे तव राजा वहुत हाथी श्रोर घोडयोंका स्वामी होताहै ॥ ५८ ॥ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वर्गोत्तम नवांशमें स्थित अथवा अपने नवांशमें स्थित होवे सो अपूर्वयशककें युक्त राजा होताहै जिसके घोडयोंकी श्रोर खरोंकी धूडककें सूर्य शांत शीतल स्वरूप होताहै ५९ श्रौर जिसके जन्ममें संपूर्णग्रहोंककें राजयोगकियाहोवे सो राजाचक्रवर्ती होताहै श्रौर एक एक ग्रह करकें जो राजयोगहोताहै तिसमें जन्मलेकर मंडलका स्वामी होताहै ६० श्रौर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्णवलको प्राप्तहोककें एक भी ग्रह पंचमांशमें स्थितहोवे सो चक्रवर्ती राजा करताहै ६१

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा वृषराशिमें स्थितहोवे और तिसकों बृहस्पति देखताहोवे सो राजामणिऑंककरके प्रकाशवाली उत्तरखंडकी पृथ्वीका पालने वाला राजा होताहै ६२ और जिसके जन्मसमयमें अपने उच्चमें अथवा अपने मूलत्रिकोणमें और अपने क्षेत्रमें स्थितजो ग्रहहोवे और चंद्रमाकों देखताहोवे सो ग्रह भीलजातीवालेकों भी राजा करदेताहै ६३ और जिसके जन्मसमयमें अपनीराशिके द्रेष्काणमें चंद्रमास्थित होवे और शुभग्रह परिपूर्णबलीहोवे तब महाराजाकरताहै ॥ ६४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने नवांशमें सूर्यस्थितहोवे और चंद्रमाककें राशिका होवे सो राजागजोंकेमदके किणकयोंकरके पृथ्वीतलकों सिंचनकरताहै ॥ ६५ ॥

पश्यतियदिचंद्रमसंविबुधगुरुर्वृषभसंस्थितंप्रसवे ॥ अवतिपृथिवीमेतदुदग्याः स्फुरन्मणिद्योतितादिगताम् ॥ ६२ ॥ कुर्य्यात्तुंगेत्रिकोणेवास्वराशिस्थो विलोकयन् ग्रहस्तुषारकिरणनिपादमपिपार्थिवम् ॥ ६३ ॥ स्वगृहतृतीयभागेशशिस्थितःपार्थिवंसदाकुरुते परिपूर्णबलाःशुभदायदिप्रसूतौ महाराजम् ॥ ६४ ॥ स्वांशेदिवाकरोयस्यस्वक्षेत्रेचक्षपाकरः सराजागजदानौघशीकरोक्षितभूतलः ॥ ६५ ॥ लग्नेरविपुत्रसंयुतेदेवेज्येस्तगतेनवोदिते दृष्टेऽसुरराजमंत्रिणाग्रामीणोनृपतिर्भवेदिह ॥ ६६ ॥ उदयेऽसुरमंत्रिवरोगुरुदृष्टिपथचगतः कुरुतेसनृपनियतंयदितुंगगतश्चबुधः ॥ ६७ शुक्रभास्करेंदवो भागमेकमाश्रिताः जीवदृष्टिमात्रका स्यात्तदामहापतिः ६८ ॥ लग्नगाःसितशशांकजभौमाःसप्तमेशशिनिवाक्पतियुक्ते तिग्मरश्मितनयेनचदृष्टेजायतेपृथुयशाःपृथिवीशः ॥ ६९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें लग्न शनिश्चरकेंयुक्त होवे और उदनहोयकर्के बृहस्पति सप्तमस्थानमें स्थित होवे और शुक्रकर्के देखताहोवे तब इसजगमें ग्रामीण राजा होताहै ॥ ६६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें शुक्र स्थितहोवे और बृहस्पतिकर्के देखताहोवे और यद उच्चराशिमें बुधस्थित होवे सो निश्चयकर्केराजा होताहै ६७ और जिसकेजन्मसमयमें शुक्र और सूर्य और चंद्रमा एकनवांशमें स्थित होवें और बृहस्पति कर्के देखे होवें तब राजा होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें शुक्र बुध मंगल स्थित होवें और सप्तमस्थानमें चंद्रमा बृहस्पतिकर्के युक्त होवे औरशनिकर्के नहीं देख्या होवे तब बडे यशवाला राजा होताहै ॥ ६९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति मंगलके राशिमें स्थितहोवे और मंगल कर्कदेखताहुआ पूर्णबलीहोवे तब नियधर्मके करणेवाले राजाका कर्त्ताहै और मेषराशिमें दशमस्थानमें सूर्यस्थितहोवे तब नियराजाहोताहै ७० और जिसके जन्मसमयमें तीसरे स्थानमें शुक्र और चद्रमा और बुध और सूर स्थित होवें और मंगल सप्तममें स्थित होवे और बृहस्पति नवम स्थित होवे और लग्नमें वर्गोत्तम नवांशम स्थित होवे सब अपसा योग होवे तब हीन कुलम जन्मावी राजा होताहै ॥ ७१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति अथवा बुध अथवा शुक्र अथवा चद्रमा धर्म ९ स्थानमें उदयको प्राप्त रश्मियो अर्कके आभाको प्राप्त होवें और यह मित्रग्रहोंकर्के दृष्ट और युक होवें तब देवनाके तुल्य बडाराजा करतेहैं ७२ और जिसके जन्मसमयमें नवमस्थानमें उच्चराशिगत ग्रहहोवे अथवा उच्चको देखताहोवे यद दो ग्र

विबुधगुरुर्यदिभौमनवांशेरुधिरनिरीक्षितपूर्णबलश्च जनयतिकुत्सितधर्ममही पक्रियपरिसंस्थितकर्मगतोर्कः ७० तृतीयगा शुक्रशशिज्ञभास्करा कुजोस्त सस्थोनवमेबृहस्पतिः गणोत्तमोलग्नवांशकोद्गमोयदातदाहीनकुलेमहीपतिः ॥ ७१ ॥ जीवोबुधोभृगुसुतोयनिशाकरोवाधर्मेविशुद्धतनव स्फुटरश्मिजालाः मित्रैर्निरीक्षितयुतार्यदिसूतिकालेकुर्वंतिदेवसदृशन्नृपतिमहांतम् ॥ ७२ तपोगृहयस्यभवेत्तदुच्चकंग्रहेणनेनाथयुतंनिरीक्षितम् ग्रहद्वयस्वोच्चगतंयदाभवे त्तदाकुटुंबीनियतमहीपतिः ७३ मूलभवनेशशिदेवनमस्यौभवनपतिप्रसमी क्षितदेहौ भृगुतनयोयदिमीनसमेतोभवतिनृप खलुकुत्सितवंश ७४ चद्रस्त्रि पुष्करस्थ स्वोच्चेवचसांपति सलक्ष्मीकम् उत्पादयतिरवामिन्मुत्तममानसमग्र भुवः ७५ केंद्रेस्वोच्चसमेत सुरमंत्रीदशमगोपदाशुक्रः नूनंभवतिपुरुषः स्म स्तपृथिवीश्वराःख्याताः ७६

हह उच्चराशिमें स्थित होवे तब बडेकुटुम्बवाला राजा होताहै ७३ और जिसके जन्मसमय पंच मभावमें चद्रमा और बृहस्पति और पचमेशकके दोना देखतेहों और शुक्र जब मीनराशिम स्थि तहोवे तब निश्चयकर्के नियवंशम जन्मावी राजा होताहै ७४ और जिसके जन्मसमयम चंद्रमा तीसरे स्थानम और दशम स्थानमें स्थित होवे और बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित होवे तब बडे श्रेष्ठ मानकर्के युक्त और बडीलक्ष्मीवाला सारीपृथ्वीका राजा होताहै ७५ और जिनोके जन्मसम यमें केंद्रस्थानमें और उच्चराशिमे बृहस्पति स्थित होवे और दशमस्थानम शुक्रस्थितहोवे तब निश्चयकर्के संपूर्ण पृथ्वीके स्वामी पुरुषहोतेहैं ७६

और जिसके जन्मसमयमें बडियों रश्मियोंके समूहकर्के कर्कटराशिमें चंद्रमास्थित होवे और अपने नवांशमें बुध और बृहस्पति और शुक्र होवें अथवा चतुर्थ स्थानमें होवें और सूर्यकर्के देखेहोवें तव ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यवर्णोंके राजा करतेहें ॥ ७७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने मूलत्रिकोणमें सूर्य दशमस्थान स्थितहोवे और शुक्र बृहस्पति बुध अपनी राशिमें स्थित होवें और चंद्रमासें तीसरे छठे ग्यारहमें स्थानमें स्थितहोवें तव गोपालोंके कुलमें जन्मे कोंभी राजाकरतेहें ७८ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शुभग्रह मित्रोंके नवांशमें स्थितहोवें और मित्रग्रहोंकर्के दृष्टहोवें और यद उच्चराशिमें १० मंगलहोवे तव संपूर्ण पृथ्वीके पालने बा

स्व..शशीविपुलरश्मीशिखाकलापः स्वांशेस्थिताबुधबृहस्पतिदानवेज्याः
पातालगादिनकरेणनिरीक्षिताश्चसंसूचयंतिनृपतिंद्विजमुख्यजातम् ७७
रविर्नभस्थः स्वत्रिकोणगोपिवास्वराशिसंस्थाःसितजीवचद्रजाः तृतीयष
ष्ठायगताश्चचंद्रत.कुर्वंतिगोपालमपिक्षितीश्वरम् ७८ सप्तमभवनेसौम्यामि
त्रांशगताःसुहृद्भिरिहदृष्टाः उच्चेकुजोयदिनृपःसमस्तभूपालकःश्रेष्ठः ७९
रविशशिबुधवक्रैर्व्योम्निमित्रांशकस्थैर्नचरिपुभवनस्थैर्नाथदृष्टैर्ननीचैः सतप
सिभृगुपुत्रेभूपतिःस्यात्प्रयाणेगजमदजलसेकैर्नश्यतेयस्यरेणुः ८० स्वोच्चेभानुः
प्रकटितवलोव्योममध्येसजीवःशुक्रोधर्मेयदिकुजयुतःस्वंनवांशप्रपन्नः लग्नेवर्गः
शुभभवनगोचंद्रपुत्रेणदृष्टःपृथ्वीपालोधवलितजगत्स्वर्पाशितैःस्वैर्यशोभिः ८१

ला राजा होताहै ७९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा बुध मंगल दशमस्थानमें मित्रग्रहोंके नवांशमें स्थितहोवें और शत्रुक्षेत्रमें और शत्रुग्रहोंकर्के देखे नहिं होवें और नीचराशिमें स्थित नाहिं होवें और नवमस्थानमें शुक्र स्थितहोवे तिसराजाके यात्रासमयमें हाथियोंके मदकर्के धूड नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ८० ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने उच्चमें बलीहोयकर्के सूर्यस्थित होवे और दशमस्थानमें बृहस्पति करके युक्तहोवे और नवमस्थानमें मंगल करके युक्त होवे और अपनेनवांशमें स्थितहोवे और लग्नमें शुभग्रहको वर्गहोवे और बुध कर्के देख्या होवे सो राजा अपने यशकर्के चारदिशाओंको प्रकाश कराहै ८१

श्रौर जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा वृषराशिकालग्नमें स्थित होवे श्रौर तुलाराशिमें स्थित शुक्रक के देख्याहोवे श्रौर बुध चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तव श्रन्य कुलमें जन्माहुयावी राजा होताहै ८३ श्रौर जिसके जन्मसमयमें मंगलवलीहोयकर्के श्रपने उच्चमें स्थित होवे श्रौर सूर्य चंद्रमावृहस्पतिक के देख्याहोवे तव निंद्य कुलमें जन्मावी राजाहोताहै श्रौर संपूर्ण पृथ्वीकी रक्षा करणेमें समर्थ होता है ८४ श्रौर जिसके जन्मसमयमें श्रभिजित् मुहूर्त्तहोताहै सो वडेयशवाला राजा होताहै श्रौर इ-स श्रभिजित् मुहूर्त्तमें नीचकुलमेंजन्मावी नवीनपद्के राज्याधिकारका स्वामीहोताहै ८५ ॥ श्रौर जो मनुष्य गंडांतकालमें जन्मताहै श्रर्थात् रेवतीकेचतुर्थचरणमें श्रौर श्रश्विनीके प्रथम चरणमेंश्रौ र श्लेषाकेचतुर्थचरणमें श्रौर मघाकेप्रथमचरणमें श्रौर ज्येष्ठाके चतुर्थचरणमें श्रौर मूलाकेप्रथमचरणमें

वृषेशशीलग्नगतःसुपूर्णःसितेनदृष्टोवणिजस्थितेन वुधोपिपातालगतोयदिस्यात्तदान्यजातोभवतिक्षितीशः ८३ क्षमासुतःस्वोच्चमुपागतोवलीरवींदुवाचस्पतिभिर्निरीक्षितः भवेन्नरेंद्रोयदिकुत्सितस्तदासमस्तपृथ्वीपरिरक्षणक्षमः ८४ जायतेभिजितियःशुभवत्सोभूपतिर्भवतिसोतुलकीर्त्तिः नीचवेश्मकुलजोपिनरोस्मिन्राजयोगइतिनव्यपदेशः ८५ गंडांतविष्टिसहवैधृतिपातजातस्तारापतिःसहयदाप्रतिकृत्तिकायां क्रीडेत्कृपाणफलकाहतचंडवेगात् प्रोत्थापितारिजशिरोभिरिहावनीशः ८६ वुधोदयेसप्तमगेवृहस्पतौचंद्रेकुलीरेसुखराशिगेमले वियद्गतेभार्गवनंदनेग्रहेप्रशास्तिपृथ्वीमनुजोनिराकुलः ८७ एकांतरगैर्विहगैःषड्भिश्चक्रेक्षितीश्वरंकुर्यात् अत्रैवशुभेलग्नेसकलमहीपालकोनृपतिः ८८

जन्मताहै श्रौर भद्राकरण में जो जन्मताहै श्रौर वैधृति व्यतीपात योगमें जोजन्मताहै श्रौर जिसके जन्ममें कृत्तिकाके संमुखचंद्रमा होताहै सो वडेवेगकर्के खड्ग फलक कों शत्रुयोंके शिरमें भ्रमामणे वाला राजाहोताहै श्रर्थात् वडा उग्रराजा प्रजाकों वी तपावने वाला होता है ८६ श्रौर जिसके जन्मसमयमें लग्नमें बुध होवे श्रौर सप्तमस्थानमें वृहस्पति होवे श्रौर पूर्णचंद्रमा कर्कटराशिमें चतुर्थ स्थित होवे श्रौर शुक्र दशमस्थानमें स्थित होवे सो मनुष्य शत्रुयोंकर्के रहित पृथ्वीकी शासना कर्त्ताहै ८७ श्रौर जिसके जन्मसमयमें एकएकगृहके श्रंतरमेंछे राशियोंमें सपूर्णग्रह स्थितहोवें श्रौर शुभग्रहके लग्नमें जन्महोवे तव संपूर्णपृथ्वीके पालनेवाला राजाहोताहै ८८

और इसीयोगमेंसमुद्रयोगकहाहै जब दोलग्नमें स्थित होवें और शुभग्रहकेंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवें तब राजयोंकाराजाहोताहै ८९ और जिसकेजन्मसमयमें लग्नसें लेकर्के छैराशिपर्यंत अंतर रहित संपूर्णग्रह स्थितहोवें सो पंक्तिनामकर्के योग कहाहै ॥ तिसमें जन्माहुयाराजा-अथवा राजाका मंत्री होताहै ॥ ९० और जिसके जन्मसमयमें पंचम और चतुर्थ और तीसरे स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तवकूर्मयोग कहतेहैं ॥ यवनाचार्यादि तिसमें जन्मताजोहै ॥ सो वंधुपुत्रधनहाथियों कर्के युक्त और धनकर्के युक्त राजा होताहै ॥ ९१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें दशमसप्तमचतुर्थलग्नस्थानोंमें संपूर्णग्रह स्थित होवें तव नगरनामकर्केयोग होताहै जिसमें जन्माहुआ राजा होताहै ॥ ९२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमचतुर्थ दशमस्थानमें शुभ-

अयमेवसुमुद्राख्योद्वौलग्नेयदिसंस्थितौ करोतिभूभृतांनाथंसौम्यैःकेंद्रेषुसंस्थितैः ८९ निरंतरंयदिभवनेषुपट्सुग्रहाःस्थिताउदयगृहात्समस्ताः सपंक्तिरित्थिवनृपंप्रकुर्याच्चतुष्टयेवानृपमंत्रिणंच ९० सुतसुखदुश्चिक्यगतायदिकूर्मंकीर्तयंतियवनाद्याः वंधुसुतार्थगजाढ्योवहुभृत्योजायतेनृपतिः ॥ ९१ ॥ कर्मास्तसुखहोरासुग्रहाःसर्वेप्रतिष्ठिताः कुर्वंतिनगरंनामयत्रस्यात्पृथिवीपतिः ९२ मदतनुसुखखस्थिताःशुभाःकुजरविरविजाश्चधर्मलाभसंस्थाः यदिभवतिमहीपतिःप्रशांतमूर्त्तिर्यवनपतिकृताह्ययंमहीपयोगः ९३ लाभधर्मस्थिताःसौम्याःपापाःकर्मणिसंस्थिताः नृपतीनामयंयोगोभवेत्कलशसंज्ञितः ९४ त्रयोग्रहभ्रातृसुतांवुसंस्थास्तपोभवौद्वौपरिसांज्ञितौच कलत्रलग्नोपगताश्चशेषा नृपस्ययोगःखलुपूर्णकुंभः ९५ सुविस्तरंनीचकुलोद्भवामयाविचित्ररूपाःकथिताःक्षितीश्वराः अतःपरंपार्थिववंशजाश्रमीभवंतियोगामुनिभिःप्रकीर्तिताः९६

ग्रह स्थित होवें और मंगल सूर्य शनि इहे नवम और लाभ ॥ ११ ॥ स्थानमें स्थित होवें तव इस योगमें जन्माहुआ शांतमूर्त्ति राजा होताहै इहे राजयोग यवनाचार्यके मतसें कहाहै ॥ ९३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें ग्यारहमें और नवमें स्थानमें शुभ ग्रह स्थित होवें और पापीग्रह दशमस्थानमें होवें इहे राजयोंको कलशनामकर्के राजयोग कहाहै ॥ ९४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें तीन ग्रह तीसरे पांचमें चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें और दोग्रह नवमस्थानमें स्थित होवें और वाकीके ग्रह-सप्तम और लग्नमें स्थित होवें तव राजाको पूर्णकुंभयोग होताहै ॥ ९५ ॥ और कहतेहैं इसग्रंथमें मैने श्रेष्ट विस्तारकर्के नीचकुलमें जन्मकोवी राजयोग वडेविचित्ररूपकर्के कहेहैं अव इसीग्रंथमें आगें राजाके कुलमें जोजन्मतेहैं तिनके राजयोग जैसें मुनियोंनें कहेहैं तैसेंहि मैं कहताहां ९६

शरम् ॥ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहलग्नमें सूर्यस्थितहोवें और मेषलग्नमेंचन्द्रमास्थितहोवे औरकुंभरा
शिमें शनिस्थितहोवे और मीनराशिमें बृहस्पति स्थितहोवे और मकरराशिमें मंगल-
स्थितहोवे सो राजा संपूर्णलोकोंकर्केवंदनाकोंप्राप्तहोताहै ॥ १७ ॥ और जिसकेजन्मस-
मयमें बलवान् शुभग्रहकी राशिमें और क्रमकर्के लग्न और नवम स्थानमें शुभग्रह स्थितहो
वें और पापग्रह तीसरे ग्यारहवें वा छठे स्थानमें स्थित होवें सो राजा बडीलक्ष्मीवाला और
जिसकीयात्राके समयमें हाथियोंके जलका जो भरणा सो बद्दलोंकी पांतिकी उत्पत्तकर्ताहै ऐसे
बद्दलोंके बिंदुओंसे पृथ्वी सिंचनकरी जातीहै जिसकीन्याई हाथियोंके मदसे सिंचन होतीहै अर्था
त् बहुतहाथियोंवाला राजा होताहै १८ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रतुलाराशिका चतुर्थस्थानमें

सिंहोदयेदिनकरोमृगलांछनोजेकुंभस्थितोरविसुतःस्वगृहेसुरेज्यः स्वोच्चेचभू
मितनयःपृथिवीश्वरस्यजन्मप्रदःसकललोकनमस्कृतस्य ९७ ॥शुभेलग्नेयातेब
लयतितथाधर्मराशिंक्रमेण शुभैःशेषैर्लग्नाद्धनमथगृहंत्र्यायषट्कर्मगैर्वा महीभ
र्ताश्रीमान्भवतिनियतंयस्यमातंगसंघाः प्रयाणेमेघानांश्रुतमदजलैर्भ्रांतिमुत्पा
दयंति ॥ ९८ ॥ दनुजपतिगुरुर्बंधुस्थानेस्ववेश्मगतोयदा तुहिनकिरणःसंपू
र्णगस्तपःसमवस्थितः त्रितनुभवनंप्राप्ताःशेषाग्रहायदिभूपतिर्भवतिधृतिमा
न्स्फीतश्रीकस्तदायहुवाहनः ॥ ९९ ॥ स्वोच्चोदयेस्तपदःकुमुदस्यबंधुर्जा
येयंगोवणिजिदानवपूजितश्च शेषाश्चमत्स्ययुगलेयदिदेवमार्गाश्चन्द्रांशुनिर्म
लयशोभवतिक्षितीशः ॥ १०० ॥ नक्षत्रनाथसहितःसवितानभस्यःसौरिर्वि
लग्नभवनेहिबुकेसुरेज्यः देयारिपूज्यबुधभूमिसुतैश्चलाभेःस्यातांमहिपतिरिह
स्वगुणैर्नरःस्यात् १०१ ॥

॥ और जिसके जन्मसमयमें मकरराशिकों छोडकर्के लग्नमें वृहस्पति स्थितहोवे सो अवश्यमेव मत्तहाथियोंकर्केपरिवारित राजा होताहैं ॥ १०२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें शनिकर्के युक्त मंगल स्थितहोवे और दशमस्थानमें चंद्रमा स्थितहोवे और वृहस्पतिवी दशमस्थानमें स्थित होवे और शुक्र सप्तमस्थानमें स्थितहोवे और ग्याहरमें स्थानमें सूर्यस्थित होवे और चंद्रमा चतुर्थराशिमें स्थित होवे जब असा योगहोवे तब श्रेष्ठयशवाले राजा का जन्म होताहै ॥ १०३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमे उच्चहोयकर्के चंद्रमा स्थितहोवे सो मनुष्यकों राज्यप्राप्त कर्त्ताहै और जब पूर्णचंद्रमा होवे तब क्यामहिमाहै वडे प्रतापवाला राजा होताहै ॥ १०४ ॥ और जिसके

मृगराशिंपरित्यज्यस्थितोलग्नेवृहस्पतिः करोत्यवश्यंनृपतिंमत्तेभपरिबृंहितम् १०२ लग्नेभौमोरविजसहितःशीतरश्मिःखमध्ये वा चांस्वामीदशमगृहगो भार्गवःसप्तमस्थः आयेहेम्नाशिशिरकिरणोवंधुराशिंप्रपन्नोयद्येवंस्याद्विमलयशसोजन्मभूपालकस्य १०३ घूनेपिकुमुदवंधुःस्वोच्चगतःपार्थिवंकरोतिनरम् किंपुनरखंडमंडलहिमधवलप्रकटितसुदीप्तिः १०४ लग्नंविहायकेंद्रेसकलकलापूरितोनिशानाथः विधातिमहीपालंविक्रमधनवाहनोपेतम् १०५ यदिपश्यतिदानवार्चितंवचसामाधिपस्तदाभवेत् नृपतिर्वहुनायकोनरोभुजगेंद्रइवप्रतापवान् ॥ १०६ दिवौकसांपतेर्मंत्रीकुर्यात्पश्यन्वुधंनरं शिरोभिःशासनंतस्य धारयंतिनृपाःसदा ॥ १०७ ॥ लग्नाधिपतिःस्वोच्चेपश्यन्मृगलांछनंनृपंकुरुते वहुगजतुरगवलौघैःक्षपितविपक्षंमहाविभवम् ॥ १०८ ॥

जन्मसमयमें लग्नकों छोडकर्के केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० । में पूर्णचंद्रमा स्थितहोवे सो वडेधन और पराक्रम और वाहनोंकर्के राजा होताहै ॥ १०५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रकों वृहस्पति देखताहोवे तब सो वहुतजनोंका स्वामी शेषनागकीन्यांई प्रतापवाला राजा होताहै १०६ और जिसके जन्मसमयमें इंद्रकामंत्री वृहस्पति वुधकों देखताहोवेतिसकीआज्ञाकों संपूर्णराजा शिरमें धारणकर्त्तेहै ॥ १०७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्नकास्वामीअपनी उच्चराशिमें स्थितहोवे और चंद्रमाकों देखता होवे तब मनुष्यकों वहुत हाथि और घोडे और सेनाके समूहकर्के युक्त और शत्रुओंसें रहित और वडे ऐश्वर्यकर्के युक्त कर्त्ताहै ॥ १०८ ॥

और जिसके जन्मसमयमे उच्चराशिमें चंद्रमाकों बुध और शुक्र देखते होवें तब तिसपुरुषकों राजा कर्त्ताहैं कैसावो राजा होताहै बडे शत्रुयोंककें वंदित और बडे यशककें युक्त और बडे सौभाग्यवाला होताहै ॥ १०९ ॥ और जिसके जन्मसमें अधिमित्रांशमें चंद्रमास्थितहोवे और शुक्र कर्के देख्या होवे तिसकी लक्ष्मी निश्चल होतीहै और ध्वजा छत्र कर्के युक्त और हाथियोंकर्कें युक्त होतीहै ॥ ११० ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपनेनवांशमें अथवा अधिमित्रके नवांशमें चंद्रमा स्थित होवे और बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे और दिनका जन्महोवे तब राजा होताहै इसमें संशय नहींहै १११ और जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्नकास्वामी केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें बलकर्कें संयुक्त होवे तिसकों गोपाल कुलमें जन्मेकोंवी परमऋद्धि वाला राजा कर्त्ताहै और राजवंशमें जन्मे

इंदुःस्वोच्चेपश्यन्करोतिबुधभार्गवौनरंनृपतिम् प्रणतारिपक्षमुच्छ्रितयशसंसौभाग्यवंतंच ॥ १०९ ॥ अधिमित्रांशगश्चंद्रोदृष्टोदानवमंत्रिणा निश्चलांकुरुते लक्ष्मींध्वजच्छत्रगजाकुलाम् ॥ ११० स्वांशेधिमित्रभागेवागुरुणायदिदृश्यते शशीमहीपतिंकुर्याद्दिवसेनावसंशयः ॥ १११ ॥ जन्माधिपतिःकेंद्रेबलपरिपूर्णः करोतिपरमर्द्धिम् गोपालकुलेपिनृपंकिंपुनरवनीशसंभूतम् ११२ रविरप्यधिमित्रस्थोयदिचंद्रंनिरीक्ष्यते अंशकाधिपतिःकुर्याद्धर्मार्थसहितंनृपम् ॥ ११३ ॥ उच्चस्थःशशितनयःकुमुदाकरबंधुनासमधिगतःपुरुषम् जनयतिसगजाधिपतिं गजमदगंधनवासितदिंगतम् ११४ प्रधानबलसंयुक्तःसंपूर्णःशशलांच्छनः एकोपिकुरुतेजातंनराधिपमरिंदमम् ॥ ११५ ॥ केंद्रेविलग्ननाथःश्रेष्ठबलोमानवाधिपंकुरुते गोपालकुलेपिनरंकिंपुनरवनीश्वराणांहि ॥ ११६ ॥

तो क्यावातहै ११२ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य अधिमित्रकी राशिमें स्थित होवे और अंशकास्वामी चंद्रमाकों देखता होवे तब धर्मार्थकर्के युक्त राजा कर्त्ताहै ॥ ११३ और जिसकेजन्मसमयमे उच्चमेंस्थित बुध चंद्रमाकर्के युक्त होवे तिसकों हाथियोंकास्वामी कर्त्ताहै और हाथियोंके मदकर्के चारदिशाओंकों सुगंधित करणेवाला राजा कर्त्ताहै ११४ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा प्रधानबलकर्के युक्तहोवे तब एकहि चंद्रमा शत्रुयोंके दमन करणेवाला राजा कर्त्ताहै ११५ और जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें स्थित होवे सो गोपाल कुलमेंजन्मेकोंवी राजा कर्त्ताहै और राजयोंके कुलमें जन्मेतों क्यावार्त्ताहै ११६

और जिसके जन्मसमयमेंकर्कटराशिमें केंद्र ।१।४।७ १० स्थानोंमें बृहस्पतिस्थित होवेऔरदशमस्था नमें शुक्रहोवे तब चारऔर समुद्रकीतडागीवालीपृथ्वीकाराजाहोताहै ११७ औरजिसकेजन्मसमयमें मेषराशिमेंसूर्यस्थितहोवेऔरचद्रमा कर्के युक्तहोवेतवकेरलऔरकर्णाटऔरअंध्र और द्राविड और कछ और शोण देशोंका राजा कर्त्ताहै ॥ ११८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमें बृहस्पति चद्र. माकर्के युक्तहोवे तिसकों काश्मीरमंडलका राजा अवश्यमेव कर्त्ताहै ११९ और जिसके जन्मसम यमें उच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें शुक्र बृहस्पति जाहरमें और केंद्र १। ४ ७। १० में स्थित होवें सो राजाके कुलमें जन्माहुआ अवश्यमेव राजा होताहै ॥ १२० ॥

कर्कटसंस्थःकेंद्रेबृहस्पतिर्दशमगश्चसितः चतुरुदधिमेषलाया.स्वामीभूमेर्यदा जातः ११७ मेषसहस्त्ररश्मिःसहशशिनासंस्थित.करोतिनृपम् केरलकर्णाटां ध्रद्राविडानांकछशोणकुलस्य ॥ ११८ ॥ उच्चस्थस्त्रिदशगुरुःकैरवबनबंधुसंगमं प्राप्तः काश्मीरमंडलभवंकरोतिपुरुषाधिपमवश्यम् ११९ तुंगायस्वगृहोदयकं टकनवमोदयेपुशुक्रगुरू सोवश्यंभवतिनरोराजांशसमुद्भवोन्नृपतिः १२० सत्स्थानकालादिबलैरुपेता.शुभग्रहा.केंद्रमुपागताश्च ॥ कुर्वन्तिपापैरविमि श्रचारा.पृथ्वीभुजांत्रिप्रभृतिग्रहेंद्राः १२१ रवेर्द्वितीयेबुधजीवभार्गवानचा शुभैर्दृष्टयुतानचार्कगा. ॥ स्फुरत्करौघस्फुटपिंजरीकृतानरप्रकुर्वन्तिसमुद्रपा लकम्, १२२ कुंदाब्जकाशधवल.परिपूर्णकांतिर्जन्माधिपेनवलिनाशुभदेन दृष्टः ॥ स्त्रीमानभंगनिपुणंदयित.क्षपाया.प्रख्यातकीर्तिसुनयंकुरुतेनरेंद्रं १२३

और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह श्रेष्ठस्थानोंमें और कालादि बलककें युक्त होवें और केंद्रस्थानोंमें स्थित होवें और पापीग्रहोंकर्क रहितहोवें जब तीनसे लेकरकेग्रह अपसे होवें तवराजा कर्त्तहैं १२१ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यकेदूसरे स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें और अशुभग्रहोंकर्के दृष्ट और युक्त नाहिं होवें और अस्तंगत नाहिं होवें और अपनीयों किरणों कके मकाशवाले होवें तब तिसकों समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा कर्त्तहैं ॥ १२२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा श्वेतकमलकी न्याई निर्मल और पूर्ण देहकर्के युक्त होवे और जन्मलग्नका स्वामी शुभग्रहकर्के देख्या होवे सो राजा स्त्रीयोंका अभिमान तोडने वाला और बडे यश वाला और श्रेष्ठनीतिके जानने वाला होताहै १२३

और जिसके जन्मसमयमें शुक्रकर्के युक्त वृहस्पति दूसरेस्थानमें स्थित होवे तिसकों पृथ्वीके पालनेवालाराजाकर्त्ताहैं और शत्रुयोंके दमन करणे वाला होताहे ॥ १२४ ॥ और जो मनुष्य कारकयोगोंमें जन्मतेहैं सो पृथ्वीके भोगनेवाले होतेहैं और तिनके हाथिघोडे और प्यादे योंकी धूडआकाशमंडलमें छाय जातीहै ॥ १२५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मंगल लग्नमें स्थित होवे शनि चतुर्थस्थानमें स्थित होवे और मकर लग्नमें और शनिके नवांशमें चतुर्थस्थानमें शुक्र वृहस्पति बुध स्थितहोवें तब राजा होताहे ॥ १२६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका वृहस्पति लग्नमें स्थित होवे और चंद्रमावी कर्कराशिमें स्थित होवे और मीनराशिमें परमोच्चांशमें शुक्र स्थित होवे और तैसेंहि मेषलग्नमें सूर्य और मंगल स्थित होवें तब राजा स्वर्गका स्वामी होताहे ॥ १२७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्र

देवमंत्रीकुटुंबस्थोभार्गवेनसमान्वितः जनयेद्वसुधापालंनिर्जितारातिमंडलम् १२४ कारकयोगेजाताभवंतिपृथ्वीभुजोनरायेषां ॥ गजतुरगपत्तिविदलितरजोवितानंभवेद्गगनम् १२५ कुजेविलग्नेतरणेश्चनंदनेरसातलेशुक्रवृहस्पतींदुजैः ॥ मृगोदयेमंदनवांशकस्थितेरसातलेसोभवतीहपार्थिवः १२६ स्वोच्चेगुरुस्तनुगतः स्वगृहेशशांकः शुक्रोझपेपरममुच्चमितोसितश्च मेषेतथैवभगवान्सविताकुजश्चस्वर्गाधिपोयदिभवेन्नृपतिः प्रजातः ॥ १२७ शुक्रेज्यौ संसितौ शुचौतिमियुगेस्वोच्चश्चपूर्णः शशी दृष्टस्तीव्रविलोचनेनादिनकृन्मेषेयदासौनृपःसेनायाश्चलितेनरेणुपटलैर्यस्यप्रनष्टेरवावस्तभ्रांतिसमाकुलाकमलिनीसंकोचमागच्छति ५१२८ क्रूरैर्नीचैरिपुगृहगतैःषष्ठगाश्चिकचगैर्वासौम्यैःस्वोच्चंपरमुपगतैर्निर्मलैःकेंद्रगैश्चआज्ञास्थानेशिशिरकिरणेकर्कटस्थेनिशायामेकच्छत्रींत्रिभुवनतलंयस्यसक्ष्मातलेशः १२९

वृहस्पति उदयकों प्राप्त होयकर्के मीनराशिमें स्थितहोवें और वृषराशिमें पूर्ण चंद्रमा स्थित होवे और मेषराशिमें स्थित यो सूर्य तिसकर्के देख्याहोवे सो राजा होताहे कैसावो राजा होताहे जिसकीसेनाके चलनेकेसमयमें उडीयो धूलि तिसकर्के सूर्य छप जाताहे और सूर्यास्तकी भ्रांतिकर्के कमलिनीयां संकोचकों प्राप्त होतीहैं अर्थात् वडीसेना वाला राजा होताहे ॥ १२८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें क्रूरग्रह नीचराशिमें स्थित होवें और शत्रुक्षेत्रमें स्थित होवें अथवा तीसरे छठे स्थानमें स्थित होवें और शुभग्रह परमउच्चस्थानमें प्राप्त होवें और रश्मियोंकर्के प्रकाशयुक्त होवें अथवा केंद्र ॥ १ ॥ ४।७।१०। स्थानोंमें स्थित होवें और रात्रिके जन्ममें दशमस्थानमें कर्कटराशिका चंद्रमा स्थित होवे सो राजा तीनभुवनमें एकछत्रवाला होताहै १२९

ओरजिसकेजन्मसमयमेंउदयकोंप्राप्त वृहस्पति लग्नमें स्थितहोवे ओरअष्टमीकाचंद्रमा जाहरमेंस्थानमें स्थित होवे ओरबुधकर्केदेख्याहोवेओर चंद्रमासेंदूसरेस्थानमेंसूर्यस्थितहोवेओरमंगलकर्केनहिंदेख्याहोवे सो राजा बहुतहाथी ओर घोडयोंमें स्थित होयकर्कें पृथ्वीकों पालताहै १२० ओर जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा मंगल मेषलग्नमें स्थित होवें ओर शुक्र शनि बुध वृषराशिमें स्थित होवें ओर धन. लग्नमें नवमस्थान वृहस्पति स्थित होवे ओर अपने भावमें स्थित होवे ओर सूर्य अपने उच्चमें ओर उच्चके नवांशमें स्थित होवे तब इसयोगमें उत्पन्नभयायो राजा सो शत्रुयोंकों हत करणेवाला होता. है १२१ ओर जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध वृहस्पति पांचमें स्थानमें स्थित होवें ओर सूर्य कर्के रहित होवें ओर छठेस्थानमें सूर्य स्थित होवे ओर मंगल अपने उच्चमें स्थित होवे ओर नवमस्था.

होरालेखामुपेतःस्फुटकरनिकरैःपूरितांगःसुरेज्यश्चंद्रःशुक्राधंदेहोभृवभवनगतः स्वेनपुत्रेणदृष्टः ॥ चंद्राद्भानुर्द्वितीयेयदिभवतितदानैवदृष्टःकुजेनजातःपायेतभूमिंबहुगजतुरगक्षुण्णभूपृष्ठपीठः ॥ १२० ॥ रविशशिकुजैर्मेषलग्नेसिताकिंबुधैर्दृषेधनुपिनवमेदेवज्येचस्वभावमुपास्थिते ॥ रविरपियादिस्वोच्चेवर्गप्रधानलवोदयेभवतिनृपतिःसिद्धार्थज्ञोहतारिरिहोद्भवः १२१ शशिशशिसुतजीवैःपंचमस्थैर्विहीनैरविरपिरिपुराशौस्वोच्चगेभूमिपुत्रे ॥ तपसिचरविपुत्रेजायतेपार्थिवेंद्रःप्रथितविपुलकीर्तिर्दानधर्मप्रतापैः १२२ त्रिदशगुरोरविहिमकरौस्वसुतस्ययदा भृगुतनयःकुजस्ययदिदृष्टिपथंचगतोभवति ॥ विलग्नगोयदिकोदयराशिरिहप्रथितयशोभवतिक्षितिपतिःक्षपितारिगणः १२३ बुधःकन्यालग्नेसुरपतिगुरुश्चापितिमिगश्चिनःक्षोणीपुत्रःप्रथमभवनेवीर्य्यसहितः ॥ शनिःशत्रुस्थानेत्रिदशरिपुवंद्यश्चहिबुकेयदैवंस्यात्सूतोस्वभुजविजयिभूपतिरिह ॥ १२४ ॥

नमें शनि स्थित होवे तब दान ओर धर्मकर्कें युक्त बडे प्रतापवाला राजा होताहै ॥ १२२ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें सूर्य ओर चंद्रमा वृहस्पति कर्के ओर शनि बुध कर्के देखे होवें ओर शुक्र मंगलकर्के देख्या होवे ओर लग्नमें शीर्षोदयराशि स्थित होवें तब प्रसिद्धयश वाला ओर शत्रुयोंका क्षय करणेवाला राजा होताहै ॥ १२३ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें कन्यालग्नमें बुध स्थित होवे ओर वृहस्पति धनलग्नमें होवे ओर सूर्य मीनलग्नमें स्थित होवे ओर मंगल मेषलग्नमें स्थित होवे ओर बलकर्कें युक्त होवें ओर छठेस्थानमें शनिहोवे ओर शुक्र चतुर्थस्थानमें होवे तब अपसें योगमें अपने भुजोंकर्कें विजयकों प्राप्त राजा होताहै ॥ १२४ ॥

और जिसकेजन्मसमयमें शनि लग्नमें स्थित होवे और मकरराशिकाहोवे और सूर्य सप्तमस्थानमेंहोवे और शुक्र अष्टमस्थानमें स्थित होवे और वृश्चिकमें मंगल और कर्कटराशिमें चंद्रमा होवेतवप्रसिद्ध राजा होताहै १३५ और जिसके जन्मसमयमें मकरलग्नमें उदयको प्राप्त मंगल होवे और शनि नवमस्थानमें स्थित होवे और सूर्यचंद्रमाकर्के युक्त सप्तमस्थानमें होवे तब चंचलस्वभाववाला राजा होताहै ॥ १३६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमाकर्के युक्त शनि लग्नमें स्थितहोवे और वृहस्पति सप्तमराशिमें होवे और अपने उच्चमें स्थित बुधशुक्रकर्के देख्या होवे तब बडा क्रूरराजा होताहै १३७ और जिसके जन्मसमयमें पापीग्रह जाहरमें स्थानमें वृहस्पतिकी दृष्टिसें रहित होवें और लग्नमें शुक्र स्थित होवे और चंद्रमा कर्कट राशिमें स्थित होवे तब अयसे योगमें बाउलीयां और रूहे

यमेविलग्नेमकरेप्रतिष्ठितेदिवाकरेद्यूनगतेसितेष्टमे कुजेलिगेकर्कटगेनिशाकरे भवेत्प्रसिद्धोजगदीश्वरोनरः ॥ १३५ ॥ मृगोदयेभूमिसुतेसुनिर्मलेशनैश्वरे धर्मगृहेव्यवस्थिते दिवाकरेसप्तमगेसहेंदुनाचलस्वभावोनृपतिःप्रजायते ॥ १३६ ॥ शनैश्वरेलग्नगतेसचंद्रेवृहस्पतौसप्तमराशिगेच शुक्रेणदृष्टेशशिजेस्व तुंगेजायेतपृथ्वीपतिरप्रधृष्यः ॥ १३७ ॥ पापाभवेसुरपुरोहितदृष्टिशुद्धालग्ने सुरारिदयितः शशिनिस्वराशौवापीतडागसुरवेश्मकरोनरोत्रजायेतमानवपति र्द्विजदेवभक्तः ॥ १३८ ॥ एकःस्वोच्चेशुभभवनगःसंस्थितोनिर्मलांशुःकेंद्रेभानुः प्रकटितकरःकेवलःपूर्णवीर्यः दृष्टःकुर्यादमरगुरुणापंचमस्थेनजातंभूमेर्नाथंबहु गजपतिंसर्ववंद्यंकृतार्थम् १३९ षष्ठेतमःसहजगेहगतोथवापिसिंहेंदुराशिसहि तोथभवर्क्षसंस्थः दृष्टःशुभैर्दिनकरेंदुविहीनदृष्टिःकुर्यान्नृपंस्वभुजनिर्जितशत्रुप क्षम् ॥ १४० !

और देवताकेमंदिर लगावने वाला और ब्राह्मण और देवताका भक्त राजा होताहै ॥ १३८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें एकग्रहबी अपनेउच्चमें और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे और निर्मलकिरणा कर्के प्रकाशितहोवे और केवल एकहि सूर्य केंद्रस्थान । १ । ४ । ७ । १० । में दिनके जन्ममें पूर्णवली होवे और पंचम दृष्टिकर्के वृहस्पतिकर्के देख्या होवे तब राजा बहुत हाथियोंकर्के युक्त और संपूर्ण लोकोंकर्के वंदित और कृतार्थ होताहै ॥ १३९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें छठे वा तीसरे घरमें राहुस्थितहोवे अथवा सिंहकर्कटराशिमें जाहरमें स्थान स्थित होवे और शुभग्रहोंकर्के देख्या होवे और सूर्यचंद्रमाकीदृष्टिसें रहित होवे तब अपनीभुजाओंकर्के शत्रुपक्षकोंजीतनेवाला राजाकर्ताहै १४०

ठौर जिसके जन्मसमयमें मंदमंद वायु चलरहाहै ठौर आकाशनिर्मल धूलिकके रहितहो वे ठौर ग्रहवलवानहोवें ठौर उपद्रवोंकके रहित ठौर वैरकक रहित होवें ठौर तारामंडलमें वृहस्पति उदयकों प्राप्तहोवे ठौर जब वृपराशिमें शुक्र होवे नव तिससमयमें जन्माहुआ राजा होताहै १४१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा वुध मंगल अपने नवांशमें स्थित होवें और नीचराशिमें नहिंस्थित होवे और क्रमकर्के वाहरमें और जारमें और तीसरे स्थानमें स्थित होवें और अस्तकोंनाहिं प्राप्तहोवें और पाचम स्थानमें चद्रमाकर्के युक्त वृहस्पति होवे तव राजा अपने यशकर्के दिशोंकों प्रकाश करणे वाला होताहै १४२ और जिसके जन्मसमयमें अधिमित्रकीराशिमें केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमे जन्मराशिकास्वामी लग्नके स्वामीकर्के युक्त होवे और वलकर्के युक्त लग्नकों देखे-

वहतिमृदुशरीरेनिर्मलेव्योममध्ये वलिनिनिरुपसर्गा खेचराऽव्यक्तवैराःउदयति सुरवद्येमंडलेमातृकानां यदिवृपभगृहस्थोभार्गव स्यात्क्षितीशः ॥ १४१ ॥ शशिवुधरुधिरांगे स्वांतकस्थैर्ननीचैर्व्ययभवसहजस्थैर्नापिसूर्यप्रविष्टैः तनय भवनसंस्थेवाक्पतौचंद्रयुक्तेभवतिमनुजनाथ कीर्तिशुक्लीकृताशः ॥ १४२ ॥ अधिमित्रगृहेकेंद्रेजन्माधिपतिर्विलग्नपतियुक्तः पश्यातिवलपरिपूर्णोल ग्नंस्यात्पुष्कलोयोगः १४३ पुष्कलयोगेपुरुषाजायतेभूमिपालकानित्यं सुचिरभवंतिहतरिपवोगजमदगंधेनवासितदिगंता १४४ राश्यादौलग्न पति करोतिलग्नेनरेंद्रदंडपतिं मध्येमंडलनाथग्रामपतिचैवभवनांते ॥ १४५ पौष्णेफाल्गुण्यश्विनिमूलेसौम्येचभास्कर कुरुते लग्नगतोनरनाथयोजनशत मात्रकेदेशे ॥ ४६

तब पुष्कल नामकर्के योग होताहै १४३ और पुष्कलयोगमें जो मनुष्य जन्मतेहैं सो नित्य प्रति-राजा होतेहैं और चिरकाल राज्यके करणे वाले और शत्रुयोंका हतकरणे वाले और हाथियों केम दकक सुगंधित करणेवाले होतेहैं १४४ और जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी राशिके प्रथमभागम लग्नगतहोवे तव दंडनीतिके करणेवाला राजाहोताह और मध्यभागमें स्थित होवे तव मंडलीक राजाहोताहै और राशिके अंत्य भागम होवे तव ग्रामपतिराजा होताह १४५ और जिसकेजन्मसमय में रेवती पूर्वाफाल्गुनी अश्विनी मूला मृगशिरा नक्षत्रमें स्थित सूर्य लग्नगत होवे तव तिसकों सौ १०० जोजन पृथ्वीका राजा कहाहै १४६

और जिनकेजन्मसमयमेंकृत्तिकाऔर रेवती औरस्वाति और पुष्यनक्षत्रमेंशुक्रस्थितहोवे औरअश्विनीमें स्थितहोवे तव राजाधिराजकर्त्ताहै १४७ और जिसकेजन्मसमयमें लग्नकास्वामीउच्चमें स्थितहोवेकर्के केंद्र१।४।७।१० में स्थितहोवे तव सारी पृथ्वीकाराजाकर्त्ताहै और केवललग्नका स्वामीकेंद्रमें स्थित होवेतव सामान्य राजाधनकीसमृद्धी वाला होताहै १४८ और जिसके जन्मसमयमें मीनराशिमें पूर्ण चद्रमा स्थित होवे और मित्र ग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव सारी पृथ्वीका राजाकर्त्ताहै और सिद्धार्थ के ज्ञाननेवाला कर्त्ताहै इसमे संशय नहिंहै १४९ और जिसके जन्मसमयमें मंगलदशमस्थानमें स्थित होवे और चंद्रमा बुधशुक्रइहे नवमस्थानमे स्थित होवें और ग्यारहमें स्थानमें उच्चराशिका सूर्य स्थित होवे और बृहस्पतिकर्के युक्तहोवे सो सारीपृथ्वीकाएकराजाहोताहै ॥ और जिसके

कृत्तिकारेवतीस्वातीपुष्यस्थायीभृगो सुतः करोतिभूभुजांनाथंअश्विन्यामपिसंस्थितः ॥ १४७ ॥ विदधातिसार्वभौमंलग्नाधिपतिःस्वतुंगगःकेंद्रे नृपतिंलग्नाधिपतिर्जन्मपतिर्धनसमृद्धंच ॥ १४८ ॥ मीनेनिशाकरःपूर्णः सुहृद्ग्रहनिरीक्षितः सार्वभौमंनृपंकुर्यात्सिद्धार्थज्ञंनसंशयः ॥ १४९ ॥ याते भौमेकर्मस्थानंशिशिरकरबुधभृगुसुतैस्तपःसमवस्थितैः आयेस्वोच्चेप्राप्तोभानुस्त्रिदशपतिसचिवसहितोयदिप्रसवेप्रभवेत्क्षोणीभर्त्तायानेयस्यप्रचलिततुरगरजसादिवःसरितोगते नाथैकत्वंभूयोभूतधरणितलपरिगमसुखंप्रयातिरवेर्हयाः १५० शशिसहितेकेंद्रस्थेशनैश्चरेभवतिजारजातोत्र राजाभुविगजतुरगग्रामधनाविवर्द्धितश्रीकः १५१ शुक्रवाक्पतिबुधैर्निधनस्थैर्द्यूनगेशशिरविक्षितिपुत्रेः जायते क्षितिपतिःपृथुवक्षाःसर्वतःक्षपितशत्रुसमूहः १५२

जन्मसमयमें घोडेयोंके खुरोंकर्के उडीयो धूलि तिसकर्के सूर्यके रथके घोडेपृथवीतलकेसुखकों होतेहैं अर्थात् वडी सेनावाला राजा होताहै ॥ १५० ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंचद्रमा कर्के युक्त केंद्रस्थानों १।४।७।१० में शनि स्थितहोवे सो राजाजारजात है और हाथि घोडे ग्राम धनकी वृद्धिवाला होताहै ॥ १५१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति बुध इहे तीनग्रह अष्टमस्थानमें स्थितहोवें और चद्रमा सूर्य मंगल इहे तीनग्रह सप्तमस्थानमें स्थित होवें तव वडीछातीवाला राजा होताहै चार ओरसें शत्रुयोंके समूहोंका क्षयकरणेवाला होताहै १५२

और जिसके जन्मसमयमें वलकर्के युक्त सूर्यककंट राशिमें स्थितहोवे और चंद्रमा कर्के युक्त होवे और लग्नमें बृहस्पति उच्चमेंस्थितऔर उदितहोवे और छठेस्थानमें मंगलस्थितहोवे तिसराजाकी सेनाके चलनेमें धूलोकर्के आकाशमार्ग छाया जाताहे १५३ और जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिके अष्टमांशमेंचंद्रमा त्रिकोण ९।५ स्थानमें स्थितहोवे तव राजा अवश्यमेव संपूर्णलोकों कों शुभके देनेवाला होताहे १५४ और कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेषकेसप्तमांशमें मंगल स्थितहोवे तव राजाकर्ताहे और मिथुनलग्नके इकीस २१ अंशमें स्थितहोवे तव राजाकर्ताहे १५५ और कुंभराशिके १५ अंशमें चंद्रमास्थितहोवे तव राजा कर्ताहे और कर्कटराशिके दशम अंशमें स्थितचंद्र

भानुःप्राणीशशिगृहगतःशीतरश्मिश्चतस्मिन्नेकेस्वोच्चेयदिगगनगोनिर्मलःपूर्णरश्मिः लग्नंप्राप्तःसुरपतिगुरुःषष्ठगःस्यात्क्षितीशः छन्नोयस्यप्रचलितचमूरेणुभिर्व्योममार्गः १५३ कुंभस्याष्टमभागेत्रिकोणसंस्थेपिवानिशानाथे जातोभवत्यवश्यंराजाशुभदः समस्तलोकस्य १५४ मेषस्यसप्तमांशेकरोतिपृथ्वीसुतःस्थितोनृपतिम् एकाधिकविंशेनचमिथुनस्यांशेभवेद्भूपः १५५ कुंभस्यपंचदशकेभागेचंद्रःस्थितोमहीपालम् कर्कटस्यचदशमेकरोतिपुरुषंसदाप्रसवे १५६ धनुषिचात्रिंशेजीवःकरोतिनृपतिंजनस्यातं सिंहस्यपंचमांशेतथाचहेलिवुधौज्ञेयौ १५७ एकास्मिन्पंचकतौ तत्रैवदशस्ववास्थितश्चंद्रः ॥ भागेषुवीरनृपतिंकरोतिभुजलब्धपृथ्वीशम् ॥ १५८ मकरस्यपंचमांशेकरोतिरविजोनरेश्वरंसुनयम् भागेभूतलतिलकंधर्मज्ञंशास्त्रनिरतंच १५९ कर्कटगौशशिजीवौपंचसुभागेषुसंस्थितौकुरुतः भुपतिमप्रधृष्यंरविमिवसर्वग्रहगणस्य १६०

माराजाकर्ताहे १५६ औरधनराशिके ३०में १० अंशमें स्थित बृहस्पतिवड़ाप्रसिद्धराजा कर्ताहे और सिंहराशिके पांचमें अंशमें सूर्यबुधस्थितहोवें तव राजाहोताहे १५७ और एकराशिमेंपंचाविंशति अंशमें और दशमेंअंशमें चंद्रमा स्थितहोवे तव राजाअपनी भुजोंके वलकर्के पृथ्वीकोंप्राप्त होताहे १५८ और मकरराशिके पांचमें अंशमें स्थितशनि श्रेष्ठनीतिके जाननेवाला राजाकर्ताहे और पृथ्वीतलमें तिलक और संपूर्णधर्मोकेजाननेवाला राजा होताहे १५९ और कर्कटराशिके पांचअंशोमें चंद्रमाऔर बृहस्पतिस्थितहोवें तव वडेतेजवाला राजा होताहे जैसें संपूर्णग्रहोंके मध्यमें सूर्यहैतिसकीन्याई १६०

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा पुष्पनक्षत्रमें और वर्गोत्तममें और कृत्तिका और अश्विनीनक्षत्रमें स्थित होवे और त्रिपुष्करयोगकर्के पूर्ण चंद्रमा होवे तब पृथ्वीका राजा कर्ताहै १६१ और जिसके जन्मसमयमें अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रमें शुक्र स्थित होवे और धनिष्टामें मगल स्थित होवे और अपने उच्चमें वा वर्गोत्तममें स्थित होवे तब श्रेष्टराजा होताहै १६२ और जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा दशमस्थानमें स्थित होवे और निर्मल शुक्र नवमस्थानमें स्थित होवे और संपूर्णग्रहअस्तकों वो प्राप्त होवें तबबी बडे पुरुषार्थ वाला राजा होताहै १६३ और जिसके जन्मसमयमें मगलसें पंचम और नवम और तीसरे स्थानमें क्रमसें वृहस्पति और चंद्रमा और सूर्य स्थित होवें तब राजा कुवेरके समान धनवालाहोताहै १६४ और जिसके जन्मसमयमें बुधसें सूर्य तीस

चंद्रःपुष्पेनृपतिंवर्गोत्तमकृत्तिकाश्विनीसंस्थः विदधातिसार्वभौमंत्रिपुष्करेणापिपरिपूर्णः १६१ अश्विन्यनुराधास्थःसितःश्रविष्टासुपार्थिवंभौमः कुरुतेस्वोच्चमुपागतोवर्गोत्तमगश्चनान्यत्र१६२व्योम्नित्रिंशखधवलोनिशाकरोभार्गवस्तपसिसंस्थितः शुचिः अस्तगाश्चयदिशेषखेचराःस्यान्महीपतिरनल्पपौरुषः १६३जीवनिशाकरसूर्याःपंचमनवमतृतीयगावक्रात् ॥ यदिभवतितदाराजाकुवेरधनतुल्यएवासौ १६४ रविस्तृतीयेभृगुनंदनःसुखेबुधस्यचान्येयदिपंचमेस्थिताः ननीचराशौनचशत्रुवेश्मगाभवेन्नरेंद्रस्त्रिसमुद्रपालकः ॥१६५ ॥ वृहस्पतेर्भौमदिवाकरेंदवोगताश्चयोचांवुनभस्तलंक्रमात् विपक्षराशौपरिशेषखेचरायदातदाभूमिपतिर्नृपात्मजः ॥ १६६ भृगोरपत्याद्बुधभास्करात्मजौचतुष्टयस्थौपरिशेषखेचराः तृतीयलाभर्क्षगतास्तुतेयदामहीपतिंकुर्युरसंशयंतदा ॥ १६७ ॥

रेस्थानमें स्थित होवे और शुक्र चतुर्थस्थानमें स्थित होवे और बाकीके ग्रह पचमस्थानमें स्थित होवें और नीचराशिमें और शत्रुकी राशिमें स्थित नहिंहोवें तब तीनसमुद्रपर्यंत पृथ्वीके पालनेवाला राजा होताहै १६५ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिसें लेकर्के मगल और सूर्य और चंद्रमा क्रमकर्के चतुर्थ और दशम और लग्नमें स्थित होवें और बाकी के ग्रह छठे स्थानमें स्थित होवें तब राजकुमारराजा होताहै १६६ और जिसके जन्मसमयमें शुक्र से केंद्रस्थानों । १ । ४ । ७ । १० । में बुध और शनि स्थित होवें और बाकीके ग्रह तीसरे ग्यारहमें राशिमेंस्थितहोवें तब निःसंदेह राजाकर्ताहै १६७

और जिसके जन्मसमयमें बुध और वृहस्पति और शनि केंद्र। १। ४। ७। १०। स्थानोंमें स्थित होवें और वृहस्पति और बाकीके ग्रह उच्च राशियोंमें स्थितहोवें तब सिंहासनका स्वामी राजा होताहै ॥ १६८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यसें तीसरे पांचमें जाहरमें स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवें सो राजावा राजाका मंत्री वा सेनाका पति होताहै १६९ और जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी उदय होवे और पापीग्रह जाहरमें स्थित होवें और शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवें तब अपने बलकर्के संपूर्ण पृथ्वीकों जीतने वाला होताहै १७० और जिसके जन्मसमयमें लग्नपतिके तीसरे और एकादश और छठे स्थानमें पापीग्रह स्थितहोवें

शुक्रबुधरवितनयाःकेंद्रवाचस्पतिर्भवेदुच्चे सिंहासनाधिशायीयदिराजास्वोच्चगा श्चपरिशेषाः १६८ सवितुस्तृतीयपंचमलाभर्क्षसमाश्रिताःसदायस्य सर्वेग्रहाः सनृपतिर्भवोसेनापतिर्वापि ॥१६९ ॥ लग्नपतिःस्फुटरश्मिःपापालाभर्क्षगाःशु भाःकेंद्रे ॥ यदिभवतितदानृपतिःस्वभुजार्जितसर्वभूमितलः ॥ १७० ॥ लभेतृतीयषष्ठेयदिपापालग्नपस्यशुभदृष्टाः भवतितदाधरणीशःसमस्तनृपवं दितःसाधुः ॥ १७१ ॥ विचरतिसुरपूज्योमेषराशौतुसिंहे दहनकिरणदृष्टेभूमि पुत्रेसुरश्मौ नचगगनविचारीकश्चिदेकोपिनीचे यदिनृपतिसमर्थोजायतेपा र्थिवेंद्रः ॥ १७२ ॥ चंद्राद्ग्रहैर्निगदिताःसुनफादयश्चकेंद्रस्थितैर्यदिभवंतिच यत्रयोगाः विश्वंभरापतिकुलेषुमहत्सुजातायोगेषुतेषुमनुजेश्वरबालमंते ॥ ॥ १७३ ॥ केंद्रगःसुरगुरुःसशशांकोयस्यजन्मनिचभार्गवदृष्टः भूपतिर्भवति

और शुभग्रहोंकर्के देखे होवें तब राजा संपूर्णराजयोंकर्के वंदित और साधुहोताहै ॥ १७१ ॥ औरजिसकेजन्मसमयमें वृहस्पति मेषराशिमें स्थितहोवे और सिंहराशिमें मंगल सूर्यकर्के देखाहोवे और अस्तनहिं होवे और कोईभी ग्रहनीचराशिमें स्थितनहिं होवे तब बडेसमर्थ वाला राजाहोताहै ॥ १७२ और जिसके जन्मसमयमें पूर्वकहेयो सुनफादि योगहैं चंद्रमासें सो योग केंद्रस्थानस्थितग्र होंकेपदहोवें तिनोंमें राजाके कुलमें यो जन्मेंहैं सो राजा होतेहैं ॥ १७३ ॥ और जिसके जन्मसम यमें चंद्रमाकर्के युक्त वृहस्पति केंद्र। १।४।७।१०। स्थानोंमें स्थितहोवे और शुक्रकर्के देखाहो वे और कोईभीग्रह नीच राशिमें स्थित नहिं होवे तब बडे यशवाला राजा होताहै ॥ १७४ ॥

औरजिसकेजन्मसमयमें जिसकिसलग्नमें उदयाचलमें स्थितशुक्रमंगल और शनिकर्कैदेख्याहोवै औरअप नें नवांशमें अति वलयुक्त होवैं और वृहस्पति पंचमस्थानमें स्थित होवे तव अपनी भुजोंकर्कै शत्रुयों कों जीतने वाला और हाथियोंकर्कै युक्त सारीपृथ्वीका राजा कर्त्ताहै ॥ १७५ ॥ और जिसके ज न्मसमयमें सिंहराशिमें सूर्य और कर्कटराशिमें चंद्रमा दोनों वृहस्पतिकर्कै देखे होवें तव दोनों रा जाकर्त्तेहैं ॥ १७६ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें वुध कर्कटराशिमें स्थितहोवे और वृहस्पति धनराशिमें स्थित होवे और दोनों सूर्यमंगलकर्कै देखे होवैं तव वडा प्रसिद्ध राजा होताहै ॥ १७७ ॥ और जि सके जन्मसमयमें मीनराशिमें चंद्रमा स्थितहोवे और कर्कटराशिमें वृहस्पति स्थित होवे और शुक्र कुंभराशिमें स्थित होवे तव राजा होताहै १७८ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रकर्कै देख्या हुआ

सोत्तमकीर्तिर्नीचगोपिदिनकश्चिदिहस्यात् १७४ उदयशिखरसंस्थोभार्गवो यत्रतत्रकुजरविसुतदृष्टःस्वांशकस्थोविवीर्यः जनयतिनरनाथंवाक्पतौपं चम स्थेभुजवलहतशत्रुंसार्वभौमंगजाढ्यम् १७५ सिंहकमलिनीभर्त्ताकुलीरस्थो निशाकरः दृष्टौद्वावपिजीवेनपार्थिवंकुरुतस्तदा १७६ ॥ वुधःकर्कटमारूढोवा क्पतिश्चधनुर्द्धरम् सूर्यभूसुतदृष्टौचयदिस्फीतोमहीपतिः १७७ शफरीयुगले चंद्रःकर्कटेचवृहस्पतिः शुक्रःकुंभेयदाशक्रस्तदाराजाभवेदिह १७८ सितदृष्टः शनिःकुंभेपद्मिनीदयतोहये चंद्रोजलचरेराशौयदिराजातदाभवेत् ॥ १७९ ॥ कुजोलिगोथमेषेवारविजीवनिरीक्षितः वृषेज्ञःशुक्रसंदृष्टस्तदापिपृथिवीपतिः १८० अमलवपुरवक्रःकैरवानांविकासीस्वकगृहमथवांशेस्वोच्चमंशंगतोवा हि तगगननिवासैःपंचभिर्दृश्यमानोजनयतिपृथवीशंनीचभेनोयदिस्यात् १८१ कुंभेमंदोगुरुभृगुसुतावुद्गमेखेशशांकोवंधावर्कोवुधकुतनयौवक्रगौचेत्सभूपः

शनिःकुंभराशिमेंस्थितहोवे और सूर्य धनराशिमें स्थितहोवे और चंद्रमा जलचरराशिमें स्थितहोवेतव राजाहोताहै १७९ और जिसके जन्मसमयमें मंगल वृश्चिकराशिमेंअथवा मेषराशिमें स्थितहोवेऔरसूर्य वृहस्पतिकर्कै देख्याहोवे औरवृषराशिमें वुध शुक्रकर्कै देख्याहोवे तववी राजा होताहै १८० और जि सके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा कर्कटराशिमें वा कर्कटके नवांशमें वा वृषके नवांशमें और पांच मि त्रग्रहोंकर्कै देख्या होवे और नीचराशिमें स्थित नहिं होवे तव राजा कर्त्ताहै ॥ १८१ ॥ और जिस के जन्मसमयमें ग्यारहमें स्थानमें शनि स्थित होवे और वृहस्पति शुक्र लग्नमें स्थित होवें और चंद्रमा दशमस्थानमें स्थित होवे और तीसरेस्थानमें सूर्य स्थित होवे और वुध और मंगल वक्रमतीवाले होवें सो राजा होताहै

जिसराजाकी सेनाके मत्त हाथियों करके युक्त यो समुद्र सो पर्वतोंकी भ्रांतिकरके फेर सेतुबंधनके भयसे समुद्र क्षोभको प्राप्त होताहै ॥ १८२ ॥ इतिराजयोगाः ॥ अब पंचमहापुरुषोंके लक्षण कहतेहैं श्रीकर्के युक्तजो देवकी तिनामकरके जो राजाहैं सो पचमहापुरुष संज्ञाकरके राजयोंको कहते भये तिनको निःसंदेह करके में कहताहों १ अबमालव्यादिपांचराजयोंकेलक्षणकहतेहैं जिसराजाके जन्मसमयमें शुक्र और मगल और शनि और बृहस्पति और बुध इहे पांचग्रह यथाक्रमकरके वलीहोयकरके अपनेक्षेत्रमें वाकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानमें वा अपनीउच्चराशियोंमें स्थित होवें तव मालव्यसें लेकरके पांचराजाहोतेहैं जैसें जिसराजाके जन्ममें शुक्र वलीहोयकरके स्वक्षांदिस्थानमें स्थित होवे तिसको मालव्यसंज्ञाहोतीहै और जिसके जन्मसमयमें मगल स्वक्षांदिस्थानोंमें होवे तिसको रुचकसंज्ञाकहिहैं २ और जिसके जन्ममें शनि स्वक्षांदिस्थानोंमें होवे तिसको

यत्सेनायाःकृतजलकटिः क्रोधमत्तेभशैलैर्भूयःसेतोःस्मरतिसभयःक्षोभितांतोंबुराशिः १८२ इतिराजयोगाः ॥ अथपंचमहापुरुषलक्षणम् ॥ श्रीदेवकीर्त्तिराजापचमहापुरुषसंज्ञितान्नृपतीन् कथयतियांस्तानहमपिकथयामिनिराकुलीकृत्य १ स्वक्षेत्रेथचतुष्टयेचवलिभिःस्वोच्चस्थितैर्वाग्रहैः शुक्रांगारकमंदजीवशशिजैरेतैर्यथानुक्रमम् मालव्योरुचकः शशोथकथितोहंसश्चभद्रस्तथासर्वेपामतिविस्तरात्प्रतिमतात्संकथ्यतेलक्षणम् ॥ २ ॥ महीसुतात्सत्वमुदाहरंतिगुरुत्वमिंदोस्तनयाद्गुरोश्च स्वरंसितात्स्नेहमिहानुवर्णैवलावलैःपर्णलघूनिचैवम् ॥ ३ ॥ ऋजुर्दयालुर्वहुदासभृत्यःस्थिरस्वभावःप्रियसत्यवादी सुरद्विजोपास्तिरतःसहिष्णुर्भवेन्नरःसत्वगुणप्रधानः ४

शशसंज्ञाहोतीहै और बृहस्पति स्वक्षांदिस्थानोंमें होवेतव तिसको हससंज्ञाहोतीहै और बुधस्वक्षांदिस्थानोंमें स्थित होवे तिसको भद्रसंज्ञाकहिहै अवइनोंपांचोंकेलक्षण जैसे मुनियोंने विस्तारकरकेकहेहैं सो में कहताहों ॥ २ ॥ और कहतेहैं मगलसें सत्वजो पराक्रमहै सो कहतेहैं और बुधसें गुरुता देहस्थूलताकहतेहैं और बृहस्पतिसेंस्वर शब्द पटुताकहिहै और शुक्रसें देहकीस्निग्धता और इनोंग्रहोंके वलावलसें पूर्ण और न्यूनाधिकगुणहोतेहैं ३ अवसत्वगुणादिफलकहतेहैं ॥ जो मनुष्यसपूर्ण कर्मोंमें सरलहोवे और दयावान होवे और बहुतचाकरोंवाला होवे और स्थिरस्वभाववाला होवे और मीठा सत्यबोलने वाला होवे और देवता ब्राह्मण की उपासनामें रतहोवे और किसीकी वातको सहारणे वाला होवे सो सत्व गुणी कहाहै ४

श्रौर जोमनुष्य शूरवीर श्रौर कलाके जाननेवाला श्रौर काव्योंके जानने वाला श्रौर स्त्रीमें सक्त चित्त वाला श्रौर यज्ञकरणेमें चतुर श्रौर वडे श्राडंवर वाला श्रौर हास्यमें रत श्रौर वार्त्ताकरणेमें प्रगल्भ श्रौर वेदार्थके जाननेवाला सो रजोगुणी कहाहै ॥ ५ ॥ जोमनुष्य मूर्ख श्रौर श्रालसी श्रौर दूसरेयोंके ठगने वाला श्रौर क्रोधी श्रौर माडे वर्णवाला श्रौर चुगल श्रौर क्षुधाकर्के पीडित श्रौर श्राचारसें रहित श्रौर श्रपवित्र श्रौर इंद्रियोंकोंनहि रोकणे वाला श्रौर लोभी श्रौर मदकर्के युक्त सो तमोगुणी हो, ताहै ॥ ६ ॥ श्रौर ग्रंथांतरमें कहाहै सूर्य वृहस्पति चंद्रमा जिसके जन्ममे वलीहोवें सो सत्वगुणी होताहै श्रौर शुक्र बुध वलीहोवें तव रजोगुणी होताहै श्रौर शनि मंगल वलीहोवें तव तमोंगुणी होताहै श्रौर मिश्रग्रहोंकर्के गुणवी मिश्रितहोजातेहैं ६ ॥ श्रौर भारोभवतिनृपाणामिति श्रव राजाके देहका मान कहतेहैं दोहजारपल ॥ २००० ॥ की एक भारसंज्ञा कहिहै श्रौर जोपृथ्वीके भोगनेवाले राजा

शूरःकलाकाव्यनिविष्टवुद्धिःस्त्रीसक्तचित्तःक्रतुप्रवीणः ॥ आडंवरीहास्यरतिः प्रगल्भेवेदार्थविद्राजसिकःप्रदिष्टः ५ मूर्खोलसोवंचयतापरेषांक्रोधीविवर्णः पिशुनःक्षुधार्त्तः ॥ आचारहीनोनशुचिर्नदांतोलुब्धःप्रमादीतमसाभिभूतः ६ ग्रंथांतरे आदित्यामरमंत्रिशीतकिरणाःसत्वप्रधानाग्रहाःशुक्रज्ञौसरजोगुणौ शनिधरापुत्रौतमःस्थायिनाविति ॥ भारोभवतिनृपाणांभूम्यार्धंभुजतांप्रसूताना म् ॥ येषांभारोप्यर्धःसकलमहीपालकास्तेस्युः ७ समाःस्वरैःसिंहमृगेंद्रदंतिनांरथौघभेरीवृषतोयदालिनाम् ॥ समस्तभूमंडलरक्षणक्षमाभवंतिभूपा जितशत्रवोनराः ८ स्निग्धैर्भवंतिभूपाजिव्हात्वग्दंतनेत्रनखकेशैः ॥ रूक्षैरेतैर्निस्वाःसारस्वतजातकेकथिताः ९

होतेहैं सो अर्धमभार प्रमाणकर्के तुलामें होतेहैं अर्थात् जिनके देहका तोल भारार्ध एकहजारपल ॥ १००० ॥ प्रमाणकर्के होवे सो सारी पृथ्वीका राजकर्तेहैं श्रौर किसकालमें परीक्षाकरणी पचीश, वर्षमें पुरुषकी श्रौर वीसवर्षमें स्त्रीकी ७ श्रौर कहतेहैं जिनमनुष्योंकास्वरसिंहकीन्याईं श्रौर हाथिकी न्याईं श्रौर रथोंके समूहमें जोरवर तिसकीन्याईं श्रौर वडेनगारेकी न्याईं श्रौर वैलकीन्याईं श्रौर वद लोंकीन्याईं श्रौर भ्रमरोंकी न्याईं गंभीरहोवे सोमनुष्य संपूर्णपृथ्वीमंडलको रक्षाकरणेमें समर्थ होतेहैं श्रौर शत्रुयोंकों जीतनेवाले होतेहैं ८ श्रौर कहतेहैं जिन्हों मनुष्योंके जिव्हा श्रौर त्वचा चमडा श्रौर दंत श्रौर नेत्र श्रौर नख श्रौर केश स्निग्ध होतेहैं सो मनुष्य राजा होतेहैं श्रौर जिनके इहे पूर्वोक्त जि, व्हासें लेकर्के रूक्ष कठोर होतेहैं सोमनुष्य निर्धन होतेहैं इहे सारस्वत जातकमे संपूर्णकहेहैं ॥ ९ ॥

और स्निग्ध और तेजकर्केयुक्त शुद्धवर्ण राजयोंके कहेहैं और क्लेशभोगनेवाल्योंके उल्टे वर्णहोतेहै और पुत्र और धन और सुखके भोगनेवाल्योंके मध्यम होतेहैं ॥ १० ॥ और कहतेहैं वृहस्पति और शुक्र और शनि और मंगल और बुध इनपाचग्रहोंकर्के क्रमसें आकाशतत्वसें लेकर्के तत्वोंके स्वभाव होतेहैं जैसें आकाशकास्वामी वृहस्पति और जलका स्वामी शुक्र और वायुकास्वामी शनि और अग्निकास्वामी मगल और पृथ्वीतत्वका स्वामी बुध कहाहै और वायु और पित्तकेवलसें श्रेष्ठरूपवाली छाया होतीहै और मिश्रग्रहवलीहोवें तव रूपकी छायावी मिश्रित होतीहै ॥ ११ ॥ और जिसकी आकाशकी प्रकृति होतीहै सो शब्दार्थके जानने वाला और नीतिमे चतुर और प्रगल्भ और विद्याकर्केयुक्त और विभागकर्के धनके भोगनेवाला और अगोंमे संधियोंमे छिद्रो वाला और कृश हाथपैरोंवाला होताहै और लंवे देहवाला होताहै ॥ १२ ॥

स्निग्धस्तेजोयुक्तःशुद्धोवर्णःप्रकीर्त्तितोनृपतेः ॥ विपरीतःक्लेशभुजांसुतार्थसुखभोगिनांमध्यः ॥ १० ॥ व्योमांवुवाताग्निमहीस्वभावाःसुरासुरेज्यार्किमहीजसौम्यैः ॥ छायामरुत्पित्तवलात्सुरूपामिश्रैस्तुमिश्राबलिभिर्नरा स्युः ॥ ११ ॥ शव्दार्थविन्न्यायपटु प्रगल्भोविज्ञानयुक्तोविवृतार्थभोगः ॥ छिद्रांगसंधिःकृशपाणिपादोव्योमप्रकृत्यापुरुषोतिदीर्घः ॥ १२ ॥ जलस्वभावोवहुवारियायीप्रियाभिलापीद्रवभोजनश्च चलस्वभावोवहुमित्रपक्षः क्षोणीपतिर्नातिचिरं प्रगल्भः ॥ १३ ॥ सत्वेनवायोः पुरुष कृशांगः क्षिप्रं प्रकोपस्यवशंप्रयाति कृतैकवुद्धिर्भ्रमणेरतश्चतदासितोभूपतिरप्रधृष्यः ॥ १४ ॥ शूरः क्षुधार्तश्चपलोतितीक्ष्णः प्राज्ञःकृशोवद्धतनुर्विरोधी विद्वांश्चमानीवहुभक्षणश्चवन्हिस्वभावःपुरुषोतिकायः १५ ॥

और जिसमनुष्यमें जलतत्वकी छाया होतीहै सो वहुतजलोंमे रहणेवाला और स्रीकी इच्छा वाला और द्रवणेवाले पदार्थ भोजनकरणेवाला और चंचलस्वभाववाला और वहुतमित्रोंवाला और वहुत काल पृथ्वी कास्वामी और प्रगल्भ होताहै १३ और जिस पुरुषमे वायुतत्वकी छाया होतीहै सो कृश अगोंवाला और शीघ्र क्रोधके वश होने वाला और केवल भ्रमणेमे हिंइच्छा करणेवाला और कृष्णवर्णवाला और वडाक्रूर राजा होताहै १४ और जिसमें अग्नितत्वकी छाया होतीहै सो शूर वीर और क्षुधाकर्के पीडितहोनेवाला और वडा चंचल तीक्ष्ण होताहै और चतुर और कृश अगोंवाला और वद्धवैरवाला और विद्यावान् और मानवाला और वहुतभोजनकरणेवाला और वडेदेहवाला होताहै ॥ १५ ॥

और जिसमनुष्यकों पृथ्वी तत्वकी छाया होतीहै सो कपूर और मालती कीन्याई और कमलोंकी न्याई श्रेष्टगंधिवाला और भोगोंकों भोगने वाला और स्थिर सुखकों प्राप्तहोने वाला और सिंहकीन्याई और वदलकीन्याई शब्दवाला और स्थिर चित्तवृत्तिवाला होताहै १६ और कहतेहैं आकाशतत्वकी छाया जिसमनुष्यकों होतीहै सोकयसीहै स्फटिकमणीकीन्याई और श्वेतकमलकी न्याई निर्मल और निधिकीन्याई पुरुषोंकों धर्मार्थकामके सिद्धकरणे वाली और श्रेष्ठभाग्योंके करणे वालीहोतीहै १७ और जलकी छाया कैसीहै स्निग्ध और शुक्लवर्णकी और हरित वर्णकी और स्त्री कीन्याई और माताकीन्याई संपूर्णसुखोंके करणे वाली और सौभाग्यऐश्वर्यके सुखकों करणेवाली होतीहै ॥ १८ ॥ और जिसके देहमें वायुकी छाया होतीहै सो कालेवर्णकी मलीनकांतिवाली और दुर्गंधिवाली और तिसछायाकर्केमनुष्यमूर्ख और मलीन कठोर वर्ण और शोकसंतापकर्के तप्त और वध और दैन्यरुचि वाला और व्याधि और अनर्थोंकों प्राप्तहोताहै १९ और जिसके देहमें अग्नित

कर्पूरजात्युत्पलपुष्पगंधोभुनक्तिभोगान्स्थिरलब्धसौख्यः सिंहाब्दघोषःस्थिर चित्तवृत्तिर्महीप्रभावोभवतिप्रजातः१६८स्फटिकोत्पलसंकाशास्वच्छागगनोत्थि ताभवेच्छाया निधिरिहपुंसांधन्यात्रिवर्गफलसाधिनीसुभगा १७ स्निग्धा सिताच्छहरिताकांतामातेवसर्वसुखजननी सौभाग्याभ्युदयशुभान्करोतिजलसं भवाछाया १८ असितजलदकांतिःपापगंधोतिमूढोमलिनपरुषवर्णःशोकसंता पतप्तः सभवतिवधदैन्यव्याध्यनर्थार्थनाशान्वितरतिपवनोत्थायस्यकांतिःशरीरे १९ कमलदहनकांतिश्चंडदंडोतिधृष्टःप्रणतसकलशत्रुर्विक्रमाक्रांतभूमिः भज तिमणिसुवर्णसर्वकार्यार्थसिद्धिं प्रशमितगतकोपोवह्निजायांप्रभायां ॥ २० आज्यांबुसिक्तवसुधाऽगुरुतुल्यगंधसुस्निग्धदंतनखरोमशरीरकोशः ॥ धर्मा र्थतुष्टिसुखभाग्जनसंप्रियश्चछायांयदाभवतिभूमिकृतांमनुष्यः२१शीतालुर्बहुभा षकोद्रुतगतिर्नौवास्थितःकुत्रचिच्चौरोमत्सरवान्प्रचाररुचिकःसौभाग्ययुक्तोनरः

त्वकी प्रभाहोतीहै सो लालकमलकीन्याई और अग्निकी न्याई शोभाकर्के युक्त और वडेप्रचंडदंडकर्के युक्त और ढीठ और संपूर्ण शत्रुयोंकर्के प्रणत और पराक्रमकर्के पृथ्वीके जीतनेवाला और मणियों कोंओरसुवर्णकोंप्राप्तहोनेवालाऔरसंपूर्णकार्यार्थोंकीसिद्धिवालाऔरनष्टहोयकर्केक्रोधसेंरहितहोताहै२०] और जिसमनुष्यमें पृथ्वीकी छायाहोतीहै सो घृत और जल कर्के सेचन करीयो पृथ्वी तिसकीगंध- की न्याई और अगुरुचदनकीन्याई सुगंधिवाला होताहै और सुंदर स्निग्धदंत और नख और रोम और देहवाला होताहै और धर्म अर्थ कर्के और प्रसन्नता कर्के युक्त और जनोंसें प्रीतिवाला होताहै ॥ २१ ॥ और अवदेहमें स्थित वायुपित्त श्लेष्म के लक्षण कहतेहैं जिसके देहमें वायु प्रधान होताहै सो शीतकर्के युक्त और बहुत बोलनेवाला और शीघ्रचलने वाला और किसीस्थानमें नौकामें स्थित होनेवाला और चोरीकरणे वाला और मात्सर्यवाला और प्रचारमें रुचिवाला और सौभाग्यकर्के युक्त

और शीघ्रताकर्के दानकरणेवाला और वडी मित्रभावमें बुद्धि वाला और गंधर्व विद्याके जाननेवाला और क्षमाके करणेवाला और मैत्रीकरणेमें वडाचतुर और स्वप्नमें आकाशकों जाने वाला होताहै ॥ २२ ॥ और धैर्यसें रहित और रूक्षवर्णकी दाढी और केशोंवाला और कृतघ्न और हाथ पैरोंसें स्फुटित और क्रोधी और कांतिकर्के रहित और विलापकरणेवाला और बंधन मेंनाहि आवनें वाला और धनकानाशकरणेवाला होताहै ॥ २३ ॥ अब पित्ताधिक पुरुषके लक्षण कहतेहैं जिसमनुष्यमें पित्त अधिकहोताहै सो दुर्गंधिवाला और शीघ्रक्रोधकरणेवाला और वडी बुद्धिवाला शीघ्रप्रसन्नहोने वाला और पुष्टदेहवाला और लालनख और नेत्र और हाथ और पैरों वाला और वृद्धकीन्याई आकारवाला और दाहकर्के युक्त होताहै और बुद्धिवाला और युद्धमें निर्भयरहणेवाला और शीतकी रुचिवाला और शत्रुयोंको ग्रहणकर्के बोलने वाला और किसीसें नहिं डरणेवाला और वहुतभोज,

दातास्यादचिरातिसौहृदमतिर्गन्धर्ववेत्ताक्षमीमित्राणांसमुपार्जनेतीनिपुणः स्वप्नेनभोगच्छति ॥ २२ ॥ अपगतधृतिरूक्षःश्मश्रुकेशःकृतघ्नःस्फुटितचरणह स्तःक्रोधनोनष्टकांतिः ॥ विलपतिननिवद्धोवित्तसंहारकारीभवतिपुरुषएवंमा रुतीकप्रधानः २३ दुर्गंधोलघुकोपनोविपुलधीःक्षिप्रप्रसादःपुनःपीनोरक्त नखाक्षिपाणिचरणोवृद्धाकृतिर्दाहवान् ॥ मेधावीयुधिनिर्भयोहिमरुचिर्ब्रूतेवि गृह्यापरान्नोभीतेःप्रणयंप्रयातिवहुभुक्कुर्यान्नतानांप्रियम् २४ स्वप्नेविपश्यति सुवर्णदिनेशदीपान्दावाग्निकिंशुकजपानिकरानुकारान् ॥ रक्ताबुजमंडरुधि रौघतडित्समूहान्पित्ताधिकोनिगदितःखलुलक्षणज्ञैः २५ श्रीमान्श्लिष्टांगसं धिर्धृतिवलसहितःस्निग्धकांतिसुदेहोग्राहीसत्त्वोपपन्नोहतमुरजघनघोषणःस्या त्सहिष्णुः ॥ गौरोरक्तांगनेत्रोमधुररसरुचिर्वद्धवैरःकृतज्ञःक्लेशेस्याद्दत्तचित्तः सकलजनहितःपूजकानांगुरूणाम् २६

न करणेवाला और नम्रजनोंकी प्रीतिकरणेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और स्वप्नमें सुवर्ण और सूर्य और दीपोंकोंऔर दावाग्नि और पलाश और गुलदुपहरकेपुष्पोंके समूहकों देखने वाला और लालकमल और पिछ और रुधिर और विजलीयोंके समूहकों देखताहै ॥ २५ ॥ अब श्लेष्माधिक पुरुषके लक्षण कहतेहैं जिसके देहमें श्लेष्म अधिकहोताहै सो शोभाकर्के युक्त और मिलीन अंग और संधियोंवाला और धैर्य और वलकर्केयुक्त और स्निग्धकांतिवाला और सुंदर देहवाला और ग्रहणकरणेवाला और पराक्रमकर्के युक्त और मृदग और वदलकीन्याई शब्दवाला औरसहन शीलहोताहै और गौर वर्ण और लालनेत्रोंवाला और मीठेरसकीरुचिवाला और वैरकों नहित्यागकरणेवाला और कृतज्ञ और क्लेशमें चित्तदेनेवाला और संपूर्णजनोंका हितकरणेवाला और पूजकोंका और गुरोंका हितकरणेवाला होताहै ॥ २६ ॥

श्रोर श्लेष्मवालामनुष्यस्वप्नमेंसमुद्र श्रोर नदी श्रोर सरदेखताहै श्रोर मोती श्रोर हंस श्रोरश्वेतकमल श्रोर शख श्रोर नक्षत्रमंडल श्रोर कुमदपुष्प श्रोर चंद्रमा श्रोर वर्फ पडती देखताहै इहेलक्षण श्रेष्ठ मुनियोंनेक्रमकर्के कहेहैं २७ श्रोर बलकर्के रहितजो चंद्रमा सूर्यहै तिनकर्के युक्तयो मंगल सें लेकर्के पांचग्रह होवें तव राजा नहिं होतेहै तिनकी दशामें सुख श्रोर धन कर्के युक्तहोतेहै ॥ २८ ॥ श्रव मालव्यसंज्ञक राजाके लक्षण कहतेहैं मालव्य संज्ञक जो राजाहै सो मोटे होठों वाला नहि होताहै श्रोर न्यूनाधिक देहवाला नहिं होताहै श्रोर श्रति रिक्त श्रंग श्रोर संधियों वाला नहिं होताहै श्रोर लकसें सूक्ष्म श्रोर चंद्रमाकीन्याई शोभावाला श्रोर लंबी नासिकावाला श्रोर सुंदर कपोलोंवाला श्रोर प्रकाशवालेनेत्रोंवाला श्रोर वरावरश्वेतदंतोंवाला श्रोर जानुपर्यंत भु

सुप्तस्तुपश्यतिसमुद्रनदीसरांसिमुक्ताफलप्रकरहंससिताब्जशंखम् नक्षत्रचक्र कुमुदेन्दुतुपारपातान् श्लेष्माधिकोमुनिवरैःकथितःक्रमेण २७ वलरहितेंदुर विभ्यांयुक्तैर्भौमादिभिर्ग्रहैर्मिश्राः नभवंतिभूमिपालादशासुतेषांसुखार्थयुताः २८ अथमालव्यः नस्थूलोष्ठोनाविषमवपुर्नातिरिक्तांगसंधिर्मध्येक्षामःशशधर रुचिर्हस्तिनासःसुगंडः संदीप्ताक्षःसमसितरदोजानुदेशांतवाहुर्मालव्योयंविल सतिनृपःसप्ततिर्वत्सराणाम् २९ वक्त्रंत्रयोदशमितानितथांगुलानिदैर्घ्येणक र्णविवराद्दशविस्तरेण मालव्यसंज्ञमनुजःसभुनक्तिनूनंलाटान्समालवससिन्धु सपारियात्रान् ३० इतिमालव्यलक्षणं अथरुचिकलक्षणं ॥ दीर्घास्यःस्वछकां तिर्बहुरुधिरवलः साहसावाप्तकार्यश्चारुभ्रूर्नीलकेशःश्रमकरणरतोमंत्रविच्चौरनाथः

जोंवाला श्रोर सत्तर ॥ ७० ॥ वर्षपर्यंत राज्यकरणेवाला होताहै ॥ २९ ॥ श्रोर तेरां १३ श्रंगुली प्रमाणके मुखवाला श्रोर कर्णसें लेकर्के दशश्रंगुलीविस्तारकर्के मुखवाला सो मालव्य सज्ञ क राजा निश्चय कर्के लाट देश श्रोर मालवदेश श्रोर सिंधु देश श्रोर पारि यात्र देशोंको भोगता है ३० इतिमालव्यलक्षणम् श्रव रुचिकके लक्षण कहतेहैं रुचिकसज्ञकजोराजाहै सो लंबे मुखवाला श्रोर निर्मलकांति वाला श्रोर वहुत रुधिरकेवल वाला श्रोर उत्साह कर्के कार्य सिद्ध करणे वाला श्रोर सुंदरभ्रुवों वाला श्रोर नीलवर्णके केशों वाला श्रोर श्रमकरणे में रत श्रोर मंत्रके जानने वा ला श्रोर चोरोंका स्वामी

और रक्तश्याम वर्ण वाला और बडाशूरवीर और शत्रुयोंका बल मथनेवाला और शंखकीन्याईं गल वाला और बडेपराक्रमवाला और क्रूरस्वभाववाला और देवताकाभक्त और ब्राह्मणोंमें और गुरोंमें रत और श्रेष्ठजानु और श्रेष्ठजंघावालाहोताहै ३१ औरखट्वांग और पाश और वृष और धनुष और वज्र और वीणा औरशक्ति इनों चिन्होंकर्के अंकित हाथपैर और अंगुलीया जिसकियां और मंत्राभिचारमें चतुर और तुलाके मानकर्के हजार १००० पलतोलतिसका होताहै ३२ और विंध्याचल और सह्य पर्वतोंकाराजा और उज्जयनपुरीका राजाहोताहै और सत्तर ७० वर्ष राज्यकों कर्के शस्त्र और अग्निकर्के मृत्युकों प्राप्तहोकरस्वर्गकोंजाताहै इसप्रकारकारुचिकनामककेराजाहोताहै ३३ इतिरुचिकलक्षणानि अथ शशकराजाके लक्षण कहतेहैं शशकसंज्ञक जो राजाहै सो सूक्ष्मदंतोंवाला और शीघ्रगतिवा

रक्तश्यामोतिशूरोरिपुबलमथनोकंबुकंठोमहौजाः क्रूरोभक्तोमराणांद्विजगुरुनिरतःक्षामसज्जानुजंघः ॥ ३१ ॥ खट्वांगपाशवृषकार्मुकवज्रवीणाशक्त्यंकहस्तचरणश्चतथांगुलिश्च मंत्राभिचारकुशलस्तुलयासहस्रमानंचतस्यकथितंमुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ३२ ॥ विंध्याचलसह्यगिरीन्भुक्त्वावंतींचसप्ततिंशरदाम् शस्त्रानलकृतमृत्युंप्रयातिदेवालयंरुचकः ॥ ३३ ॥ इतिरुचकः ॥ अथ शशकलक्षणं ॥ तनुद्विजःशीघ्रगतिःशशोयशठोतिशूरोविजनप्रचारः वनाद्रिदुर्गेषुनदीषुसक्तःप्रियातिथिर्नातिलघुःप्रदिष्टः ॥ ३४ ॥ सेनानाथोबलनिधिरतोदंतुरश्चापिकिंचिद्धातोर्वादेभवतिनिरतश्चंचलःकोलनेत्रः स्त्रीसंयुक्तःपरधनहरोमातृभक्तःसुजंघोमध्येक्षामोबहुविधमतीरंध्रवेधीपरेषाम् ३५ पर्यंकशक्तिशरशस्त्रमृदंगमालावीणोपमायदिकरेचरणेचरेखा वर्षाणिसप्ततिमितानिकरोतिराज्यंप्रात्यंतिकःक्षितिपतिःकथितोमुनींद्रैः ३६ इतिशशः॥ अथहंसलक्षणम्

ला और शठ और बडाशूरवीर और विजनदेशमें रहनें वाला और वन पर्वत किले कोटोंमें रहने वाला और अभ्यागतका प्यारा और अत्यंतछोटा नहिंहोताहै ॥ ३४ ॥ और सेनाकास्वामी और बलके समुद्रमें रत और ऊंचेदंतों वाला और थोडाधातुवादमें रत और बडाचंचल और सूरकी न्याईं नेत्रोंवाला और स्त्रीकर्के युक्त और पराधनकेहरणेवाला और माताकाभक्त और श्रेष्ठ जंघावाला और लकसूक्ष्म और बहुत प्रकारोंकी बुद्धिवाला और शत्रुयोंकेछिद्रवेधने वाला होताहै ॥ ३५ ॥ और फेर कैसाराजा होताहै पर्यंक और शक्ति और बाण और शस्त्र और मृदंग और माला और वीणा कीन्याईं जिसके हाथ और पैरोंमें रेखा होतीहै और सत्तर ७० वर्षप्रमाणकर्के राज्यकरताहै और पश्चिमदेशमें राजा होताहै ऐसें मुनियोंनें कहाहै ३६ इतिशशकलक्षणानि ॥ अब हंससंज्ञक राजाके लक्षण कहतेहैं

हंससंज्ञावाला राजा लालमुख और उन्नत नासिका वाला और प्रसन्न इंद्रयवाला और गौर वर्ण और पुष्ट कपोलों वाला और लाल अंगुलीयों वाला और हंसकीन्याई शब्दवाला और श्लेष्म प्रकृति वाला और शंख और कमल और अंकुश और पाश और दोमत्स्य और खट्वांग और माला और कुंभ इन्होंचिन्हों कर्के अंकितहोतेहैं पाद और हाथ जिसके और मखीरकीन्यांई पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला और गोल शिरवाला होताहै ॥ ३७ ॥ और जलस्थानमें प्रीतिकरणेवाला और अत्यंत कामी और निश्चयसें स्त्रीयोंकर्केतृप्तिकों नहि प्राप्तहोने वाला और छ्यासी ८६ अंगुली प्रमाण कर्के ऊचा और छ्यानू ९६ वर्षको आयुषावाला होताहै ॥ ३८ और शूरसेन और गांधार देशमें और

रक्तास्योन्नतनासिकःसुचरणोहंसःप्रसन्नेंद्रियो गौरःपीनकपोलरक्तकरजोहंसस्वनःश्लेष्मलः शंखाब्जांकुशपाशमत्स्ययुगलैःखट्वांगमालाघटैश्चिन्हैःपादकरांकितोमधुनिभेनेत्रेचवृत्तशिरः ३७ जलाशयप्रीतिरतीवकामीनयाति तृप्तिंवनितासुनूनं उच्चोंगुलैर्वैषडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्पण्णवतिसमानाम् ३८ पातीहदेशांश्चसशूरसेनान्गंधारगंगायमुनांतरालान्भुक्त्वावनांतेनिधनंप्रयाति हंसोयमुक्तोमुनिभिःपुराणैः ३९ इतिहंसः अथभद्रल णं शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिःपीनोरुवक्षस्थलोलंबापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिकरैःसंरुद्धगंडोमहान् प्राज्ञःपंकजगर्भपाणिचरणःसत्वाधिकोयोगवित् ॥ ४० ॥

गंगायमुनाके मध्यमें राज्यकर्ताहै और वनके मध्यमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै इहे पुरातनमुनियोंने हंस के लक्षण कहेहै ॥ ३९ ॥ इतिहंसलक्षणानि ॥ अब भद्रके लक्षण कहतेहे भद्रसंज्ञक जो राजा होताहै सो सिंहकीन्यांई मुखवाला और हाथिकीन्यांईगतिवाला और पुष्टपद्द और छाती वाला और लंबे देहवाला और पुष्ठ और गोल भुजों वालाऊर प्रमानकर्के सम और कामी और कोमल और सूक्ष्म रोमोंके समूहकर्के आछादित भये गंडस्थल जिसके और चतुर और कमलदलकीन्यांई हाथपैरोंवाला और बडेपराक्रमवाला और जोगसिद्धिकेजाननेवाला होताहै ४०

और शंख और खड्ग और हाथि और गदा और कमल और वाण और ध्वजा और चक्र और चंद्रमा और हल इन्होंचिन्हों करके चिन्हत होतेहैंहाथपैर जिसके और वडे मत्तयोहाथि तिनके मदकर्के पृथ्वीकों सिंचनकरणेवाला और केसरकीन्यांई गंधिवाला और सुंदर शब्दवाला होताहै ४१ और शास्त्रार्थके जाननेवाला और धैर्यकर्केयुक्त और तुल्यसुंदर भ्रुवोंवाला, और हाथिकीन्याइंगुप्तगुह्यदेशवाला और श्रेष्ठकुक्षिवाला और धर्ममेंरत और सुंदरमस्तकवाला. और पंडित और स्थिरस्वभाववाला और काले कुंडलोंवाले केशोंवाला होताहै ४२ और भद्रराजा संपूर्णकर्मोंमें स्वतंत्रहोताहै और अपने जनोंपर क्षमानहिकर्त्ताहै और तिसके ऐश्वर्य्यकों नित्यं

शंखासिकुंजरगदाकुमुदेपुकेतुचक्राब्जलांगलविचिन्हितपाणिपादः मत्तागुरुद्विपमदप्रभवांबुसिक्तोभूःकुंकुमप्रतिमगंधतनुःसुघोषः ४१ शास्त्रार्थविद्धृतियुतः समसंगतभ्रूर्नागोपमोभवतिचापिनिगूढगुह्यः सत्कुक्षिधर्मनिरतःसुललाटपट्टोधीरःस्थिरस्त्वसितकुंचितकेशभारः ॥ ४२ ॥ स्वतंत्रःसर्वकार्येपुस्वजनंप्रतिनक्षमा भुज्यतेविभवश्चास्यनित्यंमंत्रिजनैःपरैः ४३ भारस्तुलायांतुलितोयदिस्याच्छ्रीकान्यकुब्जादिपतिस्तदासौ यस्त्र्यादिपुत्रैःसहितःसभद्रःसर्वत्रराजाशरदामशीति ४४ इतिभद्रः इतिपंचमहापुरुपलक्षणम् अथनृपानुचरलक्षणं वराहसहितायां तत्रादावेवतत्प्रविभागमाह पंचापरेवामनकोजघन्यः कुब्जोथवामंडलकोथसाचीपूर्वोक्तभूपानुचराभवंतिसंकीर्णसंज्ञाःशृणुलक्षणैस्तान्

प्रतिमंनिजन और अभ्यागत भोगतेहैं ४३ और तुलामानकर्के भाराहोताहै और कान्यकुब्जादिकदेशोंका राजा होताहै और स्त्रीपुत्रादियोंकर्केयुक्तहोताहै और सो भद्रसंज्ञक राजा अशी ८० वर्षपर्यंत जीवताहै ४४ इतिभद्रलक्षणम् इतिपंचमहापुरुपलक्षणानि अवपंचमहापुरुपोंके अनुचरोंकेलक्षण वाराहीसंहितामें कहतेहैं तिसमेंतिनोंकेप्रथम भिन्न भिन्न नाम कहतेहैं एक वामन नामकर्के और जघन्य नामकर्के दूसरा और कुब्जनामकर्के तीसरा और मंडलकनामकर्के चौथा और साचीनामकर्केपांचमा उहेपूर्वकहे जो पंचमहापुरुप तिनकीसेवाकरणेवाले अनुचर पांच तिनकेहोतेहैं और तिनकी संकीर्णसंज्ञा कहिहै औरभिन्न भिन्न लक्षणोंकर्के तिनकोंश्रवणकरो

॥ प्रथम वामनके लक्षण कहतेहैं ॥ बुधग्रहके योगकर्के उत्पन्नभया जो भद्रसंज्ञकराजातिसकीसेवा करणेवाला वामननामकर्के अनुचरहोताहै सो वामन पूर्णअंगोंवाला और किंचित् भग्न पृष्ट और पट्ट और कक्षातरालमें किंचित् न्यून होताहै और पाचराजयोंके मध्यमें भद्रनामककेराजाका सेवक और यशकर्केप्रसिद्ध होताहै और दाता और विष्णुका भक्तहोताहै २ अवजघन्यकेलक्षणकहतेहैं शुक्रग्रह के योगकर्के मालव्यराजाहोताहै तिसकीसेवाकरणेवाला जघन्यनाम कर्के अनुचर होताहै तिसके अ र्धचंद्रमाकीन्याई कर्ण होतेहेऔर अष्टगंधीवालाहोताहै और तिसमेंवीर्य अधिक होताहै और चुगल होताहै और कवि होताहे और रूक्षआभावाला होताहे और हाथकी अंगुलीयातिसकीया मोटिया होणियाहैं ३ और क्रूरस्वभाववाला और धनवाला और मोटीबुद्धिवाला और प्रसिद्ध और लालवर्ण

॥ तत्रवामनलक्षणम् ॥ संपूर्णांगोवामनोभग्नपृष्ठः किंचिच्चोरुमध्यकक्षांतरेषु ख्यातोराज्ञोह्येषभद्रानुजीवीस्फीतोदातावासुदेवस्यभक्तः ॥ २ ॥ अथजघन्य लक्षणमाह श्लोकद्वयेन ॥ मालव्यसेवीतुजघन्यनामाखंडेंदुतुल्यश्रवणःसुगंधिः शुक्रेणसारःपिशुनःकविश्चरूक्षछविःस्थूलकरांगुलीकः ॥ ३ ॥ क्रूरोधनीस्थूल मतिःप्रतीतस्ताम्रछविःस्यात्परिहासशीलः नरांघ्रिहस्तेष्वसिशक्तिपाशपरश्व धांकःसजघन्यनामा ॥ ४ ॥ अथकुब्जलक्षणमाह ॥ श्लोकद्वयेन ॥ कुब्जो नाम्नायःसशुद्धोह्यधस्तात्क्षीणोकिंचित्पूर्वकायेनतश्च हंसासेवीनास्तिकोर्थैरुपे तोविद्वान्शूरःसूचकःस्यात्कृतज्ञः ५ ॥ कलास्वभिज्ञःकलहप्रियश्चप्रभूतभृत्यः प्रमदाजितश्च संपूज्यलोकंप्रजहात्यकस्मात्कुब्जोयमुक्तःसततोद्यतश्च ॥ ६ ॥

वाला और हास्यकरणेवाला और शक्ति और पास और परिघ ख्वाडेकीन्याई शस्त्र इनोंकर्के चिन्ह सहायपैरोंवाला सो जघन्यनामा होताहे ४ अथकुब्जकेलक्षणकहतेहैं कुब्जनामकर्के यो हंसराजाका सेवकसो शुद्धहोताहै और अधोभागमें किंचित् न्यूनहोताहै और देहके पूर्वभागमें किंचित् नीम्न होता है और नास्तिक होताहै और धनोंकर्के युक्तहोताहै और विद्वान् और शूरवीर होताहै और चुगल हो ताहै और कृतज्ञ होताहै ५ और कलाकेजानणेवाला होताहै और कलहकाप्यारा होताहै और लो कोंकों पूजकर्के अकस्मात् त्याग देताहै और बहुतचाकरोंवाला होताहै और स्त्रीजित होताहै और निरंतर उद्यम रहिताहै ६

अवमंडलककेलक्षणकहतेहै मंडलकनामकर्के योरुचकराजाका सेवकहै सो अभिचारके जाननेमें श्रेष्ट होताहै और वेतालादि यक्षभूतादि इत्यादियोंमें समर्थ होताहै ॥ ७ ॥ और वृद्धकीन्याईदेहवाला और कठिन और रूक्ष केशोंवाला और शत्रुओंके हतकरणेमें समर्थ होताहै और ब्राह्मणोंमें और देवतामें और यज्ञोंमें और योगशास्त्रमें सांख्यशास्त्रमें प्रसक्त बुद्धिवाला और स्त्रीजित होताहै ८ अब साचीके लक्षण कहतेहै ॥ साची नामकर्के यो शशराजाका सेवकहै सो बडे विरूप देहवाला होताहै और दुर्भग होताहै और जनोंका प्यारा नाहीं होताहै और दाता दानकरणेमेंस्वभाववाला होताहै और बडेकार्योंको आरंभकर्के समाप्तकरणेवाला होताहै और पूर्वकहेजो शशसंज्ञक राजाके

॥ अथमंडलकलक्षणमाह श्लोकद्वयेन ॥ मंडलकनामधेयोरुचरानुचरोभिचारवित्कुशलः कृत्यावेतालादिषुकर्मसुविद्यासुचानुरतः ॥ ७ ॥ वृद्धाकारःखरपरुषमूर्धजःशत्रुनाशनेकुशलः द्विजदेवयज्ञयोगप्रसक्तधीःस्त्रीजितोमतिमान् ८ ॥ अथसाचीलक्षणमाह साचीतियःसोतिविरूपदेहःशशानुगामीखलुदुर्भगश्च दातामहारंभसमाप्तकार्योगुणैःशशस्यैवभवेत्समानः ९ अथपुरुषलक्षणज्ञानस्यप्रभावमाह पुरुषलक्षणमुक्तमिदंमयामुनिमतानिनिरीक्ष्यसमासतः इदमधीत्यनरोनृपसंमतोभवतिसर्वजनस्यचवल्लभः १० इतिपंचमहापुरुषानुचरलक्षणानि अथप्रसंगादन्यानपिराजोपयोगियोगानाह ॥ जातकपारिजाते ॥ अथचंद्राधियोगः सौम्यैःस्मरारिनिधनेष्वधियोगइन्दोस्तस्मिन्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म संपत्तिसौख्यविभवाहतशत्रवश्चदीर्घायुषोविगतरोगभयाश्चजाताः ॥ १ ॥ अथलग्नाधियोगः ॥

गुण तिनकेसमान तुल्य होताहै ॥ ९ ॥ अवपुरुषलक्षणजाननेकाप्रभावकहतेहै ॥ इहे यो मैंने पुरुषोंके लक्षण कहेहैं मुनियोंके मतको देखकर्के इनको पढकर्के मनुष्य राजाका प्यारा होताहै और संपूर्णजनोंका प्यारा होताहै ॥ १० ॥ इतिपंचमहापुरुषानुचरलक्षणानि ॥ अव और भी यो राजाके उपयोगीहैं तिनके योग कहतेहैं जातकपारिजातमें अव चंद्राधियोग कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमासे सप्तम और षष्ट और अष्टम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थितहोवें तिसमें सेनापतिवा मंत्रीका वा राजाका जन्म होताहै और संपदा और सुख ऐश्वर्य और शत्रुओंकानाश और बडी आयुषवाला और रोगसें और भयसें रहितहोताहै १ अव लग्नाधियोगकहतेहै

और जिसकेजन्मसमयमें लग्नसेंछठेऔर सातमें औरआठमें स्थानोंमेंशुभग्रहस्थितहोवेंऔरपापीग्रहोंके योग और दृष्टिसेंरहितहोवें तब लग्नाधियोगहोताहै और चतुर्थस्थान पापग्रहोंकर्केरहित होवे २ और लग्नाधियोगमें जन्मताजोहै सो बहुतशास्त्रकेजाननेवाला और विद्यामेंचतुरऔर सेनाकामुख्यअधिकारी होताहै और निष्कपट होताहै और बडीमहिमावाला होताहै और लोकोंमें यशवाला और धन कर्के और गुणोंकर्के अधिक होताहैं ॥ ३ ॥ अब गज केसरी योगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा सें केंद्र १।४।७।१० स्थानोंमें बृहस्पति स्थितहोवे तब गजकेसरीयोग कहतेहैं और शुक्र और बृहस्पति और बुध कर्के चंद्रमा देख्या होवे और शुक्र बृहस्पति बुध नीच और अस्तनहिं होवें तब

लग्नादरिद्यूनगृहाष्टमस्थैःशुभैर्नपपाग्रहयोगदृष्टैः लग्नाधियोगोभवतिप्रसिद्धः पापैःसुखस्थानविवर्जितैश्च ॥ २ ॥ लग्नाधियोगेबहुशास्त्रकर्त्ताविद्याविनीतश्चबलाधिकारी मुख्यस्तुनिष्कापटिकोमहात्मालोकेयशोवित्तगुणाधिकः स्यात् ॥ ३ ॥ अथगजकेसरीयोगः केंद्रस्थितेदेवगुरौमृगांकाद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति दृष्टेसितार्येंदुसुतैःशशांकेनीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ४ गजकेसरिसंजातस्तेजस्वीधनवान्भवेत् मेधावीगुणसंपन्नोराजप्रियकरोभवेत् ॥५ अथामलायोगः यस्यजन्मसमयेशशिलग्नात्सद्ग्रहोयदिचजन्मनिसंस्थः तस्यकीर्तिरमलाभुवितिष्ठेदायुषोंतमविनाशनसंपत् ॥ ६ ॥ लग्नाद्वाचंद्रलग्नाद्दशमेशुभसंयुते योगोयममलानाम कीर्तिराचंद्रतारकी ॥ ७ ॥ राजपूज्योमहाभोगीदातावंधुजनप्रियः परोपकारीगुणवान्अमलायोगसंभवः ८

वी गजकेसरी योग होताहै ॥ ४ ॥ और गजकेसरीयोगमें यो जन्मताहै सो तेजस्वी और धनवान् होताहै और बुद्धिवाला और गुणोंकर्के युक्त और राजाको प्रीतिकेकरणेवाला होताहै ॥ ५ ॥ अब अमला योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाके साथ शुभग्रह स्थित होवे तिसका यश निर्मल और तिसकी संपदा आयुपर्यंत स्थित रहितोहै ६ ॥ और लग्नसे अथवा चंद्रमाके लग्नसें दशमें स्थानमें शुभग्रह स्थितहोवे तब अमला नामकर्के योग होताहै तिसमें यो जन्मताहै तिनका यश चंद्रमा और तारापर्यंत पृथ्वीमें स्थित रहिताहै ॥ ७ ॥ और अमलायोगमें यो जन्मताहै सो गजपूज्य और धनी बडेभोगनेवाला और दाता और बंधुजनोंका प्यारा और परोपकारी होताहै ॥ ८ ॥

अब शुभाऽशुभयोग कहतेहैं जिसका जन्मलग्न शुभाऽशुभ ग्रहोंकर्के युक्त होवे तब शुभाशुभ नाम कर्के योग होताहै और दूसरे और बारहमें स्थानमें लग्नसें शुभग्रह स्थितहोवें तब शुभकर्त्तरी और पापीग्रहस्थित होवें तब पापकर्त्तरी होताहै ॥ ९ ॥ और शुभयोगमें जो जन्मताहै सो वाग्मी वक्ता और रूपशील और गुणोंकर्के युक्त होताहै और पापयोगमें पापकर्मकरणेवाला और प्रायें धनकों भोगने वाला होताहै ॥ १० ॥ और शुभकर्त्तरीमें तेज और धन और बलकर्के युक्त होताहै और पाप कर्त्तरीमें पापी और भिक्षामागनेंवाला और मलीन होताहै ॥ ११ ॥ अब पर्वतयोग कहतेहैं जिस के जन्मसमयमें शुभग्रह केंद्र । १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानोंमें स्थित होवें और छठा और आठमा घर शुद्धहोवे ग्रहकर्के रहित होवे अथवा शुभग्रहकर्के युक्त होवे तब पर्वत योग होताहै और लग्न

अथशुभाऽशुभयोगादि शुभाशुभाढयेयदिजन्मलग्नेशुभाशुभाख्यौभवतस्त दानीं व्ययस्वगैःपापशुभैर्विलग्नात्पापाख्यसौम्यग्रहकर्त्तरीच ॥ ९ ॥ शुभयो गभवोवाग्मीरूपशीलगुणान्वितः पापयोगोद्भवःकामीपापकर्मापरार्थभुक् ॥ १० ॥ शुभकर्त्तरिसंजातस्तेजोवित्तबलाधिकः पापकर्त्तरिकेपापीभिक्षा शीमलिनोभवेत् ॥ ११ ॥ अथपर्वतयोगः सौम्येषुकेंद्रगृहगेषुसपत्नरंध्रेशु द्धेथवाशुभयुतेयदिपर्वतःस्यात् लग्नांत्यपौयदिपरस्परकेंद्रयातौमित्रेक्षितौ भवतिपर्वतनामयोगः ॥ १२ ॥ भाग्यान्वितःपर्वतयोगजातोविद्याविनोदाभि रत प्रदाता कामीपरस्त्रीजनकेलिलोलस्तेजोयशस्वीपुरनायकःस्यात् ॥ १३ ॥ अथकाहलयोगः अन्योन्यकेंद्रगृहगौगुरुबंधुनाथौलग्नाधिपेबलयुतेयदिकाहलः स्यात् कर्मेश्वरेणसहितेतुविलोकितेवास्वोच्चेस्वकेसुखपतौयदिताद‍ृश स्यात् ॥ १४ ॥ ओजस्वीसाहसीमूर्खश्चतुरंगबलैर्युतः यत्किंचिद्ग्रामनाथस्तुजातः स्यात्काहलेनरः ॥ १५ ॥

और द्वादशके स्वामी आपसमें केंद्रस्थित होवें और मित्रग्रहोंकर्के देखे होवें तब पर्वत नामकर्के योग होताहै ॥ १२ ॥ और पर्वत योगमें जन्माहुआ भाग्योंकर्के युक्त होताहै और विद्याविलासमें रत और दाता और कामी और परस्त्रीमें चचल और तेजस्वी और यशस्वी और पुरका स्वामी होताहै ॥ १३ ॥ अब काहल योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवम और तीसरे घरके स्वामी आपसमें केंद्रस्थित होवें और लग्नकास्वामी बलवान होवे तब काहल योगहोताहै और चतुर्थघरका स्वामीदशमेशकर्के युक्त वा देख्या होवे और चतुर्थघरका स्वामी अपने उच्चमें वा अपने राशिमें होवे तब भी काहल योग होताहै ॥ १४ ॥ और काहल योगमें जो जन्मताहै सो पराक्रमी और हठी और मूर्ख और चतुरंगिनीसेनाकर्के युक्त और थोडे ग्रामोंकास्वामी होताहै ॥ १५ ॥

अब मालिका योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्नादि स्थानोंसें लेकर्के सात घरोंमें साताहि ग्रह स्थित होवें सो राजा अनेक हाथि घोडेयों का स्वामि होताहै श्रोर धनभावसेंलेकर्के सातघरोंमें संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तवनिधिका स्वामी श्रोरपितरोंका भक्त श्रोर पंडित श्रोर क्रूररूप, चक्रवर्ती होताहै ॥ १६ ॥श्रोर तीसरेभावसें मालायोगहोवे तवशूरवीर राजा श्रोर धनी श्रोर रोगी होताहै श्रोर चतुर्थभावसें माला योग होवे तव बहुतदेशोंका स्वामी श्रोर भाग्योंवाला भोगी श्रोर महादान करणेवाला राजा होताहै ॥ १७ ॥ श्रोर पंचमभावसें मालायोग होवे तव राजा यज्ञकरणेवाला होताहै श्रोर षष्ठभावसें मालायोग होवे तव किसीक समयमें वनके सुखकों भोगने वाला श्रोर दरिद्री होताहै श्रोर सप्तमभावसें मालायोग होवे तव वहुत स्त्रीयोंका प्यारा श्रोर वडी श्रायुषा वाला राजा होताहै

श्रथमालिकायोगः लग्नादिसप्तग्रहगायदिसप्तखेटाजातोमहीपतिरनेकगजाश्वनाथः वित्तादिगानिधिपतिःपितृभक्तियुक्तोधीरोग्ररूपधनवान्नरचक्रवर्ती ॥ १६ ॥ जातोयदाविक्रममालिकायांभूपःसशूरोधनिकश्वरोगी ॥ सुखादिकाचेद्बहुदेशभाग्यभोगीमहादानपरोमहीपः १७ पुत्राद्यायदिमालिकानरपतिर्यज्वाथवाकीर्तिमान्जातःषष्ठग्रहात्क्वचित्वनसुखप्राप्तोदरिद्रोभवेत् ॥ कामादिग्रहमालिकायदिवहुस्त्रीवल्लभोभूपतिर्दीर्घायुर्धनवर्जितोनरवरःस्त्रीनिर्जितश्चाष्टमात् १८ धर्मादिग्रहमालिकागुणनिधिर्यज्वातपस्वीविभुः कर्माद्यायदिधर्मकर्मनिरतःसंपूजितःसज्जनैः लाभाद्राजवरांगनामणिपतिःसर्वक्रियादक्षकोजातोरिष्फग्रहात्वहुव्ययकरःसर्वत्रपूज्योभवेत् १९ अथचामरयोगः लग्नेश्वरेकेंद्रगतेस्वतुंगेजीवेक्षितेचामरनामयोगः सौम्यद्वयेलग्नग्रहेकलत्रेनवास्पदेवायदिचामरःस्यात् २०

श्रोर अष्टमभावसें मालाहोवें तव धनरहित श्रोर स्त्रीजित होताहै ॥ १८ ॥ श्रोर नवमसें माला होवें तव गुणोंका समुद्र श्रोर यज्ञकरणेवाला तपस्वी श्रोर ऐश्वर्यवाला होताहै श्रोर दशमसेंलेकर मालाहोवे तव धर्मकर्ममेंरत श्रोर श्रेष्टजनों कर्के पूजित होताहै श्रोर ग्यारहमेंस्थानसें माला होवे तव राजा श्रोर श्रेष्टस्त्री श्रोर मणियोंका स्वामी श्रोर संपूर्णक्रियामें चतुर होताहै श्रोर वाहरमेंस्थानसें माला योग होवे तव वडेखर्चवाला श्रोर सर्वत्र पूजा कोंप्राप्त होताहै ॥ १९ ॥ अवचामरयोग कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नकास्वामी केंद्रस्थानों १ । ४ । ७ । १० में उच्चराशिकाहोवे श्रोर वृहस्पतिकर्के देख्या होवे तव चामरनामकर्के योग होताहै श्रोर जिसके लग्नमें वा सप्तममें या नवम दशममें शुभग्रह दो स्थित होवें तववी चामर योग होताहै २०

और चामरयोगमें योजन्मताहै सो राजपूज्य और विद्वान् और वक्ता और पण्डित वा राजा होताहै और सर्वज्ञ और वेदशास्त्रका अधिकारी और सत्तरवर्ष जीवनें वाला होताहै २१ अवशंखयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पंचमेऔरछठे भावके स्वामी आपसमेंकेंद्रगतहोवेंऔरलग्नकास्वामी बली होवे तब शंखयोगहोताहै औरलग्न और दशमका स्वामी चर १।४।७।१० राशियोंमें स्थित होवें और नवम भावकास्वामी बली होवे तब बी शंखयोग होताहै २२ शंखयोगमें यो जन्मताहै सो भोगी और दयावान्और स्त्री पुत्र धन धर्म वाला और शास्त्रके ज्ञानवाला और आचारवाला और साधु और क्रियावान् होताहै और अश्शी ८० वर्ष पर्यंत जीवताहै २३ अब भेरीयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दूसरे और लग्नमें और सातमें और बारहमें स्थानमें ग्रह स्थित होवें और दशम भावका स्वामी बली होवे तब भेरीयोग होताहै और बृहस्पति और शुक्र

योगेजातश्चामरेराजपूज्योविद्वान्वाङ्मीपंडितोवामहीपः सर्वज्ञःस्याद्वेदशास्त्राधिकारीजीवेद्वर्षसप्ततिर्वत्सराणाम् २१ अथशंखयोगः ॥ अन्योन्यकेंद्रगृहगौसुतशत्रुनाथौलग्नाधिपेबलयुतेयदिशंखयोग.लग्नाधिपेचगगनाधिपतौचरस्थेभाग्याधिपेबलयुतेतुतथावदंति. २२ शंखेजातोभोगशीलोदयालुःस्त्रीपुत्रार्थक्षेत्रवान्पुण्यकर्मा शास्त्रज्ञानाचारसाधुक्रियावान्जीवेद्वर्षैस्सराणामशीतिम्२३ अथभेरीयोगः ॥ स्वांत्योदयास्तभवनेषुवियच्चरेषुकर्माधिपेबलायुतेयदिभेरियोगः ॥ केंद्रेगतेसुरगुरौसितलग्ननाथौभाग्येश्वरेबलयुतेतुतथैववाच्यम् २४ दीर्घायुषाविगतरोगभयानरेन्द्रावह्वर्थभूमिसुतदारयुताःप्रसिद्धाः ॥ आचारभूरिसुखशौर्य्यमहानुभावाभेरीप्रयातमनुजानिपुणाःकुलीनाः २५ अथमृदंगयोगः ॥ उच्चग्रहांशकपतौयदिकोणकेंद्रेतुंगस्वकीयभवनोपगतेबलाढ्ये ॥ लग्नाधिपेबलयुतेतुमृदंगयोगःकल्याणरूपनृपतुल्ययशप्रदःस्यात् ॥ २६ ॥

और लग्नकास्वामी केंद्र।१।४।७।१०।स्थानोंमें स्थित होवे और नवम भावका स्वामी बली होवे तब वी भेरी योग होताहै ॥ २४ ॥ और यो भेरीयोगमें जन्मताहै सो बडीआयुषावाला और रोग और भयसे रहित राजा होताहै और बहुत धन और पृथ्वी और पुत्र और स्त्रीयोंकरके युक्त और प्रसिद्ध होताहै और बडे आचारवाला और सुख ऐश्वर्य्यवाला और बडे प्रतापवाला और चतुर और कुलीन होताहै ॥ २५ ॥ अब मृदंग योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें उच्चग्रहके नवांशका स्वामी कोण।९।५।में और केंद्र॥१।४॥७॥१०॥में उच्चमेंवा स्वक्षेत्रमें बली होवे और लग्नकास्वामी बलीहोवे तब मृदंगयोग होताहै सो कैसाहै जन्ममें कल्याण और सुंदररूप और राजाके तुल्य यशके देने वाला होताहै ॥ २६ ॥

अब श्रीनाथयोग कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमेंसप्तमभागकास्वामी उच्चराशिमें दशम भावमेंस्थित होवे और दशमकास्वामी नवमभावके स्वामीकर्के युक्त होवें तब श्रीनाथ योग होताहै और श्रीनाथयोगमें यो जन्मताहै सो इद्रके तुल्य राजा होताहै ॥ २७ ॥
अब शारदायोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दशमभावका स्वामी पंचम भावमें स्थित होवे और बुध केंद्र ॥ १ ॥ ४।७।१० स्थानमें स्थित होवे और सूर्य सिंहराशिमें होवे और बली होवे तब शारदा योग होताहै और चद्रमासें कोण ॥ ९ ॥ ५ ॥ स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे और बुधसें त्रिकोण ९ ॥ ५ स्थानमें मगल स्थित होवे अथवा बुधसें जाहरमें स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे तबभी शारदा योग होताहै २८ और यो मनुष्य शारदायोगमें जन्मतेहै सो स्त्री और पुत्र

अथश्रीनाथयोगः ॥ कामेश्वरेकर्मगतेस्वतुंगेकर्माधिपेभाग्यपसंयुतेच ॥ श्रीनाथयोगःशुभदस्तदानींजातोनरःशक्रसमोनृपालः २७ अथशारदायोगः योगःशारदसंज्ञकःसुतगतेकर्माधिपेचंद्रजेकेंद्रस्थेदिननायकेनिजगृहप्राप्तेतिवीर्य्यान्विते ॥ चंद्रात्कोणगतेपुरंदरगुरौसौम्यत्रिकोणेकुजेलाभेवायदिदेवमंत्रिणिबुधात्तच्छारदासंज्ञकः २८ स्त्रीपुत्रबंधुसुखरूपगुणानुरक्ताभूपप्रियागुरुमहीसुरदेवभक्ताः ॥ विद्याविनोदरतिशीलतपोदलाढ्याजाताःस्वधर्मनिरताभुविशारदाख्ये ॥ २९ ॥ अथमत्स्ययोग ॥ लग्नधर्मगतेपापेपंचमेसदसद्युतेचतुरस्रंगतेपापेयोगोयंमत्स्यसंज्ञकः ३० कालज्ञःकरुणासिंधुर्गुणधीबलरूपवान् ॥ यशोविद्यातपस्वीचमत्स्ययोगेसमुद्भवः ३१

और भाई योंके सुखकर्के युक्त होतेहै और राजाके प्यारे और गुरु और ब्राह्मण और देवताके भक्तहोतेहैंऔरविनोदमेंप्रीतिवालेऔरश्रेष्ठस्वभाववालेऔरतपोबलकर्केयुक्तहोतेहैंऔरश्रेष्ठकर्मोंमेंरतहोवेंहै २९
अब मत्स्ययोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्नमें और नवमस्थानमें पापीग्रह स्थितहोवें और पचमस्थानमें शुभाऽशुभग्रह दोनों स्थित होवें और चतुर्थ और अष्टमस्थानमें पापीग्रह होवें तब मत्स्ययोग होताहै ॥ ३० ॥ और यो मनुष्य मत्स्ययोगमें जन्मताहै सो कालके जानने वाला और दयाकासमुद्र और गुण और बुद्धि और बल और रूपकर्के युक्त होताहै और यशकर्के और विद्याकर्के और तपकर्के युक्त होताहै ॥ ३१ ॥

अब कूर्मयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सप्तम और पचम और षष्ठस्थानोंमें शुभग्रह स्थित होवें और अपने उच्च और मित्रके अंशमें और राशिमें स्थितहोवें और तीसरे और जाहरमें स्थानमें पापीग्रह स्थित होवें और मित्रके घर और उच्चराशिमें स्थित होवें तब कूर्मयोग होताहै ॥ ३२ ॥ और यो मनुष्य कूर्मयोगमें जन्मताहै सो प्रसिद्धयशवाला और पृथ्वीमें राजके भोगनेवाला और वडे कर्मोंवाला और पराक्रम और गुणोंकर्के प्रधान और पंडित और सुखी और वाणोकर्के उपकारकरणेवाला और राजा होताहै । ३३ । अब खड्गयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवमभावका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे और दूसरेस्थानका स्वामी नवमस्थानमें स्थित होवे और लग्नका स्वामी केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ वा कोण ९ ॥ ५ ॥ में स्थित होवे तब

अथकूर्मयोगः कलत्रपुत्रारिगृहेषुसौम्याःस्वतुंगमित्रांशकराशियाताः ॥ तृतीयलाभोदयगास्त्वसौम्यामित्रोच्चसंस्थोयदिकूर्मयोगः ३२ विख्यातकीर्त्तिर्भुविराज्यभोगीधर्माधिकःसत्वगुणप्रधानः॥ धीरःसुखीवागुपकारकर्ताकूर्मोद्भवोमानवनायकोवा ३३ अथखड्गयोगः॥ भाग्येशेधनभावस्थेधनेशेभाग्यराशिगे लग्नेशेकेंद्रकोणस्थेखड्गयोगइतीरितः ३४ वेदार्थशास्त्रानिखिलागमतत्वयुक्तिबुद्धिप्रतापवलवीर्यसुखानुरक्ता॥ निर्मत्सराश्चनिजवीर्यमहानुभावाःखड्गेभवंतिपुरुषाःकुशलाःकृतज्ञाः ३५ अथलक्ष्मीयोगः॥ केंद्रमूलत्रिकोणस्थेभाग्येशेपरमोच्चगे ॥ लग्नाधिपेवलाढ्येचलक्ष्मीयोगइतीरितः ३६ गुणाभिरामोवहुदेशनाथोविद्यामहाकीर्त्तिरनंगरूपः ॥ दिगंतविश्रांतनृपालवंद्योराजाधिराजोवहुदारपुत्रः ३७

खड्गयोग कहाहै ॥ ३४ ॥ और यो मनुष्य खड्गयोगमें जन्मताहै सोवेदार्थके जानने वाला और शास्त्र और संपूर्णवेद और तत्वयुक्तिके जानने वाला और प्रतापी वलवीर्यकर्के युक्त और सुखकर्के युक्त होताहै और मात्सर्यकर्केरहित और अपने पराक्रमकर्के वडेऐश्वर्यवाला और श्रेष्ठऔरकृतज्ञ होताहै ॥ ३५ ॥ अब लक्ष्मीयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवमभवका स्वामी केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें अपणे मूल त्रिकोण राशियोंमें स्थित होवे औरपरम उच्चमें स्थित होवे और ॥ लग्नेश वली होवे तब लक्ष्मीयोग कहाहै ॥ ३६ ॥ और यो मनुष्य लक्ष्मीयोगमें जन्मताहै सो गुणोंकर्के युक्त और वहुत देशोंकास्वामी और विद्याकर्के वडेयशवाला और कामदेवकीन्याई रूपवाला और संपूर्णराजयों कर्के वंदित और वहुत स्त्री पुत्रोंकर्के युक्त राजाधिराजहोताहै ॥ ३७ ॥

अब कुसुमयोग कहतेहै जिसके जन्मसमयमें स्थिरलग्नोंमें । २ । ५ । ८ । ११ । शुक्र केंद्रस्थानोंमें स्थित होवे और पूर्णचद्रमा त्रिकोण । ९ । ५ । में स्थित होवे और दशमस्थानमें पापीग्रह और शनि स्थित होवे तव कुसुमयोग होताहै ॥ ३८ ॥ और यो कुसुमयोगमें जन्मताहै सो दाता और राजाकर्के वंदित और भोगी और वडे वंशमे जन्माहुआ मुख्यराजा होताहै और लोकोंमें वडेयश कर्के युक्त और प्रतापी होताहै और मनुष्योंका स्वामी होताहै ॥ ३९ ॥ अब पारिजात योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें जिसराशिमें लग्नेश स्थितहोवे तिसराशिकास्वामी जिसराशिमें होवे तिसराशीका स्वामी जिसग्रहके नवांशमें होवे सो ग्रह केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । और त्रिकोण । ९ । ५ । में अपने उच्चमें स्थित होवे तव पारिजातयोग होताहै ॥ ४० ॥ और यो मनुष्य पारिजात

अथकुसुमयोगः स्थिरलग्नेभृगौकेंद्रेत्रिकोणेंदौशुभेतरे मानस्थानगतेसौरे योगोयंकुसुमोभवेत् ३८ दातामहीमंडलनाथवंद्योभोगीमहावंशजराजमुख्यः लोकेमहाकीर्तियुतःप्रतापीनाथोनराणांकुसमोद्भवःस्यात् ३९ अथपारिजातयोगः विलग्ननाथस्थितराशिनाथस्थानेशराशीशतदंशनाथः केंद्रत्रिकोणोपगतोयदिस्यात्स्वतुंगगोवायदिपारिजातः ४० मध्यांतसौख्यःक्षितिपालवंद्योयुद्धप्रियोवारणवाजियुक्तः स्वकर्मधर्माभिरतोदयालुर्योगोन्नृपःस्याद्यदिपारिजातः ४१ अथकलानिधियोगः द्वितीयेपंचमेजीवेबुधशुक्रयुतेक्षितेक्षेत्रेतयोर्वासप्राप्तेयोगःस्यात्सकलानिधिः ॥ ४२ कामीकलानिधिभवःसुगुणाभिरामः संस्तूयमानचरणोनरपालमुख्यैः सेनातुरंगमदवारणशंखभेरीवाद्यान्वितोविगतरोगभयारिसंघः ४३ ॥

योगमें जन्मताहै सो मध्य और अंत्यावस्थामें सुखी और राजाकर्के वंदित और युद्धकाप्यारा और हाथिघोडेयों कर्के युक्त और अपने धर्मकर्ममें रत और दयावान राजा होताहै ॥ ४१ ॥ अब कलानिधि योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दूसरे और पांचमें स्थानमें वृहस्पति बुधशुक्र कर्के युक्त या दृष्ट होवे अथवा बुधशुक्रकी राशिमें स्थित होवे तव कलानिधि योग होताहै ॥ ४२ और कलानिधि योगमें यो जन्मताहै सो कामी और अपनेगुणोंकर्के युक्त और वडेराजयोंकर्के स्तुति कों प्राप्तहोतेहैं चरण जिसके और सेना और घोडे और मत्तहाथि और शंख और दुंगोंसें लेकर वाजे तिनकर्केयुक्त होताहै और रोग भय और शत्रुयोंके समूहसें रहित होताहै ॥ ४३ ॥

अब अंशावतारयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्र और बृहस्पति केंद्र । १।४।७।१०। और त्रिकोण । ९ । ५ । स्थानोंमें स्थित होवें और तुलाराशिमें शनिकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित होवे और चरलग्नोंमें । १ । ४ । ७ । १० । जब जन्महोवे तब अवतार नामकर्के योग होताहै ॥ ४४ ॥ और यो मनुष्य अवतारयोगमें जन्मताहै सो पुण्यश्लोक युधिष्ठिर नलादि राजयोंकी न्यांई होताहै और तीर्थचारी और कलाके जानने वाला और कामी और कालविधान करणेवाला और आत्माकों जीतने वाला और वेदांतके जानने वाला और वेदशास्त्रका अधिकारी और राजलक्ष्मीके धारणे वाला होताहै ॥ ४५ ॥ अब हरिहरब्रह्मयोग कहतेहे जिसके जन्मसमयमें धनभावके स्वामीसें दूसरे और बाहरमें और आठमें स्थानमें

अथअंशावतारयोगः केंद्रगौसितदेवेड्यौस्वोच्चेकेंद्रगतेर्कजे चरलग्नेयदा जन्मयोगोयमवतारजः ॥ ४४॥ पुण्यश्लोकस्तीर्थचारीकलाज्ञःकामासक्तः कालकर्त्ताजितात्मा वेदांतज्ञोवेदशास्त्राधिकारीजातोराजश्रीधरोंशावतारे ४५ अथहरिहरब्रह्मयोगाः वित्तेशाद्व्ययरिःफरंध्रभवनप्राप्ताश्चसौम्यग्रहाःकामेशात्सुखभाग्यरंध्रगृहगाजीवाब्जचंद्रात्मजाः देहेशाद्यादिवैधुमानभवगाःसूर्यास्फुजिद्भूमिजाःप्रोक्तास्तत्रपुरातनैर्हरिहरब्रह्माख्ययोगाइमे ४६ निखिलनिगमविद्यापारगःसत्यवादीसकलसुखसमेतश्चारुवाकामशीलः जितरिपुकुलसंघः सर्वजीवोपकारीहरिहरविधियोगेसंभवःपुण्यकर्मा ॥ ४७॥ अथपारिजातादि योगाः ॥

शुभग्रहस्थित होवें तवहरियोगहोताहै और सप्तमभावके स्वामीसें चतुर्थ और नवम और अष्टम स्थानमें बृहस्पति और चंद्रमा और बुध स्थित होवें तवहर योग होताहै और लग्नेशसें चतुर्थ और दशम और एकादशमे सूर्य और शुक्र और मंगल स्थित होवे तव पुरातनमुनियोंनें ब्रह्म नामकर्के योग कहाहै ४६ और यो तीन योगोंके मध्यमें एक जन्मताहै सोसंपूर्ण वेदवियाके· जानने वाला और सत्यवादी और सपूर्ण सुखकर्के युक्त और श्रेष्ट वाणी वाला और कामी और सुंदर स्वभाववाला और शत्रुयोंके समूहोंकों जीतने वाला और संपूर्ण जीवोंमें उपकारकरणे वाला और पुण्यकर्म करणे वाला होताहै ४७ अब पारिजातादि योग कहतेहैं

जिसके जन्ममें पारिजातां शोंमें संपूर्णग्रहस्थितहोवें तब सुखहोताहै और उत्तमांशोंमें स्थित होवेंतब आरोग्यता होतीहैऔर गोपुरांशमें स्थित होवेंतब गोधनबहुतहोताहै औरसिंहासनांशमें स्थितहोवें तब ऐश्वर्यहोतीहै ४८ और पारावतांशमें स्थित होवें तब विद्यायश लक्ष्मी बहुतहोतीहै और देवलोकांश मेंग्रह स्थितहोवें तब बहुत वाहन और सेना होतीहैं और ऐरावतांशोंमें स्थित होवें तब राजा हो ताहै ४८ इतिराजानुजीविनांयोगप्रकरणम् ॥ अबराजयोगका भंग कहतेहैं इसग्रंथमें विस्तार क रके विचित्र राज योग कहेहैं तिनकाजो भंग जैसें होताहै १ जिसके जन्मलग्नमें नीचराशिगत मंग ल और बृहस्पति और शनि इनमें दो ग्रह वा एक ग्रह स्थित होवे और चंद्रमावृश्चिकराशिमें स्थित होवे तब राजयोग नष्ट होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें लग्न और अष्टम और षष्ठ द्वादश १।८।६।१२।स्थानमों क्षीण चंद्रमा स्थित होवे और एक ग्रह करके वी नहिं देख्याहोवे त

सपारिजातद्युचरःसुखानिनीरोगतामुत्तमवर्गयातः सगोपुरांशेयदिगोधना निसिंहासनस्थःकुरुतेविभूतिं ॥ ४८ ॥ करोतिपारावतभागयुक्तोविद्याय शःश्रीविपुलंनराणां सदेवलोकेबहुयानसेनामैरावतस्थोयदिभूपतित्वम् ४९ इतिनृपानुचरयोगप्रकरणम् अथराजयोगभंगः विस्तरतोनिर्दिष्टाःक्षितिपति योगाविचित्रसंस्थानाः भंगश्चभवतितेषांयथातथासंप्रवक्ष्यामि १ कुजार्क जीवार्किभिरत्रनीचैर्द्वाभ्यांत्रिभिश्चैकतमाविलग्ने निशाकरेवृश्चिकराशिसंस्थवि शीर्यतेराजकरोहियोगः २ मूर्त्यष्टमादिभागेचराश्यादिपुशशीयदाक्षीणः ॥ एकेनापिनदृष्टोग्रहेणभंगस्तदानृपतेः ३ सर्वेक्रूराःकेंद्रेनीचारिगतानसौम्ययुत दृष्टाः शुभदाव्ययरिपुरंध्रेतदापिभंगोभवेन्नृपतेः ४ लग्नंगणोत्तमोनंनखेच रैर्दृश्यतेतदाभंगः भवतिचनृपयोगानांदारिद्र्यायप्रजातस्य ॥ ५ ॥घटो दयेनीचगतैस्त्रिभिर्ग्रहैर्बृहस्पतौसूर्यगतेत्रनीचगे ॥ एकोपिनोच्चेप्यशुभेपिखे गतेप्रयातिनाशंशतशोनृपोद्भवाः ६ ॥

ब राज योगका भंग होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण क्रूर ग्रह केंद्रस्थानमें।१।४।७।१०। स्थित होवें और नीच और शत्रुकीराशिमें स्थित होवें और शुभग्रहकरके युक्त और दृष्ट नहिं होवें तबराजयोगकाभंग होताहै और शुभग्रह छठे और आठमें स्थानमें स्थित होवें तब वी राज योगकाभंग होताहै ४ और कहतेहैं जिसका जन्म लग्न वर्गोत्तमसें रहित होवे और ग्रहों करके देख्या नहिं होवे तब राज योग का भंगहोताहै और तिसलग्नमें जन्माहुया दरिद्री होताहै ५ और कहतेहैं जिसका कुंभलग्नमें जन्म होवे और तीन ग्रह कुंडलीमें नीचराशिगत होवें और बृह स्पति अस्त वानीचराशिमें स्थित होवे और कुंडलीमें एक ग्रह वी उच्चराशिमें स्थित नहिं होवे औ र पापीग्रह दशमस्थानमें होवे तब सैकडेहि राजयोग नाशको प्राप्त होवेहैं ६

श्रौर जिसके जन्मसमयमें केंद्र १ । ४ । ७ । १० । स्थान ग्रहों कर्के रहितहोवें श्रौर शुभग्रह श्रस्तंगत श्रौर नीचराशिगत होवें श्रौर चंद्रमा बृहस्पति श्रस्तंगत वा नीचराशिगत होवें तब राज योगका भंग होताहै ॥ ७ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्य श्रपने नवांशमें स्थित होवे श्रौर चंद्रमा नष्ट होवे श्रौर पापग्रहोंकर्के देख्याहोवे श्रौर शुभग्रहोंकीदृष्टि सें रहित होवे सो मनुष्य प्रथमराज्य कर्त्ताहै श्रौर पीछेसें दुःखकोंप्राप्त होताहै श्रौर तिसकी श्राशानष्ट होतीहै ८ श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाका शत्रुग्रह लग्नमें स्थित श्रौर चंद्रमा कर्के देख्याहोवे श्रौर सूर्य मंगल शनि क्रमकर्के तीसरे छठे ग्याहरमें स्थानमें स्थित होवें श्रौर केंद्र स्थानशुभग्रहोंकर्के रहितहोवे श्रौर शुभग्रह श्रस्तकोंप्राप्तहोवें तब क्षणकर्केराजयोग भ्रष्टहोताहै ९ श्रौर जिसके जन्मसमयमें पांच ग्रह श्रस्त होवें श्रथवा शत्रुकी राशिमेंस्थित होवें तब योराजयोग कहेहै सो

केंद्रेपुशून्येषुशुभैर्नचंद्रो श्रस्तंगतैर्नीचमथप्रयातैः बृहस्पतौसूर्यगतेपिनीचे प्रणश्यतेक्ष्माधिपतेस्तुयोगः ७ स्वांशेरवौशीतकरेप्रनष्टे पापैश्चदृष्टेशुभदृष्टिहीने कृत्वापिराज्यंप्रथमंमनुष्यःपश्चात्सदुःखंलभतेहताशः ८ शिशिरकिरणशत्रुर्लग्नगश्चंद्रदृष्टः सहजरिपुभवस्थाभानुभूपुत्रमंदाः शुभविरहितकेंद्रैरस्तगैर्वापिसौम्यैर्नृपतिजननयोगोयातिनाशंक्षणेन ९ पंचभिः शत्रुगैः खेटैरस्तंयातैरथापिवा प्रयातिविलयंयोगाभूभुजांयेप्रकीर्त्तिताः १० उल्कायाः पतनेचैव निर्घातव्यतिपातयोः केतोःप्रदर्शनेचैवयातिनाशंनृपोद्भवाः ११ श्रन्यैःक्रूरोत्पातैस्त्रिशंकुतारायदोदयंयाति सर्वेप्रयांतिविलयंनृपयोगाभानुजोयदिविलग्ने १२ कर्त्तारोनृपतीनांगगनसदोयुद्धकांक्षिणोमलिनाः रूक्षाजर्जरदेहाविघ्नंजनयंतियोगस्य १३ परंनीचगतेचंद्रोक्षीणेयोगोमहीपतेः नाशमायातिराजेवदैवज्ञप्रतिलोमगः १४ तुलायांपद्मिनीबंधुस्त्रिंशांशेदशमेस्थितः हंतिराज्यंयथालोभः समस्तगुणसंचयम् १५ जूकस्यदशमेभागेस्थितः कमलबोधनः सहस्रंराजयोगानांमंदमेवकरोत्यसौ १६

नाशकोंप्राप्तहोतेहै १० श्रौर जिसकाजन्म उल्कापातकेसमयमें होवे श्रौर निर्घातके समयमें होवे श्रौर महापात व्यतीपातमेंहोवें श्रौर धूम्रकेतुके उदयमें जन्महोवे तब राजयोग नष्ट होतेहै ११ श्रौर जिसके जन्मसमयमें दिव्य भौम श्रंतरिक्षके उत्पातहोवें श्रौर तीनशिखावाला तारा उदयहोवे श्रौर शनि जन्मलग्नमें स्थित होवे तब संपूर्ण राजयोग नष्ट होतेहैं ॥ १२ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें राजयोगकेकरणेवाले ग्रहयुद्धमें मलीन होजावें रूक्ष श्रौर तेजकर्के हीनहोवें तब राजयोगमें विघ्नउत्पन्न कर्तेहैं १३ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा परमनीचमें स्थित होवे क्षीण होवे तब राजयोगकों नष्ट कर्त्ताहै जैसें ज्योतिषीसें विरोधकरणेवाला राजा नष्ट होताहै १४ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तुलाराशिमें सूर्य स्थित होवे श्रौर दशमभावके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब राजयोगकोंहतकर्त्ताहै जैसें संपूर्णगुणकेसमूहकोंलोभ नष्ट कर्त्ताहै १५ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तुलाके दशमें श्रंशमें सूर्य स्थित होवे सो हजारों राजयोगोंकों नष्ट कर्त्ताहै १६

श्रौर जिन्होंके जन्मसमयमें कईक ग्रह अपने मूलत्रिकोणमें श्रौर उच्चमें श्रौर स्वक्षेत्रमें स्थितहों वें श्रौर एक सूर्य परम नीचमें स्थित होवे तिनकों राजयोगका संभवनहिं होताहै ॥ १७ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें मकर राशिका बृहस्पतिलग्नमें स्थित होवे श्रौर चंद्रमाकर्क राशिमें स्थितन हिंहोवे तब तिसकों भलीप्रकारकर्के तपावताहै जैसें धनरहित कामातुर पुरुषकों वेश्या तपाव तीहै ॥ १८ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें एक चंद्रमा केमद्रुमयोगकों प्राप्त होवे श्रौर शुभग्र हों कर्के नहिं देख्या होवे तब राजयोगमें विघ्न कर्ताहै श्रौर मलीन आचारवाला होताहै ॥ १९ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तीन चार पाच ग्रह नीचराशिमें स्थित होवें सो मनुष्य भिक्षाकों मा गताहै श्रौर बडा दुःखी श्रौर मलीन होताहै श्रौर सपूर्ण राजयोंकेपुत्रोंकर्के तिरस्कारकों प्राप्तहोताहै श्रौर धनहीनहोताहै २० श्रौर जिसकेजन्मसमयमें पंचसें लेकरके ग्रह अधिशत्रुकी राशिमें स्थितहो वें श्रौर अस्तंगत होवें श्रौर जब सूर्यचंद्रमा अपने उच्चमें नहिं होवें तब राज योगकों प्राप्तहो

स्वत्रिकोणगृहंकेचित्स्वोच्चंयाताःस्वमंदिरं अतिनीचेरविश्चैकोनतेषांफलसंभवः ॥ १७ गुरुर्मृगेविलग्नस्थोदुःखैःसंतापयेन्नरम् कामार्तमधनंवेश्यायद्वदिंदुर्नचे त्स्वभे १८ एकोवापिशशांकोग्रहेणकेमद्रुमोयदिनदृष्टः विघ्नयतिराजयोगंमलि नाचारःप्रसूतःस्यात् १९ भिक्षामटतिव्याद्यैर्नीचर्क्षगतैःसुदुःखितोमलिनः स कलमहीभुक्पुत्रैःपरिभूतोजायतेनिःस्वः २० अध्यरिभवनंप्राप्तैःपंचादिभिर स्तगतैश्चगगनचरैः ध्वंसंप्रयातिराजायदिरविचंद्रौनतुंगस्थौ २१ सचिवोदानवें द्रस्यनीचेचेत्समुपस्थितः संप्राप्तमतुलंराज्यंनरंच्यावयतेध्रुवम् २२ राजयो गाःसमाख्यातास्तेषांभंगाश्चदारुणाःपरीक्ष्ययत्नतःप्राज्ञःफलंब्रूयाच्छुभाशुभम् २३ कमलगहनबंधुःकन्यकालिंगितांगस्तुलिनिकुजसुरेज्यौचंद्रमामेषसंस्थः नचयदिपरिशेषैर्दृश्यतेस्यात्सभूपः प्रचलितगजमेघाछादिताशाननौघः २४

यकरें नाशकों प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें शुक्र नीचराशिमें स्थितहोवे सो बडे राज्यकों प्राप्तहुया जोमनुष्य तिसकों निश्चयकर्के गिडाय देताहै ॥ २२ ॥ श्रौर कहते हैं इसप्रथमें अनेकभेदों कर्के युक्त राजयोगकहेहैं और राजयोगोंके भंग करणे वाले बडे क्रूर योग बी कहेहैं तिनकीपरीक्षा बुद्धिवान् यत्न कर्के फलकोंकहे ॥ २३ ॥ श्रौर कहतेहै जि सके जन्मसमयमें सूर्य कन्याराशिमें स्थित होवे श्रौर तुलाराशिमें मंगल श्रौर बृहस्पति स्थित हो वें श्रौर मेषराशिमें चंद्रमा स्थित होवे श्रौर यव शेषग्रहयोंहिं तिनकर्के नहिं देखे होवें सो राजा कैसा होताहै तिसकी सेनाके जो हाथिहैं बदलोंकीन्याई चारदिशोंकों आछादन कर्तेहैं अर्थात् बहुत हाथियों वाला राजा होताहै ॥ २४ ॥

इतिश्रीजातकखंडेमहशविरीचतेज्योतिर्महानिबंधेभाषाटीकायांराजयोगादिध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

अबराजयोगोंके प्रसगसें सामुद्रिकाध्यायकहतेहे जिसमनुष्यकों जन्मकालमें प्रबल राजयोग होवे तिसके हाथ और पैरोंमे निर्मल राज चिन्ह होतेहे सो चिन्ह इसग्रंथमें विस्तारकर्के कहतेहे १ अनामिका अगुलीके मूल सें प्राप्त जोरेखापुण्यविधाना नाम कर्के कहिहै और मध्यमा अगुलीसेंलेकर्के जो रेखा मणिबंध हाथके मूलपर्यंत प्राप्त होवे सो रेखा निश्चयकर्के राज्यप्राप्तिके वास्ते ऊर्ध्वरेखा नामकर्के कहिहै २ और जिसमनुष्यके अंगूठे योंके मध्यमें यवों काचिन्ह होवे सो यशवाला और अपने वशमें भूषण और विशेष भूषणों कर्के युक्त और नम्र होताहै ३ और जिसके

इतिराजयोगभंग इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेराजयोगादिनिरूपणनामत्रयोदशोध्यायः १३

अथराजयोगसंगतिकसामुद्रिकाध्यायः प्रसूतिकालेप्रबलायदिस्युर्नृपालयोगा पुरुषस्ययस्य सद्राजचिन्हानिपदेतदीयेभवतिवापाणितलेऽमलानि १ अनामिकामूलगताप्रशस्तासाकीर्तितापुण्यविधानरेखा मध्यांगुलेर्यामणिबंधमासाराज्याप्तयेसाचकिलोर्ध्वरेखा २ विराजमानंयवलाछनंचेदंगुष्टमध्येपुरुषस्यस्य भवेद्यशस्वीनिजवंशभूषाभूषादिशेषैः सहितोविनीतः ३ येहारणोवातपवारणोवेसारेणकुंभ्भारिणीस्रुगिवा वीणाच्चपाणौचरणेनराणांतेस्युर्नराणामधिपावरेण्याः ४ आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्चतत्पाणितलेमिलंति स्यान्मंडलीकोऽवनिपालकोवाकुलेद्रुपालं कुलताग्तस्यात् ५ चेद्यस्यपाणौचरणेचचक्रंधनुर्धराब्जध्वजनासनानि रथाश्वदोलाकमलाविलासात्तस्यालयेस्युर्गजवाजिशालाः ६

हाथपैरोंमें हाथी की न्याई वा छत्रकीन्याई अथवा मच्छकी न्याई बातलाई की न्याई वा कुंभकी न्याई रेखा होवे सो श्रेष्ठ राजा होताहै ४ और जिसके हाथ पैरोंमे सीसेकी न्याई और माला की न्याई और कमडलूकीन्याई और पर्वत कीन्याई और हलकीन्याई । रेखाहोवे मंडली वा राजा अपने कुलके अनुसार होताहे ५ और सो जिसमनुष्यके हाथपैरोंमें चक्र और धनुष और कमल और ध्वजा और आसनका चिन्ह होवे और तिसके घरमें रथ और घोडे और हाथी घोडेयोंकियां शाला लक्ष्मीकी इच्छासे होतीहै ६

और जिसमनुष्यके हाथ पैरोंमें स्तभकीन्याई और वृक्षकीन्याई और घोटेकीन्याई और गदाकी न्याई और मृदगकी न्याई अथवा दडकी न्याई रेखा होवें सो मनुष्य अखंड राज्य लक्ष्मीकों भोगताहै अथवा पडितो में शिरोमणी होताहै ७ और जो मनुष्य गोल शिरवाला और वडे मस्तक वाला और कर्ण पर्यंत नीलकमल कीन्याई नेत्रोंवाला और जानु पर्यंत लंबी भुजों वाला तिनकों श्रेष्ट मुनि आजानुबाहुपृथ्वी मडलका राजाकहतेहे ८ और जिसमनुष्यकी सूधी नासिका होवे और छातीशिला तलकी न्याई बराबर होवे और गंभीर होवे और वडे कोमल लालवर्णके पग होवें सो राजा होताहै ९ और जो मनुष्य प्रसन्न मूर्त्ति होताहै और वडे उदारचित्त वाला और श्रे

स्तंभस्तुकुंभस्तुतरुस्तुरगोगदामृदंगोंऽध्रिकरप्रदेशे दंडोथवाऽखंडितराज्य लक्ष्म्यास्यान्मडितःपडितशौंडिकोवा ॥ ७ ॥ सुवृत्तमौलिस्तुविशाल भालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः आजानुवाहुपुरुषतमाहुर्भूमंडलाखंडलमार्य वर्याः ८ नरस्यनासासरलाचयस्यवक्षस्थलंचापिशिलातलाभ नाभिर्गंभीराति मृदूभवेतामारक्तवर्णोचरणौसभूप ९ प्रसन्नमूर्तिं समुदारचेतावंशाभिमानः शुभवाग्विलास अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीलभतेमनुष्य. १० करतलेयदियस्यतिलोभवेदविरलोकिलतन्दधनागम ॥ पदतलेचातिलेन समन्वितेनृपतिवाहनचिन्हसमन्वित ११ एतत्फलंराजकुलोद्भवानांस्यान्मानवानांमुनयोवदंति प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानांनूनंतदूनस्वकुलानुमानात् १२

श्रवंशमें जन्मताहै और श्रेष्ट वाणी वाला और अन्यायन करने वाला और गुरु और साधुयाम नम्र होवाहै सो श्रेष्ट राज्यलक्ष्मीकों प्राप्त होताहै १० और जिसकी हाथकी तलीमें तिलहोवे तिनकों वहुतधन प्राप्त होताहै और जिसकी पैरकी तलीमें तिलहोवे और वाहनका चिन्हहोवे तब सो राजा होताहै ॥ ११ ॥ कहे संपूर्णचिन्ह जो मनुष्य राजाके कुलमें जन्मते हैं तिनका विशेषकर्के मुनियोंनें कहेहैं और अन्यकुलमें जन्मे तो उनसे चिन्हभाव वव तिनके अनुमानसें न्यूनाधिकफल कल्पना कर्के कहे ॥ १२ ॥

श्रीर जो इह चिन्हि कहेहैं सो प्रकटहोवें तव संपूर्णफलकर्त्तेहैं- श्रीर पुरुषोंकों दक्षिण हाथपैरोंमें श्रीर स्त्रीयोंकोंवामेहाथपैरोंमें शुभहोतेहैं १२ अव श्रीर विशेष कहतेहैं जिसमनुष्यकेदेहमें पांचअग लंवे होवें श्रीर चार श्रंग छोटे होवें श्रीर पांच सूक्ष्म होवें श्रीर छै श्रंग ऊचे होवें श्रीर सातलाल वर्णके होवें श्रीर तीनअगगंभीर डूंगे होवें श्रीर तीन श्रंग विस्तारवाले होवें सो श्रेष्ठ होताहै १४ श्रीर कहतेहैं जिसके हनुःगंडस्थल श्रीर नेत्र श्रीर वाहु भुजा श्रीर नासिका श्रीर स्तनोंका मध्य भाग इहे पांच लंवे विना राज्योंके नाहिं होताहै १५ श्रीर नाभिः श्रीर स्वरशव्द श्रीर सत्वपराक्रम इहे तीनों गंभीर होवें. तव मनुष्योंकों श्रेष्ठ कहेहै श्रीर छाती श्रीर माथा श्रीर मुख इहे ती

चिन्हानियानिप्रतिपादितानिव्यक्तानिसंपूर्णफलप्रदानि वामेतरेंप्रौचकरेनराणांधन्यानिवामेखलुकामिनीनाम् १३ अथान्यद्विशेषमाह पंचदीर्घचतुर्ह्रस्वंपंचसूक्ष्मंषडुन्नतम् सप्तरक्तंत्रिगंभीरंत्रिविस्तीर्णंप्रशस्यते १४ हनुलोचनवाहुनासिकास्तनयोरंतरमत्रपंचकम् इतिदीर्घमिदंतुपंचकंनभवत्येवनृणामभूभृताम् १५ नाभिःस्वरःसत्वमितिप्रशस्यंगंभीरमेतत्त्रितयंनराणाम् ॥ उरोललाटोवदनंनराणांविस्तीर्णमेतत्त्रितयंप्रशस्तम् १६ वक्षोथकुक्षीद्वयनासिकास्यंकृकाटकाचेतिषडुन्नतानि ॥ ह्रस्वानिचत्वार्य्यथलिंगपृष्ठग्रीवाचजंघेचहितप्रदानि १७ नेत्रांतपादकरताल्वधरोष्ठजिव्हारक्तानखाश्चखलुसप्तसुखावहानि सूक्ष्माणिपंचदशनांगुलिपर्वकेशाःसाकंत्वचाकररुहाश्चनदुःखितानाम् ॥ १८ यवैरंगुष्ठोदरेयस्ययशस्वीचनरोभवेत् अनामिकामूलजास्याद्रेखायस्यसपुण्यवान् ॥ १९ ॥

नों विस्तारवाले श्रेष्ट होतेहैं १६ श्रीर छाती श्रीर दोनोंकुक्षी श्रीर नासिका श्रीर मुख श्रीर कुसी इहे छै श्रंग ऊचे शुभ होतेहैं श्रीर लिंग श्रीर पृष्ट श्रीर ग्रीवा गर्दन श्रीर जंघा इहे चार छोटे शुभ होतेहैं ॥ १७ ॥ श्रीर नेत्रोंकेकोंसे श्रीर पैर श्रीर हाथ श्रीर तालु श्रीर ओठ श्रीर जिव्हा इहे सात लाल वर्ण के होवें तवशुभहोतेहैं और दांत और श्रंगुलीयोंकीग्रंथी और शिरकेवाल और त्वचाचमडा और हाथोंकी श्रंगुलीयां इहेपाचसूक्ष्महोवें तव शुभहोतेहै १८ और कहतेहैं जिसके श्रंगूठेके मध्यमें यवकीन्याई आकार होवे सो मनुष्य यशवाला होताहै और जिसके हाथ में अनामिकाकमूलसें रेखा होवे सो मनुष्य पुण्यवान् होताहै ॥ १९ ॥

और कहतेहैं जिसमनुष्यकीच्छातीवडी होवे सो धनी होताहै और जिसके गडस्थल और शिर वडा होवे सो जयकों प्राप्त होताहैऔरजिसका ऊरू मोटा होवे सो बहुत पुत्रोंवाला होताहै और जिस्के पैर वडे होवें सो धनवान् होताहै ॥ २० ॥ और जिसके नेत्र स्निग्ध होवें सो सौभाग्यकर्के युक्त होताहै और जिसके दंतस्निग्ध होवें तिसकों श्रेष्ठ भोजन मिलताहै और जिसका देह स्निग्ध होवे सो सुखकर्के युक्त होताहैऔर जिसके पैर स्निग्ध होवें तिसकोंवाहनमिलताहै २१ और कहतेहैं जो मनुष्य उलूकीन्याई और काककीन्याई और डिडूंकी न्याई नेत्रोंवालेहैं और जिनके कपोलोंमे थोडे बालहोतेहैं सो सपूर्ण पापी होतेहैं ॥ २२ ॥ और स्वरहीनहै शब्दजिनका और काककीन्याई श ब्दजिनका और केकर भेडि दृष्टि जिनकी और नकुलकी न्याई नासिका जिनकी और बहुत नाडि,

उरोविशालोधनवान्हनु·शीर्षोपराजितः बहुपुत्रःकटिस्थूलोविशालचरणोध नी२०चक्षुःस्नेहेचसौभाग्यंदतस्नेहेचभोजनम् वपुःस्नेहेनसौख्यंस्यात्पादस्नेहेच वाहनं ॥ २१ ॥ उलूकाक्षाश्चकाकाक्षामंडूकाक्षाश्चयेनराः· अल्परोमकपोला श्चतेसर्वेपापवुद्धयः २२ विस्वराःकाकनादाश्चकेकरावभ्रुनासिकाः शिरा लारोमशाहूस्वोत्तरोष्ठस्तेचपापिनः २३ पितृशीलोत्तमाकन्यामातृशीलोन रस्तथा समपुष्टस्तुल्यरूपोविवाहःसुखदोभवेत् २४ अन्यच्च ययोरेवसमंवि त्तंययोरेवसमंकुलं ॥ तयोर्विवाहंसस्यंचनतुपुष्टविपुष्टयोः २४ शंखपद्मय वछत्रमालामत्स्यध्वजादयः ॥' पादपाणौभवत्येवराज्ञांतद्योपितांतथा २५ स्त्रीलक्षणेविशेषमाह व्यासः ॥ मार्जारपिंगलानारीविषकन्येतिकीर्त्तिता ॥ सुवर्णपिंगलानारीनातिदुष्टापरेजगुः· २६

या और रोम जिनकेदेहमें और नीचेके ओठसें छोटाहै ऊपरका ओष्टजिनका सो पापी होतेहैं २३ और पिताकेस्वभाववाली कन्याश्रेष्टहोतीहै और माताकेस्वभाववालापुरुषश्रेष्टहोताहै और जो पुरुष स्त्री तुल्य पुष्टहोवें और तुल्य रूप होवें तिनका आपसमें विवाह सुखके देनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ औरजिनोंकावित्तऔरकुलतुल्यहोवेतिनोंकाविवाहऔरमेलताहोताहैऔरविषमोंकाविवाहऔरमेलनहि होताहै २४ और कहतेहैं शंखकमलयवछत्रमालामत्स्यऔरध्वजऔरकुशइत्यादिचिन्हपैरोंमें और हाथोंमें राजपोंके वा राणीयोंके होतेहै ॥ २५ ॥ अब स्त्रीयोंके लक्षणोंमें व्यास विशेष कहताहै बिलेकी न्याई पिंगलवर्णकी स्त्री विषकन्या होतीहै सो विषकन्या दुष्टा होताहै और सुवर्णकीन्याई पिंगलवर्णकी स्त्री अतिदुष्टानहि होतीहै अपरे कोईक ऋषि कहतेहैं ॥ २६ ॥

और जो स्त्री काली जिव्हावाली और लंबे ओठोंवाली और पिंगलवर्णके नेत्रोंवाली और घर्घरशब्दकर्के वाणी वाली और जिसकेपैरोंमें और कुचोंमें और ओठोंमें रोमहोवें सो स्त्री त्यागकरणे योग्यहै । २७ । और जिसस्त्रीकियाअगुलीया और दंत विरलेहोवें और कुचोंऊपर और कपोलोंऊपर बडे बालहोवें और काला तालूहोवेऔर मातापितासे हीन अथवा अधिक अगा वाली होवे सो त्यागकरणे योग्यहै २८ और जिसस्त्रीकी चिची अंगुल और अनामिका अगुल और मध्यमा अगुल पैरकी पृथ्वीकों नाहीं स्पर्शकरे सोस्त्री व्यभिचारिणी होतीहै ॥ २९ और जिसस्त्रीके पैरकी अंगुष्ठके पासकी अगुली अगूठेसें लंबी अधिक होवे सो स्त्री भर्त्ताके घर नाहीं रहतीहै अपनी इच्छाकर्के कामचारणी होतीहै ३० और जिसस्त्रीका उदर पेट लंबा होवे सो

कृष्णजिव्हाचलंबोष्ठीपिंगाक्षीघर्घरस्वरा ॥ त्याज्यायस्याश्चपादौचकुचावो ष्ठौचरोमशौ २७ विरलांगुलिदंताचकुचगंडरुहत्कचा ॥ कृष्णतालु परित्याज्याव्यंगांगापितृमातृत ॥ २८ ॥ कनिष्ठानामिकायस्यायदि मध्यमिकातथा ॥ भूमिनस्पृशतेसास्त्रीविज्ञेयाव्यभिचरिणी ॥ २९ ॥ पादेप्रदेशिनीयस्याअंगुष्ठंसमतिक्रमेत् ॥ नसाभर्तृगृहेतिष्ठेत्स्वच्छदाकामचा रिणी ३० उदरेश्वशुरंहतिललाटेहतिदेवरम् ॥ स्फिजौपतिंलंबमानेधनं कूर्मोदरीहरेत् ३१ पृष्ठावर्त्तापतिंहतिनाभ्यावर्त्तापतिव्रता ॥ कट्यावर्त्ता तुस्वच्छंदास्कंधावर्त्तार्थभागिनी ३२ सुस्वराचसुवेषाचमृद्वंगीचारुभाषिणी ॥ प्रशस्तासुगति कन्यायाचदृङ्मनसाप्रिया ३३

श्वसुरकों हत कर्त्तीहै और जिसका माथा लंबा होवे सो देवरकों हत कर्तीहै और स्फिजिकटिके अधोभाग और पट्टके ऊपर मांसपिंडकानामहै सो लंबा होवे तब स्वामीकों हत कर्तीहै और कूर्म कीन्याई उदरवाली धनकों हरतीहै ॥ ३१ ॥ और जिसस्त्रीके पृष्ठमें चक्रकीन्याई रोमावली होवे सो स्वामीकों हत कर्तीहै और जिसकीनाभिमें चक्रकीन्याई होवे सो पतिव्रता होतीहै और जिसके लकमें चक्रकीन्याई चिन्हहोवे सो अपनी इच्छा करणेवाली होतीहै और जिसके मोंढयोंमें चक्रका न्याई चिन्हहोवे सो धनवती होतीहै ३२ और जो स्त्री श्रेष्टस्वरवाली और सुंदर वेषरखने वाली और कोमल अगोंवाली और मीठा बोलने वाली और श्रेष्ट हंस और गजकीन्याई चलने वाली और जिसके देखनेकर्के नेत्र और मन प्रसन्नहोवे सो स्त्री श्रेष्ट होतीहै ॥ ३३ ॥

श्रौरजोस्त्रीडिडूकोन्यांईंकुक्षियोंवालीश्रौरवोहढवृक्षकोन्याईंऊपरसेंवडेविस्तारवालीइसप्रकारकीस्त्रीपुत्र कोजन्मे सो राजा होताहै ३४ श्रौर वराह कहताहै जिसस्त्रीके मध्यमागुलीपर्यंत मणिवंधसें लेकर्के हाथकी तलीमें रेखा होवे तिसकों ऊर्ध्वरेखाकर्के कहतेहैं सो रेखा राज्यसुखके देनेवालीहै अथवा पुरुषकों होवे तब राजाकीन्याईं होताहै ३५ श्रौर जिसके हाथमें कनिष्टका श्रंगुलीके मूलसें उत्प. न्नरेखा मध्यमा अगुलीके श्रौर प्रदेशिनी अगुलीके मूलपर्यंत स्थित होवे सो पूर्णश्रायुपावाला होताहै श्रौर उक्तप्रमाणसें हीनहोव तब श्रायुपावी हीन होतीहै ३६ श्रौर श्रगुष्टके मूलमें प्रसूतिकिया रेखा होतीयाहैं सो रेखा वडीया होवें तब पुत्रहोतेहैं श्रौर छोटीया सूक्ष्महोवे तव कन्याहोतीयाहै श्रौर सो रेखा श्रछिन्न श्रौर लंवीया होवें तब चिरकालजीणेवाले बालक कन्या होतेहैं श्रौर सूक्ष्म श्रौर छिन्न श्रौर महुतछोटीया होवें तब थोडी श्रायुपावाले होतेहै ३७ श्रौर श्रायुरेखा श्रौर कनिष्ट श्रगुलीके

मंडूककुक्षिकानरीन्यग्रोधपरिमंडला एवंजनयतेपुत्रंसतुराजाभविष्यति ३४वराहः मध्यांगुलीयामणिबंधनोत्थारेखागतापाणितलेंगनानाम् ऊर्ध्वगतापाणितलेथवायापुंसोथवाराजसुखायसास्यात् ३५ कनिष्टकामूलभवागतायाप्रदेशिनीमध्यमकांतराला करोतिरेखापरमायुपःसाप्रमाणहीनाथतदूनमायुः ३६ श्रं गुष्टमूलेप्रसवस्यरेखा पुत्राश्हत्य प्रमदाश्चतन्व्यः ॥ श्रछिन्नदीर्घाश्चचिरायुषांता स्वल्पायुषःछिन्नलघुप्रमाणाः ३७ कलत्रकांतयो सख्यंजीवितारूयकनिष्टयोः ॥ मध्येविचिंतयेद्दक्षेवामहस्तेनरस्त्रियोः ३८ श्ररेखंबहुरेखंवायेषांपणितलंनृणां ॥ तेस्युरल्पायुपोनि स्वादु खिताना त्रसंशयः ॥ ३९ ॥ क्लेशसंपल्लवारेखाकुर्याच्छिन्नायुष क्षय मणिबंधोन्मुखाद्वृद्ध्यैविपदांगुष्टसंमुखा ४० मत्स्य करतलेयस्यसनरोवहुकोशवान् ॥ भाग्यारेखांसुतीक्ष्णाग्राशुभा छत्राकृतिस्तथा ४१

मध्यमें पुरुष स्त्रीके सख्यभावकी रेखा होतीहै सो रेखा पुरुषके दक्षिणहाथमें श्रौर स्त्रीके वामहाथमें चिंतन करे ३८ श्रौर जिन्हों मनुष्योंके हाथमे रेखा नाहीं होवें अथवा वहुत रेखा होवें सो मनुष्यथोडी श्रायुपावाले श्रौर निर्धन श्रौर दुःखी होतेहै इसमे संशय नाहींहै ॥ ३९ । श्रौर जिसके हाथमें पत्रोंकीन्याईं रेखा मणिवधके समुखहोवे तव क्लेश दुःख होताहै श्रौर छिन्नरेखा त्रुटित रेखा होवे तव श्रायुपाका क्षय होताहै श्रौर मणिवधके संमुखवृद्धिकीरेखा होतीहै श्रौर श्रगूठेके संमुख रेखा विपदा कर्तीहै ४० श्रौर जिसके हाथकी तलीमें मच्छकीन्याईं रेखा होवे सो मनुष्य वडे धनवाला होताहै श्रौर जिसके हाथमे छत्रकीन्याईं तीक्ष्ण अग्रभागवाली होवे तिसका नाम भाग्य रेखाहै सो शुभकहिहै ४१

और जिसके हाथकी अंगुलीयोंका मध्यभाग आपसमें मिलितहोवे सो धनसचय कर्त्ताहै और अंगुलीयोंके मध्यमे छिद्ररहे सो द्रव्य खर्च कर्त्ताहै अर्थात् तिसकेपास धनसंचय नाहिं रहिताहै ४२ और कहतेहै जिसस्त्रीकियां दोनो भ्रुवां मिलीहोवे और लंबे ओठोवाली और काणी और छजकीन्याई कानों वाली और टेढे मुखवाली और टेढी नासिकावाली और अत्यंत मौनरहने वाली और बहुत बोलने वालीसो त्याग करणे योग्यहै ४३ और जिसस्त्री के केश और वस्त्रके स्पर्शसें पुष्पोंकी माला मलीन होजावे और जिसके स्नानवालें जलमें बहुत छोटे जीव उत्पन्न होवें ॥ ४४ ॥ और मडुणी और वस्त्रमें जूंया जिसकों बहुत होवें और अन्नका चुरायकर्के खाने वाली और पवित्रतासें रहितसो स्त्री त्यागकरणे योग्यहे ४५ अव पुरुषोंकेलक्षण

श्लिष्टान्यंगुलिमध्यानिद्रव्यसंचयहेतवे ॥ तानिचेच्छिद्रयुक्तानित्यागशीलकराणिच ॥ ४२ ॥ मिलद्भ्रूयुग्मिकाकाणालंबोष्ठीशूर्पकर्णिका वक्रास्यानासिकाचातिमौनात्याज्यातिभाषिणी ॥ ४३ ॥ यस्या.केशांशुक स्पर्शात्म्लायंतिकुसुमस्रजाः ॥ स्नानांभसिविपद्यंतेवहव.क्षुद्रजंतवः ४४ धीयंतेमत्कुणास्तस्यैतथाजूकाश्चवासासि ॥ चौर्य्यान्नभक्षिणीशौचहीनात्याज्यानितंविनी ४५ ॥ अथपुरुपलक्षण ॥ तत्रोर्ध्वमंगुलमानमाह कात्यायनः अष्टशतं १०८ पण्णवतिः ९६ परिमाणंचतुरशीति ८४ रितिपुसाम् ॥ उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्यास्वमानेन ४६ अथस्वरः ॥ करिवृपरथौघभेरीमृदंगसिंहाब्दनिःस्वनाभूपाः ॥ गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्चधनसौख्यसत्यक्ताः ४७ आकाशादिप्रकृतिगुणा.पंचमहापुरुपलक्षणाध्यायेनिरूपिताः

कहतेहे जिसमे ऊचा अंगुलीयोंका प्रमाण कत्याय नकहताहे अपनेहाथकी अंगुलीयोंके प्रमाणसें अष्टोतरशत । १०८ । अंगुलीका ऊचा पुरुष उत्तम श्रेष्ट कहाहे और छयानू ९६ अंगुली ऊचा सम मध्यम कहाहे और चुराशी ८४ अंगुली ऊचा हींन कहाहे ४६ अवस्वरके लक्षण कहतेहे यो मनुष्य हाथीकीन्याई और बैलकी न्याई और रथके समूहसें यो शब्दहोताहे तिसकीन्याई और भेरी यो वडा नगारा तिसकीन्याई और मृदगकीन्याई और शेरकीन्याई और वादलकीन्याई गंभीरवाणीवाले जोहे सो राजा होतेहें अर्थात् गंभीरवाणीवालापुरुष राजाहोताहै और खोतेकीन्याई और जर्जर शब्दकर्के युक्त और कठोरस्वरवाली वाणी धन और सुखसें रहितजो मनुष्यहोतेहे तिनकी होताहै ४७ और संपूर्ण तत्वप्रकृतियोंके गुण पंचमहापुरुष लक्षणाध्यायमें कहचुकेहैं

अथमनुष्योंके प्रत्येकांगोंका फल कहतेहैं तिसमें प्रथम पैरोंके लक्षणकहतेहैं परसीनेसें रहित और कोमलतलीयों वाले और कमलकीन्यांईशोभावाले और अंगुलीयांआपसमें समानमिलित शोभाकर्के युक्त और सुंदरनखोंकर्के और पार्ष्णिकर्केयुक्त और उष्णस्पर्शवाले और नाडियोंकर्केहीन और गुढमांसकर्के ढकेहुवे गिट्टे और कच्छुएकीन्याई ऊपरसें ऊचे पैर राजाके होतेहैं ४८ और समुद्रकहताहै; मांसकर्केयुक्त और स्निग्ध और गरम और अंगुलीयोंकर्केशोभायुक्त और ऊचे और परसीनेसेंहीन और नाडियोंसे रहित पाद राजाके होतेहैं ४९ और गर्गकहताहै लालकमलकीन्याई प्रभावाले और रुधिरकीन्याई लाल पादवाले राजा होतेहैं और सुखके भोगने वाले होतेहैं ५० अब पैरोंके ऽशुभ लक्षण कहतेहैं छज्जकीन्याई आगेसें विस्तारवाले और रूक्ष और धूडे नखोंवाले और टेढे और ना

अथमनुष्याणांप्रत्येकांगलक्षणानि तत्रादावेवपादयोर्लक्षणमाह अस्वेदनौमृदुतलौकमलोदराभौश्लिष्टांगुलीरुचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णीउष्णौशिराविरहितौ चनिगूढगुल्फौकूर्मोन्नतौचचरणौमनुजेश्वरस्य ४८तथाचसमुद्रः॥ पादैःसमांसैः सुस्निग्धैःसोष्णैःश्लिष्टैःसुशोभनैः॥ उन्नतैःस्वेदरहितैःशिराहीनैश्चपार्थिवः ४९ तथाचगर्गः॥ पद्मरक्तोत्पलनिभैस्तथाक्षतजसन्निभैः॥ नृपाःपादतलैर्ज्ञेयायेचान्येसुखभागिनः ५० तत्रैवाशुभलक्षणान्याह शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौवक्रौ शिरासंततौसंशुष्कौविरलांगुलीचचरणौदारिद्र्यदुःखप्रदौ ५१ तथाचसमुद्रः॥ शूर्पाकारैस्तथाभग्नैर्वक्रैःशुष्कैःशिरायुतैःसस्वेदैःपांडुरैरेवैश्चरणैरतिदुःखिनः ५२ मार्गायोत्कटदौकषायसदृशौवंशस्यविच्छेददौब्रह्मघ्नौपरिपक्वमृद्युतितलौपीतावगम्यारतौ ५३ उत्कटावध्वनिरतौकषायौकुलनाशिनौ॥ब्रह्मघ्नौदग्धमृद्वर्णौवतिपीतावगम्यदौ ५४

ड़ियों कर्के युक्त और शुष्क और विरलीयां अंगुलीयांवाले पैर दारिद्र और दुःखके देनेवाले होतेहैं ५१ और समुद्रकहताहै छज्जकीन्याई और भग्नस्फुटित और शुष्क और नाडियोंकर्केयुक्त और परसीनेकर्केयुक्त और धूडेनखोंवाले पैरबहेदुःखभोगनेवालेयोंके होतेहैं ५२ और मुर्गा के वर्णकीन्याईपैर मार्गमें सदाचलनेवाल्योंके होतेहैं और वंशछेदकेकरणेवालेहोतेहैं और लालमिट्टीकीन्याई पैरोंकी तलियोंवाले ब्रह्महत्या करतेहैं और पीलीयां तलियोंवाले अगम्या स्त्रीमें गमनकर्तेहैं ५३ और समुद्रकहताहै जिसके उत्कटपैरहोवें सो मार्गमें रत होताहै और जिसके कषायवर्णके पैर होवें सो कुलकानाश कताहै और दग्धमृत्तिकाकी आभावाले पैर ब्रह्महत्याकोदेतेहैं और अत्यंत पीले वर्णके पैर अगम्यास्त्री का गमन करातेहैं ॥ ५४॥

॥ अब जंघा पद्जानूके लक्षण कहतेहैं विरले छोटेरोमों वालियां और गोलजंघा और हाथीकी बाहुलीकों न्याई श्रेष्ट पर्वोंकर्के युक्त और समतुल्य दोनोंजानुयोंवाले राजाहोतेहैं ॥ और कुत्तेकीन्याई और गिदडोंकी न्याई जंघोंवाले धनरहितहोतेहैं ॥ ५४ ॥ अबजघों के रोमोंका लक्षण कहतेहै राजयोंके रोमकूपोंमें एक एक रोमहोताहै और पंडितोंके और यज्ञकराव मेंवाल्योंके रोमकूपोंमें दोदो रोमहोतेहै और जिनकेरोमकूपोंमें तीन वा चार रोम होतेहैंसो निर्धनहोतेहैं इसी प्रकारकर्के शिरके केशवी निंद्य और श्रेष्ट जानने योग्यहैं ॥ ५५ ॥ और समुद्र कहताहै जिसके रोमकूपमें एकहि रोमहोवे सो राजा होताहै और दोरोमोंवाला बडेयशकों प्राप्त होताहै और तीनरोमोंवाला और 'बहुतरोमोंवाला मनुष्य भाग्यहीन' होताहै ॥ ५६ ॥

अथजंघोरुजानूनांलक्षणमाह प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभि
श्चउपचितसमजानवश्चभूपाधनरहिताःश्वसृगालतुल्यजंघाः ५४ अथजंघयो
रोमलक्षणमाह ॥ रोमैकैककूपकेपार्थिवानांद्वेद्वेज्ञेयेपंडितश्रोत्रियाणां ॥ त्र्याद्ये
निःस्वामानवादुःखभाजःकेशाश्चैवंनिंदिताःपूजिताश्च ५५ ॥ तथाचसमुद्रः॥
एकरोमोभवेद्राजाद्विरोमश्चमहायशाः त्रिरोमोवहुरोमश्चनरोभाग्यविवर्जितः ५६
निर्मांसजानुर्म्रियतेप्रवासेसौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः स्त्रीनिर्जिताश्चैवभवंति
निम्नैराज्यंसमांसैश्चमहद्भिरायुः ५७ तथाचसमुद्रः निर्मांसजानुर्नीयस्यप्रवा
सेम्रियतेतुसः अल्पैर्भवतिसौभाग्यंविकटैश्चदरिद्रता ५८ स्त्रीजितःस्यात्तथा
निम्नैर्मांसयुक्तैर्नराधिपः अतिस्थूलैश्चिरंकालजीवेदैश्वर्यसंयुतः ५९

और कहतेहैं मांसकर्के रहित जानुयोंवाला विदेशमें मरताहै और छोटे जानुयोंवाला सौभाग्य भोगताहै और विकट येडौल जानुयोंवाला दरिद्री होताहै और निम्नडूंगेजानुयोंवाला स्त्रीजित होताहै और मासकर्केसहितजानुयोंवाला राजा होताहै और वडे जानुयोंवाला वडी आयुवाला होताहै ॥ ५७ ॥ और समुद्र कहताहै मांसहीनजानुयोंवाला प्रवासमें मरताहै और छोटेजानुयों वाला सौभाग्यवाला और विकटजानुयोंवाला दरिद्री होताहै ॥ ५८ ॥ और डूंगेजानुयों वाला स्त्रीजित और मासकर्केयुक्त जानुयों वाला राजा और वडे मोटेजानुयों वाला ऐश्वर्यकर्के युक्त चिरकालरहिताहै ॥ ५९ ॥

॥ अब लिंगके लक्षण कहतेहै छोटे लिंगवालाधनीहोताहै और संतानसें रहित होताहै और मोटेलिंगवाला धनोंकर्केहीन होताहै और जिसका लिंग वामेपासे में नीमा होवे और टेढा होवे सो पुत्र और धनकर्के रहित होताहै और दक्षिणपासेमें नीमाहोवे तब पुत्रोंवाला होताहै और अधो भागमें नीमा होवे तब दरिद्री कर्ताहै और नाडियोंकर्के युक्त होवे तब थोडे पुत्रोंवाला होताहै और स्थूलग्रथिकर्के युक्त होवे तब सुखकर्त्ताहै और कोमल होवे तब प्रमेहादिरोगोंकर्के मृत्यु होतीहै ६० अब इसमें और लक्षण कहतेहैं जिनके अंडकोश निगूढ मांसमें छपे होवें सो राजा होते हैं और लंबे और भग्न होवें तब धनहीन होतेहैं और सरल और गोल और सूक्ष्मनाडियों कर्के युक्त लिंगवाले धनीहोतेहै ॥ ६१ ॥ और समुद्र कहताहै यो मनुष्य दक्षिणावर्त्त लिंगवाला होवे सो पुत्रवान् होताहै और वामावर्त्तलिंगवालेके कन्या बहुत होतीहैं ॥ ६५ ॥

अथलिंगलक्षणमाह लिंगेल्पेधनवानपत्यरहितःस्थूलेपिहीनोधनैर्मेढ्रेवामनते सुतार्थरहितोवक्रेन्यथापुत्रवान् दारिद्र्यंविनतेत्वधोल्पतनयोलिंगेशिरासंतते स्थूलेग्रंथियुतेसुखीमृदुकरोत्यंतंप्रमेहादिभिः६० अत्रैवान्यल्लक्षणमाह कोशनि गूढैर्भूपादीर्घैर्भग्नैश्चवित्तपरिहीनाः ऋजुवृत्तशेपसोलघुसिरालशिश्नाश्चधनवंतः ६१तथाचसमुद्रः दक्षिणावर्त्तलिंगोयःसभवेत्पुत्रवान्नरः वामावर्त्तेतथाकन्याःसु बह्व्याःसंभवंतिच ६२ स्थूलेःसिरालैःकठिनैर्नरादा रिद्र्यभाजनाः ऋजुभिर्वर्त्तु लैर्लिंगैःपुरुषाःसुखभागिनः ६३यस्यपदोपविष्टस्यभूमिंस्पृशतिमेहनं भोगवा न्सतुविज्ञेयोनरोदारिद्र्यभाजनः ६४ भूमौपादोपविष्टस्ययस्यस्पृशतिमेहनं भोगवान्सतुविज्ञेयस्तथातुरगमेहनः ६५ स्थूलग्रथियुतेलिंगेनरोतिसुखभाग्भ- वेत् लिंगेनमृदुनामर्त्योम्रियेतकृच्छ्रपीडितः६६अथवृषणलक्षणमाह जलेमृत्युरेक वृषणोविषमैःस्त्रीचंचलःसमैःक्षितिपःहूस्वायुश्चोद्बद्धैःप्रलंबवृषणस्यशतमायुः ६७

और मोटे और नाडियों कर्के युक्त और कठिन लिंग वाले मनुष्य दरिद्री होतेहैं और सरल और गोल लिंगों वाले पुरुष सुखी होतेहैं ६३ और जिसमनुष्यका पैरोंके भारबैठेसें लिंगपृथ्वीकों स्पर्श करे सो मनुष्य भोगी होताहै और दरिद्रीहोताहै ६४ और कहतेहैं पृथ्वीमें स्पर्श करणे वाला और घोडेकीन्याई लिंगवाला भोगी कहाहै ६५ और मोटीग्रथिवाले लिंगकर्के मनुष्य सुखभोगताहै और कोमल लिंग कर्के प्रमेहादि कष्टों कर्केमर्ताहै ६६ अबवृषणोंके लक्षण कहतेहैं जिसका एकहि अंडकोश होवे सो जलमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै और जिसके विषम होवें दोनो समाननहिं होवें सो स्त्रीयोंमें चंचलहोताहै और तुल्य समानवृषणोंवाला राजाहोताहै और नाडियों कर्के बद्धहो में तब थोडी आयुषा वाला होताहै और लंबे वृषणोंवालासउ वर्ष जीवताहै ६७

और समुद्र कहताहै एक अंडवाला जलमें मरता और विषम अंडों वाला स्त्रीयोंमे चंचलहोताहै ॥ और सम अंडों वाला राजा होताहै और सलग्न अंडों वाला थोडाकाल जीवताहै ॥ ६८ ॥ और लंबे अंडों वाला सउोवर्ष जीताहै ॥ अब माणि मूत्रका लक्षणकहतेहे ॥ और जिसकी लालमाणि होवे सो धनी होताहै और जिसकी धूळी और मलीन माणि होवे सो धनहीनहोताहै लिंगाग्रभागकों माणि कहतेहे ॥ और जिसकी मूत्रधारा शब्दकर्के चले सो सुखी होताहै और जिसकी शब्द रहित चले सो धनहीन होताहै ६९ और जिनकामूत्र दो तीन धाराकर्के और दक्षिणावर्त्त होयके गिरताहै सो राजा होतेहै और जिनका बिखरकर्के मूत्र गिरताहै सो निर्धन होतेहे ७० और जिसके मूत्रकी एकधारा वगे सो रूपको देतीहै और पुत्रकों देताहै और जिनाकिया स्निग्ध और ऊंचिया और बराबरमणिया होतीयाहै सो धन और स्त्रीया और रत्नोंके भोगनेवाले होतेहे ७१ और जिनाकिया माणिया मध्यभागसें निम्न होतीयाहै सो कन्याके पिता होतेहें और धन रहितहोतेह और जिनाकिया माणियामध्यसें ऊचीया होतीयाहै सो मनुष्य पशुआंके गोमहिष्यादित्यादियाके सुखवाले होतेहे और अत्यंत भयानक नाहीहोनेसेंधनीहोतेहैं ७२ और समुद्र कहताहै जिस पुरुषकी मणी रत्नकीन्याइं मध्यभागमें शोभायुक्तहोवे सो राजा होताहै ॥ ७३ और जिसका मणी सुवर्ण और चांदि और मणियोंकी न्याइं और मोतीयोंकी न्याइं प्रभावाली होवे और मुंगेके समानस्निग्ध माणियां वक राजाहोताहै ७४

तथाचसमुद्रः ॥ एकांडोजलमृत्युः स्याद्विषमेस्त्रीषुचंचलः समांडोनरनाथश्चसंलग्नैरल्पजीवनः ६८ प्रलंबांडप्रमाणंतुशतंजीवतिमानवः अधुनामणिमूत्रलक्षणमाह रक्तैराढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याः पांडुरैश्चमलिनैश्च सुखिनःसशब्दमूत्रानिःस्वानिःशब्दमूत्रधाराश्च ॥ ६९ ॥ द्वित्रिचतुर्धाराभिःप्रदक्षिणावर्त्तवलितमूत्राभिः पृथिवीपतयोज्ञेयाविकीर्णमूत्राश्चधनहीनाः ७० एकैवमूत्रधारावलितारूपप्रधानसुतदात्री स्निग्धोन्नतसममणयोधनवनितारत्नभोक्तारः ॥ ७१ ॥ मणिभिश्चमध्यनिम्नैः कन्यापितरोभवंतिनिःस्वाश्च वहुपशुभाजोमध्योन्नतैश्चनास्थुलवर्णैर्धनिनः ७२ तथाचरत्नाकृतिर्मणिर्यस्यसमेमध्येविराजिते पार्थिवःसतुविज्ञेयः समुद्रवचनंयथा ७३ सुवर्णरजतप्रख्यैर्मणिमुक्तासमप्रभैः प्रवालसदृशैः स्निग्धैर्मणिभिः पार्थिवोभवेत् ७४

श्रोर जिसकी मणी धूडेवर्णकी श्रोर मलीन श्रोर कठोर श्रोर पिंगल वर्ण की श्रोर छोटी होवे सो निर्धन होताहे श्रोर जिसके देहसे मूत्र कीधारा दक्षिणा वर्त होयके गिरे सो राजाहोताहै श्रस मे समुद्रने कहाहै ७६ श्रोर जिसके मूत्र किंवा दोधारा स्निग्ध शब्दसे रहित गिरे सो भोगवान् श्रोर गौंश्रोंकर्के युक्त होताहै ७७ श्रोर जिसके मूत्रमे वहुतधाराशब्दकर्के युक्त रूक्ष गिरेसो नीच पुरुष होवाहे ॥ अब वस्तिशुक्र मैथुनके लक्षण कहतेहे श्रोर जिनकी वस्ति नाभिके नीचे चार श्रंगुलीप्रमाण कर्के स्थान शुष्क श्रोर नाडियों कर्के युक्त होवे सो धनहीन श्रोर दुर्भग होतेहें श्रोर जिनके वीर्यकी पुष्पोंकी न्याई गंधिहोवे सो राजे होतेहैं ७८ श्रोर मखीरकी गंधिवाला वीर्य धनवानोंका होताहे श्रोर मच्छकी गंधिवाला वीर्य वहुत संतान वालोंका होताहे श्रोर थोडे वीर्यवाला कन्याकापिता होताहे श्रोर मांसकीन्याई वीर्यकी गंधिवाला वडाभोगीहोताहै ७९ श्रोर मदि

पांडुरैर्मलिनैरूक्षै श्यावैरल्पैश्चनिर्धनः मूत्रधारापतेद्देहाद्दक्षिणावलितायदि पार्थिव सतुविज्ञेय समुद्रवचनंयथा ७६ द्विधारंचपतन्मूत्रं स्निग्धशब्दविवर्जित भोगवान्सतुविज्ञेयोगवाढ्योनात्रसंशयः ७७ वहुधारेतथारूक्षेसशब्दे पुरुषाधमः ॥ अधुनावस्तिशुक्रमैथुनानांलक्षणमाह ॥ परिशुष्कवस्तिशीर्षैर्धनरहितादुर्भगाश्चविज्ञेयाः कुसुमसमगंधशुक्राविज्ञातव्यामहीपालाः ७८॥ मधुगंधेवहुवित्तामत्स्यसगंधेवहून्यपत्यानि तनुशुक्रःस्त्रीजनकोमांससगंधोमहाभोगी ७९ मदिरागंधेयज्वाक्षारसगंधेचरेतासिदरिद्रः शीघ्रमैथुनगामी दीर्घायुरतोन्यथाल्पायुः ८० तथाच विस्तीर्णमांसलास्निग्धावस्ति पुसांप्रशस्यते निर्मांसकर्कशारूक्षादुःखदारिद्यदास्मृता ८१ गोमायुसदृशायस्य खरोष्ट्रमहिषस्यच सभवेद्दुःखितोनित्यधनहीनश्चमानवः ८२ तथाच पुष्पगंधोभवेद्राजावहुस्वोमधुगंधितः मत्स्यगंधःपुत्रवान्स्यात्स्त्रीप्रजस्तनुरेतसः ८३

रा कीन्याई वीर्यकीगंधिवाला यज्ञकरणे वाला होताहे श्रोर सज्जी क्षा कीन्याई गंधिके वीर्य वाला दरिद्री होताहे श्रोर शीघ्रमैथुन करणे वाला दीर्घायु होताहै श्रोर चिरकाल मैथुन करणे वाला श्रल्पायु होताहै ८० श्रोर कहतेहैं विस्तार कर्के युक्त श्रोर मांस कर्के युक्त श्रोर स्निग्ध वस्ति पुरुषोंकी श्रेष्ट होतीहैं श्रोर मांस कर्के हीन श्रोर कठोर श्रोर रूखीदुःख श्रोर दरिद्रके देने वाली होतीहै ८१ श्रोर जिसकी वस्ति गिदडकी न्याई श्रोर ऊठकी न्याई श्रोर संढेकी न्याई होवे सो नित्य प्रति दुःखी श्रोर धन कर्के रहित होताहै ८२ श्रोर कहतेहैं जिसकेवीर्यमे पुष्पोकी गंधि होवे सो राजाहोताहै श्रोर मखीरकीन्याई गंधिवाला धनीहोताहै श्रोर मच्छकीन्याई गंधिवाला पुत्रवान् होताहे श्रोर थोडेवीर्यवालाकन्यावालाहोताहै ८३

श्रौर मांसकीगंधिवालावडाभोगीहोताहै श्रौर मद्यकी गंधिवालापद्मकाणे वाला होताहै श्रौर क्षारकीन्याईगंधिवालाधनहीनहोताहै ८४ श्रौरचिरकालमैथुनकरणे वाला थोडी श्रायुषावालाहोताहै श्रवस्फिग्केलक्षणकहतेहैं ॥ स्फिकूनामपट्ठोंकेऊपरमांस पिंडोंकाहै ॥ जिसके बडेमोटे स्फिक् होवें सोधनहीन होताहै श्रौर श्रेष्ठमांसकर्के युक्त स्फिक् होवें तब सुखी होताहै श्रौर अर्ध स्फिक्वालाशेरकोमारणेवाला होताहै श्रौर डिडूंकीन्याई स्फिक्वाला राजाहोताहै ८५ श्रौर समुद्रकहताहै जिसके स्फिक् बडेमोटे होवें सो निर्धनहोताहै श्रौर श्रेष्ठ मांसकर्के युक्त स्फिक् होवें तब सुखीहोताहै श्रौर मंडूककीन्याई स्फिक् वाला राजा होताहै ८६ श्रौर अर्धस्फिक् वाला शेरके मारणेवाला होताहै ८७ श्रव कटि जठरके लक्षण कहतेहैं जिसका सिंहकी न्याई लक होवे सो राजा होताहै श्रौर वांदरकी न्याई श्रौर ऊठकीन्याई लक वाला धनरहितहोताहै श्रौर देहके समा-

मांसगंधोमहाभोगीयाज्ञिकोमदिरासमे ॥ गंधोयेषांक्षारसमस्तेनिःस्वाम नुजाःस्मृताः ८४ चिरंमैथुनगामीयःसह्रस्वायुर्भवेन्नरः ॥ अथस्फिग्लक्षण माह ॥ निःस्वोतिस्थूलस्फिकसमांसलस्फिक्सुखान्वितोभवति व्याघ्रांतोध्य र्धस्फिङ्मंडूकनराधिपतिः ॥ ८५ ॥ तथाचस- ॥ अतिस्थूलौस्फि जौयस्य . निर्धनःसभवेन्नरः समांसलस्फिक्सुखितोमंडूकस्फिङ्नराधिपः ॥ ८६ . ॥ अध्यर्धस्फिङ्नरोयस्तुव्याघ्रांतः सतुकीर्तितः ॥ ८७ ॥ अथक टिजठरलक्षणमाह ॥ सिंहकटिर्मनुजेंद्रःकपिकरभकटिर्धनैःपरित्यक्तः स मजठराभोगयुतोघटपिठरनिभोदरोनिस्वः ८८ तथाचस- सिंहतुल्याकटिर्यस्य सनरेंद्रोनसंशयःश्वसृगालखरोष्ट्राणांतुल्यायस्यसनिर्धनः८९समोदराभोगयुता विषमानिर्धनाःस्मृताः ९० अथपार्श्वकक्षोदरलक्षणम् अविकलपार्श्वाधनिनो निम्नैर्वक्रैश्चभोगसंत्यक्ताःसमकुक्षाश्चभोगाढ्यानिम्नाभिर्भोगसंत्यक्ताः ९१

न लक वाला भोगीहोताहै श्रौर घडेकी न्याई श्रौर पिठरोभांडचविशेषः तिसकीन्याई लक वाला धन हीनहोताहै ८८ श्रौर समुद्र कहताहै जिसका सिंहकेतुल्य लक होवे सो राजा होताहै श्रौर कुत्ते श्रौर गिडकीन्याई श्रौर खोते श्रौर ऊठकीन्याई लक वाला धन रहित होताहै ८९ श्रौर समान उदर वाला भोगीहोताहै श्रौर विषम टेढेपेट वाला निर्धनहोताहै ९० श्रव पार्श्व कक्ष उदरके लक्षण कहतेहैं ॥ जिसके दोनों पार्श्व समान तुल्य होवें सो धनी होताहै श्रौर नीमें श्रौर टेढे पार्श्वोंवाला भोगों कर्के रहितहोताहै श्रौर समकुक्षियों वाले भोगों कर्के युक्त होतेहैं श्रौर नीमि कुक्षिवाले भोगहो नहोतेहैं ९१

और ऊंचीओं कुखोंवाले राजा होतेहैं और विषम नीमीऊंचीकुखी वाले कुटिल होतेहै और सर्पकीन्याई पेटवाले दरिद्री होतेहैं और बहुतभोजनकरणे वाले होतेहैं १२ कटिकेऊपर अंगुल भाग पार्श्व कहाहै ॥ और समुद्र कहताहे ॥ मांस करके युक्त पार्श्वोंवाले धनीहोतेहैं और नीमें और टेढे और विषम पार्श्वोंवालेमनुष्य भोगोंसें रहितहोतेहैं १३ और कहतेहै ऊचीकुखीवाले राजा होतेहैं और विषम कुखीवाले दुष्ट होतेहैं और सर्पके पेटकी न्याई नीमी कुखी वाले धनरहित और बहुतभोजनकरणेवाले होतेहैं १४ अब नाभिके लक्षण कहतेहैं जिनकी ऊची मंडलाकार विस्तारवालीनाभिहोवे सो सुखीहोतेहैं और छोटी और अदृश्यऔर बहुत नीमीनाभिक्लेशकेदेनेवाली

उन्नतकुक्षाः क्षितिपाःकुटिलाः स्युर्मानवाविषमकुक्षा सर्पोदरादारिद्राभवतिवह्वाशिनश्च १२ कटेरुपरिचतुरंगुलोभाग पार्श्वशब्दवाच्यः तथाचस- पार्श्वै समांसोपचितैर्धनिनोमानवाःस्मृता निम्नैर्वक्रैश्चविषमैर्नराभोगविवर्जिताः१३ नृपाश्चोन्नतकुक्षाःस्युर्विषमाभिर्दुराशया सर्पोदरानतानिःस्वाःस्मृतावह्वाशिनस्तथेति १४ अथनाभिलक्षणमाह ॥ परिमंडलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्चनाभिभि सुखिनः स्वल्पावदृश्यनिम्नानाभिः क्लेशावहाभवति १५ वलिमध्यगताविषमाशूलवाधंकरोतिनैस्वंच शाठ्यंवामावर्ताकरोतिमेधांप्रदाक्षिणतः १६ शाठ्यलक्षणम् वचसामनसायश्चदृश्यतेकार्यतत्पर कर्मणाविपरीतश्चसशठ सद्भिरिष्यते १ मेधालक्षणम् शुश्रूषाश्रवणंचैवग्रहणंधारणंतथा ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानंचधीगुणाः २ पार्श्वायताचिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरंगवाढ्यमधः शतपत्रकर्णिकाभानाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते १७ तथाचसमुद्रः वर्तुलाविपुलात्युच्चानाभिर्यदिनरेश्वरः अल्पादृश्यातथानिम्नानाभि क्लेशावहाभवेत् ॥ १८ ॥ वलिमध्यगतायाचसाशूलवधकारिणी वामावर्ताशाठ्यभावेधिषणांचप्रदक्षिणा १९ ॥

होतीहै १५ और जिसकीनाभिकेमध्यमें विषमवलिरेखाहोवे सोनाभिशूलपीडाकरके मृत्यु और निर्धनताकर्ती है और वामावर्तनाभि शठोंकी होतीहै और दक्षिणावर्तमेधा बुद्धिकरण वालीहोतीहै१६ और जिसकी नाभिपासेयोंसें चोडी होवे सो चिरकालजीणेवाला होताहै और ऊपरसें चउडीहोवे तवलक्ष्मीकास्वामी होताहै और नीचेमेंबडीहोवे तव गाडाकर्के युक्तहोताहै और जिसकी नाभिकमलकीन्याई होवे सो राजाहोताहै १७ और समुद्रकहताहै जिसकी गाल उार व... और ऊची नाभिहोवेसो राजाहोताहे और छोटी और अदृश्य और नीमी नाभि क्लेशकरनेवाली होतीहै १८ और जिसकी नाभिकेमध्यमें झुर्डहोवे सो शूलकर्के मर्ताहै और वामावर्तशठोंकी नाभिहोतीहै और दक्षिणावर्तश्रेष्ठबुद्धिवालोंकी होतीहै १९

और पासेयोंमें वडीहोवे तब चिरकालजीताहै और ऊपरके भागमें बडीहोवे तबधनीहोताहै ॥ और नीचेसेंवडीहोवे तब गौयांबहुत होतीयाहैं और भोगों कर्केयुक्तहोताहै ॥ १०० ॥ और जिसकी कमलकी डोडीकेतुल्यनाभिहोवे सो राजाहोताहै ॥ १०१ ॥ अबउदरमें वलियों केलक्षणकहतेहैं जिसके उदरमें एकवली होवे सो शस्त्रों कर्के मरताहै और दोवली वाला स्त्रीभोगनेवाला और तीनवली वाला आचार्य परोपदेष्टाहोताहै और वलीसेंरहित उदरवाला राजाहोताहै १०२ और जिनकेउदरमें टेढी या वलीया होतीयांहै सो अगम्यास्त्रीकें गमनकरणेंवालेहोते हैं और जिनके उदरमें सरलवलीयाहोतीहैं सो सुखी और परस्त्रीकेद्वेषीहोतेहैं १०३ और समुद्रकहता हैजिसके पेटमें एकवलीहोवे सो शस्त्रकर्के हतहोताहै और दोवलीवालापुरुष स्त्रीकेभोगने वालाहो

पार्श्वायतादीर्धजीवंधनयुक्तातथोर्द्धगा अधोगोवहुलंकुर्यान्नाभिर्भोगसमन्वितम् १०० पद्मस्यकर्णिकातुल्यानाभिःकुर्यान्नरेश्वरम् १०१ अथवलीनांलक्षणमाह ॥ शस्त्रां तस्त्रीभोगिनमाचार्यंबहुसुतयथासंख्यं एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपत्ववालिम् १०२ विपमवलयोमनुष्याः भवंत्यगम्याभिगामिनःपापाः ऋजुवलयःसुखभाजः परदारद्वेपिणश्चैव १०३ तथाचसमुद्रः एकवलिःशस्त्रमृत्युःस्त्रीभोगी द्विवलिः स्मृतः त्रिभिराचार्यइत्याहुश्चतुर्भिःस्याद्बहुप्रजाः १०४ अवालिस्तुनृपःप्रोक्तो यज्वादानैकतत्परः विपमावलयोवेपुतेनराऽसुखभागिनः १०५ अथपार्श्व लक्षणमाह मांसलमृदुभिःपार्श्वैःप्रदक्षिणावर्त्तरोमभिर्भूपाः विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीनाःपरप्रेष्याः १०६ कटेरुपरिचतुरंगुलोभागःपार्श्वशब्दवाच्यः॥ तथाचस- मांसलैर्मृदुभिःपार्श्वैर्दक्षिणावर्त्तरोमभिः नराभुम्यधिपाज्ञेयाविपरीतैः सुदुःखिताः १०७॥

ताहै और तीनवलीयोंवाला आचार्य परोपदेशके करणेवालाहोताहै और चारवलीयोंवाला बहुत संतानकर्केयुक्तहोताहै १०४ और वलियोंसेरहितराजा होताहै और यज्ञदानमें तत्परहोताहै और जिनके पटमें टेढियावलियाहोतीहैं सो दुःखभोगने वालेहोतेहैं १०५ अबपार्श्व लक्षणकहतेहैं मासकर्केयुक्त और कोमल और दक्षिणावर्त्त रोमोंकर्केयुक्त पार्श्व राजोंकेहोतेहैं और इनसे विपरीत धन और सुखसें रहितोंके और परकार्यके करणेवाल्योंके होतेहै १०६ और समुद्रकहताहै मासकर्केयुक्त और कोमल और दक्षिणावर्त्त रोमोंकर्केयुक्त पार्श्वोंवाले राजाहोतेहैं और शुष्क और वामावर्त्त रोमों वालेपार्श्व दुःखभोगने वाल्योंकेहोतेहै १०७

अव चूचुकोंके लक्षण कहतेहैं जिनके स्तनोंके अग्रभागउचे दोनो समहोतेहैं सो श्रेष्ठ भाग्योंवाले होतेहैंऔर जिनके स्तनाग्रलंबे और विषम होतेहैं सोनिर्धन होतेहैंऔर जिनके पुष्टऔर मांसमेंनिमग्न होतेहैं सो राजा होतेहैं औरसुखी होतेहैं १०८ औरसमुद्रकहताहै जिनकेस्तनोंकेउन्नतअग्रभाग सम होतेहैं सो श्रेष्ठभाग्योंवाले होतेहैंऔर जिनके एकवडा और एकछोटा स्तनोंका अग्रभागहोताहै और जिनके लंबे स्तनाग्रहोतेहैं सो दरिद्री होतेहैं और जिनके स्तनाग्र मांसमें निमग्नहोतेहैं सोराजा होतेहैं ॥ १०९ ॥ अव हृदयके लक्षण कहतेहैं जिनपुरुषोंका हृदयसम ऊचा होताहै और मोटा और अचल और मांसकर्के युक्त सो राजा होतेहैं और जिनका शुष्क और मांसकर्केरहित और रूक्ष और रोमोंकर्केयुक्त और नाडियोंकर्केयुक्त सो निर्धन होतेहैं ॥ ११० ॥ और समुद्र कहताहै

अथचूचुकलक्षणम् सुभगाभवंत्यनुद्बद्धचूचुकानिर्धनाविषमदीर्घैः पीनोपचितनिमग्नैःक्षितिपतयः चूचुकैः सुखिनः ॥ १०८॥ चूचुकस्तनाग्रम् तथाचसमुद्रः चूचुकैश्चाप्यनुद्बद्धैः सुभगाःसुखभागिनः निर्धनाविषमैर्दीर्घैर्मग्नैर्मांसयुतैर्नृपाः १०९ अथहृदयलक्षणमाह ॥ हृदयंसमुन्नतं पृथुनवेपनंमांसलंचनृपतीनां विपरीतमधमानांखररोमचितंसिरालंच ११०तथाचसमुद्रः अचलंपृथुमुच्चंचनृपाणां हृदयंस्मृतं ॥ विपरीतंसिरालंचरोमशंदुःखभागिनाम् १११ अथवक्षोलक्षणमाह ॥ समवक्षसोर्थवंतःपीनैःशूराह्याकिंचनास्तनुभिः ॥ विषमंवक्षोयेषांतेनिःस्वाःशस्त्रनिधनाश्च ११२ तथाचसमुद्रः अर्थवान्समवक्षाःस्यात्पीनैःशूराधनान्विताः ॥ अल्पैश्चविकलादीनाविषमाःशस्त्रमृत्यवः ११३ ॥

जिनका स्थिर और मोटा और ऊचा हृदय होताहै सो राजा होतेहैं और उलटा और नाडियोंवाला और रोमोंकर्केयुक्त हृदय दुःख भोगने वाल्योंका होताहै ॥ १११ ॥ अववक्षस्थलके लक्षण कहतेहैं जिनका सम वरावर वक्षस्थल होताहै सोधनी होतेहैं और जिनका पुष्ट होताहै सो शूरवीर होतेहैं और जिनका छोटा वक्षस्थल होताहै सो धनहीन होतेहैं और जिनका विषम ऊचानीमा वक्षस्थल होताहै सो निर्धन होतेहैं और शस्त्रकर्के मृत्युको प्राप्त होतेहैं ॥ ११२ ॥ और समुद्र कहताहै वरावरच्छातीवाला धनवान्औरपुष्टवडीच्छातीवाला शूरवीर और धनी होताहै और छोटीच्छातीवाला व्याकुल और दीनहोताहै और टेढी च्छातीवाला शस्त्रोंकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै ११३

अब जत्रुके लक्षण कहतेहैं मोढेयोंको और कक्षकी संधिका नाम जत्रु कहाहै जिस मनुष्यकी जत्रु टेढी होवे सो कठिन स्वभाववाला होताहै और जिसकी जत्रु संधिकर्के युक्तहोवे सो धनहीन होताहै और जिसकी जत्रु ऊचीं होवे सो भोगी होताहै और जिसकी नीमी होवे सो निर्धन होताहै और जिसकी पुष्ट जत्रु होवे सो धनी होताहै । ११४ ॥ और समुद्र कहताहै विषमजत्रुवाला क्रूरहोताहै और कठिन जत्रुवाला दरिद्री होताहैऔर ऊचीं जत्रुवाला भोगी और नीमीजत्रुवाला निर्धन होताहै और पुष्टजत्रुवाला धनी होताहै ११५ अब ग्रीवा औरपृष्टके लक्षण कहतेहैं चिपटी गर्दन वाला धनही न होताहै और शुष्क और नाडियोंवाली गर्दनवाला भी निर्धन होताहै और संढेकीन्याईं गर्दनवाला शूरवीर होताहै और बैलकीन्याईं गर्दनवाला शस्त्रकर्के मरताहै ॥ ११६ ॥

अथजत्रुलक्षणमाह विषमैर्विषमोजत्रुभिरर्थविहीनोस्थिसंधिपरिणद्धैः ॥ उन्नतजत्रुर्भोगीनिम्नैर्निस्वोर्थवान्पीनैः ११४ तथाचसमुद्रः जत्रुभिर्विषमैःक्रूरादरिद्राःक्रूरसंधिभिः ॥ भोगीचोन्नतजत्रुःस्यान्निम्नैर्निःस्वोन्यथाधनी ११५ अथ ग्रीवापृष्ठलक्षणमाह ॥ चिपिटग्रीवोनिःस्वः शुष्कासशिराचयस्यवाग्रीवामहिषग्रीव शूरःशस्त्रांतोर्वृषसमग्रीवः ॥ ११६ ॥ कंबुग्रीवोराजाप्रलंबकंठःप्रभक्षणोभवति ॥ पृष्ठमभग्नमरोमशमर्थवतामशुभदमतोन्यत् ११७ तथाचसमुद्रः ग्रीवाचवर्तुलायस्यसनरोधनवान्स्मृतः ॥ कंबुग्रीवानरायेतुराजानस्तेनसंशयाः ११८ दीर्घग्रीवानरायेतुतेपिदुःखस्यभागिनः वक्रग्रीवानरायेतेदांभिकाः पिशुनास्तथा ११९ ॥ निःस्वस्तुचिपटग्रीवःशुष्कग्रीवस्तथैवच ॥ शूरस्तुमहिषग्रीवःशस्त्रांतोवृषकंधरः १२० ॥ तथाचसमुद्रः सस्निग्धंमांसलंपृष्ठमभग्नंचाथरोमशम् ॥ सधनानांविपर्यस्तंनिर्धनानांप्रकीर्तितम् १२१

और शंखकीन्याईंकंठवाला राजा होताहै औरलंबेकंठवाला बहुत भोजनकर्ताहै औरपृष्टसँग्रभग्न औ रोमरहित धनवाल्योंका कंठहोताहै और इससें विपरीत माडाहोताहै ११७ और समुद्र कहता है जिसकी गोल गर्दन होतीहै सोधनी होताहै और शंखकीन्याईं ग्रीवावाला राजा होताहै ११८ और लंबी ग्रीवावाले दुखीहोतेहैं और बगुलेकीन्याईंगर्दनवाले दंभीहोतेहैं और चुगलहोतेहै ११९ और चिपटिग्रीवावाला निर्धनहोताहै और शुष्कग्रीवावालाबीनिर्धनहोताहै और संढेकीन्याईं गर्दनवाला शूरवें होताहै और बैलकीन्याईंगर्दनवाला शस्त्रोंकर्केमृत्युहोताहै १२० समुद्रजीकहतेहैंजिनकी पृष्टस्निग्ध औरबहुत मांसवालीहोवे और कुबीनहीहोवेरोमोंसेंरहित होवे सो पुरुषधनवालेहोतेहैं इन लक्षणोंसें उलटा होवेतोनिर्धनहोतेहैं ॥ २१ ॥

उौरकक्षकेलक्षणकहतेहैंजिनकीकक्षापरसीनेसेंरहितउौरपुष्टउौरऊंचीउौर श्रेष्ठगंधिवालीउौरसमरोमोंवालीसोधनीलोकहोतेहैंउौरइससेंविपरीतकक्षावालेनिर्धनहोतेहैं १२२ वाहुमूलकेनीचेकक्षाहोतीहैउौरसमुद्र कहताहै परसीनेसेंरहितउौरमांसककेंयुक्त उौर श्रेष्टगंधिवालीउौररोमाकर्केयुक्त कक्षा धनवाल्योंकीहोती हैं उौर इससें विपरीत निर्धनोंकी होतीहै १२३ अवअ्ंसोंके लक्षण कहतेहैं मांसकर्केरहित उौर वहुतरोमोंकर्केयुक्त उौर भग्न उौर छोटे अंस निर्धन पुरुषोंके होतेहैं उौर वडे विस्तारवाले उौर भुजोंसें मिलित उौर सुंदर पुष्ट अंस सुखवाल्योंके उौर वलवानोंके होतेहैं १२४ उौर समुद्रकहताहै केलेकेस्तंभकीन्याई उौर थकरीके मेंढयोंकीन्याई जिनोंके मोढे होतेहैं सो राजा उौर वडे भंडारवाले उौर मह्वली होतेहैं ॥ १२५ ॥ उौर मासकर्केरहित उौर वहुतरोमोंवाले मोढे निधनके होतेहैं ॥ अथ वाहुल

अथकक्षालक्षणमाह ॥ अस्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसंकुलाःकक्षाः विज्ञातव्याधनिनामतोन्यथार्थैर्विहीनानाम्१२२वाहुमूलतलंकक्षाशब्देनोच्यते तथाचस निःस्वेदनांसलाःकक्षाःसुगंधारोमसंकुलाः धनिनांतुविजानीयान्निर्धनानामतोन्यथा १२३ अथांसलक्षणमाह निर्मांसोरोमचितौभग्ना वल्पौचनिर्धनस्यांसौ विपुलावव्युच्छिन्नौसुश्लिष्टौसौख्यवीर्यवताम् १२४तथाचस- कदलीस्तंभसंकाशाअजस्कंधाश्चयेनराः राजानस्तेविजानीयान्महाकोशामहावलाः १२५ निर्मांसरोमवहुलानिर्धनस्यप्रकीर्तिताः ॥ अथवाहुलक्षणमाह करिकरसदृशौवृत्तावाजान्वलंविनौसमौपीनौ ॥ वाहूपृथिवीशानामध नारोमशौह्रस्वौ १२६ तथा उद्बद्धवहुःपुरुषोवधवंधमवाप्नुयात् ॥ दीर्घवाहुर्भवेद्राजासमुद्रवचनंतथा १२७ प्रलंववाहुरैश्वर्यंप्राप्नुयाद्गुणसंयुतम् ॥ ह्रस्ववाहुर्भवेद्दासःपरप्रेपकरस्तथा १२८ वामावर्त्तभुजायेतुयेतुदीर्घभुजानराः ॥ समानवाहवोयेतु राजानस्तेप्रकीर्त्तिताः १२९॥

क्षण कहतेहै जिनकीया भुजा हाथीकी वाहुलीकीन्यांई गोल होवें उौर जानुपर्यंत लंबिया उौर पुष्ट उौरदोनोंवरावरहोवेंसोराजाहोतेहैंउौरनिर्धनोंकियाभुजारोमोंवालियां उौर छोटियाहोतीयांहैं १२६ ॥ और समुद्र कहताहै जिसकियायाधिकीन्यांई भुजाहोवें सो मनुष्य वध और वंधनकों प्राप्त होताहै और लंवीयों भुजोंवाला राजा होताहै ॥ १२७ ॥ और अत्यंत लंवियां भुजोंवाला ऐश्वर्यकों प्राप्त होताहै और गुणोंकर्के युक्त होताहै और छोटियोंभुजोंवाला दासकर्मकरताहै और परकार्य कर्त्ताहै ॥ १२८ ॥ और जो वामावर्त भुजोंवाले और यो लंवीयोंभुजोंवाले और दोनों भुजातुल्य जिनकियां सो राजा होतेहैं ॥ १२९ ॥

अब हाथोंके लक्षण कहतेहे जिनके हाथोंकियांअगुलिया लंबीया होतीयाहैं- सो वडी आयुषावाले होतेहैं और जिनके हाथोंमें वली झुर्डी नाहिंहोतीहै सो श्रेष्ट भाग्यों वाले होतेहैं और बुद्धिमान्- जो मनुष्यहोतेहै तिनकिया अगुलीया सूक्ष्म होतीयाहैं और परकर्मके करणेवाल्योंकियां अगुलियां चिपटीया होतीयाहैं १३० ॥ और मोटियाँ अंगुलीयोंवाले धनराहित होतेहैं और जिनकिया अगुलिया वाहरमें नीमियाहोवें सो शस्त्रककें मर्तेहैं और वांदरकीन्याई हाथों वाले धनी होतेहैं और चित्रेकीन्याई हाथोंवाले पापी होतेहैं १३१ अय और कहतेहैं जिनके मणिबंधन गूढहोवें और दृढहोवें और श्रेष्टसधियोंकर्के मिलित होवें सो राजा होतेहैं और इनोंलक्षणोंसे हीन मणिबंधोंवाल्योंके हाथ छेदे जातेहैं और ढीले और शब्दकर्केयुक्त मणिवधोंवाले धनरहित होतेहै ॥ १३२ ॥ और कहतेहैं जिसके हाथकीतली नीमी होवे सो पिताके धनकर्के हीन होताहै और पो

इदानींहस्ततलक्षणमाह ॥ हस्तांगुलयोदीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्चसुभागानां मेधाविनांचसुक्ष्माश्चिपिटाःपरकर्मनिरतानां ॥ १३० ॥ स्थूलाभिर्धनरहितावहिर्नताभिश्चशस्त्रनिर्याणाः कपिसदृशकराधनिनोऽव्याघ्रोपमपाणयः पापाः ॥ १३१ ॥ अन्यदप्याह मणिवधनैर्निगूढैर्दृढैश्चसुश्लिष्टसाधिभिर्भूपाः ॥ हीनैर्हस्तच्छेदाःश्लथे सशब्दैश्चानिर्द्रव्याः ॥ १३२ ॥ अन्यदप्याह पितृवित्तनाविहीनाभवंतिनिम्नेनकरतलेननराः संवृत्तनिम्नैर्धनिनःप्रोत्तानकराश्चदातारः १३३ अन्यदप्याह तुपसदृशनखाःक्लीवाश्चिपटैःस्फुटितैश्चवित्तसंत्यक्ताः कुनखविवर्णैःपरतर्ककाश्चताम्रैश्चभूपतयः १३४ अन्यदप्याह अंगुष्ठयवैराढ्याःसुतवतोंगुष्ठमूलजैश्चयवैः दीर्घांगुलिपर्वाण सुभगादीर्घायुषश्चैव १३५ अन्यदप्याह स्निग्धानिम्नारेखाधनिनांतद्व्यत्ययेनानि-स्वानाम् विरलांगुलयो निःस्वाधनसंचयिनोघनांगुलयः १३६

डीनीमी तली वाले धनी होतेहै और उची तली वाले दाता होतेहैं । १३३ । और कहतेहैं जिनके तोहों की न्याई नख होवें सो नपुंसक होतेहे और चिपिटे और फूटे नखोंवाले धनहीन होतेहैं और कुनखी और मलीन नखोंवाले दूसरेका तर्कके करणे वाले होतेहे और लालनखोंवाले राजा होतेहै । १३४ । और कहतेहैं जिनके अगूठेमें यवांका आकारहोवे सो धनी होतेहैं और जिनके अगूठेके मूलमें यवहोवें सो पुत्रोंवाले होतेहैं और लंबीयों अगूलीयोंके ग्रंथियोंवाले श्रेष्ठ भाग्योंवाले और वडी आयुषावाले होतेहैं । १३५ । और कहतेहे धनियोंपुरुषोंकेहाथमें स्निग्ध और नीमिया रेखा होतीयाहैं और निर्धनोंके हाथोंमेंतिनस विपरीत होतीयाहैं और विरलीयों अंगुलीयोंवाले धनहीन और घनिर्मी अगुलीयोंवाले धनके संचयवाले होतेहैं ॥ १३६ ॥

ओर कहतेहे ॥ जिसके मणिबधनसे निकसकर्के तीनरेखा हाथकीतलीमे स्थितहोवे सो राजा होताहे ओर जिनके हाथमें दोमछलीकी रेखा होवे सो नित्यप्रति लाभदेतीहै १३७ ओर धनवानोंके हाथमें वज्रकीन्याई रेखा होतीहै ओर विद्यावानोंके हाथमे मछलीके पुच्छकीन्याई रेखा होतीहै ओर राजयोंके हाथमे शंखकीन्याई ओर छत्रकीन्याई ओर पालकीकीन्याई ओर हाथीघोडेकी न्याई ओर कमलकीन्याईरेखाहोतीहे १३८ ओर बडेधनवालेयोंकेहाथमें कलशेकीन्याई ओरकमल केदडकीन्याई ओरध्वजाकीन्याई ओर अकुशकीन्याई रेखाहोतीहे ओरजिनकेहाथमे मालाकीन्याई रेखाहोवे सो धनीहोतेहे ओर जिनकेहाथमेस्वस्तिककीन्याई अष्टदलरूपक रेखाहोवे सो ऐश्वर्यभोगताहै १३९ ओर जिसके हाथमे चक्रकीन्याई ओर खड्गकीन्याई ओर कुहाडेकीन्याई ओर त टालेकी न्याई ओर वरछीकी न्याई ओर धनुषकी न्याई ओर वरछेकी न्याई रेखाहोवे सो सेनाके स्वामी होतेहें ओर उखलकीमुसलकी रेखावाले यज्ञकरणेवाले होतेहे १४० ओर मच्छ ओर ध्व

अन्यदप्याह तिस्रोरेखामणिबंधनोत्थिता करतलोपगानृपते· मीनयुगांकित पाणिर्नित्यसत्रप्रदोभवति १३७ वज्राकाराधनिनांविद्याभाजांचमीनपुच्छानि भा· शंखातपत्रशिबिकागजाश्वपद्मोपमानृपतेः १३८ कलशमृणालपताकांकु शोपमाभिर्भवतिनिधिपाला· दामनिभाभिश्चाढ्या स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्यम् १३९ चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनु कुंतसन्निभारेखाः कुर्वंतिचमूनाथंयज्वा नमुलूखलाकाराः १४० मकरध्वजकोष्टागारसन्निभाभिर्महाधनोपेता· वेदी निभेनचैवाग्निहोत्रिणोब्रह्मतीर्थेन १४१ वापीदेवकुलाद्यैर्धर्मंकुर्वंतिचत्रिकोणा भि अंगुष्टमूलेरेखास्तुपुत्रा स्युर्दारिकाःसूक्ष्मा· १४२ रेखा·प्रदेशिनिगा शता युषांकल्पनीयमूनाभिः छिन्नाभिर्द्रुमपतनंबहुरेखारेखिनोनि·स्वाः १४३ अथ चिबुकाधरदशनानांलक्षणमाह अतिकृशदीर्घैश्चिबुकैर्निर्द्रव्यामांसलैर्धनोपेताः बिंबोपमैरवक्रैरधरैर्भूपास्तनुभिरस्वा १४४

जा ओर कोठारकी न्याई रेखावाले बडे धनी होतेहैं ओर वेदकीन्याई ब्रह्मतीर्थ कर्के अर्थात अं गुष्ट मूल मे वेदी होवे तब अग्निहोत्री होतेहे १४१ ओर जिनके हाथमें बाउलीकीन्याई ओर दे वता कीन्याई ओर त्रिकोणरेखाहोवे सो धर्म करणे वाले होतेहे ओर कहतेह अंगुष्टके मूलमे जो रेखा सो दीर्घ होवे तब पुत्र जन्मतेहे ओर सूक्ष्महोय तब कन्याजन्मतीहै १४२ ओर जिसके हाथमे चिची अंगुलीके नीचेसे लेकर्के तर्जनीके पर्यंत रेखाहोवे सो सउवर्ष जीताहे ओर उनहो वे तब कल्पनाकर्के वर्ष संख्या कहे ओर सो रेखाछिन्नहोवे तब वृक्षसे गिरताहे ओर बहुतरेखा होवे तब धनहीन होतेहे १४३ अबचिबुक अधर दांतोके लक्षण कहतेहै जिसकीठुडी बहुतदृश ओर लंबीहोवे सो धनहीनहोताहै ओर धनवानोंकीठुडी मांसकर्के युक्त होतीहै ओर जिनकेकदुरिकीन्याई लाल ओठ होवेहे ओर टेडेनहीं होवेह सो राजा होवेहे ओर जिनके सूक्ष्म ओष्ट होवेहे सो निर्धन होतेहे १४४

और स्फुटित और खंडित और विवर्णरूक्ष ओठोंवाले धनरहितहोतेहैं ॥ और स्निग्ध और घने दंतोंवाले और तीक्ष्णदाढों वाले और समबराबर दंत शुभ होतेहैं ॥ १४५ ॥ और समुद्र कहताहै मांसरहित और लंबे चिबुकवाले निर्धन और मांससहित चिबुकवाले धनी और पुत्रोंवालेहोतेहैं १४६ और लालओठोंवाला राजा और कमल कीन्यांई ओठोंवाला धनीहोताहै और मोटे ओठों वालेऔर बहुत रोमों वाले औरशुष्कओठों वाले औरसूक्ष्मओठों वाले दुःखीहोतेहे १४७ और जिनके ऊपरले ओठलालहोवें सो धनवान् होतेहे और सुख करके युक्त होतेहैं और खंडे ओठों वाले द्रव्य हीनहोतेहैं और रूखे ओठोंवाले दुःखी होतेहैं १४८ और जिनके दंतकुंदपुष्पकीडोडीकी न्यांई होवें सो राजा होतेहैं और रिच्छोंकीन्यांई और वानरोंकीन्यांई दंतों वाले नित्य प्रतिक्षुधाकर्के

उष्ठैःस्फुटितविखंडितविवर्णरूक्षैश्चधनपरित्यक्ताः स्निग्धाघनाश्चदशनाःसुती क्ष्णदंष्ट्राःसमाश्चशुभाः ॥ १४५ ॥ तथाचसमुद्रः निर्मांसैश्चिबुकैर्दीर्घैर्निर्द्र व्याश्चानुवाचिनः समांसलैर्धनोपेतावहुपुत्रसमावृताः ॥ १४६ ॥ रक्ताध रोनरपतिर्धनवान्कमलाधरः स्थूलोष्ठवहुलोमाचशुष्कैःक्षीणैश्चदुःखितः १४७ उत्तरौष्ठैर्लोहितैश्चधनिनःसौख्यसयुताः खंडैर्विवर्णैर्निर्द्रव्याःरूक्षैर्दुःखसमन्विताः १४८ कुंदकुड्मलसंकाशैःप्रकारैर्दशनैर्नृपाः ऋक्षवानरदंताश्चानत्यंक्षुत्परि पीडिताः १४९ हस्तिदंताःखरदंताःस्निग्धदंताःगुणान्विताः करालैर्विषमै र्दीर्घैर्दशनैर्दुःखजीविनः १५० द्वात्रिंशद्दताराजानएकोनश्चापिभोगवान् ॥ त्रिंशद्दतानरायेतेसुखदुःखस्यभागिनः १५१ एकोनत्रिंशद्दशनाःपुरुषादुःख जीविनः ॥ अष्टाविंशद्दतायेपांतेतिदुःखस्यभाजनाः १५२ अथजिव्हातालवो र्लक्षणमाह ॥ जिव्हारक्तादीर्घाश्लक्ष्णासुसमाचभोगिनोज्ञेया श्वेताकृष्णापरु षानिर्द्रव्याणांतथातालुः१५३ तथाचसमुद्रः कृष्णाजिव्हाभवेद्यस्यसमलायदि वाभवेत् ॥ सपापवान्भवेन्मर्त्योरूक्षास्थूलाथवाभवेत् १५४॥

पीडित होतेहैं और हाथीकीन्यांई और खोतेकीन्यांई स्निग्ध दंतोंवाले गुणी होतेहैं और विकराल और लंबे दंतोंवाले दुःखकर्के जीतेहैं १५० और बत्ती दंतोंवाले राजा होतेहे एकत्री दंतोंवाला भो गवान् होताहे और तीस दंतोंवालेमनुष्यसुख और दुःख भोगतेहैं १५१ और उनतीदंतोंवाले पुरुषदुःखकर्के जीतेहैं जिनके अठाईस दंतहोतेहे सो अत्यंतदुःखी होतेहैं १५२ अबजिव्हातालुकेलक्ष ण कहते जिनकी जिव्हा लाल और लंबी और श्लक्ष्णबराबर होतीहै सो भोगोंके भोगने वाले होतेहैं जिनकीजीभ्याचिट्टी और काली और कठोरहोतीहै सो द्रव्यहीन होतेहैं और तैसेहिजिव्हाकी न्यांई तालुका फल कहाहै १५३ और समुद्रकहताहै जिसमनुष्यकी काली जिव्हा होवे और मलीन जिव्हा होवे और कठोर और मोटी जिव्हा होवे सो मनुष्य पापी होताहै १५४

और श्वेत जिव्हा वाले मनुष्य शौचाचारमें हीन होवेहैं और कमलकी न्यांई और सूक्ष्म और लंबी जिव्हा श्रेष्ठ होतीहै १५५ और जिनोंकी जिव्हा वडीमोटी और वडीचौडीनहिंहोतीहैं सो राजा होतेहैं और जिसकी जिव्हा आगेसेंनीमी और लंबी और सूक्ष्म और आगेसें लाल होवे सो मनुष्य संपूर्णविद्याके जानने वाला होताहै इसमें संशयनहिंहै १५६ और कहतेहैं जिसमनुष्यका काला तालु होवे सो मनुष्य कुलके नाशकरणे वाला होताहै और विरूत और स्फुटित तालु होवे सोशुभनहिं होताहै १५७ और कहतेहैं सिंहकीन्याईं तालुवाला और हाथीकीन्याईं तालुवाला राजाहोताहै और कमलकीन्याईं तालुवाला राजा होताहै और श्वेत तालुवाला निर्धन होताहै १५८ अब मुखके लक्षण कहतेहैं सौम्य और गोल और निर्मल और सुंदर और सम मुख राजाओंका होताहै

श्वेतजिव्हानराज्ञेयाःशौचाचरविवर्जिताः पद्मपत्रसमाजिव्हासूक्ष्मादीर्घासुशोभना१५५नस्थूलानातिविस्तीर्णायेषांतेमनुजाधिपाः निम्नादीर्घाचहृस्वाचरक्ताग्ररसनायदि सर्वविद्याप्रवक्तासोभवेन्नास्त्यत्रसंशयः१५६ कृष्णतालुर्नरोयस्तुसभवेत्कुलनाशनः विकृतःस्फुटितोयस्यतालुस्तस्यनशोभनः १५७ सिंहतालुर्नरपतिःगजतालुस्तथैवच ॥ पद्मतालुर्भवेद्राजाश्वेततालुश्चनिर्धनः १५८ अथास्यलक्षणमाह ॥ वक्त्रंसौम्यंसंवृत्तममलंश्लक्ष्णंसमंचभूपानाम् विपरीतंक्लेशभुजांमहामुखदुर्भगानांच १५९ ॥ तथाच सौम्यंचसंवृतंवक्त्रं अमलंयस्यदेहिनः महाराजाभवेन्नित्यंविपरीतेतुनिर्धनः१६०अथमुखलक्षणमाह स्त्रीमुखमनपत्यानांशाठ्यवतांमंडलंपरिज्ञेयम् दीर्घंनिर्द्रव्याणांभीरुमुखाःपापकर्माणः १६१ चतुरस्रधूर्तानांनिम्नवक्त्रंचतनयरहितानाम् कृपणानामतिहृस्वंसपूर्णंभोगिनांकांतम् ॥ १६२ ॥

और इनसेंविपरीत क्लेशभोगने वाल्योंका होताहै और वडामुख दुर्भगोंका होताहै १५९ और समुद्रकहताहै सौम्यऔर गोलऔर निर्मलमुखजिसका होताहैसो महाराजाहोताहै और इससें विपरीत मुखवाला निर्धनहोताहै १६० और कहतेहैं जिनका स्त्रियोंकीन्याईं मुख होताहै सो संतानकरके रहित होतेहै और जिनका वर्तुल मुख होताहै सो शठता करणेवाले होतेहै और जिनका लंबा मुख होताहै सो द्रव्यहीन होतेहै और जिनका डरकीन्याईं मुख होताहै सो पापकर्मोंके करणेवाले होतेहै १६१ और जिनका चारकोणवाला मुख होताहै सो धूर्त होतेहैं और जिनका नीमा मुख होताहै सो पुत्रोंकरके रहित होतेहै और कृपणोंका बहुत छोटा मुख होताहै और भोगीपुरुषोंका मुख पूर्ण और सुंदर होताहै १६२

और समुद्र कहताहै संतानकर्के रहितोंका मुखस्त्रीकी न्याई और गोल मुख शठों का और लंबामुख ब्राह्मणोंका और भययुक्त मुख दुष्टबुद्धिवाल्याका होताहै ॥ १६३ ॥ और चारकोणोवाला मुख धूर्तोंका और नीमा मुख पुत्रहीनोंका और छोटा मुख कृपणोंका और चिपटा मुख परोपजीवियोंका होताहै १६४ और जिसका मुख मांसवाला और स्निग्ध और प्रभाकर्केयुक्त और देखनेमेंसुंदर और श्रेष्ठवर्णकर्के युक्त और संधियोंकर्के विश्लिष्ट सो मनुष्य निरंतरसुखी होतेहै १६५ अब श्मश्रुकेलक्षण कहतेहैं ॥ जिसकी दाढीके बाल आगेसें स्फुटितनाहिंहोवें और स्निग्ध होवें और कोमल और उन्नत होवे तब शुभ होताहै और जिसकी दाढी लालवर्णकीहोवै और कठोर होवेऔर थोडेवालोंवाली होवे सो चोर होताहै १६६ और समुद्र कहताहै स्निग्ध और

तथाचसमुद्रः स्त्रीमुखंनिरपत्यानांमंडलंशाठ्यसेविनां दीर्घंमुखंचविप्राणांभीरुवक्त्रादुराशयाः १६३ चतुरस्रंतुधूर्त्तानांनिम्नैःसुतविवर्जिताः ॥ कृपणानांतथाहूस्वंचिपटंपरजीविनां १६४ यन्मुखंमांसलंस्निग्धंसप्रभंप्रियदर्शनम् वर्णाढ्यंसंधिविश्लिष्टंअजस्रंसुखभागिनाम् १६५ अथश्मश्रुलक्षणम् ॥ अस्फुटिताग्रंस्निग्धंश्मश्रुशुभंमृदुचसन्नतंचैव ॥ रक्तैःपरुषैश्चौराःश्मश्रुभिरल्पैर्विज्ञेयाः १६६ तथाचसमुद्रः ॥ स्निग्धमस्फुटिताग्रंचसन्नतंश्मश्रुचेष्यते ॥ रक्तैरल्पैस्तथारूक्षैःश्मश्रुभिस्तस्कराःस्मृताः १६७ अथकर्णलक्षणमाह निर्मांसैःकर्णैःपापमृत्यवश्चपॆटैःसुवहुभोगाः कृपणाश्चहूस्वकर्णाःशंकुश्रवणाश्चभूपतयः १६८ रोमशकर्णादीर्घायुषश्चधनभागिनोविपुलकर्णाः ॥ क्रूराःसिरावनद्धैर्व्यालंबैर्मांसलैःसुखिनः १६९ तथाचसमुद्रः हूस्वकर्णामहाभोगामहाकर्णाश्चयेनराः आवर्तकर्णाधनिनःस्निग्धकर्णास्तथैवच १७०

आगेसें अस्फुटित और श्रेष्ठसंनत दाढी शुभ होतीहै और लालरंगकी और रूखी और थोडेवालोंवालीदाढी कर्के चोर होताहै १६७ अब कर्णोंके लक्षणकहतेहैं मांससें हीन कर्णोंवालेकी अपमृत्यु होतीहे और चिपटे कर्णोंवाले भोगोंको भोगतेहैं और छोटे कर्णोंवाले कृपण होतेहै और शंकु किलेकीन्याई कर्णोंवाले सेनाके स्वामी होतेहे १६८ और जिनके कर्णोंमें रोमहोवें सो वडीआयुषावाले होतेहे और वडेकर्णोंवाले धनी होतेहे और नाडियोंकर्केयुक्त कर्णोंवाले क्रूरहोतेहैं और लंबे और मांसवाले कर्णोंकर्के सुखी होतेहैं १६९ और समुद्र कहताहै जो मनुष्य वडेकानोंवाले होतेहैं सो भोगी होतेहैं और जिनके कर्णोंमेंआवर्त होताहै सो धनी होतेहैं और स्निग्धकर्णोंवाले भी धनीहोतेहैं १७०

श्रीर शंकुकीन्याईं कानों वाले वडी श्रायुषा वालेहोतेहै श्रीर श्रावर्त कर्णों वाले थोडेधनीहोतेहे श्रीर लंबे कर्णों वाले सुखी होतेहैं श्रीर तपस्वीहोतेहैं १७१ श्रीर मांसकर्के रहित कानों वाले खोटीमृत्युसें मरतेहैं श्रीर चिपटे कर्णों वालेभोगभोगतेहैं श्रीर रोमोंवाले कर्णोंकर्के वडी श्रायुषा वालेहोतेहैं १७२ श्रीर नाडियोंवालेकर्णोंकर्के क्रूर श्रीर मास कर्के युक्तकर्णोंकर्केसुखीहोतेहै १७३ श्रवगंडश्रीर नासकाकेलक्षणकहतेहैं नीमे गंडस्थलों वाला भोगीहोताहै श्रीर मास कर्के पूर्णगंडस्थलों वाला मंत्रीहोताहै श्रीर तोतेकीन्याईं नासा वाला सुखीहोताहै श्रीर शुष्क नासिकावाला चिरकालजीवताहै ॥ १७४ ॥ श्रीर छिन्नकीन्याईं नासावाला श्रगम्यगामिहोताहै श्रीर लंबी नासिकावाला सौभाग्य कर्के युक्त होताहै श्रीर श्राकुंचित्त नासोंवाला चोरहोताहै श्रीर चिपिटी नासावाला स्त्रीकोंहतकर्त्ताहै



दीर्घायुषःशंकुकर्णास्तुटिकर्णामहाधनाःसुखान्वितादीर्घकर्णालंबकर्णास्तपश्विनः १७१ निर्मांसैःपापमरणाश्चिपटैर्भोगिनोनराः दीर्घायुषोलोमकर्णाधनिनोविपुलैःस्मृताः १७२ सिरावनद्धैर्विषमामांसलैःसुखभागिनः १७३ अथगंडनासालक्षणमाह भोगीत्वनिम्नगंडोमंत्रीसंपूर्णमांसगंडोयःसुखभाक्शुकसमनासश्चिरजीवीशुष्कनासश्च १७४ च्छिन्नानुरूपयागम्यगामिनोदीर्घयातुसौभाग्यं श्राकुंचितयाचौराःस्त्रीमृत्युःस्याच्चिपटनासः १७५ धनिनोग्रवक्रनासादक्षिणविनताःप्रभक्षणाःक्रूराः ऋज्वीस्वल्पच्छिद्रासुपुटानासासुभाग्यानाम् १७६ तथाचस- शुकनासःसौख्यभोगीशुष्कनासाश्चिरायुषः च्छिन्नानुरूपापुंसांस्यान्नासातेऽगम्यगामिनः १७७ दीर्घनासाभोगयुक्ताश्रग्रवक्राधनान्विताः क्रूरादक्षिणवक्राश्चस्पष्टनासानृपोत्तमाः १७८ स्त्रीमृत्युश्चपटाभिश्चकुटिलाभिश्चतस्कराः १७९ अथक्षुतलक्षणमाह

१७५ ॥ श्रीर श्रागेसें टेढी नासा वाले धनीहोतेहै श्रीर दक्षिणमें नीमी नासा वालेवहुत भोजन करतेहे श्रीर क्रूरहोतेहै श्रीर छोटे छिद्रोंवालीश्रीर श्रेष्ट पुटोंवाली नासा भाग्यवानोंकोहोतीहै १७६ श्रीर समुद्रकहताहै तोतेकी न्याईंनासा वालासुख भोगताहै श्रीर शुष्कनासावालावडी श्रायुषावाला होताहै श्रीर छिन्ननासिकाकीन्याईंनासिकावालायो पुरुषहैंसो श्रगम्यगामीहोताहै १७७ श्रीर लंबी नासावाले भोगों कर्के युक्त होतेहे श्रीर श्रागेसें वक्र नासावालेधनीहोतेहे श्रीर दक्षिण मेंवक्रनासावाले क्रूर होतेहै श्रीर स्पष्टसूधी नासावाले श्रेष्ट राजा होतेहैं १७८ श्रीर चिपिटी नासावाले स्त्रीकेहतकरणे वालेहोतेहै श्रीर कुटिलनासावाले चौर होतेहै १७९ श्रव छिकाके लक्षणकहतहे

और धनिलोंकोंकी छिकएकवार वादोतीनवारङकठीनादकर्के सहितहोतीहैं और वडीआयुषावाल्यों कीछिकस्वर सहितहोतीहै १८० और पराशरकहताहै भोगी पुरुषोंको एकछिकआवतीहै और धनीलों कोंकोंइकछिदोछिकाहोतीयाहै और वडीआयुषा वाल्योंकोतीनछिकाइकट्ठीयाआवतीयाहै और चारछि का भोगकेनाश करणे वालीयांहोतीयाहे और चारसें अधिक छिका आवें सो दोषसेंवायु विकार कर्के होतीयाहै तिनका शुभाशुभ फल नहिंहोताहै ॥ १८१ ॥ अब लोचनोंके लक्षण कहतेहैं ॥ जिनके कमलदलकी न्याईं लोचनहोतेहैं सो धनी होतेहैं और जि नके नेत्र „कोणोंमें लालहोतेहैं सो शोभावाले होतेहे और जिनके मखी‚कीन्याई पिंगलवर्णकेने त्रहोतेहैं सो वडेधनकों प्राप्तहोतेहे और बिल्लेकीन्याईं नेत्रोंवाले पापी होतेहैं १८२ और हरिणकी न्याईं और इरेकीन्याईनेत्रोंवाले चोरहोतेहे और केकरनेत्रोंवाले क्रूरहोतेहैंऔर हाथीकीन्याईं नेत्रोंवा

धनिनांक्षुतंसकृद्धित्रिपिंडितंह्रादिसानुनादंच दीर्घायुषांप्रसक्तंविज्ञेयंसंहि तंचैव ॥ १८० ॥ तथाचपराशरः ॥ सकृत्क्षुतभोगवतांद्विर्धनायचिरायुषाम् चतु· स्याद्भोगनाशायपरमस्मात्तुदोषजम् ॥ १८१ ॥ अथलोचनलक्ष णमाह ॥ पद्मदलाभैर्धनिनोरक्तांतविलोचना श्रियोभाजःमधुपिंगलैर्महार्थां मार्जारविलोचनै·पापाः ॥ १८२ ॥ हरिणाक्षामंडललोचनाश्चजिह्मैश्च लोचनैश्चैराः क्रूरा केकरनेत्रागजसदृशविलोचनाश्चभूपतयः १८३ ऐश्वर्यं गभीरैर्नीलोत्पलकांतिभिश्चविद्वांसः अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनभ वति १८४ मंत्रित्वस्थूलदृशांश्यावाक्षाणांचभवतिसौभाग्य दीनादृक्नि स्वानांस्निग्धाविपुलार्थभोगवताम् १८५ तथाच समेगोक्षीरवर्णाभेरक्तांते कृष्णतारके प्रसन्नेचविशालेचस्निग्धेचैवायतेशुभे .१८६ अतसीपुष्पसंका शेभवेतांयस्यलोचने भूपति·सतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा १८७ व्याघ्रचक्षु र्धनैर्युक्ताःकेकराक्षा कलिप्रियाः विडालहंसवर्णाश्चभवतिपुरुषाधमाः १८८

ले राजा होतेहे १८३ और गंभीर नेत्रोंवाले एश्वर्यकर्केयुक्त होतेहैं और नीलकमलकीन्याईं नेत्रों वाले विद्यावान् होतेहें और असतकालेआन्योंवालेके नेत्र फूटजातेहे १८४ और मोटे नेत्रोंवाला मंत्री होताहै और श्यामनेत्रोंवालासोभाग्यकर्के युक्त होताहै और दीनदृष्टिवाला धनहीनहोताहै और भोगवाल्योंके और धनवाल्योंकेनेत्र स्निग्ध और विस्तारवाले होतेहे १८५ और समुद्र कहताहे जिन के वरावर और गोंके दुग्धकीन्याईं नेत्र होतेहैं और कृष्णवर्णके तारयोंवाले होतेहैं और प्रसन्न और वडे और स्निग्ध और चोडे सोशुभ होतेहे १८६ और जिनके नेत्र अलसीकेपुष्पकीन्याईं होतेहैं सोराजाहोतेहैं इहेसमुद्रकावचनहे १८७ और चित्रेकीन्याईंनेत्रोंवालेधनोंकर्के युक्त होतेहैंऔर नेढीदृष्टिवालेलडाईकेप्यारेहोतेहे और बिल्लेकीन्याईं और हंसकी न्याईं नेत्रोंवाले नीच होतेहैं १८८

और मोर की न्यांई और नउल की न्यांई नेत्रों वाले मनुष्य मध्यम होतेहैं और मखीर की न्यांई पिंगलनेत्रों वाला सर्वदालक्ष्मी वाला होताहै १८९ और घृत की न्यांई पिंगल नेत्रों वाले राजा और भोगोंकर्के युक्त होतेहैं और सवज नेत्रों वाले और हाथी की न्यांई पिंगलनेत्रों वाले धनके स्वामी होतेहैं १९० और बलवान् गुणों कर्के युक्त पृथ्वीमें चक्रवर्तीहोतेहैं और जिनके तप्तसुवर्णकी न्यांई नेत्रहोतेहैं १९१ सो राजा होतेहै असें समुद्रने कहाहै१९२ यो दो केवराबर नेत्रझमकतेहैं सो धनीहोतेहै और तीनके बराबरनेत्रझमकतेहैं सोसुखी होतेहैं १९३ योचारके बराबरनेत्रझमकतेहैं सो बडेधनवाले होतेहैं यो पांच केवराबर नेत्रझमकतेहैं सोचिरकाल जीवतेहैं १९४ अब भ्रुवोंके लक्षण कहतेहैं जिसकियांभ्रुवां मध्यसें उन्नत होवें सो थोडी आयुषावाले होतेहैं और

मयूरनकुलाक्षाश्चनरास्तेमध्यमाःस्मृताः नश्रीस्त्यजतिसर्वत्रपुरुषंमधुपिंगलं १८९ आज्यपिंगलनेत्राश्चराजानोभोगसंयुताः लोचनाहरिताभाश्चगजापिंगधनेश्वराः १९० बलवतोगुणोपेताःपृथिव्यांचक्रवर्तिनः तप्तहाटकवर्णाभेभवेतांयस्यलोचने १९१भूपतिःसतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा १९२ द्विमात्रस्पंधिनोयेतुधनिनस्तेप्रकीर्तिताः त्रिमात्रस्पंधिनोज्ञेयाःपुरुषाःसुखजीविनः १९३ चतुर्मात्रनिमेषश्चधनवान्परिकीर्तितःदीर्घायुषोधर्मरताःपंचमात्रनिमेषिणः१९४ अथभ्रूलक्षणमाह अभ्युन्नताभिरल्पायुषोविशालोन्नताभिरतिसुखिनः विषमभ्रुवोदारिद्रावालेंदुनतभ्रुवःसधनाः १९५ दीर्घाऽसंसक्ताभिर्धनिनः खंडाभिरर्थपरिहीनाः मध्यविनतभ्रुवोयेतेसक्ताःस्त्रीष्वगम्यासु १९६ तथाचस अभ्युन्नताभिःस्वल्पायुर्विशालाभिःसुखान्विताः मध्योन्नताभ्रुवोयेचपापसक्ताश्चतेनराः १९७ बालेंदुभ्रूसमाश्चाढ्यादरिद्राविषमभ्रुवः असंलग्नभ्रुवोयेतुधनिनस्तेनराःस्मृताः १९८

विस्तारकर्के उन्नतहोवें तब बडे सुखवाले होतेहैं और न्यूनाधिक भ्रुवोंवाले दारिद्रि होतेहै और द्वितीयाकेचंद्रमाकीन्याई भ्रुवों वाले धनी होतेहै १९५ और लंबियां भ्रुवों वाले और आपसमें नाहिमिलता होवें तब धनी होतेहैं और खंडित भ्रुवों वाले धनहीन होतेहै और जिनकिया भ्रुवां मध्यसें नींमीया होवें सो अगम्यास्त्रियोंमें शक्तहोतेहे १९६ और समुद्र कहताहै जिसकियाभ्रुवां माधेमे ऊचीहोवें सो थोडी आयुषा वाला होताहै और विशाल भ्रुवों वाले सुखीहोतेहे और जिनकियां भ्रुवां मध्यसें ऊचीयाहोवें सो पापमें तत्पर होतेहैं १९७ और बालचंद्रमाकीन्याई भ्रुवोंवाले धनीहोतेहै और विषमभ्रुवों वाले दारिद्रि होतेहैं और जिनकियां भ्रुवांआपसमें नाहि मिलतहोवें सोधनाढ्यहोतेहे १९८

श्रोर खडित भुवों वाले धन हीनहोतेहे श्रोर विदम भुवो वाले नीच होतेहे ॥ श्रव शख श्रोर ललाटके लक्षण कहतेहैं ॥ जिसके शख ऊचे श्रौर विस्तार वाले होवे सो धनी होताहे श्रोर नीमेशखोंवालापुत्र श्रौर धनसे रहितहोताहै श्रौर टेढेमाथेवाले धनहीन होतेहे श्रोर श्रर्धचद्रमा कीन्याई माथे वाले धनीहोतेहे १९९ श्रोर जिसका माथा शिप्पिकीन्याड आगेसे चउडा होवे सो श्राचर्यताको प्राप्त होताहै परोपदेश कर्त्ता होताहै श्रोर जिसका माथा नाडियो वर्क युक्त होवे सो पाप करणे वाला होताहे श्रौर जिसका माथा नाडियो कर्के ऊचा होवे सो धनी होताहै श्रौर स्व स्तिककी न्याई नाडियोकर्के चिन्हत होवे सोबी धनी होताहै स्वस्तिकः सर्वतोभद्रोपमः २००

खंडाभिर्निर्धनाज्ञेयाविपमाभिर्नराधमाः अथशखललाटलक्षणमाह ॥ उन्नतविपुले·शखैर्धनिनोनिम्नै·सुतार्थसत्यक्ताः विपमललाटाविधनाधनवतो र्धेन्दुसदृशेन ॥ १९९ ॥ शुक्तिविशालैराचार्यतासिरासततैरधर्मरताः उन्नतसिराभिराढ्याःस्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च २०० निम्नललाटावधव धभागिनःक्रूरकर्मनिरताश्चश्रभ्युन्नतैश्चभूपा·कृपणाःस्युःसवृत्तललाटा· २०१ तथाचस- ललाटेनार्धचद्रेणभवतिपृथिवीश्वरा· विपुलेनललाटेनमहाधनयुताः स्मृता २०२ विपमेनाधमाज्ञेया·पापा·मर्त्या·सिराततैः निम्ननतुललाटेनक्रू रकर्मरतानरा २०३ श्रभ्युन्नतैश्चभूपा स्युःसवृत्तै कृपणा·स्मृता·२०४श्रथ रुदितलक्षणमाह रुदितमदीनमनश्रुस्निग्धंचशुभावहमनुष्याणां रूक्षदीनप्रचु रास्त्रुचैवनशुभप्रदपुसाम् २०५

ोर नीमें मस्तकवाला वधवधनको प्राप्तहोताहै श्रौर ऊचेमाथेवाले राजा होतेहे श्रोर गोलमाथेवा ले कृपणहोतेहे २०१ ॥ श्रोर समुद्र कहताहै श्रर्धचंद्रमाकीन्याई माथेवाले राजा होतेहे श्रौर वडे माथेवाले वडेधनवाले होतेहैं ॥ २०२ श्रोर विषम माथेवाले नीच होतेहे श्रौर नाडियोवाले मा थेवाले पापी होतेहे श्रोर नीमेमाथेवाले क्रूरकर्मकरणेवाले होतेहे ॥ २०३ ॥ श्रोर ऊचेमाथेवाले नृपति होतेहे श्रौर गोलमाथेवाले कृपण होतेहे ॥ २०४ ॥ श्रव रुदितके लक्षण कहतेहे श्रदी नकीन्याई श्रौर श्रसुपातसे रहित श्रौर स्निग्ध रोदन मनुष्योंको शुभकेदेने वालाहोताहै श्रौर रूक्ष श्रौर दीनकीन्याई श्रौर वहुतश्रश्रुपातोकर्केयुक्त रोदन श्रशुभके देनेवाला होताहै ॥ २०५ ॥

और समुद्र कहताहै अदीनकीन्याई और असुपातोंसें हीन और स्निग्ध रोदन शुभ होताहै और रूक्ष और दीनकीन्याई और असुपातोंकर्के युक्त रोदन अनिष्ट करणे वाला होताहै ॥ २०६ ॥ अव हसने के लक्षण कहतेहैं देहकंपके बिना जो हासहै सो शुभके देनेवाला होताहै और नेत्र मीटकर्के पापी हसतेहैं और वारंवारहसनेवाले दुष्टहोतेहैं और उन्मादवाले पीछेसें वारंवार हसतेरहतेहैं २०७ ॥ और समुद्र कहताहै कंपरहित हसना राज्योंका होताहै और शुभके देने वाला होताहै और कंपसाहित, हसना अशुभकों देताहै और दोषकर्के युक्त योहै सो वारंवार हसताहै और नेत्र मीलनकर्के हसना अशुभके देनेवाला होताहै ॥ २०८ ॥ अव माथेकी रेखाके लक्षण कहतेहैं जिसके सारे माथेमें तीन रेखा प्रकट होवें सो सौ । १०० । वर्ष जीताहै और जिसके माथेमें चाररेखा होवें सो राजा होता

तथाचसमुद्रः अदीनानस्रुसाहितंस्निग्धंचरुदितंशुभम् ॥ रूक्षंदीनंवाष्पयुतंपुरुषाणामनिष्टदम् २०६ अथहासितलक्षणमाह ॥ हसितंशुभदमकंपंसनिमीलितलोचनंतुपापस्य ॥ दुष्टस्यहासितमसकृत्सोन्मादस्यासकृत्प्रांते २०७ तथाचसमुद्रः हासितंकंपरहितंनृपाणामन्यथाऽशुभम् ॥ असकृद्दोषयुक्तस्यमीलिताक्षस्यचाशुभम् २०८ अथललाटरेखालक्षणमाह ॥ तिस्रोरेखाःशतजीविनांललाटायताःस्थितायदिताः ॥ चतसृभिरवनीशत्वंनवतिश्चायुःसमंचाव्दाः २०९ विच्छिन्नाभिश्चागम्यगामिनोनवतिरप्यरेखेन केशांतोपगताभिर्लेखाभिरशीतिवर्षायुः २१० पंचभिरायुःसप्ततिरेकाग्रावस्थिताभिरपिषष्टिः ॥ वहुरेखेनशतार्धंचत्वारिंशच्चवक्राभिः २११ भ्रूलग्नाभिस्त्रिंशद्विंशतिकोवामभागवक्राभिः क्षुद्राभिःस्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चांतरेकल्प्यम् २१२

है और नव्वे ॥ ९० । वर्ष जीताहै ॥ २०९ ॥ और माथेमें रेखावाछिन्न होवें तव अगम्यगामी होताहै और रेखासें रहित माथा होवे तववी नव्वे ९० । वर्ष जीताहै और केशपर्यंत लंवीया रेखा होवें तव अस्सी ८० वर्ष जीताहै ॥ २१० । और पांचरेखाकर्के सत्तर ७० वर्ष आयु होताहै और आगेसें दूसरीरेखा विस्तारकर्के युक्त होवे तव साठवर्ष आयु कहाहै और वहुत रेखा जिसके माथेमें होवेंसोपंचाशत् ५० वर्ष आयुवालाहोताहैऔरजिसकेमाथेमेंवक्ररेखाहोवेंतिसकाआयुचालीवर्षहोता है२११ और छोटिया रेखा जिसकेमाथेमेंहोवेंसो थोडी आयुवाला होताहैऔरवडीछोटीरेखामें अनुपातकर्के आयु होताहै २१२

श्रीर समुद्र कहताहै जिसके माथेमें पांचरेखा होवें सो धनी होताहै श्रीर ऐश्वर्यकों प्राप्त हृयकके स
। १०० । वर्ष जीताहै ॥ २१३ ॥ श्रीर जिसके माथेमें चाररेखा होतीयाहैं सो अस्सी ८० । व
जीताहै श्रीर जिसके माथेमें तीन रेखा होवें सो सत्तर ॥ ७० ॥वर्ष जीताहै श्रीर जिसके माथेमें दे
रेखा होवेंसो ६० वर्ष जीताहै श्रीर एकरेखाकर्के चालीसवर्षजीताहै २१४श्रीर जिसकेमाथेमेंरेखा नहि
होवें सो निधिका स्वामी होताहे श्रीर जिसके माथेमें छिन्नरेखा होवे सो पापी होताहै ॥ २१५
श्रीर छोटि रेखा वाले थोडी श्रायुः श्रीर व्याधिकर्के युक्त होतेहैं२१६ श्रीर जिसके माथेमें त्रिशूल
श्रीर पट्टा होताहै सो ऐश्वर्यवाला श्रीर सेनाका पति होताहै ॥ २१७ ।
श्रम शिरके लक्षण कहतेहैं मंडलाकारशिरवाले गौउंकर्के युक्त होतेहैं उौर छत्रकीन्यांइं शिरवालेर
जा होतेहैं उौर चिपिटे शिरवाले मातापिताके मारणेवाले होतेहैं उौर श्रस्थियुक्त शिरवाले चिरकालक

तथाचसमुद्रःरेखाःपंचललाटेतुयस्यासौधनवान्स्मृतः ॥ शतंजीवतिवर्षाणामै
श्वर्यम.धिगच्छति २१३ चतूरेखाद्यशीतिस्तुत्रिभिःसप्ततिरेवच ॥ षष्ठिर्द्वा
भ्यांतुरेखाभ्यांचत्वारिंशत्तथैकया २१४ अरेखेनललाटेनभवंतिनिधिपाल
काः रेखाच्छेदेनुविज्ञेयाःपापकर्मरतानराः २१५ अल्पायुषस्तथाल्पासु
व्याधियुक्ताश्चतेसदा २१६ त्रिशूलंपट्टिसंवापिललाटेयस्यदृश्यते ऐश्वर्यंतस्य
विज्ञेयंसेनानांनायकश्चसः ॥ २१७ ॥ अथशिरोलक्षणमाह ॥ परि
मंडलैर्गवाढ्याःच्छत्राकारैःशिरोभिरवनीशाः ॥ चिपिटैःपितृमातृघ्नाःकरोटि
शिरसांचिरान्मृत्युः ॥ २१८ ॥ घटमूर्धाध्वानरुचिर्द्विमस्तकःपापकृद्ध
नैस्त्यक्तः ॥ निम्नंतुशिरोमहतांवहुनिम्नमनर्थदंभवति ॥ २१९ ॥ तथा
समुद्रः उक्तां तिदोनिम्नशिरःअल्पोपहतएवच छत्राकारशिरोराजागवाढ्यःप
रिमंडलःविषमंतुदरिद्राणांशिरोदीर्घंचिरायुषाम् २२० नागकुंभशिरोराजा स
मं सर्वत्रभोगिनः ॥ अधुनामूर्धजलक्षणमाह ॥ एकैकभवैःस्निग्धैःकृष्णैराकुं
चितैरभिन्नाग्रैः ॥ मृदुभिर्नचातिवहुभिःकेशैःसुखभाक्नरेंद्रोवा २२१

कें मर्तेहैं २१८ उौर घडेकीन्याइं शिरवाले मार्गमें रत रहतेहैं उौर दो शिरकीन्याइं शिरवाले पापी उौ
धनहीन होतेहैं उौर महत्पुरुषोंकाशिरनिम्नहोताहै उौर अत्यंतनीमा शिर अनर्थके देनेवाला होताहै २१९
उौर समुद्र कहताहै नीमाशिर अनर्थकों देताहै उौर अल्पमृत्युकों देताहैउौरछत्रकीन्याइं शिरवाला रा
जा होताहै उौर गोल शिरवाला गौयोंकर्के युक्त होताहै उौर टेढे शिरवाले दरिद्रि होतेहैं उौर लंबेशिर
वाले वडीश्रायुषावालेहोतेहैं २२० उौरहाथीकेकुंभकीन्याइंशिरवालाराजाहोताहैउौरदेहकेवरावरशिर
वाले भोगीहोतेहैं श्रवकेशोंके लक्षण कहतेहैं जिसके शिरमें रोमकूपमें एक एक हियाल होवें उौर
स्निग्ध होवें उौर काले होवें उौर आगेसें कुंडलोंवालेहोवें उौर आगेसें भेदकों नहि प्रतहोवें उौर
कोमल उौर अत्यंत बहुत नहिहोवें तब सुखीहोताहै अथवा राजा होताहै ॥ २२१ ॥

औ धनहीनोंके केश एक रोमकूपमें बहुत होतेहैं और विषम होतेहैं और कपिल होतेहैं और मोटे और आगेसे स्फुटि त और कठोर और छोटे होतेहैं और अत्यंत कुंडलोंवाले और बहुतघने होतेहैं ॥ २२२ ॥ और समु द्र कहताहै धनवानोंके केश एक एक और स्निग्ध और काले और अत्यंतघने नहिं होतेहैं और इनों से विपरीत निर्धनोंके होतेहैं ॥ २२३ ॥ और गर्ग कहताहै मनुष्यके अंगोंमे चउदां ॥ १४ ॥ युग्म सम बराबर श्रेष्ठ होतेहैं और चार काले और चार बराबर और दश कमलकीन्याई और दश विस्तार वाले और तीनश्वेत श्रेष्ठ होतेहैं २२४ दोनोंपैर और गिट्टे और पट्टोंममांसपिंड औरपासे और अंडकोश औ र नेत्र और स्तन और कंठ और ओठ और जानुयोंकीयां संधियां और जंघा और हाथ और भुजा औ

बहुमूलविषमकपिलाःस्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च अतिकुटिलाश्चातिघनाश्चमू र्धजावित्तहीनानाम्२२२तथाचस- एकैकसंभवाःस्निग्धाःकृष्णानातिघनाःकचाःपू जितविपरीताश्चनिर्धनानांप्रकीर्त्तिताः२२३तथाचगर्गःचतुर्दशसमोद्वंद्वश्चतुःकृष्ण श्चतुःसमः ॥ दशपद्मोदशव्यहत्त्रिशुक्लःशस्यतेनरः २२४ पादौगुल्फौस्फिजौ पार्श्वेवृषणौचक्षुषीस्तनौ कंठोष्ठौवंक्षणौजंघेहस्तौबाहूचकुक्षिकौ २२५ चतुर्द शसमद्वंद्वःसमुद्रोनृषुशंसति अक्षितारेभ्रुवौश्मश्रुःकेशाश्चैवासिताःशुभाः२२६ अंगुल्योहृदयंनेत्रेदशनाश्चसमानृणाम्चत्वारःसंप्रशस्यंतेमदैश्वर्यसुखावहाः२२७ जिव्हौष्ठंतालुरास्यंचमुखंनेत्रेस्तनौनखाः हस्तौपादौचशस्यंतेपद्माभादशदे हिनाम् ॥ २२८ ॥ पाणिपादमुरोग्रीवावृषणौहृदयंशिरः ललाटमुदरंपृष्ठंवृह तःपूजितादश ॥ २२९॥

कुक्षी ॥ २२५ ॥ इहे चौदां बराबर श्रेष्ठ होतेहैं और नेत्रोंके तारे और भुवां और दाढी और केशइ ह चार काले शुभ होतेहैं ॥ २२६ ॥ और अंगुलीयां और हृदय और नेत्र और दंत इहे चार बराबरहोवें तब मद ऐश्वर्य और सुखके देनें वाले होतेहैं ॥ २२७ ॥ और जिव्हा और ओष्ट और तालु और मुख और दोनोंनेत्र और स्तन और नख और हाथ पैर इहे दश मनुष्योंके कमलदलकी आभावाले श्रेष्ट होतेहैं ॥ २२८ ॥ और हाथ और पैर और छाती और गर्दन और अंडकोश और हृदय और शिर और मस्तक और पृष्ट इहे दश मनु ष्योंके विस्तारवाले शुभ होतेहैं ॥ २२९ ॥

और नेत्रदोनोंतारासें हीन और दांत श्वेतशुभहोतेहैं इहेलक्षणसंपूर्ण मनुष्योंके कहेहै ॥ २३० ॥ और स्कंदपुराणांतर्गत काशीखंडमें स्त्रीयोंके लक्षण विशेष कहेहै अगस्त्यके प्रति- स्कद कहताहै जिस गृहस्थोंके घरमें शुभलक्षणोंवाली स्त्रीहोवे सो सर्व दाकाल सुख भोगताहे इसकारणसें सुखकी समृद्धिके वास्ते प्रथमस्त्रीके लक्षण कहतेहैं १ देह और आवर्त और गंध और तत्वछाया और सत्वपराक्रम और स्वर और गति चलना और वर्ण रंग इह आठप्रकारोंकी बुद्धिवानोंने लक्षणोंकी भूमिकाकहिहै २ और स्कंदजी कहतेहैं हेअगस्त्य पाद: तलसें लेकर्के और शिरके केशों पर्यंत क्रमकर्के शुभाशुभलक्षणोंको श्रवण कर ३ प्रथम पादतलमें रेखा कहतेहैं और फेर अंगुष्ट और अंगुलीयां और नख कहतेहैं और फेर पृष्ट और गिंट्टे दोन

नेत्रेताराविरहितेदशनाश्चसिताःशुभाः एतच्चलक्षणंकृत्स्नंनराणांसमुदाहृतम् ॥ २३० ॥ अथस्कंदपुराणांतर्गतकाशीखंडेस्त्रीलक्षणेविशेषमाह स्कंदउवाच सदागृहीसुखंभुंक्तेस्त्रीलक्षणवतीयदि अतःसुखसमृद्ध्यर्थमादौलक्षणमीक्षयेत् १ ॥ वपुरावर्तगंधाश्चछायासत्वंस्वरोगतिः वर्णश्चेदष्टधाप्रोक्तावुधैर्लक्षणभुमिका२आपादतलमारभ्ययावन्मौलिरुहंक्रमात् शुभाशुभानिवक्ष्यामिलक्षणानिगुनेशृणु ॥ ३ आदौपादतलंरेखास्ततोगुष्टांगुलीनखाःपृष्टंगुल्फद्वयंपार्ष्णिजंघेरोमाणिजानुनि ४ उरूकटीनितंवस्फिग् भगोजघनवस्तिके नाभिःकुक्षिद्वयंपार्श्वोदरमध्यवलित्रयं ५ रोमालीहृदयंवक्षोवक्षोजद्वयचूचुकं जत्रुस्कंधांसकक्षोदोर्मणिवंधकरद्वयम् ६ पाणिपृष्टंपाणितलंरेखांगुष्टांगुलीनखाःपृष्टिःकृकाटिकाकंठचिवुकंचहनूद्वयम्७

और दोनो पासे और जंघा दोनों और रोमोंके लक्षण और दोनों जानुयोंके लक्षण कहतेहैं ॥ ४ और पट और स्फ और नितंब कटिमें मासपिंडके लक्षण फेर योनिके और जंघोके और नाभि केनीचे वस्तिके और नाभिके और दोनों व्यखीयोंके और दोनों पासयोंके और पेटके मध्यमें तीन वलियोंके लक्षण कहतेहैं ॥ ५ ॥ और रोमोंकी पंक्तिके और हृदयके और छातीके और दोनों कुचोंके और कुचाग्रभागोंके लक्षण कहतेहैं और मोटयों और कंठकी संधियांजानामजत्रुहै तिसके और मोंढयोंके और दोनों अयोंके और भुजोंके मणिवंधके और दोनो हाथोंके लक्षण कहतेहैं ॥ ६ ॥ और हाथोंकी पृष्टके लक्षण और तलियोंके लक्षण और हाथकी रेखा और अंगुष्ट और अंगुलियोंके और नखोंकेलक्षणऔरपृष्ट औरकपाटोंके और गलऔर ठुडी और दोनों खाडीयोंके लक्षण कहतेहैं ७

श्रौर दोनोंकपोलोंके लक्षण श्रौर मुख श्रौर नीचेके श्रौर ऊपरके दोनोंश्रोठोंके लक्षण श्रौर दंत श्रौर जिन्हाके लक्षण श्रौर घंटिका श्रोर तालुके लक्षण श्रौर हसनेके लक्षण श्रौर नासिकाके लक्षण श्रौर छिकाके लक्षण श्रौर नेत्रोंके लक्षण कहतेहैं ८ श्रौर पिम्मणियोंके लक्षण श्रौर भ्रुवोंके लक्षण श्रौर कर्णके लक्षण श्रौर मस्तकके लक्षण श्रौर शिरके श्रौर सीमंत सिंधूराधारस्थानके लक्षण श्रौर केशोंके लक्षण इह छयासठ ६६ स्त्रीयोंके लक्षणणोंकी श्रेष्ट भूमिका कहिहै ९ सो क्रमकर्के पादतलसें लेकर्के शुभाशुभलक्षणकहतेहैं ॥ स्त्रीयोंके पैरोंके तल स्निग्ध श्रौर मांसकर्केयुक्त श्रौर कोमल श्रौर बरावर श्रौर परसोनेसें रहित श्रौर उष्ण श्रौर लालवर्णके बहुत भोगके योग्य होतेहैं १० श्रौर रूक्ष श्रौर वर्णरहित श्रौर कठोर श्रौर खंडित प्रतिबिंबक जिनका बालुकादि स्थानोंमें खंडित चिन्हलगे श्रौर छजकी न्याई श्रगेसें विस्तारवाले श्रौर शुष्क पाद

कपोलौवक्त्रमधरोत्तरोष्ठौद्विजजिव्हिकाः ॥ घंटिकाताल्हुहसितंनासिकाक्षुतम
क्षिणी ८ पक्ष्मभ्रू कर्णभालानिमौलिसीमंतमौलिजाः ॥ षष्ठिषड्डुत्तरा
योषिदंगलक्षणसत्खनिः ९ स्त्रीणांपादतलंस्निग्धंमांसलंमृदुलंसमं ॥ अस्वे
दमुष्णमरुणंवहुभोगोचितस्मृतं १० रूक्षंविवर्णपरुषंखंडितंप्रतिविंबकं शू
र्पाकारंविशुष्कचदुःखदौर्भाग्यसूचकम् ११ चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीना
तपत्रवत् यस्याःपादतलेरेखासाभवेत्क्षितिपांगना १२ भवेदखंडभोगा
योर्ध्वमध्यांगुलिसंयुता ॥ रेखाखुसर्पकाकाभादुःखदारिद्र्यसूचका १३ उ
न्नतोमांसलोंगुष्ठोवर्तुलोतुलभोगदः वक्रोह्रस्वश्चचिपटःसुखसौभाग्यभंजकः १४
विधवाविपुलेनस्याद्दीर्घांगुष्ठेनदुर्भगा मृदवोंगुलयःशस्ताघनावृत्ताःसमुन्नताः १५

दुःख श्रौर दौर्भाग्यके करणे वाले होतेहैं ॥ ११ ॥ श्रौर जिसके पैरमें चक्र श्रौर स्वास्तिककीन्याई रेखा श्रौर शंख श्रौर कमल श्रौर ध्वजा श्रौर मत्स्य श्रौर छत्रकीन्याई रेखा होवे सो राजाकीराणी होतीहै १२ श्रौर जिसके मध्यमांगुलीपर्यंत ऊर्ध्वरेखा होये सो अखंडितभोगके वास्ते होतीहै श्रौर जिसके पादमें चूहेकी श्रौर सर्पकी श्रौर काककी न्याई रेखा होवे सो दुःख श्रौर दरिद्रके देनेवाली होतीहै १३ श्रौर जिसके पैरका अंगूठा ऊंचा श्रौर मांसकर्केयुक्त श्रौर गोल होवे सो बहुतभोगोंके देनेवालीहोतीहै श्रौर टेढा श्रौर छोटा श्रौर चिपटा अंगूठासुखसौभाग्यके नाश करणेवाला होताहै १४ श्रौर अत्यंत वडे अंगूठेवाली विधवा होतीहै श्रौर लवे अंगूठे वालीदुर्भगा होतीहै ॥ श्रौर जिसस्त्रीकिया अंगुलियां कोमल श्रौर घनिया श्रौर गोल श्रौरभेट ऊंचियां होवें सो शुभ होतीहै १५

और अत्यन्त लंबीयों अंगुलियों वाली कुलटा और कृश अंगुलियों वाली धनहीन होतीहै और अत्यन्त छोटीयों अंगुलियों वाली थोडी आयुषा वाली होतीहै और भुग्नअंगुलियोंवाली, कुटल कपट करणेवाली होतीहै १६ और चिपिटियों अंगुलियोंवालीदासी होतीहै और विरलीयों अंगुलियोंवाली दरिद्रिणी होतीहै और जिसस्त्रीकी अंगुलि एककेऊपरएकचढीहोवे सो बहुतस्वामियोंको मारकरकेंदूसरेकी दूती होतीहै १७ और जिसस्त्रीके मार्गमेंचलनेसें पृथ्वीसेंबहुत धूलीउच्छलें तिसस्त्रीका पाशुलानामकरकेंकहतेहैं सो तीनकुलका नाश कर्तीहै ॥ १८ ॥ और जिसस्त्रीके चलते हुये कनिष्ठिका अंगुलि पृथ्वीमें स्पर्शनहिं करे सो स्त्री एकस्वामीको मारकरकें दूसरास्वामी कर्तीहै १९ और जिसस्त्रीकी अनामिका अंगुली पृथ्वीकोंनहिं स्पर्शकर्तीहै सो

दीर्घांगुलीभिः कुलटाकृशाभिरतिनिर्धना ह्रस्वायुष्याचह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी १६ चिपिटाभिर्भवेद्दासीविरलाभिर्दरिद्रिणी परस्परसमारूढाःपादांगुल्योभवंतिहि। १७ हत्वावहूनपिपतीन्परप्रेष्यातदाभवेत्॥ यस्याःपथिसंप्रायांत्यारजोभूमेः समुच्छलेत्. सापांशुलाप्रजायेतकुलत्रयविनाशिनी। १८ यस्याःकनिष्ठिकाभूमिंनगच्छंत्याःपरिस्पृशेत् सानिहत्यपतिंयोषाद्वितीयंकुरुतेपतिं — १९ अनामिकाचमध्याचयस्याःभूमिंनसंस्पृशेत् पतिद्वयंनिहत्याचाद्वितीयाचपतित्रयं २० पतिहीनत्वकारिण्यौहीनेतेद्वेडमेयदि प्रदेशिनीभवेद्यस्याअंगुष्ठाद्व्यतिरेकिनी २१ कन्यैवकुलटासास्यादेषएवविनिश्चय २२ स्निग्धा समुन्नतास्ताम्राःवृत्ता पादनखाःशुभाः राज्ञीत्वसूचकस्त्रीणांपादपृष्ठंसमुन्नतम् २३ अस्वेदमसिराढ्यंचमसृणंमृदुमांसलं दरिद्रामध्यभग्नेनशिरालेनसदाध्वगा २४

दोस्वामीमारकरकें तीसरास्वामी कर्तीहै और जिसकी मध्यमा अंगुलि भूमिका नाहि स्पर्श कर्तीहै सो तीनस्वामीहतकरकें चतुर्थ स्वामीकर्तीहै २० और जिसस्त्रीकि कनिष्ठिका और अनामिका दोनों अंगुली हीन होवें सो स्वामीसें रहित होतीहै और जिसस्त्रीकी प्रदेशिनी अंगुली अंगूठेसे अधिकहोवे २१ सोस्त्री कुमारीहि व्यभिचारिणी होतीहै निश्चयकरकें २२ और जिसस्त्रीके पैरोंके नख स्निग्ध और ऊंचे और लालरंगके और गोल होवें सो शुभहोतेहैं और जिसस्त्रीके पैरोंकी पृष्ठ ऊंची होवे सो राजाकी राणी होतीहै २३ और जिसस्त्रीके पैर पसीनेसें और नाडियोंसें रहित स्निग्ध होवें और कोमल और मांसकरके पुष्ट होवें सो शुभ होतेहैं और भुग्न अर्थात् टेढे पैरोंवालीदरिद्रा होतीहै और नाडियां वाले पैरोंवाली सदामार्गमें चलतीहै २४

अब पैरोंकी ग्रथीजोहैं गिट्टें नितके लक्षणकहतेहैं जिसके गिट्यांमे रोमहोवे सो दासी होतीहै और जिसके गिट्टेमांसरहित होंवेसो दुर्भगाहोतीहै और जिसके गूढ मासकर्क छिपे होवे और नाडियासें हीन होवेंऔर गोलहोवें सो शुभकहेहैं २५ और ,वडेस्थूल और शिथिल देखतेमे आवें सोदुर्भाग्यकोंदेतेहैं अवपेरोंके पश्चात्भागकेशुभाशुभलक्षणकहतेहैं जिसस्त्रीकेपेरोंकीयाय्वडीबरावरहोवे सोशुभ और बरावरनहिंहोवें तव दुभगाहोतीहै २६ अवपिंडीयोंके ,शुभाशुभलक्षणकहतेहैं रोमोंसेंरहि त और दोनो बरावर और स्निग्ध और गोल पिंडीयाशुभहोतीयाहें २७ और जिसकि जघानाडियों करहित होवें और सुंदर मनके हरणेवालीयाहोवे सो राजाकीस्त्रीहोतीहै २८ और एकरोमवाली राजाकीस्त्री और दो रोमों वाली सुख युक्त और जिसके रोमकूपोंमे तीनरोम होवें सो विधवाहोतीहै ॥

रोमाढ्येनभवेद्दासीनिर्मांसेनचदुर्भगा गूढौगुल्फौशिवायोक्तावसिरालौसुवर्त्तु लौ २५ स्थपुटौशिथिलौदृश्यौस्यातांदौर्भाग्यसूचकौ समपार्ष्णिः शुभानारी पृथुपार्ष्णिश्चदुर्भगा ॥ २६ ॥ कुलटोन्नतपार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्चदुःखभाक् रोमहीनेसमेस्निग्धेयज्जंघेक्रमवर्त्तुले ॥ २७ ॥ साराजपत्नीभवतिविसिरे सुमनोहरे २८ एकरोमाराजपत्नीद्विरोमाचसुखावहात्रिरोमारोमकूपेषुभवे द्वैधव्यदुःखभाक् ॥ २९ वृत्तपिशितसलग्नजानुयुग्मप्रशस्यते निर्मांसस्वैरचा रिण्यादरिद्रायाश्चविश्लथम् ३० विशिरै करभाकारैरुरुभिर्मसृणैर्घनै सुवृत्तैरो मरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभा ३१ ॥ वैधव्यरोमशैरुक्तदौर्भाग्यचिपिटैरपि मध्यच्छिद्रैर्महादुःखदारिद्र्यंकठिनत्वचे ॥ ३२

२९ अब जानुयोंके लक्षणकहतेह जिसके दोनों जानू गोल और मास कर्क युक्त होवे सो श्रेष्ठहोतेहैं और स्वैरिणीयोंके जानू मासरहित होतेह और दरिद्रास्त्रीके ढिल्ले होतेहे ॥ ३० ॥ अब पट्टाक शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं ॥ जिसके पट्ट नाडियोंसे रहित और करभकन्याई मणिव धम कनि टिका पर्यंत स्थानकीन्याई वा हाथीके सुंडकीन्याई और आपसमें दोना स्पर्श कर और श्रेष्ठ गोल और रोमोंसे हीन होवे सो राजाकी प्यारि होतीहै ३१ और रोमा कर्क युत होवें तव विधवा होतीहै और चिपटहोवे तव खोटे भाग्योंवाली होतीहै और मध्यमें छिद्रहोवे तव बहुत दु खदायामहोतीहै और कठोर चमडे वाले पट्ट दरिद्रणी करतेहै ॥ ३२ ॥

अबकटिकेशुभाशुभलक्षणकहतेहैं चौवी अंगुल विस्तार करकेंचारकोणे वाला और ऊचाकटि भाग स्त्रीयोंका शुभहोताहै ३३ और निम्न और चिपिटा और लंबा और मांसरहित और कठिनऔर छोटा ओररोमों करके युक्त दुःख और वैधव्यकेकरणेवालाहोताहै ३४ और नितंबका लक्षण कहतेहैं स्त्रीयोंका नितंब ऊचा और मांसयुक्त मोटा शुभहोताहै औरइससेंविपरीतअशुभहोताहै ३५ अब कटि मास पिंडकाल- कपित्थफलकीन्याई गोलऔर कोमलमांसयुक्त पुष्ट वलिरहित स्फिजदोनों रति सुखके बधावनें वालेहोतेहैं ३६ औरयोनिकच्छूकीपृष्टकीन्यांईऔरहाथीकेमोंढेयोंकी न्यांईशुभहोतीहैऔर वामेंपा सेंसऊचीहोवेतब कन्याजन्मतियांहैं और दक्षिणपासेसेंऊचीहोवे तब पुत्रजन्मतेहैं ३७ और चूहेकीन्यांई रोमोंवाली और गूढमणीवालीऔर श्रेष्ठ निबिड और दृढ और मोटी और ऊची और कमलदलकीन्यांई

चतुर्भिरंगुलैःशस्ताकटिर्विंशतिसंयुतैः समुन्नतानितंबाढ्याचतुरस्त्रामृगीदृशाम् ॥ ३३ ॥ विनताचिपिटादीर्घानिर्मांसासंकटाकटिः ह्रस्वारोमयुतानार्यादुःखवैधव्यसूचिका ॥ ३४ ॥ नितंबबिंबोनारीणामुन्नतोमांसलःपृथुः महाभोगायसंप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मणेमतः ३५ कपित्थफलवद्वृत्तौमृदुलौमांसलौघनौ स्फिजौवलिविनिर्मुक्तौरतिसौख्यविवर्द्धनौ ३६ शुभःकमठपृष्ठाभोगजस्कंधोपमोभगः वामोन्नतस्तुकन्याजःपुत्रजोदक्षिणोन्नतः ३७ आखुरोमागूढमणिःसुश्लिष्टःसंहतःपृथुःतुंगःकमलववर्णाभःशुभोश्वत्थदलाकृतिः ३८ कुरंगखुररूपोयश्चुल्लिकोदरसन्निभः रोमशोविवृतास्यश्चदृश्यनासोतिदुर्भगः ३९ शंखावर्त्तोभगोयस्यासागर्भमिहनेच्छति चिपिटःकर्पराकारःकिंकिरीपदवोभगः ४० वंशवेतसपत्राभोगजरोमोच्चनासिकः विकटःकुटिलाकारोलंबगल्लस्तथाशुभः ४१भगस्यभालंजघनंविस्तीर्णंतुंगमांसलं मृदुलंमृदुरोमाढ्यंदक्षिणावर्त्तमीडितम् ४२

और पिप्पलके पत्रकीन्यांई योनि शुभहोतीहै ३८ और हरिणके खुरकीन्यांई और चुल्हेकीन्यांई और बहुतरोमों करके युक्त और बडे मुखवाली और जिसकी नासिका देखनेमें आवे सो अत्यंत निंद्यहोतीहै ३९ और जिसस्त्रीकी योनी शंखकीन्यांई वालियों वाली होवे सो गर्भनहिं धारतीहै और चिपिटी और ठीकरेकीन्यांई सोदूतीहोतीहै ४० और जिसकी योनि वंश और वेतके पत्रकीन्यांई होवे और हाथीके रोमोंकीन्यांई रोमोंवाली और ऊची नासिकावाली और विकट कुटिलहोवे और लंबे गल वाली अशुभहोतीहै ४१ इस प्रकारकाभगकाललाटउपरिभाग अशुभकहाहै अब जंघाके शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं जिसकी जंघा कोमल और सूक्ष्म रोमों करके युक्त और दक्षिणावर्तहोवेसोशुभहोतीहै४२

उौर वामावर्त्त श्रौर मांसरहित श्रौर कुटिल योनि वैधव्यके नेवालीहोतीहै श्रौर संकुचित श्रौर नि
म्रदुःखके देनेवालीहोतीहै ४३ श्रववस्तिके शुभाशुभलक्षणकहतेहैं नाभीके नीचेचार श्रंगुलीप्रमाण
वस्तीहोतीहे श्रौर जिसकी वस्तिविस्तारयुक्त श्रौर कोमल श्रौर थोडीऊचींहोवे सो शुभकहिहै श्रौर
रोमोंकर्कै श्रौर नाडियोंकर्कै श्रौर रेखाकर्कै श्रंकित श्रशुभहोतीहै ४४ श्रवनाभिके लक्षणकहतेहे
जिसकीनाभि गंभीर श्रौर दक्षिणावर्त्तहोवे सो सुख श्रौर संपदाके देनेवालीकहिहै श्रौर जिसकीना
भिवामावर्त्त उौर ऊचीहोवे उौर प्रकटग्रंथीवालीशुभनहिंहोतीहै ४५ श्रवदोनोंकुक्षोंके लक्षणकहतेहे
जोस्त्रीभारीकुक्षियोंवालीहोतीहे सो पुत्रोंकोंजन्मतीहै श्रौर सुखदेनेवालीहोतीहै श्रौर जिसकोकुक्षि
डिडुंकीन्याईहोवे तिसकापुत्रराजाहोताहे ४६ श्रौर ऊची श्रौर वलियोंकर्कै युक्त कुक्षिवालीवंध्या
श्रौर विरागयुक्त श्रौर दासीकमकर्कैहोतीहै ४७ श्रवपार्स्योंके लक्षणकहतेहैं जिसके वरावर श्रौर

वामावर्त्तंचनिर्मांसंभुग्नंवैधव्यसूचकम् संकटस्थपुटंरूक्षंजघनंदुःखदंसदा ४३
वस्तिःप्रशस्ताविपुलामृद्वीस्तोकसमुन्नता रोमशाचशिरालाचरेखांकानैवशोभ
ना ४४ गंभीरदाक्षिणावर्त्तानाभिःस्यात्सुखसंपदेवामावर्त्तासमुत्तानाव्यक्तग्रंथि
नंशोभना ४५ सूतेसूतान्बहून्नरीपृथुकुक्षिःसुखास्पदं क्षितीशंजनयेत्पुत्रंमंडूका
भेनकुक्षिणा ४६ उन्नतेनवलीभाजासावर्तेनापिकुक्षिणा वंध्याप्रव्रजितादासी
कमाद्योषाभवेदिह ४७ समैःसमांसलैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिःशुभैः पार्श्वैः
सौभग्यसुखयोर्निधानंस्यादसंशयम् ४८ यस्याद्दश्यशिरेपार्श्वेउन्नतेरोमसंयुते
निरपत्याचदुःशीलासाभवेद्दुःखसेवधिः ४९ उदरेणातितुच्छेनविसिरेणमृदुत्व
चा योषिद्भवतिभोगाढ्यानित्यंमिष्टान्नसेविनी ५० कुंभाकारंदरिद्रायाजठ
रंचमृदंगवत् कूष्मांडाभंयवाभंचदुःपूरंजायतेस्त्रियाः ५१ सुविशालोदरीनारी
निरपत्याचदुर्भगा प्रलंवजठराहंतिश्वशुरंचापिदेवरं ५२

मांसयुक्त श्रौर कोमल गुप्त श्रास्थियोंवाले पास्से शुभहोतेहे श्रौर सौभाग्य श्रौर संपदाकी खानहोतेहे
इसमें संशयनहिंहे ४८ श्रौर जिसस्त्रीके स्तनोंमें नाडियांदेखनमें श्रावें श्रौरपास्सेउचे श्रौर रोमोंकर्कै
युक्तहोवें सास्त्रीसंतानसेंरहित श्रौर दुष्टस्वभाववालीश्रौरदुःखकीखानहोतीहै ४९ श्रवउदरकेलक्षणकह
तेहैं जिसस्त्रीका छोटापटहोवेश्रौर नाडियोंकर्केरहितश्रौरकोमलत्वचाकर्कैयुक्तहोवेसोस्त्रीभोगकेयोग्यहो
तीहै श्रौर नित्यप्रतिमिष्टान्नभोजनकरणेवालीहोतीहे ५० श्रौर जिसका उदरघडेकी न्याईहोवे सो
दरिद्रा होतीहै श्रौर जिसकाउदरमृदंगकीन्याईपेटको श्रौरयवकीन्याईहोवेसोदुःखकरकेभराजाताहै ५१
श्रौरवडेविशालउदरवालीस्त्रीसंतानसेंरहित श्रौर खोटेभाग्योंवालीहोतीहै श्रौरवडेलंवेपेटवालीस्त्रीसुस
रकों श्रथवा देवरकों हतकर्तीहे ५२

और जिसकाउदर मध्यसेसूक्ष्महोवे सो श्रेष्ठ भाग्योंवाली और जिसके उदरमें तीनरे खापड़े सो भोगकर्के युक्त होतीहै ॥ और जिसके पेटमें सूधी सूक्ष्मरोमों की पंक्ति होवे सो स्त्री कल्याणकी भूमी होतीहै ५३ और जिसके पेटमें कपिलवर्णकी और टेढी और छेदकोंप्राप्त रोमोंकी पंक्तिहोवे सो चोरीकरणेवाली और विधवा और खोटे भाग्यों वाली होतीहै ५४ अब हृदयके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीका हृदय रोमोंसे रहित और बराबर निम्ननहि होताहै सो स्त्रीऐश्वर्य और स्वामीके सुखवाली और पतिकी प्रसन्नताकोंप्राप्त होतीहै ५५ और विस्तारवालेहृदयवाली स्त्री व्यभिचारिणी और दयाहीन होतीहै और जिसके हृदयमें बहुत रोम होवें सो निश्चयकर्के स्वामीकों हतक तीहै ५६ और जिसकीछाती अठारा १८ अंगुल प्रमाणकी और पुष्ट और उ

मध्यक्षामाचसुभगाभोगाढ्यासवलित्रया ऋज्वीतन्वीचरोमालीयस्यासाशर्मनर्मभू ५३ कपिलाकुटिलास्थूलाविच्छिन्नारोमराजिकाचौर वैधव्यदौर्भाग्यविदध्यादिहयोषिताम् ५४ निर्लोमंहृदयंयस्याः समनिम्नत्ववर्जित ऐश्वर्यंचाप्यैवधव्यंप्रियप्रेमंसमालभेत् ५५ विस्तीर्णहृदयायोषापुंश्चलीनिर्दयातथा उद्भिन्नरोमहृदयापतिंहंतिविनिश्चितं ५६ अष्टादशांगुलततमुरःपीवरमुन्नतंसुखायदुःखायभवेद्रोमशंविपमपृथु५७ घनौवृत्तौदृढौपीनौसमौशस्तौपयोधरौस्थूलाग्रौ विरलौशुष्कौवामोरूणांनशर्मदौ ५८ दक्षिणोन्नतवक्षोजापुत्रिणीत्वग्रणीमतावामोन्नतकुचासूतेकन्यांसौभाग्यसुंदरी अरघट्टघटीतुल्यौकुचौदौ शील्यसूचकौ पीवरास्यौसांतरालौपृथूपांतौनशोभनौ ६० मूलेस्थूलौक्रमकृशौवक्रेतीक्ष्णौपयोधरौ सुखदौपूर्वकालेतुपश्चादत्यंतदुःखदौ ६१

न्नतहोवे सो सुखके वास्ते कहिहै और विषम और रोमोंकर्केयुक्त और बड़ीभारीदुःख देने वालीहोतीहै ५७ अब कुचोंके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीके स्तन घने और गोल और पुष्ट और दोनोंबराबर होवेंसो श्रेष्ठ होतेहैं और आगेसे मोटे और विरले और शुष्क स्तन स्त्रीयोंके शुभनहिहोतेहैं ५८ और जिसस्त्रीका दक्षिणस्तनऊंचाहोवे सो पुत्रजन्मने वाली और श्रेष्ठ होतीहै और जिसका वाम स्तन ऊंचा होवे सो कन्या जन्म तीहै ५९ और जिसस्त्रीके स्तनजलघटीयन्त्रकी न्याईं होवें सो स्त्री खोटेस्वभावकी होतीहै और मोटे मुखवाले और आपसमें अंतरलवाले और मूल में बड़े मोटे शुभनहि होतेहैं ६० अब कहतेहैं जिसस्त्रीके स्तन मूलमें मोटे और क्रमकर्केआगेसे पतले और अग्रभागसें तीक्ष्ण होवें सो प्रथम अवस्थामें सुखदेतेहैं और पीछेसेंअत्यंत दुःखदेतेहैं ६१

अवचूचकके लक्षण कहतेहैं स्त्रीयोंके कुचकेअग्रभागविङश्याम और गोलशुभहोतेहैं और अंतरमेंछ पेहुये और लंबे और कृश क्लेशके देनेवाले होतेहैं ६२ अवजत्रुयोंके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीके मोटे और कंठकी संधिया मोटीया होवें सो धनवान्यकी वृद्धि वालीहोतीहै और ढिल्लीयां अस्थियोंवाली और नीमियां अस्थियोंवाली और न्यूनाधिक अस्थियोंवाली दरिद्रणी होतीहै ६३ अव मोढयोंके लक्षण कहतेहैं जिसके मोंढे अवद्ध नीमे और लंबे नहिहोवें और मोटेशु भहोतेहैं और टेढे और अत्यंतमोटे और रोमों कर्केयुक होवें सो दासी और विधवा करणे वाले होतेहैं ६४ और अंसदोनों गूढ और मांसमें मिलेहुये शुभहोतेहैं और ऊंचे अग्रवाले विधवाकरेहै और मासरहितदुःखदेतेहैं ६५ औरकछांदोनों सूक्ष्मरोमोंवालीया और मासयुक्तऔरास्निग्धऊंचीयांशुभहोतीयाहै

सुदृशांचूचकयुगंशस्तंश्यामंसुवर्तुलं अंतर्मग्नंचदीर्घंचकृशंक्लेशायजायते ॥६२॥ पीवराभ्यांजत्रुभ्यांधनधान्यनिधिर्वधूः श्लथास्थिभ्यांचानिम्नाभ्यां विषमाभ्यांदरिद्रिणी ॥ ६३ ॥ अवद्धावनतौस्कंधावदीर्घावकृशौशुभौ वक्रौ स्थूलौचरोमाढ्यौप्रेष्यवैधव्यसूचकौ ॥ ६४ ॥ निगूढसंधीस्त्रस्तावंसौशुभा वंसौसुसंहतौ वैधव्यदौसमुच्चाग्रौनिर्मांसावार्तिदुःखदौ ६५ कक्षेसुसूक्ष्मरोमेचतुंगेस्निग्धेचमांसले शस्तेनशस्तेगंभीरेसिरालेस्वेदमेदुरे ६६ स्यतांदोषौ तुनिर्दोषौगूढास्थिग्रंथिकोमलौ विसिरौचविरोमाणौसरलौहरिणीदृशां ॥ ६७ वैधव्यंस्थूलरोमाणौह्रस्वौदौर्भाग्यसूचकौ परिक्लेशायनारीणांपरिदृश्यसिरौभुजौ ६८ अंभोजमुकलाकारमंगुष्ठांगुलिसंमुखं ॥ हस्तद्वयमृगाक्षीणांवहुभोगायजायते ६९ मृदुमध्योन्नतंरक्ततलंपाण्यंररंध्रकं ॥ प्रशस्तंशस्तरेखाढ्यमल्परेखशुभश्रियं ॥ ७० ॥

और गंभीर और नाडियोंकर्केयुक और पसीनेकर्के युक्त श्रेष्ठनहिहै ६६ और भुजादोषरहित और गूढअस्थिवालीया और कोमल और नाडियोंसे और रोमोंसे रहितशुभहोतीयाहै ६७ और जिसस्त्रीके भुजोंमें मोटे रोम होवें सो विधवा होतीहै और जिसकी दोनो भुजा छोटियां होवें सो स्त्री दुर्भगाहोतीहै और जिनस्त्रीयोंकी भुजों में नाडिया देखनेमें आवेंसो क्लेश कर्के युक्त होतियांहैं ६८ अवहाथोंके शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं कमलकी डोडोकीन्याईं अंगुष्ट और अंगुली यां संमुख सूधीयां जिसमें अपसे दोनो हाथस्त्रीयोंके वहुत भोगके निमित्त होतेहैं ६९ पाणिन लक्षणमाह जिसकीयां तलियां कोमल और मध्यसें ऊचिया होवें और छिद्ररहित होवें और श्रेष्ठरेखाकर्के युक्त और थोडियां रेखों वाले हाथ शुभ होतेहैं ७०

और बहु रेखोंकर्के विधवा होतीहै और रेखाहीन हाथोंवाली दरिद्रणी होतीहै और नाडियों कर्के युक्त हाथोंवाली भिक्षामागनें वाली होतीहै ७१ और हाथोंकी पृष्ट नाडियों सें रहित और रोमोंसें रहित और ऊचीशुभ होतीहै और रोमोंकर्के युक्त और नाडिया कर्के युक्त और नीमी हाथोंकी पृष्ट वाली और नाडिया कर्के युक्त हाथ वाली स्त्रीकात्यागकरे ७२ अब हाथकी रेखाकेलक्षण कहतेहै रक्त वर्णकीया और प्रकट और स्निग्ध और पूर्ण त्रुटित नहिं होवें और गोल होवें अयसिया रेखा स्त्रीया के हाथमे भाग्योंके अनुसार शुभहोतियाहैं ७३ और जिसके हाथोंमें मच्छकीन्याई रेखा होवे सोसौभाग्यवाली होतीहै और जिसकेहाथमेंस्वस्तिक त्रिकोण सदृशरेखा होवे सो धनवाली होतीहै और जिसके हाथमें कमल होवे सो राजाकी राणी होतीहै और राज्यकरणे वाले पुत्रकों जन्मती है ७४ और जिसके हाथमें नद्यावर्त्त जो स्वस्तिकहै सो प्रदक्षिणावर्त्त होवे सो चक्रवर्ती रा

विधवाबहुरेखेणविरेखेणदरिद्रिणी ॥ भिक्षुकीतुसिराढ्येननारीकरतलेनवै ॥ ७१ ॥ विरोमविसिरंशस्तंपाणिपृष्टंसमुन्नतम् ॥ वैधव्यहेतुरोमाढ्यं निम्नंसिरायुतंत्यजेत् ॥ ७२ ॥ रक्ताव्यक्तागभीराचस्निग्धापूर्णाचवर्तुला ॥ कररेखांगनायाःस्याच्छुभाभाग्यानुसारतः ॥ ७३ ॥ मत्स्येनशुभगानारीस्वस्तिकेनवसुप्रदा ॥ पद्मेनभूपतेःपत्नीजनयेद्भूपतिंसुतम् ७४ चक्रवर्त्तिस्त्रियाः पाणौनंद्यावर्त्तःप्रदक्षिणःशंखातपत्रकमठानृपमातृत्वसूचकाः ७५ तुलामानाकृतौरेखेवणिक्पत्नीत्वहेतुके ॥ गजवाजिवृषाकाराःकरेवामेमृगीदृशां ७६ रेखाप्रासादवज्राभाब्रूयुस्तीर्थकरंसुतं ॥ कृषीवलस्यपत्नीस्याच्छकटेनयुगेनवा ७७ चामरांकुशकोदंडैराजपत्नीभवेद्ध्रुव ॥ अंगुष्ठमूलान्निर्गत्यरेखायातिकनिष्ठिकां ७८ यदिसापतिहंत्रीस्याद्दूरतस्तांत्यजेत्सुधीः ॥ त्रिशूलासिगदाशक्तिदुंदुभ्याकृतिरेखया ७९

जाकी राणी होतीहै और शंख और छत्र कछोपड जिसके हाथमें होवें सो राजमाता होतीहै ७५ और जिसके हाथमें तुला दंडकीन्याई रेखा होवे सो वणियेंकी स्त्री होतीहै और जिसके हाथमें हाथी औरघोडेकी और बैलकी न्याईवामहाथमे रेखा होवें ७६ और महलकीन्याई और वज्रकी न्याई रेखा होवें सो तीर्थ कर्त्ता और शास्त्रकरणे वाले पुत्रकों जन्मतीहै और जिसके हाथमें गाडीकी न्याई रेखा होवे सो खेतीकरणेवालेकीस्त्री होतीहै ७७ और चौरी और अंकुश और धनुषकी न्याई रेखा कर्के राजाकी राणीहोतीहै और जिसस्त्रीके हाथमें अंगूठेके मूलमेंसे कर्के कनिष्ठका पर्यंत रेखा होवे सो स्त्री पतिके हननकरणे वाली होतीहै तिसकों दूरसेंहि त्यागकरे और जिसके हाथमें त्रिशूलकीन्याई और खड्गकीन्याई और गदाकीन्याई और शक्तिकीन्याई और बडे नगारेकी न्याईरेखाहोवें

सो स्त्री दानकर्के पृथ्वीमें यशवाली होतीहै और जिसस्त्रीके हाथमें कंकपक्षिकीन्यांई और डिडूकी न्यांई और गिद्दडकीन्यांई और भिग्याडकीन्यांई और विछूकीन्यांई और सर्पकीन्यांई रेखा होवें और खोतेकीन्याई और ऊठकीन्यांई और विल्लीकीन्यांई रेखाहोवें ॥ सो दुःखकेदेनेवालियां होतियाहै ८० अवअंगूठेकेलक्षणकहतेहै सूधा और गोल अंगुष्ठशुभ होताहै और गोल नखों वाला और कोमल शुभहोताहै ८१ अवअंगुलियोंकेलक्षणकहतेहै श्रेष्ठग्रंथियोंवालियां और गोल और क्रमकर्के आगेसेंकृश शुभहोतियांहै और चिपिटियां और स्थूल ॥ और रूक्ष और पृष्टमें रोमों वालियां अशुभहोतियांहै ८२ और अत्यंत छोटियां और कृश और टेढियां और रोमोंवालियां और वहुतग्रंथियोंवालिया अंगुलियां स्त्रीयोंकियां दुः खके देने वालियां होतियांहैं ८३ और लालवर्ण और

नितंविनीकीर्तिमतीत्यागेनपृथिवीतले कंकमंडूकजंवूकवृकवृश्चिकभोगिनः रासभोष्ट्रविडालाःस्युःकरस्था दुःखदाःस्त्रियाः ८० शुभदःसरलोंगुष्ठोवृत्तो वृत्तनखोमृदुः ॥ ८१ ॥ अंगुल्यश्चसुपर्वाणोदीर्घावृत्ताःक्रमात्कृशाः चिपिटास्थ पुटारूक्षाःपृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ८२ अतिहूस्वाःकृशावक्राविरलारोमहेतुकाः दुःखायांगुलयःस्त्रीणांवहुपर्वसमन्विताः ॥ ८३ ॥ अरुणाःसशिखास्तुंगाःकर जाःसुदृशांशुभाः निम्नाविवर्णाःशुक्त्याभाःपीतादारिद्र्यदायकाः ॥ ८४ ॥ नखे पुविंदवःश्वेताःप्रायःस्युःस्वैरिणीस्त्रियाः पुरुषाअपिजायंतेदुःखिनःपुष्पितै र्नखैः ॥ ८५ ॥ अंतर्निमग्नवंशास्थिःपृष्ठिःस्यान्मांसलाशुभा पृष्ठेनरोमयुक्तेनवै धव्यंलभतेध्रुवम् ८६ भुग्नेनविनतेनापिससिरेणापिदुःखिता ऋज्वीकृकाटि काश्रेष्ठासमांसाचसमुन्नता ८७

शिखायुक्त ऊंचे नख ॥ स्त्रीयोंके शुभहोतेहैं और निम्न और विवर्ण और सिप्पोंकी न्यांई और पीले दारिद्रकेदेनेवाले होतेहैं ॥ ८४ ॥ और जिनोंस्त्रीयोंके नखोंमे श्वेतवर्णके विंदुहोवें सो स्त्रीयां वाहुल्यता कर्के स्वैरिणिया होतियांहैं और श्वेतविंदुयोंवाले नख पुरुषोंके भी दुःखदेनेवाले होतेहैं ॥ ८५ ॥ अवपृष्ठके लक्षण कहतेहैं जिसकीपृष्ठ अंदरकों नीमी होवे और वंशकीन्यांई टेढी अस्थियोंवाली और मांसकर्के युक्त शुभहोतीहै और जिसकी पृष्ठरोमोंकर्के युक्त होवे सो निश्चयकर्के विधवा होतीहै ८६ और जिसकीपृष्ट भुग्न कुटिलहोवे और नीमीहोवे और नाडियोंकर्के युक्तहोवे सो दुःखित होतीहै अवकृकाटिकाकेलक्षणकहतेहैं जिसकी कृकाडी सूधी और मांसकर्के युक्त और ऊंची होवेसो शुभ होतीहै ८७

श्रौर शुष्क श्रौर कुटिल श्रौर रोमोंवाली श्रौर नीमी श्रौर नाडियोंकर्केयुक्त अशुभ दुःखकेदेने वाली होतीहै अब कंठके लक्षण कहतेहै जिसका गल श्रौर मांसकर्के युक्त श्रौर गोल श्रौर चार श्रंगुल प्रमाण शुभहोताहै ८८ और गर्दनतीनरेखावाली श्रौर गूढअस्थियोंवाली शुभहोतीहै श्रौर मांसरहित श्रौर चिपिटी श्रौर लंबी श्रौर निम्न शुभनहि होतीहे ॥ ८९ ॥ श्रौर मोटी गर्दन वाली विधवा श्रौर टेढीगर्दनवाली दासी श्रौर चिपिटी गर्दनवाली वंध्या श्रौर छोटीगर्दनवाली पुत्रहीन होतीहै ॥ ९० अब चिबुकके लक्षण कहतेहैं लुन्नी दोअंगुलप्रमाणकर्के श्रौर गोल श्रौर पुष्ट श्रौर कोमल श्रेष्ट होती है श्रौर मोटी श्रौर दोविभागवाली श्रोर चौडी अशुभ होतीहै ॥ ९१ अब हनूकेलक्षणकहतेहैं

शुष्काशिरालारोमाढ्याविशालाकुटिलाशुभा मांसलोवर्तुलःकंठःप्रशस्तश्चतु रंगुलः ॥ ८८ ॥ शस्ताग्रीवात्रिरेखांकात्वव्यक्ता स्थिसुसंहता नि र्मांसाचिपिटादीर्घास्थपुटानशुभप्रदा ॥ ८९ ॥ स्थूलग्रीवाचविध वावक्रग्रीवाचकिंकरी वंध्याहिचिपिटग्रीवाहृस्वग्रीवाचनिःसुता ९० चिबुकं द्व्यंगुलंशस्तंवृत्तंपीनंसुकोमलं स्थूलंद्विधासंविभक्तमायतंरोमशंत्यजेत् ९१ हनुश्चिबुकसंलग्नानिर्लोमासुघनाशुभा वक्रास्थूलाकृशाहूस्वारोमशानशुभप्रदा ९२ शस्तौकपोलौवामाक्ष्याःपीनौवृत्तौसमुन्नतौ रोमशौपरुषौनिम्नौनिर्मांसौ परिवर्जयेत् ९३ समंसमांससुस्निग्धंस्वामोदंवर्तुलंमुखं जनितवदनछायंधन्या नामिहजायते९४पाटलोवर्तुलःस्निग्धोलेखाभूपितमध्यभूः सीमंतिनीनामधरो धराजानिप्रियोभवेत् ९५ कृशःप्रलंवस्फुटितोरूक्षोदौर्भाग्यसूचकः श्यावःस्थू लोऽधरोष्ठःस्याद्वैधव्यकलहप्रदः ९६

हनूजो साडीहेसो रोमहीनश्रौर लुन्नीकर्केयुक्त श्रौर घनी शुभहोतीहै श्रौर वक्र श्रौर मोटी श्रौरदुबली श्रौर छोटी श्रौर रोमोंकर्के युक्त शुभ नहि होतीहै ९२ अब कपोलोंके लक्षण कहतेहैं स्त्रीके कपाल पुष्ट श्रौर गोल श्रौर ऊचे शुभहोतेहैं श्रौर रोमोंवाले श्रौर कठोरश्रौर नीमे श्रौर मांसहीन अशुभ होतेहैं ९३ अब मुखके लक्षण कहतेह स्त्रीका मुख मासयुक्त श्रौर स्निग्ध श्रौर सुगंधिवाला श्रौर गोल शुभहोताहै । ९४ । अब नीचेके होष्टके लक्षण कहतेहैं पाटलके पुष्पकीन्याई लाल श्रौरगोलश्रौर स्निग्धश्रौर रेखा कर्के भूषित मध्यस्थानजिसका असमी सा राजाकी प्यारी होतीहै ९५ श्रौर स्फुटित श्रौर कृश श्रौर लंबा श्रौर रूक्ष खोटे भाग्यकों सूचन कर्ताहै श्रौर कापिल श्रौर मोटा विधवा कर्ताहै श्रौर कलहकों देनाहै ९६

अव उत्तरोष्ठके लक्षण कहतेहे स्त्रीका ऊपरका ओठ स्निग्ध श्रेष्टभोगदेताहै और किंचित् मध्यभागसे ऊंचा और रोमहीन शुभ होताहै और उलटा होवेतो अशुभ कर्ताहै ९७ अव दंतोंके लक्षण कहतेहें गौके दुग्धकीन्याई वर्णवाले और बत्री ३२ संख्याकर्के शुभ होतेहें और नीचेसें और ऊपरसें तुल्य होवें और किंचित् उन्नत होवें सो शुभहोतेहें ९८ और पीले और धूडे वर्णके और मोटे और लंबे और दोपांकिवाले और सिप्पीकी न्याई और विरले दुःख और दुर्भाग्यका कारण होतेहै ९९ और जिसस्त्रीके दंत नीचेके दंतोंसे ऊपरके अधिकहोवें सो स्त्री माताकों भक्षणकर्तीहै और जिसके दंत विकराल होंवें सो स्वामीसें हीन होतीहै और जिसके विरले होवें सो व्यभिचारिणी होतीहै ॥ १०० ॥ अवजिव्हाके लक्षणक तेहें जिसस्त्रीकी श्रेष्ट लाल वर्णकी जिव्हा होवे और कोमल होवे सो स्त्री मीठा भोजन कर्तीहै औरश्वेतवर्ण कीजिव्हा और आगे सें विस्तारवाली होवे तवदुखप्राप्तकर्तीहै ॥ १०१ ॥

मसृणोमत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठःसुभोगदः किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमाविपरीतोवि रुद्धकृत् ९७ गोक्षीरसन्निभाःस्निग्धाद्वात्रिंशद्दशनाःशुभाः ॥ अधस्तादुपरि ष्टाच्चसमास्तोकसमुन्नताः ९८ पीताःश्यावाश्चदशनाःस्थूलादीर्घाद्विपंक्तयः शुक्त्याकाराश्चविरलादुःखदौर्भाग्यकारणं ९९ अधस्तादधिकैर्दंतैर्मातरंभक्षये त्स्फुटं पतिहीनाचविकटैःकुलटाविरलैर्भवेत् १०० जिव्हेष्टमिष्टभोक्त्रीस्याच्छोणा मृद्वीतथासिता दुःखायमध्यसंकीर्णापुरोभागसविस्तरा १०१ सितयातोय मरणंश्यामयाकलहप्रिया दरिद्रिणीमांसलयालंवयाऽभक्ष्यभक्षिणी १०२ वि शालयारसनयाप्रमदातिप्रमादभाक्स्निग्धंकोकनदाभासंप्रशस्तंतालुकोमलम् १०३ सितेतालुनिवैधव्यंपीतेप्रव्रजिताभवेत् ॥ कृष्णेऽपत्यवियोगार्त्तारूक्षेभूरिकुटुंवि नी ॥ १०४ ॥ कंठेस्थूलासुवृत्ताचक्रमतीक्ष्णासुलोहिता अप्रलंवाशुभाघंटा स्थूलाकृष्णाचदुःखदा ॥ १०५ ॥ अलक्षितद्विजंकिंचित्किंचित्फुल्लकपोलकं ॥

और कहतेहै चिट्टीजिव्हावाली जलकर्के मर्तीहै और कालीजिव्हावाली लडाईकी प्यारीहो तीहै और मोटी जिव्हावाली दरिद्रिणी होतीहै और लंवी जिव्हावाली अभक्षवस्तूका भक्षण कर्तीहै १०२ और वडेविस्तारवाली जिव्हाकर्के स्त्रीवडे मदवाली होतीहै और स्निग्ध और लाल वर्ण का तालु मलरहित शुभहोताहै १०३ और जिसस्त्रीका चिट्टा तालुहोवे सो विधवाहो तीहै और जिसका पीला तालु होवे सो विरागिनी होतीहै और कालेतालूवाली पुत्रवियोगकर्के दुखी होतीहै और रूक्ष तालू वाली स्त्रीवडेकुटुंवकर्केयुक्तहोतीहै ॥ १०४ ॥ अवघंटिकाका लक्षण कहतेहै जिसकी घंटिका कंठमेंमोटी और आगेसे गोलऔरक्रमकर्केतीक्ष्णहोवेऔरश्रेष्ठलाल वर्णकीशुभहोतीहैलंवीऔरमोटीऔरकालीअशुभहोतीहै १०५ अवहसनेकेशुभलक्षणकहतेहेस्त्रीका हसनाजिसमेथोडेदंत देखनेमे आवेंऔर थोडेकपोलऊचेहोवें

श्रोर नेत्रमीलनन होवे अयसा हसना शुभहोताहै १०६ ॥ अवनासिकाके लक्षण कहतेहै वरावर गोल दोनो पुट जिसके श्रोर छोटे छिद्रवाली शुभहोतीहै श्रोर श्रागेसें मोटी श्रोर मध्यसें नीमी श्रोर ऊची शुभनहि होतीहै १०७ श्रौर जिसकी नासिका श्रागेसें कुंचित श्रोर लालवर्णकी होवे सो वैधव्यक्लेशकों देतीहै श्रोर चिपिटी नासिका वाली दूती होतीहै श्रोर अत्यत छोटी श्रोर अत्यंतलंवी नासिकावालीलडाईकी प्यारी होतीहै १०८॥ अव छिकके लक्षण कहतेहे जिसकों लंवेस्वरकर्के छिक होवे श्रोर इकठीश्रा दोतीन छिकाहोवें सोवडी श्रायुषाकों कर्त्तीहे अव नेत्रोके लक्षण कहतेहै स्रीके नेत्र लालकोंणोंवाले श्रोर कालेतारेवाले शुभहोतेहैं ॥ १० श्रोर गौकेदुग्धकीन्याई शुक्लतायुक्श्रोर कालीया पिम्मणीया वाले शुभहोतेहैं श्रोर ऊचेनेत्रों

स्मितंप्रशस्तंसुदृशामनिमीलितलोचनं ॥१०६समवृत्तपुटानासालघुच्छिद्राशुभावहा ॥ स्थूलाग्रामध्यानिम्नाचनप्रशस्तासमुन्नता १०७॥ आकुंचितारुणाग्राचवैधव्यक्लेशदायिनी परप्रेष्याचचिपिटाहूस्वादीर्घाकलिप्रिया१०८दीर्घायुः कृत्क्षुतंदीर्घंयुगपद्वित्रिपिंडितं ठलनालोचनेशस्तेरक्तांतेकृष्णतारके १०९ ॥ गोक्षीरवर्णेविशदेसुस्निग्धेकृष्णपक्ष्मणि उन्नताक्षीनदीर्घायुर्वृत्ताक्षीकुलटाभवेत् ॥ ११० मेषाक्षीमहिषाक्षीचकेकराक्षीनशोभना ॥ कामगृहीतानितरांगोपिंगाक्षीसुदुर्वृता १११॥ पारावताक्षीदुःशीलारक्ताक्षीभर्तृघातिनी ॥ कोटराननयनादुःष्टागजनेत्रानशोभना ११२ पुंश्चलीवामकाणाक्षीवंध्यादक्षिणकाणिका ॥ मधुपिंगाक्षीरमणीधनधान्यसमृद्धिभाक् ११३ पक्ष्मभिःसुघनैःस्निग्धैः कृष्णैःसूक्ष्मैःसुभाग्यभाक् ॥ कपिलैर्विरलैःस्थूलैर्निंद्याभवतिभामिनी ११४ ॥

वाली थोडीश्रायुकों भोगतीहे श्रोर गोल नेत्रोंवाली कुलटा व्यभिचारिणी होतीहै ११० श्रोर भेडकीन्याईश्रोरमहिषकीन्याईश्रोर केकरनेत्रोंवालीस्रीशुभनहि होतीहै श्रोर गोकीन्याई पिंगलनेत्रोंवाली प्रतिदिनकामक्रीडा श्रोरदुष्टचारित्रोंकर्के युक्त होतीहै १११ श्रोर कवूतरकीन्याई नेत्रोंवाली दुःशीला होतीहे श्रोर लालनेत्रोंवाली स्वामीकों हतकर्त्तीहे श्रोर ठुणरवरकीन्याई नीमेनेत्रोंवाली दुष्टाहोतीहे श्रोर हाथीकीन्याईनेत्रोंवाली शुभनहिंहोतीहै ॥ ११२ ॥ श्रोर वामेंनेत्रसें काणी पुंश्चली श्रोर दक्षिणनेत्रसें काणी वंध्याहोतीहै श्रोर मखीरकीन्याई पिंगलनेत्रोंवाली स्रौ धनधान्यकर्केयुक्त होतीहै ॥ ११३ ॥ अवपिम्मणीयोंके लक्षण कहतेहैं पिमणीया घणीया श्रोर स्निग्ध श्रोर कालीया श्रोर सूक्ष्म सुख श्रोर भाग्योंकों देतीहै श्रोर कपिलीया श्रोर विरलीया श्रोर मोटीया पिम्मणीयां वाली स्री निंद्यहोतीहै ११४

अव भ्रुवोंके लक्षण कहतेहे स्त्रीकियांभ्रुवां दोनों स्निग्ध और कालियां और अपसमें मिलीनांहिंहोवें सो शुभहोतीयाहें और कोमलरोम और धनुषकीन्याइं टेढीयांशुभहोतीयांहे १५ और कठोर रोमों वालीआ और मोटीया और खिछरीहुयां और सूधीयाओरआपसमें मिलित और वडीलंवीआ और पिंगल वर्ण कियां शुभ नांहि होतीयांहें १६ अव कर्णोंके लक्षण कहतेहें लंवे कर्ण और श्रेष्ट आवर्त्तकर्के युक्त सुख और शुभकों देतेहे और शष्कुलीसें हीन और नाडियों वाले और कुटिल और वहुत छोटे अशुभ होतेहें १७ अव माथेके लक्षण कहतेहें स्त्रीका माथा नाडियोंसें हीन और रोमोंसें हीन और अर्ध चंद्रमाकीन्याइं और ऊचा और तीनअंगुल प्रमाणका सौभाग्य और आरोग्यता कोंदेताहे १८ और जिसके माथेमें प्रकट स्वस्तिक रेखा होवे सो राज्यसंपदाकों देतीहै

भ्रुवौसुवर्त्तुलेतन्व्याःस्निग्धेकृष्णेअसंहते प्रशस्तेमृदुरोमाणौसुभ्रुवःकार्मुकाकृती १५ खररोमाचपृथुलाविकीर्णासरलास्त्रियाः नभ्रूःप्रशस्तामिलितादीर्घरोमाचपिंगला १६ लंवौकर्णौशुभावर्त्तौसुखदौचशुभप्रदौ शष्कुलीरहितौनिंद्यौसिरालौकुटिलौकृशौ १७ भालःशिराविरहितोनिर्लोमार्धेन्दुसन्निभः अनिम्नस्त्र्यंगुलोनार्याःसौभाग्यारोग्यकारणं १८ व्यक्तस्वास्तिकरेखंचललाटंराज्यसंपदे प्रलंवमस्तकंयस्यादेवरंहंतिसाध्रुवं १९ रोमशेनशिरालेनप्रांशुनारोगिणीमता ॥ २० ॥ सीमंतःसरलःशस्तोमौलिःशस्तःसमुन्नतः गजकुंभनिभोवृत्त.सौभाग्यैश्वर्यसूचकः २१ स्थूलमूर्धाचविधवादीर्घशीर्षाचवधकी विशालेनापिशिरसाभवेद्दौर्भाग्यभाजनं २२ केशाअलिकुलंछायाःसूक्ष्माःस्निग्धाःसुकोमलाः किंचिदाकुंचिताग्राश्चकुटिलाश्चातिशोभनाः ॥ २३ ॥

स्वस्तिकस्त्रिकोणविशेषः और जिसस्त्रीका लंवामस्तकहोवे सो देवरकों पतिके छोटे भाईको हत कर्त्तीहे १९ और रोमोंवाले और नाडियोंवाले और लवेमाथेवाली रोगिणी होतीहे २० अव सीमंतके लक्षण कहतेहें सीमंतस्त्रीका सूधा श्रेष्ट होताहे और माथा ऊचा हाथीके मस्तककीन्याइं सौभाग्य और ऐश्वर्यकों कर्त्ताहे २१ अव केशोंके लक्षणकहतेहे जिसके मोटे केशहोवें सो विधवा होतीहै और लवे शिरवाली वध्या होतीहे और वडे शिरवालीस्त्री दुष्टभाग्योंवाली होतीहे २२ और जिसस्त्रीके केशभ्रमरकीन्याइं श्यामहोवें और सूक्ष्महोवें और स्निग्ध होवें और कोमलहोवें और आगेसें थोडे कुंडलोंवाले होवें और कुटिल होवें सो अत्यंतशुभ होतेहें २३

और जिसकेकेश कठोर और आगेंसे कुटिल और विरले और पिंगलवर्णके और छोटे और रूखेहोवेंसो दुःख और दरिद्र और बंधन कोंदेतेहैं २४ इहँ उच्चाहट ६६ अंगोके लक्षण कहेहैंअब प्रसगसें मशक और तिलोंके लक्षण कहतेहै और जिसके भुवोंके मध्यमें अथवा माथेमें मशक अथवा तिलहोवे सो राज्यप्राप्तकर्त्ताहै अपने कुलके अनुमानसें और जिसस्त्रीके वाम कपोलमें लाल वर्णका मशक होवे तिसकों मिष्टान्न प्राप्तकर्त्ताहे ॥ २५ ॥ और तिल और लांछन चिन्हहृदयमें सो भाग्यकों देताहै २६ और, जिसस्त्रीके दहने स्तनमें लाल चिन्ह होवे सो स्त्रीचार कन्या और तीनपुत्रजन्मतीहै ॥ और जिसस्त्रीके वामेस्तनमें तिल अथवा लालचिन्हहोवे

परुषा कुटिलाग्राश्चविरलाश्चशिरोरुहाः ॥ पिंगलालघवोरूक्षादुःखदारिद्र्यबंधनाः २४ भ्रुवोरंतर्ललाटेवामशकोराज्यसूचकः वामेकपोलेमशकःशोणोमिष्टान्नदःस्मृतः २५ तिलकंलांछनंवापिहृदिसौभाग्यकारणं यस्यादक्षिणवक्षोजेशोणेतिलकलांछने २६ कन्याचतुष्टयंसूतेसूतेसाचसुतत्रयम् ॥ तिलकंलांछनशोणंयस्यावामेकुचेभवेत् २७ एकंपुत्रप्रसूयादौततःसाविधवाभवेत् ॥ गुह्यस्यदक्षिणेभागेतिलकंयदियोषितः २८ तदाक्षितिपतेःपत्नीसूतेवाक्षितिपंसुतम् ॥ नासाग्रेमशकःशोणोमहिष्याएवजायते २९ कृष्णःसएवभर्तृघ्न्याःपुंश्चल्याश्चप्रकीर्तितः ३० नाभेरधस्तात्तिलकंमशकोलांछनंशुभं मशकस्तिलकंचिन्हंगुल्फदेशेदरिद्रकृत् ३१करेकर्णेकपोलेवाकंठेवामेभवेद्यदि एषांत्रयाणामेकंतुप्राग्गर्भेपुत्रदंभवेत् ३२ भालगेनत्रिशूलेननिर्मितेनस्वयंभुवा नितंबिनीसहस्राणांस्वामित्वंयोषिदाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

२७ सो स्त्रीप्रथम एकपुत्रजन्मतीहै और जिसस्त्रीके गुह्यस्थानके दक्षिणभागमें तिलहोवे २८ सो राजाकीराणीहोतीहै और राज्यकरणे वाले पुत्रकोंजन्मतीहै और नासाके अग्रभागमें लालमशक राजाकी राणीकोंहिहोताहै २९ और नासाके अग्रमे कालेवर्णका मशक स्वामी घातकरणेवालीकों और व्यभिचारिणीकों होताहै ३० और स्त्रीकों नाभिकेनीचे तिल और मशक और लांछन शुभहोताहै औरमशकऔर तिलऔरचिन्हगिट्टेयोंमेंदरिद्रकरणेवाले होतेहैं ३१ औरजिसस्त्रीके हाथ औरकानऔरकपोल और कंठ औरवामें अंग तिल वा मशक वा चिन्हतीनोंमे एक होवे सो स्त्री प्रथमगर्भमें पुत्रजन्मतीहै ३२ और जिसके माथेमें ब्रह्माने त्रिशूल निर्माण कियाहोवे सो स्त्री हजारस्त्रीकी स्वामिनी होतीहै ३३

और यो स्त्री सोईहुई दतोंकों आपसमें घर्षणकरे और किटिकिटिशब्दकोकरे और विशलावे सो स्त्री श्रेष्ठलक्षणोंवालीवी श्रेष्ठ नाहिं होतीहै ३४ और जिसस्त्रीके हाथोंमें रोमोंका आवर्त्त चक्र दक्षिणावर्त्तहोवे सो शुभहोताहै और वामावर्त्तअशुभहोताहै औरनाभिमें और कर्णोंमें और छातीमें दक्षिणावर्त्त शुभकहाहै ३५ और पृष्ठके दक्षिणभागमें दक्षिणावर्त्तरोमोंकाचक्रशुभहोताहैऔर जिसस्त्रीके पृष्ठके मध्यमें नाभिकीन्याई वर्त्तुल गोल चक्र होवे सो वडीआयुषा और पुत्रोंकीवृद्धिकर्त्ताहै ३६ और भगके माथेमें जिसकों दक्षिणावर्त्त चक्र होवे सो राजाकीस्त्रीहोतीहै और कदाचित्भगजेहुएगडेकीन्याई चिन्हहोवे तव बहुतपुत्रोंका सुखदेताहै ३७ और जिसकेलकमें और गुह्यस्थानमें रोमोंका चक्रहोवे सो स्वामीकों और संतानकों हतकर्त्ताहै और जिसकेउदरमें और पृष्ठमें दोनोंचक्रहों

सुप्तापरस्परयातुदंतान्किटिकिटायते ॥ सुलक्षणाप्यशस्तासायाकिंचित्प्रलपेत्तथा ॥ ३४ ॥ पाणौप्रदक्षिणावर्तोधन्योवामोनशोभनः ॥ नाभौश्रुतावुरसिवादक्षिणावर्त्तइष्यते ॥ ३५ ॥ सुखायदक्षिणावर्त्तःपृष्ठवंशस्यदक्षिणे ॥ अत पृष्ठनाभिसमोवव्हायुःपुत्रवर्द्धनः ३६ राजपत्न्याःप्रदृश्येतभगमौलौप्रदक्षिणः सचेच्छकटभंगःस्याद्बहुपुत्रसुखप्रदः ३७ कटिगोगुह्यगोवर्त्तःपत्यपत्यनिपातनः ॥ स्यातामुदरवेधेनपृष्ठावर्त्तौनशोभनौ ३८ एकेनहंतिभर्त्तारंभवेद्न्येनपुंश्चली कंठगोदक्षिणावर्त्तोदुःखवैधव्यहेतुकः ३९ सीमंतेथललाटेवा त्याज्यादूरेप्रयत्नतः सापतिंहंतिवर्षेण यस्यामध्येककाटिकम् ४० प्रदक्षिणोवावामोवा रोम्णामावर्त्तकः स्त्रियाः एकोवामूर्द्धनिद्वौवावामेवामगतीअपि ४१ आदशाहपतिघ्नौतौ त्याज्यौदूरात्सुबुद्धिना कट्यावर्त्ताकुलटानाभ्यावर्त्तापतिव्रता ४२ पृष्ठ्यावर्त्ताचभर्तृघ्नीकुलटावाथजायते ॥ ४३ ॥ स्कंदउवाच

वें तवशुभनहिं होतेहै ३८ और एकहोवेतव स्वामीकों हतकर्त्ताहै और दोहोवें तव व्यभिचारिणीवी होतीहै और जिसस्त्रीकेकंठमेंदक्षिणावर्त्तचक्रहोवेसोदुःख और वैधव्यकाकारणहोताहै ३९ और जिसस्त्रीके सीमंतमें अथवा माथेमें भौंरडी होवे तिसकों दूरसेंहि त्यागकरे सो स्वामिकों एक वर्षकर हतकर्त्ताहै और जिसकी क्याडीमें भौंरडीहोवे तिसकावी त्यागकरे ४० और रोमोंका आवर्त्तक भौंरडी दक्षिणा वर्त्त अथवा वामा वर्त्त मस्तकमें एक वा दो होवें तव वामावर्त्त अशुभहोताहै ४१ सो दशदिनके अंदर स्वामि घात करणेवाले होतेहैं और जिसस्त्रीके लकमें आवर्त्त होवे सो व्यभिचारिणी होतीहै और जिसकी नाभीमें होवे सो पतिव्रताहोतीहै ४२ और जिसकी पृष्ठमें आवर्त्तहोवे सो स्वामिके घातकरणेवाली और व्यभिचारिणी होतीहै ॥ ॥४३ औरस्कंदजीअगस्त्यकोंकहतेहैं ॥

हेअगस्त्य श्रेष्ठ लक्षणों वाली वो स्त्री दुःशीला व्यभिचारादि स्वभाववाली होवे सो कुलक्षणोंकी शिरोमणी होतीहै और श्रेष्ठ लक्षणोंमें हीन वो जो स्त्री पतिव्रताहोवे सो संपूर्ण शुभलक्षणोंकी भूमि होतीहै ४४ और श्रेष्ठ लक्षणोंवालीस्त्री और श्रेष्ठ चरित्रों वाली और स्वामीके अधीन और स्वामीदेवताजिसका असी स्त्री विश्वेश्वर शिवजीकी कृपासें प्राप्तहोतीहै ॥ ४५ ॥ अब स्त्रीकों सुंदररूपहोणेका हेतु कहतेहैं ॥ जिनों स्त्रीयोंने पूर्वजन्ममें कुमारियाकन्या वा विवाहितस्त्रीया अनेकप्रकारोंके भूषणोंवस्त्रों कर्के अलंकृत कियाहैं सो इसजन्ममें श्रेष्ठरूपोंवालियां होतियाहैं ४६ और जिनोंस्त्रीयोंने पूर्वजन्ममें श्रेष्ठ तीर्थोंका स्नानकियाहै अथवा देहत्यागकियाहै सो श्रेष्ठ रूप और शुभलक्षणोंवालि

॥ सुलक्षणापिदुःशीलाकुलक्षणाशिरोमणिः ॥ अलक्षणापियासाध्वीसर्वलक्षणभूस्तुसा ॥ ४४ ॥ सुलक्षणासुचारित्रास्वाधीनापतिदेवता ॥ विश्वेशानुग्रहादेव गृहेयोपिदवाप्यते ॥ ४५ ॥ अलंकृताःस्ववासिन्योयाभिःप्राक्तनजन्मनि नानाविधैरलंकारैस्ताःसुरूपाभवंतिहि ४६ सुतीर्थेपुवपुर्याभि क्षालितवाविहायित तालावण्यतरंगिण्योभवतीहसुलक्षणाः ४७ अर्चिताजगतांमातायाभिर्मृडवधूरिह ताभवतिसुचारित्रायोषाः स्वाधीनभर्तृकाः ४८ स्वाधीनपतिकानांचसुशीलानांमृगीदृशां स्वर्गापवर्गावत्रैवसुलक्षणफलंहितत् ४९ सुलक्षणैः सुचरितैरपिमंदायुपंपतिं दीर्घायुषंप्रकुर्वंतिप्रमदाः प्रमदास्पद ५० अतः सुलक्षणायोषा परिणेयाविचक्षणैः लक्षणानिपरीक्ष्यादौहित्वादुर्लक्षणान्यपि ५१ लक्षणानिमयोक्तानिसुखायगृहमेधिनां विवाहानपिवक्ष्यामितन्निबोधघटोद्भव ॥ ५२ ॥ इतिस्त्रीलक्षणम् ॥

याहोतियाहे ४७ और जिनोंने इसजन्ममें पार्वतीकापूजन कियाहै सो श्रेष्ठ चरित्रोंवालिया और स्वामीकों वशकरणेवालियाहोतीयाहैं ४८ और जिन्होंस्त्रीयोंके स्वामी अपने अधीनहैं और श्रेष्ठस्वभाव जिनकाहै तिनकों स्वर्ग और मोक्ष इहांहिहै यो श्रेष्ठलक्षणोंका निश्चय कर्के फलहै ४९ और स्त्री श्रेष्ठ लक्षणा कर्के और श्रेष्ठ चरित्रों कर्के थोडीआयुवाले स्वामीकोंवी हर्षादियोंकर्के दीर्घआयुकर्तीहै ५० इसकारणसेंबुद्धिमानोंने श्रेष्ठ लक्षणोंवाली स्त्रीविवाहने योग्यहै प्रथम दुष्टलक्षणोंकात्याग कर्के श्रेष्ठ लक्षणोंकों देखे ५१ इहेस्त्रीयोंके लक्षण गृहस्थियोंके सुखके वास्ते मैंने कहेहै हेअगस्त्य अब आगे आठप्रकारके विवाह श्रवणकर सोकाशीखंडमेंकहेहैं ॥ ५२ ॥ इतिस्त्रीलक्षणानि ॥

अवशिवपुराणके उनतालीसमें ३९ अध्यायमेंगणेशजीके विवाहके प्रसंगमेंस्त्रीयोंकेविशेष लक्षण कहतेहैं प्रथम बुद्धिवान् श्रेष्ठ लक्षणोंवाली कन्याको देखकर्के विवाहे जिसविवाहकरणेसें दुःखकोंनहिं प्राप्तहोताहै १ तिसकारणसें कन्याके दोषोंकों सपूर्णताकर्के कहताहो जिन्होंलक्षणोंके जानणेकर्के बुद्धिमान् कदाचित् दुःखके समुद्रमें नहिंडूबताहै २ कपिलेरंगकी और केकरनेत्रोंवालीऔर हीनागी और रोगणी और दुष्टा और रोमाकर्केरहित और बहुतरोमोंवाली और अधिकअगवाली और पिंगलवर्णवाली ३ और टेढीनासकावाली और अत्यंत दृश और लंबी और स्थूल ओर अवर्णवाली इहसंपूरणत्यागकरणेयोग्यहैं ४ इहेचउदा १४ दोषवाहरके कन्यामें कहेहैं और अंदरकेदोषआरुतासमायोहे तिनोंनेवडे क्लेशकर्के जाने जातेहैं ॥ ५ ॥ सोप्रकारकहतेहैं तिसकारणसें

अवशिवपुराणेएकोनचत्वारिंशे ३९ ध्यायेगणेशविवाहप्रस्तावेकन्यालक्षणानि तस्मात्परीक्ष्यमतिमान्कन्यांलक्षणसंयुतां विवाहेतयथानस्यात्सर्वथानर्थभाजनम् १ तथाचसंप्रवक्ष्यामिकन्यादोषानशेषत.यान्विज्ञायसुधीःक्वापिनमज्जेद्दुःखसागरे २ कपिलांकेकराक्षीचहीनांगीरोगिणीखला अलोमाचातिलोम्नीचाधिकांगीपिंगलातथा ३ वक्रनासाकृशादीर्घास्थपुटास्खलतिरतथाएताःकन्याःपरित्याज्याविवाहेतुकृतात्मभिः ४ इमेकन्यागतादोषाश्चतुर्दशप्रकीर्तिताः वाह्याआभ्यंतरादोषादुर्ज्ञानाअकृतात्मभिः ५ तस्माद्वेदोक्तमार्गत्यदोषज्ञानंभवेदिह अष्टौपिंडान्विधायादौशुद्धमृत्संभवानिह ६ताभिस्तस्याःपरीक्षेतलक्षणंद्ब्रतंच यत्क्षेत्राद्गोष्ठाद्वेदितःसिंधुतश्च द्यूतस्थानादेरिणाच्चापिसम्यक् चतुष्पदात्पितृवनात्तथैवमृदोग्राह्याःशुद्धिमभीप्समानैः ७ इत्थमानीयमृत्कूटानसंकीर्णान्पृथक्पृथक् वेदमंत्रेनसमंत्र्यापिंडितांस्तान्गुरुर्वदेत् ॥ ८ ॥ एतन्मध्येत्वयाग्राह्यापिंडमेकसुलक्षणे पिंडंगृह्णातिमतिमान्फलंब्रूयात्सुनिश्चितम् ९

वेदोक्त विधिकर्केअंदरकेदोषोंकाज्ञान होताहै आठ शुद्धमृत्तिकाके पिंडबनावे ६ तिनोंपिंडोकर्के इदगत लक्षणोंकीपरीक्षाकरे एकक्षेत्रकीमृतिका १ औरगौस्थानकी२और वेदीकेस्थानकी ३ औरसमुद्रकेकनारेकी ४ और कलारकेस्थानकी ६ और उसरकी ७ और श्मशानभूमीकी इहेआठस्थानोंकी मृत्तिकालेकर्के अष्टगोलाकारबनावे और तिनको चिन्हितकर्के अष्टगकर्के युत्यबनावे तिन्होंकर्के कन्याके अंतरीयलक्षणोंका ज्ञान करलेवे इसप्रकारकर्के मृतिकाके गोलेभिन्न सज्ञाकर्के वेदमंत्रोंकर्केमंत्रिनकरे फेरतिनकों गुरु कन्याके आगेधरदेवे और अयसेंकन्याओंकहे ८ हेपुत्रिश्रेष्टलक्षणवाली इनके मध्यसेंएकपिंडकोंउठायलेयजवकन्यापिंडकोंउठायलेवेतववुद्धिमान्उसपिंडकाफलकहदेवेनिश्चयकर्के ९

और जबक्षेत्रके पिंडकों उठावे तबअन्नों करकेंयुक्त और स्वामी और पुत्रकेसुखकरकेंयुक्तहोतीहै और अब गोकेस्थानकेपिंडकोंउठावे तब स्वामीको अत्यंत प्यारीहोतीहै और वेदिकेपिंडकों उठावेतब वडेरूप वालीहोतीहै १० और नदीके पिंडकोंउठावे तबसमृद्धिवालीहोतीहै और जूएकेपिंडकों उठावे तबदु ष्टाहोतीहै और चुरस्तेकेपिंडकोंउठावे तब विरागिनीहोतीहै और कट्टरके पिंडकों उठावे तब धनहीन होतीहै ११ और श्मशानपिंडकों उठावे तबक्रूरऔर स्वामीकेमारणेवाली होतीहै इहेआठदोषअदा

क्षेत्रपिंडेन्नसंयुक्तापतिपुत्रसुखान्विता गोष्टपिंडेपतिमतीरूपिणीवेदिपिंडतः १० नदीपिंडेसमृद्धास्यात्द्यूतपिंडेशठाभवेत् प्रव्राट्चतुस्स्पृतीपिंडादेरिणाद्ध नवर्जिता ११ श्मशानपिंडेसुक्रूरापतिघ्नीस्यान्नसंशयः आंतरंलक्षणंवीक्ष्यकु र्यांद्वर्यांमनोरमाम् १२ इमेकन्यागतादोषामयातेयप्रकीर्तिताः पितृसंवंधतो दोषान्शृणुत्वंवरवर्णिनि १३ हीनकर्माथनिश्छंदोलोमशोर्शसम्रामयी क्षयी निष्पौरुषः श्वित्रिकुष्ठ्यपस्मारिणस्तथा दशैमान्पितृदोषांश्चपरीक्ष्यविधिव द्बुधः कन्यांसुलक्षणवतींविवाहेतमुदान्वितः १४ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्री रणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडे सामुद्रिकाऽध्या यश्चतुर्दशः १४



कैमैनेकहेहैं इनोंकोंदेखकर्के स्त्रीकोंविवाहे १२अबपिताकेसंबंधसेंदोषोंकोंश्रवणकरो १३ जिसकन्याका पिताजातीसेंहीनहावे और वद हिनहोवे और वहुतरोमोंवाला और आर्शरोगी और आमरोगीऔरक्ष यीरोगवाला और उद्यमकरकेंरहित और श्वेतकुष्ठी और मिरगीरोगवाला इहेदशदोषपिताके देखक केंवुद्धिमान् श्रेष्ठलक्षणोंवाली कन्याकोप्रसन्नताकर्के युक्तविवाहे १४ इतिश्रीजातकखंडेभाषाटीकायां सामुद्रीकलक्षणंनामचतुर्दशोऽध्यायः १४

अवअष्टकवर्गोंकाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमें मनुष्यकी जन्मराशिसें लेकर्के संहिताकारोंने जोगो
चरफल ग्रहोंकाकहाहै सोमोटाफल बालकोंके बोधकेवास्तेइसग्रंथमें प्रथमकहताहूं ॥ १ ॥ जन्मके
सूर्यमें यात्राहोतीहै ॥ और दूसरेसूर्यमें भयहोताहै और तीसरे सूर्यमें लक्ष्मी प्राप्तहोतीहै और
चतुर्थमेंव्यसनहोताहै और पांचमेमेंदीनताहोतीहै और छठेमें शत्रुनाशहोताहै और सातमेंयात्रा
और आठमेमें अत्यंतपीडा और नवममेंकांतिकाक्षय और दशममें वांछासिद्धिऔर एकादशमें लाभ
और द्वादशसूर्यमें खर्चहोताहै इहेक्रमकर्केसूर्यकाफलकहाहै २अवक्रमकर्केबाराराशिमें चंद्रमाका फल
कहतेहैं जन्मराशिमेंलेकर्के १ श्रेष्ठअन्नऔर २ धननाश ३ धनलाभ ४ कुक्षिरोग ५ कार्यनाश ६लाभ
७ धन ८ रोग ९ राजाकाभय १० सुख ११ लाभ १२ शोककर्त्ताहै इहचंद्रमाकाफलबाराभावकाक्रमसें

॥ अथाष्टकवर्गाध्यायोव्याख्यायते ॥ नृजन्मराशेःखचरप्रचारैर्यद्गोचरेसां
हितकैःप्रणीतम् स्थूलफलंतत्किलसंप्रवच्मिबालावबोधप्रदमंगानाम्
॥ १ ॥ गतिर्भयंश्रीर्व्यसनंचदैन्यंशत्रुक्षयोयानमतीवपीडा कांतिक्षयोभीष्टव
रिष्टसिद्धिर्लाभोव्ययोऽर्कस्यफलंक्रमेण २ सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभंकुक्षिव्यथां]
कार्यविघातलाभम् वित्तंरुजंराजभयंसुखंचलाभंचशोकंकुरुतेमृगांकः ३ पुत्रय
मेधनस्यस्यचंद्रस्योक्तमसत्फलं कलाक्षयेपरिज्ञेयकलावृद्धौतुसाधुतत् ४
भीतिंक्षतिंवित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशंधनमर्थनाशम् शस्त्रोपघातंचरुजंचरोगं
लाभव्ययंभूतनयस्तनोति. ५ बंधुंधनंवैरिभयंधनाप्तिंपीडांस्थितिंपीडनमर्थ
लाभम् खेदंसुखंलाभमथार्थनाशंक्रमात्फलंयच्छतिसोमसूनुः ६

कहाहै ३ और पांचमें और नवमें और दूसरेचंद्रमाका जो खोटाफल कहाहै सो फलकृष्णपक्षमें
होताहै और शुक्लपक्षमें २ । ५ । ९ चंद्रमाका फलशुभहोताहै ॥ ४ ॥ अवमंगलका
भावफलकहतेहैं ॥ जन्ममे १ भय और २ खेद और ३ धनलाभऔर ४ शत्रुवृद्धि और
५ धननाश और ६ धनलाभ और ७ धननाश और ८ शस्त्रघात और ९ रोगभय और १० रो
ग और ११ लाभ और १२ स्थानन खर्च करताहै इहे क्रमकर्के मंगलकाफल कहाहै ५ अव बु
धका फल कहतेहैं ॥ जन्मराशीमें १ बंधु और २ धन और ३ शत्रुभय और ४ धनलाभ और ५
पीडा और ६ स्थिति और ७ पीडा और ८ धनलाभ और ९ खेद और १० सुख और ११ ला
भ और १२ धननाश इहक्रमकर्के जन्मराशिसें बुधफलकहाहै ६

और जन्मराशिमें १ भय और २ धनलाभ और ३ पीडा और ४ शत्रुवृद्धि और ५ सुख और ६ शोक और ७ राजमान और ८ रोगभय और ९ दीनता और १० मानवृद्धि और ११ धनलाभ और १२ पीडा क्रमकर्के जन्मराशीसें बृहस्पतिफलकर्ताहै ७ अबशुक्रकाफलकहतेहैं जन्मराशिमें १ शत्रुक्षय और २ अत्यंतधनलाभ और ३ सुख और ४ धनलाभ और ५ पुत्र प्रीति और ६ शत्रुवृद्धि और ७ शोक और ८ धनलाभ और ९ श्रेष्ट वस्त्र लाभ और १० पीडा और ११ स्वकीयधनलाभइह शुक्रकर्ताहै ८ अब शनिका फल कहतेहैं जन्मराशिमें १ भ्रष्टकर्ताहै और २ क्लेश और ३ कल्याण और ४ शत्रुवृद्धि और ५ पुत्रसेंसुख और ६ सुखकोवृद्धि और ७ दोषवृद्धि और ८ पीडा और ९ सुख और १० निर्धनता और ११ धनलाभ और १२ अनेकअनर्थ शनिकर्ताहै ९ अब

भीतिंवित्तंपीडनंवैरिवृद्धिंसौख्यंशोकंराजमानंचरोगम् सौख्यंदैन्यंमानवित्तंचपीडांदत्तेजीवोजन्मराशेःसकाशात् ७ रिपुक्षयंवित्तमतीवसौख्यंवित्तंसुतप्रीतिमरातिवृद्धिं शोकंधनाप्तिंवरवस्त्रलाभंपीडांस्वमर्थंचददातिशुक्रः ८ भ्रंशंक्लेशंशचशत्रुप्रवृद्धिंपुत्रात्सौख्यंसौख्यवृद्धिंचदोषम् पीडांसौख्यंनिर्धनत्वंधनाप्तिंनानानर्थंभानुसूनुस्तनोति ९ हानिर्नैस्वंस्वचवैरंचशोकंवित्तंवादंपीडनंचापिपापम् वैरंसौख्यद्रव्यहानिंप्रकुर्याद्राहुःपुंसांगोचरेकेतुरेव १० राशौराशौगोचरेखेचराणामुक्तंपूर्वैर्यत्फलंजन्मराशेः तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानांभिन्नंभिन्नंदृश्यतेवश्यमेव ११ यस्मिन्राशौशीतरश्मिःप्रसूतौसंस्थःप्रोक्तोजन्मराशिःसएव एवंलग्नेनान्विताःसप्तखेटास्तेकिंनस्युःप्राणिनांजन्मभानि ॥ १२ ॥

राहुका फलकहतेहै ॥ जन्मराशिमें १ हानि और २ धनहीनता और ३ धनप्राप्ति और ४ वैर और ५ शोक और ६ धन और ७ विवाद और ८ पीडा और ९ पाप और १० वैर और ११ सुख और १२ धनहानि पुरुषोंकों गोचरमें कर्ताहै ॥ और राहुकीन्याईं भावफल केतु कर्ताहै १० और कहतेहैं राशिराशिमें गोचरमें ग्रहफल पूर्वाचार्योंने कहाहै जन्मराशिसें लेकर्के सो फल एकराशिमें जन्मे जो मनुष्यहैं तिनकों भिन्नभिन्न देखनेमें आवताहै इसमेंव्याख्यानहै ११ और जन्मकालमें जिसराशिका चद्रमा होताहै तिसको मनुष्योंकी जन्मराशिमानतेहैं ॥ इसी प्रकारकर्के लग्न कर्के युक्त सातग्रहोंकिया राशियां जन्मराशियाक्योंनाहीं होतियाहैं ॥ १२ ॥

इसमें कहतेहैं मनुष्योंकियानिश्चयकर्के आठहिजन्मराशियांहैंन और तिन्होंसेंशुभाशुभफल रेखाबिंदु के अंतरालसें अष्टवर्गोंकर्के कहाहै इसकारणसें गोचरफलसें अष्टवर्गोंका फल मुख्यहै १३ अब सूर्यका अष्टवर्ग बनाना कहतेहैं प्रथमलग्न कुंडली ग्रहयुत लिखे और तिसमें रेखा अथवा बिंदुदोनोंमें शुभाशुभ मानकर्के फलका विचारकरे सूर्य अपने स्थानसें और शनिसें और भौमसें आठमें और नवमें और जाहरमें और दूसरे और केंद्र १।४।७।१०में शुभफल देताहै और शुक्रसें ७ । ६ । १२ स्थानमें और गुरुसें ९ । ६ । ५।११ स्थानमें शुभफलदेताहै और चंद्रमासें जाहरमें और छठे और तीसरे और दशमें शुभफल देताहै और बुधसें पांचमें और तीसरे और नवमें और बाहरमें और छठे औरजाहरमें और दशमें शुभफल देताहै और लग्नसें तीसरे और चतुर्थऔर जाहरमें और छठे और बाहरमें स्थानमें शुभफल देताहै १४ अब चंद्रमाका अष्टवर्ग कहतेहैं चंद्रमा भौमसें ।३।५।२।३।६।१०।११ स्थानमें शुभहोताहै और शनिसें ६।३।११।५ शुभ होताहै और लग्न

पुंसामतोऽष्टौकिलराशयःस्युः शुभाशुभान्यत्रफलानितेभ्यः ततश्चरेखामिल नांतरालात्स्पष्टंफलंचाष्टकवर्गमुक्तं १३ स्वान्मंदारकुजतोरविस्तितपोला भार्थकेंद्रस्थितः शुक्रादस्तारिपुव्ययेषुचगुरोर्धर्मारिपुत्राप्तिपु चंद्रात्प्राप्तिरिपु त्रिखेपुज्ञाद्विजात्पंचत्रिनंदव्ययारिप्राप्त्यभ्रगतस्तनोस्त्रिपुसुखोपांत्यारिरिःफे शुभः १४ भौमात्ग्लौनवधीधनोपचयगः षट्त्र्याप्तिधीस्थोर्कजाल्लग्नाच्चोप चयेरवेरुपचयाष्टास्तेपुशस्तोवुधात् धीरंध्रेपुचतुर्व्ययत्रिपुगुरोःकेंद्राष्टलाभव्य येस्वादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्तांवुत्रिकोणेभृगोः १५ स्वाद्भौमोऽष्टचतुष्ट यायधनगोजीवात्षडायांत्यखेचंद्रादायारिपुत्रिगोभृगुसुतादष्टांत्यलाभारिगःज्ञा त्पंचायरिपुत्रिगोर्कतनयात्केंद्राष्टधर्मायगःसूर्याच्चोपचयात्मजेपुतनुतस्त्र्यायारि खाद्यैःशुभः १६ शुक्रादासुतधर्मलाभमृतिगःसौम्यःकुजार्क्योस्तपःकेंद्रायाष्टध नेस्वतोप्युपचयांत्यैकत्रिकोणेशुभः

सें ३।६।१०।११ स्थानमें शुभ होताहै औरसूर्यसें ३।६।१०।११।८।७शुभहोताहै और बुधसें ५।८।४ १।स्थानमें शुभ होताहै और बृहस्पतिसें १।४।७।१०।८।११।१२ शुभ होताहै और चंद्रमा अपनेस्था नसें १।३।६।१०।११।७ शुभ होताहै और शुक्रसें ३।१०।११।७।४।३।५ स्थानमें शुभफलदेताहै १५ अब भौमका अष्टवर्गकहतेहैं मगल अपनेस्थानसें ८।४।११।२स्थानमें शुभ फल देताहै और बृहस्प तिसें ६।११।१२।१० स्थानमें शुभफल देताहै और चंद्रमासें ११।६।३ स्थानमें शुभफलदेताहै और शुक्रसें ८।१२।११।६ स्थानमें शुभफलदेताहै और बुधसें ५।११।६।३ स्थानमें शुभफल देताहै और शनिसें १।४।७।१०।८।९।११ स्थानमें शुभदेताहै और सूर्यसें ३।६।१०।११।५।स्थानमेंशुभदेता है और लग्नसें ३। ११। ६। १०। १ स्थानमेंशुभफलदेताहै १६ ॥ अबबुधाष्टक वर्ग कहतेहैं बुधशुक्रसें ॥५।९।॥ ११॥ ८ स्थानमें शुभफल देताहै और मंगल शनिसें १।।१।।४।।७।।१०।।११।८।२स्थानमें शु

भफल देताहै और अपनेसें ३॥६॥१०॥११॥१२।७॥९॥५ स्थानमें शुभफल देताहै और सूर्यसें १ ॥ ॥ ५ ॥१२॥६॥११॥ शुभफल देताहै और बृहस्पतिसें ६॥११॥८॥१२ स्थानमें शुभफल देताहै और चंद्रमासें ॥ १०॥११॥८॥६॥४॥२ ॥ स्थानमें शुभफल देताहै और लग्नसें २ ॥ १०॥११॥८॥१॥४॥ ६ स्थानमेंशुभफलदेताहे१७अबजीवाष्टकवर्गकहतेहैं बृहस्पतिअपनेस्थानसें२।१ ११८॥३॥७॥४।७।१०स्थानमें शुभफलदेताहै और शुक्रसें २॥९॥१०॥११॥६॥५स्थनमें शुभ फल देताहै और लग्नसें १॥४॥७ १०।११।५।६।२।९।स्थानमें शुभफलदेताहै और मंगलसें २।८।१।४।७।१०।११स्थानमेंशुभफलदेताहै और चंद्रमासें ७।२।९।५।११ इनस्थानोंमें शुभफलदेताहै और सूर्यसें।३।९ ८ ११।१ ।४।७।१०।२ स्थानमें शुभफलदेताहै और बुधसें ९।५।२।११।१०।१।४।६ स्थानोंमें शुभफल देताहै और शनिसें ३।१२।५।६। स्थानमें शुभफलदेताहै १८॥ अब शुक्रकाअष्टवर्गकहतेहैं शुक्रलग्नसें॥ ११२॥ ३॥ ४।५।८। ९। ११। स्थानमें शुभफलदेताहै चंद्रमा

कोणांत्यारिभवेरथेरिपुभवाष्टांत्येगुरोरिंदुतः खायाष्टारिसुखार्थगः स्वस्वभवाष्टे
कांबुषट्सूदयात् ॥ १७ ॥ स्वात्स्वायाष्टत्रिकेंद्रेस्व नवदशभवाराति
धीस्थश्च शुक्राल्लग्नात्केंद्रायधीपट्स्वनवसुचकुजात्स्वाष्टकेंद्रायइज्यः इन्द्रो
र्द्यूनार्थकोणारिपुसहजनवाष्टायकेंद्रार्थगोर्कात् ज्ञात्कोणेद्यायखाद्यांबु
धिरिपुशनेस्त्र्यंत्यधीपट्सुशस्त। १८ खास्तांत्याहितवर्जितषुतनुतः शुक्रो
विनास्तारिखचंद्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टास्तिषु मदाद्व्येकरि
पुव्ययास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधीखज्ञात्कोणभवत्रिपट्सुभवधीत्र्यंत्यारि
धर्मेकुजात् ॥ १९ स्वान्मदास्त्रिपडायधीपुरवितोष्टायह्निकेंद्रे शुभोभौमात्
खायपडंत्यधीत्रिपुतनोःस्वायांबुपट्र्येकग। ज्ञादायारिनशांत्यखाष्टसुभृगो
रत्यायपट्सस्थितश्चंद्रादायारिपुत्रिगःसुरगुरोरंत्यायधीशत्रुगः ॥ २० ॥

सें।१।२।३।४ ५।८।९॥११।१२। स्थानमें शुभफलदेताहै औरअपनेसे १॥२। ३।४ ५॥८।९।१०।११ स्थानमें शुभफलदेताहे और सूर्यसें १२।८ ११ स्थानमे शुभफलदेताहै और शनिसें।३।४।५।८।९।१०।११। स्थानमें शुभफल देताहे और बृहस्पतिसें ९।११। [illegible]। ॥५।१०।स्थानमें शुभफल देताहि और बुधसें ३।५।११।३।६ स्थानमें शुभफल देताहै और भौमसें ११।५।३।१२।६।९ स्थानमें शुभफल देताहै ११

अबशनिका अष्टवर्गकहतेहैं शनिअपनेसे ३।६।११।५ स्थानमें शुभदेताहै और सूर्यसें८।११ ॥ २।१। ४॥७ १०॥ स्थानमे शुभदेताहै और मगलसें १०। ११।६।१२।५।३।स्थानमे शुभ देताहै और लग्नमें १०।११। ४।६।३।१ स्थानमें शुभदेताहै और बुधसें ११।९।३।१२।१०।८ स्थानमें शुभदेताहै और शुक्रसें, १२।११। ६ स्थानमे शुभदेताहै और चद्रमासें।११ ॥६।३ स्थानमें शुभदेताहै और बृ स्पतिसें १२।११॥५॥ ६ स्थानमें शुभफलदेताहै [illegible]

अथरवेरष्टवर्गांकाः ४८ — अथचंद्रस्याष्टवर्गांकाः ४९

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ल	चं	म	बु	बृ	शु	श	ल	र
१	३	१	३	५	६	१	३	१	२	१	१	३	३	३	३
२	६	२	५	६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	६
४	१०	४	६	९	१२	४	६	६	५	४	७	५	६	१०	७
७	११	७	९	११	०	७	१०	७	६	५	८	७	११	११	८
८	०	८	१०	०	०	८	११	१०	९	७	१०	९	०	०	१०
९	०	९	११	०	०	९	१२	११	१०	८	११	१०	०	०	११
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०	०	११	१०	१२	११	०	०	०
११	०	११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथभौमस्याष्टवर्गांकाः ३९ — अथबुधाष्टकवर्गांकाः ५४

मं	बु	बृ	शु	श	ल	र	चं	बु	बृ	शु	श	ल	र	चं	म
१	३	६	६	१	१	३	३	१	६	१	१	१	५	४	१
२	५	१०	८	४	३	५	६	३	८	२	२	२	६	५	२
४	६	११	११	७	६	६	११	५	११	३	४	४	९	६	४
७	११	१२	१२	८	१०	१०	०	६	१२	४	७	६	११	८	७
८	०	०	०	९	११	११	०	९	०	५	८	९	१२	१०	८
१०	०	०	०	१०	०	०	०	१०	०	८	९	११	०	११	९
११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	९	१०	१२	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	११	११	०	०	०	११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथगुरोरष्टवर्गांकाः ५६ — अथशुक्रस्याष्टवर्गांकाः ५२

बृ	शु	श	ल	र	च	मं	बु	शु	श	ल	र	चं	मं	बु	बृ
१	२	३	१	१	२	१	१	१	३	१	८	१	३	३	५
२	५	५	२	२	५	२	२	२	४	२	११	२	५	५	८
३	६	६	४	३	७	४	४	३	५	३	१२	३	६	६	९
४	९	१२	५	४	९	७	५	४	८	४	०	४	९	९	१०
७	१०	०	६	७	११	८	६	५	९	५	०	५	११	११	११
८	११	०	७	८	०	१०	९	८	१०	८	०	८	१२	०	०
१०	०	०	९	९	०	११	१०	९	११	९	०	९	०	०	०
११	०	०	१०	१०	०	०	११	११	१२	११	०	११	०	०	०

और कहतेहैंलग्नकर्के युक्त सातग्रहोंके यो स्थान कहेहैं तिन्होंस्थानोंमें शुभफलकों देतेहैं और इन्हों नें अनुक्त स्थानोंमें निश्चयकर्केअशुभ फलकोंदेतेहैं और शुभाशुभके अंतरकरणेसें यो अधिकफलहो वे सो फल अपनीराशिसें ग्रहदेताहे २१ और सूर्यादिग्रहोंके क्रमकर्के चक्र लिखेहैं तिनमें शुभाशुभ फलका क्रम सुधाकर्के धराहै चक्रकों देखकर्के अष्टकवर्ग सिद्ध करलेवे अव शुद्धिके वास्ते सूर्यादिग्र हाकियांसंपूर्णशुभरेखाकहतेहैं सूर्यकियां ४८ और चंद्रमाकिया ४९ और मंगलकियां ३९ और बु धकियां ५४ और वृहस्पतिकियां ५६ और शुक्रकियां ५२ और शनिकियां ३९ और संपूर्णोंका ऐकत्र ३३७ है ॥ और कईक ग्रंथोंमें रेखाकेस्थानमेंबिंदुकल्पनाकर्केफलादेश कहतेहैं २२ अव और कहतेहैं जन्मलग्नकास्वामी जिसराशिमें स्थितहोवे तिसराशिसें जिस जिसस्थानमें रेखा निश्च

स्थानानियानिप्रतिपादितानिशुभानिचान्यान्य
शुभानिनूनम् तयोर्वियोगादधिकंफलंयत्स्वरा
शितोयच्छतितद्ग्रहेंद्रः ॥ २१ भुजंगवेदान
वसागराश्वनवाग्नयः सागरसायकाश्च रसेषवो
युग्मशरानवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गरेखाः २२
विलग्ननाथाश्रितराशितोत्रभवंतिरेखाःखलुयत्र
यत्र ॥ विलग्नतस्तत्रच तत्रराशौसंस्थापनीयाः
सुधियाक्रमेण २३ क्लेशोर्थहानिर्व्यसनंसमत्वं
शश्वत्सुखानित्यधनागमश्च ॥ संपत्प्रवृद्धिर्विपु
लामलश्रीःप्रत्येकरेखाफलमामनंति २४ इत्येकखेटस्यहिसंप्रदिष्टारेखायुतिश्चा
खिलखेटरेखाः ॥ अष्टाद्विसंख्यास्तुसमास्ततोपियथाधिकोनाःसदसत्फलास्ताः२५

अथशनेरष्ठवर्गोकाः ११

श	ल	र	चं	मं	बु	बृ	शु
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	३	६	५	८	९	११
९	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७	०	१०	१०	१२	०
०	१०	८	०	११	११	०	०
०	११	१०	०	१२	१२	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

यकर्केहोवे सोरेखालग्नसें लेकरके तिसीतिसी राशिमेंश्रेष्ट बुद्धिवाल्योंने स्थापनकरणे योग्यहै२३इसका तात्पर्य इहेहे जोजिस ग्रहका अष्टकवर्ग वनावे तिसग्रहकी राशिसेंलग्नकुंडलीमें ग्रहस्थापन वर्के रेखा और बिंदु सिद्धकरे और ग्रहजिसजिसराशिमें स्थितहोवें तिसतिस स्थानसेंरेखा बिंदु सिद्धकरे अवप्रत्ये क रेखाका फल कहतेहे १ क्लेश और २ धनहानि और ३ व्यसन और ४ सम और ५ निरंतर सुख और ६ नित्यधनप्राप्ति ७ औरसंपदाकीवृद्धि और ८ श्रेष्टलक्ष्मी प्राप्तकर्तीयाहैं इहे फल एकोरेखा सें लेके आठपर्यंत कहाहे २४ इहे एकग्रहकी रेखाका फलकहाहे और इसादिनमें संपूर्णग्रहोंकिये रेखासिद्धकर्केफलकहे जवअठाई २८ रेखाहोवेंतवग्रहोंका बलावल शुभाशुभ सम होताहै और अ ठाईसें अधिक होवेंतव शुभफलकर्तेहैं और अठाईसें हीनरेखाहोवेंतव नेष्टफलकर्तेहैं। २५

अब ग्रहोंके शुभाशुभफलका समयकहतेहैं मंगल और सूर्य इह दोनों राशिके आदमें प्रवेश कालमें हि फल कर्तेहैं और शुक्र बृहस्पति दोनों जबराशिके मध्यभागमें आवतेहैं तब फलकर्तेहैं और चंद्रमा शनी दोनों ग्रह राशिके अंत्यभागमें फल देतेहैं और बुध सर्वदाकाल सारी राशिमें बराबर फल कर्ताहै ॥ २६ । अब अंगविभागसें ग्रहरिष्टका प्रकार कहतेहैं सूर्य रक्तपित्तकर्के शिर और मुखमें पीडा कर्ताहै और चंद्रमा कफ रक्तकर्के छातीमें और गलमें पीडा कर्ताहै और मंगल पित्तमज्जाकफ रक्त कर्के पृष्ठमें और उदरमें पीडा कर्ताहै और बुध त्रिदोषकर्के पैरोंमें और हाथोंमें पीडा कर्ताहै ॥ २७ ॥ और कटिदेशमें और जघामें वात कफ कर्के बृहस्पति पीडा कर्ताहै और गुदामें और अंडकोशमें कफवायुकर्के शुक्र पीडा कर्ताहै और जानुयोंमें और पट्टोंमें वायुकर्के शनि पीडा कर्ताहै २८ ॥

कः कीदृक् फलदइत्याशंक्याहइलातनूजश्चपतिर्नलिन्याः प्रवेशकालेफलदः किलस्यात् राश्यर्धभागेभृगुजामरेज्यौप्रांतेशर्नींदूचसदेंदुसूनुः॥ २६ ॥ शिरः प्रदेशेवदनेदिनेशोवक्षस्थलेचापिगलेकलावान् पृष्ठोदरेभूतनयश्चपीडांकरोति सौम्यश्चरणेचपाणौ ॥ २७ कटिप्रदेशेजघनेचजीवः कविश्चगुह्यस्थलमुष्कयुग्मेजानूरुदेशेनलिनीशसूनुश्चारेणवाजन्मनिचिंतनीयम्॥ २८॥ यदायदास्यास्प्रातिकूलवर्तीस्वांगस्वदोषेणकरोतिपीडाम् इदंतुपूर्वंप्रविचार्यसर्वंप्रश्नप्रसूत्यादिषुकल्पनीयम् २९ अथात्रदिनचर्याप्रकारोयथासर्वग्रहाणांरेखैक्यंकुर्यादिष्टदिनेततः फलशुभाशुभंब्रूयात्तत्प्रकारोविधीयते ॥ १ ॥ सर्वग्रहाणांरेखैक्यंशक्रतुल्यंयदाभवेत् तदात्रिवर्गहानिः स्यात्तिथितुल्येमहापदः ॥ २ ॥ भूपतुल्येभूपभयहानिः सप्तदशेस्मृता अष्टादशेतुरेखैक्येधनहानिश्चजायते ॥ ३ ॥

जब सूर्यादि ग्रहगोचरसें और अष्टवर्गोंसें प्रतिकूलनेष्टफल करणेवाले होवें तब आपने २ अंगोंमें अपनेदोषोंसेंपीडाकर्तेहैं इसप्रकारकर्केपूर्वविचारकेप्रश्नलग्नसें औरजन्मलग्नसें औरवर्षमासादिकालमेंकल्पनाकरणेयोग्यहै २९अबअष्टवर्गकीरीतीसेंदिनचर्याकहतेहैंजिसदिनमेंशुभा शुभफलदेखनाहोवेतिसदिनमेंसपूर्णग्रहोंकीयारेखावनायकर्के शुभाशुभफलकहेतिसकाप्रकारकहतेहैं १जिसादिनमें सपूर्णग्रहोंकीरेखाके योग चउदां १४ होवें तिसदिनमें धर्मार्थकामकीहानिहोतीहै और पद्रां १५ होवेंतब बडीआपदाकी प्राप्त होताहै २ और सोलां १६ होवें तब राजाका भय होताहै और सतारा १७ होवें तब किसीकार्यकी हानी होतीहै और जिसदिनमें अठारा रेखाका योग होवे तिसमें धनकी हानी होतीहै ३

श्रीर जिसदिनमेंउन्नी रेखाहोवैंतिसदिनमेंखोटीबुद्धि श्रीर वंधुपीडाहोतीहै श्रीर जिसदिनमें बीसरेखा होवैंतिसदिनमें खर्च श्रौर किसीसें लडाई होतीहै ४ श्रीर जिसदिनमें उकी रेखा होवें तिस दिनमे हृदत दुःख होताहै श्रीर जिसदिनमें बाई रेखा होवें तिस दिनमें अपमान श्रीर शून्यफल होताहै ५ श्रीर जिसदिनमें तेरी २३ रेखा होवें तिसदिनमें धर्म श्रीर अर्थकीहानि होतीहै श्रीर जिसदिनमे चउवीं २४ रेखा होवें तिसदिनमें अकस्मात् धनकी हानि होतीहै ६ श्रीर जिसदिनमेंपच्चीस २५ रेखा होवें तिसदिनमें हस्त गत द्रव्यकी हानि होतीहैश्रीर जिसदिनमें छब्बी २६ रेखा होवें तिसदि

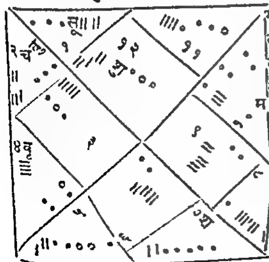
कुमतिर्बंधुपीडास्यात्तथाचैकोनविंशतौ रेखैर्वधनखतुल्येतुव्ययश्चकलहःस्मृतः ४ एकविंशतिरेखैश्चेद्धृदिदुःखप्रजायतेपराभवस्त्वफलतादैन्यंचाकृतिसंख्यके ५ त्रयोविंशतिकेप्रोक्ताहानिर्धर्मार्थयोरपि अकस्माद्धनहानिःस्याच्चतुर्विंशोन्मिते तथा ॥ ६ करस्थितस्यद्रव्यस्यहानि स्यात्पंचवर्गके षड्विंशतुल्येकलहःसम ताधिष्ण्यसंज्ञके ॥ ७ ॥पिंडेद्रव्यागमश्चैकोनात्रिंशेजनपूजनम् त्रिंशन्मितेराज पूज्यःसुकृतंसुखसंयुतम् ॥ ८ ॥ एकत्रिंशन्मितेद्रव्यंसन्मानंचविशेषतः दंततु ल्येःसर्वसिद्धिर्महालाभोमरैःसमैः ॥ ९ चतुरधिकत्रिंशद्रेखाभिःक्रमेणचैकैकव र्द्धनात्क्रमशः रससाररेखायावत् फलमुक्तत्वष्टवर्गजंपुंसामिति ॥ १० ॥

नमें किसीसेंलडाई होतीहै श्रीर जिसदिनमें सताईरेखा होवें तिसदिनमें शुभाशुभफलसमानहोता है ७श्रीर जिसदिनमेंअठाई रेखाहोवेंतिसदिनमें धनलाभकिंचित् होताहै श्रीर जिसदिनमेउनत्री रेखाहो वें तिस दिनमें मानहोताहै श्रीरजिसदिनमेंतीस ३०रेखा होवें तिसदिनमेंराजासेंमानहोताहै श्रीर पुण्य कर्म श्रीर सुखहोताहै ८ श्रीर इकत्रीरेखाहोवें तव द्रव्यलाभ श्रीर सन्मान होताहै ऊँर बत्रीरेखा हो वेंतब सर्वसिद्धिहोतीहै ऊँर तेत्री रेखाहोवें तव बडालाभ होताहै ९श्रीर चौत्री रेखा सेंलेकर्के छित्रीरे खापर्यंत अधिक २ शुभ फल कहाहै १०

और अष्टकवर्गोंके फलका विचार बृहज्जातकमें कहतेहैं इतिनिगदितमिति इह कहाजो अष्टवर्गनामनेका प्रकार तिनकर्के कहेजोस्थानहै सो इष्ट शुभहै और अन्यत् उक्तस्थानोंसे विना और स्थान अनिष्ट अशुभकहेहै इसमें इहकहाहै स्वात्मदात्कुजतोग्वि मूत्रिपेलाभायकेन्द्रस्थित इत्यादि पाठकरनेंजो जो स्थानकहेहें तिनका शुभफलहै औरअशुभस्थानोंका अशुभफल होतामें विशेषसें इष्टानिष्ट फलको परस्पर घटायदेवे जो अधिकबचे सो शुभाशुभफल कहतेहैं इसनें अयसे कहाहै जन्मकालमें जिनस्थानमें ग्रह स्थित होवें तिनस्थानसें शुभाशुभफलको ग्रहदेतेहैं तिनमें जो पाठकनसें शुभस्थान कहतेहैं तिन्होंको बिंदुओंकर्के चिन्हतकरे फेर रेखा बिंदुओंका अंतरकर्के शुभाशुभफलकीपक्ति होतीहै जहां आठबिंदु पडें तहा पूर्णशुभ फल होताहै और छे बिंदुओंतें पादोन और चारबिंदुओंतें अर्ध और दो बिंदुओंसे पा

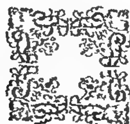
अथाष्टकवर्गफलविचारेबृहज्जातकेविशेषः इतिनिगदितमिष्टनेष्टमन्यद्विशेषाद धिकफलविपाकंजन्मभात्तत्रदद्युः उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टत्वपचयगृह नीचारातिगैर्नेष्टसंपत् ॥ ११ ॥

दचतुर्थांशशुभ फलहोताहै और इसीप्रकारसें रेखाकर्के अशुभ फल होताहै अत्रोदाहरणे ग्रहसंस्थामों नलग्नतःतिसमें मीनराशिका शुक्र और दूसरे मेषका सूर्य और तीसरे वृषके चद्र बुध और पाचमें कर्कटराशिमें गुरुऔर अष्टम तुलामें शनि और एकादश मकरका भौ



म इसग्रहसंस्थाकर्के चक्रलिखाहै इसमें भौमका शुभाशुभफ लदिखानेहें स्वात्कुजतोष्टचतुरायधनगोजवित्तायत्यापरदेचद्रा दायरिपुत्रिगोभृगुसुतादथपलाभारिग ज्ञात्यचायरिपुनिगोंकत नयात्केन्द्राष्टधर्मायग सूर्याद्योनचान्ममजेषुतनुतस्त्यायारिखाल्पैः शुभः १ अब इसमेंशुभा शुभफलका विचार कहतेहैं मेषरा शिमें रेखा पांच औरबिंद तीन अंतरसे रेखा दोशेषहै तिन में भौमका चतुर्थांशक्र मेषराशिमेंनष्ट फल है गोचरवक ज

व मेषका भौम होगा तव चतुर्थांशकर्के अशुभ फलकरेगा इसीप्रकार वृषराशिमें रेखा पांच विंदू तीनहैं वृषराशीका भौमवी चतुर्थांशकर्के अशुभहै और मिथुनमें बीरेखापांच विंदूतीनहैं मिथुनराशीके भौमका फल चतुर्थांश कर्के अशुभहै और कर्कटमें चार विंदू और चार रेखाहैं तव कर्कट राशिमें भौमका फल शुभाशुभ कुछनहिंहै मध्यमहै ॥ और सिंहमें पांच विंदू और तीनरेखाहैं अंतरकरणेसें विंदूदोशेषहैं तिससें जव सिंहराशिमें भौम आवे तव चतुर्थांश कर्के शुभफल कर्त्ताहै और कन्यामें रेखा छे और विंदू दो है अंतरसें चार रेखा अधिकहैं तिससें कन्याका भौम अर्ध अशुभफलकर्त्ताहै और तुलामें रेखातीन विंदुपाचहैं तिसमें तुलाका मंगल चतुर्थांशकर्के शुभहै और वृश्चिकमें रेखासात और विंदु एकहै तिससें वृश्चिक राशिका भौम तीनपाद कर्के अशुभहै और धनराशिमें रेखाछे और विंदूदोहैं तिसमें धनका भौम अर्ध फल सदा नेट कर्ताहै ॥ और मकरमें तीनरेखा पांचविंदुहै-तिससें मकरराशिका भौम सदा चतुर्थभागकर्के शुभहै और कुंभराशिमें और चार विंदुहैं तिसमें कुंभराशिका भौम सर्वदा समहै और मीनराशिमें रेखापाच विंदुत्रयहै तिसमें मीनराशिका भौम सदैव चतुर्थांशकर्के अशुभहै ॥ इस प्रकारकर्के शुभाशुभफलके आठस्थानहैं तिनका अंतर कर्के जो शेष बचे सो फलकहे ॥ इस प्रकारकर्के जन्मकालमें ग्रहयुकराशिकर्के संपूर्ण ग्रहोंके अष्टवर्ग वनावे और इसमें थकाकर्तेहैं योग्रह अष्टकवर्गकीरीतीसेंशुभहोवे और सोईग्रहअन्ययुक्तिकर्के भावफल द्दक्फलादि युक्तिकर्के अशुभहोवे तिसमें फलादेश किसप्रकारकर्के कहना सो कहतेहैं तिसमें तुल्य दोनों स्थानोंमें विरोध होवे तव सो ग्रहफलहीन होजाताहै और जव जोग्रह अष्टवर्गकीरीतिकर्के सुवर्णदहै और किसीकरीतिकर्के सुवर्णापहारी होवे तवसो ग्रह सुवर्णदनाहिं होताहय जवदोंकारणोंकर्के सुवर्ण दहोवे और एककारण कर्के सुवर्णापहारीहोवे तव सो ग्रह सुवर्णद होताहै और एक कारणकर्के सुवर्णदहोवे और दोंकारणोंकर्के सुवर्णापहारी होवेसोग्रह सुवर्णापहारीहोताहै इसरीतिसेंविचारकरेऔर इसकारणसें बादरायण और यवनाचार्यादि योंनें अष्टवर्ग विधान कीयाहैजोइसग्रहसें इह ग्रह इसस्थानमें शुभवाऽशुभहोताहै अब इसमें और कहतेहैं जव अष्टवर्गविशेषताकर्के कहेहैं तव चद्रराशिसें अर्थात् जन्मराशीसें गोचरफल भिन्नभिन्नकिसकर्के कहाहै सोकहतेहैंअष्टवर्गज फल विशेषहै और गोचरफल



अष्टवर्गको अपेक्षासें गौणहै ॥ किसकारणसें यवनाचार्यनेबी भिन्नभिन्न गोचरफल कहकर्के पीछेसें अष्टवर्ग अंगीकारकियेहैं ॥ और बादरायणनेबी गोचर फलकथनानंतर अष्टवर्गफल कहाहै तद्वाक्यं यथा कष्टश्रेष्टतुल्य संख्येफलेचेत्स्यातांनाशः फलयोस्तत्रवाच्यः ॥ वाच्यःपंक्तियों तिरिक्तस्तयोःस्था त्स्थानेस्थानेकल्पनेयंप्रदिष्टेति ॥ इसकाइहअर्थहै पूर्वोक्तरीतिसें सिद्धकिये योग्रहोंके अष्टवर्ग तिन में रेखा बिंदू रूपकर्के योकष्टऔरश्रेष्टफलकहाहै सोदोनोंकष्टश्रेष्ट फलसमानहोवें तब शुभाशुभफल दोनों का नाशहोताहै और यो फलअधिकहोवे अंतरकियेसें तिसग्रहकीपंक्ति काफलकहे और इहकल्पना प्रत्येकस्थानमें कहिहै ॥ उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टमिति ॥ और यो ग्रह लग्नसें वा चंद्रमासें उपचय । ३ । ६ १० । ११ । स्थानोंमें स्थितहोवे और मित्रग्रहकीराशिमें और अप नी उच्चराशिमें और उपलक्षणसें स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें स्थित होवे सोग्रह पुष्ट फलकों देताहै औ र यो ग्रह लग्न और चंद्रमासें अपचय । १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ । स्थानोंमे स्थित होवे और नीचराशिमें और शत्रुकीराशिमें उपलक्षणसें अस्त और निर्जितहोवे सो श्रेष्टफल नहि

अथजातकपारिजातेविशेषः चक्रंविलिख्यसहलग्नदिवाकराद्यैःसूर्यादिलग्नभ वनांतवियच्चराणाम् वाक्याष्टकोपगतवर्णनियोजिताश्चेद्भिन्नाष्टवर्गजनितास्सि लबिंदवःस्युः ॥ १ ॥ देवोधबोधीगवशस्तमोरमाधूलिःक्रमाद्गुणकरादिबिंदवः सालोलसंख्यासमुदायबिंदवः सर्वाष्टवर्गःसमुदायसंज्ञकः ॥ २ ॥

करताहै अब इसमें शंकाकर्तेहै इह विचारजन्मकालीनग्रहस्थितिमें करणा अथवा चारवशसें कल्प नाहै इसमें देवकीर्ति कहताहै अपचयराशौजीवे शत्रुक्षेत्रेच जन्मकालेस्यात् परस्तु सदयास्पापंफलम निशपनोयथाकालमिति ॥ असमर्थानायाभ्रायामाह ॥ नीचस्थाग्रहनिर्जितास्त्वभिभूताविरश्मयोहृ स्ताः भुजगाइवमंत्रहताभवंतिकार्याक्षमालग्ने इति तत्रशास्त्रेपुयानिचान्यान्युत्रादिसंस्थानाशुभाशुभप्रवृत्ति दर्शकानि ॥ नीचादिस्थानामशुभफलप्रदर्शकानितानिजन्मसमयेज्ञेयानि ॥ यानिचशुभानामशुभा नांचफलानिग्रह वशेनैवपुष्टिप्रदर्शकानि तानिचारवशात्फलदानकालेग्रहस्पष्टेयानीत्यलम् ॥ अथ जातकपारिजातमें विशेष कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यादिग्रहोंकों लग्नकर्के युक्त आठ कोष्टके चक्रमें स्था पनकरे तथया नवरेखा ऊर्ध्वकरे और दशरेखा तीर्यक्करे तब बहत्र कोष्ट सिद्धहोतेहैं तिनमें ऊर्ध्वपंक्तिमें सूर्यादिसातग्रह और अष्टमा लग्न स्थापनकरे और नीचेके कोष्टोंकोंपूर्वोक्त प्रकारकर्के बिंदुकरे भिन्नाष्टवर्गमें जो कहेहैं और तिन्होंबिंदुर्योका योग समुदायसंज्ञिक कहतेहैं सूर्यादिसातग्र होंके सर्पके टेव ॥ ४८ ॥ चंद्रमाके ध्रुव ॥ ४९ ॥ भौमके धोग ॥ ३१ ॥ बुधके ध्रुव । ४४

बृहस्पतिके तम । ५६ । शुक्रके रमा । ५२ । शनिके धूलि । ३९ । संपूर्णग्रहोंके बिंदुयों का योग सालोलसत्पा । ३३७ । कर्के होताहै । २ । भिन्नाष्टवर्गचक्रमें पूर्वलिखेहैं ॥ अब जन्मपत्रमें अष्टकवर्ग बनानेकेचक्र कहतेहैं त्रयोदशरेखा पूर्वापरदेवे और नवरेखादक्षिणोत्तरदेवे अयसें करणेसें अष्टोत्तरशत कोष्ट ॥ १०८ ॥ सिद्ध होतेहे तिनमें ऊर्ध्वकी पंक्तिमें लग्नादि । १२ । राशिया लिखे तिन्हमें जन्मकालीन ग्रहयथास्थित राशिमें स्थितकरे और चक्रके बाहर लग्नके कोष्टसें नीचेके कोष्टके बाहर सूर्यादि सातग्रह और लग्नका चिन्ह करे ऊर्ध्वसें लेकर आठकोष्टोंके समान फेर लग्नादि राशियोके नीचे ग्रहोंके बिंदु समान कोष्टमें स्थित करे तब अष्टवर्ग सिद्धहोताहै
और कहतेहे मेषादिराशियोंमें जिसभावमें आठबिंदुहोवे तिसभावकी पुष्टि और बल और वृद्धिकरणेवाले होतेहै और जिसभावमें छै पाच सात बिंदुहोवे तिसभावका शुभफल देतेहैं और जिसभा-

मेषादियद्गृहगतावसुसंख्यकास्तास्तद्भावपुष्टिबलवृद्धिकराभवंति षट्पंचसप्तसहितातिशुभप्रदानित्रिद्व्येकाबिंदुयुतभानिनशोभनानि ३ मिश्रफलंभवतिसागरबिंदुयोगेरोगापवादभयदायदिशून्यभावाः एकादिबिंदुयुतभातुमुखग्रहाणां भिन्नाष्टवर्गजनिसर्वफलंप्रवच्मि ४ करोतिनानाविधरोगदुःखभयाटनादीनिचुसेकबिंदुः द्विकोमनस्तापनृपालचोरकृतापवादाशननाशनानि ५ त्रिकस्तु ॥
संचारकृशावलंबकलेवरव्याकुलमानसानि सुखासुखार्थव्ययवित्तलाभफलप्रदःसागरबिंदुकःस्यात् ६

वमें तीन दो एक बिंदुहोवें सो तिसभावका शुभफलनहिंदेतेहै ३ और जिसभावमें चार बिंदुका योगहोवे तिसकामिश्रफल शुभाशुभदोनों फल होतेहै और जोभाव बिंदुसे रहित होवे तिसभावका रोग अपवाद भय पीडा फल होताहे अब एकादि बिंदुयोंकरके युक्त सूर्यादिग्रहोंका भिन्नाष्टवर्गका जन्मकालमें संपूर्णफल कहताहा ४ जिसराशिमें जन्मकालमें ग्रहस्थितहोवे तिसराशिमें एकबिंदुहोवे सो ग्रह अपनी दशामें अनेक रोग और दुःख और भय और विदेशभ्रमण कर्ताहे और जिसग्रहके दोबिंदुहोवे तिसको मनस्ताप और राजासें और चोरसे भय और अपवाद और भोजनकानाश होताहै ५ और जिसग्रहके तीन बिंदुहोवे सो ग्रहभ्रमण और देहमेंकृशता और व्याकुलताकर्ता है और जिसग्रहके चार बिंदुहोवे सो सुख दुःख और धनव्यय और लाभ दोनोंफल कर्ताहै ६

और पांच विंदुयों करकें युक्त ग्रह श्रेष्ट वस्त्रलाभ और पुत्रसुख और साधुका संग और विद्या औ
र धनकर्ताहै और छै विंदुयोंकरकें युक्त ग्रह श्रेष्ट मोहणकरणेवाला रूप और श्रेष्ट स्वभाव और युद्ध
में जय और धन और जश और वाहनदेताहै ७ और सातविंदुयोंकरकेंयुक्त ग्रहघोडे हाथीसें लेक
कें वाहन और सेना और धनकासुखदेताहै और आठविंदुयोंकरकें युक्त ग्रह रूपगुण पुत्र स्त्री वाह
नसेना धनकरकें युक्त राजप्रतापकों प्रकट कर्ताहै ८ और कहतेहैं यो ग्रह पांचसें लेकरकें विंदुयोंसें
युक्त और अपनेवर्गमें स्थितहोताहै सो ग्रह नित्यंप्रति शुभफलकर्ताहै और इससें अन्यथा चार वि
दुयोंसें हीन और शत्रुवर्गादिस्थित होवे तव नेष्ठ फल देताहै और गोचरमेंवी तिसी प्रकारफल दे

सद्वस्त्रलाभसुतलालनसाधुसंगविद्याधनानिकुरुतेतुसपंचविंदुः ॥ षट्विं-
दुकस्तुनवमोहनरूपशीलसंग्रामजिद्धनयशोबलवाहनानि ॥ ७॥ सप्त
विंदुस्तुरगादियानसेनाधनप्राभवशोभनानि ॥ विंद्वष्टकःसप्तगुणाभिराम
राजप्रतापंप्रकटीकरोति ८ शरादिविंदुस्थितराशियातस्वकीयवर्गशुभदस्तु
नित्यम् अतान्यथाचेदफलप्रदातागोचारतःशून्यफलंप्रमादी ९ स्वोच्चमित्रा
दिवर्गस्थाःकेंद्रादिबलसंयुताःअनिष्टफलदाःसर्वेस्वल्पविंदुयुतायदि १०
दुष्टस्थानस्थितायेचयेचनीचारिभांशगाः ॥ तेसर्वेशुभदानित्यमधिविंदुयुता
यदि ११ दिनेशमुख्यग्रहवर्गकेषुयदाशनिःशून्यगृहंप्रयातः ॥ करोति
पित्रादिकभावनाशमतीवरोगादिभयाकुलानि १२ अथसूर्यस्यविशेषफलम्

ताहै और विंदुरहित ग्रह प्रमादकर्ताहै ९ और यो ग्रह अपने उच्च और मित्र और स्वक्षेत्रके वर्गमें
स्थितहोवें और केंद्रादि वलकरकें युक्तहोवें सो सपूर्णग्रह स्वल्प विंदुयुत नेष्ट फल कर्तेहैं १०
और कहतेहैं यो ग्रह दुष्टस्थानमें स्थितहैं और यो ग्रह नीचराशिमें और शत्रुक्षेत्रमें और शत्रुकेन
वांशोंमें स्थितहैं सो संपूर्णग्रह जन्मकालमें चारसें अधिक विंदुयोंकरकें युतहोवें तव सर्वदाकाल
शुभफल देतेहैं ११ और कहतेहैं सूर्यादिग्रहोंके वर्गमें जिसभावमें विंदुहीन शनिहोवे और
पित्रादिकभावमें स्थित होवे तिसभावका नाश और अन्यत रोगादि भय देताहै १२

श्रीरजिसके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें स्थित नीच और शत्रुकीराशिमें एक दो तीन विंदुयोंकरकेंयुक्त होवे सो मनुष्यरोगी होताहै और पांचसे लेकर्के आठपर्यंत विंदुसहित लग्नमें सूर्य उच्च अथवास्व क्षेत्रमें स्थितहोवे सो राजा और वडी आयुपावालाहोताहै १३ और जिसके जन्मसमयमें केंद्र १।४।७।१० और त्रिकोण ९।५। स्थानोंमें और छे और पांच और सातऔर आठविंदुयों करके युक्त होवे तव क्रमकर्के रुद्र २२ मल ३५ नील ३० चल ३६ वर्षोंमें जातककों अथवा जातकके पिताकों मृत्यु कर्त्ताहै १४ अब सूर्यका और फलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्याष्टकवर्गमें सूर्य रेखाविंदुको शोधन कर्के दोविंदु अधिकरहैं अर्थात्पांचविंदु सूर्यके होवें और केंद्रस्थान १।४।७।१० में स्थित सूर्य होवे और चंद्रमाकर्के युक्त

लग्नंगतेदिनकरेरिपुनीचभागेजातःकृशाणयुगविंदुयुतेचरोगी वाणादिविंदुसहितोदयगेदिनेशेस्वोच्चेथवानिजगृहेनृपतिश्चिरायुः १३ केंद्रत्रिकोणोपगतेदिनेशेपट्पंचसप्ताष्टकविंदुवर्गे रुद्रामलानीलचलाब्दकेषुजातस्यवाजनकस्य मृत्युः १४ शोध्यावशिष्टद्वयविंदुयातेकेंद्रस्थितेसेंदुशनीदुसूनौ भानौदशाब्दात्परतःसमृद्धांतातस्यराज्यश्रियमाहुरार्याः १५ अथचंद्रस्य शून्यागारंतरणिशशिनोरष्टवर्गेतदीयमासंराशौ सकलशुभदेकर्मणित्याज्यमाहुः ॥ यक्ष्मालस्यंशशिनितनुगेसैकलोकाक्षिविंदौ सप्तत्रिंशच्छरदिमरणंद्वित्रिखेटान्वितेच १६ केंद्रत्रिकोणायगतेशशांकेनीचारिगेद्व्यादिकलाविहीने विदुद्विकेवायदिवात्रिविंदौतद्भावनाशंकथयंतितज्ज्ञाः १७

शनि और बुध होवें तव दशवर्षजन्मसे उपरांत तिसके पिताकों राज्यलक्ष्मी प्राप्त होतीहै अयसे श्रेष्टमुनिकहतेहैं १५ अब चंद्रमाका फलकहतेहै सूर्यचंद्रमाके अष्टकवर्गमें जिसराशिमें विंदुन होवे अर्थात्विंदुसें शून्यराशि होवे तिससंक्रातिमासकों संपूर्ण शुभकार्यमें त्यागकरे अर्थात् विंदुयुक्त राशिके मासमें शुभकर्मकरणा कहतेहैं और जिसके जन्मसमयमें लग्नगतचंद्रमा एक दो तीन विंदुकर्के युक्तहोवे तिसकों यक्ष्मरोग और आलस्यकर्त्ताहै और जिसका दो तीन ग्रहोंकरकेयुक्तलग्नमें होवेतव सतत्रि ३७ वर्षमेंमृत्यु कर्त्ताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ चंद्रमानीचराशीका ८ वा शत्रुकी राशिमें कृष्णपक्षमें दो वा तीन विंदुकर्के युक्त जिसभावमें स्थित होवे तिस भावका नाश कर्त्ताहै अयसे ऋषि कहतेहैं १७

और जिसकेजन्मसमयमेंचारबिंदुसेलेकर्के अठबिंदुपर्यंतचंद्रमायुक्तहोवे और कोण ९।५ और चतुष्टय १।४।७।१० स्थानोमेंऔरएकादश ११ स्थानमेंबलयुक्तस्थितहोवेतिसभावकीवृद्धिकर्ताहै औरकहतेहैंआठबिंदुकर्केयुक्तचंद्रमाकेंद्रस्थान १।४।७।१० मेंजिसकोस्थितहोवे सोविद्या और यश औरबलकर्केयुक्तराजाहोताहै १८ अबमंगलकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमेंउच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें नवम ९ चतुर्थ ४ लग्न १ दशम १० स्थानमेंमंगलआठबिंदुकर्केयुक्तहोवे सोमनुष्य क्रोडधनकास्वामीहोताहै और धनमेषसिहमकरवृश्चिकराशिकामंगलकेंद्र १।४।७।१० स्थानमेंस्थित और चारबिंदुयोंसे अधिकाबिंदुयुतहोवे सोराजाहोताहै १९और जिसकेजन्मसमयमें आठबिंदुकर्केयुक्तमंगलदशम १० वालग्न१ मेंस्थितहोवे सो छोटा राजा होताहै और राजाके कुलमें जन्माहुवाबहुत देशोंकाराजा होताहै और अपनेउच्चमें और अपने क्षेत्रमें मंगल स्थित आठबिंदुकर्के युत होवे सो चक्रवर्ती राजा होताहै २०

वेदादिबिंदुयुतकोणचतुष्टयेवालाभेविधौबलयुतेयदिभावबृद्धिः बिंद्वष्टकेशशिनिकेंद्रगतेतुजाताविद्यायशोधनबलप्रबलानरेंद्राः १८ अथकुजस्य स्वोच्चेस्वकेगुरुसुखोदयमानयातेर्बिंद्वष्टकेचयदिकोटिधनप्रभुःस्यात् चापाजसिंहमृगकीटविलग्नसंस्थेभौमेचतुष्टयफलोपगतेचराजा १९बिंद्वष्टकेधरणिजेतिलघुक्षितीशोमानेथवातनुगतेचमहीपतिःस्यात् जातोवनीशकुलजोयदिदेशनाथःस्वोच्चेस्वराशिसहितेयदिचक्रवर्ती२०अथबुधस्य केंद्रत्रिकोणेवसुबिंदुकेज्ञेजातीयविद्याधिकभोगशालीस्वोच्चादिकेकद्वितयत्रिबिंदौतद्भावबृद्धिर्नचभावहानिः२१बिंद्वाधिकर्क्षयत्तदागारमासेविद्यारंभःसर्वविद्याकरःस्यात् गोचारेणाज्ञस्यशून्यालयस्थेमंदेबंधुज्ञातिसंपद्विनाशः २२ अथगुरोः जीवाष्टवर्गाधिकबिंदुराशौलग्नेनिषेकःकुरुतेसुतार्थी तद्राशिदिग्भागगृहास्थितानिगोवित्तयानानिबहूनिचस्युः ॥ २३॥

अब बुधका फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें आठबिंदुयों कर्के युक्तकेंद्र १।४।७।१० त्रिकोण९।।५ स्थानमेंबुधस्थितहोवे नव जातीमेंप्रधानपनाऔर विद्याकर्के युक्त और भोगोंकेभोगनेवाला होताहै और उच्चस्वक्षेत्रमित्रगृहमें एक दोतीनबिंदुयोंकर्के युक्तबुध भावकी वृद्धिकर्ताहै नाशनहिंकर्ताहै २१ ॥ और जिसराशिमेंबुध चारबिंदुयोंसे अधिक बिंदुयुक्त होवे तिसमेंक्रांतिमासमें विद्याकाप्रारंभ संपूर्णविद्याकेकरणेवाला होताहै और बुधको बिंदुरहितराशिमें जब गोचरकर्के शनि आवे तब जातिभ्रष्ट और बुद्धिनाश और संपदाका नाश होताहै २२ अब बृहस्पतिका फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिके अष्टकवर्गमें चारबिंदुसे अधिक बिंदुयुत राशि होवे तिसलग्नमें निषेक गर्भाधान करणेसे पुत्रजन्मताहै और तिसराशिकेदिग्विभागमें गौआदिधनऔरवाहनोंकर्केयुक्तस्थान शुभ होतेहैं २३

और जीवाष्टकवर्गमें चारसें हीन विंदुयुत राशिमें जब गोचरमें सूर्य आवे तब संपूर्णशुभकर्मों का नास होताहै और पाचसें लेकर्के विंदुयुत जोव षष्ठाष्टमव्यय स्थानमेंभी स्थित होवे तबभी बडी आयुषा कर्के युक्त और धनी और शत्रुओंके जीतनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और जिसके जन्म समयमें आठ विंदु युक्त राशिमें बृहस्पति केंद्र ॥ १ । ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें वा नवमस्थानमें स्थित होवे अथवा नीच और शत्रुकी राशिकों त्यागकर्के और मौढ्य दोषसें अ न्यमें रहित होवे तब अपने यशकर्के युक्त राजा होताहै ॥ २५ ॥ और जब अपसे योगमें ब्राह्मणके कुलमें जन्मे तब राजाके तुल्य प्रतापी होताहै और अनेक मङ्गकर्मोंके करनेवाला और बुद्धि और प्रताप और गुणोंकर्के युतहोताहै २६ और जिसके जन्ममें सातवा आठ विंदुयुत राशिमें

जीवाष्टवर्गकयुविंदुगृहोपयातेभानौकृताखिलशुभानिविनाशितानि ॥ पंचा दिविंदुकरिपुव्ययरंध्रगेप्येजातश्चिरायुरतिवित्तजितारिकःस्यात् ॥ २४ ॥ स्वोच्चेथवानिजगृहेवसुविंदुयुक्तेकेंद्रास्थितेसुरगुरौगुरुभावगेवा नीचारिभावमप हायविमूढराशौजातःस्वकीययशसापृथिवीपतिःस्यात् ॥ २५ ॥ यदामहीदेव कुलप्रयातः तदीययोगेनरपालतुल्यः कृतानिपुण्यप्रभवप्रसिद्धबुद्धिप्रतापानि गुणाभिरामः ॥ २६ ॥ सप्ताष्टविंदौसहलक्ष्मणेनजीवेबहुस्त्रीधनपुत्रवंतः षड्विं दुकेवाहनवित्तवंतः सपंचविंदौजयशालिवंतः ॥ २७ ॥ अथशुक्रस्य साष्टविंदु फलंकोणकेंद्रगेभार्गवेतुबलवाहनाधिपः आयुरंतमविनाशभोगवान्वित्तरत्नभु विशादिविंदुके ॥ २८ ॥ नीचास्तरिष्फनिधनोपगतेचकाव्येपूर्वोदिताक्षितिप योगविनाशनंस्यात् शुक्राल्पविंदुयुतमंदिरदिग्विभागेस्त्रीवश्यहेतुशयनीयगृ हंप्रशस्तम् ॥ २९ ॥

बृहस्पति स्थित होवेसोस्त्रीपुत्रधनकर्के युक्त चिरकाल जीताहै और छै विंदुयुक्त राशिमें बृहस्पति हो वे तब वाहन और धन कर्के युक्त होताहै और पांचविंदुयु तराशिमें बृहस्पतिहोवे तब जयकर्के युक्त श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहै २७ अब शुक्रका फलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें आठ विंदुयुत राशिमें शुक्र केंद्र १ ।४। ७ ।१० कोण ९।५ स्थानमें स्थित होवे सो सेनाका स्वामी और वाहनोंका स्वा मी होताहै और पांच विंदुसें लेकर्के युक्त राशिमें शुक्र होवे तब संपूर्ण आयुषा पर्यंत भोगवान् और धनरत्नोंकर्के युक्त होताहै २८ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नीचराशिमें और अस्तंग त और द्वादश।ष्टमस्थानमें शुक्र स्थित होवे तब पुर्वोक्त राजयोगकानाश करताहै और शुक्रके चार विंदुसें हीन राशिकी दिशामें गृहके स्थानमें स्त्रीवश्यके निमित्त शयनका स्थान शुभ होताहै २९

अथशनिकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शनिके अष्टकवर्गमें शून्यराशिमें जब गोचरमार्गकर्के फेर शनि आवे तब जातक शीघ्र मृत्युकों प्राप्त होताहै अथवा धनक्षयकों प्राप्त होताहै और जिस के जन्मसमयमें एक दो तीन विंदुकर्के युक्त केंद्र १।४।७।१० स्थानमें उच्च राशिकोविना शनि स्थि त होवे तब अल्पायु करताहै १० और छे पांच विंदुयुक्त लग्नमें बलीहोयकर्के शनि स्थित होवे तब जन्मसें लेकर्के अत्यन्तदुःखी और धननाशकों प्राप्त होताहै और पांचविंदुसें लेकर्के अधिक॥ विंदुयुत राशिमें और नीचशत्रुकी राशिमें शनि स्थित होवे और चंद्रमा शुभग्रहके वर्गमें स्थित हो वे तब चिरायु बडी आयुर्बलवाला होताहै ११ और मूलादि नीच शत्रु राशिमें पांच वा चार विं दुकर्के युत शनि होवे तब प्राकार और ऊंठ इत्यादि धनकर्के युत होताहै और मंगलकर्के युक्त

॥ अथशनेः ॥ कोणस्थशून्यतरराशिगतेतुमंदेजातस्यमृत्युफलमाशुध नक्षयोवा एकाद्वित्रिकयुतविंदुयुतेचकेंद्रेमुक्तेस्वतुंगभवनेरविजेल्पमायुः ३० षट्पंचविंदुसहितेतनुगेबलाढ्येजन्मादिदुःखबहुलंधननाशमेति मंदेशरादि फलनीचसपत्नभावेजातश्चिरायुरतिशोभनवर्गकेंद्रौ ॥ ३१ ॥ ॥ मूलादिनीचग्रहगेशरवेदविंदौदासोष्ट्रवित्तसहितस्तनयेतनुस्थे सारेद्युविंदुगाणि तेपुरमंत्रतंत्रग्रामाधिपस्तुगिरिविंदुग्रहेधनाढ्यः ॥ ३२ ॥ अथसामुदायाष्टकवर्गफलम् ततःसमालिख्यभगोलचक्रेसमस्तविंदुस्थितरा शिकोष्ठम् रव्याधिकानामजपूर्वकानांविंदूपयोगस्यफलंवदामि १ आपंचविं शतिफलान्यफलानिसत्यमात्रिंशदक्षसहितानिचमध्यमानि ॥ त्रिंशत्परा णिसुखवित्तयशस्कराणितत्रावबृद्धिफलदानिचसामुदाये २

पांच चार विंदुयुत राशिमें स्थित होवे तब पुर और ग्रामका स्वामी और तंत्र मंत्रके जाननेवालाहोताहै ॥ और सात विंदुयुतराशिमें धनी होताहै ॥ ३२ ॥ अब सामु दायाष्टक वर्गका फलकहतेहैं प्रथम राशिचक्रकों लिखे तिसमें सूर्यादि ग्रहोंके जो मेषादि राशियोंमें स्थित विंदुनिनके योगकों स्थापनकरे तिसकों जन्मपत्रमें संमीलन चक्रकर्के लिखतेहैं तिसमें प्रत्येक तन्वादिभावोंमेंविंदुयोगका फल सामुदाय संज्ञाकर्के कहतेहैं १ संपूर्णविंदुयोग प चविंशति २५ सें हीन अशुभ होताहै और पचविंशति सें लेकर्के त्रिंशत्पर्यंत शुभाशुभदोनों फलकरेहैं अर्थात्मध्यमफल देतेहैं और त्रिंशत् ३० विंदुनसेंलेकर्के विंदुयोंकायोग सुख और धन और यशकों देताहै और भावकोवृद्धि करताहै २

और योग्रह अपनि उच्चराशीमें और स्वक्षेत्रमित्रक्षेत्रमेंत्रिकोण९।५केंद्र१।४।७।१० स्थानमेंस्थित और शुभग्रहके वर्गमेंस्थित सो संपूर्णग्रह अल्पविंदुयुत भावकीहानिकर्त्तेहैं ३ औरयो ग्रहद्वादशअष्टमषष्ठ सप्तमस्थानमें और नीच शत्रुकी राशीमें और शत्रुके वर्गमें स्थित होतेहै और गुलिककी राशिके स्वामी साथ युक्तहोतेहैं सो अधिक विंदुयोंके योगकर्के मुख्यफलशुभफलकर्त्तेहैं और भावकीहानि नहीं कर्त्तेहैं ४ और जिसके जन्मसमयमें दशमस्थानमें जो विंदुका योग तिससें एकादशस्थानमें बहुत होवें और एकादशसें द्वादशस्थानमें थोडे विंदु होवें और द्वादशसें लग्नमें बहुत होवें तब मनुष्य सुखी और धनी और यश और बलकर्के युक्तहोताहै ५ और जितने सख्या कर्केविंदु लग्नमें स्थितहोवें और उतनेहि एकादशस्थानमें होवें तब विंदुतुल्य बरसर व्यतीत हु

येतुंगराशिस्वसुहृद्गृहस्थायेकोणकेंद्रोपचयस्थिताश्च येसौम्यवर्गादिवलोपयाता स्तेनाशदालाघवविंदुकाश्चेत् ३ येचावसानरिपुरंध्रतुरंगभानांयेनीचपापरिपु खेचरवर्गसंस्थाः ॥ येमांदिराशिपतिनासहबोधकाश्चतेसर्वमुख्यफलदास्त्व धिविंदुकाश्चेत् ४ मानस्थिताल्लाभगृहेवहुत्वेलाभाल्लघुत्वेयदिरिःफराशौ ॥ रिष्फोपयातादधिकेविलग्नेनातःसुखीवित्तयशोबलाढ्यः ५ यावद्विंदौलग्न भेतावदीशेसंख्यातीतेवत्सरेराजमानम् ॥ वित्तंपुत्रंचातिविद्यामुपैतिजातःसं पद्योगशालीनरश्चेत् ॥ ६ ॥ रिष्फाधीशेमंदगेस्वोदयस्थेहोरारंध्रस्वामिनौ दुर्बलौच ॥ लग्नेयावद्विंदुसंख्यास्तदीयाजातस्यायुर्वत्सराःसंभवति ७ यानाधीशेलग्नगे वाहनस्थे लग्नाधीशे तद्ग्रहोपेतराश्योः॥ त्रिंशत्संख्याविं दवःसन्तयश्चेज्जाताराजश्रीनिधानानरेशाः ८

येपीछे मनुष्यकों राजासंमान और धन और पुत्र और विद्या प्राप्त होताहै और संपदाके योग कों प्राप्तहोताहै ६ और जिसके जन्मसमयमें द्वादश घरका स्वामीशनिके क्षेत्रमें वा अपने क्षेत्रमें स्थित होवे और लग्न और अष्टमकेस्वामी दोनों निर्बलहोवे और लग्नमें जितने सख्या कर्के विंदुयोंका योग होवे उतने वर्षप्रमाणकर्के तिसका आयुहोताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थघरका स्वामी लग्नमें स्थित होवे और लग्नका स्वामी चतुर्थस्थानमें होवे और तिन की राशियोंमें स्थित यो विंदुहै सो तेत्री ३३ संख्या कर्के होवे तब मनुष्य राज्यलक्ष्मीकों प्राप्त होतेहै और राजा होतेहै ८

और योगांतर कहतेहैं लग्न चतुर्थ एकादश इन्हों तीनों भावोंमें त्रिंशत् ॥ ३० ॥ संख्यासें अधि
कबिंदु स्थित होवें तब मनुष्य को बहुतलक्ष्मी और राज्य चालीस ४० वर्षके उपरंत प्राप्तहोताहै
१ और जिसके जन्मसमयमें पंचविंशति २५ बिंदुयोंसें लेकर्के तेत्री ३३ बिंदुपर्यंत चतु
र्थस्थानसें नवमभावपर्यंत बिंदुस्थित होवें तब मनुष्य अठाईस २८ वर्षके उपरंत सेना औ
र वाहनों कर्के युक्त होताहै १० और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति कर्कट राशिका
चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे और चालीस ॥ ४० ॥ बिंदु संख्या कर्के युक्तहोवे और मेषराशि
में लग्नगत सूर्यहोवे ऐसे योगमें योजन्मताहै सो लक्ष १००००० घोडयोंका स्वामी होताहै ११
और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चालीस ४० बिंदुयोंकर्केयुक्त लग्नमें वा एकादशमें वा दशम स्था

होराबंधुप्राप्तिभावत्रयेषुत्रिंशन्मानाधिक्यबिंदूपगेषु जातस्तेजःश्रीबहुत्वंचरा
ध्यंचत्वारिंशद्वत्सराद्भूर्ध्वमेति ॥ ९ ॥ यत्पंचविंशतिमुखास्त्रिदशांतसंख्यावं
धुस्थितान्नवमराशिकबिंदवश्च यद्यष्टकेनसहविंशतिवत्सराणामतेपरंशर
दिवानरवाहनाढ्यः ॥ १० ॥ देवाचार्येवाहनस्थेस्वतुंगेचत्वारिंशाद्विंदुसंख्या
समेते मेषागारेलग्नगेवासरेशेजातोराजालक्ष्यसंख्याश्वनाथः ॥ ११ ॥ च
त्वारिंशाद्विंदुयुक्तेविलग्नेचापेमानेभार्गवेमीनराशौ स्वोच्चेभौमेकुंभगेभानुपुत्रेजा
त सर्वश्रीधरःसार्वभौमः ॥ १२ ॥ क्रियादिराशित्रितयोपजाताभवंतिपूर्वादि
चतुर्दिशश्च फलाधिकेयदिस्थितत्प्रदेशेधनादिवृद्धिंसमुपेतिजातः ॥ १३ ॥
अथगर्गपराशरादिमतेनप्रतिमासंसमुदायाष्टकवर्गफलप्रतीकारः सप्तभिर्वि
दुभिर्युक्तमासेमृत्युर्भवेन्नृणां अपमृत्युविनाशायदद्याद्वैतिलपर्वतम् ॥ १ ॥ ॥

नमें मीन राशिका शुक्रहोवे और मकरराशिका मंगल और कुंभराशिका शनि होवे सो सार्वभौम रा
जा सारीपृथ्वीका राज्यकरणे वाला होताहै १२ और कहतेहैं मेषादि राशियोंको तीन आवृत्तिकर्के
पूर्वादि चार दिशा कहियाहै जैसें १ ।५।९ । पूर्व २ ।६।१० ।दक्षिण । ३ । ७ ।११ । पश्चिम । ४ ।८
१२ उत्तर जिन्हों राशियोंमें अधिकबिंदु होवें तिसदिशासें धनादि वृद्धिकों मनुष्य प्राप्त होताहै १३
अब गर्गपराशरादिमतकर्के प्रत्येकमासमें प्रस्ताराष्टकवर्गका फल और तिसका उपाय कहतेहैं जिस
मासमें संपूर्णग्रहोंके सातहि ७ बिंदुहोवें तिसमासमें अपमृत्युकर्के मरताहै तिसअपमृत्युके दूरकरणे
वास्ते तिलपर्वतकादानकरे १

॥सुवर्ण वा वीसपल प्रमाणकर्के तोले ॥ ६६ ।मासे ८ ॥ अथवा तिसकाअर्ध अथवा यथाशक्ति कर्के दानकरे और जिसमासमें आठ बिंदुहोवें तब हीनताकों प्राप्त और शीघ्रमृत्युको प्राप्त होताहैं ॥ २ तिस अरिष्टकेदूरकरणेवास्ते कपूरकी तुला करे अथवा तिसके मूल्यका अर्ध राजा दान करे और इतरलोकोंकों दशपल कपूर चंद्रमाकीप्रीतिके वास्ते दान करणा कहाहै ३ तिस दोषसें तत्कालरहितहोतेहैं और इच्छाफलकोप्राप्तहोतेहैं और जिसमासमें नव९ बिंदुहोवें तिस मासमें निश्चयकर्केसर्पसेंमृत्युकोप्राप्तहोताहै ४ तिसकेनिमित्त विष्णुकी प्रीतिवास्तेचारघोडयोंवाला रथदानकरे और जिसमासमेंदशबिंदुकायोगहोवे तिसमासमेंमनुष्यशस्त्रसेंप्राणोंकोंत्यागताहै ॥ ५ तिसरिष्टके दूरकरणेवास्ते बहुत हीरयोंकर्के युक्तसोयादानकरे और जिसमासमें एकादश ११

सुवर्णविंशतिपलंतदर्धवास्वशक्तितः वसुभिर्हीनतांयातिशीघ्रंमृत्युवशंनरः २
सकर्पूरतुलांदद्यात्तन्मूल्यार्धमथापिवा इतरेषांदशपलंचंद्रप्रीत्यैप्रकल्पयेत् ३
तद्दोषान्मुच्यतेसद्योवांछितंचफलंभवेत् नवभिर्बिंदुभिःसर्पान्म्रियतेमनुजोध्रु
वम् ॥४॥ ततस्तार्क्ष्यरथप्रीत्यैरथंदद्याच्चतुर्हयम्
दशभिर्बिंदुभिःशस्त्रात्प्राणांस्त्यजतिमानवः ५ बहुहीरकनीरंध्रंकवचंतत्रदा
पयेत् रुद्रैःप्राप्याभिशापंचप्राणैर्मुक्तोभवेन्नरः ६ मुक्ताहारान्वितंचंद्रंरौप्य
स्यदशभिःपलैः ॥ निर्मितंश्रद्धयादद्याद्ब्राह्मणायाग्निहोत्रिणे ७ आदित्यैर्जल
दोषेणमानवस्यमृतिंवदेत् ॥ भूमिंदद्याद्द्विजेंद्रेभ्योभोग्यांशतकुटुंबिभिः ८
त्रयोदशभिरैर्व्याघ्रान्मानवोमृतिमाप्नुयात् ॥ हिरण्यगर्भदानेननरस्तद्दोषात्प्रमु
च्यते ९ अचिरंजीवितंजह्याच्छकैःकालेनभक्षितः ॥ मूर्तिंवरवराहस्यदद्या
त्कांचननिर्मिताम् १० पंचेंदुभिःप्रमीयेतगजदानमिहोच्यते ॥

बिंदुहोवें तिसमें ब्राह्मणादियोंके शापकों प्राप्तहोयकर्के प्राणोंकों त्यागताहै ६ तिसके निमित्त मोतीयोंके हारकर्के युक्त दशपल प्रमाण चांदीका चंद्रमा दानकरे श्रद्धाकर्के युक्त अग्नीहोत्रीब्राह्मणकों देवे ७ और जिसमासमें बारां १२ बिंदुहोवें तिसमें जलदोषकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै तिसरिष्टकेनिमित्त श्रेष्ट ब्राह्मणोंकतांई सओ १०० कुटंबीके भोजनके वास्ते पृथ्वीदान देवे ८ और जिस मासमें त्रयोदश १३ बिंदु होवें तिसमें शेरकर्के मृत्युकों प्राप्तहोताहै तिस रिष्टके वास्तेब्रह्माकी मूर्तिदान करणे कर्के तिसदोषसें रहित होताहै ९ जिस मासमें चतुर्दश १४ बिंदुहोवें तिस मासमें कालकर्के शीघ्रही मृत्युकों प्राप्तहोताहै तिसरिष्टके दूरकरणे वास्ते सुंदर सूरकी मूर्ती बनायकर्के सुवर्णका दानकरे १० और जिसमासमेंपंद्रा १५ बिंदुहोवें तिसमें हाथीसेंमृत्युहोताहै

तिस रिष्टके निमित्त हाथी दान करणा कहाहै और अशक होवे तब यथाशक्ति सुवर्ण का हाथी बनायकर्के दान करणा योग्यहै ११ अथवा तिलोंकर्के युक्त महादान करणा कहाहै और जिस मासमें सोलाबिंदु होवे तिसमें मनुष्य रिष्टको प्राप्तहोताहै १२ तिसमें कल्पतरु दान कर्के तिस दोषसें रहित होताहै अथवा दशकर्ष सुवर्ण दानकरे अथवा पांच कर्ष दानकरे दश मासेकों कर्ष कहतेहैं १३ और जिसमासमें सतारा बिंदु १७ होवे तिसमें आधि और व्याधिकर्के पीडित होताहै और स्थानसें चलायमान और थोडा भोजन नित्य प्रतिकरताहै ॥ १४ और तिस दोषकों गुडधेनुके दान करणेकर्के दूरकरे और तिसकालमें पापीग्रहकी द

अशक्तेस्तुयथाशक्तिहेमहस्तीप्रदीयते ११ तिलगर्भमहादानमथवापरिकीर्तितम्
मासेषोडशभिर्युक्तेनरोरिष्टमवाप्नुयात् ॥ १२ तत्रकल्पतरुंदत्त्वातेनदोषेणमु
च्यते ॥ दशापिवासुवर्णानितदर्धंवाप्रदापयेत् १३ ऋपिचंद्रैराधियुतो
व्याधिनापरिपीड्यते ॥ स्थानाच्चचलितोभूत्वामिताहारीदिनेदिने १४ गुडधे
नुप्रदानेनतद्दोषपरिवर्जयेत् पापग्रहदशास्याच्चेन्महादानप्रदीयते १५ वसुविं
दुसयुतेमासेनिर्दयःकलहप्रियः निर्धनोसत्यवादीस्याद्विष्टेनपरिभूयते १६
रत्नगोभूहिरण्यानिदातव्यानिशुभेप्सुभिः नवेंदुभिर्भवेद्देशत्यागोवाऽमरणेन
वा १७ तत्रशांतिर्गजरथगजंवाश्वमथापिवा संप्रदायविधानेनतद्दोषान्मुच्यते
सुखी १८ विंशत्याबुद्धिरहितोनीचकर्मरतः सदा श्वेताश्वदानमथवागोदानसंप्र
दीयते १९

शाहोवे तब षोडश महादानकरे १५ जिसमासमें अठारा बिंदुहोवें तिसमें दयासें रहित और लडाईमें प्रीतिवाला और निर्धन और झूठबोलने वाला होताहै १६ और तिसरिष्टके दूरकरणे वास्ते रत्न गौआं और पृथ्वी और सुवर्णदान शुभकी इच्छावालेने क रणा योग्यहै और जिसमासमेंउन्नी १९ बिंदुहोवें तिसमें देशत्यागअथवा मरण होताहै १७ तिसरिष्ट की शांतिवास्ते हाथी का रथ वा हाथी वा घोडा दान कर विधानसदानकरणेसें तिसदोषसें रहित होताहै और सुखी होताहै १८ और जिसमासमें बीस २० बिंदुहोवें तिसमें बुद्धिहीन और नीच कर्मोंमें रत सर्वदाकाल होताहै तिसरिष्टके निमित्त श्वेत घोडा वा गौदान करे १९

श्रीरलक्षवादशहजारवा एकहजारब्राह्मणोंकोंभोजन देवे श्रौरजिसमासमेंइकी२१ विंदुहोवें तिसमासमें
उयम ने रहित श्रौर रोगकर्के पीडित होताहै २० श्रौर वडे ऐश्वर्यसें हीनहोताहै श्रौर चित्तमें पाप
हिताहै तिस रिष्टकों दूरकरणे वास्तेधान्यपर्वतकादान श्रौर परमेश्वरकोमूर्तिस्थापन करणा कहाहै२१
भाक्ति कर्के श्रौर विधानसें करे तिसदोषकी निवृत्तिवास्ते श्रौर जिसमासमें वाई विंदु होवें तिसमें क्षी
णदेहकर्के युक्त श्रौर क्षीण सवधियोंकर्के पीडित होताहै २२ श्रौर सर्वदाकाल दुःखकों प्राप्तहोताहै
तिस रिष्टके निमित्त उभयमुखी गौदान करे ॥ अथवा दशमहादान करे शांतिकी कामना कर्के
श्रौर जिसमासमें तेयी २३ विंदु होवें तिसमें अनेकक्लेशोंकर्के युक्त होताहै २३ तिसके निमित्त सूर्य

लक्षायुतसहस्रंवाकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ भूमिपक्षैर्निरुद्योगास्त्वथवारो
गपीडिताः ॥ २० ॥ ऐश्वर्य्याधिक्यरहिताभवेयुःकृष्णमानसाः धान्यपर्वत
दानंवाब्रह्मस्थापनमेवच २१ कुर्याद्भक्त्याविधानेनतद्दोषस्यापनुत्तये श्राक्ष
स्याचपरिक्षीणःक्षीणैर्वधुभिरर्दितः २२ दुःखमेवसदाविंदेद्देयोभयमुखीततः ॥
अथवादशदानानिप्रदद्याच्छांतिकाम्यया रामपक्षयुतेमासेनानाक्लेशान्प्रपद्य
ते २३ सौवर्णींप्रतिमांभानोर्निर्मितांसप्तभिःपलैः तदर्धेनाथवाशक्त्याथवा
धार्धेनवापुनः २४ प्रदद्याद्ब्राह्मणेंद्रायदोषस्यक्षयकाम्यया चतुर्विंशतियुक्ते
तुमासेस्त्रीबुद्धिमोहितः २५ अगम्यागमनंवापिक्रूरग्रहदशायुत निरस्तोवं
धुभिःप्राणीस्थानभ्रष्टोधनक्षयः २६ गोसहस्रप्रदातव्यमथवापिगवांशतम्
दशवापिप्रदातव्यागावस्तद्दोषशांतये २७

की प्रतिमा दशपलसुवर्णकी अथवा पाच पलकी अथवा यथा शक्तिकर्के दानकरे २४ श्रेष्ट ब्राह्मण
केताई दोष दूरकरण वास्तेदानदेवे श्रौर जिसमासमें चौवी २४ विंदु होवें तिस मासमें स्त्रीकीबुद्धि
कर्के मोहमें ग्रस्त होताहै २५ यद क्रूरग्रहकीदशा होवे तव अगम्या स्त्रीमें गमन कर्त्ताहै श्रौर सर्व
धियोंसे निरस्त होताहै श्रौर स्थानभ्रष्ट होताहै श्रौर धनक्षयकों प्राप्तहोताहै २६ तिस रिष्टके दूरकरण
वास्ते हजार गौदानकरे अथवा सौ १०० गौका दानकरे अथवा दश गौका तिस दोषकी शां
तिवास्ते दानकरे २७

और क्रूरग्रहकी दशाकर्के युक्तमास होवे तब यो कहाहै सो संपूर्णताकर्केदानकरे और शुभग्रहकी दशा होवे तब यथाशक्तिकर्के विधान करे २८ और जिसमासमें पंजी २५ विंदुहोवें तिसमें ग्रहपीडा और अतीसार और वातरोगादियोंकर्के पीडित होताहै २९ और चिरकाल मंदाग्निरहतीहैऔररुधिरकी व्याधि होतीहै तिसकी शांतिके वास्ते यज्ञ होमादिकरे और ब्राह्मणोंकों भोजन देवे ३० सूर्यादि नवग्रहोंकी शांतिके वास्ते करे और जिसमासमें छब्बी २६ विंदुहोवें तिसमासमें जडता होतीहै ३१ और अनेक वार कहके वो वात भूलजातीहै और मन स्थिर नहि रहिताहै तिसदोषकी निवृत्ति वास्ते ब्राह्मणोंकर्के युक्त सरस्वतीका पूजनकरे ३२ खंड और क्षीरसें लेकर्के

क्रूरग्रहदशायुक्तेमासेकुर्याद्यथोदितम् शुभग्रहदशायांतुयथाशक्तिविधीयते २८ संयुक्तेविंदुभिस्तत्त्वैर्मासेफलमिदंभवेत् ग्रहपीडातिसाराभ्यांवातरोगादिभिस्तथा २९ दीर्घकालंचमंदाग्निरुधिरव्याधिशांतये कारयेद्यज्ञहोमादिब्राह्मणानांचतर्पणम् ३० प्रीतयेभास्करादीनांग्रहाणांवर्द्धतेततः ऋतुपक्षसमायुक्तेमासेजाड्यंप्रजायते ३१ उक्तमप्यसकृत्सद्योविस्मरेद्दतिचंचलः तत्र वागीश्वरीपूजांब्राह्मणैःसहकारयेत् ३२ शर्करापायसाद्यैश्चतोपयेन्मधुसंयुतं मुक्तोजाड्यादिभिर्दोषैःप्रज्ञावैपुल्यमाप्नुयात् ३३ नक्षत्रैश्वसमायुक्तेवहुवित्तव्ययोभवेत् मलिनश्चिंतयाग्रस्तश्चाज्ञाभंगश्चजायते ॥ ३४ तत्रसंपत्प्रदांदेवीं महालक्ष्मींप्रपूजयेत् श्रीसूक्तादिविधानेनजपहोमादिकारयेत् ३५ लक्ष्मीप्रसादसंपन्नोधनधान्यैःसमान्वितः वसुपक्षयुतेमासेनलाभोहानिरेवच ३६

पदार्थोंसें मधुकर्के संयुक्त ब्राह्मणोंकों तृप्तकरे अयसें करणेसें जडतादि दोषोंसें रहित होताहै और वडी वुद्धिकों प्राप्त होताहै ३३ और जिसमासमें सताईं विंदु होवें तिसमें वहुत धनका खर्च होताहै और मलीन और चिंताकर्के ग्रस्त और आज्ञाभंगकों प्राप्त होताहै ३४ तिसमें संपदाके देने वाली देवीमहालक्ष्मीका पूजनकरे और श्रीसूक्तादि विधानकर्के जपहोमादि कर्मकरे ३५ लक्ष्मीकी कृपाकों प्राप्त हुवा हुया धन और धान्योंकर्के युक्त होताहै और जिसमासमें अठाईं विंदु होवें तिसमें लाभनहि होताहै और हानिहोतीहै ३६

औरउद्यमनिष्फलहोताहैऔरधनकदाचितहिमिलताहैतिसकेनिमित्तसूर्यनारायणकीसेवाऔरजपहोमकरे ३७ तब संपूर्णदोषोंकर्के रहित होताहै औरतेजस्वी होताहै और सुखकों प्राप्त होताहैऔर जिसमासमें उनत्री १९ बिंदुहोवें तब चिंता कर्के व्याकुल होताहै ३८ और घृत और वस्त्र और सुवर्णादिदा नकरणेसेंदोषसेंरहित होताहैऔर जिसमासमें तीस ३० बिंदुहोवेंतब मानसी पीडाकोंप्राप्तहोताहै ३९ तिसारिष्टके निमित्त कर्षमात्रसुवर्ण वा आधा कर्ष ब्राह्मणके ताईंदेवे कुटुंबी और वेदकेजानेंनवालाब्रा ह्मणहोवे तिसकोंदेवेश्रीसूर्यनारायण प्रसन्नताकों प्राप्तहोवे इह दानवाक्यका उच्चारण करे ४० तब रो गरहित और नित्यप्रति आनंद कर्केयुक्त और चिरंजीवी होताहै और तीसाबिंदुसें अधिक बिंदुयोग,

उद्योगोविफलंयातिलभ्यतेनधनंक्वचित् सूर्योपसेवनयुतोजपहोमादिकारयेत् ॥ ३७ ॥ अशेषदोषनिर्मुक्तस्तेजस्वीसुखमाप्नुयात् एकोनत्रिंशतावापिचिंतयाव्याकुलोभवेत् ॥ ३८ ॥ घृतवस्त्रसुवर्णानिदत्त्वादोषाद्विमुच्यते त्रिंशताबिंदुभिश्चापिप्राप्नुयान्मानसींव्यथाम् ॥ ३९ ॥ सुवर्णंवातदर्धंवाब्राह्मणायनिवेदयेत् कुटुंबिनेवेदाविदेश्रीसूर्यःप्रीयतामिति ४० तेजस्वीनित्यमानंदीनीरोगीजीवतेचिरम्॥ दुष्टग्रहदशायुक्तोबिंदुभिस्त्रिंशदादिभिः ४१ शुभमेवफलंविंद्यादितिजातकनिर्णयः ॥ त्रिंशद्बिंदुयुतेमासेव्यापाराद्धनमाप्नुयात् ४२ उद्योगसिद्धिश्चभवेन्मान्यतेचनृपैःसह सत्क्षौमवस्त्रलाभश्चचतुस्त्रिंशत्समन्विते ४३ कीर्तिंचमहतींविंद्याद्धार्मिकस्तीर्थभक्तिमान् पंचत्रिंशैर्भवेच्छ्रीमान् षट्त्रिंशद्बिंदुभिःपुनः ४४ सुपुत्रलाभंकथयेज्जातकागमदर्शनः सप्तत्रिंशद्युतेमासेकन्यालाभःप्रजायते ४५ युक्तेष्टत्रिंशतामासेचिंतितंफलमाप्नुयात् रत्नद्रव्याणिचैकोनचत्वारिंशन्निगद्यते ४६

में दुष्टग्रहकी दशामेंबी शुभफल होताहै इह जातक शास्त्रमें निश्चय कीयाहै और कहतेहैं जिसमासमें तीस ३० बिंदु होतेहैं तिसमें व्यापारसें धनकों प्राप्त होताहै४२ और उद्यममें सिद्धि और राजासेंमान होताहै, और श्रेष्ठपट्ट वस्त्रका लाभ इह फल चौंती बिंदुयुत मासमें होताहै ४३ और पैंत्री ३५ बिंदुयुत मासमें बडायश और यज्ञतीर्थादिधर्मकोंप्राप्तहोताहै औरछित्री ३६ बिंदुयुतमासमें श्रेष्ठपुत्रकालाभहोताहै ऐसें जातक शास्त्रके जानणेवाल्योंनें कहाहै और जिसमासमें सतत्री ३७ बिंदुहोवें तिसमें श्रेष्ठ कन्याकालाभहोताहै ४५ औरजिसमासमें अठत्री ३८ बिंदुहोवेतिसमासमेंचिंतित फलकों प्राप्तहोताहै और जिसमासमें उनतालिबिंदुहोतेहैं तिसमें रत्न और द्रव्यकालाभ होताहै ४६

और जिसमासमें चाली ४० विंदुहोवे तिसमें धन और यशकी वृद्धि होतीहै और जिसमासमे इकताली ४१ विंदुहोवे तिसमे अनेकप्रकारों का लाभ होताहै ४७ और जिसमासमे बिताली ४२ विंदुहोवें तिसमे बडाउदार और श्रीमान् और बहुतयों कर्के सेवित होताहै और बडाधनी औरबहुतभोगोंकेभोगनेवालापृथ्वीमंडलमेंहोताहै ४८ जिसमासमेंपजताली ४५ विंदुहोवेंतिसमेंज्ञानीऔर धनीहोताहैऔरपुण्यसागरताकोंप्राप्तहोताहैऔर लोकोकारक्षक होताहै ४९ और जिसमासमेंअठताली ४८ विंदुहोवें तिसमेंपवित्रलक्ष्मीकीवृद्धि कोंप्राप्तहोताहै और राजलक्षणोंकर्केयुक्त

धनवान्कीर्तिमांश्चैव चत्वारिंशच्चवर्द्धते भूवेदविंदुयुक्तेतुनानालाभंप्रपद्यते ४७ पक्षवेदे.पुन.श्रीमानुदारोवहुसेवितः महाधनोमहाभोगोमहीमंडलसंस्थित.४८ पंचवेदान्वितेमासेज्ञानवान्धनिकोभवेत् ॥ पुण्यसागरसंयुक्त.परमात्मास्वयं भवेत् ४९ वसुवेदमितेमासेपुण्यश्रीस्तूपचीयते ॥ राजलक्षणसंयुक्तःसर्वजीवदयापरः ५० ज्ञानिनांधनिकानांचपुण्यमार्गानुवर्तिनाम् मध्येश्रेष्ठतरोमर्त्यस्तारामध्येयथाशशी ५१ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेऽष्टवर्गाध्याय.पंचदशः ॥ १५ ॥

अथतन्वादिद्वादशभावफलाध्यायोव्याख्यायते होरालंकारमुख्यप्रभवशुभफलादीनिसर्वाणिपुंसांतत्तद्भावोद्भवानिग्रुचरवलवशाद्यानितानिप्रवच्मि येयेभावा सितज्ञामरगुरुपतिभिः संयुतावीक्षितावानान्यैर्दृष्टानयुक्तायदिशुभफलदामूर्तिभावादिकेपु १

और संपूर्ण जीवोंमे दयाकेकरणे वाला होताहै ५० और ज्ञानियोंके और धन वानोंके मध्यमें श्रेष्ठहोताहै जैसे तारा गणके मध्यमे चद्रमाशोभा युतहोताहै ५१ ॥ इति श्रीजातकखंडेभाषाटीकायांपंचदशोध्यायः १५ अब लग्नसें लेकर्के बारां भावोंका व्याख्यान कर्चे होरालंकारादिमुख्य२ग्रथोंमें जोजो भावफल शुभाशुभ ग्रहोंके बलसें मनुष्योंका कहा सोसो इसग्रथमें कहतेहे जौनसें भाव शुक्र बुधबृहस्पति कर्के युक्त और दृष्ट होवें और पापीग्रहोंकेदृष्ट युक्तनहिं होवे सोसो तन्वादि भाव शुभफलकों देतेहे १

और कहतेहैं जिस भावमे शुभ ग्रहका लग्न स्थित होवे और भावके स्वामीकर्के युक्त और दृष्ट होवे तिसभावका ऐश्वर्यफल कहाहै और जबपापग्रहकर्के युक्त और दृष्ट नहिहोवे तब तिस भावका सुख होताहै २ और जिसभावमें नीच राशिगत ग्रह होवे और जिसमें शत्रुराशिगत ग्रह होवे सो ग्रह भावका नाश कर्ताहै अर्थात् तिस भावकी हानि होतीहै और जिसभावमें मूलत्रिकोण और उच्च और मित्रक्षेत्रमें शुभपापमें कोई ग्रह स्थित होवे तिसभावकी वृद्धिकर्ताहै ३ और कहतेहै जिसभावकास्वामी छठे आठमें बाहरमे स्थानमें स्थित होवे और ६ ८ १२ केस्वामी जिसभावमें स्थित होवें शास्त्रके जानणेवाले तिस भावकी हानि कहतेहैं अर्थात् षष्ठाष्टमद्वादशेशानां षष्ठाष्टमद्वादशस्थाने शुभत्व भावोकफलोनाहानिनिर्देशात् और सो भाव शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे तब फल अन्य

तन्वादिभावेषुशुभोदयेषुतद्भावनाथोपगतेक्षितेषु । तदुक्तभावस्यसमृद्धिरुक्तानपापखेटेक्षितसंयुतेषु २ नीचस्थोरिपुराशिस्थःखेटोभावविनाशकः मूलस्वतुंगामित्रस्थोभाववृद्धिकरोभवेत् ३ यद्भावनाथोरिपुरंध्ररिष्फेदुःस्थान६८१२ योयद्भवनेस्थितस्तु तद्भावनाशंकथयंतितज्ज्ञाःशुभेक्षितश्चेत्फलमन्यथास्यात् ४यद्भावपेकेंद्रगतेविलग्नात्त्रिकोणगेवायदिसौम्यदृष्टेतुंगादिवर्गोपगतेबलाढ्येतद्भावपुष्टिफलमाहुरार्याः ५ तत्तद्भावत्रिकोणेसुखमदनगृहेचास्पदेसौम्ययुक्तेपापानांदृष्टिहीनेभवनपसहितेपापखेटैरयुक्ते भावानांपुष्टिमाहुः सकलशुभकरंचान्यथाचेत्प्रणाशंमिश्रमिश्रग्रहेंद्रैरखिलमपितथामूर्त्तिभावादिकानाम् ६

था होताहै तिसभावकी हानि होतीहै ४ और जिसभावका स्वामी लग्नसें केंद्र १ ४ ७ १० स्थानमें स्थितहोवे अथवा कोण ९ ५ स्थानमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के युक्त होवे और उच्च स्वक्षेत्र मित्र गृहमें बलकर्के युक्तहोवे तिसभावकी पुष्टी फल श्रेष्ठ मुनिकहतेहैं ५ और कहतेहैं लग्नादिद्वादश भावोंके स्वामियोंमें जिसजिसभावका स्वामी त्रिकोण ९ ५ में और सुख ४ ॥ में और मदन ७ में और आस्पद १० में शुभग्रहों कर्के युक्त और पापग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे और भावके स्वामी कर्के युक्तहोवे और पापग्रहोंकर्के नहि युक्तहोवे तब तिन्हों तिन्हों भावोंकापुष्ट शुभफल कर्ताहैं और उलटे होनेसें तिन्होंभावोंका नाशकर्ताहै और मिश्रितशुभाशुभग्रहोंकेयोगकर्के और दृष्टिकर्केमिश्रफल होताहै ६

ओर कहतेहैं जिसभावका स्वामी अष्टम ८ स्थानमें स्थित होवे और सूर्यकर्के युक्तहोवे अथवा नी चराशिम वा शत्रुकीराशिमे स्थितहोवे और यदशुभग्रहोंकर्के युक्त दृष्ट नाहिं होवे तदतिस तिस भाव का विनाश मुनियोंके समूह कहतेहे जिसजिस लग्नादि भावमें खेट जो ग्रहहे तिनके योग और दृ ष्टिका फल होवे सो विचारक्के लग्नादि भावोंका फल क्रमसें कहे ७ और जिसभावका स्वामी छठे आठमें वारमें स्थानमें और शत्रु और मूढअस्तम और दुर्बल सो ग्रह जिस भावमें स्थित होवे सा ग्रह तिस भावके शुभकरणेकों समर्थ नाहिं होता है ८ और जोग्रह ६।८।१२ । स्थानमें स्थित होवे और नीच और शत्रुके नवांशमें स्थित होवे और सो ग्रह अपने उच्चनवांश और उच्च राशि ओर मित्रांश राशिमें स्थित होवे अथवा शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे सो ग्रह शुभफलकर्ताहै ९ और जि

नाशस्थानगतोदिवाकरकरच्छन्नस्तुयद्भावपोनीचारातिगतोथवायदिशुभैः खे टैरयुक्तास्थित· तद्भावस्यविनाशनमुनिगणा शंसंतिखेटैर्युतोयद्यत्रापिफलप्रदो नहितदामूर्त्यादिभानाक्रमात् ७ दु स्थाने ६।८।१२ वारिगेमूढेदुर्वलेभावनाय के भावस्यसपदकर्तुंनशक्ताभावमाश्रिताः ८ दुष्टस्थितोवापियदानभोग पापा रिनीचांशकसयुतोय स्वतुंगमित्रांशकराशियुक्त शुभेक्षितोवायदि शोभन·स्यात् ९ भावेशाक्रांतराशीशेदु·स्थेभावस्यदुर्वलम् स्वोच्चमित्रस्वराशिस्थेभावपुष्टिवदेद्बु ध १० यद्भावलाभधनविक्रमराशियातायद्भावनाथसुहृदश्चतदुच्चनाथा तद्भा वपुष्टिवलमवरचारिणस्तेकुर्वंतिमूढरिपुनीचविवर्जिताश्चेत् ११ भावांशतुल्य खलुवर्त्तमानोभावोद्भवंपूर्णफलविधत्ते भावानकेनाप्यधिकेचखेटैस्त्रैराशिकेनात्र फलविचार्य्यम् १२ ॥

सभावका स्वामी जिस राशिमें स्थित होवे तिसराशिकास्वामी ६।८।१२ स्थानोंमें स्थित होवे तब भावका स्वामी जिस राशिमें स्थित होवे तव भावकोंपुष्ट कर्ताहै १० और भावको निर्वल कर्ताहै और अपनेउच्च मित्र स्वक्षेत्रम स्थित होवे तब भावकोंपुष्ट कर्ताहै १० और कहतेहैं जिसभावमें एकादश द्वितीय तृतीय भावके स्वामीकी राशिस्थित होवे और जिस भावका स्वामी मित्र उच्च राशिमें स्थित होवे तिसका स्वामी जिस भावमे स्थित होवे सो ग्रह शत्रु और नीच और मूढ राशिसें रहित होवे तब तिस भावकी वृद्धि कराहै ॥ ११ ॥ और जो ग्रहभाव शके समान होवे सो ग्रह तिसभावका पूर्ण फल कर्त्ताहै और यों ग्रह भावांशोंसें हीनहै अथवा अधिकहै सो ग्रहत्रैराशिककर्के भावकाफलन्यूनकर्ताहै सो विचारणेयोग्यहै १२

औरकहतेहैं देह और धनइत्यादिपदार्थजिसकर्केसंपूर्णमनुष्योंके जानेजातेहैंसोद्वादश भावाध्यायअबमें विशेषकर्केकहताहां १३ प्रथमलग्नभावमे किसकाविचारहै सोजातकपारिजातमें कहतेहेदेहका मान और वर्ण और स्वरूप और लक्षण और यश और गुण और स्थान और सुख दुःख और विदेश वास और तेजबल और दुर्बलता इतने फल श्रेष्ठ मुनी लग्नभावमे विचार करतेहैं १ अब और कहतेहे जिसके जन्मलग्नमें शुभग्रहकीराशी। २।३।४।६।७।९।१२। स्थितहो तीहै सो मनुष्य चिरकाल जीने वाला और राजाके मानवाला और सुखीहोताहै और जिसके जन्म लग्नकों स्वामी देखताहै सो धनी और तीव्र बुद्धिवाला और कुलके और यशके बधावने वाला होता है २. और कहतेहें लग्नमें यो नवांश तिसके स्वामीसें अथवा यो ग्रहसपूर्णग्रहोंमें बली होवे तिसग्रह सें देहका स्वरूप लक्षण कहे और जिस राशिके नवांशमें चद्रमा स्थित होवे तिसके स्वामीके तु

मूर्त्यादय.पदार्थाज्ञायंतेयेनसर्वजंतूनाम् तमहमधुनाप्रवक्ष्येभावाध्यायंविशेषेण १३ तत्रतनुभावेकिंचिंतनीयमित्युक्तम् जातकपारिजातेशरीरवर्णाकृतिलक्षणानि यशोगुणस्थानसुखासुखानि प्रवासतेजोबलदुर्बलानिफलानिलग्नस्यवदंतिसंत· १ नरश्चिरायुर्नृपपूजितःसुखीलग्नेभवेत्सौम्यगृहेयथातथा लग्नेयदास्वामिनिरीक्षितेधनीकुशाग्रबुद्धिःकुलकीर्तिवर्द्धनः २ लग्नांशपाद्वीर्ययुताद्ग्रहाद्वातनुस्वरूपाकृतिलक्षणानि वर्णंवदेच्चद्रनवांशनाथाद्विलग्नपात्सर्वशुभाशुभानि ३ त्रिकोणकेंद्रेयदिलग्ननाथेशुभान्वितेशोभनवीक्षितेवा शुभग्रहागारगतेबलाढ्येचतु·समुद्रांतयशःसमेति ४ होराधिनाथेरिपुरंध्ररिष्फेपापान्वितेपापनिरीक्षितेवा प्रापग्रहाणांभवनोपयातिजातोऽप्रकाशोभवतीहमर्त्यः ५ कीर्तिस्थानगतोविलग्नभवनेजात स्वयंकीर्तिमान् वित्तस्थेतुविशेषकीर्तिसहित· ॥ स्वोच्चादिवर्गान्विते

ल्य जातकका वर्ण कहे और लग्नके स्वामीसें संपूर्ण शुभाशुभ फल कहे ३ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें त्रिकोण।९।५ और केंद्र १।४।७।१० स्थानमे शुभग्रह कर्के युक्त और शुभग्रह कर्के दृष्ट लग्नका स्वामी स्थित होवे सो समुद्रपर्यंत यशको प्राप्त होताहे ॥ ४ ॥ और जिस के जन्मसमयमें लग्नेश छठे आठमें बारमें स्थानमे पापीग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवे और पापीग्रहों की राशिमे स्थित होवे सोमनुष्य प्रकाशको नहिं प्राप्त होताहे प्रसिद्धनाहिं होताहे ५ औरजिसके जन्म लग्नकास्वामी लग्नमें स्थित होवे तब मनुष्य अपने गुणोंकर्के यशको प्राप्त होताहे और लग्नका स्वामी धनभावमें स्थित होवे तब विशेष यशकर्के युक्त होताहे जबलग्नेश उच्चमित्रस्वक्षेत्रके वर्गमें स्थित होवे तब विशेष यशवालाहोताहै

और लग्नेश दुष्टस्थान ६ । ८ । १२ । मे स्थित होवे तब चंचल होताहै एक
स्थानमें स्थित नहिं रहिताहै अथवा दुष्टजन होताहै और केंद्रकोणमें शुभग्रहकर्के युक्त
होवे तब शुभयात्राका सुख होताहैं ॥ ६ ॥ और जिसके जन्ममें लग्नेश पंचमस्थानमें स्थित पंचमेश
कर्के युक्त होवे अथवा नवमस्थानमें नवमेश कर्के युक्त होवे अथवा लग्नमें स्थित होवे तब तिसका पि
तायशवाला होताहै और जिसके जन्ममें तीसरे भावका स्वामी लग्नमें स्थितहोवे और लग्नका कार
क और तीसरेका स्वामी एकराशिमें स्थित होवे और दोनोंबलीहोवे तब तिसका भाई यशवाला हो
ताहै ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पंचमभावका स्वामी अथवा बुध लग्नमें वा चतुर्थस्थानमें लग्ने

दु.स्थेचंचलयात्रयासहतनुर्जातोथवादुर्जनःकेंद्रकोणगतेशुभग्रहयुतेयात्रासुख
जायते ६ होरास्वामिनिपंचमेयदिसुतस्थानेशयुक्तेथवाभाग्येवायदिभाग्यपेन
सहितेलग्नेयशस्वीपिता भ्रातृस्थानपतौविलग्नगृहगेतत्कारकभ्रातृपावेकस्थौ
बलशालिनौचयदिवातत्सोदरःकीर्तिमान् ७ विद्याधिपेवायदिचंद्रसूनौलग्ने
सुखेलग्नपसंयुतेवा बलान्वितेपापदृशाविहीनेविद्यायशस्वीभवतिप्रजातः ८
सर्वार्थचिंतामणौविशेषः ॥ लग्नेशेस्वोच्चमित्रांशेस्वनवांशगतेथवा ॥ शुभग्रह
युतेदृष्टेदेहसौख्यंविनिर्दिशेत् ९ लग्नेशेबलसंयुक्तेकेंद्रकोणगतेशुभे ॥ पापग्र
हैरसदृष्टेदेहसौख्यंवदेद्बुधः १० लग्नाधिपोतिबलवान्शुभवर्गयुक्त स्वोच्चेसुहृ
द्गृहगतेस्वनवांशकेवा लग्नाधिनाथसहितेयदिकेंद्रनाथेसद्भाग्यकीर्तिधनधा
न्यचिरायुरेति ११

शकर्के युक्त होवे और बलयुक्त और पापदृष्टिसे रहित होवे तब जातक विद्या और यशकर्केयुक्तहोताहै ८
और सर्वार्थचिंतामणीमें विशेष कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें लग्नेश अपने उच्च और मित्रऔर अप
ने नवांशमें स्थित शुभग्रहकर्के युक्तदृष्ट होवे तिसको देहका सुख होताहै ९१ और लग्नेश केंद्र १ ।
४ । ७ । १० कोण९ । ५ स्थानमेंस्थित शुभग्रह होवे और पापग्रहोंकर्के नहिं देखा होवेतबपंडित
लोकदेहका सुख कहतेहैं १० और जिसके जन्मकालमें लग्नेश बलकर्केयुक्त शुभग्रहके वर्गमें स्थि
त होवे अथवा अपने उच्चमें ॥ मित्रक्षेत्रमें अथवा अपने नवांशमेंस्थित होवे अथवा केंद्रस्थानोंके स्वा
मी कर्के युक्तहोवे सो श्रेष्ट यश और भाग्य और धन और धान्य औरबडी आयुर्दाकोंप्राप्तहोताहै ११

और लग्नेश क्रूरग्रहकर्के युक्तहोवे तव देहकेसुखका विनाश कहतेहै और अष्टमस्थानमें लग्नेश होवे तव तैसाहि फल कर्ताहै और शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे तवदेहके सुखका नाश नहिंकर्ताहै १२ और जिसके जन्ममें लग्नेश ६।८। १२ स्थानकेस्वामि कर्के युक्त होवे और लग्नमें स्थित होवे तव रोगी कर्ताहै और वलकर्के हीन लग्नेश केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे तव रोगी कर्ताहै १३ और कहतेहै जिसराशिमें लग्नेश स्थित होवे तिसका स्वामी ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे तव दुर्वल देहवाला होताहै और लग्नादि जिसभावका स्वामी ६।८। १२ स्थानमें स्थित होवेतव लग्नादि भावोंका नाश करणेवाला कहतेहैं १४ और लग्नेशकर्के शनिकायोगअथवा दृष्टि होवे तव ठग

लग्नेश्वरःक्रूरसमन्वितश्चेद्देहस्यसौख्यादिविनाशमाहुः ॥ तादृक्फलंनाशग तेपितस्यशुभेक्षितश्चेत्फलमन्यथास्यात् ॥ १२ ॥ दुःस्थानपेनाथयुतेवि लग्ननाथेविलग्नेसतिरोगभाक्स्यात् — वलैर्विहीनेसतिलग्ननाथेकेंद्रत्रिकोणे तनुरोगभाक्स्यात् ॥ १३ लग्नेश्वराधिष्ठितराशिनाथोदुःस्थानगोदुर्वलदेहभा क्स्यात् ॥ तत्तत्स्थलाधिष्ठितराशिनाथैर्दुःस्थैर्विलग्नादिविनाशमाहुः १४ श नेस्तुयोगात्प्रविलोकनाद्वाभीतिर्ध्रुवंवंचनचोरभूपैः ॥ राहौविलग्नेसकुजेर्कपुत्रे राहौवृहद्वीजमिहाहुरार्याः १५ लग्नेश्वरेमृत्युगतेसराहौरंध्रेसमांदौतुतथैववा च्यः ॥ लग्नेसराहौगुलिकेत्रिकोणेरध्रेततोमांदियुतेतथैव १६ लग्नेश्वरेभूमि सुतेतनुस्थेपापान्वितेपापविलोकितेवा शिलाप्रहारैर्व्रणमुत्तमांगेखड्गादिभिर्वा कथयंतितज्ज्ञाः १७

और चोर और राजाकर्केनिश्चयकरभयहोताहै और जिसकेजन्मसमयमें लग्नमें स्थितराहुहोवे औरमंगल और शनिकर्केयुक्त होवे तव अंड वृद्धिवाला कहतेहैं १५ और राहुकर्केयुक्त लग्नेश अष्टमस्थानमें स्थित होवे और गुलिककर्के युक्त होवे तववी अंडवृद्धिवाला होताहै और जिसके जन्मलग्नमें राहु होवे और गुलिक त्रिकोण ९।५ में स्थित होवे और अष्टमस्थानमें गुलिक कर्के युक्त राहु होवे तव वी अंडवृद्धिवाला होताहै १६ और पापीग्रहकर्के युक्त लग्नेश्वर मंगल लग्नमें स्थित होवे और अथवा पापीकर्के दृष्ट होवे तव शिलाके प्रहारकर्के शिरमें छिद्र कर्ताहै अथवाखड्गादि शस्त्रकर्के शिरमें घावहोताहैअपसें श्रेष्ट मुनियोंने कहाहै १७

श्रीर जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी रूक्षराशियोंमें १।५।९।२।६।१० इन्होंमें स्थितहोवे अथवा सूर्य मंगल शनिके भवनमें स्थित होवे और लग्नकास्वामी पूर्वोक्त शुष्कराशियोंमें अष्टम स्थानमें स्थितहोवे तव अत्यंत कष्टकर्केयुक्तशुष्क देहवाला होताहै १८ और जिसराशि के नवांशमें लग्नेश स्थित होवे तिसका स्वामीशुष्क १।५।९।२।६।१०। राशिमें स्थित होवे तबभी शुष्क देह होताहै और जन्मलग्न शुष्क राशिहोवे १।५।९।२।६।१० और वहु त पापग्रहोंकर्के युक्त होवे तव देह कृश होताहै ॥ १९ और जिसके जन्मलग्नमें जल चर राशि मकरका उत्तरार्द्ध और कुंभ और मीन राशि स्थित होवें और शुभग्रहोंकर्के युक्त होवें तव स्थूल देहवालाकहतेहैं और लग्नका स्वामी चंद्रमा और शुक्र वलकर्केयुक्त होवें और शुभग्रहकर्के युक्त होवें तव देह पुष्ट होताहै २० और लग्नेश ४।१०।११।१२ राशिमें स्थित होवे

लग्नेश्वरेशुष्कयुतेतथैवशुष्कग्रहाणांभवनस्थितेवा लग्नाधिपेनांशगतेतुशुष्क राशौतनौशुष्कमतीवकष्टं १८ लग्नाधिपस्यांशपराशिनाथःशुष्कर्क्षसंस्थस्त नुशुष्कमाहुः शुष्केविलग्नेवहुपापयुक्तेतत्रापिदेहस्यकृशत्वमाहुः १९ लग्ने जलर्क्षेशुभखेचरेंद्रैर्युक्तेतनुस्थूलमुदाहरंति ।लग्नाधिपेतोयखगेवलाढ्येसौम्या न्वितेचेत्तनुपुष्टिमाहुः २० लग्नाधिपेचेजलराशिसंस्थेशुभान्वितेतोयखगेन दृष्टे लग्नेशुभक्षेत्रगतेपिचैवलग्नेश्वरस्यांशपतौजलर्क्षे २१ लग्नाधिपस्यां शपराशिनाथःस्थूलग्रहःस्यात्तनुपुष्टिमाहुः ॥ लग्नेशुभर्क्षेशुभखेचरेंद्रैर्युक्तेम वेत्स्थूलमुदाहरंति २२ पापग्रहाणांचदृशाविहीनेलग्नेशुभक्षेत्रगतेपिचैवं ॥ लग्नेगुरौतेननिरीक्षितेवाजलर्क्षगेवापिजलेविलग्ने २३ सौम्यान्वितेशोभनखे चरेंद्रैर्दृष्टेत्वतिस्थूलमुदाहरंति लग्नेशनौराहुयुतेथवास्यात्पिशाचवाधांप्रवद तिसंतः २४

और शुभग्रहकर्के युक्त होवे और चद्रमा और शुक्र कर्के दृष्टहोवे और लग्नमें शुभग्रहकी राशि होवे और लग्नके नवांशका स्वामी जलचरराशियोंमें स्थित होवे तव पुष्टदेहहोताहै २१ और जिसके जन्मसमयमें लग्नेशके नवांशकास्वामी स्थूलग्रह होवे तव देहपुष्ट वाला होताहै और शुभग्रहके लग्नमें और शुभग्रहके योगमें जन्मेतो पुष्टदेहवाला होताहै ॥ २२ ॥ और शुभग्रहकी रा शि लग्नमें पाप दृष्टिसें रहित होवे तव पुष्ट देहवाला होताहै अथवा लग्नमें वृहस्पति स्थित होवेवा लग्नको देखताहोवे अथवा जलचराशिमें स्थित होवे और जलचरराशि लग्नमें स्थित होवे तव पुष्ट देहवाला होताहै २३ और जिसका जन्मलग्न शुभग्रहकर्के युक्त और शुभग्रहोंकर्के देखा होवे तिसका वडा स्थूल देह कहतेहैं और जिसके लग्नमेंशनि राहुकर्के युक्त होवे तिसको पिशाचकी पीडा होतीहै २४

और जिसके जन्मलग्नमें सूर्य मंगल करके देख्या होवे तिसकों श्वासकास क्षयी विधृति गुल्मरोग होताहै और लग्नमें मंगल बुध करके देख्या होवे तब तिसकोंमशूरिकादिरोगकरके पीडितकर्त्ताहै२५ और जिसके जन्मलग्नमें केतुस्थित होवे और बहुत पापग्रहोंकरके देख्या होवे तिसकों निश्चयकरके पिशाचपीडा और चोरपीडा होतीहै और जिसके जन्मसमयमें चरलग्नहोवे अथवालग्नेश चरराशि में स्थित होवे सो मनुष्य बडे संचार करणे वाला होताहै २६ और जो मनुष्य चरलग्नमेंस्थित चरन वांशमें जन्मताहै सो बीसंचार शील होताहै और चरलग्नमें और चरराशिमेंस्थित लग्नेशचरग्रह चद्र बुध शुक्र करके दृष्ट जिसके जन्मसमयमें होताहै सो मनुष्य विदेशमें भाग्य युत होताहै २७ और स्थिरलग्नमें और स्थिर ग्रहोंकरके दृष्ट युक्तमें जो जन्मताहै सो अपने देशमें भाग्योदयकों प्राप्त होताहै और बहुत धनकरके युक्त होताहै और शुभाशुभ दोनोंग्रहोंकरके युक्त होवे तब अनेक देशभ्र मण करणे वाला और कुमार्गी होताहै ॥ २८ ॥ और शुभ ग्रहके लग्नमें और शुभग्रहकेयोगकरके

लग्नेरविभूमिसुतेनदृष्टःश्वासक्षयीविधृतिगुल्मभाजः भौमेविलग्नेशशिसूनुदृष्टे मशूरिभिःपीडितदेहभाक्स्यात् ॥ २५ केतौविलग्नेवहुपापदृष्टेपिशाचचौरैर्भव तिध्रुवंभीः लग्नेचरेतद्भवनेश्वरेवाचरस्थितेसंचरतिप्रजातः ॥ २६ संचारशील श्चरभेविलग्नेलग्नांशकेचैवमुदाहरंति विदेशभाग्यश्चरभेविलग्नेचरेतदीशेचरखे टदृष्टे ॥ २७ स्थिरेस्वदेशेवहुभाग्ययुक्तः स्थिरैर्ग्रहैर्भूरिधनान्वितःस्यात् मिश्रै र्ग्रहैःसंयुतभाग्यकीर्तिर्नानाविदेशेप्रचरन्कुमार्गी ॥ २८ लग्नेशुभेशोभनदृष्टियुक्ते वास्यात्सुखंतन्नहिपापयोगात् दुःखीभवेत्पापवहुत्वयोगेलग्नेतुवाल्यान्मरणांत काले ॥ २९ वर्गोत्तमांशेयदिलग्ननाथेस्वोच्चांशकेवास्वसुहृद्दृकाणे शुभान्वितेवा शुभदृष्टियातिनरोभवेदामरणांतसौख्यम् ॥ ३० अथतनुचिंतायांशरीराकारव र्णाद्युच्यते कर्कीजगेतनुविधौधनवान्सुरूपोन्येलग्नगेतिविकलोतिजडश्चकृष्णे सूर्येदरिद्रइहतौलितनौनिशांधःसिंहेक्रियेसतिमिरःशशिभेक्षिणरुक्युक् ॥ ३१

और दृष्टिकरकेशुभफलहोताहै जब पापग्रहका योग होवे तब शुभ नहीं होताहै॥और बहुत पापग्रहों का योग होनेसें जन्मसें लेकरके मरणपर्यंत दुःखी होताहै २९ और जिसके जन्म समयमें वर्गोत्तम नवांशमें लग्नेश स्थित होवे अथवाउच्चांशमें स्थित होवे वा मित्रके दृष्काणमें स्थित होवे और शु भयुक्त दृष्ट होवे तब मनुष्य जन्मसे लेकरके मरणपर्यंत सुखकों प्राप्त होताहै ३० अब देहका वर्ण स्वरूप कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें कर्कट और मेष राशिमें लग्न गत चद्रमा होवे सो धनीऔर सुदर रूपवाला होताहै और क्षीण चद्रमा लग्नगत होवे तवव्याकुल और जडस्वभाव वालाहोताहै और सूर्य लग्नमें स्थित होवे तवदरिद्री होताहै और तुलालग्नमें लग्नस्थित होवे तब रात्र्यंध दोषवा ला होताहै और सिह और मेष लग्नमें लग्नगत होवेतवमददृष्टिवालाहोताहैऔर कर्कटलग्नमेस्थितहोवे तव नेत्र रोगवालाहोताहै३१

॥ और जो जन्मलग्नके नवांशकास्वामी है और जो ग्रह संपूर्ण ग्रहोंमें बली होवे तिस
ग्रह कोन्याई मूर्ति होतीहै ॥ और सूर्यके त्रिंशांशका जो ग्रहस्वामीहै तिसकोन्याई स्वभाव-
होताहै और चंद्रमा ॥ बृहस्पति ॥ सूर्य ग्रह सत्वगुणीहैं और शुक्र ॥ बुध रजोगुणीहैं और मंगल-
शनी तमोगुणीहैं ॥ अबसूर्यादि ग्रहोंकास्वरूप कहतेहैं सूर्यथोड़े और कुंडलों वाले केशों वालाऔर
चतुरबुद्धि और सुंदररूप और चंचल और समदृष्टि और मधुपिंगलनेत्र सुंदर और शूरवीर और प्रचं-
डरूप और स्थिरस्वभाव और रक्तश्याम वर्ण और गूढचरण और पित्तप्रकृति और अस्थिसार और
बडागंभीर और चतुरस्रदेहवाला और मोटा और रक्त वस्त्र धारणे वालाहै ३३ इतिरवेः
अबचंद्रमाकास्वरूपकहतेहैं चंद्रमासौम्यस्वभाववाला और सुंदर आभाकरकेंयुक्तनेत्रोंवाला और मीठा

लग्नांशपस्यचबलाढ्यखगस्यमूर्त्तिस्त्रिंशांशपादिहरवेःप्रकृतिंचावेंद्यात् सत्वश
शीज्यरवयोथरजःसितज्ञौभौमार्कनौतमइमेददतीहजंतोः ३२ अथसूर्यादी
नांस्वरूपमाह अल्पाकुंचितमूर्द्धजःपटुमतिर्मुरूयःसुरूपश्चलोनात्युच्चोमधुपिं
गचारुनयनःशूरःप्रचंडःस्थिरः ॥ रक्तश्यामतनुर्निगूढचरणःपित्तास्थिसारो
महान्गंभीरश्चतुरस्त्रकःपृथुलकःकौसुंभवासोरविः ॥ ३३ ॥ इतिरवेः ॥ सौ
म्यःकांतिविलोचनोमधुरवाग्गौरःकृशांगोयुवा प्रांशुःसूक्ष्मनिकुंचितासितक
चःप्राज्ञोमृदुसात्विकः चारुर्वातकफात्मकःप्रियसखारक्तैकसारोघृणी स्थूलस्त्री
निरतश्चलोतिसुभगःशुक्लांबरश्चंद्रमाः ३४ इतिचंद्रस्य ह्रस्वःपिंगललोचनोदृढ
वपुर्दीप्तातिकांतिश्चलोमज्जावानरुणांबरः पटुतरःशूरश्चविस्पष्टवाक्हिंस्त्राकुंचि
तदीर्घकेशतरुणःपित्तात्मकस्तामसश्चंडःसाहसिकोरिघातकुशलःसरक्तगौरः
कुजः ॥ ३५

बोलनेवाला और गौरवर्णऔर कृशअंगोंवाला और युवा अवस्थाकरके युक्त और प्रभायुक्त और सूक्ष्मकु
टलोंवाले कालेकेशोंवाला और चतुर और कोमल और सत्वगुणी और सुंदररूप और वातकफ प्रकृ
तिवाला और मित्रकाप्यारा और रक्तसारवाला और लज्जायुक्त औरगोलदेहवाला और स्त्रीरत और चं
चल और श्रेष्ठभाग्यवाला और शुक्लवस्त्रोंवालाकहाहै ३४ अबमंगलकास्वरूप कहतेहैं मंगलछोटेदे
हवाला और पिंगलवर्णकेनेत्रोंवाला और दृढशरीर और प्रकाशवाली कांतिवाला और चंचल और म
ज्जासार और लालवस्त्रोंवाला और बडाचतुर और शूरवीर और विशेषकरकेंस्पष्टवाणीवाला और हिंसा
करणेवाला और कुंडलोंकरकेंयुक्त लंबेकेशोंवाला और कुमारअवस्थावाला और पित्तप्रकृति और तमो
गुणी और प्रचंडस्वभाववाला और हठी और शत्रुमारणेमें चतुर और रक्तगौरवर्णवालाहोताहै ३५

अबबुधकास्वरूपकहतेहै बुधलाल कोणकर्केयुक्तबडेनेत्रोंवाला और मीठाबोलनेवाला औरदूर्वाश्यामव र्णवाला और त्वचासार वाला और रजोगुणी और स्पष्टवाणीवाला और पुष्टदेहवाला और त्रिदोषप्र कृतिवाला और प्रसन्नमूर्ति और मध्यमरूप और चतुर और गोलशरीर और नाडियोंवाला देह और वेश और वाणीकर्के संपूर्णोंकोवश्यकरणेवाला और पलाशपत्रकीन्याई वस्त्रधारणेवाला होताहै ३६ अबगुरुकास्वरूपकहतेहैं बृहस्पतिथोडेपिंगले नेत्रोंवाला और श्रवणकर्के धारणाशक्तिवाला औरसिं हकी और बदलकीन्याईगंभीरवाणीवाला और स्थिरस्वभाववाला और सत्वगुणी और पवित्र और शुद्धसुवर्णकीन्याईदेहवाला और ऊंचीछातीवाला और छोटा और धर्मबुद्धिवाला और नीतिमेंचतुर और वृद्धप्रकृति और ऊंचीभूमीमेंविचरणेवाला और क्षमायुक्तऔर पीतवस्त्रोंवाला और कफप्रकृतिवा

इतिभौमस्य ॥ रक्तांतायतलोचनोमधुरवाग्दूर्वादलश्यामलस्त्वक्सारोतिरजो धिकस्फुटवचः पीनस्त्रिदोषात्मकः ॥ हृष्टोमध्यमरूपवाक्सुनिपुणोव्याप्तः शिराभिस्ततःसर्वस्यानुकरोतिवेशवचनैपालाशवासोबुधः ॥ ३६ ॥ इति बुधस्य ॥ ईषत्पिंगललोचनःश्रुतिधरःसिंहाब्दनादःस्थिरःसत्वाढ्यःशुचिशुद्ध कांचनतनुःपीनोन्नतोरस्थलः ॥ ह्रस्वोधर्ममतिर्विनीतिनिपुणोवृद्धोर्ध्वभूटः क्षमी वापीतांबरभृत्कफाधितनुकोमेदःप्रधानोगुरुः ३७ इतिगुरोः ॥ चारुदीर्घभुजःपृथूरुवदनःशुक्राधिकःक्षांतिवाक् कृष्णाकुंचितसूक्ष्मलंबकचकोदूर्वादल श्यामलः कामीवातकफाधिकोतिसुभगश्चित्रांबरोराजसोलीलाविन्मतिमान्विलासनयनःस्थूलांसदेशःसितः ३८ इतिभृगोः पिंगोनिम्नविलोचनःकृशतनुर्दीर्घःशिरालोलसः कृष्णांगःपवनात्मकोतिपिशुनःस्नाय्वान्वितोनिर्घृणः मूर्खः स्थूलनखद्विजोतिमलिनोरूक्षोशुचिस्तामसोरौद्रःक्रोधपरोजरापरमतिःकृष्णांबरोभास्करिः ३९ इतिशनेः

ला और मेद प्रधानहोताहै ॥ ३७ ॥ अबशुक्रकास्वरूपकः शुक्रश्रेष्ठलंबीभुजोंवाला बडेपट्टऔर बडेमुखवाला और वीर्य्यसार और क्षमायुक्तवाणीवाला और कालेसूक्ष्मलंबेकेशोंवाला और दूर्वाश्याम और कामी और वातकफप्रकृति और श्रेष्ठभाग्ययुक्त और चित्रवस्त्रोंवाला और रजोगुणी और लीलाकेजाननेवाला और रतिसुखकेजाननेवाला और विलासयुक्तनेत्रोंवाला और मोटेमोंढ्योंवालाहै ३८ अबशनिकास्वरूपकहतेहै शनि पिंगलवर्णकेनीचेनेत्रोंवाला और कृशदेहवाला और लंबेदेहवाला और नाडियोंकर्केयुक्त और आलसी और कालेअंगोंवाला और वायुप्रकृति और चुगल और नाडीसार और निर्लज्ज और मूर्ख और मोटेगेम और मोटेदंतोंवाला और बडामलीन और रूक्ष और अपवित्र और तमोगुणी और भयानक और क्रोधी और कालेवस्त्रोंवालाहै ३९

अब कालपुरुषके अंगविभाग कहतेहे मेषराशि शिरहै और वृष मुखहै और मिथुन दोनों बाहूहे और कर्कट हृदयहै और सिंह उदरहै और कन्या कटि देशहै और तुला बस्ति नाभीके नीचे चार अंगुल स्थानमेंहै और वृश्चिक गुदास्थानहै और धनु दोनों पदहै और मकर दोनों जानूहै और कुंभ दोनों जंघाहैं और मीनदोनों पादहैं ४० इन्होंराशियोंकों जन्मकालमें मनुष्यके अंगोंमे चिंतनकरे जिस अंगमें शुभग्रहका योग होवे सो पुष्ट होताहै और जिसमें पापी ग्रहोंका होवेयोग तिस अंगमें रोगादियों कर्के उपद्रव होताहै ॥ ४१ ॥ अब अंगोंमें व्रण चिन्हका ज्ञान वृहज्जातकसें कहतेहैं लग्नमें तीनद्रेष्काण होवेहैं प्रथमद्रेष्काणमें शिर और नेत्र और नासिका और दोनों कपोल और ठोडी और मुख इह सात ७ अंग कल्पना करे और दूसरे द्रेष्काणमें गल और मोंढे और दोनों भुजा और पास्से और हृदय और त्रिकस्थान और नाभि इह सात ७ अंगकल्पनाकरे और तीसरे द्रेष्काणमें बस्ति और लिंग गुदा और अंडकोश और पट और जानू और जघा और पाद

शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसंज्ञानि उरुजानुजंघेचरणाविति राशयोजाद्याः ४० कालनरस्यावयवाःपुरुषाणांचिंतयेत्प्रसवकाले सदसद्ग्रहसंयोगात्पुष्टाःसोपद्रवाश्चापि ॥ ४१ ॥ अथव्रणचिन्हज्ञानंवृहज्जातके कहक्श्रोत्रनसाकपोलहनवोवक्त्रंचहोरादयस्तेकठांसकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडचनाभिस्त्विति वस्ति शिश्नगुदेततश्ववृषणावूरूततोजानुनी जंघेंघ्रीत्युभयत्रवाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥ ४२ ॥ तस्मिन्पापयुते व्रणशुभयुतेदृष्टेचलक्ष्मादिशेत्स्वक्षीशस्थिरसंयुतेतुसहजःस्यादन्यथागतुकः मंदेश्मानिलजोग्निशस्त्रविपजोभौमेवुधेभूभव. सूर्येकाष्टचतुष्पदेनहिमगौशृंग्यब्जजोन्ये.शुभं ॥ ४३ ॥

इह सात अंग कल्पना करे इह एक लग्नमें तीन प्रकारकर्के अंग विभाग जानणे ॥ और उदित राशिया वामाग और अनुदित दक्षिणाग होताहै जैसें लग्नमें प्रथमद्रेष्काणहोवे तब लग्न शिर और दूसरी २ और बाहरमी राशि दक्षिण वामनेत्र तृतीये कादश दक्षिण वाम कर्ण और चतुर्थ दशम दक्षिण वाम नासापुट और पचम नवम दक्षिण वाम कपोल और पष्टाष्टम दक्षिणवाम हनू और सप्तमराशि मुख एवं द्वितीय द्रेष्काणे कठादितृतीये वस्त्यादि ४२ और तिन्होंपूर्वोक्तस्थानोंमें पापग्रहका योग दृष्टि होवे तव व्रण होताहै और शुभग्रहके योग दृष्टि कर्के तिलमसकादि लक्षण होताहै और ग्रह अपनी राशि और नवांशमें वा स्थिर राशि नवांशमें स्थित होवे तव सहित व्रण जन्मताहे और स्वक्षादिके विना आगतुक शस्त्रादियोंकर्के होताहै॥ और शनि पत्थरकर्के और वायु कर्के और मंगल अग्नि शस्त्र विषकर्के और बुध मृत्तिका कर्के और सूर्य काष्ट चतुष्पदकर्के और चंद्रमा शृंगी और शखादि कर्के व्रण कर्ताहै और गुरु शुक्र कर्के शुभ होताहै ४३

और जिसअंगमें वुध कर्केयुक्तदो तीनपापग्रहस्थितहोवें तिसअंगमें पूर्वोक्तव्रणादिअवश्यहोतेहैं और शुभग्रहोंकर्के युक्त वुध जिस अंगमें स्थित होवे तिसमें पूर्वोक्तकालागविभागराशि स्थानमें तिललक्ष्मादिहोताहै ४४ अव होराप्रदीपसें और वर्णचिन्ह विशेष कहतेहैं जन्मलग्नसें सप्तम भावका स्वामी मंगलवा शुक्रवा वृहस्पति होवे तव जातकके मस्तकमें चिन्हहोताहै इसमेंसंशय नाहिंहै ४५ और जिसके जन्मलग्नमें शुक्र वामंगल वा चंद्रमा स्थित होवे तिसकों द्वादश ॥ १२ ॥ वर्षमें

समनुपतितायस्मिन्भागेत्रयःसवुधाग्रहाभवतिनियमात्तस्याविात्तःशुभेष्वशुभेषुवा व्रणकृदशुभाःपष्ठेदेहेतनोर्भेसमाश्रितेतिलकमसककृष्टःसौम्यैर्युतश्वसलक्ष्मवान् ॥४४

	शिरः १	
२	दृशौ	१२
३	कर्णौ	११
४	नासा	१०
५	कपोल	९
६	हनू	८
	मुख ७	

	कंठ १	
२	अंशक	१२
३	भुजौ	११
४	पार्श्व	१०
५	वक्ष	९
६	क्रोड	८
	नाभिः ७	

	वस्ति १	
२	शिश्नगु	१२
३	वृषण	११
४	ऊरू	१०
५	जानुनी	९
६	जंघे	८
	पाद ७	

अथान्यद्वर्णचिन्हज्ञानंहोराप्रदीपात् ॥ लग्नात्सप्तमपोभौमःशुक्रोवापिवृहस्पतिः ॥ चिन्हंमूर्ध्निस्थितंज्ञेयंजातकस्यनसंशयः ४५ यदाशुक्रोथवाभौमोलग्नस्थोपिनिशाकरः द्वादशेब्देभवेत्तस्यमस्तकेवान्हिदर्शनम् ४६ अष्टमेचयदाराहौशुक्रेवापितनुस्थिते ॥ वामकर्णेभवेच्चिन्हंतस्यलग्नाद्विनिश्चितम् ४७ जायास्थानेयदाराहौमंत्रीवापितनुस्थितः वाव्होश्चिन्हंविजानीयाज्जन्मलग्नाद्विचक्षणः ४८ त्रिषडायगतेभौमेशुक्रोवापिव्यवस्थितः वामपार्श्वेभवेच्चिन्हं भुजदेशसमीपतः ४९ द्वादशाष्टमशुक्रोपिमंत्रीचतनुसास्थितः वामेभुजेभवेच्चिन्हलग्नाच्चैवयथाक्रमम् ५०

मस्तकमें अग्निकर्के चिन्ह होताहै ॥ ४६ ॥ और अष्टमस्थानमें राहु और लग्नमें शुक्र स्थित होवे तव वामेंकर्णमें निश्चयकर्के चिन्ह होताहै ॥ ४७ ॥ और सप्तमस्थानमेंराहु और लग्नमें वृहस्पति स्थित होवे तव भुजोंमें चिन्ह होताहै ४८ और तीसरे छठे ग्यारहमें स्थानमें मंगल स्थित होवे अथवा शुक्र स्थित होवे तिसकों भुजाकेपास वामें अंगमें चिन्हहोताहै ४९ और अष्टमऔर द्वादश स्थानमेंशुक्र और लग्नमें वृहस्पति स्थितहोवेतव वामी भुजामें चिन्ह होताहै ५०

और कहतेहैं बुधशनी दोनों जन्मलग्नमें स्थित होवें और दशम स्थानमें सूर्यस्थित होवे तिसकी दक्षिणपार्श्वमें प्रकट चिन्ह होताहै ५१ और जिसको मंगल और बुध लग्नमें स्थित होवें और राहु छठे और नवम और पंचमस्थानमें स्थितहोवेतिसकेलिंगमें और गुदामेंतिलमाषादि प्रकट चिन्ह होताहै ५२ और नवम पंचममें शुक्र स्थितहोवे और बृहस्पति और बुध अष्टम स्थितहोवे और चतुर्थस्थानमें शनि स्थित होवे तव कुक्षिमें चिन्ह होताहै ५३ और दूसरे स्थानमें शुक्र और अष्टममें सूर्य और दशममें शनि राहु स्थित होवें तव नाभिमें चिन्ह होताहै ५४ और दशममें बृहस्पति और दूसरे चंद्रमा और तीसरे स्थानमें शुक्राराहुस्थित होवेंतव कटि देशमें चिन्ह होताहै ५५ और बाहरमें स्थानमें बृहस्पति और तीसरे छठे बाहरमें स्थानमे बुध और तीसरे स्थानमें शुक्र स्थित होवे तव हृदयमें चिन्ह होताहै ५६ और तीसरे शुक्र और तीसरे छठे बाहरमें स्थानमें बृह

बुधमंदौयदालग्नेकर्मगेवादिवाकरे दक्षिणेपार्श्वकेचिन्हंतस्यज्ञेयंपरिस्फुटम् ५१ कुजेसौम्येथवालग्नेराहुःषष्ठत्रिकोणगः लिंगेगुदेभवेच्चिन्हंतिलमाषादिकंस्फुटम् ५२ त्रिकोणेपिभवेच्छुक्रोजीवेसौम्येमृतिस्थिते पातालेहिस्थितेमंदेकुक्षौचिन्हंसमादिशेत् ५३ धनस्थानेयदाशुक्रेत्वष्टमेचदिवाकरे ॥ कर्मगौराहुमंदौचेन्नाभौचिन्हंसमादिशेत् ५४ कर्मगोपियदामंत्रीद्वितीयोपिनिशाकरः सहजे शुक्रराहुभ्यांकट्यांचिन्हंसमादिशेत् ५५ व्ययस्थानेयदामंत्रीबुधोपित्रिषडायगः ॥ सहजस्थोयदाशुक्रोहृदिचिन्हंसमादिशेत् ॥ ५६ ॥ सहजस्थोयदा शुक्रोमंत्रीवात्रिषडायगःधर्मस्थानेनिशानाथेगुदेगोलकमादिशेत् ॥ ५७ पातालेशुक्रराहूचकुजेमंदेतनुस्थितेगुल्फयोःपादबाहुभ्यांमत्स्यचिन्हंसमादिशेत् ५८ मृतिस्थानेनिशानाथेमंदेशुक्रेव्ययास्थिते सप्तमेबुधमंदाभ्यांबाह्वोश्चिन्हंसमादिशेत् ५९ अथतनुंप्रतिदृक्फलं ॥ सूर्यावलोकिततनौपितृपक्षवित्तोविक्रांतवक्त्रनृपसेवनकीर्तियुक्तः चंद्रेक्षितेजलविपण्ययुतःसदक्षोस्त्रीणांवशोमृदुवपुर्बहुमत्सराढ्यः ६०

स्पति और नवममें चंद्रमा जव स्थित होवे तवगुदामें गोलक होताहै ॥ ५७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थस्थानमें शुक्र राहूस्थित होवें और मंगल शनीलग्नमें स्थितहोवें तव गिट्टयोंमें और पैरोंमें और भुजोंमें मत्स्यकीन्याई चिन्हहोताहै ५८ और जिसको अष्टमस्थानमें चंद्रमा स्थितहोवे और शक्रशनी वाहरमें स्थानमें स्थितहोवें और जिसको सातमें ७ स्थानमें बुधशनि होवें तिसकीभुजोंमें चिन्हहोताहै ५९ अवलग्नमेंदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसका जन्मलग्न सूर्यकर्के देख्याहोवे सो पिताके धनको प्राप्तहोताहै और विकरालमुखवाला और राजाकी सेवाकरणेवालाहोताहै और चंद्रमाकर्के दृष्टलग्नहोवे तव जलव्यवहारकर्केजीवनकर्ताहै अर्थात् जलस्थानोंमें समुद्रांतर्गत देशोंमें व्यापारकर्के धनकोंप्राप्तहोताहै और बडाचतुर और स्त्रीके वश्य और कोमल देहवाला और दूसरेके उत्कर्षकोंनासहारणे वाला होताहै ६०

॥ और मंगलकर्के लग्न देख्याहोवे तब युद्ध और हठमें इच्छावाला और प्रचंड होताहै ॥ और विद्याकर्के युक्त और गुरां कर्के और श्रेष्टजनों कर्के रतहोताहै ॥ और बुध कर्के लग्नदेख्या होवे तब स्नानमें चतुर और शिल्प विद्याक जाननेवाला औ कलामें चतुर और वडेधन और यशवाला होताहै ॥ ६१ ॥ और बृहस्पति कर्के लग्न देख्याहोवे तब व्रतनियमकरणेवाला और अभ्यागत और गुरुदेवब्राह्मणकोंमाननेवाला और श्रेष्टजनोंकोंमानने वाला होताहै और शुक्रकर्के लग्न दृष्ट होवे तब सौभाग्य और भोग धन सुख सुंदर रूपकर्के युक्त और वेश्यास्रीमें रत होताहै ६२ और जिसके लग्नमें शनि देखताहोवे सो भारउठाने वाला और मार्गकेच लनेवाला और रोगी और नीचवर्णकी वृद्धास्त्रिकों सेवनेवाला और सुखसें हीन और मूर्खहोताहै और जिसके लग्नकों स्वामी देखे सो वडे सुखवाला और राजाकाप्यारा और शुभग्रह लग्ने

संग्रामसाहसरुचिः क्षितिजेनचंडोविद्वान्सुधर्मनिरतोगुरुभिष्टएव ॥ स्नानेनरो निपुणधी शशिजेनशिल्पविद्याकलातिचतुरोतिधनोयशस्वी ॥ ६१ ॥ ख्यातोव्रतातिथिगुरुद्विजदेवभक्तोमान्य सतांचमनुजोगुरुदृष्टलग्ने सौभाग्य भोगधनसौख्ययुत सुरूपोवेश्यांगनापरिवृतोभृगुजेक्षितेच ॥ ६२॥ भाराध्वरोगमलकुत्सितवृद्धनारीयुक्तस्ततोगतसुख शनिनातिमूर्खः स्वामीक्षितेतिसुखवान्नृपवल्लभश्चवाच्य शुभेनचशुभोत्रखल खलेन ६३ सारावल्यां ॥ एकेनापिनदृष्टंसमस्तगुणवर्जितंनरंलग्नम् , स्वगृहेस्वभावसहितंजनयतिखलुकेवलंनित्यम् ६४ त्र्यादिग्रहसंदृष्टप्रायेणशुभार्थदलग्नम् एकेनापिशुभेनचनतु पापैर्दृश्यतेवहुभिः ६५ सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टेलग्नेभवेन्महीपालः वलिभि समसौख्योवाविगतभयोदीर्घजीवीच ६६ लग्नेत्रयोपिगदशोकाविवर्जितानांकुर्वंतिजन्मशुभदा पृथिवीपतीनाम् पापास्तुरोगभयशोकपरिप्लुतानांजन्मप्रदाः सकललोकतिरस्कृतानाम् ६७

शहोवे तब शुभकर्मकर्ताहै और पापीग्रहहोवे तब दुष्टकर्मकर्ताहै ६३ और सारावलीमेंकहतेहैं जिसका जन्मलग्न एक ग्रहकर्केवी नहिंदेख्याहोवे सो मनुष्यसंपूर्णगुणोंसे हीन और अपने घरमें लग्नस्वामिके स्वभावके तुल्य स्वभाव वाला होताहै ॥ ६४ ॥ और तीनसें लेकर्के ग्रहजिसके लग्नकों देखें सो विशेषकर्के शुभफलका देतेहैं और एक शुभग्रहके देखनेसे यो शुभफलहोताहै सो वहुत पापग्रहोंके देखनेसें नाहिंहोताहै ६५ और जिसके लग्नकों संपूर्णग्रहवली होयकर्के देखें सो राजाहोताहै और निवलहोयके देखें तब मध्यम सुखी और चिरकाल जीताहै ६६ और जिसलग्नकों तीन शुभग्रह देखें तिसमें रोग शोक सें रहित जो राजेतिनका जन्महोताहै और जिसलग्नकों तीनपापीग्रह देखें तिसमें रोग भय शोक युक्त और संपूर्ण लोकोंकेतिरस्कारकाप्राप्त होनेंवाल्योंकाजन्महोताहै ६७

अब लग्नमे द्विग्रहयोगका फल होराप्रदीपसें कहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें चंद्रमा और बुध दोनों स्थित होवे सो पराक्रम और बुद्धि और सुखकर्के युक्त होताहै और सुंदर और श्रेष्ठभाग्योंवाला और श्रेष्ठवाणीकर्के चतुर होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके लग्नमें चंद्रमा और बृहस्पतिस्थितहोवे सो बहुत पुत्र मित्र स्त्रीयों वाला और सुंदर देह वाला और संवधियोंकर्के युक्त होताहै और पुष्ट और बडी ज्ञाती वाला होताहै ॥ ६९ ॥ और जिसके लग्नमें चद्रमा और शुक्रका योग होवे सो बहुत वेश्या और स्त्रीयोंमे सक्त होताहै और श्रेष्ठअंगोंवाला और रूपकर्के युक्त होताहै और सुगंध माल्य वस्त्रोंमे प्रीतिवाला होताहै ७० और जिसके लग्नमें चद्रमा शनीका योग होवे सो भयानक रूप और दासकर्म करनेवाला और कठोर और लोभी और मानहीन और निद्रा आलस्य कर्के युक्त

अथलग्नस्थद्विग्रहयोगफलंहोराप्रदीपात् ॥ सत्त्वधीःसुखसंपन्नःकांतोतिसुभगोभवेत् ॥ वाचालोनिपुणोलग्नसंस्थयोःशशिसौम्ययोः ६८ बहुपुत्रसुहृद्दारोसुदेहोबंधुसंयुतः ॥ सुपीनपृथुवक्षःस्याल्लग्नेशशिसुरेज्ययोः ६९ ॥ बहुवेश्यांगनासक्तःकल्पांगोरूपसंमतः ॥ स्याच्चन्द्रसितयोर्लग्नेगंधमाल्यांवरप्रियः ७० रौद्रोदासःखरोलुब्धोमानवोमानवर्जितः ॥ भवेन्निद्रालसःपापोलग्नेशीतांशुमंदयोः ७१ हिंस्रोग्निकर्मकुशलोधातुवादकृतश्रमः ॥ दूतोगुह्यविहारीचविलग्नेभौमसौम्ययोः ७२ मंत्रीवाग्मीसुतैर्युक्तोलब्धकीर्तिर्महाधनः ॥ नित्योत्साहीतुधर्मिष्ठोलग्नेभौमसुरेज्ययोः ७३ द्विजदेवार्चनरतोधनीनृपतिपूजितः ॥ सुभगःपंडितःस्यात्तोलग्नेबोधनशुक्रयोः ७४ विद्यार्थवाहनैर्हीनोमलिनःपापसंयुतःअल्पायु क्षीणभाग्यश्चलग्नेचंद्रजमंदयोः ७५

और पापी होताहै ७१ और जिसके लग्नमें मंगल बुधका योग होवे सो हिंसाके करणेवाला और अग्निके कर्मोंमे चतुर और धातुवादके करणेवाला और दूतवृत्तिवाला और गुप्तव्यवहार करणेवाला होताहै ॥ ७२ ॥ और जिसके लग्नमें मंगल बृहस्पतिका योग होवे सो मंत्री और श्रेष्ठवक्ता और पुत्रों कर्केयुक्त और यशकोंप्राप्त और बडेधनकर्केयुक्त और नित्य उत्साहकर्केयुक्त और धर्मी होताहै ॥ ७३ और जिसके लग्नमें बुधशुक्रका योग होवेसो ब्राह्मण औरदेवताके पूजनमें रत और धनी और राजा कर्के पूज्य और श्रेष्ठभाग्योंवाला और पंडित और प्रसिद्ध होताहै ॥ ७४ ॥ और जिसके लग्नमें बुध शनीका योग होवे सो विद्या धन वाहनोंकर्के रहित और मलीन और पापकर्के युक्त और थोडाजिंदगीवाला और खोटेभाग्योंवाला होताहै ७५

श्रौर जिसके लग्नमें वृहस्पति श्रौर शुक्रका योगहोवे सो श्रेष्ठकर्म करणेवालाराजा श्रौरसुदरदेहवाला श्रौर राजाके वशमें जन्मनेवाला श्रौर श्रन्यकुलमेंवी राजाके तुल्यहोने वाला होताहै ७६ श्रौर जिसके लग्नमें वृहस्पति शनीका योग होवे सोमंदभाग्य श्रौर श्रालसी श्रौर दुष्ट श्रौर वियाहीन श्रौर निष्ठुर श्रौर थोडेसुखवाला श्रौर केवलधनकोंहि जाननेवाला होताहै ॥ ७७ ॥ श्रौरजिसके लग्नमें शुक्रश नीका योग होवे सो संपूर्णवर्णकी स्त्रियोंको भोगने वाला श्रौर स्त्रीके सुखवाला श्रौर धनके भोगने वाला श्रौर वहुत पुत्रों वाला श्रौर शोकसें रहित होताहै ॥ ७८ ॥ श्रवलग्नेशकेवाराभावोंमेंफलकहतेहैं फलप्रदीपग्रंथसें जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी लग्नमें स्थित होवे सो रोगरहितचिरकाल जीवनेवाला होताहै श्रौर वडेवलवाला श्रथवाराजा श्रौर पृथ्वीके ला

सत्कर्मकुशलोराजासुदेहोभूपवंशजः ॥ नृपतुल्यकुलेन्यस्मिन्विलग्नेजीवशुक्रयोः ७६ मंदोलसःखलोऽविद्वान्निष्ठुरोल्पसुखीभवेत् ॥ धनसासोविलग्नस्थसुरेज्यरविपुत्रयोः ॥ ७७ ॥ सर्वनारीभोगयुतःकांतासौख्यार्थभोगभाक् ॥ वहुपुत्रोविशोकःस्याद्विलग्नेशुक्रमंदयोः ॥ ७८ ॥ श्रथतनुस्वामिनोद्वादशभावफलंफलप्रदीपात् ॥ लग्नाधिपतिर्लग्नेनीरोगंदीर्घजीविनंकुरुते। श्रतिवलमवनीशंवाभूलाभसमन्वितंजातम् ॥ १ ॥ लग्नपतिर्धनभवनेधनवंतंविपुलजीवनंस्थूलम् स्थानप्रधानमनिशंसत्कर्मरतंनरंकुरुते २ सहजगतोलग्नपति सद्बंधुप्रवरमित्रपरिकलितम् धर्मेरतंदातारंशूरंसवलंकरोति नरम् ३ लग्नेशस्तूर्यगतोनृपप्रियप्रचुरजीवितपुरुषम् सल्लब्धपितरपित्रोर्भक्तम् वहुभोजनकुरुते ४ पंचमगोलग्नपति सुसुतंसत्यागसीश्वरस्यातम् वहुजीविनं सुकर्मनिरतंनरंतनुतेविनीतंच ५

भको प्राप्त होताहै १ श्रौर जिसकेजन्ममेंलग्नेशदूसरेभावमेंस्थितहोताहै सोधनवान् श्रौर चिरजीनेवाला श्रौर पुष्टदेहवाला श्रौर स्थानमें प्रधान श्रौर नित्यशुभकर्म करणेवाला होताहै २ श्रौर जिसके जन्ममें लग्नेश तीसरेभावमें स्थितहोताहै सो श्रेष्ठ भाई श्रौर मित्रोंकर्के युक्त होताहै श्रौर धर्ममें युक्त दाता श्रौर शूरवीर श्रौर वलयुक्त होताहै ३ श्रौर जिसकेजन्ममें लग्नेश चतुर्थभावमें स्थितहोताहै सो राजाका प्यारा श्रौर वडी श्राजीवकावाला श्रौर पितासें श्रेष्ठ लाभवाला श्रौर पिता माताका भक्त ॥ श्रौर थोडाभोजनकरणेवाला होताहै ४ श्रौर जिसके जन्ममें लग्नेश पचमभावमें स्थितहोवे सो श्रेष्ठ पुत्रवाला श्रौर त्यागी श्रौर लक्ष्मीवाला श्रौर प्रसिद्ध श्रौरवडीउपजीवकावाला श्रौरश्रेष्ठकर्ममेंरत होताहै ५

श्रीर जिसके जन्मसमयमें लग्नेश छठेभावमें स्थितहोवे सो रोग रहित श्रीर पृथ्वीके लाभवाला श्री
बली होताहै श्रीर कृपण श्रीर धनीश्रीर शत्रुयोंके नाशकरणेवाला श्रीर अपने कर्ममें चतुर कर्ताहै
। श्रीर जिसके जन्ममें लग्नेश सप्तमभावमें स्थितहोवे सो तेजस्वीश्रीर श्रेष्ठ स्वभाववाला श्रीर तिस
की स्त्रीभीश्रेष्ठस्वभाववाली श्रीर श्रेष्ठ रूपवाली होतीहै ७ श्रीर जिसको लग्नेश अष्टमभावमेंस्थित
होवे सो कृपण श्रीर धनसंग्रह करणेवाला श्रीर बडीश्रायुपावालाश्रीर क्रूरग्रहहोवे तब कटुकवाणी
वाला श्रीर शुभग्रहहोवे तब देहकर्के पुष्टहोताहै ८ श्रीर जिसको लग्नेश नवमस्थानमें स्थितहोवे त
व श्रेष्ठभाईयोंवाला श्रीर पुण्यवान् होताहै श्रीर तुल्यपराक्रमीश्रीर श्रेष्ठस्वभाववाला श्रीर धर्ममें प्रसि
द्ध श्रीर तेजस्वीहोताहै ९ श्रीर जिसके जन्ममें लग्नेश दशमभावमें स्थितहोवे सो राजासें लाभवा
ला श्रीर पंडित श्रीर श्रेष्ठस्वभाववालाहोताहै श्रीर गुरुजन श्रीर माताके पूजनमें बुद्धिवाला श्रीर

रिपुभवनेलग्नेशोनीरोगभूमिलाभिनंसबलं ॥ कृपणधनिनमरिघ्नंसुकर्मदक्षा
न्वितंकुरुते ॥ ६ ॥ प्रथमपतौसप्तमगेतेजस्वीशीलवान्भवेत्पुरुषः तद्भार्या
पिसुशीलातेजस्कलितासुरूपाच ॥ ७ ॥ लग्नपतावष्टमगेकृपणोधनसं
चक सुदीर्घायुः क्रूरखगेकटुजल्पीसौम्येवपुषाभवेत्पीनः ॥ ८ ॥ मूर्ति
पतिर्यदिनवमस्तदाभवेत्प्रवरबांधवःसुकृती समसत्त्वश्चसुशील सुकृत
स्यात सुतेजस्वी ॥ ९ ॥ प्रथमेशेदशमस्थेनृपलाभःपंडितःसुशीलश्च गुरु
मातृपूजनमतिर्नृपप्रसिद्ध पुमान्भवति १० एकादशगस्तनुपःसुजीवितसुतस
मेन्वितोविदितम् तेजस्कलनंकुरुतेबलिनपुरुषंनसीदंतम् ॥ ११ ॥
द्वादशगेमूर्तिपतौकटुवाक्वादकरोमतिमान् ॥ सहगोत्रकैर्मिलनंमतिर्विदेश
गोदत्तभुक्तनरः १२ पराशरीये ॥ देहाधिप पापयुतोष्टमस्थोव्ययारिगो
वांगसुखनिहंति ॥ सर्वत्रभावेषुचयोजनीयमेवबुधैर्भाववशात्फलंहि १३

राजाके पास प्रसिद्ध होनाहै १० श्रीरजिसके जन्ममेंलग्नेश एकादशभावमें स्थितहोवे सो श्रेष्ठजी
वकावाला श्रीर पुत्रोंकर्के युक्त श्रीर प्रसिद्धहोताहैश्रीरतेजस्वीश्रीरबलीश्रीरखेदकोनहिंप्राप्तहोताहै ११
श्रीर जिसके जन्ममें लग्नेश बाहरमें भावमें स्थित होताहै सो कठोर वाणीवाला श्रीर वादकरणे
वाला श्रीर बुद्धिमान् श्रीर सबंधियोंसें मिलनेकी इच्छावाला श्रीर विदेश गमन करणे वाला
श्रीर देकर्केश्राप खाने वाला होताहै १२ श्रीर पाराशरीमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नका
स्वामी पापग्रहोंकर्के युक्त अष्टम स्थानमें स्थित होवे अथवा छठे बाहरमें स्थानमें होवे सो देहकेसु
खको हतकर्त्ताहै अयसें हिं जिसभावका स्वामी ६ । ८ । १२ स्थानमें स्थित होवे तिस भावके
सुखको हतकर्त्ताहै १३

॥ और इसी प्रकारकर्के तीसरे और सप्तमें स्थानसें अष्टमेश कर्के युक्त तीसरे सप्तम भावके स्वामी ॥ ६ । ८ । १२ ॥ में होवें तब भ्राता और स्त्रीको देहका सुखनाहिं होताहै और तैसेंहिं लग्नेश मित्रके घरमेंबी बाहरमें छठे अष्टमें स्थित होवे तबबी देहका सुख नाहिं होताहै १४ और पापीग्रह लग्नेश होयकर्के लग्नमें स्थित होवे अथवा चद्रमाके लग्नमें वा नवांशमें स्थित वा केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित होवे तब रोगकों देताहै और त्रिकोण । ९ । ५ । और लाभ ॥ ११ ॥ स्थानमें होवे तब रोगकों दूरकर्त्ताहै १५ और जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी वा चद्रराशिका स्वामी तीसरे बाहरमें छठे स्थानमें निर्बल होयकर्के स्थित होवे वा नीच राशिमें वा अस्त वा शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तब देहमें कृशता और रोग कर्त्ताहै ॥ १६ ॥ और कहतेहें जिसका जन्मलग्न स्वामीकर्के दृष्टहोवे सो राजा होताहै अथवा राजाका प्याराहोताहै अथ

एवंतृतीयेपिचसप्तमेपिफलंविमृश्यंकृतिभिःप्रयत्नात् ॥ तथान्ययेमित्रगृहे रिपौमृतौस्थितेविलग्नाधिपतौफलस्यात् १४ पापोविलग्नाधिपतिर्विलग्नेचन्द्रस्यलग्नेयदिवालवेस्यात् ॥ ददातिरोगंसहिकेंद्रसंस्थस्त्रिकोणलाभेयुगदंनिहंति १५ देहाधिपश्चंद्रगृहाधिपोवातृतीयरिष्फारिगतोबलःस्यात् ॥ नीचास्तगोद्वेष्यगृहस्थितोवाकार्श्यंशरीरेतिगदंकरोति १६ लग्नेस्वामीक्षितेराजातत्प्रियोवाधनीसुखी सौम्येक्षितेखिलसौख्यंपापदृष्टेत्वशोभनम् १७ सुखीलग्नेद्व्यादिदृष्टेसर्वदृष्टेनृपोभवेत् ॥ लग्नेत्रयःशुभाराजादुःखीपापत्रयाद्भवेत् १८ लग्नाधिपोतिबलवानशुभैरदृष्टःकेंद्रस्थितःशुभखगैरवलोक्यमानःमृत्युंविधूयविदधातिसदीर्घमायुःसार्द्धंगुणैर्बहुभिरूर्जितयाचलक्ष्म्या १९ ॥ इतितनुभावविचारः ॥

वा धनी और सुखी होताहै और जिसका जन्मलग्न शुभग्रहोंकर्के दृष्टहोवे सो बडे सुखकों प्राप्तहोता है और पापी ग्रहोंकर्के लग्न देख्याहोवे तब अशुभ फल होताहै १७ और जिसका जन्मलग्न दो से लेकर्के तीन चार ग्रहो कर्के देख्या होवे सो सुखी होताहै ॥ और संपूर्णग्रहोंकर्के देख्या होवे तब राजा होताहै और जिसके जन्मलग्नमें तीन शुभग्रह स्थित होवें सो राजा होताहै और जिस केलग्नमें तीन पापग्रह स्थितहोवे सो दुःखी होताहै १८ और जिसके जन्मलग्नका स्वामी बली होवे और पापग्रहोंकर्के नाहिं देख्याहोवे और केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें स्थितहोवे और शुभग्रहोकर्के देख्या होवे सो लग्नेश मृत्युकों दूरकर्के बडी आयुषाकों प्राप्त कर्त्ताहै और गुण और बडी लक्ष्मीकर्के युक्त कर्त्ताहै १९ इतितनुभावविचारः ॥

अब धनभावका विचार कहतेहैं तिसमें क्याक्यापदार्थहै सो कहतेहै धन और नेत्र और मुख और वाणी और कुटुंब और भोजन इन्होंका फल क्रमकर्के धनभावसें कहाहै ॥ १ ॥ जिसके जन्मसमयमें धनभाव और लाभभाव और लग्नभाव स्वामीकर्के युक्त होवें तब बडे धनवालाहोताहै और धनका स्वामी और लाभका स्वामी दोनों एकादशमें स्थित होवें और अपने मित्र और उच्चादि राशियोंमें स्थित होवें तब बडेधनकों प्राप्त होताहै और तैसेंहि एकादश और दूसरे घरके स्वामी मित्रग्रहहोय कर्के लग्नमें होवें तब धनी होताहैऔर लग्नका स्वामी धनेश और लाभेश कर्के युक्त लग्नमें स्थित होवे तब बडे धनवाला होताहै २ और धनभावमें स्थित जो ग्रह और धनभावकों देखता जो ग्रहहै और धनकास्वामी जो है इह तीनों ग्रह अपनी दशातर्दशामें धनकाजो कारक ग्रहहै तिसके अनुसार धनलाभकों प्राप्तहोताहै ३ और जद लग्नका स्वामी धनभावमें स्थित होवे तब

अथधनभावविचारःतत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् वित्तनेत्रमुखविद्यावाक्कुटुंवाशनानिच द्वितीयस्थानजन्यानिक्रमाज्ज्योतिर्विदोविदुः ॥ १ वित्तायोदयराशयःपतियुतावित्ताधिकोजायते लाभस्थौधनलाभपौनिजसुहृत्तुंगादिकौचेत्तथातद्वल्लाभधनाधिपौतनुगतावन्योन्यमिष्टग्रहौ लग्नेशंधनलाभराशिपयुतेलग्नेवहुद्रव्यवान् २ धनोपयातःप्रथमोथदर्शीग्रहोद्वितीयोधनपस्तृतीयः तत्पाकभुक्तौधनलाभमेतिक्रमेणतत्कारकवर्गमूलात् ३ धनस्थयदिलग्नेशेनिधिमान्वलसंयुते दुर्वलेपापसंयुक्तेवचनादिफलंवदेत् ४ वित्ताधीशेसोदरेशेनयुक्तेलग्नस्थेचभ्रातृवित्तसमेति मातृस्थानस्वामिनामातृवित्तंयद्भावेशेनान्वितंतद्धनंस्यात् ॥ ५ ॥ वित्ताधीशेलग्नगेलग्ननाथेवित्तस्थानेयत्नतोवित्तमेति यद्भावस्थौलग्नवित्तेश्वरौचेत्तन्मूलात्तुद्रव्यलाभंनराणाम् ॥ ६ ॥

निधिकों प्राप्त होताहै और वलहीन और पापयुक्त होवे तब निधिका नाशचौरादियोंकर्के होताहै ४ और जिसकें जन्मसमयमें दूसरे घरका स्वामी तीसरे घरके स्वामीके साथ लग्नमें स्थित होवे तब भ्राताके धनकोंप्राप्त होताहै औरचतुर्थभावके स्वामीके साथलग्नमें स्थितहोवे तब माताके धनकों प्राप्त होताहै और धनेश जिसभावके स्वामीके साथमिलकर्के लग्नमें स्थितहोवे तिसके धनकों प्राप्तहोताहै ५ और धनेश लग्नमे और लग्नेश धनभावमें स्थित होवें तब यत्नसें धनकों प्राप्त होताहै और जिस भावमें लग्न और धनके स्वामी स्थित होवें तिसकें संबंधसें धनका लाभ होताहै ६

श्रौरचंद्रमादूसरेघरमें स्थित शुक्रकर्के देख्या होवे तब धनकों देताहै श्रौरदूसरेभावमेंबुधस्थितहोवेश्रौर शुभग्रहकर्के देख्या होवे तब धनी होताहै ७ श्रौर जिसभावमें धनेश्वरस्थित होवे तिसभावकीवृद्धि होतीहै श्रौर तिस भावकें संबंधसें धनलाभ होताहै श्रौर तिसभावका स्वामी वक्रगतिमें होवे तब च्यार श्रौर सें धनकी सिद्धि होतीहै ८ श्रौर दूसरे भावका स्वामी एकादशमें स्थित होवे श्रौर एकादशकास्वामी दूसरे जाहरमें स्थानमेंस्थित होवे अथवा सो दोनों केंद्र १ ४ । ७ । १० । स्थानमें स्थित होवें तब धनकर्केयुक्त श्रौर प्रसिद्धताकों प्राप्त होताहै ९ श्रौर जिसके जन्मकालमें दूसरे घरका स्वामी छठे बाहरमें स्थानमें स्थित होवेश्रथवा बाहरमें घरकास्वामी दूसरे स्थानमें होवे श्रौर जाहरमें घरकास्वामी छठे अष्टम स्थानमें स्थित होवे वा बाहरमें होवे तब धनका नाशहोताहै १० श्रौर बाहरमें स्थानमें वृहस्पति स्थित होवे श्रौर दूसरे घरका स्वामी बलहीन होवे श्रौर लग्नकों शुभग्रह नहि

चंद्रःकुटुंबभवनेशुक्रेणनिरीक्षितःप्रदाताच सौम्येशुभसंदृष्टेसएवधनवान्सदाज्ञेयः ७ अर्थाधीशोयत्रसंस्थोनराणांतस्मिन्कालेतत्रच्चाद्विविशेषात्तद्भावेचद्रव्यलाभंकरोतिवक्रेसौचेद्दिक्षुसर्वार्थसिद्धिः ८ धनेशेलाभसंयुक्तेलाभेशे धनलाभगे तावुभौकेंद्रगौवापिधनमान्स्यातिमान्भवेत् ९ धनेशे व्ययषष्ठस्थेव्ययेशेवित्तगेथवा लाभेशेरिपुरंध्रस्थेव्ययेवाधननाशनम् १० व्ययभावगतेजीवेवित्तेशेवलवर्जिते शुभैरनीक्षितेलग्नेवित्तनाशंवदेद्बुधः११ लग्नेशेधनराशिस्थेधनेशेलाभराशिगे लाभेशेवाविलग्नस्थेनिध्यादिधनमाप्नुयात् ॥ १२ लग्नायधनभाग्येशाःपरमोच्चांशसंयुताःवैशेपिकांशगावापितदा कोटीश्वरोभवेत् १३ दिनेश्वरकरछन्नेधनेशेनीचराशिगेपापषष्ठ्यंशसंयुक्तेऋणग्रस्तोभवेन्नरः१४ लग्नेश्वरेणसहितेयदिवित्तनाथेदुःस्थेक्षिनाशनमथास्फुजिदिंदुयुक्ते नेत्रेश्वरेतनुगतेयदिनैशिकांधःस्वोच्चेस्वहृद्गृहगतेनतथाविधंनरः १५

देखता होवे तब धननाश होताहै ११ श्रौर लग्नेश दूसरे स्थानमें स्थित होवे श्रौर दूसरे घरका स्वामी लाभ ११ में स्थित होवे अथवा लाभेश लग्नमें स्थित होवे तब निधिसें लेकर्के धनकों प्राप्त होताहै १२ श्रौर लग्न श्रौर एकादश श्रौर दूसरे श्रौर नवम भावके स्वामी परम उच्च नवांशमें स्थित होवें अथवा वैशेपिकांशमें स्थित होवें तब कोटिसंज्ञा धनका स्वामी होताहै १३ श्रौर जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी सूर्यकी किरणों कर्के श्राच्छादित होवे श्रौर नीच राशिमें स्थित होवे श्रौर पाप षष्ट्यंशमें युक्तहोवे तब ऋणकर्के ग्रस्त होताहै १४ श्रौर जिसके जन्मकालमें लग्नेशकर्के युक्त दूसरे स्थानका स्वामीदुः ६८ १२ स्थानमें स्थित होवे तब नेत्र नाशहोताहै अथवा शुक्र चंद्रमाकर्के युक्त दूसरे घरका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तब रात्र्यंध दोषकों प्राप्तहोताहै श्रौर उच्च श्रौर मित्रक्षेत्रमें स्थित होवे तब दोपनहि कर्ताहै १५

श्रौर जिसके जन्मकालमें लग्न श्रौर दूसरे श्रौर सप्तम श्रौरनवम श्रौर पंचमके
स्वामी छठे श्राठमें वाहरमें स्थानमें स्थित होवें श्रौर शुक्रका लग्नमें संवंध होवे तव
नेत्रोंकर्के हीन होताहै १६ श्रौर सर्वार्थचिंतामणीमें कहतेहैं जिसके जन्ममें सूर्य श्रौर शुक्र लग्नेश
कर्के युक्त दूसरे भावका स्वामी छठे श्राठमें वाहरमें स्थानमें होवे सो जन्मांध होताहै श्रौर जिसके
जन्ममें वाहरमें स्थानमें मंगलके साथ दूसरे भावका स्वामी होवे तव वामें नेत्रसें काणा होताहैश्रौर
शनिके साथ होवे तव दक्षिण नेत्रसें काणा होताहै १७ श्रौर जिसकेजन्मलग्नमें सूर्य चंद्रमा दोनों
स्थित होवें श्रौर शनि श्रौर मंगल कर्के दृष्ट होवें तव नेत्रोंका नाश कर्तेहैं श्रौर शुभाशुभ ग्रहोंकर्के
देखे होवें तव चिपटे नेत्रोंवाला होताहै श्रौर केवल शुभग्रहोंकर्केयुक्त श्रौर दृष्ट होवें तव नेत्रोंमें दो
पनाहि कर्तेहैं १८ श्रौर दूसरे घरकास्वामी पापग्रहकर्के युक्त दूसरे भावमें स्थित होवे श्रौर शुभग्रह

विलग्नवित्तास्ततपःसुतेशारिपुव्ययछिद्रगृहोपयाताः विलग्नसंवंधकरःसितश्चे
द्विलोचनाभावमुपैतिजातः १६ सर्वार्थचिंतामणौ भान्वछलग्नपतिभिःसहि
तेतदीशेजात्यंधकोभवतिरंध्रव्रणांत्यगेपि रिःफेधरासुतगतेनयनंहिवामंनाशं
तदाव्रजतिसूर्यसुतेतदन्यत् १७ इंद्वर्कसंयुक्तहरौविलग्नेशन्यारदृष्टेक्षिवि
नाशमाहुः शुभाशुभैर्वुद्बुदलोचनःस्याच्छुभैर्नदोषःसहितेक्षणाभ्याम् १८ नि
मीलिताक्षस्तुधनेसपापेतदीश्वरेशोभनदृष्टियुक्ते लग्नाधिपेपापखगेनयुक्तेवला
न्वितेकारककखेचरेंद्रे १९ नेत्रेशुभेतद्भवनेश्वरेवासौम्यान्वितेकारकखेचरेंद्रेलग्ने
श्वरेणापियुतेथदृष्टेविशालदृष्टिःसनरोविशेषात्२० जातोसौसुमुखःशुभेधनगतेतुं
गादिवर्गान्विते तद्भावेयदिसौम्यवर्गसहितेवाक्सिद्धिमेतिध्रुवम् आज्यस्पर्शमुपैति
वित्तगृहगेभौमेदिनेशेक्षिते जातःकोद्रवमुख्यभुक्धनगतेराहौचपापेक्षिते २१

कर्के देख्या होवे श्रौर लग्नेश पापग्रहकर्के युक्त होवे श्रौर कारक ग्रह
वली होवे तव निमीलिताक्षि होताहै १९ श्रौर धनभावमें शुभग्रह होवे श्रौर धनका स्वा
मी शुभग्रहकर्केयुक्त होवे श्रौर धनकाकारक शुभयुक्तहोवे वा दृष्ट होवे तवहच्छेनेत्रोंवालाविशेषकर्के
होताहै२० श्रौर जिसके जन्मसमयमें उच्चादिवर्गमें स्थितधनभावमेंशुभग्रहहोवे सो श्रेष्टमुखवालाहोताहै
श्रौरधनभावमें शुभग्रहके वर्गमेंशुभग्रह स्थित होवे तववाक्सिद्धिकों प्राप्तहोताहैश्रौरधनस्थानमेंमंगल
सूर्यकर्के देख्या होवेतव घृतकर्के दग्ध होताहै श्रौर धनभावमें पापग्रहकर्के दृष्ट राहु स्थित होवे तव
कोद्रेसें लेकर्केमाढेअन्नकाभक्षणकर्ताहै २१

औरजिसकेलग्नमेंऔरदूसरेऔरअष्टमस्थानमेंसूर्यस्थितमंगलकरकेयापापग्रहकरकेदेख्याहोवेसोघृतसंयोगकरकेअग्निसेंजलताहैऔरककफोटयोंकरकेपीडितहोताहै २२ औरजिसकेदूसरेभावमेंपापग्रहहोवेऔरपापीग्रहकरकेदृष्टहोवेसोदुर्मुखहोताहैऔरदूसरेभावकास्वामीगुलिककरके युक्तहोवेतवक्रोधीमुखवालाहोताहै २३ और दूसरेघरका स्वामीकेंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवे तब शोभाकरके युक्त प्रफुल्लित मुखवाला होताहै और अपने उच्च और मित्रकेवर्गमेंस्थित होवेऔर शुभग्रहकरके दृष्टहोवेतव श्रेष्ठ मुखवाला होताहै २४ औरजिसकेजन्मसमयमें दूसरेभावका स्वामी राहुकरके युक्त दुःस्थानमें ६ । ८ । १२ और जिस राशिमेंराहु स्थित होवे तिसके स्वामी करके युक्त होवे तव तिसकी दशांतर्दशामे दंतरोग होताहै और तिसमें बुधकीअंतर्दशाहोवे तब जिव्हामें रोग होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमेंदूसरेतीसरे घरकेस्वामीराहुकरके युक्त होवेसो गलरोगकरके बडे कष्टको प्राप्त होताहै और दूसरे भावमें सूर्यचंद्रमा स्थित होवें तब दरिद्रको देतेहैं और मंगलशनिदोनोंस्थित होवें तवकष्टकरतेहैं २६ औरदूसरेभावकास्वामीबृहस्पतिकरके युक्त अष्टम भावमें स्थित होवे तवमूकजल्हा होताहैऔर संपूर्णस्थानोंमें जो ग्रह स्वक्षेत्र औरउच्चराशिमें स्थित

लग्नार्थाष्टमस्थेर्केभौमेवान्यतरेक्षितेआज्यस्पर्शाग्निभीतिर्वासंभवंतिमसूरिकाः२२
पापैर्युतेमुखस्थानेदुर्मुखःपापवीक्षिते क्रोधाननोनरःपापीतद्दीशेगुलिकान्विते२३
प्रफुल्लवदनःश्रीमान्केंद्रेमुखपतौयदा स्वोच्चस्वमित्रवर्गस्थेसुमुखःशुभवीक्षिते२४
वाग्भावेशेराहुयुक्तेचदुःस्थेराव्हाक्रांतस्थाननाथान्वितेच पाकेभुक्तौतस्यदंतामयः
स्यात्जिव्हारोगंतारकासूनुभुक्तौ२५राहुद्वितीयगृहपौसहजेशयुक्तौजातःसमेति
गलरोगमतीवकष्टम् दारिद्यदौरविशशीधनराशियातौभौमार्कजौसकलरोग
करौभवेताम् २६ वाग्भावेशेगुरुयुतेनाशस्थेमूकतामियात् दोपकृन्नतुसर्वत्र
स्वोच्चस्वर्क्षगतोग्रहः २७ वागीशवुधजीवेपुनिर्विद्योनाशगेपुच केंद्रेतेपुत्रिको
णेवास्वक्षेवाविद्ययान्वितः २८ वागीशस्थांशकेसौम्यस्वोच्चेवाशुभवीक्षिते
पारावतांशकेवापिवाग्मीपटुनरोभवेत्२९केंद्रत्रिकोणगेजीवेशुक्रेस्वोच्चगतेयदि
वाग्भावगेदुपुत्रेवागणितज्ञोभवेन्नरः३० गणितज्ञोभवेज्जातोवाग्भावेभूमिनंदने
ससौम्येबुधसदृष्टेकेंद्रेवाभूमिनंदने ३१ ॥

होताहैसोदोषनहिकरताहै२७ औरवृहस्पति औरवुधऔरदूसरेभावका स्वामीअष्टमस्थानमेंस्थित होवे तब विद्याहीन करतेहैं और केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ ५ स्थानमें होवेंतव विद्याकरके युक्तहोताहै २८ और दूसरे भावका स्वामी शुभग्रहके वा उच्चके नवांशमें स्थित शुभग्रहकरके देखाहोवेअथवा पारावतांशमें स्थितहोवे तब श्रेष्ठ वाणीवाला और वडा चतुर होताहै २९ और केंद्रत्रिकोण १ । ४ । ७ । १० ९ ५ स्थानमेंवृहस्पति स्थितहोवेऔर उच्च नवांशमें शुक्र होवेअथवा दूसरे भावमें वुधहोवेतवगणितविद्याकेजाननेवालाहोताहै ३० और दूसरे भावमेमंगल स्थित होवे अथवाशुभग्रह करकेयुक्तऔरवुधकरकेदृष्टकेंद्र १ ४ ७ १० स्थानोंमेमंगलस्थितहोवेतवगणितकेजाननेवालाहोताहै ३१

श्रौर जिसकेजन्मसमयमेंदूसरेभावकास्वामी श्रौर सूर्य श्रौर मंगलवृहस्पतिकर्केश्रौर शुक्रकर्केदेखेहोवें अथवापारावतांशमेंस्थितहोवेंतवन्यायशास्त्रमेंतत्परहोताहै ३२ श्रौर वृहस्पतिश्रौरदूसरेघरकास्वामीसंपूर्णवलकर्केयुक्तहोवेंश्रौर सूर्यशुक्र कर्केदेखेहोवेंतवशब्दशास्त्रकेजाननेवाला होताहै ३३ श्रौर जिसके जन्मसमयमें केंद्र १।४।७।१० कोण ९।५ स्थानमेंवृहस्पतिस्थितहोवेसोवेदांतकेजाननेवाला होताहै श्रौर पारावतांशमेंशनिस्थितहोवे श्रौर वुधशुक्रकर्केदेख्याहोवेतव वेदांतशास्त्रकोजाननेवालाहोताहै ॥ ३४ ॥ श्रौर जिसकेजन्मसमयमेंवृहस्पति केंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानमेंस्थितहोवे श्रौर शुक्र सिंहासनांशमें दूसरे भावके नवांशकापति वुध गोपुरांशमें स्थितहोवे तव छेशास्त्रके जानने वाला होताहै ॥ ३५ ॥ श्रौर जिसके जन्मकालमें सप्तम श्रौर धनभावके

वाग्भावपेरवौभौमेगुरुशुक्रानिरीक्षिते पारावतांशकेवापितर्कयुक्तिपरायणः३२ संपूर्णवलसंयुक्तेगुरौतद्भवनेश्वरे दिनेशभृगुसंदृष्टेशाब्दिकोयंभवेन्नरः ३३ वेदांतपरिशीलःस्यात्केंद्रकोणेगुरौयदि वुधेनभृगुणादृष्टेशनौपारावतांशके ३४ षट्शास्त्रवल्लभःकेंद्रेजीवेदानवपूजिते सिंहासनेगोपुरांशेवाग्भावस्थांशपेवुधे ३५जायाकुटुंवगृहवासितपापयुक्तौदुःस्थौचतत्समकलत्रहरौभवेताम् वित्ताधिपेवलवतिस्मरराशिपेवा तुंगादिगेयदिसमेतिकलत्रमेकम् ३६ भुक्तिस्थानपतौसितेंदुसहितेलग्नादिकेंद्रास्थिते रौप्यंपात्रमुपैतिकांचनमयंजीवेंदुशुक्रान्विते भुक्तिस्थानपदेहपौशनियुतौलोहादिपात्रंवदेत् भौमेपापनिरीक्षितेधनगते जातःकदन्नादिभुक् ३७वन्हाशनेभुक्तिपतौसपापेदावाग्निदंडायुधकालभागे नीचांशकेपापनिरीक्षितेचशुभैर्नदोषःसहितेक्षितेवा ३८

स्वामी पापयुक्त दुः ६ । ८ ॥ १२ ॥ स्थानमेंस्थितहोवेंतवतिसभावकेराशितुल्यसंख्याककेस्त्रीयोंकोहतकर्त्ताहैं श्रौरदूसरे श्रौरसप्तमभावकास्वामीउच्चादिस्थानमेंस्थितहोवेतवएक स्त्रीवालाहोताहै ३६ श्रौर जिसकेजन्मकालमें दूसरेघरकास्वामीशुक्रश्रौर चंद्रमाकर्केयुक्तकेंद्र१।४।७।१० स्थानोंमेंस्थितहोवेतवरौप्यपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहै श्रौर वृहस्पतिकर्केयुक्तहोवेतवस्वर्णकेपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहै श्रौर दूसरेघरका श्रौर लग्नकास्वामिदोनोंशनिकर्केयुक्तहोवेंतवलोहेकेपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहै श्रौर जन्मकालमें मंगल पापग्रहकर्केदेख्याहोवेतवकदन्नभोजनकर्त्ताहै ३७ श्रौर दूसरेघरकास्वामीपापीग्रहकर्केयुक्तदंडायुधश्रौर दावाग्नि श्रौर कालभागमेंस्थितहोवे श्रौर नीचनवांशमें श्रौर पापीग्रहकर्केदृष्टहोवेतवबहुतभोजनकरनेवालाहोताहै श्रौर शुभग्रहकर्केयुक्त दृष्टहोवेतवदोषनहींहोताहै ३८

श्रौर दूसरेस्थानमेंशुभग्रहस्थितहोवे श्रौर दूसरे कास्वामी शुभयुक्तहोवे श्रौर शुभग्रहकर्के देख्याहोवे तवमुखकर्के भोजनकर्ताहै ॥ ३९ ॥ श्रौर दूसरेघरकास्वामीनीच श्रौर शत्रुकर्केयुक्तहोवे तवपरान्न भोजनकर्ताहै श्रौर नीचग्रहकर्के देख्याहोवे तवदूषित अन्नका भोजनकर्ताहै ॥ ४० ॥ श्रौर दूसरे घरकास्वामी लग्नेशकर्के देख्याहोवे तवसमयमें उचित अन्नको भोजनकर्ताहै श्रौर पापग्रहदेख्याहोवे श्रौर नीचकेनवांशमें स्थितहोवेतव कालोचितअन्ननहिंमिलताहै ॥ ४१ ॥ श्रौर जिसकेजन्मकालमें दूसरेघरका स्वामी शुभग्रह होवे श्रौर अपनेउच्च राशिमें स्थित श्रौर शुभग्रह कर्के श्रौर मित्रग्रहकर्के देख्याहोवे श्रौर मृदुभागादियोंमें स्थितहोवे तवथोडा भोजन करणेवा-ला श्रौर रुचिकी कामना वाला होताहै ४२ श्रौर जिसके दूसरे भावका स्वामीशनिहोवे वा दूसरे भावका स्वामी शनिकर्के युक्त होवे श्रौर नीच राशिमें स्थित शनिकर्के देख्याहोवे सो निरंतर

भुक्तिस्थानेशुभयुतेतदीशेशुभसंयुते शुभग्रहेणसंदृष्टेसुखभुक्सनरोभवेत् ३९
परान्नभुक्तदीशेपिनीचशत्रुसमन्विते नीचखेचरसंदृष्टेतद्दूपणपरायणः ४०
कालोचिताशनोभुक्तिनाथेलग्नेशवीक्षिते पापग्रहेणसंदृष्टेनीचांशादिगतेनतु ४१
स्वल्पाशीरुचिकामःस्याद्भुक्तिनाथेशुभग्रहे ॥ स्वोच्चेशुभसुहृद्दृष्टेमृद्वंशादिसमन्विते ४२ भुक्तिस्थानाधिपेमंदेतदीशेवार्किसंयुते ॥ नीचेर्कसूनुनादृष्टेश्राद्धभुक्सततंनरः ४३ सिंहासनांशेयदिदेवपूज्येशुक्रेयदागोपुरभागयुक्ते ॥ ऐरावतांशेधनपेवलाढ्येजातस्त्वसंख्याश्रितरक्षकःस्यात् ४४ सारावल्यां ॥ भौमेंदूधनसंस्थौत्वग्दोपदरिद्रताकरौकथितौ ॥ मंदःकुरुतेशुद्धोमहार्थयुक्तंवुधेक्षितस्तत्र ४५ रविरपिविधनंजनयतियमेक्षितोन्यैर्नसंदृष्टः ॥ सौम्यःकुटुंवराशौवहुप्रकारंधनंदद्यात् ४६ वुधदृष्टस्त्रिदशगुरुःकुटुंवसंस्थश्चनिस्स्वतांकुरुते सोमतनयोपिशशिनानिरीक्षितोहंतिसर्वधनम् ४७

श्राद्धान्नकों भोजन कर्ताहे ४३ श्रौर जिसकेजन्मकालमे सिंहासनांशमें वृहस्पति श्रौर गोपुरांशमें शुक्र श्रौरऐरावतांशमें वल युक्त धनेशस्थित होवे सो असंख्यात जनोंका पालन कर्ताहै ४४ श्रौर सारावलीमें कहतेहे ॥ जिसके दूसरे भावमें चद्र मंगल दोनों स्थित होवें सोत्वचा दोप दद्रू सें लेकर्के श्रौर दारिद्र करतेहैं श्रौर केवल शनि वुधकर्के देख्या हुया धनभावमें होवे तव वडे धनकों देताहै ४५ श्रौर सूर्यवी धनभावमें शनिकर्के देख्या होवे श्रौर होरशुभग्रह नहिं देखते होवें तव धनहीन कर्ताहै श्रौरवुध धनभावमें स्थित होवे तव अनेक प्रकारोंकर्के धनदेताहै ४६ श्रौरजिसके जन्मसमयमेंवृहस्पतिवुधकर्के देख्याहुया दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो निर्द्धनता कर्ताहे ॥ श्रौर चंद्रमाकर्के देख्या हुया दुवसंपूर्णधनको हत कर्ताहे ४७

और दूसरे स्थानमें स्थित क्षीणचंद्रमा वुधकर्केदेख्या हुया धननष्ट कर्ताहै और पूर्वसंपादित धनका नाश औरआगें धनकी उत्पत्तिकों रोकताहै ४८ और जिसके जन्मकालमें दूसरे स्थानमेंस्थितशुक्र औसूर्यचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे तवधनाहिंदेताहै औरशुभ ग्रहकी राशिमें स्थित शुक्र औरशुभग्रहकर्केदेख्या होवे तव सर्वदाकाल धन देताहै ४९ अवधनभावके स्वामीका द्वादशभावमें फलकहतेहैं जिसके जन्मकालमें उच्चराशिगतलग्नमें स्थितहोवेतिसकों लक्ष्मी प्राप्त होतीहै और चतुर्थभावमें उच्चराशिगतग्रह स्थितहोवे तवधनलाभकोंप्राप्तहोताहै और तैसेंहि सप्तम भावमेंउच्चराशिगत ग्रहस्थितहोवे तवबी धनलाभकोंदेताहै औरदशम भावमेंउच्चराशिगतग्रह होवे तव राज्यलक्ष्मीकों प्राप्त कर्ताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें दूसरे भावका स्वमी लग्नमें स्थित होवे सो वडे उद्यम वाला और श्रेष्ठ

चंद्रोपिधनस्थानेक्षीणोवुधवीक्षितःकुरुते ॥ पूर्वार्जितार्थनाशंनिरोधमपिचान्य वित्तस्य ४८ शुक्रःकुटुंवभवनेसूर्येंदुनिरीक्षितोनधनदाता सौम्यगृहेशुभदृष्टः सएवधनदःसदाज्ञेयः ॥ ४९ ॥ अथधनभावेशस्यद्वादशभावफलंफलप्रदीपात् ॥ लग्नस्थतुंगगखगेप्रभवेच्चलक्ष्मीस्तूर्य्यस्थतुंगखचरैरपिवित्तलाभः ॥ जायास्थतुंगगखगेचतथैववित्तंकर्मस्थतुंगगखगेवहुराज्यसंपत् ॥ ५० ॥

द्रव्यपतिर्लग्नगतःकृपणंव्यवसायिनंसुकर्माणम् धनिनंश्रीपतिविदितंकरोति नरमतुलभोगयुतम् ५१ धनपोधनभवनस्थोधनवंतंधर्मकर्मनिरतंच लाभाधिकंसुलोभंकुरुतेपुरुषंसदादक्षम् ५२ सहजगतेतुधनेशेव्यवसायीकलिकरः कलाहीनः चौरश्चचलचित्तोभवतिनरोविनयरहितश्च ५३ तूर्यगतेद्रविणपतौ पितृलाभपरःसत्यदयायुक्तः दीर्घायुःक्रूरखगेपुनरंवामरणंविनिर्देश्यम् ५४

कर्म करणेवाला और धनी और लक्ष्मीवाल्योंमें प्रसिद्ध और वडेभोग भोग ने वालेकोंकर्त्ताहै ५१ और जिसके जन्ममें दूसरेका स्वामी दूसरे भावमें स्थित होवे सो धनवाला और धर्मकर्ममें रत होताहै और अधिकलाभकों कर्ताहै और श्रेष्टकर्ममें लोभी और चतुर होताहै ५२ और जिसके जन्ममें धनभावका स्वामी तीसरेस्थानमें स्थित होवे सो वडेश्रमकरणे वाला और लडाई करणेवाला और कलासें रहित और चोर और व्यभिचारी और नम्रतासें हीन होताहै ५३ और जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे सो पितासें लाभवाला और सत्यऔर दयाकर्के युक्त होताहै और वडी आयुषा वाला होताहै और क्रूरग्रहहोवें तव मातातिसकी मृत्युकों प्राप्त होतीहै ५४

॥ और जिसके जन्ममें धनभावका स्वामी पंचममें स्थित होवे सो बडेधनवालेपुत्रको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठकर्ममें प्रसिद्ध होताहै और कृपण और दुःखी होताहै ॥ ५५ ॥ और दूसरे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे तब धनसंग्रह करणेमें तत्पर और शत्रुयोंका नाश और पृथ्वी लाभको प्राप्तहोताहै और पापीग्रहहोवें तब धनहीनहोताहै ५६ और दूसरेका स्वामी सप्तममें स्थित होवे तब तिसकी स्त्री श्रेष्ठ भोगविलासवाली और धनसंग्रह करणेवालीहो तीहै और पापीग्रहहोवे तबवंध्याहोतीहै ५७ और अष्टम भावमें धनका स्वामीस्थित होवे तब पापंडी और आत्मघाती होताहै और दैवकके प्राप्त भोगकोंभोगताहै और दूसरेके हितमें रत होताहै ५८ और ध

कमलाविलासितनयंकर्मणिकष्टेतरेप्रसिद्धच कृपणंदुःखनिधानंतनयगतो धनपतिःकुरुते ॥ ५५ ॥ षष्ठगतोद्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परंरिपुघ्नंच भूलाभिनंचखचरेपापेधनवर्जितंपुरुषम् ५६ धनपेसप्तमगृहगेश्रेष्ठगर्विताविलासभोगवती धनसंग्रहणीभार्याक्रूरेखचरेभवतिवंध्या ५७ धनपेचाष्टमभवने अष्टकपालीचात्मघातकःपुरुषः उत्पन्नभोगशालीपरहितनिरतश्चदैवपरः ५८ धनपेधर्मगृहगेसौम्येदानप्रसिद्धभाग्भवति क्रूरेदरिद्रभिक्षुकविडंबवृत्तिस्तथा मनुजः ५९ दशमगृहगेधनपेनरेंद्रमान्योभवेन्नृपाल्लक्ष्मीः सौम्यगृहेचमातुः पितुश्चपरिपालकःपुरुषः ६० एकादशगःस्वपतिर्व्यवसायपरंश्रियापातिंस्यातम् ॥ लोकौघप्रतिपालनरतंकुरुतेनरंजातम् ६१ द्वादशगेद्रव्यपतावष्टकपालीविदेशऋद्धिश्च दुष्करकर्माभिक्षुकःक्रूरेसौम्येचसद्ग्रामी ६२ इतिधनभावः २

र्मका स्वामी शुभग्रहनवमस्थानमें स्थितहोवे तब दानकरणे वालाप्रसिद्ध होताहै और क्रूर ग्रह होवै तब दरिद्री भिक्षामागनेवाला और विडंवी होताहै ५९ और दूसरे भावका स्वामी दशमस्थानमें स्थित होवे तब राजमान और राजलक्ष्मीको प्राप्त होताहै और शुभग्रहहोवेतव मातापिताके पालनेवालाहोताहै६० और एकादशस्थानमें दूसरे भावकास्वामीस्थितहोवे तबउद्यमकर्के परमलक्ष्मीको प्राप्त होताहै और लोकोंके समूहको पालनेमें तत्पर होताहै ६१ और दूसरेभावकास्वामी बाहरमेंस्थानमें स्थित होवे तब पाषंडीयेक्रूरहोवे तब विदेश वासी और विदेशमेंभाग्योवाला और खोटे कर्म कर्ताहै और शुभग्रहहोवे तबश्रेष्ठ ग्रामों वाला होताहै ६२ इतिद्वितीयभावः

अव तीसरे भावका विचार कहतेहैं तिसमें ज्येष्ट कनिष्ट भाई और स्थिति और पराक्रम और, ह
ठ और कठ और स्वर और कर्ण और श्रेष्ट भूषण और वस्त्र और धैर्य्य और वल और मोंढे औ
रफल मूल भक्षण इन्होंका विचार क्रमकर्के तीसरे भावमें कहाहै १ और कहतेहैं तीसरेदूसरे नवमे
जाहरमेंसत्तमस्थानोंकेस्वामियोंकीदशामें भ्राताका लाभहोताहै २ और तीसरे भावका स्वामी जिसरा
शिमें स्थित होवे तिसभावमें स्थित योग्रहहै तिसके मध्यमें योवली ग्रहहै तिसकी दशा भ्राताकी वृ
द्धि करताहै ३ और जिसके जन्मकालमेंमगल वलहीन होवे तव भ्रातावडी आयुषावाले होतेहैं औ
रलग्नसें लेकर्के जिसभावका कारक बलीहोवे सो मनुष्य स्वामी होताहै ४ और तीसरे भावकास्वा
मी और मगल दोनों अष्टम स्थित होवें तव भ्राताका क्षयकर्तेहैं और पापी-ग्रहकी राशि में अथ

अथसहजभावविचारः तत्रकिंचिंतनीयामित्युक्तम् ज्येष्ठानुजस्थितिपराक्रमसा
हसानिकठस्वरश्रुतिवराभरणांशुकानि धैर्य्यंचवीर्य्यबलमूलफलाशनानिवक्ष्ये
तृतीयभवनात्क्रमशोखिलानि १भ्रातृस्थानद्वितीयंचनवमेकादशसप्तमम् तत्त
दीशदशायांचभ्रातृलाभोभवेन्नृणाम् २भ्रातृस्थानेशतद्राशितद्भावस्थद्युचारीणाम्
मध्येबलसमेतस्यदशासोदरवृद्धिदा ३ भौमोवलविहीनश्चेद्दीर्घायुस्सोदरोभवेत्
विलग्नतोबलीयस्यकारकःसप्रभु स्मृतः ४सोदरेशकुजौनाशगतौचेत्सोदरक्षयः
पापर्क्षगौसपापौवाभ्रातृनुत्पाद्यनाशदौ ५अतिक्रूरसमायुक्तेभावेवाकारकेपिवा
तद्भावनायकेवापिवाल्येसोदरनाशनम् ६ बलहीनवशादेवंसोदरक्षयचिंतनम्
भ्रातृस्थानेशुभैर्युक्तेशोभनग्रहवीक्षितेभावनाथेबलाढ्येतुभ्रातृलाभमुदीरयेत
भ्रातृपेकारकेवापिशुभयोगनिरीक्षिते भावेवाबलसंपूर्णेभ्रातृणांवृद्धिर्भवेत् ८
केंद्रत्रिकोणगेवापिस्वोच्चमित्रस्ववर्गके नाथेवाकारकेवापिभ्रातृलाभमुदीरयेत् ९

वा पापग्रहकरके युक्तहोवे तव भ्राताउत्पन्न होयकर्के मृत्युकों प्राप्त होताहै ५ और जिसकेजन्मका
लमें तीसराभाव और तीसरे भावका कारक भौम और तीसरेका स्वामी अतिक्रूरग्रहकर्के युक्त होवे
तव वाल्यावस्थामें भ्राताका नाश होताहै ६ और तीसरे भावका स्वामी हीनवलहोवे तवभ्राताका
नाश कर्ताहै और तीसरे स्थानमें शुभग्रह युक्त होवे और शुभग्रहकर्के देखे होवें और तीसरे भावका
स्वामी बली होवे तव भ्राताकालाभ कर्ताहै ७ और तीसरेका स्वामी और कारक शुभग्रहकर्के युक्त
दृष्टहोवे और तीसरा भाव वली होवे तव भाईयोंकी वृद्धिहोतीहै ८ और केंद्र १ । ४ ।७ ।१० में
औरत्रिकोण ९।५ स्थानमें अपनेउच्च और मित्रस्ववर्गमें स्थिततीसरे भावका स्वामीअथवा कारक
स्थित होवे तव भ्राताकालाभकहे ९

और तीसरा स्थान शुभग्रहोंकर्केयुक्तहोवे तबभाईयोंका चिर कालआयुः होताहै और पापग्रहोंकर्के युक्त दृष्ट होवे तब भाईयोंकानाशहोताहै और तीसरेस्थानमें सूर्य पापीग्रहकर्के देख्याहोवे तब ज्येष्ठभ्राताकों हत कर्ताहैऔर शनि पापग्रहकर्केदेख्याहुवा तीसरे भावमें स्थितहोवे तबछोटे भाईकों हत कर्ताहै और मंगल तीसरे भावमेंपापदृष्टहोवे तबज्येष्ठ कनिष्ठ संपूर्णोंकोंहत कर्ताहै १० और जिसकेजन्मसमयमेंतीसरेभावसेंकेंद्र१।४।७।१० त्रिकोण १।५ स्थानमेंपापीग्रहस्थितहोवेतबभ्राता कानाशहोताहै और शुभग्रहस्थितहोवेतबभ्राताकोंवृद्धिहोतीहै शुभाशुभग्रहहोवेंतबमिश्रफलकहतेहैं ११ और तृतीयभावकेस्वामीसाथचंद्रमादुः ६।८।१२ स्थानमेंस्थितहोवेतबजातकमाताकेविनादूसरीकास्त नपानकर्त्ताहै अर्थात्माताम्रृतहोतीहै जिसकेजन्मसमयमेंतीसरे और चतुर्थभावकेस्वामीदोनों मिलकर केतीसरे स्थानमें स्थितहोवें तब भ्राताकी वृद्धिनाहीं होतीहै १२ और तीसरे और चतुर्थ भावके स्वा

भ्रातृस्थानेयदिशुभयुतेसोदराणांचिरायुःपापाक्रांतेसहजभवनेपापदृष्टेविनाशंज्ये ष्ठंहंतिद्युमणिरनुजस्थानगःपापदृष्टः सौरिस्तस्यानुजमवनिजोहंतिसर्वान्कनिष्ठान् १० केंद्रत्रिकोणेयदिपापखेटेतृतीयभावादनुजस्यनाशम् शुभोपयातेसहजस्यवृद्धिं शुभाशुभंमिश्रफलंवदंति ११ दुःस्थेचंद्रेसोदरस्वामियुक्तेनातस्यान्यस्तन्यपा नंवदंति मातृभ्रातृस्थानपौबंधुयातौनास्तिभ्रातृस्थानवृद्धिर्नराणाम् १२ भौमा न्वितौसोदरदौभवेतामन्यैःसमेतौयदिनानुजःस्यात् सौरिस्तृतीयेनुजनाशक र्त्ताविधुंतुदःसोदरवृद्धिकृत्स्यात् १३ भ्रातृस्थानपतौतुपुंभवनगेतस्यानुजोजाय ते युग्मर्क्षेयदिभार्गवेनशशिनायुक्तेथवावीक्षिते सौम्यर्क्षेशुभखेचरेक्षितयुतेकेंद्र त्रिकोणस्थिते पश्चाज्जातसहोदरश्चिरसुखीदीर्घायुरारोग्यभाक् १४ सहोदर स्थानपतौतनुस्थेसलग्नपेसोदरनायकेवा ततोभयंगर्भमनंतरंस्यात्तृतीयराशौस चतौतयैव १५

मीमंगल कर्के युक्त होवें तब भ्राताकी वृद्धिहोतीहै और अन्यग्रहकर्केयुक्तहोवेंतबभाईनहिंहोतेहैं और तीसरेस्थानमेंशनिभ्राताकानाशकर्त्ताहै और राहुभ्राताकीवृद्धिकर्त्ताहै १३ और जिसकेजन्मकालमेंती सरेभावकास्वामीपुरुषग्रहकीसूर्यभौमगुरुकीराशिमेंहोवें तबतिसकेभाईहोतेहैं और युग्मराशिमेंशुक्रचं द्रमाकर्केयुक्तदृष्टहोवेंऔरशुभग्रहकीराशिमेंशुभग्रहकर्केदृष्टयुक्तकेंद्र१।४।७।१० त्रिकोण१।५स्थानमेंस्थितहो वेतबतिसकेछोटेभाईचिरकालजीनेवाले और सुखी और आरोग्यताकोंप्राप्तहोतेहैं १४ और जिसकेज न्मकालमेंतीसरेभावकास्वामीलग्नमेंस्थितहोवेऔर अथवालग्नेशकर्केयुक्तहोवेतबदोनोंकागर्भमेंअंतरनाहिं होताहै अर्थात्दोनोंएकगर्भमें एकजन्मतेहैं और तैसेंहितीसरेभावमेंलग्नेश औरतृतीयेशदोनोंस्थितहो वेंतबयमलजन्मेभाईहोतेहैं १५

॥ और जिसके जन्मकालमें एकादशद्वादशस्थानमें जितने ग्रहस्थितहोवें उतने संख्या कर्के तिसके बडेभाईहोतेहैं ॥ और लग्नसेंदूसरे और तीसरेस्थानमेंजितनेग्रहस्थितहोवें उतनेसंख्या कर्केछोटेभाईहोतेहैं १६ और जिसकेजन्मकालमें तृतीयभावकास्वामी और कारक और तीसरेभाव कोंदेखनेवालाऔर तीसरेभावमेंयुक्तइन्होंमेंयो ग्रहबलीहोवे तिसकर्केयुक्तजितनेग्रहहोवें उतनीसं ख्याक केभाइयोंकोंप्राप्तहोताहै और इह चारग्रह नीचराशिमें और मूढताकों और शत्रुकेक्षत्रमें स्थितहोवेंतव भाइयोंकोंहतकर्तेहें और सोचारग्रह बलीहोवें तव संपूर्णभाइयोंकोंवडीआयुषावाले कर्तेहें १७ और जिसकेजन्ममें तीसरे भावका स्वामी और कारककेंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ त्रिकोण ५ । ९ स्थानमें स्थितहोवेंऔर उच्च मित्रस्ववर्गमें स्थितहोवेंतवभ्राताकालाभहोताहै १८ ॥

लाभावसानभवनोपगतैर्ग्रहेंद्रैःसंख्यास्तदग्रजजनाःसहजाभवंतिलग्नात्तृतीयध नयातवियच्चरेंद्रैः संख्याजनाःस्युरनुजाःकथयंतितज्ज्ञाः१६ भ्रातृस्थानपकार कंक्षितयुतावीर्याधिकायद्यदातद्युक्तग्रहसंख्ययानुजजनंजातःसमेतिध्रुवम्चत्वारो यदिनीचमूढरिपुगानिघ्नंतिजातानुजान् तेकुर्वतिचिरायुरिष्टबलिनःसर्वानुजानांग्र हाः १७ केंद्रत्रिकोणगेवापिस्वोच्चमित्रस्ववर्गकेनाथेवाकारकेवापिभ्रातृलाभमुदी· रयेत् १८ सौम्यग्रहास्थितेवापिसौम्यानामंशकेयदि नाथेवाकारकेवापिभावेसो दरवर्द्धनम् १९ भ्रातृभावेस्वतुंगेवास्वर्क्षेमूलत्रिकोणगे बलाढ्येभावनाथेस्या त्सोदरोत्पत्तिमादिशेत् २० लग्ननाथस्तुसोत्थेशमित्रेचेन्मित्रताभवेत् ॥ भ्राताशत्रुर्भवेच्छत्रुःशत्रुश्चैववियुज्यते २१ स्त्रीहोरयावायुवतिग्रहेणयुक्तेयदि भ्रातृगृहेविलग्नात् ॥ सहोदरीलाभमुपैतिजातःसहोदरंतत्परतोन्यथाचेत् २२

और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी और कारक शुभग्रहकी राशिमें अथवा अंशमें स्थित होवे तव भाईयोंकी वृद्धि होतीहै ॥ १९ ॥ और जिसके जन्मकालमें तृतीयभावका स्वामी तीसरे भावमें अपने उच्च वा स्वक्षेत्र वा मूलत्रिकोण गृहमें स्थित होवे तव भ्राताकी उत्पत्ति कहे ॥ २० ॥ और जिसके जन्मकालमें लग्नेश और तृतीयेश ग्रह आपसमें मित्र होवें तव भाईयोंमें मित्रता रहतीहै और शत्रुग्रहहोवें तव भाईयोंमें शत्रुभाव रहिताहै ॥ २१ ॥ और जिसके जन्म लग्नसें तीसरे घरमें स्त्रीग्रहकी होरा होवे और स्त्रीग्रहकर्के युक्त होवे तव अपने जन्मके पीछे भगिनीके लाभ. कों प्राप्त होताहै और तीसरे भावमें पुरुषग्रहकी होरा और पुरुष ग्रह कर्के युक्त होवे तव भ्राताके लाभ कों प्राप्त होताहै २२

॥ और तीसरे भावसें लेकर्के सप्तम यो भावहै तिस भावसे अर्थाज्जन्मलग्नमे नवमभवसेंभ्राताकी स्त्रीका फल कहे और लग्नका स्वामी और मंगल और तीसरे भावका स्वामी इन्हींतीनोंग्रहों के वलावलसें भ्राताकों शुभा शुभफलका विचार करणा कहाहै ॥ २३ ॥ और जिसके जन्मकालमें लग्नेश और तीसरे भावका स्वामी आपसमें मित्रहोवे और वलीहोयकर्के लग्नमें वा तीसरे भावमें स्थित होवें तव भ्राता एकत्रमिलेरहितेहैं आपसमें जुदा नाहिं होतेहैं और लग्नेश और तृतीयेश वलीहोयकर्के एकराशिमें स्थित होवें तव भ्राताआपसमें मित्रताकों प्राप्त होतेहैं ॥ २४ ॥ और लग्नेश और तृतीयेश ग्रह निर्वल और आपसमें शत्रु होवें तव भ्राता आपसमे मरणोंसें नाशकों और धनाशकों प्राप्त होतेहैं अथवा तीसरे भावमें

तृतीयात्सप्तमर्क्षेणभ्रातृभार्याफलंवदेत् ॥ लग्नेशकुजसोत्थेशाभ्रात्रेनिष्टशुभप्रदाः २३ अन्योन्यमिष्टखचरौयदितौवलाढ्यौलग्नेथवासहजभेनविभागमाहुः अन्योन्यमिष्टविपुलंतुसहोदराणांलग्नाधिपेनसहितेयदिसोदरेशे २४ लग्नेशानुजनायकौविवलिनावन्योन्यशत्रुग्रहौ दुश्चिक्यस्थितकारकौचयदिवादुःस्थानगौदुर्वलौ तत्पाकेसहजप्रमादकलहंतन्नाशमर्थक्षयम् तत्खेटोपगकोपहेतुकलहस्नेहादिसर्ववदेत् ॥ २५ ॥ गुरुदृष्टेनुजेशुक्रेभ्रातृरक्षणतत्परः रविदृष्टेवुधेसोत्थेसुहृन्नाशकरोभवेत् २६ भ्रातृस्थतन्नायककारकाणांनीचारिदुःस्थानसमन्वितानाम् ॥ भुक्तौदशायांधनसत्वनाशंपराजयभ्रातृविनाशमाहुः २७

स्थित यो ग्रह और तीसरेका कारक ग्रह निर्वल और शत्रुहोवें और दु. स्थान ॥ ६ ॥ ८ ॥ १२ ॥ मे स्थित होवें तिनकी दशामें भ्रातृनाशादि फल होताहै तिन्हों ग्रहोंकी जैसी प्रकृति होवे तैसे कोपकर्के कलहादि संपूर्ण फल कहे ॥ २५ ॥ और तीसरे भावमें शुक्र वृहस्पति कर्के देख्या होवे तव भ्राताकी रक्षा कर्ताहे और तीसरे भावमें वुध सूर्यकर्के देख्या होवे तव भ्राताका नाश कर्ताहे । २६ । और तीसरे भावमें स्थित ग्रह और कारक दुष्ट । ६ । ८ । १२ ॥ स्थानमें स्थित होवें और नीच शत्रुकी राशिमें होवें तिनकी दशातर्दशामें धननाश और पराजय और भ्राताका नाश कहतेहैं २७

अब भ्राताकेमृत्युकासमयकहतेहे-जन्मकालमें स्फुटमंगलसें राहुकोंघटायदेवे शेषजोराश्यादिहै तिस राशिमें त्रिकोण १।५ स्थानमें जब गोचरमार्गकर्के बृहस्पति स्थित होवेतब छोटेभाईका नाश होताहै और स्पष्टराहुसें मंगलकों घटायदेवे तिसराशिमें स्थित योनवांश तिरुमें जब बृहस्पतिआवे तब ज्येष्ठभ्राताका नाश होताहै और जन्मलग्न और आधानकालके लग्नकेस्वामी जिसराशिमें स्पष्ट स्थित होवें तिस राशिमें गोचरकर्के बृहस्पतिस्थित होवे तब छोटेभाई जन्मतेहे २८ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी शनि चन्द्रमाकर्के युक्त होवे सो शूरवीर और मनके धैर्य वालाहोताहै और शनिमंगलकर्केयुक्तहोवेतब दुष्टऔर जड और क्रोधवालाहोताहै और बुधकर्केयुक्त होवे तब सतोगुणी बुद्धिवाला होताहै २९ और बृहस्पतिकर्के युक्त होवे तब बडेगुणोंवाला पंडित

भूसूनुस्फुटतोविशोध्यफणिनंशेषत्रिकोणेगुरौजातस्यानुजनाशनंक्षितिसुतंराहु स्फुटाच्छोधयेत् ॥ तद्राशिस्थनवांशकेमरगुरौतज्ज्येष्ठनाशंवदेत् जन्माधान पकर्मपेस्फुटगृहेजीवेनुजोजायते २८ शौर्याधिपेभानुसुतेत्रवीरश्चंद्रान्वितेमा नसधैर्यजातः ॥ दुष्टोजडोभौमयुतेप्रकोपीसौम्यान्वितेसात्विकबुद्धियुक्तः २९ जीवान्वितेधीरगुणाभिरामःसमस्तशास्त्रार्थविशारदःस्यात् ॥ कामातुरःशुक्र समन्वितेतुतन्मूलकोपात्कलहप्रवीणः ३० जडोभवेद्वासरनाथसूनुयुक्तेतिभी तःफणिसंयुतेस्यात् ॥ वह्निर्गदोहृतजाड्ययुक्तःकेत्वन्वितेमांदियुतेतथैव ३१ लग्नेगुरौविक्रमनाथयुक्तेचतुष्पदानांप्रवदंतिभीतिम् ॥ गवांभयंवाजलराशि लग्नेजलप्रमादंसमुपैतिजातः ३२

होताहै और संपूर्णशास्त्रार्थोंके जानने वाला होताहै और शुक्रकर्के युक्त होवे तब कामातुर होता है और कामकर्के उत्पन्नजोक्रोध तिसरुकें लडाई करणेकों समर्थहोताहै ३० और तीसरे भावका स्वामी शनिकर्के युक्त होवे तब जड होताहै और राहुकर्के युक्त होवे तब भयकर्के सहित होताहै और केतुकर्के और गुलिक कर्के तीसरे भावका स्वामी होवे तब गेंगी और जड होताहै ३१ और तीसरे भावके स्वामीकर्के युक्त लग्नमें बृहस्पति स्थित होवे तब पशुयोंका भय होताहै और लग्नमें जलचर राशि होवे तब जलसें भय होताहै और जलदोषसें मरती हो ताहै ३२

और बलवान् ग्रहकर्के मंगलयुक्त होवे तब सत्व और बल और गायनके सुखकों प्राप्त होताहै और मंगल और तीसरे भावकी राशिका स्वामी और तीसरे भावमें स्थित ग्रह इहे तीनों बली होवें तब युद्धमें शूरवीर होताहै ३३ और जिन्हों तीनोंग्रहोंके दशांतर्दशा कालमें मूलफलादि पदार्थोंसे सुख होताहै औरकर्णोमें भूषणादि औरश्रेष्टकथादि औरसंपदा औरभ्रातृपुत्रादियोंका लाभ होताहै ३४ और जिसके जन्मकाल में तीसरे भावका स्वामी शुभग्रहके वर्गमें और बलयुक्तहोवे सो सत्वगुणी होताहै और नीचराशिमें और अस्तहोवे और शत्रुकीराशिमें और पापग्रहकीराशिमें और पापी ग्रहकर्के युक्तहोवे तब हठी गुणी होताहै ३५ और जिसके जन्मकालमें तीसरे घरका स्वामी और राहुकीराशिका स्वामी दोनोंराहुकर्केयुक्त लग्नमेंस्थितहोवें तब सर्पका भय होताहै और

कुजेनयुक्तेखचरेबालिष्ठेसत्त्वंबलंगानसुखंसमेति ॥ कुजानुजस्थानजराशिनाथास्त्रयोबलिष्ठारणरंगशूरः ३३ तेषांत्रयाणामपहारकालेपाकेथवामूलफलादिसौख्यम् ॥ श्रोत्रद्वयोर्भूषणसत्कथादिसपत्करभ्रातृसुतादिलाभम् ३४ सात्विकोभवतिसोदराधिपेसौम्यवर्गसहितेबलान्विते । ॥ नीचमूढरिपुपापराशिगेपापखेचरयुतेतुसाहसी ३५ शौर्याधिपेराहुसमेतराशिनाथान्वितेराहुयुतेविलग्ने ॥ सर्पाद्भयविक्रमराशिनाथेबुधेनयुक्तेगलरोगभाक्स्यात् ३६ पापेतृतीयेगलरोगमत्रवदंतिमांद्यादियुतेविशेषात् भौमान्वितेभानुसुतेबलाढ्येतृतीयराशौयदिकंठरोगम् ३७ विक्रमेशगुरुलग्नगतौगोभीतिसूचकौ ॥ राहुणावाफणिक्रांतराशिपेनयुतौयदि ३८ सबुधोविक्रमपतिर्गलरोगकरोभवेत् ॥ सोत्थेरिनीचगेपापेसोत्थाभावोविषादिभाक् ३९

तीसरेका स्वामी बुधकर्के युक्त होवे तब गलरोगवालाहोताहै ३६ और तीसरे भावमें पापी ग्रह होवे तब गलरोग होताहै और गुलिकादि ग्रहोंकर्के युक्त होवे तब विशेषसें गलरोगहोताहै औरमंगल कर्के युक्त शनि बलीहोयकर्के तीसरे भावमेंस्थित होवे तब गलरोगकर्त्ताहै ३७ और तीसरेभावका स्वामी और बृहस्पति दोनों लग्नमें स्थितहोवें तब गौसें भयदेतेहै अथवा राहुकर्के अथवाराहुकी राशिके स्वामीकर्केयुक्त होवे तब गोका भय होताहै ३८ और बुधकर्के युक्त तीसरे घरका स्वामी होवे तब गलम रोगकर्त्ताहै और तीसरेका स्वामी पापी ग्रह नीचशत्रुकी राशिमें स्थितहोवे तब भ्राताका अभाव होताहै और विषादिभक्षणकर्त्ताहै ३९

और जिसके जन्मकालमें बुध और बृहस्पति करकेयुक्त दृष्ट बलवान् तीसराभाव होवे और तीसरे भावसे केंद्रस्थानोंमें बृहस्पति वा बुध स्थित होवे तब तिसका कंठस्वर बहुत सुंदर होताहै ४० ॥ और तीसरा भाव शुभग्रहकरकेयुत और शुभग्रहकरके देख्या होवे और तीसरेका स्वामी शुभग्रह करके युत होवे तब कर्णोंमें श्रेष्ठ भूषण कहे ४१ और शुक्र तीसरे भावमें होवे तब मोतीयोंवाले भूषण और बृहस्पति होवे तब तुलसीके भूषण कहतेहैं और सूर्य होवे तब लालमणी और नील मणीयोंकरके युक्त और चंद्रमा बली होवे तब अनेकभूषण होतेहैं ४२ और तीसरे स्थान बुध होवे तब श्यामरंगके भूषण होतेहैं और तीसरे भावमें मेषवृश्चिकराशि होवे तब विचित्र भूषण कहे और तीसरेका स्वामी उच्चके वर्गमें स्थित होवे तब दिव्यभूषणोंको प्राप्त होताहै ॥ ४३ ॥

बुधेनजीवेनयुतेक्षितेवातृतीयराशौबलसंयुतेच ॥ तत्केंद्रगेमंत्रिणिवाधनेवाकंठस्वरंचारुतरसमेति ४० तृतीयेसौम्यसंयुक्तेसौम्यखेचरवीक्षिते तदीशेशुभसंयुक्तेकर्णयोर्भूषणंवदेत् ४१ शुक्रेतृतीयेयदिमौक्तिकंतुजीवेतुलस्याभरणंवदंति ॥ सरक्तमानीलमयादिनेशेचंद्रेवहुत्वाभरणंवलाढ्ये ४२ सौम्येश्यामंकुजक्षेत्रेविचित्राभरणंवदेत् ॥ तत्पतौस्वोच्चवर्गस्थेदिव्यमाभरणंलभेत् ४३ मानस्थेतुरगेथवानुजपतौसौम्यर्क्षगेतद्युतेदिव्यंवस्त्रमपूर्वमेतिसहजेसौम्येसुवस्त्रंलभेत् वीर्याढ्यौवहुवस्त्रभूषणकरौशुक्रानुजस्थानपौस्यातांधर्मकथारसश्रवणदौजीवज्ञयुक्तेक्षितौ ४४ धैर्यान्वितेविक्रमेशेसौम्यग्रहनवांशके शुभेक्षितेशुभयुतेवैशेषिकसमन्विते ४५

और जिसके जन्मकालमें दशमस्थानमें अथवा धनु राशिमें स्थित तीसरेभावका स्वामी होवे अथवा शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे अथवा शुभग्रहकरके युक्त होवे तब दिव्य अपूर्व वस्त्रोंको प्राप्त होताहै और तीसरेस्थानमें शुभग्रह होवे तब श्रेष्ठ वस्त्रोंको प्राप्त होताहै और शुक्र और तीसरेभावका स्वामी दोनों बली होवें तब बहुतवस्त्रभूषणकरतेहैं और बृहस्पति और बुधकरकेयुक्त और दृष्ट होवे तब धर्मकथाको श्रवण करातेहैं ४४ और जिसके जन्मकालमें तीसरेस्थानमें तीसरे भावका स्वामी स्थित होवे और शुभग्रहके नवांशमें होवे और शुभग्रहकरके युक्त दृष्ट होवे और वैशेषिकांशमें होवे तब श्रेष्ठ धर्मकथाके श्रवण करणेवाला होताहै ४५

॥ और तीसरे भावका स्वामी पापी ग्रह करके युक्त दृष्ट होवे और दुःस्थान ॥ ६ । ८ । ॥ १२ ॥ में स्थित होवे तब धैर्य नाशको प्राप्त होताहै ॥ और केंद्रत्रिकोण में शुभग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तब धैर्यवालाहोताहै ॥ ४६ ॥ औ तीसरे भावकास्वामी पाप ग्रहकीराशिमे मंगलकरके युक्त होवे तब बलकानाश कताहै और शुक्रकरकेयुक्त बलीहोयकरके केंद्र त्रिकोणस्थाना मे स्थित होवे तब बली और भोगी और गुणाकरके प्रसिद्ध होताहै ४७ और कहतेहैं शुक्र और चद्रमाके विना और शुभग्रह लग्नसे तीसरे स्थानमे स्थित होवें और शुभग्रहकी राशीमें और नवा शमें स्थित होवें सो सुख पूर्वक भोजनको प्राप्त होताहै ४८ और जिसके जन्मकालमें मगल बृह

धैर्याधिपेपापयुतेक्षितेवादुःस्थानगेधैर्यविनाशमेति ॥ केंद्रत्रिकोणेशुभखेटयुक्तेशुभेक्षितेवायदिधैर्यशाली ॥ ४६ ॥ वीर्याधिपेभूमिसुतेनयुक्ते पापर्क्षगेवीर्यविनाशहेतु ॥ केंद्रत्रिकोणेससितेबलाढ्येवीर्याधिकोभोगगुणप्रकाशः ॥ ४७ ॥ शुक्रनिशाकरंत्यक्त्वालग्नात्सोदरभेशुभे शुभराश्यंशगेजात समेतिसुखभोजनं ४८ जीवस्यराशिनवभागदृगाणसंस्थेवीर्याधिकेयदिसुरार्चितवीक्षितेवा तत्केंद्रकोणग्रहगेवनिजबलाढ्येजातस्तुकंदफलमूलरसप्रिय स्यात् ४९ सोदरारातिगःशुक्रःशोकरोगभयप्रदः तत्रैव शुभकारीस्यात्पुरतोयदिभास्करात् ५० ॥ नवांशाभ्रातृभावेस्युर्यावंतोव्जकुजेक्षिता तत्संख्या सहजाज्ञेयादृष्टाअन्यैश्चयोषित ५१ ॥

स्पतिकी राशिमें और नवांशमें और द्रेष्काणमें स्थित होवे और बलकरके युक्तहोवें और यद बृहस्पतिकरके देख्याहोवे और केंद्र १ ।४ ।७ ।१० और त्रिकोण ९ । ५ स्थानम स्थित होवे तब मनुष्य कदमूलफलाके रसकी प्रीतिवाला हाताहै ४९ और जिसके जन्मलग्नसे तीसरे और छठे स्थान मे शुक्रहोवे तब शोक आर रोग और भयकादेताहै औ.जब सूर्यकी राशिके आगे स्थितहोवे तब तीसरा छठावी शुभ होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें तीसरे भावमे जितने नवांशे स्थितहोंवे और चंद्र मगल करके देखे होवें उतनी सख्या करके तिसके भाई होतेहैं और चद्र मंगलके विना औरग्रहदेखतेहोवेंतब तृतीय भाव स्थित नवांशकी सख्याकरकेतिसकिया भगिनीयाहोतीयांहैं ५१

अव तीसरे भावके स्वामीका वारां भावमें फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें तीसरेभावका स्वामी लग्नमें स्थित होताहैसो वाग्विवाद करणेवाला और लंपट और अपने जनोंमें भेद करदेनें वाला और सेवा करणे वाला और खोटेमित्रोंवाला और क्रूर वोलने वाला होताहै १ और जिसके जन्ममें दूसरे भावमें तीसरे भावका स्वामी स्थितहोवे तव भिक्षाकेमांगनेवाला और धनहीन और थो ड़ाकाल जीने वाला और वंधुयोंसें विरोध करणेवाला क्रूर ग्रह कर्के होताहै और शुभग्रह तीसरेका स्वामी दूसरेमें स्थित होवे तव लक्ष्मीवान् होताहै २ और तीसरेका स्वामी तीसरे भावमें स्थित होवे तव तुल्य पराक्रम वाला और श्रेष्टमित्रोंवाला और देवता और गुरुकों पूजने वाला और राजासें ला भवाला होताहै ३ और तीसरेका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तव पिताके भाईयोंकों सुख और ऐश्वर्य होताहै और माताके साथ वैर कर्ताहै और पिताके धनकों भक्षण कर्ताहै ४ और ती

अथसहजस्वामिद्वादशभावफलानि सहजपतौलग्नगतेवाग्वादीलंपटःस्वजनभेदीच सेवापरःकुमित्रःक्रूररवोभवतिपुरुषश्च १ ॥ धनगृहगेसहजेशेभिक्षुर्विधनोल्पजीवितःपुरुषः बंधुविरोधीक्रूरेसौम्येपुनरीश्वरःखचरे ॥ २ ॥ सहजगतःसहजपतिःसमसत्वंसुसुहृदंशुभस्वजनम् देवगुरुपूजनरतंनृपलाभपरंनरंकुरुते ॥ ३ ॥ भ्रातृपतौतुर्यगतेपितृसोदरसुखकृदुदयकृत्तेषाम् मात्रासहवैरकरःपितृवित्तभक्षकःपुरुषः ४ दुश्चिक्यपतौसुतगेसुबांधवैःसुतसहोदरैःपाल्यः दीर्घायुर्भवतिनरःपरोपकारैकनिरतमतिः ५ षष्ठगतेसहजपतौबंधुविरोधीनयनरोगीच भूलाभोभवतिभृशंकदाचिदपिरोगइवकलितः ६ सहजपतौसप्तमगेनरस्यभार्याभवेत्प्रवररूपा सौभाग्यवतीयुवतीक्रूरेदेवरगृहंयाति ७ भ्रातुःप्रभुरष्टमगःसहजंमृतसोदरंकुरुते क्रूरेवाहुव्यंगंजीवतियद्यष्टवर्षाणि ८

सरेका स्वामी पांचमें स्थानमें स्थित होवे तव श्रेष्ट वंधुयोंकर्के और पुत्र और भाईयोंके सुखकों प्राप्त होताहै और वडी आयुषावाला और परोपकारमें बुद्धिवाला होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे सो वधुयोंसें विरोध कर्ताहै और नेत्ररोगवाला होताहै और वारंवार पृथ्वीके लाभकों प्राप्त होताहै और कदाचित् रोगकर्के युक्त होताहै ६ और जिसके तीसरे भावका स्वामी सप्तमभावमें स्थित होवे तिसकी स्त्री श्रेष्टरूपवाली और सौभाग्ययुक्त होतीहै और क्रूरग्रहहोवे तव पतिकेछोटेभाईके घरमें वसतीहै ७ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी अष्टम भावमें स्थित होवे तिसके भ्राता मृत्युकों प्राप्त होतेहैं और जव क्रूरग्रह होवे तव तिसकों भुजामें व्यंग होताहै जवअष्टवर्षजीवे तव और शुभग्रहहोवे तववहुतदोषनहीं कर्ताहै ८

॥ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी नवमभावमें स्थित होवे और क्रूरग्रहहोवे तब बधुर्यो कर्के त्याज्य होताहै ॥ और शुभग्रहहोवे तब श्रेष्ट वधुर्योवाला और धर्मी और भ्राताका भक्त होताहै ९ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी दशम भावमें स्थित होवे सो राजाके मानवाला और माताका और बधुर्योका भक्त और बधुर्योमें श्रेष्ट होताहै १० और जिसकों तीसरे भावका स्वामी लाहरमें स्थानहोवे तब श्रेष्ट बधुर्योवाला और राजासें लाभवाला कर्ताहै और सबंधियोंमें सेवाके करणे वाला और भोगोंमें रत कर्ताहै ११ और जिसकों तीसरे भावका स्वामी बाहरमें स्थानमें स्थित होवे सो मित्रोंसें विरोध करणेवाला और अपनेभाईयों कों खेददेणे वाला होताहै और बंधुओंसेंदूर विदेशमेंवास करणेवाला होताहै १२ इति तृतीयभावः

धर्मगतेसहजंपतौक्रूरेबंधूज्झितस्तथासौम्येसद्बांधवश्चसुकृतीसोदरभक्तोभवतिमनुजः ९दुश्चिक्येशेदशमेनृपपूज्योमातृबंधुपरिभक्तःउत्तमबंधुर्बंधुपुविनिश्चिताजायतेमनुजः १० लाभस्थःसहजेशःसुबांधवंराजलाभिनंकुरुतेपुरुषंबंधुप्रसेवाविधायिनंभोगनिरतंच ११ व्ययगेदुश्चिकयेशेमित्रविरोधीस्वबंधुपरितापीदूरेवासितबंधुर्विदेशगामीनरोभवति १२ इतिसहजभावविचारः ॥ अथसुखभावविचारः ॥ तत्राकिंचिंतनीयमित्युक्तम् ॥ वदंतिविद्याजननीसुखानिसुगंधगोबंधुमनोगुणानि महीपयानक्षितिमंदिराणिचतुर्थभावप्रभवानितज्ज्ञाः १ विद्याराशौनिजपतियुतेसौम्ययुक्तेक्षितेवाजातोविद्याविनयचतुरश्चंद्रसूनौबलिष्ठेदुःस्थेपापद्युचरसहितेपापदृष्टेतदीशेविद्याहीनोभवतिमनुजःपापराशिस्थितेवा२

॥ अब चतुर्थभावका विचार कर्तेहे ॥ तिसमेंक्याक्या वस्तुकाचिंतन करणा सो कहतेहैं ॥ चतुर्थभावमें विद्याकासुख और माताका सुख सुख और सुगंध वस्तुका सुखासुख और गौओंका और भाईयोंका और मनका और गुणोंका और राजाका और हाथीघोडेपालकीस लेकरवाहनोंका सुखासुख और पृथ्वीका और मंदिरोंकासुखऔर दु खकाविचारचतुर्थ भावमें शास्त्रके जानने वाले कहतेहै १ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थभाव अपनें स्वामीकर्के युक्त दृष्ट होवे तब विद्या और नम्रता चतुराईकर्के युक्त होताहै और बुधबली होयकर्के ६।८।१२ स्थानमें स्थित और पापीग्रह कर्के युक्त होवे और तिसका स्वामी पापी ग्रहकर्के दृष्ट होवे और पापी की राशिमें होवे तब विद्या कर्केरहित होताहै २

॥ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी और बृहस्पति और बुध इह छठे तीसरे बाहरमें आठमें स्थानमें स्थित होवें तब विद्या और बुद्धि और विवेकसें हीन वर्तेहैं अ थवा नीचशत्रुकी राशिमें स्थित होवें तब विद्यादियों कर्के रहित होताहै और अपने उच्चमें और स्वक्षेत्रमें वा त्रिकोण १ । ५ । वा केंद्र । १ । । ४ । । ७ । ॥ १० ॥ स्थानोंमें स्थित होवें तब लक्ष्मी विद्याऔर नम्रतासेंले कर्के गुणोकर्कें युक्त और चतुर और महाराजका प्यारा होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें शुक्र अथवा चद्रमा बलीहोवे और शुभग्रहकर्केदेखेहोवेंऔरशुभग्रहके नवांश में स्थित होवें और केंद्रस्थानमें वा चतुर्थस्थानमें बलकर्के युक्तहोवे तब तिसकी माताकाआयुः चिर काल कहतेहैं ४ और चतुर्थका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे वा द्वादशस्थानमें स्थित होवे और

विद्यास्थानपजीवचंद्रतनयाः षट्त्रिव्ययायुस्थिताःविद्याबुद्धिविवेकहीनफ लदानीचारिगावायदि ॥ स्वोच्चस्वर्क्षगतास्त्रिकोणगृहगाःकेंद्रास्थितावायदि श्रीविद्याविनयादियुक्तिनिपुणोराजाधिराजप्रियः ३ शुक्रेबलिष्ठेयदिवाश शांकेसौम्येक्षितेशोभनभागयुक्तेचतुष्टयेमातृगृहेबलाढ्येमातुश्चिरायुःसमुदाहरंति ४ मातृस्थानाधिपेषष्ठेव्ययेवाबलवर्जिते ॥ लग्नेपापेपापदृष्टेमातृनाशंवदेद्बुधः ५ क्षीणेचंद्रेष्टमेषष्ठेव्ययेवापापसंयुते पातालेपापसयुक्तेमातृहानिर्नसंशयः ६ मातृस्थानगतेमंदेपापग्रहनिरीक्षिते ॥ रंध्रस्थानेरिनीचस्थेमातृनाशंविनिर्दि शेत् ७ भ्रातृपुत्रगतेपापेपातालेशेरिनीचगे ॥ चंद्रेपापसमायुक्तेमातृरोगं विनिर्दिशेत् ८षष्ठेश्वरेणसहितःसुखराशिनाथोधर्मस्थितोजनकमत्रविटकरोति

बलहीन होवे और लग्नमेंपापग्रह पापीकर्कें देखा होवे तब बुद्धिमान् तिसकी माताका नाश कह तेहैं ५ और क्षीण चंद्रमा अष्टम और छठे स्थानमें वा बाहरमें स्थानमें पापी ग्रहकर्कें युक्तहोवे और चतुर्थस्थानपापग्रहकर्कें युक्त होवे तब माताके मरणमें संशयनहींहै ६ और जिसके जन्ममें चतुर्थस्थानमें शनि स्थित होवें और पापीग्रहकर्कें देखा होवे और अष्टम स्थानमें शत्रु और नीचकी राशिमें स्थित होवे तब माताका नाश कहे ७ और जिसके तीसरे और पाचमें स्थानमें पापीग्रह स्थित होवे और चतुर्थका स्वामी शत्रु और नीच राशिमें स्थित होवे और चद्रमा पापग्रहकर्कें युक्त होवे तब माताको रोगयुक्तकहे ८ औरजिसकेजन्ममें छठेघरके स्वामीकर्कें संग चतुर्थघरका स्वामी युक्त होवे और नवमभावमेंस्थितहोवे तब तिसका पिताव्यभिचारी होताहै

। और नवमके स्वामी साथ चतुर्थघरका स्वामी युक्त होवे और चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब तिसका पिता व्यभिचारी होताहै ९ और छठे और चतुर्थ स्थानके स्वामी दशम भावमें स्थित होवें तब पिता व्यभिचारी होताहै और जिसके जन्मकालमें दशम और चतुर्थ और छठे स्थानके स्वामी एकराशिमें स्थित होवें तब तिसका पिता जारजातहोताहै १० और जिसके जन्म समयमें चंद्रमा वा सूर्य केंद्रस्थान । १ । ४ ॥ ७ । १० ॥ में पापीग्रहकर्के दृष्ट युक्त होवें अथवा क्रूर ग्रहचतुर्थ स्थानमें पापग्रहकर्के देख्या होवें सो मातृगामी होताहै ॥ ११ ॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमा वा शुक्र केंद्रस्थानमें स्थित होवें और दोनों पापग्रहकर्के देखे होवें और चतुर्थस्थानमें क्रूर ग्रह स्थित होवे तब मातृगामी अथवा गुरोंकीस्त्रीमें गमन करणे वाला होताहै १२ और जिसके जन्मसमयमें मंगल छठेघरके स्वामीके साथ और चंद्रमा चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब तिसकी माता

भाग्याधिपेनसहितोयदिमातृनाथःसौख्यस्थितोजनकमत्रविटंकरोति ॥ ९ ॥ षष्ठमातृपौपितृस्थानेपितुश्चव्यभिचारदौ ॥ पितृमातारिदेहेशैरेकस्थैः परजातकः ॥ १० ॥ पापेक्षितेपापयुतेशशांकेदिवाकरेवायदिकेंद्रराशौक्रूरेसु खेवायदिपापदृष्टेजातोनरःस्याद्यदिमातृगामी ११ चंद्रेभृगौवाकेंद्रस्थेपापदृ ष्टेथवाद्वयोः ॥ क्रूरेसुखेमातृगामीयदिवागुरुदारभाक् १२ सुखस्थेसारषष्ठ शेचंद्रेमातान्यमैथुनी ॥ व्यभिचारप्रदोमातुःसराहुर्दिननायकः १३ शी तांशौराहुकेतुभ्यांयुक्तेनीचेनसंगमः ॥ मंदयुक्तेनशूद्रेणवैश्येनबुधयोगतः १४ रवियुक्तेक्षत्रियेणमंत्रिभ्यांद्विजसंगमः ॥ एवंचंद्रःकुजारीशयुक्तस्तत्फलदोभ वेत् १५ चंद्रेनिष्टस्थानगःसानुजेशोजातस्यान्यस्तन्यपानंकरोति ॥ दुः स्थानस्थौमातृपित्रर्क्षनाथौपित्रोर्मृत्युर्लग्ननाथेबलाढ्ये १६

व्यभिचारिणी होतीहै और राहुकर्के युक्त जो चतुर्थ स्थानमें सूर्यहै सो माताको व्यभिचार दोषको देताहै १३ और चतुर्थभावमें चंद्रमा राहुकेतुकर्के युक्त होवे तब नीचकर्के संगम होताहै और शनि कर्के चंद्रमा युक्त होवे तब शूद्रकर्के और बुधकर्के चंद्रमा युक्त होवे तब वैश्यकर्के संगम होताहै १४ और चतुर्थ भावमें चंद्रमा सूर्यकर्के युक्त होवे तब क्षत्री कर्के और बृहस्पति शुक्रकर्के युक्त होवे तब ब्राह्मणकर्के संग होताहै और इसी प्रकारकर्के चंद्रमा मंगल और छठे भावके स्वामी कर्के युक्त होवें तब माता व्यभिचारणी होतीहै १५ और चंद्रमा ६ । ९ ॥ १२ स्थानमें तृतीय भावके स्वामीकर्के युक्त होवे तब दूसरी माता स्तनपान कराहै और ६।८। १२ स्थानमें ४ १० भावके स्वामी स्थित होवें और लग्नेश बली होवे तब माता पिता मृत्युको प्राप्तहोतेहैं ॥ १६

ौर जिसके जन्मकालमें पिताके कर्मस्थानका स्वामी अर्थात् सप्तमेश छठेआठमें वारहमें स्थानमें
स्थित होवे तब पितामाताकों अनिष्टफल कर्ताहै अथवा षोडशवर्षकके मातापितासें रहित होताहै
१७ और चतुर्थ और लग्नके स्वामी दोनों दशम और चतुर्थस्थानसें नवम और पंचममें स्थित हो
वें और तिसका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तव माता पिताकेसाथमृत्युकों प्राप्त होतीहै १८ और नि
सकों चतुर्थ और लग्न और दशम केस्वामी केंद्र १ ४ ७ १० कोण ९ ५ स्थानमें स्थित होवें ति
न्हके दशातदंशा कालमें माताकों मृत्यु कर्त्तेहें १९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा दोनों
मिलकर्के दशम और चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें और अथवा दशम चतुर्थके स्वामी कर्के युक्त होवें
और सूर्यके साथ संवधकर्त्ते होवें तव मातापिताकों मृत्यु कर्त्तेहें २० और यो ग्रह चतुर्थभावकास्वा
मी और चतुर्थका कारक तिनकर्के युक्त यो ग्रह और मातृ भाव ४ में स्थित यो ग्रह और मातृ ४

पितृकर्माधिपेदुःस्थेलग्नेशेवलसयुते ॥ पित्रोरनिष्टकारीस्यात्सीमतरहितोथ वा १७ मातृस्थानेशलग्नेशौतत्रिकोणगतौयदि तदीशोलग्नगोमातापित्रा सहमृताभवेत् १८ मातृलग्नेशपितृपाःकेंद्रकोणस्थितायदि ॥ तदशांतर्दशाकालेजनन्यास्त्वनुमृत्युदाः १९ रवींदूपितृमातृस्थौयदिवाअनुमृत्युदौ तदीशिक्षितयुक्तौवारविसंवधिनस्तथा २० येमातृभावपतिकारकतत्समेता स्तन्मातृराशिगतवीक्षितखेचरेंद्राः तेषामनिष्टकरखेटदशापहारेजातस्यमातृ मरणंप्रवदतिसतः २१ मार्तंडस्फुटतोविशोध्यशशिनंतच्छेषराश्यंशकेजीवेभा नुसुतेचमातृमरणंतत्कोणगेवानृणाम् संशोध्यंहिमकंटकहिमकराद्रंध्राधिपस्य स्फुटेतद्राशौरविनंदनेमृतिमुपैत्यथवातदंशेरवौ २२ वुधदृष्टियुतेसौख्येसौम्य मध्यगतेथवा ॥ जीवराश्यंशकेवापिपुण्यकर्मरतःसदा २३

भावको देखता जो ग्रह तिन्हमें अनिष्टके देनेवाले ग्रहकी दशाकालमें माताका मरण श्रेष्ठ मुनि क
हतेहैं २१ अव मातृमरणकालकहतेहें स्पष्टसूर्यसें स्पष्ट चंद्रमाकों जन्मसमयमें घटाए शेष रहेयोरा
शि अथ तिसमें गोचरकर्के वृहस्पति और शनि जव आवें तवमाताकामरणकहे अथवा तिससें न
वम पचम राशिमें स्थित होवें तव मरणकाल होताहै और कहतेहे जन्मकालमें स्पष्टजो अष्टमघर
का स्वामी तिसमें स्पष्ट सूर्यकों घटावे तिसराशिमेंजव शनि आवे और तिसराशिके नवांशमें सूर्यहो
वे तव माताकामरणकहे २२ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभाव वुधकी दृष्टिकर्के युक्त होवे अथ
वाशुभग्रहोंके मध्यमें होवे अथवा वृहस्पतिके राशि नवांशमें स्थित होवे सो सर्वदाकाल पुण्यकर्म
मेंरत होताहै २३

श्रौर योग्रह बली होयकर्के चतुर्थभावमें शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे श्रौर लग्नसें संबंधकर्के अधिकगुणवाला ग्रह जिसजातीका होवे तिसजातिके वर्गकर्के निरंतरसुख होताहै श्रौर तिस ग्रहकी धातुके संबंधकर्के सुखकों प्राप्त होताहै २४ श्रौर यो ग्रह । ६ । ८ । १२ । का स्वामीनीचश्रौरशत्रुक्षेत्रमेंचतुर्थस्थानमेंस्थितहोवेश्रौरलग्नेशकाशत्रुहोवेतिस्केकोपसेंदेहकेसुखकानाशकहोतेहैं२५ श्रौर जिसके जन्मसमयमेंचतुर्थभावमेंस्थितयोग्रहश्रौरचतुर्थभावकों देखनेवालायोग्रहश्रौरचतुर्थ भावका कारक यो ग्रह तीनो वली होवें तव बडे सुखका कारणहैं श्रौरइहतीनों नीच श्रौरशत्रुकीराशिमें श्रौर अस्तहोवें तव अनिष्टफलदेतेहैंश्रौरशुभग्रहकर्केसुखहोताहै श्रौर पापीग्रहकर्के दुख होताहै २६ श्रौर चतुर्थ स्थानमें नवमका स्वामी स्थित होवे श्रौर शुक्रकर्केयुक्तहोवे श्रौरबली होवे

सुखस्थितःशोभनराशिगोबली विलग्नसंबंधगुणाधिकोयदितज्जातिवर्गेणसुखं निरंतरंतदीयधातुश्रियमेतिमानवः २४ चतुर्थगोनीचसपत्नयातस्त्वनिष्टभावाधिपतिर्विलग्नात् लग्नेशशत्रुर्यदितत्प्रकोपाच्छरीरसौख्यादिविनाशमाहुः२५ चतुर्थभावस्थितदर्शिकारकाबलान्वितायद्यतिसौख्यहेतुकाः अनिष्टदानीचसपत्नमूढगाःसुखंशुभेनासुखमन्यखेचरैः२६ चतुर्थगेभाग्यपतौसशुक्रेबलाधिकेस्याच्चिरकालभोगीशुभान्वितेरंध्ररिपुव्ययस्थेजातोल्पकालसमुपैतिसौख्यम् २७ सुखचिंताग्रहेड्याभ्यांमातृचिंतासुखेंदुतः ॥ सुगंधंग्रहशुक्राभ्यांवस्त्रवाहनभूषणम् २८ सुखेश्वरेशोभनराशियुक्तेशुक्रेणदृष्टेसतिसंयुतेवा ॥ अरातिनीचग्रहदृष्टिहीनेसुगंधमाल्यादिसुखंसमेति २९ वीर्यान्वितेशीतकरेसुवस्त्रंसाहिध्वजेजीर्णतरंसमेति॥ कौशेयकंजीवयुतेचरक्तंचित्रंसशुक्रेसशनौतुकृष्णम् ३०

तब चिरकाल भोगोंकों भोगताहै श्रौरशुभग्रहकर्के युक्त ६ । ८ । १२ स्थानमे स्थित होवे तव थोडा काल सुखकों प्राप्तहोताहै २७ श्रौर लग्न श्रौर वृहस्पतिसें सुखका चितनकरे श्रौर चतुर्थ भाव श्रौर चंद्रमासें माताका चिंतन करे श्रौर लग्नसें श्रौर शुक्रसें सुगंध द्रव्यका चितनकरे श्रौर वस्त्र वाहन भूषणों काविचार करे२८ श्रौरचतुर्थभावकास्वामी शुभराशिमें शुक्रकर्के युक्त दृष्ट होवे श्रौर शत्रुनीचग्रहकी दृष्टीसेंरहित होवे तव सुगंधमाल्यादि सुखकों प्राप्तहोताहै २९ श्रौर चंद्रमाबली होवेतव श्रेष्ठ वस्त्र प्राप्तहोतेहैं श्रौर राहुकेतुकर्केयुक्तहोवे तव पुराणे वस्त्र प्राप्तहोतेहैं श्रौर वृहस्पतिकर्केयुक्तहोवे तव पट्ट वस्त्र श्रौर लालवर्णकेवस्त्रप्राप्तहोतेहैं श्रौरशुक्रकर्केयुक्तहोवेतवअनेकवर्णके श्रौर शनिकर्के युक्त होवे तव काले वर्णके वस्त्र प्राप्तहोतेहैं ३०

श्रौर चतुर्थभावका स्वामी शुक्र चंद्रमाके वर्गमें स्थित होवे श्रौरशुक्र कर्के श्रौरचंद्रमा कर्के देख्याहोवे वा युक्त होवे श्रौर नीचराशिमें श्रौर शत्रु ग्रहकीदृष्टि सें रहितहोवे सो मनुष्यपशुधनकोंप्राप्तहोताहै ३१ श्रौर चतुर्थस्थानकास्वामीशुभग्रहहोवे श्रौर शुभग्रह कर्के देख्या होवे श्रौर चतुर्थभावकास्वामीपूर्णबलीहोवेसोमनुष्यबंधुयोंमेंश्रेष्ठहोताहै ३२ श्रौरचतुर्थभावका स्वामी केंद्र १।४।७।१० श्राय ११स्थानमेंस्थितहोवे श्रौर वैशेषिकांशमें स्थित श्रौरपापग्रह केयोग श्रौर दृष्टिसें रहित होवे तब बंधूयोंकेऊपरउपकार करणेवालाहोताहै ३३ श्रौर पापीग्रहकर्के युक्त श्रष्टम घरकास्वामी चतुर्थस्थानमें होवे तब कपटी होताहै श्रौर श्रपने उच्च श्रौर मित्र श्रौर श्रपने वर्गमें शुभग्रहकर्के देख्याहोवे तब कपटकर्केरहित होताहै ३४ श्रौर चतुर्थेशबलकर्केयुक्त होवेतबशुद्धहृदयवाला होताहै श्रौर गोपुरांशमेंवामृदुश्रंशमेंस्थितहोवेतबवेशुद्धहृदयवाला होताहै ३५

शुक्रेंदुवर्गसहितेसुखराशिनाथेशुक्रेणशीतरुचिनासहितेक्षितेवा नीचारिपाप
गगनाटनदृष्टिमुक्तेपश्वादिवित्तमखिलंलभतेमनुष्यः ३१ बंधुस्थानेश्वरेसौम्ये
सौम्यग्रहनिरीक्षिते कारकेबलसंपूर्णेबंधुपूज्योभवेन्नरः ३२ बंधूपकर्त्तातन्ना
थेकेंद्रकोणायसंयुते ॥ वैशेषिकांशसंयुक्तेपापदृग्योगवर्जिते ३३ सपापेरंध्र
पेसौख्येकपटीपापसंयुते स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्थेनिष्कापट्यंशुभेक्षिते ३४वि
शुद्धहृदयःशांतोहृदयेशेबलान्विते गोपुरांशकेवापिमृद्वंशादिसमान्विते ३५
वाहनेशेबलयुतेयानराशौबलान्विते शुभग्रहेणसंदृष्टेवाहनादिफलंवदेत् ३६
चंद्रोविलग्नसंबंधीवाहनेशसमन्वितः तुरंगवाहनंतस्यवदतिमुनिपुंगवाः ३७
द्वितीयेवाचतुर्थेवाचंद्रेशोभनराशिगे शुभखेचरसंयुक्तेसमुपैत्यश्ववाहनं ३८.
सेंदौचतुर्थाधिपतौविलग्नेलग्नेश्वरेणापियुतेश्वलाभं शुक्रेणयुक्तेयदिवाहनेशेदे
हान्वितेवानरवाहनंस्यात् ३९

श्रौर चतुर्थघरका स्वामी श्रौर चतुर्थभावमेंबलयुक्तहोवे श्रौरशुभग्रहकर्केदेख्या होवेतबवाहना दिशुभफल कहे ३६ श्रौर चंद्रमा लग्नका संबंधि होयकर्के चतुर्थभावके स्वामी साथ युक्त होवे तिसकों घोडेकी प्राप्ति श्रेष्टमुनि कहतेहैं ३७ श्रौर दूसरे स्थानमें वा चतुर्थस्थानमें शुभग्रहकोरा शिमें चंद्रमा स्थित होवे श्रौर शुभग्रहकर्के देख्या होवे सो घोडेवाहनकों प्राप्त होताहै३८ श्रौर चंद्रमाकर्के युक्त लग्नका स्वामी लग्नमें स्थित होवे श्रथवा लग्नेश कर्के युक्त चंद्रमाकिसीभावमें स्थित न होवे तब घोडेकालाभ होताहै श्रौर शुक्रकर्के युक्त चतुर्थका स्वामी होवे श्रौर लग्नमें स्थित होवे तब नरवाहन मिलताहै ३९

और शुक्र और पूर्णचंद्रमा केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवेंवा त्रिकोणमें ९ ५ वलयुक्त स्थित होवें तब भगूडेका सुख और भूषण देतेहे और धन मीन राशिमें होवें ववलालवस्त्र और भूषण देतेहे और शुक्रकर्के युक्त दृष्ट होवें तव वी वस्त्र और भूषण देतेहैं ४० और जिसके जन्मकालमें शुक्र और चंद्रमा और चतुर्थभावका स्वामी और लग्नेश इह चारग्रह एकराशिमें स्थित होवें सो भगूडेके सुखवाला और घोडेके लाभको प्राप्त होताहै और एकराशिमें बृहस्पति और चतुर्थघरकास्वामी और चद्रमा और शुक्र केंद्र १ ४ ७ १० त्रिकोणघ रमें स्थित होवेंतव चारप्रकारकावाहन मिलताहै ४१ और चतुर्थघरका स्वामी बृहस्पतिकर्के युतहोवे तव चारप्रकारके वाहन मिलतेहे और चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकर्के युक्त दशमस्थानमें स्थितहोवे तब

आंदोलिकाभरणदौसितपूर्णचंद्रौकेंद्रत्रिकोणगृहगौबलिनौभवेताम् रक्तांब रभरणदस्सुरपूजितर्क्षेचंद्रेसुरेंद्रसचिवेक्षितसयुतेवा ॥ ४० ॥ आंदो लिकातुरगलाभमुपैतिजातः शुक्रेंदुयानपतयस्तनुनाथयुक्ताःएकत्र देवगुरुयानपचंद्रशुक्राः केंद्रत्रिकोणगृहगाश्चतुरंगयानम् ४१ वाहनेशगुरुयुतेचतुरंगाख्यवाहनम् यानेशेसशुभेमानेचामरछत्रसंयुतः ४२ सुखेश्वरेकेंद्रगतेतदीशलग्नस्थितेवाहनयोगवंतः कर्मेश्वरेलाभगतेतदीशेकर्म स्थितेभूषणयानवंतः ४३ यानेशेलाभराशिस्थेसुखेशेलाभगेकुजे अथवा भौमराशिश्चेद्राज्यप्राप्तिर्नसशयः ४४ लग्नाद्वाहनराशिगस्तदधिपस्तद्वी क्षकश्चत्रयःस्वोच्चस्वर्क्षसुहृद्गृहेषुबलिनःकेंद्रत्रिकोणायगाः दीर्घायुःशयनाश नांबरयुतक्षेत्राणिसन्मंदिरंबंधुस्नेहमनोज्ञवाहनयशःसौख्यानिकुर्वंतिते ४५

छत्र चामर करकेयुक्त होताहै ४२ और जिनके चतुर्थभावका स्वामी केंद्रमें स्थित हो वे और तिसका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तव वाहनयोगवाले होतेहें और दशमका स्वामी एकादश में और एकादशका स्वामी दशममें स्थित होवे तव भूषणों और वाहनोंवाले होतेहें ४३ और चतुर्थका स्वामी एकादशमें स्थित होवे और चतुर्थघरका स्वामी मंगल एकादशमें स्थित होवे अथवा एकाद शभावमें मंगलकी राशि होवे तव राज्य प्राप्त होताहे ४४ और जिसके जन्ममें चतुर्थका स्वामी और चतुर्थमें स्थित ग्रह और चतुर्थको देखने वाला तीनों अपने क्षेत्रमें और उच्चमें और मित्रक्षेत्र मेंस्थित होवें और बलीहोयकरके केंद्रत्रिकोणमें स्थित होवें तव बडीआयुषा और शय्या वस्त्र औ र क्षेत्र मंदिर और बंधुओंमें प्रीति और मनके जानने वाला वाहन और यशऔरसुख देतेहैं । ४५

और जिसके जन्मकालमे बुध उच्चराशिमें केंद्र १।४।७।१०कोण ९।५ स्थानमे स्थित होवे सो विद्या और वाहन और संपदा वहुतधनको करताहै ४६ और लग्नके स्वामीसें चतुर्थघरका जो स्वामी है तिसराशिमे नवमघरका स्वामी और नवमे स्थित ग्रहहोवे इह चारग्रह शुभग्रहोंके वर्गमें और बलसयुक्त होवें और लग्नेशके सवंधि होवे और परस्पर क्षेत्रमें वा परस्पर देखते होवें तव राजा चिरकाल सुखी तेजस्वी और चारप्रकारके वाहनों कर्के युक्त और राज्यलक्ष्मीके चिन्होंवाला होताहै ४७ और जिसके जन्मकालमे तीनग्रह स्थान वल कर्के युक्त होवें पूर्णवली होवें तव विचित्र अनेक प्रकारोंके रत्नोंके भूषण और वाहनोंकी प्राप्ति होतीहै और जिसके जन्ममें दो ग्रह वली होयकर्के लग्नमें स्थित होवें तिनकी दशामें सुखकों प्राप्त होताहै ४८ और कहेजो तीन स्थान तिनमें

स्वोच्चराशिगतश्चांद्रिःकेंद्रकोणसमन्वितः विद्यावाहनसंपत्तिंकरोतिविपुलंधनम्४६ लग्नेशात्सुखनाथतद्भवनगौभाग्येशभाग्यस्थितौचत्वारःशुभवर्गगाः सुबलिनस्तेलग्नसंबधिनः अन्योन्याश्रितवीक्षितायदिमहीपालश्चिरायुःसुखी तेजस्वीचतुरंगयानविपुलश्रीराजचिन्हांकितः४७ ग्रहास्त्रयःस्थानवलाधिकाश्चेद्विचित्ररत्नाभरणादियानम् खेटद्वयेवीर्ययुतेविलग्नेतदीयपाकेसमुपैतिसौख्यम् ४८ उक्तस्थानत्रयेष्वेकोवलीवाहनराशिपः लग्नलग्नेशसंवंधीतद्दशावाहनप्रदा ४९ चतुर्थधर्मायधनाधिनाथाविलग्नसबंधवलाधिकाश्चेत् तदीयपाकेसमुपैतिराज्यक्रमेणलाभंधनलाभमर्थम्५० तेचत्वारोधिकबलयुतादेहसबधिनश्चेदेतत्सर्वंभवतिविपुलंदुर्बलाद्दुःखदास्युः मिश्रंमिश्रैस्तनुपरिपवःकारकोभावनाथोभावाक्रांतोविगतवालिनश्चेदतिक्लेशदास्ते ५१

तिस ग्रहकी दशावाहनको देतीहै ४९ और जिसकेजन्मकालमें चतुर्थ नवम एकादश दूसरे घरके स्वामी वली होयकर्के लग्नसें सवंधकरें तिनकी दशामें क्रमकर्के राज्यलाभ और धनलाभ और अर्थसिद्धिहोतीहै ५० और चतुर्थ नवम एकादश द्वितीयका स्वामी अधिक वली होयकर्के लग्नसें संवंधकरें तव राज्यादि फल विपुल वडा होताहै और वलहीन होवें तव दुःख देतेहैं और लग्नपति और शत्रुका कारक और भावका स्वामी भावमेंयुक्त मध्यवली होवें तव मिश्रफल होताहै और वलहीन होवें

चतुर्थ भावका स्वामी वली होयकर्के युक्त होवे और लग्नकर्के और लग्नेशकर्के सवंधकर्ता होवे

और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थघरका स्वामी शत्रु और नीचराशिमें स्थित होवे और ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे और नवम भावके स्वामी करके देख्या होवे तवखोटे वाहनकी प्राप्ति होतीहै अथवा वाहन स्थिर नाहिं रहिताहै ५२ और जिसके नवम और दशम और लग्नमें-उच्चहोयकरके शुभग्रहस्थित होवे और लग्नेश करके देख्याहोवे तव वाहनप्राप्तिके उपरत दुःखप्राप्तहोताहै ५३ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पति वा चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकरके युक्त और शुभग्रह की राशिमें नवमस्थानमें स्थित होवे तव नरवाहन करके औरचिरकालराजप्रतापकरकेयुक्त होताहै और ६।८।१२ स्थानमें स्थित और पापग्रहकरके युक्त और अस्तनीच शत्रुकी राशिमेंहोवे तव वाहनादियोंकरके भी नहिं होताहै और स्वक्षेत्रमें पूर्णवली होवे तव चिरकाल भहूँके कासुखहोताहै ५४ और चतुर्थ नवमघरके स्वामीदोनों लाभ ११ स्थानमें युक्त वा देखते होवें और वली होवें तव संपूर्ण भाग्य

वाहनेशेरिनीचस्थेदुःस्थेधर्माधिपेक्षिते सुदुर्वाहनसंप्राप्तिश्चलवाहनतापिवा ५२ धर्मकर्मविलग्नस्थास्तुंगोपगशुभग्रहाः लग्नाधिपेनसंदृष्टायानांतिदुःखमाप्नुयात्५३ जीवेवासुखपेशुभग्रहयुतेलग्नात्तपस्थानगेसौम्यर्क्षेनरवाहनंचिरतरंराजप्रतापान्वितम् ॥ दुःस्थेपापयुतेस्तनीचरिपुगेयानादिभाग्यंनहिस्वर्क्षेसर्ववलाधिके चिरसुखंचांदोलिकारोहणम् ५४ बंधुधर्मगृहाधीशौलाभस्थानगतेक्षकौ ॥ वलवंतौयदिस्यातांसर्वभाग्यफलप्रदौ ५५ लाभस्थौसुखभाग्येशौपश्यंतौवासुखस्थलम् वाहिनीसर्वभाग्याढ्योराजप्रीतिकरोभवेत् ५६ धर्मवाहनराशीशौलग्नसंबंधिनौयदि ॥ जीवदृष्टियुतौतस्यराजवश्यादिभूषणम् ५७ शुभवाहनराशीशौशुभखेचरसंयुतौ ॥ वहुसेनाधिपःश्रीमान्वलिनौयदिजायते ५८ भाग्यस्थितेवाहनराशिनाथेसशुक्रजीवेशुभखेटराशौ भाग्याधिपकोणचतुष्टये वावहुत्वदेशाभरणार्थयानम् ५९ ॥

फलको देतेहैं ५५ और लाभ ११ स्थानमें चतुर्थ नवमके स्वामी होवें अथवाचतुर्थभावको देखते होवें तव संपूर्ण भाग्योंकरके युक्त सेनाका स्वामी राजाकीप्रीति करणे वाला होताहै ५६ और यद नवम चतुर्थ भावके स्वामी लग्नके संवधि होवें और वृहस्पति करके देखे होवें तव राजवश्यादि और भूषणप्राप्तिकरेहैं ५७ और नवमचतुर्थराशिके स्वामी शुभ ग्रह करके युक्त होवें और वली होवें तव वहुतसेनाका स्वामी शोभा करके युक्त होताहै ५८ और जिसके जन्मकालमें शुभग्रहकी राशिमें, नवमभाव गत चतुर्थभावका स्वामी शुक्र वृहस्पति करके युक्त होवे अथवा नवम भावका स्वामी,कोण ९।५ चतुष्टय १।४।७।१०स्थानमें स्थित होवे तव वहुत देश और भूषण और धन और वाहन प्राप्त होतेहै ५९

और जिसके जन्मकालमें सप्तमषष्ठ चतुर्थतृतीयनवम लग्न द्वादशभावोंकेस्वामीचतुर्थभावकेस्वामीकरके युक्तहोवें सोअनेक देशोंका स्वामीहोताहै ६० और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी बृहस्पति वा शुक्र होवे और बलयुक्तलग्नसें नवमराशिमें स्थितहोवे और नवमराशिकास्वामीत्रिकोण१।५।केंद्र१।४।७।१०स्थानोंमें स्थितहोवेतबसोबहुत वाहनोंको प्राप्त होताहै ६१ और शुक्रबके युक्तबृहस्पतिनवम में स्थित होवे और नवमका स्वामीचतुर्थस्थानमें होवे अथवा केंद्रत्रिकोण मेंस्थित होवे तब बहुत वाहनऔर देशोंका स्वामी होताहै ६२ और लग्नकेंद्रमें शुभग्रह स्थित होवे और नवममें उच्चग्रहस्थित होवे और दूसरेभावकास्वामी केंद्रमें स्थित होवे तबसिंहासनकेदेनेवालायोगहोताहै ६३

कामारियानसहजतपोलग्नव्ययेश्वराः ॥ सुखाधिपेनसंयुक्तास्त्वमंस्याकरदेशभाक् ॥ ६० ॥ सुखाधिपोदेवगुरुःसितोवाबलीविलग्नान्नवमोपयातः ॥ त्रिकोणकेंद्रोपगतःशुभेशःसमेतिजातोवहुवाहनानि ६१ सशुक्रजीवेगेहेशोभाग्-स्थोभाग्यपेसुखे ॥ केंद्रत्रिकोणयोर्वापिवहुवाहनदेशभाक् ६२ लग्नकेंद्रेस्थितेसौम्येधर्मेतुंगग्रहाश्रिते धनेशेकेंद्रभावस्थेयोगःसिंहासनप्रदः ६३ भाग्येशुभेक्षितेकेंद्रेशुभैःसहधनाधिपे ॥ उच्चग्रहेद्वितीयस्थेजन्मासिंहासनप्रदम् ६४ लग्नवाहनभाग्येशाःकर्मस्थाकर्मपस्तनौ लग्नंपश्यतिवाखेटःसिंहासनफलप्रदः६५ कर्मलग्नसुखाधीशाःकर्मस्थानगतायदि ॥ कर्मपोलग्नसंबंधीसिंहासनपतिर्भवेत् ६६

और जिनके जन्ममें नवमभाव शुभ ग्रह करके देख्या होवे और दूसरे घरका स्वामी शुभ ग्रहोंकरके युत केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवे और दूसरे स्थानमें उच्च राशिगत ग्रह होवे तब सिंहासनके प्राप्तकरणेवाला जन्म होताहै ६४ और लग्न ॥ चतुर्थ ॥ नवमके स्वामी दशममें स्थित होवें और दशमेश लग्नमें होवे अथवा लग्नको ग्रह देखता होवे तब सिंहासन प्राप्त करताहै ६५ और दशमलग्नचतुर्थ घरके स्वामी दशम स्थानमें स्थित होवें और दशमेश लग्नका संबंधिहोवे तब सिंहासन को देतेहैं ६६

और बृहस्पतिशुक्रनवमकास्वामीकेंद्र१।४।७।१०कोण३।५आय११स्थानमेंस्थितहोवेंतवअनेकवाहनो करकेयुक्तमंडलकास्वामी होताहै ६७ और चतुर्थ भावकास्वामी और दशमस्थानमें स्थित ग्रह दोनों बली होवें और नवमेश करके देखे होवें वा युक्त अथवा परस्पर क्षेत्रमें दोनों स्थित होवें तब सिंहासनकी प्राप्ति करने वाले होतेहैं ६८ और तिनको दशान्तर्दशा कालमें और जिसराशिमें स्थित होवें तिसके स्वामीकी उपदशामें अथवा तिसदशामें सिंहासनका स्वामी होताहै ६९ ,और नवम पाते और लग्नेश दोनो चतुर्थ भावमें स्थित होवें और चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकी राशिमें लग्न गत होवे तब नित्यप्रति अत्यंत सुखको प्राप्त होताहै और छठेस्थानमें स्थित होवे तब शत्रुयों को

गुरुशुक्रशुभाधीशाःकेंद्रकोणायगायदि ॥ अनेकयानसंपन्नोमंडलाधिपतिर्भवेत् ॥ ६७ ॥ यानेशकर्मोपगतौबलिष्ठौधर्मेशदृष्टौयदितद्युतौवा ॥ परस्परक्षेत्रसमागतौवासिंहासनप्राप्तिकरौभवेताम् ॥ ६८ ॥ तद्दशांतर्दशाकालेतद्राश्युपदशागमे ॥ तदीयभुक्तिसंप्राप्तौसिंहासनपतिर्भवेत् ६९ शुभोदयेशौसुखराशियातौसुखाधिपोलग्नगतःशुभर्क्षे ॥ अतीवसौख्यसमुपैतिनित्यसपत्नयातोयदिशत्रुभाग्यम् ॥ ७० ॥ सपत्नभावाधिपतौतपस्थेशुभैरदृष्टेबलसयुतेवा ॥ स्वकीयभाग्यादिकमल्पकालंददातिशत्रौसुखनाथदाये ७१ सुखाधिपेशोभनखेटयुक्तेतदीयपाकांतमरातिगंतत् ॥ पापान्वितेतस्यदशावसानेपुनःस्वभाग्यसमुपैतिसर्वम् ७२क्षेत्रस्थानेशुभक्षेत्रेतदीशेशुभसयुते ॥ तत्कारकेतथाप्राप्तेबहुक्षेत्रधनान्वितः ७३

भाग्यकर्ताहै ७० और छठे भावका स्वामी नवमभावमें स्थित होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे अथवा बली होवे तब चतुर्थभावेशकी दशामें अपने भाग्य थोडाकाल कर्ताहै और शत्रुयोंमें भाग्यवृद्धि देनाहै ७१ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी शुभग्रह करके युक्त होवे तिसकी दशाके अनंतर शत्रुको प्राप्त होताहै और पापीग्रह करके युक्त होवे तिसकी दशाके अंतमें फेर अपने भाग्यको संपूर्णताकरके प्राप्त होताहै ७२ और चतुर्थस्थानमें शुभग्रहकी राशी होवे और तिसका स्वामी शुभग्रहकरके युक्त होवे और तैसेंहि चतुर्थ भावका कारक होवे तब बहुतक्षेत्र और धनको प्राप्त होताहै ७३

और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वमी नीचांशमें और शत्रुके नवांशमे और शूल यमकाला ग्निषष्टिभागमें स्थितपापग्रहकर्के युक्त अथवा दृष्ट होवेतव शास्त्रके जाननेवाले क्षेत्रादि पदार्थों का नाशकहतेहैं ॥ ७४ ॥ और लग्नाधिपकी राशिमे जबशत्रुग्रह स्थितहोवे तिसकी दशातर्दशाका लमेंघरका और पृथ्वीका विनाशहोताहै और चतुर्थभावका स्वामी शनि मंगल गुलिककर्के युक्तहो वे तब तिसकी दशातर्दशामें बंधुओं कीहानि और अनर्थहोताहै ॥ ७५ और जिसके जन्मकालमे दूसरेघरका स्वामी चतुर्थेशकर्के युक्त नवमस्थानमें स्थितहोवे और शुभग्रहकीराशिमें शुभग्रहकर्के यु क्तहोवे तब निक्षेपधनकाक्याकिसीको अमानकों प्राप्तहोताहै और एकादश और द्वितीयभावके स्वामी दोनों चतुर्थमें स्थित होवें और चतुर्थकास्वामी शुभराशिमे शुभग्रहकर्के युक्त होवे तबनिक्षेपधनकी सिद्धिहोतीहै और लाभेशग्रहशुभराशिमें शुभग्रहकर्के युक्तहोवे तब निक्षेपधनकोंदेताहै ७६ और दू

क्षेत्रेश्वरेनीचसपत्नभागेकालाग्निशूलांतकषष्ठिभागे पापान्वितेपापसमीक्षि तेवाक्षेत्रादिनाशंकथयंतितज्ज्ञाः ७४ लग्नाधिपस्यगृहगोयदिशत्रुखेटस्तत्पाक भुक्तिसमयेगृहभूमिनाशम् यानेशभुक्तिसमयेनिजबंधुहानिःशन्यारमांदियुत भुक्तिरनर्थहेतुः ७५ वित्तेशःससुखाधिपोनवमगःसौम्यान्वितःसौम्यभे निक्षे पंसमुपैतिलाभधनपौपातालराशिस्थितौ तन्नाथःशुभराशिगःशुभयुतोनिक्षे पसिद्धिर्भवेत् लाभेशःसुखराशिगःशुभयुतोनिक्षेपवित्तप्रदः७६ अर्थव्ययगृहाधी शानाशगाःपापसयुताःयावद्भिरशुभैर्युक्तातावद्गेहालसत्वदाः७७ पापेराहौपापदृ ष्टेसुखेगेहसुखार्तिभाक् नीचेरातौकुजेर्केवासुखेस्यादगृहोनरः७८नीचेस्तगेवागेह स्थेकूपादौचपतिष्यति सुखेपापेपापभाक्स्यात्सुखेमंदेसुखक्षयः७९ गृहेशेव्य यगेलग्नादन्यगेहोन्यदेशगः रंध्रेगृहाद्यभावोवाषष्ठेशत्रुयुतगृहं ८०

सरे बाहरमें घरकेस्वामी अष्टमस्थानमें पापीग्रहकर्के युक्तहोवे जितनेक पापी ग्रहोंकर्के युक्तहोवे उ तनेघरदरिद्रको प्राप्तहोतेहैं ७७ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थस्थानमें पापीग्रह वा राहु पापीग्रह कर्के देखा होवे सो घरके क्लेशको प्राप्त होताहै और नीचराशिमें शत्रुक्षेत्रमें सूर्य वा मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवें सो घरसें रहित होताहै ७८ और नीच राशिगत वा अस्तगत ग्रह चतुर्थस्था नमें स्थित होवे सो कूपादि स्थानमे पडताहै और पापीग्रह चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तब पापकर नेवाला होताहै और शनिहोवे तब सुखकर्के हीनहोताहै ७९ और चतुर्थेश लग्नसें बाहरमे स्था नमे स्थित होवेतब प्रायेघरमें और परदेशमें वास करताहै और अष्टमस्थानमे होवे तब घरसे टेकर्क पदार्थोंसे रहित होताहै और छठे स्थानमेहोवे तब शत्रुयोंके समीपघर होताहै ८०

और चतुर्थकास्वामी पूर्णबली होवे तब यत्नके विनाघरका लाभदेनाहे और६।८।१२स्थानमेंनिर्बल होयकर्के स्थित होवे तब घरमें आलस्य और ग्रहपीडाकों प्राप्त होताहै ८१ और छठे तीसरे बा हरमें अष्टमें स्थानोंमें इन १२ । २ । ४ । स्थानोंके स्वामी स्थित होवें और जितने सख्या कर्के पापीग्रहों कर्केयुक्त होवें उतनेघर नाशकों प्राप्त वर्त्तेहें ॥ ८२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्न १ और त्रिकोण ९ । ५ और केंद्र १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानोंमें जितने ग्रह बली स्थित होवें उतनें प्रमाणकर्के घरोंका सुख बुद्धिमान् कहे ८३ और चतुर्थभाव का स्वामी लग्नसें बाहरमें स्थान स्थित होवे तब पुरातन घरकों प्राप्त होताहै और त्रिकोण और कं

अयत्नतोमंदिरलाभदःस्याच्चतुर्थपस्तत्रबलाधिकोवा दुःस्थानगोदुष्टबलान्वित श्चेदालस्यगेहग्रहपीडितंवा ८१ षट्त्रिव्ययाष्टमोपेताव्ययवित्तगृहाधि पाः यावत्पापसमेपेतास्तावद्गृहविनाशदाः ॥ ८२ ॥ लग्नत्रिकोणकेंद्रस्थायावद्बलसमन्विताः ॥ तावत्संख्याकगेहानांसमीचीनंव देद्बुधः ८३ चतुर्थभावाधिपतौविलग्नाद्व्ययस्थितेजीर्णगृहंसमेति ॥ त्रिको णकेंद्रोपगतेबलाढ्येविचित्रगेहंरुचिरंतदाहुः ८४ तृतीयेसौम्यसंयुक्तेगेहेशे बलसंयुते ॥ गोपुराद्यंशकेवापिसमेतिदृढमंदिरम् ८५ आज्ञाश्रयात्क्षेत्र विनाशमाहूराज्ञेश्वरेगेहगतेसपापे ॥ क्रूरांशकेमृत्युकरादिभागेरंध्रेश्वरेणापि युतेतथैव ८६ तृतीयेसौम्यसंयुक्तेगेहेशेस्वबलान्विते ॥ लग्नेशेबलसंपूर्णेह र्म्यप्राकारसंयुतम् ८७ पारावतांशकेगेहनाथेगुर्विंदुवीक्षिते ॥

द्रमें बलकर्के युक्त स्थित होवे तब विचित्र सुंदर घरका सुख कहतेहैं ८४ और तीसरा भाव शुभग्रह कर्के युक्त होवे और चतुर्थभावका स्वामी बली होवे अथवा गोपुरादि अंशमें स्थित होवे सो दृढमं दिरकों प्राप्त होताहै ८५ और दशम भावमें पापी ग्रह कर्के युक्त दशमका स्वामी होवे अथवाच तुर्थ भावमें स्थित होवें और क्रूरषष्ट्यंशमें मृत्युकरादि भागोंमें और अष्टमेश कर्के युक्त होवे तब घरका विनाश कहतेहैं ८६ और जिसके जन्मकालमेंतीसरा भाव शुभग्रहकर्के युक्त होवे और चतुर्थेश बली होवे और लग्नका स्वामीपूर्णबली होवे तबबडेकोटोंकर्के युत हर्म्य महिलकों प्राप्त होताहै ८७ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावकास्वामी बृहस्पति और चंद्रमा कर्के देख्याहोवे ।

॥ अथवा गोपुरादि आश्रममें स्थित होवे तव देवताकी न्यांई घरको प्राप्त होताहै ॥
॥ ८८ ॥ अव चतुर्थेशके वाराभावोंमें फल जन्मप्रदीपसें कहतेहे चतुर्थका स्वामीलग्नमें
स्थित होवे तव पितापुत्र दोनों परस्पर प्रीतिवाले होतेहै ॥ और पितृपक्षमें वैर कर्ताहै और
पिताके नामसेंप्रसिद्ध होताहै ८९ और चतुर्थका स्वामी धन २ भावमें स्थित होवे जब क्रूर ग्रहहोवे
तव पितासें विरोधकर्ताहे और शुभग्रहहोवे तव पिताकेपालनेवाला और प्रसिद्धहोताहै और तिसके
धनको पिताभोगताहै ९० और चतुर्थकास्वामी तीसरेभावमें स्थितहोवे तव पिताकेविछेदकोकर्ताहै
और प्रसिद्धपितावालाहोताहै और पिताकेसाथलडाईकर्ताहै औरपिताकेवधुयोंकोपालनेवालाहोताहै
९१ और चतुर्थका स्वामी चतुर्थभावमें स्थितहोवे तव राजाकेमानकोप्राप्तकर्ताहै और प्रसिद्ध होताहै

गोपुराद्यंशकेवापिदैवकंगृहमादिशेत् ८८ अथचतुर्थस्वामिफलंजन्मप्रदीपे ॥
तूर्य्यपतिर्लग्नगतःपितृपुत्रौस्नेहलौमिथःकुरुते पितृपक्षवैरकलितंपितृनाम्नासुप्र
सिद्धंच ८९ पातालपेधनस्थेक्रूरखगेपितृविरोधकृच्छुभे ॥ पितृपालकः
प्रसिद्धःपिताभुनक्तिश्चतल्लक्ष्मीम् ९० तूर्य्यंशेसहजेचेत्पितृमातृछेदकंविदित
पितरम् पित्रासहकलहकरपितृबांधवपालकंपुरुषम् ९१ तूर्य्यगतेतूर्य्यपतौक्ष्मा
धिनाथश्चमानकरः ॥ विदितः पितृलाभपरोभवतिसुधर्मासुखीनिधिपः९२ ॥
सुतगेतूर्य्यगृहेशेपितासुलाभोंगजश्चदीर्घायुः भवतिक्षितिपप्रसिद्धःसुसुतःसुत
पालकःसोपि ९३ हिवुकपतौरिपुसंस्थेपितुरर्थविनाशकःपितरिवैरी पितृदो
षकरःक्रूरेसौम्येधनसंचकस्तनयः ९४ अंबुपतौसप्तमगेक्रूरेस्वसुरस्नुपानपाल
यति सौम्येपालयतिपुनःकुलटांतांकुजकवौकुरुतः ९५

और पिताके लाभको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठधर्मवाला और सुखी औरबडे धनका पति होताहै९२
और चतुर्थभावका स्वामी पंचमभावमें स्थितहोवे तव पिता श्रेष्ठलाभको प्राप्त होताहै और पुत्र व
डी आयुषावाला और राजाके प्रसिद्ध होताहै और श्रेष्ठपुत्रवाला और पुत्रके पालनेवाला होता
है९३ और चतुर्थका स्वामी छठे स्थानमें स्थितहोवे तव पिताको धनकानाश कर्ताहै औरपि
तासेवैरकर्ताहे और दोषकर्ताहै जव क्रूरग्रहहोवे तव और शुभग्रहहोवे तव धनसंचयकरणेवाला होता
है ९४ और चतुर्थका स्वामी सप्तमस्थानमें स्थितहोवे क्रूरग्रह तव तिसकी स्त्री तिसके पिताको क्ले
श देताहै और शुभग्रह होवे तव सेवाकरताहै और शुक्रमंगल होवें तव तिसकी स्त्री व्यभिचारिणी
होतीहै ९५

॥ और अष्टमस्थानमें चतुर्थकाक्रूरग्रह स्वामी होवे तब रोग कर्केयुक्त वा दरिद्रीकरताहै और खोटे कर्मकरणे वाला और शीघ्रमृत्युकों कर्त्ताहै ९६ और नवम स्थानमें चतुर्थका स्वामी स्थित होवे तब पितासें भिन्न और संपूर्णविद्यावाला और पितृधर्मका संग्रहकरणेवाला और पिताकी अपेक्षासें रहित होताहै ९६ और चतुर्थका स्वामीदशमभावमें स्थितहोवे तब तिसपुत्रकी माताकों पिता त्याग कर्त्ताहै और दूसरी स्त्रीकों विवाहताहै और शुभग्रहहोवे तव तिसका त्याग नहिं कर्त्ताहै और दूसरीस्त्री कों सेवताहै ९७ और एकादश ११ भावमें चतुर्थका

छिद्रगतस्तूर्य्यपतिःक्रूरोरोगान्वितंदरिद्रंवा ॥ दुष्कर्मरतंमृत्युप्रियमथमानवं कुरुते ९६ सुकृतगतेतूर्य्यपतौपितर्य्यसंगीसमस्तविद्यावान् पितृधर्मसंग्रह परःपितृनिरपेक्षोभवेन्मनुजः ९६ पातालपेंबरगतेपापेसुतमातरंत्यजेज्जनकः सृजतेत्वन्यांदयितांसौम्येपुनरन्यसेवावान् ॥ ९७ ॥ एकादशगेतूर्य्याधिपतौ पितृलाभकःसुकर्माच पितृभक्तोभवतिसुतःप्रचुरायुर्व्याधिविकलश्च ॥ ९८ ॥ द्वादशगेतूर्यपतौमृतःपितावाविदेशगोवाच्यः पुत्रस्यपापखचरेत्वन्यपितुर्जन्मानिर्देश्यम् ९९ ॥ पराशरीये गेहाधिनाथेनयुतेतुगेहेदेहाधिपेनापिगृहाभिलब्धिःयुतेषडादौतुविपर्ययःस्याद्गृहाधिपेदेहपतौचतद्वत् १०० इतिचतुर्थ भावविचारः ४ ॥

स्वामी स्थितहोवे तव पितासें लाभवाला औरश्रेष्टकर्मोंवाला होताहै और पितरोंकाभक्त होताहै और बडी आयुषा वाला और व्याधि युक्त होताहै ९८ और बारमे स्थानमे चतुर्थका स्वामीस्थित होवे तव तिसका पिता मृतहोवे वा विदेशमें रहे और पापी ग्रहका इह फलहै जो अन्यपिताका पुत्र होताहै अर्थात् जारजात होताहै९९ और पराशरीमें कहतेहै जिसके जन्मकालमें लग्नेश कर्केयुक्तचतुर्थभावहोवेअथवाचतुर्थकास्वामीचतुर्थभावमें स्थित होवे तव घरकेलाभको प्राप्तहोताहैऔर ६ ८।१२स्थानमें स्थित होवें तवं घरका सुख नाहे होताहै १०० इतिचतुर्थभावः ४ ॥

अथपंचमभावविचारः तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तंजातकपारिजाते पुत्राद्देवमही
पपुत्रपितृधीपुण्यानिसंचिंतयेद्यात्रामस्तसुतस्वकर्मभवनेर्दूराटनंरि.फतः लं
ग्नाद्बुदिनेशतःपितृसुखंजीवात्मजस्थानतःपुत्रप्राप्तिरनंगवित्तपसितैःस्त्रीसंप
दश्चिंतयेत् १ लग्नादात्मनिपुग्रहेक्षितयुतेपुंदेवताराधनंयुग्मेशुक्रनिशाकरे
क्षितयुतेस्त्रीदेवतामिच्छति भानोर्भास्करमुख्यमिंदुसितयोर्गौरींकुमारंकुजेविष्णुं
चंद्रसुतेगुरौशशिधरंशन्यादियोगेपरान् २ लग्नाधिपस्यात्मपतौसपत्नेतद्देवभ
क्तिःसुतनाशहेतुः समानतःसाम्यतरेसुहृत्त्वेतद्देवतापारकृपामुपैति ३ राजस्था
नेगुरुबुधसितैरीक्षितेसंयुतेवातद्राशीशेबलवतिनृपप्रीतिसंपत्तिमेति पापाक्रां
तेविगतबलिनिस्वामिनिक्रूरभागेजातोविद्याविनयगुणधीराजसन्मानहीनः ४

अथपंचमभावका विचार कहतेहैं तिसमें किसका विचारकरणा सो पारिजातसें कहतेहैं पंचमभावसें देवताकी भक्ति और राजाका विचार और संतानका विचार और पिताका विचार और बुद्धिका विचार और पुण्यकर्मका विचार करे और सप्तम और पंचम और द्वितीय और दशम भावसें यात्राका विचार करे और दूरगमनकाविचार द्वादशभावसें करे और लग्नसें और चतुर्थभाव सें औरसूर्यसें पिताके सुखका विचार करे और पुत्रकी प्राप्ति सप्तमेश और द्वितीयेश और शुक्रसें करे और स्त्री और संपदाका चिंतनकरे १ और जिसकेजन्मसमयमें पंचमभावमेंविषमराशिःस्थित होवे और सूर्य और मंगल और बृहस्पति करकें देखी होवे तब पुरुष देवताकाआराधन कर्ताहै और पंचमभावमें युग्मराशि चंद्रमा और शुक्र करकेंयुक्तदृष्टहोवे तबस्त्रीदेवताका आराधन कर्ताहै औरकहतेहैं सूर्यदेखे औरयुक्त होवेतबसूर्य का मुख्य आराधन कर्ताहै और चंद्रमा शुक्रके योगकरकें पार्वतीकाआराधन कर्ताहै और मंगलके योगसें स्वामिकार्त्तिकका आराधन कर्ताहै और बुधके योगसें विष्णुका और बृहस्पतिके योगसें शिवजीका और शनि राहु केतुके योगसें भूत पिशाचादियोंका आराधन कर्ता है २ और जिसके जन्मकालमें लग्नका स्वामी और पंचमका स्वामी दोनों आपसमें शत्रु होवें तब तिन्हींग्रहोंका यो अधिदेवताहै तिसकी भक्ति करणेसें पुत्रका नाश होताहै और लग्नेश और पंचमेश ग्रह दोनों समहोवें तब तिसदेवताका आराधन करणेसें शुभाशुभ फलकोई नहि होताहै और परस्पर मित्र होवें तब तिसदेवताके आराधनसें परम कल्याणकों प्राप्त होवाहै ३ और जिसके जन्मकालमें दशमस्थान बृहस्पति और बुध शुक्र करकें देख्या होवे वा युक्त होवे और तिस राशिका स्वामी बलवान् होवे तब राजाकीकृपा और प्रीति और संपदाकों प्राप्त होताहै और पापी ग्रहकरकें युक्त और स्वामी निर्बल और क्रूरके नवांशमें स्थित होवे तब विद्या और नम्रता और बुद्धि और राजासंमानकरकें रहित होताहै ४

और जिसके जन्ममें चतुर्थका स्वामी लग्नमें और लग्नका स्वामी चतुर्थमें स्थित होवें अथवा आपसमें, देखते होवें वायुक्त होवेंतवतिसकेचतुष्पदजन्मताहैऔरराहुकेतुकर्केयुक्तदृष्टहोवेंतववकराजन्मताहैऔरवृहस्पतिशुक्रचद्रमाकर्केयुक्तदृष्टहोवेतवगौजन्मतीहै औरशनिकर्केदृष्टयुक्तहोवेंतवमहिषी जन्मतीहै और लग्नपति दशममें होवे तव पैरोंसें जन्मताहै और लग्नपति लग्नमें स्थित होवे तव सर्प जन्मताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें दूसरे और सप्तम स्थानमें और पंचम और चतुर्थ केस्वामी पापग्रहोंकर्के दृष्ट अथवा पापग्रहोंकर्के युक्त होवें और पुरुषग्रहोंके द्रेष्काणमें पुरुषग्रह होवें तव वांदर सूर बिडालसें लेकर्के जन्मतेहैं ६ अववृहज्जातकसेंकहतेहैं जन्मलग्नसेंपचम सप्तम स्थानमेंशुभग्रहहोवें और स्वामी युक्त होवें वा देखते होवें अथवा चद्रमासें इसी प्रकारकर्केहोवें तव पुत्र और स्त्रीका सुख होता

लग्नेयानपतौसुखेतनुपतौदृष्टेथवाखेचरैः संयुक्तेतुचतुष्पदस्यजननंराहुध्वजाभ्यामजः गोजन्मार्यसितेंदुभिश्चमहिषीमंदेनदृष्टेयुतेजातःपादपुरःसरंतनुपतिर्मानितनौभोगिराट् ५ वित्तास्तगौपंचमयाननाथौपापेक्षितौपापसमन्वितौवा पुंसस्त्रिभागेपुरुषग्रहेंद्रेजाताःकपिक्रोडविडालकाद्याः ६ होरायां लग्नात्पुत्रकलत्रभेशुभपतिप्राप्तेथवालोकिते चंद्राद्वायदिसंपदस्तिहितयोर्ज्ञेयोन्यथासंभवः पाथेनोदयगेरवौरविसुतेमीनस्थितेदारहा पुत्रस्थानगतश्चपुत्रमरणंपुत्रोवनेयच्छति ७ पुत्रस्थानपतौतुवानवमपेलग्नात्कलत्रेथवा युग्मर्क्षेशशिशुक्रवीक्षितयुतेपुत्रीजनोजायते पुंवर्गेपुरुषग्रहेक्षितयुतेजातस्तुपुत्राधिको जीवात्पंचमराशितश्चतनयप्राप्तिंवदेद्देशिकः ८ शुक्रेंदुवर्गेसुतभेविलग्नाच्छुक्रेणचंद्रेणयुतेथदृष्टे पापैरयुक्ते वहुपुत्रशालीशन्यारदृष्टेसतिपुत्रहीनः ९

है और लग्नसें और चंद्रमासें सप्तम पंचम भाव शुभ स्वामीकर्के युक्त दृष्ट नहि होवें तव स्त्री पुत्रका संभव नहिहोताहै और कन्याराशिमें लग्नगतसूर्यहोवे और मीनराशिमें शनि स्थित होवे तव स्त्रीका हतकर्ताहै और पंचम स्थानमें भोमस्थित होवे तव पुत्रको हतकर्ताहै ७ और पचम कास्वामी वा नवमका स्वामी लग्नसेंसप्तमस्थानमें वायुग्म राशिमें चद्रमाशुक्रकर्के दृष्ट युक्त होवें तव कन्या जन्मतिहैं और पुरुष ग्रहके वर्गमें और पुरुष ग्रहके देखनें सें वा योगसें वहुत पुत्रों वाला होताहै और वृहस्पतिसें पंचमराशि येहि तिसेंत पुत्रप्राप्तिःकहे८ और जिसकेजन्मलग्नसे पंचमराशि शुक्र औरचद्रमाके वर्गमे स्थित होवे अथवा शुक्र चंद्रमाकर्के युक्त दृष्ट होवे और पापग्रहकर्के नहि युक्तहोवेतव वहुत पुत्रोंवाला होताहै और शनिमंगल कर्के देखाहोवे तव पुत्रहीन होताहै ९

श्रौर जिसकेजन्मसमयमेंपुत्रभावसेंसप्तमराशिमेंश्रौरनवांशमेंअर्थात् ११ स्थानमेंपंचमेशहोवेश्रौरशुभ ग्रहकर्केयुक्तदृष्टहोवेअथवाकेंद्रत्रिकोणमेंहोवेतवपुत्रकीप्राप्ति होतीहै श्रौर पंचमकास्वामी अपनी राशि में होवे तव थोडे पुत्रोंवाला होताहै श्रौर पचमेशके नवांशकास्वामी अपनी राशिमें वा अपने नवां शमें स्थित होवे तव एक पुत्रवाला होताहै १० श्रौर जिसके जन्मकालमें सप्तमकास्वामी पंचमभा वमें स्थित होवे सो पुत्रहीन अथवा स्त्री रहित होताहै श्रौर पचमभावमें छठे अष्टमें वाहरमें स्थानमें पापीग्रह होवें तव कुलकानाशकर्त्ताहैंश्रौर पंचमराशिमें राहुवाराहुकी राशिकास्वामी ६ ८ १२ स्थानमें स्थितहोवेतवपुत्रकों हतकर्त्ताहै श्रौरलग्नेशपचमस्थानमेंश्रौरपचमेश लग्नमें स्थितहोवे तवदत्तपुत्रकोंग्रहण

पुत्रप्राप्तिरनंगभेसुतगृहात्सौम्यस्यराश्यंशकेतन्नाथेशुभखेटवीक्षितयुतेकेंद्रत्रि कोणेथवा स्वक्षेत्रोपगतेतुपुत्रगृहपेजातोल्पपुत्रोभवेत् पुत्रेशांशपतिःस्वभांश कगतोयद्येकपुत्रंवदेत् १० पुत्रस्थेमदनाधिपेवितनयोजायाविहीनोथवापुत्रा दष्टमशत्रुरिःफगृहगाःपापाःकुलध्वंसकाःराहुर्नंदनराशिगस्तदधिपेदुः स्था नगेपुत्रहापुत्रस्थेतनुपतनौसुतपतौगृण्हातिदत्तात्मजम् ११ तद्भावरा शियुतकारकवर्गमूलात्गृण्हातिदत्ततनयंपरतस्तुखेटात् १२ केंद्रत्रिकोण गृहगःसुतपःशुभर्क्षेसौम्यान्वितोयदिसुतंसमुपैतिवाल्ये ॥ भोगीशयुक्तसुतरा शिपभुक्तिजातःस्वल्पायुरेतिफणिभुक्तिभवश्चिरायुः १३ दुःस्थौविलग्नसुतपौसमुपेतिपुत्रंदत्तात्मजंचशुभखेचरवीक्षितौचेत् ॥

कर्त्ताहै ११ श्रौर जिसके जन्मसमयमेंलग्नश्रौरपंचमभावकेस्वामीदोनोंदुःस्थानमें ६ ८ १२ स्थितहोवें श्रौर शुभग्रहकर्के देखे होवें तव दत्तक पुत्रकोंप्राप्तहोताहै श्रौर पचमभावमेंयो राशितिसको कारक भी ग्रह जिसजातीका होवें वा जैसासवधी होवे तिसकर्के दत्तपुत्रकोंग्रहणकर्त्ताहै १२ श्रौर जिसकेज न्मसमयमें पचमघरकास्वामी केंद्र १ ४ ७ १० त्रिकोण ९ ५ स्थानमें स्थित शुभग्रहकी राशिमें होवेश्रौरशुभग्रहकर्केयुक्तहोवे सो वाल्यावस्थामेंपुत्रकों प्राप्तहोताहैश्रौरजिसराशिमेंराहुस्थित होवे तिसके स्वामीकी दशांतर्दशामें जन्मे तव थोडी आयुषावाला होताहै श्रौर राहुकीदशांतर्द शामें जन्मे तव वडीआयुषावालाहोताहै १३

और पंचम भावका स्वामीऔरदूसरे भावका स्वामीदोनों बलहीन होवें और पंचमराशिमें पापीग्रहदेखता होवे सो अनेक स्त्रीयों वाला भी मनुष्यनिश्चयकर्के पुत्रकों नहि प्राप्तहोताहै और यद तिसकी स्त्री पुत्रप्राप्तियोगमें जन्मीहोवे अथवाशुभग्रह पंचममेंस्थित छठे भावके स्वामी कर्के देख्या होवे तव जारकर्केपुत्र जन्मतीहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पचमभाव और पचमभावका स्वामी वा वृहस्पती शुभग्रहकर्के देख्याहोवे और युक्त होवे तव पुत्रकोंप्राप्तहोताहै इसमें संशय नहिहै १५ औरलग्नेश पंचमभावमेंस्थित होवे और पंचमका स्वामीबली होवे और वृहस्पती पूर्णबली होवे तव पुत्रप्राप्तिमें संशय नहिहै १६ और पचमस्थानमें पूर्णब-

पुत्रस्थानपवित्तपोंगतवलौपापेक्षिते पुत्रभैजातोनेककलत्रवानपिसुताभावसमेतिध्रुवम्तज्जायायदिपुत्रयोगजनितासौम्येनवापचमेषष्ठेशनानिरीक्षितेसुतवतीजारेणसजायते१४ पुत्रस्थानेतदीशेवागुरौवाशुभवीक्षितेशुभग्रहेणसंयुक्तेपुत्रप्राप्तिर्नसंशयः१५ लग्नेशेपुत्रभावस्थेपुत्रेशेवलसंयुते परिपूर्णवलेजीवेपुत्रप्राप्तिर्नसंशयः १६ पुत्रस्थानगतेजीवेपरिपूर्णवलान्विते ॥ लग्नाधिपेनसदृष्टेपुत्रप्राप्तिर्नसंशयः १७ वैशेषिकांशकेजीवेपुत्रेशेचतथास्थिते ॥ शुभनाथेनसदृष्टेपुत्रेतत्प्राप्तिमादिशेत् १८ दशमेशीतगुर्धूनेभृगुजःपापिन सुखे ॥ तस्यसंततिविच्छेदोभविष्यतिनसंशयः१९ षष्ठाष्टमस्थोलग्नेशःपापयुक्तःसुताधिपः ॥ दृष्टोवाशत्रुनीचस्थैःपुत्रहानिंवदेद्बुधः ॥ २० ॥

ली वृहस्पती होवे और लग्नेश कर्के देख्या होवें तव पुत्रप्राप्तिमें संशयननहिहै १७ और वैशेषिकांशमें वृहस्पति और पुत्रभाव ९ कास्वामीस्थित होवें और नवमभावके स्वामी कर्के दखे होवें और पंचमभावमेंस्थित होवें तव पुत्रकी प्राप्ति होतीहै १८ और दशमस्थानमें चंद्रमा और सप्तममें शुक्र और चतुर्थभावमें पापीग्रह होवें तिसकोसंतानका विछेद होजाताहै आगे नहि चलता इसमें संशय नहिहै १९ और जिसके जन्मसमयमें छठे और आठमें स्थानमेंलग्नका स्वामी होवे और पंचमेश पापीग्रह कर्के युक्त होवे अथवा शत्रु नीचस्थ ग्रहोंकर्के देख्या होवें तव पुत्रकोहानि होतीहै ॥ २०

और जिसके जन्मसमयमें लग्न ॥ सप्तम ॥ नवम ॥ द्वादश स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित होवें और
शत्रुकी राशिमें और शत्रुके वर्गमें स्थितहोवें तब वंशका नाशकरेंहै २१ और सतान
की इच्छावाला इतनीस्त्रियोंकात्यागकरे वंध्या १ वृद्धा २ और अत्यतकृश अंगों वाली ३ औ
र युवावस्थाकोजो नहिंप्राप्त ४ और रोगिणी ५ और पुष्पसें रहित ६ और विवा
दवाला ७ और अत्यंतस्थूलदेहवाली ८ इन्हों आठस्त्रीयोंकात्यागकरे ॥ २२ ॥ और बृहस्पति
और लग्नेश और सप्तमेश और पंचमेश इन्होंके निर्बल होयाअनपत्य योग कहे २३, और पं
चमस्थानमें पापीग्रहस्थित होवे और पंचमेश नीचराशिमें स्थित होवे और शुभदृष्टिसें रहितहोवे
तब अनपत्ययोग कहे २४ और बृहस्पति और लग्न और चंद्रमा इन्हसें पंचमभावमें पापीग्रह
होवें और शुभदृष्टि और शुभयोगसें रहित होवें तब अनपत्यताहोतीहै २५ और पंचम स्थान

लग्नसप्तमधर्मांत्यराशिगाःपापखेचराः ॥ सपत्नराशिवर्गस्थावंशविच्छेदका
रिणः २१ वंध्यावृद्धकृशाबालारोगिणीपुष्पवर्जिता ॥ कर्कशास्थूलदेहाचनार्यौ
श्चैपरिवर्जिताः २२ गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषुच ॥ सर्वेषुबलहीनेषु
वक्तव्यात्वनपत्यता २३ पुत्रस्थानगतेपापेतदीशेनीचराशिगे ॥ शुभदृ
ष्टिविहीनेतुवक्तव्यात्वनपत्यता २४ गुरुलग्नहिमांशूनांपंचमस्थैरशोभनैः॥
शुभदृग्योगरहितैर्वक्तव्यात्वनपत्यता २५ पुत्रस्थानगतेपापेतदीशेपापम
ध्यगे ॥ सौम्यदृग्योगरहितेवक्तव्यात्वनपत्यता २६ पापमध्यगतेजीवेपुत्रे
बलविवर्जिते ॥ सौम्यदृग्योगरहितेवक्तव्यात्वनपत्यता २७ पुत्रस्थानेबुधक्षेत्रे
मंदक्षेत्रेथवायदि ॥ मांदिमंदयुतेदृष्टेतदादत्तादयःसुताः २८ मीनस्थोत्वल्पस
तानश्चापस्थः कृच्छ्रसंततिः ॥ असंततिः कुलीरस्थोजीवःकुंभेनसंततिः २९ पु
त्रस्थानेकुलीरेवामीनेकुंभेशरासने ॥ स्थितोयदिसुराचार्यस्तत्फलंकुरुतेनृणां३०

में पापीग्रह होवे और पचमेश पापग्रहोके मध्यमें स्थित होवे और शुभग्रहकी दृष्टि और योग
सें रहित होवे तब अनपत्यता होतीहै २६ और पापी ग्रहोंके मध्यमें बृहस्पति
होवे और पचमेश बलहीन होवे और शुभग्रहकी दृष्टि और योगसें रहित होवे तबअनपत्यता
कहे २७ और पचमस्थानमें मिथुनकन्या मकर कुंभराशि होवे और शनि और गुलिकओर
राहुकरकें युत होवे तब दत्तकादि पुत्र होतेहै २८ और बृहस्पति मीनराशिमेंस्थितहोवे तब थो
डि सतान होतीहै और धनूराशिमहोवे तब क्लेश युत संतान होतीहैऔर कर्कटराशिमेंहोवे तब न
हिं सतान होतीहैऔर कुंभमें बृहस्पति होवे तब भी नहिं सतानहोतीहै २९ और कहतेहैंपंचम
स्थानमें कर्कट वा मीन वा कुंभ वा धनू राशिमें बृहस्पति स्थित होवे तब पूर्वोक्त फलमनुष्योंकों
करैहै ३०

और बृहस्पति पापग्रहकर्के देख्याहोवे तव देवताकेशापसें पुत्रका क्षयहोताहै और छठेभावके स्वामी कर्के युक्तदृष्ट होवेतव ब्राह्मणके शापसें पुत्रक्षयहोताहै ३१ और पंचमेशमंगलकर्के युत होवे और छठेभावकेस्वामीकर्केदेख्या होवेऔरशुभग्रहकोदृष्टिसेंरहितहोवेतवशत्रुकेदोषसें पुत्रकाक्षय होताहै ३२ और जिसके जन्मसमयमें नवमस्थान पापीग्रह कर्के युक्त होवे और पंचमेश शनिकर्के युक्त होवे और नवम पंचमस्थान गुलिक कर्के युक्त होवे तब पितरोंके दोषसेंपुत्रका क्षय होताहै ३३ और च तुर्थस्थानमें पापीग्रह होवे और पंचमेश शनिकर्के युक्त होवे और द्वादश और अष्टम स्थानमें पा पीग्रह होवे तब मातृदोषसें पुत्रका क्षय होताहै ३४और पंचमस्थानमें राशि वा पंचमका स्वामी ब लसें रहित राहु और केतुकर्के युक्त और दृष्ट होवें तब सर्पके दोषसें पुत्रका क्षय होताहै ३५ और

पापग्रहेणसंदृष्टेदेवशापात्सुतक्षयः ॥ षष्ठाधिपयुतेदृष्टेविप्रशापात्सुतक्षयः ३१
सुतेशेकुजसंयुक्तेरिपुनाथेनवीक्षिते ॥ शुभदृष्टिविहीनेचरिपुदोषात्सुतक्षयः ३२ ॥
नवमेपापसंयुक्तेमंदयुक्तेसुताधिपे त्रिकोणेमांदिसंयुक्तेपितृदोषात्सुतक्षयः ३३
मातृस्थानगतेपापेसुतेशेमंदसंयुते, व्ययनाशगतेपापेमातृदोषात्सुतक्षयः ३४
राहुकेतुयुतेदृष्टेपंचमेबलवर्जिते तदीशेवातथाप्राप्तेसर्पदोषात्सुतक्षयः ३५ गुरु
पुत्रेशदारेशैर्भूमिगःसंयुतोयदि दुर्दैवपीडयापुत्रपुत्रीनाशंवदेद्बुधः ३६ पुत्रस्थान
गतःकश्चित्परिपूर्णबलान्वितः अदृष्टःपुत्रनाथश्चेत्तदादत्तादयःसुताः ३७ पाप
क्षेत्रगतेचंद्रेपुत्रेशेधर्मराशिगेदत्तपुत्रस्यसंप्राप्तिर्लग्नेशस्तत्त्रिकोणगः ३८ युग्मो
दयेपुत्रनाथश्चतुर्थस्थानगोथवा मदांशकसमारूढोदत्तपुत्रोभविष्यति ३९ यु
ग्मांशभानुजांशेवापुत्रेशेर्केंदुजान्विते दत्तपुत्रस्यसंप्राप्तिस्तस्मिन्योगेभविष्य
ति ४०

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति और पंचमेश और सप्तमेशकर्के मंगल युक्त होवे तब दुर्दैवताकी पी डाकर्के पुत्र कन्या नाशको प्राप्त होतेहैं ३६ और पुत्रस्थानमें कोई ग्रह बलीहोयकर्के स्थित होवे और पंचमेश तिसकर्के नहिं देख्या होवे तब दत्तादिक पुत्र होतेहैं ३७ और जिसके जन्मकालमें पापीग्रहकी राशिमें चंद्रमा स्थित होवे और पंचमेश नवम स्थानमें होवे और तिसके त्रिकोण ९।५ स्थानमें लग्नेश होवे तब दत्तपुत्रकी प्राप्ति होतीहै ३८ और युग्मलग्नमें समलग्नमें पंचमेश स्थित हो वे अथवा चतुर्थस्थानमें स्थित होवे और शनिके नवांशमें होवे तब तिसके दत्तक पुत्र होताहै ३९ और समराशिके वा शनीके नवांशमें पंचमघरका स्वामी सूर्य चंद्रमाकर्के युक्त होवे तब तिसयो गमें दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होतीहै ४०

और जिसके जन्मकालमें शनीके नवांशमें पंचमेश स्थित होवे और बृहस्पति और शुक्र अपनी राशिमें स्थित होवें तब प्रथम दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होतीहै और पी छेसे अपनी स्त्री कर्के पुत्र होताहै ४१ और जिसके जन्मसकालमें शनिके नवांशमें ग्रह स्थित होवें और शुक्लपक्षमें अधिकबली होवें और बृहस्पतियदचतुर्थस्थानमें स्थित होवे तब दत्तक पुत्र कर्के संतान वाला होताहै ४२ और मंगल लग्नमें स्थित होवे और सूर्य अष्टममें स्थित होवें और चतुर्थमें शुभग्रहकी दृष्टि होवे तब चिरकालमें पुत्र होताहै ४३ और लग्नमें शनिहोवे और अष्टममें गुरुहोवे और पंचमभाव निर्बल होवे और बाहरमें मंगलहोवे तब कालांतरमें पुत्रहोताहै ४४ औरकहतेहैं पंचभावसें पुत्रोंकों देखे और तीसरे भावसें भाईयोंकों देखे और सप्तमभावसें स्त्रीयोंकों

मंदांशेपुत्रराशीशः स्वराशौगुरुभार्गवौ पूर्वंदत्तसुतप्राप्तिःपुनर्नार्याःपुनःसुतः ४१ मंदांशकास्थिताःखेटाःशुक्लपक्षबलाधिकाःगुरुर्यदिसुखस्थानेदत्तपुत्रेणसंत तिः४२विलग्नस्थेधरासूनौनिधनस्थेदिवाकरे सुखेवाशुभसंदृष्टेपुत्रःकालांतरेभ वेत् ४३ लग्नेदिनेशतनयेरंध्रस्थानगतेगुरौपंचमेदुर्बलेरिःफेभौमेकालांतरेसुतः ४४ पुत्रान्पंचमभात्तृतीयभवनात्भ्रातॄतान्कलत्रात्स्त्रियोदासीश्चक्षितिराशितःस्व भवनाद्दासांश्चमित्राणिच ॥ यावांश्चैवनवांशकान्शुभदृशाहत्वाततथारोपयि योगव्योमचरैर्विभज्यतुतथाभूताश्चपुत्रादयः ४५ पुत्रसोदरभंकलत्रमुदयं व्यो मांकाशकराप्तपुत्रसहजस्त्रीदासदासीसुहृत्संख्याःपापनभोगदृग्बलभवाःपुत्रा दिनाशप्रदाः ४६ यानंचराशिंविनाताल्लिप्ताःशुभखेटदृग्बलहताःषष्ठ्याविभक्ताःक्रमात् ॥

देखे और चतुर्थभावसें दासीयोंकों और लग्नसेंदासोंकों औरमित्रोंकों विचारेइन्होंपूर्वोकभावोंमें जितने नवांश भुक्तहोवें तिनकों शुभग्रहकी दृष्टिकर्के गुणदेवे और भिन्न स्थापनकरे और संपूर्ण योग कारक ग्रहोंकोदृष्टिके योगसें भागलेवे जो लब्धआवे उतने पुत्रादिक तिसके होतेहैं ४५ और कहतेहे पचम और तृतीय भाव और सप्तम और लग्न और चतुर्थ भाव इन्होंकियां राशियोंकों त्यागकर्के अंशादियोंकिया कला बनावे और तिन्होंकों शुभग्रहके दृग्बलकर्के गुणे और साठ ६० सें भागलेवेफेरक्रमसें एक १ पाच ५ एक १ पांच ५ एक १ दो २ सें भागकर्के पुत्र १ भ्राता २ स्त्री ३ दास ४ दासी ५ मित्र ६ कीसंख्या कर्के तिन्हका सुखकहे और पापी ग्रहोंके दृग्बलसें गुणे पीछे जो संख्या होवे उतने पुत्रादि नाशकों प्राप्त होतेहैं ४६

श्रौर कहतेहैं पंचमेश श्रौर लग्नेशस्पष्टकायोग राश्यशादि तिसकेनवम १ पचम५स्थानमें योराशि तिसमेंजवगोचरकके वृहस्पति श्रावे तव पुत्रकीप्राप्तिहोतीहै श्रौर वृहस्पति शुक्र श्रौर सूर्य चद्रमाके स्पष्टका योग राशिके जितने नवांश गत होवें उतनेपुत्रकहे श्रौर पंचमनवम दशम एकादश भावमें जितने नवांशगत होवें उतने पुत्रकहे श्रौर पंचम नवम चतुर्थमें स्थित यो ग्रह स्पष्ट तिनकों एकत्र कर्के द्वादशका भागदिये पीछे जो राशी रहे तिस राशीमें गतनवांश तुल्य पुत्र कहे ४७ श्रौर कहतेहैं वृहस्पतिसें श्रौर चद्रमासें श्रौर लग्नसें यो पचमस्थानहै सो पुत्रके देने वालाहै श्रौर तिससें जो नवमस्थान तिसके स्वामीकी दशातदंशा कालमें पुत्रकी प्राप्ति कहे श्रौर पचमेश श्रौर सप्तमेश स्पष्टका योग करे श्रौर तिसराशिमें युक्त यो ग्रह श्रौर देखता यो ग्रह होवे

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुतेराश्यंशकोणगुरोपुत्राप्तिःसचिवेंद्विनस्फुटयुतेराश्यंशसंख्याःसुताः ॥ धीधर्मावनिनायकस्फुटचयप्राप्तांशसंख्याथवाधीधर्मक्षितिगःस्फुटैक्यभवनेयातांशतुल्याःसुताः ॥ ४७ ॥ जीवाच्चंद्रमसोविलग्नभवनात्पुत्रप्रदंपंचमंतस्माद्धर्मगृहचतत्पतिदशाभुक्तौसुताप्तिंवदेत् ॥ पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुतेयत्तारकातद्दशातत्खेटान्वितवीक्षकग्रहदशाभुक्तिश्चपुत्रप्रदा ४८ पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुताद्दुःस्थानपाद्दुर्बलाद्दुःस्थास्तत्परिपाकभुक्तिसमयेपुत्रस्यनाशवदेत् ॥ चत्वारोवलशालिनोयदिशुभास्तत्पाकभुक्त्यतरेपुत्राप्तिंसुतसपदःप्रभुजनप्रीतिंचकुर्वंतिते ४९ पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणांतत्कालजस्फुटयुतांशकराशियातोवागीशभानुतनयौयदिगोचरेण जातस्यपुत्रजनमृत्युकरौभवेताम् ५०

तिसकी दशातदंशामें पुत्रकी प्राप्ति कहे ४८ श्रौर पचमस्थान श्रौर पंचमका कारक श्रौर पंचममेंस्थित ग्रह श्रौर पंचमको देखनेवाला ग्रह ६।८।१२ स्थानका स्वामी होवे श्रौर बल हीन होवे तव तिसकी दशादंशा कालमें पुत्रका विनाश कहे श्रौर जिसके जन्ममें चारहि पचमेशसें लकर्के वली होवें श्रौर शुभग्रहहोवें तिनकी दशातदंशामे पुत्रकी प्राप्ति श्रौर संपदा श्रौर राजासें प्रीति होतीहै ४९ श्रौर पंचमेश श्रौर पंचमका कारक श्रौर पचममें युक्त श्रौर पचमको देखने वाला इन्हों चार ग्रहोंकोस्पष्ट कर्के योग करेफेर द्वादश तष्टत कर्के शेषजो राशि तिसराशिके नवांशमें वा तिस राशिमें वृहस्पति श्रौर शनि जव गोचर कर्के स्थित होवें तव पुत्रकों मृत्युभय करतेहैं ५०

और दशमभावका स्वामी शुभग्रह होवे और दशम भावका कारक शुभ ग्रह कर्के युक्त होवे अथवा दशम भाव शुभग्रह कर्के युक्त होवे तव पिताका सुख बुद्धिमान् कहे ५१ और दशमका स्वामी पारावतादि षट्वर्गमें स्थित होवे और तैसेहि दशमका कारक होवे अथवा अपने उच्चमें वा मित्रके नवांशमें स्थित होवे तव पिताकी वडी आयुषा कहे ॥ ५२ और दशमेश और दशमका कारका क्रूरके वा नीचके नवांशमें स्थित होवे और शनि गुलिक राहु कर्के युक्त होवे तव पिताको दुःख कहे ५३ और दशमका स्वामी शुभग्रह होवे और नीच और अस्त और शत्रुकी राशिमे स्थित होवे अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवे तव पिताका दुःख कहे ५४ और पिताके दशम स्थानमें जो-राशि तिसमें जो जन्मताहै सो पिताके समान गुणों वाला होताहै और पिताके जन्मलग्नसें तीसरी राशिमें यो जन्मताहै सो पिताके वश्य होताहै ५५ और पिताके लग्नसें छठे आठमें लग्नमें जन्मता

पितृस्थानेश्वरेसौम्येकारकेशुभसंयुते ॥ भाववाशुभसंयुक्तेपितृसौख्यंविनिदिशेत् ५१ पारावतादौतन्नाथेकारकेचतथास्थिते ॥ स्वोच्चमित्रांशकेवापि पितृदीर्घायुरादिशेत् ५२ क्रूरनीचांशकस्थेवाभावनाथेचकारके ॥ मदमांद्यगुसंयुक्तेपितृदुःखंविनिर्दिशेत् ५३ सौम्येतदीश्वरेवापिनीचमूढारिराशिगे ॥ क्रूरषष्ट्यंशकेवापिपितृदुःखंविनिर्दिशेत् ५४ पितृकर्मगृहेजात·पितृतुल्यगुणान्वितः ॥ पितृजन्मतृतीयर्क्षेजातःपितृवशानुगः ५५ पितृषष्टाष्टमेजातः पितृशत्रुर्भविष्यति तद्भावपेविलग्नस्थेपितुश्श्रेष्ठोभवेत्सुतः ५६ लग्नादायतपस्थिताः शनिमहीपुत्रागवोमृत्युदास्तातस्यार्कजभूसुतौनिधनदौवालस्यरंध्रास्तगौ मानेत्रायदिपंचमेकुजरविछायाकुमारेंदवे·सद्योमातुलतातवालजननीनाशप्रकुर्वंतिते ५७ सवलेपितृभावेशेलग्नेशेंदुचतुर्थपाः ॥ दुर्वलायदितन्मातुर्गर्भतोमरणंविदुः ५८

है सो पिताका शत्रु होताहै और पिताके जन्मलग्नेश जन्मे तव पितासे श्रेष्ठ होताहै ५६ और जिसके जन्मसमयमें एकादश और नवमस्थानमें शनि मगल राहु स्थित होवें तव पिताकों मृत्युकर्त्ते हैं और जिसके जन्मलग्नमें शनि मंगल दोनों सप्तम अष्टम स्थानमें स्थितहोवें तव बालकको मृत्यु कर्त्ते हैं और जिसके दशम और पंचम भावमें मंगल सूर्य शनि बुध चन्द्रमा स्थित होवे तव क्रमसें मातुलादि सबंधियोंको हत कर्त्ते हैं जैसे दशम पचम स्थानमें मगल होवे तव मामेको हत कर्ताहै और सूर्य पिताको हत कर्ताहै और शनि वालकको हत कर्ताहै और चद्रमा माताको हत कर्ताहै ॥ ५७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें दशमेश वली होवे और लग्नेश चद्रमा चतुर्थभावका स्वामी इहे तीनों निर्बल होवें तव तिसकी माता गर्भसें मरतीहै ॥ ५८

और जिसकेजन्मसमयमें नवमसेंअष्टमकास्वामीअथवा छठेकास्वामी शनिकेवेधीककेंविद्ध होवे सो पिताकी मृत्युकर्त्ताहै ५९ और जिसराशिऔरनवांशमेंसूर्यस्थितहोवेतिनमेंयोवलीग्रहतिससें जब नवम पंचम सू्र्य स्थित होवे तब पिताका मरण कहे और चंद्रमाकी राशि और नवांशके वलसें माताका मरणकहे६० औरजन्मकालमेंजिसराशमेंसूर्यस्थित होवेवासूर्यकेआरूढनवांशऔरद्वादशांशमें जोराशि हे तिन्हमें जब चंद्रमा प्राप्त होवे तब यथाक्रमकर्के माता और पिताका मरणहोताहै ६१ और ६ ८ १२ स्थानमें सूर्य सिंह मीनकेद्वादशांशमें स्थित होवे तब जन्मसें प्रथमहि पिताकोंमृत्यु करताहै ६२ और स्पष्ट गुलिकसेंस्पष्ट सूर्यकों घटाए पीछे यो राशि रहे तिस राशिके नवम ९ पंचम स्था

नवमादष्टमाधीशोनवमात्षष्ठपोथवा शनिवेधयुतःक्रूरःसभवेत्पितृमृत्युदः ५९ दिनेशस्थितराश्यंशप्राणितःकोणगेरवौ पितृमृत्युर्मातृमृत्युरिंदुस्थांशर्क्षयोर्बलात् ६० भानुस्थितांशवारूढनवांशद्वादशांशभम् गतेचंद्रेभवेन्मृत्युर्मातापित्रोर्यथाक्रमम् ६१ दुष्टस्थानगतेभानौसिंहांत्यद्वादशांशके. जातश्चजननात्पूर्वपितृमृत्युःप्रयछति ६२ मार्तंडगुलिकस्फुटादपहृतेराशित्रिकोणेशनौरोगंतज्जनकस्यदेवसचिवेमृत्युस्तदंशोपगे ॥ आदित्येयमघंटकस्फुटयुतेतद्राशिकोणेगुरौरोगंतज्जनांशकेमरगुरौतातस्यनाशंवदेत् ६३ केंद्रेचरर्क्षेचंद्रेवापितरौनदहेत्सुतःकेंद्रेद्विदेहगौतौचेन्मृतिदाहौद्विकालगौ ६४ अदृश्ययातौपितृमातृनाथौपित्रोर्मुखादर्शनदौभवेताम् पुत्राधिपोदृश्यगृहोपगश्चेत्पुत्राननादर्शनदोंत्यकाले ६५

नमें जब शनि आवे अथवा वृहस्पति आवे अथवा तिसनवांशमें आवे तब पिता मृत्युकों प्राप्त होताहै और स्पष्ट सूर्य में स्पष्ट यमघटका योग करे और तिसराशिमें वा नवांशमें वृहस्पति आवे तब पिताकों रोग और मरण होताहै ६३ और केंद्रस्थानमें सूर्य वा चंद्रमा चर राशिमें स्थित होवे तब पिता माताको पुत्र अपने हाथकर्के दग्ध नहिं कर्त्ताहै और केंद्रमें सूर्य चद्रमा द्विस्वभाव राशिमें स्थित होवें तब दोवारकर्के मृत्युदाह होताहै ६४ और जिसके जन्मकालमें दशमेश और चतुर्थेश अदृश्य नवांशमें स्थित होवे सो पिता माताके अंत्य कालमें मुख नहिं देखताहै और पंचम भावका स्वामी अदृश्य राशिमें होवे तब अंत्य कालमें पुत्रका मुख नहि देखताहै ६५

श्रौ जिसकेजन्मसमयमें पचमेश६।८ १२स्थानमें स्थित होवेवा अदृश्य भागमे स्थित होवे तव
बडोमंद वुद्धिकों प्राप्तहोताहै औरजिसके जन्मकालमें केंद्र १।४।७।१० कोणे ९॥५ स्था
नमें शुभग्रह वृस्पतिकर्केयुक्त होवे और वली होवे तव वुद्धिमान् शास्त्रके जाननेवाला होत
है ६६ और जिसकेजन्मकालमेंवृहस्पति मृदुषष्ट्यंशमें स्थितहोवे सो त्रिकालज्ञभूतभविष्य वर्त्त
मानकेजाननेवालाहोताहै अथवा गोपुरादिअंशमें और शुभग्रहकेनवांशमेंशुभग्रहकर्के देख्या हो
वे तव त्रिकालज्ञ होताहै ६७ पचम स्थनमें पापीग्रह होवे तव हृदयकर्केरोगी होताहै और
चतुर्थ स्थानमें क्रूर षष्ट्यंशमें केंद्र गत मगल होवे तव हृद्रोगी होताहै ६८ और पंचमका
स्वामि शुभग्रहके नवांशमें स्थित होवे सो नित्य प्रतिअन्नदान कर्ताहै और शुभग्रहकर्के युक्त

दु स्थेवुद्धिस्थानपेदृश्यगेवाजातोमंदप्रायवुद्धिंसमेति केंद्रेकोणेसौम्यवागीशयु
क्तेवीर्योपेतेवुद्धिमानिंगितज्ञः ६६ त्रिकालज्ञोभवेज्जीवेस्वांशेमृद्वंशसयुते , गोपु
राद्यंशकेवापिशुभांशेशुभवीक्षिते ६७ हृद्रोगीपंचमेपापेसपापेचरसातले
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तेशुभदृग्योगवर्जिते ६८ अन्नदानपरोनित्यंपंचमेशेशुभांशके
शुभखेचरसंयुक्तेभूमिजेकेंद्रमाश्रिते ६९ सर्वार्थचिंतामणौविशेषः वुद्धिस्थाना
धिपेभौमेगुरुशुक्रनिरीक्षिते मेषनंदांशकेवापिन्यायशास्त्रविशारदः ॥ ७० ,
वुद्धिस्थानाधिपेसौम्येस्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ गुरुदृष्टिसमायुक्तेमीमांसाध्याप
नेरतः ७१ कारकस्थितराश्यंशराशीशेकेंद्रकोणगे ॥ वुद्धीश्वरेणसंदृष्टेती
व्रवुद्धिंविनिर्दिशेत् ७२ शुभग्रहाणांमध्येतुवुद्धिराशौशुभान्विते ॥
गुरौकेंद्रत्रिकोणेवावुद्धिमार्गविशारदः ॥ ७३ ॥

विशेष कह तेहैंप
मगल केंद्रमें स्थितहोवें तव अन्नदान कर्ताहै ६९ और सर्वार्थचिंतामणीमे
चमस्थानका स्वामी मगल होवे और वृहस्पति शुक्र कर्कदेख्या होवे अथवा मेषके नवांशमें स्थित
होवे तव न्ययशास्त्रके जानने वाला होताहै ७० और पचमभावका स्वामी वुध होवे और अपनेउच्च
और मित्रऔर अपनीराशिकेवर्गमें स्थित होवे औरवृहस्पति कर्क देख्या होवे तव मीमांसाशास्त्रके
पढानेमें युक्त होताहै ७१ और जिसराशीमेंपचमभावकाकारक स्थित होवे तिसराशीका स्वामीकेंद्र
॥ १।४।७।१०॥ कोण ॥ ।९।५॥ स्थानमें स्थित होवे और पचमेश कर्क देख्या होवे तव
तीव्रवुद्धि वाला होताहै ७२ और पचमभाव शुभग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के युक्त
होवे और वृहस्पति केंद्रमेअथवा त्रिकोणमेंस्थितहोवे तववुद्धिमार्गमेचतुरहोताहै ७३

और पंचमभावका स्वामीशुभग्रहहोवे औरपंचमस्थानमें वृहस्पतिस्थित होवे और शुभग्रहोंके मध्यमें पंचमभावहोवेतब बुद्धिमान्होताहै७४पंचमभावकास्वामीकेंद्र १।४ ७ । १० स्थानमेंशुभग्रहकर्केयुक्त होवे और उच्चग्रहके योगकोंप्राप्तहोवेतब धारणाशक्तिवालाहोताहै७५ औरपंचमेशऔरपंचमकारक मृदु अंशादियोंमेस्थित होवे और शुभग्रहकर्के देख्या होवे तब धारणादि शक्तिमें चतुर होताहै ७६ और जिसके जन्मसमयमें पचमका स्वामी गोपुरांशमें स्थित होवे सो ऊहापोह करणेमें समर्थ होताहै और पंचमका कारक जिसराशिमें स्थित होवे सो लग्नेश कर्के देख्या होवे तब ऊहापोहमें समर्थ होताहै अर्थात् तर्ककर्के सिद्धांत वस्तुकों जानने वाला होताहै ७७ और जिसके जन्ममें बृहस्पति और पंचमका कारक केंद्र कोण स्थानमें स्थित होवे सो आगे होनें वाले कार्यकों जाननें वाला

बुद्धिस्थानाधिपेसौम्येबुद्धिराशिगतेगुरौ ॥ शुभग्रहाणांमध्यस्थेभावेबुद्धिंविनिर्दिशेत् ॥ ७४ ॥ बुद्धिस्थानेश्वरेकेंद्रेशुभग्रहसमन्विते ॥ उच्चग्रहसमायुक्तेग्रहणादिपटुर्भवेत् ॥ ७५ ॥ मृद्वंशादिसमायुक्तेनाथकारकखेचरे ॥ शुभग्रहेणसंदृष्टेधारणादिपटुर्भवेत् ॥ ७६ ॥ ऊहापोहसमर्थःस्यात्तदीशेगोपुरांशके ॥ कारकांस्थितराशौशेलग्ननाथेनवीक्षिते ॥ ७७ ॥ आगामिसूचकोमंत्रीकारकेकेंद्रकोणगे ॥ भृगुसौम्यसमायुक्तेदृष्टेताभ्यांशुभांशके ७८ अथपंचमेशफलं जन्मप्रदीपे ॥ लग्नगतःपचमपःप्रसिद्धमस्तोकनयकलितम् ॥ शास्त्रविदंगीतविदंस्वकर्मणिपरंनरंकुरुते ७९ पंचमपतिर्धनस्थःक्रूरःखचरोधनोज्झितंकुरुते ॥ गीतादिकलाकलितंकष्टभुजंस्थानयुक्प्रवरम् ८० तनयपतिःसहजगतःसमधुरवाचंस्वबंधुजनविदितम् ॥ कुरुतेसुतास्तदीयाःपरिपालयंतितद्वधूम् ८१

होताहै और शुक्र बुधकर्के युक्त वा दृष्ट शुभ नवांशमें होवे तब आगामी सूचक होताहै ॥ ७८ ॥ अब पचमेशका बारा भावमें फल जन्मप्रदीपसें कहतेहैं और जिसके जन्ममें पचमका स्वामी लग्नमें स्थित होताहै सो प्रसिद्ध और नीतिके जानने वाला होताहै और शास्त्रकों और गीतविद्याकों जानने वाला और अपने कर्ममें रत होताहै ७९ और पचमका स्वामी क्रूर ग्रह दूसरे स्थानमें स्थित होवे तब धनहीन कर्ताहै और शुभग्रह होवे तब गीत कलाकर्के युक्त और कष्टभोगने वाला और स्थानमें प्रधान होताहै ८० और पचमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो मीठा बोलने वाला और सबंधियोंमें प्रसिद्ध होताहै और तिसके पुत्र तिसके वधुयोंकों पालतेहै ॥ ८१ ॥

और जिसके जन्मसमयमें पंचमका स्वामी चतुर्थभावमें स्थित होवे सो पिताके कर्ममें रत होताहै और पिताकके पालित होताहै और माताकी भक्ति करताहै और क्रूरग्रह होवे तब पिता माताको दुःख देताहै ॥ ८२ ॥ और जिसके जन्ममें पंचमका स्वामी पंचममें स्थित होवे सो बुद्धिमानोंमें मानको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ वाणीवाला होताहै और श्रेष्ठ चरित्र वाला और श्रेष्ठ जनोंमें प्रसिद्ध होताहै ८३ और जिसके जन्ममें पंचमेश छठे स्थानमें स्थित होवे सो शत्रुओंकर युक्त और मानकर रहित होताहै और क्रूरग्रह होवे तब रोगकर युक्त और धनकरके हीन निरंतर होताहै ॥ ८४ और जिसके जन्ममें पंचमेश सप्तमस्थानमें स्थित होवे सो पुत्रकर युक्त और श्रेष्ठभाग्यकर युक्त और देवता गुरुका भक्त होताहै और तिसकी स्त्री श्रेष्ठ स्वभाववाली और मीठा बोलने वाली होतीहै

सुपत पातालगत पितृकर्मणिरतंप्रपालितंपित्रा जननीभक्तकुरुतेक्रूरश्चवि
शोधनपितरि ८२ तनयगतस्तनयपतिर्मतिमतांमानिनवचनकुशलम् सुत
कलिबप्रवरजनंख्यातंवैमानवंकुरुते ८३ पंचमपतिश्चपष्ठेशत्रुयुतमानवंमान
हीनंच रोगयुतंधनरहितक्रूरखचर करोतिनरम् ८४ ॥ तनयपतौसप्तमगेस
सुताशुभगाथदेवगुरुभक्ता प्रियवादिनीसुशीलानरस्यचजायतेदयिता ८५
सुतपेनिधनगृहस्थेविसुतंकुरुतेस्त्रियोभवतिसुखभग, नष्टव्यगा सहोत्थास्त
नया सभवंतितथा ८६ सुकृतगतस्तनयपति सुबोधविद्याकविसुगीतज्ञम् नृप
पूजितंसुरूपनाटकरसिकंनरकुरुते ८७ सुतपतिरंबरलीनोनृपकर्माणनृपालक
लितभाव ॥ सत्कर्मरतप्रवरजननीकृतशस्तसुखकुरुते ८८ सुतनाथेलाभ
स्थेशूर सुतवान्सुकृत्यकृतभोगी ॥ गीतादिकलाकलितोनृपलाभोजायतेजात ८९

॥ ८५ और जिसके जन्ममें पंचमेश अष्टमघरमें स्थित होवे सो पुत्ररहित और स्त्रीके सुखमें भगको प्राप्त होताहै और नष्ट और व्यग भ्राता और पुत्रोंको प्राप्त होताहै ॥ ८६ ॥ औरजिसके जन्ममें नवमस्थानमें पंचमका स्वामी स्थित होवे सो सुबोधविद्या और कविता और गीतके जानने वाला होताहै और राजमानको प्राप्त और श्रेष्ठ रूपकर युक्त और नाटक रसोंके जानने वाला होताहै ॥ ८७ । और जिसके जन्मसमयमें पंचमभावका स्वामी दशममें स्थित होवे सो राजाके कर्मकरणे वाला और राजासे प्रीति करणे वाला और श्रेष्ठ कर्ममें रत और श्रेष्ठ होताहै और माताकरके किये श्रेष्ठ सुख तिनको प्राप्त होताहै ८८ और जिसके जन्ममें पंचमेश एकादश स्थानमें स्थित होवे सो शूरवीर और पुत्रवाला और पुण्यभोगने वाला होताहै ॥

ओर गीतादिकलाकेजाननेवालाओर राजासेंलाभकोंप्राप्तहोनेंवालाहोताहै ८९ ओरजिसकेजन्मसमय मेंपंचमका स्वामीवारहमें स्थानमें स्थितहोवे तब क्रूरग्रहककेंपुत्रहीनहोताहै ओरशुभग्रहककें श्रेष्ठपुत्रवालाहोताहैओर पुत्रकेसंतापकोंप्राप्तहोताहै ओर विदेशयानेमेंउद्यतहोताहै ९० इतिपंचमभावविचारः अब छठे भावका विचार कहतेहैं तिसमें क्याक्या देखना सो सर्वार्थचिंतामणीसें कहतेहैंछठे भावसें शत्रुका विचार ओर शत्रुसें घाए ओर विघ्न ओर क्लेश ओर नाभी उदरदेशमें व्रणादिक ओर मधुरसें लेकके छैरस ओर उपदंश इहे छठे घरके स्वामीसें ओर राशि नवांशसें बुद्धिमान् विचार करके कहे १ ओर पारिजातमें कहतेहैं रोग शत्रु व्यसन घाए इहेमंगलसें ओर छठे भावसें चिंतन करे ओर जोनसा ग्रह छठेस्थानमें स्थित होवे सो अपने स्वभावकके रोग कर्ताहै ओर बृहस्पति

पंचमपेद्वादशगेक्रूरेसुतरहितःशुभेसुसुतः ॥ सुतसंतापपरःस्याद्विदेशगमनोद्यतोमनुजः ९० ॥ इतिपंचमभावविचारः ॥ ५ ॥

अथपष्ठभावविचारः ॥ तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तंसर्वार्थचिंतामणौ ॥ अरिभवनादरिवैरिक्षतविघ्नक्लेशनाभ्युदरदेशान् ॥ मधुरादिपडुपदंशान् ग्रहराश्यादितोवदेत्प्राज्ञः १ पारिजाते ॥ रोगारिव्यसनक्षतानिवसुधापुत्रारिताश्चिंतयेदुक्तंरोगकरंतदेवरिपुगेजीवेजितारिर्भवेत् ॥ पंडोरीशवुधौविधुंतुदयुतौलग्नेशसंवंधिनौलिंगस्यामयकृद्व्रणेनरुधिर·पष्टेसलग्नाधिपः २ पत्नीपंडत्वमेतिक्षतभवनगतेकामपेवासुरेड्येभौमेमंदेनदृष्टेरिपुभवनगतेशत्रुभार्यामुपैति ॥ सौम्यैर्दृष्टेयुतेवानभयमरिजनाच्छत्रुभेजन्मलग्नात्पापैःशत्रुक्षतादिव्रणभवविपुलंजायतेलांछनंवा ३

छठे स्थानमें स्थित होवे तब शत्रुयोंके जीतनें वाला होताहै ओर षष्ठेश ओर बुध दोनों लग्नेशकेसें संबंधीहोयके राहुककें युक्त होवें तब नपुंसक होताहै ओर छठे स्थानमे मंगलककें युक्त छठे भावका स्वामी होवे तब लिंगमें छिद्र कर्ताहै २ ओर जिसके जन्ममे सप्तमेश वा बृहस्पति छठे स्थानमे स्थित होवे तिसकी स्त्री पंडत्व भावकों प्राप्त होतीहै ओर छठे भावमे स्थित मंगल शनिककें देख्या होवे तब शत्रुकी स्त्रीकों प्राप्त होताहै ओर जिसके जन्मलग्नसें छठा लग्न शुभग्रहो ककें दृष्ट वा युक्त होवे सो शत्रुजनसें भयकों नहिं प्राप्त होताहै ओर पापी ग्रहों ककें दृष्ट युक्त होवे तब शत्रुभय ओर क्षत व्रणादियों कर्क चिन्हत होताहै । ३ ॥

॥ और जिसके जन्मसमयमें छठे स्थानमें सूर्य और लग्नेशका शत्रु नीच राशिमें वा अस्त और शत्रुकी राशिमें स्थित होवे और बल रहित होवे तब पितृवर्ग शत्रुयोंकर्के युक्त होताहै ॥ और लग्नेशके मित्रके घरमें स्थित होवे और मित्रगृहमें और अपने उच्चमें और मित्रके वर्गमें स्थित होवे तब ज्ञातीयोंमें श्रेष्ठ मनि कहतेहैं सो शत्रुयोंसें और व्रणादि रोगोंसें रहित होताहै ४ और जिसके जन्ममें छठे भावका स्वामी शत्रुको भाव ६ में स्थित होवे और शत्रुकी वा नीचकी राशिमें स्थित होवे वा वक्रगति वा अस्त होवे तब अनेक जातीके लो कोंकर्के देहकों बहुत खेद होताहै और छठे स्थानमें सूर्यसें लेकर्के ग्रहस्थित होवें तब सो ग्रह जिस जिस भावके कारक होवें तिन्होंकर्के निरंतर पीडाकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

षष्ठेभास्वतिलग्ननाथकरिपौनीचारिगेदुर्बले ॥ जातस्तापितृवर्गशत्रुसहितोलग्नेशमित्रगृहे ॥ इष्टस्थानगतेनिजोच्चसुहृदांवर्गोपयातेसतिज्ञातीनांबहुलंवदंतिमुनयःशत्रुव्रणाभावभाक् ॥ ४ ॥ शत्रुस्थानगतोरिनीचगृहगोवक्रंगतोवास्तगोनेकज्ञातिजनेबहुक्षतनुःषष्ठाधिपोवाताथा ॥ षष्ठस्थानगतेपुभास्करमुखव्योमाटनेपुक्रमात् तत्तत्कारकखेटवर्गनिपुणःसंपीडितःसंततम् ५ पापव्योमचरास्त्रयोरिपतितप्रातेक्षकादुर्बलंगोवित्तक्षयमामयंरिपुभयंकुर्वंतिजन्मादितः तेसर्वेबलशालिनोयदिशुभागोवित्तमश्वादिकंराजान्नंसकलोपदंशसहितंरोगारिनाशंवदेत् ६ तेपामंबरचारिणामतिशुभौकेंद्रत्रिकोणायगौद्वावेतौबलशालिनौयदिलघुव्याध्यादिनाशंनृणां एकोपिप्रबलोयदिव्रणरिपुक्लेशादिकिंचित्फलंयत्तत्कारकवर्गमूलमखिलंमोदंप्रमादंतुवा ७

और जिसकेजन्ममें तीनपापीग्रह छठेस्थानमें और आठमें स्थानमें स्थितहोवें अथवादेखें तब दुर्बल करतेहैं और गोधनकाक्षय और रोग और शत्रुभय जन्मसें लेकर्के करतेहैं और यदशुभग्रह छठे आठमेंव लोहोय करके स्थितहोवें तब गोधन और घोडे हाथी और सपूर्ण उपकरणो करके युक्त राजाका अन्नप्रा प्त करतेहैं और रोग शत्रूका.नाशकरतेहै ६ और जिसके जन्मकालमें ग्रहोंके मध्यसें दोशुभग्रह केंद्र श्री त्रिकोण और एकादशमें स्थितहोवें और बल युक्त होवें तब शीघ्र व्याधियोंको दूर करतेहैं अथवा एक ग्रह बली होयकर्के केंद्रादि स्थानोंमें स्थितहोवे तब व्रण शत्रुक्लेशादि किंचित् फल होताहै और षष्ठका कारक जिसराशि वर्गमें स्थित होवे तिसकी प्रकृतिसें संपूर्ण शुभाशुभ फल कहे ७

श्रोर जिसके जन्मलग्नमें पत्रेश करू युत पापी ग्रह स्थितहोवे तव तिसके देहमें व्रण घाए होतेहे श्रोर पंचमस्थानमे स्थितहोवेतव पिताश्रोर पुत्रकोंव्रणहोतेहेश्रौरचतुर्थमेमाताको श्रोरसप्तममेंस्त्रीकोंव्रणहोतेहे श्रौर नवमस्थानमेंस्थितहोवे तव मामेको श्रौरतीसरेस्थानमे छोटे भाईको श्रौरएकादशमें वडे भाईकों श्रोर अष्टमस्थानमें आपहि गुदाके व्रण करकेपीडित होताहे ८ श्रौर जिसके जन्मकालमें बुधके क्षेत्रमें ३ । ६ राशिमें सूर्य स्थितहोवे तव माथेमे पीडा कर्त्ताहे श्रौर मुखमे पीडा कर्त्ताहे श्रौर मंगल गलेमें पीडा कर्त्ताहे श्रौर बुध नाभिके नीचे वस्तिमे पीडा कर्त्ताहे श्रौर वृहस्पति श्रौर शुक्र नाहिं रोगकर्त्तेहैं श्रौर शनिवातरोग कर्त्ताहे श्रौर राहुकेतु उदरमें व्याधि कर्त्तहे श्रौर लग्नका स्वामी बुधकरके दृष्ट युक्त

पापेलग्नगतेसपत्नपयुतेदेहव्रणंदेहिनांपुत्रस्थेपितृपुत्रयो सुखगतेमातु कलत्रे स्त्रियः धर्मस्थेसतिमातुलस्यसहजेतस्यानुजस्यव्रणलाभस्थेतुतदग्रजस्यानिधने जातोगुदार्त्तोभवेत् ८ भानुर्मूर्ध्निशशीमुखेवनिसुतःकंठेतुनाभेरधश्चांद्रिः सूरि रनामयंप्रकुरुतेनात्रामयंभार्गवः मंदोवातमहिश्चकेतुरुदरव्याधिंबुधक्षेत्रगो लग्नेश शशिजेनवीक्षितयुतोगुह्यव्रणंयच्छति९लग्नादियद्राशिगतेफणीशेशुक्रे क्षिततत्तनुचिन्हमेति मदाहियुक्तेरिपुराशिनाथेतुरगपश्वादिभयंवदति १० पापग्रहेणसदृष्टेवलहीनेरिनायके पापांतर्गतेवापिशत्रुपीडाभविष्यति११शत्रु स्थानाधिपेदु स्थेनीचमूढारिराशिगे लग्नेशेबलसयुक्तेशत्रुनाशवदेद्बुधः १२॥

होवेतव गुह्यस्थानमें व्रणकर्त्ताहै ९ श्रोर लग्नसें लेकरके जिसराशिमे राहूस्थित होवे श्रोर शुक्रकर देख्या होवे तिस अंगमें चिन्ह को प्राप्त होतेहे श्रौर छठे घरका स्वामी शनिराहुकरक युक्त होवे तव घोडेसे लेकर पशुयोंका भय होताहे १० श्रोर जिसके जन्मम पापीग्रह करके दृष्ट श्रौर वलस ही न छठे स्थानका स्वामी होवे अथवा पापीग्रहोंक मध्यमे स्थित होवे तिसको शत्रुयोंकी पीडा होता है ११ श्रोर पष्टेश ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे श्रौर नीच मूढ श्रोर शत्रुकी राशिम स्थित होवे श्रौर लग्नेश बली होवे तव शत्रुयोका नाश होताहै १२

और जिसके जन्मकालमें छठे स्थानका स्वामी गोपुरादि अंशोंमें स्थित सूर्यकर्के देख्याहोवे और ल
लका स्वामी पूर्णवली होवे तव ज्ञातीयोंके मध्यमें उपकार करणे वाला होताहै १३ और छठे स्था
नमें शुभग्रहस्थित और शुभग्रहकर्के देख्याहोवे और षष्ठेश शुभग्रहकर्के युक्तहोवे और पापीग्रहोंके
मध्यमें स्थित होवे सो दालके भक्षणमें प्रीतिवाला होताहै १४ और जिसकों छठे स्थानमें वृह
स्पति और वुधहोवें सोनित्यंप्रतिचटनीकाप्याराहोताहै अथवा छठे स्थानमें वृहस्पति वुधकी राशि मृ
द्वंशादिमें युक्त होवे तब वीचटनीमेंप्रीतिवाला होताहै १५ और वुधकर्के युक्त छठे स्थानमें शुक्र
स्थित होवे वाशुभके नवांशमें शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे और वलकर्के युक्त शुभनवांशमें स्थित होवे सो
नित्यप्रति मीठे रसका भोजन कर्त्ताहै १६ और छठे स्थानमें मेष वृश्चिकराशि पापी ग्रहकर्के दृष्ट

षष्ठेशेगोपुरांशादौदिवाकरनिरीक्षिते लग्नेशेबलसंपूर्णेज्ञातीनामुपकारकृत् १३
षष्ठेसौम्येशुभैर्दृष्टेतदीशेशुभसंयुते पापग्रहाणांमध्यस्थेसूपदंशप्रियोभवेत् १४
षष्ठेसौम्येशुभैर्दृष्टेतदीशेशुभसंयुते पापग्रहाणांमध्यस्थेसूपदंशप्रियोभवेत् १४
उपदंशप्रियोनित्यंषष्ठेजीवेशशांकजे क्षेत्रेतयोर्वासंप्राप्तेमृद्वंशादिसमन्विते १५
शुक्रेषष्ठेसौम्येवाशुभदृष्टेशुभांशके वलान्वितेशुभांशस्थेनित्यंमधुरभाक्भ
वेत् १६ पापग्रहेणसंदृष्टेभौमक्षेत्रेतदन्विते वुधेनयुक्तेशुक्रेरोत्वम्लभाक्सन
रोभवेत् १७ पित्रादीनामिदंयोज्यंतत्तद्भावपकारकैः नास्तिकायनवक्तव्यंव
क्तव्यंस्वजनायवै १८ अथषष्ठस्वामिफलं जन्मप्रदीपात् षष्ठेशेलग्नगतेनीरु
क्सवल:कुटुंवकष्टकरः वहुयत्नोरिपुहंताभवतिनरःस्वैरवचनधनः १९ षष्ठ
पतौद्रविणस्थेदुष्टश्चतुरोहिसंग्रहप्रतिष्ठः स्थानप्रचुरोविदितःसव्याधिस्तनुज
हृतवित्तः २०

होवें तव अम्लरसका प्यारा होताहै अथवा वुधकर्के युक्त छठे स्थानमें शुक्रहोवेतव अम्लरस भोजन
करणे वाला होताहै १७ और पित्रादि भावोंके कारकोंकर्के तिसके पित्रादियोंके प्यारेरसकहे और
इहप्रकार नास्तिकके तांईनकहे श्रेष्ठजनके तांईकहे १८ अवषष्ठेशकावाराभावमें फलकहतेहैं और
जिसके जन्मकालमें छठे भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो रोगरहितऔर वल युक्त होताहै और
कुटुंवकों कष्टकर्त्ताहै और वहुत यत्नकरणे वाला और शत्रुयोंकों हतकरणे वाला और अपनीइच्छा
करणेवाला और अपने धनवाळा होताहै १९ और जिसकों छठे भावकास्वामी दूसरे स्थानमें स्थित
होवे सो दुष्ट और चतुर और धनसंग्रहकर्के प्रतिष्ठावाला और वहुतस्थानोंमें प्रसिद्ध और व्याधियुक्त
और पुत्रकर्के हरागयाहै धन जिसकाऐसाहोताहै २०

और जिसके जन्ममें छठे भावका स्वामी उौर क्रूरग्रह तीसरे स्थानमें होवेतव श्रेष्ठ लोकोंको कष्टकरणवाला और भाई योंसें विरोधी और मारणे वाला और आमरोगकरकें अत्यतकष्टकों प्राप्तहोताहै २१ और षष्ठेश चतुर्थभावमें स्थित होवे तव पितापुत्र परस्पर वैरी होतेहै और रोगी तिसका पिताहोताहै और चिरकाल स्थित होनेंवाली लक्ष्मीकों प्राप्त होताहै २२ और छठेका स्वामी पंचम भावमें स्थित होवे तव पितापुत्रका वैरहोताहै औरपुत्रसेंपितामरताहैक्रूरग्रहऔरशुभग्रहपचमभावमेंहोवेतवधनहीनऔरदुष्टऔरकपटीहोताहै २३ और जिसके जन्मसमयमें छठे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे सो रोगसें हीन और शत्रुसें सुख वाला और कृपणरूप होताहै और जन्मसें खेदकों नहि प्राप्तहोताहै और खोटे स्थानमें निवास करणे वाला होताहै २४ और जिसके जन्मसमयमें छठेका स्वामी क्रूर ग्रह सप्तम स्थानमें

षष्ठपतिःसहजस्थःक्रूरःकुरुतेसुलोककष्टकरम् सहजविरोधमारणमतिकष्टं आमतस्तस्य २१ षष्ठाधिपतिस्तुर्येपितृतनयोर्वैरिणोमिथःकुरुते सरुक्पिता सोथलक्ष्मींलभतेनरःसुचिरां ॥ २२ ॥ रिपुभवनपतौसुतगेपितृसुत योर्वैरतास्मृतिस्सुततः क्रूरेशुभेचनिधनपदवींदुष्टश्चतत्कपटी ॥ २३ ॥ रिपुभवनेरिपुस्थेनीरुक्सुखीकृपणरूपः नहिजन्मतोपिसीदतिस्थानकुवासीभवतिनरः २४ अहितपतौसप्तमगेक्रूरेभार्याविरोधिनीचंडा ॥ तापकरीत्वथ सौम्येवंध्यावागर्भगळनपरा २५ शनैश्चरेहिणिकारुजोविषधराद्धरानंदनात् वुधाच्चविषदोषतःसपदिमृत्युरेणांकतः रवेर्मृगपतेर्वधःप्रकटमष्टमात्षष्ठपात् गुरोरपिचदुष्टधीर्नयनदोषवान्शुक्रतः २६ शत्रुपतिर्यदिनवमःक्रूरःखचरस्तदाभवेत्खंजः विवुधविरोधीशास्त्रंनमन्यतेयाचकंचगुरुम् २७ अरिगृहपे दशमस्थेक्रूरेमातरिरिपुस्तदादुष्टः धर्मसुतपालनमतिर्मातुर्द्वेष्योभवेद्वैरः २८

स्थित होवे तव तिसकी स्त्री विरोध करणे वाली और चंडी और संतापके देने वाली होतीहै और शुभग्रह होवे तव वंध्या अथवा गर्भपातककें युक्त होतीहै२५ और षष्ठेशऊौरशनी अष्टमभावमें होवे तव संग्रहणीरोगहोताहैऔरमंगळहोवेतवसर्पसेंमृत्युहोतीहैऔर वुध होवे तव विषदोषसेंमृत्युहोतीहैऔर चंद्रमा होवे तव शीघ्र मृत्यु कर्त्ताहै और सूर्य होवे तव सिंहकर्कें मृत्यु होतीहै और वृहस्पती होवेतव दुष्टवुद्धि वाला होताहै और शुक्रहोवे तव नेत्रदोष वाला होताहै२६और छठेका स्वामी क्रूरग्रहजव नवममें स्थित होवे तव लंडा होताहै और पंडितोंका विरोधी और शास्त्रकों और गुरोंकों नहिमानने वाला होताहै २७ और छठेका स्वामी दशम स्थानमें स्थित क्रूरग्रह होवे तव माताका शत्रु और दुष्ट होताहै और धर्मपुत्रके पालनेमें वुद्धि वाला और मातासें वैर करणे वाला होताहै ॥ २८

श्रीर जिसके जन्मसमयमें छठेकास्वामी क्रूरग्रह एकादश भावमें स्थितहोवे तवशत्रुकर्के मरणहोताहै श्रीर शत्रुकर्के श्रीर चोरकर्के हानि वाला श्रीर चतुष्पदोंसें लाभ वाला होताहै २९ श्रीर छठे भावका स्वामी बाहरमें स्थित होवे तव चतुष्पद श्रीर धन श्रीर धान्यका नाश कर्त्ताहै श्रीर लक्ष्मीके श्रावनें जानेंसें प्रसन्नताकोंप्राप्तकर्त्ताहै ३० इतिषष्ठभावविचारः ॥ श्रव सप्तमभावका विचार कहतेहै सप्तमभावमें क्या चिंतन करणा सोकहतेहै सप्तम स्थानसें विवाह श्रीर स्त्री श्रीरपतिका विचार श्रीर दाल श्रीर गुडादी श्रोर दधि श्रीर दुग्धकाविचार श्रीर गमनागमन श्रीर पदकी प्राप्ति श्रीर मूत्राशयका विचार श्रीर नष्टधनका विचार कहाहै १ श्रीर पारिजातमें कहतेहैं सप्तमभावसें यात्रा पुत्र-

वैरिपतौलाभगतेक्रूरेमरणंविपक्षतोभवति रिपुतस्करकृतहानिःस्याच्चतुष्पदाल्लाभवान्मनुजः २९ षष्ठपतौद्वादशगेचतुष्पदद्रव्यधान्यनाशकरः गमनागमनेलक्ष्म्यालहादेनचपरोनरोभवंति ३० इतिषष्ठभावविचार.अथसप्तमभावविचारः तत्रकिंचितनीयमित्युक्तम् युवतिपदाद्द्वाहभार्यापतिसूपगुडदधिक्षीरम् आगमगमनपदाप्तिंब्रूयान्मूत्राशयंचनष्टधनम् १ जातकपारिजाते यात्रापुत्रकलत्रसौख्यमतुलंसंचिंतयेत्सप्तमादुक्तंपुत्रसुखागमागमफलंसर्वंचयत्तद्वदेत् जार.कामगतेसितेमदनपेसाहिध्वजेवातथाकामेजीवयुतेसितेशुभगृहेजातोनजारोभवेत् ॥ २ ॥ दुःस्थेकामपतौतुपापगृहपेपापेक्षितेतद्युतेतज्जायाभवनस्यमध्यमफलंसर्वंशुभंचान्यथा॥ कामस्थानपतौसितेनसंहितेपापर्क्षगेकामधी.सौम्यर्क्षेशुभखेटवीक्षितयुतेजात.सितच्छत्रवान् ॥ ३

स्त्री सुखकाचिंतन करे श्रीर पुत्रकासुखश्रीर गमनागमनकासुख कहाहैश्रीर जिसकेजन्मसमयमें सप्तम स्थानमें शुक्र होवे श्रीर सप्तमेश राहु केतु कर्के युक्त होवे सो व्यभिचारी होताहै श्रीर सप्तमभावमें वृहस्पति कर्के युक्त शुभराशिमें शुक्र होवे तव व्यभिचारी नहि होताहै २ श्रीर जिसके जन्मकालमें सप्तमभावका स्वामी ६ ८ १२ स्थानमेंस्थित होवेश्रीर सप्तमेश पापीग्रह कर्के दृष्टयुत होवेतव स्त्रीका मध्यमसुख जवइहयोगनाहोवेतवसपूर्णसुखहोताहैश्रीरसप्तमभावकास्वामीशुक्रकर्केयुतपापीग्रहकीराशिमें स्थित होवे तव कामबुद्धिवाला होताहै श्रीर शुभग्रहकी राशिमें शुभग्रह कर्के युक्त दृष्ट होवे तव श्वेतछत्रके धारणे वाला होताहै ३

और जिसके जन्ममें दूसरे सप्तम छठे स्थानके स्वामी और शुक्र लग्नमें स्थित होवें और पापी ग्रहकर्के युक्त होवें तब कामी होताहै और लग्नेश और षष्ठेश दोनों पापी ग्रहकर्के युक्त होवें तववीकामी होताहै और सप्तमस्थानमें छठे दूसरे लग्नके स्वामी कर्के युक्त पापी ग्रह होवे तब परस्त्री रतहोताहै और पापी ग्रह और छठे और सातमेंकेस्वामी नवम स्थानमें स्थित होवें तब कामातुरहोताहै ४ और दशम द्वितीय सप्तमके स्वामी दशमस्थानमें स्थित होवेंतब व्यभिचारी होताहै औरपंचमके कारक ग्रह । ६ । ८ १२ स्थानमें स्थित होवें और पंचम नवमसप्तम के स्वामी पंचम भावमें स्थित होवें और पापी ग्रह कर्के दृष्ट होवें तब पुत्र हीन होताहै और बृहस्पति बुध दोनों और चंद्रमा शुक्र दोनों सप्तम स्थानमें स्थित होवें तब बहुत स्त्रीयोंमें रत होताहै और बली होयकर्के शुक्र सप्तम स्थानमेंस्थित होवे तब बहुत स्त्रीयोंका स्वामी होताहै ५ और

वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगताःपापान्विताःकामुकः पापव्योमचरान्वितौत नुरिपुस्थानाधिपौचेत्तथा कामस्थेरिपुवित्तलग्नपयुतेपापेपरस्त्रीरतः पापा रातिकलत्रपानवमगाःकामातुरोजायते ॥ ४ ॥ जारःकर्मधनास्तपा दशमगाःपुत्राधिकारग्रहादुःस्थाधीगुरुकामपाःसुतगृहेपापेक्षितेनात्मजःजीव ज्ञौयदिवानिशाकरसितौकामेबहुस्त्रीरतःशुक्रेमन्मथराशिगेबलवतिस्त्रीणांबहूनां पतिः ५ शुक्रारौमदगौकलत्ररहितोधर्मात्मजस्थौतथाशत्रुस्थानगतौनिशाकर सितौयद्येकपुत्रोभवेत्लग्नास्तव्ययगेषुपापखचरेष्विंदौसितेदुर्बलेवंध्यास्त्रीपतिरेवजा तमनुजोजायाविहीनोथवा ६ वंध्यापतिःसितरवीमदनोदयस्थौचंद्रोदयेसमगृ हेललनाकृतिःस्यात् पुंराशिगेपुरुषभावयुतंकलत्रंस्त्रीपुंग्रहेक्षितयुतेसतिमिश्ररू पम् ७ भौमांशेवाभौमराशौविलग्नात्कामस्थानेजन्मभेवावधूनाम् जायादासी नीचमूढग्रहांशेदुष्टावास्याद्यौवनेभर्तृहीना ॥ ८ ॥

शुक्र मंगल दोनों सप्तममें स्थित होवें तब स्त्रीकर्के रहित होताहै और नवम पंचम स्थानमें होवेंतबभी स्त्री कर्के रहित होताहै और चंद्रमा शुक्र दोनों षष्ठ ६ स्थानमें स्थित होवें तब एक पुत्र वाला होताहै और लग्न सप्तम द्वादश स्थानमें पापी ग्रह होवें और चंद्रमा शुक्र बलहीन होवें तब वंध्या स्त्रीका स्वामी वा स्त्रीसे हीन होताहै ६ और शुक्र सूर्य दोनों सप्तममें वा लग्नमें स्थित होवें तब वंध्याका स्वामी होताहै और समराशिमें चंद्रमा लग्नगत होवे तब स्त्रीकी आकृतीवाला होताहै और पुरुष राशिमें चंद्रमा लग्नगत होवे तब पुरुषाकृती वाली स्त्री होतीहै और स्त्री पु ग्रह दोनों देखते होवें तब मिश्र रूपा होतीहै ७ और जिसके जन्मलग्नमें सप्तम भावमें मंगलकी राशि वा नवांश होवे अथवा स्त्रीकी जन्मराशिहोवे तब तिसकी स्त्री दासी होतीहै औरनीच मूढ राशि नवांश होवे तबदुष्टहोतीहैअथवा युवावस्थामें स्वामीकर्के रहित होतीहै ८

श्रीर सप्तमभावमें शुभग्रहका नवांश वा राशिस्थित होवे श्रीर शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे तवअत्यंत श्रेष्ठ स्त्री होतीहै श्रीर चंद्रमाका नवांश होवे वा वलहीन चंद्रमाकीराशि होवे तव स्त्री पतिके मा.णे वा ली होतीहै श्रीर चंद्रमा वली होवे तव स्त्री पतिव्रता होतिहै ९ श्रीर सप्तम भावमें सूर्यका नवांश होवे तव व्यभिचरिणी होतीहै श्रीर अपनि उच्च राशि होवे तव पतिव्रता शुभ ग्रहके देखनसें हो तीहैं श्रीर जिसके लग्नमें चंद्रमा स्थित होवे अथवा सप्तम भावमें चंद्रमा होवे नीच श्रीर शत्रु श्रीर मूढ राशिमें स्थित होवे श्रीर पाप द्रेष्काणमें श्रीर व्याल विहग पाश निगड द्रेष्काणमे स्थित होवे श्रीर संध्यंशमें स्थित होवे तव स्त्रीव्रतहीन श्रीर विधवा होतीहै १० श्रीर सप्तम भावमें लग्नेश युक्त होवे श्रीर शुभग्रह कर्के युक्त होवे तव श्रेष्ठ वंशमें जन्मी स्त्री होतीहै श्रीर सप्तममें क्रूर ग्रहकी

शुभांशराशौयदिसद्गुणाढ्याशुभेक्षितेचारुतरंकलत्रम् चंद्रांशकेदुर्बलचंद्रराशौजायापतिघ्नीसबलेतुसध्वी ९ अर्कांशेकुलटानिजोच्चगृहगेसाध्वीशुभालोकितेलग्नेशोविकरेथवामदनभेनीचारिमूढान्विते पापव्यालविहंगपाशनिगडद्रेष्काणभागान्वितेसंध्यंशेविगतव्रताचविधवाजातस्यजायाभवेत् १० कामस्थतनुपेशुभग्रहयुतेसद्वंशजामिच्छतिक्रूरक्षेमदगेविलग्नरमणेदुर्वंशजातांगनावर्णरूपगुणाकृतिंचसकलंयत्तद्गृहोक्तंवदेत्दुर्व्यापारकरग्रहाकृतिनरप्रीतिंप्रयांत्यंगनाः ११ पापप्रकाशसंयुक्तेकलत्रेदुष्टचारिणी रवौबध्यातुशीतांशौक्षीणेंदौव्यभिचारिणी १२ कुजेतुम्रियतेमंदेदुर्भगाराहुसंयुते परदाररति स्त्रीयांनिपेकाभावतोसुतः १३ धूमेविवाहहीनःस्यात्म्रियतेकार्मुकेसति परिवेषेतुदुःशीलाकेतौवध्यासतीभवेत् १४

राशि होवे श्रीर तिसमें लग्नेश युक्त होवे तव खोटे वंशमें जन्मी स्त्री होतीहै श्रीर स्त्रीका वर्ण रूपश्री कृति सपूर्ण सप्तमभावस्थित राशिसेंकहे श्रीर दुर्व्यापारकरग्रहाकृती यो नर हैतिनमें स्त्रीयां प्रीतिकों प्राप्त होतीयाहै ११ श्रीर पापीग्रह अप्रकाश धूमादिग्रह कर्केसप्तमभावमें स्थितहोवे तव स्त्रीव्यभिचारिणी होतीहै श्रीर सूर्यकर्के युक्त वंध्या होतीहै श्रीर क्षीणचद्रमा कर्के युक्तो व्यभिचारिणी होतीहै १२ श्रीर मंगलकर्के मृत्युकों प्राप्त होतीहै श्रीर शनिकर्के युक्त होवे तव स्त्री दुर्भगा होतीहै श्रीर राहु कर्के पर स्त्रीमें रत होताहै श्रीर अपनीस्त्रीकी गर्भका अभाव होनेसें पुत्ररहित होताहै १३ श्रीर सप्तमभावमें धूमग्रह होवे तव विवाहकर्के रहित होताहै श्रीर धनुग्रह होवे तव स्त्री मरतीहै श्रीर परिधी ग्रह होवे तव खोटे स्वभाववाली होतीहै श्रीर केतु होवे तव स्त्री वध्या होतीहै ॥ १४

और पातग्रहहोवेतव स्त्री रहित होताहै और पापी ग्रह सप्तममें होवे तब स्त्री गर्भस्राव करके युक्त होतीहै और पूर्णचद्रमा सप्तममें होवे तब खोटे स्वभाव वाली और कन्या जन्मने वाली होतीहै १५ और बुधकरके पुत्रवती और बृहस्पति करके गुणवती और शुक्र करके सौभाग्यवती और बली ग्रहकरकेयुक्त होवेतव श्रीमती होतीहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्मकालमें सप्तम पचम भावकेस्वामी बली होवें और शुभग्रह करके देखे होवें औरछठे घरके स्वामी करके युक्त वा दृष्ट होवें तब तिसकी स्त्री जार करके पुत्रलाभको प्राप्त होतीहै औरतिसका स्वामी बहुत स्त्रीयों करकेभी पुत्रहीन होताहै ॥ १७ ॥ और मकर राशिमें सप्तम स्थानमें बृहस्पतिस्थित होवे तब स्त्रीकरके रहित होताहै और मीन राशिमें सप्तम स्थानशनि होवे तब स्त्री रहित होताहै और शनि और मगलके नवांशमें बृहस्पति

पतिविदार,पापेतुगर्भस्रावेणसयुता,दु शीलास्त्रीप्रसूताचपूर्णेमाणेसुधाकरे १५
बुधेसपुत्रावागीशिगुणयुक्तासुपुत्रिणि शुक्रेसौभाग्यसयुक्ताश्रीमतीचबलान्विते १६
स्त्रीपुत्रपेबलिनिशोभनखेटदृष्टेषष्ठाधिपेनसहितेसतिवीक्षितेवा ॥ जारेणपु
त्रजनिलाभमुपैतिजायातस्याधवोबहुकलत्रयुतोप्यपुत्र १७ नीचेगुरौमदनगे
सतिनष्टदारोमीनेकलत्रभवनेरविजेतथैव ॥ मंदाररशिनवभागगतेसुरेड्ये
जारोभवेदिनसुतारसमन्वितेवा १८ सप्तमेवाष्टमेपापेव्ययस्थेधरणीसुते ॥
अदृश्येयदितन्नाथेकलत्रांतरभाग्भवेत् १९ सुपक्वजातप्रथमकलत्रंलग्नेश्वरो
दारपसयुतश्चेत् ॥ दिनेशकांत्याभिहतस्तदानींसुरूपहीनासुतरांवदति २०
वित्तेपापबहुत्वेचकलत्रेशेतथास्थिते ॥ शत्रुस्थानगतेकेतौकलत्रत्रयभाग्भवेत् २१

स्थित होवें तब व्यभिचारी होताहै अथवा शनि मंगल करके युक्त सप्तमराशि होवें तब भी व्यभिचारी होताहै ॥ १८ ॥ और सप्तम अष्टम स्थानमें पापग्रह होवे और बारहवें स्थानमें मगल स्थित होवे और सप्तमेश अदृश्य भागमें होवे तब दूसरी स्त्रीको प्राप्तहोताहै ॥ १९ ॥ और लग्नेश सप्तमेश एक राशिमें स्थित होवें तब प्रथम स्त्री गुणवती रूपवती होतीहै और सप्तमेश सूर्यकी कांतिकरकेहत होवे तब प्रथमस्त्री रूपकरके रहित कहतेहैं ॥ २० ॥ और जिसके जन्मकालमें दूसरे स्थानमें बहुत पापीग्रह होवे और सप्तम शभी पापीग्रहोंकरके युक्त होवे और छठे स्थानमें केतु स्थितहोवे तब तीनस्त्रीयावालाहोताहै २१

और सप्तमेशकेंद्रमें और त्रिकोणमें स्थित होवे और अपने उच्चमें और मित्रके और अपने वर्गमें स्थित होवे अथवा दशमेशककें देख्या होवे तब बहुत स्त्रीयोंककें युक्त होताहै ॥ २२ ॥ और सप्तमेश केंद्रमें स्थित शुभग्रह ककें देख्याहोवे और शुभग्रहके नवांशमें वा राशिमें स्थित होवे तबस्त्री पतिव्रता होतीहै । २३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें सप्तमेश वुध पापी ग्रहककें युक्त, नीच और शत्रुके वर्गमे छठे और अष्टम भावमें स्थितहोवे और पापीग्रहोंके मध्यमें और पापीग्रहो ककेंदेख्या होवे, तब स्त्री स्वामीके घात करणे वालीऔर कुल कानाश करणे वाली होतीहै ॥ २४ । और जिस के जन्मसमयमें सप्तमका स्वामी शुभकेनवांशमें और शुभग्रकर्कें दृष्ट होवे तब श्रेष्ठ वंशमे जन्मी स्त्री होतीहै और पापग्रहककें युक्त और पापककें दृष्ट होवे तब हीन वंशमे जन्मी होतीहै २५ ॥

केंद्रत्रिकोणेदारेशस्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ कर्माधिपेनवादृष्टेवहुस्त्रीसहितोभवे
त् २२ कलत्राधिपतौकेंद्रेशुभग्रहनिरीक्षिते ॥ शुभांशेशुभराशौवापत्नीव्र
तपरायणा २३ दाराधिपेसोमसुतेसपापेनीचारिवर्गेरिपुनाशभावे ॥ पा
पांतरेपापदृशासमेतेजायापतिघ्नीकुलनाशिनीस्यात् २४ शुभांशेशुभसंदृष्टे
नाथेजायासुवंशजा ॥ पापारूढेपापवर्गेतस्यजायाकुवंशजा २५
कामस्थानेसुखेटेसितयुतखचरैर्दारसंख्यांवदन्ति स्वोच्चस्थोन्योसवासोनभव
तिगणनेशुक्रयुक्तग्रहैर्वा ॥ जायाधीशेसितर्क्षेसतिधनभवनेशुक्रसंयुक्तसंख्या
शुक्रोतंगेशयुक्तोध्रुवनववधूवल्लभोजायतेवा २६ दारेशेनकुटुंबपेनसहितायाव
द्ग्रहादुर्बलास्तत्संख्याककलत्रनाशनकराहुःस्थाननाथायदि यावंतोबलशा
लिनः शुभकरास्ततुल्यजायासुखकुर्वंत्येकावियच्चरोबलयुतोयद्येकदारोभवेत् २७

और जिसके जन्ममें सप्तम स्थानमें शुक्रककें युक्त जितने शुभग्रह स्थित होवें उतनी संख्या ककें स्त्रीयां होतीहैं अथवा उच्च राशिमें ग्रह होवे तब शुक्रककें युक्त ग्रहोंकी संख्या नाहिं होतीहै और सप्तमेश ग्रह वृष तुला राशिमें होवे तब शुक्रयुक्त ग्रह संख्या होतीहै और शुक्र सप्तमेश ककें युक्त होवे तब नवीन स्त्रीका प्याग होताहै ॥ २६ ॥ और सप्तमेश ककें और द्वितीय भावके स्वामी ककें जितने निर्बल ग्रह युक्त होवें और । ६ । ८ । १२ । स्थानके स्वामी होय ककें उतनीयो स्त्रीयों का नाश कर्तेहैं और जितने ग्रह बली सप्तमेश द्वितीयेश ककें युक्त होवें शुभग्रह उतनीयों स्त्रीयों का सख कर्तेहैं और एक ग्रह बल युक्त होवे तब एक स्त्रीकाहि सुख कर्ताहै २७

और लग्नसप्तमभावकारकस्वामीस्पष्टककें दोनोंकायोगकियेसें योराशिहैतिस राशिमें गोचरककें बृहस्पति आवे तव विवाहकेसमय मैवर्ष कहे और जिस नक्षत्रमें चंद्रमा स्थित होवेउतने वर्षांकर्के अथवालग्न सप्तम भावोंके नवांशोंके योगकर्के वर्षोंमें विवाहकहे और बृहस्पति मित्रके नवांशमें वलकर्के युक्त होवे तव एकस्त्री कर्के युक्त होताहै और बृहस्पति अपने नवांशमें या उच्चके नवांशमें स्थित होवे तव दो तीन स्त्रीयों वाला होताहै २८ और सप्तमेश ग्रहकी राशि और नवांके स्वामी और शुक्र चंद्रमा इन्होंमेंयो वली होवे तिसके दशाकालमें और सप्तमेश कर्क युक्त जो राशि और नवांशकी राशि तिससें त्रिकोण। १। ५। स्थानमें गोचर कर्के जब बृहस्पति आवे तब विवाह होताहै। २९

लग्नानंगपतिस्फुटैकयगृहगेजीवेविवाहंवदेत् ॥ चंद्राधिष्ठिततराकाधिवयोरैकयांशकेवातथा ॥ जीवेमित्रनवांशकेवलयुतेयद्येकदारान्वितः स्वांशेद्वित्रिकलत्रवान्बहुवधूनाथःस्वतुंगांशके २८ कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोःसितक्षपानायकयोर्वलीयसा ॥ दशागमेद्यूनपयुक्तभांशकत्रिकोणगेदेवगुरौकरग्रहः २९ शुक्रोपेतकलत्रराशिपदशाभुक्तौचपाणिग्रहः कर्मायुर्भवनाधिनाथकदशाभुक्तौविवाह क्रमात्॥ कामेशेनयुतोकलत्रगृहगस्तत्याकभुक्तौतुवा ३० सौम्यव्योमचरान्वित शुभगृहेचादोददातिश्रियंपापर्क्षेशुभखेचरो यदिदशामध्येविवाहादिकम् क्रूरःपापगृहेपगोयदिफलंपाकावसानेतथा सौम्यर्क्षेयदिसर्वकालफलदःसौम्यान्वितःशोभनः ३१

और शुक्रकर्के युक्त सप्तमेशकी दशातर्दशामे विवाह होतेहे और दशम अष्टम घरके स्वामीकी दशातर्दशामें विवाह होताहै अथवा सप्तमेशकर्के युक्त सप्तमस्थानमें स्थित यो ग्रह तिसकी दशातर्दशामें विवाह होताहै ॥ ३० ॥ और शुभग्रहकर्के युक्त सप्तमेश नवमस्थानमें स्थित होवे तिसकी दशामे शुभफल होताहै और पापीग्रहकी राशिमे शुभ ग्रह स्थित होवे तिसकी दशाके मध्यमें विवाहादि शुभ फल होताहै और क्रूर ग्रह पापीकी राशिमें स्थित होवें तव दशाके अंत्यमें शुभ होताहै और शुभ ग्रह की राशिमे शुभग्रह कर्के युक्त होवें तव सर्वकालमे फल देताहै सारीदशामें शुभफल कर्ताहै ॥ ३१ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें जिसराशिमें लग्नेशस्थितहोवे तिसकास्वामीश्रोर चंद्रमा श्रोर बृहस्पति इ ह अपनी राशिमेंस्थित होवें तव स्त्रिके लाभकों प्राप्त होताहै श्रोर सप्तमेशशुक्रके घरमें बृहस्पति चंद्रमा स्थित होवें अथवाकेंद्रमें स्थित होवें अथवा गोचर कर्के बृहस्पति साथ युक्तहोवें तव स्त्रीका लाभहोताहै ३२ श्रोर कहतेहैं सप्तमस्थानमें मेषादि राशि जितनी संख्याकर्के स्थित होवे तिसव र्षमें अथवा मौंजीवंधनकालसें उपरंत उतनेवर्षमें अर्थात्सप्तमभावमें आठअंकसें हीन राशिहोवे तव तिसमें आठवर्षमिलायकर्के विवाहका समयकहे श्रोर कहतेहैं जिसके जन्मलग्नसें सप्तमेश श्रोर लग्नेश कर्के युक्त यो राशि वा नवांश तिसमें जन्मी जो स्त्रीहै सो स्वामीका मन प्रसन्न करणे वाली होतीहै श्रोर तैसें हि कन्याके लग्नसें लग्नेश श्रोर सप्तमेशकीराशि श्रोर अंशमें जन्मेतोस्त्रीके मनकों

लग्नेश्वरस्थितनवांशपतिःस्वराशौचंद्रेपुरंदरगुरौचकलत्रलाभम् कामेशशुक्रगृ
हगेमरमंत्रिणींदौकेंद्रेथवागुरुयुतेसतिगोचरेण ३२ यत्संख्याकमजादिका
मभवनंतद्वत्सरेवान्नृणांसाष्टाब्देकृतमौंजिकर्मपरतःकल्याणकालोभवेत् लग्ना
दस्तविलग्ननायकयुतक्षेत्रांशकेसंभवायासाभर्तृमनःप्रसादकरिणीभर्त्तीतथैव
स्त्रियः ३३ कामान्वितेक्षकवियद्धरराशिजाताचंद्रादतीवशुभगाचपतिप्रिया
स्यात् स्त्रीजातकेचपतिरिष्टकरोवधूनांदिग्देशताभृगुसुवादवलाधिपस्य ३४
अथदारहायोगः धरावसानस्मरयानरंध्रगोधरासुतोजन्मनियस्यदारहा तथैव
कन्याजनिजन्मलग्नतोयदिक्षमासूनुरनिष्टदःपतेः३५क्रूरव्योमचरःस्त्रीणामष्टम
स्थोविलग्नतःनीचारिपापवर्गेपुयदिमृत्युकरःपतेः ३६

प्रसन्न करणे वालाहोताहै ३३ श्रोर चंद्रमासें सप्तमराशिमेंयो ग्रह स्थित होवे श्रोर तिसकों देखने वाला यो ग्रहहै तिसकी राशिमें जन्मेतो अत्यंत सोभाग्यवालीहोतीहै श्रोर स्त्रीजातकाध्यायमें स्वा मी कों रिष्ट करणेवाले योगकहेंगे सो विचारलेणे श्रोर विवाहकी दिशा देशका विचार शुक्रसें श्रोर सप्तमेश ग्रहसें करणा ३४ अव दारहा योग कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नमें धरा १ अवसान १२ स्मर ७ यान ४ रंध्र ८ स्थानोंमें मंगल स्थित होवे सो स्त्रीकों हत कर्त्ताहै ३५ श्रोर कहतेहैं स्त्रीयोंके श्रोर तैसेंहि कन्याकेजन्मलग्नसें मंगल होवे तव स्वामीकों हतकर्त्ताहै ३५ श्रोर कहतेहैं स्त्रीयोंके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें क्रूर ग्रह स्थितहोवे श्रोर नीच शत्रु पापी ग्रहके वर्गमें स्थित होवे तव स्वा मी कों मृत्युकर्त्ताहै ३६

॥ और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें सप्तमऔर दूसरे स्थानमें पापी ग्रह होवें सो स्त्रीके वियोगका दुःख करतेहैं और जिसको स्त्रीकोंवी तैसाहि योग होवे तब पुत्र और धनादियों कर्केयुक्त दोनोंजीतेहैं ॥ ३७ और जिसके जन्मकालमें स्त्रीकीजन्मराशि और स्त्रीराशिसें ९ । ५ राशिगत अपनी राशि होवे अथवाअपनीजन्मराशिसें ५।९ राशिगत स्त्रीकी जन्म राशि होवे तब पुत्रकर्के युक्त होताहै और तिससें विपरीत होणेसें पुत्रकर्के रहित होताहै ३८
और जिसकोंसप्तमसूर्य होताहै तिस स्त्रीके पष्ट और स्तन कठिन होतेहैं और जिसकोंसप्तका स्वामी केंद्रमें स्थित होवे और बृहस्पति चंद्रमा बुध शुक्र इनोंकर्के युक्त होवे तब स्त्री वडे स्तनोंवाली होतीहै और मंगलकर्के युक्त होवे तब शुष्क स्तनों वाली होतीहै और गुलिक और शनि और रा

द्यूनकुटुंबगतौयदिपापौदारवियोगजदुःखकरौतौ तादृशयोगजदारयुतश्चेजीवतिपुत्रधनादियुतश्च३७ कलत्रराशित्रितयेथवास्यात्तदीयसंयुक्तभराशिकोणे कलत्रराशिर्यदिपुत्रशालीतदन्यराशिर्यदिपुत्रहीनः ॥ ३८ ॥
काठिन्योरुकुचामदेदिनकरेकामाधिपेकेंद्रगेजीवेंदुज्ञसितान्वितेगुरुकुचाशुष्कस्तनाभूमिजे ॥ लंवापीनपयोधरासगुलिकछायासुताहिध्वजे धूमादौविषमाकृतिस्तनवतीदुःस्थेथवाकामपे ३९ वंध्यासंगमिनेस्तगेसमवधूकोलिंनिशानाथकेभूपुत्रेतुरजस्वलाजनरतिंवंध्यावधूमेतिवा ॥ वेश्यामिंदुसुतेतुविप्रवनितांजीवेसितेगर्भिणींनीचस्त्रीरतिमर्कजोरगशिखिप्राप्तेथवापुष्पिणीं ४०
क्रीडागारमिनेवनंसुखगतेचारुस्वगेहंविधौभूपुत्रेसतिकुड्यमिच्छतिवुधेजातोविहारस्थलम्

हुकेतु करके युक्त होवे तब लंबे स्तनों वाली होतीहै और धूमादि अप्रकाश ग्रहोंकर्के युक्त होवे तब स्त्री विषम स्तनों वाली क्या एकछोटा वा टेढा अयसे स्तनोंवाली होतीहै अथवा सप्तमेश ६।८।१२ स्थानमें होवे तब विषम स्तनों वाली होतीहै ३९ और जिसकों सूर्य सप्तमस्थानमें होताहै सो वंध्या स्त्रीका संग कर्त्ताहै और चंद्रमा सप्तममेंहोवे तब तुल्यस्त्रीके साथसंग कर्त्ताहै और मंगल सप्तममें होवे तब रजोवतीसें संग कर्त्ताहै अथवा वंध्यासें ॥ और बुध सप्तमहोवे तब वेश्यासें संगकर्त्ताहै और बृहस्पति सप्तमहोवे तबब्राह्मणकी स्त्रीसें संगकर्त्ताहै और शुक्र होवेतब गर्भिणीसें औ शनिसप्तम होवे तबनीच वर्णकी स्त्रीसेंसंग कर्त्ताहै और राहुकेतुहोवें तब गर्भिणीसेंसंगकर्त्ताहै ४०
और जिके जन्मसमयमें सूर्य चतुर्थमें होवे तब वनमें सो रहिताहै और चंद्रमा होवे तब सुंदरघरवाला होताहै और मंगल होवे तब अल्पगृहवाला और बुधहोवे तब विहारयोग्यगृहवालाहोताहै

और बृहस्पतिहोवे तव देवताके घरवाला और शुक्रहोवे तव जलके समीपघरवाला और मंगल राहुकेतुहोवें तव विष्णु और शिवकाभक्त तिसका पुत्रहोताहै तिसके घरमें पितावीवसकर्ताहै ॥ ४१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रके नवांशमें सप्तम स्थानमें मंगल स्थित होवे और सप्तमेश पंचम स्थानमें स्थित होवे तव स्त्रीको रिष्ट होताहै और सूर्य सप्तममें स्थित होवे तव स्त्रीधनवाला होताहै और सप्तमदूसरे भावके स्वामी ६।८।१२ स्थानमें होवें और शुक्रकर्के युक्त होवें वा तीसरे स्थानमें होवें तव स्त्रीके मारणेवाला होताहै और दूसरे और सप्तमघरके स्वामी वली होवें तव स्त्रीवाला होताहै ४२ और जिसके जन्ममें सप्तमेश शुक्र कर्के युक्त होवे और देख्याहोवे वा वृषतुला राशिमें स्थित होवे तव भगचुंवनको प्राप्त होताहै और इसीप्रकारकर्के दूसरेका स्वामी होवे तव भगचुंवन कर्ताहै और दशमका स्वामी शुक्रकर्के युक्त सप्तममें स्थित होवे तव तैसा हि होताहै ४३ और जिसके सप्तम भावका स्वामी वृहस्पति शुक्र होवें तिसको स्त्रीकी भग समान और सुंदर होतीहै और सप्तराशिका

जीवेदेवगृहंसितेतुसलिलंमंदेथवापन्नगेकेतौमाधवशंकरप्रियसुतस्थानं वधूसंगमे ॥ ४१ ॥ शुक्रांशेमदनास्थितेवानिसुतेकामाधिपेपंचमेजायारिष्टमुपैतिसप्तमगतेभानौकलत्रार्थवान् दुःस्थौकामकुटुंवपौसभृगुजौदुश्चिक्ययातौतुवा तत्संख्याककलत्रहावलयुतौवित्तास्तपौदारवान् ॥ ४२ जातःसमेतिभगचुंवनमस्तनाथेशुक्रेणवीक्षितयुतेभृगुमंदिरेवा एवंकुटुंवभवनाधिपतौतथास्यात् दारक्षंगेदशमपेससितेतथैव ४३ कामेश्वरेदेवगुरुःसितोवासमंभगंचारुतरंतरुण्याः ॥ ह्रस्वंभगंसप्तमराशिनाथेशनींदुतारासुतमध्ययाते ॥ ४४ ॥ दीर्घंसमेतिभगमस्तपतौजलर्क्षेतत्कारकेजलगृहोपगतेतथैव ॥ सार्द्रंभगंमदनगेभृगुवीक्षितेवंजगुह्यंत्वनार्द्रमुपयातिभृगौसपापे ॥ ४५ लग्नेशस्थनवांशनाथगृहगेजीवेसमेतिस्त्रियंनीचारातिनवांशकेसतिमृतस्त्रीकोविदारोथवा लग्नेकामपतिस्फुटादपहृतराशित्रिकोणेगुरौलग्नेसप्तमराशिपस्फुटहृतेजीवेमृतिंयोषितः ४६

और सप्तमेश जस्वामी शनि चंद्रमा बुधके मध्यमें स्थित होवें तव छोटी भग होतीहै ४४ और सप्तमेश जलचर राशिमें स्थित होवे तववी लंवी भग होतीहै और सप्तमका कारक जलराशिमें स्थितहोवे तववीलंवी होतीहै और सप्तमस्थानमें चंद्रमा शुक्रकर्के दृष्ट होवे तव आर्द्र होतीहै और शुक्र पापीग्रहकर्के युक्त होवे तव शुष्क भग होतीहै ४५ और लग्नेश कीराशिके नवांशकाजोस्वामीतिसकी राशिमें वृहस्पतिस्थितहोवे सो स्त्रीको प्राप्त होताहै और नीच और शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तव तिसकी स्त्रीमृत होतीहै वा तिसका विवाहनहि होताहै और सप्तमेश स्पष्टहृतलग्नको घटापटेवे और तिस राशिके १।५ स्थानमें वृहस्पति जवगोचरसें आवेतवस्त्री मृत्युकोप्राप्त होतीहै ४६

॥ और लग्नमें सप्तमेश और सप्तमकाकारक शुभके करणे वाले वो होवें और बलयुक्त सप्तमभावमें होवे तवपति सहित स्त्री मृत्युकों प्राप्त होतीहै और पापग्रहों कर्के नाहिं युक्त दृष्ट होवें तव वो मरजातीहै ॥ और सप्तम भावसे अष्टमेशकी दशामें और शुक्राष्टक वर्गमें हीन विदुयुत राशि में जब शनि स्थित होवे तब स्त्री मरतीहै और तिसनवांशमें वृहस्पती होवे तववी मरतीहै ४७ और जिसके जन्ममें सप्तमेश पारिजातादि वर्गमें स्थित होवे और वृहस्पति कर्के युक्तदृष्टहोवे और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवेतव मधु घृत दुग्ध दाल पक्कान्नादिसहित पवित्र सुंदर अन्न और श्रेष्ठ स्त्रीकों प्राप्त होताहै ४८ और जिसके जन्म समयमें पापीग्रहसप्तम भावमें स्थित होवे और सप्तमेश पापीग्रह कर्के युक्त होवे अथवा क्रूर षष्ठ्य

॥ लग्नात्कामपकारकौशुभकरौवीर्याधिकेसप्तमेपत्यासाकमुपैतिमृत्युमवलापापै रयुक्तेक्षिते कामाच्छिद्रदशापहारसमयेशुक्राष्टवर्गोदितेराशौभानुसुतेकलत्रमर णंजीवितदशान्विते ४७ मदनभवननाथेपारिजातादिवर्गेसुरगुरुयुतदृष्टेशो भनस्थानयाते दधिमधुघृतसूपक्षीरपक्वोपदंशैःसहशुचिरुचिरान्नंचारुकांतामु पैति४८ पापेसप्तमभावस्थेतदीशेपापसंयुते ॥ क्रूरषष्ठ्यंशगेवापिकदाचिद्दधि सूपभाक् ॥ ४९ ॥ चंद्रेगुरौवादारेशेजलराश्यंशसंभवे जलग्रहेणवा दृष्टेक्षी रपानादिभाग्भवेत् ५० ॥ सप्तमेशास्थितांशेशेशुभदृष्टिसमान्विते शुभग्र हांशकेचापिगुडक्षीरादिपानभाक् ५१ ॥ बहवःसप्तमेपापाःषष्ठेवारंध्रभेपिवा क्रूरषष्ठ्यंशसंयुक्तामूत्रकृच्छ्रंविनिर्दिशेत् ५२ ॥ अथसप्तमेशफलम् दयितेशो लग्नगत शोकनिःस्नेहमन्यतरभार्याम् ॥ भोगभुजंरूपयुतंजनयतिदयिताद लितचित्तम् ५३

शमें स्थित होवे तव दहिं और दाल कदाचित् भोजन कर्ताहै ४९ और चद्रमा वावृहस्पति वा सप्तमेश जलराशिमें और नवांशमे स्थित होवे और चद्रमा शुक्रकर्के दृष्ट होवे तव दुग्धादि पान कर्ताहै ५० और सप्तमेश जिसनवांशमें स्थित होवे तिसका स्वामी शुभ ग्रह कर्के दृष्ट और शुभके नवांशमें स्थित होवे तव गुड और दुग्धादि पान कर्ताहै ५१ और जिसके जन्ममें सप्तम और छठे और अष्टमस्थानमें बहुत पापीग्रह स्थित होवें तिसकों मूत्ररोग होताहै ५२ ॥ अब सप्तमेशका बारां भावमें फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सप्तमका स्वामी लग्नमेंस्थित होवे सो दूसरेकी स्त्रीमें प्रीति रहितऔरशोक युक्तहोताहै और अपनीस्त्रीमें भोगभोगनेवाला और रूपकर्केयुक्त और स्त्रीकेअधीनहोताहै ५३

ओर जिसके जन्मसमयमें सप्तमभावका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे तब तिसकी स्त्री दुष्टाहो
तीहै ओर सुखकर्के रहित होतीहै ओर स्त्री कृत धन होताहै ओर स्त्री सें संग रहित होताहै ५४
ओर सप्तमेश तीसरे स्थानमें स्थित होवे तब अपने बलकर्के युक्त होताहै ओर बंधुयोंका प्यारा हो
ताहै ओर दुःखीहोताहै ओर क्रूरग्रहहोवेतबतिसकीस्त्रीदेवरसेंरतहोतीहै ५५ ओरसप्तमेशचतुर्थ स्थानमें
स्थितहोवेतबचंचलहोताहै ओरपिताकावैरसिद्धकरणेवाला ओरस्नेहकरणेवालाहोताहै ओर तिसकापि
ताखोटे वचन बोलनेवाला होताहै ओर तिसकीस्त्री पिताकेघरमेंरहितीहै ५६ ओर सप्तमकास्वामी प
चम स्थानमें स्थित होवे तब मनुष्य सौभाग्य कर्के युक्त ओर पुत्रकर्के युक्त होताहै ओर हठमें प्रीती
वाला ओर दुष्टबुद्धि होताहै ओर तिसके पुत्र तिसकी स्त्रीकों पालतेहैं ५७ ओर छठे स्थानमें सप्त

जायापतौधनस्थेदुष्टादयितासुखोज्झिताभवति वित्तंचकलत्रकरंसततंवसतो
विसंगश्च ५४ सप्तमपेसहजगतेआत्मबलोबंधुवत्सलोदुःखी देवररतासुरूपा
गृहिणीक्रूरेतुतद्गृहगा ५५ जायेशेतूर्य्यस्थेलोलःपितृवैरसाधकःस्नेही अस्यापि
तादुर्वाक्यस्तद्भार्यांपालयेच्चपिता ५६ सप्तमपतौसुतस्थेसौभाग्ययुतःसुतान्वि
तःपुरुषः प्रियसाहसदुष्टमतिस्तत्तनयःपालयेद्दयिताम् ५७ रिपुगृहगःकांतेशः
प्रिययासहवैरिणंसरुग्भार्यम् दयितासंगक्षयिणंक्रूरःकुरुतेचमृत्युपदम् ५८
सप्तमपेसप्तमगेपरमायुःप्रीतिवत्सलःपुरुषः निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वीजायते
सततम् ५९ कांतेशेनिधनगतेगणिकासुरतःकरग्रहरहितः वेदद्वितयासक्तोनस्त्री
सेवाकरःपुरुषः६० सुकृतगतेसप्तमपेतेजोवान्शीलवान्प्रियाप्येवं क्रूरेतुषंढरूपो
लग्नेशवीक्षितेनयप्रबलः६१

मेश स्थित होवे सो स्त्रीके साथ वैर वर्त्ताहै ओर तिसकी स्त्री रोग कर्के युक्त होतीहै ओर क्रूर ग्रह
होवे तब स्त्रीके संगमें प्राप्त हुवा-हुवा नाशकों प्राप्त होताहै ५८ ओर जिसकों सप्तमका स्वामी स
प्तम स्थानमें होताहै सो परम आयुषा वाला ओर प्रीती वाला होताहै ओर निर्मलस्वभाव कर्के यु
क्त होताहै ओर निरंतर तेजस्वी होताहै ५९ ओर सप्तमका स्वामी अष्टममें स्थित होवे तब वेश्यामें
रत होताहै ओर विवाहसें रहित होताहैओर दोवेदमें आसक्त होताहै ओर स्त्री कों नहीं सेव
ताहै ६० ओर सप्तमका स्वामी नवम स्थानमें स्थित होवे तब तेजकर्के युक्त ओर श्रेष्टस्वभा
वबाला होताहै ओर तिसकी स्त्रीबी श्रेष्ट होतीहै ओर क्रूर ग्रह होवे तब नपुंसक रूप होताहै ओर नी
तिमें बलवान् होताहै ६१

और सप्तमका स्वामी दशममें स्थित होवे तब राजाके दोष वाला और लंपट और क्रूरवाणी वाला होताहै और क्रूरग्रह होवे तब दुष्ट श्वसुरवाला और तिसकी स्त्री सस्सके वश होतीहै ६२ और सप्तमकास्वामीएकादशमें स्थितहोवे तवतिस्की स्त्री भक्तियुक्त और रूपवाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली होतीहै और। प्रसूतिके समयमें प्रसन्न रहतीहै ६३ और सप्तमकास्वामी वाहरमें स्थानमें स्थितहोवे सोगृह और वंधुसें हीन और स्त्री सें रहित होताहै और तिसकी स्त्री घरसें वाहर चली जातीहै ६४ इतिसप्तमभावविचार। ७

॥ अब अष्टम भावका विचार करतेहैं ॥ अष्टमस्थानसें जीनेका और मृत्युका विचार और निवास स्थानका विचार और मरणमें कारण किसप्रका कर्कैमृत्युहै और अन्नका सुख और मरणमें देशश्री

गृहिणीशेदशमस्थेनृपदोषोलंपटःकुवाक्क्रूरः क्रूरेदुष्टश्वशुरस्तस्यश्वश्रुवशी तुवधूः ॥ ६२ ॥ लाभस्थेजायेशेभक्तारूपान्वितासुशीलाचदयितापरिणी तास्यात्प्रीयतेसाचप्रसवसमये ॥ ६३ ॥ सप्तमपेद्वादशगेगृहवधोनास्तिवाभ- द्रेद्धार्या सांलालापुनरुच्चलतिचतस्यपुरुषस्य ६४ इतिसप्तमभावविचारः अथाष्टमभावविचार. तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तसर्वार्थचिंतायणौ मरणाज्जीवन मरणंस्वस्थानंचमरणहेतुश्च अन्नसुखंमरणदेशपरिभवमपिचिंतयेत्प्राज्ञः १, पारिजाते अयुर्दायमनिष्टहेतुमुदयव्योमायुराशार्कजैरुक्तंतत्सकलंतथापिनि धनप्राप्तिंत्रवक्ष्येपुनः अल्पायुर्व्ययगेथवारिपुगतेपापान्वितेरध्रपेलग्नेशेनयु तेतुतत्रविवलेजातोल्पजीवीनरः २ स्वस्थेरंध्रपतौचिरायुरुदयछिद्राधिपौष ष्ठगौरिःफस्थौयदिवासमेतिमनुजोजातश्चिरायुर्बलम् व्यापारोदयरंध्रराशिपत य.केंद्रत्रिकोणायगादीर्घायुर्विबलाःसंभानुतनयायद्यल्पमायुर्वदेत् ३

स्तिरस्कार इन्होंका विचार वुद्धिमान्अष्टमभावसें चिंतन करे १ और पारिजातमें कहतेहैं ॥ आयुषा का विचार और अनिष्ट उपद्रोंका विचार और कारण लग्न। दशम। अष्टमेश। शनि इन्होंचारोंक के कहे और मृत्युकी प्राप्ति इह निर्याणाध्यायमें आगे कहेंगे और जिसके जन्ममें अष्टमेशवाहरमें वा छठे स्थानमें स्थित होवे और पापी ग्रहकके युक्तहोवे तव अल्पायु होताहै २ और अष्टमेश स्व क्षेत्रमेंस्थितहोवेतवचिरायुहोताहैऔरलग्नेशऔरअष्टमेशदोनों छठेवावाहरमें स्थित होवें तव मनुष्य चि रकाल आयुवलको प्राप्तहोताहै और दशमलग्नअष्टम राशिके स्वामी केंद्र त्रिकोणएकादश स्थानमें स्थितहोवें तव वडीआयुषावालाहोताहै और निर्वलऔरशनिकर्के युक्त होवें तव अल्पायुहोताहै ३

और जिसके जन्मसमयमें दशमेश और अष्टमेश और लग्नेश बली होवें और शनिकेयोगकर्के रहित होवें तब चिरायु होताहै और दशमेशऔरअष्टमेशदोनोंअतिबली होवें तब मध्यमायु होताहै और एकबली होवे तब बहुत थोडी आयुषा होतीहै और तीनों निर्बल होवें तब निरायु होताहै ४ और अष्टमका स्वामी पापी ग्रहकर्के युक्त ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे और पापी ग्रहकी राशिमें होवे तब थोडी आयुषावाला होताहै और अष्टमेश शुभग्रहकर्के युक्त और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे और अष्टमस्थानमें स्थित होवे तब चिरायु होताहै ५ और जिसके जन्ममें लग्नेश अष्टममें स्थित होवे अथवा अष्टमेश अष्टममें स्थित होवे और पापीग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवे और मूढ राशिमें और दृश्य भावमें होवे अथवा छठे स्थानमें होवे तब आयुषासें हीनहो

कर्मेशरंध्रतनुपाबलशालिनश्चेज्जातश्चिरायुरिनिनंदनयोगहीनाः द्वावप्यतीवबलिनौयदिमध्यमायुरेकोबलीलघुतरायुरनायुरन्यत् ४ रध्राधिपेपापग्रहोपयातेदुःस्थानगेपापयुतेल्पमायुः शुभान्वितेशोभनराशियुक्तेशुभेक्षितेरंध्रगतेचिरायुः ५ नाशस्थेतनुपेथवानिधनपेपापिनयुक्तेक्षिते मूढेदृश्यगतेथवारिपुगृहेजातोगतायुर्भवेत् दीर्घायुर्निजतुंगगेशुभयुतेकेंद्रत्रिकोणेथवारंध्रेरंध्रपतौचिरायुरुदितेयातेविलग्नाधिपे ॥ ६ ॥ लग्नाद्व्ययगृहाधिपेबलवतिस्वर्क्षेचिरायुःसुखीलग्नेशोयदिरंध्रपश्चबलिनौकेंद्रस्थितौचेत्तथा आधानोदयराशितोष्टमगृहान्मेपूरणंजन्मभंशुक्रज्ञामरवंदितोक्षितयुतंयद्यायुरारोग्यभाक् ॥ ७ ॥

ताहै और अपने उच्चमें वा केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे तब बडी आयुषावाला होताहै और अष्टमस्थानमें अष्टमेश और लग्नेश होवें तब बडी आयुषावला होताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मकालमें बारहमें स्थानका स्वामी बली होयकर्के अपनी राशिमें स्थित होवे तब बडी आयुषावाला और सुखीहोताहै ॥ और लग्नेश और अष्टमेश दोनोंबली होयकर्के केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवें तब बडीआयुषावाला होताहै और चद्रमाकी राशिसें जो अष्टमराशि तिससें दशम राशि दशमस्थान और जन्मलग्न तिनमें शुक्र बुध बृहस्पति युक्त होवें वा देखते होवें तब आयुषा और आरोग्यताकों प्राप्त होताहै ७

औरअष्टमेयछठेआठमेंवाहरमें स्थानमें स्थित होवे तब तिसकीदशांतर्दशामेंमृत्युहोतीहै और जिस राशिमेंशनिस्थितहोवेतिसकेस्वामीकीदशामेंवाअष्टमेशकीदशामेंमृत्युहोतीहै और अष्टमेशऔरअष्टम स्थितग्रहकी दशामें मृत्युहोतीहै इनमें यो ग्रह वली होवे तिसका विचार करके तिसकी दशामें मृत्युकहे ८ और जिसके जन्ममें लग्नका स्वामी ६ । ८ । १२ स्थानमें स्थित होवे अथवा राहु केतु करके युक्त होवे तिसकी दशामें अथवा लग्नेश अष्टमेश करके युक्त यो ग्रह तिसकी दशा मृत्युको देतीहैऔर जिसराशिमें लग्नेश अष्टमेश दोनोस्थित होवें तिसके स्वामीकी दशा मृत्यु देतीहै और जिसराशिमें लग्नेश अष्टमेश स्थित होवें तिनमें प्रथम जिसमें राहुआवे तिसकी दशामें मृत्यु क्रमसें कहे ९ और कहतेहै दशमेश अष्टमेश लग्नेश और शनैश्चर इन्हों चारोंके मध्यमें यो ग्रह निर्बल

रंध्रेशेरिपुरंध्ररिःफगृहगेतत्पाकभुक्तौमृतिंमदाक्रांतगृहेशपाकसमयेरंध्रेशभुक्तौ तथा पाकेरंध्रगृहाधिपस्यतदनुक्रांतस्यभुक्तौतुवाखेटानांबलदुर्बलेनसकलं संचिंत्ययत्तद्वदेत् ॥ ८ ॥ लग्नेशेनिधनारिरिःफगृहगेसाहीसकेतौतुवाहोरार ध्रपसंयुतग्रहदशाजातस्यमृत्युप्रदा तत्खेटान्वितराशिनायकदशानाशप्रदादेहिनाम् खेटानांप्रथमागतस्यफणिनःपाकापहारेक्रमात् ॥९॥ व्यापारर ध्रतनुनाथशनैश्चराणांमध्येविधुतदयुतोविबलोग्रहोय· तत्पाकभुक्तिसमयेमर णंनराणांतद्युक्तवीक्षकनभोगदशांतरेवा १० नाशेनाशपतौतुतद्ग्रहदशाभुक्तौ समेत्यामयलग्नेलग्नपतौतुलग्नपदशाभुक्तौशरीरार्तिभाक् पश्चादामयनाशनंत नुसुखंमोदश्चसंजायतेरंध्रेशेवलसंयुतेतनुपतेर्हायेमृतिर्देहिनाम् ११ जातस्यज न्मसमयेविबलेविलग्नेलग्नेशरंध्रपतिपाकमतीवकष्ट पश्चादतीवसुखमेतिविल ग्ननाथेवीर्यान्वितेनिधनपस्यमृतिदशायाम् १२

होयकरके राहुके साथ युक्त होवे तिसकी दशातर्दशामें मरण होताहै अथवा तिसकरके युक्त वा देखनेवालायो ग्रहतिसकीअंतर्दशामें मरण होताहै १० और अष्टमेशअष्टमस्थानमें स्थित होवे तब तिसकी दशातर्दशामें रोगको प्राप्त होताहै और लग्नेश लग्नमें स्थित होवे और तिसकी दशांतर्दशामे रोगी होताहै और पीछेसें रोगका नाश होताहै और देहसुख और आनंदहोताहै और अष्टमेशबलीहोवे तब लग्नशकी दशामें मनुष्योंकी मृत्यु होतीहै ११ और जिसके जन्मसमयमें लग्न निर्बल होवे तब लग्नके स्वामीकी और अष्टमके स्वामीकीदशामें असतकष्टहोताहै और पीछेसें अत्यंतसुखहोताहै और लग्नकास्वामी बलवान् होवे तब अष्टमेशकी दशामें मृत्युको प्राप्त होताहै १२ ॥

और जिसके जन्ममें लग्नेश और अष्टमेश बली होयकर्के केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवें जिसराशिमें स्थित होवें तिसके स्वामीकीदशामें रोगका नाश होताहै और अष्टमेश और लग्नेश कर्केयुक्त जो ग्रह सो केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे और अष्टमस्थानमें स्थित यो ग्रह तिसकी दशामें निश्चयकर्के मृत्युको प्राप्तहोताहै १३ और अष्टमस्थानमें ग्रह नहि होवे तवलग्न गत ग्रहकर्के चिंतनकरे और शनि लग्नमें होवे अथवा अष्टममें होवे तिसकी दशातर्दशामें मृत्यु होतीहै और अष्टमेश लग्नेश दो नों शुभग्रहहोवें तब तिनके साथ यो दुर्बल ग्रह युक्त होवे तिसकी दशातर्दशामें मृत्युकहे १४ और लग्नसे पंचम स्थानकी राशिके स्वामी साथ यो ग्रह स्थित होवे तिसकीदशा बारासे भागलेकर्के यो

देहेशेचविनाशपेबलयुतेकेंद्रत्रिकोणस्थिते तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमयेरोगापवा दःफलं रंध्रेशस्तनुपश्चखेचरयुतौकेंद्रत्रिकोणस्थितौ रंध्रस्थानगतस्यपाकसम येमृत्युसमेतिध्रुवम् १३ नोचेदष्टमखेचरोयदितनुप्राप्तेनसंचिंतयेन्मंदलग्नगते थवाष्टमगतेतत्पाकभुक्तौमृतिः रंध्रेशोदयनायकौसुखचरौयुक्तग्रहादुर्बलोयस्त स्यद्युचरस्यपाकसमयेभुक्तौचमृत्युंवदेत् १४ लग्नात्पंचमराशिपेनसहितव्यो माटनानांदशासंख्याभानुहृतावशेषगृहगेमृत्युंदिनेशेसति पुत्रेशेनावियच्चरेण सहितस्वाब्दनसंचिंतयेल्लग्नेशेनयुताब्दमंगविहृतसंक्रांतिपूर्वंदिनं १५ त्रिकोण केंद्रेयायदिपितृतनुक्षेत्रपतयोदशाभुक्तौतेपामनुमरणमाहुर्मुनिगणाः सभौमेम दाढ्येफणियुजितुवंदौनिधनगे त्वपस्मारस्तस्मान्मरणमथवंदौक्षतनौ १६

योंकी राशि रहे तिसमें जब सूर्य स्थित होवें तब मृत्युहोतीहै और पंचमेश कर्के स्थित यो ग्रह होवे तिसके जितने वर्ष दशाके होवें उतने वर्षोंकर्के मृत्युकहे और पंचमेशके वर्षलग्नेशके वर्षोसाथ मिलायकर्के तिससे १२ भागलेवे तव संक्रांतिसेलेकर्के दिनसंख्या मरणकालमें होतीहै १५ और कहतेहै यद दशमेश लग्नेश चतुर्थेश त्रिकोण ९ । ५ केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें स्थित होवेंति नकी दशान्तर्दशा कालमें मुनियोंके समूह मृत्युकहतेहैं अथवा मंगलशनि एक राशिमें स्थित होवेंअथवा राहुकर्के युक्त चंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तव मिरगी रोगकर्के मरण होताहै अथवा क्षीणचंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तिसकीदशातर्दशामें मरण होताहै १६

औरजिसकोंचंद्रमादूसरेस्थानेमेंअथवाअष्टमस्थानेमेंस्थितहोवेतवतिसकेदेहमेंप्रसीनावहुत होताहै और जिसकों दशमस्थानमें मंगल बुधकर्के युक्त होवेतिसके देहमें दुर्गंधिआवतीहै औरजिसके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें दो पापीग्रह होवें सो रोग और प्रमाद वालाहोताहै और जिसकों शुभग्रह दशम स्थानमें शुभग्रहकर्के युक्त होवे सो आनदके साथ सुखीहोताहै १७ और जिसकों शीर्षोदयराशियोंमें ५ ६ ७ ८ ११ वा चरराशियोंमें ४ ७ १० १ दूसरेस्थानका स्वामीस्थित होवेवालग्नेश स्थितहोवे वा राहु स्थित होवे तिनकीदशामें और धनेश लग्नेश राहुपृष्ठोदय २ १ ९ ४ ३ १० राशियोंमेंस्थितहोवेंतव तिनके द्रेष्काणकेस्वामीतिन्होंकर्केदृष्टहोवेंऔरयुक्तहोवेंतिनकी दशामेंमृत्युहोतीहै १८ और विशेष सर्वार्थचिंतामणीमें कहतेहे ॥ अष्टमेश और लग्नेश दोनो बलकर्के हीन होवें और मं

चंद्रेवित्तगतेथवानिधनगेजातोवहुस्वेदवान् कर्मस्थानगतेकुजेवुधयुतेदुर्गंधदेहोभवेत् पापेरंध्रगतेतुपापसहितेरोगप्रमादाकरः सौम्योऽयोमगृहेतिशोभनयुतोजातःसमोदःसुखी १७ शीर्षोदयेषुचरभादिषुवित्तपस्यलग्नाधिपस्यभुजगस्यदशापहारे पृष्ठोदयेसतितदीयदृगाणपस्यतद्वीक्षितादिसहितस्यमृतिंवदेद्वा १८ सर्वार्थचिंतामणौ आयुर्विलग्नाधिपतीवलेनहीनौधरासूनुत्रणेशयुक्तौ युद्धेमृतिंतस्यवदंतितज्ज्ञाःशस्त्रेणवातन्मरणंविशेषात् १९ रंध्रांगनाथौयदिवारिपुस्थौराव्हान्वितौकेतुयुतौसमंदौ तद्भुक्तिकालेप्यथवाविपाकेशस्त्रेणचौरैर्मरणंप्रयाति २० रंध्रांगपौवाहननाथयुक्तौतस्मान्मृतिंतस्यवदंतितज्ज्ञाः मृतिंत्वजीर्णाद्गुरुसंयुतौतौदेहेशजीवौरिपुगावजीर्णात् २१ लग्नेश्वरेवाहननाथयुक्तेवागीश्वरेणापियुतेत्वजीर्णात् देहेश्वरेवाहनवित्तभावनाथान्वितेवामरणंत्वजीर्णात् २२

गलकर्के और षष्ठेश कर्के युक्त होवें तिसकी मृत्युयुद्धमें होतीहैअथवाविशेषकर्केशस्त्रसेंमृत्यु होतीहै असें शास्त्रकेजानने वाले कहतेहैं १९ और जिसकेजन्मकालमे अष्टम और लग्नके स्वामीछठेस्थानमे स्थित होवें और राहु केतु शनि कर्के युक्त होवें तिनकी दशामें वा अतर्दशामें शस्त्रकर्के चोरोंके हाथ कर्के मरताहै २० और जिसके जन्मकालमें अष्टम और लग्नके स्वामीचतुर्थेश कर्के युक्तहोवें तव वाहनकर्के मृत्युकों प्राप्तहोताहै और अष्टमेश लग्नेश दोनों बृहस्पतिकर्के युक्त होवें तव अजीर्णकर्केमरताहे २१ और लग्नेश चतुर्थके स्वामीकर्के युक्त होवें और बृहस्पति कर्के युक्त होवें तव अजीर्णसेंमरताहै और लग्नेश चतुर्थ औरधनभावके स्वामी कर्केयुक्त होवे तववाअजीर्णसेंमरताहै २२

और कहतेहैं श्रीर
श्रौर कहतेहै यो ग्रह अष्टमेश करके युक्त होताहै तिसकी दशामें वा अंतर्दशामें मरण कहतेहैं श्रौर
पित्रादि भावोंके स्वामी अष्टमेश करके युक्त दृष्ट होवें तब तिन्हकी दशांतर्दशामें पित्रादियोंका मरण
कहतेहैं २३ श्रौर जिसके जन्मसमयमें अष्टम भावमें शुभग्रहोंका संबध होवे तब तिसका
निरकार नाहि होताहै श्रौर अष्टमस्थानमें चर। १ ४। ७। १०। राशि स्थित होवे श्रौर अष्टमका
स्वामी चर राशिमें स्थित होवे तब परदेशमें मृत्यु होतीहै २४ अथवा शनि चरराशि श्रौर चर
नवांशमें स्थित होवे तबभी विदेशमें मरताहै श्रौर अष्टम भावमें स्थिरराशिश्रौरस्थिरराशि २५८११
कानवांशहोवेश्रथवाशनिस्थिरराशिश्रौरस्थिरनवांशमेंस्थितहोवेवाअष्टमकास्वामीहोवेतवअपनेघरमेंमृत्यु
कोंप्राप्तहोताहै२५श्रौर अष्टमभावमें द्विस्वभावराशि श्रौर नवांशहोवेंतव रस्तेमेंमृत्युकोंप्राप्तहोताहै २६

रंध्रेशयोगान्मरणंदशायामंतर्दशायामथवावदंति पित्र्यादिभावाधिपयोगदृष्ट्या
पित्रादिकानांमरणंतथैव २३ शुभग्रहाणांसंबंधेरंध्रेपरिभवोनहि चरेरंध्रेम्त
तिर्दूरेतदीशेचरराशिगे २४ शनौवाचरराशिस्थेचरांशस्थेतदाभवेत् स्थि
रेरंध्रेतदीशेपिस्थिरराशौतदंशके २५ शनौवास्थिरराश्यंशेस्वगृहेमरणंभवेत्
रंध्रेद्विदेहराश्यंशेमार्गेमरणमादिशेत् ॥ २६ ॥ अथाष्टमपतिभावफलं
जन्मप्रदीपे अष्टमपेलग्नगतेबहुविघ्नोदीर्घरुक्स्तेनः नेष्टानुवादनि
रतोलक्ष्मींलभतेनृपतिवचसा. ॥ २७ ॥ निधनपतौधनलीनेल्पजीवी
वैरिवान्नृपश्चौरः क्रूरेसौम्येतुशुभंकिंतुक्षितिपालतोमरणम् २८ अष्टमपतौतृती
येबंधुविरोधीसुहृद्विरोधीच व्यंगोदुर्वाग्लोलःसोदररहितोभवत्यथवा २९

अब अष्टमेशका द्वादशभावमें फलकहतेहै जिसके जन्ममें अष्टमका स्वामीलग्नमें स्थितहोवेसोबहुत
विघ्नोंकों प्राप्तहोताहै और दीर्घरोगी होताहैऔर चोर होताहै और अशुभकर्ममेंरतहोताहै और राजाके
वचनकर्के धनकों प्राप्तहोताहै २७ और अष्टमेश दूसरेस्थानमें स्थितहोवे तव थोडाकालजीताहै
और शत्रुयोंकर्के युक्त और जीवरक्षकश्रौरचोरहोताहैक्रूरग्रहहोवे तबश्रौर शुभ ग्रह होवे तवशुभ फल
कर्ताहै और राजासे मृत्युकों प्राप्तहोताहै २८ और अष्टमका स्वामी तीसरेस्थानमें स्थितहोवे तव
भाईयोंसे मित्रोंसे विरोधीहोताहै और व्यंगहोताहै और दुष्ट वाणीवाला और चंचलहोताहै अथवा
भ्रातासें रहित होताहै २९

और अष्टमेश चतुर्थस्थानमे स्थितहोवे तवपिताका शत्रुहोताहै और पिताके धनकोंहरताहै और पितापुत्रकी लडाई होतीहै और पिता रोगकर्केयुक होताहै ३० और अष्टमकास्वामी पाचमेस्थानमें स्थितहोवेऔरक्रूरग्रहहोवेतवपुत्रहीन और शुभकर्केश्रेष्ठपुत्रवाला होता। और तिसकापुत्र जीतानहि जेकरजीवे तव धूर्तकर्म कर्ताहै ३१ और अष्टमेश छठेस्थानमे और सूर होवेतवराजाकाविरोधीहोताहै और वृहस्पतिहोवेतव देहमें खेदकर्केयुक होताहै और शुक्रहोवे तव नेत्रोंमें दोषवाला होताहै और चद्रमाहोवे तव रोगीहोताहै और अष्टमेश मंगल छठे स्थानमें स्थित होवे तव दूसरेकी स्पर्धावाला होताहै और बुध अष्टमेश छठे स्थानमें होवे तव सर्पके भयको प्राप्त होताहै और शनि अष्टमेश छठे स्थानमें स्थित होवे तव मुखपीडा कर्केयुक होताहै औरचंद्रमाकर्के और शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे तब खोटाफलकुछनहिकर्ताहैऔर तैसेंहि चद्रमा से अष्टम घरके स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवें तव कष्ट कर्तेहैं ३२ और जिसको अष्टमका स्वा

निधनेशेतूर्य्यगतेपितृरिपुःपित्तोनयेल्लक्ष्मीं पितृपुत्रयोश्चयुद्धंपिताचरोगान्वितोभवति३० छिद्रपतौतनयस्थेक्रूरेसुतविरहित शुभेसुसुत जातोपिनैवजीवति जीवत्यथकैतवकर्मरतः ३१ छिद्रेशेरिपुसंगतेदिनकरेभूभृद्विरोधीगुरौस्वगेसीदतिदृष्टिरोगकलितःशुक्रेसरोगीविधौभौमेस्पर्धासहितोबुधेहिभयभृत्तुंडार्त्तिभूतःशनौकष्टंचैवविधोर्हितत्रशशभृत्सौम्येक्षितेनैवकिम् ३२ मृत्युपतौसप्तमगेदुष्टःकुस्त्रीप्रियोगुदव्याधिः क्रूरेभार्याद्वेषीकलत्रदोषान्मृतिंलभते ३३ निधनपतौनिधनगतेव्यवसायीव्याधिवर्जितोनीरुक् कितवकलाकलितवपुःकितवकुलेजायतेविदितः ३४ मृतिनाथेनवमस्थेनि संगोजीवघातकःपापी निर्बंधुर्निःस्नेहीपूज्यैर्विमुखोमुखव्यंगः ३५ कर्मगतेनिधनेशेनृपकर्मानीचकर्मनिरतश्च आलसःक्रूरोन्यभवस्तनयोवानजीवतिमाता ३६

मी सप्तम स्थानमें क्रूर ग्रह होवे तव दुष्ट होताहै और खोटी स्त्रीका प्यारा होताहै और गुदाकेरोगकर्के युक होताहै और स्त्रीका द्वेषी होताहै और स्त्रीके दोषसें मृत्युको प्राप्त होताहै ३३ और अष्टमका स्वामी अष्टममें स्थित होवे तव वडे उद्यमके करणे वाला और उपद्रवोंसें रहित और रोगहीन होताहै और धूर्त कलाकर्केयुक्त होताहै और धूर्तोंके कुलमें प्रसिद्ध होताहै ३४ और अष्टमका स्वामी नवमस्थानमेंस्थित होवे तव संगसेंरहितऔर जीवोंकाघातकरणेवालाऔरपापी होताहै और वंधुहीन और स्नेहकर्के हीन और गुरुदेवतासें विमुख औरटेढेमुखवालाहोताहै ३५ और दशम स्थानमे अष्टमेश स्थित होवे तव राजाका चाकर और नीचकर्मकरणे वाला होताहै और आलसी और क्रूर स्वभाववाला अथवा अन्यजात होताहै अथवा तिसकी माता नहि जीवतीहै ॥ ३६ ॥

ओर अष्टमका स्वामीएकादशमे स्थितहोवे सो बाल्यावस्थामें दुःखी होताहै और पिछली अवस्था
में सुखी होताहै और शुभग्रह होवे तब बडी आयुषा वाला और पापी ग्रह होवे तब थोडी आ
युषा वाला होताहै ३७ और अष्टमका स्वामी बारहमें स्थानमें स्थित होवे तब क्रूरग्रहसें चोर और
शठ और निषिद्ध होताहै और अपनी इच्छासे चलने वाला और टेढेदेह वाला और मृतहुये पीछे
तिसके देहको काक और कुत्ते भक्षण करतेहे । ३८ । इत्यष्टमभावविचारः । ८ । अब नवम भावका
विचार कहतेहें तिसमें क्या २ वस्तुका विचारहे सो कहतेहें भाग्योंका प्रभाव और गुरु और तप
और धर्म और शुभकर्म इन्होंका विचारनवमभावसे और बृहस्पतिसें करे और जिसके जन्मकालमें
नवमका स्वामी और बृहस्पति शुभग्रहके वर्गमें स्थित होवें और नवममें शुभ ग्रह युक्त होवे सो
भाग्यवान् होताहे १ और यदनवमस्थानमें पापग्रह और शत्रुनीचराशिमे स्थितऔरअस्तयो ग्रहहैसो
स्थित होवे तब यश और धन और धर्म करके रहित होताहे और पापीग्रहवीअपनेउच्चमें और मित्र

लाभस्थेचाष्टमपेबाल्येदुःखीसुखीपश्चात् दीर्घायुःसौम्यग्रहेपापेल्पायुर्नरोभव
ति ३७ व्ययसंस्थितेष्टमेशेक्रूरेवातस्करःशठोनिकृष्टश्च आत्मगतिर्वक्रवपु
र्मृतस्तुकाकादिभिर्भक्ष्यः ३८॥ इत्यष्टमभावविचारः अथनवमभावविचार॥
तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् भाग्यप्रभावगुरुधर्मतपःशुभानिसंचिंतयेन्नवमदेवपु
रोहिताभ्याम् भाग्येशदेवसचिवौशुभवर्गयातौ भाग्येशुभग्रहयुतेसमुपेतिभा
ग्यम् १ पापारिनीचरविलुप्तकरानभोगाभाग्यस्थिताःयदियशोधनधर्महीनः
पापोपितुंगनिजमित्रगृहोपगश्चेद्भाग्येतुभाग्यफलदः सततंनराणाम् ॥ २ ॥
सौम्यस्वामियुतेक्षितंनवमभंभाग्यप्रदंप्राणिनांतद्राशीशसमेतराशिरमणोभा
ग्यस्यकर्त्ताभवेत् ॥ भाग्येशःपरिपाचकोभववितत् पुत्रेश्वरोबोधनस्तुंगःस्व
क्षेत्रगृहोपगायदिचिरंभाग्यंप्रकुर्वंतिते ३ भाग्यस्थेदशवर्गजोच्चभवनस्वांशास्थि
तेपचकेभाग्यश्रीविपुलंसमेतिनृपतिस्तत्स्वामियुक्तेक्षिते ॥ चत्वारोबलशालि
नोनवमगाभाग्यंप्रयच्छंतिते तुंगस्वांशगताःस्वदेशविभवंत्वन्यत्रचान्यंशगाः४

और जिसके जन्मकालमें नवम-
क्षेत्रमे नवम स्थानमें गत होवे तब निरंतर भाग्यफलको देतेहे २ और जिसके जन्मकालमें नवम
भाव शुभग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तिसको भाग्योदय करतेहे और नवमका स्वामी जिस राशिमें स्थि
त होवे तिस राशिका स्वामी ग्रह भाग्यकर्त्ता होताहै अर्थात् तिसग्रहकी प्रकृतिसे और जात्यादि
गुणाकरके भाग्योदय होतेहैं और जिसके जन्मकालमें नवमेश पाचकावस्थामें और पंचमेश बोधना
वस्थामें स्थित होवे और उच्च स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तब चिरकाल भाग्यको प्राप्त होताहे ॥ ३ ॥ और
जिसके जन्मकालमें नवम स्थानमें पांचग्रह दशवर्गमें अपने उच्च और स्वक्षेत्र और स्वनवांश और
मित्रके नवांशमें स्थित होवें और नवमेश करके युक्त दृष्ट होवें सो भाग्य और बहुतलक्ष्मीकरके युक्तराजा
होताहै और चार ग्रहबली होयकरके नवमस्थानमें स्थितहोवें और उच्च स्वनवांशमे स्थित होवेंसोअपने
देशमे ऐश्वर्यको प्राप्त होताहै और अन्यराशिकेनवांशमें स्थितहोवे तब विदेशमे भाग्यवालाहोताहै ४

और नवमभाव और नवमका स्वामी शुभग्रह कर्के युक्त दृष्ट होवे सो निश्चयकर्के भाग्यो को प्राप्त होताहै और नवमस्थानमें शुक्र वा चंद्रमा पाप ग्रह कर्के युक्त होवे तव गुरोंकी स्त्रीमें रत होताहै और नवम स्थानमें बृहस्पतिसूर्यकर्केदेख्याहोवेतवराजावाराजाका मंत्रीहोताहै औरवुधकर्केदेख्या होवे तब धनीहोताहै और शुक्रकर्केदेख्याहोवे तव घोडयोंकास्वामीहोताहै और चंद्रमा कर्केदेख्याहोवे तवे सुखी होताहै और शनिकर्केदेख्याहोवे तव ऊठोंसें लेकर्के चार पाए जीवोंकेधनवाला होताहै ५ और जिसकेजन्मकालमें बृहस्पतिचंद्रमा सूर्य कर्के देखेहोवें सो विद्यावान् और हाथी घोडेयों कर्के और गौयोंकर्केधनवान् होताहै नवमकास्वामी और बृहस्पतिमंगलसूर्यकर्केदेखेहोवेंतवसेनाऔरवाहनों कर्के युक्त और धनका स्वामी होताहै और सूर्यबुधकर्के देखेहोवें तव विद्यावादके आनद वाला और बडे धनवाला होताहै और नवम स्थानमें बृहस्पती शुक्र सूर्यकर्के देखेहोवें तव नम्रवाणी वाला

भाग्येतत्पतिशोभनेक्षितयुतेभाग्यंसमेतिध्रुवंधर्मेपापयुतेभृगौशशिनिवाजातो गुरुस्त्रीरतः ॥ दृष्टेर्केणगुरौनृपःक्षितिभुवांमंत्रीवुधेनार्थवान्शुक्रेणा श्वपतिःसुखीतुशशिनामंदेनचोष्ट्रादिभाक् ॥ ५ ॥ विद्वान्वारणगोतुर गधनवानिंद्वर्कदृष्टेगुरौसेनावाहनरत्नवान्नवमपेजीवेकुजार्केक्षिते ॥ विद्यावाद विनोदवित्तविपुलःसूर्येदुजालोकिते ॥ शुक्रादित्यनिरीक्षितेविनयवाक्जी वेतपस्थानगे ॥ ६ ॥ मंदादित्यनिरीक्षितेगुणनिधिःप्राज्ञोवहुग्रामवान् ॥ जीवेचंद्रकुजेक्षितेपृथुयशःसेनामुखश्रीयुतः ॥ तारेशेंदुजवीक्षितेगृहसुख श्रेष्ठार्थशय्यासनःशुक्रेंदुप्रविलोकितेवितनयःशूरोधनीकर्मकृत् ७ चंद्रादि त्यसुतेक्षितेतुगुणवान्वादीविदेशंगतोजीवेशुक्रवुधेक्षितेनवमगेविद्याधिकोजा यते ॥ सर्वव्योमचरेक्षितेनरवरोराजावहुद्रव्यवान्सौभाग्यांवरराज्यवित्तफल दाःसर्वेतपस्थानगाः ८

होताहै ६ और शनिसूर्यकर्के देख्याहोवे तवगुणका समुद्र और चतुर और बहुत ग्रामों वाला होताहै और नवम स्थानमेंवृहस्पति चंद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे तव बडे यशवाला और सेनासें लेकर्के शोभासें युक्त होताहै और चंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे तव घरका सुख और श्रेष्टधन और शय्या और आसनके सुखको प्राप्त होताहै और शुक्र चंद्रमा कर्के देख्या होवे तव पुत्ररहित और शूरवीर और धनी और कर्मके करणे वाला होताहै ७ और चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तव गुणी और वादी और विदेशमें जाने वाला होताहै और नवम स्थानमें बृहस्पति शुक्र बुध कर्के देख्या होवे तव अधिक विद्या कर्के युक्त होताहै और संपूर्ण ग्रहोंकर्के देख्या होवे तव मनुष्यों में श्रेष्टराजा वडेद्रव्यवाला होताहै और संपूर्णग्रह नवम स्थानमें स्थित होवें तव सौभाग्य और वस्त्र और राज धनफलका देतेहैं ८

॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमा नवम स्थानमें स्थित होवे और शनि बुध मंगल कर्के देख्या होवे सो राजा होताहै और उच्चराशि गत नवम स्थानमें ग्रह स्थित होवे और शुभग्रह कर्के दृष्ट होवे तब राजा होताहै और नवम स्थानमें चंद्रमा कर्के युक्त सूर्यहोवे तब धनी होताहै और नेत्र रोगकर्के पीडित और विवादकरणेवाला होताहै और मंगल कर्के युक्त सूर्य नवम स्थानमें स्थित होवें तब राजाका प्यारा होताहै ९ और सूर्य बुधकर्केयुक्तहोवे तब बहुत शत्रुयो कर्के पीडित होताहै और दुःखी और रोग कर्के पीडित होताहै और सूर्यबृहस्पति कर्के युक्त होवे तब पिताकी प्रसन्नता करणे वाला और धनीहोताहै और सूर्यशुक्र कर्के युक्तहोवे तब रोगी होता है और शनिकर्के युक्तहोवे तब तिसका पिता कुक्षिरोग कर्के पीडित होताहै और चंद्रमा मंगलकर्के युक्त होवे तब माताके हत करणे वाला और धनर हित होताहै १० और नवम स्थानमें चंद्रमा

भाग्यस्थेशशिनिप्रभाकरसुतज्ञारेक्षितेभूपतिस्तुंगव्योमचरेतपस्थलगतेभूपः शुभालोकिते ॥ सेंदौतिग्मकरेतुतत्रधनिकोनेत्रामयार्त्तोभवेद्दुःखी वादरतःकुजेनसहितेभानौनृपालप्रियः ॥ ९ ॥ भानौसेंदुसुतेसपत्न वहुलोदुःखीरुगार्त्तःसदावागीशेनयुतेपितृप्रियकरोजातःस्वयंवित्तवान् रोगी शुक्रयुतेरवौशनियुतेरुग्णःपिताकुक्षिरुक्चंद्रेसावनिनंदनेतुजननीहंताधनस्त्या गवान् १० वाग्मीशास्त्रकलापवान्नवमगेचंद्रेसतारासुतेसेंदौमंत्रिणिधीरधीर्न रवरःश्रीमान्गुरुस्थानगे तारेशेकुलटापतिःसभृगुजेसापत्नमातृप्रियश्चंद्रेम दयुतेविधर्मगुणवान्माताकुलप्रच्युतः ॥ ११ ॥ शास्त्रीभोगसुखी कुजेबुधयुतेसेड्येधनीपूजितः ॥ शुक्रेणाढ्यविधूपतिःसहकुजेवादीविदेशंगतः भानौभानुसुतान्वितेनवमगेपापीपरस्त्रीरतः ॥ सौम्येसामरवंदितेपटुमति र्विद्वान्धनीपण्डितः ॥ १२ ॥

बुध कर्के युक्त होवे तब वक्ता और शस्त्रोंके जानने वाला होताहै और चंद्रमाबृहस्पति कर्के युक्त होवे तबधैर्यबुद्धिवाला और राजा और लक्ष्मी वान् होताहै और बुध शुक्र दोनों नवम स्थानमें स्थित होवें तब व्यभिचारणीस्त्रीका स्वामी और विमाताका प्यारा होताहै और चद्रमा शनिकर्कयु क होवे तब धर्महीन गुणों वाला और मात् कुलसें रहित होताहै ॥ ११ ॥ और मगल बृह. और नवम स्थानमें मगल बुध दोनों स्थित होवें तब भोगोंके सुख वाला होताहै और मंगलशुक्रकर्के युक्त होवे तब और स्पति दोनोंस्थितहोवेंतब धनीऔर लोकोंकर्केपूज्यहोताहै और विदेश गमन करणे वाला होताहै और नवम स्त्रीयोंका स्वामी होताहै और वादकरणे वाला और परस्त्रीमें रत होताहै और बुध बृहस्पति कर्के युक्त स्थानमें सूर्य शनिकर्के युक्त होवे तब पापी और नवममें स्थितहोवे तब चतुरबुद्धि और विद्वान् और धनी और पंडित होताहै १२

और बुध शुक्रकर्के युक्त होवे तब चतुरऔर गीतमेंप्रीति वाला और रतिमें प्रीति वाला होताहै और पंडित होताहै और बुध शनिकर्केयुक्तहोवे तब रोगीहोताहै और बडे धन वालाऔर सत्यबोलनेवाला होताहै और बृहस्पति शुक्र कर्के युक्त होवे तब बडी आयुषा वाला और बडी लक्ष्मी वाला होताहै और बृहस्पति शनिकर्के युक्त होवे तब रोगयुक्त और रत्न धन वाला होताहै और शुक्र शनिकर्के युक्त होवे तब राजाके बराबर मानवाला होताहै १३ ॥ इतिनवमभावेद्वियहयोगाः ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा मंगल नवम स्थानमें स्थित होवें तब क्षतकर्के युक्त अंगों वाला और पिता मातासें रहित होताहै और सूर्य चंद्रमा बुध स्थित होवें तब हिंसा करणेवाला होताहै और सूर्य चंद्र बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब सुख और वाहनों कर्के युक्त होताहै १४ और सूर्य चंद्रमा शुक्र नवम स्थानमें स्थित होवें तब स्त्रीसें लडाई करणे वाला और राजाका प्यारा और धनके नाश करणे वाला होताहै और सूर्य चंद्रमा शनि नवममें स्थित होवें तब चाकरी करणे वाला और

प्राज्ञोगीतरतिप्रियःसभृगुजेचंद्रात्मजेपण्डितःसौम्येमंदयुतेतुरोगतनुकोवित्ताधिकःसत्यवाक् जीवेशुक्रयुतेचिरायुरधिकश्रीमान्समंदेगुरौरोगीरत्नधनःसितेसितयुतेभूपालतुल्योभवेत् १३ रवींदुभौमानवमोपयातायदिक्षतांगःपितृमातृहीनःहिंसीविकमारविचंद्रसौम्यारवींदुजीवाःसुखवाहनाढ्यः १४ चंद्रार्कौससितौवधूकलहकृत्राजप्रियोवित्तहा भाग्यस्थौरविशीतगूशनियुतौभृत्योविरोधीसतां ॥ रव्यारौसबुधौतुतत्रसुभगःक्रुद्धोविवादप्रियःसेड्यौदेवपितृप्रियःसुतवधूवित्तान्वितोजायते ॥ १५ ॥ सूर्यारौससितौविवादनिरतःकोपीवधूदूषकःछायासूनुयुतौविबंधुरधनोऽसाधुःपितुर्मारकः ॥ धर्मस्थौरविचंद्रजौगुरुयुतौराजप्रियोवित्तवान्सार्व्जौराजसमःसभानुतनयौपापीपरस्त्रीपतिः १६ जीवार्कौसितसंयुतोपरवधूसक्तोधनीपण्डितः सार्कौजीवदिवाकरौचाविटस्त्रीस्वामीतपस्थानगौ ॥

श्रेष्ठ जनोंका विरोधी होताहै और सूर्य मंगल बुध नवममें स्थित होवें तब श्रेष्ठ भाग्यों वाला और क्रोधी और विवादमें प्रीति वाला होताहै और सूर्य मंगल बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब देवता पितरोंमें प्रीति वाला और पुत्र स्त्री धन कर्के युक्त होताहै १५ और सूर्य मंगल शुक्र नवममें स्थित होवें तब विवादमें रत और क्रोधी और स्त्रीका द्वेषी होताहै और सूर्य मंगल शनि नवममें होवे तब बंधुहीन धनहीन और खोटे स्वभावाला और पिताके मारणे वाला होताहै और सूर्य बुध बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब राजाका प्यारा और धनी होताहै और सूर्य चंद्रमा बृहस्पति नवममें स्थितहोवें तब राजाके तुल्य होताहै और सूर्य बुध शनि नवममें होवें तब पापी और प्राई स्त्रीका स्वामी होताहै १६ ॥ और सूर्य बृहस्पति शुक्र नवम स्थानमें होवें तब प स्त्रीमें सक्त और धनी और पंडित होताहै और सूर्य बृहस्पति शनि नवममें स्थित होवें तब व्यभिचारिणी स्त्रीका स्वामी होताहै

और सूर्य शुक्र शनि नवममें स्थित होवें तव हीन और राजदण्डको प्राप्त होताहै और चंद्रमामंगल
बुध नवममें होवें तव वाल्यावस्थामें दुःखी और अंत्यावस्थामें और मध्यावस्थामें सुखीहोताहै १७
और चंद्रमा मंगल बृहस्पति नवममेंस्थित होवें तव देवताकआराधनमें तत्परहोताहै और चंद्रमामंग
ल शुक्र नवममें होवें तव नष्टस्त्रीवाला और अंगोंमें क्षत युक्त होताहै और सूर्य चंद्रमा शनि नवम
म होवें तव क्षुद्र और माताके हरणे वाला और राजाके तुल्यहोताहै और चंद्रमा बुध बृहस्पति न
वममें स्थित होवें तव आचार्य और धनी और ऐश्वर्य करके युक्त होताहै १८ और चंद्रमाबुध शुक्र
नवममेंहोवें तव विमाताकरकेयुक्तहोताहै और चंद्रमा बुध शनि नवममेंहोवे तव पापी और विवा
दी और बुद्धियुक्तहोताहै १९ और चंद्रमा बृहस्पति शुक्र नवममें होवें तव राजाहोताहै और चंद्र
मा बुध शनि नवममें होवें तव श्रेष्ठगुणोंवाला और श्रेष्ठ कर्मोंवाला और श्रेष्ठस्वभाववाला होता

आदित्यासितभार्गवानवमगाहीनोनृपैर्दंडितोवाल्येतसमना-सुखीचपरतश्चंद्रार
शीतांशुजाः १७ देवाराधनतत्परोनवमगेश्चंद्रारवागीश्वरैर्जातोनष्टकलत्रवा
न्क्षततनु शुक्रेंदुभूनंदनै क्षुद्रोमातृहरोमहीपतिसमश्चंद्रारसूर्यात्मजैराचार्योधन
वान्विभुश्चरजनीनाथज्ञदेवार्चितै १८मातु सपत्नीजनकोविभु स्याच्चंद्रज्ञशुक्रानव
मोपयाताः पापोविवादप्रियवुद्धियुक्तोजात सुधारश्मिवुधार्कपुत्रा १९ चंद्राम
रेज्यौसासितौमहीप सार्कात्मजौसद्गुणकर्मशील मंदज्ञशुक्रानरपालतुल्यःक्ष
पिक्रियावित्तपरोगुरुस्था २० राजप्रियोमांडलिक-मर्जावौभाग्यस्थितौभूसु
तचंद्रपुत्रो शास्त्रीसशुक्रौचपलश्चभीरुः सभानुजौवादपरोसमर्थः २१ ख्यातो
विद्वान्धर्मवान्जीवसौम्यौधर्मस्थानेदानवाचार्ययुक्तौ विद्यावाग्मीसासितौध
र्मयानाराजश्रीमान्जीवशुक्रज्ञचंद्रा. २२

है और बुध शुक्र शनि नवमस्थानमें होवें तव राजाके वरावर मानवाला और दण्डकर्मसे धनकोप्रा
प्तहोताहै २० और मंगल बुध बृहस्पति नवममें होवें तव राजाकी प्रीतिवाला और मंडलका
स्वामीहोताहै और मंगलबुधशुक्रनवममें स्थितहोवेंतवशास्त्रकेजाननेवालाऔरचपलऔर डरणवाला
होताहै और मंगल बुध शनि नवमम होवें तव वादकरणमें युक्त और असमर्थवाला होताहै २१
और नवम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्रस्थितहोवें तव प्रसिद्ध और विद्यावान् और धर्मी होताहै और
बुध बृहस्पति शनि नवमम स्थित होवें तव विद्या युक्त और वक्ता होताहै ॥ इतित्रिग्रहयोगः ॥
और जिसके जन्ममें चंद्रमा बुध बृहस्पति शुक्र नवम स्थानमें स्थित होवें सो राजलक्ष्मीवा
लाहोताहै २२

और सूर्य मंगल वृहस्पति शनि नवममें स्थितहोवैतव हठकर्के और पराक्रमकर्केधनकोउपार्जनकरताहै और चंद्रमा मंगल वृहस्पति शुक्र नवममें होवें तव शूरवीरऔर संपूर्ण गुणऔर प्रपंचके जानने वालाहोताहै और जिसके जन्मकालमें छै अथवा पाच अथवा तीन वा चारग्रहनवमस्थानमे स्थित होवे सो कल्याणको प्राप्तहोताहै और वुध कर्के युक्त तीन चार पाचग्रहोंकायोग होवे तव राजा होताहै.और वुध वृहस्पति केविनाअन्यग्रहोकायोगनवमभावमेंहोवेतवशुभफलनहिं होताहै२३ और जिसकेजन्मसमयमें वुध वृहस्पति सेंरहितसंपूर्णग्रह नवम स्थानमें स्थित होयें सो व्याधिकर्के पीडित और जनोंकर्के और भाईयोंकर्के हीन और वधनकर्केपीडित और अत्यंतदीन होताहै २४ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थित होवे और नीच शत्रुकीराशिमें स्थित ग्रह कर्के देख्या होवे और क्रूर ग्रहके नवांशमें वा क्रूर षष्ठ्यंशमें स्थित होवे तव भाग्य हीन होताहै

जातःसाहसविक्रमार्जितधनःसूर्यारजीवार्कजैः शूरःसर्वगुणप्रपंचरसिकःशुक्रारजीवेंदुभिः षट्पंचत्रिचतुर्वियच्चरयुतेभाग्येसमेतिश्रियंराजत्वंसवुधेविवोधनगुरौ जातःसमेत्याश्रियम् २३ जनयतिभाग्यसंस्थागुरुसौम्यविवर्जिताग्रहाःपुरुषं व्याधिप्रायंकांतंजनहीनंवंधनार्त्तमतिदीनम् २४ भाग्याधिपेविनाशस्थेनीचशत्रुखगोक्षितेक्रूरांशेनीचराश्यादौभाग्यहीनोभवेन्नरः२५ भाग्याधिपेशुभयुतेशुभग्रहनिरीक्षिते तद्भावेशुभसंबंधेतत्कीर्त्तिधनभाग्यवान् २६ सिंहासनांशेतन्नाथेलग्नेशेननिरीक्षिते ॥ कर्माधिपेनसंदृष्टेमहादानकरोभवेत् २७ जातःपुरोहितोवापिब्रह्मवंशसमुद्भवः दानाध्यक्षोपकारीस्याद्वक्रभेदेविकल्पता २८गुरौतद्भावसंयुक्तेनवांशाधिपतोतथा शुभग्रहेक्षितेवापिगुरुभक्तियुतोभवेत् २९ गुरुस्थानेसौम्ययुतेगुरुवर्गसमन्वितेतदीशेगुरुभावस्थेगुरुभक्तिरतःसुखी ३०

२५ और नवमका स्वामी शुभग्रह कर्के युक्त दृष्ट होवे और नवम भावमें शुभ ग्रहका संबंध होवे तव यश और धन और भाग्योंकर्के युक्तहोताहै २६ और जिसके जन्ममेंनवमका स्वामी सिंहासनांशमें स्थित होवे और लग्नेश कर्के देख्या होवे और दशमके स्वामी कर्के देख्या होवें तव महा दानके करणे वाला होताहै २७ और पुरोहित वा ब्राह्मण कुलमें दानाध्यक्ष और परोपकारी होताहै और वक्रगतिके भेदकर्के विकल्पकर्के पुरोहितादि कुलमें जन्मताहै २८ और वृहस्पति नवम भावमें स्थित होवें अथवा नवांशका स्वामी नवममें स्थित होवे और शुभग्रह कर्के दृष्ट होवे तव गुरुभक्तिमें युक्तहोताहै २९ और नवम स्थानमें वृहस्पतिके वर्गमें शुभग्रह युक्त होवे और नवमेश नवम भावमें स्थित होवे तव गुरुभक्तिकर्के युक्त होताहै ३०

श्रोराजिसकेजन्मसमयमें शुभग्रह बृहस्पति श्रोर शुक्रकेनवांशमें स्थितश्रोरनवमेश करके दृष्टहोवे श्रोर शुभग्रहोंके मध्यमें स्थितहोवेसो मनुष्यधर्मके करणेवालाहोताहै ३१ श्रोर नवमस्थानमेंपापीग्रहस्थित होवे श्रोर नवमेश पापी ग्रहकरके युक्त होवे तब पापके करणे वालाहोताहै अथवा क्रूर षष्ट्यंशमें युक्त होवे तब धर्महीन होताहै ३२ श्रोर जिसके जन्मकालमें नवमका स्वामी बली होयकरके कद्र १।४।७।१० कोण ९।५ स्थानमें स्थित होवेतब अनेक शुभकर्मोंको प्राप्त होताहै श्रोर लग्नेश करके लग्न देख्या होवे श्रोर नवमेश बृहस्पतिके नवांश द्रेष्काण त्रिंशांशमें स्थितहोवे अथवा दशमेशस्थितहोवे तबभोगोंकोत्यागकरकेतपस्वीहोताहै ३३ श्रोर जिसकेजन्ममें सर्वेग्रह उच्चके होयकरकेनवमस्थानमें स्थितहोवेसो धन श्रोर स्वर्णकोश्रेष्ठसमृद्धिकोउत्पन्नकरतेहैं श्रोरयदनवमस्थानमें

गुरुशुक्रबुधांशस्थेधर्मनाथेनवीक्षिते शुभग्रहाणांमध्यस्थेधर्मकृत्सनरोभवेत् ॥ ॥ ३१ ॥ धर्मेपापेपापभाक्स्यात्तदीशेपापसंयुते ॥ क्रूरषष्ठ्यंशकेवापि धर्महीनोभवेन्नरः ॥ ३२ ॥ बलवतिशुभनाथेकेंद्रकोणोपयाते शुभशतमुपयातिस्वामिदृष्टेविलग्ने सुरगुरुनवभागात्रिंशदृशात्रिभागे दशमभवनपेवावीतभोगस्तपस्वी ३३ सकलगगनवासःस्वोच्चगाभाग्यराशौधनकनकसमृद्धिंश्रेष्ठमुत्पादयंतियदिशुभखचरेंद्रैस्तत्रदृष्टानभोगाविनिहतरिपुपक्षोदिव्यदेह सुकीर्त्तिः३४ तातेशतत्कारकखेचरेंद्रौदु स्थौतयोः पुत्रमुखंनदृष्ट केंद्रत्रिकोणायदितौनभोगोवदेतयोःपुत्रमुखाहदृश्यम् ॥ ३५ ॥ पितुर्निशायांमरणसुखशशुक्रौदवःषष्ठगता बलाढ्याः सारीश्वरास्तन्मरणंतथैवचंद्रेणहीनास्तुदिवामृतिः स्यात् ॥ ३६

स्थित ग्रहशुभग्रहोंकरकेदेख्याहोवे तब शत्रुपक्षकोहतकरकेसुंदरदेहवाला श्रोर श्रेष्ठयशवालाहोताहै३४ श्रोर जिसके जन्मकालमें पितृभावका स्वामी श्रोर पितृभावका कारक छठे अष्टमें बारहमें स्थानमें स्थित होवें तब तिसकापिता अंत्यकालमें पुत्रके मुखको नहि देखताहै श्रोर जब पिताके भावका स्वामी श्रोर कारक केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ स्थानमें स्थित होवे तब अंत्यकालमें पुत्रके मुखको देखताहै ३५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ घरका स्वामी श्रोर शुक्र श्रोर चंद्रमा बलकरके युक्त छठे स्थानमें स्थित होवे तब तिसके पिताका मरण रात्रिसमयमें कहे श्रोर षष्टश करके युक्त होवें तब रात्रिमें मरण कहे श्रोर चंद्रमा करके रहित षष्टेश करकेयुक्त चतुर्थ भावका स्वामी होवे तब दिनमें मरण कहे ॥ ३६ ॥

॥ और जिसके जन्मकालमें शुभग्रह चर लग्नके प्रथम नवांशमें स्थित होवे और नवमेश बली होवे और बृहस्पति शुक्रकरके युक्त दृष्ट होवे तब जप ध्यान समाधिके धारणे वाला होताहै ३७ ॥ और दशमेश वा नवमेश देवलोकादि अंशमें स्थित होवें और शुभग्रह पारावतांशमें स्थित होवें तब महाज्ञानी होताहै ॥ ३८ ॥ और नवमेश और बृहस्पति पारावतादिअंशमें स्थित होवें और लग्नेश बृहस्पति करके दृष्टहोवे तब महादान तुलापुरुषादिकरणे वाला होताहै ॥ ३९ ॥ अब नवमके स्वामीका द्वादशभावोंमें फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवम भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो देवताकों और गुरोंकों माननेवाला और अपने व्यवहारमें शूरवीर और विशेषकरके धनकों नहि खरचनेवाला और राजकार्यमें नियुक्त और थोडे अधिकारकरके युक्त होताहै ॥ ४० ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी धनस्था

सौम्येचराद्यभागस्थेभाग्येशेबलसंयुते गुरुशुक्रयुतेदृष्टे जपध्यानसमाधिमान् ।३७। देवलोकादिभागस्थेकर्मेशेभाग्यपेपिवा पारावतांशकेसौम्येब्रह्मनिष्ठापरोभवेत् ३८ पारावतादिभागस्थेधर्मेशगुरुसंयुते लग्नेशगुरुसंदृष्टेमहादानकरोभवेत् ३९ अथभाग्यपतिद्वादशभावफलम् लग्नगतेनवमपतौदेवान्गुरूश्चमन्यतेशूरः कृपणःक्षितिपतिकर्मास्वल्पग्रामीभवतिमतिमान् ४० नवमाधिपतौधनगेधनतोविदितःसुशीलवान्मर्त्यः सुकृतिर्विद्वान्मानीचतुष्पदाढ्योत्तम.ख्यातः ४१ सहजगतेसुकृतपतौरूपस्त्रीबंधुवत्सल.पुरुषः बंधुश्रीरक्षणकृद्यजतिजीवतिबंधुभिःसहितः ४२ सुकृतेशेहिबुकस्थेपितृभक्तःपितृकोनुयात्रासु विदितःसुकृतीमित्रकर्मरतोभवतिभूमीशः ४३ सुकृतेशेसुतसंस्थेसुकृतीगुरुदेवपूजनेनिरतः वपुषासुंदरमूर्त्तिःसुकृतसमेतोभवतिससुतः ४४

नमें स्थित होवे सो धनसें प्रसिद्ध होताहै और श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहै और धर्मी और विद्यावान् और मानी और चतुष्पदोंकरकेयुक्त और प्रसिद्ध होताहै ॥ ४१ ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो रूपवाली स्त्रीका और बंधुयोंका प्यारा होताहै और बंधुयोंकी लक्ष्मी की रक्षाकरणे वाला और सर्वविधियोंकरकेयुक्त यज्ञ और जीविकाकरणे वाला होताहै ॥ ४२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें नवमका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे सो पिताके मृत होएक पीछे पितरोंका भक्तहोताहै और प्रसिद्ध धर्मकरणे वाला होताहै और मित्रकर्ममें रत और भूमीका स्वामी होताहै ॥ ४३ ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी पंचम स्थानमें स्थित होवे सो धर्मी और गुरुदेवताके पूजनमेंरत और देहकरके सुंदर मूर्तिवाला और धर्मकरके युक्तश्रेष्ठपुत्रवालाहोताहै ४४

श्रारजिसकेजन्मकालमेंनवमभावकास्वामीछठेस्थानमेंस्थितहोवेसोशत्रुयोंकेश्रागेनम्रहोताहैश्रीरपापके करणेवालाश्रीरकलासें रहितदेहवालाहोताहैश्रीरनवम कास्वामीछठेस्थानमेंस्थितहोवेतवदेखनेमेंश्रीरनि द्रामेंरतहोताहै ४५ श्रीरजिसकेजन्मकालमेंनवमकास्वामीसप्तमभावमेंस्थितहोवे तिसकीस्त्रीपतिव्रताश्रीर श्रेष्ठबोलनेवालीश्रीरश्रेष्ठरूपवालीहोतीहैश्रीरश्रेष्ठस्वभावश्रीरलक्ष्मीकर्केयुक्तश्रीरधर्मकर्केयुक्तहोतीहै ४६ श्रार जिसके जन्ममें नवमका स्वामी अष्टमस्थानमें स्थित होवे सो दुष्ट श्रीर जीवोंकेमारणेवालाश्रीर घरकर्के श्रोर बंधुयों कर्केरहित श्रीर धर्मकर्के रहितहोताहै श्रीर क्रूरग्रहहोवे तव नपुंसक होताहै ४७ श्रीर जिसके जन्ममेंनवमकास्वामीनवमभावमेंस्थितहोवेसोश्रपनेबंधुयोंसेंबडीप्रीतिवालाश्रीरसबसेंबडा श्रीर दाता श्रीर देवता गुरु श्रीर स्त्री पुत्रादियोंमें श्रासक्त होताहै ४८ श्रीर जिसके जन्मकालमेंन

शत्रुप्रणातिपरायणमधर्मकलितंकलाविकलदेहं दर्शननिद्रानिरतंसुकृतपतिःष ष्ठगःकुरुते ४५ नवमपतौसप्तमगेसत्यवतीसुवचनासुरूपाच शीलश्रीयुतद यितासुकृतयुताजायतेनियतम् ४६ दुष्टोजंतुविघातीगृहबंधुविवर्जितःसुकृतर हितः नवमेशेमृत्युगतेक्रूरेषंडस्तुविज्ञेयः ४७ सुकृतपतिःसुकृतगतःस्वबंधुभिः प्रीतिमतुलितसमत्वं दातारंदेवगुरुस्वजनकलत्रादिषुसक्तम् ४८ नृपकर्माणं नृपलाभंसुकर्मरतंमातुरविघ्नम् धर्मख्यातंकुरुतेसुकृतपतिर्गगनगृहलीनः ४९ दीर्घायुर्धर्मपरोधनेश्वरःस्नेहलोनृपतिलाभः सुकृतस्यात सततंसुकृतपतौलाभ भवनस्थे ५० द्वादशगेसुकृतेशेमानीदेशांतरेसुरूपश्च विद्यावान्शुभखेटेक्रूरे चभवेत्कुमतिधूर्त्तः ५१

वमभावका स्वामी दशमस्थानमें होवे सो राजाके कर्म करणे वाला श्रीर राजासें लाभकों प्राप्तहोनें वालाश्रीर श्रेष्ठ कर्ममें रत श्रीर माताकों सुखदेनें वाला श्रीर धर्मकर्केप्रसिद्धहोताहै ४९ श्रीर जिसके जन्मकालमें नवमका स्वामी एकादश भावमेंस्थित होवे सो बडी श्रायुषा वाला श्रीर धर्मी श्रीर ध नका स्वामी श्रीर प्रीतिकरणेवाला श्रीर राजासें लाभकोंप्राप्तहोनें वाला श्रीर धर्मकर्के प्रसिद्ध निरंतर होताहै ५० श्रीर जिसकेजन्ममें नवमका स्वामी बाहरमें स्थानमें स्थित होवे सो विदेशमें मानकों प्राप्त होताहै श्रीर श्रेष्ठ रूपवाला होताहै श्रीर शुभग्रह होवे तव विद्यावान् होताहै श्रीर क्रूरग्रह होवे तव खोटी बुद्धि वाला श्रीर धूर्त होताहै ५१

इतिनवमभावः ९ अव दशम भावकाविचारकहतेहैं ॥ तिसमें क्या क्या पदार्थका विचारकरणाहै सो प्रथम कहतेहैं ॥ दशम भावमें आज्ञा और मान और भूषण और वस्त्र और व्यापारका सुख दुःख और निद्राका सुख और खेतीकर्मसें लाभालाभकाविचार और संन्यास धर्मकी प्राप्ति और कर्म औरजीवका और यश और विद्याकीप्राप्तिः इतने पदार्थोंका ज्ञान दशम भावमेंकहतेहै औरदशमेश और सूर्य बुध बृहस्पति शनि इन्होंसें पूर्वोक्तपदार्थोंका ज्ञान दशमभावमें क्रमपूर्वक लिखाहैतिसकोंछोडकर और दशम भावमें पापो ग्रहस्थितहोवेतवमानककें रहित होताहै ॥ १ ॥ और दशम भावका स्वामी वलहीन होवे तव चपल बुद्धि वाला और दुष्ट आचार वाला होताहै और बृहस्पति बुध शनि सूर्य वलहीन होवें तवखोटे स्थानऔर निंद्यकर्मको देतेहैं और दशमस्थानमें

इतिनवमभावविचारः९अथकर्मभावविचारःतत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम्आज्ञामा नविभूषणानिवसनव्यापारनिद्राकृषिप्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्याः क्रमात्कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैश्चिंतयेदुक्तानिप्रविहायपूर्वमशुभे मानेविमानोभवेत् ॥ १ ॥ कर्मेशेबलवर्जितेचपलधीर्जातोदुराचारवान् जीवज्ञासितभानवोविबलिनोदुःस्थानकर्मप्रदाः ॥ गंगास्नानफ लसमेतिदशमेराहौदिनेशेथवा मीनेकर्मणिचंद्रजारसहितेजातःसमुक्तोभवेत् ॥ २ ॥ मानेश्वरेशुक्रयुतेचकेंद्रेतुंगस्थितेताद्दशतोयपूतः ॥ व्ययेबुधेतद्भ वनाधिपेवास्वोच्चान्वितेताद्दशपुण्यभाक्स्यात् ३ चंद्रेकर्मणिजान्हवीसलिलतःपू तोहिपूतद्युतौपापोयच्छतिकर्मगोपिबलवान्द्यूतक्रियासाहसंसौम्यादुर्बलशालि नोदशमगाःसत्कर्मविध्वंसकाःकर्मेशज्ञसुरार्चितैःक्रतुफलंसंचिंत्यसम्यग्वदेत् ४

राहु अथवा सूर्य स्थित होवे तव गंगाके स्नानफलकों प्राप्त होताहै और मीनलग्नमें बुध मंगल दश मस्थानमें स्थित होवें तव मुक्तिकों प्राप्त होताहै २ और जिसके जन्मकालमें दशमकास्वामी शुक्र करके युक्त केंद्रमेंस्थित होवे और उच्चमें स्थित होवे तव गंगाजलककें पवित्र होताहै और जिसके जन्मकालमें वाहरमें स्थानमें बुध अथवा दशमकास्वामी स्थित होवे और उच्चराशिमें स्थित होवे तव गंगाजलककें पुण्यकों प्राप्त होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें दशमस्थानमेंपूर्ण चंद्रमा स्थि त होवे सो गंगाजलककें पवित्र होताहै और दशम स्थानमें पापीग्रह वली स्थित होवे तवजूआ खेलनेमें वडे हठ वाला होताहै और शुभग्रह निर्वल होयककें दशम स्थानमें स्थित होवें तवश्रेष्ठ कर्मोंका नाशकरतेहैं और दशमेश और बुध और बृहस्पतिसेंयज्ञफलका विचारककेंभली प्रकारकहे ४

श्रौर जिसके जन्मकालमें लग्नेश श्रौर दशमेशदोनों एकराशिमें स्थितहोवें अथवा लग्न दशम का स्वामी एकहि ग्रहकी राशिमें स्थित होवें सो अपने धनकों उत्पन्नकर्के यज्ञादिउत्सव कर्म कर्ताहै श्रौर लग्नेश दशमेश सूर्यकर्केयुक्त होवें तवशूद्रके धनकर्के श्रौर राहुकेतुकर्के युक्त होवें तव क्षुद्रज नोंके धनकर्के श्रौर वृहस्पतिकर्के युक्त होवें तवराजयोंके धनकर्के यज्ञादिकर्म कर्ताहै श्रौर सूर्यादि ग्रह दशमके स्वामीकर्के युक्त जिसभावमें स्थित होवें तिसके कारक ग्रहके संवंध कर्के धनकों प्राप्तहोताहै ५ श्रौरजिसके जन्मकालमें वहुत शुभग्रह दशममें स्थित होवें सो वाजिपेयादि यज्ञ कर्ताहै श्रौर शुक्र बुध कर्के युक्त यो राशिहै तिसके स्वामी वलहीन होवें तव यज्ञदीक्षाकों धारण कर्के क्रोधमें कर्मके नाशकों प्राप्त होताहै श्रौर श्रेष्ठ कर्म करणेवालावी नीचस्वभाववाला होताहै ६ श्रौर सारावलीमें विशेष कहतेहैं ॥ लग्नसें दशम राशिमें मनुष्योंके कर्म कहेहैं मुनियोंने सो राशि ग्रहोंके स्वभावकर्के श्रौर ग्रहोंकी दृष्टि कर्के कहताहा ७ लग्न श्रौर चं

एकस्यैतनुकर्मपोयदितयोरेकाधिपत्येतुवाजातः स्वार्जितसद्धनेनकुरुतेयज्ञादि कर्मोत्सवं ॥ सार्कौशूद्रधनेनसाहिशिखिनौक्षुद्रैःसजीवौनृपैस्तत्तत्कारकवित्ततो यदियुतेरव्यादिभिःकर्मपे ५ वहुशुभयुजिमानेवाजिपेयादिसिद्धिःसितवुधयु तराशिस्वामिनौदुर्वलाढ्यौ ॥ यदिकृतसवनोपितत्कर्मप्रणष्टोभवतिपरमकर्मा दानवाचारशीलः ६ सारावल्याविशेषः ॥ लग्नाद्दशमेराशौकर्मनराणांप्र कीर्तितंमुनिभिः ॥ राशिग्रहस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्यातत्प्रवक्ष्यामि ७ होरेन्द्वोर्वलयो गाद्योदशमस्तत्स्वभावजंकर्म ॥ तस्याधिपपरिवृद्ध्यावृद्धिर्ज्ञेयान्यथाहानिः ८ मंगलमथवारूपंतथोभयंवाग्रहोनिरीक्ष्येत ग्राममथवारण्यंसौम्यर्क्षपापभवनंवा ९ द्विपदचतुष्पदरूपंसरीसृपंवातथोभयवापि यद्रूपंतद्भवनंयादृशकंतत्प्रभावंवा १० प्रवदेत्समदेशेवाकर्मप्राप्तिंनरस्यतत्सदृशीं तस्माद्दशमंभवनंप्रसवेवुध्येतयत्नेन ११

द्रमामें यो वली होवे तिससें दशम स्थानमें यो राशी तिसके स्वभावकर्के मनुष्य कर्मकर्ताहै श्रौ र तिसके स्वामी की वृद्धि कर्के कर्मोंकी वृद्धि होतीहै तिसकी हानि कर्के हानी होतीहै ८ श्रौर मंगल कर्म श्रौर रूपका विचार दशम स्थानमें ग्रहोंकी दृष्टिसें विचार करे श्रौर दशम स्थानमें स्थित यो राशि सो ग्रामचारी वा वनचारी वा शुभग्रहकी राशि वा पापी ग्रहकी राशिहै ९ द्विपद चतुष्पदरूपकर्के यो राशि श्रौर सरीसृप संज्ञक राशि वा चंद्रमा लग्नसें दोनों स्थानोंमें जिस रूपकर्के दशमस्थान में राशिहोवे,तिस राशिका प्रभाव तिसमें होताहै १० श्रौर दशम भावगत राशिके समान देशमें श्रौर दशमभावके,स्वामीके तुल्य मनुष्यकों कर्मोंकी प्राप्ति कहे तिस कारणसें जन्म समयमें दश म भावकों यत्नकर्के विचारे ११

और जिसके जन्मकालमें लग्नसें दशम स्थान चंद्रमा स्थित होवे तिसकी संपूर्ण कर्मोंकर्के वृत्ति होतीहै १२ और द्विग्रहादि योगाध्यायमें जन्मलग्नसें दशमस्थान स्थित ग्रहोंका योगफल पीछे कहाहै अब चंद्रमासें दशम स्थानमें द्विग्रहादि योगफल कहतेहैं १३ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्यहोवे सो सिद्धारंभी और धनकी समृद्धिवाला होता है और श्रेष्ठपराक्रम वाला और राजाऔरश्रेष्ठ और जलके समीप रहने वाला और दुष्ट होताहै १४ औरचंद्रमासें दशमस्थानमें मंगल होवे तब हठमें रत और म्लेछदेशमें निवासकरणे वाला और कामी और भीलोंको न्याई चरित्रों वाला होताहै १५ और चद्रमासें दशमस्थानमें बुध स्थित होवेतबविद्वान्औरधनी औरप्रसिद्धऔरमनुष्योंकानायकऔरध्यानकरणेवालाऔरबहुतशिल्पविद्याकेजा

दशमेनक्षत्रपतिर्लग्नात्पुरुषस्यसंभवतिसर्वैःकर्मैर्वृत्तिविनिर्दिशेत्तस्यजातस्य १२ द्यंतरभावाध्यायेकथितंकर्मस्थितैर्ग्रहैर्लग्नात्चद्रादत्रविशेषोग्रहैःस्थितैर्यस्तमपि वक्ष्ये १३ चंद्राद्दशमेसूर्यःसिद्धारंभंधनसमृद्धंच जनयत्युत्तमसत्वंनृपतिमुदग्रंज लाश्रयंदुष्टम् १४ भौमःसाहसनिरतंप्रत्यंतनिवासिनंविषयलुब्धं क्रूरंनिषा दचरितंजनयतिदशमस्थितःपुरुषम् १५विद्वांसधनवंतंबहुश्रुतंनायकंध्यातं जन यतिसौम्योदशमेपुरुषंबहुशिल्पिनंप्राज्ञम् १६ गुरुरपिदशमस्थानेसिद्धार्थंधा र्मिकंधनसमृद्धम् जनयत्युत्तमचरितंनरेंद्रसचिवंनरंस्वाढ्यम् १७ शशिनोदश मेशुक्रः सुभगंललितंचवित्तवंतंचजनयतिसिद्धारंभंधनिनंनृपपूजितंपुरुषं १८सौ रोव्याधितदेहंनिःस्वंदुःखान्वितश्रियाहीनं कर्मसुनित्योद्विग्नंजनयतिदशमेस्थि तःपुरुषं १९ भानुर्भौमसमेतःकर्मकरान्श्वासकासयुतान् प्राणिवधपरान्क्षुद्रान्ब हुलान्कर्मार्त्तिकांश्चापि २०

नने वाला और चतुर होताहै १६ और चद्रमासें दशममें बृहस्पति होवे तब सिद्धार्थ औरधर्मी और धनकी समृद्धि वाला और श्रेष्ठ चरित्रों वाला और राजाका मन्त्री और धनकर्के युक्त होताहै १७ और चंद्रमासें दशम स्थानमें शुक्र होवे तब श्रेष्ठ भाग्यो वाला और सुदर और धनी और सिद्धारंभी और राजाकर्के पूजित होताहै १८ और चद्रमासे दशम स्थानमें शनि स्थित होवे तब व्याधिकर्के युक्त देह वाला और धनहीन और दुःखी और शोभासे रहित और कर्ममें नित्य प्रति उदासीन होताहै १९ अब द्विग्रहयोग कहतेहैं और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगलकर्के युक्त होवे तब कर्मकार होताहै और श्वासकास रोग वाला होताहै और जीवोंके घात करणे वाला और क्षुद्र बुद्धि वाला और अनेककर्मों कर्के पीडित होताहै २०

श्रौर चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य बुधकर्के युक्त स्थितहोवें तब वस्त्र श्रौर भूषण वेचने वाले श्रौर जल
के संबधसें जीवका वालेहोतेहैं २१ श्रौर चद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति कर्केयुक्त सूर्य स्थित
होवे तब आरभ कार्यके सिद्ध करणे वाले श्रौर राजाके मान्य श्रौर शूर वीर श्रौर पडित श्रौर प्रसि
द्धहोतेहैं २२ श्रौर चद्रमासें दशमस्थानमें शुक्रकर्के युक्त सूर्य स्थित होवें तब अपने संबंधियोंके
आश्रय वाले मनुष्य कोंकर्ताहै श्रौर स्त्रीके सयोग कर्के समृद्धिको प्राप्तहोताहै श्रौर श्रेष्ट भाग्योंवाला
श्रौर राजाका प्यारा होताहै २३ श्रौर चंद्रमासें दशमस्थानमें शनि कर्के युक्त सूर्य होवे तब वंध
नकर्के युक्त श्रौर भृत्य वृत्ति वाला श्रौर दीन कृपण श्रौर चोरों कर्के लुट्याहुवा रोदन कर्ताहै २४
श्रौर चंद्रमासें दशमस्थानमें मगल बुधकर्के युक्त स्थित होवे तब बहुत शत्रुयों कर्के युक्त होताहै

सूर्यःसौम्यसहायोवस्त्रालंकारवाणिजकान् जनयतिमेषूरणगःपुरुषंजलजी
वनंचापि २१ जीवसहायः सूर्यः सिद्धारभान्नरेंद्रमान्यांश्च जनयतिदशमेपुरु
षान्वीरान्धीरान्सुविख्यातान् २२ सूर्यः शुक्रसहायोदशमेस्वजनाश्रितं
नरंकुर्यात् स्त्रीसंश्रयात्समृद्धंसुभगंनृपवल्लभंचापि २३ सूर्यः स्वपुत्रसहितो
दशमेवावधभागिनंभृतकम् जनयतिदीनंकृपणंचौरैर्मुषितंप्रलापकरम् २४
भौमः सोमजसहितोजनयतिदशमेनरंवहुविपक्षं अस्त्रकलावेत्तारंतज्जीवनमपि
महाशूरं भौमःसुरगुरुसहितोदशमेकुरुतेवलस्यनेतारं मित्रेभ्योलब्धधनंत
दाश्रियजीवनंधन्यं २६ जीवतिविदेशनिरतः कांचनमुक्तादिभिर्वाणिग्वृत्या
भौमः शुक्रसमेतोदशमेस्त्रीसंश्रयश्चापि २७ भौमः सौरसहायोजनयति
दशमेस्थितोनरंप्रसवे साहसशीलंक्षुद्रंकर्मोद्युक्तंश्रियारहितं २८ धनिनंनरें
द्रपूज्यंधर्मिष्ठंवृंदनायकंस्यात् सौम्यसहायोजीवोजनयतिमेषूरणेपुरुषं २९

श्रौर शस्त्रास्त्र कलाके जानने वाला श्रौर शूर वीरता कर्के जीवन करणे वाला होताहै ॥ २५
श्रौर चद्रमासें दशमस्थानमें मगल बृहस्पति कर्के युक्त होवे तब सेनाका पतिहोताहै श्रौर मित्रोंसें
धनकों प्राप्तहोताहै श्रौर मित्रोंके आश्रय कर्के जीवन कर्ताहै श्रौर धन्यहोताहै २६ श्रौर चंद्रमासें
दशम स्थानमें मगल शुक्र कर्केयुक्तहोवेतव विदेशमेंजीवकाकरणे वाला श्रौरस्वर्ण मोतीके व्या
पारकीवृत्ति कर्केयुक्तहोताहै श्रौर स्त्रीकेआश्रितवृत्तिहोताहै २७ श्रौरचंद्रमासेंदशमस्थानमें शनिकर्के
युक्त मंगल स्थित होवे तव हठ करणे वाला श्रौर क्षुद्र स्वभाव वाला श्रौर कर्ममें उद्योग करणेवाला
श्रौर शोभा कर्के रहित होताहै २८ श्रौर चद्रमासें दशम स्थानमें बुध बृहस्पति स्थित होवे तव
धनी श्रौर राजा कर्केपूज्यश्रौरधर्मकेकरणेवाला श्रौर सेनाकास्वामीश्रौर जगतिमेंप्रसिद्धहोताहै २९

और चंद्रमासें दशम स्थानमें बुध शुक्र स्थित होवें तब मित्रजनों कर्के युक्त और विद्या स्त्री धन सुखकर्के युक्त और राजाकामंत्री वा राजा होताहै ३० और चंद्रमासें दशम स्थानमें बुध शनि स्थित होवें तब मृत्तिकाके पात्र बनावनें वाला कुलाल होताहै और निंद्य आचार वाला और प्रसिद्ध होताहै अथवा पुस्तक लिखने वाला होताहै ३१ और चंद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति शुक्र स्थित होवे तब राजाका श्रेष्ठ चाकर होताहै और ब्राह्मणोंका स्वामी और शोक रहित और विद्याका आचार्य और समर्थ वाला होताहै ॥ ३२ ॥ और चंद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति शनिकर्के युक्त स्थित होवे तब नीच और दूसरेकों पीड़ा करणे वाला और प्रसिद्ध चेष्टावाला और आरंभमें स्थिरतावाला होताहै ३३ और चंद्रमासें दशम

सौम्यः शुक्रसहायोजनयतिदशमेसुहृज्जनोपेतं ॥ विद्यास्त्रीधनसौख्यं नृपसचिवंविश्वनार्थवा ॥ ३० ॥ सौम्यः सौरसहायोमृद्भांडकरंकरो तिदशमस्थः स्यातंनिंद्याचारंपुस्तकलिपिलेख्यकारंवा ३१ वचसांपतिःसि तयुतः कर्मणिकुरुतेनरेंद्रवरभृत्यं ब्राह्मणपतिंविशोकंविद्याचार्यंसमर्थंच ३२ सुरराजगुरुःसार्किर्दशमेनीचंपरोपतापकरं करुतेप्रसिद्धचेष्टंस्थिरारंभंसुस्थि रारंभं ३३ शुक्रःसौरसहायश्चित्रकरान्गंधजीविकान्निंद्यान् जनयतिपु रुषंदशमेतिलकाकारांश्चचूर्णकारांश्च ३४ रविभौमचंद्रपुत्राश्चंद्राद्दशमेस्थि तानरंधन्यं जनयन्त्युत्तमपुरुषंनरपतिसमंसर्वजनपूज्यं ३५ ॥ रविभौमदेवपू ज्यादशमस्थानोपगानरंसुभगं शत्रूणांजेतारंजनयंतिसमृद्धिसंयुक्तम् ३६चंद्रा द्दशमेभानुर्भूपुत्रोभार्गवश्चजनयंति क्रूरंसाहसनिरतंनरंपरार्थापहारिणंचैव३७

स्थानमें शुक्र शनि स्थित होवें तब चित्रकारीकरणेवाले और सुगंधि विक्रय करणे वाले गांधी और निंद्य कर्मोंके करणे वाले और तिलक बनावने वाले और आटा पीसने वाले होतेहैं ३४ अ थ त्रिग्रह योग कहतेहैं चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बुध स्थित होवें तब श्रेष्ठ पुरुष और राजा के समान और संपूर्ण लोकोंकर्के पूज्य होताहै ३५ और चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बृहस्पति स्थित होवेंतब श्रेष्ठ भाग्यों वाला और शत्रुयोंकों जीतने वाला और समृद्धि कर्के युक्त होताहै ३६ और चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल शुक्र स्थित होवें तब क्रूर स्वभा वबाला और हठी प्राये धनकों हरणे वाला होताहै ३७

श्रीरचंद्रमासैंदशमस्थानमेंसूर्यमं गलशनिस्थितहोवेंतबक्रूरकर्मोंमेंरतश्रीरउन्मादकरकेंयुकश्रीरगुप्तपापके
करणेवाला श्रीर दुराचारीहोताहै श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमेंसूर्यबुधबृहस्पति होवें तब विद्वान श्रीर
रूपकरकें युक्त श्रीर श्रेष्टभाग्यों करके युक्त उन्मादको प्राप्तहोताहै श्रीर धर्मा श्रीर बंधुश्रोंमेंप्रीति वाला
होताहै ३९ श्रीरचंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य बुध शुक्र स्थित होवें तब यशकरकें युक्त श्रीर प्रीति
वाला श्रीर रोगरहित श्रीर किसीसें भयनहिं करणे वाला श्रीर सौभाग्य करकें युक्त श्रीर समृद्धि वा
ला होताहै ४० श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य बुध शनि स्थित होवें तब क्रूर श्रीर चपल श्रीर
खोटे स्वभाव वाला श्रीर मारितकरणे वाला श्रीर शस्त्रोंकरकें श्रीर श्राग्निकरकें क्षत श्रंगों वाला

उन्मादयंतिमनुजंनि
भानुजरविभूपुत्रादशमस्थाःक्रूरकर्मनिरतंच ॥
गूढपापदुराचारम् ३८ रविबुधगुरवोदशमेविद्वांसंरूपसंयुतंसुभगं उन्मा
दयंतिपुरुषंधर्मिष्ठंबंधुवल्लभंचैव ३९ बुधसूर्यभार्गवोपियशस्विनंवल्लभंविग
तरोगं जनयत्यपराभूतंसौभाग्यपरिच्छदंसमृद्धंच ४० रविबुधशनयोदशमेक्रूरं
चपलंनरंविशीलंच उन्मादयंतिपुरुषंशस्त्राग्निपरिक्षतांगंच ४१ रविभू
गुजदेवपूज्यादशमस्थानोपगानरंकुर्युः लोभान्वितमतिचपलंसमस्तजन
विप्रयुक्तंच ॥ ४२ ॥ भौमेंदुजसुरपूज्याधर्मिष्ठान्बहुकुटुंबपरिवारान्
जनयंतिदशमसंस्थाविद्याधनभाजनान्पुरुषान् ४३ शोभनशिल्पाभिरतान्मा
लाकारान्सुवर्णकारांश्च ॥ कुर्युर्बुधगुरुशुक्रादशमस्थानोपगाश्रसभ्यांश्च ४४
भार्गवसुरेज्यभौमाश्चंद्रादशमोपगानरंकुर्युः धनसंयुक्तान्सुनयान्देवद्विजपूज
नाभिरतान् ४५

होताहै ४१ श्रीर सूर्य बृहस्पति शुक्र चंद्रमासें दशम स्थित होवें तब लोभकरकें युक्त श्रीर श्र
त्यंतचपलश्रीरसंपूर्णजनोंकरकेंरहितहोताहै ४२ श्रीर मंगलबुध बृहस्पतिचंद्रमासें दशमस्थानमेंस्थित
होवेंतब धर्मकेकरणेवाला श्रीरबहुतकुटुंबपरिवारकरकें युक्तहोताहैश्रीरविद्याश्रीरधनकरकेंयुक्तहोताहै४३
श्रीरचंद्रमासें दशम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तब मालाकार पुष्पमाला बनाणेमें श्रीर
बागबनाणे मे चतुर श्रीर स्वर्ण कार भूषण बनाणेमें चतुर होतेहैं ४४ श्रीर मंगल बृहस्पतिशु
क्र चंद्रमासें दशमस्थानमें स्थित होवें तब मनुष्योंको धन करकें युक्त श्रीर नीति करकें युक्त श्रीरदे
वता ब्राह्मणके पूजनमें युक्त करैहैं ४५

और चंद्रमासे दशमस्थानमें मंगल गुरु शनि स्थित होवें तब विद्या और धन और मनुष्योंकरके रहित और सुहृज्जनोंकरके रहित और व्याकुल करते हैं और नीच करते हैं ४६ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासे दशमस्थानमें मंगल शुक्र शनि स्थित होवें सो मलीन और मस्त और असत्य बोलनेवाला और पंडितोंसे और बंधुओंसे विवाद करणे वाला होता है ४७ और चंद्रमासे दशम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें जिसके जन्म समयमें सो बहुत धन वाला और अत्यंत सुखी और धर्मके जानने वाला और सत्व गुणी और पंडित होता है ४८ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासे दशमस्थानमें बुध बृहस्पति शनि स्थित होवें तब धन और धर्म करके युक्त और चतुर और दयाकरके युक्त और सत्यकरके युक्त होता है

विद्याधनजनहीनान्बुधपुरुषान्सौख्यवर्जितान्विकलान् ॥ जीवांगारकसौराद्दशमे कुर्युर्नराञ्नीचान् ॥ ४६ ॥ भौमभृगुभानुपुत्राद्दशमस्थान्नोपगा मलिनं ॥ उन्मादयंत्यसत्यं बुधबंधुविवादनिरतं च ॥ ४७ ॥ बुधगुरुशुक्राद्दशमे जन्मनि यस्येह संति पुरुषस्य ॥ बहुधनमतिसौख्ययुतं धर्मज्ञं सात्विकं धीरं ॥ ४८ ॥ बुधदेवपूज्यशनयो जनयंति नरं सदा दशमसंस्थाः ॥ धनधर्मयुतं प्राज्ञं दयान्वितं सत्यवंतं च ४९ भानुभृगुपुत्रबुधाद्दशमस्थानोपगा नरान्कुर्युः ॥ सचिवानुत्तमपुरुषान्धनधर्मसमान्वितान्सुभटान् ५० सुरगुरुभार्गवशनयः कुर्वंति नराननेकधर्मरतान् ॥ दशमे विज्ञानयुतान्मल्लान्परदेशनिरतांश्च ५१ एतान्त्र्यादिषु वाच्यं जन्मनि पुंसां फलं हि कर्मोत्थं ॥ त्र्यादिग्रहसंयोगे योऽत्र विशेषस्तमपि वक्ष्ये ५२ शुक्रबृहस्पतिसौम्या दशमे पुरुषस्यचैकराशिसंस्थानाः ॥ बहुविधमिष्टं कुर्युः सुखं च तेन्योन्यगृहसंस्थाः ५३

४९ और चंद्रमासे दशमस्थानमें सूर्य बुध शुक्र स्थित होवें तब मनुष्योंको वजीर और श्रेष्ठ जन और धन धर्मकरके युक्त करते हैं और श्रेष्ठ शूरवीर करते हैं ५० और चंद्रमासे दशमस्थानमें बृहस्पति शुक्र शनि स्थित होवें तब मनुष्योंको अनेक धर्मोंमें रत और विद्यामें युक्त और बड़े बलकरके युक्त और परदेशमें रहनेवाले करते हैं ५१ और कहते हैं इहे तीनग्रहसे लेकर्के जन्मकालमें संपूर्णग्रहोंके योग फलकहे हैं अब त्र्यादि ग्रहोंमें यो विशेष बात है सो इस ग्रंथमें कहते हैं ५२ जिसके जन्मकालमें शुक्र बृहस्पति बुध इहे तीनो ग्रह दशम स्थानमें स्थित होवें सो बहुत प्रकारका शुभ फल करते हैं और परस्पर राशिमें स्थित होवें तबबी अनेक प्रकारोंकी शुभफल करते हैं ५३

र जिसके जन्मकालमें सूर्य मंगल शनि दशमस्थानमें स्थित होवें तब मनुष्योंको चतुर और भा
ान् और अत्यंत कर्म करणे वाले और नीचाचारमें युक्त और हिंसाके करणे वाले कर्त्तेहैं ५४
चतुर्ग्रह योगोंका फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बुध
स्पति स्थित होवें सो शूर वीर और देहमें क्षत रहित और दान करणे वाला और संपूर्ण कर्मो
रत होताहै ५५ और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगल बुध शुक्र स्थित होवें तब मालाके य
मनें वाले और लिखने वाले और कष्टकर्मके करणे वाले कर्त्तेहैं ५६ औरचंद्रमासें दशमस्था
में सूर्य मंगल बुध शनि स्थित होवें तब मनुष्यको मस्तीकर्त्तेहैं और नीचाचारमें दुष्ट और धनसेंर

वक्रशनैश्चरसूर्यादशमेयुक्तान्विचक्षणान्धन्यान् अतिकर्मकरान्कुर्युर्नीचाचारा
न्वधयुतांश्च ॥ ५४ ॥ रविभौमबुधसुरेज्यादशमस्थानोपगानरंकुर्युः शूरंवि
क्षतगात्रंदातारंसर्वकर्मरतं ॥ ५५ ॥ वक्रार्कशुक्रसौम्याःचंद्राद्दशमेसमाश्रिताः
प्रसवे कुर्युर्मालाकारांल्लेख्यरतांश्चापिकष्टकर्मरतान् ॥ ५६ ॥ रविकुजबुध
भानुसुताश्चंद्राद्दशमस्थिताःप्रसवकालेउन्मादयंतिपुरुषंनीचानुरतंधनैर्मुक्तं ५७
शुक्रार्कजीवभौमाःकर्मणिनिरतांश्चधर्मशूरांश्च बहुधनधान्यंदशमेजनयंतिस
दोद्यतान्पुरुषान् ५८ यमगुरुसुतरवयोदशमस्थाःक्रूरकर्मसंसक्तं उन्मादयंति
पुरुषंपरधनहरणेसदासक्तम् ५९ मंदार्कभार्गवकुजाद्दशमस्थानोपगःप्रस
वकाले जनयंतिनरान्निपुणान्युक्तिविचारान्प्रकाशांश्च ६० रविजीवशुक्रसौम्या
जनयंतिनभःप्रकुर्वंति पुरुषंमायानिपुणंक्रूरंपरवंचनानुरतं ६१

हित कर्त्तेहैं ५७ और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तब अपने क
र्मोंमें रत और धर्ममें शूरवीर और बहुत धनधान्य कर्के युक्त और सर्वदा काल उद्यमके करणे वाले
कर्त्तेहैं ५८ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशम सूर्य मंगल बृहस्पति शनिः स्थित होवें
सो क्रूरकर्मोंके करणे वाला और मस्त और प्रायें धनके हरणे वाला होताहै ५९ और चंद्रमासें
दशमस्थानमें सूर्य मंगल शुक्र शनि स्थित होवें तब मनुष्योंको चतुर और युक्ति विचारके करणेवा
ले और प्रकाशकर्के युक्त प्रसिद्ध कर्त्तेहैं ६० और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य बुध बृहस्पति शुक्र
स्थित होवें तब मायामें चतुर और क्रूर और दूसरेको ठगणे वाला कर्त्तेहैं ६१

और जिसकेजन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमेंसूर्यबृहस्पतिशुक्रयानीस्थितहोवेंतबमनुष्यकोमस्तकिक युक्त और विदेश वास करणे वाला और अनेक चारित्र करणे वाला कर्तेहैं ६२ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमें मंगल बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तब मनुष्यको चतुर औ मिर्त्ती तर्क युक्त और शूरवीर और युद्धमें नहिं देखनमें आवताहै ॥ ६३ ॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमें मंगल बुध शुक्र शनि स्थित होवें तब मनुष्यको शूरवीरऔरकुटुंबकर्केयुक्त औरधनकर्के युक्तकर्तेहै ६४ और चंद्रमासें दशमस्थानमेंबुधबृहस्पतिशुक्रशनि स्थित होवें तब मनुष्यको शांतमन वाला और श्रेष्ठ बुद्धि वाला औरलोकमंप्री

रविगुरुभार्गवशनयोमेषूरणसंस्थिताःप्रसवकाले उन्मादयंतिमनुजंप्रवासशीलंविविधचेष्टम् ॥ ६२ ॥ भौमासितबुधसुरेज्याजन्मनिदशमक्षेगानरंनिपुणं उन्मादयंतिमनुयशूरंसमरेप्ववदृश्यंच ॥ ६३ ॥ भौमबुधशुक्रसौरानभस्तलेसस्थिताःप्रसवकाले ॥ जनयतिनरंशूरंकुटुंबयुक्तधनोपेत ६४ बुधगुरुभार्गवशनयोजन्मनिनभस्थिताकुर्युः पुरुषंशांतमनस्कंसुमेधसंलोकदयितच ६५ पापैर्नभस्तलगतै सौम्यग्रहवीक्षितैःप्रजायते ॥ वैद्य पुरोहितगणकाछात्रापरवंचनानुरता ६६ एतेसर्वेयोगाःसौम्यग्रहसंयुताःप्रसवकाले ॥ पापग्रहदृष्टियुता प्रायेणानभद्रदा प्रोक्ता· ६७ पापास्तृतीयषष्ठाहोरेंद्वो स्थानतोनृणामिष्टाः ॥ नेष्टानिधनांत्यगत्तालग्नोपगताविशेषेण ६८

तिवाला कर्तेहै ६५ और जिसके जन्मकालमें पापीग्रह दशम स्थानमें स्थित होवे और शुभग्र होंकर्के देखे होव तब वैद्य पुरोहित ज्योतिषी विद्यार्थी भडानें वाल्योंका और दूसरेंकों ठगने वाल्यों कों जन्म होताहै ६६ और पूर्वोक्त सपूर्ण योग दशम स्थानमें शुभग्रहों कर्के सयुक्त होवें और पापग्रहों कर्के देखे होवें तब विशेप कर्के शुभ फलकों नहिंदेतेहैं ६७ और लग्नसें और चद्रमा सें पापी ग्रह तीसरे और छठे स्थानमें मनुष्योंको शुभ फल कर्तेहै और अष्टम द्वादश और लग्नमें विशेष कर्के नेष्ट फल कर्तेहै ६८

अथाजीविकालक्षण ॥ जन्मकालमें लग्नओरचद्रमामेंयोअधिकबलीहोवें तिसमेंदशमस्थानमेंजोराशि
तिसमेंजिसराशिकावर्गबलवानहोवेअथवातिसकास्वामीबली होवेतवतिसकेआश्रयकर्केवृत्तिहोतीहै ६९
ओरजिनकेजन्मकालमेमेषराशिके वर्गदशममेंस्थितहोवेंसोबागकीसेवाओरपुरकीसेवाकर्केओररसेर्ता
कर्के ओररस वेचने कर्के पासा खेलनेकर्के ओरदूतकर्म कर्केजीविकाकरणेवाले होतेहै ७० ओरवृ
षराशिकावर्गदशमस्थानेमहोवेंतवगाडीकर्केओरचारपायेजीवोंकर्केओरपंछियोंकर्केओरमृगोंकर्केओर
अन्नादियोंके संग्रह कर्के जीविका कर्ताहैं ओर विशेषकर्केजांगल देशमेरहने वालाहोताहैं ७१ ओर मीं
मिथुन राशिका वर्ग दशम स्थानमे होवे तब जलमे जहाजोंके वणिज कर्के समृद्धि वाला ओर मी
ती शंख मुंगे ओर पात्रो कर्के लिखने कर्के ओर गणित कर्के जीविका करणे वालाहो

होरामृगलांछनयोर्योबलवांस्तस्यकर्मगाद्राशेः ॥ योबलयुक्तोवर्गस्तदधिपतौवा
तदाश्रयावृत्तिः ६९ आरामपुरसेवाकृषिरसवाणिगक्षदूतकार्येण ॥ जीवंतिनरा
नित्यंमेषगणेदशमराशिस्थे ७० वृषभगणेदशमस्थेशकटचतुष्पदविहगमृ
गजीवी ॥ धान्यादिसंग्रहेणचजांगलदेशेस्थितिप्रायः ७१ जलवणिजःसुसमृ
द्धोमुक्ताशंखप्रवालभांडैश्च लिपिगणितलेख्यजीविन्नामिथुनवर्गेचदशमस्थे७२
वस्त्राभियोनियोगान्मुक्ताशंखोपजीविनश्चैव आहिंडकवृत्त्यावाकार्कीणवर्गेदश
मसंस्थे७३सन्नाहकाष्ठकाननपाषाणसुवर्णरौप्यकुट्टाश्च कर्षणनिरतालेयेगोजी
वाधान्यवाणिजिकाः ७४शाकटिकामणिकाराहैरण्यकगंधविक्रयेनिपुणाः गांध
र्वशिल्पलेख्येकन्यावर्गेसदाविभवाः ७५

ताहै ७२ ओर कर्क राशिका वर्ग दशममे स्थित होवे तब वस्त्र ओर सुवर्णके संबंध क
र्के ओर मोती शंख कर्के ओर आहिंडक वृत्तिकर्के उपजीविका करणेवाला होता है ७३ ॥
ओर सिंहराशिका वर्गदशम स्थानमे स्थितहोवे तबजिरह संयोग कर्के काष्टकर्के ओर वन
ओर पत्थर ओर सुवर्ण ओर रौप्य ओर कुट्टकर्के ओर पृथ्वी खोदने कर्के ओर गो विक्रयओर
धान्यके व्यापारकर्केजीविका करणेवाले होतेहैं ७४ ओर कन्याराशिका वर्गदशम स्थानमेंस्थि
त होवे तब गाडी वनावने कर्के मणिआ वनावणे कर्के ओर सुवर्ण ओर सुगंध द्रव्यके वेचनेमेंचतु
र ओर गीतविद्या ओर शिल्प विद्या कर्के जीविका करणेवाले होतेहैं ७५

श्रौरतुलाकावर्ग दशममेंहोवेतव उपदेशकरणेसेंश्रौरसुवर्णकेलैने देनेसें श्रौर मित्रके संवंधसें श्रौरश्रने कव्यवहारी कर्केजीवकाकरणेवाले होतेहे ७६ श्रौर व्यापारकर्के श्रौरनम्रताकर्के श्रौर गौ श्रौर महिषोंके विक्रयकर्के श्रौर श्रनेकवस्तूवेचनेसें समृद्धिवाला श्रौर जलमासकेवेचनेकर्के प्रसिद्ध जीवका वालेहोतेहे ७७ श्रौरधन धान्यकेव्यापारसें श्रौरफल मूल वेचनेसें श्रौर खेतीकरणेसें श्रौर कलाकेजाननेसें उपजीविकाकरणेवालाहोताहै ७८ श्रौर वृश्चिक का वर्ग दशमस्थानमें स्थित होवे तव स्त्रीके संयोगकर्के ऐस्वर्यवाले श्रौर पृथ्वी कर्पणमें रत श्रौर नित्य उद्योग कर्के चोरी करणे वाले श्रौर राजाकीसेवा करणेवाले श्रौर पापी ७९ श्रौर देहकी चिकित्सा करणेवाले श्रौर

श्रायोज्याद्रुपदेशाद्धारिण्यपरिवर्त्तनाच्चमित्राच्च जायंतेचमनुष्यानानाव्यवहारभागिनःसततम् ७६ वाणिज्याविनयभवागोजीवामहिष्यर्जावाश्च नानापण्यसमृद्धाःसलिलासवपण्यवृत्तयःस्याताः ७७ धनधान्यमूलवनिजःफलमूलकृपिवलश्चैव जायतेधटवर्गेदशमस्थानेस्थितेकलाविदुषः ७८स्त्रिसंपर्कजविभवाजायंतेकर्षणानुरताश्च नित्योद्युक्ताश्चौराःपृथिवीपतिसेवकाःपापाः७९ देहचिकित्सानिरतालोहकराजीवनोलिसंज्ञकस्य वर्गेनभस्तलगतेधान्यानांचोपजीविनो नित्यम् ८० नृपसचिवदुर्गपालागोजाविखरैस्तथाशाक्तिनिकाष्टैः पात्रोपस्करविपनैर्जीवंतिनराश्चिकित्सयाधनुषः ८१ दशमेकुरंगवर्गेजलपण्यधनोमहाविभवः हट्टानामापणिकोरसाविक्रयकारकोजातः ८२ शस्त्रदहनप्रभेदैश्चौरेणचवर्तेतखननवृत्त्या दशमेघटधरवर्गेतस्करनाथोस्ववाहुवलात् ८३

लोहेकाकृत्य करणेवाले श्रौर धान्य वेचने श्रौर खरीदने कर्के उपजीविका वाले होतेहे ८० श्रौर दशमस्थानमें धनराशिका वर्ग होवे तव राजाके वजीर श्रौर किले कोटोंकी रक्षा करणेवाले और गौयांवकरेभेडावेचनेखरीदनेसेंश्रौरखोतेखच्चरांवेचनेखरीदनेकर्केश्रौर पात्रवेचनेखरीदनेंकर्केश्रौरवैद्यविद्याकर्केजीविकाकरणेवालेहोतेहै ८१ श्रौरदशमस्थानेंममकरराशिका वर्ग होवे तव जलमार्गके व्यापार कर्के वडे ऐस्वर्य वाला श्रौर हट्टीमे व्यापार करणेवाला श्रौर रसोंके वेचने कर्के उपजीविका वाला होताहै ८२ श्रौर दशम स्थानमें कुंभराशिकावर्गहोवेतव शस्त्रोंकर्के श्रौर श्रग्निकेभेदोंकर्के श्रौर चोरीकर्के श्रौरपृथ्वी खोदनेकीवृत्तिकर्के श्रौर श्रपनेवाहुवलसें चोरोंकास्वामीहोताहै

और दशम स्थानमें मीन राशिका वर्ग होवे तव शास्त्रसें और जलके संबंधसें और योनि पोषण क रणेसें और वस्तु विक्रय करणेसें जीविका करणे वाला होताहै ८४ और जन्मकालमें लग्न और चंद्रमाके मध्यमें यो ग्रहवली होवे तिससें दशम स्थान गत सूर्यादिग्रहोंकर्कधनकी प्राप्ति कहतेहैं लग्नमें वा वलवान् चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य वली होयकर्के स्थित होवे तव पितासें और चंद्रमा होवे तव मातासें और मंगल होवे तव शत्रुसें और बुध होवे तव मित्रसें और बृहस्पति होवे तव भ्राता से और शुक्र होवे तव स्त्रीसें और शनि होवे तव चाकरोंसें धनकी लब्धि होतीहै ८५ और लग्न में स्थित जो ग्रह और धनभाव में स्थित जो ग्रह और एकादश में स्थित जो ग्रह वलयुक्तहोवें ति नसें अनेक प्रकारका धन आचार्योंनें चिंतन करणा कहाहै ८६ अव दशमेशका फल वारा भावों में कहतेहैं जिसके जन्मकालमें दशमकास्वामी लग्नमें स्थित होवे सो माताका शत्रु और पिताका

शास्त्रात्सलिलाद्योनिप्रपोषणाद्विक्रयाच्चैव वर्गेमीनप्रभवेदशमस्थेजायतेवृद्धिः ८४ दिवसकराद्यैःस्वस्थैर्होरेंद्वोःसर्वदाभवत्यर्थाः पितृमातृशत्रुहितजनसह जस्त्रीभृत्यवर्गेभ्यः ८५ होरागतैर्धनगतैरायगतैश्चिंतयेद्द्रव्यम् वलसंयुतैर्ग्रहैर्द्रैरनेकधादृष्टमाचार्यैः ८६ ॥ अथदशमेशद्वादशभावफलजन्मप्रदीपात् ॥ दशमपतौलग्नगतेमातरिवैरीपितरिभवतिभक्तः दुःखीगतपितृवाल्येपरपुरुपरताभवतितनूमाता८७वित्तस्थेगगनपतौमात्रापालितस्सुतोभवति मातरिदुष्टोभवतिस्वल्पग्रामीसुतनुकर्मा ८८ मातृस्वजनविरोधीसेवाभिरतोनकर्मणिसमर्थः मातुलपरिपालितःस्याद्दशमपतौलग्नतःसहजे ८९ दशमपेवुगतेनिरतःसुखेपि तरिमातरिपोषणपूजनेसकललोकदृशाममृतायतेनृपतिसंभवलाभविभूषितः ९०

भक्तहोताहैऔरवाल्यावस्थामेंपितासें रहितऔरदुःखी होताहैऔर तिसकीमातापरपुरुषमेंरत होतीहै८७ औरदशमेश दूसरे स्थानमें स्थित होवे तव माता कर्के पालित होताहै और माताकाविरोधी होताहै और थोडे ग्रामों वाला और थोडे कर्म करणे वाला होताहै ८८ और जिसकों दशमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो मातासें और अपने संबंधियोंसें विरोध कर्ताहै और सेवा करणे वा ला होताहै और कर्ममें समर्थ नहि होता और मामे कर्के पालित होताहै ८९ और जिसके जन्म समयमें दशमका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे सो सुखमें रत होताहै और पिता माताके पालनेमें और पूजनेमें रत होताहै और संपूर्ण लोकोंकों प्यारा लगताहै और राजासें लाभक र्के शोभाकों प्राप्त होताहै ९०

श्रौर दशमका स्वामी पंचमभावमें स्थित होवे तवशुभ कर्मके करणे वाला श्रौर विद्वंन करणेवाला श्रौर राजासें लाभवाला श्रौर गीतवाद्य मेंरत होताहै श्रौर तिसकों माता पालतीहै ११ श्रौरजिसके जन्म कालमें दशमका स्वामी छठे स्थानमेंस्थित होवे सो श्रपने गुणों कर्केराजासें धनकोंउत्पन्न कर्त्ताहै श्रौर शुभग्रहहोवेतव विशेषसें पिताके धनकों प्राप्त होताहै श्रौर पापी ग्रह होवे तव नेष्ट फल कर्त्ताहै १२ श्रौर दशमकास्वामी सप्तमभावमें स्थित होवेतव तिसकी स्त्री पुत्रवाली श्रौर रूपकर्के युक्त श्रौर तिसकी माताके पालनेमें तत्पर होतीहै श्रौर श्रत्यंत प्रीति वाली होतीहै १३ श्रौर जिसके जन्मकालमें दशमका स्वामी श्रष्टम स्थानमें स्थित होवे सो क्रूर श्रौर चोर श्रौरझूठ वोलने वाला श्रौर दुष्ट होताहै श्रौर माताके संताप करणे वाला श्रौर थोडा कालजीनेवालाश्रौर

शुभकर्मकोविद्वंवीनृपलाभीगीतवाद्यनिरतःस्यात् गगनपतौतनयगतेपालयति चतंसुतंमाता ११ दशमपेरिपुराशिगतेभवेन्निजगुणैः सहितोवनिपार्जवेपितृक तंधनमस्तिविशेपतःशुभखगेसतिपापखगेत्वसत् १२ सुतवतीशुभरूपसमन्वि तायुवतिमातरिपालनतत्पराभवतितस्यनरस्यनिरंतरंप्रियतमांवरपेदयितागते १३ पुष्करपतिरष्टमगःक्रूरश्चौरंमृषान्वितंदुष्टंमातरिसंतापकरंजनयतितनुजीवितं कितवं १४ शुभशीलःसद्बंधुःसन्मित्रोदशमपेनवमलीने तन्मातापिसुशी लासुकृतवतीसत्यवचनरता १५ गगनपतिर्गगनगतोजनयतिजननीसुख प्रदंपुरुषं जननीकुलविपुलसुखंप्रकथनघटनापटीयांसं १६ मानोर्जितधन संहितामातासुतरक्षणीभवेत्सुखिनीदीर्घायुर्मातृसुखीपुरुषोलाभाश्रितेंवरपे १७

धूर्त्त होताहै १४ श्रौर दशमका स्वामीनवमस्थानमें स्थित होवे तव श्रेष्ठ स्वभाव वाला श्रौर श्रेष्ठ वंधुयों मित्रों वाला होताहै श्रौर तिसकी माता श्रेष्ठ स्वभाव वाली श्रौर धर्मवाली श्रौर सत्य वोल नें वाली होतीहै १५ श्रौर दशमका स्वामी दशम स्थानमें स्थित होवे तव माताकों सुख देने वा ला होताहै श्रौर माताके कुलकों सुखदेने वाला श्रौर वातके करणें में वडा चतुर होताहै १६ श्रौर दशम भावका स्वामी एकादश स्थानमेंस्थित होवे तव मानकोंप्राप्त श्रौर धनकर्के युक्ततिसकी माता होतीहै श्रौर पुत्रकीरक्षाकरणेवालीश्रौरसुखकर्केयुक्त होतीहै श्रौरमनुष्यवडीश्रायुषा वालाश्रौर माताकों सुखदेनेवाला होताहै १७

र दशमका स्वामी वाहरमें स्थानमें स्थित होवे तव माताकर्के त्यागकों प्राप्त
, अत्यंत वलकर्के युक्त और शुभ कर्मके करणे वाला और राजाके कर्ममें प्रीति वाला
ताहै और पापी ग्रह होवे तव विदेशमें रत होताहै ९८ इतिदशमभावविचारः १० ॥ अव
भभावका विचार कहतेहै तिसमें इतनें पदार्थोंका ज्ञान होताहै ॥ लग्नसें एकादशभावमें संपूर्ण-
त प्राप्तिका विचार कहतेहैं जिसकेजन्मकालमें जो ग्रह वलकर्के युक्त एकादश स्थानमें स्थित होवे
ी धन देताहै तिसमें सूर्यादि जोग्रह वली होयकर्के एकादशमें स्थित होवें सो क्रमसें धन प्राप्तिकर
हैं सूर्य अपनें संबंधि जातिकेजोहैं तिन्हसें और चंद्रमा माताकेवर्गसें और मंगल भ्रातासेंऔरबुध
अपनें स्वामीसें और पंडितोंसें और मित्रोंसें और मामियोंसें धनकों प्राप्त कर्ताहै १ और वृहस्पति वे
शास्त्र द्वारा यज्ञादि कर्मोंसें और पुत्रोंसें धनलाभ कर्ताहै और शुक्र स्त्रीयोंसें और काव्य नाटक क
यासें और संगीत विद्यादियोंसेंधनकोंप्राप्त कर्ताहै और शनि दासी और दासों कर्के और खेतीसें

मात्रोज्झितोतिवलवान्शुभकर्मानृपतिकर्मरतश्चेताव्योमपतौव्ययसंस्थेदेशा
तरगतश्चपापखगे ९८ इतिदशमभावविचारः १० अथलाभभावविचारः ला
भस्थानेनलग्नादखिलधनचयप्राप्तिमिच्छंतिसर्वेलाभस्थानोपयातःसकलवल
युतःखेचरोवित्तदःस्यात् भानुश्चेज्ज्ञातिवर्गादतिधनमुडुपोमातृवर्गेणभौमःसो
दर्याद्बांधवेभ्यःसहितमिति । १ जीवोयच्छतिवेदशास्त्रयज
स्थाद्यांग्रियैदिष्टप्रभुविवुधसुहृन्मातुलैर्वित्तमेति १ जीवोयच्छतिवेदशास्त्रयज
नाचारादिपुत्रैर्धनंशुक्रःस्त्रीजनकाव्यनाटककलासंगीतविद्यादिभिः दासीदास
कृपिक्रियार्जितधनंधान्यसमृद्धंशनिर्विप्रादिषुचरेणवीक्षितयुतेविद्यादयोवित्त
दाः २ आयस्थःशुभखेचरःशुभधनंपापस्तुपापार्जितंमिश्रैर्मिश्रधनंसमेति
मनुजस्तज्जातकोक्तंवदेत् ॥ लाभस्थानगतःसमस्तगुणवानइष्टाधिकश्चेद्वली
जातोयानविभूपणांवरवधूभोगादिविद्याधिकः ३ वित्तेशायगृहाधिपौतनुपते
रिष्टग्रहैचेद्धनंसत्कर्मामरविप्रपुण्यविषयेदानादियोग्यंवदेत् आयस्थोविवलः
परार्जितवलोनीचारिदुःस्थानपोरिकायोगकरोयदिप्रतिदिनंकुर्वीतभिक्षाटनम् ४

यवर्णों ब्राह्मणादिवर्णों
धनधान्यकीसमृद्धिकर्ताहै और विप्रादि जातिके ग्रहोंकर्के एकादशभाव दृष्टयुक्तहोंयेतव ब्राह्मणादिवर्णों
सें धन प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ और एकादशमें शुभग्रह स्थित होवे तव धर्म कर्के धनकी प्राप्ति हो
तीहै और पापी ग्रह स्थित होवे तव पापकर्म कर्के धनकी प्राप्ति होतीहै और शुभ पाप दोनों ग्रह
होवें तव मिश्रित कर्मोंसें धनकी प्राप्ति होतीहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण गुणोंकर्के युक्त
अधिक शुभफल करणे वाला और वली ग्रह एकादश स्थानमें स्थित होवे सो वाहन औरभूपण
और वस्त्र और स्त्रीभोगादि पदार्थोंकर्के युक्त औरविद्यावान् होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें
दूसरे और जाहरमें घरके स्वामी लग्नेशके मित्रहोवें तव श्रेष्ठधनकों प्राप्त होताहै जिसकर्केश्रेष्ठकर्म
देवता ब्राह्मणकेपूजन और दान यज्ञादि कर्ताहै अयसे धनकी प्राप्तिकरै औरएकादश स्थानमेंनिर्वल
और शत्रुकर्केजीता हुवा और नीच शत्रु राशिमें ६ ८ १२ घरका स्वामी होयकर्के स्थित होवे तव
दारिद्य योगके करणे वाला ग्रहहोताहैतिसकर्के नित्य प्रति भिक्षा मांगने वाला होताहै ४

और जिसके जन्म समयमें एकादश भावका स्वामी सूर्य अथवा चंद्रमा होवे तब राजाके तुल्य जनके आश्रय कर्के वृत्ति वाला होताहै और एकादशका स्वामी मंगलहोवे तब मंत्री जनसें और बडे और छोटे भाईयोंसें और खेतीके द्वारा धनकों प्राप्त होताहै और एकादशका स्वामीबुध होवे तब विद्यासें और बंधुयोंकर्के औरपुत्रोंकर्के धनकों प्राप्त होताहै और बृहस्पति एकादशका स्वामी होवे तब अपने आचारसें और शुक्र एकादशका स्वामी होवेतब रत्नों कर्के स्त्रीकर्के औरहाथीसें लेकर पशुयों कर्केधनकोंप्राप्त होताहै और शनि एकादशका स्वामी होवे तब खोटी वृत्तिके आश्रयसें धनकों प्राप्त होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें एकादशभावका स्वामी केंद्र और त्रिकोण में स्थित होवे और एकादश स्थान पापी ग्रहकर्के युक्त होवे और उच्च राशि उच्चनवांशमें होवे तब धनी होताहै औरलाभकेकारक उच्चादि राशि और

लाभेशेदिनपेथवाशशधरेभूपालतुल्याश्रयात् भौमेमंत्रिजनाग्रजानुजकृपिद्वाराधनंलभ्यतेविद्याबंधुसुतैःसुधाकरसुतेजीवेनिजाचारतः शुक्रेरत्नवधूगजादिपशुभिर्मंदेकुवृत्त्याश्रियम् ५ लाभस्थानपतौविलग्नभवनात्केंद्रत्रिकोणस्थितेलग्नेपापसमन्वितेतुधनवांस्तुंगादिराश्यंशकेतत्कारकवर्गतोबलवशाद्योगानुसारंवदेत्तत्तत्खेटदशापहारसमयेवित्तंवदेत्तद्दिशि ६ लाभेशात्सोदरेशाद्वाकर्णसौख्यंविनिर्दिशेत् पापान्वितेपापदृष्टेतद्धानिंप्रवदंतिहि ७ लाभराशेश्चदिग्भागाद्धनलाभमुदीरयेत्तद्राशिनाथदिग्भागाद्द्रव्यप्राप्तिमुदीरयेत् ८ लाभराशिवशादेवंचिंतयेन्मतिमान्नरः अथलाभस्वामिद्वादशभावफलम् अल्पायुर्बलकलितःशूरोदाताधनप्रियःसुभगः लाभपतौलग्नगतेतृष्णादोपान्मृतिंलभते ॥ १ ॥

नवांशमें होवें और एकादशके वर्गेशोंके बलसें और योगहोणेसें धनकी प्राप्ति कहे औरतिन्हकी दशांतर्दशाके समयमें और तिन्होंग्रहोंकी दिशासें धन प्राप्ति कहे ६ और एकादशके स्वामीसें अथवा तृतीय भावके स्वामीसें कर्णोंमें भूषणादि सुख कहे और पापयुक्त और पापदृष्ट होवेंतब कर्ण भूषणादियोंकी हानि कहे ७ और एकादश स्थानमें स्थित जो राशिहै,तिसकी दिशासें द्रव्य प्राप्ति कहे अथवा लाभेश ग्रहकी दिशासें धनकी प्राप्ति कहे ८ इस प्रकार कर्के एकादश भावसें बुद्धि मान् धन प्राप्तिका चिंतन करे ॥ अब लाभकेस्वामीका द्वादशभावमें फल कहतेहैं और जिसके जन्मकालमें एकादश भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो थोडी आयुषा वाला औरबल कर्के युक्त और शूरवीर और दाता और धनमें प्रीतिवाला और श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै और तृष्णा दोषसें मृत्युकों प्राप्त होताहै १

और जिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो उत्पन्न भोगी और थोड़ा भोजन करणे वाला और थोडी आयुषा वाला होताहै और क्रूरग्रहकर्के अष्ट कपाली और रोग वाला होताहै और शुभग्रह होवे तब धन कर्के युक्त होताहै ॥ १० ॥ और एकादशका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो बंधुयोंकी लक्ष्मी पालन करणे वाला और श्रेष्ठ बंधुयों वाला और शुभ ग्रह होवे तब बंधुयोंका प्यारा होताहै और क्रूरग्रह होवे तब बधुयोंका और शत्रुयोंके कुलका नाश करणे वाला होताहै ॥ ११ ॥ और एकादशका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब बडी आयुषा वाला और पिताका प्यारा और भक्ति वाला होताहै और समयमें उचित कर्ममें तर होताहै और श्रेष्ठ धर्ममें रत और लाभ वाला होताहै ॥ १२ ॥ और एकादशका स्वामी पचममें स्थित होवे तब पिता पुत्र आपसमें प्रीतिवाले होतेहै और समान गुण वाले होतेहैं और पुत्र थोडी जीविका

वित्तगतेलाभपतावुत्पन्नभुगल्पभोजनोल्पायुः ॥ अष्टकपालीरोगीक्रूरेसौम्ये चधनकलितः १० बंधुश्रीपालनकःसुबांधवोबंधुवत्सलस्तुशुभे ॥ लाभेशेसहजगतेबंधूनांरिपुकुलच्छेत्ता ॥ ११ ॥ तुर्यस्थेलाभेशेदीर्घायुःपितरिभक्तिभाग्भवति ॥ समयेककर्मनिरतःसुधर्मेरतोलाभवान्मनुजः १२ तनयगतेलाभपतिःपितृपुत्रौस्नेहलौमिथःकुरुते ॥ तुल्यगुणंचपरस्परस्वल्पाजीवीचभवतिसुतः १३ लाभाधिपेपष्ठगतेसुवैरंसुदीर्घरोगंचतुरंगसंग्रहं ॥ मृतिंसमाप्नोतिचचौरहस्तात्क्रूरेचदेशांतरसंगतोनरः १४ सप्तमगेलाभेशेतेजस्वीशीलसंपदःपदवी ॥ दीर्घायुर्भवतिनरस्तथैकदयितापतिर्नियतं १५ एकादशपेष्टमगेक्रूरेल्पायुःसुदीर्घरोगीच जीवन्मृतश्चदुःखीभवतिनरःसौम्यगगनचरे १६ एकादशेशेसुकृतालयस्थेवहुश्रुतःशास्त्रविशारदः स्यात् ॥ धर्मप्रसिद्धोगुरुदेवभक्तःक्रूरेचखेटेव्रतवर्जितश्च १७

वाला होताहै ॥ १३ ॥ और एकादशेश छठे स्थानमें स्थित होवे तव वडे वैर वाला और दीर्घरोगी और घोडेयोंका संग्रह करणे वाला होताहै और क्रूग्रह होवे तव चोरके हाथसें मृत्युको प्राप्त होताहै और विदेशमें रहिताहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामी सप्तम स्थानमें स्थित होवे सो तेजस्वी और श्रेष्ठ स्वभाववाला और सपदाको प्राप्त होताहै और वडी आयुषा वाला और निश्चयकर्के एक स्त्रीका स्वामी होताहै ॥ १५ ॥ और एकादशका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थितहोवे और क्रूरग्रह होवे तव थोडी आयुषा वाला होताहै और दीर्घरोगी होताहै और शुभग्रहहोवेतव जीताहि मृतककी न्याई होताहै और दुःखी होताहै १६ और एकादशका स्वामी नवम स्थानमें स्थित होवे तव वहुश्रुत होताहै और शास्त्रमें चतुर होताहै और धर्ममें प्रसिद्ध होताहै और गुरु और देवताका भक्त होताहै और क्रूरग्रह होवे तव व्रतकर्के रहित होताहै ॥ १७ ॥

और जिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामी दशममें स्थित होवे सो माताका भक्त और धर्मी होताहै और पिताके वैर कर्ताहै और चिरकालजीताहै और धनवान् और माताकेपालनेवालाहोताहै १८ और जिसके जन्मकालमें एकादशकास्वामी एकादशमें स्थित होवे सो बडी आयुषा वाला कर्ताहै और बहुत पुत्र पौत्रों करके युक्त कर्ताहै और श्रेष्ठ कर्मकरणेवाला और रूपकरके युक्तऔर श्रेष्ठस्वभाव करके युक्त होताहै और मनुष्योंको हर्ष करणे वाला पुरुष होताहै १९ और एकादशका स्वामी द्वादशमें स्थित होवे तब उत्पन्न भोगी और चंचल और भोगभोगने वाला औरउत्पातमें रत और अभिमानी और दाता और सदादुखी होताहै २० इतिलाभभावविचारः ॥ ११ ॥ अथव्यय भावका विचारकहतेहैं जन्मलग्नसेबारहवेंघरसे और बारहवेंघरकेस्वामीसे औरशनिसे दूरविदेशगमनऔर

मातरिभक्तःसुकृतीपितरिद्वेषीसुदीर्घतरजीवीधनवान्जननीपालननिरतोलाभाधिपेखगते १८लाभाधिपेलाभगतःकरोतिदीर्घायुषंपुष्कलपुत्रपौत्रंसुकर्मकंरूपयुतंसुशीलंजनप्रमोदप्रवणपुमांसम् १९द्वादशगेलाभेशेउत्पन्नभुगस्थिरोभवतिभोगीउत्पातरतोमानीदातादुःखीसदापुरुषः २० इतिलाभभावविचारः ११ अथव्ययभावविचारः लग्नाद्व्ययतदीशभानुतनयैर्दूराटनंदुर्गतिदातृत्वंशयनादिसौख्यविभववित्तक्षयांश्चिंतयेत् ॥ रिःफस्थेचरखेचरेचरगृहेदुःस्थाननाथेथवानानादेशवनाटनोहिशनिनायुक्तेथवालोकिते १ रिःफस्थानगतेशुभेशुभयुतेसौम्यग्रहालोकितेतन्नाथेविवलेरिनीचगृहगेवित्तव्ययाभावभाक् ॥ रिःफस्थेविवलेवलेनसहितेरिःफाधिपेवित्तहानिश्चव्योमचरान्वितेतुसकलानिश्चव्ययदेहिनां २ ॥

दुर्गति और दानशक्ति और शय्यादि शयनके सुख और ऐश्वर्य और धननाश इतने पदार्थोंका विचार करे और द्वादश स्थानमें चरराशि गत चर ग्रह चंद्र बुध शुक्र होवे अथवा छठे अष्टम द्वादश के स्वामी होवे और शनि करके युक्त अथवा दृष्ट होवे तब अनेक देशोंमें भ्रमणकरणे वाला और वन पर्वतमें भ्रमणे वाला होताहै १ और जिसके जन्मकालमें द्वादश स्थानमें शुभग्रह स्थित होवे और शुभग्रहकरके युक्त होवे और शुभग्रहकरके दृष्ट होवे तब धनके खर्चको नहिं प्राप्त होताहै और द्वादश स्थानमें निर्बल ग्रह स्थित होवे और द्वादशेश बली होवे तब धनका नाश कर्ताहै और शुभ पाप दोनो ग्रह द्वादशमें युक्त होवे वा देखते होवे तब मिश्रित शुभकर्म पापकर्म दोनोंमें धन खर्च होताहै २

और द्वादश भावमें शुभग्रहके वर्गस्थित होवें तब शुभकार्यमें खर्च होताहै और द्वादश भाव निर्बल ग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तब पापकर्ममें खर्च होताहै और निर्बल ग्रह की दशा कालमें द्वादश भावका कारक जिसके वर्गमें स्थित होवे तिसग्रहकी जातीके मनुष्यसें अनर्थ फलकों प्राप्त होताहै ३ और क्रूर ग्रहबली होयकरके द्वादश स्थानमें स्थित होवे और छठे और अष्टम का स्वामी द्वादश स्थानमें स्थितहोवे तब खेतीया और धनके सग्रहकानाश करताहै और द्वादश स्थानमें द्विपद चतुष्पदादि राशिके स्थित होया और पापी ग्रह के योग और देखनेसें भृत्यादि द्विपद चतुष्पदोंके नाशकों प्राप्त होताहै अर्थात् व्यय भावमें द्विपद ३ । ६ । ७ धनकापूर्वभाग होनेमें चाकरोंकीहानिहोतीहैऔर १।२।५धनकापरार्धऔरमकरकापूर्वार्धहोनेसेंचतुष्पदोंकीहानिहोतीहै

इष्टव्ययंभवतिशोभनवर्गयातेदुष्टव्ययंविबलखेटयुतेक्षितेवा ॥ यत्कारकद्युचरवर्गजनादनर्थंजातःसमेतिबलहीनदशापहारे ॥ ३ ॥ क्रूरग्रहेबलवतिव्ययगेरिनाशस्थानाधिपेक्वपिधनास्थितिनाशकःस्यात् ॥ रिःफेचतुर्द्विपदभेसहतत्पदेनखेटेनसर्वपशुभृत्यविनाशमेति ॥ ४ ॥ विप्रादिखेचरयुतेसतिविप्रमुख्यैःस्त्रीवर्गतस्तुतरुणीखचरेणयुक्ते ॥ रिःफेन्नरग्रहयुतेरिपुणासुहृद्भेजातःसुहृज्जनवशाद्धननाशमेति ॥ ५ ॥ त्यागीशुभग्रहयुतेक्वापि कश्चधर्मीपापेवसानग्रहगेतुविवादशीलः ॥ नेत्रामयःपवनकृच्चपलोटनःस्याद्दुःस्वमित्रभवनेतुपरोपकारी ॥ ६

४ और ब्राह्मण जातीके ग्रह बृहस्पति शुक्रबारहमेंस्थानमें होवेंतब ब्राह्मणों करके धन खर्च करते-ताहै और स्त्रीग्रहोंकरकेचंद्रमाशुक्रकेयुतहोवे तबस्त्रीयोंके निमित्तधननाशकर्ताहै औरपुरुषग्रहसूर्यमंगल स्थित होवें तब शत्रुयों करके धन नाश कर्ताहै और मित्र क्षेत्रमें होवें तब मित्रों करके धन नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ और शुभग्रह द्वादशमें स्थित होवें तब त्यागी और तपिकर्मके करणे वाला और धर्मी होताहै और पापी ग्रह होवे तब विवाद करणे वाला होताहै औरनेत्ररोगी और वायु विकार वाला और चपल भ्रमणे वाला होताहै और उच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तब परोपकार करणे वाला होताहै ॥ ६ ॥

॥ और जिसके जन्म कालमे सूर्य अथवा क्षीण चंद्रमा द्वादश स्थानमें स्थित होवे तब राजा करके धन नाशको प्राप्त होताहै ॥ और द्वादश स्थानमें स्थित मंगल बुध करके देख्या होवे तब अनेक प्रकारों करके धननाश करताहै और वृहस्पति बुध द्वादशमें स्थित होवें तब धनकी रक्षा करतेहैं और बुध शुक्र करके युक्त दृष्ट होवे तब शय्याके सुखको प्राप्त होताहै ७ ॥ और द्वादश भावका स्वामी उच्चराशिमें स्थित होवे और शुभग्रहोंके वर्गमें स्थित होवे और शुभग्रहों करके देख्या होवे तब पर्य्यंकेमे शयन करणे वाला कहे ॥ ८ ॥ और द्वादश भावका स्वामी परम उच्चमें स्थित होवे तब विचित्र पर्यंकमें शयन कहे और अथवा नवम भावके स्वामी करके देख्या होवे तब मणिरत्नों करके विभूषित पर्यंकपर शयन कहे ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें द्वादश

भानुर्वाक्षशशीतगुर्व्ययगतोवित्तस्यनाशंनृपैर्भौमोनाशयतींदुजेक्षितयुतो नानाप्रकारैर्द्धनं ॥ वागीशेंदुसुतायदिव्ययगतावित्तस्यसंरक्षकाः सौम्यःशुक्रयुतेक्षितोयदिनृणांशय्यासुखंजायते ॥ ७ ॥ व्ययेशेस्वोच्चराशिस्थेशुभवर्गसमन्विते ॥ शुभखेचरसंदृष्टेपर्यंकशयनंवदेत् ॥ ८ ॥ विचित्रमंचेशयनंव्ययेशेपरमोच्चगे ॥ भाग्यनाथेनवादृष्टेमणिरत्नविभूषितं ९ पापग्रहणांसंबंधेव्ययेतद्भावनायके ॥ क्रूरांशकेक्रूरदृष्टेशयनादिसुखंनहि ॥ नीचेव्ययेवालग्नेशेशत्रुनाथेनवीक्षिते ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्तेशयनादिसुखंनहि १० मंदाहिध्वजसंयुतेतुनिधनस्थानाधिपेनान्वितेरिःफेदुर्गतिमेतिषष्ठपतिनादृष्टेथवामानवः ॥ जातोयातिपरंपदंसुरगुरौलग्नेभृगौकामगे कन्यास्थेरजनीकरेयदिधनुर्लग्नेचमेषांशके ११

भाव और तिसका स्वामी पापी ग्रहसें संबंध करे और क्रूरके नवांशमें स्थित और क्रूरग्रह करके दृष्ट होवें तब शयनादि सुख तिसको नाहिं होताहै और जिसके जन्म कालमे लग्नका स्वामी नीच राशिमें स्थित होवे और अथवा द्वादश स्थानमें स्थित होवे और छठे भावके स्वामी करके दृष्ट होवे और शनि और गुलिक और राहु करके युक्त होवे तब शय्यादि सुख नाहिं होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्म कालमें अष्टमेश शनि राहु केतु करके युक्त होवे और द्वादश स्थानमें स्थित होवे सो दुर्गतिको प्राप्त होताहै अथवा षष्ठेश करके देख्या होवे तब दुर्गतिको प्राप्त होताहै और जिसके जन्म कालमें वृहस्पति लग्नमें और शुक्र सप्तममें स्थित होवे और कन्यामें और धनुर्लग्नमें और मेष के नवांशमें चंद्रमा स्थित होवे तब परम गतिको मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

श्रौर जिसके जन्मकालमें षष्ट अष्टम द्वादश भावोंकेस्वामी दुःस्थानमें ६ । ८ । १२ । स्थित होवें
तब तिन्हीं भावोंका पुष्ट फल कर्त्तेहैं जब बली होवें तब श्रौर निर्बल होवें तब पुष्ट फल नहि
कर्त्तेहैं श्रौर अष्टमस्थानका स्वामी निर्बल होयकर्के जिस भावमें स्थित होवे तिसका नाश कर्त्ताहै
श्रौर लग्नका स्वामी शुभग्रह कर्के दृष्ट युक्त श्रौर बली होय कर्के जिस भावमें स्थित होवे तिस भा
वका वडाशुभ फल कर्त्ताहै श्रौर नीच राशिमें श्रौर अस्त होवे तब नेष्ट फल कर्त्ताहै ॥ १२ ॥
अब द्वादशेशका वारां भावोंमें फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें द्वादश भावका स्वामी लग्नमें
स्थितहोवे सो विदेशगमनकर्त्ताहै श्रौर सुदररूपवला श्रौर श्रेष्टवाणीवालाहोताहै श्रौर दुष्ट संगतिमें
स्थित होताहै श्रौर वादकरणे वाला होताहै अथवानपुंसक होताहै ॥ १३ ॥ श्रौर द्वादशका स्वामी
दूसरेस्थानमें स्थितहोवे तब कृपण श्रौर कठोर वाणी वाला श्रौर अनिष्टफलकों प्राप्त होताहै श्रौर

दुःस्थेदुष्टगृहाधिपेबलयुतेतद्भावपुष्टिंवदेत् आयुःस्थानपतौतुयत्रविबलेतद्भावना
शतथा ॥ लग्नेशःशुभखेटवीक्षितयुतोयद्भावयातोबलीतद्भावस्यशुभंकरोतिविपु
लंनीचारिगस्त्वन्यथा १२ अथव्ययेशद्वादशभावफलम् व्ययनाथेलग्नगते
विदेशगःसुवचनःसुरूपश्च असगबाददोपीभवतिकुमारोथवापंडः १३ द्वा
दशपेवितगतेकृपणःकटुवागनिष्टलाभपरः सौम्येगच्छतिनिधनंनृपतस्करवन्हि
तोतिभयम् १४ सहजगतेद्वादशपेक्रूरेगतबांधवःशुभेचधनी तनुसोदरःसुकप
णोबंधुषुदूरेसदाभवति १५ तूर्य्यगतेव्ययनाथेकृपणोरोगभीतःसुकर्माच मृ
तिमाप्नोतिसुततःसततमनुजोमहादुःखो १६ द्वादशपतौसुतस्थेक्रूरेसुतवर्जि
तःशुभेसुतयुक् जनकविलासीचतथासमर्थहीनोभवेत्पुरुषः १७ षष्ठगतेव्य
यनाथेक्रूरेकृपणोतिदूषणःपुरुषः लभतेमृतिंनितांतंभृगुतनयेनेत्रहीनःस्यात् १८

शुभग्रह होवे तब निर्धन श्रौर राजासें श्रौर चोरसें अग्निसें भयकों प्राप्त होताहै १४ श्रौर द्वादशका
स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे श्रौर क्रूरग्रह होवेतव बंधुहीन श्रौर शुभग्रह होवे तब धनी होताहै
श्रौर थोडे भाईयों वाला श्रौर कृपण श्रौर बंधुयोंसें सर्वदाकाल दूरहोताहै १५ श्रौर द्वादशका
स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब कृपण श्रौर रोगकर्के डराहुया श्रौर श्रेष्ट कर्म करणे वाला हो
ताहै श्रौर पुत्रसें मृत्युकों प्राप्त होताहै श्रौर निरंतर वडेदुःख कर्के युक्त होताहै १६ श्रौर द्वादश
भावका स्वामी पंचमस्थानमें स्थित होवे श्रौर क्रूरग्रह होवेतव पुत्ररहित होताहै श्रौर शुभग्रहहोवेतव पुत्र
युक्त होताहै श्रौर पितासें विलास करणे वाला श्रौर समर्थसें रहित होताहै १७ श्रौर द्वादशका स्वा
मी छठे स्थानमें स्थित होवे श्रौर क्रूरग्रह होवेतव कृपण श्रौर दुष्ट भावकोंप्राप्त होताहै श्रौर निश्चयक
र्के मृत्युकों प्राप्त होताहै श्रौर शुक्र होवे तब नेत्रहीन होताहै १८

॥ और द्वादशकास्वामीसप्तमस्थानमेंस्थितहोवेतव दुष्ट और दुष्टचरित्रधारणेवाला और चतुर होताहै औरक्रूरग्रह करके अपनीस्त्रीसें और शुभग्रहकरकेवेश्यासें नाशकोंप्राप्तहोताहै १९ और द्वादशका स्वामी अष्टम भावमें स्थित होवे तव अष्टकपालों करकेयुक्त और कार्यसाधनमें रहितहोताहै और द्रोह करणेमें बुद्धि वाला होताहै और शुभग्रह होवे तव धन संग्रहमें तत्पर होताहै ॥ २० ॥ और द्वादशका स्वामी नवमस्थानमें स्थितहोवे तव तीर्थयात्रामें चंचल स्वभाववाला होताहै और क्रूर ग्रहहोवे तव पापीहोताहै और तिसका धन निरर्थ जाताहै २० और द्वादशका स्वामी दशमस्थानमें स्थितहोवे तव परस्त्रीसें पराङ्मुख और पवित्र अंगोंवाला होताहै और पुत्र

द्वादशपेसप्तमगेदुष्टोदुश्चरितभृत्पटुवचनः क्रूरेस्वस्त्रीतःस्यात्सौम्येक्षयमेति गणिकातः ॥ १९ ॥ व्ययनाथेनिधनगतेष्टकपालीकार्यसाधनैरहितः ॥ द्रोहमतिःसौम्यखगेधनसंग्रहतत्परोभवति ॥ २० ॥ व्ययनाथेसुकृतगं तेतीर्थत्रैलोक्याटनोविचलवृत्तिः ॥ क्रूरेचखगेपापीनिरर्थकंयातितद्द्रव्यम् ॥ २० ॥ व्ययपेगगनगृहस्थेपररमणीपराङ्मुखःपवित्रांगःसुतधनसंग्रहनिर तोदुर्वचनपराभवतितन्माता २१लाभस्थेद्वादशपेसुकुमारोदीर्घजीवितोभवति स्थानप्रवरोदाताविख्यातःसत्यवचनपरः २२ विभूतिमान्ग्राममनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिःपशुसंग्रहीच चजीवतिग्रामयुतःसदास्याद्व्ययाधिनाथेव्ययगेहलग्ने २३ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेतन्वादिद्वादशभावफलाध्यायःषोडशः १६

और धनके संग्रहमें रतहोताहै और तिसकी माता दुष्ट वचन कहने वाली होताहै २१ और द्वादश का स्वामी एकादश भावमें स्थितहोवे तव सुकुमारवस्थावाला और चिरकाल जीणेवालाहोताहै और अपने स्थानमें प्रधान होताहै और दाता और जगतमें प्रसिद्ध और सत्य वोलनेवाला होताहै २२ और जिसके जन्मकालमें द्वादश भावका स्वामी द्वादश स्थानमें स्थित होवे सो ऐश्वर्यवाला और ग्राममें निवास करणेमें चितवाला और कृपणवुद्धिवाला और डरणे वाला और पशुओंका संग्रह करणे वाला और कदाचित् जीवता रहे तव सवदा काल ग्राम करके युक्त होताहै २३ इति श्रीजातकखंडभाषाटीकायांषोडशोध्यायः १६ शिवम्

अथ स्त्रीजातकाध्याय कहतेहैं यो जन्मकालसें पुरुषोंकों होराशास्त्रकेजाननेवाल्योंने कहा है सो फल स्त्रीयों कोंबोकहें और तिसमें यो स्त्रीकों कहनेके योग्य फलनहिहै सो फल तिसके स्वामी कों होताहै १ और कहतेहैं लग्नसें औरचंद्रमासें स्त्रीकेदेहकाशुभाशुभविचारकहे और लग्नसें और चंद्रमासें अष्टम स्थानमें पतिकासुख कहे और पंचमभावमें प्रसूतिकाविचार कहे औरनिश्चयकर्कें विधवाका विचार अष्टम धर्मकरे २ और ग्रंथातरमें कहतेहैं स्त्रीके जन्मलग्नमें अष्टमस्थानमें विधवा योग देखे और स्वामी का सुख और सौभाग्य सप्तम भावमें देखे और देहकोसौंदर्यता लग्नमें देखे और पुत्रकी प्राप्ति नवमस्था नमें देखे ३ इन्हों पूर्वोक्त स्थानोंमें शुभग्रह बलयुक्त स्थित होवें तब शुभफल होताहै और स्वामीसें रहित क्रूर ग्रह स्थितहोवें तवनेष्टफल होताहै ४ और जिसस्त्रीकेजन्मकालमें लग्नचंद्रमा ग्रह राशिमेष मिथुनादिमें स्थित होवें और पुरुष राशिके नवांशमें स्थित होवें सो स्त्री पुरुषकी न्याई स्वरूप और

अथस्त्रीजातकाध्यायोव्याख्यायते ॥ यज्जन्मकालादुदितंनराणांहोराप्रवीणैःफलमे तदेव स्त्रीणांप्रकल्प्यंखलुवेदयोग्यंतन्नायकेतत्परिवेदितव्यम् १ लग्नेशशांकेचवपुर्वि चिंत्यंतयोःकलत्रेपतिवैभवानि सुतास्यभावेप्रसवोऽवगम्योवैधव्यमस्याःकिलका लगेहे २ अथांतरेपि वैधव्यंनिधनगृहेपतिसौभाग्यसुखंचजामित्रे सौंदर्यंलग्नगृ हेविलोकयेत्पुत्रसंपदांनवमे ३ एषुस्थानेषुवत्यःसौम्याःशुभदाबलान्विताज्ञेयाः क्रूरास्तुनेष्टफलदाभुवनेशविवर्जिताःसदाचिंत्यम् ४ पुरुषक्षेपुरुषांशेलग्नेंद्वोः पापयुक्तयोर्जाता पुरुषाकृतिशीलयुताभर्तुरयोग्यासमंजसाकन्या ५ सौम्ययुतेदृष्टेवासुभगासा समराशौसमभागेलग्नेंद्वोःस्त्रीगुणान्विताकन्या ॥ सौम्ययुतेदृष्टेवासुभगासा ध्वीसुविख्याता ६ तथा लग्नेंदूविषमक्षगौशुभयुतौसौम्यग्रहालोकितौ नारीमिश्रगुणाकृतिस्थितिगतिर्ज्ञानवतीजायते ॥ युग्मागारगतौतुपापसहितौपापेक्षितौवातथा तद्राशीशयुतेक्षकग्रहबलादायुःसमस्तंविदुः ७

स्वभाववाली और स्वामीके योग्यनहि होतीहै और माडी होतीहै ५ और जिसके जन्मकालमें समराशियोंमें वृष ककादिकोंमें और समराशिकेनवांशमें लग्न चंद्रमा दोनों हों तब कन्या स्त्रीयोंके यो गुणहैं तिन्होंकरके युक्त होतीहै और शुभग्रहोंकरकेंयुक्त वा दृष्ट होवें तब श्रेष्ठ भाग्योंवाली और साध्वी और प्रसिद्ध होतीहै ६ और कहतेहैं लग्न और चंद्रमा विषम राशियों में स्थित होवें और शुभग्रहकरके युक्त और दृष्ट होवें तब स्त्री मध्यम गुणों वाली और मध्यमरूप वाली और बुद्धिवाली होतीहै और तैसेहि समराशियोंमें लग्न चंद्रमा स्थित होवें और पापी ग्रहोंकर्के युक्त दृष्ट होवें तब मध्यम रूप वाली और मध्यम गुण वाली होतीहै ॥ और लग्नेश और चंद्रमाकी राशिका स्वामी इन्होंकों जैसे ग्रह देखते होवें तिन्हकाबलाबलदेखकर्के संपूर्ण फल कहे ७

अब त्रिंशांशका फल कहतेहैं ॥ जिस कन्याके जन्मसमयमेंलग्न और चंद्रमामें यो बली होवै और मंगलकी राशिमें और शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब कन्या बडी निंद्य होतीहै ॥ और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब निरंतर पतिव्रता होतीहै ॥ और मंगलके त्रिंशांशमें होवे तब निश्चयकरकेदुष्ट होतीहै और बुधकेत्रिंशांशमें होवेतबमायामेंचतुरहोतीहै और शनिके त्रिंशांशमें होवे तब दासी होतीहै ८ और लग्न अथवा चंद्रमा बुधकी राशिमें स्थितऔर मंगलके त्रिंशांशमें होवें तब कन्या कपट स्वभाववालीहोतीहै और शुक्रके त्रिंशांशमें होवें तबकामदेवसें रहित होतीहै और बुधके त्रिंशांशमें होवें तब अत्यंत गुणोंकरके युक्त होतीहै ॥ और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवें तब निरंतर पतिव्रता होतीहै और शनिके त्रिंशांशमें नपुंसककी स्त्री होतीहै ९ और जिस

अथत्रिंशांशफलम् लग्नेंद्वोर्बलवान्कुजस्यभवनेशुक्रस्यखाग्न्यंशकेकन्यास्यादतिनिंदितासुरगुरोःसाध्वीनितांतभवेत् दुष्टाभूतनयस्यनूनमुदितासौम्यस्यमायाविनीदासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशेफलानिक्रमात् ८ तारानायकपुत्रभेऽवनिसुतत्रिंशद्भवेकापटाशौक्रेहीनमनोभवाशशिसुतस्याऽतीवयुक्तागुणैः ॥ देवाधीशपुरोहितस्याहिभवेत्साध्वीनितांततथा खाग्न्यंशेऽर्कसुतस्यसानिगदिताक्लीवस्यभार्याबुधैः ९ देवाचार्यगृहेमृतांशुरथवालग्नंखवन्ह्यंशकेभूसूनोर्गुणशालिनीसुरगुरोःरुन्नतागुणानांगणैः तारास्वामिसुतस्यचारुविभवाशुक्रस्यसाध्वीभवेन्नूनंभानुसुतस्यचाल्पसुरताकांताबुधैःकीर्त्तिता १० दैत्याचार्यगृहेसुरेंद्रसचिवस्याकाशवन्ह्यंशकेलग्नवाप्युडुनायकोगुणवतीभौमस्यदौष्ट्याधिका ॥ सौम्यस्यातिकलाकलापकुशलाशुक्रस्यचंचद्गुणैर्युक्तार्थैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशेपुनर्भूरिति ११

कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा वा लग्न बृहस्पतिकी राशिमें स्थित होवें और मंगलके त्रिंशांशमें होवें तबकन्यागुणोंवालीहोतीहै और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होवें तब गुणोंकसमूहोंकरके प्रसिद्ध होतीहै और बुधके त्रिंशांशमें होवें तब श्रेष्ठ ऐश्वर्यकरके युक्त होतीहै और शुक्रकेत्रिंशांशमें होवे तब पतिव्रता होतीहै और शनिकेत्रिंशांशमें होवें तब स्त्रीनिश्चयकरके थोडीप्रीति वाली होतीहै १० और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा शुक्रकी राशिमें और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवें तबकन्यागुणवालीहोतीहै और मंगलकेत्रिंशांशमें होवें तब दुष्टाहोतीहै और बुधकेत्रिंशांशमें होवें तब कलाकसमूहको जानने वाली होतीहै और शुक्रके त्रिंशांशमें होवेंतब बडे प्रकाशवाले गुणोंकरके युक्त होतीहै और शनिके त्रिंशांशमें होवें तब दोवारीविवाही जातीहै ११

और जिसकन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा शनिकी राशिमें स्थित और मंगलके त्रिशांशमें होवे तव दासी होतीहै और बुधके त्रिशांशमें दुष्टा होतीहै और बृहस्पतिके त्रिशांशमे स्वामीके पूजने वाली होतीहै और शुक्रके त्रिशांशमें प्रसूतीसें रहित होतीहै और शनिके त्रिशांशमे नीचमें रत होतीहै १२ और जिसकन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा सिंहराशिमें स्थित होवे और मंगलके त्रिशांशमें होवे सो कन्या इच्छाचारिणी होतीहै और बुधके त्रिशांशमें अत्यंत दुष्ट मन वाली होतीहै और बृहस्पतिके त्रिशांशमें राजाकी राणी होतीहै और शुक्रके त्रिशांशमें व्यभिचारमें रत होतीहै और शनिके त्रिशांशमें अत्यंत पुरुषकीन्याईं चतुर होतीहै १३ और जिसकन्याके जन्मकालमें कर्कट राशिमें चंद्रमा वा लग्न होवे और मंगलके त्रिशांशमें होवे तव कन्या अपनी इच्छासें वर्त्तने वाली होतीहै और बुधके त्रिशांशमें शिल्पविद्यामें चतुर होतीहै और बृहस्पतिके त्रिशांशमें श्रेष्ठगुणोंवाली और शुक्रके त्रिशांशमें पतिव्रता और शनिके त्रिशांशमें

मंदालयेखाग्निलवेकुजस्यदासीचसौम्यस्यखलाहिवाला ॥ बृहस्पतेःस्यात्पतिदेवतासावंध्याभृगोर्नीचरतार्कसूनोः १२ लग्नंवाविधुरर्कमंदिरगतोभौमस्यखाग्न्यंशकेस्वेच्छासंचरणोद्यताशशिसुतस्यातीवदुष्टाशया देवाधीशपुरोधसोनिगदितासाराजपत्नीभृगोःपौंश्चल्याभिरताशनेरतितरांपुंवत्प्रगल्भांगना १३ चंद्रागारेखाग्निभागेकुजस्यस्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्यशिल्पेप्रवीणा वाचांपत्युःसद्गुणाभार्गवस्यसाध्वीमंदस्याप्रियप्राणहंत्री १४ ॥ अथशुभाऽशुभयोगाः ॥ अन्योन्यभागेक्षणगौसितार्कीयद्वासितर्क्षेतनुगेघटांशे कंदर्पशांतिंकुरुतेनितांतं नारीनराकारकरांगनाभिः १५ शून्येमन्मथमंदिरेशुभखगैर्नालोकितेनिर्बलेवा लायाः किलनायकोमुनिवरैःकापूरुषःकीर्तितः जामित्रेबुधमंदयोर्यदिगृहंपंठो भवेन्निश्चितंराशौतत्रचरेविदेशनिरतोद्यंगेचामिश्रस्थितिः १६

स्वामीके प्राणहरणे वाली होतीहै १४ अव शुभाऽशुभ योग कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र और शनि दोनों परस्परनवांशमें स्थित होवें शनिके नवांशमें शुक्र और शुक्रके नवांशमें शनि स्थितहोवे और आपसमें देखते होवें अथवा जन्मलग्न तुला होवे और तिसमें कुंभराशिका नवांश होवे सो स्त्री पुरुषाकार स्त्रीयोंकरके कामकी शांतिकों करणे वाली होतीहै १५ और योगांतर कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मलग्नसें सप्तमस्थान ग्रहोंकरके रहित होवे और ग्रहोंकीदृष्टिकरके रहित होवे वलसें हीन होवे तव तिस कन्याका स्वामी भयडा होताहै और जद सप्तमभावमें मिथुन कन्या और मकर कुंभ लग्न होवें तव तिसकास्वामी नपुंसक होताहै निश्चयकरके और जिस स्त्रीके सप्तमभावमें चर राशी १ ४ ७ १० स्थित होवे तव तिसका स्वामी विदेशमें रत होताहै और द्विस्वभाव लग्न ३ ६ ९ १२ सप्तममें होवे तव कदी घरमें कदी विदेशमें रहिताहै १६

और योगांतरकहतेहैं जिसस्त्रीकों सप्तमस्थानमें सूर्यस्थितहोवे सो पतिकर्के त्यागकों प्राप्तहोतीहै औरमं गलसप्तमस्थानमें होवे सो बालविधवा होतीहै और पापीग्रहों कर्के सप्तमभाव दृष्टहोवे और शनि कर्के युक्तहोवे तवकन्याकुमारीहीवृद्धहोजातीहै १७ और योगांतरकहतेहै जिसकन्याके सप्तमभावमें पापीग्रह स्थितहोवे तिसकेकेशपाशनष्टहोजातेहै और मिश्रग्रह स्थितहोवे तवदूसरी वार विवाहीजातीहै और सप्तममें वलहीन पापग्रह स्थितहोवे और शुभग्रहोंकर्के नहिंदृष्टहोवें तव स्वामीकर्केत्यागकोंप्रा प्तहोतीहै १८ और योगकहतेहै जिसस्त्रीके जन्मकालमें मंगलके नवांशमें शुक्रऔर शुक्रकेनवांशमें मं गलस्थितहोवे सोस्त्रीनिश्चयकर्के परपुरुषमेंरतहोतीहै और शुक्रमंगलचंद्रमाकर्केयुक्त सप्तमस्थानमें स्थि तहोवें तवस्वामीकी आज्ञामें रतहोतीहै ॥ १९ ॥ और योगांतर कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मकालमें मंगलशनिकीराशियोंमें १ ।८ ।१० ।११ लग्न गत

सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजेचविधवाखलुबाल्ये पापखेचरविलोकनयातेमंदगे चयुवतिर्जरतीस्यात् १७ खले कलत्रेचगतालकास्यात्कांताविमिश्रेश्चभवेत्पुनर्भूः कलत्रसंस्थेविवलेखलाख्येसौम्येरदृष्टेविभुनाविमुक्ता १८ अन्योन्यांशावस्थितौभौ मशुक्रौस्यात्तांकांतासंगतान्येननूनं चंद्रोपेतौशुक्रवक्रौस्मरस्थावाज्ञामेवस्वामिनश्चा मनंति १९ लग्नेसितेंदूकुजमंदभस्थौक्रूरेक्षितौसान्यरताहियोषा स्मरेकुजेसार्क सुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्च शुभाऽशुभांशे२०भानोर्भेयदिवालवःस्मरगृहेसंभोगमंदः पतिश्चंद्रस्यातिमदोमृदु क्षितिसुतस्यस्त्रीप्रिय क्रोधयुक् विद्वान्ज्ञस्यगुरोर्वशी गुणयुत शुक्रस्यभाग्यान्वितोमंदस्यप्रवयास्तुगूढमतिरित्युक्तोबुधैर्होरिकैः २१

चंद्रमा शुक्र होवें और क्रूरग्रहोंकर्के दृष्ट होवे सो स्त्री परपुरुषमें रत होतीहै और जिस स्त्री केसप्त म भावमें मंगल स्थित होवे और शनिकर्के युक्त दृष्ट होवे और शुभग्रह पापग्रहोंके नवांशमें स्थि त होवें तव तिसकी योनी नष्ट होतीहै २० और जिसस्त्रीके सप्तमभावमें सूर्यकी राशि वा नवा श स्थित होवे तव तिसका स्वामी संभोगमें मंद होताहै और चंद्रमाकी राशि और नवांश होवे तवति सका स्वामी वडे मदकर्के युक्त और कोमल होताहै और मंगलकीराशि नवांश होवे तव स्त्रीका प्यारा और क्रोधयुक्त होताहै और बुधके नवांशमें पंडितहोताहै और वृहस्पतिके नवांशमें वश्य और गु णोंकर्केयुक्त होताहै और शुक्रके नवांशमें भाग्योंकर्के युक्त होताहै और शनिके नवांशमें वृद्ध और गूढमति होताहै यह फल होराशास्त्रके जाननेवाले कहतेहैं २१ ॥

श्रौरयोगांतरकहतेहैंजिसस्त्रीकेजन्मकालमेंशुक्रचंद्रमासप्तमभावमेंस्थितहोतेहैंतिसस्त्रीकोंईर्ष्याकर्केयुक्त श्रौरबडेभाग्योंवालीकरतेहैंश्रौरबुधचंद्रमासप्तममेंकलावतीश्रौरश्रेष्ठगुणोंवालीकरतेहैंश्रौर बुधशुक्रबडे प्रकाशवालेभाग्य श्रौर गुणोंकर्के युक्त कर्त्तेहै श्रौर शुभग्रह लग्नमें स्थित होवें तब अनेक भूषण श्रौर श्रेष्ट गुणोंकर्के युक्त होतीहै श्रौरपापीग्रह लग्नमें होवें तब खोटा फल कर्त्तेहैं ॥ २२ ॥ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिसकन्याकेजन्मलग्नसेंश्रष्टमस्थानमेंपापीग्रहहोवेंसोविधवाहोतीहैश्रौर श्रष्टमे श जिसग्रहके नवांशमें स्थित होवे तिसग्रहकी दशाकालमें सोस्त्रीमृत्युकों प्राप्त होतीहै श्रौर शुभग्रह दूसरे स्थानमें स्थित होवें तब अपने दोषकर्के मरतीहै २३ श्रौर जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य श्रौर मंगल चंद्रमासें दशम चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें सोपर्वतसें गिडकर्के मरतीहै श्रौर मंगल श्रौर चंद्रमा श्रौर शनि दूसरे श्रौर सप्तमें श्रौर चतुर्थस्थानमेंस्थित होवें तब लूहे श्रौर बाउलीसें श्रादले कर्के जलाशयमें डूबतीहै श्रौर जिस कन्याकेजन्मकालमेंसूर्यचंद्रमादोनों पापग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवें

शुक्रेंदूस्मरगौस्त्रियंप्रकुरुतस्सेर्ष्यांसुखेनान्वितांसौम्येंदूचकलासुखोत्तमगुणांशु क्रेंदुपुत्रावथ ॥ चंचद्भाग्यकलाश्चताभिरुचिरांसौम्यग्रहैंद्रास्तनोनानाभूषणसद्गुणां वरसुखांपापग्रहास्त्वन्यथा २२ वैधव्यंस्यात्पापखेटेऽष्टमस्थेरंध्रस्वामीसंस्थि तोयस्यचांशे मृत्युःपाकेतस्यवाच्योंगनायाःसौम्यैरर्थस्थानगैःस्यात्स्वयंहि २३ सूर्यारौखजलाश्रितौहिमवतःशैलाग्रपातान्मृतिर्भौमेंद्वर्कसुताःस्वसप्तजलगाःस्या त्कूपवाप्यादितः सूर्याचंद्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यास्थितौबंधनात्तौचेद्व्यंगविलग्न संस्थितिकरौतोयेनिमग्नास्वतः २४ रविसुतोयदिकर्कमुपागतोहिमकरोमकरोपग तोभवेत् किलजलोदरसंजनितातदानिधनतावनितासुचकीर्त्तिता २५ निशाकरःपा पखगांतरस्थःशस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोतिपापेस्मरस्थेऽन्यखगेचधर्मेकिलांग नाप्रव्राजितत्वमेति २६ कन्यालिगेसिंहगतेशशांकेपंकेरुहाक्षीखलुसाल्पपु त्रा पुत्रालयंचेच्छुभखेचरेंद्रैर्दृष्टयुतवाबहुताचतेषाम् ॥ २७ ॥ शुक्रेंदुसौम्याबि वलाभवेयुःशनैश्चरोमध्यबलोयदिस्यात्

श्रौर कन्या राशिमें स्थित होवें तब बंधनसें मरतीहै श्रौर चंद्रमा द्विस्वभाव राशिमें लग्नगत होवे तब श्रापजलमें डूबकर्के मरतीहै २४ श्रौर जिस कन्याके जन्मकालमें शनिकर्कट राशिमें श्रौर चं द्रमा मकर राशिमें स्थित होवे तब निश्चयकर्के सो जलोदर रोगकर्के मरतीहै २५ श्रौर जिस कन्या के जन्मकालमें चंद्रमा पापीग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे श्रौर मेष वृश्चिक राशिमें स्थित होवे तब श स्त्रकर्केश्रौर श्रग्निकर्के मृत्यु कर्त्ताहै ॥ श्रौर पापीग्रह सप्तमें स्थित होवें श्रौर शुभ ग्रह नवममें स्थित होवें तब निश्चयकर्के सो प्रव्रजता भावकों प्राप्त होतीहैं क्या सपूर्णकर्मोंकात्यागकर्केदेशान्तरमेंभ्रमतीहै २६ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या श्रौर वृश्चिक श्रौर सिंह राशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो निश्चयकर्के थोडे पुत्रोंवाली होतीहै श्रौर पंचमस्थानकों शुभग्रह देखते होवें वा युक्त हो वें तबबहुत पुत्रोंवाली होतीहै २७ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र श्रौर चंद्रमा श्रौर बुध बलहीन होवें श्रौर शनि मध्यबली होवे श्रौर बाकीके सपूर्णग्रह बलकर्के युक्त विषम

लग्नमें स्थित होवें तब स्त्री विशेषसें पुरुषकी न्याई वचन शीला होतीहै २८ और योगा तर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें समराशिमें वलकर्के युक्त शुक्र बुध चंद्रमा वृहस्पति स्थित होवें सो स्त्री ब्रह्मविचारके करणे वाली और ब्रह्मज्ञानकर्के विराजमान होतीहै २९ और यवनजातकमें कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें भद्रातिथि २ ७ १२ होवे और श्लेषा शतभिषा और कृत्तिका नक्षत्र होवें और शनि मंगल आदित्य वार होवें इन्हींतीनोंके योगमें जन्मेतो विषकन्या होतीहै ३० और त्रैलोक्यप्रकाशमें कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शत्रुकी राशिमें दो शुभग्रह स्थित होवें और एक क्रूरग्रह होवे तब असे योगमें जन्मी हुवी विषकन्या होतीहै ३१ और योगजातकमें कहतेहै जिस कन्याके जन्मलग्नमें शनि स्थित होवे और सूर्य पंचम भावमें स्थित होवे और मंगल नवम भावमें स्थित होवे इस योगमेंजो जन्मीहै सो विषकन्या होतीहै ३२ अब विष योगका अपवाद कहतेहैं जिसकन्याके जन्मकालमे लग्नसें वा चंद्रमासें सप्तमभावका

शेषास्सवीर्य्याविषमेचलग्नेयोषाविशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥ २८ ॥ समेविलग्नेयदिसंस्थिताःस्युर्वलान्विताःशुक्रवुधेंदुजीवाः स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥ २९ ॥ यवनजातके भद्रातिथिर्यदाश्लेषा वारुणंकृत्तिकातथा मंदाररविवारेषुविषकन्याप्रजायते ॥ ३० ॥ त्रैलोक्यप्रकाशे रिपुक्षेत्रगतौद्वौतुलग्नेयत्रशुभग्रहौ क्रूरश्चैकस्तथाजाताभवेत्स्त्रीविषकन्यका ३१ अथयोगजातके लग्नेसौरीरविःपुत्रेधर्मस्थोधरणीसुतःअस्मिन्योगे तुयाजातासाभवेद्विषकन्यका ३२ अस्यापवादः लग्नाद्विधोर्वायदिजन्मकाले शुभग्रहोवामदनाधिपश्च द्यूनस्थितोहंत्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषंचविषांगनाख्यम् ३३ रंध्रगौचंद्रसूर्यौचेद्विलग्नान्निजराशिगौ वंध्याथचंद्रमस्सौम्यौकाकवंध्या तदाभवेत् ३४ मृतापत्याचशुक्रेज्यौसारौगर्भस्रवाभवेत् तत्वपंचाशकायाम् नारीणांजन्मकालेकुजशनितमसःकेंद्रकोणेपुशस्ताः चंद्रस्तेषुप्रशस्तोवुधसितगुरवःसर्वभावेषुशस्ताः लग्नेशःकामभावेमदनगृहपतिर्लग्नभावेवलस्थोलाभेश.पुत्रभावेवदतिमुनिवरोवव्हपत्याभवंति ३५

स्वामी अथवा शुभग्रह सप्तम भावमें स्थित होवे तब अनपत्य दोषको और वैधव्य दोषको और विषांगना दोषको दूर करताहै ३३ और योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा सूर्य अष्टमस्थानमें स्थित होवें और स्वक्षेत्रमें स्थित होवें सो स्त्री वंध्या होतीहै अथवा चंद्रमा शुभग्रह कर्के युक्त अष्टमस्थानमें स्थित होवे तब काकवंध्या होतीहै क्याएक वारहि प्रसूतहोतीहै ३४ और शुक्र वृहस्पति अष्टममें स्थित होवें तब मृतपुत्रा होतीहै और मंगलकर्के युक्त शुक्रगुरू अष्टममें स्थित होवें तब चारमासके भीतर गर्भ नष्ट होताहै और तत्वपंचाशकामें कहतेहै स्त्रीयोंके जन्मकालमें मंगल शनि राहु केंद्र और त्रिकोणमें श्रेष्ठ होतेहैं और चंद्रमा भी केंद्र कोणमें श्रेष्ठ होताहै और बुध शुक्र गुरु इह संपूर्ण भावोंमें शुभ होतेहै और लग्नेश सप्तम भावमें और सप्तमेश लग्नमें वली शुभ होताहै और एकादशका स्वामी पंचमभावमें शुभ होताहै और असेयोगमेंस्त्रीयांबहुत पुत्रों वालीयाहोतीयांहैं इहश्रेष्ठमुनि कहतेहैं ३५

और योग कहतेहे जिन्हों कन्याके जन्मकालमे बृहस्पति अथवा शुक्र परमवली होयकर्के सप्तम भावमें स्थित होवें और दशम भावका स्वामी लग्नसे नवम और एकादश और लग्नमे और चतुर्थ और पचम और दशम और दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो जो स्त्रीयाहे चद्रमाकीन्याई मुखजिन्ह-का और कमलदलकीन्यांई नेत्र जिन्हके तिनकरिराज्यश्रीकरके युक्त मणिमयमादिरमेवडेरूपवाले नायकदासभवकोंप्राप्तहोकरशोभतेहें ३६ और योग कहतेहे जिस कन्याके जन्मकालमे बृहस्पति नवम ९ पंचम ५-केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानोमे स्थित होवे और उच्च स्वक्षेत्र मित्र राशिका होवे तव कन्या श्रेष्ट स्वभाववाली और पतिव्रता और पुत्रोंके जन्मने वाली और सुखवा ली और गुणोंकर्के युक्त और निश्चयकर्के दोनों कुलोमे यशके करणे वाली होतीहें ॥ ३७ ॥ और जिस कन्याका जन्मलग्न शुभ ग्रहोंकर्के दृष्ट होवे तव शिल्पके जानने वाली और शुद्धचित्त वाली और निरंतर लज्जाकर्के युक्त और श्रेष्ट रूपवाली और श्रेष्ट पुत्रोंकर्के युक्त और वहुत धन और सुख

जीवोवाभार्गवोवापरमवलयुतःकामभावेपुयासांकर्मेशोधर्मलाभेतनुसुखतन येकर्मकोशेवलस्थः ॥तासांचंद्राननानांकमलदलदृशांनायकोरूपयुक्ताराज तेराजलक्ष्मीमणिमयशिविरेदासभावेसदेव ३६ वाचस्पतौनवमपंचमकेंद्रसं स्थेतुगादिकेभवतिशीलसमन्विताच ॥ साध्वीसुपुत्रजननीसुखिनीगुणाढ्या नूनंकुलद्वययशस्करिणीभवेत्सा ३७ यदिशुभकरदृष्टाशिल्पिनीशुद्धचित्तास ततमिहसलज्जाचारुमूर्तिःसुपुत्रा ॥ वहुधनसुखयुक्तावल्लभेवल्लभेत्वंव्रजतिशु भशतानांभाजनत्वंचहोरा ॥ ३८ ॥ चंद्रेकर्कटकोदयेचवलिभिःशुक्रज्ञजीवेंदु भिर्नानाशास्त्रकलारसज्ञचतुराविख्याततेजस्विनी ॥ कामस्थैरथवाविलग्न भवनाद्धर्मस्थितेःखेचरैःप्रव्रज्यामुपयातिजन्मसमयेपाणिग्रहेचिंतयेत् ३९ ॥ पापैस्तेनवमगतग्रहस्यतुल्यांप्रव्रज्यांयुवतिरुपेत्यसंशयेन उद्वाहेवरणविधौ प्रदानकालेचिंतायामपिसकलंविधेयमेतत् ४०

कर्के युक्त और स्वामीकी प्यारी और अनेक शुभ कर्मोका भाजन होतीहे । ३८ । और योगांतर कहतेहें जिस कन्याके जन्मकालमे कर्कटराशिमें चद्रमा स्थित होवे और वलकर्के युक्त बृहस्पति शुक्र बुध चद्रमा होवे सो कन्या अनेक शास्त्रकलाके जाननेवाली और रसके जानने वाली और वडी चतुर और तेजवाली होतीहे और जिसस्त्रीके जन्मकालमे सप्तम स्थानमे अथवा नवम स्थानमे चारग्रहसें लेकर्के वहुत ग्रह स्थित होवे सो कन्या जिस रकमके ग्रह होवें तिस रकमकी प्रव्रज्याको प्राप्त होतीहैं सो विस्तारकर्के पूर्व चतुर्ग्रहादि योगाध्यायमें कह आएहें इहे विचार जन्मसमयमे और विवाह कालमे करणा कहाहे ॥ ३९ ॥ और कहतेहैं स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तम स्थानमे यो पापी ग्रह स्थित होवे अथवा नवम स्थानमे योग्रहस्थितहोवे तिसकेतुल्य प्रव्रज्या होतीहे निश्चयकर्के और विवाहमें औरवाक्यदानकेसमयमें औरकन्यादानकेसमयमें औरप्रश्नकालमेइसयोगकाविधान करे ४०

और जिस कन्याके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें मध्य वली शुभाशुभ ग्रह युक्त होवें वा अष्टमभावको देखते होवे तव स्त्री पुरुष दोनो तुल्यकालमें मृत्युकों प्राप्त होतेहैं ऐसें संपूर्ण ज्योतिः शास्त्रके जानने वाले कहतेहैं और अथवा सप्तमेश और लग्नेश एकराशिमें स्थितहोवे अथवा सप्तमेश लग्नमें स्थितहोवे और लग्नेशसप्तममें स्थितहोवे और शुभग्रहकरकें युक्तहोवेतवस्त्रीपुरुष एककालमें मरतेहैं ४१ और यों गातर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मसमयमें तीसरे घरका स्वामी पुरुष ग्रह होवे और पुरुष ग्रहोंकी राशिमें स्थित होवे और पुरुष ग्रहकरकें युक्त अथवा दृष्ट होवे और दूसरे स्थानमें और केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें और कोण ॥ ५ ॥ ॥ ९ ॥ स्थानमें वली होयकरकें स्थित होवे सो कन्या वहुत धनवाले और सुखवाले भ्राताकों प्राप्त होतीहै अर्थात् तिसके पीछें धनी और सुखी होवे वाला भ्राता जन्मताहै ॥ ४२ ॥ और कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें तीसरे स्थानकास्वामी और एकादश स्थानका स्वामी लग्नमें और पंचम भावमें स्थित होवें तव राज्यतेजकरकें युक्त गुण

रंध्रेमिश्रवलेशुभाऽशुभखगैरालोकितेवायुतेदंपत्योःसमकालमृत्युमखिलज्योतिर्विदःसंविदुःएकस्थौमदलग्नपौचयदिवालग्नस्थितेकामपेकामस्थेतनुपेशुभग्रहयुते मृत्युस्तयोस्तुल्यतः ४१सहजभवननाथेपुंग्रहेपुंग्रहर्क्षेपुरुपखचरयुक्तेपुंग्रहालोकिते वा नयनभवनकेंद्रेकोणगेवावलिष्ठेवहुधनसुखवंतंसोदरंयातिजाता ४२ सहोदरस्थानपलाभनाथौविलग्नतःपंचमराशियातौनृपालतेजोगुणरूपवंतंसहोदरं जातवधूसमेति ४३ अथपतिलक्षणम् ॥ गौरांगःपतिरस्तगेदिनकरेकामीसरोपेक्षणश्चंद्रेरूपगुणान्वितःकृशतनुर्भोगीरुगार्त्तोभवेत् ॥ नम्रःक्रूररसोलसः पटुवचःसंरक्तकांतिःकुजेविद्यावित्तगुणप्रपंचरसिकःसौम्येमदस्थानगे ४४ दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्तविभवःकामीचवाल्येगुरौकांतोनित्यविनोदकेलिचतुरःकाव्येकविःक्ष्मापतिः ॥ मंदेवृद्धकलेवरोस्थिततनुःपापीपतिःकामगेराहौवाशिखिनिस्थितेमलिनधीर्नीचोथवातत्समः ४५ अथस्त्रीजातकेवारफलानि ॥

रूपकरकें युक्त भ्राताकों प्राप्त होतीहै ॥ ४३ ॥ अव स्त्रीके स्वामीके लक्षण कहतेहैं जिस कन्याके जन्मलग्नसें सप्तम स्थानमें सूर्य होवे तिसका स्वामी गौर वर्णके अंगों वाला होताहै और कामी और क्रोध युक्त नेत्रों वाला होताहै और चंद्रमा होवे तव रूप और गुणोंकरकें युक्त और दुर्बल देहवाला और भोगी और रोगी होताहै और मंगल होवे तव नम्र और क्रूर रसवाला और आलसी और प्रगल्भवाणी वाला और लालवर्ण वाला होताहै और वुध होवे तव विद्या और धन और गुण और प्रपंच रसकके युक्त होताहै ॥ ४४ ॥ और वृहस्पति सप्तम स्थानमें होवे तव वडी आयुषा वाला और राजाके समान धन ऐश्वर्य वाला और वाल्यावस्थामें कामी होताहै और शुक्र होवे तव सुंदर और नित्यप्रति आनंदकरकेयुक्त और काव्यमेंचतुर और राजाहोताहै और शनिहोवेतवृद्ध देहवाला और चलदेह वाला और पापी होताहै और राहुकेतु सप्तममें स्थित होवें तव मलीन वुद्धिवाला और नीच वा नीचके तुल्य होताहै ४५ अव स्त्रीजातकमें वार फल कहतेहैं ॥

और यो कन्या रविवारमें जन्मतीहै सो तीक्ष्ण स्वभाववाली और श्रेष्टभाग्योंवाली और प्रचंडरूप और तेजकर्के युक्त और छैरसकेभक्षणकरणेवालीहोतीहै १ और यो कन्या सोमवारमें जन्मतीहै सो स्निग्ध वर्णवाली और श्रेष्ट भाग्योंवाली और श्रेष्टहास्यकेकरणेवाली और सुंदरभूषणोंवाली और जलक्रीडामें प्रीति वाली नित्यप्रति होतीहै २ और यो कन्या मंगलवारकोंजन्मतीहै सोप्रचंडरूप और कृतघ्न किसिके उपकारकों नहिं जाननेवाली और क्रोधकर्के युक्त और लालवस्त्रोंमें प्रीति वाली नित्यप्र ति होतीहै ३ और यो कन्या बुधवारमें जन्मतीहै सो चंगे और मंद वाक्योंमें प्रसन्नरहितीहै और शोभा कर्के युक्त होतीहै और धर्मकर्ममें प्रीतिवाली होतीहै ४ और यो कन्या बृहस्पति वार कों जन्मतीहै सो लोभ और क्रोधसें रहित और संपूर्ण सुखकर्के युक्त और शुभकर्मोंमें रत होतीहै ५ और यो कन्या शुक्रवारकों जन्मतीहै सो संपूर्ण धनके संचय करणे वाली और गौवां और हाथी

तीक्ष्णाचशुभगाचैवप्रचंडातेजसान्विता ॥ षड्रसास्वादिनीकन्याजायतेरवि वासरे १ सुस्निग्धासुभगाचैवसुस्मिताचारुभूषणा ॥ जलक्रीडाप्रियानि त्यंजायतेसोमवासरे ॥ २ ॥ प्रचंडाचकृतघ्नाचक्रोधयुक्ताचकन्यका ॥ रक्तांबरप्रियानित्यंजायतेकुजवासरे, ३ ॥ इष्टानिष्टेषुवाक्येषुरंजतेबहुधाश्रिया धर्मकर्मप्रियाकन्याजायतेसोमनंदने ४ ॥ लोभक्रोधविहीनाचसर्वसौख्यस मन्विता ॥ शुभकर्मरताकन्याजायतेगुरुवासरे ५ सर्वार्थसंचयरतागोगजा श्वाविकप्रिया ॥ कन्यकाभर्तृमानाचजायतेभृगुनंदने ६ कुबुद्धिर्मूढकामाचदी र्घदृष्टिर्जितेंद्रिया ॥ अल्पकेशीविनीताचकन्याजाताशनैश्चरे ७ अथनक्षत्रफलानि ॥ कन्याबलवतीचैवत्वहंकारवतीसदा ॥ व्यवहाररतादक्षा दस्त्रभेजायतेहिसा १ अत्यंतसुखिनीकन्याचार्वंगीहास्यकारिणी ॥ मातापितृ प्रशस्ताचजायतेयमदैवते २ तेजस्विनीयशोयुक्तापरसक्तातुकन्यकाबह्वाशनी क्रूररूपाकृत्तिकायांतुजायते ३

घोडे भेडोंमें प्रीति वाली और स्वामीके मान वाली होतीहै ६ और यो कन्या शनिवारमें जन्मती है सो खोटी बुद्धिवाली और निंद्य कर्मकरणे वाली और दीर्घ दृष्टि वाली और इंद्रियोंके जीतने वाली और थोडे केशोंवाली और नम्र होतीहै ॥ ७ ॥ अब नक्षत्रोंके फल कहतेहैं ॥ यो कन्या अश्विनी नक्षत्रमें जन्मतीहै सो वडे बलवाली और अहं कारकर्के युक्त और व्यवहारमें रत और चतुर होतीहै १ और यो कन्या भरणी नक्षत्रमें जन्मतीहै सो अत्यंत सुखवाली और सुंदर अंगोंवाली और हास्यके करणे वाली और माता पिताकरी शुभ करणे वाली होतीहै २ और यो कन्या कृत्तिका नक्षत्रमें जन्मतीहै सो तेजवाली और यशकर्के युक्त और पर सक्त और बहुत भोजन करणे वाली और क्रूर रूप वालीहोतीहै ३

और योकन्या रोहिणी नक्षत्रमें जन्मतीहैसो बडीआयुषवाली औरपुत्रोंवाली औरकुलकेवधावनें वाली धन्याऔर मानवाली होतीहै ४ और योकन्यामृगशिरानक्षत्रमेंजन्मतीहै सो मातापिताकोंशुभकरणे वाली और धनवाली और कृपणा और दूसरेमें सक्त होतीहै ५ और यो कन्या आर्द्रा नक्षत्रमें जन्मतीहै सो पापकर्ममें सक्त होतीहै और कुरूपाऔर लडाईकरणेवाली और दृढवैरकेकरणेवालीहोतीहै ६ और यो कन्या पुनर्वसुमें जन्मतीहै सो क्षमाकरणेके स्वभाव वाली और भाइयोंमें प्रीति करणे वाली और किसीसें वैरभाव नाहिं करणें वाली और परलोक के सिद्ध करणे वाली होतीहै ७ और यो कन्या पुष्यनक्षत्रमें जन्मतीहै सो धर्मबुद्धिवाली और संपूर्णकर्म करणें वाली और श्रेष्ठ होतीहै ८ और यो कन्या श्लेषामें जन्मतीहै सो प्रचंडा और कृतघ्ना और क्लीवा और लडाईमें प्रसन्न होनें वाली और अपने प्रेममें सक्त होतीहै ९ और यो कन्यामघानक्षत्रमें जन्मतीहै सो बडे श्रेष्ट भोजनव

आयुष्मतीसुतवतीकन्यकाकुलवर्द्धनी धन्यामानवतीचैवरोहिण्यांजायतेहिसा ॥ ४ ॥ मातुःपितुःप्रशस्ताचकन्यकाधनभागिनी ॥ कृपणाचान्यसक्ताच जायतेसोमदैवते ॥ ५ ॥ पापकर्मप्रसक्ताचकुरूपाकलहप्रिया ॥ कन्यकादृढ वैराचजायतेरौद्रदैवते ६ क्षमाशीलप्रसक्ताचकन्यकाबांधवप्रिया अवैरापर लोकार्थाजायतेदितिदैवते ७ धर्मबुद्धिसमारूढासर्वकर्मकरीसदा ॥ प्रशस्ता कन्यकाचैवजायतेगुरुदैवते ८ प्रचंडाचकृतघ्नाचक्लीवाचकलहप्रिया ॥ कन्य काप्रेमसक्ताचजायतेनागदैवते ९ महार्हभोजनेसक्ताकन्याभोगवतीतुसा पि तृदेवार्चनेरक्ताजायतेपितृदैवते १० त्यागशीलविहीनाचलोभक्रोधविवर्द्धिनी कन्यकादृढकामाचजायतेभगदैवते ११ अर्थसंचयसंयुक्ताकन्यकाछिद्रकारि णीकिंचिद्धर्मवतीचैवजायतेर्यम्णदैवते १२ तीक्ष्णाचदृढकामाचपरद्रव्यापहारि णीस्वकर्मकुशलाकन्याजायतेचार्कदैवते १३ शुक्लांबरधराकन्याहास्यकामिजन प्रियापितृदेवार्चनेसक्ताजायतेत्वाष्ट्रदैवते १४ निरालस्यातिरूपाचकुत्सिताच जयान्विता ॥ कन्यकाचाप्रमादाचजायतेवायुदैवते १५

नानेमें सक्त होतीहै और भोगोंके भोगनेवाली और पितर और देवताके पूजनमें रत होतीहै १० और यो कन्या पूर्वाफाल्गुणीमें जन्मतीहै सो त्यागसें और शीलसें हीन और लोभ क्रोधके वधावने वाली और दृढकामा होतीहै ११ और यो कन्या उत्तराफाल्गुणीमें जन्मतीहै सो धनके संचय करणे वाली और दूसरेका छिद्र करणे वाली और किंचिद्धर्म करके युक्त होतीहै १२ और यो कन्या हस्तनक्षत्रमें जन्मतीहै सो क्रूर और दृढकामवाली और परायेद्रव्यके हरणे वाली और अपने कार्यमें श्रेष्ट होतीहै १३ और यो कन्या चित्रानक्षत्रमेंजन्मतीहै सो श्वेतवस्त्रोंके धारणेवाली और हास्यकरणे वाली और कामीजनोंमें प्रीति करणे वाली और पितर और देवताके पूजनमें सक्त होतीहै १४ और यो कन्या स्वातीमें जन्मतीहै सो आलस्यसें रहितऔर वडे रूपकरके सहित और निंद्यकर्मोंके करणे वाली और जयकरके युक्त और मदनोंकरके युक्त होतीहै १५

और यो कन्याविशाखामें जन्मतीहै सो धर्मवाली और बडीनम्र और बुद्धि और धनकर्केयुक्त और सत्य बोलनेवाली होतीहै १६ और यो कन्या अनुराधमेंजन्मतीहै सो बहुतभोजनकरणेवाली और लोभकर्के युक्त और सर्वदाकाल मद्यमासमें रत और अन्यपुरुषमें सक्त होतीहै १७ और यो कन्या ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्मतीहै सो शस्त्रके घातवाली औरबडीलडाईकरणेवाली और अत्यंत क्रूरहोतीहै १८ और यो कन्या मूलानक्षत्रमें जन्मतीहै सो पापकर्मके करणेवाली और प्रचडा और खोटेकर्ममेंसदा रत और कुलकाक्षय करणेवालीहोतीहै १९ और यो कन्यापूर्वाषाढामेंजन्मतीहै सो धर्ममेंस्वभाववाली और बडीनम्र और सत्य बोलने वाली और पुण्यकर्ममेंरत होतीहै २० और योकन्या उत्तराषाढामें जन्मतीहै सो पतिव्रताऔर मीठाबोलनेवाली और नित्यप्रतिअभ्यागतकापूजनकरणेवालीऔर पुत्रों कर्के युक्त होतीहै २१ और यो कन्याश्रवण नक्षत्रमें जन्मतीहै सो बडी नम्र होतीहै और श्र

धर्ममूलाविनीताचप्रज्ञाधनसमन्विता द्विदैवतेहिसंजाताकन्यकासत्यवादिनी १६
बहुभुग्लोभसंपन्नामद्यमांसरतासदा कन्यकाचान्यसंसक्ताजायतेमित्रदैवते १७
शस्त्रोपघातिनीचैवमहाकलहकारिणी कन्यकाचातितीक्ष्णाचजायतेचैंद्रदैवते १८
पापकर्माप्रचंडाचकुकार्यनिरतासदा कुलक्षयकरीकन्याजायतेमूलभेचया १९
धर्मशीलाविनीताचकन्यकासत्यवादिनी पुण्यकर्मरताचैवजायतेजलदैवते २०
सतांप्रियवचाचैवनित्यमतिथिसेविनी कन्यकाजायतेयातुवैश्वदेवेसुतान्विता २१
विनीताश्रद्धधानाचकथालापप्रियासतीकन्यकास्वकुलेपून्याजायतेविष्णुदैवते २२
अर्थार्थिनीचलुब्धाचपुष्पमाल्यांबरप्रिया कन्यकाअन्यसक्ताचजायतेवसुदैवते २३
पापकर्मप्रचंडाचनित्यमुद्वेगकारिणी परोपकारिणीकन्याजातावरुणदैवते २४पा
पकर्मरतानित्यकन्यकासर्वभक्षिणी मायाविनीदेवभक्ताजायतेजैकपादभे २५ सु
बुद्धिधर्मसक्ताचगुणशीलसमन्विता अहिर्बुध्न्यदैवतेतुकन्यकाजायतेहिया २६
मातापिताश्वश्रूणांचदेवब्राह्मणसेविनी अनुकूलाहिकन्याथजायतेपौष्णदैवते २७

द्धा कर्के युक्त होतीहै और कथा लापमें प्रीतिवाली और पतिव्रता और अपनेकुलमें पूज्या होतीहै २२ और यो कन्या धनिष्ठानक्षत्रमे जन्मतीहै सो धनकीइच्छाकरणेवाली और लोभकर्केयुक्त होतीहै और पुष्पमालाकी प्यारी होतीहै और अन्यपुरुषमें सक्तहोतीहै २३ और यो कन्या शतभिषानक्षत्रमे जन्मतीहै सो पापकर्ममें प्रचडाहोतीहै और नित्य उद्वेग करणेवाली होतीहै और परोपकार करणेवालीहोतीहै २४ और यो कन्या पूर्वाभाद्रपदामें जन्मतीहै सो नित्यपापकर्ममें रत होतीहै और सर्वभक्षणीहोतीहै और मायाकेजाननेवाली और देवताकीभक्तीवालीहोतीहै २५ औरयोकन्या उत्तराभद्रपदामें जन्मतीहै सो श्रेष्टबुद्धिवालीऔर धर्मबुद्धिवाली और गुणोंकर्के और श्रेष्टस्वभावकर्के युक्त होतीहै २६ औरयो कन्या रेवतीमें जन्मतीहै सो माता पिता और सस्रूकी सेवाकरणेवाली और देवता ब्राह्मणकीसेवाकरणेवाली होतीहै और स्वामीके अनुकूल होतीहै २७

अबचद्रमाकी राशिकाफल कहतेहैं वृहज्जातकमें जिसकन्याके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा स्थितहोवे सो प्रगल्भाहोतीहै और कृत्यमें तत्परहोतीहै और प्रधानहोतीहै और पुत्रोंकर्के युक्त और सत्ययुत होतीहै और श्रेष्ठरूपवाली और स्वामीकी प्यारी होतीहै १ ओर जिस कन्याके जन्मकालमें वृषराशिका चद्रमा होवे सो श्रेष्टवेशवाली और वहुत शास्त्रमें चतुर और पतिव्रता और धनकर्के और विवेककर्के युक्त होतीहै और कामकलामें चतुर होतीहै ॥ २ और जिस कन्याके जन्मकालमें मिथुनराशिमें चद्रमास्थित होवे सो कन्या विशेषकर्के नम्र होतीहै और सुंदररूपवाली औरदेखनेमें प्रीतिके उत्पन्न करणे वाली और अनेक प्रकारोंके धनोंवाली और अनेक प्रकारके मानवाली होतीहै और विशेषकर्के चतुर और परोपकारमें रत और श्रेष्ट नामवाली होतीहै ३ और जिस कन्याके जन्मकालमें कर्कटराशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो लोकोंमें ५

अथचंद्रराशिफलंवृहज्जातके ॥ चंद्रेअजस्थेवनिताप्रगल्भाजाताचवैकृत्यपराप्रधानापुत्रान्वितासत्यपराकुलेष्टासुरूपगात्रापतिवल्लभाच १ ॥ वृषस्थितेरोहिणिवल्लभेचविनीतवेषावहुशास्त्रदक्षा पतिव्रतावित्तविवेकयुक्तानारीभवेत्कामकलाविदग्धा २ युग्मस्थितेशीतकरेविनीताभवेत्सुरूपाप्रियदर्शनाच नानार्थमानै सहिताविदग्धापरोपकाराऽतिरतासुनाम्ना ३ कर्कस्थितेशीतकरेसुजातानारीभवेद्वित्तयुताचलोके समानिनीवांधवलोकमान्याहतारिपक्षाद्विजदेवभक्ता ४ सिंहस्थितेचंद्रमसिप्रधानानारीभवेच्छौर्यसमन्विता च प्रियामिषाकृत्यपरासुवस्त्राउदारचेष्टासुभगाचपुंसाम् ५ कन्याश्रितेशीतकरेचजातानारीभवेद्वित्तचतुष्पदाढ्या जात्याहितास्त्रीहितवंधुवर्गेपतिव्रतापुत्रवतीमनोज्ञा ६ तुलाधरस्थेधृतधर्मयोगाजाताभवेत्स्त्रीहितवंधुवर्गे ॥ पतिव्रतापुत्रवतीमनोज्ञाविवर्जिताक्रोधमनोभवाभ्याम् ७ ॥

नकर्के युक्त होतीहै और वडेमान वाली और वांधवोंकर्के और लोकोंकर्के मानकोंप्राप्तहोतीहै और शत्रुयोंसे रहित और देवता ब्राह्मणोंमें भक्तिवाली होतीहै ४ और जिसकन्याके जन्मकालमें सिंह राशिमें चद्रमा स्थित होवे सो प्रधान और ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै और मासमें प्रीति वाली और कृ त्यमें तत्पर और श्रेष्ट वस्त्रोंवाली और उदार स्वरूपवाली और पुरुषोंको श्रेष्टभाग्योंके वधावनेवाली होतीहै ५ और जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या राशिमें चद्रमा स्थित होवे सो स्त्री धन और पशु और चतुष्पदोंकर्के युक्त होतीहै और जातीकर्के हितकरणेवाली और वंधुवर्गके हतकरणवाली और पतिव्रता और पुत्रोंवाली और स्वामीके मनकोंजानने वाली होतीहै ६ और जिसकन्याके जन्मकालमें तुला राशिमे चद्रमा स्थित होवे सो धर्मके धारणेवाली और वंधुवर्गमें हितके करण वाली और पुत्रोंवाली और पतिव्रता और स्वामीके मनको जाननेवाली और काम क्रोधसेहीनहोतीहै ७

और जिस कन्याके जन्मकालमें वृश्चिक राशिमें चंद्रमा होवे सो गुप्तवेशधारणे वाली और चंचल स्वभाव वाली और लिपायमान चेष्टा वाली होतीहै और वडयोंके हितको करणे वाली और नियमों करके युक्त और वहुत केशों वाली और शत्रु पक्षके जीतने वालीहोतीहै ८ और जिस कन्याके जन्मकालमें धन राशिमें चंद्रमा होवे सो दयाकरके युक्त और धन वती और श्रेष्ठ नासिका वाली होतीहै और गीतको प्रीतिवाली और प्राणोंके हितवाली और सुंदर मुखवाली और कन्याके जन्म नेवाली और विशेषकरके नम्र होतीहै ९ और मकरराशिमें चंद्रमा होवे तव विकरालदंतोंवाली और ऐश्वर्यकरके युक्त और मनके जानने वाली और विद्याके जानने वाली और सत्यवोलनेवाली और वडे भंडार वाली और अभिमानसें रहित होतीहै १० और कुंभराशिमें चंद्रमा होवे तव चंद्रमाकी न्याई मुखवाली और सर्वदा श्रेष्ठ स्वभाव वाली और पुत्र और धनकरके युक्त और शुभ

चंद्रेलिसंस्थेबहुगुप्तवेषाचलस्वभावासुविलिप्तचेष्टा हितागुरूणांनियमैःसमेताप्रभूतकेशाविजितारिपक्षा ८ धनुर्धरस्थेशशिनिकृपाढ्यानारीभवेद्वित्तपरासुनासा गीतप्रियाप्राणहितानुकूलाप्रियाननास्त्रीजननीविनीता ॥ ९ चंद्रमृगस्थेविकरालदंष्ट्रानारीभवेच्छौर्यपरामनोज्ञा विद्याधिकासत्यपरानुरक्ताप्रभूतकोशाविगताभिमाना १० घटस्थितेशीतकरेसुजातानारीभवेच्चंद्रसमानवक्त्रा ॥ सदासुशीलासुतवित्तयुक्ताशुभानुरक्ताप्रथितानुकारी ११ मीनाश्रितेशीतकरेसुजातानारीभवेद्धर्मपरासुशीला जितेंद्रियासर्वकलासुदक्षाबलाभिरामापरमाधनाढ्या १२

अथलग्नफलानि ॥ मेषोदयेशुद्धपरानृशंसानारीभवेत्क्रोधपरासदैव ॥ श्लेष्माधिकानिष्ठुरवाक्युक्तासमाविरक्तानिजबंधुवर्गे १ वृषोदयेसत्यरतामनोज्ञाविनीतचेष्टापतिवल्लभाच नारीभवेत्सर्वकलासुदक्षास्ववर्गरक्ताद्विजदेवभक्ता २

कर्ममें रत और समयमें यथोक्त करणे वाली होतीहै ११ और मीनराशिमें चद्रमा स्थित होवे तव धर्मवती और श्रेष्ठ स्वभाववाली और इंद्रियोंके जीतने वाली और संपूर्णकलामें चतुर और बलकरके युक्त और वडेपनकरके युक्त होतीहै १२

अव लग्नोंका फल कहतेहैं यो कन्यामेष लग्नमें जन्मतीहै सो शुद्धचित्तवाली होतीहै और निठुर और सर्वदा काल क्रोध युक्त होतीहै और श्लेष्म प्रकृति वाली और निष्ठुर वाक्य करके युक्त और अपनेबंधुवर्गमें सम और विरक्त रहितीहै १ और यो कन्या वृषलग्नमें जन्मतीहै सो सत्य वोलने वाली और मनके जानने वाली और नम्र चेष्टा वाली और स्वामीकी प्यारी होतीहै और संपूर्ण कलामें चतुर होतीहै और अपने वर्गमें रत होतीहै और गुरु देवताकी भक्ति वाली होतीहै २

और यो कन्या मिथुन लग्नमें जन्मतीहै सो अत्यंत कठोर होतीहै और कामसेंरहित और गुणोंक के रहित होतीहै और सर्वदा काल निठुर होतीहै और कफवायु प्रकृति वाली और बहुत खर्च करणे वाली और क्रूर रूप वाली होतीहै ३ और यो कन्या कर्क लग्नमें जन्मतीहै सो बहुत न म्रता कर्के युक्त और बधुयों कोप्यारी और श्रेष्ट स्वभाव कर्के युत और संतानकर्के युत और स पूर्ण सुखोंकर्के युक्त होतीहै ४ और यो कन्या सिंहलग्नमें जन्मतीहै सो अत्यंत क्रूर होतीहै और कफ प्रकृति वाली और लडाईको प्यारी और अनेक रोगोंकर्के युक्त देहवाली और परोपकारमें रत और श्रेष्ट वेश वाली होतीहै ५ और कन्यालग्नमें यो कन्या जन्मतीहै सो नम्रताकर्के युक्त और सौभाग्यके सुखोंकर्के युक्त और पतिव्रता होतीहै और अपने वर्गमें बहुत धर्मकर्के रत होती है और इंद्रियोंके जीतने वाली और संपूर्णकलोंमें चतुर होतीहै ६ और यो कन्या तुला लग्नमें जन्मतीहै सो चिरकाल वेशको धारणे वाली और श्रेष्ट आनंद वाली और प्रीतिकर्के रहित होती

तृतीयलग्नेतिकठोरवाक्यास्त्रीकाममुक्तागुणवर्जिताच ॥ सदानृशंसा कफवातयुक्तामहाव्ययाक्रूरविचेष्टिताच ३ लग्नेकुलीरेचभवेत्प्रसूतानारीप्रभूता विनयैःसमेता ॥ बंधुप्रियासाधुसुशीलयुक्ताप्रजान्वितासर्वसुखैःसमेता ४ सिंहस्यलग्नेवनितातितीक्ष्णाभवेत्कफाढ्याकलहप्रियाच ॥ नानामयैर्युक्त शरीरगात्रापरोपकारेनिरतासुवेषा ५ कन्योदयेस्त्रीविनयाभिनीतासौभाग्यसौ ख्यैःसहिताचसाध्वी ॥ भवेत्स्ववर्गेबहुधर्मरक्ताजितेंद्रियासर्वकलासुदक्षा ६ तुलाख्यलग्नेचिरकालवेषाभवेत्सुनंदाप्रणयेनहीना सगर्विताकांतिविवर्जिताच तृष्णाधिकात्यागविवर्जिताच ७ नारीभवेद्वृश्चिकलग्नजातासुरूपगात्रानयना भिरामा ॥ सुपुण्यशीलाचपतिव्रताचगुणाधिकासत्यरतासदैव ८ चापोद येयावनितासुजातासायुद्धसौढ्यापुरुषानुकारा ॥ शास्त्रेषुसाध्याविधवाकठोरा विस्नेहचित्ताप्रणयेनहीना ९ मृगोदयेस्त्रीसुभगासुसत्वातीर्थानुरक्ताहनशत्रु पक्षाप्रधानकृत्याप्रथितासुकेशागुणान्वितापुत्रवतीसुशीला १०

है और गर्वकर्के युक्त और शोभासेंहीन और अधिक तृष्णा वाली और त्यागसें रहित होतीहै ७ और यो कन्या वृश्चिक लग्नमें जन्मतीहै सो श्रेष्ट रूप वाली और नेत्रोंमें चंद्रमाकी न्याईं आनंद के देने वाली और श्रेष्ट पुण्यमें स्वभाव वाली और पतिव्रता और बडेगुणों वाली और सत्यमें सर्वदा काल रत होतीहै ८ और यो कन्या धन लग्नमें जन्मतीहै सो युद्धकरणेमें प्रधान होतीहै और पुरुषाकार होतीहै और शास्त्रोंमें साध्या होतीहै और विधवा होतीहै और कठोर होतीहै औ र स्नेहसें विना चित्तवाली होतीहै और प्रीतिसें रहित होतीहै ९ और यो कन्या मकरलग्नमें जन्म तीहै सो श्रेष्ट भाग्योंवाली और सत्ववाली और तीर्थोंमेंरक्त और शत्रुपक्षको हत करणे वाली और कृत्यमें प्रधानऔर प्रसिद्ध और श्रेष्ट केशोंवाली और गुणकर्के युक्त और पुत्रोंवाली और श्रेष्ट स्वभाववालीहोतीहै १०

श्रोर यो कन्या कुंभलग्नमें जन्मतीहे सो स्वामीकी प्यारी श्रोर बंधुयोंमे श्रोर लोकोंमे मानवाली होतीहै श्रोर कन्या जन्मनेंमे चतुर होतीहै श्रोर खेदकर्क युक्त होतीहै श्रोर गुणोंसें विरोध करण वाली होतीहे ११ श्रोर यो मीनलग्नमें जन्मतीहे सो स्वामीकी प्यारी श्रोर बाधवों कर्कें श्रोर लोकोंकर्कें मानवाली होतीहे श्रोर श्रेष्ठ नेत्र श्रोर केशा वाली होतीहै श्रोर देवता श्रोर ब्राह्मण की भक्ति वाली होतीहै श्रोर विद्याकी इच्छावाली श्रोर गुरोंकी श्राजीविका बनायदेने वाली होतीहै १२ श्रब सूर्यादि ग्रहोके भावफल कहतेहें जिस कन्याके जन्मलग्नमें सूर्य स्थित होवें सो स्त्री क्रोधकर्के युक्त श्रोर लज्जासें रहित श्रोर प्रचड देहवाली होतीहै श्रोर व्याकुल नेत्रोंवाली श्रोर थोडे केशों वाली श्रोर कृत्यमें श्रालस्यवाली श्रोर मानवाली श्रोर कठोर होतीहै १ श्रोर कर्कटराशिमें सूर्य होवे तब बुद्बुद नेत्रा श्रोर मेषमें सूर्यहोवें तब तिमर कर्कें युक्त दृष्टि वाली श्रोर ध

कुंभस्यलग्नेप्रमदाभिजातापतिप्रियाबांधवलोकमान्या स्त्रीजन्मदक्षाक्षितिमार्दि ताचनित्यगुणानांसविरुद्धचेष्टा ११ मीनोदयेयाप्रमदाभिजातापतिप्रियाबां धवलोकमान्या सुनेत्रकेशासुरविप्रभक्ताविद्यार्थिताद्वृत्तिकरागुरूणाम् ॥ १२ अथसूर्यादीनांभावफलानि लग्नस्थेर्केनारीसक्रोधानिर्घृणाप्रचडतनु विकले क्षणाल्पकेशाक्रियालसामानिनीपरुषा १ शशिभेबुद्बुदनेत्राक्रयेसतिमिरेक्षणा सधना सिंहेनिशांधयुक्ताधनरहितानीचगेचांधा २ धनगेसुवक्ररोगाभूरि धनानृपतिमुषितार्था द्विपदचतुष्पदभागीप्रनष्टविभवान्वितासूर्ये ३ सहज स्थेदिवसकरेसहजविरहितामुदान्वितासुभगा स्वकुलप्रधानभूतासत्कांतसु खान्वितासधना ४ गृहधनसौख्यविहीनावाहनबंधूज्झितासशोकार्त्ता दिनकृद्वेश्मोपगत प्रवासशीलासपीडाच ५

नवती होतीहै श्रोर सिंह राशिमें सूर्य होवे तब रात्र्यध दोषनहूतेवाली श्रोर तुला राशिमें सूर्य होवे तब धनरहित श्रोर श्रधी होतीहै २ श्रोर जिसकन्याके जन्मलग्नसें दूसरे स्थानमें सूर्य स्थित होवे सो मुख रोग वाली श्रोर बडे धन वाली श्रोर राजाकर्कें हराजाताहै धनतिस्का श्रोर मनुष्य श्रोर पशुयोंकर्कें युक्त होतीहै श्रोर ऐश्वर्यके नाशको प्राप्त होतीहै ३ श्रोर जिसस्त्रीके जन्मलग्न से तीसरे भावमें सूर्य स्थित होवे सो भ्राताकर्के रहित होतीहे श्रोर श्रानंद कर्के युक्त श्रेष्ठ भाग्य वाली होतीहै श्रोर श्रपनें कुलमें प्रधान होतीहै श्रोर श्रेष्ठ स्वामीके सुख कर्कें युक्त होतीहै ४ श्रोर जिसस्त्रीके जन्म लग्नमें चतुर्थस्थानमें सूर्य होवे सो घर श्रोर धन श्रोर सुख कर्कें रहित होतीहै श्रोर वाहन श्रोर बधुयोंसें रहित होतीहै श्रोर शोककर्कें पीडित होतीहे श्रोर विदेशमे भ्रमणे वाली श्रोर पीडाकर्कें युक्त होतीहै ५

और जिसकन्याकोपचमभावमेंसूर्यस्थितहोवेसोवुद्धहीनऔर लज्जासें रहित होतीहैऔर परघरके सेवने वाली औरधनकर्के रहित और बुद्धिकर्केऔर शोक कर्के पीडित होतीहै ६और जिस कन्याकोंछठे स्थानमे सूर्य होवे सोनित्यं प्रति धनऔरवाहन और सुखकर्केयुक्त होतीहैऔरकुलमे पूज्या और स्वामीके मानवालीऔर बहुतशत्रुयोंकर्के युक्त और प्रसिद्धा होतीहै ॥ ७ और जिसकन्याका सप्तमस्थानमें सूर्य होवे सो धनकर्के युक्त और विदेशकी इच्छा वाली होतीहै और मस्ती कर्के युक्त और दीनता और गुह्य रोगकर्के पीडित और स्वामीसें द्वेषवाली होतीहै ८ और जिसकन्याका अष्टम स्थानमें सूर्य स्थित होताहै सो रोगकर्के पीडित और क्रूर होतीहै और व्याकुलनेत्रोंवाली और वंध्या और पुत्र धनसें हीन और दुर्बला होतीहै ॥ ९ ॥
और जिस स्त्रीको नवम स्थानमें सूर्य स्थित होवे सो देवता और ब्राह्मण और स्वामीकी भक्ता होती है और धन और धर्म और पुत्रोंकर्के युक्त और आनंदको प्राप्त होतीहै और श्रेष्ठभाग्योंवाली और

पंचमगेदिवसकरेसुवुद्धिविवर्जितार्थानिर्लज्जा नारीपरगृहसेविनीधनरहितावुद्धिशोकार्त्ता ६ षष्ठगदिवसनाथेधनवाहनसौख्यसंयुतानित्यं कुलपूज्या पतिभक्तावहुरिपुयुक्तायमानिनीख्याता ॥ ७ ॥ सूर्येसप्तमसंस्थे धनसंयुक्ताप्रवासशीलाच उन्मत्तदेहानारीदैन्यभगार्तापतिद्विष्टा ८ निधनस्थेदिवसकरेनारीरोगार्त्तिपीडिताक्रूरा विकलेक्षणाचवंध्यासुतधनहीनाचदुर्वला चैव९देवद्विजपतिभक्ताधनधर्मसुतान्विताप्रमुदिताच धर्मस्थेर्केनारीसुभगासत्कर्मयुक्ताच १० सन्मानधनसमृद्धासुखवाहनसंयुतासूर्ये सिद्धारंभात्यागिनी वहुविभवामुदान्वितादशमे ११ सूर्येलाभोपगतेधनसंचयनीमुदान्वितासुभगा वाहनवसुविभूषणसयुक्तागंधमाल्यरुचि १२ विकलेक्षणाचवंध्यानारीरोगान्विताविधवा॥ द्वादशसंस्थेसूर्येपितृधनाद्विनाशसद्व्ययिनी १३ इतिरवे.॥ अथचंद्रस्य ॥ अजवृषकर्किणिलग्नेशीतकरेमानिनीसुरूपाच ॥ सुभगासु

श्रेष्ट कर्मोमें युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीको दशमस्थानमें सूर्य स्थित होवे सो श्रेष्ठमान और धनकी समृद्धि वाली और सुख और वाहनों कर्के युक्त होतीहै और सिद्धारंभ वाली और त्यागकर ने वाली और बडेऐश्वर्य कर्के आनंदको प्राप्त होतीहै ११ और जिस स्त्रीको एकादश स्थानमें सूर्य स्थित होताहै सो धनसंचय करणे वाली और आनंदकर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्योंवाली होतीहै और वाहनऔरधनऔरभूषणोंकर्केयुक्तहोतीहैऔरसुगंधिमेंऔर पुष्पोंमें रुचिवालीहोतीहै १२ और जिसस्त्रीको द्वादश स्थानमें सूर्यस्थित होताहै सो व्याकुल नेत्रोंवाली और वंध्या और रोग कर्के युक्त और विधवा होतीहै और पितासे धनका नाश करणे वाली और खोटे कर्ममे धनखर्च करणे वाली होतीहै १३ इतिरवे अब चंद्रमाका भावफल कहतेहैं ॥ जिस कन्याके जन्मलग्नमें मेष वृष कर्कराशिमेंचंद्रमास्थितहोवेसोमानवालीऔरसुंदररूपवाली होतीहै

और श्रेष्ट भाग्योंवाली और सुखवाली और चतुर और आनंद कर्के युक्त होतीहै और धनवाली होतीहै १ और शेष राशियोंमें लग्नगत चंद्रमा होवे तब उन्मादिनी औरवोली और व्याकुल नेत्रोंवाली और कुरूपा और क्षीणचंद्रमाहोवे तब व्याधिकर्के पीडित औरजडा होतीहै २ और जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें दूसरे भावमें चंद्रमा स्थित होवे सो वडे सुख कर्के युक्तहोतीहै और धन वस्त्र विभूपणों कर्के युक्त होतीहै और पूर्णचंद्रमा होवे तव सुंदर देहवाली होतीहै और क्षीणचंद्रमा होवे तव सुखसें रहित और सत्कर्ममें खर्चकरणे वाली होतीहैं ३ और जिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें चंद्रमा होवे सो धर्मवाली औरधनसंचयकरणेवालीऔर आनंद कर्के युक्त श्रेष्ट भाग्योंवाली होतीहै और भाईयोंकर्के युक्त होतीहै ४ और जिसस्त्रीकों चतुर्थ भावमें चंद्रमा स्थित होवे सो वाहन और चाकर और धन और वंधुयोंके सुख कर्के युक्त होतीहै और अग्नि और सूर्य चंद्रमाकी न्याई प्रभा वाली और वहुत धान्यों कर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्यों वाली होतीहै ५ और जिसस्त्रीकों पंचम भावमें चंद्रमा होताहै सो धनवाली और वहुत मनुष्यों वाली और सुख कर्के युक्त

खिनीनिपुणादाक्षिण्यमुदान्वितासधना १ शेषेपुभेपुचंद्रेह्युन्मादिनीनीचव धिराच ॥ विकलेक्षणाविरूपाकृष्णेव्याध्यर्दिताजडानारी २ अतुलितसुखसंयुक्ताधनवसुविभूपिताविधोधनगे ॥ संपूर्णेसुशरीरासुखरहितासद्व्ययान्विता कृष्णे ३ धर्मत्यागोन्मुक्ताधनसंचयिनीमुदान्वितासुभगा ॥ दुश्चिक्येशीतकरे सहजैश्चसमन्वितानारी ४ हिवुकस्थेशीतकरेवाहनभृत्यार्थबंधुसौख्याढ्या अनलार्केन्दुप्रख्यावहुधान्यसमन्वितासुभगा ५ चंद्रेपंचमसंस्थेधनिनीसौख्यान्विताजनसमृद्धा ॥ पतितत्पराव्ययाक्तासन्मित्रयुतासुधीनिपुणा ६ संयुक्ता विगतारिपुस्तीक्ष्णाषष्ठेनिशानाथे सत्ययुक्तासुदेहासक्रोधात्यागशीलगुणयुक्ता ७ ईर्ष्यान्वितासुदेहाशीतकरेद्यूनगेसुभगा सत्पुत्रैःसंयुक्ताह्यतिलावण्यानंदयुक्ताच ८ निधनस्थेरजनिकरेरोगार्दिताचक्षीणाचसक्रोधा व्याधिविवंधनपीडाक्षपितनुरत्यंतदुःखाढ्या ९ नित्यव्रतसंयुक्तासुरपितृदेवद्विजार्चनेपुरता धर्मगते शीतांशौसुधर्मशीलाचसौख्यसंयुक्ता १० कर्मस्थेतुहिनकरेसद्धर्मयुतासुखसु·

होतीहै और स्वामीकी सेवामें तत्पर और व्यय कर्के युक्त और श्रेष्ट मित्रों कर्के युक्त और चतुर होतीहै ६ और जिसस्त्रीकों छठे स्थानमें चंद्रमा होताहैसोशत्रुयों कर्केयुक्तहोतीहै और क्रूर स्वभाववाली और सत्यकर्के युक्त और सुंदर देहवाली और क्रोध युक्त त्यागशीली और गुणों कर्के युक्त होतीहै ७ और जिसस्त्रीकों सप्तमभावमें चंद्रमा होताहै सो ईर्ष्याकर्के युक्त और सुंदर देहवाली और श्रेष्ट भाग्यों वाली और श्रेष्ट पुत्रोंकर्के युक्त औरअत्यंतशोभावालीआनंदकर्के युक्तहोतीहै ८ और जिस कन्याकों अष्टम भावमें चंद्रमा स्थित होवे सो रोगकर्के पीडितऔरक्रूरस्वभाववालीऔर क्रोधकर्के युक्त होतीहै और व्याधियों कर्केऔर वंधनोंकर्के पीडित देहवाली और अत्यंत दुखःकर्के युक्त होतीहै ९ और जिसस्त्रीकों नवमभावमें चंद्रमाहोवे सो नित्यव्रतकर्केयुक्त और देवता और पितर और ब्राह्मणोंके पूजनमें रत होतीहै और अपने धर्मकर्के और श्रेष्टस्वभावकर्के और सुखकर्के युक्तहोतीहै १० और जिसस्त्रीकों दशम भावमें चंद्रमास्थितहोवे सोश्रेष्ठधर्मकर्के युक्त

और सुखकर्के युक्त और श्रेष्ठस्वभाववालीहोतीहै और सिद्धारंभा और धन और जनोंकी समृद्धिकर्के युक्त होतीहै ११ और जिस स्त्रीकों एकादश भावमें चंद्रमा स्थित होताहै सो धन और रत्न और पुत्र और वस्त्र और श्रेष्ट चाकरोंकर्के युक्त होतीहै और शुक्ल पक्षमें बहुत सुखकर्केयुक्त और स्वामीकी प्यारी होतीहै १२ और जिसस्त्रीकों द्वादश स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे सो सुख और ऐश्वर्य कर्के रहित और हीनांगी और छोटेदेहवाली और मलीना होतीहै और नेत्ररोगवाली और आलस्यकर्के युक्त होतीहै १३ इतिचंद्रफलम् अब मंगलका भाव फल कहतेहैं जिस स्त्री के जन्मलग्नमें मंगल स्थित होवे सो शिर पीडा कर्के युक्त और क्षीणदेह वाली और हठकर्केयुक्त होतीहै और गुणोंकर्के रहित और दुःखकर्के पीडित और पापशीला दुराचारिणीहोतीहै और जिसस्त्रीकों दूसरेभावमेंमंगल स्थितहोवे सो दुःखकर्के पीडित और वंध्या और मुखविकार कर्के युक्त और रोग कर्के पीडित होतीहै और माडे अन्नके भोजन करणे वालीऔर धन रहित और पुत्रकर्के रहित होतीहै २ और जिसस्त्रीकों तृतीयस्थानमें मंगलास्थित होवे तब सो भ्रातासें रहित औ

शीला सिद्धारंभानारीधनजनसुसमृद्धिसंयुक्ता ११ चंद्रेलाभोपगतेधनरत्नसुतांवरसुभृत्याढ्या बहुलेबहुसुखयुक्तापत्युरत्यंतवल्लभानारी १२ सुखविभवसौख्यरहिताहीनांगीक्षुद्रदेहमलिनाच द्वादशगेशीतकरेलोचनरोगालसानारी १३ अथभौमस्य लग्नसंस्थेकुजेशिरोर्त्ताक्षपिततनुःसाहससंयुक्ता गुणहीनादुःखार्त्तासपापशीलादुराचारा १ धनहीनादुखार्त्तावंध्यास्त्रीविकृतवदनरोगार्त्ता भौमेद्वितीयसंस्थेकदन्नभुक्ताविवसुर्विसुता २ दुश्चिक्येभूमिसुतेसहजविरहितामुदान्वितानारी धनवतीह्यतिरूपागुणसंयुक्तासदानंदा ३ बंधुविहीनानारीविगतसुखवाहनार्थगुणरहिता हिबुकस्थेक्षितितनयेदुःखार्त्ताशोकसंयुक्ता ४ सौख्यार्थतनयरहिताचलमतियुक्तासुखोज्झितावंध्या भूमिसुतेपंचमगेविसुताशोकैःसमन्वितानारी ५ षष्ठस्थेभूमिसुतेनारीधनसौख्यमूलसंपन्ना बहुरिपुयुक्ताशुभगाकलत्रधानासर्वगुणसहिता ६ सप्तमगेभूपुत्रेऽस्यधनावंध्याचदुःखशोकार्तापरगृहव्यसनशीलापापाचारासतीकुलटा ७

आनंदकर्के युक्त होतीहै औरधनवाली औरअत्यंतरूपवालीऔर गुण कर्के युक्त और सर्वदाकाल आनंदकर्के युक्त होती है ३ और जिस स्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित होवे सो स्त्री बंधुओंकर्के हीन और सुख और वाहन और धन और गुणकर्के रहित होतीहै और दुःखकर्कपीडित और शोक कर्के युक्त होतीहै ४ और जिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें मंगल होवे सो सुख धन पुत्रसे रहित औरचंचल स्वभाव वाली और चंचल बुद्धि वाली होतीहै और सुखसें रहित और वंध्या होतीहै और शोकोंकर्के युक्त होतीहै ५ और जिस स्त्रीकों छठे स्थानमें मंगल स्थित होवे सो धन और सुख कर्के युक्त होतीहै और बहुत शत्रुओं कर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्यों वाली और कुलमें प्रधान और संपूर्ण गुणोंकर्के युक्त होतीहै ६ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें मंगल होवे सो धनरहित और वंध्या और दुःख शोककर्के पीडित परघरमें जाने वाली और पापाचारमें युक्त और खोटे स्वभाव वाली और व्यभिचारिणी होतीहै ७

औरजिसस्त्रीकों अष्टमस्थानमें मंगलस्थितहोवे सो निरंतर रोगकर्कैपीडित और क्षीणदेहवाली होतीहै और विधवा और शोककर्कै युक्त होतीहै और पुत्र और धन कर्कै रहित होतीहै ८ और जिसस्त्रीकों नवम स्थानमें मंगल स्थितहोताहै सो धर्मसे रहित और अत्यत दुःखी और व्यभि चारिणी होतीहै और द्वेषकरणेवाली और नहि श्रेष्ठ फलकरणेवाली और पापचारिणी और खोटे स्वभाववाली होतीहै ९ और जिस स्त्रीको दशमस्थानमें मगल स्थितहोताहै सो खोटे कर्ममें स्वभाववाली और अत्यंत दुखको प्राप्त होतीहै और रुत्यके योग्य नहि होतीहै और खोटे स्वभाववाली और गुणर्कै मान वाली और थोडे पुत्रों वाली होतीहै १० और जिसस्त्रीको एकादश स्थानमें मगल स्थितहोताहै सो पुत्र और मनुष्य और धन वाली और सर्वदाकाल आचारमें स्थित होतीहै और धन अन्न वस्त्रोंकी समृद्धि कर्कै युक्त होतीहै और श्रेष्ठभाग्यो वाली और श्रेष्ठ स्वभाववाली होतीहै ११ और जिसस्त्रीको द्वादश स्थानमें मगल होवे सो नेत्ररोगकर्कै दुखित और सदाक्षीणदेहवाली और खोटे व्यसन वाली और वंध्या और खोटे वेशर्कै युक्त और माडे अन्नको भोजनकरणे वाली होतीहै १२ अववुधकाभावफलकहतेहै जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें वुध स्थित होवे सो सौभाग्य और सुख कर्कै युक्त होतीहै और अनेककलामेचतुर होतीहै और मीठावोलने वाली और मानवाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै १ और जिस स्त्रीको दूसरे स्थानमें वुध स्थित होवे सोवडे ऐश्वर्य कर्कै और श्रेष्ठ सुखकर्कै युत होतीहै और स्वामीकी भक्त और पतिव्रता और धनर्कै युक्त होतीहै और श्रेष्ठ वस्त्र भूषणादियों कर्कै युक्त होतीहै २ और जिस स्त्रीकोतीसरे स्थानमें वुध स्थित होवे सो दयाऔर रूप और गुणकर्कै युक्त होतीहै और श्रम करणेमें रत होतीहै और स्वामीमेंप्रीतिवाली और भाइयों कर्कै युत होतीहै ३ और जिस स्त्रीकों चतुर्थ भावमें वुध स्थित होवे सो चाकर और चतुष्पदों कर्कै युत घरकेसुखकोंप्राप्तहोतीहै और श्रेष्ठभाग्यों वाली होतीहै और वहुतमित्रोंवाली और त्यागकर्कै युक्तहोतीहै ४

अष्टमोपगतेभौमेशाश्वतरोगार्दिताक्षपितदेहा ॥ विधवाचशोकतप्तासुतधनहीनार्थहीनाच ८ भौमेचनवमसंस्थेधर्मनिराकृतातिदुःखिताकुलटा ॥ विद्वेषिणीह्यकुशलापापाचाराविशीलाच ९ कर्मगतेभूपुत्रेकुकर्मशीलातिदुःखिता नारी ॥ कर्मोज्झिताऽसाध्वीगुणमानिन्यल्पपुत्रसहिताच १०. क्षितितनयलाभगतेसुतजनधनभागिनीसदाचारा धनधान्यवसुसमृद्ध्यायुक्तासुभगासुशीला च ११ द्वादशगेभूमिसुतेनयनरुगार्तासदाक्षपितदेहा कुव्यसनशीलावंध्या कुवेशयुक्ताकदन्नाशी १२ अथवुधफ० शशितनयेलग्नस्थेनारीसौभाग्यसौख्यशीलाढ्या नानाकलाविदग्धाप्रियवदामानिनीसुभगा १ वहुविभवसौख्ययुक्तासुभक्तासतीधनाढ्याच शशिजेद्वितीयसंस्थेसद्वस्त्रविभूषणादियुता २ दुश्चिक्येसोमसुतेनारीकारुण्यरूपगुणयुक्ता श्रमनिरतापतिरक्तासहजैश्चसमन्वितासैव ३ भृत्यैश्चतुष्पदयुक्तागृहसौख्यसमन्वितासुभगा हिवुकस्थेशशितनयेवहुसुहृत्त्यागशीलाढ्या ४

औरजिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें बुध स्थित होवे सो बुद्धि कर्के युत और धनकी समृद्धि वाली होतीहै और मंत्रिणी और अभिचार कर्के धनकों प्राप्त और बडी श्रेष्ठ शोभाकर्के युक्त होतीहै ॥ ५ ॥ और जिस स्त्रीको छठे स्थानमें बुध स्थित होवे सो शत्रुयोंसे राहत और लडाई करणे वाली और क्रोधकर्के युक्त होतीहै और अत्यंत कठोरवाक्य कहने वाली और धनवाली और कार्यमें प्रमाद करणे वाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली होतीहै ६ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें बुध स्थित होवे सो साध्वी और रूपकर्के युक्त और श्रेष्ठ स्वभाव वाली और पतिव्रता और श्रेष्ठ भाग्यावालीऔर लावण्यता कर्केयुक्त और हास्यकर्केयुक्त और राजाकीप्यारी होतीहै ७ और जिस स्त्रीको अष्टम स्थानमें बुध होवे सो सौभाग्यवती और सुखकर्के और श्रेष्ठस्वभावकर्के प्रसिद्धहोतीहैऔर बडीआयुषा वाली और श्रेष्ठ भाग्यो वाली होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों नवम

सुतगेबुद्धिसमेताशशितनयेधनसमृद्धास्यात् ॥ मंत्रिण्यभिचारार्थावहुकुशलाकांतियुक्ताच ॥ ५ ॥ षष्ठगतेशशितनयेविगतरिपुःकलहान्वितास कोपाच अतिनिष्ठुरवाक्यार्थाकृत्यप्रमदासुशीलाच ६ साध्वीसुरूपशीलासप्तमगेशशिसुतेसतीसुभगा लावण्यहास्ययुक्ताअवनीपतिवल्लभानारी ॥ ७ ॥ सौभाग्यसुखसुशीलाविख्यातधनान्विताकुलेष्टाच अष्टमगेशशितनयेनारीदीर्घायुषीसुभगा ८ सद्धर्मधनसमृद्धावहुभाग्ययुतासुशीलाढ्या धर्मस्थेशशितनयेसुगुणासुभगाचसौख्ययुता ॥ ९ ॥ शशिजेकर्मोपगतेसकलारंभातिमानिनीसुभगा सत्कर्मवुद्धियुक्तावहुधर्मधनाचक्रोधसंयुक्ता १० सुतसौख्यधनसमृद्धावहुलावहुभूतिसंयुक्ता एकादशगेसौम्येवाहनहेमांवरादिसंयुक्ता ११ सद्व्ययिनीसत्चेष्टासाचारयुताप्रियंवदासुभगा द्वादशगेशशितनयेदेवपितृपूजनेनिरता १२ इतिवुधस्य

स्थानमें बुध स्थित होवे सो श्रेष्ठ धर्मकर्के और धनकर्के समृद्धिवाली होतीहै और वहुत भाग्योंकर्के युक्त और श्रेष्ठ स्वभावकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठगुणोंवाली और सुखकर्के युक्त होतीहै ॥ ९ ॥ और जिसस्त्रीके जन्मकालमें दशम स्थानमें बुध स्थित होवे सो संपूर्ण आरंभ कार्यके सिद्धकरणे वाली और वडेमानवाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और श्रेष्ठकर्म और वुद्धिकर्के युत होतीहै और वहुत धर्मवाली और धनवाली और क्रोधकर्के युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें बुध स्थित होवे सो पुत्रके सुख कर्के और धनकी समृद्धिकर्के युक्त होतीहै और वडेऐश्वर्यकर्के युत होतीहै और वाहन और सुवर्ण वस्त्रादियोंकर्के युक्त होतीहै ११ औरजिसस्त्रीकोंद्वादशस्थानमेंवुधस्थितहोवेसोश्रेष्ठकर्ममेंखर्चकरणेवालीऔरसत्वगुणवालीऔरआचारयुक्त और मीठा बोलनें वाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और देवता और पितरोंके पूजनमेंरतहोतीहै १२ इतिवुधस्य ४

अब वृहस्पतिका भावफल कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें वृहस्पति स्थित होवे सो धन और वाहन और रूप और गुणकर्के युक्त होतीहै और अपने कुलमें अधिकार कर्के युक्त और आचारकर्के युक्त और मानवाली और श्रेष्ठभाग्योंवाली होतीहै १ और जिसस्त्रीकों दूसरे स्थानमें वृहस्पति होवे सो बहुत धनकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्योंवाली और शोभाकर्के युक्त और श्रेष्ठवाणी वाली और श्रेष्ठ वस्त्रों कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठत्याग वाली और सुंदर देहवा ली होतीहै २ औरजिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें वृहस्पति होवे सो कर्ममें अशीलतावाली और श्रेष्ठ मुख वाली और भाइयोंकर्के युक्त और सुंदर नेत्रों वाली होतीहै और श्रेष्ठ धर्ममें स्वभाव वाली होतीहै ३ और जिसस्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें वृहस्पति होवे सो धर्म और मित्र और ऐश्वर्य कर्के युक्त और धन वाहनादि सुखकर्के युक्त होतीहै और अपने बंधुयोंमें और कुलमें श्रेष्ठ होतीहै ४ और जि स स्त्रीकों पंचममेंवृहस्पति होवे सो पुत्र सुख बुद्धि धनकर्के समृद्धिवालीहोतीहैऔरश्रेष्ठबुद्धिवाली

अथगुरोः लग्नस्थेदेवगुरौधनवाहनरूपगुणयुक्ता स्वकुलेधिकारयुक्तासाचारा मानिनीसुभगा ॥ १ ॥ बहुधनसहितासुभगालावण्ययुतासुवाक्सुवस्त्राढ्या सत्यागिनीसुदेहाधनगेसुरपूजितेनारी ॥ २ ॥ कर्मण्यशीलयुक्तासुमुखा सहजान्वितासुनयनाच दुश्चिक्येसुरमंत्रिणिनारीसद्धर्मशीलात्र ३ धर्मसुहृद्वि भवयुताधनवाहनादिसौख्याढ्या हिवुकस्थेदेवेज्येस्वबंधुकुलपूजितानारी ४ त्रिदशगुरौपंचमगेसुतसुखमतिधनसमृद्धाच सद्बुद्धिरतिकुशलावहुविभवमुदान्विता नारी ५ रिपुभेगुरौहिनारीसत्यनिहंत्रीमुदान्वितासुभगा प्रख्यातधनस मृद्धावहुमित्रयुताप्रियंवदासैव ६ द्यूनेसुरपतिमंत्रिणिसुखधनसौभाग्यसपदु पेतास्वकुलेज्येष्ठानारीधनवस्त्रविभूषणाढ्याच ७ दीर्घायुर्पासुदेहासधनारोगे विवर्जिताजीवेऽष्टमगेभोगयुतासुवेषरूपामहासुभगा ८ धर्मेतिधर्मशीलावहु भाग्ययुतासुतान्विताजीवेदेवद्विजपितृभक्तापतितुल्याकीर्तिसत्याढ्या ॥ ९॥

और चतुर और बड़े ऐश्वर्यकर्के आनंदकों प्राप्त होतीहै ५ और जिसस्त्रीकों छठे स्थानमें वृहस्पति होवे सो सत्यके हत करणे वाली और आनंद कर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वालीहोतीहै और प्रसिद्ध धन वाली और बडी वुद्धि वाली और मीठा बोलने वाली होतीहै ॥ ६ ॥ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें वृहस्पति स्थित होवे सो सुख धन और सौभाग्य और संपदा कर्के युक्त होतीहै और अपने कुलमें प्रधान और वस्त्र भूषणोंकर्के युक्त होतीहै ७ और जिस स्त्रीकों अष्ट म स्थानमें वृहस्पति स्थित होवे सो बडी आयुषा वाली और श्रेष्ठ देह वाली और धनकर्के युक्त हो तीहै और श्रेष्ठवेश और रूप वाली और बडे श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों नव मभावमें वृहस्पति होवे सो धर्ममें बुद्धि वाली और धर्मस्वभाव वाली और बहुत भाग्यों कर्केयुक्त और पुत्रकर्के युक्त होतीहै और देवता और ब्राह्मण और पितरोंकी भक्ति वाली होतीहै और स्वा मीके तुल्य और यश और सत्य कर्के युक्त होतीहै ९

और जिस स्त्रीकों दशम स्थानमें वृहस्पति स्थित होताहै सो कुलमें पूज्य और त्यागकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और पतिव्रता और अपने कर्ममें रत और स्वामीकी सेवा करणे वाली और वहुत धने और पुत्रों कर्के युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीकों एकादशमें वृहस्पति होवे सो वहुत पुत्रों वाली और सुखकर्के युक्त और गुणकर्के युक्त होती है और स्वामीकी प्यारी और सुंदर और वडे धनवाली और दान करणे वाली होतीहै ११ और जिस स्त्रीकों द्वादश स्थानमें वृहस्पति स्थित होवे सोगुरुदेवता अभ्यागतके पूजनेमें रत होतीहै और श्रेष्ठ कर्ममें खर्च करणे वाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली और श्रेष्ठ धनकर्के युक्त और दुःखसें रहित होतीहै १२ इतिगुरोः अवशुक्रकाभावफलकहतेहै जिस स्त्रीके जन्मलग्नमें शुक्र स्थित होताहै सो श्रेष्ठ सुखवाली और सुंदर रूपवाली और श्रेष्ठ होतीहै और कर्णपर्यंत विशालनेत्रों वाली औरवडी आयुषा वाली और भाग्योंवाली होतीहै १ और जिस स्त्रीकों दूसरेस्थानमें शुक्रस्थितहोताहै सो

दशमस्थेदेवगुरौकुलपूज्यात्यागसंयुतासुभगा॥ साध्वीसुकर्मनिरतापतिभक्ता वहुधनसुताढ्याच ॥ १० ॥ वहुपुत्रिणीसुखाढ्याएकादशगेगुणान्वितार्जीवेपः तिवल्लभाचसौम्यामहाधनाथार्थत्यागपरा ॥ ११ द्वादशगेसुरमंत्रिणिगुरुदेवातिथिपूजनेभिरतासद्व्ययशीलासुभगासुधनाढ्यादुःखसंत्यक्ता १२ इतिगुरोः अथभृगोः लग्नस्थेभृगुतनयेनारीसुसुखासुरूपसत्कांता कर्णांतलोचनयुता दीर्घायुर्षाभाग्यसंयुक्ता १ शुक्रेद्वितीयोपगतेवहुविभवमुदान्वितासुवस्त्राढ्या प्रचुरान्नपानसक्ताविलासवस्त्रप्रियानारी २ सुखधनवस्त्रविहीनादुश्चिक्ये भृगुसुतेतिकृपणा आत्महितापरहंत्रीसौभाग्यपरिच्छदैस्त्यक्ता ३ वंधुसुहृत्सुखसहितासत्कांतियुतासितेहिवुके वाहनभृत्यसमेताकुलाधिकारिणीभवेद्धनाढ्याच ४ सुखसुतमित्रसमेतासुभगाचाराचगुणसमृद्धाच भृगुजेपंचमराशौ नृपमंत्रिणीमंत्रमुख्याच ५ दारिद्र्यशोकतप्ताशुक्रेरिपुगेक्षिपितविभवा वहुरिपुयुक्ताविसुखानारीसादुःखभागिनीज्ञेया ६

ऐश्वर्यकर्के और आनंदकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ वस्त्रों वाली और वहुत अन्नपानमें सक्तहोतीहै और विलासमें औरवस्त्रमें प्रीतिवाली होतीहै २ और जिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें शुक्रस्थितहोताहैसो सुख और धन और वस्त्रोंकर्केरहित होतीहै और अत्यंत कृपण होतीहै और अपने हितकों करणे वाली और दूसरेकों हत करणे वाली और सौभाग्यादियों कर्के रहित होतीहै ३ और जिस स्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें शुक्र स्थित होता है सो भाई और मित्रोंके सुखकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ शोभाकर्के युक्त होतीहै और वाहनोंकर्के और चाकरों कर्के युक्त होतीहै और कुलमें अधिकार वाली और धनकर्के युक्त होतीहै ४ और जिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सोसुख और पुत्र और मित्र कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ आचार वाली और गुणोंकी समृद्धि वाली और राजाकी वजीरणी औरमंत्रमें मुख्य होतीहै ५ और जिसे स्त्रीकों छठे स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सो दारिद्र्य और शोककर्के तप्त होतीहै और ऐश्वर्यसेंरहित होतीहै और वहुत शत्रुयोंकर्के युक्त और दुःखभागिनीहोतीहै ६

और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें शुक्र होताहै सो सौभाग्य करकें युक्त और श्रेष्ट स्वभाव वाली होतीहै और स्वामीकी प्यारी और सुंदर रूपवाली और श्रेष्ठ भाग्योंवाली और आनंदककें युक्त होतीहै ७ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सो सुख और भूषणोंकर्के युक्त होतीहै और बडी आयुषा वाली और राजाकी राणी और संतोषकों प्राप्त और अपने आचार वाली होतीहै ॥ ८ ॥ और जिस स्त्रीकों नवम स्थानमें शुक्र स्थित होवे सो श्रेष्ठ कर्ममें युक्त और ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै. और देवता और ब्राह्मण और पितरोंकी भक्ति वाली होतीहै और सुख करकें और धन करकें युक्त और श्रेष्ठ भाग्योंवाली होतीहै ९ और जिसस्त्रीकों दशम स्थानमें शुक्र स्थितहोवे सो सिद्धारंभ वाली और धनवाली और सौभाग्यके आनंदकर्के युक्त और सुंदररूप वाली और स्वामीको भूषणरूप और पतिव्रता होतीहै १० और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें शुक्रस्थित होवें सो चाकर और चतुष्पदोंकर्के युक्त और वडेऐश्वर्यकर्केयुक्त और शोकसें रहित और धन और वस्त्रओर पुत्रोंकर्के युक्त होतीहै ११ और जिस स्त्रीकों द्वादश स्थानमें शुक्र स्थितहोवे सो श्रेष्ट कर्ममें खर्च,

सप्तमसंस्थेशुक्रेसौभाग्ययुतासुशीलाढ्या भर्तृप्रियासुरूपासुभगासमुदान्वितानारी ७ शुक्रेनिधनोपगतसुखविभूषणयुतानारी दीर्घायुषीनृपस्त्रीलब्धपरितोषस्वाचारा ८ धर्मस्थेभृगुतनयेसत्कर्मयुताविभूतिसंयुक्ता देवद्विजपितृभक्तासौख्ययुताधनान्वितासुभगा ९ सिद्धारंभाधनिनीसौभाग्यमुदान्वितासुरूपाच पतिभूषणाचसाध्वीकर्मस्थेभृगुसुतेनारी १० भृत्यचतुष्पदयुक्ताबहुविभवसान्विताविगतशोका धनवस्त्रपुत्रसहितालाभगतेभृगुसुतेनारी ११ शुक्रेद्वादशसंस्थेसद्व्ययिनीविगतशोकाचनयनोपचारकुशलासधनानित्यप्रमुदिताच १२ इतिभृगोःअथशनेःप्राग्लग्नस्थेसौरे नारीदुःखान्विताविरूपाच दारिद्र्यशोकतप्तांबध्याविकलेक्षणादुराचारा १ ॥ गुरुभे ९ ॥ १२ ॥ स्वर्क्षे १० ॥ ११ ॥ स्वोच्चे ॥ ७ ॥ सौरेलग्नगतेधनसमृद्धा नृपपत्नीकुलपूज्यासुखभोगमुदान्वितासुभगा २ सौरेकुटुंबसंस्थेविकृतमुखानिर्धनासुलोभार्ता मदक्रियाप्रचंडापापाचारास्वजनरहिता ३ दुश्चिक्ये सूर्यसुतेसगुणासबलोज्झितापरित्यक्ता मलिनीनीरुजसंपत्सौभाग्याढ्याधनान्विताशुभगा ४ ॥

करणें वाली और शोकरहित और नेत्रोपचारमें श्रेष्ट होतीहै और धनकर्के युक्त और नित्य आनंदकों प्राप्त रहितीहै १२ ॥ इतिभृगोः ॥ अव शनिका भावफल कहतेहैं ॥ जिसस्त्रीकों जन्मलग्नमें शनि स्थित होताहै सो दुःखकर्के युक्त और माडेरूप वाली होतीहै और दरिद्र और शोककर्के ततहोतीहै और वंध्या और व्याकुल नत्रों वाली और दुराचारिणी होतीहै १ और धन और मीन राशिमें और मकर कुंभ राशिमें और तुला राशिमें स्थित शनि लग्नगत होवे तव धनकी समृद्धि वाली और राजाकी राणी और कुलमें पूज्या और सुख भागकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै २ और जिसस्त्रीको दूसरे स्थानमें शनि स्थित होवें सो मुखविकार वालीऔर धनरहित और लोभकर्के पीडित होतीहै और मस्ती कर्के युक्त और प्रचंड और पापचारणी और स्वजनों कर्के रहित होतीहै ३ और जिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें शनि होताहै सो गुणोंकर्के युक्तऔर वल कर्के युक्त और त्यागकों प्राप्त और मलीना और रोगकर्के रहित और सौभाग्य कर्के युक्त और धन युक्त और श्रेष्ट भाग्योंवाली होतीहै ॥ ४ ॥

और जिस स्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें शनि स्थित होवे सो हृदयके रोग वाली और सुखकके रहित और बंध्या और निरंतर विदेश वास करणे वाली और वाहनों कर्के रहित और बंधु और धन और बुद्धिकर्के रहित होतीहै ॥ ५ ॥ और जिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें शनि होवे सो सुख और पुत्र और धन कर्के रहित और बालकों वाली बुद्धी कर्के युक्त और विवेक सें रहित होतीहै और स्वामीकर्के रहित और दुःखकर्के सहितहोतीहै ॥ ६ ॥ और जिस स्त्रीकों छठे स्थानमें शनि स्थित होवे सो गुणों वाली और भूषणों कर्के युक्त होतीहै और बहुत शत्रुयों कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ भाग्योवाली और प्रसिद्ध और नित्य ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै ॥ ७ ॥ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमे शनि स्थित होताहै सो विधवा और माडे वेशवाली और विदेश भ्रमणे वाली और मलीन होतीहै और पुत्र और सुख और धनकर्के रहित और कन्याहि वृद्धा वस्थाकों प्राप्त होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें शनि स्थित होताहै सो

वेश्मोपगतेसौरेहृद्रोगार्तासुखोज्झितावंध्या शश्वत्प्रवासशीलानिर्वाहनावांधवा
र्थमतिरहिता ॥ ५ सुखसुतवित्तविहीनावालमतियुक्ताविवेकसंत्यक्ता ॥
सौरेपंचमभवनेपतिरहितदुःखितानारी ॥ ६ ॥ षष्ठेर्कजेचनारी
सगुणाधनवस्त्रभूषणाढ्याच ॥ बहुरिपुसहितासुभगाख्याताविभवान्वि
तानित्यं ॥ ७ ॥ द्यूनेर्कजेचविधवाकुवेशयुक्ताप्रवासिनीमलिना
॥ सुतसौख्यधनविहीनाकन्यैवजरांसमुपयाति ॥ ८ विधवाविकलेक्षणावा
दारिद्र्यशोकदुःखसंतप्ता ॥ अष्टमगेरवितनयेकुष्ठभगंदरार्त्तासुखोज्झितानारी
॥ ९ ॥ धनधर्मसुखविहीनावंधुविरहितामदप्रमदा धर्मस्थेरवितनयेपरोपता
पकराभाग्यरहिताच ॥ १० अतिधनवतीराज्ञीप्राज्ञामंत्रवादिनीस्फुरत्कां
तिः ॥ दशमस्थेरवितनयेस्वंदपुरग्रामनेताच ॥ ११ ॥ दीर्घायुषीरवितनयेशि
ल्पयुतारोगरहिताच आयस्थेधनयुक्तासुखसंयुक्तातथानारी १२ विकलेक्ष
णाचमूढाविषमाख्यानिर्घृणाविगतलज्जा व्ययभवनगतेसौरेवहुव्ययास्या
त्सपरिभूता ॥ १३ ॥ इतिशनेः

विधवा और व्याकुल नेत्रोंवाली और दरिद्रणी और दुःख और शोककर्के संतप्त होतीहै और कुष्ट भगंदर रोगकर्के पीडित और सुखसें रहित होतीहै ॥ ९ ॥ और जिस स्त्रीकों नवम स्थानमें शनि स्थित होवे सो धन और धर्म और सुख सें रहित होतीहै और बंधुयोंकर्के रहित और उन्मादिनी होतीहै और परोपतापिनी और भाग्योंसें रहित होतीहै ॥ १० ॥ और जिस स्त्रीकों दशम स्थानमें शनि होवे सो वडे धनवाली राणी और बुद्धिकर्के मंत्र वादिनी और स्फुरत प्रभा वाली और पुर और ग्रामके समूहोंके रक्षा करणे वाली होतीहै ॥ ११ ॥ और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें शनि होवे सो वडी आयुषा वाली और शिल्प विद्याके जाननेवाली और रोगकर्के रहित और धन कर्के युक्त और सुखकर्के युक्त होतीहै ॥ १२ ॥ और जिसस्त्रीकों द्वादश स्थानमें शनि होवे सो व्याकुल नेत्रों वाली और मूर्ख और खोटे स्वभाव वाली और लज्जासे रहित औरवहुतखर्च कर्के युक्त होतीहै ॥ १३ ॥ इतिशनेः ॥



॥ श्रौर कहतेहैं पूर्व मुनियोंनें यो स्त्रीजातकमें विस्तार करके शुभाशुभ फल कहाहै सो बुद्धिवाल्योंनें ग्रहोंका बलाबल विचारकर्के कहनें योग्यहै श्रौर पूर्वकहेयो स्त्रीयोंके योग तिन्हका विचार प्रश्नलग्नमें श्रौर विवाह कालमें श्रौर वाक्चदान समयमें श्रौर जन्मकालमे विचार करे ॥ १४ ॥ श्रव स्त्रीके चक्रकर्के शुभाशुभ फल कहतेहैं स्त्रीका चक्र बनायकर्के स्थित करे तिसमें सूर्यके नक्षत्रसें लेकर्के चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत फलका विचार कहाहै सूर्यके नक्षत्रसें तीन नक्षत्र माथेमे देवे श्रौर तिसके श्रागे सात नक्षत्र मुखमे स्थित करे श्रौर एक एक स्तनमें चार चार नक्षत्र स्थित करे श्रौर तीन नक्षत्र हृदयमें स्थापन करे १५ श्रौर तीन नक्षत्र नाभिमें देवे श्रौर तीन नक्षत्र गुह्य स्थानमें स्थित करे श्रौर शिरके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवे तब संताप होताहै श्रौर मुखके नक्षत्रोंमे चंद्रमा होवे तब नित्य प्रति मिष्टान्नकर्के सुखकों प्राप्त होतीहै ॥ १६ ॥ श्रौर स्तनोंके नक्षत्रोंमें चंद्रमा स्थित होवे तब स्वामी की प्रीतिको बधावने वाली होतीहै श्रौर हृदयके नक्षत्रोंमें चंद्रमा स्थित होवे तब श्रत्यंत

पूर्वैर्यन्मुनिभिःसविस्तरतयास्त्रीजातकेकीर्तितंसम्यग्वाऽप्यशुभंचयन्मतिमतावा च्यंविदित्वबलम् योगानांचनियोजयेत्फलमिदंपृच्छाविलग्नेतथा पाणिग्रह णेतथाचवरणेसंभूतिकालेऽपिच १४ नारीचक्रेमस्तकेत्रीणिभानिवक्त्रेभानांस प्तकंस्थापनीयम् ॥ प्रत्येकंस्युर्वेदताराउरोजेतिस्रस्ताराहृत्प्रदेशेनिवेश्याः ॥ १५ नाभौदेयंभत्रयंत्रीणिगुह्येभानोर्धिष्ण्याच्चंद्रधिष्ण्यावधीत्थम् ॥ स्या त्संतापःशीर्षभेवक्त्रसंस्थेनित्यंमिष्टान्नानिसौख्योपलब्धिः १६ कामंस्वामि प्रेमवृद्धिस्तनस्थेवक्षोदेशाऽवस्थितेऽत्यंतहर्षः पत्युश्चिंतानंतवृद्धिश्चनाभौगुह्य स्थेस्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः १७ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहा ज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेस्त्रीजातकाध्यायःसप्तदशः १७ अथायुर्दायाध्यायोव्याख्यायते ॥ सारावल्यां ॥ अस्मिन्नायुर्दायेयस्माद्भ्रांतः समस्तलोकोयम् ॥ तस्मात्पूर्वागमतःकथयामिनिराकुलिकृत्य १ तत्रायुस्त्रि विधम् ॥ नियतमनियतंयोगजंचेति ॥ तत्रापिगणितागतंनियतम् अंशायुः पैंडायुः नैसर्गिकायु जीवशर्मोक्तमिति एषांप्राज्ञैर्व्यवस्थाकृता उक्तंचजातकसारे अंशोद्भवंलग्नबलात्प्रसाध्यमायुश्चपिंडोद्भवमर्कवीर्यात् नैसर्गिकंचंद्रमसोबलेनेति

हर्षको प्राप्त होतीहै श्रौर नाभिके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवे तब स्वामीकी अत्यंत चिंता होतीहै श्रौर गुह्य स्थानमके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवे तब बहुत कामकर्के पीडित होतीहै १७ इति श्रीजातकखंडे स्त्रीजातकाध्यायः सप्तदशः ॥ १७ ॥

श्रव श्रायुर्दायाध्यायकाव्याख्यानकरतेहैं सारावलीमें श्रयसंकहाहै इस श्रायुर्दायमें संपूर्णलोक भ्रमकों प्राप्तहै तिसकारणसें पूर्वशास्त्रसें विचारकर्के भ्रमरहित मैं कहताहों १ सो श्रायुः तीनप्रकारकाहै एक नियत श्रौर दूसरा श्रनियत श्रौर तीसरा योगज ॥ श्रव तीनोंके लक्षण कहतेहैं तिन्होंमें गणागतजोहै सो नियतहैसो बराबरमिलतीहै सो गणितागतचारप्रकारकर्केश्रागेस्पष्टकरीहै एकश्रंशायुः एक पिंडायुःएक निसर्गायुः एक जीवशर्मायुः श्रौर चतुरोंनें चारप्रकारकीश्रायुषामें व्यवस्थाकरीहै सो जातकसारमें कहतेहैं जिसके जन्मकालमें षड्बलमें छिन्द्रपसेंश्रधिक बलीलग्न होवे तब श्रंशायुः सिद्ध करे श्रौर सूर्य बली होवे तब पिंडायु सिद्ध करे श्रौर चंद्रमा बली होवे तब निसर्गायुः सिद्ध करे

और लग्न सूर्य चंद्रमा तीनों हीन बल होवे तब संपूर्णग्रहोंकी परमायुर्दाका सप्तांश ग्रह देतेहैं तिसकों जीवशर्मायुः कहतेहैं सो केवल ग्रहायुका सप्तांशनहींहै तिसका आनयन आगे कहेंगे ३ अब अनियत आयुःकहतेहैं जिसके जन्मकालमें कर्क लग्न होवे और बृहस्पति चंद्रमा दोनों तिसमें स्थितहोवें और केंद्र स्थानोंमे १ ४ ७ १० शुक्र और बुध होवे और तीसरे छठे एकादस स्थानमें क्रूरग्रहस्थित होवें तब अमित प्रमाणकर्के रहित बडी आयुषा वाल्योंका जन्महोताहै ४ और त्रैलोक्य तिलकमें कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें तुलालग्नमें शुक्र स्थित होवें और बृस्पति मंगल अपने उच्चमें स्थित होवें और चंद्रमा अश्विनी नक्षत्रमें स्थित होवे तब बडी आयुषा वाला राजा होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें कर्कट लग्नमें बृहस्पति कर्के युक्त चंद्रमा स्थित होवे अथवाकेंद्रमें बृहस्पति शुक्र स्थित होवे और शेष ग्रह तीसरे छठे एकादशमें स्थितहोवें तब अमित बडी आयुषा वाला होताहै ६ और जिसके जन्ममें अष्टमघर शुद्धहोवेंऔरशुक्रकेंद्रमेंस्थितहोवे और बृहस्पतिऔरचंद्रमा कर्कलग्नमेंस्थित होवे

लग्नसूर्यशशिनोबलशून्यास्युर्यदात्रपरमायुरगांशम् सर्वएवखचरादददतीदं २ जीवशर्मगदितंहितदायुरिति ३ अनितयमाह ॥ गर्गः जीवेंदूकार्किगौलग्नेकेंद्रेभृगुसुतेंदुजौक्रमारिलाभगाःक्रूराःकुर्युर्जन्मामितायुषम् ४ जातकतिलके तुललग्नस्थितेशुक्रे स्वोच्चस्थगुरुभौमयोः अश्विनीसहितेब्जेस्यादमितायुर्महीपतिः कर्किलग्नेसगुर्विंदुकेंद्रस्थगुरुशुक्रयोः त्रिषडायगतैःशेषैरमितायुः क्रमंविना ६ शुद्धेरंध्रेसितेकेंद्रेकर्किलग्नेगुरौविधौ वव्हायुःकर्किलग्नेव्जेशेषैर्यातिशुभर्क्षगैः ७ परमोच्चगतैश्चंद्रशुक्रारैर्लग्नगेगुरौ मेषगोधनुरंशस्थैरविज्ञेज्यैश्चिरायुषः ८ अथयोगजायुराह ॥ होरामकरंदे ॥ कुलीरलग्नेवचसामधीशःकेंद्रेकविस्तत्रभवेच्छतायुः ॥ गुरुश्वराशौनिजदृक्कगश्चेच्छताधिकाविंशतिरायुरत्र ९ सौम्येक्षिताःशुभखगानिजकोणयाताचंद्रतनौवलिनिजीवतिवर्षषष्टिः ॥ सौम्यात्रिकोणभवनेषुगुरौस्वतुंगे लग्नास्थितेस्फुटमिहायुरशीतिरुक्तम् १० ॥

अथवा सूर्य बुध बृहस्पति मेष राशिमें और धन राशिके नवांशमें स्थित होवे तब बडी आयुषावाला होताहै और कर्कट लग्नमें चंद्रमा स्थित होवे और शेष ग्रह शुभ ग्रहोंकी राशिमे स्थित होवे तब बडी आयुषावाला होताहै ७ और जिसके जन्ममें चंद्रमा और शुक्र और मंगल परम उच्चांशमें स्थित होवे और लग्नमें बृहस्पति स्थित होवे तब चिरकालआयुषा वाला होताहै ८ अब योगज आयुः कहतेहैं होरामकरंदमें जिसके जन्ममें कर्कट लग्नमे बृहस्पति स्थित होवे और केंद्रमें शुक्र होवे तब सउ १०० वर्ष आयुषा वाला होताहै और बृहस्पति अपनी राशिमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तब एकसउ बीस १२० वर्षआयुषाहोताहै ९ और शुभग्रहकी राशिमे स्थित अपने मूलत्रिकोणमें स्थितहोवे और बली होयकर्के चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तब साठ ६० वर्ष जिताहै और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह त्रिकोण ९।५ मेंस्थित होवे और बृहस्पति उच्चमें होवे और लग्नमें होवे तब अशी ८० वर्ष आयुषावाला होताहै

और होरा प्रदीपमें कहतेहैं जिसके जन्मकालमें लग्न १ और अष्टम ८ स्थान ग्रहकर्के राहितहोवे और चंद्रमा तीसरे स्थानमें स्थित होवे और वृहस्पति अपने क्षेत्रमें ९। १२ स्थित होवे और बाकीके ग्रह सूर्य मंगल वुध शुक्र शनि नवम स्थानमें स्थित होवें तब सउेवर्ष १०० आयुषा वालेका जन्म होताहै ११ और योगजातकमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें वृहस्पति लग्नमें वा नवममें वा केंद्रमें स्थित होवे और अष्टमस्थान ग्रहकर्के रहित होवे और लग्न और चंद्रमा पापग्रहों कर्के नहिं देख्या होवे तब सत्तर वर्ष ७० जीताहै १२ और होराप्रकाशमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें केंद्र १। ४। ७। १० और त्रिकोण ९। ५ और अष्टम स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित नहि होवें और लग्नका स्वामी और वृहस्पति केंद्र स्थानमें स्थित होवे सो मनुष्य अनेक प्रकारोंके शुभफलकों भोगताहै और रोगसें रहित सउो १०० वर्ष जीताहै १३ और बादरायण

होराप्रदीपे ॥ लग्नेसनिधनेशून्येचंद्रेवीर्य्याश्रितेगुरौ ॥ स्वभेशुभास्थितैःशेषै र्जन्मविंधाच्छतायुषम् ११ योगजातके ॥ जीवेलग्नेशुभेकेंद्रेनिधनेग्रहवर्जिते ॥ लग्नचंद्रौनदृष्टौचेत्पापैर्जीवतिसप्ततिम् १२ होराप्रकाशे ॥ केंद्रत्रिकोणनिधनेपुनयस्यपापालग्नाधिपःसुरगुरुश्चचतुष्टयस्थः ॥ भुंक्तेशुभानिविविधानिसपुण्यकर्माजीवेच्चवत्सरशतंसविमुक्तरोगः १३ बादरायणः ॥ मृगवदनपश्चिमार्द्धेभूनंदनचंद्रसंयुतेलग्ने ॥ केंद्रगतेसुरपूज्येजीवतिजातोत्रवर्षशतम् १४ स्वोच्चलग्नेभृगुजेसौम्यैर्दृष्टेष्टमेपिचद्रमसि सुरमंत्रिण्यपिकेंद्रगतेजातःशतजीवितोभवति १५ निधनोपगतेसौम्येशुभग्रहनिरीक्षिते ॥ चंद्रेपियचनिष्टःस्याच्छतायुःकेंद्रगेगुरौ १६ जातकालंकारे लग्नाधीशोतिवीर्य्यो यदिशुभविहगैर्वीक्षितःकेंद्रयातैर्दत्तेह्यायुःसुदीर्घंगुणगणसहितंश्रीयुतंमानवानाम् ॥ सौम्याःस्वीयालयस्थाजनुषिचरजनीनायकेस्वीयतुंगे वीर्य्याढ्ये लग्ननाथेवपुषिचशरदांषष्टिरायुर्नराणाम् १७ ॥

कहताहै ॥ जिसके जन्म समयमें मकर लग्नके पश्चिमार्द्धमें मंगल चंद्रमा स्थित होवें और वृहस्पति केंद्र १। ४। ७। १० स्थानमें होवे तब सउो १०० वर्ष जीताहै १४ और जिसके जन्मकालमें मीन लग्न गत शुक्रहोवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और चंद्रमा अष्टम स्थानमें स्थित होवे और वृहस्पति केंद्रस्थानमें स्थित होवे तब सउो १०० वर्ष जीणे वाला होताहै १५ और अष्टम स्थानमें शुभग्रह शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और चंद्रमाबी अनिष्ट स्थानमें स्थित होवे तब बी सउो १०० वर्ष जीताहै १६ अब जातकलंकारमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नेश अति बलीहोवे और शुभग्रहकेंद्रमें स्थित होय कर्के तिसकों देखें तब वडी आयुषावाले और गुणोंकर्के युक्त होतेहैं ॥ योगांतर कहतेहैं ॥ शुभग्रह स्वक्षेत्रमें स्थित होवें और चंद्रमा अपने उच्चमें स्थित होवे और लग्नेश बली होयकर्के लग्नमेंस्थितहोवे तब मनुष्योंकीसाठ ६० वर्ष आयुषा होतीहै १७

श्रोर जिसके जन्ममें लग्नसेंवाचंद्रमासें शुभग्रहकेंद्रमें स्थित होवें श्रोर लग्नमें बृहस्पति होवे श्रोर पापी ग्रह करकें युक्त दृष्ट नहि होवें तब सत्तर ७० वर्ष श्रायुषा होतीहै ॥ योगांतर कहते हे ॥ जिसके जन्मकालमें शुभग्रह मूलत्रिकोणमें स्थित होवें श्रोर बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित होवे श्रोर लग्नेश अतिबली होवे तब मनुष्योंको अस्सी ८० वर्ष आयुषा होतीहै १७ श्रोर योगांतरकहतेहैं जिसके जन्मकालमें शुभग्रह केंद्रमें स्थित होवें श्रोर अत्यंत बलयुक्त होवे श्रोर अष्टम घर ग्रहोंकरकें रहित होवे तब तीस ३० वर्षआयुषाहोतीहै श्रोर यदअष्टमघरशुभग्रहकरकें दृष्ट होवे श्रोर शुभग्रह स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तब दशवर्षोंकरकें युक्त अर्थात् चाली ४० वर्ष श्रायुषा होतीहै श्रोरयोगांतरकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति अपने द्रेष्काणमें स्थितहोवे तब सताईं २७ वर्ष श्रायुषा होतीहै ॥ श्रोर योगांतर कहतेहैं स्वक्षेत्रमें अथवालग्नमें चंद्रमा स्थित होवे श्रोरसप्तम में शुभग्रह स्थित होवें तवसाठ ६० वर्षआयुषाहोतीहै योगांतरकहतेहे ॥ शुभग्रह केंद्रकोणमें स्थित होवें तववीसाठ६०वर्ष १८ श्रोर कर्कटराशिमें बृहस्पतिहोवे तबअस्सी ८० वर्षश्रायुषाहोतीहै

सौम्याःकेंद्रालयस्थावपुषिसुरगुरौलग्नतोवासुधांशोरायुर्युक्तंनदृष्टंनखलगगनगैःसप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ यातामूलत्रिकोणेशुभगगनचरा स्वीयतुंगेसुरेज्येलग्नाधीशेतिवीर्य्येगगनवसुसमासंख्यमायुर्नराणाम् १७ सौम्येकेंद्रतिवीर्य्येयदिनिधनगृहेखेटहीनसमाःस्युस्त्रिंशत्सौम्येक्षितचेद्गगनहिमकरैःसयुतोथोस्वभेचेत्स्वत्र्यंशेचामरेज्येमुनिनयनमितंस्वक्षेगोलग्नगोवाचंद्रोद्यूनेशुभश्चेद्गगनरसमितकोणगाःसौम्यखेटाः १८ कीटिलग्नेसुरेज्योयदिभवतितदाखाष्टतुल्यंलयेशोधर्मांगेचांगनाथेनिधनभवनगेक्रूरदृष्टेंऽधिहस्ताः लग्नाधीशाष्टनाथौलयभवनगतौसप्तविंशद्विलग्नेक्रूरेज्योचंद्रदृष्टौयदिनिधनगतःकश्चिदास्तेद्विपक्षाः १९ लग्नेदूक्रूरहीनेवपुषिसुरगुरौरंध्रभखेटहीनेकेंद्रेसोम्येखशैलाःसितविबुधगुरूस्याच्छतकेंद्रगौचेत् वागीशिकर्कलग्नेशतमिहभृगुजेकेंद्रगेथार्कसूनौधर्मांगस्थेसुधांशौव्ययनवमगतेहायनानांशतंस्यात्२०

श्रोर योगांतरकहतेहैं अष्टमेश नवम स्थानमें स्थितहोवे श्रोर लग्नेश अष्टम स्थानमें स्थित होवे श्रो र क्रूर ग्रहकरकें दृष्ट होवे तबचौवीवर्ष २४ आयुषाहोतीहैं ॥ श्रोर योगांतर कहतेहें ॥ जिसके जन्ममें लग्नेश श्रोर अष्टमेश दोनों अष्टम स्थानमें स्थित होवें तब सताइं २७ वर्ष आयुषा होतीहै ॥ श्रोर योगांतर कहतेहै ॥ जिसके जन्मलग्नमें क्रूरग्रह श्रोर बृहस्पति चंद्रमा करकें देखे होवें श्रोर यदकोइंकग्रह अष्टमस्थानमें होवे तब बाइं २२ वर्ष आयुषाहोतीहै १९ योगांतरकहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें लग्न श्रोर चंद्रमाक्रूरग्रहकरकें रहितहोवे श्रोर लग्नमें बृहस्पति होवे श्रोर अष्टमघर ग्रहहीनहोवे श्रोर शुभग्रह केंद्रमें होवें तब सत्तर ७० वर्ष आयुषाहोतीहै ॥ योगांतरकहतेहैं ॥ शुक्र श्रोर बृहस्पतिदोनों केंद्रमें स्थितहोवें तब सउ १०० वर्ष आयुषाहो तीहै ॥ योगांतरकहतेहैं ॥ बृहस्पति कर्क लग्नमें होवे तब सउ १०० वर्षआयुषा होतीहै ॥ श्रोरशुक्रकेंद्रमें होवे श्रोर शनि नवम श्रोर लग्नमें स्थित होवे श्रोर चद्रमाद्वादशमें १२ वा नवममें ९ स्थित होवे तब सउ१००वर्ष आयुषाहोतीहै २०

और योगांतर कहतेहे ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नसें वा चंद्रमासें अष्टम स्थानमें कोइग्रह नाहे
होवे और शुक्र बृहस्पतिबली होवें सो पूर्ण आयुषावाला १२० वर्षजीताहै योगातरकहतेहे ॥
जिसकेजन्मकालमें शुभग्रह अपनीराशिमें स्थितहोवेंतव साठ ६० ॥ वर्षआयुषाहोताहै
॥ योगांतर कहतेहें जिसके जन्मकालमें वृषराशिमें चंद्रमा और पापीग्रह पचम ५
और केंद्र और अष्टम और नवममें स्थितहोवें और नवममें और लग्नमें और केंद्रमें गुरु
और शुक्र नहिं होवें और नवम और अष्टम स्थानशुभग्रहोंकर्के देख्या होवे तब सठो १००
वर्ष आयुषा होताहे २१ योगांतर कहतेहै ॥ जिसका धनुर्लग्नके उत्तरभागमें जन्म होवे और यद
सपूर्णग्रह उच्चमें स्थित होवें और बुध वृषके चौवी २४ अशोंमें स्थित होवें तब पूर्ण आयुषा
१२० वर्ष होताहै ॥ और केंद्रमे बृहस्पति और शुक्र होवें।और एकादशमें चंद्रमा होवे तब
पूर्ण आयुषावाला होताहे ॥ और मीनराशिमें लग्नगतशुक्रहोवे और चंद्रमाअष्टमस्थानमें शुभग्र
हकर्के देख्या होवे और बृहस्पति केंद्रमें होवे तब सठो १०० वर्षजीताहै और लग्नेश अष्टम भा

लग्नादिंद्दोर्नखेटायदिनिधनगतावीर्य्यभाजौसितिज्यौपूर्णायुः स्वीयराशौशुभ
गगनचराःपापिरगोाच्चगेवूजे ॥ धीकेंद्रायुर्नवस्थायदिखलखचरानोगुरोर्भेवि
लग्नेकेंद्रकाव्येगुरौवाशुभमथनिधनसौम्यदृष्टेशतंस्यात् ॥ २१ ॥ कोदंडां
त्यार्द्धमंगयदिसकलखगाःस्वोच्चगाइज्ञेजिनांशैःगोस्थेपूर्णंचकेंद्रेसुरगुरुभृगुजौ ॥
लाभगेव्जेपरायुः शुक्रेमीनेतनुस्थेनिधनगृहगतेसौम्यदृष्टेसुधांशौ जीवेकेंद्रे
शतंस्यादथतनुगृहपेछिद्रगेपुष्करेवूजे ॥ २२ ॥ वागीशेवीर्ययुक्ते
नवमभवनगाःसर्वखेटाःशतायु कर्केगेचंद्रजीवौसहजरिपुभवेस्तःकविज्ञौचकेंद्रे
केंद्रेसूर्यारमंदागुरुनबलवगावाक्पतौलग्नपाते व्यष्टस्थानेपुशेपाःशरगजतु
लितंस्यान्नराणांमितायुः २३ क्रूराःसौम्यांशयाताउपचयगृहगाःकातरा.कंट
फस्थाःसौम्याव्योमार्कसस्थंयदितपनिकुजौरंध्रगौनोपरायुः

र्वमें होवे और चंद्रमा दशमस्थानमें होवे तब वी सठोवर्षजीताहै २२ और बृहस्पति बलकर्के
युक्त होवे और नवम ९ स्थानमें सपूर्ण ग्रहहोवें तव सठो १०० वर्ष आयुषावाला होताहै ॥
और जिसके जन्मकालमें कर्क लग्नमें बृहस्पति चंद्रमास्थितहोवें और तीसरे और एकादश
स्थानमें स्थितहोवें और शुक्र बुध केंद्रमें स्थितहोवें तव सठो १०० वर्ष आयुषाहोताहै ॥
और योगातर कहतेहै जिसके जन्मकालमें केंद्रस्थानमें सूर्य और मगल और शनि बृहस्पति १ ॥
१२ के नवांशमें स्थित होवें और बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे और शेप ग्रह अष्टम स्थानमें न
होवें तव पचाशी ८५ वर्ष आयुषा होताहै २३ योगातर कहतेहे जिसके जन्मसमयमें क्रूरग्रह
शुभग्रहोंके नवांशमें उपचय ३ ॥ ६ ॥ १० ॥ ११ ॥ स्थानमें स्थित होवें और युद्धमें पराजित शु
भ ग्रह केंद्रमें स्थित होवें तव एकसठोवीस १२० वर्ष आयुषाहोताहै और जदशनिऔर मगल अष्ट
म स्थानमें स्थित होवें तव पूर्णआयुषा नहिंहोताहै

और योगांतर कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नकास्वामी और बृहस्पति केंद्रमें होवे और पापीग्रह नवम ९ पचम ५ अष्टम ८ केंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ में नहि स्थित होवें तब पूर्ण आयुषा १२०॥वर्षहोतीहै और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें पापीग्रह नवम ९ चतुर्थ ४ में स्थित होवें और शुभग्रह बृहस्पतिके नवांशमें स्थित होवें ॥ २४ ॥ अथवा शुभग्रह युग्मराशियों में वा युग्मराशियोंके नवांशमें स्थित होवें और द्वादश और दूसरे घरमे स्थित होवे और पूर्ण चद्रमा लग्नमें स्थित होवे तब तिसके घरमे लक्ष्मीका निवास और सौ १०० वर्ष आयुषा होतीहै ॥ योगांतर कहतेहैं जिसके जन्ममे लग्नेश शुभग्रह करके युक्त लग्नमे स्थित होवे और अष्टमेश अष्टममें स्थित होवे और किसीग्रहकरके नहि देख्या होवे तब बीस २० वर्ष आयुषा होतीहै और अष्टमेश केंद्रमे होवे और लग्नेश बलहीन होवे तब तीस ३० वर्ष आयुषा होतीहै २५ और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमे चद्रमा आपोक्लिम स्थानमें ३ ॥ ६ ॥ ९ ॥ १२ स्थित होवे और लग्नेश निर्बली पाप ग्रहोंकरके देख्या होवे तब बत्तीवर्ष आयुषा होतीहै योगा-

केंद्रेलग्नेशजीवौनवसुतनिधनेकंटकेनोखलाख्याः संपूर्णंपापखेटायदिगुरुजल गाजीवभागेचसौम्याः२४युग्मर्क्षांशगतावाव्ययधनगृहगाश्चेच्छुभाःशीतभानुःसं पूर्णोलग्नयायीशतमिहजनितामिंदिरामंदिरंस्यात्लग्नेशेसौम्ययुक्तेवपुषिचलयपेरध्र गेनान्यदृष्टेविंशत्केंद्रेलयेशेबलवियुजितथालग्नपेत्रिंशदायुः२५ इंदावापोक्लिम स्थेतदनुतनुपतौनिर्बलेपापदृष्टेदंतैस्तुल्यततोर्कःखलखगविवरेलग्नगोवृजत्रिस ख्यं रिष्फेकेंद्रेसुरेज्येगुरुरिपुसहजेस्यात्सपापेंगनाथेरामाब्दंकर्कलग्नेकुजतुहि नकरौकेंद्ररंध्रग्रहोनं २६ रामाब्दंस्याल्लयेशेवपुषिचनिधनंसौम्यहीनंखवेदा; लग्नेशोरंध्रयातोवपुषिनिधनपःस्यान्नृणांवाणसंख्या नक्रेतिग्मांशुमंदौसहजरि पुगतौकंटकेरंध्रनाथेपारावाराब्धिसंख्यंतदनुशुभखगासल्लवर्क्षेन्नविंशत् २७

तरकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य पापीग्रहों के अंतरालमें होवे और लग्नमें स्थित होवे तब इक त्री ३१ वर्ष आयुषा होतीहै योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंद्वादश और केंद्रमे बृहस्पति स्थित होवे और लग्नेश पापग्रहकरके युक्त नवम और छठे और तीसरे स्थानमें होवे तब तीनवर्ष ३ आयुषाहोतीहै और कर्कट लग्नमें मंगल और चद्रमा स्थित होवे और केंद्र और अष्टम स्थान ग्रहों करके रहितहोवे तब तीन ३ वर्ष आयुषाहोतीहै २६ और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्म कालमें अष्टमेश लग्नमें स्थितहोवे और अष्टमघर शुभग्रहों करके रहितहोवे तब चाली ४० वर्षआयुषा होतीहै और लग्नेश अष्टममें और अष्टमेश लग्नमें स्थित होवे तब पाच वर्ष ५ आयुषा होतीहै और मकर लग्नमे सूर्य शनी दोनों स्थित होवे और तीनों छठे स्थानमें स्थितहोवे और अष्टमेश केंद्रमे स्थितहोवे तब चुताली ४४ वर्ष आयुषा होतीहै और शुभग्रह संपूर्णपापीग्रहोंकी राशि में और नवांशमे स्थितहोवे तब बीसवर्ष २० आयुषा होतीहै २७

और योगांतरकहतेहैं जिसके जन्मसमयमे लग्नेश क्रूरग्रहोंकर्के देख्या होवे और शुभग्रह वली होवें
और चंद्रमा शुभग्रहोंके वर्गमेंहोवेतवत्र्यहत्र वर्ष ७३ आयुषा होतीहै और अष्टम स्थानमें शुभवर्गगत
चंद्रमा होवे तव चहुट ६४ वर्ष आयुषा होतीहै मध्यमसंज्ञा कर्के और दिवाजन्ममें चंद्रमासें अष्ट
म पापीग्रह होवें और शनि द्विस्वभाव लग्नमें स्थित होवे तववी चहुट वर्ष आयुषा होतीहै और द्वाद
शेश वा अष्टमेश बलहीन होवे तव पचवुंजा ५५ वर्ष आयुषा होतीहै २८ और योगांतरकहतेहैं
जिसके जन्मसमयमे कर्कटलग्नमे सूर्य स्थित होवे और दशम स्थानमे चंद्रमा होवे और वृहस्पतिकेंद्र
स्थानमें स्थित होवे तव पचवुंजा ५५ वर्ष आयुषा होतीहै और जिसके जन्मकालमें दशम वाचतु
र्थस्थानमें शुभग्रह स्थित होवें और चंद्रमा द्वादश और अष्टम स्थानमे स्थित होवें और लग्नमे शुक्र

क्रूरैर्दृष्टेंगनाथेयदिशुभविहगावीर्यवंतःशुधांशौ संस्थेसौम्येगणेचेद्गुणमुनितु
लितंरंध्रगैर्मध्यमायुः स्याच्चंद्रादन्हिपापैरथतपनसुतेद्व्यंगलग्नेहियातिरिष्फेशेरं
ध्रपेवायदिबलरहितेकंकपत्राक्षसंख्यं २८कर्केगेसप्तसप्तौखलविहगयुतेपुष्करं
स्थेद्विजेशेकेंद्रंयातिसुरेज्येशरविशिखामितंपुष्करेर्नारगेवा। सौम्येपीयूषभानौ
व्ययनिधनगतेदेहगेवाकवीज्याविकर्क्षेव्योमवाणंव्ययरिपुनिधनेलग्नगेवायचं
द्रे २९ शन्यंशेलग्ननाथेगगनशरमितंस्यादथोसौम्यखेटारंध्रेनालग्ननाथोव्यय
रिपुनिधनेपापयुक्षष्टिरायुः ॥ राशीशोलग्ननाथोदिनमणिसहितोमृत्युगोवा
कुपतिश्चेन्नोकेंद्रेषष्टिरायुर्वपुषिदिनपतिःशत्रुभौमान्वितश्चेत् ३० वागीशहीन
वीर्येव्ययतनुजगतेयामिनीशखशैला धर्मसर्वैःपरायुःखलखगलवगैःकेंद्रयाते
रशीतिः ॥ क्रूरैःक्रूरर्क्षयातेःशुभभवनगतेःसौम्यखेटैःसवीर्येलग्नेशेस्यात्परायुः
सुतभवनगतेःषष्टिरायुर्नराणाम् ३१ ॥

वृहस्पति होवें तव पंचास ५० वर्ष आयुषा होतीहै ॥ अथवा चंद्रमा द्वादश और छटे और अष्टमें
या लग्न स्थानमें स्थित होवे तववी पंचाश वर्ष आयुषा होतीहै २९ और लग्नेश शनिके नवांशमें
होवे तववी पंचाश ५० वर्ष आयुषा होतीहै और शुभग्रह अष्टममें नहि स्थित होवें और लग्नेशछठे
द्वादश अष्टम स्थानमें होवे और पापीग्रहों कर्के युक्त होवे तव साठ वर्ष आयुषा होतीहै और जि
सके जन्ममें राशिका स्वामीऔर लग्नेश दोनों सूर्य कर्के युक्त होवेंऔरवृहस्पतिअष्टममें ८ स्थित हो
वे और केंद्रमे नहिहोवे तव साठ वर्ष आयुषा होतीहै और जव लग्नमे सूर्य राहुग्रह कर्के और मंगल
कर्के युत होवे तव वी साठ ६० वर्ष आयुषा होतीहै ३०

औरयोगांतरकहतेहेजिसकेजन्मकालमेंवृहस्पतिवलहीनहोवेऔरद्वादशपंचमस्थानमेंचंद्रमाहोवेतवसत्त २७•वर्षआयुषाहोतीहैऔरसंपूर्णग्रहनवममेंस्थितहोवेंतवपूर्णआयुषा१२•होतीहैऔरसंपूर्णग्रहपापीग्रहों केस्वाशमें केंद्र स्थानमे होवें तव अशीति ८• वर्षआयुषा होतीहै औरक्रूरग्रह क्रूरराशियोंमें स्थित होवें और शुभग्रह शुभ राशियोंमे होवे और लग्नेश बली होवे तव पूर्ण आयुषा १२• होतीहै और संपूर्णग्रह पंचम स्थानमे स्थित होवें तव साठ ६• वर्ष होतीहै ३१ और जिसके जन्मकालमें मकरलग्नका अंत्यार्द्ध स्थित होवे और मकरके पूर्वार्द्धमें केंद्रगत शुभग्रह होवें तव सउ १०० वर्ष आयुषा होतीहै और अष्टम और तीसरे स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवें तव चिरकाल आयुषा होतीहै और लग्नसें वा चंद्रमासें अष्टमघरका स्वामी द्वादश स्थानमें स्थित होवे तव अठाई २८ वर्ष आयुषा होतीहै और जिसके जन्मकालमे केंद्रस्थान शुभग्रहों करकें रहित होवे और कोईक ग्रह अष्टममें स्थित होवे तव तीस३•वर्ष आयुषा होतीहै ३२ और जिसकेजन्मकालमेंक्षीणचंद्रमाऔरपापीग्रहअष्टम स्थानमेंस्थितहोवेंऔरअष्टमेशकेंद्रमेंस्थितहोवेऔरलग्नेशवलहीनहोवेतववीस २• वर्षआयुषाहोतीहै

सारंगस्यांत्यभागेयदिवपुषिगतेचाद्यभागेचकेंद्रे सौम्यैःखेटैःशतस्याद्सुसहज गृहेस्याच्चिरायुःसमस्तैः लग्नात्प्रालेयभानोर्निधनसदनपेरिष्फकेंद्रेष्टविंशत्केंद्रे सौम्यग्रहोनियदिमृतिभवनेकश्चिदास्तेस्तरामाः ३२ क्षीणप्रालेयभानौयदिख लखचरोमृत्युगोमृत्युनाथःकेंद्रस्थोलग्ननाथोनिजबलरहितःखाश्वितुल्यंतदायुः सौम्यैरापोक्लिमस्थैर्दिनमणिजविधूवैरिरंध्रालयस्थौतुल्यंकामांकुशैः स्यादथधनमृ तिगौरिःफगौपापखेटौ ३३ हीनौस्वर्भानुनावायदिहिमममहसाव्योमनेत्रप्रमा णं केंद्रस्थौसूर्यमंदौयदिवपुषिकुजःपुष्पवाणांकुशाःस्युः॥ शुक्रेज्यावंगयातौतन यभवनगौभानुपापावनायुर्जन्मेशःसार्कलग्नेखलशुभसहितश्चेक्षित.स्यादनायुः ३४ यत्संप्रोक्तंयोगजंपूर्वमायुर्होरापारावारपारंप्रयातैःतस्मादायुःसारमुक्तमये तत्पुण्याचारश्लोकभाजांनराणाम् ३५

और योगांतरकहतेंहैं जिसके जन्मकालमें शुभग्रह आपोक्लिम ३ ६ ९ १२ स्थानमें स्थित होवें और शनि और राहु अष्टम स्थानमें स्थित होवें तव वीस २० वर्ष आयुषाहोतीहै और दूसरे और अष्टम और द्वादश स्थानमें दोपापीग्रह होवे ३३ और राहुकरकेंरहितहोवेंअथवाचंद्रमाकरकेंतववीस वर्ष २• होतीहैं और जिसके जन्मकालमें केंद्रमें सूर्य शनि स्थित होवें और लग्नमें मंगल स्थित होवे तव वीस वर्ष २० होतीहैं और जिसके जन्मकालमें शुक्र और वृहस्पति लग्नमें स्थित होवें और पंचम स्थानमे पापी ग्रह करकें युक्त सूर्य होवे तव आयुषा करकें हीन होताहै और लग्नेश सूर्य करकें युक्त लग्नमें स्थित होवे और पापी और शुभग्रहों करकें युक्त और देख्या होवे तव अल्पायु होताहै ३४ और कहतेहैं योपूर्व होराशास्त्रके पारगामी आचार्योंनें योगायुः कहाहै तिसमें सार सार लेकरकें मेंने इस ग्रंथमें योगायु· कहाहै सो इह किन्होंकों यथार्थ मिलताहै योपवित्र आचारमें अपने अपने धर्ममें स्थितहै ॥ ३५ ॥

और दशम स्थानमें स्थित योग्रह तिसका बलाबल देखकर्के विद्वानोंने धर्मीलोकोंको आयुषाका विचार कहना कहाहै ३६ अब परमायुषाके योगकहतेहैं यवनजातकमें जिसके जन्मसमयमें मीनलग्नका नवम नवांश स्थित होवे अर्थात्मीनलग्नमेंमीनकाहि नवांशहो वे और बुध वृषराशिके पंचविंशति २५ कलामें स्थित होवे तब परमायुषा प्रमाण कर्के जीवाहैं और संपूर्णग्रह उच्चराशियोंमें होवें तब ३७ और होराप्रदीपमें कहतेहैं जिसके जनम लग्नमें ध नराशिका अंत्यभाग स्थित होवे और संपूर्णग्रह परमोच्चमें स्थित होवें और वृषराशिके पंचविंशति २५ कलामें बुध स्थित होवे तब परम आयुषा १२० होतीहैं ३८ और बादरायणकहताहै जि सके जन्मलग्नसें एकादश स्थानमे चंद्रमा स्थित होवे और बृहस्पति शुक्र केंद्रमें १ । ४ । ७ । १०

बलाबलविवेकेनपुष्करालयशालिनां सुमनोभिरिदंदेश्यमायुर्धर्मादिशालिनाम् ३६अथपरमायुर्योगः यवनजातके अनिमिषपरमांशकेविलग्नेशशितनयेगवि पंचवर्गलिप्ते ॥ भवतिचपरमायुषःप्रमाणंयदिसहिताःसकलाःस्वतुंगभेषु ३७ होराप्रदीपे ॥ धनुर्यांतगतेविलग्नेपरमोच्चगतैर्ग्रहैःसमस्तैश्च ॥ गवि पंचवर्गलिप्तेसौम्येपरमायुराप्नोति ३८ बादरायणः ॥ एकादशधामगतः शशभृत्केंद्रोपगतौचगुरुशुक्रौ विंशतिशतंसमानांजीवयुतोनरपतिर्जातः३९ अथात्रउन्मितंगणितायुरुच्यते तच्चतुर्विधं ॥ अंशोद्भवं । पिंडजं । नैसर्गिकं । जीवशर्मोदितंच तत्रांशायुःकर्मयोग्यगुणकाधीनंसचस्फुटगुणकआश्रयगुणक योर्वधमूलंकर्मयोग्यगुणकः॥स्फुटगुणकस्तुउच्चचेष्टागुणकयोर्वधमूलं केशवार्कः त्र्यल्पाश्चेत्किरणाःसरूपकिरणांघ्रिश्चेन्नत्रयोर्द्धाविभू ॥ गोर्द्धचेष्टि कतुंगसंभवगुणौतद्घातमूलंस्फुटः १अस्यार्थःउच्चबलाच्चेष्टाबलाद्येसाधिताः किरणास्तेचेत्किरणारश्मयः त्र्यल्पारूपत्रयात्न्यूनास्तदासरूपाकिरणांघ्रिः रूपयुक्ताकिरणानामांघ्रिश्चतुर्थांशोगुणःस्यात्चेत्त्रयोर्द्धाःरूपत्रयादधिकाःकिर णास्तर्हिविभूगोर्द्धएकरहितकिरणानामर्द्धगुणकःस्यात्

स्थित होवें तब एकसौ वीस वर्ष जीताहै और राजा होताहै ३९ अब गणितागत आयुः कह तेहैं सोचारप्रकारकर्केकहाहैएकअंशायुःऔरपिंडायुःऔरनिसर्गायुःऔरजीवशर्मायुतिसमेंअंशायुःकर्म योग्यगुणकके आधीनहैऔरसोकर्मयोग्यगुणक और स्फुटगुणक आश्रयगुणकके घातका मूलहोता है और स्फुटगुणकयोहै सो उच्चगुणक और चेष्टा गुणकके घातका मूलहोताहै ॥ अब स्फुटगुणक कहतेहैं पूर्वबलसाधनाध्यायमें चेष्टाबल और उच्चबल सिद्धकियाहै तिन्हों वर्गों कों लेकर्के गुणो और एकतिसमें रूप और मिलावे तब चेष्टा रश्मियांऔरउच्चरश्मियां ग्रहोंकिया होतीआहैंउच्चबलसें उच्चरश्मियां औरचेष्टाबलसेंचेष्टारश्मियां होतीआहैंअबगुणकसाधनेमें रश्मियां तीन ३ सें हीनहोवें तब तिन्होंमेंएकरूप मिलायकर्केचतुर्थांशगुणकहोताहै औरराश्मियांतीनसेंअधिकहोवेंतबएकरूपसेंहीनकर्केतिन्हकाअर्द्धगुणकहोताहै अत्रोदाहरणंलेखश्च

३मय ६ ५५ । ५० त्रयोद्वांविभूगोद्धमित्युक्तत्वादेकेनरहिता ५ । ५५ । ५० एषामर्द्ध २ । ५७ । ५५ रवेश्चेष्टागुणक ॥ रवेरुच्चरश्मय ४ । ५१ । १८ रूपत्रयाटधिकाएकेनरहिता ३ । ५१ । १८ । अर्द्ध १ । ५५ । ३९ जातोरवेरुच्चगुणक चन्द्रस्योच्चरश्मय- । २ । ४१ । ८ । एते-यल्पाअतोरूपयुक्ता।३। ४१।८एषामर्ध१४जात चन्द्रस्योच्चगुणक ०। ५५ । १७ एवमन्येषाम् स्फुटगुणकसाधनेउदाहरणचरवेश्च ष्टागुणक, २ । ५७ । ५५ रवेरुच्चगुणक १ । ५५ ।३९ अनयोर्घात ५ । ४२ । ६ अयंसूक्ष्ममूलार्थवा रद्वयषष्ट्यासवर्णित २०५७६अस्यमूल१४३।२६ षष्ठिभक्तरवे स्फुटगुणक २ । २३ २६एवचन्द्रादीनामपि

आश्रयगुणकार्थचक्रम्

स्व	ऽमि	मि	स	श	ऽश
१८	१५	१३	९	५	३
३६	४८	५४	७२	१८	१४४

अव आश्रयगुणककहतेहै प्रथमनवरेखा ऊर्द्ध देवे और एकादशरेखा टेढियादेवे तव नवति ९० कोष्टसिद्ध होतेहै तिन्हमे ऊपरकी पंक्तिमें सूर्यादिश निपर्यंतग्रह स्थापनकरे टेढिपंक्तिमें एककोष्टत्या गकर्के गृह होरादि सप्त

कल्पितोदाहरणे

	स	च	म	बु	बृ	शु	श
गृ	१०						
हो	१८						
द्रे	३						
स	५						
न	१						
द्वा	१५						
त्रि	१						
योग	६१						
हार	१०८						

सप्तवर्गस्वरूपम्

एवचैष्टिकतुंगसंभवगुणौभवत ॥ चेष्टारश्मिभ्यश्चेष्टागुणक उच्चरश्मिभ्यउच्चगुणकोज्ञेय अथस्फुटगुणकसाधनम् तद्घातइति तयोश्चेष्टोच्चगुणयोर्घात तस्यमूलस्फुटोगुणक स्यात् अथआश्रयगुणकमाह थ स्वाधीष्टसुहृत्समार्यधिरिपोर्वर्गे धृतिश्चाष्विलाविश्वांकेषुगुणागृहेद्विगुणितायोग क्रमात्तद्धरेत् तद्भे पट्वमुगोशुमद्बिजिनै पड्भेश्ववर्गोत्तमस्वाशत्र्यशगतेसदारसगुणै स्याद्वा श्रयाख्योगुण अस्यार्थ स्वादीनापण्णांवर्गेक्रमाद्धृतीत्यादिषडंकाज्ञेया। तद्यथा। स्वस्यवर्गेगृहेधृतिरष्टादश १८अधीष्टस्यवर्गेइष्विला १५ सुहृद्वर्गेविश्व १३ त्रयोदश समवर्गेअकानव ९ अरिवर्गेइषव पच ५ अधिरिपुवर्गेगुणास्त्रय ३ एवमेतेषाहोरादिवर्गेएतेअका स्यु-गृहेग्रहस्थानेयोकउक्तवदागच्छातिसद्विगुणित स्थाप्य होरादिवर्गेयथास्थिताएवस्थाप्या- तेषायोयोगस्तयोगंस्वादीनांपण्णांतद्भेग्रहस्यभेगृहेसतिक्रमादेतै पड्भिरंकैर्वक्ष्यमाणै पड्गुणैर्हरेत्

वर्गस्थापनकरे योगगांका फल तिन्होका योग और हार नीचे के कोष्टमें स्थित करे और सप्तवर्गमे स्थितग्रह स्वक्षेत्रादि छैवर्गमें होवें तव क्रमसे अठारस लेकर्के तीनके अक पर्यंत अंकहोतेहै और यो अकगणितागतगृहस्थानमें आवे तिसका द्विगुणकर्के गृहके कोष्टम स्थित करे और होरादि छैवर्गोंमें यथास्थित जैसा अक प्राप्त होवे तैसाहि स्थापनकरे और संपूर्णग्रहोंके नीचे वलकायोग कर्के स्थापनकरे और तिन्होवर्गोंमे स्थित यो ग्रहहै

तिन्हके नीचे हारके अंक स्थित करे सो हार क्रमकर्के कहतेहैं स्वगृहमें ३६ अधिमित्रके गृहमें ४८ मित्रके गृहमें ५४ समके गृहमें ७२ शत्रुके गृहमें १०८ अधिशत्रुके गृहमें १४४ हार हो ताहि भाजक अंकको हार संज्ञाहै और यो ग्रह अपने वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होवे और अपने नवांशमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तिसका भाजक सर्वदाकाल षट्त्रिंशत् ३६ लेणा और स्वगृहादि हार नहिं लेना अनेंसे भागलेनेसें आश्रय गुणक होताहै अत्रोदाहरणम् रविःशत्रु गृहेस्ति अतःपच भांता गृहे द्विगुणिता इत्युक्तत्वाद्गृहेदश १० जाता होरातु स्वस्य वर्त्तते अतोहो राया मष्टादश १८ द्रेष्काणअधिशत्रोरास्ति अतोद्रेष्काणे त्रयः ३ सप्तांशः शत्रोरस्ति अत सप्तांशे पच ५ नवांशमिश शौसमस्यवर्त्तते अतोनवांश त्रिंशांशयोनव ९ द्वादशांशोधिमित्रयातो द्वादशांशे पंचदश १५ एव जाता रवेः सप्तसुवर्गेषुपिंडकाः अथैषायोगोभाज्यःअथभाजकः रविर्वर्गोत्तमः त्रितियेनास्ति शत्रुगृहेस्ति अतो भाजकः १०८ अनेनभक्ते भाज्ये लब्धो रवेराश्रयगुणकः ०॥ १८ २० एवमुक्तरीत्या जाता भाज्यांका भाजकांकाः आश्रयगुणक॥ अथिस्यते चेद्वर्गोत्तमपूर्व इति यद्ग्रह अपने नवांशमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तब अधिमित्र और अधिशत्रु

तद्यथास्वस्वगृहेषड्भिः६षड्घ्नैः ३६ अधीष्टगृहे वसुभिः८षड्घ्नैः४८ सुहृद्गृहे नवभिः९ षड्घ्नैः ५४ समगृहे अशुमाद्भिः द्वादशभिः १२ षड्घ्नै ७२ अरिगृहेधृतिभिः १८ षड्घ्नैः १०८ अधिरिपुगृहेजिनैः २४ षड्घ्नैः १४४ क्रमेणहरेदित्यर्थः वर्गोत्तमेस्वांशेस्वनवांशेस्वद्रेष्काणगतेग्रहेसतिसदारसगुणैः षड्त्रिंशद्भि ३६ हरेत् नस्वादिगृहगतहारेणेत्यर्थ.एवंहृतेलब्धमाश्रयाख्यो गुणःस्यात् अथाश्रयगुणकेविशेषसंस्कारकमयोग्यगुणकंचायुर्भागांश्चाह. चेद्वर्गोत्तमपूर्वगोध्यरिसुहृद्भेतद्गृहांकस्त्रिषट्लब्ध्योनोयुगरीष्टभेऽधिनवका

राशिगतमें इह संस्कार विशेष कहतेहैं ॥ गृहस्थानके अंकको द्विगुणकर्के त्रिषष्टि ६३ अंकसें भाग लेवे यो लब्ध होवे सो क्रमकर्के अधिशत्रुकी राशिमें स्थित यो ग्रह तिसमें ऋण करे और अधिमित्र कोराशिगत ग्रहमें धनकरे और शत्रुराशिगत और मित्र राशिगत ग्रहहोवे तब गृहांकको द्विगुण करें चुगनू ९४ के अंकसें भाग लेकर्के ऊन और युक्त करे शत्रुराशिगतमें ऊन और मित्रराशिगत ग्रहमें युक्त करे ॥ और स्वक्षेत्रमें और समग्रहकी राशीमें स्थित होवे तब यथा स्थित पूर्वोक्त गुणक रहिताहै संस्कारका अभाव होनेसें ॥ इस प्रकारकर्के आश्रयगुणकको स्पष्टकर्के फेर पूर्वोक्त ग्रहोंके स्फुट गुणकको आपसमें गुणे और तिन्हका मूल कर्मयोग्य गुणक होताहै अर्थात्स्फुट गणकोंका और आश्रयगुणकोंकेघातका मूल कर्मयोग्यगुणक होताहै उदाहरणं॥रवेराश्रयगुणकः०३८ २० स्फुटगुणकः २ २३ २६ अनयोर्घातः १ ३३ ३८ अस्यमूलं जातः कर्मयोग्य गुणकः१ १४३ एवं चंद्रादीनां अव आयुष्पाकेअशा सिद्ध करतेहैं ॥ खेटानामिति ॥ सूर्यादि सप्तग्रहोंके और

स्पष्ट लग्नके अंश बनावे और चालीस ४० के अंकसे भाग लेकर यो शेष बचे सो सूर्यादि सातग्रहो के और लग्नके आयुर्दाके अंशहोतेहैं उदाहरण रविः २ ११४ २० ५८ ॥ अस्यांशाः २४ ५८ चत्वारिंशद्भक्ताःशेष रवेरंशायुरंशा ॥ ३४ २० ॥ ५८ ॥ एवंचंद्रादीनामपि अब चक्रपातार्द्ध हानिसंस्कार कहतेहैं तात्कालिलग्नमें तात्कालीन ग्रहको घटायदेवे जब छैः राशिसें ऊन रहे तब चक्रार्धहानि संस्कार लगताहै और ग्रहकरके ऊन लग्न छै राशिसें अधिक रहेतो चक्रार्धसंस्कारका सम्भव नहि होताहै और कहतेहैं छैराशिसें ऊनग्रहके अंशबनावे और तिन्हों अंशोकरकेतीस ३० के अंकको भागे यो लब्ध आवे सो रूपसें १घटायदेवे सो गुणक होताहै और लग्नसें घटाये पीछे ग्रह एकराशिसें अल्प रहे तब तिसके अंशोंको तीस ३० सें भाग लेकरके जो लब्ध होवे सो एकमें घटायदेवे तवगुणकहोताहै औरशुभग्रहलग्नसें घटावे तब तिसके लब्धफल को अर्द्धकरके रूप १ सें घटावे और एकराशिमें दोग्रह वा बहुत ग्रहहोवें तब तिन्हमें अधिक बली यो ग्रह होवे तिसका गुणक बनावे पूर्वोक्त षड्बलमें यो अधिक बलीहोवे तिसकाही गुणकबनामना और कानहि बनामना कहाहै अस्योदाहरणयथा लग्न०० २२ १२ ४६ रविणा २ १४ २० ५८ ऊनंजात १० ७ ५१ ४८ इसमेंग्रहोनलग्नछैराशिसें अधिकहोनेसें चक्रार्धहानिका सम्भव नहिहै

लग्नात्स्वेसमेकेवलः कार्यस्त्वाश्रयक सततस्फुटहतेमूलसयोग्योगुणः खेटा नांचतनोलिवाःखयुगहृच्छेपाइहांशायुषः ॥ अथचक्रपातार्द्धहानिमाह षड्भा ल्पेसतिखेचरोनउदयेस्यांशोद्धृतेःखाग्निभिस्त्वेकाल्पेस्यचखाग्निभाजितलवेः साम्योनितस्त्वर्द्धितैः ऊनाभूगुणएकभेद्विबहुत्वेकस्यबल्होजसःकार्यस्तद्गुणिताः स्वदायजलवाश्चक्रार्द्धहानिर्भवेत् अथवर्षाद्यंशायुर्दायानयनमाह

अत्रकल्पितलग्नं २ ४ ५६ २८ ग्रह० ८ ८ २४ १६ अनेन ऊनित लग्न ५ २६ ३२ १२ अस्य अंशादिकैः १७६ ३२ १२ खाग्नयः ३० भजेत् भाज्यभाजको भाजकः ६३५ ५१२ भाज्यः१० ८००० भाजकेन हृते भाज्ये लब्ध० १० ११ अथ शुभग्रहोस्ति अतोर्ध ० ५५ रूपात् १ शुद्धं ० १४ ५५ गुणकः स्यादिति चेत्पापग्रहोस्ति तदासपूर्णफलं रूपात्१ शुद्ध गुणकः स्यात्खे चरोनलग्नएकाल्पत्वेउदाहरणलग्न ०० २२ १२ ४६ शनिना ०१ १३ ३८ ५२ ऊनजातं ०० ८ ३३ ५४ अस्यांशाः ८ ३३ ५४ त्रिंशद्भक्तालब्ध० १७ ७ रूपात् १ शुद्धमनेरायुरंशानागुणकः ०० ४२।५३ एवंसर्वत्र ॥ सानितगुणकस्यकृत्यमाह ॥ जिसग्रहका सम्भव होवे तिसका गुणक सिद्ध करकेतिसगुणककरके अपनेआयुर्दाके अंशगुणे अंशोंकियां कला बनायकरके गुणे उसग्रहमेंगुणकक के चक्रपातार्धहानि कहीहै ॥ अब भाषाकरके अंशायुःस्पष्ट कहतेहैं ॥ सूर्यादिसातग्रहोंकियां दायां शोत्थकला अपने २ कर्मयोग्यगुणकोंसें गुणे और दोसउ २०० का भाग लेवेतव ग्रहोंकी वर्षा दि आयु होतीहै ॥ और लग्नके दायांशोंको तीनसें ३ गुणे और दशसे १० भागे तब वर्षादि लग्नायुर्दाहोतीहै और यदलग्न छै ६ रूपमें अधिक बलीहोवे तब लग्नराशिके तुल्य वर्षपूर्वानीतल ग्न युर्में और युक्तकरे और शेष अंशादियोंको द्विगुणकरके पांचके अंकसें भागलेकके राशितुल्यवर्षों

कै आगे महीने स्थापनकरे फेर शेषको तीस ३० से गुणे और पांच ५ से भागलेकर्के मासोंके नीचे दिनस्थापनकरे औरशेषको साठ ६० से गुणे और पांचसे भागलेवे दिनोंकेनीचे कलास्थापन करे एवविकला" अथायुर्विधिःयस्यग्रहस्यचक्रपातर्धहानिसंभवोस्तितस्यहानिसंस्कृताआयुःकलाग्राह्याः ॥ तान्आयुःकलाः ॥ तदधोविकलाश्चस्व यस्यहानिसंभवोनास्तितस्ययथास्थिताएवआयुःकलाग्राह्याः लब्ध्युसदाग्रहाणा योग्यगुणकघ्नाःस्वीयेनकर्मयोग्यगुणकेनगुणनीयाः ग्यास्रनेत्रोद्धृताःशतद्वयेनभक्ताः समादिवर्षादिश्रशायुर्भवति।अत्रायाभजनविधि.आयुरंशोत्पकलः स्वयोग्यगुणकेनगुण्याःशतद्वयेनभक्ताः फलंवर्षाणि ।। शेषंकलाविकलाश्चद्वादशभिर्गुणयेत्विकलाःषष्ट्याविभज्यलब्धंकलासुयोजयेत्पुनःशत कलासुसंयोज्यशतद्वयेनभाज्यंल द्वयेनभाज्यफलब्धंतेमासाः ततःशेषंत्रिंशतासंगुण्यषष्ट्यालब्धं ॥ ब्धंदिवसाः ॥ पुनःशेषंषष्ट्यासंगुण्यशतद्वयेनभाज्यंलब्धंपलानिएवंसमादिस्यात् ॥ अथलग्नायुः साधनं-तनोरिति तनोर्दायांशकास्त्र्याहताः त्रिगुणादिग्भक्ताः दशभक्तासमाद्यवर्षाद्यंलग्नायुः स्यात् तत्रापिवर्षमासाद्यानयनप्राग्वदेव ।अथचेल्लग्नवलवत् षट्रूपेभ्योधिकवलंतदालग्नभैःतुल्याब्दैःलग्नरा श्यितुल्यवर्षैःपूर्वानीतलग्नायुषियोज्य ततोद्विनिघ्नशरहृत् भागादितो मासयुकार्यम् लग्नभागादिप्रथमंद्विनि घ्नंपंचभक्तं लब्धंमासाः शेषंत्रिंशद्गुणंशरभक्तंलब्धंदिवसाः शेषंषष्ठिगुणंशरभक्तंलब्धंघटिकाःएवंपलानि अ

दायांशोत्थकला·स्वयोग्यगुणकघ्नाःखाभ्रनेत्रोद्धृताः अंशायुर्द्युसदांसमादितुत
नोर्दायांशकास्त्र्याहताःदिग्भक्ताहिसमादिचेत्तुवलवल्लग्नंतदालग्नभैस्तुल्या
ब्दैःसहितंद्विनिघ्नशरहृद्भागादितोमासयुक् अथपैंडनैसर्गिकजीवशर्मायुर्दा
येषुआयुर्भागान्त्र्यंशार्द्धास्तहानिंचाह स्वोच्चोनोद्युचरोंगभात्समधिकोग्रा
ह्योल्पकोनार्कभंतद्भागाद्युचरोरिभयादिगुणांशोनाविनावक्रगं द्यासाअस्तमितेवि
नाशानासितौहानिर्द्वयेत्राधिकैकाथोपैंडनिसर्गजीवगादितेचक्रार्धहानिर्भवेत्

रवेःकर्मयोग्यगुण नैनमासादिनालग्नायुः सयोज्यम् अत्रोदाहरणम् रवेर्दायांशोत्थकलाः २०६० ५८ द्वा केन १ १४ १ गुणिताः २५४७० खाभ्रनेत्री २०० हृतालब्धंवर्षाणि १२ शेषं १४७ ० द्वि दशगुणितं ,१७६४ ०० द्विशत्याभक्तंलब्धंमासाः ८ शेष १६४ ० त्रिंशद्गुण ४९२० ० द्वि शत्याभक्तलब्धदिवसाः २४ शेष १२० ० षष्टिगुणित ७२०० ० द्विशत्याभक्तलब्धघटिकाः ३६ शेषशू न्यं ० षष्टिगुणित ० द्विशत्याभक्तलब्धपलानि ० एवजातंवर्षादिरवेरायुः १२ ८ २४ ३६ ०० एवम् न्या लग्नादीनामपि तनोर्दायांशकाः २० १२ ४६ त्र्याहताः ६६ ३८ १८ दशभक्ताः लब्धवर्षाणि ६ शेषं ६ ३८ १८ द्वादशगुणित ७९ ३९ ३६ दशभक्तलब्धमासा ७ शेषं ९ ३९ ३६ त्रिंशद्गुणितं२८ ४८ ० दशभक्तलब्धदिवमाः२८ शेषं१ ४८ ०षष्टिगुणितं५८८ ० दशभक्तलब्धघटिका. ५८ शेषं ० पष्ठिगुणित ४८० ० दशभक्तलब्धपलानि४८ एवजातंवर्षाद्यंलग्नायुः ६ ७ २८ ५८ ४८ लग्नवल ६४० १५ २८ षड्रूपेभ्योधिकमस्ति अतोलग्नस्यवलत्वाल्लग्नराशितुल्ये वर्षैर्लग्नायुर्युक्तम् ६ ७ २८ ५८ ४८ लग्नस्यभागादि २२ १२ ४६ द्विनिघ्नम् ४४ २५ ३२ शरहृल्लब्धमासाः ८ शेषं४ २५ ३ त्रिंशद्गुण १३२ ४६ ०० पंचभक्तलब्धदिवसाः २६ शेष २ ४६ ०षष्टिगुणितं १६६ ० पंचभक्तलब्ध

घटिकाः २२ शेषं १ पाष्ठिगुणं ६०. अरभक्तलब्धपलानि १२ एवंमासादिना ८ । २६ । ३३ । १२ लग्नायुर्जातंस्फुटलग्नायुःवर्षाद्यम् ॥ ७ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३३ ॥ ० ॥ स्वोच्चोनदृति- ॥ युचगेग्रहः स्वोच्चोनः कार्यः सश्च्रंगभात्समधिकोराशिषट्कादधिकोग्राह्यः अल्पश्चेत्तदाञ्चकं भं १२ ॥ ऊनविधेय तद्भागाःशेषस्यभागाःकार्याःयदिग्रहोऽरिभेऽस्ति तदातस्यग्रहस्यभागागुणा ३ शोनास्तृतीयांशेनऊनाः कार्याः वक्रंगविनावक्रोवक्रगतिग्रहस्तविनाकोचिद्वक्रोभौमइतिव्याचख्युः तद्बहुभिरु पेक्षितत्वान्नादरणीयम् शत्रुभेवक्रगतिर्ग्रहश्चेत्तदातस्याशागुणाशोनानकार्याः ॥ तथाचश्रीपति. ॥ त्र्यं शकहरतिशत्रुभेग्रहः स्वायुषोऽनतुवक्रचारगइति ॥ अस्तंगतोग्रहस्तस्यभागादह्यासाद्धिविहताःकार्याः शनिसितास्यांविना शनिशुक्रावस्तगतावपिअर्द्धनहरतः ॥ यतः शनिसितौसूर्यवैरिणौ ॥ ततस्तौसूर्य सन्निधानेनास्तगतावपिस्वायुषोर्द्धनहरतः ॥ तथाच बादरायण. ॥ अस्तंयाताः सर्वएवार्द्धहानिंकुर्युर्हि त्वादित्यपूज्याकंपुत्रावितिं ॥ एतद्धानिद्वयेयुगपत् प्राप्ते अधिकैकैवहानिःकार्या एतदुक्तंभवति वैरिभेग्रहे. त्र्यंशोनाहानिः तस्मिन्नस्तगतेसत्यर्द्धहानिः एवहानिद्वयेप्राप्तेअधिकैकैवहानिरर्द्धमेवहानिःकार्येत्यर्थः श निसितयोर्हानिद्वयेऽप्यशहानिरेवे यतस्तयोरस्तहानिर्नास्त्येव यदाहयवनः खेचरोजायतेयोर्द्धत्र्यंशयोरपहा रकः आयुषःसहरेदर्द्धत्र्यंशशुक्रशनैश्चरावितिं ॥ अथपिंडनिसर्गजीवशर्मेपिआयुर्दायेभागादिनाच क्रार्द्धहानिर्भवेत् पड्भाल्पेइस्यानीतगुणकेनतेभागागुणनीयाइत्यर्थः अत्रापिविशेषः ॥ शत्रुभेइत्यत्रस्वा भाविकशत्रुर्ज्ञेयोनतुकतात्कालिकशत्रुःनन्वेवचेच्चंद्रस्यशत्रोरभावात् त्र्यंशहानिः कदापिनस्यादितिचेत्स त्यं नह्ययंनियमोस्ति यतस्त्र्यंशहानिः सर्वेषाभवतीति किंतुयथार्थहानिर्नसंभवति तथा चंद्रस्यत्र्यंशहा निरपीति किंच सत्तवर्गजबले अधिशत्रुभेदत्ताशकइति चंद्रस्यासंभवेपियथा अन्यग्रहबलार्थमुक्तं तद्व त्स्वक्षेत्रेप्यस्तु तत्कालमैत्रीहि तत्रैवचर्तते ॥ यत्राधिश त्रुविचारोप्यस्ति ॥ नतुकेवलशत्रुमित्रविचारे प्रकृतेतुतात्कालिकमैत्रीविचारे शत्रुभेचाधिशत्रुभेचहानिर्विशेषेणभाव्यं नतुउभयत्रत्र्यंशहानि.संभवतीति ॥ अस्योदाहरण यथा ॥ रविः २ । १४ । २० । ५८ स्वोच्चेन ० । १० ऊनः २ । ४ । २० । ५८ -अयंषड्भादूनोऽस्यतोभगणाच्च्युतः ९ । २५ । ३९ । २अस्यभागाः २९५ । ३९ । २ एवंचंद्रादीना मपि ॥ अस्तंगतस्यपुदाहरणं ॥ बुधोस्तंगतोऽस्ति एतस्यबुधस्यायुरंशाः २६८ । ३१ । ४२ द्वि भक्ताज्ञाताबुधस्यायुरंशा १३४ । १५ । ५१ हानिद्वयेउदाहरणं यथागुरुः शत्रुगृहेस्तिअस्तगतोपीत्यत्र हानिद्वेप्राप्तेअधिकाहानिःकार्याइत्युक्तगुरोरप्यर्द्धहानिःकार्या शनिः शत्रुगृहेस्तितस्यत्र्यंशोनाहानिःप्रा प्तेइति यस्यहानिसंभवोनास्तितस्ययथागताआयुरंशाःस्थाप्याइति अथ भाषाकर्के कहतेहैं ग्रहकों अपने उच्चसे घटावे जब छराशिसे हीनहोवे तब फेर बारां १२ राशिमें घटावे जैसे छराशिसे अ धिकहि रहे तैसे करे फेर तिसके अंश बनावे अंशोंके नीचे कलादि धरे और ग्रह जब शत्रुके घर में स्थित होवे तब तिसके अंश तृतीयांशकर्के रहित करे परंतु वक्रगति ग्रहहोवे तब तृतीयांशन घटावे तब यथास्थित धरे और ग्रह अस्तहोवे तब तिसके अंश अर्धकर्के धरे परंतु शुभ शनिकेबिना शुक्रशनिकों अस्त हानि नहि होतीहै और जिस ग्रहकों दोहानिका संभव होवे तिसकों अधिक हानियो दोमेंहोवे सो करे इस प्रकार सपूर्णग्रहोंके आयुरंश बनायकर्के फेर चक्रार्धहानि जो पूर्व अंशायुम कहिहै सोकरे ॥

॥ अब लग्नगत पापग्रहमें हानिविशेष कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नमें पापीग्रह स्थित होवे तब ग्रहोंके जो आयुपाके अंशहैं ॥ तिन्हकों पृथक् स्थिनकरै और लग्नकी राशीकों त्यागक कें लग्नकेअंशादियोंसे ग्रहके आयु अंशोंको गुणे और तीनसउसाठसें ३६० भागलेवे यो लब्ध आवे तिसकों पृथक् धरयो ग्रहके अंश तिसमें घटायदेवे और यद लग्नगत पाप ग्रहशुभग्रह कर्के देख्या होवे तब लब्धिकों अर्धकर्के घटावे और इसमें क्रूरशब्दकर्के क्षी णचद्रमाका ग्रहणनाहि करे चंद्रमा सदा शुभहि होताहै और वृहज्जातककी टीकामें भट्टो त्पलने क्रूर शब्द कर्के क्षीण चंद्रमाका ग्रहणवी नाहिं कियाहै ॥ और लग्नमें दो पापग्रहहो वें तव तिन्हमें योग्रह षट्बलकर्के अधिकवली होवे तिसके भावफलकर्के लब्धिकोंगुणके घ टायदेवे और षट्बलमें दोनों तुल्यहोवें तव जिसका भावफलअधिक होवे तिसकर्के लब्धि कों गुणकर्के घटावेऔर पापी ग्रह लग्नका स्वामी होवे तववी इहे हानि नकरेयो ग्रहस्वा मी होताहैसो हानि नहिंकर्ताहैस्वामीका योग शुभ होताहै और इहे संस्कार पूर्वोक्त अ

पापग्रहेलग्नगतेतेषांभागानांहानिविशेषमाह दायांशाद्युसदांपृथक्तनुलवा दिघ्नाःखषट्त्र्युद्धृताआप्त्योनास्तनुगेखलेयदिचसद्दृष्टेर्द्धयाथापरे ॥ निघ्नोग्रो दयभावजेनतनुगोग्रोचेद्वलिष्ठस्यतत्साम्येपुष्टफलेननेतितनुपेस्मिन्नांशजेसौ क्रियाइति ॥ अथपैंडनिसर्गजीवशर्मोक्तानांत्रयाणामायुर्दायानांवर्षाद्यानयन माह ॥ गोव्जास्तत्वातिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गानखाःपैंडजे १९।२५।

द्यायुमें नहिं करणा कहाहै केवल पिंड निसर्ग जीवशर्मा आयुर्दायमें करणा कहाहै अवइसमें, उदाहरण कहतेहैं ॥ रवेर्दायांशाः २१ ५।३१। ॥ पृथक्स्थाः २१५।३१।२॥ लग्नेपि पापग्रहेसति ॥ तनुलवादिना २२।१२।४६ गुणिताः ६५६७।१२।१२ खषट्त्र्यु ३६० द्धृता आप्तिर्लब्धाः १८।१४।३२ शुभदृष्टत्वादर्धिता ९।७।१६ अनया पृथक्स्था दायांशा हीनाःजाता रवेरायुरंशाः २८६।३१। ४८ एवंचंद्रादीनामपि ॥ अथापरमतोदाहरणं आप्तिः १८।१४।३२ लग्नस्थपापग्रहभावफलेननिघ्ना ८।४१।३७ शुभदृष्टत्वादार्धता ४। २३।४८ अनयापृथक्स्थादायांशाहीनाजातारवेरायुरंशाः २९१।१४।१४ दशघटिकांतरंम' तांतरेणेति ॥ अथ पैंडादि तीन आयुर्दायोंके वर्षोंका आनयन कहतेहैं ॥ गोव्जाइति ॥ पिंडा युर्दायमें सूर्यादिग्रहोंके गोव्जाइत्यादयःसप्तक्रमेण गुणकाःस्युः ॥ तत्रार्कस्यगुणकः १९ चंद्रस्य त त्व २५ भौमस्यतिथयः १५ बुधस्य प्रभाकर १२ गुरोस्तिथयः १५ शुक्रस्य स्वर्गा २१ शने

नखाः२०गुण स्यात् इहे पिंडायुमेंकमकर्के गुणक कहेहैं ॥ अबनैसर्गिकमें गुणक कहतेहै ॥ सूर्यादीनां नखादयःक्रमेण गुणकाःस्युः ॥ अर्कस्य नखाः २० चन्द्रस्यभू १ भौमस्यद्वौ २ बुधस्य गावः ९ गुरो धृतिः १८ शुक्रस्य नखाः२० शनेःपंचाशत् ५० गुणःस्यत् इहेक्रमकर्के निसर्गायुमें गुणक कहेहे ॥ ग्रहोंके पूर्वकहेयो दायांश तिन्हकों पिंडायुमें और निसर्गायुमेंकहे जोगुणकहे तिन्हके साथ भिन्न भिन्नगुणे और भगणांशोंकर्के तीनसओसाठसें ३६० भागलेवे तव पिंड और निसर्गायुव र्षादि होतीहे ॥ और भागलेनेंका प्रकार पूर्वकी न्याइहैं ॥ अब जीवशर्मोक्त आयुका आनयनकहते हे ॥ चकारसें पूर्वोक्तजोग्रहोंके आयुरंशहैं ग्रहकों अपनें उचमें घटायकर्के जो सिद्धाकियेहैं तिन्ह कों स्वर्गासाअर्थात् एकविंशति २१ सें भागलेवे तव वर्षादि जीवशर्मायुर्दायहोताहै परंतु जिसग्रहके आयुर्भागसिद्धाकियेहैं तिन्होंभागोंकोंआठसें ८भागलेकर्कघडीस्थानमेंयुक्तकरेतववर्षादिजीवशर्मायुर्दाय स्पष्टहोताहै अत्रोदाहरणानिक्रमेणप्रदर्श्यन्तेरवेर्दायांशाः२८६।३११४६रवेर्गुणकेन१९ गुणिताः५४४४। ३।१४भगणांशे ३६० भंकाल-धवर्षाणि१५शेष४४।३।१४द्वादशगुणा ५२८।४२।४८भगणांशै३६०भं

१५।१२।१५॥२१॥२० नैसर्गेनखभूद्विगोधृतिनखाःपंचाश २०॥ १॥२॥९॥१८॥२०।५० दुर्कादुणाः॥ दायांशाःस्वगुणैर्हताहिभगणां शाप्त्यासमाद्यायुषीस्वर्गांशाश्चसमाहिजैवमिभहृत्स्वांशैर्धटीष्वन्वितम् ॥

कलब्धमासाः १ शेष १६८।४२।४८ त्रिंशद्गुण ५०६१।२४।०० भगणांशैर्भक्तलब्धदिवसा १४ शेष २१।२४।०० षष्टिगुण १२८४।० भगणांशैर्भक्तलब्धघटिकाः २ शेष २०४।० षष्टिगुण १२२४०।० भगणांशैर्भक्तलब्धपलानि ३४ एवजातरवे पिंडायुर्वर्षाद्य १५।१।१४।२।३४ एवचन्द्रादीनम् अथनैस र्गेउदाहरण रवेर्दायांशाः२८६।३११४६ रवेर्गुणकेन २० गुणिता ४७२०।३५।२० भगणशे ३६० भंकालब्धवर्षाणि १५ शेष ३३०।३५।२० द्वादशगुणित ३९६७।४०।० भगणांशैर्भक्तलब्धमासा ११ शेष ७।४।० त्रिंशद्गुण २१२।०।० भगणांशैर्भक्तलब्धदिवसा शेष २१२।०।० षष्टिगुणित १ २७२०।०।० भगणांशैर्भक्तलब्धघटिकाः ३५ शेष १२०।०।० षष्टिगुण भगणांशैर्भक्तलब्धपलानि २० एवजातरवेर्निसर्गायुर्वर्षाद्यं १५।११।०।३५।२० एवचंद्रादीनाम् ॥ अथजैवोदाहरणम् रवेर्दायांशा २८६॥३११४६ स्वर्ग २१ भक्तालब्धवर्षाणि १३ शेष १३॥३११४६ द्वादशगुण १६०॥३१॥१२ स्वर्ग २१ भक्तालब्धमासा, ७ शेष १५॥३१॥१२ त्रिंशद्गुण ४६०॥३६॥०० स्वर्ग २१ भक्तेलब्ध दिनानि २१ शेष १३॥३६ षष्ट्यागुणित ११७६॥० स्वर्ग २१ भक्तेलब्धघटिकाः५६ पलानि ०९

वंरवेर्जीवशर्मायुः १३॥७॥२१॥५६॥०० रवेरंशाः २८६॥३१॥४६ इम ८ हृह्लब्धंघटचादि ३५४८ घट्यादिषु५६०युतं१।३१।४८एवंजातंरवेर्जीवशर्मायुवर्षाद्यं१३।७।२२।३१।४८एवंचंद्रादीनामपिअव पिंडनैसर्गजीवसमायुर्दायमें लग्नकीआयुका आनयनकहतेहै लग्नकी राशिकोंसागकर्के शेपजोअंशादि तिन्हकियां कलावनावे फेर तिन्हकोंदोसउोके अकसेभागलेवे जो लब्धआवे सो वर्षादिलग्नायुः पै ड निसर्ग जीवायुमेंहोतीहै अव मतांरकर्के लग्नायु कहतेहैं ॥ कईक आचार्य-सो लग्नायुः लग्नके भु क्तनवांश तुल्य वर्षकहतेहैं ॥ कईक लग्नराशिके तुल्यवर्षकहतेहै और कई आचार्यकहतेहैं ॥ लग्नेश बलीहोवे तव राशितुल्य और लग्ननवांशेशबलीहोवे तव नवांशतुल्य वर्षहोतेहैं ॥ और कईआचार्य कहतेहैं पूर्वोक्तलग्नायुवनायकर्के लग्नराशि और नवांशमें जो बलीहोवे तिसके तुल्य वर्षांकके युक्त रेतव लग्नायुःहोतीहै इसप्रकारकर्के वहुत मतोंमें जो पूर्व आयुर्दायकहाहै लग्नांशोंकों दोसउो २०० का भागदेकर्के जो वर्षादि सिद्धकियेहैं ॥ सो पक्षमुख्यहै सोई ग्रहणकरणायोग्यहै अस्योदाहरण वि भक्तनौ ०॥ २२ ॥ १२ ॥ ४६ ॥ लिप्ता ॥ १३ । ३२॥४६खनखो २०० हृतालब्धंलग्नायु वर्षाद्यम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ २८ ॥ ४८ ॥ इदत्रिषुआयुर्दायेषुपैंडनिसर्गजीवशर्माख्येषुज्ञेयमिति,

अथपैंडादित्रिपुआयुर्दायेषुलग्नायुर्दायानयनमाह स्याल्लिप्ताःखनखोद्धृताविभ
तनोर्वर्षादिपैंडात्त्रिकेलग्नायुर्निखलैस्तदंशकसमंकेश्चिद्गतुल्यंस्मृतंयस्येशोधि
बलस्तदेवहिपरैस्तेनाढ्यमन्यैर्यदंशायुर्वेत्त्वथवांशतुल्यमखिलोक्तंग्राह्यमेवादिमम्

अब चार प्रकारकी आयुर्दायमें किसका प्रमाण करणा सो कहतेहे अंशायुःअतनाविति ॥ लग्न और सूर्य और चंद्रमाके मध्यमें लग्नषड्बलमेंछेरूपसें ६ अधिकबलीहोवे तव अंशायुःका साधन करणा और सूर्य बली होवे तव पिंडायुः साधनकरे और चद्रमा बली होवे तव निसर्गायुः साधन करे और जब दो तुल्यबल होवें तव दोनों आयुःसिद्धकर्केतिन्हका योगकरेऔर योगकाअर्धभाग आ युर्दाय होताहे और तीनों लग्न सूर्य चंद्रमा छेरूप ६ से अधिकबली होवें तव तीनों आयुर्दाय सिद्धकर्के तीनोंके बलोंकर्के भिन्न भिन्नगुणेऔर तिन्होंकायोगकर्केतीनोंग्रहोंके षड्बलैक्यकर्के भाग लेवे तवआयु होताहै तिसका प्रकार कहतेहैं लग्न बलकर्के अंशायुःऔर सूर्यबलकर्के पिंडायुःऔर चद्रमाके बलकर्के निसर्गायु केवर्षोंकों गुणे इसमें वर्षोंके दिन कला वनायकर्केगुणन करेसोकहते हे वर्षोंकों द्वादश १२ सें गुणकर्के नीचेके मासमिलावेसोमासहोतेहैं फेरमासोंकोंतीस ३० सेंगुणे नीचेके दिनमिलावे तव दिन होतेहैं इसप्रकार दिन घटी पलात्मक दशा वनायकर्के लग्नादियों

के षड्बलककें गुणे और गुणित जो तीनों तिन्हकायोगकरे और तीनोंके बलैक्यसें भागलेवे तव दिनादि मिश्रायुर्दाय होताहै इसमें दिनोंकों तीस ३० सें भागे लब्ध मास होतेहैं फेरमासों को द्वादश १२ से भागे तव लब्ध वर्षहोतेहैं इसप्रकारमिश्रायुः वर्षादिहोताहै और कहतेहै तीनों मध्यबली रूपछैसे हीन बली होवें तववी इसप्रकारमिश्रायु बनावे और इसप्रकारके दोग्रह होवें तव दोनोंयथोक्त आयुः बनायकर्के दोनोंके बलसें गुणे और योग कर्के दोनोंके षड्बलैक्यसें भागलेवे तव मिश्रायु सिद्ध होताहै इहे मुख्य युक्ति कहीहै और इसीप्रकारकर्के दामोदरपद्धतिमें कहाहै ॥ यथा ॥ लग्नार्कचंद्रायदिवीर्य युक्ता स्तदाविलग्नस्यबलेनहन्यात् ॥ अशायुरर्कस्यबलेनपैंडं निसर्गकचंद्रमसोबलेन ॥ सर्वान्यथैकत्रविधायतानिबलैक्यभक्तानिसमादिकयत् ॥ पैंढचमिश्रायुरिदंद्वयोर्वाबलैक्यतोवोभयवीर्यसाम्ये ॥ साध्यंवुधैःस्पष्टमिदंजगादश्रीजीवशर्मामतिमान्यथैवमिति ॥ अथजैवमिति ॥ यद तीनों हीनबली तीनरूप ३ सें हीनबली होवेतव जीवशर्मायुःकाहिहै सोउत्तममध्यमहीनआर्गेकहेगा ॥ अब मिश्रायुःका उदाहरण कहतेहैं ॥ जैसें रवेरायुर्वर्षादि १२ । ८ । २४ । ३६ । ॥ ००

अथैतेषुचतुर्ष्वायुर्दायेपुसत्सुकस्यकदाप्रामाण्यमित्याह अंशायुश्चतनाविनेधिकबलेपैंडंनिसर्गविधोस्याच्चेत्तुल्यबलद्वयोर्युतिदलंतजायुषोश्चेत्त्रयः स्यायूंपित्रिबलेर्निहत्यचयुतिर्वीर्यैक्यहृद्वात्रिजा युर्युत्यात्रिलवोथजैवमुदितचेद्धीनवीर्यास्त्रयः ॥

वर्षाणि द्वादशगुणितानि १४४ अथस्य मास ८ सयुक्तानि १५२ इदंत्रिंशद्गुणितं ४५६० अथस्यादिन २४ सयुक्त जातदिनादिक ४५८४ । ३६ । ० इदंदिनघटीपलात्मकलग्नबलेन ६ । ४६ । ० । १५ गुणित ३११९७ । ५८ । २१ एवंचंद्रादीना ॥ तथैवदिनकृतपिंडायुर्दाय.सूर्यबलेन ६ । ३७ । ४२ गुणयेत् तथैवचंद्रबलेन ६ । ४१ ॥ १३ दिनीकृतनिसर्गायुर्दायोगुणनीय ॥ तथाकृतेन्यासःगुणितानांत्रयायुर्दायानायोगोभाज्यः ॥ १०५५७३ ॥ ५५ । १८ लग्नार्कचंद्रबलानायोगोभाजक २० । ६ । ४२ सवर्णितोभाज्यभाजकौ भाज्यः ३८००६६११८ भाजकः ०७२४०२ भाजकेनहृतेभाज्येलब्धदिनानि ५२४१ शेष २८०२० षष्टिगुण १६८१२०० भाजकेनभक्तेलब्धघटिका २३ शेष ५१४१ षष्टिगुणित ३५७२४० भाजकेनभक्तेलब्धपलानि १३ दिनस्यानात्रिंशत्भक्तलब्धमासा - १७४ मासाद्वादशभक्तालब्धवर्षाणि १४ जातरवेर्वर्षादिमिश्रायु १४ । ६ । २१ । १३ एवंचंद्रादीना ॥

ग्रहोंके न्यूनाधिक बलकाज्ञान और किन्होंका इह आयुर्दाय मिलताहै सो कहतेहैं अल्पेति
ह अथवा लग्न षड्बलैक्यमें तीनरूपों ३ से अल्पहोवे सो हीन बली होताहै और छै रूप ६
अधिक बली होताहै और मध्यमें अनुपातकरणसे मध्यबली होताहै भिन्नमिति और आचार्यों
भेन्न भिन्न अपने अपने मतकर्के चार प्रकारका आयुर्दाय कहाहै और चारप्रकारका एकरथा
वी नहि कहा तिसमें चतुर यो नीलकंठ श्रीधरादि आचार्यहै तिन्होंने लग्नबलसें अंशायुःऔर
बलसें पिंडायुः और चंद्रबलसें निसर्गायु इत्यादि कहिहै अर्थसें व्यवस्थाकिएपीछें अंशायु व
योंकी संमति करके सत्यहै और सूक्ष्मजातकमें केवल अंशायुः प्रमाण कहतेहै इति और इह
आयु किन्होंका यथार्थ मिलताहै सो कहतेहैं स्याद्धर्मिष्ठेति धर्मात्मायोहैं अपने अपने वर्णाश्रमधर्ममें
र कुलाचारमें तत्पर और श्रेष्ट स्वभाववाले योहैं और पथ्य और हित भोजनके सेवने वाले यो
अन्तयों मनुष्योंका गणितायुः सत्य होताहे और इन्होंसें व्यतिरिक्त पापीयोंका सत्य नहि होता

अथाधिकबलन्यूनबलज्ञानमाह ॥ अल्पेहीनबलोबलीषडधिकेवीर्य्यैग्रह
अंशायुर्बहुसंमतं
श्चोदयोभिन्नंस्वस्वमतेस्मृतायुरितियत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥ अंशायुर्बहुसंमतं
भवतियत्सत्यंचसत्योदितंस्याद्धर्मिष्टसुशीलपथ्यसुभुजांनस्यादिदंपापिनम् १
ननुअंशायुर्दायेऽस्तंगहानिःकुतोनोक्ताइतिशिष्यभ्रांतिनिरासार्थमाह

और श्रीधरकहतेहैं येधर्मकर्मनिरताविजितेंद्रियाश्चयेपथ्यभोजनयुतोनिजदेवभक्ताः लोकेसदादधति
किलशीललीलास्तेषामिदकथितमायुरुदारधीभिः १ और गौरीजातकमेंकहाहै पापिष्ठायेदुराचारा
दिब्राह्मणनिंदका वह्वाशिनश्चतेपावेह्यकालमरणंध्रुवम् अब शिष्योंका भ्रम दूरकरणेके वास्ते कह
हैं अस्तगतग्रह आयुर्दाका अर्द्धहरताहै और शत्रुराशिगत तृतीयांश हरताहै इह जो पिंडादितीन
आयुर्दायमें कहाहै सो योडी बुद्धि वालेने किसीने सो कदाचित् अंशायुर्दायमें संस्कार भ्रमकर्के नहि
करणा और योअंशायुमेंभी अनुमान करे सो असत् झूठाहै किसकर्के जो अस्तंगतकी हानि चेष्टा
गुणकर्में जिससें अस्तगतग्रहकागुणक रूपार्धकहाहै और शत्रुक्षेत्रगतत्र्यंशहानि आश्रयगुणकर्मे क
हिहै उसकर्के अंशायुमें त्र्यंशार्द्धहानिकाभ्रमनहिकरणा योग्यहै आयुस्सौरमिति वर्षादिआयुस्सौर
मासें गणना कहाहै और सिद्धान्तमें कहाहै वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरादिति और बृहज्जातकमेंभी
सौर वर्षकर्केहि आयुर्दायकहेहैं और अल्पज्ञोंने नक्षत्र सवन कहाहै सोझूठाहै तिसमें

दामोदर पद्धतिमेंनाक्षत्र और उत्पलपद्धतिमे सावन कहाहै सो असन्है किसेस श्रीपति श्रीधराचा र्योने युगार्क भगणोंकरके अनुपातकर्क सौरकासावनाहर्गण निद्धकियाहै ग्रहभिद्धकरणेके वास्ते सोबहुतर्योका मतहै परन्तु आयुर्दायानयनमे व्यर्थहै बहुतयोंके साथ विरोधहोनेसे और अयुक्तिसे असत्है अबओर जीवाकी पूर्णायुर्दायकथनपूर्वक तिन्हका आयुर्दायानयन कहतेहैं मनुष्यओरहाथियोंकीपूर्ण आयुषा पांचदिन और एकसौबीस वर्ष होतीहै १२०।०।५ और व्याघ्रादिजोहैं हिंसक औरअजादि योहे वकरोभिड्डूसेआदलेकर्के तिन्हकी पूर्णायुषा सोलांवर्ष१६होतीहै ओर गौयोंकी और महिषी यांकी परमआयुषा चौवी २४ वर्षकहिहै और खोत्ते ओर ऊठोंकी पच्ची २५ वर्षपूर्ण आयुषाहोतीहै ओर कुत्तेयोंका द्वादश १२ वर्षपूर्णआयुषा होतीहै और घोडयोंकी वत्री ३२ वर्षपूर्णआयुषा होतीहै

हानिर्यास्तमितेरिभेप्यनुमितांशोल्पवुद्धानसद्यस्माच्चैष्टिकआश्रयेस्तिनिखिलैपैंडादिपूक्तातत ॥ आयुःसौरमिदंयतोब्दगणनासौरातत सूरिभिःप्रोक्तसत्यमसद्यदल्पकथितंनाक्षत्रकसावनम् २ अथान्येषांप्राणिनांपरमायुःपुरःसरमायुर्दायानयनमाह । पंचाहनखभूसमा १२०।०।५ नृकरिणाव्याघ्रादजादेर्नृपा, १६ गोकाल्योर्हिजिना २४ स्तथोष्ट्रखरयोस्तत्वानि २५ सूर्या, १२ शुनाम् अश्वायु परमरदा, ३२ नृवदिहानीयायुरेषांपरायुर्निघ्ननृपरायुषाचविहृततेषांस्फुटायुर्भवेत् ३ अथकेंद्रायुर्लिख्यतेयथातरे केंद्राकसंख्यांत्रिगुणीविधायराव्हारसख्याकततोविहीनआयुःप्रमाणंकथितमुनींद्रैश्चिरंतनैर्ज्यातिपिकै स्मृतानि १ केंद्रस्थानस्थितानकान् त्रिगुणीकृत्ययावान्पिंडस्तावद्वर्षसंख्यायु ॥ यदिकेंद्रमध्येभौमराहूभवतस्तदातदको

अबइन्होंकी आयुषा स्पष्टकरणीकहतेह हाथीसेलेकर्के जितने इह जीवकहेहै तिन्हके जन्मकालमें स्पष्टलग्नऔरस्पष्टग्रहवनायकर पूर्वोक्तषड्बलबनायके वलसिद्धकरे फेर जिसआयुषाकासंभवहोव अश पिंडनिसर्ग जीवशमाका तिसको मनुष्यायुकी न्याईस्पष्टकरे जितनेवर्षादि आवतिन्हको तिन्हको पूर्णायुवर्षोंकर्के गुणादेवे और मनुष्योंकी परमायुषाकर्के भागलेवे तब तिन्हकी आयुषा स्पष्टवर्षादि होतीहैं अब प्रथातरस केंद्रायुका प्रमाण कहतेहे जन्मकालमें यो ग्रहकुंडलीहै तिसमें लग्न चतुर्थ सप्तम दशम १ ४ ७ १० स्थानोंमें योराशिहैं तिन्हराशियांकेतुल्य अंकोंका योगकर्के और केंद्रस्थानमें राहु और मंगल जिस राशिमें स्थित होवे तिसकी संख्या कर्के रहितकरे फेर त्रिगुणि

को तब केंद्रायु वर्ष होतेहैं और इसमें कहतेहैं केंद्रस्थानोंमें योयो शुभग्रह जिस जिस राशिमें युक्त अथवा पूर्णदृष्टिकर्के देखता होवे तिसके वर्ष केंद्राक योगमें युक्त करे और योयो पापी ग्रहकें युक्त वा पूर्ण दृष्टिकर्के देखता होवे तिसके वर्ष केंद्रांक योगमें घटाय करके शेषाङ्कको त्रिगुणित कि तब केंद्रायुके वर्ष होतेहे अयसें प्राचीन ज्योतिषी कहतेहे इतिश्रीजातकखंडभाषायामायुर्दा नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ अवदशांतर्दशाध्ययकहतेहें मित्रसेन जातकपद्धतिमेंअयसेंकहताहै जिस जिस ग्रहका योयो आयुवर्षादिस्पष्टहै तिस तिस ग्रहकीतिसआयुषाके प्रमाणवर्षादि दशा होतीहे और चद्रमा और लग्न और सूर्य इनहुंतीनोमें पड्बलकर्के जो अधिक ली होवे तिसकी आद्यादशा प्रथम जन्मकालसें तिसकीदशा होतीहे ॥ १ ॥ और तिसके उपरत यो ग्रह तिससें केंद्रादिस्थानोंमें यथा क्रमस्क स्थितहोवे तिस

समेत्यकेंद्रांकमध्येशोध्यंशेषत्रिगुणीकार्यमिति इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडे आयुर्दायाध्यायोष्टादश १८ अथग्रहाणांसमस्तशुभाशुभज्ञापकोदशाध्यायआरभ्यते मित्रसेन यस्ययस्यखचरस्ययदायुस्तस्यतस्यकिलसैवदशास्यात् हिमगुलग्नदिवाधिपतीनांयोवलीभवतितस्यदशाद्या १ तन्वादितूर्यास्तखभोपगानां ॥ १ ॥ ४ ७ १० ततोग्रगानां २ ५ ८ ११ सुसदांपुनश्च ३ ६ ९ १२ एकर्क्षगाद्वित्रिखगास्तदातुल्यादशावीर्य्यवशाद्ग्रहाणाम् २ चेद्वीर्य्यसाम्येवहुवर्षदस्यततोपिसाम्येप्रथमोदितस्य

कीदशा होतीहै सोदशप्रकारकर्के होतीहै यदलग्नकी दशा प्रथमहोवे तव तिसके उपरतयो ग्रहलग्नमें केंद्र १ ४ ७ १० मेंस्थितहोवे दूसरी दशा तिसका होतीहै और यो ग्रह पणफर २ ५ ८ ११ स्थानमें स्थित होवे तिसकी तीसरी दशा होतीहे और लग्नसें आपोक्लिम ३ ६ ९ १२ स्थानमें योस्थित होवे तिसकी चतुर्थी दशा होताहै और यद केंद्रमें कोई ग्रह स्थित नहिहोवे तव पणफर स्थान स्थित ग्रहकी दूसरी दशा होतीहै इह अथसें सिद्धहै ॥ और इसमें केंद्रफणपरादिविचार लग्नकुंडलीमें करणा भावकुंडलीसें नहिकरणा कहाहै ॥ आर केंद्रादिस्थानोंमें एक दो ग्रह वा बहुत ग्रह स्थित होवें तवआगे कहना योदशाक्रमवल तिसमें यो वली होवे तिसकी पूर्वदशा होती है २ और जय वलदोनोका तुल्य होवे तव जिसकीवडीदशा होवे सो प्रथम होतीहै और दशा तुल्य होवे तव योग्रह सूर्यरश्मिसेंप्रथम उन्यको प्राप्तहोवे तिसकी पूर्वदशा होतीहै अयसेंहि सूर्य चंद्रमासेंक

द्रादि क्रमलेगा और अंतर्दशादियोंमें दशाक्रमबल सत्याचार्यादि मतकोंविचारके कहतेहैं ॥ ३ ॥ अवदशाक्रममें और रिष्ट और रिष्टभंगमें वल कहतेहैं॥स्यादाद्याइति श्लोकस्य व्याख्या पूर्वस्मिन् कृता ४॥ चेल्लग्नाद्येति ॥ यद लग्नकी दशा प्रथम होवे तव ग्रहोंके षड्वल अपने अपने ग्रहके भावफलसेंगुणे तव सम्पूर्णग्रहोंका दशा क्रम वल होताहै अत्रोदाहरणं ॥ रवेःषड्वलैक्यं ६ ३७ ४४ ३० रवे भावफलेन ०५३ २७ गुणित ५ ५४ १३ जातंरवेर्दशाक्रमबलं एवसर्वेषाम्॥ अर्केंद्वोरिति ॥ म. द सूर्य की प्रथम दशा होवे अथवा चंद्रमाकी प्रथम दशा होवे तव खगोदयबलांघ्रि सूर्यादिग्रहोंका और लग्नका योगषड्वलैक्यहै तिसका चतुर्थांश गृहस्थानमें स्थापनकरे और होरादिछैवर्गोंमें चतुर्थांशका अर्द्ध करके स्थापनकरे सो सप्तवर्गोंमें स्थित यो अंकहैं अपने अपने वर्गके स्वामीके षड्वलसें

अंतर्दशादौचबलंप्रवक्ष्येविचार्य्यसत्यादिमतंचसत्यम् ॥ ३ ॥ अथदशाक्रमे केशवार्कः स्यादाद्याहिदशाधिकोजसइहार्केंदूदयानांततस्तत्केंद्रादियुजामथद्विवहवोवीर्य्यंक्रमेणैवहि चेदोजःसमतायुषोधिकतयायुस्तुल्यताचिद्दशामौढ्यास्तादुदितक्रमात्क्रमविधौवीर्य्यंहितत्रोच्यते ४ अथदशाक्रमविधौबलमाह चेल्लग्नाद्यदशास्वभावजफलघ्नोजांसिपाकक्रमेर्केंद्वोश्चेत्प्रथमाखगोदयबलांघ्रिर्भेन्यवर्गेर्द्धितःस्वैर्वर्गेशबलैर्हतोबलमिहैवंचमूलंतवचपरेथैवंरिष्टदभंकृजेबहुबलोर्भकातदारिष्टहृत् ५

गुणे जैसें गृहेशके षड्वलैक्यकरके गृहस्थानके अंकोंको गुणे और होराके स्वामीके वलसें होरामें स्थित अंकोंको गुणे इसी प्रकार करके द्रेष्काणादिगुणे ॥ इस प्रकार गुणित यो सातवर्ग तिन्हकायोग दशाक्रम वल होताहै और कईक आचार्य कहतेहैं अपने वर्गेशकरके गुणित जो गृहादिअंक तिन्हके मूलका योग दशा क्रम वल होताहै उदाहरण चंद्रस्यषड्वलैक्यं ६ ४१ ४२ ५१ अस्यांघ्रिर्जातो गृहस्थाने वलं १ ४० २५ अस्यार्द्धंजातं ० ५० १२ होरावलं ॥ अथैतस्वैर्वर्गेशबलैर्गुणयेत् यथा चंद्रस्यगृहेशो वुधस्तस्य षड्वलेन८१४ ३८ चद्रस्यगृहवलं १ ४० २५ गुणितं ११ ४७ ४१होरेशः चंद्रस्तद्बलेन ६ ४१ ४२ होरावल ० ५० १२ गुणितं ५३६ ६ एवंद्रेष्काणादीनाम् ॥ ५ ॥

अब रिष्टके भंगमें और विचार और दशाक्रमबलकी दृढता और मतांतरका खंडन कहतेहैं ॥ और जो ग्रह रिष्टके भंगकरणेवाला होवे तिसके हिताहितको विचारकर्के हितकहिये इष्टफल और अहित कहिये कष्टफल तिसका पूर्वोक्त इष्टकष्ट फलकोविचारकर्के बुद्धिमान् रिष्टका भंग कहे सो विचारइस प्रकारकर्के करणा इहै ग्रह शुभहै वा पापीहै और तैसेंहि नीचराशिमें स्थित है वा उच्चमें स्थितहै अस्तंगतहै वा उदयको प्राप्तहै और आदिशब्दकर्के मित्रक्षेत्रमें वा शत्रुक्षेत्रमें, है इसप्रकार विचारकर्के रिष्टका भंगकहै इसमें फेर अपने विचारकरैयोरिष्टकर्ता शुभग्रह वा पापीग्रह और इष्टफल अधिकहै वा कष्टफल अधिकहै उच्चादिस्थानमेंहै वा नीचादिस्थानमें स्थित है, इसमें तात्पर्य इहैहै यो शुभग्रह रिष्टभंगमें बलीहै परंतु तिसका कष्ट फल अधिकहै और नीचादिस्थानमें स्थित है तब रिष्टभंग बलको प्राप्त होएककेवी रिष्टभंग नहीं करसकाहै और पापी ग्रह रिष्टबलमें बली होवे और उच्चादिस्थानमें स्थित होवे तब रिष्टनहीं करसकाहै इहै इसग्रंथमें श्रीधरादि बहुत आचार्योंकर्के संमति युक्तहै और कचित् श्रीपति महालुंगि दामोदर पद्धतियोंमें कष्टेष्टग्रबलांतरात्तबलं तदसत् युक्तिबाह्यत्वात् इसमें षड्बलैक्य ग्रहका मुख्यबलहै और योग्रहषड्बलमें पूर्णबली होवे और

अथरिष्टभंगेअन्यद्विचारांतरंतथादशाक्रमोक्तबलस्यदार्ढ्यंअन्योक्तिनिराकरणं
चाहभक्तूरिष्टकर्वाहिताहितशुभासत्वचनीचोच्चभास्तादयस्याश्रयतांविचार्यमतिमान्
रिष्टस्यभंगवदेत् श्रेष्टंहष्टहतोदशाक्रमइहोजःश्रीधराद्योदितंकष्टेष्टग्रबलांतरात्क
चकुतंतद्युक्तिशून्यंत्वसत्– ६ अथांतर्दशानयनम् ॥ अर्द्धस्यैकभगास्त्रिकोण–
ग्रहगस्त्र्यंशस्यचास्तेनगांशस्यांघ्रिश्चतुरस्त्रगोनिजगुणैःपक्केकभेस्याद्बली ॥

कष्टेष्टांतरकर्के गुणि तच्छून्य बल होहोजावे तब इन्होंके मतकर्के रिष्टभंगनाहीं होताहै इसकारणसें इहै श्रीधरादियोंका मत युक्तिसें बाह्यहै ६ अब अंतर्दशाका आनयन कहतेहैं मूलदशाके स्वामीकर्के युक्त यो ग्रह होवे सो अर्द्धदशाका पाचक होताहै और दशापतिसें त्रिकोणमें ९ ॥ ५ स्थित योग्रहहैसोतृतीयांशकापाचकहोताहै और अस्त अर्थात् सप्तमस्थानमें दशाकेस्वामीसें स्थितयो ग्रहहै सोसप्तमांश अर्थात् सप्तमांशकापाचकहोताहै और दशाकेस्वामीसेंचतुर्थ और अष्टममें स्थितयो ग्रहहै सो चतुर्थांशका पाचक होताहै और अपने गुणोंकर्के आरोहावरोह उच्च नीचादि शुभाशुभ गुणोंकर्के अंतर्दशामें फल देताहै और एकराशिमें दोग्रह वा बहुत ग्रह स्थित होवें तिन्होंमें योबली होवे तिसकी अंतर्दशा होतीहै औरकी नहीं होतीहै और इसमतसें कई आचार्य लग्नको अंतर्दशा बनानी कहतेहैं सो असत झूठकहतेहैं ॥ जिससें संपूर्णग्रंथकारोंने लिखाहै यो ग्रहःपाचयति ग्रहशब्दसें ग्रहही अंतर्दशाके स्वामीहोतेहैं लग्ननहिं होताहै ॥ अब अंतर्दशा बनानेमें त्रैराशिक कहतेहैं यो दशाक्रमबल पूर्व कहाहै सोई अंतर्दशामें बल होताहै मूलदशा पतिमें यो यो

ग्रह जितने भागका पाचकहै तिन्हका समच्छेद लीलावतीमें कहाया सूत्र तिसकर्के बनावे समच्छे कर्के छिदाकोंकात्यागकरे अशांकर्के भिन्नभिन्नमूलदशाकों गुणे और अंशोंके योगकर्के भागले वे यो लब्ध होवे सो भिन्न स्थित क्रमकर्के अंतर्दशा होतीहै ॥ ७ ॥ अब छेदोंका समान करणा लीलावतीमें कहाहै ॥ हर और अंश दोनोंकों अन्योन्य हारोंसेगुणे एकर्के हारसें दूसरेके हरांशोंकोगुणे और दूसरेके हारसें प्रथमके हरांशोंकों गुणे अपसें करणेसे दोनों राशियोंका तुल्यहरहोताहै जब समच्छेदहोजावें तब छेदोंका त्याग करदेवे और भिन्न भिन्नअंशोंसे दशाकों गुणे और अंशोंके योगकर्के भागे तब लब्ध अंतर्दशा होतीहै अब विदशादियोंमें

अंशादौकुरुरूपमत्रसमतांकृत्वाचनाशंछिदामंशाः स्वदशापृथक्खलुलवैर्व्याप्ताः स्युरंतर्दशाः ७ अथछिदांसमत्वकरणमुक्तंलीलावत्याम् अन्योन्यहाराभिहतौ हरांशौराश्योःसमच्छेदविधानमेवमितिअस्यार्थः हरांशौअन्योन्यहाराभिहतौकार्यौ एकस्यहरेण अपरस्यहरांशौगुण्यौ अपरस्यहरेण प्रथमस्यहरांशौगुण्यौ एवंकृतेराश्योः समच्छेदविधानं भवति अथविदशाद्यानयनं इत्याभ्योविदशास्तथाप्युपदशास्ताभ्यश्चसूक्ष्मफलं पंचांशोनदिनद्वयंचकलयांशायुःकृतंदस्यते पक्षैःखदलवांतरेणचभवेन्मासांतरंचायुषांप्रोक्तैर्यैस्तुदशादिलग्नजफलंतेभ्योति द्वग्भ्योनमः ८ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितजातकखंडेदशांतर्दशादिसाधनाध्यायएकोनविंशः ॥ १९ ॥

त्रैराशिक कहतेहैं अंतर्दशाके यो वर्षादि अंकहैं तिन्हको मूलदशाकेवर्षोंसे भिन्न भिन्न गुणे और सर्वायुवर्षोंकर्केभागलेवे तब अंतर्दशामें विदशादि सिद्धहोतीहैं तिन्होंसे सूक्ष्मफल कहै और कहतेहैं ग्रहमें एककला ऊनाधिक होवे तब अंशायुमें एक दिन और अठतालो ४८ घडीका अंतर पडताहै और ब्रह्मसौर आर्यभटादि सिद्धांतोंमें ग्रहका अंतर अंशमें होजाताहै तब मासादि अंतर आयुषामें होताहै यदा जन्मकालमें एकपलके अंतर होनेंसे लग्नकी छेघटो होतीहै और छेकला कर्के दशादिनका आयुषामेंअंतर होताहै तिसमें यो अत्यंतदृष्टियोंवाले दशाप्रवेशलग्नमें यो फलादि य कहतेहै तिन्हकों मेननमस्कार कर्ताहा इत्युपहासः इतिश्रीजातकखंडभाषायांदशांतर्दशाध्यायः १९

अतदशानयनार्थचक्राणिनैराशिकता

१ २	१ ३	१ ४	१ ७	१ २ ३	१ २ ४	१ २ ७	१ ३ ४
२ १	३ १	४ १	७ १	६ ३ २	८ ४ २	१४ ७ २	१२ ४ ३
हा ३	हा ४	हा ५	हा ८	हा ११	हा १४	हा २३	हा ११

१ ३ ७	१ ४ ७	१ २ ३ ४	१ २ ३ ७	१ २ ४ ७	१ ३ ४ ७
२१ ७ ३	२८ ७ ४	२४ १२ ८ ६	४२ २१ १४ ६	५६ २८ १४ ८	८४ २८ २२ १२
हा ३१	हा ३९	हा ५०	हा ८४	हा १०६	हा १४५

अथ दशाफलाध्यायकहतेहैं यो ग्रह अपनी उच्चराशिमें स्थितहोताहै और अपनीराशिमेंऔरअपने
[नवां]शमेंऔरमित्रग्रहकीराशिमेंस्थितहोवेऔरषड्वलमेंवलीहोवेऔरउदितहोवेसोग्रहअपनीदशामेंसंपूर्ण
[श]ुभफल कर्ताहै औरयो ग्रह मित्रके उच्चमें और मित्रके नवांशमें स्थित और शुभग्रहकर्के दृष्ट और
[य]ुक्त होताहै सोग्रह अपनी दशामें श्रेष्ठफल कर्ताहै १ और योग्रह नीच राशिमें और शत्रुकी रा
शिमें और शत्रुके त्रिंशांशमें स्थितहोवे और सूर्यकर्के युक्त होवे और युद्धकर्के विध्वंसनाको प्राप्त
होवे सो ग्रह अपनी दशामें अशुभफल कर्ताहै २ और योग्रह उच्चसे परिच्युत होवे और मित्रके
और उच्चके नवांशमें स्थितहोवेतिसकोदशामेंमध्यमफलहोताहै और योग्रहनीचसे परिच्युत होवे और

अथदशाफलाध्यायोऽव्याख्यायते स्वोच्चस्वराशिनिजभागसुहृद्गृहस्थःसंपूर्ण
वीर्यरुचिरावलिनःस्वकल्पे मित्रोच्चभागसहितःशुभदृष्टियुक्तःश्रेष्ठांदशांविद
धातिस्ववयःसुखेटः १ नीचशत्रुगृहंप्राप्तःशत्रुत्रिंशांशसूर्यगः विवर्णरुक्षम
पन्नोदशांकुर्यादशोभनाम् २ तुंगाच्च्युतस्याहिदशासुहृदुच्चांशेऽवरोहिणीम
ध्या नीचाद्विपुनीचांशेग्रहस्यचारोहिणीकष्टा ३ सविताःदशाफलानांदाता
चंद्रःप्रबोधयिता राशिविशेषेणेंदोरतःफलोक्तिर्दशारंभे ४
स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणोपलब्धिकर्केहिमांशुःकुरुतेदशायां जायापशूनांहननेप्रवृ
त्तिंकरोतिपृथ्वीतनुजस्यगेहे ५ सच्छास्त्रमित्राधिगमंकरोतिबुधस्यराशौगु
रुधामसस्था ॥ नृपप्रसादाविपुलांचलक्ष्मींशुक्रस्यगेहेफलमेतदेव ६

१	२	३	४	७
१६८	८४	५६	४२	२४
हार. ३३४				

शत्रुके और नीचकेनवांशमेंस्थितहोवे तिसकाआरोहिणीदशावीकष्टकोदेतीहै ३
औरसूर्य दशाके फलके देनेवाला होताहै और चंद्रमादशाफलकोप्रकटकर्ताहै
इसकारणसे दशाकालमें जन्मराशिसे चन्द्रमाका शुभाशुभ फल कहाहै ४
और जिस ग्रहकी दशा केआरंभकालमेंकर्कराशिमें स्थितचन्द्रमाहोवे तब स्त्री और पुत्र और मित्र
और धनकी प्राप्ति होतीहै और चन्द्रमा मेष और वृश्चिक राशिमें स्थित होवे तब स्त्री और पुत्रके ह
[न]नमें प्रवृत्त होताहै ५ और चन्द्रमा मिथुन कन्याराशिमें स्थित होवे तब श्रेष्ठ शास्त्रऔर मित्रकास
मागम कर्ताहै और वृषऔर तुला और धन और मीन राशिमे चंद्रमा स्थित होवे तब दशामे
राजाकी कृपाऔर बडी लक्ष्मी प्राप्त होतीहै ॥ ६

॥ और चंद्रमा मकर और कुंभ राशिमें होवेतबदशामेंमनुष्यकों दूतकर्म में प्रवृत्तकर्त्ताहै और बनमें और किलेकोटोंमें निवासकी प्रीति और गौओंके घर बनानेंमें प्रीतिवाला होताहै ॥ ७ ॥ और कहतेहैं जिसग्रहको दशा प्राप्तहोवे तिससें मित्र और उच्चघरमें उपचय ३। ६। १०। ११ ॥ स्थानमेंऔर त्रिकोण ९॥५ स्थानमें और सप्तम ७ स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे तिसदशाका श्रेष्ठ फल कर्त्ताहै ८ और यो ग्रहअपनेनीचराशिसें लेकर्के पांचराशिमें स्थित होवे तिसकी दशा शुभहोतीहै तिसका नाम आरोहिणीहै और यो ग्रह उच्चराशिसें आगे पांच राशिस्थितहोवे तिसकी दशामें श्रेष्टफल का नाश होताहै और तिसका नाम अवरोहिणी दशाहै॥ ९ अब दशाके लक्षण कहतेहैं ॥ यो शुभग्रहअपने परमोच्च स्थानमें प्राप्तहोवे और संपूर्ण गुणोंकरयुक्त होवे तिसग्रहको संपूर्णदशा धन और सौभाग्यकेवधावनें वाली होतीहै १० और

तुषाररश्मिःशनिवेश्मसंस्थःप्रेष्यंमनुष्यंकुरतेदशायाम् अरण्यदुर्गस्थितिमादधातिप्रीतिमरुद्गोगृहनिर्मितौच ७ मित्रोच्चोपचयस्थानेत्रिकोणेसप्तमेपिवा पाकेश्वरात्स्थितश्चंद्रः कुरुतेसत्फलांदशाम् ८ आरोहिणीदशायस्यखेचरःसत्फलप्रदः ॥ सत्फलापचयंकुर्याद्दशाचेदवरोहिणी ९ अथदशालक्षणं परमोच्चगतःसौम्योयदिसर्वगुणान्वितः ॥ संपूर्णासादशातस्यधनसौभाग्यवर्द्धिनी १० स्वोच्चराशिगतःखेटोयदिकिंचिद्बलान्वितःदशापूर्णाभवेत्तस्यकेवलंधनवृद्धिकृत् ११ यदिसर्वबलाढ्योपिनीचराशिगतोग्रहः ॥ दशारिक्ताभवेत्तस्य धननाशकरीभवेत् १२ मित्रोच्चांशगतस्यैषाफलंमध्यबलाभवेत् ॥ सेवानिष्टबलातस्यदैन्यरोगादिदुःखदा१३ अथारोहिण्यवरोहिणीलक्षणं उच्चाग्रेपंचमस्थस्यदशास्यादवरोहिणीतस्यामल्पमवाप्नोतिफलंक्लेशाच्छुभंनरः १४ नीचाग्रेपंचमस्थस्यदशाचारोहिणीमता॥ तस्यांशुभफलंश्रेष्टमल्पेशादेवजायते १५

योग्रहउच्चराशिमें स्थित होवे और किंचित्बलकर्के युक्त होवे तिसकी संपूर्णदशा केवलधनकी वृद्धिकर्त्ताहै ११ और योग्रह पूर्ण बली होयकर्के और नीचराशिमें स्थित होवे तिसकी दशा रिक्ता कहिहै धनके नाशकरणे वाली होतीहै १२ और जबग्रहमित्रऔर उच्चके नवांशमें स्थित होवेतब मध्यम फल कर्त्ताहै और यह हीनबली होवे सो दशा नेष्टफलकर्त्ताहै १३ अब आरोहिणी और अवरोहिणीदशाकालक्षण कहतेहै ॥ यो ग्रहअपनी उच्चराशिसें लेकर्के आगेकी पांचराशिमें स्थितहोवे तिसकी दशा अवरोहिणी होतीहैतिस अवरोहिणी दशामें थोडाफलहोताहै दुःखतेहिहोताहै १४ और यो ग्रहनीचराशिसें लेकर्केआगेपांच राशियोंमें स्थित होवे तिसकीदशा आरोहिणी होतीहै तिसमें शुभफल होताहै और अल्पबली तिसका स्वामी होवेतब भी शुभफल होताहै १५

ओ ग्रह आरोहिणी दशा शत्रुके और नीचके नवांशमें स्थित ग्रहकी होवे तब थोडे कष्टके देने वाली और थोडे धनकी हानि करणे वाली होतीहै और सो दशा मित्रराशिगत और उच्चराशिगतस्थ ग्रहकी होवे तब संपूर्ण शुभफल करतीहै १६ और दशाकिया संज्ञा पुरातनऋषियोंनें इहांकहियां हैं जो ग्रह वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होतेहै तिन्हकियां संपूर्ण दशा शुभफलको देतियाहै १७ और जब ग्रह जिसराशिमें और जिसनवांशमें स्थित होवे तिन्हमें एक शुभके देने वाला और एक अशुभके देने वाला होवे तब मिश्रित फल होताहै और श्रेष्ठराशि और श्रेष्ठ नवांशमें ग्रह स्थित होवे और निर्बली होवे तबवी मिश्रित फल दशाका होताहै १८ और ग्रह जब शुभफलके देने वाले स्थानमें स्थित होवे तब दुर्दशावी शुभफलकोदेतीहै और शुभस्थानमें ग्रह स्थित होवे तब दुर्बलग्रहकीवी शुभफल देतीहै १९ और दुर्बल ग्रहकी दशा दुष्टफलके अभावमें दुःख और दी

शत्रुनीचांशगस्यैषाकिंचित्कष्टप्रदाऽधना ॥ मित्रोच्चस्वगृहस्थस्यसैवसंपूर्णदा
सेमा १६ दशानांसकलाःसंज्ञाःपूर्वैपिकथिताइमाः ॥ वर्गोत्तमगतानांस्युः
स्फीताःस्वफलदाश्चताः १७ यद्येकएवशुभदोग्रहाधिष्ठितभांशयोःमिश्रस्यात्त
त्फलंतद्वत्सद्भांशेसबलोज्झितः १८ ग्रहाऽशुभफलाभावेदुर्दशापिशुभप्रदा ॥
सचेद्दुष्टफलाभावेदुर्बलापिशुभप्रदा १९ सचेद्दुष्टफलाभावेदुःखदैन्या
भिव्याधिकृत् ॥ अशुभावगतःखेटःसुदृशस्तत्फलाद्धिकृत् २० अथसूर्यदशाफलं
विचारः ॥ भानोर्दशायांहिविदेशवासोभवेत्कदाचिन्ननुमानवानां ॥ भूवान्हिभूप
द्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीवधनागमःस्यात् २१ मंत्राभिचारेऽभिरुचिर्विचि
त्राधात्रीपतेःसख्यविधिर्विशेषात् विख्यातकर्माभिरतिर्मतिःस्यादनल्पजल्पेच
रणेनचिंता २२ व्ययश्चदंतोदरनेत्रबाधाकांतासुतेभ्योविधुतिश्चचिंता नृपा
ग्निचोराहितबंधुवर्गैःस्वगोत्रजैर्वाप्रबलःकलिःस्यात् २३

इहसामान्यफल कहाहै अब विशेष फल कहतेहे अपनेउच्चमे स्थितजो सूर्यतिसकीदशामेअपने धर्म कर्ममे रुचि होतीहै और पिताके सपादित द्रव्य और घरसेलेकर्के पदर्थीका लाभ होताहै और स्त्रीपुत्रोंसे अनेक प्रकारके सुख होतेहे २४ और उच्चसे परिच्युत सूर्यहोवे तव तिसकी दशामे अत्यंत अरिष्ट और कष्ट रोग और अपने सबंधियोंकर्के विरोध और चतुष्पदोंकी हानि होतीहे ॥ २५ ॥ और जिसको वृषराशिके सूर्यकी दशा होवे तिसकी स्त्री और पुत्रकी पीडा और कृषिकर्मसे और वाहनोंकी पीडा और नेत्रोंमें और मुखमे पीडा और हृदयके रोगकी पीडा अनेक प्रकारकी होतीहे ॥ २६ ॥ और मिथुन राशिके सूर्यकी दशामे मत्रशास्त्रमें और श्रेष्ठकाव्य करणेमे प्रीति वाला और पुराणो मेंप्रीति वाला और खेतीके कर्मसेधान्य और धनकी प्राप्त होनेवाला मनुष्यहोताहै २७ और जि

इतिसामान्यफल अथविशेषफलमुच्यते दशादिनेशस्यनिजोच्चगस्यस्वधर्मकर्माभिरुचिकरोतिताताऽर्जितद्रव्यगृहादिलाभंनानासुखानिप्रमदासुतेभ्य २४ उच्चच्युतस्याऽतितरामरिष्टंकष्टचरोगान्स्वजनैर्विरोध रवेर्दशातीवचतुष्पदानां करोतिहानिंनतुमानवानां २५ कांतासुतानांकृपिवाहनानांप्रपीडनस्यान्नयनाननेपुहृद्रोगवाधाबहुधानराणांवृषाधिरूढस्यरवेर्दशायाम् ॥ २६ ॥ स्यान्मत्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्त्तॄप्रीति पुराणेचभवेन्नराणाम् कृपिक्रियाधान्यधने सुखानियुग्मसस्थस्यरवेर्दशायाम् २७ स्यातिर्नृपप्रीतिरतीवनित्यस्त्रीनिर्जितत्वंचमहत्प्रकोप. सुहृज्जनेनूनमतीवपीडाकर्काधिरूढस्यरवेर्दशायाम् २८ दुर्गादरण्याच्चकृपिक्रियायांधनान्यनेकानिभवतिनूनम् ॥ स्यात्स्यातिरुच्चैर्नृपगौरवंचकठीरवस्थार्कदशाप्रवेशे २९ ॥ स्यात्कन्यकानांजननंचमानोदेवद्विजानामनुपूजनंच ॥ लब्धि पशूनांचभवेद्दशायांकन्यागतस्यांबुजवांधवस्य ३०

समनुष्यकों कर्कराशिगत सूर्यकी दशा प्राप्त होतीहै सो प्रसिद्धताको प्राप्त होताहै और राजाकी प्रीतिवाला और स्त्रीकर्के निर्जित और वडे क्रोधकर्के युक्त और मित्रजनोंमनिश्चयकर्के अत्यतपीडाहोतीहै २८ और जिसमनुष्यको सिंहराशिगत सूर्यकीदशा होतीहै तिसको किलयोंसे औरवनसे और कृपिकर्मसे निश्चयकर्के अनेकप्रकारकेधन प्राप्तहोतेहे और वडीप्रसिद्धताको प्राप्त होताहै और राजाके समागमको प्राप्त होताहै २९ और जिसकों कन्याराशिगतसूर्यकीदशा प्राप्त होतीहै सो कन्याके जन्मको प्राप्त और मान और देवता ब्राह्मणके पूजनको प्राप्त और पशुयोके लाभकोप्राप्त होताहै ३०

और जिसको तुलाराशिगत सूर्य कीदशा प्राप्त होताहै सो गृह और पुत्र और धन और स्त्री को पीडाको प्राप्त होताहै और चोर और अग्निके भयको प्राप्तहोताहै और विदेश गमन करताहै और वडे नीच भावको प्राप्त होताहै ॥ ३१ ॥ और नीचांशसे रहित सूर्यकी दशामेंसुखकरके लाभ होताहै और पराइठगी करणेसे धन लाभ होताहै और स्त्रीकेनिमित्तकरके दुःखकी प्राप्ति होताहै और नीचजनसे मैत्री होताहै ३२ और नीचराशिमें अष्टमस्थान स्थित सूर्यकीदशामें उदासीनता और दोषउत्पन्न होताहै और पृष्टभागमें व्रणकीपीडा होतीहैऔर मातापिताकों अनेक प्रकारका दुःख होताहै ३३ और जिसको वृश्चिकराशि में स्थितसूर्य कीदशाप्राप्त होताहै सो तेज विशेषकरके युक्त होताहैऔर विष करके और अग्निकरकेऔर शस्त्रो करके पीडित होताहै और पिता और मातामें चित्तके विकारको प्राप्त होताहै ३४ और जिसकोधनराशि

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासुपीडाचोराग्निभीतिश्चविदेशयानं ॥ नीचत्वमुच्चैः खलुमानवानांतुलाधरस्थस्यरवेर्दशायाम ॥ ३१ ॥ नीचांशमुक्तस्यरवेर्दशायांसुखेनलाभःपरवंचनेन जायानिमित्तोघतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितांतम् ३२ नीचाष्टमस्थस्यरवेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवःस्यात्पृष्ठाश्रितस्यव्रणजन्यपीडापित्रोश्चवाधावहुधागम्या ३३ तेजोविशेषाभियुतोनितांतं विषाग्निशस्त्रैःपरिपीडितश्च ॥ पित्राजनन्यागतचित्तशुद्धिःस्याद्वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायां ३४ कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यंस्याद्गौरवंराजकुलाद्द्विजेभ्यः संगीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्यरवेर्दशायाम् ३५ जायात्मजद्रव्यसुखाल्पतास्याद्नल्पपीडामयतोनितांतं भवेत्पराधीनतयातिचिंतानक्रोपयातस्यरवेर्दशायाम् ३६ हृद्रोगवाधासुतवित्तकांताचिंतापरान्नादिसुखंनकिंचित्शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनतास्याद्घटाधिरूढस्यरवेर्दशायाम् ३७स्त्रीवित्तसौख्योपचयःप्रतिष्ठाज्वरादिपीडाचसुतादिकानाम् वृथाटनत्वंननुमानवानांमीनेदिनेशस्यदशाप्रवेशे ३८

के सूर्यकी दशा प्राप्त होतीहै सो स्त्री पुत्रधनादियोंके सुखको प्राप्तहोताहै और राजा के कुलसे और ब्राह्मणोंसे गौरवताको प्राप्त होताहै और संगीतशास्त्रकोप्राप्ति और वडेसुखको प्राप्त होताहै ३५ और जिसको मकर राशिकेसूर्यकीदशाप्राप्तहोतीहै तिसकोस्त्रीऔर पुत्र और धनकाथोडासुख होताहैऔरसेगसे वडीपीडाहोतीहैऔर पराधीनताऔरवडीचिंताकोप्राप्तहोताहै ३६ और जबकुंभराशिके सूर्यकीदशा होतीहै तब हृदयमें रोग और पीडा और पुत्र धन स्त्रीकीचिंता और पराम्नादियोंकासुख थोडाभी नहिहोताहै और शत्रुयोंकाभय और अत्यंत दीनताहोतीहै ३७ और मीनराशिके सूर्यकीदशामें स्त्री और धनऔरसुखकीवृद्धिहोतीहै और प्रतिष्ठाहोतीहै और पुत्रादियोंको ज्वरादि पीडा होतीहै और वृथाभ्रमणहोताहै ३८

और उच्चराशिमें अष्टमगतसूर्यकी दशामें दोष उत्पन्नहोताहै और उच्चराशिमें छठेस्थानमें स्थितहो तो व्रण
पीडा और पितामाताको पीडा होतीहै ३९ और सूर्यकीदशाके प्रवेशकालमें मातापिताको पीडा अने
कप्रकारोंकी होतीहै और लग्नसे सूर्यनेष्टस्थानमें स्थितहो तो तब विशेषकरके क्लेशकोंदेताहै और चंद्रमाकी दशा
मातापिताको शुभफलदेतीहै ४० ॥ इतिसूर्यदशाविचारः अबचंद्रमाकी दशाके फलकहतेहैं जिन्हों
मनुष्योंको आरोहिणी चंद्रमाकी दशाहोतीहै सो विशेषसे संपूर्णअर्थसिद्ध करतीहै और तैसेहि अवरो
हिणीदशा कार्यसिद्धिमें विलंब और संपूर्णकार्योंमें और बुद्धिमें मंदभावकर्तीहै ४१ औरचंद्रमाकीद
शामें मनुष्योंको बडीप्रतिष्ठाहोतीहै और मंत्रीभाव और राजाकीरुपा और देवता और ब्राह्मणके
पूजनमें प्रवृत्तिहोतीहै ४२ और श्रेष्ठमंत्र और विद्या और अनेकप्रकारोंकी धनलब्धि और अनेक क

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशादिनेशस्य च दोषदा स्यात् षष्ठस्थितस्य व्रणजात
पीडां करोति बाधां चापि तु जनन्याः ३९ पूर्वभवत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधावि
विधा तदानीम् लग्नाद्दशाक्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता ४०
इतिसूर्यदशाविचारः अथचंद्रदशाफलानि आरोहिणी चंद्रदशा नराणां सर्वा
र्थसिद्ध्यै कथिता विशेषात् तथावरोहा कुरुते विलंबं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमांद्यम् ४१
नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा मंत्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भू
देवदेवार्चनताप्रवृत्तिः ४२ सन्मंत्रविद्याविविधाधनाप्तिर्नानाकलाकौशल
शालिता च गंधैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ४३ ख्या
तिःसुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकाराय मतिर्यशश्च इतस्ततः संचलनप्रियत्वं
कन्याप्रजासंजननाप्रियत्वम् ४४ जलस्य कर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकु
लताक्षमा च कृष्यादिकर्माभिरुचिः शुचित्वं कफानिलाधिक्यमतीव सत्वम् ४५
भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसंगो बहुजल्पता च चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्ये
सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ४६

लोंमें कुशलता होतीहै और सुगंधवस्तु और तिल और फल पुष्पोंकी वृद्धि और वृक्षोंसे धनकी
वृद्धि होतीहै ४३ और जगत्में प्रसिद्धि और श्रेष्ठयश और नम्रताकी वृद्धिहोतीहै और परोपकार
के वास्ते बुद्धि होतीहै और भ्रमणमें प्रीति और कन्याकी उत्पत्ति और प्रीतिभावहोताहै ४४ और
जलकर्ममें अत्यंत प्रीति और आलस्य और निद्रासे व्याकुलता और क्षमाको प्राप्त होताहै और
कृषिकर्ममें रुचि और पवित्रता और कफ और वायुकी अधिकता देहमें होतीहै ४५ और निश्चयकर
के अपने सबंधियोंसे बैर और कलहका प्रसंग होताहै और बहुत बोलनाहोताहै और
श्रेष्ठकर्ममें चित्तकी स्थिति नहि होतीहै यह फल चंद्रमाकी दशाका सामान्य कहाहै ४६

अब चंद्रमाकी दशाका विशेष फल कहतेहैं ॥ मेषराशिके चंद्रमाकी दशामें स्त्रीपुत्रोंका आनंद मनुष्योंको होताहै और विदेशके कर्मोंमें प्रीति और खर्च होताहै और क्रोध होताहै और शिरमें रोग होताहै और भाइयोंकी और शत्रुयोंकी पीडा होतीहै ४६ और वृषराशिके चंद्रमाकी दशामे वृषके तीन अंश पर्यंत होवे तब अपने कुलके अनुसार राज्यप्राप्त कर्त्ताहै और स्त्री भूषण पुत्र गायों घोडे हाथीकी प्राप्ति और सुखकी वृद्धि और जय होतीहै ४७ और तीन अंशके उपरांत मूलत्रिकोणमें स्थित चंद्रमा की दशामें विदेश गमन होताहै और कृषिकर्मसे और क्रयविक्रयसे लाभ होताहै और कफ वायुकी प्राप्ति और संबंधियोंसे विरोध होताहै ४८ और वृषराशिके पूर्वार्धमें पापीग्रहकर्के युक्त होवे चंद्रमा तब माताको मृत्युकर्त्ताहै और उत्तरार्धमें स्थित होवे तब पिता

मेषेशशांकस्यदशाप्रवेशेयोषात्मजानंदभरोजनानाम् ॥ विदेशकर्माभिरतिर्व्ययःस्यात्क्रौर्येशिरोरुक्सहजारिबाधा ४६ उच्चाधिरूढस्यदशाजडांशोःकुलानुसारंहिददातिराज्यं ॥ योषाविभूषात्मजगोतुरंगगजाप्तिसौख्योपचयंजयंच ४७ मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशाविदेशाभिगमंकरोति ॥ कृषेःक्रयाद्विक्रयताधनाप्तिंकफानिलाप्तिंस्वजनैर्विरोधम् ४८ वृषस्यपूर्वार्धगतोहिमांशुःपापान्वितःसंजनयेज्जनन्याः ॥ मृत्युंपरार्द्धेजनकस्यसौम्यसमेक्ष ॥ णान्मृत्युसमानरोगं ४९ द्वन्द्वाधिसस्थेंदुदशाप्रवेशेदेवद्विजार्चाधनभोगसौख्यं ॥ स्थलांतरेसंचलनंकिलस्यात्सुखेनसम्यङ्मतिवैभवंच ५० कुलीरसंस्थस्यकलानिधेःस्यात्पाकेपशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ॥ कलाकलापाकलनंचशैलेवनेरुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ५१ कंठीरवस्थस्यनिशाकरस्यपाकेनरोर्थंलभतेवनित्यं ॥ श्रेष्ठांप्रतिष्ठांविकलत्वमंगेऽनंगेपिहीनत्वमनुप्रयाति ५२

को मृत्युकर्त्ताहै और शुभग्रह कर्के संयुक्त होवे तब मृत्युतुल्यकष्ट कर्त्ताहै ४९ और मिथुनराशिके चंद्रमाकी दशामें देव ब्राह्मणकी पूजा और धनभोगका सुखहोताहै और निश्चयकर्के स्थानांतरमें गमन होताहै और सुखकर्के बुद्धिके ऐश्वर्यकोप्राप्तहोताहै ५० और कर्कराशिके चंद्रमाकी दशामें पशु और द्रव्य और कृषिकर्मसे वृद्धि होतीहै और कलाके समूह प्राप्तहोतेहैं और पर्वत और बनमें रुचि होतीहै और गुप्तरोगका कोप होताहै ५१ और सिंहराशिके चंद्रमाकी दशामें मनुष्य नित्यप्रति धनको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै और अंगमें व्याकुलताको प्राप्त होताहै और कामदेवकी हीनताको प्राप्त होताहै ५२

॥ और कन्याराशिके चद्रमाकी दशामें विदेशगमन और स्त्रीकी प्राप्ति और कलाके समूहमे बुद्धिकी सामर्थ्य होतीहै और धनकी थोडी वृद्धि होतीहै ॥ ५३ ॥ और तुलाराशिकेचद्रमाकी दशामे मन चचल होताहै और सीसे वाद होताहै और किसीसेंभी वाद होताहै और धनकी हीनता होतीहै और उत्साहका भंग होताहै और निश्चयकरके नीचका संग होताहै ५४ और वृश्चिक राशिमे नीचाश्रगत चद्रमाकीदशामे व्याधिकीवृद्धिबहुत प्रकारकी होतीहै और निश्चयकरकेसबंधिकावियोग और मानकीअल्पता और बहुतप्रकारकी चिंताहोतीहै५५ और नीचाशमे उपरत चद्रमाकी दशामे खरीदकरणेसे और बेचनेसे धनकी प्राप्ति होतीहै और संधियामे पीडा होतीहै और धर्ममें अल्पता होतीहै और मित्रवर्गका थोडा दुख होताहै

कन्यास्थितेंदोश्चदशाप्रवेशेविदेशयानंवनितोपलब्धि ॥ कलाकलापामल बुद्धिवृद्धि स्वल्पार्थसिद्धिश्चभवेन्नराणाम् ५३ कलानिधेस्तौलिगतस्यपाके लोलमन स्याद्वनितानिपाद ॥ वादश्चकैश्चिदनहीनताचप्रोत्साहभग खलु नावसग ५४ नीचोपयातस्यविधोर्दशायाम्याद्याधिवृद्धिर्बहुधान्राणाम् नियोजनैस्स्वजनैननूनमानाल्पताऽनल्पविकल्पचिता ५५ विमुक्तनीचाशुपतेर्दशायांभवेद्धनाप्ति क्रयविक्रयाभ्यां ॥ मर्मव्यथाधर्मविधानमल्प मल्पचमौरजनमित्रवर्गे ५६ चापोपयातस्यचशीतरश्मेर्दशाप्रवेशेगजवाजिवृद्धि ॥ पूर्वार्जितार्थापहतिर्नितांतमन्यत्रसौभाग्यसुखानिनूनम् ५७ हि मकरस्यदशामकरस्थिते सुतसुखानिधनागमनानिच वितनुतेतनुतामनिला-त्तनोरनुदिनगमनागमनानिवै ५८ क्रोडेचपीडाव्यसनानिननस्युर्मानवानात्तनुताशरीरे ॥ क्रमोपलब्धिश्चलितानितांतदशाप्रवेशकलशस्थितेदो ५९ वर्गोत्तमस्थस्यघटेहिमाशोर्दशाप्रवेशेबलिभिर्विरोध कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगोदशनास्यपीडा ६०

[illegible]

५६ और धनराशिके चद्रमाकी दशामें हाथी घोडियोंकी वृद्धि और पूर्वसंपादित धनकी हानि और निश्चयकरके अन्यस्थानमें सौभाग्यकेसुख होतेहै और मकरराशिमेंस्थित चद्रमाकी दशामेंपुत्रकासुख और धनका आगम होताहै और वायुकरके देहकृश होताहैऔर प्रतिदिन गमनागमन निश्चय मे होताहै ५८ और कुभराशिमे स्थित चद्रमाकी दशामें क्रमसे पीडाऔर दुर्व्यसन नकी प्राप्ति निश्चयकरके होतीहे और देहमें कृशता होतीहै और उद्यम करणेसे लाभ होताहै और निरंतर चचलता होतीहै ५९ और कुभराशिमें वर्गोत्तममे अपने नवांशमे चद्रमा होवे तब किसीबलवान मनुष्यसेविरोधहोताहै और स्त्रीमित्रधनपुत्रादियोंकरकेवियोगहोताहैऔरदंतोंमेऔरमुखमेपीडाहोतीहै६०

और निश्चय
और मीनराशिमें स्थित चंद्रमाकी दशामें जलके संबंधकर्के धनकी प्राप्ति होतीहै और निश्चय
कर्के स्त्री पुत्रादियोंकेसुखहोतेहै और शत्रुयोंकानाश और बुद्धिकीवृद्धि होतीहै ६१ और मीनके प्र
थमनवांशमें स्थित चंद्रमाकी दशामें महिषी और हाथी और घोडेयोंकी प्राप्ति होतीहै और पु
त्रादियों का सुख और यशऔर अेष्ट बुद्धि होतीहै ६२ और द्वादशस्थानमें स्थित चंद्रमा
की दशामेंपापकर्मसे द्रव्यलाभ होताहैऔर क्षीणचंद्रमा छठेस्थानमें स्थित होवे तिसकीदशामें
पूर्वकहाजो फल सो भलीप्रकारसे होताहै अर्थात्पापकर्मसे बहुतलाभहोताहै ६३ और नीचरा
शिमें स्थित और अष्टम भावगत चंद्रमाकी दशामें निश्चयकर्के रोग उत्पन्नहोताहै और यद पा

कलत्रपुत्रादिसुखानि
मीनोपयातस्यचशीतभानोर्दशाप्रवेशेहिजलोद्भवार्थः ॥ कलत्रपुत्रादिसुखानि
नूनंशत्रुक्षयोबुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ६१ वर्गोत्तमस्थस्यझषाहिमांशोर्दशाप्रवेशेमहि
षीगजाश्वान् ॥ पुत्रादितोपरिपूर्णनाशमुच्चैर्लभन्मनुष्योहियशोमनापाम् ६२
दशाप्रवेशेव्ययभावगेदाःपापार्जितद्रव्यसमुद्गमःस्यात् क्षीणेरिपुस्थानगतेहि
महोसम्यक्फलंप्राग्गदिततथैव ६३ नीचस्थितस्याष्टमभावगेदादशाप्रवेशेहि
गदोद्गमःस्यात् चेत्पापयुक्तोनिधनंतदानींजातिच्युतिंवालभतेमनुष्यः ६४ इतिचं
द्रदशाफ० अथभौमदशाफलानि ताराग्रहैःस्वोच्चगृहादिसंस्थावक्रास्तमानानुगताय
दिस्युः मिश्रंफलंतेनिजपाककालेयच्छंतिनूनंसुधियाविचिंत्यं ६५ स्यात्पा
केक्षितिनंदनस्यचधनंशस्त्राग्निधात्रीपते भैषज्याच्चचतुष्पदादपितथानानाविधे
रुद्यमैः पित्तासृक्ज्वरपीडनाक्षितिपतेर्भातिंचनीतिच्युतिं मूर्छादींचनिजालयेक
लिरितिप्रोक्तंफलंसूरिभिः ६६

इतिचंद्रदशाफलम्
पीग्रहकर्केसंयुक्तयीहोवेतव मृत्युकोप्राप्तकर्ताहै और जातिसेभ्रष्टकरदेताहै ६४ इतिचंद्रदशाफलम्
और मंगल कीदशाका फलकहतेहैं भौमादि पंच ताराग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें स्थि
तहोवे और वक्रगती और अस्तंगत वा होवे तब अपनीदशामें भिन्नभिन्न फल करतेहैं निश्चय कर्के
इसमें चिन्न बुद्धिमानोंने करणे योग्यहै ६५ और मंगलकी दशामें मनुष्यकोशस्त्रोंसे और राजा
से और पृथ्वी विद्यासेऔर चतुष्पदोंसे और अनेक प्रकारोंसे उद्यमकर्के धनलाभ होताहै और पित्त
रुधिर कीपीडा और राजाकाभय और नीतिसे भ्रष्ट कर्ताहै और मूर्छादि रोगऔर अपनेघरमें कल
ह इतनया प्रकारोंका फल पंडितोंने कहाहै ६६

॥ और मेषराशिमें मूलत्रिकोणांशोंमें मंगलस्थित होवे। तिसकी दशामें पृथ्वी और पुत्र पौत्र और स्त्रीका सुख होताहै और हठकरणेसें उत्साह करके धनका लाभ होताहै और युद्धमें श्रेष्ठ यश होताहै ६७ ॥ और मेषराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकरके मंगल कर्म होतेहैं ॥ और संतानहोताहै और हठ करके और अग्निकरके पीडा और अनेक-विधके शत्रु उत्पन्नहोतेहैं ६८ और वृषराशिमें स्थित भौमकीदशामें मनुष्य हर्षको प्राप्त होताहै और बहुत वार्ताकरताहै और गुरु देवताका भक्तहोताहै और परोपकारमें प्रीतिवाला होताहै ६९ और मिथुनराशिके भौमकीदशामें विदेश वासकी इच्छावाला और वायु और पित्तविकारको

मूलत्रिकोणोपगतस्यपाकेक्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥ अर्थोपलब्धिः खलुसाहसेनरणांगणेचारुयशोविशेषात् ॥ ६७ ॥ मेषोपयातस्यच भूसुतस्यस्युः पाककालेकिलमंगलानि ॥ स्यात्संततिः साहसमग्निबाधानाना विधारातिसमुद्भवः स्यात् ॥ ३८ ॥ वृषास्थितस्यावनिनंदनस्यपाक प्रवेशेपुरुषः सहर्षः अनल्पजल्पोगुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ६९ युग्मास्थितोर्वीतनयस्यपाके प्रवासशीलोनिलपित्तकोपः बहुव्ययः स्यात्स्वज नैर्विरोधोनरः कलाज्ञोनितरांविधिज्ञः ७० कर्कस्थभौमस्यभवेद्दशायामुदा नवान्हिप्रभवार्थयुक्तः नरोहिदारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्त्तिः ७१ सत्यक्तनीचांशकुजस्यपाकेस्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः चतुष्पदाढ्योबलवानक स्मात्प्रजायतेगुह्यरुजाभिभूतः ॥ ७२

प्राप्तहोताहै और बहुतखर्चको प्राप्तहोताहै और संबंधियों करके विरोधको प्राप्त होताहै और कलाके जानने वाला और विशेष करके विधानके जाननेवाला होताहै ७० और कर्कराशिके भौमकीदशामें वन और बागोंसें और अग्निकर्मसें धनलाभको प्राप्तहोताहै और स्त्रीपुत्रोंसें दूररहिताहै औरक्लेशकरके देहके बलकी हानिको प्राप्तहोताहै ७१ और कर्क राशिके अठाईस २८ अंशके उपरांत भौमहोवे तब पुरुषप्रसिद्धहोताहै और संपूर्ण गुणों करके युक्त होतेहै और चतुष्पदों करके युक्त होताहै और अकस्मात् गुह्यरोगको प्राप्तहोताहै ७२

और सिंहराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकरके बहुत मनुष्योंका स्वामी होताहै और स्त्री पुत्र दियोंसे वियोगको प्राप्त होताहै और सर्प और अग्निकरकेपीडाको प्राप्त होताहै ७३ और कन्या राशिके भौमकी दशामें मनुष्य सदाचारमें तत्पर होताहै और यज्ञकर्ममें प्रीति वाला और स्त्री पुत्र पृथ्वी धन अन्नके सुखको प्राप्त होताहै ७४ और तुलाराशिके भौमकी दशामें मनुष्य धन और स्त्रीके वियोगको प्राप्त होताहै और चतुष्पदोंसे रहित और कलहकेप्रसंगोंसे उत्साहसे रहित होता है और देहकी व्याकुलताको प्राप्त होताहै ७५ और वृश्चिक राशिके भौमकीदशामें मनुष्य टंषिक मेंको कर्त्ताहै और धनसंग्रह करणेमें मनकी प्रवृत्ति वाला होताहै और बहुतयोंके संग द्वेष कर्त्ताहै और बहुत बाता करणेमें तत्पर होताहै ७६ और धनराशिमें स्थित भौमकी दशामें ब्राह्मण और

सिंहस्थितक्ष्मातनयस्यपाकेनूनंभवेन्नायकताबहूनां ॥ कांतासुताद्यैश्चवियोग ताचबाधातथाहोतिहुताशजाता ७३ कन्यानुयातावनिनंदनस्यपाकेसदाचा रपरोनरःस्यात् ॥ यज्ञक्रियायामपिसादरश्चदारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्य ७४ तुलागतेक्ष्मासुतपाककालेस्याद्द्रव्यभार्यावियुतोहिमर्त्यः ॥ चतुष्पदाभा वकलिप्रसंगैर्हतोत्सवोवैविकलांगयष्टिः ७५ पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्यभौ मस्यपाकेकृषिकर्मकर्त्ता ॥ स्वसंग्रहेजातमनःप्रवृत्तिर्द्वेषीबहूनामतिजल्पकश्च ७६ धनुर्द्धरस्थस्यधरासुतस्यपाकप्रवेशेद्विजदेवभक्तः ॥ नरोनरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च ७७ वक्रस्यनक्रोपगतस्यपाकेराज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात् ॥ युद्धेविवादेविजयोनितांतंसद्रत्नचामीकरवाजिसौख्य ७८ शस्त्राद्भवेत्श्वापदतो उद्वेगशमुकस्यमहीसुतस्यपाकेप्रयत्नात्खलुकार्यसिद्धिः ॥ ऽपिभीतिःसंतापजल्पत्वमहाप्रयासाः ७९ आचारहीनश्चसुतादिचिंतावहुव्य योद्वेगसमाकुलत्वं ॥ कुंभोपयातस्यचमंगलस्यस्यात्पाककालेफलमेतदेव ८०

देवताकी भक्ति कर्त्ताहै और राजासे मनोरथको प्राप्तहोताहै और लडाईकेप्रसंगोंसेउत्साहके भंगकोप्रा प्त होताहै ७७ और मकरराशिमें स्थित भौमकी दशामें राज्यलाभहोताहै अपने कुलकेअनुमानसे औ र युद्धमें और विवादमें निरंतर जय होतीहै और श्रेष्ठ रत्न और सुवर्ण और घोडयोंका सुख होता है ७८ और उद्वेगोंसे रहित मकरराशिमें भौमकी दशामें यत्न करणेसे कार्य सिद्धि होतीहै और शस्त्रसे और व्याघ्रोंसे भय होताहै और संताप और विवाद होताहै और बडा प्रयत्न होताहै ७९ और कुंभराशिमें स्थित भौमकी दशामें आचारसे रहित और पुत्रादियोंकी चिंता और बहुत खर्च और उदासीनता होतीहै ८०

॥ और मेषराशिमें मूलत्रिकोणाशोंमें, मंगलस्थित होवे। तिसकी दशामें पृथ्वी और
पौत्र और स्त्रीका सुख होताहै और हठकरणेसें उत्साह करके धनका लाभ होताहै और
द्रुमें और यश होताहै ६७ ॥ और मेषराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकरके
गल कर्म होतेहे ॥ और संतानहोतीहै और हठ करके और अग्निकरके पीडा और अनेक-
पके शत्रु उत्पन्नहोतेहैं ६८ और वृषराशिमें स्थित भौमकीदशामें मनुष्य हर्षको प्राप्त होताहै-
र बहुत वार्ताकरताहै और गुरु देवताका भक्तहोताहै और परोपकारमें प्रीतिवाला होताहै ६९
मिथुनराशिके भौमकीदशामें विदेश वासकी इच्छावाला और वायु और पित्तविकारको

त्रिकोणोपगतस्यपाकेक्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥ अर्थोपलब्धिः
हसेनरणांगणेचारुयशोविशेषात् ॥ ६७ ॥ मेषोपयातस्यच
सुः पाककालेकिलमंगलानि ॥ स्यात्संततिः साहसमग्निबाधानाना
सिमुद्भवः स्यात् ॥ ३८ ॥ वृषास्थितस्यावनिनंदनस्यपाक
ः सहर्षः अनल्पजल्पोगुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ६९
र्वीतनयस्यपाके प्रवासशीलोनिलपित्तकोपः बहुव्ययः स्यात्स्वज
कलाज्ञोनितरांविधिज्ञः ७० कर्कस्थभौमस्यमवेदशायामुग्या
र्थयुक्तः नरोहिदारासुतदूरवर्त्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्त्तिः ७१
कुजस्यपाकेस्यात्ः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः चतुष्पदाढ्योबलवानक
रुजाभिभूतः ॥ ७२

को प्राप्तहोताहै और संबंधियों करके विरोधको प्राप्त होताहै और-
विशेष करके विधानके जाननेवाला होताहै ७० और कर्करा-
मार्गोंसे और अग्निकर्मसे धनलाभको प्राप्तहोताहै और स्त्रीपुत्रोंसे
लकी हानिको प्राप्तहोताहै ७१ और कर्क राशिके अठाई २८
रूपप्रसिद्धहोताहै और संपूर्ण गुणों करके युक्त होतेहै और चतु-
अकस्मात् गुदरोगको प्राप्तहो ७२

॥ और मीनराशिके भौमकी दशामें निश्चयकर्के पुत्रादियोंकी चिन्ता और धनका खर्च और रोग और उद्यमकरणेसे लाभ और फोडे और दद्रुकी पीडा और विदेश में वास होताहै ८१ ॥ और वर्गोत्तममें भौमके स्थितहोवे तब तिसकीदशामें संग्राममें जय होतीहै और बलकरके युक्त होताहै और अत्यंतगुणोंकर्के युक्त होताहै और अनेकप्रकारकीवस्तुकालाभहोताहै ८२ ॥ और नीच नवांशमें स्थित अर्थात्कर्कराशिके नवांशमें स्थित भौमकी दशामें वृथा भ्रमण होताहै और चित्तमें विषाद होताहै और प्राप्त होनेवाला जो फलहै सो अत्यंत दूर होताहै और नीच भावको प्राप्त होताहै और अधिकारसे रहित होताहै ८३ ॥ और मूलत्रिकोणमें और उच्चमें दशम स्थान स्थित भौमकी दशामें राज्यकी प्राप्ति होतीहै और शत्रुओंसे विजय होतीहै और शुभवाहन

मीनोपयाताचनिनंदनस्यदशाप्रवेशेहिसुतादिचिंता ॥ व्ययामयत्वंचकर्मोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासाः ८१ संग्रामसंप्राप्तजयाधिशालीबलान्वितोऽत्यंतगुणाभिरामः वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य नानाविधवस्तुलाभः ८२ नीचांशसंस्थस्यकुजस्यपाकेव्यथाटनत्वंमनसोविपादःफलोन्मुखंकार्यमतीवदूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् ८३ मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्यकुजस्यकर्माधिगतस्यपाके॥ राज्योपलब्धिर्विजयोरिपुभ्यःसद्वाहनालंकरणानिनूनम् ८४ इतिभौमदशाफलं॰ अथबुधदशाफलानि ॥ विद्याविवेकप्रभुतान्वितःक्रियायज्ञविधानचित्तः ॥ महोद्यमोदाप्तधनश्चनूनंभवेन्मनुष्यःशशिजस्यपाके ८५ शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलंस्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेषएव ॥ सद्वाद्यगीतादिरुचिर्नवीनसद्भांडभूषागृहनिर्मितत्वम् ८६ कुतूहलेभाषणहास्यहर्षःकालक्रमत्वंविनयोपलब्धिः आचार्यविद्वद्गुरुसंमतत्वकलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ८७

और भूषण निश्चयकर्के प्राप्त होतेहै ८४ इतिभौमदशाफलम् ॥ अब बुध दशाकाफल कहतेहैं ॥ बुधकी दशामें विद्या और विवेक और प्रभुताकर्के युक्त होताहै और टपिकर्ममें और यज्ञविधानमें चित्त वाला होताहै और बडे उद्यममें निश्चयकर्के धनको प्राप्त होताहै ८५ और शिल्पादि कर्मों में कुशलताको प्राप्त होताहै और नित्य प्रति उत्सवको प्राप्त होताहै और [illegible]को प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ बाजे और गीत और नवीन पात्र भूषण और घरके सुखको प्राप्त होताहै ८६ और कौतुक और वार्ता और हास्य और हर्ष करके कालव्यतीतहोताहै और नम्रता होतीहै और आचार्य और विद्यावालोंसे और गुरुसे सम्मति होतीहै और स्त्री पुत्रादि सुखकी प्राप्ति होतीहै ८७

ो और कफ और वात और पित्तकर्के बडी पीडा होतीहै और धनका संचय नहि हो और बुधका बलाबल देखकरके बुद्धिमाननें बुधकी दशाका शुभाशुभफलका विचार करणा ८८ अब विशेषफल कहतेहैं मेष राशिमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य एकस्थानमें स्थितनहि होवै और चोरी करणेमे और झूठ बोलनेमें और जूआ खेलनेमें और शठता करणेमें युक्त होवै और मित्र भावका त्यागकर्त्ताहै और धनसें रहित होताहै ८९ और वृष राशिमें स्थित बुधकी दशामें खर्चकर्ता कर्ताहै और माताका अनिष्ट फलकर्त्ताहै और स्त्री पुत्र मित्रादिक चिंताकाप्राप्त होताहै और गलरोगकर्के युक्त और भयकर्के पीडित होताहै ९०

पीडापिगाढाकफवातपित्तैरसंचयोर्थस्यचसौम्यपाके ॥ बलाबलं बुध विचार्यसर्वंशुभाशुभंत्वसुधियाविचिंत्यम् ८८ मेषस्थरौहिणसुतस्यपाकेनैक त्रसंस्थानकरोनरः स्यात् ॥ स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तोविमुक्तसौजन्यविधिस्तु धनेन स्व ॥ ८९ ॥ वृषाधिरूढस्यजगत्सुतस्यदशाप्रवेशेव्ययकृन्मनुष्य ॥ मातुस्त्वनिष्टंचकलत्रपुत्रमित्रादिचिंतागलरुक्भयार्त्तः ॥ ९० ॥ द्वंद्वाधि संस्थस्यबुधस्यपाकेत्वनेकवार्त्ताबहुजल्पकर्त्ता ॥ द्वारात्मजज्ञातिसुखं पत्नीनूनंजनन्याश्चसुखेनहीन ९१ कर्काश्रितस्येंदुसुतस्यपाकेविदेशवासो ल्पसुखोविरोधी।मित्रैःप्रवासल्काव्यकलाजितार्थोऽस्यथमनुष्योव्ययवान्नयुक्त ९२ सिंहस्थितस्येंदुसुतस्यपाकेलेलभ्यवेदैभवमैवधैर्य्यम् स्वमित्रदारात्मजसौख्य हानि स्यान्मानवानांमतिहीनताच ९३

र मिथुन राशिमें स्थित बुधकी दशामें अनेकवार्ता और बहुत बकवाद कर्ताहै और स्त्री पुत्र जातीका सुख होताहै और निश्चयकर्के माताके सुखकर रहित होताहै ९१ और कर्क राशि बुधकी दशामें विदेशमें बास होताहै और सुख थोडा होताहै और विरोध होताहै और कलासे धनलाभ होताहै और बडे व्ययमार्गकर युक्त होताहै ९२ और सिंहराशिके बुधकी दशामें ऐश्वर्य और धैर्य चंचल होताहै और अपने मित्र और स्त्री पुत्रके सुखकी हानि और बुद्धि हीनताहोतीहै ९३

॥ और कन्याराशिमें उच्चांशमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य बडे ऐश्वर्यकर्के युक्त और लिखनेमें और काव्यकलामें युक्त होताहै और शत्रुपक्षके जीतनें वाला और नीतिकर्के युक्त होताहै १४ और कन्याराशिमें मूलत्रिकोणांशमें स्थित बुधकीदशामें और विद्यादि गुणोंकर्के पूर्ण होताहै और विदेश गमनकी इच्छावाला होताहै और धन कों प्राप्त होताहै और विधिके जानने वाला होताहै १५ और कन्याराशिमें उच्च और त्रिकोणांशोंके उपरांत बुधकी दशामें पशुयोंके सुखकी हानि और अपने बंधुयोंसें विरोध और अंगोंमें कुलताकों प्राप्त होताहै और लडाईके प्रसंगकर्के हीनताहोतीहै १६ और तुला राशिके

उच्चाश्रितस्येंदुसुतस्यपाकेस्यान्मानवोवैबहुवैभवाढ्यः ॥ लेखाक्रियाकाव्यकलानुरक्तोजितारिपक्षश्चसुनीतियुक्तः ॥ १४ ॥ मूलत्रिकोणोपगतस्यपाकेविवेकविद्यादिगुणैःप्रपूर्णः ॥ विदेशयानानुरतोनरःस्यात्पराक्रमादात्तधनोविधिज्ञः ॥ १५ ॥ तुंगत्रिकोणक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्यपाकेपशुसौख्यहानिः स्वबंधुवैरंविकलत्वमंगेकलिप्रसंगेतिविहीनतास्यात् १६ तुलागतस्येंदुसुतस्यपाकेस्यात्क्षीणताद‍ङ्मतिवाग्विलासे शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणंचवाणिज्यतोर्थःपशुपीडनंच १७ पाकेभवेद्वृश्चिकसंस्थितस्यमृगांकसूनोर्मनुजोल्पतुष्टः आचारकर्मक्रमणानुरक्तोव्ययेनयुक्तःस्वजनैर्वियुक्तः १८ शरासनाध्यासनतांगतस्यबुधस्यपाकेबहुनायकः स्यात् मंत्रीचनामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतोमनुष्यः १९ मृगांकसूनोर्हिमृगास्थितस्यपाकेभवेद्भूरिऋणनराणां वक्राटनंवैकपटत्वमुच्चैर्नीचैशचसख्यंमतिहीनताच १०

दशामें नेत्र और बुद्धि और बाग्विलासमें क्षीणताहोतीहै और शिल्पादिकर्ममें अत्यंत निपुणता होतीहै और व्यापारसें धनलाभ और पशुयोंकोंपीडाहोतीहै १७ और वृश्चिक राशिमें स्थित बुधकी दशामें संतोष थोडा होताहै और आचार कर्मके करणेंमें युक्त होताहै और खर्चकर्के युक्त और संबंधियोंकर्के वियुक्त होताहै १८ और धनराशिमें स्थित बुधकी दशामें बहुत जनोंका स्वामी होताहै और राजाका मंत्री और दोनामकर्के प्रसिद्ध और कृषिकर्मसें धनलाभ कर्के युक्त होताहै १९ और मकरराशिके बुधकी दशामें मनुष्योंकों बहुत ऋण देना होजाताहै और बहुत ... और कपटहोताहै औरनीचोंकर्के मित्रता होतीहै और बुद्धिहीनहोतीहै १०

र कुंभराशिमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य तेजकर्के हीन और धनकर्के हीन होताहै और मित्रा
दिकी पीडामें पीडित और विदेशगमन और व्यसनकर्के युक्त होताहै १०१ ॥ और मीन
राशिमें नीचांशोंके मध्यमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य विवेक और सत्यकर्के रहितहोताहै औरस्था
नरको प्राप्त होताहै और उद्यमकरणेमें स्वभाववाला और थोडेलाभवाला और कृशदेहकी प्रभा
वाला होताहै १०२ इतिबुधदशाफलं अथगुरुदशाफलानि बृहस्पतिकी दशाके प्रवेशमें राजासें
और वजीरसें मनोरथप्राप्तिवाला होताहै और श्रेष्ठ कर्म और धर्म और शास्त्रके जानने
वालाओर निरंतरनम्रताकोप्राप्तहोताहै १०३ और यज्ञादिकर्मोंमें अत्यंतआदरवाला और ब्राह्मण
और देवताओंकी भक्तिमें प्रवृत्तिवाला और बडे धनको प्राप्त और ऐश्वर्ययुक्त और निश्चयकर्के पुत्रादिसु
खोंको प्राप्त होताहै १०४ और पृथ्वी और वस्त्रादि सुखकालाभ और बलकर्के युक्त और कुलमें प्र

सौम्यस्यकुंभोपगतस्यपाकेविहीनतेजामनुजोतिनिःस्वः मित्रादिपीडापरिपी-
डितंस्माविदेशयानव्यसनानुरक्तः १०१ नीचांशसंस्थस्यबुधस्यपाकेविवेकस
त्योपहतोहिमर्त्यः स्थानांतरस्थोव्यवसायशीलःस्यादल्पलाभःकृशकायका
तिः १०२ इतिबुधदशाफलं अथगुरुदशाफलानि दशाप्रवेशेत्रिदशाचितं
स्यभूपप्रधानात्समनोरथःस्यात् सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ताभवेन्मनुष्यःसततंवि
नीतः १०३ यज्ञादिकर्मण्यतिमादरत्वंभवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ अत्यर्थमर्थो
विभुताविशेषःपुत्रादितोषःपुरुषस्सनूनं १०४भूम्यंबराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलो
पपन्नःकुलधूर्यताच गतागतागामिविचारणोच्चैःसत्संगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च१०५
दाहादिपीडापिगलेकदाचिद्विरुद्धभावस्थितितोविचिंत्यम् सामान्यमेतत्फलमु
क्तमार्यैर्वक्ष्येधुनायत्प्रतिराशिपूर्वं १०६ दशाप्रवेशेत्रिदशाचितस्यमेषोपया-
तस्यभवेन्नराणां धनंधनेशाद्बहुनायकत्वकलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः १०७ वृषो-
पयातस्यचगीष्पतेःस्याद्दशाप्रवेशेपुरुषोतिदुःखी विदेशवासीबहुसाहसश्चवि
त्ताल्पताचित्तगतोत्सवश्च १०८युग्मोपयातस्यबृहस्पतेश्चदशाप्रवेशेपुरुषोऽ
शुचिःस्यात् मात्राचगोत्रप्रभवैर्विरोधीकलत्रवादातिविषादतप्तः १०९

सन्नता और भूत भविष्य वर्तमान कालके विचारणेवाला और बडोंकी संगतिवाला और श्रेष्ठबु
द्धि और धैर्यवाला होताहै १०५ और दाहादि पीडा कदाचित् गलेमें होताहै और स्थानमें
विरोधहोनाहै इहफलबृहस्पतिकी दशाकासामान्यवत्कर्केअनुमानसे कहाहै और विशेष प्रत्येकराशि
काफलकहतेहैं १०६ मेषराशिमेंस्थितगुरुकीदशामें धनकी प्राप्ति और बहुतमनुष्योंकीनायकताऔ
र स्त्री पुत्रादि सुखको प्राप्त होताहै १०७ और वृषराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य दुःख
को प्राप्त होताहै और विदेशमें वास होताहै और बहुत हठी होताहै और धन थोडा होताहै चनके
रबचैकरणेतेउत्सवहोताहै १०८ और मिथुन राशिमें स्थितबृहस्पतिकीदशामें मनुष्यअपवित्ररहिताहै
और माताकर्के और सवधियोंसे विरोधरहिताहै और स्त्रीकेवादकर्केअत्यंतखेदको प्राप्तहोताहै १०९

और कर्कराशिमे उच्चांशमे स्थित बृहस्पतिकी दशामे निश्चय करके राज्यकी प्राप्ति होती है और विशेष नामान्तरको प्राप्त होताहै और बडेलोकके मैत्री होतीहै और बडा ऐश्वर्य होताहै ११० और उच्चांशोंके उपरांत कर्कराशिके बृहस्पतिकी दशामे माता पिताके दुःखको प्राप्त होताहै और पूर्वउत्पन्नकियाहो धन तिसके नाशकरके तप्त है और अनेक दुर्व्यसनो करके युक्त होताहै १११ और सिंहराशिमे स्थित बृहस्पतिकी दशामे मनुष्य धनवान् और श्रेष्ठहोताहै और राजसेमानकोप्राप्त होताहै और स्त्री और पुत्रओंसे आनंदकरके हर्षकोप्राप्तहोताहै ११२ और कन्याराशिके बृहस्पतिकी दशामे मनुष्य राजासेमानको प्राप्तहोताहै और स्त्रीपुत्रसे सुखकोप्राप्तहोताहै और कदाचित् शूद्रादि नीचज

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्यस्यात्पाककालेकिलराज्यलब्धिः विशिष्टनाम्नाप्र थितत्वमुच्चैरुच्चैश्चसख्यंबहुवैभवंच ॥ ११० ॥ वाचांपतेरुच्चसमुत्थितस्यपा कप्रवेशेपितृमातृदुःखीपूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेणतप्तश्चनानाव्यसनाभिभूतः ॥ १११ ॥ सिंहस्थितस्यामरपूजितस्यपाकप्रवेशेधनवान्वदान्यः ॥ नृपात्समानोनतुमानवःस्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥ ११२ ॥ कन्याधिरूढस्यगुरोर्दशायांभवेन्मनुष्योनृपलब्धमानः ॥ कांतासुतावाप्तसुखःकदाचिच्छूद्रादिनीचैःकलहप्रसक्तः ११३ तुलास्थदंभोलिभृदीज्यपाकेवि वेकहीनःप्रमितान्नभोक्ता ॥ कलत्रपुत्रैःकृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनोनतुमानवः स्यात् ११४ बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्यदशाप्रवेशेमतिमान्समर्थः ॥ प्रा ज्ञःसुतोत्साहयुतोविनीतोऽनृणोभवेन्नानियमेनहीनः ११५ मूलत्रिकोणांश गतस्यपाकेगुरोर्दशायांमतिमान्मनुष्यः ॥ स्यान्मंडलीकोयदिवाप्रधानः पित्रान्वितःस्त्रीवचनानुरक्तः ११६

नोंकरके कलहको प्राप्त होताहै ११३ और तुलाराशिमे स्थित बृहस्पतिकी दशामें विवेक करके रहित होताहै और थोडा अन्न भोजन करताहै और स्त्री पुत्रोंकरके शत्रुभाव होताहै और उत्साहसे हीन होताहै ११४ और वृश्चिक राशिमे स्थित बृहस्पतिकी दशामे बुद्धिवाला और समर्थ होताहै और चतुर और पुत्रके उत्साहकरके युक्त होताहै और नम्र होताहै और ऋणसे रहित होताहै और नियमसे रहित होताहै, ११५ और धनराशिमे मूलत्रिकोणांश गत गुरुकी दशामे बुद्धिकरके युक्त मनुष्य होताहै और मंडलका राजा अथवा राजाका मंत्री होताहै और पिताकरके युक्त और स्त्रीके वचनमे अनुरक्त होताहै – ११६

और धनके वोसे २० अंशसें उपरंतगुरुकीदशामें रुषिकर्ममेंऔर यज्ञकर्ममें औरचतुष्पदोंमें मनकी प्रवृत्ति वाला होताहै ११७ और मकरराशिमें नीचांशगतगुरुकी दशामें परकर्मके करणे वाला और पेटमें और गुह्यस्थानमेंरोगककें युक्त होताहै और धन और सबंधियोंके वियोगकों प्राप्त होताहै ११८ और नीचांशोंके उपरंत मकर राशिगत बृहस्पतिकी दशामें नीच जनसे और रुषिकर्मसें धनलाभ होताहै और वृक्षोंसें और दूसरेसें ठगीकरणेसें क्लेशको प्राप्त होताहै ११९ और कुंभराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य कलाके जाननेवाला होताहै और प्रसिद्ध विद्यावाला और धनवाला और

नखांशकेभ्यःपरतश्चचारेसंस्थस्यदेवेंद्रगुरोर्दशायां ॥ कृषिक्रियायज्ञच तुष्पदेषुभवेन्मनुष्यस्यमनःप्रवृत्तिः ॥ ११७ ॥ नीचांशसंस्थस्यमृगा न्वितस्यगुरोर्दशायांपरकर्मकर्त्ता ॥ मर्त्योभवेज्जाठरगुह्यरोगीस्याद्वियोगी धनबांधवैश्च ॥ ११८ ॥ वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्यपाकेनिपादात्क पितोधनाप्तिः ॥ भूमीरुहेभ्योजनवचनाद्वाक्लेशोपलब्धिर्नतुमानवस्य ॥ ११९ ॥ पाकप्रवेशेकलशस्थितस्यवाचामधीशस्यनरःकलाज्ञः ॥ विद्याप्र सिद्धार्थमहामतिःस्यात्कांताविलासानुरतोनितांतम् ॥ १२० ॥ अपां पथांतस्यचगीष्पतेःस्याद्दशाप्रवेशेपुरुषोमनस्वी ॥ सन्मानसूनुप्रमदादिसं पद्राजान्वयोपात्तमहासुखश्च ॥ १२१ ॥ इतिगुरुदशाफलम् ॥ अथशुक्रद शाफलानि ॥ दैत्यामात्यःस्वीयपाकप्रवेशेयोपाभूपारत्नवस्त्रोपलब्धिं नाना मानंमानवानांप्रकुर्यात्कंदर्पस्याभ्युद्गमात्सौख्यमुच्चैः १२२

बडिबुद्धिवाला होताहै और निरंतर स्त्रीके विलासककें युक्त होताहै १२० और मीन राशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य मनस्वी होताहै और श्रेष्ठ मान और पुत्र और स्त्रीसें लेककें संबंधियोंके सुखको प्राप्त होताहै और राजाके कुलसे बडे सुखको प्राप्त होता है १२१ इतिगुरुदशाफलम् ॥ अथशुक्रदशाफलानि ॥ शुक्र अपनी दशाके समयमें स्त्री और भूषण और रत्न और वस्त्रोंका लाभदेताहै और अनेक प्रकारेका मान करैहै और कामदे वकी वृद्धि करैहै और बडोंकर्के सुख प्राप्त करैहै १२२

और गीतमें और नृत्यमें अत्यंत हर्षको प्राप्त होताहै और विद्याअभ्यासमें प्रीति और सुंदरस्वभाव होताहै और बडी बुद्धि करताहै और अन्नदानमें प्रवृत्ति करताहै, और खरीदनेमें और वस्तुके बेचनेमें मनुष्य चतुर होताहै १२३ और गौओंसे और वाहनोंसे और पुत्रोंसे और पौत्रोंसे सुख होताहै और पूर्वसंपादित धनकी प्राप्ति होती है और अपने कुलमें लड़ाई होतीहै घरमें और मार्गस्थानमें लड़ाई होतीहै १२४ और कफ और वायुकरके निश्चयकर देह निर्बल होताहै और नीचजनोंसे प्रीति होतीहै और वैर होताहै और मित्रादियोंकी चिंताकरके मन परितप्त होताहै और दुष्टजनोंसे मित्रभाव कदाचित् होताहै १२५ यह शुक्रका सामान्य फल बलानुमानकरके पूर्व मुनियोंने कहाहै अब प्रत्येक राशिगत

गीतेनृत्येत्यंतसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः बुध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रयेवाक्रयेवा १२३ गोवाहनेभ्योननुनंदनेभ्यः सौख्यंभवेन्नंदननंदनेभ्यः पूर्वार्जितस्यद्रविणस्यलब्धिः कलिःकुलेस्याद्बलनात्स्थलाच्च १२४ कफानिलाभ्यांकिलनिर्बलंस्यात्कलेवरंनीचरतिश्चवैरं मित्रादिचिंतापरितप्तमेवचित्तंचसख्यंकुजनैःकदाचित् १२५ सामान्यतःप्रोक्तमिदंसितस्यदशाफलंपूर्वमुनिप्रणीतं अथोच्यतेऽत्रप्रतिराशिजातंफलंप्रयोज्यंबलतारतम्यात् १२६ शुक्रस्यपाकेक्रियसंस्थितस्यस्त्रीवित्तसौख्यप्रच्युतिर्नराणाम् सदाऽटनत्वंव्यसनानिनूनमुद्वेगताचंचलचित्तवृत्तिः १२७ वृषोपयातोशनसोदशायांकृषिक्रियासत्यसुसौख्यवृद्धिः शास्त्रेमतिःस्यात्सुतरांविचित्रादानेरुचिःकन्याजननप्रसादः १२८ ॥ युग्मगामिभृगुजस्यदशायांमानुषोभवतिकाव्यकलाज्ञः हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः १२९

शुक्रका फल कहतेहैं सोभी बलानुमानकरके कथन करणे योग्यहै १२६ मेषराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें स्त्री, पुत्र, सुखका नाश होताहै और सर्वदाकाल भ्रमण और दुर्व्यसनोंकी प्राप्ति और उद्वेगता, और चंचलचित्तवृत्ति होतीहै १२७ और वृषराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें कृषिकर्मकी और सत्य और सुखकी वृद्धि होतीहै और शास्त्रमें बुद्धि होतीहै और दानमें रुचि और कन्याका जन्म और खुशी होतीहै १२८ और मिथुन राशिमें स्थित शुक्रकी दशामें मनुष्यका कला के जाननेवाला होताहै और हासेमें और आश्चर्य कथामें बडी रुची होतीहै और विदेशगमनमें चित्तका उत्साह होताहै १२९

और कर्क राशिमें स्थित शुक्र की दशामें मनुष्य अपने कार्यमें चतुर होताहै और स्त्रीकी प्राप्ति में श्रेष्ठउत्साह होताहै और अनेक प्रकारकेउद्यमकरनेवाला और कृतज्ञहोताहै १३० और सिंहराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें श्रेष्ठस्त्रीके संबंधसें धन प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ मनकर्के युक्त और बुद्धि कर्के युक्त और थोडे सुखकर्के युक्त होताहै और गौओंके समूह नाशकों प्राप्त होतेहैं १३१ और कन्या राशिमें स्थित शुक्रकीदशामें पुत्रके सुखकर्के रहित होताहै और उत्साह भंग होताहै और चंचल स्वभाव होताहै और विदेशमें वासकर्ताहै और अपनी स्त्रीकर्के रहित होताहै १३२ और तुलाराशिके प्रथम नवांशमें स्थित शुक्रकीदशामें राजप्रतापकों प्राप्त और बडेयाईकों प्राप्त होताहै और नित्य उत्साहका उद्वेग होताहै और स्त्रीपुत्र और धन और शौर्यकोंप्राप्तहोताहै १३३ मूलत्रिकोणमें शुक्र स्थित होवे तिसकी दशामें विशेष मानकों प्राप्त होताहै और कृषि पशु धन धान्यादियोंकी प्राप्ति अथवा अपनी जातिसें धनकी प्राप्तिहोतीहै १३४ और वृश्चिक राशिमें स्थित

कर्कोपयातस्यसितस्यपाकेभवेन्मनुष्योतिजकार्यदक्षः भार्यांतरावाप्तिसमुत्सु कोपिनानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः १३० सिंहेशुक्रदशायांप्रवरस्त्रीसंश्रयाद्धना निस्युःप्रवरचित्तयुतोधीमानल्पसुखोगोगणाननश्यंति १३१ कन्याश्रितशुक्रद शाप्रवर्ततेपुत्रसुखहीनः भग्नोत्साहीचपलोविदेशवासीस्वदारसंत्यक्तः १३२ वर्गोत्तमसितपाकेऽस्मिन्नृपचेष्टामहत्वंच ॥ नित्योत्साहोद्वेगंलभतेस्त्रीपुत्रध नशौर्यम् १३३ मूलत्रिकोणसंस्थस्यभृगोर्विपाकेविशिष्टमानयुतः ॥ कृषि पशुधनधान्याद्यैःसंपन्नोज्ञातितोधनाप्तिर्वा १३४ अटनोबहुप्रलापीपरकार्यरतो निमित्तकलहाढ्यःवल्हणभागीपुरुषोवृश्चिकसंस्थितभृगोःपाके १३५ चापेशुक्र दशायांधीरश्शत्रुकुलाधिकोधीमान् काव्यकलास्वतिनिपुणोन्नृपदायितोदारपुत्र संपन्नः १३६मकरेशुक्रदशायांश्लेष्मसहिष्णुःसुखीचरिपुहंता ॥ वातश्लेष्मप्रकृ तिःकुत्सितदारोविगर्हितकुटुंबः १३७ कुंभेशुक्रदशायामुद्वेगीरोगवान्न यज्ञश्च ॥ परयुवतिगोव्रतघ्नोनीचाचारःसुकर्मरहितश्च १३८

शुक्रकी दशामें बहुतभ्रमण और प्रलाप कर्ताहै और परकार्यमें रत होताहै और जानकर्के लडा ई कर्ताहै और बडेऋणकर्के युक्त होताहै १३५ और धन राशिमें स्थित शुक्रकी दशामें धीर होताहै और शत्रुयोंकोवृद्धिवाला और बुद्धिवालाहोताहै और काव्यकलामें अत्यंतचतुर और रा जाका प्यारा और स्त्री पुत्रोंकर्के संपन्न होताहै १३६ और मकराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें श्लेष्मकों सहारणे वाला और सुखी और शत्रुयोंके हत करणेवाला होताहै और वात श्लेष्मकीप्र कृतिवाला और निंदसी और निंद्य कुटुंब वाला होताहै १३७ और कुंभराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें उद्वेगकर्के औररोगकर्केयुक्त होताहै और नीतिकेजाननेवालाऔर परस्त्री गमनमें रतऔरगौ और व्रत नष्ट करणे वाला और नीचाचारमें रत और श्रेष्ठ कर्मसें रहित होताहै १३८

और मीनराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें वंशके धारणे वाला और ज्ञानीऔरराजासेंधनलाभकोंप्राप्त होताहै और कृषिकर्मसें और निधिसें धनलाभकर्के युक्त होताहै और सुंदर देहकर्केयुक्तप्रधानताकों प्राप्त होताहै १३९ और उच्चमें स्थित शुक्र द्वादश स्थानमें वा दशम स्थानमें गत होवे और लग्नमें स्थित होवे और पापी ग्रहऔर शत्रु ग्रहसें रहित होवे तबतिसकी दशामें बहुत रत्नोंकर्के युक्त और बुद्धिकर्के युक्त और विशालनेत्रों वाला और अपने वंशमें राजा होताहै ॥ १४० ॥ इतिशुक्रदशाफलानि ॥ अब शनिकीदशाका फलकहतेहैं शनिकीदशामें मनुष्य प्रसिद्ध और बुद्धिवाला और अनेक शास्त्रोंके जाननेवाला होताहै ॥ और ग्राम और, पुरोंकेसमूह का स्वामी होताहै ॥ और पितासें विधिके जाननेवाला होताहै १४१ और हाथीघोडे वाहनादियोंकर्के संपन्न और जातिसेंधनलाभकों प्राप्त

मीनेशुक्रदशायांवंशधरोज्ञानवान्नरेंद्रधनःकृषिनिधिधनलाभयुतःकमनीयवपुःप्रधानतांयाति १३९ उच्चस्थितेभृगुसुतेव्ययकर्मगेवालग्नेपिपापरहितेनतुवैरियुक्तःतस्याभिपाकविषयेवहुरत्नपूर्णोधीमान्विशालनयनोनिजवंशनाथः १४०॥इतिशुक्रदशाफलानि अथशनिदशाफलानि सौरस्यदशांप्राप्यप्रथितोधीमाननेकशास्त्रज्ञः ॥ वृंदग्रामपुराणांनेतापितृतोविधिज्ञश्च १४१ गजतुरगवाहनाद्यैःसंपन्नोज्ञातितोधनप्राप्तिः ॥ द्विजदेवपूजितत्वात्सुरागभवनाश्रितोल्पसंतुष्टः१४२ निद्रालस्यश्रमोवास्वजनद्वेष्योजरांगनासक्तःधर्मप्रियोविनीतोदेवायतनक्रियार्चनाभिरतः १४३ वातकफाद्यैःपीडाविकलांगोजायतेकृशांगोवा सामान्यमेतदुक्तंराशिंप्रत्येकमंशकाद्वक्ष्ये१४४ मंददशायांमेषेप्रवासनिरतःस्वमंत्रनिरतश्च ॥ पामादिचर्मरोगीमायावीमातृबंधुरहितश्च १४५

होताहै और ब्राह्मण और देवताके पूजनेसें श्रेष्ट घरके सुखकर्के युक्त होताहै और थोडेसंतोषकों प्राप्त होताहै १४२ और निद्रा और आलस्य और श्रम कर्के युक्त होताहै और मित्रोंसें द्वेष कर्ताहै और वृद्धस्त्रीमें रत होताहै और धर्ममें प्रीतिवाला और नम्र और देवताके घर बनानेमें रत होताहै १४३ और वातकफादि रोगकर्के पीडित होताहै और व्याकुल वा कृश अंगोंकर्के युक्त होताहै यह सामान्य शुक्रका फल बलके अनुमानसें कहाहै और प्रत्येक राशि और नवांशका फल कहतेहैं १४४ और मेषराशिमें स्थित शनिकी दशामें विदेशमें रतहोताहै और अपने मंत्रमें रत होताहै और त्वचामें कंडूरोगादियों कों प्राप्तहोताहै और मायाके जाननेवाला और माता और बंधुओंसें रहित होताहै १४५

॥ और नीचांशके उपरंत शनिकी दशामें धान्यज धर्मकी प्राप्ति होतीहै और उवदेशसें गिरणेसें अंग क्लेश होताहै ॥ और वृद्धस्त्रीकी प्राप्ति होतीहै और उत्साहकर्के रहित होताहै ॥ १४६ ॥ और वृषराशिमें स्थित शनिकीदशामें विशेष नामांतरकों प्राप्तहोताहै और बडीबुद्धि वाला होताहै और राजावा राजाकेतुल्यहोताहै और श्रद्धा औरधर्ममें श्र म करणे वाला और धर्ममें प्रीति वाला होताहै १४७ और मिथुन राशिके शनिकी दशामें क्ष मकर्केहीन होताहै और वृद्ध स्त्रीमेंरत होताहै और स्त्रीसें और चोरसें धनहानिकों प्राप्त होताहै और परकार्यमें रत होताहै और युद्धमें अत्यत भयकों प्राप्त होताहै १४८ और कर्कराशिमें स्थि त शनिकी दशामें पुत्र और स्त्री और मित्रोंकर्के मनचंचल होताहै और कर्णोंमें और नेत्रोंमें पी

धान्यजधर्मोवाप्तिर्नीचाद्भ्रष्टस्यसूर्यपुत्रस्य पतनांगक्लेशयुतोजरांगनाप्तिर्निरुत्साहो
१४६वृषभेसौरिदशायांविशिष्टनामान्वितोतिमेधावी राजाराजसमोवाश्रद्धासुकृत
श्रमोतिधर्मरतिः१४७मिथुनेक्षमाविहीनोमंददशायांजरांगनाभिरतः स्त्रीचोर
तोर्थहानिःपरकार्य्यरतोरणेतिभीतश्च १४८ कर्कस्थितार्कात्मजपाककालेलो
लंमनःपुत्रकलत्रमित्रैः श्रोत्रेचनेत्रेपरिपीडनंस्यात्कलेवरंनिर्बलतांप्रयाति१४९
पंचाननस्थस्यशनेर्दशायांवाधाभवेद्वैविविधानराणां दारात्मजाद्यैःकलहप्रसंग
स्तुरंगगोदासजनेपुसौख्यम् १५० कन्योपयातस्यशनेर्दशायांभवेत्क्रमेणद्र
विणोपलब्धिः ॥ जलाच्चभूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापिमहाप्रमोदः १५१
कालेदशायांनलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः गजाश्वहेमांवरर
त्नपूर्णाभवेन्नराणांकरुणाधिकत्वम् १५२ सरीसृपस्थस्यशनैश्वरस्यपाकेन
रः साहसकर्मयुक्तः वृथाटनोवैकृपणोऽनृतश्चनीचानुरक्तश्चदयाविहीनः१५३

डित होताहै और देह निर्बलताकों प्राप्त होताहै १४९ और सिंहराशिमें स्थित शनिकी दशामें म नुष्योंकों अनेक प्रकारकीपीडा होतीहै और स्त्रीपुत्रादियोंकर्केलडाईहोतीहै और घोडे और गौआ और चाकरोंसे दुःख होताहै १५० और कन्याराशिमें स्थित शनिकीदशामे क्रमकर्के धनका ला भ होताहै और जलके प्रसंगसें और वृक्षोंसें और उच्चस्थानसें वडा आनंद होताहै १५१ और तुला राशिमें स्थित शनिकी दशामें श्रेष्ट राज्यलक्ष्मी और हाथी घोडे स्वर्णवस्त्ररत्नोंकर्के पूर्ण प्राप्तहोतीहै और वडीदयाकर्केयुक्तहोताहै ॥ १५२ और वृश्चिक राशिमें स्थित शनिकी दशामें मनुष्य हठके करणे वाला और वृथा भ्रमण करणे वाला और कृपण और झूठ बोलनेवा ला होताहै और नीचकर्ममें रत और दयाकर्के रहित होताहै १५३

और धनराशिमें स्थित शनिकी दशामें मनुष्य राजाका वजीर होताहै और संग्राममें धैर्यवाला और चतुष्पदोंकर्के युक्त होताहै और स्त्रीपुत्रके आनंदकर्के युक्त होताहै १५४ और मकरराशिमें स्थित शनिकी दशामें मनुष्योंको बडे श्रमकर्के धन उत्पन्न होताहै और नपुंसक और स्त्रीजनोंकी सेवा करणे वाला होताहै और विश्वासघात कर्के धनका नाश होताहै १५५ और कुंभराशिमें स्थित शनिकी दशामें निश्चयकर्के सुखहोतेहै और वडी प्रतिष्ठा होतीहै और वड्योंको कर्के कुलमें श्रेष्ठता प्राप्त होतीहै और कृपिकर्मसे लाभ और पुत्रधनादियोंका लाभहोताहै १५६ और मीनराशिमें स्थित शनिकी दशामें अनेक प्रकारके ग्राम औरपुरोंसे और धनसे औरस्त्रीयोंसे सुखोंऔर उत्साहसे रहित होताहै १५७ इतिश-

धनुर्द्धरस्थस्यशनैश्चरस्यपाकेनरः स्यात्साचिवोनृपाणाम् ॥ संग्रामधीरश्चतुरंघ्रियुक्तः कांतासुतानंदविनोदयुक्तः १५४ शनेर्दशायांमकराश्रितस्यवहुश्रमोत्पन्नधनंनराणां नपुंसकस्त्रीजनसेवकत्वविश्वासघातेनधनक्षितिश्च १५५ शनेर्दशायांकलशाश्रितस्यसुखानिनूनंमहतीप्रतिष्ठा श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुलेनरस्यकृपिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः १५६ भवेद्दशायांननुभानुसूनोर्मीनोपयातस्यचमानवस्य नानापुरग्रामधनांगनाभ्यः सुखंतथोत्साहविहीनताच १५७ ॥ इतिशनिदशाफलानि ॥ अथलग्नदशाफलानि दशाद्दकाणैश्चतनोः क्रमेणस्यादुत्तमामध्यमताऽधमाच स्थिरेचकष्टाशुभदाचमध्यामिश्रेऽधमामध्यतमोत्तमाच १ शुभाणिमध्यानिचनिंदितानिफलानिलग्नेशदशादितानि तान्येवकल्प्यानिसुधीभिरत्रवलानुमानात्तनुनायकस्य २ संशालतेयः किलदिग्वलेनखेटः स्वकार्यंपुरुपचनीत्वा महाप्रतिष्ठांकुरुतेदशायांनानाधनाभ्यागमनानिनूनम् ३

निदशाफलानि ॥ अथलग्नदशाफलानि ॥ और लग्नकी दशा द्रेष्काणोंकर्के श्रेष्ठ मध्यम और निंद्य होतीहै स्थिरलग्नमें पूर्वद्रेष्काण होवे तब श्रेष्ठ और मध्यद्रेष्काणमें मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें नेष्ट होतीहै और द्विस्वभाव लग्नमें प्रथमद्रेष्काणकी नेष्ट और मध्यद्रेष्काणकी श्रेष्ठ और तीसरेद्रेष्काणकी मध्यम होतीहै और चर लग्नमें प्रथमद्रेष्काणमें नेष्ट और मध्यमें मध्यम और तीसरेमें श्रेष्ट दशाहोतीहै १ और तीन प्रकारकी लग्नकी दशा जो कहिहै तिसका फल लग्नेशके वलानुमान कर्के कहे २ और जो ग्रह दिग्वलकर्के युक्त होवे सो ग्रह अपनी दशाको लेजायकर्के वडी प्रतिष्ठाको देताहै और अनेक प्रकारका धन प्राप्त कराहै ३

और वक्रगति ग्रहकी दशामें स्थान और धन और सुख अत्यंत चंचल होतेहैं और विदेश गमन में मन इच्छा कर्त्ताहै और लोकमें बडी हानिकों प्राप्त होताहै ४ और मार्ग गति ग्रहकी दशामें सन्मान और सुख और धन और यशकी वृद्धिहोतीहै और जो ग्रह जन्मलग्नसें छटे और अष्टम और द्वादश स्थानसें रहित होवे तिसकी दशामें इच्छा फल प्राप्त होताहै ५ और यो ग्रह नीचराशिमें वा शत्रुकी राशिमें वा वक्रगति होवे तिसकी दशामें मनुष्य नीच कर्ममें रत होताहै और विदेसमें वास कर्त्ताहै और अपने संबंधियोंसें रहित होताहै और हठ करणेमें युक्तहोताहै ६ ॥ और राहुकरके युक्त यो ग्रह तिसकी दशामें विशेषकरके रिष्ट होताहै और दशाके अंतभागमें निश्चयकरके दुःख और हानिः और विदेशगमनहोताहै ७ और जन्मराशि और जन्मलग्नके स्वामीके

विलोमगामिग्रहपाककालेस्थानार्थसौख्यान्यतिचंचलानि प्रवासशीलत्वमतीव चेतोलोकेमहत्त्वापचयत्वमेव ४ ऋजुप्रयातद्युचरस्यपाकेसन्मानसौख्यार्थयशः प्रवृद्धिः षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्यग्रहस्यपाकेभिमतार्थसिद्धिः ॥ ५ ॥
नीचारिभस्थस्यचवक्रिणोवापाकेकुकर्माभिरतिर्मनुष्यः विदेशवासीनिजबंधुवर्गैस्त्यक्तोभवेदाग्रहताभियुक्तः ६ स्वर्भानुयुक्तस्यचखेचरस्यदशावरिष्टाप्ततिरिष्टदास्यात् पाकावसानेनमानवानांदुःखानिहानिश्चविदेशयानम् ७
जननराशिजनुस्तनुनाथयोःरिपुदशासमयेमतिविभ्रमः भयमरेरपिराज्यपरिच्युतिःखलजनैःकलहोबलहीनता ८ लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्यभवेद्दशाया मतिपीडनंहि दशावसानेपिचमानवानांभवेत्समाप्तिःखलुजीवितस्य ॥ ९ ॥
क्रूरास्यखेटस्यदशांतरालेक्रूरग्रहस्यांतरजादशाचेत् शत्रूद्गमोर्थस्यपरिक्षयःस्यादायुःक्षयेवेतिवदेन्नराणाम् १० दशाप्रवेशेपिखगाःसलग्नाःकार्याःस्फुटास्तत्रदशापतिश्चेत् लग्न १ त्रि ३ खा १० या ११ रि ६ गतोथलग्नेतन्मित्रवर्गःशुभदादशासा ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शत्रुभावकी दशामें बुद्धिमेंभ्रम होताहै और शत्रुकाभय और राज्यकानाश और दुष्टजनोंसेकलहहै और बलकी हीनता होतीहै ८ और जो ग्रह लग्नेशसें अष्टम भावमें स्थित होवे तिसकी दशामें निश्चय करके पीडाहोतीहै और तिसकी दशाके अंतमें मृत्युभी प्राप्त होताहै ९ और क्रूर ग्रहकी दशामें क्रूर ग्रहकी अंतर्दशा जिसकालमें होवे तब शत्रुओंका उदय और धनका नाश तथा आयुकाक्षय होताहै १० और कहतेहैं दशा प्रवेश कालमें ग्रहोंको लग्न सहित संपूर्ण स्पष्ट करे और तिनमें दशाका स्वामी लग्नसें १ और तीसरे ३ और दशमें १० और ग्यारहमें ११ और छठे ६ स्थानमें स्थितहोवे और तिसकेमित्रराशिवर्गनमें स्थितहोवे तब सो दशाशुभ फलदेतीहै ११

और जिस ग्रहका इष्ट फल अधिक होवे तिसकी दशा शुभ होतीहे और जिसग्रह का कष्ट फल अधिक होवे तिसकी दशा दुष्ट होतीहै और जिस ग्रहके इष्ट कष्ट तुल्य होवे तिस की दशामें शुभपाप मिश्रित फल होताहै १२ और दशाप्रवेशकालमें यो ग्रह अपने उच्चमें और मूलत्रिकोणमें वा स्वक्षेत्रमें स्थित होवे और शुभ और मित्रके वर्गमें स्थित होवे और शुभ मित्रों करके देखाहोवे सो रिष्टभंग कर्त्ताहै १३ इतिमहादशाफलानि

अब अंतर्दशाका फल कहतेहे अब दशाफल कहनेसें उपरत सूक्ष्म फल ज्ञानके वास्ते ग्रहोंकी अंतर्दशा कहतेहे और जिस प्रकारकर्के विद्वानोने विचारकर्के शुभाशुभ फलकी कल्पना करीहै तैसेंहि इसग्रथमें कहतेहे १ और यद एकराशिमें स्थित पापीग्रहकी दशामें पापग्रहकी अंतर्दशा होवे तव सर्वदा काल रोग और विवाद और शत्रुका और राजाका भय और दीनता

अथाप्रदिष्टेष्टफलाधिकस्यदुष्टादशाकष्टफलाधिकस्य यस्येष्टकष्टेभवत समाने फलविमिश्रकिलतस्यपाके १२ दशाप्रवेशेखचर स्वतुंगेमूलत्रिकोणेयदिवास्व गेहे शुभेष्टवर्गेस्थितिकृच्छुभेष्टैर्दृष्टोदृगारिष्टहरोभवेत्स १३ इतिमहादशाफलानि अथांतर्दशाफलम् अथप्रवक्ष्येखलुखेचराणामंतर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यफलसुधीभिर्विधिनोदितेन १ अंतर्दशाचेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगा नांकुरुतेसदैव ॥ गदविवादरिपुभूपभीतिदैन्यधनस्यापचयाविशेषात् २ अंत र्दशायामदनस्थितस्यखेचारिण स्यान्मरणगृहिण्या ॥ रोग-कुभोग कलहादि भग सगश्चनिधैर्हरणधनस्य ३ खेचारिणामष्टमभावगानामंतर्दशासंजनयेद रिष्ट॥ धनस्यनाशव्यसनानिपुंसादषोपगस्यापिगदप्रवृद्धिम् ४ त्रिकोणमे पूरणभेश्चगानामंतर्दशासौख्यमतीवनित्य ॥ करोतिलाभविविधनराणामा रोग्यतांमानसमुन्नतिच ५ अथसूर्यांतर्दशाफलानि करोतिचंद्रस्तरणेर्दशायासु वर्णभूषांवरविद्रुमाप्ति ॥ समुन्नतिमानसुखाभिवृद्धिविरोधिवर्गापचयजयच १

और विशेष कर्कैधनकानाश होताहै २ और पापी ग्रहकी दशामें सप्तमभावमें स्थित पापग्रहकी यद अंतर्दशाहोवेतव स्त्रीका मरणहोताहे और रोग और नियभोग और कलहादिभग और नीचो का सग औरधनकानाशहोताहै ३ और अष्टम भावगत ग्रहोकी अंतदशामे रिष्ट होताहै और धनकानाश औरदुर्व्यसनहोतेहे और षष्ठेशकी अंतर्दशाम रोगकी वृद्धी होतीहै ॥ ४ और नवम और पचम और दशमस्थानोमे स्थितग्रहोंकी अंतर्दशामे नित्यप्रतिसुखहोताहे और अनेकप्रकार का लाभ और आरोग्यता और खुसी होताहै ॥ ५ अबसूर्यदशामे अंतर्दशाकाफलकह तेहे ॥ सूर्यकी दशामें चद्रमा होवेतव सुवर्ण और भूषण और वस्त्र औरमुंगेकी प्राप्तिकर्त्ताहै और श्रेष्ट उच्चाधिकारकी प्राप्ति और मानसुखकीवृद्धि और शत्रुयोंकाक्षय कर्त्ताहे १

और कईक ऋषि ऐसे कहतेहैं - सूर्यकी दशामें जब चंद्रमाकी अनर्दशा होतीहै तबबडालाभ
होताहै और जलसें प्रमाद और संग्रहणी और पांडुरोगकीप्राप्ति होतीहै इह फल अतिक्षीणचंद्रमा
में जानना २ और सूर्यकी दशामें भौमकी अंतर्दशा होवे तब श्रेष्ठमूंगे और सुवर्ण और वस्त्र और अनेकमंग
ल और विजयको देताहै और निश्चयकरके राजाके कुलसें मान होताहै ३ और सूर्यकी दशामें बु
धकी अंतर्दशा होवे तब खुजक और दद्रु विकार कडूकरके देहमें पीडा होतीहै और धनका खर्च
और उत्सवका नाश होताहै ४ और सूर्यकी दशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशा होवे तब श्रेष्ठवस्त्र और
धान्यादियोंके संग्रहकरणेमें इच्छा होतीहै और देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें निर्मल बुद्धि होतीहै
और भूषणोंकी और श्रेष्ठ मानकी और धनकी प्राप्ति निश्चयकरके होतीहै ॥ ५ ॥

पंकेरुहेशस्यचरन्विपाकेकुर्यान्मृगांकोयदिलाभमुच्चैः ॥ प्रमादमब्भ्योग्रहणीं
चपांडुकेपांचिदेतन्मतमत्रचोक्तम् २ सत्प्रवालकलधौतसचैलंमंगलानिविजयंच
विधत्ते मंगलःकमलिनीशदशायांभूमिपालकुलतःकिलमानम् ३ विचर्चि
कादद्रुविकारपूर्वैःपामामयैर्देहविपीडनंस्यात् धनव्ययश्चापिहतोत्सवश्चवि
धोःसुतेभानुदशांप्रयाते ४ सद्वस्त्रधान्यादिपुसंग्रहेच्छास्वच्छामतिर्विप्रसुरार्च
नेषु ॥ भूपातिसन्मानधनानिनूनंभानोर्दशायांचरतीद्रवन्द्ये ॥ ५ ॥
विदेशयानकलहाकुलत्वंशूलंचमौलिस्थलकर्णपीडां ॥ गाढज्वरंचापिकरो
तिनित्यंदैत्यार्चितोभानुदशांप्रयातः ६ नीचारिभूमीपतिभीतिरत्र कडूयना
द्यामयसंभवःस्यात् ॥ मित्राण्यमित्राणिभवंतिनूनंशनैश्चरेभानुदशांतरस्थे
७ इतिसूर्यांतर्दशाफलं ॥ अथचंद्रांतर्दशाफलानि ॥ नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं
क्षयामयार्तिंप्रकृतेर्विकारं चौराग्निवैरिप्रभवांचभीतिंशीतांशुपाकेकुरुतेदिनेशः १

और सूर्यकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशामें विदेश गमन होताहै और कलह करके व्याकुलता होतीहै
और शूल और शिरपीडा और कर्ण पीडा होतीहै और बडाज्वर होताहै ६ और सूर्यकी दशा
में शनिकी अंतर्दशा होवे तब नीचजनसें और शत्रुसें और राजासेंभी भय होताहै
और दद्रुसे लेकरके रोगकी वृद्धि होवेहै और निश्चयकरके मित्र जोहैं सो शत्रुको न्याई
हो जानेहैं ७ इतिसूर्यांतर्दशाफलं अथचंद्रांतर्दशाफलानि चंद्रमाकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा
होवे तब राजासें धनकालाभ और गौरवता होतीहै और क्षयरोगकरके पीडा और चित्तभ्रम
होताहै और चौर और अग्नि और शत्रुसें भय होताहै १

और चंद्रमाकीदशामें मंगलकीअंतर्दशाहोवेतवसंचितधनकानाश और रक्तपित्तादिदोषहोतेहैं और क्रोधकीउत्पत्ति होतीहै और स्थानसें भ्रष्टताहोतीहै और मातापित्रादियोंकेवर्गकर्के पीडाहोतीहैं २ और चंद्रमाकी दशामेंबुधकीअंतर्दशाहोवेतव उदारताकर्केप्रसिद्धहोताहैऔर नामांतरकैलाभकों प्राप्तहोताहै और महिषी और गौयां औरजिमी और हाथी और घोडयोंकीवृद्धि होतीहै और विद्या और धन और ऐश्वर्यकी वृद्धि होतीहै ३ और चंद्रमाकी दशामें वृहस्पतिकी अंतर्दशा होवे तव विशेषधर्म और धनधान्य और भोगोंकी वृद्धि और हाथि घोडयोंकी संपदा होतीहै और पुत्रका उत्सव होताहै ४ और चंद्रमाकी दशामेंशुक्रकीअंतर्दशा होवे तव अनेक स्त्रीयोंकर्के लीलाविलास कर्त्ताहै और जलसें उत्पन्न वस्तूका और धान्य धनका सुख होताहै और मोतीयोंसें लेकर्के

कोशभ्रंशरक्तपित्तादिदोपरोपोत्पत्तिंस्थानतःप्रच्युतिंच ॥ कुर्यात्पीडांमातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥ २ ॥ उदारनामांतरलब्धिरुच्चैर्लुलायगोभूमिगजाश्ववृद्धिं ॥ विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वंकुर्याद्बुधश्चंद्रदशांतराले ३ विशिष्टधर्मोधनधान्यभोगानदाभिवृद्धिर्गजवाजिसंपत् ॥ पुत्रोत्सवश्चापिभवेन्नराणांगुरौसुराणांशशिपाकसंस्थे ४ नानांगनाकेलिविलासशीलोजलोद्भवैर्धान्यधनैश्चयुक्तः ॥ मुक्ताफलाद्याभरणैरपिस्यादिंदोर्दशायांहिसितेमनुष्यः ५ नरेंद्रचौराहितवन्हिभीतिंकलत्रपुत्रासुखरुक्प्रवृद्धिम् करोतिनानाव्यसनानिपुंसांशनिर्निशानाथदशांप्रविष्टः ६ ॥ इतिचंद्रांतर्दशाफलं ॥ अथभौमांतर्दशाफलानि ॥ नानाधनाभ्यागमनानितूनंसन्मानवृद्धिंमनुजाधिराजात् ॥ चंडत्वमोजोविजयंविदध्यात्भानुर्धरासुनुदशांतरस्थः १ दुर्गशैलवनसंचलनेच्छाबंधुतातजनितातिविरोधः ॥ मानवोभवति भूतनयांतभास्करेचरतिकोपिवदति २

अनेकभूषणोंकों प्राप्त होताहै ५ और चंद्रमाकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तव राजा और चोर और शत्रु और अग्निका भय होताहै और स्त्री पुत्रका दुःख और रोगकर्के युक्त होताहै और मनुष्योंको अनेक प्रकारके दुर्व्यसन होतेहैं ६ इतिचंद्रांतर्दशाफलं ॥ अव मंगलकी अंतर्दशाका फल कहतेहैं और मंगलकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तव अनेक प्रकारका धन मिलताहै और निश्चयकर्केराजासेंमानहोताहै औरप्रचंडवलऔरजयहोतीहै १ और मंगलकीदशामें सूर्यकीअंतर्दशाकाफल कईक ऋषि ऐसें कहतेहैं किले कोट वनमें जानेकी इच्छा वाला होताहै और भातासें और पितासें अत्यंत विरोध होताहै २

और मंगलकी दशामें चंद्रमाकी अतर्दशाहोवे तब नित्योत्सव और आनंद और बडे अधिकार की प्राप्ति और मोति और धन और भूषणोंकी प्राप्ति होतीहै और मित्रोंकी प्राप्ति और श्लेष्मकाविकार होताहै ३ और मंगलकी दशामें बुधकी अतर्दशाहोवे तब शत्रुओंसे और रोगसें और राजासें ओरचौरोंसेपीडाहोतीहैओरपुत्रस्त्रीकाओरमित्रकावियोगहोताहैऔर उत्सवथोडा होताहै४और मंगलकीदशामें बृहस्पतिकी अतर्दशाहोवेतवकलानिओधिककर्त्ताहैओर राजासेंधनकीप्राप्तिकर्त्ताहै और स्त्री और मित्र और पुत्र और वाहनका सुख कर्त्ताहै और श्रेष्ठ धर्म कर्ममें रत कर्त्ताहै ५ और मंगलकी दशामें शुक्रकी अतर्दशा होवे तब विदेशगमनादि और व्यसन और रोगादियोंककें पीडितहोताहै और कुटुंब वादकर्के और धनके खर्चकर्के पीडित होताहै और अनेक प्रकारके प्रवासों कर्के-

नित्योत्सवानंदमहापदानिमुक्ताफलद्रव्यविभूषणानिमित्रोद्गमश्लेष्मविकारमिंदुः भौमस्यपाकेविचरन्करोति ३ अरातिभूपामयतस्करेभ्यःपीडांवियोगंसुतदारमित्रैः स्वल्पोत्सवंयच्छतिसोमसूनुर्भौमस्यपाकेयदिसंप्रविष्टः ४ कलाधिकत्वन्नृपतेर्धनाप्तिंकलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यं सत्कर्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशांप्रविष्टः ५ विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुंबवादद्रविणव्ययैश्च नाना प्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमांतरेदानवराजपूज्ये ६ कलत्रपुत्रात्मजनेषुबाधाप्राणप्रयाणांतशरीरपीडा स्वस्थानयानंयदिभानुसूनोरंतर्दशाभौमदशांतराले ७ इतिभौमांतर्दशाफलं अथबुधांतर्दशाफलं तुरगहेमांचसुविद्रुमाणांसदंबराणामपिवारणानां भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानांसौम्यस्यपाकेतपनेप्रपन्ने १ स्वस्थानतः सञ्चलनंकदाचिद्गदप्रकोपात्मजजन्मवित्तम् धर्मप्रवृत्तिंकुरुतेज्ञपाकेपंकेरुहेशः प्रवदंतिकेचित् २

चित्त वृति चंचल होतीहै ६ और भौमकी दशामें शनिकीअतर्दशा होवे तब स्त्री और पुत्र और संबंधिजनोंमें पीडा होतीहै और देहमें प्राणांत पीडा होतीहै और अपने स्थानसें गमन होताहै ७ इतिभौमांतर्दशाफलं अब बुधकी अंतर्दशाका फलकहतेहैं बुधकी दशामें सूर्यकीअंतर्दशा होवे तब घोडा और सुवर्ण और श्रेष्ठ मुंगे और श्रेष्ठ वस्त्र और हाथियोंकी प्राप्तिहोतीहै और बडा ऐश्वर्य होताहै १ और कईक ऋषि बुधकी दशामें सूर्यांतर्दशाकाफल इसप्रकारकर्के कहतेहैं अपने स्थानसें चलायमान कदाचित् होताहै, रोग होताहै और पुत्रजन्मताहै और धनकी प्राप्तिहोतीहै और धर्ममें प्रवृत्तिहोतीहै २

और बुधकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशा होवे तब खुर्कसेलेकर्के अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पति और मृत होयकर्के बालककन्याजन्मतेहै और विवादहोताहै और पित्तका कोप और वाहनकी पीडा होतीहै ३ और बुधकी दशामें भौमकी अंतर्दशाहोवे तब गुदामेंपीडा और धनके खर्चकर्के युक्त होताहै और स्त्रीपुत्रसे प्रीतिकर्के रहित चित्त और धर्मका लोप होताहै ४ और बुधकी दशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशा होवे तब स्त्रीपुत्रके आनंदकर्के युक्त और शत्रुयोंके हतकरणेवाला और श्रेष्ठकर्म करणे वाला और सुंदरबुद्धिवाला और नम्र और म त्रिहोताहै और पितामाताके दुःखकोप्राप्तहोताहै ५ और बुधकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब पंडित और साधुजन और अभ्यागतोंके पूजनेमें आदर कर्ताहै और पुण्य कर्ममें मनकी उत्कंठा होतीहै और अनेक प्रकारके वस्त्र और भूषणों

पामादिनानामयसंभवःस्यान्मृतप्रजःसंजननविवादः पित्तप्रकोपःखलुयानपीडा यदाजडांशुर्ज्ञदशांप्रपन्नः ३गुह्यामयार्थव्ययसंयुतःस्यात्कांतासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः विलुप्तधर्मोमनुजः प्रविष्टेबुधस्यपाकेवसुधातनूजे ४ कांतासुतानंदयुतोरिहंता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः मंत्रीनरःस्यात्पितृमातृदुःखीबृहस्पतौसौम्यदशांप्रयाते ५ विबुधसाधुजनातिथिसादरःसुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरोबुधदशांतरगेसतिभार्गवे६ नानाप्रयासैश्चनिरोधनैर्वाशिरोरुजावापिशरीरभाजां करोतिबाधांविबुधांतरालेसितःप्रयातःप्रवदंतिकेचित् ७ सत्कर्मधर्मद्रविणानुकंपाकंदर्पहीनोमनुजःप्रलापी वातामयार्तोऽतिमृदुस्वभावःसौम्यांतरालेनलिनीशसूनौ ८ ॥ इतिबुधांतर्दशाफ० ॥ अथगुर्वंतर्दशाफलानि सुतार्थनानाविधवस्तुलाभविशिष्टनामांतरमाधिपत्यं माननरेशात्कुरुतेदिनेशोवाचामधीशस्यदशांप्रपन्नः १

कों प्राप्त होताहै ६ और कईक आचार्य अयसो कहतेहै बुधमे शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब अनेक प्रयत्नों कर्के और निरोधकर्के शिरमें रोग कर्केपीडा होतीहै देहधारियोंकों ७ और बुधकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तब मनुष्य श्रेष्ठ कर्मसें और धर्मसें और धनसें और दयासें कामचेष्टासें रहित होताहै और प्रलाप कर्ताहै और वायुरोगकर्के पीडित होताहै और कोमल स्वभाववाला होताहै ८ ॥ इतिबुधांतर्दशाफलं अब बृहस्पतिकी अंतर्दशाका फल कहतेहें बृहस्पतिकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब पुत्र धन अनेक वस्तुका लाभ होताहै और विशेष नामांतरकों प्राप्त और स्वामीभावकों प्राप्त होताहै और राजासें मानप्राप्त होताहै १

और गुरुकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशाहोवे तव अनेकस्त्रीयोंकी क्रीडामें चित्त होताहै और लक्ष्मी करके और राजाके चिन्होंकरके विराजमान होताहै और विद्याकरके और श्रेष्ठ धनकरके युक्त होताहै २ और वृहस्पतिकी दशामेंमंगलकी अंतर्दशा होवे तव युद्धमें यशको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ भोग और सुखकरके युक्त होताहै और विशेषकरके प्रतापी होताहै ३ और कईक आचार्य कहतेहै गुरुके अंतर भौमकीदशामें शिरमें और गुदामें कदाचिपीडतहोताहै और शत्रुका भय होताहै और वलका क्षय और स्थानांतरमें गमन होताहै ४ और वृहस्पतिकी दशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तव श्रेष्ठवुद्धि और कुशलता और देवताका पूजन होताहै और श्रेष्ठलक्ष्मी और गृह और वाहनोंकी प्राप्ति होतीहैऔर निश्चयकरके स्त्रीपुत्रादि योंका सुखहोताहै ५ और कईक आचार्य गुरुकी दशामें बुधकी अं

नानांगनाक्रीडनयातचित्तःश्रीराजचिन्हैश्चविराजमानः— विद्यानवद्याऽर्थयुतो
नरःस्याज्जीवांतरेशीतकरप्रचारे ॥ २ ॥ रणांगनप्राप्तयशोविशेषःसद्भोगसौ
ख्यार्थसमन्वितश्च प्रौढप्रतापोतितरांनरःस्याद्धरासुतेजीवदशांप्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षेगुदेवापिभवेत्कदाचित्पीडानराणामरिभीतिरुक्ता वलक्षयःसचलनकुज
स्यजीवांतरालेप्रवदंतिकेचित् ॥ ४ ॥ सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चितानिसद्दिंदिराम
दिरवाहनानि कलत्रपुत्रादिसुखानिनूनंकुर्याद्बुधोजीवदशांप्रपन्नः ॥ ५ ॥ विदे
शयानंचलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादःशिरसिप्रपीडा गुरोर्दशायांचरतांदुपुत्रेकेषां
चिदेवात्रमतंनिरुक्तम् ६ निजैर्वियोगोऽर्थविनाशनंचश्लेष्मानिलश्चापिकलेः
प्रसंगः स्यान्मानवानांव्यसनोपलब्धिर्भृगोःसुतेजीवदशांप्रयाते ॥ ७ ॥
धर्मक्रियायांनिरतत्वमुच्चैर्विद्यांवरान्नादिकसंग्रहश्च द्विजाश्रयःस्याद्गुरुपाकया
तेसितेवदंतीतिफलंतुकेचित् ८ वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशःकृ
शांगःखरक्रमेलादियुतोनरःस्याद्गुरोर्दशायांचलितेर्कसूनौ ९

तर्दशा होवे तव ऐसा फल कहतेहैं विदेश गमन और चंचल चित्तवृत्ति और जलसे प्रमाद और शिरमें पीडा होतीहै ६ और वृहस्पतिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तव अपने संबंधियोंकरके वियोग और धनका नाश और श्लेष्म वायुका कोप और लडाईका प्रसंग होताहै और मनुष्योंको व्यसनकी प्राप्ति होतीहै ७ और कईक आचार्य कहतेहै वृहस्पतिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तव धर्मकर्ममें सदारत होताहै और विद्या और वस्त्र और अन्नादिकोंका संग्रह होताहै और ब्राह्मणों के आश्रित होताहै ८ और वृहस्पतिकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तव वैश्या और मद्य और जूआ और कृषिकर्मादियोंकरके धर्म अर्थ यश नाशको प्राप्त होताहै और अंग कृश होतेहै और खर और ऊटोंसे लेकरके चतुष्पदोंसंयुक्त होताहै ९ ॥

इतिजीवांतर्दशाफलं अथ शुक्रकी अंतर्दशाका फलकहतेहैं शुक्रकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब राजाका भय और सर्वाधिककर्के धनका नाश और शत्रुयों काउदय औरत्रिकुस्थानमें और गंडस्थलमें और नेत्रोंमें पीडा होतीहै १ और शुक्रमें चंद्रमाकीअंतर्दशा होवे तब शिर और दंत और नखोंमें पीडा और निश्चयकर्के पित्तका कोप होताहै और व्याघ्रादियोंका भयहोताहै २ और कईक आचार्य ऐसें कहतेहैं शुक्रके मध्यमें चंद्रमाकी दशाहोवे तब ब्राह्मण और देवता और अग्निकेपूजनेमें मनकीप्रवृत्ति होतीहै और युद्धमें जय होतीहै और हाथीके कर्मसे और स्त्रीके प्रसंगसें लाभ होताहै ३ और शुक्रकी दशामें भौमकी अंतर्दशाहोवेतब पित्तसें और घात होनेसे और रक्तविकारसें अंगमें व्याकुलता होतीहै और अत्यंत उत्साहकाभंग होताहै

इतिगुर्वंतर्दशाफलं ॥ अथशुक्रांतर्दशाफलम् ॥ भूपभीतिरपिबंधुनिर्मितंवित्तनाशनमरात्युदय स्यात् ॥ क्रोडगंडनयनेष्वपिपीडाभार्गवेयदिरवेर्विनिवेश ॥ १ ॥ शीर्षदंतनखपीडनमुच्चै कामलप्रबलताकिलपित्तम् श्वापदादपिभयंचनराणांभार्गवांतर्गतेहिमरश्मौ ॥ २ ॥ भूदेवदेवाग्निमन प्रवृत्तीरणांगणेस्याद्विजयोनराणां मातंगकार्याद्वनिताश्रयाद्वालाभ सितेचंद्रदशेतिकेचित् ॥ ३ ॥ पित्तात्क्षताद्रक्तविकारतोवावैकल्यमंगेप्रभवेन्नराणामुत्साहहीनत्वमतीवयातेभूमीसुतेदैत्यगुरोर्दशायां ॥ ४ ॥ सन्माननानाविधवस्तुसौरव्यंभूमीपते स्यात्खलुभूमिलाभ अंगारकेभार्गवपाकसस्थेकेपांचिदेवंमतमस्तिशस्तम् ॥ ५ ॥ वृक्षै फलैश्चापिचतुष्पदाद्यैर्वित्तंभवेत्तस्य विधिर्नृपेण दुरंतकार्याभिरतिर्नितांतंभृगोर्दशायांचरतींदुसूनो ६ यज्ञादिसत्कर्मणिसादरत्वंगतार्थसिद्धि सुतदारसौरव्य महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्दशायांचरतींद्रवंद्ये ७ मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यंवृद्धांगनाकेलिरतिर्विनित्यस्याद्वैरिनाशोह्यशनोदशायांशनैश्चरस्यांतरजादशाचेत् ८ ॥

४ और कईक आचार्य शुक्रकी दशामें अंतर्दशा मंगलकी होवे तब शुभफल कहतेहै और सन्मान और अनेक प्रकारकी वस्तुका लाभ और राजासें निश्चयकर्के जिमीका लाभ होताहै ५ और शुक्रकी दशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तब वृक्षोंकर्के और फलोंकर्के और चतुष्पदजीवों कर्के धनप्राप्त होताहै और राजाकर्के मित्रभाव होताहै और बडेकठिन कार्यमें प्रीति होतीहै ६ और शुक्रकी दशामें गुरुकी अंतर्दशा होवे तब यज्ञादि श्रेष्ठकर्ममें प्रीतिहोतीहै और नष्टधनकीप्राप्ति होतीहै और पुत्र स्त्रीका सुख होताहै और बडे अधिकारकी प्राप्ति और अनेक भूषणोंकी प्राप्ति होतीहै ७ और शुक्रकी दशामें शनैश्चरकी अंतर्दशा होवे तब मित्रोंकी उन्नति और ग्राम पुरका अधिकार कीप्राप्ति और वृद्धस्त्रीसें नित्य प्रतिविलास और शत्रुयोंका नाश होताहै ॥ ८ ॥ इतिशुक्रांतर्दशाफलानि ॥

अब शनिकी अंतर्दशाका फल कहतेहैं शनिकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब धन और स्त्री और पुत्र और बंधुओंकी पीडा होतीहै और अपने देहमें बडी पीडा होतीहै और शत्रुओंकी वृद्धि होतीहै १ और शनिकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशा होवे तब निरंतर लडाई और संबंधियोंका वियोग और स्त्री हरी जातीहै वा मृत होतीहै और उत्साहका भंग और सुखका नाश होताहै २ और शनिकी दशामें भौमकी अंतर्दशा होवे तब अपने स्थानसे गमन होताहै और अगममें व्याकुलता होतीहै और धन और स्त्री पुत्रका वियोग होताहै और अष्टमानकी हानि होतीहै ३ और शनिकी दशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तब धन और स्त्री और पुत्रके सुखको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठराजमानके युक्त होताहै और विद्यावानजनोंको आनंद होताहै और कफकेको पीडित होताहै ४ और

अथमंदांतर्दशाफलं ॥ धनांगनानंदनबंधुपीडागाढापिबाधात्मकलेवरेस्यात् रिपूद्गमःसंचलनंनलिन्याःपत्योस्थितेमंददशांतराले १ नित्यंकलिर्बंधुजनैर्वियोगोहृतिर्मृतिर्वापिभवेद्गृहिण्याः ॥ उत्साहसौख्योपहतिर्नितांतंशीतद्युतौमंददशांतरस्थे २ स्वस्थानयानंविकलत्वमंगेधनांगनासूनुवियोजनंस्यात् सन्मानहानिर्नेनुसूर्यसूनोर्दशांतरेभूमिसुतप्रचारे ३ धनांगनासूनुसुखोपपन्नःसद्राजमानेनविराजमानः विद्वज्जनानंदकरःकफार्तोमर्त्योभवेज्ज्ञेशनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥ कलाकलापेकुशलोविलासीपद्मालयालंकृतचारुशीलः भूपालभूलाभयुतोनरःस्याद्बृहस्पतौमंददशांप्रयाते ॥ ५ ॥ योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिःश्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः यशःप्रणाशोरिकुलस्यनाशःशनेर्दशायामुशनःप्रवेशे ॥ ६ ॥ अंतर्दशाचेन्नलिनीशसूनोर्दशांतरालेकिलमंगलस्य ॥ भवेत्तदानींनिधनंनराणांयद्यप्यहोदीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥ लग्नेनाथरिपुर्लग्नदशायांप्रविशेद्यदि अकस्मान्मरणंकुर्यात्प्राणिनांसत्यसमतम् ८

शनिकी दशामें गुरूकी अंतर्दशा होवे तब कलाके समूहमें कुशल होताहै और विलासवके युक्त होताहै और लक्ष्मीकर्के भूषित होताहै और सुंदर स्वभाववाला होताहै और राजासे भूमिलाभकर्के युक्त होताहै ५ और शनिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब स्त्री और भूषण और पुत्र और सुखकी प्राप्ति और लक्ष्मी और ग्राम और देशके अधिकारकी प्राप्ति बडी होतीहै और यशका और शत्रुकुलकानाश होताहै ६ और कहतेहैं शनिकी दशामें जब निश्चयकर्के मंगलकी अंतर्दशा होवे तब बडी आयुषावालेकी भी मृत्यु करतीहै ७ और लग्नकी दशामें जब लग्नेशके शत्रुग्रहकी अंतर्दशा होवे तब सत्याचार्यके मतसे मनुष्यकी अकस्मात् मृत्यु करतीहै ८

इतिशनेरंतर्दशाफलानि अथ-पराशरके मतकर्के महाविंशोत्तरी दशाकाफलःकहतेहैं तिसमें प्रथम सूर्यादि ग्रहोंकेदशावर्ष कहतेहैं सूर्यकी दशाके वर्ष ६ और चंद्रमाकी दशा १० वर्ष और मंगलकी सात ७ वर्ष और राहुकी अष्टादश १८ वर्ष और बृहस्पतिकी १६ षोडश वर्ष और शनिकी एकोनविंशति १९ वर्ष और बुधकी सप्तदश १७ वर्ष और केतुकी सात ७ वर्ष और शुक्रकी बीश २० वर्ष होतीहैं अबदशाका आनयनकहतेहैं क्रमसेकृत्तिकादीनव ९ नक्षत्रोंमेंसूर्य १ चंद्र २ मंगल ३ राहु ४ बृहस्पति ५ शनि ६ बुध ७ केतु ८ शुक्र ९ कीदशा होतीहै और इसीक्रमसे तीनवार आवर्तनकरणे से सताईस नक्षत्रोंमें दशावर्षके स्वामी होतेहैं २ और प्रकारांतरकर्के कहतेहैं कृत्तिका नक्षत्रसे लेकर्के भरणी नक्षत्रपर्यंत गनेनाकरे जितनी संख्या पर्यंत जन्मनक्षत्रकी संख्या होवे उतनी संख्या कर्के पूर्वो

इतिशनिर्दशांतर्दशाफलम् अथपराशरीयमतेनमहाविंशोत्तरीदशायाःफलमाह तत्रदृशाब्दिकथनं रस ६ दशा १० द्वि ८ पुराण १८ महीभृतो १६ विधुविहीननखा १९ अगभूमय १७ गिरि ७ नखा २० रविचंद्रकुजागुयुग्गुरुशनिज्ञककेतुसिताब्दकाः ॥ १ ॥ अथदशानयनम् ॥ कृत्तिकादिनवकात्रिकक्रमात्सूर्यचंद्रकुजराहुमंत्रिणः ॥ सौरिसोमसुतकेतुभार्गवाभप्रवर्तितदशाब्दनायकाः ॥ २ ॥ तथा कृत्तिकामवधिकृत्वाभरण्यवधिगण्यते नवभिस्तुहरेद्भागंशेषांकेचदशास्मृता ३ तथा नयनोनजनुर्भतोकहृत्क्रमशोर्केंदुकुजागुसूरयःशनिचंद्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषास्तुदशाधिपाःस्मृता ४ अत्रभुक्तायादशायाः फलाभावाद्भोक्त्व्याया फलंवाच्यं तदुक्तलघुजातकाभरणे निजजन्मनिआदिमादशाजनिभस्येतघटीसमाहता सकलर्क्षघटीविभाजिताजनिभुक्तादिदशामताततः ५ अवशिष्टदशाफलंवदेत्परिशेषेपुयथोक्तवर्षकैरिति

क सूर्यादिदशाक्रमसें दशाकास्वामी होताहै और संख्या नवसे अधिक होवेतबनव ९ सेंभाग हरलेवे शेष ग्रहकी वर्तमान दशाहोतीहै ३ और प्रकारांतरकहतेहे अश्विनीसें लेकर्के जितनी संख्या काजन्म नक्षत्र होवे तिसमें दो २ कोघटायदेवे और नव ९ सेंभागदेकर योशेषरहे उतनी संख्या कर्के क्रमसें सूर्य।चंद्र।भौम।राहु।बृहस्पति।शनि।बुध।केतु।शुक्र।दशाके स्वामी होतेहैं ४ अब जन्मकालमे भोग्यदशाका आनयन लघुजातकाभरणसें कहतेहैं अपनेजन्मकालमे प्रथमयोदशोजितने वर्षकीहोवे तिन्हों वर्षोंको जन्मनक्षत्रकी भुक्त घडीयोंकर्के गुणदेवे और सर्वर्क्षकर्के भागलेवे तब भुक्तदशा वर्षादिहोतीहै तिसको संपूर्ण दशाके वर्षोंसे घटायदेवे और शेषवर्षोंकाफलकहे ५ अब इसमें त्रैराशिक कहतेहे ॥ भुक्त नक्षत्रको साठ ६० से गुणकर्के पिंडकरे और सर्वर्क्षका साठ ६० से गुणकर्के पिंडकरना

शुक्र पिंडको दशावर्षोसे गुणै और सर्वक्षपिंडसे भागलेवे लब्ध वर्षहोतेहैं और शेषकोंद्वादश१२से गुणैं सर्वक्षसे भागलेवे लब्ध मास होतहै शेषकोंतीसर्से३० गुणैसवक्षसे भाग लेवे तव लब्ध दिन होतेहै और शेषकों साठ६०से गुणाकर्के सर्वक्षसे भागलेणेसे घटीपल होताहै अवसूक्ष्मफलके ज्ञानवास्ते अंतर्दशादिकहतेहैं ॥ यथा ॥ जितने २ वर्ष जिस २ ग्रहके पूर्वकहहैं तिन्हों कों अपने २ वर्षोसे गुणितकर्के एकसउवीसके अकसें १२० भागलेवे तव वर्षादि तिस ॥ २ ॥ ग्रहकी अंतर्दशा सिद्ध होतीहै और जिसग्रहकी विंदशादि

अथसूक्ष्मफलार्थमंतर्दशादिकथनम् तत्प्रकारोयथा स्वे-स्वेदशाब्दैर्गुणितंदशादिवर्षादिकंविंशतियुक्शतेन भजेच्चलब्धतुतिजांतरांतर्दशादिमानंकथितंग्रहाणाम्दशाचांतर्दशाचैवविदशोपदशा तथाप्राणाख्याचफलंतासांवदेच्छास्त्रानुसारत- ७-अंतर्दशाचक्राणि

चअथशुभग्रहाणांशुभफलप्रदत्व पापग्रहाणामशुभफलप्रदत्वमितिसकलशास्त्रसिद्ध तत्रवुधगुरुशुक्राक्षीणचंद्राश्चाशुभग्रहा-रविकुजमंदराहुकेतुक्षीणचंद्रा

सिद्धकरणी होवे तव तिसकी अंतर्दशाको भिन्न२ग्रहोंके वर्षोंकर्के गुणेओर एकसउो वीस १२० सें भाग लेवे तव विदशा ग्रहोंकी होजातीहैं इसीप्रकारकर्के उपदशा सूक्ष्मदशाकों सिद्धकरे ६ और कहतेहैं प्रथम दशा और दूसरीअंतर्दशा और तीसरी विदशा और चउथीउपदशा और पाचमीप्राणदशा जिसकों सूक्ष्मदशाकहतेहै इहे पाचप्रकारकर्केतिन्हका शास्त्रकेअनुसारसें फल कहें जैसेंदशादियोंकास्वामीशुभाशुभग्रहस्वोच्चमित्रादि गृहगतवानीच शत्रुक्षेत्रादि गत शुभाशुभ भावफलऔरशुभाशुभ दृष्टिफल औरशुभाशुभग्रहका योग फलविचार कर्केसपूर्ण कहै ॥ ७ ॥

अथकेत्वंतर्दशाचक्र

के	शु	आ	च	भौ	रा	जी	श	बु
०	१	०	०	०	१	०	१	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

अथशुक्रांतर्दशाचक्र

शु	आ	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
३	१	१	१	३	२	३	२	१
४	०	८	२	०	८	२	१०	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथबुधांतर्दशाचक्र

बु	के	शु	आ	च	भौ	रा	जी	श
२	०	२	०	१	०	२	२	२
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

अथशनेरंतर्दशाचक्र

श	बु	के	शु	आ	च	भौ	रा	जी
३	२	१	३	०	१	१	२	२
०	८	१	२	११	७	१	१०	६
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

अथजीवांतर्दशाचक्र

जी	श	बु	के	शु	आ	च	भौ	रा
२	२	२	०	२	०	१	०	२
१	६	३	११	८	९	४	११	४
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

अथराहोरंतर्दशाचक्र

रा	जी	श	बु	के	शु	आ	च	भौ
२	२	२	२	१	३	०	१	१
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

अथसूर्यांतदशाचक्र

आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

अथचंद्रांतदशाचक्र

च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	आ
०	०	१	१	१	१	०	१	०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथभौमांतर्दशाचक्र

भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	आ	च
०	१	०	१	०	०	१	०	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

अब कहतेहैं शुभग्रहोंको शुभफल और अशुभग्रहोंको अशुभफल इहे संपूर्ण शास्त्रोंमें सिद्ध कियाहै तिसमें बुध और गुरु और शुक्र और पूर्णचंद्रमा इहे शुभग्रहकहेहैं और सूर्य और मंगल और शनि औरराहुकेतु और क्षीणचंद्रमा इहे पापी ग्रह सामान्य शास्त्रमें कहेहैं ॥ अब विशेष शास्त्रके करके इसका अपवाद कहतेहैं ॥ त्रिकोणनेताजोहैं नवम ९ और पंचम ५ के स्वामी इहे जिसकिस स्थानमें स्थितहोवें और शुभग्रह पापीग्रहहोवें तब अपनी दशामें शुभफलको देतेहैं त्रिकोणाधिप निमित्त करके सूर्यादि सात ग्रहोंको शुभता सिद्ध होतीहै और राहुकेतुराश्याधिपनाहिं हैं ॥ और यह सूर्यादिसात ग्रह तीसरे और छठे और ग्यारहमे भावकेस्वामी होवेंतब अशुभ फल को देतेहै ॥ इससे त्रिषडाय निमित्त करके शुभग्रहवी अशुभ होतेहैं और यो पापीग्रह होवें तिन्हका क्या कथनहै अर्थात् पापतर होतेहैं ८ अब और विशेष कहताहै ॥ सौम्यनो शुभग्रहहैं पूर्णचंद्र बुध गुरु शुक्र इहैं चारग्रह यह केंद्र १।४।७।१० स्थानोंके स्वामी होवें तब शुभफलको नहिं देतेहै शुभग्रहवी केंद्राधिपत्व निमित्तकरके अशुभफलकर्त्तेहैं और क्रूर ग्रहजो अशुभकर्त्ता कहेहैं सूर्य और भौम और शनि इहे तीन ग्रहकेंद्र स्थानोंके स्वामी होवे तब अशुभ फल नहिंकर्त्तेहैं अर्थात् शुभ होतेहैं और प्रबल उत्तरोत्तरइति तृतीयेशात्षष्ठेशः प्रबलः षष्ठेशादेकादशेशः ॥ एवं लग्नेशाच्चतुर्थेशः प्रबलः चतुर्थेशात्सप्तमेशः सप्तमेशाद्दशमेशइति ९ अथ संबंधके वशसें ग्रहोंका शुभाशुभक

शुभाशुभग्रहाः इतिसामान्यशास्त्रं अस्यापवादमाह सर्वेत्रिकोणनेतारोग्रहाः शुभफलप्रदाः पतयस्त्रिषडायानांयदिपापफलप्रदाः ८ नदिशंतिशुभंनृणांसौम्याःकेंद्राधिपायदि क्रूराश्चेदशुभंनेतिप्रबलाउत्तरोत्तराः ९ अथसंबंधवशादपिग्रहाणांशुभाशुभफलप्रदत्वमाह लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौपरेषांसाहचर्य्यतः स्थानांतरानुगुण्येनभवतःफलदायकौ १० अथाष्टमेशस्यशुभाशुभमाह भाग्यव्ययाधिपत्येनरंध्रेशोनशुभप्रदःसएवशुभसंधातालग्नाधीशोपिचेत्स्वयम् ११

हतेहैं जन्मलग्नसे द्वादश १२ और दूसरे २ केस्वामी अन्यग्रहोंके संबंधसे सहावस्थानादिसे आगे चारप्रकारके संबंधकहेहैं तिन्होंके संबंधहोनेसे फलहोताहै अर्थात् शुभग्रहोंके संबंधसे द्वादशेश द्वितीयेश ग्रहकाशुभफल होताहै और पापीग्रहके संबंधसे अशुभफलहोताहै और स्थानांतरके गुणानुसार करके फलहोताहै जैसे मित्रादिस्थानोंमे स्थित होवे तब मित्रादिद्वारा शुभफलहोताहै और शत्रुनीचादि स्थानमें स्थित होवे तब शत्रुनीचादियोंसे दुःखहोताहै १० अब अष्टमेशका शुभाशुभफल कहतेहैं नवमस्थानकी भाग्यसंज्ञा कहिहै तिससे भाग्यात् भाग्यभावसे व्यय १२ स्थानहै अर्थात् जन्मलग्नसे अष्टम तिसका स्वामी जिसकिस स्थानमें स्थित होवे सो शुभफल नहिं कर्त्ताहै और इसमे शंका कर्त्तेहैं कइक आचार्य अष्टमसे अष्टमकोवी अष्टम संज्ञा मानतेहैं जब तृतीय भावका स्वामीवी अष्टमेश भया तब सो ग्रह फेरद्वादशेश होताहै जैसे कर्क जन्मलग्नमें बुध और मकर लग्नमें वृहस्पति सोवी अष्टमेश होनेकरके अशुभफलकरें जैसे इह बुधगुरु दोनों अशुभफलनहिकरतेहैं संबंधवलकरके तैसेंहि अष्टमेशकावी अशुभफल सबथकरकेनहि होनाचाहिये तिसमें कहतेहैं सो अष्टमेश जब लग्नकावी स्वामी होवे तब शुभफलकर्त्ताहै अन्यथा अशुभफलकर्त्ताहै सो तुल और मेषलग्नमें जन्मवाल्योंको शुक्र भौम शुभ होतेहैं और लग्नोंमें सर्वत्र अष्टमेश अशुभफलकर्त्ताहै ११

अब केंद्राधिपत्य शुभग्रहोंके दोषमें गुरुशुक्रका विशेष दोष कहतेहैं लग्न और चतुर्थ और सप्तम और दशम स्थानके स्वामी होनेका यो शुभग्रहोंका दोष कहाहै सो दोष गुरु और शुक्रका बल वानहै और इसमें विशेष कहतेहैं गुरुशुक्र मारकस्थानमें लग्नसें सप्तम और दूसरे स्थानमें स्थित होवे तब विशेषकरके और ग्रहकी अपेक्षासें मारक होतेहै । १२ और गुरुशुक्रकी अपेक्षासें थोड दोषवाला बुध होताहै और बुधकी अपेक्षासें थोडे दोषवाला चंद्रमा कहाहै और मारकस्थान ७।२ स्थितिमें गुरुशुक्रकी अपेक्षासें बुधको और बुधकी अपेक्षासें चंद्रमाको दुर्बलाहै और सूर्यचंद्रमाको अष्टमेशका दोष नहिं होताहै । १३ अब क्रूरग्रहोंको केंद्रेशत्व पूर्व शुभ कहाहै तिसमें मंगलमें विशेष कहतेहैं केवल दशमेश मंगलको यो दशमेशता शुभ कहिहै सो मंगल त्रिकोण ९।५ का भी होवे तब शुभहै और दशमेश शता शुभ नहिं काहेहै सो ककलग्नमें जन्मताहै तिसको इहैयोग होताहै तिसमें मंगल पंचमेश होताहै १४ अब मेषादि लग्नमें जन्मवालोंको जिसजिस ग्रहको पापत्व वा शुभत्व वा मारक त्व कहाहै सो सपूर्ण विचारकके बृहत्पराशरमें कहाहै, मंदसौम्यासिताःपापाःशुभौगुरुदिवाकरौ नशु भयोगात्रेणप्रभवेच्छानिजीवयोः ॥ परतंत्रेणजीवस्यपापकर्मापिनिश्चित ॥ कविःसाक्षान्निहंतास्यान्मा रकत्वेनलक्षित ॥ सगात्वयोर्निहंतारोभवेयुःपापिनोग्रहाः शुभाशुभफलान्येवंज्ञातव्यानिक्रियोद्भवैः इति मेरजन्मनःफलम् जीवशुक्रेंदवःपापाःशुभौशानिशशिसुतौराजयोगकरःसाक्षादेकएवरवेःसुतःजीवादयो

अथसौम्यग्रहाणांकेंद्राधिपत्वदोषेगुरुशुक्रयोर्विशेषमाह ॥ केंद्राधिपत्वदोष स्तुबलवान्गुरुशुक्रयोः ॥ मारकत्वेपिचतयोर्मारकस्थानसंस्थितिः १२-बुध स्तदनुचंद्रोपिभवेत्तदनुतद्विधः नरंध्रेशत्वदोषस्तुसूर्याचंद्रमसोर्भवेत् १३ ॥ अथक्रूरग्रहाणांकेंद्राधिपत्वेशुभत्वपूर्वमुक्तंतत्रभौमविषयेविशेषमाह ॥ कुज स्यकर्मनेतृत्वंप्रयुक्तांशुभकारिता ॥ त्रिकोणस्यापिनेतृत्वेनकर्मेशत्वमात्रतः १४

ग्रहाःपापाःपातिमारकलक्षणा बुधेस्तत्फलान्येवज्ञेयानिवृषजन्मनःइतिवृषजन्मनःफ भौमजीवारुणाःपा पाःएकएवकविःशुभःशनैश्चरेणजीवस्ययोगोमेषभुवोयथानाथंशशिःनिहंतातल्लक्षणःपापिनस्त्वलंज्ञात या निद्वजस्ययोगस्यफलंस्यनानिसूरिभिः इतिमिथुनजन्मनःफ-भार्गवेंदुसुतौपापौभूसुतागिरसोडुमेः एकएवग्रहःसाक्षाद्भूसुतोयोगकारकः निहंतारविजोन्येतुपापिनोमारकाह्वयाः कुलीरसंभवस्यैवंफलान्यूचु निसूरिभिः इतिकर्कजन्मनःफ- शौरिर्शुक्रौपातिनौपापौकुजएवशुभावहः प्रभवेद्योगमात्रेणशुभंचकुजशुक्रयोः सोमेनैसौम्यादयःपापाःमारकत्वेनलक्षिताः एवंफलानिवेद्यानिसिंहस्यजनुर्भवेत् इतिसिंहजन्मनःफ- कुजजीवेंदवःपापाएकएवभृगुःशुभः भार्गवेंदुसुतावेवभवेतांयोगकारको निहंताकविरन्येतुमारकाख्याः कुजा दयः प्रनोदितफलान्युक्तान्येवकन्याभवात्बुधैः इतिकन्याजन्मनःफ- जीवार्कमहिजाःपापाःशनैश्चरबुधौ शुभौ भवेतांराजयोगस्य कारकौचंद्रतत्सुतौ कुजोनिहंताजीवाद्याःपरेमारकलक्षणाः ॥ निहंतारःफला न्यवंकथोक्तानितुलाभुवः इतितुलाजन्मनःफ- सौम्यभौमसिताःपापाःशुभौगुरुनिशाकरौ सूर्याचंद्रमसौ योगेभवेतांयोगकारको जीवोनिहंतासौम्याद्याहंतारोमारकाह्वयाः एतत्फलानिविज्ञेयान्येववृश्चिकजन्म नःइतिवृश्चिकजन्मनःफ-एकएवकविःपापःशुभौसौम्यदिवाकरौ योगोभास्करसौम्याभ्यांनिहंताभास्करः ... इतिधनुर्जन्मनःफ- ... मारकत्वेनलक्षिताःतान्यानिफलान्येवंचापजस्यमनीषिभिः

कुजजीवेंदवःप्रोपाःशुभौभार्गवचंद्रजौ ॥ स्वयंचैवानिहंतास्यान्मंदोभौमादयःपरे तत्तत्क्षणेनिहं
तारःकाविरेकःसुयोगकृत् ॥ ज्ञातव्यानिफलान्येवंविबुधैर्मृगजन्मनः इतिमकरजन्मनःफलं जीवचंद्रकुजा
पापाःएकोदित्यगुरुःशुभःराजयोगकरोभौमःकविश्चैवबृहस्पतिः निहंताप्रतिभौमाद्यामारकत्वेनलक्षिताः
एवमेवफलान्युह्यान्येतानिघटजन्मनः इतिकुंभजन्मनःफ॰ मंदशुक्रेदवःसौम्याःपापाभौमविधूशुभौ महो
सुतगुरोर्योगेकारणेनैवभूसुतःमारकाःकारकावीक्ष्यमंदज्ञौप्रतिमापिनः इत्यूह्यानिफलान्येवंबुधैस्तुझपजन्म
नः इतिमीनजन्मनःफलम् अब राहुकेतुका फल कहतेहैं राहुकेतुकिसीराशिके स्वामी नाहिंहै इनका
किसस्थानमेंस्थिर होनेसेकिसप्रकारका शुभाशुभफलदेतेहैं इसआकांक्षामेंकहतेहैंतमोग्रहजोराहुकेतुहै
इहोजिस जिस भावमें स्थित होवें जिस जिस भावकेस्वामीकेकयुक्तहोवेतिसतिसकेफलकोअतिशय
करके प्रवलता करके देतेहैं इसका इहे अर्थहै जिस जिस भावका स्वामी अपने स्वक्षत्रमें जो जो फ
ल देताहैं सो सो फल राहु केतु विशेष करके देतेहै और राहु केतुको तिस भावेशकी अ
पेक्षाकरके स्वाभाविक बलवत्तासिद्धहै अथवा जिस जिस भावके स्वामी करके युक्त होवे सो भा
वेश तिस भावके फलको विशेषकरके देताहै औरसंयुतावित्यत्र संयुत इसपदकरके संबंधचारप्रकारका
कहाहै सो कहतेहैं १५ केंद्रत्रिकोणपतयइति केंद्रके स्वामी और त्रिकोणके स्वामी आपसमें संबंधहो

अथराहुकेत्वोराश्यनधीशत्वात्कुत्रस्थितयोः किंफलंकथंवाशुभाशुभत्वमित्या
कांक्षायामाह॥ यद्यद्भावगतौवापियद्यद्भावेशसंयुतौ तत्तत्फलानिप्रबलौप्रदि
शेतांतमोग्रहौ १५ अथसंबंधवशेनयोगविशेषः ॥ केंद्रत्रिकोणपतयःसंबंधेन
परस्परम्॥ इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः १६ केंद्रत्रिकोणनेतारौदोष
युक्तावपिस्वयम् संबंधमात्राद्बलिनौभवेतांयोगकारकौ ॥१७ त्रिकोणाधिपयो
र्मध्येसंबंधोयेनकेनचित् ॥ केंद्रनाथस्यबलिनोभवेद्यदिसुयोगकृत् १८ निवसे
तांव्यत्ययेनतावुभौधर्मकर्मणोः एकत्रान्यतरोवापिवसेच्चेद्योगकारकौ १९

नेकरके विशेष फल देतेहै सो संबंध चार प्रकारका कहाहै अन्योन्यराशिमें स्थितत्वएक १ परस्पर
दृष्टिसंबंधदूसरा २ एकतरदृष्टिसंबंध ३ सहावस्थान एकराशिगत्वचतुर्थ ४ है इसमेंपूर्वपूर्वसंबंधबल
वान् कहाहै तिनमें केंद्रेश और त्रिकोणेशोंका संबंध विशेष फलके देनेवाला होताहै परंतु तीसरे
और छठे और एकादशके स्वामीसे संबंध नाहि करते होवें तब विशेषफल होताहै १६
और कहतेहै केंद्रत्रिकोणाधिपति आप दोष युक्तभी होवें तबभी पूर्वोक्त संबंध होनेसे विशेष फलके
कारक होतेहैं १७ और कहतेहैं त्रिकोणाधिपयोरिति ॥ पंचमेश और नवमेश तिनके मध्यमें एक
कोई किसी केंद्रके स्वामीसे संबंध करे परंतु केंद्राधिप बलीहोवे तब राजयोगका कारक होताहै १८
अब प्रबल राजयोग कहतेहैं ॥ निवसेतामिति ॥ केंद्रके और त्रिकोणके स्वामी अथवा नवम औ
र दशमके स्वामी दोनों व्यत्ययसे स्थित होवें अर्थात् नवमेश दशममें स्थित होवे और दशमेश न
वममें स्थित होवे तब एकयोग होताहै १ और योगांतर कहतेहैं ॥ एकत्रेति ॥ नवमस्थानमें दोनों
स्थित होवे तब दूसरा योग होताहै २ और दशमस्थानमें दोनों स्थितहोवेंतबतीसरायोगहोताहै ३
और दोनोंके मध्यमें एकभी अपने स्थानमें स्थित होवे तबभी राजयोगकारक होतेहैं १९

ला और एकादश स्वामी होते हैं ...

अथयोगांतरके राजयोगकहतेहैं दशास्वपीतियोगकारककैः केंद्रत्रिकोणके स्वामीग्रहहैं तिनकी जो दशा
तिनको नाम दशाद्वयी कहतेहैं अर्थात् नवमेश और दशमेशकी दशाके अंतर्दशाके कारक जो
ग्रह संबंधकर्के रहितवीहैं कदाचित् तिनकी दशामेंवी राजयोगकी प्राप्ति होतीहै परंतु शुभग्रह २६ वे
तीसरे छठे एकादशके स्वामी नहिं होवें तब राजयोगकी प्राप्ति होतीहै २० योगांतरकहतेहैं योगका
रक संबंधादिति ॥ स्वतःस्वभावसेवी पापीग्रह योगकारक ग्रहके संबंधसे राजयोगके फलको देतेहैं
अर्थात् योगकारकग्रहकी दशामें और तत्संबंधीकी अंतर्दशाकालमें राजयोगका फल होताहै २१
योगांतरकहतेहैं ॥ केंद्रत्रिकोणाधिपयोरिति ॥ एकत्वइति केंद्रका और त्रिकोणका स्वामी एकहि ग्रह
होवे तब दोनों राजयोगके कारकहोतेहैं और यह और दूसरे त्रिकोणाधिपति कर्के संबंध होवे तब
तिसके परे और शुभ क्याहै तिसके उपरंत श्रेष्ठ योग कोई नहिं होताहै २२ अब राहुकेतुको राज
योगके कारकत्व कहतेहैं ॥ यदिकेंद्रेति ॥ तमोग्रह जो राहुकेतुहै यह केंद्रमें वा त्रिकोणमें स्थित हो
वें तब और किसीकर्के केंद्रके स्वामीकर्के वा त्रिकोणके स्वामीकर्के संबंधहोवें तब राहुकेतु राज
योगके कारक होतेहैं २३ अब राजयोगका भंग कहतेहैं ॥ धर्मकर्माधिनेताराविति ॥ नवम

दशास्वपिभवेद्योगः प्रायशोयोगकारिणः ॥ दशाद्वयीमध्यगतस्तदयुक्शुभ
कारिणाम् २० योगकारकसंबंधात्पापिनोपिग्रहास्स्वतः तत्तद्भुक्त्यनुसारेणदिशे
युर्योगजफलम् २१ केंद्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वेयोगकारकौ अन्यत्रिकोणप
तिनासंबंधोयदिकिंपरम् २२ यदिकेंद्रेत्रिकोणेवानिवसेतांतमोग्रहौ नाथेना
न्यतरेणापिसंबंधाद्योगकारकौ २३ अथराजयोगभंगः धर्मकर्माधिनेताररन्ध्रला
भाधिपौयदि ॥ तयोः संबंधमात्रेणनयोगंलभतेनरः २४
॥ अथायुर्दायविषयेमारकग्रहलक्षणम् ॥ अष्टमंह्यायुपःस्थानमष्टमादष्टमंच
यत् तयोरपिव्ययस्थानंमारकस्थानमुच्यते २५ तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्द्विती
यंबलवत्तरम् तदीशितुस्तत्रगताःपापिनस्तेनसंयुताः २६ तेषांदशाविपाकेषु
संभवेन्निधनंनृणाम् तेषामसंभवेसाक्षाद्व्ययाधीशदशास्वपि २७

भावका स्वामी और दशम भावका स्वामी जो ग्रह सो अष्टमेश और लाभेशवी होवे अथवा ध
र्मकर्मके स्वामी अष्टमेशकर्के संबंधहोवें तब राजयोग भंग होताहै २४
अब आयुर्दायके विषयमें मारक ग्रहके लक्षण कहतेहैं अष्टममिति जन्मलग्नसें अष्टमस्थान आयुका
स्थान कहाहै और अष्टमसें अष्टम अर्थात् जन्मलग्नसें तृतीयस्थान सोवी आयुपाकास्थान कहाहै और तिन्हों दोनों
आयुपाके स्थानोंसें व्ययस्थान जोहै अर्थात् जन्मलग्नसे सप्तम और द्वितीयस्थान सो दोनों मारकस्था
न कहेहैं २५ और तिसमें सप्तमकी अपेक्षासें दूसरास्थान अत्यंत बलीहै तिसकर्के जन्मलग्नसें
दूसरे भावके स्वामीकी दशामें मृत्युकहे सोई कहताहै तदीशितुरिति तत्शब्दकर्के पूर्वोपस्थित दूसरे
भावका परामर्श होताहै तिसकर्के द्वितीयस्थानेशकी दशाकालमें संभवेसति संभवके होयां मनुष्यों
का मरण होताहै २६ इसका संबंध आगेके अर्द्धश्लोककर्के कहाहै अथवा तत्रगता इति दूसरे स्थान
में प्राप्त पापी ग्रह तीसरे और छठे और एकादशके स्वामी होवें तब अथवा मारकेशकर्के दूसरे
के स्वामीकर्के युक्त तीसरे छठे एकादशके स्वामी होवें संभवके होया तिनकी दशामें मृत्युकहे और
तिनकी दशामें संभव नहिं होवे तब द्वादशेश ग्रहकी दशामें मृत्यु कहे २७

...और जब द्वादशेशकी दशामें आयुष्यका संभव नहीं होवे तब कहतेहैं अलाभ इति जब द्वादशेश और लाभेश ... और द्वादशेशकर्के संबंधकों प्राप्त जो पापी तीसरे छठे एकादशके स्वामी तिनसंपूर्णोंके ... किसीक स्थानमें द्वादशेशसे संबंध होतेसे शुभग्रहोंकी दशामेंभी मृत्युकहे और अष्टमेशकी ... दशामें मृत्युकहे २८ और कहतेहैं पूर्वोक्त संपूर्णमारकोंके असंभवमें केवलानामिति ज्योति ... पापीग्रहोंकी दशामें अर्थात् तीसरे छठे एकादशके स्वामीको दशामें किसीक स्थानमें मृत्यु ... और विचार ... सूर्यचंद्रमाके विना द्वितीय सप्तम स्थानका जो स्वामीहै और छठे ... द्वादश ... के स्वामी और राहुकेतु इन्हों संपूर्णोंके मध्यमें जो ग्रह अधम नवांशका स्वामी ... मारक होताहै और तेसेहि चंद्राक्रांत नवांशपतिः मारक होताहै और पापषड्वर्ग शत्रुगृहगत नीच ... आदिमें स्थित मारक होताहै और षड्वर्ग शब्दकर्के स्ववांश स्वद्रेष्काण स्वद्वादशांश स्व त्रिंशां ... अशुभ करण कहाहै और पापग्रहके योगमें मृत्यु और शुभग्रहके योगमें पीडामात्र कल्पना करणे योग्यहै २९ अब विशेषतें शनिका मारकयोग कहतेहैं जब शनि मारके- आदियोंकर्के सहावस्थानादि ... मारक यदि ... कोई संबंध कर्त्ताहोवे तब संपूर्ण इतर मारकोंका ... त्यागकर्के

अलाभेपुनरेतेषांसंबंधेनव्ययेशितुः क्वचिच्छुभानांचदशास्वष्टमेशदशासुच २८ केवला नांचपापानांदशासुनिधनंक्वचित् कल्पनीयंबुधैर्न्हणांमारकाणामदर्शने २९ मारकैःसहसंबंधान्निहन्तापापकृच्छनिः अतिक्रम्यतरान्सर्वान्भवत्येवनसंशयः ३० अथगौरीजातकोक्तनक्षत्रायुर्दायकथनम् ॥ पार्वत्युवाच ॥ हितायसर्वसत्वानां जातकंब्रूहिशंकर आयुर्दायविधानंनदशाक्रमफलंनच १ एममुक्तस्तुपार्वत्या शंकरःप्रत्यभाषत उवाचवचनंप्रीत्याशृणुपार्वतिनिर्णयम् २ नवग्रहाइमेख्याताः सूर्यसोममहीसुताः राहुःसुरगुरुःसौरःसौम्यकेतुसितास्तथा ३ एतेप्राण भृतामायुःप्रयच्छतिवरानने श्रेष्ठंचमध्यमंवापिकनिष्ठंवाकदाचन ४ षड्वर्षाणिसूर्यस्यदशचन्द्रस्यसुव्रते सप्तवर्षाणिभौमस्यराहोरष्टादशैवतु ५ गुरोःषोडशविज्ञेया सौरस्यैकोनविंशतिः सप्तदशबुधस्योक्ताःसप्तकेतोश्चवत्सराः ६ विंशतिर्भार्गवस्योक्तादशाभुक्तिक्रमेणच शतविंशतिसंयुक्तंपरमायुःप्रकीर्तितम् ॥ ७

शनिहि मारक होताहै और कदाचित् शनिहि मारकेश होवे तब क्याकहने योग्यहै, इसमें शनिकों प्रबलता कहिहै और इसमें दशाविंशोत्तरी ग्रहणकरणी कहिहै ३०

अब गौरीजातकोक्त नक्षत्रायु कहतेहैं ॥ पार्वती शिवजीकों पूछतीभईहैशंकर जगतके हितवास्ते जन्मकालका फल और आयुषाके विधानकर्के और दशाफलकर्केयुक्त कहो १ इसप्रकार पार्वतीके कहे कों सुनकर्के शिवजीप्रसन्नताकके युक्त पार्वतीकों कहतेभये हेपार्वति तुं श्रवणकर २ इस क्रमकर्के नवग्रह कहेहैं प्रथम सूर्य १ चंद्रमा २ मंगल ३ राहु ४ बृहस्पति ५ शनि ६ बुध ७ केतु ८ शुक्र ९ इहे नवग्रह देहधारियोंकों आयुषा देतेहैं जन्मकालमें जैसा आयुर्मनुष्यका होताहै उत्तम और मध्यम और कनिष्ठ ऐसे तीनप्रकारका आयु. जन्मकालीनग्रहोंके आधीनहै ४ कलियुगमें एकसौ और बीस १२० वर्ष परमायुहै तिसमें छै वर्ष ६ सूर्यके और दश १० चंद्रमाके औरसात भौमके ७ और अठारां १८ राहुके ॥ ५ ॥ और सोला १६ गुरुके और उन्नी १९ शनिके और सतारां १७ बुध के और सात केतुके ७ ॥ ६ ॥ और वीश २० शुक्रके इहे दशा भुक्तिके क्रम कर्के होतेहैं ७

अब दशाका प्रकार कहतेहे हेपार्वति नवकोष्ट बनायकर्के कृत्तिकासे लेकर्के सताईं नक्षत्रतीन आवृत्तिकर्के लिखे और तिन्होंके नीचे वा ऊपर सूर्यादि शुक्रपर्यंत नवग्रह स्थापनकरे और दैववित् ज्योतिषीपुरुषनेवालेको इस प्रकारकर्के दशाकहे ९, और नक्षत्रके प्रथमचरणमें जो जन्मतेहैं तिन्हकी पूर्णआयुषा एकसउवेस १२० वर्षहोतीहै और दूसरे चरणके आदमें जन्मेतो सउवर्ष १०० आयुषा होतीहे १० और तीसरे चरणके आदमें जन्मेतो अशी वर्ष ८० आयुषा होतीहै औरनक्षत्रके चतुर्थांशके आदमेंजन्मेतो साठवर्ष ६० आयुषा होतीहै और सउ वर्षसेलेकर्के जो आयुषाका समय १०० ८० ६० इन्हमें कदाचित् मृत्युको नहि प्राप्त होवे नक्षत्रके चरणका आवृत होनेमें तब क्रमकर्के १०५ और १०० और ८० वर्षकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै १२ हेपार्वतिसत्ताईं नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें जन्महोवे तिस नक्षत्रसे लेकर्के बुधजनोंने गणना करणी योग्यहै १३ अब

आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
कृ	रो	मृ	आ	पु	ति	श्ले	म	पू
उफ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पूष
उष	श्र	ध	श	पूभ	उभ	रे	अ	

नक्षत्राण्यग्निभादीनित्रिरावृत्यानिसुंदरि ॥ अधोधःस्थापयेत्कोष्टेनवकेकमलानने ८ संस्थाप्यतदधः सूर्याच्छुक्रांतान्नवखेचरान् ॥ दशाफलानिक्रमशोदैववित्प्रपुरादिशेत् ९ प्रथमांशादिजातानां परमायुःप्रकीर्तितम् । द्वितीयस्यांशकस्यादौशतमायुरुदीरितम् १० समाशीतिस्तृतीयस्यषष्टिस्तुर्यस्यतुस्मृत शताद्यायुषिकालेच द्वितीयाद्यंतकाद्विना ११ नाम्रियतेतदाब्दानिपंचादिग्विंशति क्रमात् ॥ अधिकंजीवनंतेषांवक्तव्यंवीरवंदिते १२ सप्तविंशतिऋक्षेषुयत्रभेजन्मजायते तद्धिष्ण्यमादितःकृत्वाकर्तव्यागणनाबुधैः १३ जन्मर्क्षगतनाडीघ्नंपरमायु खग्रहै भजेत् ॥ लब्धंपरमायुषःशोध्यंशेषमायुःस्फुटंभवेत् १४ अत्रांतरेतुयोमृत्युःसदशारिष्टतोभवेत् ॥ पापस्यहिबलिष्ठस्यदशामृत्युप्रयच्छति १५ बलेनवर्जितःपापोवित्तनाशविधायक ॥ मध्यमेनबलेनैवयुक्त पीडाकर स्मृत १६

नक्षत्रायुको स्पष्ट करतेहैं ॥ जन्मनक्षत्रकीयां जो गतघडिया भुक्तघडियां तिन्होंकर्के परमायुवर्षोंको १२० गुणे और खग्रह कहांनब्बे १० केअकसें भागलेवेलब्धवर्ष होतेहैं शेषाकको द्वादशगुण करदें ९० नब्बेसेंभागलेवे लब्ध मास वर्षोंकेआगेधरे और शेषाकको तीस ३० सेगुणे और ९० भागलेवेलब्ध दिन होतेहैं इसी प्रकार शेषांकको साठ ६० गुणकर्के भाग ९० देणेसे घट्यादि लब्धहोतीहै वर्षादियो प्राप्तहै तिन्हको एकस उ बीस १२० वर्षमें घटायदेवे शेष स्पष्टायुः होताहै १४ तिस आयुषाके मध्यमें जो मरताहै सो दशारिष्टसे जानना और बडेबलकर्के युक्त पापीग्रहकीदशा मृत्युकरतीहै १५ और बलहीनपापीग्रहकीदशा धन नाशकरतीहै औरमध्यमबलकर्के युक्त पापग्रह कीदशापीडाको देतीहै १६

श्रौर देवताके पूजनकर्के श्रौर दानकर्के श्रौर साधुसंगकर्के श्रौर ब्राह्मणोंकी सेवाकर्के अपमृत्युका नाश होताहै १७ श्रौर हेपार्वतिजन्मनक्षत्रके अधः स्थित ग्रहकी प्रथमदशा होतीहै तिससें आगे क्रमकर्के दशा श्रौर अंतर्दशा होतीहै १८ श्रौर ग्रहकीयो स्पष्टआयुहै तिसकों ग्रहों के पूर्वोक्त वर्षोंसे गुणे श्रौर एकसउवीस १२० सेंभागलेवेतव अंतर्दशा स्पष्ट होतीहै १९ जैसें अंतर्दशाकों ग्रहवर्षोंसें गुणे श्रौर १२० वर्षकर्केभागे तव विदशा होतीहै दशाकाष्ठादिग्रहक्रमसें २० अथ विंशोत्तरिदशाके फल कहतेहैं प्रथम सूर्यदशाका फल कहतेहैं सूर्यकी दशामें चित्त उदास रहिताहै श्रौर धनका नाश होताहै श्रौर देहमें रोग श्रौर संबंधियोंकावियोग होताहै श्रौर राजजनोंकर्के पीडित श्रौर विदेशवास श्रौर उपघातकों मनुष्य प्राप्त होताहै १ श्रौर चंद्रमाकी दशामें हाथिघोडे रत्नादियों कर्के वडा प्रताप श्रौर मिष्टान्न पान श्रौर अनेक प्रकारका सुखहोताहै

सुरार्चनेनदानेनसाधूनांसंगमेनच शुश्रूषयाचविप्राणामपमृत्युर्विनश्यति १७
नक्षत्राधःस्थितस्तस्यग्रहस्याद्यादशाप्रियेततः क्रमेणचान्येषादशाचांतर्दशाभवेत्
१८ स्फुटमायुर्हतंखेटमानेनविभजेत्ततःपरमायुःप्रमाणेनदशाचांतर्दशाअपि १९
दशाब्देश्चैवपूर्वोक्तविधिनांतर्दशाभवेत्दशाकोष्ठादिखेटानांस्युरथोपदशाइति २०
अथविंशोत्तरीदशाफलानि तत्ररवेःउद्विग्नचित्तःपरिनष्टवित्तःशरीररोगीस्व
जनावियोगी निष्पीडितोराजजनैःप्रवासीनरोपघातीचरवेर्दशायाम् १ गजा
श्वरत्नानिमहाप्रतापोमिष्टान्नपानंविविधंसुखंच आरोग्यतासर्वजनानुरागोभ
वेद्दशायांशशिनोनरस्य २शस्त्राभिघातोनृपतेश्चपीडाचौराग्निरोगाश्चधनस्यहा
निःकार्याभिघातश्चनरस्यदैन्यंभवेन्नराणांधरणीसुतस्य ३ ज्ञानस्यहानिर्गमनं
विदेशेधर्मस्यहानिर्विविधाश्चरोगाः सर्वत्रशून्यंतनुसंशयंचराहोर्दशायांनियतं
नरस्य ॥ ४ ॥ धर्मार्थकामैः परिपूरितश्चराजप्रतापैर्विनयैःसमेतःधनीजयीदा
रसुतादियुक्तोगुरोर्दशायांचनरोविरोगः ५ मिथ्यापवादोविमुखश्चवंधोर्वधश्चरो
गश्चनिराशताच कार्य्याणिशून्यानिधनस्यहानिः क्लेशाभवत्यर्कशनेर्दशायाम् ६

श्रौर आरोग्यता श्रौर संपूर्ण जनोंमें प्रीतिहोतीहै २ श्रौर भौमकी दशामें शस्त्रघात श्रौर राजासें पीडा श्रौर चौर श्रौर अग्निसें पीडा श्रौर धनकानाशहोताहै श्रौर कार्यकानाश श्रौर दीनता मनुष्यकों होतीहै ३ श्रौर राहुकी दशामें विद्याकी हानि श्रौर विदेश गमन श्रौर धर्मकीहानि श्रौर अनेकप्रकारके रोगहोतेहैं श्रौर संपूर्णकर्मोंका फल शून्य होताहै श्रौर देहके वचनेंमें निश्चयकर्के संशय रहिताहै ४ श्रौर वृहस्पतिकीदशामें धर्म अर्थ कामकर्के पूरिनभलीप्रकारहोताहै श्रौर राजप्रतापोंकर्के श्रौरनम्रताकर्केयुक्तहोताहै श्रौरधन श्रौर जयश्रौर स्त्रीश्रौरपुत्रादियोंकें युक्त होताहै ५ श्रौर शनिकी दशामें झूठा अपवाद श्रौर वंधुयोंसें विमुखता श्रौर वध श्रौर रोग श्रौर आशाका भंग श्रौर संपूर्णकार्योंमें शून्यता श्रौर धनकीहानि श्रौर क्लेशहोताहै ६

श्रीरबुधकी दशामें मनुष्यअनेकप्रकारोंकेधनकोप्राप्तहोताहै श्रौर सुंदर स्त्रीके विलासकोप्राप्तहो ताहै श्रौर संपूर्णअर्थ सिद्धकर्ताहै श्रौर वढेमानककेयुक्त होताहै ७ श्रौरकेतुकी दशामें लक्ष्मी के विनाशको प्राप्तहोताहै श्रौर स्त्रीको विपत्तिहोतिहै श्रौर देहपीडा श्रौर राजासे मानभंग श्रौर मित्रोंकर्के श्रौर कुटुंबियोंकर्के विरोधहोताहै श्रौर संतापहोताहै ८ श्रौर शुक्रकीदशामें मनुष्यकोरा जाकर्के मानहोताहै श्रौर धन धान्य कर्कपूर्ण होताहै श्रौर हाथी घोडियों कर्के युक श्रौर स्त्री क र्के रहित होताहै श्रौर मंत्रमें चतुर श्रौर शास्त्रमें कुशलहोताहै ९ श्रव अंतर्दशाकेफलकहतेहैं प्रथ म सूर्यकी दशामें अंतर्दशाके फल कहतेहैं जिसकालमें सूर्यकी दशामें वृहस्पति श्रौरचंद्रमा श्रौर मंगलकी अंतर्दशा होवे तब शुभफल होताहै श्रौर इन्हों तीनग्रहोंकेविना अन्यग्रहकी अंत

[illegible]

नानाविधेरर्थशतैःसमेतोदिव्यांगनाकेलियुतोविलासीसर्वार्थसिद्धोवहुमानवां श्वभवेद्दशायांमनुजोबुधस्य७ लक्ष्मीविनाशोवनिताविपत्तिःशरीरपीडानृपमानभं गः प्रिये कुटुंवेश्वभवेद्विरोधःकेतोर्दशायांसततंचतापः ८ नृपप्रमान्योधनधा न्यपूर्णोहस्त्यश्वयुक्तःप्रमदानुरक्तः मंत्रप्रमयोनिपुणश्चशास्त्रेकवेर्दशायांकुश लोमनुष्यः ९ अथांतर्दशाफलानि ॥ तत्रसूर्यांतर्दशाफलं रवेरंतरोदेवपूज्योय देवतयाचंद्रभौमौशुभौस्तस्तथैव रिपोर्भीतिमर्थस्यहानिंसदैवप्रकुर्वंतिचान्येवि योगंतथैव १० अथचंद्रांतर्दशाफ- रजनिनाथदशांतरगायदारविजराहुमही सुतकेतवः भवतिनैवसुखंखलुसंततिर्वेविजयलाभसुखानितथेतरे १ अथभौ मांतर्दशाफलं दिवाकरश्चापिनिशाकरश्चजीवोपिशंभूमिसुतांतरस्थः ॥ करोतिनित्यंवहुकष्टमन्येरिपोर्भयंवित्तविनाशनंच २ ॥

दशाहोवे तब शत्रुभय श्रौर धनक्षय श्रौर वियोग होताहै १० ॥ श्रव चंद्रमाकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं यद चंद्रमाकी दशामें शनि श्रौर राहु श्रौर मंगल श्रौर केतुकी अंतर्दशाहोवे तब निश्चयकर्के दुःख होताहै श्रौर सूर्य श्रौर बुध श्रौर गुरु श्रौ र शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब विजय श्रौर लाभ श्रौर सुख होतेहैं १ श्रौर मंगलकी दशामें अंतर्दशा का फल कहतेहैं मंगलकी दशामें सूर्यकी श्रौर चंद्रमाकी श्रौर वृहस्पतिकी अंतर्दशा शुभ फलको कर्ताहै श्रौर इन्हों तीनग्रहोंके विना अन्यग्रहकी अंतर्दशावहुत कष्ट श्रौर शत्रुभय श्रौर धननाश कर्ताहै २

अब राहुकीदशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं राहुकी दशामें अंतर्दशा यद बृहस्पतिकी होवे अथवा शुक्रकी अथवा बुधकी होवे तव नित्यप्रति सुख और धनकी प्राप्ति और बहुत प्रकारके राजासंमान होताहै और राहुकी दशामें मंगल और राहुकेतु और चंद्रमा और सूर्य औरशनिकी अंतर्दशा होवे तव दुःख और वियोग और मृत्युकाभय और धनका नाश करतेहैं ४ अब जीवकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं बृहस्पतिकी दशामेंबृहस्पतिकी और बुधकी और सूर्यकी और मंगलकी और चंद्रमाकी अंतर्दशा सुख और धन धान्यकी वृद्धि करतीहै और अन्यग्रहोंकी अंतर्दशा दुःखको देतीहै ५ अब शनिकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं शनिकी दशामें बुध और

अथराहोरंतर्दशाफ० ॥ राहोरंतर्दशायांयदिभवतिगुरुर्भार्गवोवाबुधश्च नित्यसौख्यंधनाप्तिंवितरतिबहुधाराजमानंचधत्ते ॥ भौमोराहुश्चकेतुर्विधुरथचरविर्मंदगामीतथैवसर्वेदुःखवियोगंमरणमथभयंद्रव्यहानिंचदद्युः ॥ ४ ॥ अथजीवांतर्दशाफ० वाचस्पतेरंतरगोगुरुश्चेद्बुधोरविर्भूमिसुतस्तथेन्दुः करोतिसौख्यंधनधान्यवृद्धिंदद्युःसदादुःखमतःपरेये ५ अथशन्यंतर्दशाफ० शनैश्चरस्यांतरगोबुधश्चेद्गुरुःकविश्चैवशुभंददाति शेषाश्चसर्वेबहुदेहपीडां रिपोर्भयंबुद्धिविनाशनंच ६ अथबुधांतर्दशाफ० चंद्रात्मजस्यांतरगोहिभौमइन्दुश्चकेतुश्चससैंहिकेयः शुभप्रदानैवशुभप्रदोर्कोरविर्गुरुर्दैत्यगुरुर्बुधश्च ७ अथकेतोरंतर्दशाफ० केतोरंतर्दशायांभवतिचशुभदोदेवपूज्यःसदैकःकेतुःशुक्रार्किसूनूरविरपिसततंसैंहिकेयोबुधश्च एतेदुःखंचशोकंनृपतिभयमथोद्रव्यहानिंविदेशेनित्यंकुर्वंतिचंद्रोजनयतिचसुखदुःखसंमिश्रितंच ८

बृहस्पति और शुक्रकी अंतर्दशा शुभ होतीहै और अन्यग्रहोंकी अंतर्दशामें बहुत देहपीडा और भय और बुद्धिकानाश होताहै ६ अब बुधकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं बुधकी दशामें मंगल और चंद्रमा और केतु राहुकीअंतर्दशा शुभनहि होतीहै और शनि और सूर्य और गुरु और शुक्र और बुधकी अंतर्दशाशुभ होतीहै ७, अबकेतुकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं केतुकी दशामें एकबृहस्पतिकी दशा शुभहोतीहै और केतु औरशुक्र और राहु और बुधऔरशनि और सूर्य इन छै ग्रहको अंतर्दशादुःख शोक और राजाका भय और धनकी हानि देतीहैं और चंद्रमाकी अंतर्दशा दुःखकरके संयुक्त सुखको देतीहै अर्थात्मध्य फलकरतीहै ८

अब शुक्रकी दशामें अंतर्दशाकाफल कहतेहैं ॥ यदशुक्रकीदशा मेंबृहस्पतिकी अंतर्दशा और शुक्र
की और बुधकी और शनिकीहोवे तब शुभफल होताहै और अन्यग्रहकी अंतर्दशामें धनकी
हानि औरलडाई और रोगवृद्धि होतीहै और राजाका भय होताहै १ अब रुद्रयामलोक्तयोगिनीद
शाका विचार कहतेहैं ॥ आठ योगिनीप्रसिद्धकाहैहै मंगला १ पिंगला २ धन्या ३ भ्रामरी ४ भद्रा
५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ इह आठोंके नामहैं १ और इन्होंके स्वामीग्रह यो शिवशास्त्र
मेंकहेहैं सो कहतेहैंमंगलाकास्वामी चंद्रमा और पिंगलाका सूर्य और धन्याका बृहस्पति और
भ्रामरीका मंगल और भद्राका बुध और उल्काका शनिऔर सिद्धाका शुक्रऔर संकटाके स्वा
मीराहुकेतु कहेहैं २ और अश्विन्यादि नक्षत्रसे लेकर्के जन्मनक्षत्रजितनी संख्याका होवे तिसमें
तीन ३ और मिलावेऔर आठसे भागलेकर्के यो शेष रहे सो मंगलासे लेकर्केदशाहोतीहै
३ और मंगलासे लेकर्के एक वर्षकीवृद्धिकर्के दशावर्ष होतेहैं जैसे मंगला वर्षएक १ पिंग

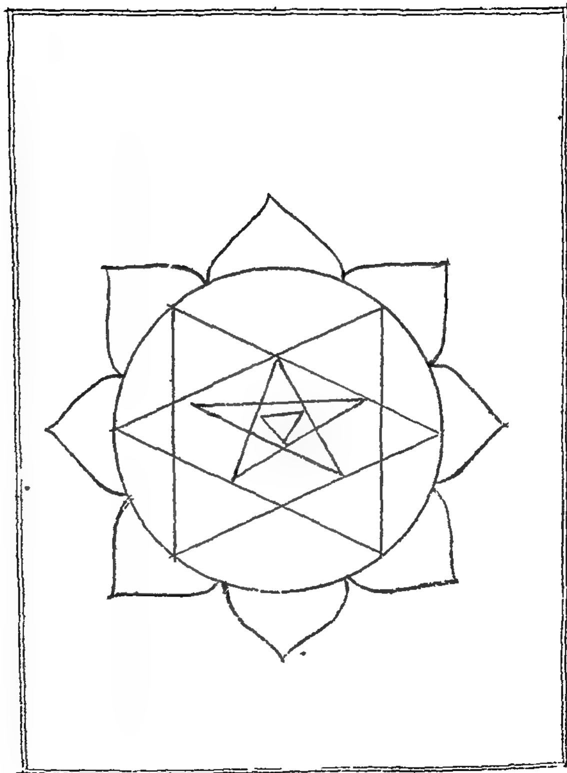
अथशुक्रांतर्दशाफलम् ॥ यद्यांतरंदैत्यगुरोर्गुरुर्भवेच्छुभतथाशुक्रबुधार्किभिस्तथा
अर्थस्यहानिंकलहंचरोगकुर्वंतिचान्यैर्नृपतेर्भयंच १ अथरुद्रयामलोक्तयोगिनी
दशाविचारः योगिन्योष्टौसमाख्यातामंगलापिंगलातथा धन्याचभ्रामरीभद्रा
चोल्कासिद्धाचसंकटा१ चंद्रः सूर्योगुरुर्भौमोबुधोमंद कविस्तमः ग्रहास्तासांविनि
र्दिष्टा क्रमेणैतेशिवागमे२ जन्मर्क्षंत्रियुतंकृत्वावसुभिर्भागमाहरेत् शेषेतुप्रथमा
ज्ञेयाह्यातोन्याक्रमशोमता ३ एकाभिवृद्ध्यावर्षाणिमंगलाप्रमुखासुचप्रथमायां
ज्ञेयाह्यातोन्याक्रमशोमता ३ एकाभिवृद्ध्यावर्षाणिमंगलाप्रमुखासुचप्रथमायांर
सैर्वर्षंपचयचगुणयेत्पुनः ४ गताभिर्भस्यनाडीभिर्गुणयित्वातुतैर्दिनैर्विहीनासाप्रक
र्तव्यास्फुटाचैवभवेद्ध्रुवम् ५ अन्यायथोक्तवद्बोध्या फलंतासांप्रचक्ष्यते मंगला
मंगलंसर्वंकुरुतेपिंगलारुजम् ६ धन्याधनंसुहृत्सौख्यंभ्रामरीभ्रमणंव्यथांभद्रा
कासुखदाचोल्काधनराज्यापहारिणी ७ सिद्धाचसाधयेत्कार्यंसंकटाव्याधिमृत्युदा
दशांतुदशयाहन्यात्षट्त्रिंशद्भागमाहरेत् ८

ला दो २ इत्यादिक्रमसे अब प्रथमदशाकाभुक्तभोग्य कहतेहैं प्रथमदशाके वर्षांकोंछ ६ कर्के
गुणे ४ और तिसअंककर्के नक्षत्रकी भुक्तघडियोंको गुणे तब दशामेंभुक्तदिन होतेहैंतिन्होंदिनोंकर
वर्तमान दशावर्षोमेघटायदेवेतब जन्मकालमें सो दशा भोग्य होतीहै शेषहोतीहै निश्चयकर्के ५
और पूर्व दशाकाभोग्य लिखे और तिसके आगेकिया दशा यथाक्रमवर्षांकर्केलिखे औरतिन्होंकाफ
लकहे ॥ मंगला दशामें संपूर्ण मंगल कार्य होतेहै [illegible] पिंगला रोगका भय करतीहै ६ और धन्या
धन और मित्रोंको सुख करतीहै और भ्रामरी भ्रमण [illegible] पीडा करतीहै और भद्रासुखको देतीहै
और उल्काधनका औरराज्यका नाश करतीहै ७ और [illegible] सिद्ध करतीहैऔर संकटा व्याधि
और मृत्युका देतीहै अब अंतर्दशाका आनयन कहतेहैं [illegible] दशामें अंतर्दशा देखी चाहे तिस
के वर्षांकर्के दशाकेवर्षोंको गुणे और छत्तीस ३६ से भागलेवे ८

श्रोर जो लब्धहोवेसो तिसका दशामेंवर्षहोतेहैं श्रोर यो शेषांकरहे,तिसको तीनसे भागलेवे लब्ध मासहोतेहैं श्रोर जोशेष रहे तिसको दशगुणकरे तबदिन होतेहैं ९ इस प्रकारकके मंगलादिदशों को श्रंतर्दशा बनावे श्रोर श्रंतर्दशाके फल ग्रंथके श्रनुसार कहतेहैं १० मंगलादशाके श्रंतर धन्या श्रोर भद्रा श्रोरमंगलाश्रोरसिद्धादहनित्यप्रतिशुभदेतीयाहै श्रोर शेषदशामंगलाकेश्रंतर अशुभ कर्त्ताहै श्रोर पिंगला दशामेंश्रंतर पिंगला ११ श्रोर धन्या श्रोर भद्रा श्रोर मंगला शुभहैं श्रोर सिद्धा समहै श्रोर शेषकीदशा अशुभहै श्रोर धन्याकेमध्यम धन्या शुभहै १२ श्रोर भद्रा सिद्धा श्रोर मंगला शुभ होतीहै श्रोर श्रन्यदशा अशुभफलकर्त्ताहै श्रोर भ्रामरी दशा में श्रंतर्गत मंगला श्रोर सिद्धा श्रोर धन्या शुभ कारकहै १३ श्रोर भद्रा दशामध्यम फल कर्त्ताहै श्रोर इन्होंसे अन्यदशा दुःखको देने वालीहोतीहै श्रोर भद्रादशाके श्रंतर्गत संकटा श्रोर उल्का

लब्धाकैर्वत्सराज्ञेयामासास्त्रिहृतशेषके ततोदशगुणेशेषेजायंतेदिवसाइह ९
एवमंतर्दशाःकार्यामंगलाप्रमुखाःक्रमात् फलानितत्प्रवक्ष्यामितासांग्रंथानुसारतः
१०मंगलांतर्गताधन्याभद्रासिद्धाचमंगलाशुभदाह्यशुभाःशेषाःपिंगलायांतुपिंगला ११
धन्याभद्रामंगलाचशुभाःसिद्धासमामताशेषाह्यशुभदाज्ञेयाधन्याधन्यास्वयंमध्यगा१२
भद्रासिद्धामंगलाचशुभाह्यन्याःशुभप्रदाः ॥ भ्रामर्यांमंगलासिद्धाधन्याचशु
भकारकाः १३ मध्यमाभद्रिकाज्ञेयापरादुःखप्रदामताः ॥ भद्रायांसंकटाचो
ल्काद्वष्टामध्याचभ्रामरी १४ अन्याःशुभप्रदाज्ञेयाउल्कायांमंगलागता ॥
समदुःखप्रदाःशेषाःसिद्धायांमंगलाशुभा ॥ १५ ॥ धन्याभद्रातथासिद्धापराः
कष्टकरीमताः ॥ संकटायांशुभासिद्धासमाभद्रापराहिताः ॥ १६ ॥
निजभवनसमुत्थस्वोच्चमित्रारिनीचैर्जनितमखिलयोगैर्भावदृष्ट्यादिजातं
सकलफलसमूहंसंप्रगृह्यात्रविद्वान्वदतुजनुषिकिंचिद्वर्षप्रवेशोदयेपि ॥ १७

दुष्ट फलकर्त्ताहै श्रोर भ्रामरी मध्यम फल कर्त्ताहै १४ श्रोर दशा शुभफल कर्त्ताहै श्रोर उल्का दशामें मंगला मध्यम फल कर्त्ताहै श्रोर सभ दुःखफल देतीहै ॥ श्रोर सिद्धादशाके श्रंतर्गत मंगला शुभ होतीहै१५श्रोर धन्या श्रोर भद्रा श्रोर सिद्धा शुभ होतीहै श्रोर इन्होंसेश्रन्यदशा दुःखको देतीहै ॥ श्रोर संकटा दशाके श्रंतर्गत सिद्धा शुभ होतीहै श्रोर भद्रा मध्यम होतीहै श्रोर अन्यदशा अशुभ होतीहै १६ श्रोर कहतेहैं पूर्वकहे जोदशाके स्वामी ग्रह सो अपने क्षेत्रमें वा अपने उच्च में वा मित्रादि राशिमें अथवा शत्रुनीचादि राशिमें स्थित होवें श्रोर शुभाशुभ ग्रहोंकरके युक्त श्रोर दृष्ट होवें तब विद्वान् संपूर्णफलको विचारकरकेजन्मकालमें फलकहे श्रोर वर्षप्रवेशकालमेंश्रोर प्रश्न कालमें भीफलकहे १७



जैसेविष्णुके पूजनसे संपूर्णदेवता प्रसन्नहोतेहैं तैसे
अब योगिनीदशाकी पूजाका विधान कहतेहैं ॥ योगिनीयां प्रसन्न होतीयांहैं और तिसकावंशनि
हियोगिनीयोंकेस्वामीपूर्वकहेजोयह तिनके पूजनसे उार रुद्रोक जो मंत्र मृत्युंजयादिहै
श्रयकर्के होताहै अयसे शिवजीने पार्वतीके आगे कहाहै १ यथा शक्तिसे जपकरे उार योगिनीकाचित्तमें ध्यान धरे
तिसका हजार १००० वा लक्ष१००००० रक्तवस्तु मिलायकर्के होम करेउार
और जपके दशमांशकर्के अन्न घृत दुग्ध मधु और रक्तचंदनादि कहेजो योगियोंके मं
ब्राह्मणोंको भोजनदेवै २ इसप्रकारकर्केहिआगे जपकरे उार विधिपूर्वक
तिनमें जोविरुद्धदशाहोवे तिसके मंत्रको दशहजारविघ्नोंकोवी शीघ्रदूर करदे
हवनादि ॥ करे सो सातदिनमें युक्त योगिनीयंत्रका पूजनकर्के
ताहै ॥ अथवा नित्यप्रति मंत्रबीजोंकर्के होतेहैं और लक्ष्मी घरमें
अपने पासजो रखताहै तिसके शत्रु निर्बल

अथयोगिनीदशापूजाविधानम् ॥ हरौपूजितेसर्वदेवाःसुतुष्टास्तथास्वर्चिताः
शिवेनोक्तमेतच्छिवायाःपुरस्त्वस्वखटोनवापि ॥ प्रसन्नाभवेयुर्ध्रुवंतस्यवंशः योगिनीध्यानचेतसिसविधा
स्तात् ॥ १ ॥ श्रीरुद्रोक्तमनुंसहस्रमथवालक्षंजपेद्योगिनीध्यानंचेतसिसंविधा
यदशांशोहोमपद्वस्तुभिः ॥ अन्नदुग्धघृतैस्तथामधुयुतैरक्तैस्तथावस्तुभिर्हुत्वा
तद्दशांशतर्पणविधौविप्रांस्तथाभोजयेत् २ एवंयश्चविरुद्धयोगिनिमनुंजपा
विधिःपूर्वकंविघ्नानामयुतंचसप्तदिवसैर्दूरीकरोत्याशुच ॥ नित्यंयोगिनिमंत्र
बीजसहितंयंत्रंप्रपूज्याथवापार्श्वेरक्षतितस्यशत्रुरबलोलक्ष्मीःस्थिरावेश्मनि॥ ३
त्रिकोणंततःपंचकोणंसमुक्तंततोगोमितंकोणमुक्तंतथैव ततोवर्त्तुलंचाष्टपत्रंविधे
यमिदंयोगिनीयंत्रमुक्तंशिवेन ४ इच्छाज्ञानक्रियामद्रौत्रिपुकोणेषुपूजयेत् ॥
मन्मथान्पंचतदधःपंचकोणेषुपूजयेत् ॥ ५ ॥ षडंगंपूजयेत्पश्चात्पश्चादष्टद
लेषुच ॥ एवंविप्रोविधानेनपूजयित्वातुयोगिनीम् ॥ ६ ॥ यदासंकटास्याद्
विरुद्धानराणांतदाजंतुभिःसंकटापूर्वगौरी ॥ प्रपूजाविधेयातथासंकटघ्नीभवे
च्छिवेनोक्तमेतद्भवान्याःपुरस्तात् ७ ॥

स्थिर रहतीहै ३ अब यंत्रकी विधि कहतेहैं ॥ प्रथम त्रिकोण लि
खे और तिसके ऊपर पंचकोण लिखे और तिस पंचकोणके ऊप
छकोण लिखे और तिसके ऊपर वर्त्तुलरेखादेकर्के अष्टदल विधान करे यह योगिनीका यंत्र शि
वजीने कहाहै ४ हेपार्वति त्रिकोणमें इच्छासंलेकर्के तीन शक्तियोंका पूजनकरे
और पंचकोणमें पांचकामबीजकाक्लींकारका पूजनकरे ५ षट्कोणमें पूर्वदिशासेलेकर्केहां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्रः
बीजोंकापूजन करे और इनमें स्वाहाकारदोवर्णमिलायकर्के अष्टदलोंमें पूजन करे यह यंत्रपूजनवि
धिहै ६ और कहतेहैं जब जिन्होंमनुष्योंको संकटा विरुद्धदशा वर्तमान होवे तिन्होंने संकटानाम
क पार्वतीका पूजन करणा योग्यहै तैसे करणेसे पार्वती संकटके हरणेवालीहोतीहै अयसे
शिवजीने पार्वतीके आगेकहाहै ७

और इसीप्रकार जब उल्काविरुद्धदशा होवे तब मनुष्योंनेंज्वालामुखीसर्वदाकाल पूजने योग्यहैं दुःखकीशांतिकेवास्तेइसमेंसंशयनहिहै ८ इतिश्रीजातकखंडेभाषायांविंशतितमोध्यायः २० अब निर्याणाध्यायका व्याख्यानकरतेहैंहोराप्रदीपमें सूर्यसेलेकर्के शनिपर्यंतयोग्रहअष्टमस्थानमेंस्थित होवेसो क्रमकर्केअग्नि और जलऔरशस्त्रऔरज्वरऔर छर्दरोगऔर तृषाऔर क्षुधासे मृत्युकरतेहैं और अष्टम स्थानमें कोई ग्रह स्थित नहिहोवे तब योग्रह बलवान् अष्टमस्थानको देखे तिसके दोषकर्के मृत्यु हैऔर बलयुक्तपूर्णदृष्टिकर्के कोई ग्रह नहिदेखता होवे तब अष्टम भावगतयो द्रेष्काण तिसके स्वा

एवमुल्काविरुद्धास्यान्नरैर्ज्वालामुखीसदा ॥ पूजनीयाप्रयत्नेनदुःखशांत्यै नसंशयः ॥ ८ ॥ अथमंगलामंत्रः ॥ ह्रींमंगलेमंगलालयेस्वाहा ११ अथपिंगलामंत्रः ॥ ऐंपिंगलेवैरिवारिणिप्रसीदफट् १२ अथध न्यामंत्रः ॥ ओंधन्यदेधन्येस्वाहा ८ अथभ्रामरीमंत्रः क्रींभ्रामरिजगतामेअधी श्वरिभ्रामयक्लीं १६ अथभद्रामंत्रः वलुंभद्रेकममभद्रंदेहिपरभद्राणिनाशयना शयस्वाहा २४ अथोल्कामंत्रः ओंउल्केममरोगंनाशयजंभय १३ अथसिद्धा मंत्रः ॥ ह्रींसिद्धेसर्वमानसंसाधयसाधयस्वाहा १७ अथसंकटामंत्रः ॥ वलुंक्रींक्रींसंकटेमरोगंनाशयनाशयवलुंक्रींह्रीं १८ इतियोगिनीदशापूजनविधानम् इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधे जातकखंडेदशांतर्दशाफलाध्यायोविंशः २० ॥ अथनिर्याणाध्यायोव्याख्या यते होराप्रदीपे वन्ह्यंब्वायुधतोज्वरामयतृषाक्षुत्तोकमुख्यैर्मृतिं रंध्रस्थैःसबलेक्ष काद्यनिधनेवारंध्रपात्त्रिंशपात् पित्तात्धातकफाद्यपित्ततइहत्रिभ्यःकफाद्यानिलश्ले ष्मभ्यांमरुतोकितःसमधनुः छिद्रांगकेकोपतः १ छिद्रेशस्वभगेचरेतीर्थमरणंल ग्नेशयुक्तेतथा जीवाढ्येचासिताान्वितेप्यथचरेछिद्रेन्यदेशेविपत् ॥ पष्ठाष्टस्थबु धारयोर्यदितदाचौरोस्यपादौकरौ नरयेतांखसुखस्थसूर्यकुजयोःशैलाग्रपाताद्वधः २

मीके दोषसें मृत्यु कहे द्रेष्काणेश सूर्यहोवे तब पित्तकर्के चंद्रमा होवे तब वातकफसें मंगल होवे तब पित्तकर्के बुध होवे तब कफ पित्तवात तीन दोषोंसें बृहस्पति होवे तब कफवायुकर्के और शुक्र होवे तब श्लेष्मकर्के और शनि द्रेष्काणकास्वामीहोवे तब वायुकर्केमृत्यु होतीहै और अष्टम भावमें गतयो राशि तिसके कोपसें रोगोत्पन्न होताहै १ और अष्टमेश स्वलग्नमें स्थित होवे तब तीर्थमें होतीहै और लग्नेश कर्के वा बृहस्पतिवा शुक्र कर्के युक्त होवे तब तीर्थमें मृत्युहोतीहै और अ चरराशि होवे तब विदेशमें मृत्युहोतीहै और छठे और आठमे स्थानमें बुधमंगल दोनों तिसके हाथ और पैर चोरकाटतेहैं और दशमचतुर्थ स्थानमें सूर्य मंगल स्थित हो गिरकर्के मरताहै २

और जिसके जन्मकालमें सूर्यकी राशिमें शनैश्चर स्थित होवे और मंगलकी राशिमें बृहस्पति स्थित होवे और पापग्रहकरके युक्त होवे तब तिसका भुजाका छेदन होवाहै और शत्रुकी राशिमें शनि शुक्रकरके युक्त होवे और शत्रुग्रहकरके दृष्ट होवे तब तिसका पग छेदन होताहै और कर्कराशिमें राहु और सिंहराशिमें चंद्रमा स्थित होवे वा अष्टमस्थानमें होवे तब तिसका शिरछेद होताहै और शुभग्रहकी दृष्टिसे रहित चंद्रमा शत्रुकी राशिमें होवे तब तिसके नेत्रनाश होताहै और शनि और पापग्रहकी राशिमें स्थित चंद्रमा सूर्य मंगलकरके दृष्ट होवे तब ब्रह्मघाती होताहै और शनि कर युक्त होवे तब निश्चयकरके गोहत्या वाला होताहै और मेष वृष मिथुन राशिमें ग्रह होवें और पापग्रहकरके मरताहै और शुभग्रह शत्रुकी राशिमें स्थित छठे आठमें बारहमे स्थानमें स्थित होवे और ... सर्पदंशकरके मृत्युको प्राप्त होताहै ४ और सिंहराशिमें मंगल शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तब ... मरताहै और ... राशिमें वा कर्कराशिमें सप्तम और अष्टमस्थानमें राहुकरके युक्त चंद्रमा होवे तब पशुसें मरताहै और ...

सूर्यक्षे रविजे कुजर्क्षे जगुरौ नापापयुक्ते भुजच्छेदोथारिगृहे शनिः सितयुतो वैरीक्षि
तोंघ्रिच्छेदकृत् ॥ कर्कगो हरिभे विधुर्जनि तदा शीर्षच्छिद्रं हि नो केतके सद्दृग्घीनो विधुश्च
शत्रुगृहगः पापत्रयाढ्यो क्षिदृत् ३ सूर्यारेक्षितपापराशिगविधौ स्याद्ब्रह्मघाती
पुनर्मंदादौ यदि खलु गोवधी वितयक १ । २ । ३ जाच्छलघात स्वगः सौम्यशत्रुगृ
हे रवीक्षितयुते षष्ठाष्टमांत्यजननाशः शत्रुयुतकुजारिपुगृहच्छिद्रहि जिह्वान्मृतिः
४ सिंहे कार्किणि सप्तमाष्टमविधौ सागो विनश्येत्पशोः मागो सारिगृहे शनौ रिपु
दृष्टायुक्तो तिपापी स्मृतः ॥ कर्कटोसशनौ शुभग्रहदृष्टौ हानितु स्वजो भवेत् भा
नौ धर्मगते शशीक्षितयुतः शत्रोगृहे सर्पतः ६ मानसावल्याम् ॥ कन्यास्थयो
रिनेंद्वो पापेक्षितयोर्मृतिः स्वजनात् ॥ उभयोरथार्कशशिनोर्यदा तदा तोयमज्ज
नतः ६ मृत्युर्जलाद्दहनान्मंदे कुलीरे मकरे विधौ ॥ मवन्हि शस्त्रजश्चंद्रे कुजर्क्षे
पापमध्यगः ७ कन्यायां पापमध्यस्थे चंद्रे रक्तोत्थशोफजा ॥ शस्त्राग्निपात्
योर्मृत्युः पापांशे सारभे स्थिते ८

... पापकरके मरताहै और कर्कराशिमें शनिय ... राशि लग्नमें स्थित होवे और शत्रुकरके दृष्ट होवे तब लठा होयकरके मरताहै और ... युक्त चंद्रमा स्थित होवे और शुभग्रहकी दृष्टिकरके रहित होवे तब सर्पसे मरताहै ५ शत्रुकी राशिमें नवम स्थानमें सूर्य स्थित होवे और चंद्रमा करके दृष्ट युक्त होवे तब सर्पसे मरताहै ... सूर्य चंद्रमा दोनों पापी ग्रहोंकरके ... जन्मकालमें कन्याराशिमें स्थित सूर्य चंद्रमा दोनों पापी ग्रहोंकरके दृष्ट होवें तदा ... और जलमें डूबनसे मृत्यु होताहै ६ और जिसके जन्मकालमें कर्कराशिमें ... होवे तब जलमें मृत्यु करे और मेष और वृश्चिक राशिमें ... में शनि, और मकरराशिमें चंद्रमा स्थित होवे तब ... अग्निशस्त्रकरके मृत्यु करे ७ और जिसके जन्मकालमें कन्याराशि ... पापग्रहके मध्यमें स्थित होवे तब रक्त शोफ रोगसें मृत्यु होताहै और पापीग्रहके ... चंद्रमा पापी ग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे तब ... और अग्निकरके मृत्यु होताहै ८ ... मकर और कुंभराशिमें चंद्रमा स्थित होवे तब शस्त्रोंकरके

और नवम और पंचम स्थानमे स्थित चंद्रमाको शुभग्रह नहि देखते होवे तब बनमें मृत्यु होताहै ९ और अष्टमभावके द्रेष्काणकोस्वामी और पापग्रह चंद्रमा ये अष्टम स्थितहोवे तबभी बनमें मरताहै और पापग्रहकरके युक्त चंद्रमा सप्तममे स्थितहोवे और मीनराशिके लग्नमें सूर्यहोवे और मेषराशिमें शुक्रहोवे तब स्त्रीके निमित्त गृहमें मरताहै १० और चतुर्थस्थानमें मंगल अथवा दशम स्थानमें शनिहोवे तब शूलीकरके विद्ध मृत्युको प्राप्तहोताहै और क्षीणचंद्रमा करके युक्त पापग्रह नवम पंचममें वा एकादशमें स्थित होवे तब वो शूलीकरके मरताहै ११

और जिसके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें मंगल वा शनि स्थित होवे और दशम स्थानमे शनि क्षीणचंद्रमा करके युक्त होवे और पापग्रह त्रिकोण । ९ । ५ । स्थानमे स्थित होवे तब शूलीकरके मृत्यु होताहै ॥ १२ ॥ और चतुर्थस्थानमें सूर्य और दशमस्थानमे भौम क्षीणचंद्रमा करके युक्त होवे और शनि करके दृष्ट होवे तब गिरने करके और काष्ठसे ताडित होने करके मृत्यु होताहै १३ और

सौम्यादृष्टौखलौधर्मधीस्थौबंधान्मृतिप्रदौवधरव्यंशेशपापाश्चहिमगोश्छिद्रगास्त
था ९ सपापशीतगौद्यूनेमीनराश्युद्गमेरवौमेषशुक्रेगृहान्तर्मरणंमतिरिभवेत् १०
शूलाद्विद्धमृतिर्भौमेसुखेकेवायमेऽंबरे त्रिकोणायगतैःपापैर्युगपत्सकृशेंदुभिः ११
राशिस्सुखेथवाकेवियतियमेक्षीणचंद्रसंयुक्ते पापैस्त्रिकोणलग्नेशूलप्रोतस्यनिदिशे
न्मरणम् १२ चतुर्थकेवरेभौमेक्षीणचंद्रसमन्विते मंददृष्टेमृतिर्यातिपात काष्ठेन
ताडित १३ क्षीणेंदुमंदार्ककुजेश्चरंध्रलग्नांबुखस्थैर्लगुडाहताग्रः तैः कर्मलग्ना
त्मजधर्मसंस्थैर्धूमाग्निमृत्युर्गतिकुट्टनांग १४ सुखास्तखस्थैःकुजसूर्यमंदैर्मृत्यु
स्तुशस्त्रानलभूपकोपात् — तथाननेत्थक्रमितोगपातोमंदेंदुभौमैर्धनवधुख
स्थैः १५ सूर्येवरेसुखेभौमेमृत्युर्यानप्रपाततः यन्त्रोत्पीडनयाद्यूनेभौमेखेज्ञस्त
वंधुगे १६ बलान्वितरवीक्षितेकुथविधौमृतौशनौ कृमिक्षताद्गुदामयान्मृतिश्च
शस्त्रदाहजा १७

क्षीणचंद्र और शनि और सूर्य और मंगल ये चार ग्रह क्रमकरके ॥ ८ । ४ । १ । १० । इन स्थानोंमें स्थित होवे तब लाठी करके हत होताहै और क्षीणचंद्र और शनि और सूर्य और भौम ॥ १० । १ । ५ ॥ ९ ॥ स्थानोंमें क्रम करके स्थित होवे तब धूमाग्निकरके मृत्यु होताहै ॥ १४ ॥ और मंगल और सूर्य और शनि क्रम करके । ४ । ७ । १० । स्थानमें स्थित होवे तब क्रमसे शस्त्रोंकरके और राजाके कोपकरके मृत्यु होताहै और शनि और चंद्रमा और मंगल । २ । ४ । १० । स्थानमे स्थित होवे तब मुखमें उत्पन्न कृमी होतेहैं तिस दोष करके मरताहै । १५ । और दशमस्थानमें सूर्य और चतुर्थमें भौम स्थित होवे तब वाहनसे गिरकरके मरताहै और सप्तम और दशमें स्थानमें मंगल और सप्तम चतुर्थ स्थानमें बुध स्थित होवे तब यंत्रसे पीडित होनेकरके मरताहै १६ और जिसके जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा और करके युक्त सूर्य और अष्टमस्थानमे शनि स्थित होवे तब कृमिकरके गुदाके रोगमें मरताहै १७

श्रीर जिसके जन्मकालमें मंगल श्रीर सूर्य सप्तमस्थानमें स्थित होवै श्रीर शनि अष्टमस्थानमें स्थित होवे श्रीर
चतुर्थ स्थानमें क्षीणचंद्रमा स्थित होवे तब पक्षिकृतमृत्युको प्राप्त होता है १८ श्रीर लग्न श्रीर पंचम श्रीर अ
ष्टम श्रीर नवमस्थानोंमें क्रमकर्के सूर्य श्रीर शनि श्रीर भौम श्रीर चंद्रमा स्थित होवें तब पर्वत श्रीर कधके
गिडनेसे वा बिजलीके गिडनेसे मृत्यु होता है १९ श्रीर लग्नके नवांशका स्वामी जिस राशिमें स्थित होवे तैसी
भूमिमें जैसे लग्ननवांशेशगतमेषराशिश्चेत्तदा अजाविप्रदेशभूमौ वृषभराशिश्चेत्तदा वृषभप्रचार भूमौ मिथुन
श्चेत्तदा गृहे कर्कश्चेत्तदा कूपे सिंहश्चेत्तदा वने कन्याचेत्तदा कूपे तुलाचेत्तदा हट्टायां वृश्चिकश्चेत्तदा गर्त्ते
धन्वीचेत्तदा ऽश्वप्रचारभूमौ मकरश्चेत्तदा कूपे कुंभश्चेत्तदा गृहे मीनश्चेत्तदा कूपे इति श्रीर जिनका ज
न्मदेशमें मृत्युयोग होवे तिनका तिसी स्थानमें कहे केवल राशिद्वारा प्रदेशमें नहि कहे श्रीर ग्रह
योग श्रीर ग्रह दृष्टिसे कल्पनाकर्के मरण कालमें संपूर्ण शुद्धाशुद्ध भूमि श्रीर पुत्री सरपा समीपवर्ती
कहे श्रीर जन्मलग्नमें जितने नवांश शेष होवें उतनीयें घडियोंकर्के मूर्छा व होयकर्के श्रीर लग्नका

भौमश्चभास्करद्युनरन्ध्रसंस्थशनैश्चरे ॥ पातालगौ तिग्मांशु गामृत्युः पक्षिकृतो भवेत् ॥ १८ ॥ लग्नधीमृत्युधर्मेषु सूर्यमंदकुजेंदुभिः मृतिर्भवति शैलाग्र कुड्याशनिनिपाततः १९ तनुनवमलवेशयुक्तभूमौ ग्रहयोगेक्षणतः प्रकल्प्यम न्यत् मरणमुदितांशतुल्यमोहो द्वित्रिगुणं पृथगीशसौम्यदृष्ट्या २० अथ द्रेष्काणफलमपि होराप्रदीपे द्रेष्काणः कारणं मृत्योर्द्वाविंशो हि विलग्नतः तस्येश्वरो भ नाथो वा सूचयेत्स्वगुणैर्मृतिम् २१ बादरायणः मेषाद्यद्रेष्काणे लग्नस्थे क्रूरवीक्षित मृत्युः ॥ वृश्चिककीटकसर्पाहिप्रदायैः पित्तरोगैर्वा ॥ २२ ॥ आद्यैर्नकाद्यैर्वा मृत्युर्जलजैर्द्वितीयद्रेष्काणे एवं तृतीयभागे तडागवापीप्रपाता द्वा २३ वृषभाद्यद्रेष्काणे तुरगखरोष्ट्रैर्मृत्युर्भवति पुंसां पित्तादनलाच्चौराद्वजा विनो वा द्वितीयोत्र २४

स्वामी श्रीर शुभग्रह देखते होवें तब द्विगुणित श्रीर त्रिगुणित काल मूर्छागत होयकर्के मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २० ॥ श्रब होराप्रदीपमें द्रेष्काणका फल कहते हैं जन्मलग्नमें बाईसवां जो द्रेष्काण है सो मृत्युका कारण है अर्थात् तिस द्रेष्काण राशिका स्वामी वा अष्टमेश दोनोंमें जो बली होवे तिसके दोषकर्के मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥ श्रीर बादरायण कहता है जिसके जन्मकालमें मेषका प्रथम द्रेष्काण लग्नमें स्थित होवे श्रीर क्रूरग्रह करके दृष्ट होवे तब वृश्चिक श्रीर सर्पादि कोंकर्के वा पित्तरोगोंकर्के मरता है २२ श्रीर मेषका दूसरा द्रेष्काण लग्नमें होवें तब जलोंकर्के श्रीर जलमें जीवों करके नकादियों कर्के मृत्यु होता है श्रीर मेषका तीसरा द्रेष्काण लग्नमें स्थित होवे तब तडागने वा बावडी श्रीर कूएमें गिरने कर्के मरता है २३ श्रीर वृष लग्नके प्रथम द्रेष्काणमें घोडे ॥ गधे ॥ ऊंठ इनोंकर्के मृत्युको प्राप्त होता है श्रीर वृषके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मे तो पित्तमें श्रीर अग्निमें श्रीर चोरसें वा बकरे भेड करके मरता है २४

और वृषके तीसरे द्रेष्काणमें वाहनसें गिरके वा युद्धमें मरताहै और मिथुनके प्रथम द्रेष्काणमें जनके नो गलके रोगकरके कास श्वास कफके रोगकरके मरताहै २५ और मिथुनके दूसरे द्रेष्काणमें पक्षि वो और बैल करके वा ऊचे स्थानसें डिगनेसें मरताहै और मिथुनके तीसरे द्रेष्काणमें चतुष्पदसें गिर के वा वनके मध्यमें मरताहै २६ और कर्कके प्रथम द्रेष्काणमें गलरोगकरके अथवा शस्त्रसें मरताहै और दूसरे द्रेष्काणमें वो स्त्री और पुरुषोंका त्रयसें वादरायणकहताहै २७ और कर्कके तीसरे द्रेष्काणमें अतिसारसें वा अजीर्णसें मरताहै और लिफरोग करके और वायुगोले सेवा प्रमेहरोगसेवा मूर्छासें मत्युको प्राप्त होताहै २८ और कर्कके मध्यद्रेष्काणमें दंडके घातसें और मुष्टिघातसें और मुख करके काटनेसें और मृतकके प्रसंगकरके वा स्त्रीके विवादसें मत्युको प्राप्त होताहै २९ और सिंहके प्रथम द्रेष्काणमें विषके दोषसें और बहुत अन्नजल भक्षण करनेसें अनेक

पानादिकत्रपातात्स्यामिवाम्रोतिरिपस्यात ॥ मिथुनाद्ये द्रेष्काणे गलरोगः कास श्वासकफैः ॥ २५ ॥ सहिपक्षपभयोमिथुनद्वितीयद्रेष्केनिपाताद्वा तार्तीये नानिपातःचतुष्पदाद्वामृतिररण्येथ ॥ २६ ॥ कर्कटकाद्ये मृत्युः कुठरुजा मांद्यताथवाशस्त्रात द्रेष्काणेचाद्वितीयेपसःस्त्रीवादरायणःप्राह २७ तवचात्य भागेमृतिरतिसारादजीर्णाद्वा प्लीहवातगुल्मरोगःप्रमेहमूर्छाभिघाताद्वा २८ तत्र वमध्यभागेदंडाभिहतस्यमुष्टिघाताद्वा उपाश्लिष्टतावागताद्वास्त्र्यामृत्युर्विवादाद्वा २९ सिंहाद्येद्रेष्काणेविषदोषाद्बहुचराजलाद्वापिभवतिनिमित्तमरणनानाकारैस्तथारोगैः ३० जलहृद्येपामयकृतोमृत्युःस्यात्सिंहमध्यमत्र्यंशेतस्यातगदरोगविषेणशस्त्रेणवाभवति ३१ कन्याद्येचारानलपक्षिभिरथोथवाशिरोरोगात दुर्गाद्दुष्टिवरंगस्तृपयाभिमृताद्ध तीयेंशे३२ सारावल्यां करभखरशस्त्रतोयादपिपोझात्स्त्रीकृतान्नपानाद्वा अत्यके न्यात्र्यंशेनृणांमृत्युःसमादिष्टः ३३ आद्येतुलाद्रेष्काणेगनाचतुष्पदानिपातितोमृत्युःजठ रामयजोमध्यत्र्यंशेस्येवाजलेक्षेपः ३४

रोगोंकरके मृत्युको प्राप्त होताहै और सिंहके मध्यम द्रेष्काणमें जलकरके और हृदयके रोगकरके मत्यु होताहै और सिंहके तीसरे द्रेष्काणमें गुदाके रोगोंकरके और विषकरके और शस्त्रकरके मृत्यु होताहै ३१ और कन्याके प्रथम द्रेष्काणमें चोरसें और अग्निसें और पक्षीसें अथवा शिरके रोगसें मृत्यु होताहै और कन्याके दूसरे द्रेष्काणमें किलेमें और सर्पकरके देहीजीवों करके और घोडेयों करके और तृषा करके मत्युको प्राप्तहोताहै ३२ और कन्याके तीसरे द्रेष्काणमें ऊंट और गधेसें और पाषाणसें और जलोंसें और फांसीसें और स्त्रीकरके और अन्नपानमें मृत्युको प्राप्तहोताहै ३३ और तुलाके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्रीके निमित्त और चतुष्पदसें गिरनेमें और मध्यद्रेष्काणमें जठरके रोगसें और तीसरे द्रेष्काणमें जलमें मृत्युहोताहै ३४

और वृश्चिकके प्रथम द्रेष्काणमें शस्त्रकर्के और विषकर्के और स्त्रीकर्के और अन्नपानी कर्के मृत्युहोताहै और वृश्चिकके दूसरे द्रेष्काणमें कुत्तयोंसें लेकर्के जीवोंसें मरताहै और तीसरे द्रेष्काणमें मृगोंसें औरहाथी और ऊटसें लेकर्के जीवोंसें मृत्युकों प्राप्तहोताहै ३५ और धनके प्रथम द्रेष्काणमें विष्टासें और वायुसें और विषसें और अग्निसें मरताहै और धनके दूसरे द्रेष्काणमें उदर रोगमें मरताहै और तीसरेद्रेष्काणमें जलचर जीवों कर्के वा जलकर्के मृत्युकों प्राप्तहोताहै ३६ और मकरके प्रथम द्रेष्काणमें शेर और सूरसें लेकर्के और हाथी कर्के मरताहै और मकरके मध्य द्रेष्काणमें घोडियोंसें लेकर्के एकसफवालेसें और तीसरे द्रेष्काणमें शस्त्र अग्नि और चोरके घातसें मरताहै ३७ और कुंभके प्रथम द्रेष्काणमें जलजीवोंसें और स्त्रीकर्के और विष भक्षणकर्के मरताहै और कुंभके दूसरे द्रेष्काणमें गुदाके रोगकर्के और तीसरे द्रेष्काणमें चतुष्पदोंकर्के और मुखरोग कर्के मरताहै ३८ और मीनकेप्रथम द्रेष्काणमें स्त्री

अलिनिप्रथमत्र्यंशेशस्त्रविषस्त्रीकृतान्नपानैःस्यात् ॥ मध्येश्वादिभिरेणभोष्ट्रादिघातांत्येमृतिर्भवति ३५ चापाद्येशकृदनिलाद्विषानलान्मध्यमेत्र्यंशे ॥ जठरामयैस्तृतीयेजलजेनजलेनवामृत्युः ३६ हरिसूकरादिकरिभिर्मृतिर्मकराद्यदृकाणेस्यात् ॥ मध्येजलजैकशफादंत्यशस्त्राग्निचोरघातेन ३७ कुंभाद्येजलजस्त्रीविषमत्तैर्मरणंगुदरुजान्मध्ये अंत्येमृतिश्चतुष्पदमुखरोगैर्भवतिद्रेष्काणे ३८ मीनाद्येस्त्रीग्रहणात्प्रमेहगुल्मैरथद्वितीयेंशे अंत्येभवतिहिमरणंकुत्सितरोगान्नसंदेहः ३९ जातकोत्तमे ॥ स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशेच २ शुभवर्गे ३ थनीचभे ४ क्रूरभे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृदंश ८ के ४० वर्गोत्तमारिभे १० थ्यंशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधाक्रमात् ॥ निर्याणंग्रहयोगाद्यैःकथ्यतेगणकोत्तमैः ४१ भक्तितोग्निप्रवेशेन १ जनहीतः २ प्रमादतः ३ पवनाग्नितो ४ दंभकृत्या ५ दीपनेन ६ विषादनात् ७ ॥ ४२ ॥ यंधना ८ च्चैवलोहाच्च ९ रक्तकोपा १० तथैवच क्षयकासात् ११ स्त्र्यपराधा १२ न्मृत्युर्मृत्युगतेरवौ ४३

ग्रहणके निमित्त और दूसरे द्रेष्काणमें प्रमेहरोगों कर्के वा गुल्म रोगोंकर्के और मीनके तीसरे द्रेष्काणमें निंद्यरोगकर्के मरताहै इसमें संशय नांहिहै ३९ और जातकोत्तममेंकहतेहैं सूर्यसें लेकर्के शनि पर्यंत ग्रहका द्वादश प्रकारका निर्याणकहाहै ४० और जिसके जन्मलग्नसें अष्टम स्थान स्थित प्रत्येक ग्रहका द्वादश प्रकारका निर्याणकहाहै ४० और जिसके जन्मलग्नसें अष्टम स्थान स्थित सूर्य उच्चमें होवे तब भक्तिसें अग्निमें प्रवेश करणेमें और उच्चके नवांशमें होवे तब लोक लज्जामें और शुभग्रहके वर्गमें होवे तब प्रमादरोगसें और नीचराशिमें होवे तब वायु राशि

सें और क्रूर ग्रहकी राशिमें होवे तब दंभकर्मकर्के और क्रूरके वर्गमें होवे तब दीपनकर्के और मित्रकी राशिमें होवे तब विषखानेंसे और मित्रके नवांशमें होवे तब बंधनसें और वर्गोत्तममें होवे तब लोहेसें और शत्रुकी राशिमें होवे तब रक्तके कोपसें और शत्रुके नवांशमें होवे तब क्षयकास रोगसें और राशिमें होवे तब स्त्रीके अपराधसे मरणकों प्राप्तहोताहै ४३

॥ और चंद्रमा अष्टम स्थानमें उचका होवे तब जलमें डूबनेसें और उचके नवांशमें होवे तब हाथके घातसें और शुभवर्गमें होवे तब विजलीके पडनेसें और नीचराशिमें होवे तब स्त्रीके हाथसें और क्रूर ग्रहकी राशिमें होवे तब पित्त कफसें और क्रूर वर्गमें होवे तब त्रिदोषसें ४४ . और मित्रकी राशिमें होवे तब उदररोगसें और मित्रके नवांशमें होवेतब-गुदाके रोगसें वर्गोत्तममें होवे तब पशुयोंके पादके घातसें शत्रुराशिमें होवे तब गुदाके रोगसेंऔर शत्रुके नवांशमें होवे तब छूंगके घातसें और स्वक्षेत्रमें होवे तब क्षयरोगसें मरताहै ४५मंगलअष्टम स्थानमें उचका होवे तब युद्धसें और उचके नवांशमें होवे तब गौयोकेंपकडनेंसें और शुभवर्गमें होवेतब अपनें हाथसें और नीचराशिमें होवे तब अपनें शस्त्रसेंऔर क्रूरग्रहकीराशिमें होवे तब ब्राह्मणसें औरक्रूरग्रहके वर्गमें होवे तब पत्थरके घातसें और मित्रके क्षेत्रमें होवे तब काष्ठकेघातसें और मित्रके नवांशमें होवे तब खूहमें गिडके मरताहै ४६ और वर्गोत्तममें स्थित होके तब पर्वतसें गिरणेसें और शत्रुकी राशिमें होवे तब गुप्त दोषसें और शत्रुके

जलप्रवेशा १ द्धस्ताभिघाता २ दशनिपाततः ३ स्त्रीहस्ता ४ त्पित्तकफतो ५
दोपत्रयभवा ६ मयात् ४४ जठरा ७ द्धुदरोगाच्च ८ पशुपादाभिघाततः ९
गुदरोगा १० च्छंगघाता ११त्क्षया १२ च्चन्द्रेऽष्टमेमृतिः४५ संग्रामा १ द्गोग्रहण
तः २ स्वहस्ता ३ न्निजशस्त्र ४ तःद्विजपार्श्वा ५ दश्मघाता६ त्काष्ठा ७
त्कूपप्रपाततः ४६भृगुपाता१द्गुप्तदोषा१० द्विपभक्षणतस्तथा११ चौरप्रैह रणा
१२ द्भौमेमृत्युःस्यात् मृत्युभागगे ४७ज्वरा १ त्कफविकारेभ्योव्रणरोगा ३
द्रणेन ४ च महाभया५त्प्रियजनवियोगा ६ द्वदनामयात् ७४८ नेत्ररोगा
द्वायुरोगा ९ द्वंधनेनो १० दरामयात् ११ पादव्रणा १२ द्बुधेमृत्युर्मृतिभावगते
क्रमात् ४९ नानारोगैः १ शूलरोगैः २ कर्णरोगात्तथैवच ३ स्वजना ४द्दुष्ट
विकृतो ५ तिसारा ६ न्निजभृत्यतः ७ ॥ ५० ॥

नवांशमें होवे तब विषभक्षणसें अपने क्षेत्रमें होवे तब चोरके प्रहारसें मृत्युको प्राप्त होताहै ४७ और बुध अष्टमस्थानमें उचका स्थित होवे तब ज्वरसें और उचके नवांशमें होवे तब कफके विकारोंसें और शुभग्रहके वर्गमें होवे तब फोडेके रोगसें और नीच राशिमें होवे तबभी फोडेकर्के और क्रूरकी राशिमें होवे तब वडेभयसें औरक्रूरके षड्वर्गमें होवे तब मित्रके वियोगसें और मित्रकी राशिमें होवे तब मुखरोग सें और मित्रके नवांशमें होवे तब नेत्ररोगसें और वर्गोत्तममेंहोवे तब वायुरोगसें और शत्रुकी राशिमें होवे तब वंधनसें और शत्रुके नवांशमें होवे तब उदरके रोगसें और स्वक्षेत्रमें होवे तब पादके व्रणसें मृत्युको प्राप्त होताहै ४९ और बृहस्पति अष्टम भावमें स्थित उचराशिका होवेतब अनेक रोगों कर्के और उचके नवांशमें होवेतब शूलरोग कर्के औरशुभवर्गमें होवे तब कर्णरोगसें और नीचराशिमें होवे तब सबंधिसें और क्रूरग्रहकी राशिमेंहोवे तब दुष्टविकारसें औरक्रूरकेवर्गमेंहोवे तब अतिसाररोगसेंऔर मित्रकीराशिमेंहोवे तब अपनेचाकरसें५०

श्रौर मित्रकेनवांशमें होवे तव रक्तकोपसें श्रौर वर्गोत्तममें होवे तव अपनें हाथसे श्रौर
शत्रुकी राशिमें होवे तव अपने क्रोधसें श्रौर शत्रुके नवांशमे होवें तव ऊपरके कोपसें श्रौर स्वक्षे
त्रमें होवे तव वहुत भक्षण करणेसेंमृत्युकों प्राप्त होताहै ५१ शुक्रउच्चमेंस्थित होवे तव तृषाकर्के
श्रौर उच्चके नवांशमेंहोवे तवमुखरोग कर्के श्रौरशुभवर्गमें होवे तव दतरोगसें श्रौर नीचराशिमे
होवेतव त्रिदोषसें श्रौर क्रूरकी राशिमे होवे तव विपूचिकाकर्के श्रौर क्रूरग्रहकेवर्गमें होवे तववनके
जीवसें श्रौर मित्रक्षेत्रमे होवे तवसर्पसें श्रौर मित्रकेनवांशमें होवे तव विषभक्षणकरणेसें ५२ श्रौर
वर्गोत्तममें होवे तव लूतरोगकर्के श्रौर शत्रुकी राशिमे होवेतव विषवालेजीवकर्के श्रौर
शत्रुके नवांशमें होवे तव मैथुनदोषकर्के श्रौर स्वक्षेत्रमे होवे तव वहुतदुःखसें मृत्युकों प्राप्त होताहै
५३ श्रौर अष्टम भावमें शनि उच्चमें होवे तव क्षुधाकर्के श्रौर उच्चके नवांशमें होवे तव उपवास
करणे कर्के श्रौरशुभवर्गमेंहोवेतवपापकर्मकर्के श्रौर नीचराशिमें होवे तव वंधुवर्गसें श्रौर क्रूरग्रहकी

रक्तकोपा८त्स्वकरतः९स्वकोपा१०दूर्ध्वकोपतः११वहुभक्षणतो १२ मृत्युर्जा
वेस्यान्मृतिभावगे ५१ तृष्णया१मुखरोगा २ द्दतदोषा ३ त्त्रिदोष ४
तःविपूच्या ५वनसत्वेन६ भुजंगा ७ द्विषभक्षणात् ८ ५२ लूतया ९ विषकठेन
१०सुरतेत्थप्रकोपतः११वहुदुःखा१२द्भवेन्मृत्युर्मृतिभावगतेसिते५३ वुभुक्षया १
लंघनेन २ तथापापोपसेवनात् ३वंधुवर्गा ४ दरिकरात् ५ क्षयेण ६ पृथुयु
द्धतः ५४पित्तकै८र्व्रणकोपेन९हयपादाभिघाततः१०हास्तिनः११ खरतो१२ग्र
स्युर्मंदेस्यान्मृतिभावगे ५५ ग्रथांतरेपि दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवतिमृत्यु
रिति प्रवदेत्क्रमात् अनलतोजलतःकरवालतोज्वरभयोगादितस्तृषयाक्षुधा १
स्थिरश्चरोद्व्यंगसमाव्हयश्चराशिर्यदाजन्मनिचाष्टमस्थः ॥ स्वकीयदेशेविषयांतरे
चमार्गेप्रकुर्यान्मरणक्रमेण २

राशिमें होवे तव शत्रुके हाथसें श्रौर क्रूरग्रहके वर्गमें होवे तव क्षयरोगकर्के श्रौर मित्रक्षेत्रमें होवे तव
वडेयुद्धमें५४ श्रौर मित्रके नवांशमेंहोवे तव पित्तकर्केश्रौर वर्गोत्तममें होवे तवफोडेके कोपकर्के श्रौर
शत्रुकोराशिमेंहोवे तव घोडेकेदुलत्तेसें श्रौर शत्रुके नवांशमे होवे तव हाथीसें श्रौर स्वक्षेत्रमे होवे त
व गधेसे मृत्युकोप्राप्तहोताहै ५५ श्रौर ग्रंथांतरमें कहतेहैं सूर्यसें लेकर्के ग्रह अष्टमस्थानमें स्थितहोवें
तव क्रमसें अग्नि श्रौरजल श्रौरखड्ग श्रौरज्वर श्रौररोग श्रौरतृषा श्रौरक्षुधाकर्केमृत्युकोप्राप्तहोताहै १
श्रौर कहतेहे जिसके जन्मसमयमें स्थिर राशिया २ ५ ८ ११ इन्होंमें जो राशिअष्टमभावमें स्थि
त होवे तव अपने देशमें श्रौर घरमें मृत्युकोंप्राप्तहोताहै श्रौर चरराशिया १ ४ ७ १० मेंसेकोइ रा
अष्टम भावमें होवे तव अन्यदेशमें मृत्युहोताहै श्रौर द्विस्वभाव राशियां ३ । ६।९ ।१२ अष्टम भा
वमेंहोवे तव रस्तेमें मृत्युहोताहै २

॥ और अष्टमभाव ग्रहकर्के रहित होवे तब यो ग्रहबली होवे तिसके कारणकर्के मृत्युहोताहै और बहुतग्रहबली होवें तब बहुत प्रकारकर्के मृत्युहोताहै ॥ ३ ॥ और सूर्य अष्टम होवे तब पित्तकर्के और चंद्रमाहोवे तब कफकर्के और भौमहोवे तब पित्तकर्के और बुधहोवे तब त्रिदोषकर्के और गुरुहोवें तब श्लेष्मकर्के और शुक्र होवें तब कफवायुकर्के और शनिहोवेतबवायुकर्के मृत्युहोताहैप्राचीनजातकशास्त्रकेजाननेवालेकहतेहैं ४ऽहनिर्याण पुरातन मुनियोंके मतसे कहाहै और यो यवनाचार्योंनेकहाहै सो विस्तारकर्के इसग्रंथमें कहतेहैं १ अथमेषराशिगतचंद्रकृतनिर्याण जिसके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा होवे सो धनी और पुत्रोंवाला और क्रूरस्वभाववालाऔर परोपकारमें रत और संपूर्णकर्मोंमें युक्त और श्रेष्ट स्वभाववाला और राजाकाप्यारा होताहै २ और निरंतरगुणोंकर्के युक्त होताहै और देवता ब्राह्मणकों पूजने वाला होताहै थोडेगमेभोजनके करणे वाला और ता

आयुर्ग्रहंखेटविवर्जितंचेद्विलोकयेद्यावलवान्ग्रहेंद्रः ॥ तद्धेतुजातंप्रवदंति मृत्युवहुप्रकारंवहवोवलिष्ठाः ॥ ३ ॥ पित्तकफःपित्तमथत्रिदोपःश्लेष्मानिलौवाप्यनिलःक्रमेण ॥ सूर्यादिकेभ्योमरणस्यहेतुःप्रकल्पितःप्राक्तनजातकज्ञैः ४ इतिप्रणीतंनिर्याणप्राचीनमुनिसमतम् यवनैरुदितंयच्चसविस्तरमथोच्यते १ अथमेपराशिगतचंद्रेनिर्याणं धनवान्पुत्रवानुग्रःपरोपकरणेरतःसर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलोराजवल्लभः २ गुणाभिरामःसततंदेवब्राह्मणपूजकः कोष्णशाकल्यभोक्ताचताम्रविस्तृतलोचनः ३ शूरःशीघ्रंप्रमादीचकामीदुर्बलजानुकःशिरोव्रणयुतोदाताकुनखीसेवकप्रियः ४ द्विभार्यःसगरभीरुश्चपलोतितरांभवेत् प्रथमेसप्तमेवर्षे त्रयोदशमितेज्वरः ५ षोडशेवासप्तदशेवर्षेस्यात्तुविपूचिका तृतीयेद्वादशेवापिजलाद्भीतिःप्रजायते ६ पंचविंशमितेवर्षेसंतानश्चनिशांधता द्वात्रिंशत्प्रमितेचैव शस्त्रघातःप्रजायते ७ कार्यारंभःप्रलापीचविदेशगमनेरतः कृशांगःशीघ्रगोमानी शुभलक्षणसंयुतः ८ वाताधिक्यःशुभैर्दृष्टेचंद्रेनवतिसंमितं आयुस्तस्यविनिर्देश्यं कार्तिकस्यासितेतरे ९

म्रवर्णके विस्तृतनेत्रों वाला होताहै ३ और शूरवीर और शीघ्रमस्तीमेंहोने वाला और कामीदुर्बलजानुवाला और शिरमें फोडयों वाला और दाता और कुनखी और सेवककाप्यारा ॥ औरदोस्त्रीयोंवाला और युद्धमें डरणे वाला और बडाचंचल होताहै और प्रथम और सप्तम और त्रयोदश वर्षमेंज्वरपीडाकों प्राप्तहोताहै ५ और षोडशवर्षमें वा सप्तदशवर्षमें विषूचिकाकेभयकोंप्राप्तहोताहै और तीसरे और बारहमे वर्षमें जलसें भयहोताहै ६ पचविंशति २५ वर्षमेंसंतानहोनीहै और नहूागाहोता है और बत्तिशवर्ष ३२ में शस्त्रका घात होनाहै ७ और कार्यकाआरंभ करणे वाला और प्रलापकरणे वाला और विदेशगमनमें रत होनाहै और दुर्बलअंगों वाला और शीघ्र गति वाला और शुभलक्षणों कर्के युक्त होनाहै ८और वायुप्रकृति वालाहोताहै औरशुभग्रहकर्केचंद्रमादेख्याहोवेतब नब्बे वर्षआयु पावाल्याहोताहै ९

श्रीर कार्तिक मासमें कृष्णपक्षमें बुधवार नवमी तिथिमें श्राधिरात्रिमें शिरके रोगसे मृत्युको प्राप्त होताहै १० इतिमेषराशिगतचंद्रनिर्याणम् अथवृषराशिमें स्थितचंद्रमाका निर्याणकहतेहैं जिस के जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा होवे सो थोडे तेजवाला श्रीर श्रनम्र श्रीर कर्मशुद्धिसे रहित होताहै श्रीर सत्यवाणीवाला श्रीर धनकरके युक्त श्रीर कामी श्रीर स्त्रीके वचनका अनुगामी होताहै १ श्रीर बडीश्रायुषावाला श्रीर थोडे केशों वाला श्रीर परोपकारमें रत श्रीर पिता श्रीर माता श्रीर गुरुकाभक्त श्रीर राजाकाप्यारा होताहै २ श्रीर सभामें चतुर होताहै ३ श्रीर सभा में चतुर श्रीर नित्यप्रति यो प्राप्त होवे तिसमें संतुष्ट होताहै श्रीर प्रथमवर्षमें पीडा श्रीर तीसरे वर्ष में श्रग्निका भय होताहै ३ श्रीर सप्तम वर्षमें विषूचीका भय श्रीर नवमवर्षमें पीडाहोतीहै श्रीर

पक्षेबुधेनवम्यांचनिशीथेचशिरोरुजा निधनंजायतेनूनंजन्मनींद्रावजस्थिते १० इतिमेषराशिस्थितचंद्रकृतनिर्याणम् अथवृषराशिस्थचंद्रनिर्याणम् अल्पतेजा नरःस्तब्धःकर्मशुद्धिविवर्जितः सत्यवागर्थवान्कामीकामिनीवचनानुगः १ चिरायुरल्पकेशीचपरोपकरणेरतः पितुर्मातुर्गुरूणांचभक्तोभूपतिवल्लभः २ सभायांचतुरोनित्यंसंतुष्टोयेनकेनचित् पीडास्यात्प्रथमेवर्षेतृतीयेग्निभयंदिशेत् ३ विषूचिकाभयंविद्यात्सप्तमेनवमेऽथवा दशमेरुधिरोद्गाराद्द्वादशेपतनंतरोः ४ सर्पाच्चषोडशेभीतिःपीडाचैकोनविंशके पंचविंशमितेतोयाद्भयंभवतिनिश्चितम् ५ त्रिंशन्मितेतथापीडाद्वात्रिंशत्प्रमितेऽपिच श्लेष्मलःशांतिभाक्शूरः महिष्याद्वृद्धिमान्नृपः ६ सौम्यग्रहेक्षितेचंद्रेपणांवत्सरेषवदेमेस्यक आयुर्जतो विनिर्देश्यमवश्यवचनात्सताम् ७ माघेमासेनवम्यांचशुक्लपक्षेभृगोर्दिने रोहिण्यांनिधनंविद्याज्जन्मनींदौवृषस्थिते ८ इतिवृषराशिस्थचंद्रनिर्याणं

अबमिथुनराशिमेंस्थितचंद्रमाकानिर्याणकहतेहैजिसकेजन्मकालमेंमिथुनराशिमेंचद्रमास्थितहोवेसोस्री यमेंबडा चतुरहोताहैऔरदृढमित्रभावकरणेवालाहोताहैऔरमिष्टान्नकेभोजनकरणेवालाऔरश्रेष्ठस्वभाव वाला और छिन्नवाणी वाला और चचल नेत्रो वाला होताहै १ और कुटुबमे प्रीतिवाला और. कामी और कौतकमें रतिमें प्रीतिवाला और पूर्वावस्थामें सुखी और मध्यावस्थामे मध्यमसुख वाला होताहै २ और तीसरी अवस्थामें दुःखीहोताहै और दो स्त्रीयों वाला होताहै और गुरोंकाप्याराहो" ताहै और थोडीसंतान और निश्चय करके गुणोंकरके युक्तहोताहै ॥ ३ ॥
और पाचमें वर्षमें वृक्षसें भय होताहै और सोहलमे १६ वर्षमे शत्रुका भय होताहै और अष्टा दश १८ वर्ष करके कर्णके रोगकरके पीडा होतीहै ४ और वीस वर्षमें अत्यत पीडा होतीहे और अठत्री ३८ वर्षमें मृत्युके तुल्य पीडा होतीहै ५ और भोगभोगने वाला और नित्यप्रति

अथमिथुनराशिस्थचंद्रनिर्याणम् ग्रामण्यांचतुरःप्राज्ञोदृढसौहृद्कारकः मिष्टा न्नाशीसुशीलश्चछिन्नवाक्चलल्लोचनः १ कुटुंबवत्सलःकामीकुतूहलरतिप्रियः वयसःपूर्वभागेनुसुखीमध्येतुमध्यमः २ चरमेतितरांदुःखीद्विभार्योगुरुवत्सलः स्वल्पापत्योगुणैर्युक्तोनरोभवतिनिश्चित ॥ ३ ॥ वृक्षाद्भीःपंचमेवर्षेषोडशेरिक्त तभयं अष्टादशप्रमाणेतुकर्णरुक्परिपीडनम् ४ विंशत्याप्रमितेवर्षेपीडात्यंतं प्रजायते अष्टत्रिंशन्मितेनूनंपीडास्यान्मृत्युनासमा ५ भोगीदानरतोनित्यंस त्यधर्मपरायणः सुभगोविषयासक्तोगीतनृत्यप्रियःसुधीः ६ शास्त्रज्ञःशुभवा क्जीवेदशीतिशरदांनरः वैशाखेशुक्लपक्षेचद्वादश्यांबुधवासरे ७ मध्यान्हे हस्तनक्षत्रेनिर्याणंखलुनिर्दिशेत् इत्युक्तंमिथुनस्थेतुजन्मकालेकलानिधौ ८ इतिमिथुनराशिस्थचंद्रनिर्याणम् अथकर्कराशिस्थेचंद्रेनिर्याणम् परोपकृतिक र्ताचसर्वसंग्रहतत्परः पुत्रवान्गुणवान्साधुभक्तःपित्रोःस्त्रियाजितः १

दानमें रत और सत्यधर्ममें तत्पर होताहे और श्रेष्ठ भाग्यों वाला और विषयोंमें आसक्त और गी तनृत्यका प्यारा और श्रेष्ठबुद्धिवालाहोताहै ६ और शास्त्रकेजाननेवाला और शुभवाणीवाला और अशी ८० वर्षजीवने वाला मनुष्य होताहै और वैशाख मासमें और शुक्लपक्षमें और द्वादशीति थिमें और बुधवारमें ७ और मध्यान्हकालमें और हस्तनक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहे इहजन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहाहै इतिमिथुनराशिगतचद्रनिर्याणं ॥ अब कर्कराशिमे स्थित चद्रमाका निर्याण कहतेहे ॥ जिसके जन्मकालमें कर्कराशिका चंद्रमा होवे सो परोपकारके करणे वाला और संपूर्ण वस्तुके संग्रह करणेमें तत्पर होताहै और पुत्रों वाला और धन वाला औरमाता पिताका भक्तऔरस्त्रीजितहोताहै १

और-राशिकेप्रथमभागमेंजन्म-होवे-तवथोडीआयुषा वाला-औरधनहीन होताहै औरमध्यभागमें सुखी होताहै-और तीसरे भागमें-धर्म कर्के युक्त और तीर्थयात्राके करणे वाला होताहै २ और निश्चय कर्के तिसके माथेके मध्यमें रेखा होतीहै वामें अंगमें अग्निका भय होताहै और शिरके रोगकर्के पीडित होताहै ॥ ३ ॥ और वहुत वंधुयों कर्के युक्त होताहै वहुत स्त्रीयों वाला होताहै और नक्षत्रग्रहोंकी स्थितिके जानने वाला और वहुत मित्रों वाला और मीठावोलणेवालाहोताहै४औरप्रथम वर्षमेंरोगीहोताहै और तीसरेवर्षमेंलिंगपीडाकर्केयुक्तहोताहै औ रएकत्रो ३१ वर्षमें सर्पके भयको प्राप्त होताहै ५ और वत्रो ३२ वर्षमें वहुत पीडाको प्राप्त हो ताहै और पंचाशी ८५ वर्ष अथवा ९६ वर्ष आयुषा होतीहै ६ माघमासमें शुक्लपक्षमें नवमी

अल्पायुःप्रथमेभागेनिस्वोमध्येसुखीभवेत् तृतीयेधर्मसंयुक्तस्तीर्थयात्रापरायणः २ रेखातस्यभवेन्नूनंललाटेमध्यगामिनी वामांगेग्निभयंविद्याच्छीर्षरुक्प रिपीडितः ३ बांधवैर्बहुभिर्युक्तोवहुभार्यःप्रजायते भग्रहस्थितिवेत्ताचवहुमित्र प्रियवदः ॥ ४ ॥ रोगीस्यात्प्रथमेवर्षेतृतीयेलिंगपीडनं एकात्रिंशन्मितेवर्षे सर्पतोभयमादिशेत् ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशत्प्रमितेवर्षेवहुपीडोद्भवोभवेत् ॥ पंचाशीति मितंब्रूयादायुःषण्णवतिश्चवा ६ माघेमासिसितेपक्षेनवम्यांभृगुवासरेरोहिः णीनामनक्षत्रेव्रजेदायुःप्रपूर्णताम् ॥ ७ ॥ प्रसूतौकर्कराशिस्थकुमुदानंदनेसति पुराणैर्मुनिभिःप्रोक्तंनिर्याणमितिनिश्चितं ८ इतिकर्कराशिस्थितचंद्रेनिर्याणम् अथसिंहराशिस्थचंद्रकृतनिर्याणम् धनधान्यसमायुक्तःश्रीमांश्चसमरप्रियः ॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञोविदेशगमनेरतः १ विशालपिंगलाक्षश्चक्रोधीस्वल्पात्मजो नरः सर्वगःशत्रुहंताचशिरोरुक्निष्ठुरोमहान् २ भूताद्बाधादिमेवर्षेपंचमेव्देग्नि तोभयं ॥ सप्तमेज्वरबाधाचनृणांभवतिनिश्चितं ॥ ३

तिथीमें और शुक्रवारमें और रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहै ७ जन्मकालमें कर्क राशिमें च द्रमा स्थित होयां पुरातन ऋषियोंने निश्चय कर्के निर्याणकहाहै इतिकर्कराशिस्थितचंद्रेनिर्याणम् ८ अब सिंहराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें सिंहराशिका चद्रमा होवे सो धन और धान्यकर्के युक्त और शोभाकर्केयुक्त और युद्धकरणेमें प्रीतिवाला और विद्याकर्के युक्त और सपूर्णकलाके जाननेवाला और विदेशमेंरत होताहै १ और पिंगलवर्णके विशाल नेत्रोंवाला और क्रो धी और थोडे पुत्रों वाला होताहै और सपूर्णस्थानमें फिरणे वाला और शत्रुके मारणे वाला और शि रमें रोगवाला और वडाकठोर होताहै २ और प्रथमवर्षमें भूतसे पीडित होताहै और पांचमे अग्निसें भय होताहै और सातमे वर्षमें ज्वरसे पीडित होताहै निश्चयकर्के ३

और वीसवर्षमेंविपूर्चीकेभयकोंप्राप्तहोताहै और इकीवर्षमेंसर्पके भयकोंप्राप्त होताहै ४ और अठाईवें वर्षमेंअपवादकेभयसेंयुक्तहोताहै और बत्तीवर्षमेंनिश्चयकर्केपीडितहोताहै ५ और पेटमेंदक्षिणभागमेंवात गुल्मककैंपीडितहोताहैऔरश्रेष्टस्वभाववालाऔरअत्यंतकृपण औरसत्यबोलनेवाला औरचतुरहोताहै ६ और शुभग्रह कर्के चंद्रमा देख्या होवे तब सौ १०० वर्ष आयुषा वालाहोताहै और फाल्गुणमासमेंकृष्णपक्षमें और पचमी तिथिमें और मगल वारमें ७ और मध्यान्हकालमे और जलकेमध्यमेंमृत्युकोंप्राप्त होताहै इसम संशय नाहिहै इह सिंहराशिके चंद्रमाकानिर्याण कहाहै ८ इतिसिंहराशिगतचद्रनिर्याण ॥ अब कन्याराशिमें चंद्रमाका निर्याण कहतेहै ॥ जिसके जन्मकालमेंकन्याराशिकाचंद्रमा होवे सो अपने सबधियोंको आनद करणे वाला और धनवान् और बहुत चाकरों वालाहोताहै और विदेश रहनेवालाऔर कलाके जानने वाला और गुरोंका भक्त और मीठाबोलनेवालाहोताहै १ और देवता और ब्राह्मणोंको भक्तिमें तत्परहोताहै और धर्मकर्म कर्के युक्तहोताहै और मनुष्योंका प्यारा होताहै २ और थोडियां कन्यावाला और बहुत पुत्रवाला होताहै और लिंगमें और कंठदेशमें निश्चयकर्के चिन्ह वाला होताहै ३ और तीसरे वर्षमें अग्निपीडाकर्के पीडित होताहै और पांचवर्षमें नेत्ररोगसें युक्तहोताहै और नवमवर्षमें और तेरहवर्षमें और दशमें पीडा होतीहै ४ और पन्द्रहवें वर्षमें सर्पसें भय होताहै और इकीसवर्षमें वृक्षसें कूपसें गिरनेकामय होताहै ५

विषूचिकोद्भवांपीडान्नृणांभवतिनिश्चितं ३॥ विंशन्मितेभयंसर्पादिकविशेषप्रपीडन ४ अष्टाविंशान्मितेवर्षेचापवादभयान्वित. द्वाविंशत्प्रमितेनूनवत्सरेपरिपीडन ५ उदरे सव्यभागेतुवातगुल्मादिसंभवः सुशील कृपणोऽत्यतसत्यवादीविचक्षण ६ शुभग्रहेक्षितेचंद्रेशतायुर्जायतेनरः फाल्गुणस्याऽसितपक्षेपचम्यांभौमवासरे ७ मध्यान्हेजलमध्येचमृत्युर्नूननसंशय ८॥ सिंहराशिस्थितेचंद्रे निर्याणमिदमीरितम् इतिसिंहराशिस्थितचंद्रेनिर्याणम् ॥ अथकन्याराशिस्थे चंद्रेनिर्याणम् स्वजनानंदकृन्नित्यंधनवान्बहुसेवक प्रवासीचकलाभिज्ञोगुरुभक्त प्रियवद १ देवताद्विजवर्याणांभक्तौतत्परमानस धर्मकर्मसमायुक्तोजनानामतिदुर्लभ २ कन्याल्पकत्वमापन्नोभूरिपुत्रोभवेन्नर शिश्नेकंठप्रदेशेचलांछनंनिश्चितंभवेत् ३ वन्हिपीडातृतीयेब्देपचमेलोचनव्यथा नवमेद्वादशेबाधात्रयोदशमितेपिच ४ तथापचदशेवर्षेसर्पतोभयमादिशेत् ॥ एकविंशन्मितेवर्षे पतनवृक्षभित्तित ॥ ५ ॥

श्रौर वनके मध्यमें शस्त्रघातकी प्रीतनिश्चयकरके तीस ३० वर्षमें होताहै श्रौर अशी ८० वर्ष आयु पानेवाला होताहै जब चंद्रमा शुभग्रहकरके देख्या होवेतव ॥ ६ ॥ श्रौरचैत्रमासमें श्रौर कृष्णपक्षमें श्रौर त्रयोदशीतिथिमें श्रौर आदित्यवारमें मृत्युको प्राप्तहोताहै जिसके जन्मकालमें चंद्रमा कन्याराशिमें स्थित होवे तिसका यह निर्याण कहाहै ७ इतिकन्याराशिगतचंद्रनिर्याण ॥ अब तुलाराशिमें चंद्रमाका निर्याण कहतेहै जिसके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमा होवे सोनिश्चयकरकेसंपूर्ण जनोंमें मान्य होताहै श्रौर वस्तुसंग्रह करणेमेंतत्पर होताहै श्रौरभोगभोगनेवाला श्रौर धर्ममेंतत्पर श्रौर लक्ष्मीवाला श्रौर बहुत चाकरोंवाला श्रौर चतुर होताहै ॥ १ ॥ श्रौर बाउली श्रौर खूहे श्रौर तलासें लेकरकेबनावनेमें प्रीतिवाला होताहै श्रौर संपूर्ण कलाके जाननेवाला श्रौर राजयोंका अत्यंत प्यारा होताहै ॥ २ ॥ श्रौर मीठे अन्न रसमें प्रीतिवाला श्रौर दोस्त्रीयोंवाला श्रौर

अरण्येशस्त्रघातःस्याद्वर्षेत्रिंशन्मितेध्रुवम् । अशीत्यब्दंभवेदायुश्चंद्रेसौम्यग्रहेक्षिते ॥ ६ ॥ चैत्रेकृष्णत्रयोदश्यांनिधनंरविवासरे शीतद्युतौस्थितेसूतौकन्यायामितिसंस्मृतम् ॥ ७ ॥ इतिकन्याराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् अथतुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् मान्यःसर्वजनेर्नूनंवस्तुसंग्रहतत्परः भोगीधर्मपरःश्रीमान्बहुभृत्योविचक्षणः ॥ १ ॥ वापीकूपतडागादिनिर्मितौसादरःसदा प्राज्ञःसर्वकलाभिज्ञोनृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥ मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यःपितृभक्तिकृत् स्वल्पापत्योल्पबंधुश्चकृषिकर्मविचक्षण ॥ ३ ॥ क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः भार्यावचोनुगामीचसप्तमेऽब्देग्निजंभयम् ॥ ४ ॥ अष्टमेज्वरजापीडाद्वादशेचजलाद्भयं ॥ तरोस्तुरंगतःपातःसर्पभीर्वापिविंशके ५ एकविंशन्मितेपीडाचंद्रेसौम्यग्रहेक्षिते ॥ पंचाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥ ६ ॥ सार्पेष्टम्यांभृगोर्वारेनिधनंपूर्वयामके तुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणमितिसूचितम् ॥ ७ ॥

पितरोंकी भक्ति वाला श्रौर थोडी संतान श्रौर थोडे बंधुयों वाला श्रौर कृषिकर्ममें चतुर होता है ॥ ३ ॥ श्रौर क्रय विक्रय करणेमें लाभवाला श्रौर देवता श्रौर ब्राह्मणके पूजने वाला श्रौर स्त्रीके कहेमें चलने वाला श्रौर सात वर्षमें अग्निके भयको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ श्रौर अष्टम वर्षमें ज्वरकी पीडा श्रौर बाहरमें वर्षमें जलमे भयहोताहै श्रौर वीसवर्षमें, वृक्षसें वाघोडेसें गिरताहै वा सर्पके भयको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ श्रौर इक्कीसवर्षमें पीडा होतीहै श्रौर शुभग्रह करके चंद्रमा देख्याहोवे तवपचासी ८५ वर्ष आयु होतीहै श्रौर वैशाखके शुक्लपक्षमें ६ श्रौर श्लेषानक्षत्रमें श्रौर अष्टमीतिथिमें श्रौर शुक्रवारमें प्रथम प्रहरमें मृत्युको प्राप्त होताहै यह तुला राशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहाहै ७

इतितुलराशिगतचंद्रनिर्याण अब वृश्चिक राशिमे स्थित चंद्रमाकानिर्याणकहतेहैंजिसकेजन्मकालमें वृश्चिकराशिमेंचंद्रमाहोवेसोशत्रुयोंकेतपावनेवालाऔरकोधीऔरद्वेषकरणेवाला और लडाइकाप्यारा होताहैऔरविश्वासघातिऔरमित्रद्रोहीहोताहै १ औरसंतोषसेंरहितहोताहैऔरराजयोंकेंपूज्यहोताहै और दूसरेकेकार्यमेंविघ्नकरणेवालाऔरशुभलक्षणोंकरकेंयुक्तऔर गुप्तपाप करणेवालाऔरपराक्रमवाला होताहै २ और बहुत चाकरोंवाला और चारभाईयो वाला और दो स्त्रियोंवाला होताहैऔर प्रथमवर्षमेंज्वरसें पीडित होताहै और तीसरे वर्षमे अग्निसे भयकों प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ और पाचमे वर्षमे ज्वरपीडाकों प्राप्त होताहै और पचदश १५ वर्षमे भी ज्वरपीडाको प्राप्त होताहै और पंचविंशति २५ वर्षमें निश्चयकर्कें वडीपीडा होतिहैं ४ और चद्रमा शुभग्रहककें देख्याहोवे तब नब्बे ९० वर्ष जीवताहै और ज्येष्ठमासमे औरशुक्लपक्षमें और दशमीतिथिमें और बुधवारमे ५

इतितुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् अथवृश्चिकराशिगतचंद्रानिर्याणम् परतापकरःक्रोधीविद्वेषीकलहप्रियः विश्वासघातकश्चापिमित्रद्रोहीविचक्षणः १
असंतुष्टोनृपैपूज्योविघ्नकर्त्तान्यकर्माणिशुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापश्चविक्रमी २
बहुभृत्यश्चतुर्बंधुर्द्विभार्योजायतेपुमान् प्रथमेब्देज्वरात्पीडातृतीयेभयमग्नितः३
पचमेब्देज्वरात्पीडातथापंचदशेपिच पंचविंशन्मितेवर्षेपीडास्यान्महतीध्रुवम् ४
चंद्रेसौम्यग्रहैर्दृष्टेनवत्यब्दान्सजीवति ज्येष्ठमासिसितेपक्षेदशम्यांबुधवासरे
५ हस्तनक्षत्रसंयुक्तमध्यरात्रेगतेसति चंद्रेवृश्चिकराशिस्थेनिर्याणमितिकीर्तितम् ६ इतिवृश्चिकराशिस्थचंद्रेनिर्याणम् अथधनुराशिस्थितचंद्रनिर्याणम्
प्राज्ञोधर्मीसपुत्रश्चराजमान्योजनप्रियः द्विजदेवार्चनप्रीतिर्वसुसंग्रहतत्परः १
सभायांचभवेद्वक्तासुनखीसुमतिःशुचिः स्थूलदंताधरग्रीवःकाव्यकर्ताप्रगल्भकः २ कुलशालीवनात्यश्चसभाग्योदृढसौहृदः निम्नपादतलःक्लेशीसाहसी विनयान्वितः ३

और हस्तनक्षत्रमें और रात्रिकेमध्यकालमे मृत्युको प्राप्त होताहै इह जन्मकालमें वृश्चिकराशिमे स्थित चद्रमाका निर्याण कहाहै ६ इतिवृश्चिकराशिगतचंद्रानिर्याण अब धनराशिमे चद्रमाका निर्याण कहतेहै जिसकेजन्मकालमें धनराशिमे चंद्रमा स्थित होवे सो चतुर और धर्मकरके युक्त और श्रेष्ठ पुत्रोंवाला और राजमानवाला और मीठाबोलनेवाला होताहै और देवताब्राह्मणके पूजनमें प्रीतिवाला और वस्तुसग्रहमे तत्पर होताहै १और सभामें वक्ता होवाहै और श्रेष्ठनखोंवाला औरश्रेष्ठबुद्धिवाला और पवित्र होताहै औरमोटे दत औरओष्ठ और ग्रीवा वाला और काव्यके करणेवालाऔर प्रगल्भ होताहै २ औरश्रेष्ठ कुलवाला और वनमें गमन करणे वाला और भाग्यकरकें युक्त और दृढसुहृदभाववाला और नीचे पादके तलोंवाला और क्लेशकरके युक्त और हठकरके युक्त औरनम्रताकरके युक्त होताहै ३

और शांत स्वभावाला और शीघ्रकोपको प्राप्त होने वाला और तपस्वी और थोडा भोजन करनेवाला और थोडे संतानवाला और श्रेष्ठ बंधुवों वाला और पूर्वअवस्थामें धनवा न होताहै ॥ ४ ॥ और प्रथम वर्षमें पीडा युक्त होताहै और त्रयोदश वर्षमें बडी पीडाको प्राप्त होताहै अठाहट ६८ वर्ष अथवा पंजत्र ७५ वर्ष आयुषा वाला होताहै ५ और चंद्रमा संपूर्ण शुभग्रहों कर्के देख्या होवे तब सौ १०० वर्ष जीताहै और आषाढके कृष्णपक्षमें पंचमी तिथिमें और शुक्रवारमें और हस्तनक्षत्रमें रात्रि समयमें मृत्युको प्राप्त होताहै इह जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहाहै ७ इतिधनराशिगतचंद्रनिर्याणं अब मकरराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहते हैं जिसके जन्मकालमें मकरराशिका चंद्रमा होवे सो पंडित और श्रेष्ठ बुद्धिवाला औरक्लेश कर्के

शांतःक्षिप्रप्रकोपीचनापसःस्वल्पभुक्नरः स्वल्पापत्यस्सुबंधुश्चपूर्ववयसिवि त्तवान्४सबाधःप्रथमेवर्षेमहापीडात्रयोदशे अष्टषष्ठिमितंप्राहुरायुर्वापंचसप्त तिः५ चंद्रेसर्वशुभैर्दृष्टेशतवर्षाणिजीवति आषाढस्यासितेपक्षेपंचम्यांभृगुवास रे६ निशायांहस्तनक्षत्रेनिधनंसर्वथाभवेत् निर्याणमितिसंप्रोक्तंचंद्रसूतौधनास्थि ते७इतिधनूराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् अथमकरराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् धीरो विचक्षणःक्लेशीपुत्रवान्नृपतिप्रियःकृपालुःसत्यसंपन्नोवदान्यःशुभगोलसः॥ १ कृष्णतालुःपुमान्नूनंविस्तीर्णकटिरुद्भवेत् पंचमेवत्सरेपीडासप्तमेजलजाद्भयम्२ दशमेपतनंवृक्षात्द्वादशेशस्त्रपीडनम् विंशन्मितेज्वराद्बाधाशाखासुपंचाविंश के ३ पंचत्रिंशत्समाकालेवामांगेऽग्निभयंदिशेत् अब्दानांनवतिर्नूनमायुस्त स्यप्रकीर्तितम् ४ श्रावणस्यासितेपक्षेदशम्यांभौमवासरे ज्येष्ठायांनिधनं नूनंचंद्रेमकरसंस्थिते ५ इतिमकरराशिस्थितचंद्रनिर्याणम्

युक्त औरपुत्रोंवाला और राजाकी प्रीति वाला होताहै और दयाकर्के युक्त और सत्यकर्केयुक्त और श्रेष्ठ भागों वाला और आलसी होताहै १ और निश्चयकर्के काले तालु वाला और वडे विस्तार वाले कटि स्थल वाला और पंचम वर्षमें पीडायुक्त और सप्तम वर्षमें जलसें भयको प्राप्त होताहै २ और दशमवर्षमेंवृक्षसेगिडताहै और बाहरमें वर्षमें शस्त्र पीडाको प्राप्त होताहैऔरवीसवर्षमेंज्वर की पीडा होतीहै पचविंशति२५वर्षमें अगपीडाको प्राप्त होताहै ३ औरपचत्रिंशत् ३५ वर्षमें वामांगमें अग्निका भय होताहै और निश्चयकर्के नव्वेवर्ष ९० आयुषा होतीहै ४ और श्रावण मासके शुक्लपक्षमें दशमीतिथिमें और मंगलवारमें और ज्येष्ठानक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहै इहे म कराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहाहै ५ इतिमकरराशिगतचंद्रनिर्याणं ॥

अबकुंभराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहतेहैं जिसके जन्मकालमें कुंभराशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो दानक रणे वाला; और मिष्टान्न भोजन करणेवाला और धर्मकार्यमें शीघ्रता करणे वाला और मीठा बोलने वाला और क्षीणदेह वाला होताहै १, और थोडी संतानवाला और दोस्त्रीयोंवाला और कामी और धनकर्के रहित वामहाथमें चिन्हवाला और प्रथम वर्षमें पीडा वाला होताहै २ और पांचवर्षमें अग्निके भयको प्राप्त होताहै और बारहमें वर्षमें सर्पसे भयको प्राप्त होताहै वा जलमें भयको प्राप्त होताहै और अठाईवर्षमें चोरासे पीडित होताहै ३, और निश्चयकर्के नब्बे, ९० वर्ष आयुवाला होताहै और भाद्रपद मासके कृष्णपक्षमें और चतुर्थी तिथिमें और शनिवारमें ४ और रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहै इहे जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाका निर्याण मुनियोंने कहा है ५ इतिकुंभराशिगतचंद्रनिर्याण अब मीनराशिमें स्थितचंद्रमाका निर्याण कहतेंहै जिसके जन्म

अथकुंभराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् दातामिष्टान्नभोक्ताचधर्मकार्येषुसत्वरः प्रियवक्तृत्वसंयुक्तोनरःक्षीणकलेवरः १ स्वल्पापत्योद्विभार्यश्चकामीद्रव्यविवर्जितः वामहस्तेभवल्लक्ष्मपीडाप्रथमवत्सरे २ पंचमेग्निभयंविद्यात्पक्षादशवत्सरेव्यालाद्वा जलतोभीतिरष्टाविंशतिमेक्षतिः ३ चौरेभ्यश्चभवेदायुर्वर्षाणांनवतिर्ध्रुवं भाद्रेमास्यसिते पक्षेचतुर्थ्यांशनिवासरे ४ भरणीनामनक्षत्रेगृणंतिमरणंनृणाम् एवमुक्तंमुनिश्रेष्ठैश्चंद्रेजन्मनिकुंभगे इतिकुंभराशिगतचंद्रनिर्याणम् अथमीनराशौचंद्रकृतानिर्याणम् धनीमानीविनीतश्चभोगीसहृष्टमानसः पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तिपरोनरः १ उदारोरूपवान्श्रेष्ठोगंधमाल्यविभूषणः पंचमेब्देजलाद्भीतिरष्टमेज्वरपीडनं २ द्वाविंशेमहतीपीडाचतुर्विंशन्मितेब्दके पूर्वाशागमनंचायुरब्दानांनवतिःस्मृता ॥ ३ आश्विनस्यासितपक्षेद्वितीयायांगुरोर्दिने कृत्तिकानामनक्षत्रसायंमृत्युर्नसंशयः ४ इतीरितंतुनिर्याणंयवनाचार्यसंमतं मीनस्थेयामिनीनाथेभवेदत्रनसंशयः ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेनिर्याणाध्यायएकविंशतितमः २१

कालमें मीनराशिमें चंद्रमा होवे सो धनी और मानी और सुंदर नम्र और भोगोंके भोगने वाला और प्रसन्नमन वाला होताहै और माता पिता और देवता और आचार्य और गुरोंकी भक्तिमें तत्पर होताहै १ और उदाराचित्त और रूपकर्के युक्त और गंधमाल्यकर्के विभूषित होताहै और पांचमें वर्षमें जलसे भय होताहै और अष्टम वर्षमें ज्वरकी पीडा होतीहै २ और बाईमें २२ वर्षमें बडी पीडाको प्राप्तहोताहै औरचोवी२४वर्षमेंपूर्वदिशामेंगमनकर्ताहै औरनब्बे९० वर्षआयुवाला होताहै ३ और आश्विन मासके कृष्णपक्षमें और द्वितिया तिथिमें और बृहस्पति वारमें और कृत्तिका नक्षत्रमें और सायंकालमें मृत्युको प्राप्त होताहै ४ इहे निर्याण यवनाचार्यके मतसे कहाहै मीनराशिके चंद्रमामें इस प्रकारकर्के कहाहै इसमें संदेह नहिंहै ५ इतिश्रीजातकखंडभाषाया निर्याणाध्यायएकविंशः २१

अब नष्टजातकाध्यायका व्याख्यानकरतेहैं जिसमनुष्यका आधानसमय और जन्मसमयनिश्चयकर्केन हिं जानतेहैं तिसके जन्मकालको नष्टजातकसे जाननाकहतेहैं १ जिसकर्के मनुष्यके जन्मकालसे शु भाशुभ फलकी प्राप्ति होतीहै तिसको जातक शास्त्र कहतेहैं और तिसजन्मकालके नष्टहोया फेर जि सकर्के जन्मकालका ज्ञानहोताहै तिसको नष्टजातक कहतेहैं २ तिसमें प्रथम तात्कालिक लग्नस्प ष्ट कर्के तिसकी कलाका पिंडबनावे और तिसके गुणकार जानने केवास्ते मेषादि राशियोंके गुणक कहतेहैं सो मेषसे लेकर्के मीनपर्यंत बारां गुणकपंक्ति मेंधरेहैं यो राशि प्रश्नलग्न में होवे तिसके गुणक कर्के कला पिंडको गुणे और यदप्रश्नलग्नमें कदाचित् शुक्र और मंगल औरबृहस्पति स्थित होवेंतब क्रमकर्के सात ७ औरआठ८औरदस१०कर्केपुनः कलापिंडको गुण देवे और सूर्य और चंद्रमा और

अथनष्टजातकाध्यायोऽव्याख्यायते ॥ आधानकालोप्यऽथजन्मकालोनज्ञायते यस्यनरस्यनूनम् ॥ प्रसूतिकालंप्रवदंतितस्यनष्टाभिधानादपिजातकाद्य १ तज्जातकंयेनशुभाशुभाप्तिर्जातस्यजंतोर्जननोपकालात् तस्मिन्प्रनष्टेसातिजन्म कालोयेनोच्यतेनष्टकजातकंतत् २ मेषादितःप्रश्नविलग्नलिप्ताःकार्याःक्रमात्ता मुनिभि.खचंद्रैः गजैश्चवेदैर्दशभिश्चबाणैःशैलैर्भुजंगे.खचरैःशरैश्च ३ शिवैःपतं गे ७।१०८४१०५७८९५११ १२ निहिता.पुनस्ताविकलग्नगाश्चे द्भृगुभौमजीवाःतदातुरगैः ७ करिभिः ८ खचंद्रैः १० गुण्याःशरैरन्यखगायदि स्युः ४ ग्रहद्वयंवाबहवोविलग्नेतदातदीयैर्गुणकैश्चगुण्याः एवंकृतेकर्मविधान योग्योराशिःपृथक्स्थःपरिरक्षणीयः ५ पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्यदृका णेनव ९ युक्द्वितीये ॥ यथास्थितोयंनववर्जितोंत्येभसंज्ञया २७ सोह्यवशेषक्ष क्षम् ॥ ६ ॥

बुधऔर शनि लग्नमें होवें तब पाचसे गुणे ४ और प्रश्नलग्नमें दोग्रह होवें अथवा बहुत होवें तब ति न्हके संपूर्णोंके गुणकोंसे वारंवार राशिको गुणे इसप्रकारकरणेसे कर्म विधान योग्य राशि होतीहै ति सको पृथक् स्थानमें कर्म भूमीमें स्थित करे ५ और अवनक्षत्रकाआनयनकहतेहैं पृथक् कर्म भूमीमें स्थित यो राशिहै तिसको सात ७ से गुणे और प्रथम द्रेष्काणमें स्थित राशि होवे तब तिसको क लोमें नव ९ कला जोड देवे और मध्य द्रेष्काणमें होवे तब यथा स्थित हि रखे और तीसरे द्रेष्काण मे होवे तब नव ९ कलाकर्के हीनकरे और तिसको सताई २७ के अंकसे भागदेकर्के यो शेष र हे सो अश्विनीसे लेकर्के तिसकानक्षत्रकहे ६

और यदमनुष्यअपनीस्त्रीवापुत्रवामित्रकावाशत्रुकानष्ट जातक पूछयाचाहे तव प्रश्नलग्नकोक्रमकर्कैछै६ और चार ४ और तीन ३ और ५ राशिसें युक्त कर्के फेर लग्नकियाकलाबनावे ७ और यो लग्न होवे तिसराशिके गुणककें गुणे और लग्न गतग्रहका यद संभवहोवेतव तिसके गुणक कर्के गुणे और फेर पूर्वकीन्याईनवदान विशोधन कर्म कर्के पूर्वकी न्याई तिन्हके स्त्री आदियों केनक्षत्रजाननेयोग्यहे ८ और कर्मविधान राशिकों दश १० सें गुणे और पूर्वकीन्याई द्रेष्काण क्रमसें नवकला ऊनाधिकक र्के एकसउो वीस १२० सें भाग लेवे जो अंक शेष रहे उतने वर्ष मनुष्यकी आयुर्षाके व्यतीत कहे निश्चयकर्के ९ पुनः फेर कर्म योग्यराशिकों कर्म भूमीमे स्थित कर्के दशगुणाकरे और छेसें भा गलेवे शेषयो अकरहे सो शिशिरसें लेकर्के जन्मकालमें ऋतुकहे और इसी प्रकार कर्म योग्यरा शिकों दशगुणा कर्के दोसें भाग लेवे शेष एकरहे तव तिस ऋतुका पूर्वमास कहे और शून्य शेष

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकचेत्पृच्छाविलग्नंऋतुभिश्चवेदैः त्रिभिःशरैर्युक्तमनुक्रमेणततोविलग्नस्यकलाविधेयाः ॥ ७ ॥ लग्नस्यराशेर्गुणकेनगुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य पुनस्तदीयेनगुणेनगुण्याःप्रागुक्तवद्भंपरिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥ दशाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् खार्कैर्हृतेशेषमिताब्द संख्यमायुर्गतंतत्खलुपृच्छकस्य ९षड्भिर्विभक्तेऋतवोभवतिशेषांकतुल्याःशिशिरादयःस्युः॥द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रंपूर्वापरौतदृतुजौतुमासौ १० अष्टाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रतुल्येस्तिपूर्वापरपक्षकोस्त ११ पंचेंदुभक्तेसतिशेषतुल्याःपक्षेचतस्मिन्तिथयोभवंति नक्षत्रतिथ्यानयनाययोग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र १२ सप्ताहतेकर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रंदिवाचरात्रौ जननंतदानीम् १३

रहे तव ऋतुका दूसरामास कहे १० और कर्म विधानराशिकों आठसें गुणें और पूर्वकी न्याई नव ९ ऊन और अधिक कर्के दोसें भागलेवे शेष एक वा शून्य रहे तव पूर्वा पर पक्ष होतेहैं यदएकअंक रहे तव शुक्लपक्ष और शून्य शेष रहे तव कृष्णपक्षमें जन्मकहे ११ और केवल कर्म योग्य राशिमें पंद्रा १५ सें भागलेवे तव योअंक शेप रहे सो गत तिथिया होती हे और नक्षत्र और तिथिके आनयन योग्य अहर्गणसें वारकाविचारकरलेो अथवा तिससवत्सरका पचाग देखकर वा रकहे १२ और कर्मविधानराशिका सात ७ सेंगुणे और पूर्वकी न्याई नव ९ युक्त हीन करे और तिसकों दोसें भाग लेवे जव एक शेप रहे तव दिनका जन्मकहे और शून्यशेष रहे तव रात्रिमें जन्म कहे १३

और कर्मविधानराशिकों पांचसें गुणे और पूर्वकी न्याईं नवकला युक्त और हीन करे और
दिनमान और रात्रिमानकी संख्या घडियोंसें भाग लेवे तब यो अंकशेष रहेसो जन्म
कालमें दिनरात्रिकियां गतघडियांकहे १४ अब प्रकारांतर कर्के नक्षत्रका आनयन कहतेहैं
मनुष्यका नामयो संस्करके समयमें माता पित्रादियोनें धरा होवे सो नामग्रहण करणा और योकि
सीने कुनामादि धराहोवे सो नांहिलेना और तिससंस्कारनामाक्षर कियां मात्राकों ग्रहणकरे तिसमें
हल्वर्णकी अर्द्धमात्रा और अचकी एकमात्रा इसरीतिकर्के मात्राके अंकोंकों द्विगुण करे और ता
त्काल द्वादशांगुलशंकुकी छाया कियां अंगुलियां तिसमें मिलावे इसप्रकारकर्के यो अंक होवै ति
सकों सताईं २७ सें भाग देकर्के यो अंक शेष रहे सो धनिष्टासें लेकर्के तिसका जन्म नक्षत्र कहे
॥ १५ ॥ इतिश्रीजातकखंडभाषायांनष्टजातकाध्यायोद्वाविंशः ॥ २२ ॥

पंचाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन्दिनस्यरात्रेरथवाप्रमि
त्याभक्तेऽवशिष्टंदिनरात्रिनाड्यः ॥ १४ ॥ अथप्रकारांतरेणजन्मनक्षत्रानय
नम् ॥ संस्कारनाममात्राद्विगुणाःछायांगुलैःसमायुक्ताः ॥ शेषंत्रिनवकभ
क्तान्नक्षत्रंतद्धनिष्ठादि ॥ १५ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहा
ज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधजातकखंडेनष्टजातकाध्यायोद्वाविंशः २२
अथपरिशेषाध्यायोव्याख्यायते उक्तंच विनश्यतेभावफलंनराणांग्रहैश्चराद्रैश्च
रमन्यवेधात् दशांतरात्पाचकतोपिसंध्यातत्वेटचक्रंकथितंप्रमाणम् ॥ १ ॥
अपिच नभावानोयोगामुनिनिगदितंगोचरमपिनसंध्यानोपाकःप्रभवतिदशा
नांतरदशा भ्रमंतेयत्खेटावियतिरथचक्राकृतिनिभास्तदेतेपांचकंफलदमुदितंज
न्मनिनृणाम् ॥ २

अबपरिशेषाध्यायकहतेहैं यो जन्मराशिसें ग्रहोंका गोचर फल जन्मस्थानादि कहाहै सो फ
ल अन्यग्रहकेवेधहोनेसें नाशको प्राप्त होताहै और योग्रहोंका दशाफल कहाहै सो संध्यापा
चकादि अनेकदशाके भेदसें नाशकों प्राप्त होताहै तिसमें बहुत यत्नकर्के शुभाशुभ फलका विचा
रकहाहै और सूर्यादि ग्रहोंका प्रतिदिन चक्रमें यो भ्रमणहै सोमुख्य प्रमाणहै १ और कहतेहैं ज
न्मकालमें मनुष्योंकों यो ग्रहोंके भावफल कहेहैं सोविकारणांतरसें स्थूलहै और योगफलबी स्थूल
हैंऔर मुनियोंने कहायो गोचरफल सोबी स्थूलहै औरसंध्यापाचकादि दशांतरदशाफलबिरथू
लहै औरआकाशमें चक्रकीन्याईं भ्रमते यो ग्रहहैं जन्मकालमें तिन्हका फलमनुष्योंकों मुख्यहै
तिससें चक्र कहतेहैं २

और यवनाचार्य ग्रहचक्रका फल और नारद जन्मलग्नकाफल और भृगुगोचरफल और गर्ग दशांतर दशा फलकों मुख्य कहताहे ॥ ३ ॥ अब सूर्यका चक्र कहतेहैं ॥ प्रथम नराकार सूर्यका चक्र बनावे तिसमें सूर्यकेनक्षत्रसेंलेकर्के तीन नक्षत्रमाथेमें देवे और तिसके आगे तीन मुखमें और आगेके दो नक्षत्र दोनों मोंढयोंमें और आगेके एक एक दोनों भुजोंमें देवे और आगे दो नक्षत्र दोनों हाथोंमें देवे और आगे तीननक्षत्र छातीमें देवे और एक नाभिमें और एक हृदयमें देवे और दो नक्षत्र गुदामें देवे और दो नक्षत्र जानुयोंमें देवे और छे ६ नक्षत्रपेरोंमें देवे क्रमसें ॥४ अब फल कहतेहैं सूर्यके नक्षत्रसें चक्रमें जन्मनक्षत्र पैरोंमें स्थित होवे तब थोडि आयुषा वाला और दुःखी होताहै और जानुयोंमें स्थितहोवे तब विदेशमें गमन कर्ताहै और गुदामें स्थित होवे तब परस्त्रीमें गमन कर्ताहै ५ और नाभिमें स्थित होवे तब दुःखको प्राप्त होताहै और छातिमें स्थित

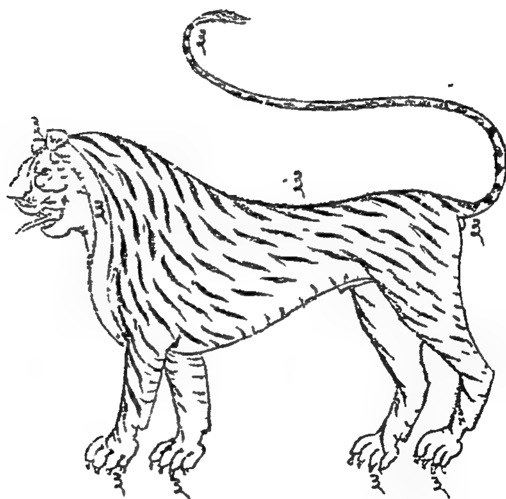
तथाच यवनोग्रहचक्रस्यजन्मलग्नस्यनारदः गोचरस्यभृगुर्ब्रूतेफलंगर्गोदशादिभिः ॥ ३ ॥ अथसूर्यचक्रम् ॥ मूर्ध्नित्रीणिमुखेत्रयंचतदनुस्कंधद्वयेभद्वयमेकैकंभुजयोर्द्वयंकरयुगेवक्षस्थलेभत्रयं नाभ्यामेकमथैकमेवहृदयेगुह्येद्वयंजानुकेसूर्याधिष्ठितभाद्रवेश्चरणयोर्नक्षत्रषट्कंतथा ॥ ४ ॥ अथफलं चरणस्थेरवेर्ऋक्षेस्वल्पायुरतिदुःखितः जानौविदेशगमनंपरदारस्तुगुह्यके ५ नाभौचदुःखितोजातोदेहपीडाउरस्थले ॥ हृदयेईश्वरंविंद्यात्पाणिभ्यांतस्करःस्मृतः ६ बाहौबाहुबलीप्राणीस्कंदेचैवपराभवः ॥ मुखेमिष्टान्नभोगीचपट्टबंधःशिरस्यथ ७इतिसूर्यचक्रम् अथचंद्रचक्रम् चंद्रचक्रंचदेवेशिवर्णयामियथाक्रमम् जन्मराशेश्चनक्षत्रान्नक्षत्रंवर्त्तमानकम् ॥ ८ गणयेद्गणकश्रेष्ठश्चंद्रस्यैवंशुभाशुभंफलम् आस्येपृष्ठकेपट्चकरेपट्चत्रयंगुदे ॥ ९ ॥ चतुष्पदेत्रयंकण्ठेदातव्यंगणकोत्तमैः मुखेहानिश्चाविज्ञेयाधनलाभंचपृष्ठके १०

होवे तब देहमें पीडा होतीहे और हृदयमें होवे तब लक्ष्मीको प्राप्त होताहे और हाथोंमें होवे तब चोर होताहे ६ और भुजोंमें होवेतबबाहुबल वाला होताहै और मोंढयोंमेंहोवे तब तिरस्कारकोंप्राप्त होवे और मुखमें होवे तब मिष्टान्न भोजन कर्ताहे और शिरमें जन्मनक्षत्रहोवे तब राज्यकों प्राप्त होताहै ७ इति ॥ अब चंद्रमाका चक्र कहतेहैं ॥ शिवजि कहतेहैं हेपार्वति अब यथाक्रमसें चंद्रमाका चक्र कहताहुं ॥ जन्मनक्षत्रसें लेकर्के वर्त्त मान नक्षत्रपर्यंत ८ श्रेष्ठ ज्योतिषि गणनाकरे और शुभाशुभ फल कहे जन्मनक्षत्रसे छे नक्षत्र मुखमेंदेवे और क्रमसें पांच पृष्ठमें देवे और छेदो नोंहाथोंमें देवे और तीन गुदामें देवे ९ और चार पेरोंमे देवे और तीन कंठमेंश्रेष्ठगणकोंनें देनेयोग्य है अब फल कहतेहैं ॥ जन्मनक्षत्रसें वर्त्तमाननक्षत्र मुखमें स्थित होवे तब हानिहोतीहै और पृष्ठमेंस्थित होवे तब धनकालाभहोताहे १०



सोमचक्र चेट्टचक्रम





श्रोर हाथमें चंद्रमाका नक्षत्र आवे तव राजाका भय होताहैश्रौर गुदामें चंद्रमाका नक्षत्र होवे तव राजा संमान होताहै श्रोर पैरों में चंद्रमाका नक्षत्र होवे तव स्थानसें भ्रष्ट होताहै श्रौर कंठमें चंद्रमाका नक्षत्र होवे तव संपूर्ण सुख होताहै ११ अव, मंगलका चक्रकहतेहैं वुद्धिवाला सिंहका स्वरूप लिखे श्रौर तिसके देहमें तीन तीन नक्षत्र क्रमसें १२ श्रौर तीन शिरमें श्रौर तीनग्रीवामें श्रोर तीन पृष्टमें श्रौर तीन गुदामें श्रौरतीनपुछमें,श्रौर तीन तीन चार पैरोंमें सूर्यकेनक्षत्रसेंलेकर्के मंगलकी योरकी मूर्तिमें लिखे १३ श्रौर कदाचित राहु श्रोर सूर्य श्रोर शनि मंगल कर्के युक्त होवे गोचरकर्के तव इसप्रकारका फल कर्ताहैं राहुकर्के युक्त होवे तव मृत्यु कर्ताहै श्रौर सूर्यकर्के युक्त होवे तवज्वर श्रौर भ्रम होताहै १४ श्रौर शनिकर्के युक्त होवे तवसंपूर्णकार्यका नाशकर्ताहैश्रौर मंग

हस्तेराजभयंज्ञेयंराजमानंचगुह्यके स्थानभ्रष्टोभवेत्पादेकंठे सर्वसुखंभवेत् ११अथभौमचक्रम् कुजचक्रंप्रवक्ष्यामिलिखेत्सिंहाकृतिंवुधः त्रीणित्रीणिचऋक्षाणितस्यदेहेलिखेत्क्रमात् १२ शिरोग्रिवापृष्ठगुह्यपुछपादक्रमात्त्रिभिः सूर्यर्क्षात्कुजचक्रेपिलिखेत्पंचाननाकृतौ १३ राहुसूर्यशनिश्चापिभौमेनसहसंगतः राहुणामरणंविद्याद्रविणाचज्वरभ्रमः १४ सौरेणकार्यनाशंस्यात्सर्वकार्यंचनश्यति शिरस्थेनमहीजेन सर्वकार्यसुखंरणे १५ ग्रीवायांजायतेव्याधिःपृष्ठेसर्वार्थसंपदः गुह्येतुनिष्फलंकार्यंपुछेभीतिं रणागमे १६ चरणस्थे नभौमेनसर्वकार्यफलोदयः कुजवत्पापसंघानांकुरुतेकर्मसुंदरि १७ कुजचक्रमितिप्रोक्तंसद्यःप्रत्ययकारकम् अथवुधचक्रम् वुधचक्रंप्रवक्ष्यामिप्रस्थानेप्रत्ययावहम् १८

[illegible]

लका नक्षत्र शिर में स्थित होवे तब संपूर्ण कार्य श्रौर युद्धमें जय होताहै १५ श्रोर ग्रीवामें मंगलका नक्षत्र आवे तव व्याधिहोताहै श्रौर पृष्ठमें होवे तव संपूर्ण अर्थ संपदा प्राप्त होतिहै श्रौर गुदामें होवेतव कार्य निष्फल होताहै श्रोर पुछमें होवे तव युद्धमें भय होताहै १६ श्रोर मंगल पैरोंमें स्थित होवे तव सपूर्ण कर्मोंके फलका उदय होताहै अर्थात सपूर्णकर्म करणेसेंलाभहोताहै श्रौर हेपार्वति मंगलकी न्याइपापोंके समूहोंको कर्ताहै १७ हेपार्वतिइह मंगलका चक्र मैंनें तत्काल फल करणेवाला कहाहै इतिभौमचक्रम् अव वुधका चक्र कहतेहैं वुधका चक्र यात्रामें प्रतीतिके करणे वाला कहतेहैं

हेपार्वति जिस नक्षत्रमें बुध स्थित होवे तिस नक्षत्रसें लेकर्के चक्रमें लिखेउसमें एक मस्तकमें और दो नेत्रोंमें और दो कानोंमें दो नासिकामें और एकमुखमें एक गलमें और एक छुत्रीमें और दो मोढयोंमें और दो भुजोंमें दो हाथोंमें और एक उदरमें दो पास्योंमें और एकपृष्ठमें और एक नाभिमें और एक लिंगमें और एक गुदामें और दोपट्टोंमें और दो पैरोंमें यथा क्रमसेंलिखे २० और सताईं जो नक्षत्र तिन्हमें शिरके नक्षत्रमें लाभ होताहै और वडा सुख होताहै और माथेके नक्षत्रमें शोक और संताप होताहै और नेत्रोंके नक्षत्रोंमें प्यारेका दर्शन होताहै २१ और कानोंके नक्षत्रोंमें भाइयोंकेसाथवैर होताहै और नासिकाकेनक्षत्रोंमेंसुख होताहै और मुखके नक्षत्रोंमें मीठे अन्नादि मिलतेहैं और छुत्रीके नक्षत्रमें श्रेष्ठ प्रीति होताहै २२ और गलके नक्षत्रमें स्त्रीपुत्रकी प्राप्ति हो

यस्मिन्नृक्षेबुधोदेविमूर्ध्नितल्लिख्यतेप्रिये ललाटेक्षिश्रुतिघ्राणमुखेपुचिबुकेगले १९
स्कंधयोर्बाहुहस्तेपूदरपार्श्वपृष्ठनाभिपुलिंगेगुह्येतथोर्वोश्चपादयोश्चक्रमाल्लिखेत् २०
सप्तविंशतिऋक्षाणिमूर्ध्निलाभोमहासुखम् ललाटेशोकसंतापःचक्षुपिप्रियदर्शन
म् २१ कर्णयोर्बंधुभिर्वैरंनासिकायांसुखंतथा मुखेमिष्टान्नपानानिचिबुकेप्रीति
रुत्तमा २२ गलेभार्यासुतप्राप्तिःस्कंधयोर्लाभमादिशेत् ॥ वाह्वोर्वस्त्रागमंदि
व्यंपाण्योर्युद्धंरिपोःक्रमात् २३ चक्षसिप्रीतिनाशःस्यात्पार्श्वयोर्व्याधिमादिशेत्
॥ पृष्ठेराजकुलात्त्रासोनाभौस्याद्बंधुसंगतिः २४ पुत्रोत्पत्तिर्भवेल्लिंगेगुदेमरणमा
दिशेत् ऊर्वोर्भवतिदुःखंचपादयोःपरदेशगः २५ यदापापःशुभस्थानेविपरीतं
प्रकुर्वते॥शुभःपापग्रहस्थानेकिंचिद्रक्षातिसुंदरि २६ अर्कार्किसहितेदृष्टेव्याधि
र्नूनंविधावपि ॥ अशुभैराहुणायुक्तेमरणंनात्रसंशयः ॥ २७

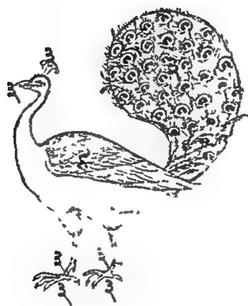
तीहै और मोढयोंके नक्षत्रोंमें लाभ होताहै और भुजाके नक्षत्रोंमें वस्त्रका लाभ होताहै और हाथोंके नक्षत्रोंमें शत्रुसें युद्ध होताहै २३और छातीके नक्षत्रमें प्रीतिका नाश होताहै औरपासयोंके नक्षत्रमें व्याधिहोतीहै और पृष्ठके नक्षत्रमें राजाके कुलसें भय होताहै और नाभिके नक्षत्रमें भाईयोंसें मेल होताहै २४ और लिंगके नक्षत्रमें पुत्रकी उत्पत्ति होतीहै और गुदाके नक्षत्रमें मृत्युकी प्राप्त होताहै और पटोंकेनक्षत्रोंमें दुःख होताहै और पैरोंके नक्षत्रोंमें विदेश गमन होताहै २५ हेपार्वतिपद पापी शुभग्रहके स्थानमें होवे तववी उलटा फल खोटाही फल कर्ताहैऔर शुभग्रह पापी ग्रहके स्थानमें होवे तव थोडी रक्षा कर्ताहै २६ और दुष्टस्थानके नक्षत्र सूर्य शनि और चंद्रमाकर्के युक्त होवें तव निश्चयकर्के व्याधि होतीहै और दुःष्टस्थानके नक्षत्र राहुकर्के युक्त होवें तवमृत्युमेंसंशयनाहिंहोताहै २७

~~चंद्रमा चक्र~~ बुधचक्रम्



जीवचक्र





और शुभनक्षत्र शुभग्रहोंकरके युक्तहोवे तब कल्याण और आरोग्यता और सुख होताहै हेपार्वति ह्
हैबुधका चक्र तेरेको कहाहै और क्या पूछतीहै २८ अथजीवचक्रम्॥ अवहेपार्वतिबृहस्पतिका च
क कहताहों जिस प्रकारका सुंदर बालक होताहै तैसा चक्र बनावे २९ जिस नक्षत्रमें बृहस्प
ति स्थित होवे तिससे चार नक्षत्र शिरमें देवे तिन्होंका फल राजप्राप्त कहाहै और आगेके चार न
क्षत्र दक्षिण हाथमें देवे तिन्होंमें लक्ष्मीप्राप्त होतीहै और आगेका एक नक्षत्र गलमें देवे तिसमें ऐश्व
र्य होताहै और आगेके पांचनक्षत्र छातीमें देवे तिन्हमें प्रीति व लाभ होताहै और आगेके छे नक्ष
त्रदोनों पैरोंमें देवेतिन्हमे पीड़ा होतीहै और आगेकेचारनक्षत्र वाम हाथमें देवे तिन्हमे मृत्यु होताहै
औरआगेकेतीननक्षत्रदोनोंनेत्रोंमें देवेतिन्हमेंराजाकेतुल्यसुखहोताहै पार्वतिइहबृहस्पतिकाचक्रकहाहै ३०

शुभाःशुभयुतेक्षेमारोग्यसंपत्सुखानिच बुधचक्रमितिप्रोक्तंकिमन्यत्परिपृच्छसि२८
अथजीवचक्रम्॥अतःपरंप्रवक्ष्यामिचक्रंदेवगुरोरपि चक्रंलिखेत्सुरेशानियथा
शिशुसुशोभनम् २९ शीर्षेचत्वारिराज्ययुगपरिगणितेसव्यहस्तेचलक्ष्मीरेकं
कंठेविभूतिर्मदनशरमितंवक्षसिप्रीतिलाभः षड्भिःपीडांघ्रियुग्मेजलधिपरिमितं
वामहस्तेचमृत्युर्दृग्युग्मेत्रीणिऋक्षंनृपतिसमसुखंवाक्पतेश्चक्रमेतत् ३०जीवर्क्षात्
अथशुक्रचक्रम्॥ चक्रमन्यत्प्रवक्ष्यामिभृगुपुत्रस्यसुंदरि॥ मयूरप्रकृतिलेखंअरि
पुदर्पहरप्रिये ३१ भार्गव्यंत्रीणिचंचूश्चशिखायांत्रीणिभानिच ॥ पार्श्वपक्षत्र
यंपट्चपट्लत्तायांसुरार्चिते ३२ त्रीणिपुच्छेचरणयोःपट्ऋक्षाणिसमालिखेत्
चंचुग्रीवेरिविध्वंसोविजयोयशसांनिधिः ३३ शिखास्थेवाहनंमानभंगःपाद
विशेषतः॥ पक्षभैःशुभसंयुक्तैरन्यदेशार्जितंधनम् ३४

अब शुक्रकाचक्रकहतेहैं॥ शिवजीकहतेहैं हेपार्वति और शुक्रका चक्र कहताहों हेप्रिये शत्रुओंके
मानको हरणे वाला मोरकी न्याई लिखे ३१ जिस नक्षत्रमें शुक्र स्थित होवे तिससे तीन नक्षत्र
चंचुके आगे लिखे और तीन नक्षत्र आगेके शिखामें स्थित करे और दोनों पक्षोंमें तीन तीन नक्षत्र
लिखे और दोनों जंघामें तीन तीन नक्षत्र लिखे ३२ और तीन नक्षत्र पुछमें लिखे और छे नक्षत्र पै
रोंमें लिखे और चंचुके नक्षत्रोंमें शत्रुका नाशहोताहै और विजय होतीहै और बड़ा यश होताहै ३३
और शिखाके नक्षत्रोंमें वाहनका लाभ होताहै और पैरोंके नक्षत्रमें विशेषसे भंग होताहै और पंख
के नक्षत्र शुभ ग्रह करके युक्त होवें तब परदेशसे धन मिलताहै ३४

और लत्ताकेनक्षत्रमेंपापीग्रहयुक्तहोवेतवसेनापतिकाक्षयहोताहै और शुभ ग्रहकर्केयुक्तहोवेतवव्याधि कानाशहोताहैमिश्रग्रहोंकर्केयुक्तहोवेतवआपसमेंभयहोताहै और चंचूमें और पुछमेंपापीग्रहवाशुभग्र ह होवे तव विजय होताहै और पैरोंमें शुभ पापी दोनों होवे तब मान भंग और रणमें क्षय होता है ३६ इहमोरचक्र तात्काल प्रतीतीके करणे वालाहै अब शनिका चक्र कहतेहैं ॥ शिवजी कहतेहैं हेपार्वति यो तेने मेरेकों पूछयाहे तव जन्मनक्षत्रसें यो शनि शुभाशुभफलदेताहै सो कहताहां ६७ और तैसेंहि युद्धकालमें शनि जिस नक्षत्रमेंस्थित होवे तिसकाचिंतनकरे और लाभालाभमें और हि वादमें और जीवनेमें और रणमें ३८ प्रथम शनिकी प्रतिमा नराकार स्थित कर्के तिसमें नक्षत्र स्थि

लत्तासंस्थैश्चपापैश्चक्षयंसेनापतेर्भवेत् सशुभैर्व्याधिनाशायमिश्रैस्त्रासःपरस्परं
३५ चंचुपुछगतैःपापैःशुभैर्वाविजयोभवेत् ॥ चरणस्थैःशुभैःपापैर्मानभंगोरणक्ष
तिः ३६ वर्हिचक्रमितिप्रोक्तंसद्यःप्रत्ययकारकम् ॥॥ अथशनिचक्रम् ॥ शृणुदे
विप्रवक्ष्यामियत्त्वयाचोदितंमम नक्षत्रात्सोत्थितःसौरःशुभाऽशुभफलप्रदः ३७
तथासंचिंतयेदृक्षंसौरस्थंसमरागमे ॥ लाभालाभेविवादेचजीवनेमरणेतथा ३८
प्रतिमांविन्यसेदादौतत्रर्क्षाणितुविन्यसेत् ॥ चारक्षमास्यमध्येतुसव्येहस्तेचतु
ष्टयं ३९ पादयोःषट्करेवामेचतुष्कंपंचवक्षसि ॥ नेत्रयोर्द्वन्यसेन्मूर्ध्नित्रीणिद्वे
गुह्यकेन्यसेत् ४० एवंविन्यस्यदेवेशिततःफलनिरूपणम् ॥ नानाविधानिदुः
खानिवक्त्रगेवधबंधनम् ॥ सव्यहस्तगतेलाभोविजयोबंधुसंगतिः ४१ पादस्थे
स्थानविभ्रंशोदेहपीडासुतक्षयः ॥ वामहस्तेराज्यभंगोवित्तनाशःसुहृद्वधः ४२

त करे और जिस नक्षत्रमे गोचर कर्के शनि स्थित होवे तिसनक्षत्रकोमुखमें देवे और आगेके चारनक्ष त्र दक्षिण हाथमे देवे ६९ और क्रमसें ६ पैरोंमे देवे और चार वामहाथमेंदेवे और पांचछातीमें देवे औ र दो नेत्रोंमे देवे और माथेमे तीन नक्षत्र देवे और दो नक्षत्र गुदामे देवे ४० हेपार्वति इस प्रकार नक्षत्रोंको स्थित कर्के फेर फल कहे जब जन्मनक्षत्रमुखमे होवे तब अनेक प्रकारके दुःख और बध बंधन होताहै और दक्षिण हाथमे होवे तब लाभऔर बंधुयोंका मिलाप होताहै ४१ और पैरोंमेंस्थि त होवे तब स्थान भ्रंश और देहपीडा और पुत्रका क्षय होताहै और वामे हाथमे होवे तब राज्य भंग और धननाश और मित्रोंका मरण होताहै ४२

राहु चक्र



ओर छातीमें जन्मनक्षत्र होवे तब जय और लाभ और स्त्रीकी प्राप्ति और धनका संग्रह होता है और नेत्रोंमें होवें तब परम प्रीति होतीहै और धनोंका संचय होताहै ४३ और माथेमें होवे तब शत्रुओंका नाश और अधिकार पदकी प्राप्ति होतीहै इसमें संशय नहींहै और गुदामें स्थित होवे तब मृत्युको प्राप्त होताहै और लिंगमें स्थित होवे तब दुःखको प्राप्त होताहै ४४ और कहतेहैं मुखसें फेर गुदामें याताहै और गुदास्थानसें माथेमें जाताहै और माथेसें नेत्रोंमें और नेत्रोंसे हृदयमें हृदयसें वामहाथमे ४५ और वामहाथसे पैरोंमें औरपैरोंसेंदक्षिणहाथमेंओर दक्षिणहाथसे मुखमें जाताहै इस क्रमसें नक्षत्र गतिको भोगताहै ४६ अब राहुका चक्र कहतेहैं हेपार्वति अब राहुका चक्र कहतेहैं जिसके जानने करके मनुष्योंका शुभाशुभका ज्ञान होताहै ॥ ४७ ॥ जिस नक्षत्रमें

जयोवक्षसिलाभश्चस्त्रीप्राप्तिर्धनसंचयः नेत्रयोः परमाप्रीतिर्वित्तानांसंचयस्तथा ४३ मूर्ध्निशत्रुविनाशश्चपदाप्तिर्नात्रसंशयः गुह्येचमृत्युमाप्नोतिलिंगेदुःखंविनिर्दिशेत् ४४ मुखाच्चलतिगुह्येपुगुह्यान्मूर्ध्नितथेक्षणे ईक्षणाच्चहृदियातिहृदयाद्वामकेकरे४५ततस्तुपादयोर्यातिपादाभ्यांदक्षिणेकरे ऋक्षंचरतिमंदस्यहस्ताद्वक्त्रंप्रयातिच ४६ अथराहुचक्रम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिनक्षत्रांगंसुराधिप. येनविज्ञानमात्रेणज्ञायतेचशुभाशुभम् ४७ नक्षत्रस्थोविचिंत्यःस्याद्राहुस्थेसमरागमे ॥ राहुःस्वरोदयायुक्तःसमृत्युसदृशःकिल ४८ ऋक्षेयत्रस्थितोराहुस्तदाद्यास्यंप्रपीडयेत् दृष्ट्याग्रस्थेभद्वयेचबंधुसंतापदस्तथा ४९ ततोनासापुटांतेद्वेवंधनायवधायच नासाग्रतस्ततोद्वेचनक्षत्रेप्रीतिदेमते ५० ततःपरेक्षणस्थेचसर्वकामफलप्रदे वामकुंडलगान्यत्रचत्वार्यर्थधनक्षयम्५१

राहु स्थित होवे तिसको युद्धकालमें विचारे और स्वरोदयमें अनिष्ट राहु होवे तबनिश्चयसेंमृत्युकेतुल्यहोताहै ॥ ४८ ॥ जिसनक्षत्रमेंराहुस्थित होवे तिससें लेकर दो नक्षत्र मुखमें देवे तिसमें पीडा देताहै और आगेके दो नक्षत्र दाढोंमें देवे तिन्होंमे बंधुओंका संतापहोताहै और जिसके आगेके दो नक्षत्र नासिका पुटोंमें देवे तिन्होंमे बंधन और मरण होताहै और नासिकाके आगेसे दो नक्षत्र दोनों नेत्रोंमें देवे तिन्होंमें प्रीति होतीहै ५० और आगेके चार नक्षत्र वामकानके कुंडलमें देवे तिन्होंमें संपूर्णकर्मोका शुभफल होताहै और आगेके चार नक्षत्र दक्षिणकानके कुंडलमें देवे तिन्होंमें धनका नाश होताहै ५१

और तिन्हके आगे पांचनक्षत्र माथेमें देवेतिन्हमें पुत्रस्त्रीसें लेकर्के संपदा होतीहै ॥ ५२ ॥ और तिसके आगेका एक नक्षत्र शिरमें देवे तिसमेंइच्छाफल प्राप्त होताहै ,और तिसके आगे एक नक्षत्र ठोडीमें देवे तिसमें अन्नपानका सुख होताहै५३ और तिसके आगेके चार नक्षत्र मुखके अंदर देवे तिन्होंमें बंधन और मरण होताहै औरवाममार्गकर्के नक्षत्रोंका न्यास करे५४ इस प्रकारका हेपार्वति राहुचक्र अष्ट विस्तारकर्के कहाहे और क्या पूछतिहैं ५५ अबकेतुका चक्र कहतेहैं जिस नक्षत्रमें केतु स्थित होवे तिससें लेकर्के फलको कहे प्रथम दो नक्षत्र नेत्रोंमें देवे तिन्हमें रोगशोक होताहे और आगेके पांच नक्षत्र मुखमें देवे तिन्हमें लाभ होताहै ॥ ५६ ॥

दक्षिणेकुंडलेचापिचत्वारिस्थापयेत्प्रिये अथपंचललाटेस्युः पुत्रदारादिसंपदः ५२ ततःपरंशिरस्येकमीहितस्याप्तयेतथा चिबुकेपरतश्चैकमन्नपानोपपादकम् ५३ वक्त्रमध्येचचत्वारिबंधनायवधायच अपसव्यगतिर्भानांविन्यसेच्चयथाक्रमम् ५४ एवमेतन्महाभागेराहुचक्रंसुविस्तरम् निःशेषंकथितंचात्रकिमन्यत्परिपृच्छसि ५५ अथकेतुचक्रम् यस्मिन्नृक्षेभवेत्केतुस्तदादौतुफलंवदेत् नेत्रेद्वेरोगशोकायमुखेलाभायपंचच ५६ राज्यप्रदंत्रयंमौलौनक्षत्रंपरिकीर्तितम् चतुष्कंदक्षिणेहस्तेनक्षत्रंचशिवप्रदम् ५७ वामहस्तेचतुष्कंचभयरोगकरंसदा एकंनाभौचनाशायगुह्येद्वेमृत्युकारकम् ५८ दद्याच्चपादयोःषट्चधननाशकराणिचकेतुचक्रस्यमाहात्म्यंदेहस्थंज्ञायतेबुधैः ५९ अथात्रप्रसंगतःसेवाचक्रम् सेवाचक्रेशिरःसप्तसप्तपृष्ठेतथोदरे पादयोःसप्तऋक्षाणिसाभिजित्तुक्रमान्न्यसेत् ६०

और तीन नक्षत्र शिरमेंस्थितकरे तिन्हमें राज्यप्राप्ति होतीहै और आगेकेचार नक्षत्र दक्षिणहाथमें देवे तिन्हमें शुभकर्म होताहे ॥ ५७ ॥ फेर आगेके चार नक्षत्र वाम हाथमेंदेवे तिन्हमें भय और रोग होताहै और आगेका जो एक नक्षत्रहै सो नाभिमें देवे सो नाश करताहै और आगेके दो नक्षत्र गुदामें देवे सो मृत्युकर्तेहैं ॥ ५८ और आगेके छै नक्षत्र पैरोंमें देवे तिन्हमें धनकानाश होताहै हेपार्वति केतुके चक्रका माहात्म्य पंडितोंने नराकारचक्रमें जाननेयोग्यहै अब प्रसंगगत सेवा चक्र कहतेहैं सेवा चक्र नराकारबनावे और तिसमें सात नक्षत्र शिरमें देवे और सातनक्षत्रपृष्टमेंदेवे और सातनक्षत्रउदरमेंदेवेऔरसातनक्षत्रपैरोंमें देवे ऐसेंअभिजितसहितठाइनक्षत्रदेवे६०

केतु चक्र



सेवकक्रा



और स्वामीके नक्षत्रसें लेकर्के चाकरके नक्षत्र पर्यंत गिने और चाकरके नक्षत्रसें लेकर्केस्वामी
के नक्षत्र पर्यंत गिने पृष्टदेशमें और पैरोंमेंस्वामी और सेवकका नक्षत्र स्थित होवें तब सेवा
फल हीन होतीहै और शिरमें ओर उदरमें दोनोंके नक्षत्र होवें तब फलके देनेवालीहोती
॥ ६१ ॥ और एकका पृष्टपैरोंमें और एकका शिर उदरमें नक्षत्र होवे तब मध्यम फल होता
अब स्वरशास्त्रोक्त सर्वतोभद्र चक्र कहतेहैं ॥ तिसमें दशरेखा ऊर्ध्वमुख देवे और दशरेखा टेढीयादे
तब एकाशी ८१ कोष्ट कर्के युक्त सर्वतोभद्र नामकर्के चक्र होताहै १ और तिसमें ईशान कोनसें ले
कर्के चार कोणयोंके कोष्टोंमेंक्रमसें अकारादि और अः पर्यंत सोला स्वर लिखे और पूर्वादि दि
शाओंमें क्रमकर्के कृत्तिका नक्षत्र सें लेकर्के प्रत्येक दिशामें सात सात नक्षत्र लिखे २ और अवकहड

स्वामिभाद्भृत्यभंगण्यंभृत्यभात्स्वामिभंतथा ॥ निष्फलंपृष्ठपादस्थेफलदस्तु
शिरोदरे ॥ ६१ ॥ अथस्वरशास्त्रोक्तसर्वतोभद्रचक्रम् ऊर्ध्वगादशविन्यस्य
तिर्यग्रेखास्तथादश ॥ एकाशीतिपदंचक्रंसर्वतोभद्रसंज्ञितम् १ अकारादिस्वरा
कोष्ठेष्वीशादिविदिशिक्रमात् ॥ कृत्तिकादीनिपूर्वादौसप्तसप्तक्रमेणच ॥ २
अवकहडाःपूर्वस्यांमटपरतादक्षिणेदेयाः ॥ नयभजखावारुण्यांगसदचलाश्चो
त्तरेदेयाः ३ अथस्त्रयोपिविन्यस्यवृषाद्याराशयस्तथा-पूर्वादिशेषकोष्टेषुनंदा
द्यांतिथिपंचकम् ४ वाराणांसप्तकंलेख्यंयथोक्तस्वरमार्गगम् यस्मिन्धिष्ण्येग्रहो
वेधोवामदक्षिणसंमुखः ५

हैं पांचवर्ण पूर्वदिशामें लिखे और मटपरत इहे पांच वर्ण दक्षिणमें लिखे और नयभजख इहे पांच
वर्ण पश्चिमदिशामें लिखे और गसदचल इहे पांच वर्ण उत्तरदिशामें लिखे ३ और पूर्वादि दिशों
मे वृषराशिसें लेकर्के तीन तीन राशियां यथाक्रमसे लिखे और शेष जो पांच कोष्ट रहेहैं तिन्हमें
पूर्वसें लेकर नंदादि तिथियोंको स्थित करे और तिसमें मध्यके कोष्टमें पूर्णातिथिको लिखे ४ औ
र तिथियोंके साथ सात वारोंको लिखे जैसें नंदातिथिमें सूर्य मंगल और भद्रा में चंद्र बुध और ज
यामें बृहस्पति और रिक्तामें शुक्र और पूर्णामें शनि वार लिखे इस प्रकारकर्के लिखनेसें सर्वतोभद्र
चक्र सिद्धहोताहै और जिस नक्षत्रमेंजो ग्रहस्थित हो वेतिस नक्षत्रसे वामऔर दक्षिण और सन्मुख
तीनप्रकारका वेध होताहै ५

और कहतेहै आर्द्रा और हस्त और पूर्वाषाढा और उत्तराभाद्रपदा इहे चार नक्षत्र चारदिशोंमें स्तं भको,त्यादि मध्यमें स्थितहैं और घङछ आर्द्राकर्के और,पणठ हस्तकर्के और धफढ पूर्वाषाढाकर्के और झञथ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रकर्के इहे वर्ण वेधको प्राप्त होतेहे ६ और कहतेहै वक्रगति ग्रहकी दक्षिण दृष्टि होतीहै और शीघ्रगतिवाले ग्रहकीवाम दृष्टिहोतीहै और मध्यमगतिकेसमान गतिवाले ग्रहकी संमुख दृष्टि होतीहै इहे तीनप्रकारकी गति बुद्धिवाल्योंने जानने जोग्यहे ७ अवदसमेंकत्ति का नक्षत्रमेंग्रहस्थितकर्केउदाहरणकहतेहैजवकृत्तिकानक्षत्रमेंग्रहस्थितहोवेतवतीनप्रकारका वेध इसरीतिसें जानने जोग्यहै भरणी नक्षत्रको और अकाराक्षरको और वृषराशिको और वा

घङछारौद्रभेविद्धाःपणठाहस्तेथतोयभेधफढा अहिर्बुध्न्येझञथादृष्टिवशाद्ग्रह भवेविधः ६ वक्रेगेदक्षिणादृष्टिर्वामदृष्टिस्तुशीघ्रगेमध्यादृष्टिर्मध्यचारेज्ञेयंदृष्टित्रयंबुधैः ७ अत्रोदाहरणम् भरण्यकारंवृषभंनंदांभद्रांतुलांचतम् विशाखांश्र वणपापोभिनत्त्याग्नेयसंस्थितः ८ यदिताराग्रहोवक्रएकएवयमदहेत्शीघ्रगश्चे दकारीक्षंनंदांभद्रांसवारकाम् ९ तुलांतकारामैंद्राग्नीदैवतंचभिनत्तिहिमध्यग त्यासमानश्चवैष्णवर्क्षंभिनत्तिच १०

रोंकर्के युक्त नंदा भद्रा तिथियोंको और तुलाराशिको और तकाराक्षरको और विशाखानक्षत्रको और श्रवण नक्षत्रको तीन प्रकारकाहि वेध होताहै ८ और यदभौमादि पांचग्रहोमें कोई ग्रह वक्री होवे तव केवल भरणी नक्षत्रको वेध कर्ताहैऔर जव शीघ्रगतिमें स्थित होवे तवअ काराक्षर को और वृष राशिको और नंदा भद्रा तिथि वारोंकोऔर तुला राशिको और तकाराक्षरकोऔर विशाखा नक्षत्रको वेध कर्ताहै ९ और मध्यम गतिके तुल्य ग्रह चलताहोवे तवकेवलश्रवण नक्षत्रकोवेधकर्ताहै और इसीरीतिकर्केनक्षत्रांतरमेंस्थितग्रहका विचारकरणेजोग्यहै १०

और राहूकेतु सदा वक्रि रहितेहैं और सूर्य चंद्रमा सदा शीघ्र गहितेहैं और मंगलसैलेकर्के पांचग्रहोंकावेध तीनप्रकारका चार वशसें कहाहै ११ और क्रूर ग्रहवक्री होवेंतब महाक्रूर होतेहैं और शुभग्रह वक्री होवें तव अत्यंत शुभहोतेहैं और शीघ्रगतिमें संपूर्ण ग्रह थोडा फलकर्तेहैं और मध्यगतिमें संपूर्ण ग्रह पूर्ण फल कर्तेहैं । १२ और कोणोंमें यो नक्षत्र तिन्हकेचतुर्थ और प्रथम चरणोंमें पव ग्रह स्थित होवे तव अकारादि चारस्वरोंको और पूर्ण तिथिको वेध होताहै १३ और एकक्रूरग्रहका वेध होवे तव उद्वेग होताहै और दो क्रूरवेधकरेंतब धनहानि होतीहै और तीनक्रूरग्रह वेधकरें तबरोगहोताहै और चार क्रूरग्रह वेध करेंतब मृत्यु होताहै और शुभग्रहोंके वेधकर्के शुभफलहोताहै और शुभपाप दोनोंके वेधसें मिश्रित फल होताहै १४ और नक्षत्र वेधमें भ्रम और वर्णवेधमें हानि

राहुकेतूसदावक्रौशीघ्रगौशशिभास्करौ
दृष्टित्रयंचारवशाद्भौमादिग्रहपंचके ११
क्रूरावक्रामहाः क्रूराःसौम्यवक्रातिशो
भनाःशीघ्राःस्वल्पफलाःसर्वे ॥ मध्ये
पूर्णफलप्रदाः १२ कोणस्थधिष्ण्ययो
र्मध्येंत्येपूर्वेग्रोग्रहोयदा ॥ अकारादिचतु
ष्कस्यवेधःपूर्णास्तिथेस्तथा १३ एकादिक्रू
रवेधेनोद्वेगोहानीरुजोमृतिः सौम्यवे
धेशुभंज्ञेयंमिश्रेमिश्रंसमादिशेत् १४
भ्रमोधिष्ण्येक्षरेहानिः स्वरेव्याधिर्भयं
तिथौ राशिवेधेमहाविघ्नंपंचविद्धोनजी
वति ॥ १५ ॥ एकविद्धेभयंयुद्धेद्वयोर्वेधे
नसंक्षयः ॥ त्रयाणांवेधतोभंगश्चतुर्णांवे
धतोमृतिः १६ अर्कवेधान्मनस्तापोभौमेहानिःशनौरुजःराहुकेत्वोर्भयंवेधसौ
म्यःक्रूरयुतोनसत् १७चंद्रेमिश्रफलंपुंसांरतिलाभस्तुभार्गवे बुधवेधाद्भवेद्बुद्धिर्गुरोः
सर्वार्थसिद्धयः १८स्वक्षेत्रस्थेफलंपूर्णंपादोनंमित्रगेहगे अर्द्धंसमगृहेज्ञेयंपादंश
त्रुगृहास्थिते १९

औरस्वरवेधमें व्याधिऔरतिथिवेधमेंभयऔरराशिवेधमेंमहाविघ्नऔरनक्षत्रादि पांचग्रहोंकर्केविद्धहोवेतब मृत्यु होताहै १५ औरएकवेधकर्केयुद्धमेंभयहोताहैऔरदोवेधकर्केक्षतिकोप्राप्तहोताहैऔरतीनवेधसेंयुद्धमें भंगहोताहैऔरचारवेधकर्केमृत्युकोप्राप्तहोताहै १६ औरसूर्यकेवेधसेंमनकातापहोताहैऔर मंगलके वेधमें हानि होतीहैऔरशनिकेवेधसेंरोगहोताहैऔरराहूकेतुकेवेधमेंभयहोताहैऔरक्रूरग्रहकर्केयुक्तबुधकावेध शुभनहीं होताहै १७ और चंद्रमाके वेधसें मिश्रित फलहोताहैऔरशुक्रके वेधसें रतिकासुखहोताहै और बुधके वेधसें बुद्धिहोतीहै और बृहस्पतिके वेधसें संपूर्णअर्थ सिद्ध होतेहैं १८ और वेधकर्त्ताग्रह स्वक्षेत्रमें होवे तब पूर्ण फल कर्ताहै और मित्र क्षेत्रमें पादोन और समके क्षेत्र में अर्द्ध और शत्रु की राशिमें चतुर्थांश फलकर्त्ताहै १९

और ... यदा रोगकालमें क्रूरग्रहका वेधहोवे और क्रूरग्रहवक्री होवे तव मृत्युकर्त्ताहै और ...
और अतिहोवेतव चिरकालरोगकर्त्ताहै और वृषमिथुनकर्कराशिमें सूर्यस्थितहोवेतव पूर्वदिशा और सिंहकन्या तुलामें सूर्य होवेतव दक्षिण और वृश्चिक धन मकरमें सूर्य होवेतव पश्चिम और कुंभमीनमेषराशिमें सूर्य स्थित होवेतव उत्तर दिशा अस्त होतिहै २१ और नक्षत्र अस्तहोवे तव रोगहोताहै और वर्णअस्त होवेतव हानिहोतीहै और स्वरअस्तहोवे तवशोकहोताहै और राशिअस्त होवे तव विघ्न होताहै और तिथिअस्तहोवे तव भयहोताहै और पांचोंहि अस्त होवे तव मृत्युहोतीहै २२ और यात्रायुद्धविवादघरके महलको द्वारशुभकर्म अस्तदिशाके सन्मुखवुद्धिवालोंनें नहीं करणे योग्यहै २३ और जितना काल जिसकेनामकापूर्वअक्षरअस्तदिशामें होवे उतनाकालसो मनुष्य दैवकके हत होवे

रोगकालेयदावेधःक्रूरखेचरसंभवःवक्रगत्याभवेन्मृत्युःशीघ्रेवाच्योरुजान्वितः २० यत्रपूर्वादिकाष्टायांवृषराश्यादिगोरविः सादिशास्तमिताज्ञेयायत्रभानुस्त्रिमासिकः ॥ २१ ॥ नक्षत्रेस्तेरुजोवर्णेहानिःशोकःस्वरेस्तगे राशौविघ्नंतिथौभीतिर्मरणंपंचसुस्मृतम् २२ यात्रायुद्धंविवादश्चद्वारप्रासादहर्म्ययोःनकर्तव्यंशुभंचान्यदस्ताशाभिमुखंनरैः २३ अस्ताशाभिमुखंयावत् भवेन्नामाद्यमक्षरं तावत्सर्वेपुकार्येपुभवेद्दैवहतोनरः २४ नक्षत्रेभ्युदितेपुष्टि र्वर्णेलाभः स्वरेसुखंराशौजयस्तिथौतेजःपदाप्तिःपचकोदये २५दीपोयथागृहस्यांतःप्रकाशयतिसर्वतः तथैवसर्वतोभद्रचक्रंज्ञानप्रकाशकम् २६ इतिसर्वतोभद्रचक्रम् अथसूर्यकालानलचक्रम् सूर्यकालानलंचक्रस्वरशास्त्रोदितंयत् तदहंविशदं वक्ष्येचमत्कृतिकरंपरम् १ त्रिशूलकाग्राःसरलाश्चतिस्रः किलोर्ध्वरेखाःपरिकल्पनीयाः रेखात्रयंमध्यगतंचतत्रद्वेद्वेचकोणोपरिगेविधेये २

२४ और नक्षत्र उदित होवे तव पुष्टि होतिहै और वर्णमें लाभ और स्वरमें सुख और राशि जय और तिथिमें तेज और पाचोंहि उदयहोवेतव पदकी प्राप्तीहोतिहै २५ और जैसेंघरके मध्यमें दीपसंपूर्णनें प्रकाशकर्त्ताहैतेसेंहि सर्वतोभद्रचक्रशुभाशुभज्ञानका प्रकाशकरणेवालाहै २६ इतिसर्वतोभद्रचक्रम्
...सूर्यकालानल चक्र कहतेहैं स्वरशास्त्रमें कहायो सूर्यकालानलचक्रतिसको मैं विस्तारकरके इस वि... कहताहां कैसाहै परम चमत्कारके करणे वालाहै १ त्रिशूलहैं अग्रमें जिनके असीयां तीसरा सूधियां लिखे तिन्हकों ऊर्ध्व मुख स्थित करे और तीनरेखा तिन्हके मध्यमें टेढीया देवे और ...रेखा चार कोणोंमें देवे २

अथावकहडचक्रम्

अ क १	व २	क ३	ह ३	ड ४	म म १	ट २	प ३	र ३	त ४
इ २	वि ३	कि ४	हि ४	डि ह्री १	मि २	टि ३	पि ४	रि ४	ति वि १
उ ३	वु ४	ऊ घ ङ आ छ	ऊ ति १	डु २	मु ३	टु ४	पु ष ह ण ठ	रु स्वा १	तु २
ए हा ४	वे भ्रू १	हे डुं १	हे २	डे ३	मे ४	टे उफ १	पे चि १	रे २	ते ३
ओ रो १	वो २	को २	हो ३	डो ४	मो पू फा १	टो २	पो २	रो ३	तो ४
नु अ १	यू	म ३	ज ३	ख ४	ग ध १	सु	द ३	च ३	ल
नि २	यि ३	भि ४	जि ४	खि भ्र १	गि २	सि ३	दि ४	चि ४	लि १
नु ३	भु ४	ध य ष फा ढ	जु भि १	खु २	गु ३	सु ४	दु घ थ झ ञ	चु ऋ १	लु
ने ४	ये भू १	भे उ ष १	जे २	खे ३	गे ४	से ष्म १	दे २ १	चे २	ले १
नो ओ १	यो २	भो २	जो ३	खो ४	गो श १	सो २	दो २	चो ३	लो ४

वउछ

अ	क	रो	मृ	आ	उं	ति	श्ले	आ
म	उ	अ	व	क	ह	उ	ऊ	म
अ	ल	ल	ह	मि	र्क	तू	म	स्फ
रे	व	मे	श्रो	मृ म	श्रा	सिं	ट	उफ
उ य	द	मौ	श्रु	श	व व	कं	प	ह
द भ	स	ऊं	अः	उ	श्र	तु	र	चि
श	ग	पे	मं	य	हं	प	न	स्वा
य	आ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	अ	अ	उ प	ए प	मू	ज्ये	अ	इ

यफछ

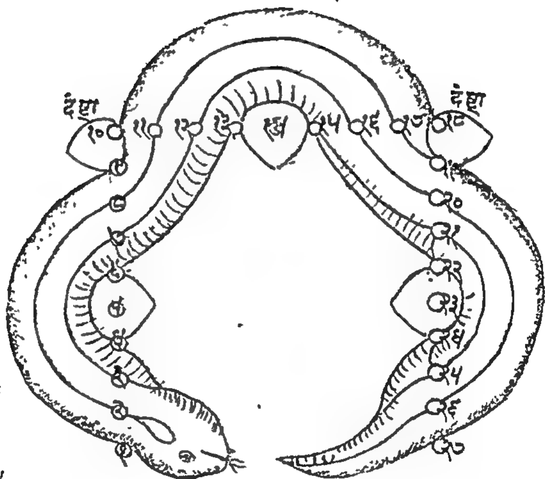
फ उ ध

मानुष १ · नाम १ · आय ५ · मृत्यु · ९ धर्म

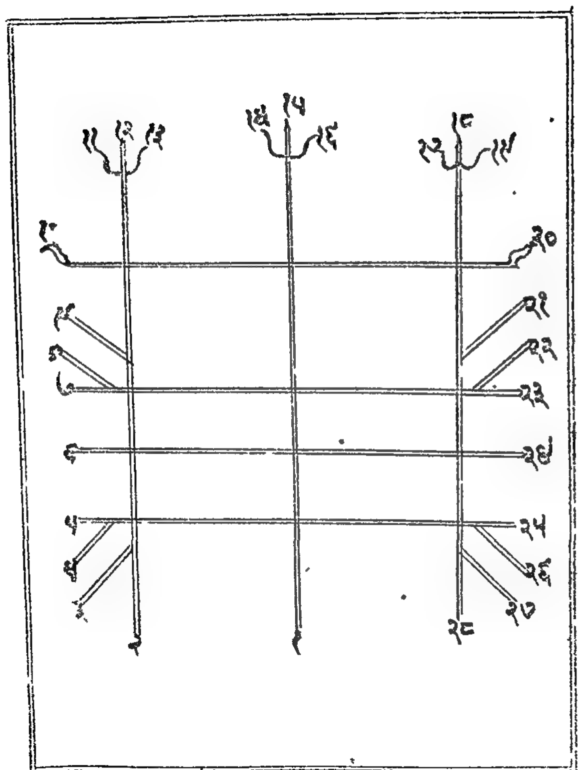
दैवाजीव · १० कर्म

आयाम · ११ माया

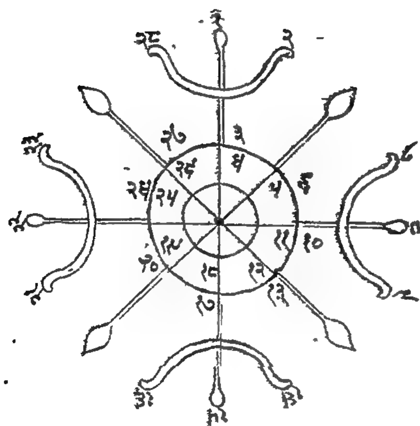
१८ समुदाय · १६ संघात · १४ काल



दंष्ट्रा
१०
११
१२
१३
१५
१६
१७
१८
दंष्ट्रा



१२
१३
१४
१५
१६
१८
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८



श्रोर त्रिशूल श्रोर कोणरेखाके मध्यमें एक श्रोर रेखा देवे तिसरेखाके श्रागे मध्योश्रृंग-
श्रोर त्रिशूल श्रोर कोणरेखाके मध्यमें एक श्रोर रेखा देवे तिसरेखाके दक्षिणमार्गकरके श्रभिजित
वनावे श्रोर मध्यमें जो त्रिशूलाग्ररेखाहै तिसके मूलसें लेकरके दक्षिणमार्गकरके श्रभिजित
सहित सूर्यके नक्षत्रसें लेकरके श्रठाई नक्षत्र लिखे २ श्रोर श्रपने नामका नक्षत्र जि
सस्थानमें स्थित होवे तिसका शुभाशुभ फल विचारे श्रोर नीचेके तीन नक्षत्रोंमें श्रपने नामकानक्ष
त्र स्थित होवे तव क्रमकरके चिंता श्रोर वध श्रोर वंधन होताहै ४ श्रोर दोनोशृंगोंमेंरोग श्रोर भं
ग होताहै श्रोर त्रिशूलोंमें स्थित होवे तव मृत्युको प्राप्त होताहै श्रोर शेषयो नक्षत्रहैं तिन्हमे नामन
क्षत्र होवे तव जय श्रोर लाभ श्रभीष्ट सिद्धि श्रनेकप्रकारोंकी मनुष्योंको होतीहै ५ इहे श्रीसूर्यका
लानलचक्र रोगमें श्रोर विवादमें श्रोर युद्धमें श्रोर यात्राकालमें प्रथम विचारलेवे इहे पुरानन ऋषि

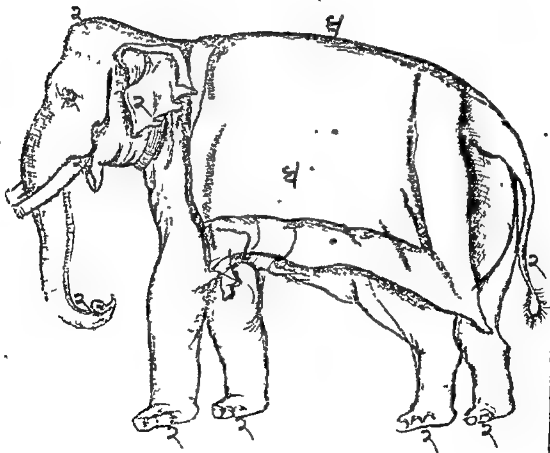
[illegible]
[illegible]
त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखांतदग्रयोःशृंगयुगंविधेयंमध्यात्रिशूलस्यचदंडमूलात्सव्ये
नभान्यर्कभताभिजिच्च ३ स्वनामभंयुत्रगतचतत्रप्रकल्पनीयंसदसत्फलंहि तलेस्थ
ऋक्षत्रितयेक्रमेणचिंतावधश्चप्रतिवंधनानि ४ शृंगद्वयेरुक्चभवेद्विभंगःशूलेपु
मृत्युंपरिकल्पनीयम् शेषेपुधिष्ण्येपुजयश्चलाभोभीष्टार्थसिद्धिर्वहुधानराणां ५
श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्रुदेचवादेचरणेप्रयाणे प्रयत्नपूर्वंननुचिंतनीयपुरा
वनानांवचनंप्रमाणम् ६ इतिसूर्यकालानलचक्रम् श्रथचद्रकालानलचक्र
म् कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तंतस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्ये वृत्ताद्बहिःसचलिते
विधेयेरेखेत्रिशूलाश्चतदग्रकेपु १ कोणाश्चरेखाद्वितयेनसाध्या पूर्वत्रिशूलेकि
लमध्यसंस्थम् चांद्रंलिखेद्भंतदनुक्रमेणसव्येनधिष्ण्यानिवहिस्तदंते २ का
लानलंचक्रमिदंहिचांद्रंरणप्रयाणादिपुजन्मभंचेत् त्रिशूलसंस्थंनिधनायनूनं
मंतर्वहिस्थंचशुभप्रदंहि ३

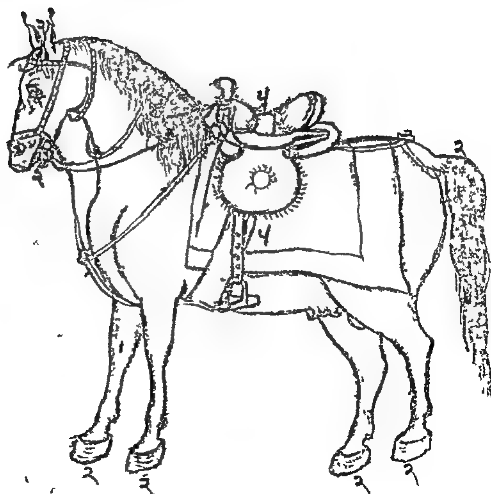
वोंनेकहाहै ६ इतिसूर्यकालानलचक्रम्- श्रव चंद्रकालानलचक्र कहतेहे प्रथम प्रकारकरके वृत्त मंडल
वनावे श्रोर तिसमें दोरेखा देवे एक पूर्वाग्रजो वृत्तके वाहरको प्राप्त होजावे श्रोर एक दक्षिणाग्रेरे
खा जो वृत्तके वाहर चलीजाय श्रर्थात् चारदिशामें चाररेखा वृत्तके वाहर चलीजावे श्रोर तिन्होंरे
खोंके श्रग्रभागमें चारत्रिशूल वनावे १ श्रोर वृत्तमें दोरेखाकरके ईशानादि चारकोणा सिद्धकरे-
श्रोर पूर्वदिशाकेत्रिशूलके मध्यमें चंद्रमाके नक्षत्रको लिखे श्रोर श्रागेके नक्षत्र दक्षिण भाग करके
क्रमसेंवाहर श्रोर श्रंतर गत लिखे २ इहे चंद्रमाका कालानलचक्र कहाहे इसको युद्धकालमें श्रोर
यात्रादि कालमे जन्मनक्षत्र त्रिशूलमें स्थित होवे तव निश्चयकरके मृत्युको प्राप्त होताहै श्रोर श्रं
दर श्रोर वाहरके नक्षत्रोंमें स्थित होवे तव शुभफल होताहै ॥ ३ ॥

नामक्रमधमाक्षरसें जन्मनक्षत्रादियोंकावेध शुभाशुभ ग्रहोंकाविचारकर्के फलकहे अब कालदंष्ट्राच. क्रकहतेहैं नव नक्षत्र ऊर्द्धगतिसें लिखे और नव नक्षत्र टेढेलिखेऔरनवनक्षत्र अधोगतिकर्केलिखे १ और चारनाडियोंकर्के नक्षत्रोंको वेध करें औरमध्यके तीननक्षत्रों को छोडदेवे सोचक्र सर्पाकार होताहै सोकालचक्र कहाहै २ तिसमें तीन नक्षत्र यो मध्यमें स्थितहै सो कालकामुखहै और यह

अथजन्मनक्षत्रादिवेधफलार्थचक्रम् जन्मभेक्रूरवेधेचहानिकष्टंविनिर्दिशेत् सुखभे सुखहानिःस्याद्वातपित्तज्वरंभवेत् १ मृत्युभेदुःखदंरोगशोकंमोहंपराभवंधर्मभेचा र्थनाशंचरोगश्चविविधोभवेत् २ कालभेतुविनाशंचआधानेघातकंतथाक्रूरवेधे भवेन्मृत्युः शोकःकष्टंज्वरंभवेत् ३ अर्थनाशोमनस्तापोहानिकष्टंप्रचक्ष्यतेसंघात केविरोधंचमनस्तापंचविघ्नता ४ सामुदायकभेरिष्टंसुखंअरिपुभीतिदम् अथकाल दंष्ट्राचक्रम् नवोर्ध्वगानिधिष्ण्यानिनवातिर्य्यग्गतानिषअधोगतानिधिष्ण्यानिनवचैव विनिर्दिशेत् १ चतुर्नाडिकृतोवेधोमध्यऋक्षत्रयोज्झिताःसर्पाकारंचयच्चक्रंका लचक्रंप्रजायते २ त्रीणिमध्यगऋक्षाणितानिकालमुखानिच कोणस्थितेत्रयेधि ष्ण्येतचदंष्ट्राद्वयंमतम् ॥ ३ ॥ दिनर्क्षमादितःकृत्वानामर्क्षंयत्रसास्थितं मुखदंष्ट्राग णेमृत्युःशुभमन्यत्रसंस्थितम् ज्वरितेनष्टदंष्ट्रेचविवादेविग्रहेरणे कालदंष्ट्रा स्यगंनामयस्यतस्यमहद्भयम् ५ अत्रन्यासःदिननक्षत्रादारभ्यालिखेत्इति कालदंष्ट्राचक्रम्

दो नक्षत्र कोणोंमें स्थितहैं सो कालकीदो दाढाहैं ३ वर्त्तमानदिनकेनक्षत्रसें गिने नामनक्षत्र मुखमें वा दाढोंमें स्थित होवे तिस दिनमें मृत्युको प्राप्तहोताहैऔर अन्यस्थानमें होवे तब शुभहोताहै ४ और ज्वरमें और देशमें और विवादमें औरयुद्धमें जिसका नक्षत्र कालकी दाढोंमें और मुखमें होवे तिसको वडा भय होताहै इतिकालदंष्ट्राचक्रम्





अब गजराजका चक्रकहतेहैं जिसके जाननेसे राजाके यात्रामें और युद्धमें जय होतीहै ॥१॥ हाथीकीन्याई संपूर्ण अंगोंकर के युक्त चक्र लिखे और तिसमें दक्षिण मार्गसे अठाईस नक्षत्र स्थित करे २ और हाथीके नाम नक्षत्रसे लेकरके मुख और शुंडाग्र और नेत्र और कर्ण और शिर और पैर और पुछमें दो दो नक्षत्र लिखे और पृष्ठमें और उदरमें चार चार नक्षत्र स्थित करे ३ और मुखसे लेकरके जिसि अंगमें शनिका नक्षत्रहोवे तिसका शुभाशुभ फलकहे ४ और युद्धकालमें मुख और शुंडाग्र और नेत्र और शिर और उदरमें शनिका नक्षत्र जिस हाथीके स्थितहोवे तिसकी जय होतीहै ॥५॥ और जिसहाथीके पृष्ठमें और पैरोंमें और पुछमें और कर्णोंमें स्थित
[illegible]

॥ अथगजचक्रम ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिचक्रंमातंगनायकम ॥ येनविज्ञानमात्रेणयात्रायुद्धेजयोभवेत ॥ १ ॥ गजाकारंलिखेच्चक्रंसर्वावयवसंयुतम ॥ अष्टाविंशतिऋक्षाणिदेयानिसृष्टिमार्गतः ॥ २ ॥ मुखशुंडाग्रनेत्रेचकर्णशीर्षांघ्रिपुच्छके द्विकंद्विकंचदातव्यंपृष्ठोदरेचतुश्चतुः ३ द्विरदनामभाद्दाविदनादिगण्यतबुधैःयत्रऋक्षस्थितःसौरिर्ज्ञेयंतत्रशुभाशुभं ४ मुखेशुंडाग्रनेत्रेचसौरिर्भमस्तकोदरे ॥ युद्धकालेगतेयस्यजयस्तस्यनसंशयः ५ पृष्ठेपादेचपुच्छेचकर्णेसंस्थेशनैश्चरे मृत्युभंगौरणेतस्यऐरावतसमोयदि ६ एतेषांदुष्टभागानांयुत्कालसंस्थितःशनिः ॥ तत्कालपट्टवधापवर्जनीयःप्रयत्नतः ७ पृथिव्याभूषणंमेरुःशर्वर्य्याभूषणंशशी नराणांभूषणंविद्यासैन्यानांभूषणंगजः ८ अथाश्वचक्रम. अश्वाकारंलिखेच्चक्रंमश्विधिष्ण्यादितारकाः ॥ वदनात्सृष्टिगादेयाअष्टाविंशतिसंख्यया १ मुखाक्षिकर्णशीर्षेषुपुच्छांघ्रियुग्मसंख्यया पंचपंचोदरेपृष्ठेसौरियंत्रफलंततः ॥ २

स्थित होवे सो ऐरावतके तुल्यभी होवे तब युद्धमें मृत्यु और भंग होताहै ॥ ६ ॥ और इन्हों दुष्टस्थानोंमें जिसका शनि होवे तिसको राज्याभिषेकसमयमें त्याग करे और कहतेहैं पृथ्वीकाभूषणमेरुपर्वतहै और रात्रिकाभूषण चंद्रमाहै और मनुष्योंकाभूषण विद्याहै और सेनाका भूषण हाथीहै ८ इतिगजचक्रम् अथ अश्वचक्रकहतेहैं घोड़ेकी न्याई सदृश चक्र लिखे और तिसमें घोड़ेके नाम नक्षत्रसे लेकरके दक्षिण क्रमसे अभिजित सहित अठाईस नक्षत्र स्थित करे १ प्रथम मुखसे लेकेके मुख और नेत्र और कर्ण और शिर और पुछ और पैरोंमें दो दो नक्षत्र स्थित करे और पांचउदरमें और पांच पृष्ठमें स्थित करे और जिस अंगमें शनिका नक्षत्र होवे तिसका फल कहे २

और मुख और नेत्र और कर्ण और शिरमें जिस घोडेके शनि स्थित होवे तब शत्रु भंगको प्राप्त होतेहैं और युद्धमें शत्रु वशको प्राप्त होतेहैं ३ और उदर और पैर और पृष्ठ और पुछमें शनि जिस घोडेके होवे तब विभ्रम और भंग और हानि युद्धमें सो घोडा करताहै ४ और इन्हों स्थानोंमे यद घोडेके शनि स्थित होवे तिस घोडेको राजा अभिषेक कालमें और यात्रामें और युद्धमें त्याग करे ५ और जिस घोडेके शुभ स्थानमें शनि होवे तिस राजाके शत्रु डरतेहैं जिस जिस भूमिमें तिसके घोडे फिरें ६ इतिश्रीजातकखंडभाषायांपरिशिष्टाध्यायस्त्रयोविंशः २३ अब रिष्ट प्रतिकाराध्याय कहतेहैं ॥ जो मनुष्य ग्रहोंको प्रसन्न कियाचाहताहै तिसनें आगे कहे जो औषधियोंकर्के स्नान और ग्रहोंका पूजन और ब्राह्मणोंका पूजन और ग्रहोंके निमित्त यथोक्त विधि

मुखाक्षिकर्णशीर्षस्थोयदासौरिस्तुरंगमे तदारिर्भंगमायातिरणेशत्रुवशंगतः ३ उदरांघ्रिपृष्ठपुच्छस्थेश्वांगेष्वर्कनंदने विभ्रमंभगहानिंचकरोत्यश्वोमहाहवे ॥ ४ ॥ एतत्स्थानस्थितःसौरिःसदाकालेहयस्यच ॥ पट्टबंधेगमेयुद्धेवर्जयेत्तहयंनृपः ५ देशांतरस्थितःसौरीरिपवः सतिशंकिताः ॥ तुरंगायस्यभूपस्यविचरंतिमहीतले ६ इत्यश्वचक्रम् इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेपरिशिष्टाध्यायस्त्रयोविंशः २३ अथरिष्टप्रतिकाराध्यायोव्याख्यायते ॥ प्रयाज्यमौषधिस्नानग्रहविप्रार्चनंतथा ग्रहानुद्दिश्यहोमोवाग्रहाणांप्रीतिमिच्छता १ तत्रग्रहस्नानमुच्यते सदौषधैर्यातिगदाविनाशंयथायथादुःखभयानिमंत्रैः तथोदितस्नानविधानतोपिग्रहाऽशुभनाशमुपैत्यवश्यम् २ अथप्रत्येकग्रहस्नानं तत्ररवेः मनःशिलैलासुरदारुकुंकुमैरुशीरयष्टिमधुपद्मकान्वितैः सताम्रपुष्पैर्विषमस्थितेरवौहितावहंस्नानमुदाहृतंबुधैः ॥ ३ ॥

कर्के होमकोकरे १ तिनमें प्रथम स्नानका हेतु कहतेहैं जैसें श्रेष्ठ औषधिके सेवनेसें रोग नाशको प्राप्त होतेहैं और जैसें सद्गुरुकर्के उपदिष्टजोमंत्र हैं तिन्हों कर्के दुःख और भय नाशको प्राप्त होतेहैं तैसहि कहेहुये ग्रहोंकेस्नान तिन्होंकर्के अवश्यमेव ग्रहोंका रिष्ट नाशको प्राप्त होताहै २ इस वास्ते ग्रहोंके स्नान कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यका रिष्ट दूरकरणे वास्ते स्नानविधि कहतेहैं ॥ जिस मनुष्यको दशान्तर्दशामें या गोचरमें दुष्टस्थानमें सूर्य होवे तिसको मनशिला रक्तधातु और इलाचीयां और देवदारु और केसर और खसवचा मीठा जटा और मुलठी और लालकमल और रक्तपुष्प करवीरादि इन्होंको जलमें मिलायकर्के स्नान करणेसें सूर्यका रिष्ट दूर होताहै ३ अथ चंद्रमाका स्ना

न कहतेहैं पंचगव्य प्रसिद्धहै गोमूत्रगोमय गोदुग्ध गोदधि गोघृतमिति और गजमदहस्तिमद औ
र शंखऔर सिप्पी और कुमुद श्वेत कमल और स्फटिक श्वेतमणिइन्होंकों जलमेंमिलायकर्के
स्नान करणेसें चंद्रमाका विकार दूर होताहै ४ अब मंगलका दोष दूरकरणे वास्ते स्नान कहतेहैं
विल्ववृक्ष और रक्तचंदन और लालपद्ममणी और लालपुष्प और सिंगरफ और मालकंगुणी और
लाउवकुलइन्होंकों जलमें मिलायकर्के स्नानकरणेसें मंगलका दोष दूरहोताहै ५ अब बुधकादो
ष दूर करणेवास्ते स्नान कहतेहैं गोहा और अक्षत और फल और गोरोचन और मखीर औरमो
ति और ॥ सदृक्षजटा और सुवर्ण जलमें मिलायकर्के स्नानबुधका रिष्ट दूरकरणे वास्ते विद्वा
न्नोंने कहाहै ६ अब बृहस्पतिका रिष्ट दूरकरणेवास्ते स्नान कहतेहैं ॥ मालतीकेपुष्प औरसेतिसर

अथचंद्रस्य पंचगव्यगजदानविमिश्रैःशंखशुक्तिकुमुदस्फटिकैश्च शीतरश्मि
कृतवैकृतहंतृस्नानमेतदुदितंनृपतीनाम् ॥ ४ ॥ अथभौमस्य ॥ विल्वचंदन
वलारुणपुष्पैर्हिंगुलूकफलिनीवकुलैश्च ॥ स्नानमद्रिरिहमांसयुताभिर्भौमदो
षविनिवारणमाहुः ॥ ५ ॥ अथवुधस्य गोमयाक्षतफलैःसरोचनैःक्षौद्रशु
क्तिभवमूलहेमभिः स्नानमुक्तमिदमत्रभूभृतांबोधनाशुभविनाशनंवुधैः ६ अ
थगुरोः मालतीकुसुमशुभ्रसर्षपैःपत्रकैश्चमदयंतिकोद्भवैः मिश्रमंवुमधुकेनच
स्फुटवैकृतंगुरुकृतंनिकृंतति ७ अथभृगोः॥एलयाचशिलयासमन्वितैर्वारिभिः
सफलमूलकुंकुमैः ॥ स्नानताभृगुसुतोपपादितादुःखमेतिविलयंनसंशयः ८
अथशनेः असिततिलांजनलोध्रवलाभिः शतकुसुमाघनलाजयुताभिः रवित
नयेकृयितंविषमस्थदुरितहृदाप्लवनंमुनिमुख्यैः ॥

दो मदयंतिके पत्र मल्लिकाकेपत्र और मुलठी या मखीर कर्के युक्त जलमें मिलायकर्के स्नान कर
णेसें बृहस्पतीका रिष्ट दूर होताहै ७ अब शुक्रका दोष दूर करणे वास्ते स्नान कहतेहैं छोटीइल
ची और मनसिला कर्के युक्त और फलबीजपूरादिकका मोहोकठासिलेयकर्के औरअष्टवृक्षकिदाजटा
और केसर इन्हो सपूर्ण औषधियोंको जलमें मिलायकर स्नानकरणेसें शुक्रका दोष दूर होताहै ८
अब शनिका स्नान कहतेहैं काले तिल और सुरमा और लोध्र और काली धम्मणी और सौंफया
क और मुस्थर और धान्यकेखिया फुल्लियां इन्हो औषधियोंको जलमे मिलायकर्के स्नानकरणेसेंशनि
का रिष्ट दूरहोताहै ऐसें श्रेष्ठ मुनियोंने कहाहै ९

अब राहुके नूका स्नान कहतेहैं लोध्र और गर्भकस्तूरी तिलोंकी और तिलपत्र और मुस्ता और हाथी कादंत और कस्तूरी जलकके युक्त संपूर्ण औषधियोंसे स्नान करणेसे राहुकादोष दूर होताहै और बकरेके मूत्रको मिलायकके इहे स्नानकेतुके दोषको दूर करताहै अब संपूर्ण ग्रहोंकी पीडा हरणेवाला स्नान कहतेहैं सेतीसरेहा और लोध्र और हरिद्रा और दारु हरिद्रा और मुस्ता और धनिया और खसकचा वीरणगुल्मकीजटा और मालकंगुणी और वच और छड गुड्डी इन्हीं औषधियोंको जलमें मिलायकर स्नान करणेसे संपूर्णसूर्यादिग्रह श्रेष्ठ सुखको देतेहैं ११ अब सूर्यादिग्रहोंका पूजन दीपिका ग्रंथसे कहतेहैं सूर्य और मंगल दोनोका पूजन लाल पुष्पोंकके और रक्तचंदनके तिलक करके और ताम्र करके और सुवर्ण करके और लाल गौ और लाल वृषक के और सुगंधिवाले पुष्पोंसे और वक्ष्यमान नैवेद्य दक्षिणासे करे और चंद्रमाका पूजन श्वेत सवत्स

अथराहोः। रोध्रगर्भतिलपत्रकमुस्ताहस्तिदंतमृगनाभिपयोभिः स्नानमार्तिमपसेधतिराहोःसाजमूत्रमिदमेवचकेतोः १० अथसर्वग्रहपीडाहरस्नानम् सिद्धार्थरोध्ररजनीद्वयमुस्तधान्यलामज्जकंसफलनीसवचासमांसी स्नानंकुरु ग्रहगणप्रशमायनित्यंसर्वेरविप्रभृतयःसुसुखाभवंति ११ अथग्रहपूजा रक्तैः पुष्पगंधैस्ताम्रैःकनकरूपैःसुरभिकुसुमैर्दिवाकरभूमिसुतौभृत्तर्यौ पूज्याविंदुर्धेन्वासितकुसुममुरभिमधुरैःसितश्चमदप्रदैः कृष्णद्रव्यैःसौरिःसौम्योमणिरजतवकुलकुसुमैर्गुरुःपरिपीतकैःप्रीतः पीडानस्यादुच्चाद्दिनिपततियदिवादशनिभुजगविजृंभितम् १२

गौ और श्वेत वस्त्र और श्वेत पुष्प और सुगंधिद्रव्य मुस्ककर्पूरादि और मधुर द्रव्य दुग्ध शर्करादि और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षिणासे करे और शुक्रका पूजन मदवृद्धिके करनेवालियों वस्तुओंसे और वक्ष्यमान नैवेद्य दक्षिणासे करे और शनिका पूजन कृष्णद्रव्यसे लोहा तिल तैल माषादि कृष्ण वस्त्रादि और वक्ष्यमाननैवेद्य दक्षणासे करे और बुधका पूजन हरिन्मणि और रूप्य और हरितवस्त्रादि और नकुलके पुष्पोंसे और वक्ष्यमान नैवेद्य दक्षणा करके करे और बृहस्पतीका पूजन पीतद्रव्यसें पुष्परागादि मणियोंसे और पीतवस्त्र पीतधान्यादि और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षणासे करे तब फल होताहै इसप्रकार ग्रहोंके पूजन करणेसे ग्रह प्रसन्न होतेहैं तब ऊंचे स्थानसें गिरे वा कोई मारे देय तो तबभी मृत्युकी नहिभय होवाहे और मधकारमें भुजग विजृंभित छंदकहा है १२

अब सूर्यादि ग्रहोंका नैवेद्य कहतेहैं सूर्यको गुडोदन और चंद्रमाको घृतपायस और मंगलको हवि घृत मधु युक्तान्न और बुधको दुग्ध भक्त और बृहस्पतिको दधि भक्त और शुक्रको घृतभक्त और शनिको तिलोंका भुग्गा और राहुको बकरेका मांस और केतुको चित्रान्न इह सूर्यादि ग्रहोंके नैवेद्य कहेहै ॥ १३ ॥ अब चित्रोदनका लक्षण कहतेहैं बकरीके दुग्धमें यव तिल चावल भिगोयदेवे और बकरीके कानकी रक्तसें रंगे तब चित्रान्न होताहै १४ अब सूर्यादि ग्रहोंकियां समिधा कहतेहे अर्क १ पलाश २ खैर ३ पुटकंडा ४ और पिप्पल ५ गूलर ६ जंड ७ दूर्वा कुशा ८ इह क्रमसें सूर्यादि नवग्रहोंकियां समिधाहे १५ अब ग्रहोंके होमका प्रमाण कहतेहे एक एक ग्रहके निमित्त घृत मधु करके युक्त अठाई ॥ २८ ॥ अथवा अष्टोत्तरशत ॥ १०८ ॥ अथवा अष्टोत्तरसहस्र ॥ १००८ होमकरे

अथनैवेद्यविधिः ॥ गुडभक्तसघृतपायसहविष्पिक्षीरदधिघृतान्नानि तिलपिष्ट माजमांसंचित्रोदनमर्कतोदद्यात् ॥ १३ ॥ अथचित्रोदनलक्षणं अजाक्षीरेणसंस्विन्नायवाश्चतिलतंडुलाः अजाकर्णस्यरक्तेनरक्ताश्चित्रान्नसंज्ञिताः ।१४ अथग्रहाणांसमिधः ॥ अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोथपिप्पलः औदुंबरश मीदूर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमात् । १५ अथग्रहाणांहोमप्रमाणम् एकैकस्याष्टश तकमष्टाविंशतिरेववा होतव्यामधुसर्पिर्भ्यांसहस्रंचाष्टसंयुतम् १६ अथग्रहाणांदक्षिणानिर्णयः धेनुः शंखस्तथानड्वान्हेमवासोहयस्तथा कृष्णागौरायसंछागमेतावैदक्षिणाः क्रमात् ॥ १७ ॥ अथग्रहतुष्ट्यर्थंरत्नादिधारणं धार्यंतुष्टै विद्रुमंभौमभान्वोरूप्यंशुक्रेंदोश्चहेमेंदुजस्य मुक्तासूरेर्लोहमर्कात्मजस्यराजावर्तःकीर्तितःशेषयोश्च ।१८।

॥ १६ ॥ अब सूर्यादि ग्रहोंकियां दक्षिणा कहतेहै सूर्यको तात्काल प्रसूतागौ और चंद्रमाको शंख और मंगलको लालवृषभ और बुधको सुवर्ण और बृहस्पतिको पीतवस्त्र और शुक्रको श्वेत घोडा और शनिको कृष्णागौ और राहुको लोहा और केतुको बकरा इह दक्षिणा देवे १७ अब ग्रहोंकी प्रसन्नताके वास्ते रत्नादि धारण कहतेहैं सूर्य और मंगलकी प्रसन्नताके वास्ते मुंगे धारण करे और चंद्रमा और शुक्रकी प्रसन्नताके वास्ते रौप्य चांदी धारण करे और बुधकी प्रसन्नताके वास्ते सुवर्ण धारण करे और बृहस्पतिकी प्रसन्नताके वास्ते मोती धारण करे और शनिकी प्रसन्नताके वास्ते लोहा धारण करे और राहुकेतुकी प्रसन्नताकेवास्ते लाजावर्तको धारण करे ॥ १८ ॥

रत्नादियोंकेअलाभमेंऔषधियोंकेमूलधारणदीपि कामेंकहेहै जिसकोसूर्यनिषिद्धफलकरणेवाला
मकालमेंवा गोचरमेंवा दशांतर्दशामेंहोवे सोमनुष्यबिल्ववृक्षकामूलधारणकरे और चंद्रमानिषिद्ध
तिव क्षिरिणी बूटिका मूल धारणकरे और मंगल निषिद्धहोवे तवनागजिन्हा बूटिका मूलधारणकरे
र बुध निषिद्ध स्थानमें होवे तव विधारा प्रसिद्धहै सोधारण करे और बृहस्पति नि-
स्थानमें होवे तव भडिंगी प्रसिद्धहै तिसका मूल धारण करे और शुक्र निषिद्ध होवे तव शालप
बूटीका मूल और कितनेयोंके मतमें श्वेत गुंजा मूल रत्तिकाका मूल धारण करे और शनि निषिद्ध
तव वांछोला बूटी धारणकरे और राहु निषिद्ध होवे तव श्वेत चंदनका मूल धारणकरे और केतु
षेद्ध होवे तव असगंध प्रसिद्धहै सो धारणकरे ॥ १९ ॥ अब सूर्यादिग्रहोंके
कहतेहैं ॥ यो यो ग्रह गोचरादिमें और निश्चयकर्के दशांतर्दशामें अशुभ होवें सो जिस
ारके दानादियोंसें प्रसन्नहोतेहैं सो दानकाविधान कहताहूं २० अब सूर्यका

अथौषधिमूलपरिधानम् मूलधार्यत्रिशूल्यः सवितरिविगुणेक्षीरिकामूलमिंदौ जिन्हाहेभूमिपुत्रेरजनिकरसुतेवृद्धदारोश्चमूलम् ॥ भार्ग्यांजीवेथशुक्रेभवति शुभकरंसिंहपुछस्यमूलंवाछोलंचार्कपुत्रेतमसिमलयजंकेतुदोषश्वगंधम् ॥ १९
अथग्रहदानानि येचांवरस्थाःखलुगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैरशुभाभवंति दानादिनातेचयथाप्रसन्नाभवंतिदानादिविधिंप्रवच्मि २० अथरवेः ॥ कौशेयंत्वथहेमताम्रकलशंचौर्णांवरंकुंकुमंमाणिक्यंचगुडप्रवालकमलंमध्वैलयावैक्षितिं ॥ प्रावारासनरक्तचंदनघृतंगोधूमनानाफलंसूर्यायव्यजनंचरक्तवसनंधेनुंसवत्सांगृहम् २१ अथचंद्रस्य ॥ शंखस्फाटिकमौक्तिकंगजमदंवज्रंतथातंडुलान् दुग्धंदुग्धविकारपट्टवसनंक्षौद्राज्यरौप्यंफलम् ॥ कर्पूरंसितवस्त्रपांडुवृषभंकस्तूरिकाचंदनंप्रावारंलवणेक्षुगांचतुरगंचंद्रायदद्यात्सुधीः २२ ॥

न कहतेहैं ॥ पट्टवस्त्रऔर सुवर्ण और ताम्रकेकलश और ऊर्णा वस्त्र और केसर और माणिक
णीचूनीऔर गुडऔरमुंगे औरकमलपुष्प और मखीर औरछोटीपांडलाचियांऔरपृथ्वीऔरप्रधा
वस्त्र उपरिपरिधानवस्त्र और आसन और रक्तचंदनऔर घृत और गोधूमात्र कनक और अ
कफल और पखाऔर लालवस्त्रऔर सवत्सागौ और घरवनायकर्केनूतन सूर्यकेनिमित्तदानकरे २१
प्रवचंद्रमाका दान कहतेहैं ॥ शंख और स्फटिकमणी और मोती और हाथीकाम
और हीरामणी और चिट्टेचाउल और दुग्ध और वरफी पेडे श्वेत पट्टवस्त्र और मखीर और
त और रौप्य और फल और कपूर और श्वेतवस्त्र और श्वेतबैल और कस्तूरीऔर श्वेतचंदन
और उपरका प्रधानवस्त्र और लवण और गन्ने और श्वेतगौ और श्वेतघोडा यह दान श्रेष्ठ
॥दिवालाचंद्रमाके निमित्त करे २२

॥ अथमंगलका दन कहतेहै ॥ ताम्र और चोरी ओर शस्त्र और पृथ्वी ओर गुड ओर लालवर्णके पट्टवस्त्र और तिका अहुर और मजीठरंगकेलालकपडे और रक्तपुष्प ओर कनक और केसर और ऊपरका प्रवानवस्त्र और मसूरान्न और कस्तूरी और स्वर्ण औरफल ओर मुंगे और आसन और लालवर्णकीगो और रक्तचंदन इहे दानमंगलको प्रसन्नताके वास्ते कहाहै २३ अब बुधका दान कहतेहे दासी और दास और जिमी और अनेकफल और घोडा और सवजमणी पन्ना और गो और घृत और मुगी अन्न और चाउल और चौरी और शस्त्र और हाथी और कास्य और घर और सुवर्ण और कपूर और श्वेतचदन और मरकत मणी और हाथीकादत ओर आसन और सवजरंगके वस्त्र और छैरसकाभोजन बुधके निमित्तदा न करे २४ अब बृहस्पतिका दान कहतेहै ॥ हाथी और हाथीका मद और बगुला और सुवर्ण

अथभौमस्य ताम्रचामरमायुधेक्षितिगुडकौशेयरक्तांबरतिक्तारक्तपटीचरक्तकुसुमं गोधूमककुंकुमं प्रावारचमसूरकांमृगमदस्वर्णफलविद्रुमवक्रायप्रवदतिचासनम थेगांरक्तकचदनम् २३ अथबुधस्य दासीदासमहीफलानितुरगगारुत्मकंगाघृ तं मुद्गातडुलचामरायुधगजकांस्यगृहहाटकम् ॥ कर्पूरहरिचंदनमरकत वैनागदंतासन दूर्वाभांबरषड्रसमृगमदहेम्नायदेयसदा ॥ २४ ॥ अथगु रो ॥ नागोनागमदनृयानकनककौशेयपीतांबरछत्रचामरपुष्परागतुरगक्षो णीगृहशर्करा ॥ पीतान्नंरजनीचमौक्तिकफलरौप्यचकस्तूरिकाक्षौद्रंगोयुग लोर्णवस्त्रलवणसदीयतेवैगुरो ॥ २५ ॥ अथभृगो वज्रगोक्षितितंडुलां श्वरजतशुभ्रांबरमौक्तिक कस्तूरीहरिचंदनासितहय प्रावारचीर्णांबरम् ॥ कौशेयात्मकगंधपुष्पकमथोगत्रीरथंकंबल शालिग्रामशिलाज्यगांसुराचे तांशुक्रायदद्यात्सदा २६

और पीतवर्णके पट्टवस्त्र और छत्री और चौरी और पुष्परागमणी और घोडा और जिमी और घर खंड औरपीले अन्न चणकादि और हलदी और मोती और रौप्य और कस्तूरी और मखीर और दोगउआऔर ऊर्णवस्त्र और लवण इहे बृहस्पतिके निमित्त दान कहाहै ॥ २५
अब शुक्रका दान कहतेहैं ॥ हीरा और श्वेतगो और जिमी और चिट्टेचावल और रौप्य औरश्वेत वस्त्र और मोती और कस्तूरी और श्वेतचंदनऔर श्वेतघोडा और ऊपरकाप्रवानवस्त्र औरऊर्णवस्त्र और पट्टवस्त्र अरु रसवस्तु और सुगंधद्रव्य और पुष्पऔरश्वेत बैलोंकीगाडी अथवा रथ और श्वे तंगका दुसाला और शालिग्रामकी शिला और घृतऔर अप्सरामयी कर्के शुक्रगी शुक्रके निमित्त दानकरे २६

॥ अथ शनिका दान कहतेहैं ॥ माहा अन्न और निरमलनीलमणी और माहिषी और दा और वांजसेलेके पक्षी और तिल और तेल और लोहा और जिमी और सिक्का और उट और दास और कुलथ अन्न और गज और म्वा अन्न और पैरोंकाजोडा और कस्तूरी और काली गौ और तुलापुरुषादिषोड महादान और कालेरंगका श्रेष्ट दुसाला शनिके निमित्त दान करे २७ अब राहुका दान कहतेहैं गोमेदमणि और तिल और कांस्यपात्र और महिषी और तेल कालादुसाला और लाजावर्तमणी और हाथी और ऊ और दास और कालेमरिच और नीलेपट्टवस्त्र और दासी और हिंगु और फलसतधान्य और धनुष और वाण और शय्या और आसन और गौ और जिमी और पैरोंका जोडा इहे दानराहुकी प्रस नताके वास्तेदेवे २८ अब केतुका दान कहतेहैं ॥ लूण और नीलवर्णके पट्टवस्त्र और वैडूर्य मणी और तिल और नीले रंगका दुसाला और ऊर्णवस्त्र और श्रेष्ट सुगंधद्रव्यवाला तेल और

अथशनेः माषान्नंविमलेंद्रनीलमहिषीदास्यःपतत्रिस्तिला तैललोहधरासुसी स्सकरभादासःकुलत्थास्त्रिपुः ॥ स्यामाकान्नमुपानहौमृगमदंगांकृष्णवर्णांतथा मदापप्रवदतिपोडशमहादाननिसत्कंवलम् २७ अथराहोः ॥ गोमेदंतिलकां स्यपात्रमहिषीतैलंतथाकंबलंलाजावर्तगजोष्ट्रदासमरिचाःकौशेयनीलांबर ॥ दासीहिंगुफलोस्त्रकार्मुकशराःशय्यासनगोमही ॥ दानंद्व्यमुपानहौसतुरगंदैत्ये शतुष्ट्यैसदा २८ अथकेतो॥ केतोर्दानमुदीरितहिलवणंकौशेयनीलांबर वै डूर्यंतिलकंवदौर्णवसनसद्गंधतैलासनकस्तूरीहरिचंदनंदशविधांगांददातितिकं हयंखड्गाद्यायुधमम्लकंचमहिषींदासींचदासंफलम् २९ अथश्वाविभवानुरूपं दानमुक्तंकेश्चित् ॥ कौसुंभवस्त्रंगुडहेमताम्रंमाणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मंसवत्सगो दानमितिप्रणीतंदुष्टायसूर्यायमसूरिकाश्च ३० सूर्यायेदम् घृतकलशंसितवस्त्रंद धिशंखंचैवमौक्तिकसुवर्णरजतंचसंप्रदद्याच्चद्रारिष्टोपशमनाय ३१ चंद्रायेदम् ॥

आसन और कस्तूरी और श्वेतचंदन और दशप्रकारका गोदान और हाथी और तिक्तरस और घो डा और खड्गसे लेकर्के शस्त्र और अम्लरस और महिषी और दासी और दास और फलइन दान केतुकी प्रसन्नताके निमित्त कहाहै २९ अब सामान्य सपूर्णलोकोके वास्ते सूर्यादि ग्रहोंके दान कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यका दान कहतेहैं ॥ कसुंभके रंगवाले लाल वस्त्र और गुड और सुवर्ण और ताम्र और चूनीमणि और गोधूमान्न कनक और सुवर्णका कमल और सवत्सागौ और मसरोंकी दाल इहे दान दुष्टस्थानमें स्थित सूर्यका कहाहै ३ अब चंद्रमाका दान कहतेहैं ॥ घृतका कलश और श्वेतवस्त्र और दहि और शंख और मोती और सुवर्ण और रौप्य इह दान चंद्रमाके रिष्ट दूरकरनेके वास्ते कहाहै ३१

अब भौमका दान कहतेहैं मुंगे और गोधूमान्न कनक और मसुरकी दाल और लाल बैल और कवीरके लाल पुष्प और मंजीठी रंगके लालवस्त्र और गुड और सुवर्ण और ताम्र और रक्तचंदन इह दान दुष्टस्थानमें स्थित भौमके निमित्त देवे ॥ ३२ ॥ अब बुधका दान कहतेहैं सब्जवस्त्र और मुंगी अन्न और पन्नामणी और दासी और सुवर्ण और घृत और कांस्य और गजदंत और हाथी अथवा भिड्डू और रौप्य और मालतीसल्लककअष्टपुष्पइहदान बुधके निमित्तदेवे ३३ अब बृहस्पतिका दान कहतेहैं कुल्लरंगका घोडा और सुवर्ण और श्रेष्ठ पीतवर्णके वस्त्र और पीतवर्णके अन्न चणकादि और लूण और श्रेष्ठ पुष्प और खंडऔरहारिद्राइह दुष्टस्थानमें स्थितबृहस्पतिकेनिमित्तदेवे ३४ ॥ अब शुक्रका दान कहतेहैं चित्रवर्णका श्वेतवस्त्र और चिट्टे चाविले और घृत और सुवर्ण

प्रवालगोधूममसूरिकाश्चवृषश्चताम्रःकरवीरपुष्पंआरक्तवस्त्रंगुडहेमताम्रंदुष्टायभौमायकुचंदनोहि ३२ भौमायेदम् नीलवस्त्रंमुद्गदानंबुधायरत्नपात्रंदासिकाहेमसर्पिः कांस्यंदंतः कुंजरश्चाथमेषोरौप्यसर्वपुष्पजात्यादिकंच ३३ ॥ बुधायेदम् अश्वः सुवर्णंशुभंपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसुपुष्पं सशर्करंतद्रजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रदेयम् ॥ ३४ ॥ जीवायेदम् चित्रवस्त्रमपिदानवार्चितदुष्टगेमुनिवरैःपरिगीतम् तंडुलंघृतसुवर्णरूप्यकंवज्रकंपरिमलोधवलाश्वः ३५ शुक्रायेदम् नीलकंमाहिषकृष्णवस्त्रंलोहंसदक्षिणम् द्याज्ञदक्षिणायुक्तंशनिदौष्ट्यप्रशांतये ३६ शनैश्चरायेदम् ॥ राहोदानंबुधैर्मपोगोमेदंलोहकंबलौ सुवर्णनागरूप्यंचसतिलंताम्रभाजनम् ३७ राहवइदम् केतोर्वैदूर्यममलंतैलंमृगमदस्तथाऊर्णातिलैश्चसंयुक्तादेयाक्लेशापनुत्तये ३८ ॥

और रौप्य और हीरामणी और श्वेतवर्णका घोडा इह दान दुष्टस्थानमें स्थित शुक्रके निमित्तश्रेष्ठमुनियोंने कहाहै ३५ अब शनिका दान कहतेहैं नीलमणी और महिषी और कालेवस्त्र और लोहा और कालीगी और दक्षिणा करके युक्त इह दान शनिका दोष दूरकरणे वास्ते देवे ३६ अब राहुका दान कहतेहैं भिड्डू और गोमेदमणी और लोहा और कंबल और सुवर्ण कानाग और रौप्य और तिलोंकरके युक्त ताम्रपात्र इह दान बुद्धिमानोंने राहुके निमित्त कहाहै ३७ अब केतुका दान कहतेहैं वैडूर्यमणी निर्मल और तेल और कस्तूरी और ऊर्णवस्त्र तिलोंकरके युक्त इह दान क्लेश दूरकरणेवास्ते केतुके निमित्त देवे ३८

ब पूर्वोक्त संपूर्ण ग्रहोंका दोषदूरकरणे वालाफलकासमूह कहतेहैं. देवता और ब्राह्मणोंको नमस्कार करणेसें और गुरोंका वचनमाननेसें और नित्यप्रति साधुयोंसें संभाषण करणेसें और वेदध्वनिऔर श्रेष्ठ कथाके श्रवण करणेसें और ग्रहोंकोप्रसन्नताकेनिमित्त होमकरणेसे और यज्ञोंके देखनेसें, और मनकी शुद्धभावनासें और इष्टदेवताकाजपकरणेसेंऔरदानकरणेसें मनुष्योंकोंकदाचित् ग्रहपीडानहिं करतेहैं ३९ अब पापग्रहोंकरकेंविद्धजन्मनक्षत्रादियोंकाप्रतिकारकहतेहैं. जिसकाजन्मनक्षत्रपापग्रहकरकें पूर्व कहे, जो वेधकाप्रकार तिसमेंविद्धहोवे तिसकोरोग और धनकानाश और लडाईरहितीहै. और कर्मन क्षत्र १० वां वेध होवे तब कर्म सिद्ध नहिं होतेहैं और सांघातिक १६ नक्षत्र विद्ध होनेसे आपसमें विरोध होताहै और सामुदाय १८ नक्षत्र विद्ध होवे, तब धनके संग्रहका नाशहोताहै और विनाश २३ वें

केनचइदम् देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहंसाधुनामभिभाषणाच्छ्रुतिरवाच्छ्रेयः कथाकर्णनात् होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतोनोकुर्वंतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहाः पीडनम् ॥ ३९ ॥ अथजन्मर्क्षादिपापग्रहविद्धप्रतीकारः ॥ रोगाभ्यागमवित्तनाशकलहाःसंपीडितेजन्मभेसिद्धिकर्मनयातिकर्माणिहतेभेदस्तु सांघातिके द्रव्यस्योपचितस्यसामुदयभेसंपीडितेसंक्षयोवैनाशेप्रभवंतिकायाविपदाश्चित्तासुखंमानसे ४० अत्रचपीडायांशांतिमाहदेवलः सर्वपापीडायांदिनमेकमुपोषितोनलेंजुहुयात् सावित्र्याःक्षीरतरोःसमिद्भिरमरद्विजानुरतः ४१ गोक्षीरेर्गोमूत्रैःपत्रैर्मूलैश्चपूर्णकोशायाःस्नानंजन्मानेजुष्टंस्वाचारवतांहरतिपापम् ४२ कर्मणिमधुघृतहोमोदशाहमक्षारमांसाशः दूर्वाप्रियंगुसर्षपशतावरीदलयुतंस्नानम् ४३

क्षत्र विद्ध होनेसें देहपीडा होतीहै और मानस २५ नक्षत्र विद्ध होनेसें मनोविकार होताहै ४० अब इनकी शांति देवल कहताहै ॥ छे नक्षत्रमेंसें किसीकोपीडा होवे तबएकदिन निराहार व्रत करेऔर पिप्पलादि क्षीरवृक्षोंकियो समिधा करकें और गायत्री मंत्रसें अग्निमें होम करे और देवता और ब्राह्मणोंकापूजनकरे ४१ और गोकादुग्ध और गोमूत्रऔर पूर्णकोशाजडीके पत्र और मूलकरकें, जो स्नानविधि कहिहै तिस स्नानकरे और आचारमें रहनेसें रिष्ट दूर होताहै ४२ और कर्म नक्षत्र पीडित होवे तब मधुर और घृत करकें होमकरे और दश दिन पर्यंत लूण और मांसका त्याग करे और दूर्वा और मालकांगुणी और मेथी सरेहों और शतावरी करकें युक्त स्नानकरे ४३

श्रार साघातिक १६ नक्षत्र पीडित होवे तवमास श्रौर क्रोध श्रोर मैथुनकात्याग करे श्राग्नमे स्वंचलका होमकरे श्रौर यथाशक्तिकर्के दानदेवे ४४ श्रौर सामुदाय १८ नक्षत्रपीडितहोवे तव सुवर्ण श्रार रौप्य दान करे श्रौर वैनाशिक २३ नक्षत्र पीडित होवे तव श्रन्नदानकरे श्रौरश्रेष्ट जिमीका दान करे ४५ श्रौर मानस २५ नक्षत्रपीडित होवे तव कमलके पुष्पोंककहोम करे श्रौर पायस कर्के ब्राह्मणोका पूजन करे श्रौर कस्तूरीश्रौर सरीहवृक्षके पत्र मूल श्रौर श्वेत चंदन श्रौरघम्मणी श्रौर गगेडी कर्केयुक्त स्नान करे ४६ श्रवनाडीनक्षत्रोंके नाम कहतेहैं जिसनक्षत्रमेंजन्म होवे तिसकी श्राद्य प्रथम सज्ञाहै श्रौर जन्मनक्षत्रसें दशम १० नक्षत्रकी कर्म सज्ञाहै श्रौर षोडश १६ नक्षत्रकी सांघातिकसंज्ञा श्रौर श्रष्टादशनक्षत्रकी १८ समुदाय सज्ञा श्रौर

सांघातिकेतुततेर्मासमथुक्रोधर्य्यमन्मथांस्त्यक्त्वाश्रग्नौदूर्वांजुहुयाद्दानदद्याद्यथाशक्ति ४४सामुदयकेतुदद्यात्कांचनरजतान्युपद्रुतेधिष्ण्य वैनाशिकेन्नदानवसुधांचगुणान्वितांदद्यात्४५मानसतापेहोमःसरोरुहेःपायसैर्द्विजा पूज्या मृगमदशिरीषचंदनबलातिवलसयुतस्नानम् ४६ श्रथनाडीनक्षत्रनामानि जन्माद्यकर्मततोदशमभसांघातिकचषोडशभमसमुदायमष्टादशभविनाशसज्ञंत्रयोविंशम् ४७ श्राद्यात्तुपचविंसमानसभंनर षड्क्षःस्यात् नवनक्षत्रोनृपति स्वजातिदेशाभिषेकर्क्षे ४८ श्रथनाडीनक्षत्रशुभाशुभकथनं नामानुरूपमेषांसदसत्फलमिष्टपापगुणदोषात् प्रकृतिस्थमाद्यमिष्टंवैकृत्योल्कादिपीडितंपापम् ४९ श्रथनिरुपद्रुतसोपद्रुतनाडीनक्षत्रफ०निरुपद्रुतभोनिरामय सुखभुङ्नष्टरिपुर्धनान्वित

३० [illegible]

त्रयोविंशति २३ नक्षत्रकीविनाशसंज्ञाहै ४७ श्रौर जन्मनक्षत्रसें पचविंशति २५ सत्यावालेनक्षत्रकी मानससज्ञाहै इसप्रकारकर्केमनुष्यके छै नक्षत्रोंवालाकहाहै श्रौर राजाके नव ९ नक्षत्रहोतेहै एक जाति श्रौर एक देशका श्रौर एकश्रभिषेकका इह तीननक्षत्र सामान्यलोकोंस राजाकेश्रधिकहोतेहै४८ श्रव नाडीनक्षत्रोंका शुभाशुभ फल कहतेहै ॥ जैसे जैसे इन्हों नक्षत्रोंके नामहै तैसा तैसा शुभग्रह के योगसें शुभफल श्रौर पाप ग्रह के योगसें श्रशुभ फल होताहै श्रौर नक्षत्र विकारको नहि प्राप्त होवें तव इष्टफल शुभ होताहै श्रौर इन्हों नक्षत्रोंमे उल्कापातादि उत्पात होवें तव श्रशुभ होताहै ४९ श्रव निरुपद्रुतश्रौरसोपद्रुतनक्षत्रोंका फल कहतेहै जवपूर्वोक्त नक्षत्रउपद्रवसेंरहित होवें तव रोगोंसें रहित सुखकर्के युक्त श्रौर शत्रुनाश को प्राप्त होताहै श्रौर धनको प्राप्त होताहै

और छै नक्षत्रउपद्रुत होवे और राजाके नव नक्षत्रउल्कापात भूकंपादि पापग्रह योगादियों करके उपद्रुत होवें तब नाशको प्राप्त होताहै ४९ अब नाडी नक्षत्रोंमें सूर्यचंद्रमाकेग्रहणका फलकहतेहैं ॥ जिस मनुष्यकेजन्मनक्षत्रादि नक्षत्रोंमें सूर्य चंद्रमाका ग्रहण होवे तिसकोंछै मासके भीतर दोष पूर्वोक्त क्रमसे होताहै ५१ अब ग्रहणगत नाडीनक्षत्र दोषहरणे वाला स्नान कहतेहैं ॥ सौंफ शाक और मालकंगनी और फल और श्वेतचंदन और खस जलमें मिलायकरके स्नानकरे और यथा शक्ति दानकरे ५२ अब नाडीनक्षत्रमें पापी ग्रहकी संक्रांतिका फल और तिसका प्रतिकार कहते हैं ॥ जिस मनुष्यके नाडी नक्षत्र दिनमेंसूर्य और मंगल और शनि राशिको बदलें तब तिसको

षडुपद्रुतभोविनश्यतित्रिभिरन्यैश्चसहावनीश्वरः ५० अथग्रहणगतनाडीनक्षत्रफलं ग्रहणरविचंद्रमसोर्नाडीनक्षत्रवासरेयस्य अब्दार्धांतरतस्तस्यदोषो नाडीसमस्तस्य ५१ अथग्रहणगतनाडीदोषशांतिस्नानं ग्रहणग्रहपरिपीडितनाडीनक्षत्रदोषशमनाय सहशतपुष्पैःस्नायात्फलिनीफलचंदनोशीरैः ॥ ५२ अथनाडीनक्षत्रेपापग्रहसंक्रमणफलंतत्प्रतीकारश्च नाडीनक्षत्रदिवसेरविभौमशनैश्चराः संक्रांतयस्यकुर्वीततस्यक्लेशोभिजायते ५३ गोमूत्रसर्षपैः स्नानंसर्वौषधिजलेनच ॥ विशुद्धकांचनंदद्यान्नाडीदोषोपशांतये ॥ ५४ ॥ अथ जन्मनक्षत्रेरविसंक्रमणफलंतत्प्रतीकारश्च यस्यजन्मर्क्षमासाद्यरवेःसंक्रमणंभवेत् षण्मासाभ्यंतरेतस्यरोगक्लेशधनक्षयाः ५५ तगरसरोरुहपत्रैःरजनीसिद्धार्थलोध्रसंयुक्तैः स्नानंजन्मनिऋक्षेरविसंक्रांतौनृणांशुभदम् ५६

क्लेश होताहै ५३ और तिस दोषके दूरकरणे वास्ते गोमूत्र और सेती सरेहां और सर्वौषधि करके युक्त जलसे स्नान करे और शुद्धसुवर्णका दान करे नाडी दोषकी शांतिके निमित्त ५४ अब जन्मनक्षत्रमें सूर्यसंक्रमणकाफल और तिसकाप्रतीकारकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मनक्षत्रमेंसूर्यसंक्रांति करताहै तिसको छै मासके भीतर रोग क्लेश और धनका क्षय होताहै ५५ और तिस दोषके दूरकरणे वास्ते तगरऔर कमल और हरिद्रा और सेतीसरेहां और लोधकरके युक्त जलमें मिलायकरके

अब दीपिकामें जन्मतिथिका निर्णय कहतेहैं जन्मतिथि वृद्धहोयकर्के दो दिनमें जब होवे तब जिसदिनमें जन्मनक्षत्रका योग होवे तिसमें पूजन करे और दोनों दिनमें जन्मनक्षत्रका योग नहिहोवे तब उभयगामिनी जिसदिनमें साढ ॥ ६० ॥ घडि होवे तिसमें पूजन करे ५६ अब जन्मनक्षत्र युक्त जन्म तिथिका फल कहतेहे जिस मनुष्यके जन्ममासमें जन्मनक्षत्र कर्के युक्त जन्मतिथि होवे तिसको निश्चयकर्के तिस वर्षमें नीरोगता और सन्मान और सुख रहिताहे। ५७। अब शनि मंगल वारमे जन्मतिथिका फल कहतेहे शनि और मंगलके वारमें जिसकी जन्मतिथि होवे और जन्म-नक्षत्र और जन्मके योगसें संबंध नहि होवे तब तिसवर्षमें एक एक पैरमें विघ्न होताहै अर्थात् तिस वर्षमें बहुत विघ्नोंकर्के पीडित होताहे ५८ और कहतेहे जिसके जन्मनक्षत्रके दिन मंगल शनि-वार होवें तिस मासको कल्मष नाम कहाहै सोमास मनको दुःख देने वाला होताहै ५९ ॥

अथजन्मतिथिनिर्णयोदीपिकायां दिनद्वयेजन्मतिथिर्यदिस्यात्पूज्यातदाजन्मभसंयुताया दिनद्वयंभेयदिनास्तिपूज्यायदातदाचोभयगामिनीस्यात् ५६ अथस्वनक्षत्रेजन्मदिनफलं । जन्मर्क्षयुक्तायदिजन्ममासेयस्यध्रुवंजन्मदिनभवेच्च.भवतितद्वत्सरेमेवयावन्नैरुज्यसंमानसुखानितस्य ५७ अथशनिकुजवारेजन्मातिथिफलं कुनांतकुजयोर्वारेयस्यजन्मतिथिर्भवेत् जन्नक्षयोगसंप्राप्तौविघ्नस्तस्यपदेपदे ५८ अथशनिकुजवारेजन्मर्क्षदोपः जन्मऋक्षेयदिस्यातांवारौभौमशनैश्चरौ समाप्तः कल्मपोनाममनोदुःखप्रदायकः ५९ अथजन्मनक्षत्रमासवारफलंतत्प्रतीकारश्च अध्वाभोजनमालस्यंविद्यावस्त्रवरांगनाशरीरेव्याधिपीडाचस्वऋक्षेमासवारजम् ६० तस्यसर्वौपधिस्नानंग्रहविप्रसुरार्चनं सौरारयोर्दिनेमुक्तादेयाऋक्षेतुकांचनं ६१ तत्रसर्वौपधिकथनम् मुरामांसीवचाकुष्ठंशैलेयरजनीद्वयं शठीचंपकमुस्ताचसर्वौपधिगणः स्मृतः ६२

अब जन्मनक्षत्रमासमें वारफल और तिसका प्रतिकार कहतेहैं सूर्यवारमें जन्मनक्षत्र होवे तिस मासमें मार्गमेंगमन होताहै और सोमवारमें भोजन श्रेष्ठ प्राप्तहोताहै और मंगलवारमें आलस्य होताहै और बुधवारमें विद्याकी प्राप्ति होतीहै और गुरुवारमें वस्त्रलाभ होताहै और शुक्रवारमें श्रेष्ठ स्त्रीकी प्राप्ति होतीहै और शनिवारमे देहपीडाहोतीहै ६० और तिसदोपके दूरकरणेवास्ते सर्वौषधिकर्के युक्त जलसे स्नान करे और ग्रह और देवता और ब्राह्मणोंका पूजनकरे और शनि और मंगलवारमें जन्म नक्षत्र होवे तब मोती और सुवर्ण दान करे ॥ ६१ और सर्वौषधि कहतेहे मोडयों १ छडगुड्डो २ वच ३ कुठ ४ शिलाजीत ५ हलदी ६ दारुहलदी ७ कचूर ८ चमाकडी ९ मुस्थर १० इह दश औषधि मिलायकर्के सर्वौषधि कहतेहैं ६२

अव गंडारिष्टका प्रतिकार कहतेहैं केसर और चंदन और कुठ और गोरोचन घृतकर्के युक्त चार कलशोंमे स्थित करे विद्वान् ६३ और सहस्राक्षमंत्रकर्के बालककों स्नान करावे दिनमें जन्म होवे तब पिताकर्के युक्त और रात्रिमे जन्म होवे तव माताकर्केयुक्त बालकको स्नान देवे ॥ ६४ ॥ और प्रातः सायंकाल दोनोंसंधियोंमे जन्मेतव माता और पिताके साथ बालकको स्नान देवे और घृतकर्के पूर्ण कांस्यपात्रका दान गंड दोषके दूर करणे वास्ते देवे ६५ और सवत्सागौ और सुवर्ण दान करे और ग्रहोंका पूजन करे ॥ और अभुक्तमूलादियोंमे विशेषकर्के बोधायनोक्त शांति करे और प्रथम पितावालकका मुख घृतपात्रमें देखे अथवा अष्टवर्षादि काल पर्यंत बालकका त्याग करे ॥ अव विधानमालादि ग्रंथोंसे सूर्यादि ग्रहोंका शांतिविधान कहतेहे ॥ प्रथमसूर्यका विधान कहतेहैं ॥ जिस मनुष्यकों जन्मकालमें निषिद्धस्थानमे वा दशांतर्दशामें निषिद्ध सूर्य होवे सो शुभसमय में शकुन शुभदेखके और शुभ तिथि वार नक्षत्र चंद्रबल देखके सूर्यका पूजनकरे ६६ प्रातःकाल में दंतधावन पूर्वकश्वेततिलोंकरके नद्यादियोंमे स्नान करके और नित्य कृत्यको करे ६७ औरसूर्य की प्रसन्नताकीइच्छावाला सूर्यका विधान करे गृहकेउत्तरभागमेंमंडपवनावे ६८ तिसके मध्यमें होमके निमित्त स्थंडिल बनावे बुद्धिमान् उक्तलक्षणोंकर्केयुक्त स्थंडिलवनावें और स्थंडिलके पूर्वस्थानमें सूर्यका पूजा पीठ बनावें ६९ और पूजापीठबनायकर्के रक्तचंदनके पटडेमें वा हीर लाल काष्ठ के पटडेमें षोडशार कमलको लिखे केसर और कस्तूरी करकें ७०

अथगंडरिष्टप्रतीकारः कुंकुमचंदनंकुष्ठंगोरोचनमथापिना ॥ घृतेनैवान्वितंकृत्वाचतुर्भिःकलशैर्बुधः ६३ सहस्राक्षेणमंत्रेणबालकंस्नापयेत्ततः पितृयुक्तंदिवाजातमातृयुक्तंतुरात्रिजम् ॥ ६४ ॥ स्नापयेत्पितृमातृभ्यांसंध्ययोरुभयोरपि कांस्यपात्रंघृतैःपूर्णंगडदोषोपशांतये ॥ ६५ ॥ दद्याद्धेनुसुवर्णंचग्रहांश्चैवप्रपूजयेत् अथसूर्यादिग्रहाणांशांतिविधानंतत्ररवेः साधारवोस्मुत्पन्नोंतिथौसाधौशुभेक्षणे नक्षत्रेवाशुभेचंद्रेविदध्याद्रविपूजनम् ॥ ६६ प्रातःकालेसमुत्थायदंतधावनपूर्वकम् स्नात्वाशुक्लतिलैर्नद्यांकृताह्निकविधिः पुमान् ६७ रविप्रसन्नतांमीप्सुर्विधानंतत्समारभेत् सदनस्योत्तरेभागेमंडपाभ्यंतरेतथा ६८ विदध्यात्स्थंडिलंधीमान्होमार्थंलक्षणान्वितं स्थंडिलात्पूर्वतोभागे पूजापीठंप्रकल्पयेत् ६९ रक्तचंदनपट्टेवापट्टेवालोहितेतथाषोडशारंलिखेत्पद्मंकुंकुमेनसुगंधिना ॥ ७० ॥

आकृष्णेनइसवेदके मंत्रकर्के सूर्यका आवाहनकरे तिसीमंत्रकर्केभलीप्रकार पूजन और यज्ञकर्मकोकरे ७१ औरआचार्यसें लेकर्के ब्राह्मणोंकोवडे मानपूर्वक बुलावे और तिन्हांश्रेष्ठब्राह्मणोंकर्केयुक्तस्वरित वाचन करे ७२ और तिसके उपरंत ग्रहयज्ञार्थ अग्निका कुंड बनायकर्के अर्कगुल्मकी समिधासें होमकों बुद्धिमान् करे दशहजार १०००० वा एकहजार १००० जैसें कर्ताकी रुचिहोवे तैसेंहि बुद्धिमान् करे ७३ और तिसके उपरंत पायस और घृतकर्केहोमकरे ॥ और पीछेसेतिलोंका और यव और धान्योंका एक एकहजार १००० भिन्न भिन्न होम करे ७४और छुहारे और नारिकेलकी गरी और कटहड फलके खंडोंकर्के होम करे और प्रायश्चित्त संज्ञिक द्वादश आहुतियां घृतकर्के

आकृष्णेनेतिमंत्रेणरवेरावाहनंभवेत् ॥ तेनैवपूजनंसम्यक्तेनैवयजनक्रियां ॥ ७१ ॥ आचार्यप्रमुखान्विप्रान्मानपूर्वंसमाव्हयेत् ॥ वाचयेत्स्वस्तिवा द्ांश्चसार्द्धंतैर्द्विजसत्तमैः ७२ ततोवन्हिमुखंकृत्वासमिद्भिर्जुहुयात्सुधीःअयुतंवा सहस्रंवाकर्त्तृकाभिरुचिर्यथा ७३ ततस्तुपायसेनापिसाज्येनापिसमाहितः ति लैःसव्रीहिकैःपश्चात्सहस्रंचपृथक्पृथक् ७४खर्जूरनालिकेरैश्चपनसैश्चविशे षतःप्रायश्चित्तघृतेनैवव्याहृतीस्तिलसर्पिषा ७५आदित्यप्रीतिकामश्चपनसैश्चवि शेषतः प्रायेणजुहुयादेवमभावेघृतपायसान् ७६ शांतिपाठंततोविप्राआचार्य प्रमुखाश्चये पठेयुःसर्वशाखीयायजमानाःकृतोत्सवाः ७७ भास्करंशुद्धसौ वर्णंकृत्वायत्नेनमानवःताम्रपात्रेस्थापयित्वारक्तपुष्पैःप्रपूजयेत् ७८ रक्तवस्त्रयुगछत्रछत्रोपानद्युगान्वितं घृतेनस्नापयित्वाचलड्डुकान्विनिवेद्यच ७९

देवे और महाव्याहृतियोंका होम तिलघृतमिलायकर्के करे ॥ ७५ ॥ और सूर्यकी प्रसन्नताकी इच्छावाले मनुष्यको कटहड फलके खंडोंकर्के विशेषसें होम करणाकहा है और नाहिप्राप्त होवे तव घृत पायसका होम करे ७६ और आचार्यसें लेकर्के संपूर्ण ब्राह्मण शांतिपाठकों करें और चतुर्वेदी ब्राह्मण अपनी शाखाकर्के पढें और उत्सवकर्के यजमान प्रवृत्तहोवे ७७ और शुद्धसुवर्णकी मूर्त्तिसूर्यकी बनावे और अलाभमें ताम्रकी बनावे और ताम्रपात्रमें स्थापन कर्के लालपुष्पोंकर्के पूजन करे ७८ और रक्तवर्णके दो वस्त्रोंकर्के आच्छादित करे और छत्री और पैरोंका जोडा स्थापन करे और पचामृतकर्केवा घृतकर्केस्नानकरावेऔरलड्डुयोंकानैवेद्य आगेधरे७९

श्रौर ग्रहोंके वलिप्रदान पूर्वक सूर्यका पूजन करे दूसरी वार गंधपुष्पादियोंकर्के पूजनकरे उपरांत दान विधिको करे ८० श्रोर इहकहा जा मन्त्र तिस कर्के ब्राह्मणकेतांई सकल्पकर देवे ॥ अब मन्त्रकाअर्थ कहतेहे ॥ हे आदिदेव सूर्य तेरे को नमस्कारहोवे ॥ हे सप्ताश्वरथवाहन हे दिवाकर ८१ हे रवे तुम हमारेको इस ससार समुद्रसें पारकरो श्रौर बडी घोरपीडा, जो तुह्मारीहै तिसकी शांति करो श्रौर सुखको देवो इस प्रकारविज्ञप्तिकरे ८२ श्रौर लालवर्णकी सवत्सागौ वहुत दूधदेने वाली दक्षिणा कर्के युक्त बुद्धिमान् आचार्यके तांईदेवे हेराजन् अयसें राजाके प्रति ऋषिका वाक्य है ८३ श्रौर सुवर्णकी जो सूर्यकीमूर्ति रथ श्रोर घोडयोंकर्के युक्त श्रोर सारथीकर्के युक्त श्रौर वस्त्र

बलिप्रदानपूर्वंतुप्रतिपूजांरवेःपुनःविदध्याद्गंधपुष्पाद्यैस्ततोदानविधिःस्मृतः ८० मन्त्रेणानेनविदुषेब्राह्मणायप्रदापयेत् ॥ मन्त्रः आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तसप्ते दिवाकर ॥ ८१ ॥ त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात् ॥ सूर्यपीडासुघो- रासुकृताशांतिःशुभप्रदा ८२ क्षीरिणींलोहितांधेनुंसवत्सांचपयस्विनी दद्या त्सदक्षिणांधीमानाचार्यायमहीपते ८३ सप्तसप्तेस्तनुंहैमींसरथाश्वांससारथीं आचार्यायततोदद्याद्वस्त्रालंकारभूषिताम्८४ब्रह्मणेकनकंदद्यात्ऋत्विग्भ्यश्चधना निच ततःप्रसन्नोभगवान्संतानंविपुलंसुखं८५ददातिविपुलान्भोगान्पूजितस्तुयथा विधि सौरैश्चस्तुतिपाठैश्चस्तोतव्योघर्मदीधितिः ८६ तुष्टेतस्मिन्रवौसम्यक्वि घ्नान्ग्यतिदेहिनाम् एवंकृत्वारवेःपूजाविधानविधिवित्तमैः ८७भोक्तव्याब्राह्मणा स्सम्यक्सहस्रंशतसंख्यया।प्रसन्नेनमहीपेनकिंस्यात्कार्यंशरीरिणां ८८ धर्मार्थ कामासिद्ध्यर्थंसमर्थैकःप्रसादितः इतिरविपूजाविधानं

श्रौर भूषणोंकर्के शोभायमान आचार्यके तांई देदेवे ८४ श्रौर ब्रह्माके तांई सुवर्ण दक्षिणा देवे ऋत्विजोके तांई धन दक्षिणा देवे इसप्रकार पूजन करणेसें भगवान् सूर्य संतान श्रौर वडेसुखोंको देताहै ८५ श्रौरअनेक भोगोंको यथाविधि कर्के पूजित किया हुआ देताहै श्रौर सूर्यके जो स्तोत्र पाठ तिन्होंकर्केसूर्यका स्तवनकरे ८६ तिससूर्य नारायणके प्रसन्नहुवे भली प्रकार विघ्न मनुष्योंके दूर होतेहे श्रोरइस प्रकारकर्के सूर्यकी पूजाका विधान विधिज्ञोने कहाहै ८७ श्रौरहजार वा सौ ब्राह्मणोंको भोजन करावे प्रसन्नहोया राजके प्रसन्नहोया कोन कार्यदेहधारियोंकाशेष रहताहै ८८ श्रौर धर्म अर्थ काम मोक्ष इह चारपदार्थ देनेमें एकसूर्यनारायणही समर्थहै इतिसूर्यपूजाविधानम्

अथ चंद्रमाके पूजनका विधान कहतेहैं ॥ मिथ्यादि शुभपक्षांगके प्राप्तहोयां चंद्रमाका पूजनअपने हितकी इच्छावाल्यांनें करणे योग्यहै भली प्रकारकर्के पुरुषने वा स्त्रीनें करणे योग्यहै ८९ प्रथम श्रेष्ट और साधु आचार्यको अपने घरमें बुलावे और ऋत्विग्ब्रह्मादिकर्के युक्त सपूर्णाका वरण करे चंद्रमाकी प्रसन्नताके निमित्त ९० और ब्रह्मादि श्रेष्ट ब्राह्मणोंके वरणकिये पीछे स्वस्तिवाचन पूर्वक चंद्रमाके पूजनका आरंभ करे ९१ और स्थंडिलबनायकर्के और पलाशवृक्षके पट्टे ऊपरचंद्रमाकापूजन श्वेतकमलोंकर्के चतुष्कोण मंडलमें करे ९२ और श्वेत चंदन और सुगंधिद्रव्य कर्पूरादियोंकर्के भली प्रकारसेंपूजनकरे और पश्चिममुख चंद्रमाके ताईं श्रेष्ट आसन देवे ९३ और इस प्रकारकर्के चंद्रमाका आवाहन करे अहो इत्यादि हेचंद्रजगत्के प्राणरूप और यमुनासें उत्पन्न और श्वेतवर्ण और अ-

अथचंद्रपूजाविधानम् पंचांगेशुभतांप्राप्तेकर्त्तव्यस्वहितेप्सुभिः पूजनंशशिनःसम्यक्नार्याचापिनरेणवा ८९ आचार्यप्रवरंसाधुंसमाहूयनिजालये ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैःसार्द्धंवृणुयाच्चद्रतुष्टये ९० वृतेविप्रवरैस्तस्मिन्ब्रह्माद्यैःसहितैर्वरैः स्वस्तिवाचनपूर्वंतुप्रारभेत्पूजनविधौ ९१ कृत्वास्थंडिलमात्रंतुपट्टेपालाशजेविधुं पूजयेच्छतपत्रैश्चचतुरस्रेचमंडले ९२ चंदनेनसुगंधेनकृतेसम्यक्विचक्षणैःप्रत्यङ्मुखायसोमायदद्यादासनकंबुधः ९३अहोचंद्रजगत्प्राणयमुनाविनयोद्भवश्वेतवर्णत्रिगोत्रंदोगदापाणेवरप्रद ९४दशाश्ववाहनागच्छउमारूपीसमाविश चंद्रमामनसोजातइत्यृचातंसमाह्वयेत्९५ श्रीःश्वेतेतिमंत्रेणविधौरावाहनंभवत् आप्यायस्वेतिमंत्रेणविधौरागमनंभवेत् ॥ ९६ आप्यायस्वेतिमंत्रस्यगौतमऋषि सोमोदेवतागायत्रीछंदःसोमप्रीतयेहोमेविनियोगः पालाशीःसमिधश्चात्रसहस्रसमुदाहृताः अभावेतुसहस्रस्यशतमष्टोत्तरंभवेत्९७ यथाशक्त्याततःकुर्याद्धवनंतिलसर्पिषा सहस्रंवाशतंवापिद्रव्याभावेविचक्षणः ९८ तिलैःसव्रीहिकैर्जुहुयात्व्याहृतीस्तुयथामति आज्येनमधुनासार्द्धंप्रायश्चित्तंयजेद्बुधः ॥ ९९

त्रिगोत्र और हेचंद्र हेगदाहाथमेंधारणवाले और वरकेदेने वाले ९४ और दशघोड्यांके वाहनवाले और पार्वतीके रूप इसमूर्तिमें आवो और चंद्रमामनसोजात इस वेदकी ऋचाकर्के आवाहन करे ९५ और श्रीश्वेतलक्ष्मीश्चेति इसमंत्रकर्के चंद्रमाका आवहन होताहै और आप्यायस्वेति इस वेदके मंत्रकर्के चंद्रमाका आवनहोताहै ९६ और इसीमंत्रका होम पलाशकी समिधाकर्के एक हजार १००० वा अष्टोत्तरशत १०८करणाकहाहै ९७ और यथाशक्तिकर्के तिल और घृतकर्के होमकरे वा द्रव्यके अभावमेंसउ ऊं १०० सत्याकर्के होमकरे बुद्धिमान् ९८ और धान्यां कर्के सहित व्याहृतियांकी होमकरे और घृतऔर मखीर कर्के प्रायश्चित्तकाहोम बुद्धिमान्करे ९९

तदनंतरस्विष्टकृत होम करे होमकी विधि इस क्रमकर्के कहिहे और शांतिपाठ संपूर्ण ब्राह्मणोंने पढने योग्यहे होमके उपरंत १०० और फेर चंद्रमाकी मूर्त्ति चांदीकी कांस्यपात्रमें स्थापन करे और श्वेतवर्णके दोवस्त्रोंकर्के आच्छादित करे और श्वेतपुष्पोंकर्के भलीप्रकारसें पूजितकरे १०१ और खडांमोंका जोडा और पैगेका जोटा और छत्री और आसन और दधिभक्त भोजन कर्के युक्त हे राजेंद्र भक्तिकर्के भलीप्रकार इस मंत्रकर्के ब्राह्मणके ताईं दानकर्के देवे ॥ १०२ ॥ मंत्रकहनेहै हे चंद्र महादेव मालतीके पुष्पकीन्याईं और गोदुग्धकी न्याईं श्वेतवर्ण सर्वदा काल हमारे उपर सौम्य शुभके करणे वाले होवो तुह्मारे को नमस्कारहो ॥ १०३ ॥ इस मंत्रकर्के मोतीयोंकर युक्त चंद्रमाकी मूर्त्ति आर्यके ताईं निवेदन करे और श्वेतवर्णका श्रेष्ठ वस्त्र दक्षिणाकर्के युक्त ब्राह्म

ततःस्विष्टकृतंकुर्याद्देवहोमविधौक्रमात्शांतिःसर्वत्रविप्रैश्चपठितव्यासमंततः१०० कांस्यपात्रेथसंस्थाप्यसोमंरजतसंभवं श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नंश्वेतपुष्पैःप्रपूजितम्१०१ पादुकोपानहच्छत्रभोजनासनसंयुतम् मंत्रेणानेनराजेंद्रसम्यग्भक्त्यासमन्वितः १०२ ॥ मंत्रः महादेवजातिवल्लिपुष्पगोक्षीरपांडुर सोमसौम्योभवास्माकंसर्वदातेनमोनमः ॥ १०३ ॥ एवंतुमौक्तिकैर्युक्तमाचार्यायनिवेदयेत् वस्त्रंशुभ्रंशुभंदद्याद्ब्राह्मणायसदक्षिणम् ॥ १०४ ॥ रौप्यंदद्याद्यथालाभंधेनुंवाथपयस्विनीं कस्मैचिद्विप्रवर्यायसवत्सांचसदक्षिणाम् ॥ १०५ ॥ अभिषिक्तस्ततः कर्ताब्राह्मणान्भोजयेच्छुभान् कृतविघ्नप्रतीकारोनंदतेभुविमानवः १०६ सुधाकरप्रसादेननात्रकार्याविचारणा इतिचंद्रपूजाविधानम् अथमंगलपूजाविधानं यदाश्रद्धाभवेत्कर्तुः पीडावाभौमसंभवा तदापूजाप्रकर्तव्यामंगलस्ययथाविधि१०७पंचांगेगुणसंपन्नेपूजायोग्यधनागते तदैवयत्नतःकुर्याद्भौमपूजांविचक्षणः १०८ स्नात्वा तिलैर्नदीतोयेप्रातःकालेविचक्षणः कृत्वान्हिकविधिंगेहमागत्याप्रियमानसः १०९

णके ताईं देवे ॥ १०४ ॥ और यथाशक्तिसें रौप्य और किसीक ब्राह्मणको सवत्सागौ दक्षिणा कर्के युक्त देवे । १०५ । और तिसके उपरंत कर्ताको अभिषेक करे और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको भोजन देवे और इसप्रकार उपाय करणेसें पृथ्वीमें चिरकाल आनंदको प्राप्त होताहे ॥ १०६ ॥ और चंद्रमाकी प्रसन्नतासें आनंदको प्राप्त होताहे इसमें संशयनहिहे इतिचंद्रपूजाविधानं अब मंगलकी पूजाका विधान कहतेहे जिसकालमें कर्ताकी श्रद्धाहोवे वा मंगलकी पीडा होवे तब यथाविधिसें मंगलकी पूजा करणे योग्यहे ॥ १०७ ॥ और तिथ्यादि शुभ पंचांगके प्राप्तहुये और पूजाके योग्य धनकी प्राप्तिमें मंगलका पूजन श्रेष्ट बुद्धिवाला करे ॥ १०८ ॥ नदीके जलमें तिलोंकर्के स्नान करे प्रातः कालमें

बुद्धिमान् और नित्यकृत्यकों करके गृहमें आयकके प्रसन्न चित्तहोयकके मंगलदेवताकी प्रसन्नताके वास्ते पूजाका आरंभकर सुंदर पृथ्वीमें द्वारोंकरके शोभित मंडलकों बनावे ॥ ११० ॥ और आचार्य कों बुलायकके ऋत्विजों करके युक्त वरण करे और वेदकेजाननवाला यज्ञविधिमें श्रेष्ठ जोहै तिसकों ब्रह्मांके स्थानमें वरणकरें ॥ १११ ॥ और स्वस्तिवाचन प्रथमकर्के फेर भौमपीठका पूजन करे और रक्तचंनके पट्टमें और तिसके अलाभमें खैरवृक्षके पट्टेमें ॥ ११२ ॥ लालवर्णके वस्त्रकों बछावे और चाउलोंकर्के पूर्णकरे और रक्तचंदनके तिलक कर्के त्रिकोण पीठ लिखे ॥ ११३ ॥ शुद्धसुवर्ण की और अलाभमें तांबेकी मूर्त्ति मंगलकी बनायकर्के प्रतिष्ठा मंत्रकों पढके तिसपीठमें स्थापनकरे ११४

प्रारभेद्भौमदेवस्यप्रीतयेपूजनक्रियां ॥ विहितेमंडपेद्वारशोभितेपृथिवीतले ११० आचार्यंतुसमाहूयवरयन्ऋत्विजोह्यपि ब्रह्माणंचापिवेदज्ञंकुशलंयज्ञकर्मणि १११ स्वस्तिवाचनपूर्वंतुविदध्यात्पीठपूजनं रक्तचंदनपट्टेतु खादिरेवाप्यलाभतः ॥ ११२ ॥ वस्त्रेलोहितवर्णेचतंडुलैःपरिपूरिते ॥ रक्तचंदनकल्केनत्रिकोणपीठमालिखेत् ॥ ११३ ॥ प्रतिष्ठामंत्रमुच्चार्यविन्यसेत्तत्रमंगलं शुद्धजांबूनदंकृत्वाताम्रंवातदलाभतः ॥ ११४ ॥ वैद्रुमं पद्मरागंवाभूमिपुत्रंविदुर्बुधाः दक्षिणाभिमुखंभौमंपूजयेत्प्रयतःशुभैः॥ ११५॥ करवीरैर्जपापुष्पैःसिंधूरैःसंभवैस्तथा अन्यैश्चलोहितैःपुष्पैरर्चयेद्भूमिनंदनम् ११६ आगच्छपृथिवीपुत्रभारद्वाजकुलोद्भव उज्जयिन्याधिपःश्रीमांश्चतुर्बाहोमहातपः ११७ चलशक्तिगदापाणिवरदाभयमंडित अहोभौमग्रहाध्यक्षयज्ञेस्मिन्कुरु सन्निधिम् ॥ ११८

औरबुद्धिमान् कहतेहैं मंगलकी मूर्त्तिःमुंगेकी अथवा पद्मरागमणीकीबनावे और दक्षिणमुखस्थापन कर्के प्रीतिसें पूजन करे ११५ सुंदर कनीरके पुष्पों कर्के और गुलदुपहरके पुष्पोंकर्के और सिंधूर कर्के वा जेसे ऋतुकालमेंलालपुष्पामिलेंतिन्होंकर्के मंगलकापूजनकरे ११६ और इसमंत्रकर्के आवाहनकरे अहोदयानंदे हे भौम पृथ्वीकेपुत्र हे भरद्वाजगोत्रऔर उज्जयिनिदेशमें उत्पन्न और शोभाकर्के युक्त और चारभुजोंकर्के युक्त वडे तपके करणे वाले ११७ और शक्ति और गदाके धारणे वालेऔर वर और अभयकेदेने वाले हें ग्रहराज इसमंडलमें आयकर्के मूर्त्तिमें स्थित हों वो ११८

तदनंतरस्विष्टकृत होम करे होमकी विधि इस क्रमकर्के कहिहै और शांतिपाठ सपूर्ण ब्राह्मणोंने पढने योग्यहै होमके उपरंत १०० और फेर चंद्रमाकी मूर्त्ति चादीकी कांस्यपात्रमें स्था पन करे और श्वेतवर्णके दोवस्त्रोंकर्केआच्छादित करे औरश्वेतपुष्पोंकर्केभलीप्रकारसे पूजितकरे १०१ और खडांमोंका जोटा और पैगेका जोटा और छत्री और आसन और दधिभक्त भोजन कर्के युक्त हे राजेंद्र भक्तिकर्के भलीप्रकार इस मंत्रकर्के ब्राह्मणके ताई दानकर्के देवे ॥ १०२ ॥ मंत्रकह- तेहै हे चंद्र महादेव मालतीके पुष्पकीन्याई और गोदुग्धकी न्याई श्वेतवर्ण सर्वदा काल हमारे ऊ पर सौम्य शुभके करणे वाले होवो तुह्मारे कों नमस्कारहो ॥ १०३ ॥ इस मंत्रकर्के मोतीयोंकर्के युक्त चंद्रमाकी मूर्त्ति आर्यके ताई निवेदन करे और श्वेतवर्णका श्रेष्ठ वस्त्र दक्षिणाकर्के युक्त ब्राह्म

ततःस्विष्टकृतंकुर्यादेवंहोमविधौक्रमात्शांतिःसर्वत्रविप्रैश्चपठितव्यासमंततः१०० कांस्यपात्रेथसंस्थाप्यसोमरजतसंभवं श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नंश्वेतपुष्पैःप्रपूजितम्१०१ पादुकोपानहच्छत्रंभोजनासनसंयुतम् मंत्रेणानेनराजेंद्रसम्यग्भक्त्यासमन्वितः १०२ ॥ मंत्रः महादेवजातिवल्लिपुष्पगोक्षीरपांडुर सोमसौम्योभवास्माकंसर्व दातेनमोनमः ॥ १०३ ॥ एवंतुमौक्तिकैर्युक्तमाचार्यायनिवेदयेत् वस्त्रंशुभ्रंशुभद द्याद्ब्राह्मणायसदक्षिणम् ॥ १०४ ॥ रौप्यदद्याद्यथालाभंधेनुंवाथपयस्विनीं क स्मैचिद्विप्रवर्यायसवत्सांचसदक्षिणाम् ॥ १०५ ॥ अभिषिक्तस्ततः कर्त्ताब्राह्म णान्भोजयेच्छुभान् कृतविघ्नप्रतीकारोनंदतेभुविमानवः १०६ सुधाकरप्रसा देननात्रकार्याविचारणा इतिचंद्रपूजाविधानम् अथमंगलपूजाविधानं यदाश्र द्धाभवेत्कर्तुः पीडावाभौमसंभवा तदापूजाप्रकर्तव्यामंगलस्ययथाविधि१०७पंचां गेगुणसंपन्नेपूजायोग्यधनागते तदैवयत्नतःकुर्याद्भौमपूजांविचक्षणः १०८ स्नात्वा तिलैर्नदीतोयेप्रातःकालेविचक्षणः कृत्वान्हिकविधिंगेहमागत्याप्रियमानसः १०९

णके ताई देवे ॥ १०४ ॥ और यथाशक्तिसे रौप्य और किसीक ब्राह्मणको सवत्सागौ दक्षिणा कर्के युक्त देवे । १०५ । और तिसके उपरंत कर्त्ताको अभिषेक करे और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको भोजन देवे और इसप्रकार उपाय करणेसें पृथ्वीमें चिरकाल आनदकों प्राप्त होताहै ॥ १०६ ॥ और चंद्रमाकी प्रस- न्नतासें आनदकों प्राप्त होताहै इसमें संशयनहिंहै इतिचंद्रपूजाविधानं अब मंगलकी पूजाका विधान कहतेहै जिसकालमें कर्त्ताकी श्रद्धाहोवे वा मंगलकी पीडा होवे तब यथाविधिसे मंगलकी पूजा करणे योग्यहै ॥ १०७ ॥ और तिथ्यादि शुभ पचांगके प्राप्तहुये और पुजाके योग्य धनकी प्राप्तिमें मंगलका पूजन श्रेष्ठ बुद्धिवाला करे ॥ १०८ ॥ नदीके जलमें तिलोंकर्के स्नान करे प्रातः कालमें

बुद्धिमान् और नित्यकृत्यको करके गृहमें आयकरके प्रसन्न चित्तहोयकरके मंगलदेवताकी प्रसन्नताके वास्ते पूजाका आरंभकर सुंदर पृथ्वीमें द्वारोंकरके शोभित मंडलको बनावे ॥ ११० ॥ और आचार्य को बुलायकरके ऋत्विजों करके युक्त वरण करे और वेदके जाननवाला यज्ञविधिमे श्रेष्ट जोहै तिसको ब्रह्माके स्थानमें वरणकरे ॥ १११ ॥ और स्वस्तिवाचन प्रथमकरके फेर भौमपीठका पूजन करे और रक्तचंनके पट्टमें और तिसके अलाभमें खेरवृक्षके पट्टेमें ॥ ११२ ॥ लालवर्णके वस्त्रको बछावे और चाउलोंकरके पूर्णकरे और रक्तचंदनके तिलक करके त्रिकोण पीठ लिखे ॥ ११३ ॥ शुद्धसुवर्ण को और अलाभमें तांबेकी मूर्ति मंगलकी बनायकरके प्रतिष्टा मंत्रको पडके तिसपीठमें स्थापनकरे ११४

प्रारभेद्भौमदेवस्यप्रीतयेपूजनाक्रियां ॥ विहितमंडपेद्वारशोभितेपृथिवीतले ११० आचार्यंतुसमाहूयवरयन्नृत्विजोह्यपि ब्रह्माणंचापिवेदज्ञंकुशलंयज्ञकर्मणि १११ स्वस्तिवाचनपूर्वंतुविदध्यात्पीठपूजन रक्तचंदनपट्टेतु खादिरेवाप्यलाभतः ॥ ११२ ॥ वस्त्रेलोहितवर्णेचतंडुलैःपरिपूरिते ॥ रक्तचंदनकल्केनात्रिकोणपीठमालिखेत् ॥ ११३ ॥ प्रतिष्ठानत्रमुच्चार्यविन्यसेत्तत्रमंगलं शुद्धजांबूनदकृत्वाताम्रंवातदलाभतः ॥ ११४ ॥ वैद्रुमं पाद्मरागंवाभूमिपुत्रंविदुर्बुधाः दक्षिणाभिमुखंभौमंपूजयेत्प्रयतःशुभैः॥ ११५॥ करवीरैर्जपापुष्पैःसिंधूरैःसंभवैस्तथा अन्यैश्चलोहितैःपुष्पैरर्चयेद्भूमिनंदनम् ११६ आगच्छपृथिवीपुत्रभारद्वाजकुलोद्भव उज्जयिन्याधिपःश्रीमांश्चतुर्बाहोमहातपः ११७ चलशक्तिगदापाणिवरदाभयमंडित अहोभौमग्रहाध्यक्षयज्ञेस्मिन्कुरु सन्निधिम् ॥ ११८

औरबुद्धिमान् कहतेहैं मंगलकी मूर्तिःमुंगेकी अथवा पद्मरागमणीकीबनावे और दक्षिणमुखस्थापन करके प्रीतिसे पूजन करे ११५ सुंदर कर्वीरके पुष्पो करके और गुल्दुपहरके पुष्पोकरके और सिंधूर करके वा जैसे ऋतुकालमेंलालपुष्पामिलेंतिन्होंकरके मंगलकापूजनकरे ११६ और इसमंत्रकरके आवाहनकरे अहोदयानंदे हे भौम पृथ्वीकेपुत्र हे भरद्वाजगोत्रवाले उज्जयिनिदेशमे उत्पन्न और शोभाकरके युक्त और चारभुजाकरके युक्त बडे तपके करने वाले ११७ और शक्ति और गदाके धारणे वालेऔर वर और अभयकेदेने वाले हैं ग्रहराज इसमंडलमें आयकरके मूर्तिमें स्थित होवो १८

इसप्रकारकर्के मंगलकों बुलावे कैसा मंगलहै जो मंगलका घरहै श्रयसें आवाहणकर्के और यदक्रंदेति इह होमका मंत्र कहतेहैं ११९ और अग्निमूर्द्धादिवइह भोमके पूजनका मंत्रहैऔर इहदोनोंका संभव नहिं होवे तवगायत्री कर्के संपूर्ण कर्मकरणा कहतेहैं १२० और पूजनआवाहनादिकमेंमें इह तीनमंत्रप्रधानहैं और खदिर वृक्षकीयां समिधा और चरु प्रधान द्रव्य कहाहै १२१ और पूर्वकी न्याई व्याहृतिके होम कों करे और तदनंतर दशहजार १००००चरुकाहोम भौम मंत्रसें करे और घृतकर्के प्रायश्चित्त संज्ञक होम करे और संपूर्णोमें इष्टकृतहोमकरे १२२ और होमकेअंत्यमें विधिसें वलिदानकरे और तदनंतर ब्राह्मणोंकर्के युक्त शांति पाठकों पढे १२३ और औरतदनंतर भौमकी महापूजा कर्के यथाविधिसें दानकरे और लाल

इत्यावाह्यधरासूनुंमंगलंमंगलायनम् यदक्रंदेतिमंत्रस्यहोममंत्रंविदुर्बुधाः ॥ ११९ ॥ अग्निर्मूर्द्धादिवइतिमंत्रोलोहितपूजने द्वयोरसंभवेमंत्रोगायत्री संप्रकीर्त्तिता १२० पूजनावाहनादीनामिदमंत्रत्रयंमतं समिधःखादिरीश्चात्रच रुद्रव्यप्रधानकम् १२१ पूर्ववद्व्याहृतिःप्रोक्तायुतवाततःपरं प्रायश्चित्तंघृतेनैव सर्वस्विष्टकृतंभवेत् १२२ होमांतेवलिदानंचकर्त्तव्यविधिवत्तथा शांतिपाठंततो विद्वान्पठेद्द्विजसमान्वितः १२३ परिपूजांततःकृत्वादानंदद्यात्ततःपरम् रक्तवस्त्र मनड्वाहंविद्रुमंभौमतुष्टिदं१२४काश्चनहियोरक्ताआढपोभौमतुष्टिदा स्वर्णंद द्याद्यथालाभंताम्रंचतदलाभतः १२५ अभिषिक्तस्ततःकर्त्तादानंदद्याद्यथाविधिः ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादाचार्यंप्रार्थयेत्ततः १२६ मूलमंत्रेणतत्सर्वंभौमपीठंसमर्पयेत् आचार्यायसुशीलायकुलीनायकुटुंबिने १२७ एवंकृतेविधानेचभौमशांतिर्भवेदिति तुष्टिदःपुष्टिदोभौमःप्रसन्नोजायतेनृणाम् १२८ ददातिविपुलान्भोगान्नात्रकार्याविचारणा इतिभौमशांतिविधानम् ॥

वस्त्र और लालवृषभ और मुंगे भौमकी प्रसन्नताकेवास्तेनदेवे १२४ और रक्तवर्णके धान्य और आढिकीभौमकी प्रसन्नताकों देतेहैं और यथाशक्तिसें सुवर्णदान करे और सुवर्णके अलाभमें ताम्रकादानकरे १२५ और तदनंतर कर्त्ताकों अभिषेककरे और यथाविधिसें दान कर्के पीछेसें ब्राह्मणोंकों भोजनदेवे और आचार्यकी प्रार्थना करे १२६और मूलमंत्रकर्के संपूर्ण पूजाका उपकरण और, भौमकी पूजा पीठ कुलीन और सुशील और कुटुंबी आचार्यके ताईं दे देवे, १२७ इसप्रकार पूजा विधान करणेमें मंगलकी पीडकी, शांति, होतीहै और प्रसन्नताकों प्राप्त जो भौम सो मनुष्योंकों तुष्टि औरपुष्टि फलकों देताहै १२८ और अनेकप्रकारके वडे भोगोंकोंदेताहै इसमे संशयनहिंहै ॥ इतिभौमशांतिविधानम् ॥

अब बुधके पूजनका विधान कहतेहैं आपने हितकी इच्छा वाले मनुष्यने बुधका पूजन करणा यो ग्यहै और शुभवारादि पंचांगादिनमें बुधके पूजनका प्रारंभकरे १२९ और जिसकालमें चंद्रतारा शुभहोवे तिसदिनमें स्नानादि नित्यकर्म करके वेदशास्त्रके जानने वाले आचार्यको बहुमानकरके बु लावे १३० और यज्ञ सिद्धिके निमित्त ऋत्विज और ब्रह्माकरके सहित वरण करे और कांचनवृ क्षकी पीठमें बुधका पूजन करे १३१ और नवीन वस्त्रकाविछायकरके ऊपर बाणाकार लिखे तिसमें सुवर्णकी मूर्ति बुधकी बनाय करके उद्बुध्यस्वेति इस ऋचाकरके बुधका आवाहनादिकरे १३२ अथवा गायत्रीकरके आवाहनादि होमांत संपूर्ण कर्मकोकरे और उत्तराभिमुख बुधका पूजन करणा कहाहै १३३ और इसप्रकार आवाहनकरे अहो इत्यानंदे हे चंद्रमाके पुत्र बुध हे श्रीमन् हेमगधदेशमें उत्पन्न और आत्रिगोत्रमें उत्पन्न और चारभुजोंवाले और खड्ग और खेटक और गदाके

अथबुधपूजाविधानम् बुधशांतिःप्रकर्त्तव्यानरेणहितमिच्छता शुभवारादिपंचां गेप्रारंभेच्छांतिकोविदः १२९ अन्येपांवलमादायचंद्रादीनांकृताह्निकः आ चार्यवेदशास्त्रज्ञंस्समाहूयसमंजसम् १३० वरयेद्यज्ञसिद्ध्यर्थंऋत्विग्भिर्ब्राह्म णैःसह कांचनस्यतरोःपीठेपूज्यश्चंद्रसुतोग्रहः १३१ वस्त्रेनूतनेरम्येमंडले बाणसम्मिते उद्बुध्यस्वेतिचऋचासौम्यस्यावाहनादिकम् १३२ होमांतक मेकुर्वीतगायत्र्यावासमाहितः उत्तराभिमुखःसौम्यःपूजनीयोमनीषिणा १३३ अहोचंद्रसुतश्रीमन्मागधायांसमुद्भव अत्रिगोत्रचतुर्बाहोखड्गखेटकहस्तक गदावरदासिंहस्थस्तत्कांतस्वरप्रभः नीलपंकजपत्रस्थइदंविष्णुरितीडितम् १३४ बुधंहेममयंकृत्वास्थापितंकांस्यभाजने सौम्यतंचसमाहूयपूजयेत्प्रय तःशुभैः १३५ शतपत्रैश्चकल्हारैःसुस्निग्धैस्तुलसीदलैः गंधपुष्पंतथाधूपं दीपंनैवेद्यमेवच १३६ तांबूलंचसकर्पूरंबुधप्रीत्यैनिवेदयेत् मंत्रेणानेनधर्मा त्माब्राह्मणायनिवेदयेत् १३७ मंत्रः बुधस्त्वंबुद्धिजननोबोधवान्सर्वदानृणाम् तत्वावबोधंकुरुमेसोमपुत्रनमोनमः १३८

धारणेवाले और एकहाथमें वरके देनेवाले और सिंहमें स्थित और नमसुवर्णकीन्याई प्रभावाले और नीलकमलदलमें स्थित आमकरके स्थित होवो और इदंविष्णुरिति इसमंत्रकरके पूजनकरे १३४ और सुवर्णकी मूर्तिबुधकी बनायकरके कांस्यपात्रमें स्थापनकरे तिसमें बुधका आवाहनकरे और पू जनकरे १३५ और शुभ कमलोंके पुष्पोंकरके और श्वेतकमलोंकरके और सुंदर स्निग्ध तुलसी पत्रों करके और गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्यकरके पूजनकरे १३६ और कपूरकरके सहित तांबूल पानकाबीड़ा निवेदन करे और इसमंत्रकरके धर्मात्माब्राह्मणके ताईदानकरदेवे १३७ हेबुध तुमबुद्धिके देनेवाले हो और सर्वदाकाल मनुष्योंको बोधकरके युक्त करतेहो हेचंद्रमाकेपुत्र मेरेको तत्त्वका बोधकरो तुम्हारेताईं नमस्कारहोवे १३८

इसप्रकारकर्के बुधकी मूर्त्तिका दानकरणा कहाहै प्रथम अपने गृह्यके विधानेकर्के स्थंडिलबनायकर अग्निस्थापनकर्के भलीप्रकार समिधोंसे होमकरे १३९ एकहजार सुंदर मुद्रकंडेकी समिधोंसेहोमकरे और एकहजार घृतपायसका होमकरे बुद्धिमान् १४० और छुहारे और नारि केलके गरीऔर दाख और केले और बिल्वोंकर्के श्रद्धा कर्के युक्त यथा शक्तिसे होम करे १४१ और प्रधान होमम पायसद्रव्यहै और प्रायश्चित्त होम घृतसे करे इसप्रकार बुधका दोष शमन होताहै इसमें संशय नहिहै १४२ इतिबुधपूजाविधानम्

॥ अब बृहस्पतिकी पूजाका विधान कहतेहै ॥ शुभसमयमे अस्तादि दोष रहित और शुभ तिथ्यादि समयमें बृहस्पतिकी पूजाकोंकरे और बुद्धिमान् सुवर्णकी मूर्त्ति बारा मासेकी बृहस्पतिकीबनावे १४३ और काष्टकी चउंकी ऊपर स्थापन कर्के पूजन करे और चाउलों कर्के पट्टिशाकार दीर्घ चतुष्कोण मंडलबनावे १४४ और तिसमंडलमें उत्तराभिमुख बृहस्पतिका पूजन करसे पीछेहे

ततस्थंडिलमादायस्वगृह्योक्तविचक्षणः ॥ कृत्वावन्हिमुखंसम्यक्समिधोजुहुयात्ततः १३९ अपामार्गस्यसुस्निग्धाःसहस्रंशुभलक्षणाः सघृतपायसपश्चाचावत्संख्यंविचक्षणः १४० खर्जूरैर्नारिकेलैश्चद्राक्षाकदलिबिल्वकैः हवनंसुयथालाभंकुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः १४१ प्रधानंपायसंचात्रप्रायश्चित्तंघृतेनच बुधदोषःशमंयातिनात्रकार्याविचारणा ॥ १४२ इतिबुधशांतिविधानम्

॥ अथगुरुशांतिविधानम् ॥ शुभेकालेप्रकर्तव्याविधिवत्पूजनंगुरोः कृत्वास्वर्णमयींमूर्त्तिंनिष्कस्यापिविचक्षणः १४३ पूजयेद्दारुजेपीठेप्रतिष्ठाप्यबृहस्पतिम् पीठेतंडुलजेकार्यंपट्टिशाकारमंडलं १४४ उत्तराभिमुखस्तत्रपूजनीयोबृहस्पतिः पुष्पैरागस्त्यसंभूतैः पंकजैःशतपत्रकैः१४५ अहोबृहस्पतेजीवासिंधुमंडलसंभव एह्यंगिरससंभूतहयारूढचतुर्भुज १४६ दंडाक्षसूत्रवरदकमंडलुधरप्रभो महानिद्रेतिसंपूज्योविधिवन्नाकिनांगुरुः १४७ बृहस्पतेतिमंत्रेण गायत्र्यावासमाहितैः सहस्रंसमिधश्चात्रबोधिपादपसंभुवाः १४८ चरुवापायसंवापिप्रधानमिहसम्मितं कर्त्ताविदध्याद्धवनंघृतेनस्वमुदेगुरोः ॥ १४९ ॥

और अगस्त्य पुष्पो कर्के और कमलों कर्के और श्वेतकमलो कर्के पूजन करे १४५ और इसमंत्र मूर्त्तिमें आवाहनकरे अहोइत्यादि हेबृहस्पते सिंधुदेशमें उत्पन्नहोनेवाले हेजीव आगच्छ हेअंगिरसंगोत्रमें उत्पन्न हेघोडेके स्वार चारभुजोंवाले १४६ और दंड और अक्ष माला और कमंडलु और एकहाथसे वरके देनेवाले इसमूर्त्तिमे स्थित होवो महानिद्रेति इसवेदके मंत्रकर्के देवगुरु बृहस्पति तिसका पूजनकरे १४७ अथवा बृहस्पतेति मंत्रकर्के वा गायत्रीकर्के पूजनादि संपूर्णकर्मकरे और एकहजार १००० पिप्पलवृक्षकी समिधाकर्के होमकरे १४८ और प्रधानहोम चरुकर्के वा पायसकर्के करे और कर्त्ता बृहस्पतिकी प्रसन्नताके निमित्त घृत कर्के होमको करे १४९ ॥

और होमकी सिद्धिके वास्ते बिल्व और नारिकेलोंका होमकरे और घृतकर्के प्रायश्चित्त होमकोंकरे और पायसकर्के स्विष्टकृत्होमकरे १५० और बुद्धिमान् होमकी सिद्धिके वास्ते व्याहृतियोंका होमकरै और होमके अंत्यमें बृहस्पतिकी प्रसन्नताके निमित्त प्रतिमाका पूजनकरे १५१ और श्वेत चंदनका तिलक और दशांगधूपकर्के और अगस्त्यके पुष्प और घृतकर्के पूरित दीपकर्के पूजन करे १५२ और दधिभक्तका नैवेद्य और पानसुपारिकर्केयुक्त धरे इसप्रकार कर्के विधिके जाननेवाला बडोबृहस्पतिकी पूजा कर्के १५३ पीछेसे पीतवस्त्र ऊपर देवे और ऊपरका परिधानवस्त्र इसपूजामें ऋषियोंने मुख्यकहाहै १५४ औरपट्टवस्त्रके अभावमेंकपासवस्त्रका सुंदर पीतकर्के दुपट्टेकीआकृति

विल्वानिनारिकेलानिजुहुयाद्धोमसिद्धये प्रायश्चित्तंघृतेनैवपायसैःस्विष्टकृद्भवेत् १५० व्याहृतीर्जुहुयाद्धीमान्होमसिद्ध्यर्थमेवच होमांतेप्रतिमापूज्यादेवाचार्यस्यतुष्टये १५१ गंधंमलयजंचात्रदशांगोधूपउत्तमः पुष्पमागस्त्यसंभूतं दीपमाज्येनपूरितम् १५२ नैवेद्यंदधिभक्तस्तुतांबूलेनसमन्वितम् एवंकृत्वाविधानज्ञःप्रपूजांबृहस्पतेः १५३ अथसंपादनादूर्ध्वंप्रदद्यात्पीतमंबरम् दुकूलंमुख्यमेवात्रसमुद्दिष्टंमनीषिभिः १५४ कार्पासजमथाभावेदुकूलस्याकृतिनवाम् आचार्यायकुलीनायश्रोत्रियायकुटुंबिने १५५ दद्यात्सदक्षिणंकर्ताप्रीतयेनाकिनांगुरोः ऋत्विग्भ्यश्चधनंदेयंब्रह्मणेधेनुरुत्तमा ॥ १५६ बलिप्रदानतुष्टस्यस्वर्गिभिर्वाबृहस्पतेः कृत्वापूजाविधानज्ञोभोगानाप्नोतिपुष्कलान् १५७ दानमंत्रः धर्मशास्त्रार्थतत्वज्ञज्ञानविज्ञानपारग विबुधार्तिहराचिंत्यदेवाचार्यनमोस्तुते १५८ इतिगुरुशांतिविधानम् अथशुक्रशांतिविधानम् पंचांगेशुभतांप्राप्तेमनसश्चसमुन्नतौ आचार्यंप्रणिपत्यादौवरयेद्ब्रह्मणास्तु १५९

नवीनकर्केनवीनधरे और कुलीन और श्रोत्रिय और कुटुंबीआचार्यकेतांईदक्षिणाकर्केयुक्तबृहस्पतिकी प्रसन्नताकेनिमित्तदानकरदेवे १५५ औरऋत्विजोंकेतांईधनदक्षिणादेवेऔरब्रह्माकेतांईश्रेष्ठगौ देवे १५६ और बलिदानकर्के देवताओंकर्के युक्त बृहस्पतिकोंप्रसन्नकरेइसप्रकारविधिकेजाननेवालापूजाकर्के बडे भोगोंको प्राप्तहोताहै १५७ प्रतिमादानकामंत्रकहतेहैं हेदेवाचार्य बृहस्पते हेधर्मशास्त्रकेतत्वको जाननेवाले और ज्ञान और विज्ञानके पारंगम हे देवतायोंकी पीडाहरणेवाले हेअचिंत्य तुमारेकों प्रणामहोवे १५८ इतिगुरुशांतिविधानम् अथशुक्रकी शांतिका विधानकहतेहैंतिथ्यादि पंचांग शुभहोवे और चित्तमें अंदाहोवेतवप्रथमआचार्यकोप्रणामकर्केब्रह्माकेसहितवरणकरे १५९

और प्रथम स्वस्तिवाचन करके शुक्रका पूजन करे और आम्रवृक्षकी चौकी बनायकरके स्वेतव स्त्रकरके वेष्टितकरे १६० और चांदीकी शुक्रकी मूर्तिवनायकरके वंशपात्रमें मंत्रके जाननेवाला स्थाप नकरे और पंचामृतकरके स्नानदेवे और सुंदर मनके हरणेवाले गंध अर्पणकरके पूजन करे १६१ इस प्रकारपूजन करके चावलोंके ऊपरस्थितकरे और चिह्नचावलोंकरके सुंदर पंचकोण मंडलको बनावले वे १६२ और नाम और गोत्र उच्चारणकरके शुक्रकाआवाहन करे. अहो इत्यानंदे हे शुक्र भोजकट देशोद्भव श्वेतघोडेकेरथमें आरूढ १६३ हे चतुर्भुज हे भृगुवंशमें भूषणरूप और अक्षमाला और क मंडलुके धारणेवाले आपकरके इसमूर्तिमें स्थितहोवो १६४ इसप्रकारध्यान शुक्रका करे और पाय

[illegible]
स्वस्तिवाचनपूर्वंतुकुर्याद्दैत्येश्वरार्चनम् ॥ आम्रवृक्षस्यपीठेतुशुभ्रवस्त्रेणसं वृते १६० राजतंतुभृगुंवंश्येस्थापयेन्मंत्रवित्तमः पंचामृतैस्तुस्नाप्याथगंधा ध्यैस्तुमनोहरैः १६१ समुच्चार्यप्रयोगंचतंडुलोपरिविन्यसेत् मंडलेपंचकोणेच विहितेतंडुलोत्तमैः १६२ नामवंशंसमुच्चार्यदानवेज्यंसमाह्वयेत् अहोभोजकटेज तशुक्रश्वेताश्ववाहन १६३ समागच्छचतुर्बाहोभृगुगोत्रविभूषण परिप्राक्षावली हस्तकमंडलुधरप्रभो । १६४ एवंदैत्यगुरुंध्यात्वापाद्यसंविनिवेद्यच दद्यादने नमंत्रेणब्राह्मणायकुटुंबिने १६५ मंत्रः भार्गवोभर्गशुक्रश्चश्रुतिस्मृतिविशार दः हित्वाग्रहकृतान्दोषानायुरारोग्यदोस्तुनः १६६ कृत्वाचाग्निमुखंविद्वान्सुद्य तंजुहुयाच्चरुं अष्टोत्तरसहस्रंचयज्ञांगसमिधस्तथा १६७ गंधपुष्पादिकंसर्वंवि दध्यात्प्रतिपूजने श्वेतंतुरंगमंदद्याद्दक्षिणार्थंचभक्तिमान् १६८ एवंसंपूजितेदैत्यगुरौ क्षेममवाप्नुयात् यात्रामुखेविवाहेचगोचरेग्रहवेशने १६९ पूज्योदैत्येंद्रपूज्यो सौनात्रकार्याविचारणा ॥ इतिशुक्रपूजाविधानम् ॥

सेको नैवेद्य देवे और इसमंत्रकरकेकुटुंबी ब्राह्मणकेताई दान करदेवे । १६५ मंत्रकार्थ जोहै भार्गवजो बडेतेजवालेहैं शुक्र जोहैं श्रुतिस्मृतियोंमें चतुर सो अपनीपीडाको दूरकरके हमारे को आयुषा और आरोग्यताके देनेवालेहोवें १६६ और विद्यावान् बहुलस्थंडिल बनायकरके तिसमें अ ग्निकास्थापन करके चरुसे और स्थलवृक्षकी समिधाकरके एकहजार आठमंत्रकरके होमकरे १६७ औ र संपूर्णगंधपुष्पादियोंकरके फेर दूसरीवारपूजनकरे और श्वेतवर्णका घोडा दक्षिणाके निमित्तदेवे भक्ति करके युक्त. १६८ और इसप्रकारकरके शुक्रकापूजनकरणेमें कल्याणकीप्राप्तहोताहै और यात्राकालमें और विवाहमें और ग्रहगोचरमें शुक्रकापूजनकरे इसमें संशय नहिंहै १६९ इतिशुक्रपूजाविधानम्

अथ शनिको पूजाका विधान कहतेहैं जन्मराशिमें शनैश्चर जन्मका और दूसरा और चतुर्थ और पंचम और सप्तम और अष्टम और नवम द्वादश स्थानोंमें अशुभ होताहै १७१ और देह धारियोंको कष्ट करताहै और धनकानाश देशका पारित्याग कराय देताहै इह शनैश्चर कालरूपकर्के तीनभुवन स्वर्ग मर्त्य पातालमें वर्तताहै १७२ और यत्नकर्के होम दान पूजादियोंकर्के पूजनीयहै और जन्मस्थानमें स्थित शनिने रावण हत कियाहै १७३ और तिसी शनिने दूसरे स्थानमें स्थित होयकर्के कार्तवीर्य सहस्त्रबाहू हत कियाहै और चतुर्थराशिमें स्थित होयकर्के हिरण्यकशिपु हत कियाहै और पंचमस्थानमें स्थित होयकर्के राजा नलो विपत्तिको प्राप्त कियाहै १७४ और सप्तमस्थानमें स्थित होयकर्के राजा धूम्रसेनो अपनेराज्यसें भ्रष्ट कियाहै और अष्टमस्थानमें स्थित होयकर्के महादेव शिव गजरूप कर दियेहैं १७५ और नवमस्थानमें स्थित होयकर्के राजायुधिष्ठिरजीके आधीन

अथशनिपूजाविधानम् ॥ प्रथमस्तुद्वितीयस्तुचतुर्थःपंचमस्तथासप्तमश्चाष्टमो
मंदोनवमोद्वादशोऽशुभः ॥ १७१ ॥ करोतिप्राणिनांकष्टधनदेशपरिक्षयम्का
लोयंशक्तिरूपेणवर्ततेभुवनत्रये ॥ १७२ ॥ पूजनीयःप्रयत्नेनहोमदानार्चना
दिभिःजन्मसंस्थेनमंदेनरावणोविनिपातितः १७३ तेनैवचद्वितीयेनकार्तवीर्यो
निपातितः चतुर्थेनासुराध्यक्षः पंचमेननलोनृपः १७४ स्वराज्यात्प्रापितोभ्र
शंधुम्रसेनोस्तगेनवै ॥ अष्टमेनमहादेवोगजरूपीकृतःपुरा १७५ नवमे
नकुरुश्रेष्ठोद्यूताधीनस्तुकारितः द्वादशेनार्कपुत्रेणजमदग्निर्निपातितः १७६
नबलंनौढिरुग्रत्वंनज्ञातृत्वंननिन्हवम् सभक्तिपूजनंचात्रशनैश्चरसुतुष्टिदम्
१७७ स्वगृह्योक्तेनविधिनापूजनीयःशनैश्चरः सर्वकामफलावाप्त्यैनात्रका
र्याविचारणा १७८ कृष्णांजनमयेपीठेखादिरेचाथसीसिवा तंडुलैःकारयेत्पीठं
कर्णिकाभिरलंकृतम् १७९ पश्चिमेतत्रपत्रेतुमंडलंधनुराकृति कृत्वातुस्थापये
त्तत्रसूर्यपुत्रंयथाविधि १८० ततश्चावाहनंकुर्याच्छन्नोदेवीतिमंत्रतः अहोसौरा
ष्ट्रसंजातःछायापुत्रश्चतुर्भुजः १८१

कियाहै औरद्वादशस्थानमें स्थित होयकर्के जमदग्नि हत कियाहै १७६ और इस शनैश्चर के आगे बड़ा उग्रपणा नहि काम आवताहै और चातुरी विद्यावी नहि चलतीहै और नम्रताकेवी न हि छोडताहै और भक्तिकर्के युक्त जो शनिका पूजनहै तिसकर्के प्रसन्न होताहै १७७ इसका एं सें अपनेगृह्योक्त विधानसें पूजनेयोग्यहै संपूर्ण कामनाफलकों निमित्त इसमें संशयनहिहै १७८ और पूजापीठ काले सुरमेका बनावे अथवा खिरवृक्षका वा लोहेका बनावे और चावलों करकें शोभायुक्त मंडल कर्णिकाकर्के युक्त अष्टदल बनावे १७९ और तिसमें पश्चिमकेदलमें धनुषाकाररेखा करके तिस धनुषाकार मंडलमें शनैश्चरका यथाविधिकर्के स्थापन करें १८० और इसअनंतर शन्नोदेवी इसमंत्रकर्के आवाहनकरे और हेसौराष्ट्रदेशमें जन्मलेनेवाले और चारभुजावाले १८१

कृष्णवर्ण और काश्यपगोत्रवाले और, एकहाथमें बाण एकहाथमें धनुष एकहाथमें त्रिशूल एकहाथ
करके वरके देने वाले, और गृध्र इन्हके वाहन इसमूर्त्तिमें आपकके स्थितहोवो। १८२ हेराजन्
प्रजापतेति वेदके मत्रकरके पश्चिम दलमें पूजनकरे और इसी मंत्रकरके होमादिककरे, १८३ और
बुद्धिमान् हजार संख्याकरकेचरुहोमकोंकरे और होमकअन्तमें विधिसहुक कृष्णाधेनु दान करदेवे १८४
औरशनिकीमूर्त्तिलोहेकीसुंदरदानकरेऔरदक्षिणाकरकेऔरवस्त्रकरकेएककुटुंबीब्राह्मणकेताईंदेवे १८५ औ
र तैसेहिश्रेष्ठआचारवालाब्रह्मणकेताईंसुंदरमहिषीदानकरदेवेऔरऋत्विजोंकोंयथाशक्तिकरकेधनदेवे १८६
और, पीछेसें ब्राह्मणोंकों भोजन देवे अनेक गोत्रमें उत्पन्नजोहैं, तिन्हकों और यो शनिकी मूर्तिपूजन
करीहैलोहेकी सुंदर १८७ सो मूर्ति ब्राह्मणसें मोलकरकेललेवे और तेलके भांडेमेंपावे और छिकेमें

कृष्णवर्णोकगोत्रश्चबाणहस्तोधनुर्धरःत्रिशूलीचसमागच्छवरदोगृध्रवाहनः१८२
प्रजापतेतिसंपूज्य सराजन्पश्चिमेदले प्रजापतेतिमन्त्रेणकुर्याद्धोमादिकबुधः१८३
सहस्रसामितंकुर्याद्धवनंचरुणाबुधः होमांतेविधिवद्दद्यात्कृष्णांधेनुंपयस्विनीं १८४
मूर्त्तितुसूर्यपुत्रस्यदद्याल्लोहमयींशुभां सदक्षिणांसवस्त्रांचब्राह्मणायकुटुंबिने १८५
तथादद्याच्छुभाचारोब्रह्मणेमहिषींतथाऋत्विग्भ्योब्राह्मणेभ्यश्चदद्याद्द्रव्यंयथावसु
१८६ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्नानागोत्रसमुद्भवान्यामूर्त्तिं पूजिताहोमेत्वर्कजस्याय
सीशुभा१८७ दत्त्वाविप्रायतांपश्चाद्याचयेत्प्रतिनिष्क्रयात्तैलभांडेविनिक्षिप्याशि
क्यरूढांतुकारयेत् १८८ ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्यातिलान्माषांस्तुनिर्वपेत् प्र
भातेविप्रभुक्त्यर्थंतुविधिरेषसनातनः १८९ एतत्कृत्वाविधानंचसर्वदासुखमाप्नुयात्
१९० इतिशनिपूजाविधानम् अथमदनरत्नेभविष्योत्तरेशनिव्रतम् ततोमंदस्य
दिवसेस्नानमभ्यंगपूर्वककार्यंदेयंचविप्रायतैलमभ्यंगहेतवे १९१ यस्तुसंवत्स
रंयावत्प्राप्तेशनिदिनेनरः तैलंददातिविप्रेभ्यः स्वशक्त्यात्यजतेपिवा १९२
ततःसंवत्सरस्यांतेप्राप्तेतस्मिन्दिनेपुनःलोहघटार्पितंसौरिंतैलकुंभेविनिक्षिपेत् १९३

आरूढ करदेवे ॥ १८८ ॥ और यथाशक्तिकरके ब्राह्मणोंकोंभोजन देवे और तिल और माहा दान
करे प्रातःकाल उठकरके नित्यप्रति तिल और माष एक ब्राह्मणके भोजन निमित्त देवे इह सनातन
विधि कहिहै १८९ इसविधानकोंकरके सर्वदाकालसुखकोंप्राप्तहोताहै १९० इतिशनिपूजाविधानम्
अब मदनरत्न और भविष्योत्तरमें शनिके व्रतका विधान कहाहै शनिवारकेदिन तिलोंका तेललगाय
करकेस्नानकों करे और ब्राह्मणकों वा मर्दनके निमित्ततेल देवे १९१ और कहतेहैं यो मनुष्य शनि
वारके दिनमेंएकवर्षपर्यंत ब्राह्मणों का तेल दान करदेताहै अथवा शनिके निमित्त करके तेलका त्याग
करताहै सो वर्षकीसमाप्तिमें इस विधानकों करे ॥ १९२ ॥ और वर्षके अन्तमें प्राप्तयो शनिवारतिस्
दिनमें लोहेके घटेकरके युत शनिकीमूर्त्ति तेलके कुंभमें स्थित करे ॥ १९३ ॥

लोहेकेवाताम्रमेकेकलशेमें कालेरंगके दोवस्त्रोंकर्केयुक्तऔरकालेकंबलकेऊपरधरे १९४ औरआपतैल लगायकर्के स्नान करे और काले पुष्पोंकर्के शनिका पूजन करे और कस्तूरीकर्के और सुगंधिवाले पुष्पोंकर्के और खिचडीके नैवेद्यकर्के तिल भातकर्के पूजन करे १९५ इस प्रकार शनिका पूजन करिवारंवार क्षमापन करावे और कृष्णवर्णके श्रेष्ठ ब्राह्मणकेताई और तिसके अभावमें और ब्राह्मणकेताई इसेमंत्रकर्केदान करदेवे हेराजन ॥ १९६ ॥ कोणकों और नीलसुरमेकीन्याई प्रभावालेकों और मंदगतिवालेकों और छायाकर्के सूर्यसें उत्पन्नभयाजोहै तिसशनिकों मैं नमस्कार कर्ताहां १९७ हेसूर्यकेपुत्र तेरेताई हेशनैश्चर तेरेताई हेकृष्णवर्ण और सुरमा और मेचक मंडेकेन्हीके वर्णवाले इस अपने रहस्यकों श्रवण कर्के हेसूर्यकेपुत्र मेरेकों कामना पूर्वक वरकों देह १९८ हेप्रेतराज तेरे

लोहेताम्रमयेवाथकृष्णवस्त्रयुगान्वितं ॥ कृष्णगोदक्षिणायुक्तकृष्णकंवल
शायिनम् १९४ स्वयमभ्यंगतःस्नात्वाकृष्णपुष्पैस्तमर्चयेत् सुगंधिगंधपुष्पैश्च
कृशरान्नैस्तिलौदनैः १९५ पूजयित्वासूर्यपुत्रंक्षमस्वेतिपुनःपुनः कृष्णाय द्विज
मुख्यायतदभावेतरायच १९६ देयःशनैश्चरोभक्त्यामंत्रेणानेनवैद्विज कोण
नीलांजनप्रख्यंमंदचेष्टाप्रसारिणम् छायामार्त्तंडसंभूतंनमस्यामिशनैश्चरं १९७
नमोर्कपुत्रायशनैश्चरायनीहारवर्णांजनमेचकाय श्रुत्वारहस्यंभवकामदस्त्वंफ
लप्रदामेभवसूर्यपुत्र १९८ नमोस्तुप्रेतराजायकृशदेहायवैनमः शनैश्चरायक्रूरायशु
द्धबुद्धिप्रदायिने १९९ इतिशनैश्चरव्रतम् अथशनैश्चरशांतिस्तत्रैव द्वादशाष्ट
मजन्मस्थेशनौसर्वग्रहेश्वरे श्रावणेमासिसंप्राप्तप्रथमेशनिवासरे २०० लोहरू
पंशनिंकृत्वास्नाप्यपंचामृतेनवै ॥ पुष्पैरष्टांगधूपैःफलैश्चैवविशेषतः २०१
नामभिःपूजयेदेतैःक्रमेणग्रहसत्तमं कोणस्थःपिंगलोबभ्रुःकृष्णोरौद्रोंतकोयमः
२०२

कों नमस्कारहो हेकृशदेहवाले तेरेताई नमस्कारहो हेशनैश्चर हेक्रूर हेशुद्धबुद्धिकेदेनेवाले, तेरेकों नमस्कारहो इस प्रकारकहे १९९ इतिशनिव्रतम्

अब सार्धसप्तयोगमें शनिकी शांति कहतेहैं ॥ जिसमनुष्यकों जन्मराशिसें द्वादश और अष्टम और जन्मस्थानमे ग्रहराजशनि स्थित होवे सोश्रावण मासमें प्रथम जो शनिवार तिस दिनमें २०० लोहेका शनि बनायकर्के पंचामृतसें स्नानदेवे और पुष्पोंकर्के और अष्टांग धूपकर्के और फलोंकर्के २०१ आगेकहेजो नाम तिन्होंकर्के ग्रहोंमें श्रेष्ठो शनि तिसका पूजन करे कोणस्थायनमः पिंगलायनमः बभ्रवेनमः कृष्णायनमः रौद्रायनमः अंतकायनमः यमायनमः २०२ सौरयेनमः

शनैश्चरायनमः । मंदायनमः पिप्पलादकापिने । इन्हों दशनामोंकरके शनिस्तुतकियाहै इनोंकरके पूजनकरे और शन्नोदेवी इस वेदके मंत्रकरके पूजनकरे २०३ और इसप्रकारपूजनकरके नैवेद्य । क्रमपूर्वकदेवे प्रथमपूजाकेवारमेंमहाभक्तकानैवेद्यदेवे और दूसरेशनिवारमेंपायसखीरकानैवेद्यदेवे । २०४ और तीसरे वारमें अवलीका नैवेद्यदेवे अवलीछाह और भक्त और हलदीलूण मिलायकरके पकातेहैं तिसको लेरी नामकरके त्रिगर्तदेशमें प्रसिद्ध नागपूजामें बनावेहैं और चतुर्थशनिवारमें सुंदरपूरियोंकानैवेद्य लगावे ॥ इत्यप्रिशानिशांतिः ॥ अबमतांतरकरकेरोहिणीनक्षत्रकेशकटभेदमेंशनिपूजाका । विधानकहतेहैं ॥ कदाचित् किसीकसमयमें रोहिणीकेगड्डेकोयमरूपशनिकरके भेद होवे । तब जगतका विनाश होताहै तिसदोषकेनिमित दशहजार-१०००० ब्राह्मणोंकोसाधुओंकोयथेष्ट भोजन देवे और

सौरिःशनैश्चरोमंदः पिप्पलादेनसंस्तुतः ॥ शन्नोदेवीतिसर्वत्रवैदिकेनप्रपूजयेत् ॥ २०३ ॥ पूजयित्वाचनैवेद्यंततकुर्यात्क्रमेणतुसमाप्रभक्तंप्रथमे द्वितीयेपायसंशुभं ॥ २०४ ॥ तृतीयेत्ववलीकार्याचतुर्थेपूरिकाशुभा ॥ अवलीतक्रतंडुलानिर्मितालिह्याविशेषः ॥ प्रथमादिशब्दोत्रवासरपरः ॥

॥ इतिशनैश्चरशांतिः ॥ अथमतांतरेणरोहिणीशकटभेदेशनिपूजादिविधानम् अयुतंब्राह्मणान्साधून्यथेष्टंभोजयेत्सुधीः तांबूलैर्विविधैर्वस्त्रैर्दक्षिणाभिश्चतोषयेत् २०६ यदाकदाचित्समयेजगतांविक्लवायच शकटोभिद्यतेब्राह्मोमंदेनयमरूपिणा २०७ कृष्णैरनडुद्भियुक्तंशकटंचार्पयेच्छुभम् ॥ चक्रेलोहमये कृष्णेसर्वोपस्करसंयुते २०८ श्रोत्रियायसुशीलायब्राह्मणायसमर्पयेत् नाममंत्रेणमंदस्यदक्षिणासहितंनृप २०९ इतिशनैश्चरपूजाविधिः ॥ अथस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशायनमः अस्यश्रीशनैश्चरस्तोत्रमंत्रस्यदशरथऋषिः शनैश्चरोदेवतात्रिष्टुप्छंदः शनैश्चरप्रीत्यर्थंजपेविनियोगः ॥

तांबूलोंकरके और अनेक प्रकारके वस्त्रोंकरके और दक्षिणाकरके प्रसन्नकरे २०६ और कालेरंगके बैलोंकरके युक्त गड्डा दान करकेदेवे चक्रतिसके लोहेके कृष्णवर्णके बनावे और संपूर्ण उपस्कर करके युक्त १०८ और स्वभाववाले श्रोत्रियब्राह्मणके ताई दानकरके देवे हेराजन् शनिके नाममंत्रों करके और दक्षिणाकरकेयुक्तदेवे १०९ इतिशनैश्चरपूजाविधिः अबशनैश्चरकास्तोत्रकहतेहैं ॥ जिस मनुष्यको शनैश्चरकी पीडा किसीप्रकारकी होवे सोदशरथराजाकरकेकियाहुआस्तोत्र इसकापाठकरे ॥ प्रातःकालमें स्नानकरके श्रीगणेशजीको प्रणाम करके और शनिकी प्रसन्नताके निमित्तविनियोगकरे ॥

॥ श्रीराजादशरथजीकहतेभये ॥ कोणनामककर्के और अंतकनामककर्के और यमनामककर्के और बभ्रु नामककर्के और कृष्णनामककर्के और शनिनामककर्के और पिंगलनामककर्के और मंदनामककर्के और सौरिनामककर्के नित्यप्रति स्मरणकिया जो पीडाकों हरताहै तिस सूर्यके पुत्रताई नमस्कारहो १ और जिसके विषमस्थानमें ॥ १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥ स्थित होया देवता और दैत्य और किन्नर और गणगंधर्व विद्याधर और नाग संपूर्ण पीडाकों प्राप्तहोतेहैं तिससूर्यकेपुत्रताई नमस्कारहो २ और जिसके विषमस्थानमें स्थित होया मनुष्य और राजा और पशु और मृगेंद्र और वनकेजीव कीट और पतंग और भृंगदह संपूर्ण पीडाकों प्राप्त होतेहैं तिस सूर्यके पुत्रताई नमस्कारहो ३ और जिसके विषमस्थानमेंस्थित होया देश और किलेकोट और वन और सेनाके निवासस्थान और पुर ग्राम पीडाकों प्राप्त होतेहैं तिससूर्यके पुत्रताई नमस्कारहो ४ और जो

॥ दशरथउवाच ॥ कोणोंतकोरौद्रयमोथबभ्रुः कृष्णःशनिःपिंगलमंदसौरिः नित्यंस्मृतोयोहरतेचपीडांतस्मैनमः श्रीरविनंदनाय १ सुराऽसुराः किंपुरुषा गणेंद्रागंधर्वविद्याधरपन्नगाश्च पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमः श्रीरविनंदनाय २ नरानरेंद्राःपशवोमृगेंद्रावन्याश्चयेकीटपतंगभृंगाः पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ३ देशाश्चदुर्गाणिवनानियत्रसेनानिवेशः पुरपत्तनानि पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ॥ ४ ॥ तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेननीलांबरदानतोवा प्रीणातिमंत्रैर्निजवासरेचतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ५ ॥ प्रयागकूलेयमुनातटेचसरस्वतीपुण्यजलेगुहायां योयोगिनांध्यानगतोपिसूक्ष्मः तस्मैनमः श्रीरविनंदनाय ६ अन्यप्रदेशात्स्वगृहंप्रविष्टस्त्वदीयवारेसनरः सुखीस्यात् गृहाद्गतोयोनपुनःप्रयातितस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ७ स्रष्टास्वयंभूर्भुवनत्रयस्यत्राताहरीशोहरतेपिनाकी एकस्त्रिधाऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मैनमः श्रीरविनंदनाय ८

सूर्यकापुत्र शनिवारके दिनमें तिल और यव और माह और गुड और अन्न दानकरणेकर्के प्रसन्नताकोंप्राप्तहोताहै तिसकेताईनमस्कारहो ५ और प्रयागतीर्थकेतीरमें और यमुनाके कनारेमें और पवित्रसरस्वतीके जलमें और गुफामें और सूक्ष्मरूपकर्के योगीजनोंके हृदयमें वास करणेवाला योहै तिससूर्यकेपुत्रताई नमस्कारहो ६ और हेशनैश्चर योमनुष्य तुह्मारे वारमें विदेशसें घरमेंप्रवेश कर्त्ताहै सो सुखीहोताहै और जो मनुष्य तुह्मारे वारमें घरसें यात्रा कर्त्ताहै सो फेर शीघ्रघरकों नाहिंप्राप्तहोताहै असेंजो सूर्यके पुत्रहो तुह्मारेताई नमस्कारहो ७ और तीनभुवनके रचने वाले जोतुमहो ब्रह्माके रूपकर्के और रक्षाकर्त्ताहो विष्णुरूपकर्के और संहारकर्त्ताहो शिवरूपकर्के एकाहितीन प्रकारके ऋग्वेद और यजुर्वेद और सामवेदकीमूर्तिकोंधारणेवालेजो सूर्यकपुत्रतिन्हकोंनमस्कारहो ८

और कहितेहैं इहजोशनिकी आठश्लोक करकेस्तुति इसको योमनुष्य प्रातःकालउठकर्के प्रीतिसें पढताहै सोमनुष्य पुत्रोंकर्के और पशुयोंकर्के और बंधुयोंकर्के युक्त होताहै औरसुखको और पृथ्वी मेंभोगोंको भोगकर्के देहांतमें विष्णुके निर्वाणपदको प्राप्तहोताहै ९ और कोणस्थ १ पिंगल २ बभ्रु ३ कृष्ण ४ रौद्र ५ अंतक ६ यम ७ सौरि ८ शनैश्चर ९ मंद १० इन्हों दशनामोंकर्के पिप्पलादऋषिनें शनिस्तुतीकीयाहै १० इन्होंनामोंको योप्रातःकालमेंपढताहै तिसकोंशनिकोपीडा कदाचित्नहिहोतीहै ॥ ११ ॥ इतिशनिस्तोत्रम् ॥ अब राहुको शांतिका विधान कहतेहैं जन्मराशिमें प्रथम और द्वितीय और चतुर्थ और पंचम औरसप्तमें और अष्टमें और नवम और द्वादशस्थानमें स्थितजोराहुः १ मनुष्योंकोमृत्युकर्त्ताहै और देशका त्यां [illegible]

शन्यष्टकंपः प्रयतः प्रभातेनित्यंसपुत्रैःपशुबांधवैश्च पठेत्तुसौख्यंभुविभोगभो क्ताप्राप्नोतिनिर्वाणपदंतदंते ९ ॥ कोणस्थःपिंगलोबभ्रुः कृष्णोरौद्रोंतकोयमः सौरिःशनैश्चरोमंदःपिप्पलादेनसंस्तुतः १० एतानिदशनामानिप्रातरुत्थाययः पठेत् शनैश्चरकृतापीडानकदाचिद्भविष्यति ११ इतिशकटभेदनामगुणवि शिष्टस्तुतिपुरःशरंशनैश्चरपूजाविधानम् ॥ अथराहुशांतिविधानं ॥ प्रथमस्तुद्वितीयस्तुचतुर्थःपंचमस्तथा ॥ सप्तमश्चाष्टमस्थोवानवमोद्वादश स्तमः ॥ १ ॥ करोतिमरणंपुंसांदेशत्यागधनक्षयम् ॥ विकारान्शो णितस्यापियुद्धेचैवपराजयम् २ ॥ विवादेमानहानिःस्याद्दुःखंचसुहृदामपि निर्विघ्नार्थंतुसंपूज्योगृह्योक्तविधिनातमः ३ पूजितेतमसिप्रीतेसर्वान्कामान वाप्नुयात् कालांजनपदेतातथालोहमयेपिवा ४ चतुरस्रेचतुष्पादेनूतनेव स्त्रसंयुते अक्षतैःपूजितेसम्यक्तत्रतंस्थापयेद्बुधः ५ आहूयविधिमार्गेणतमो मंत्रेणतंग्रहम् शूद्रवर्णसमुद्भूतकृष्णवर्णचतुर्भुज ६ धनुःपाशधरःश्रीमानक्ष मालांकमंडलुम् चतुर्दश्यांसमुत्पन्नकृष्णपक्षेविशेषतः ७

ग और धनका नाश कर्त्ताहै और रुधिरका विकार और युद्धमें पराजय कर्त्ताहै २ और विवादमें मानकी हानि और मित्रोंको दुःख कर्त्ताहै और तिसदोषके दूरकरणेके वास्ते अपने गृह्योक्त विधा नसें राहुपूजने योग्यहै ३ और पूजाकर्के राहुके प्रसन्नहुये संपूर्णकामनासिद्धहोतीहै हेराजन् का ले सुरमेको चउकीमें अथवा लोहेकी चउकीमें ४ चतुष्कोण मंडलमें नूतन वस्त्रकर्के युक्त स्थाप न करे और भलीप्रकारकर्के अक्षतोंसे पूजन करे ५ और विधानकर्के राहुके मंत्रसें आवाहन करे हेशूद्रवर्णमेंजन्मनेवाले हेकृष्णवर्ण हेचारभुजोंवाले ६ और धनुष और पाश और अक्षमाला और कमंडलुके धारणे वाले हेकृष्णपक्षकीचतुर्दशीतिथिमें जन्मनेवाले ७

.हेयमहेमहाघोररूपहेदेवताओर दैत्योंके हतकरणेवाले हेपैठीनसीगोत्रमें जन्मनेरूपमहाघोररूप ओ बर्बरदेशमें उत्पन्नहोनेवाले ८ और भरणीनक्षत्रमें जन्मनेवाले हेसिंहिकाकेपुत्र तेरेकों नमस्कारहो हेवरदेनेवाल्योंमेंश्रेष्ठआयकर्के इसपीठमें मूर्तिमेंसन्निधानहोवो९इसविधानकर्के राहूका आवाहनकर्के पूजनपवित्रहोयकर्के करे औरतिसकेउपरंत दूर्वाके दलोंकर्के दशहजार१०००होम करे१० और सहस्रमसीति इसवेदके मंत्रकर्के पायसका होमकरे ११ और पीछेसें स्विष्टकृत होमाकि विधिकर्के फेर राहुका पूजनकरे, विशेषसें १२ और कुटुंबी आचार्यके ताईं लोहेकी दक्षिणा देवे और दोवस्त्र और सूत्र और कर्णोंके कुंडल और हाथोंके कडे दातदेवे १३ और पीछेसें ब्राह्मणों

यमरूपमहाघोरदेवदैत्यनिवर्हण पैठीनसकुलेजन्मदेशेवर्बरसंज्ञके ८ भरणी
तारकायांचसैंहिकेयनमोस्तुतेआगच्छवरदश्रेष्ठपीठेस्मिन्सान्निधिंकुरु ९ आवाह्य
विधिवद्राहुंपूजयेत्प्रयतःशुचिःततस्तुहवनंकुर्याद्दूर्वाभिरयुतेनच १०प्रधानंपाय
संतत्रसाज्यंचैवविशेषतः सहस्रमसीतिहोमंपायसेनप्रकल्पयेत् ११ ततः
स्विष्टकृतेजातेहोमांतेविधिवित्तमः प्रतिपूजांततःकुर्याद्राहोःप्रीत्यैविशेषतः१२
आयसंदक्षिणांदद्यादाचार्यायकुटुंविने वस्त्रयुग्मंचसूत्रंचकुंडलेकटकानिच १३
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्भुक्तेपूनुव्रजेत्ततः एवंयःकुरुतेपूजांराहोर्विगोचरस्यच१४
दुष्टस्थानस्थितस्याशुग्रहपीडाविनश्यति सर्वान्कामानवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा १५ इतिराहुपूजाविधानम् अथकेतुपूजाविधानम् यथाराहुस्तथाकेतु
ज्योतिःशास्त्रेनिगद्यते तस्यशांतिकरंसम्यग्विधानमुनिभिःस्मृतम् १ ॥
कृत्वाकांस्यमयंकेतुंचतुर्बाहुंमहातनुं धूम्रवर्णंदीर्घहनुंपिंगश्मश्रुविलोचनं ॥ २
एवमेकेतिकेतूनांरूपबाहुल्यमंजसा एकएवेतिचान्येतुसहस्रंत्वपरेविदुः ॥ ३

कों भोजन देवे और भोजनकरायकर्के आठपयर पीछे गमन करे हेराजन इसप्रकारकी पूजा जो विषमस्थान स्थित राहुकी कर्ताहै १४ तिसके दुष्टस्थानस्थित होनेकी पीडा नाशकों प्राप्त होतीहै और संपूर्ण कामनाकों प्राप्त होताहै इसमें संशय नहिहै १५ इतिराहुपूजाविधानम् अब केतुकी पूजाका विधान कहतेहैं जैसाराहुकहाहैतैसाकेतुज्योतिषशास्त्रमें कहाहै तिसकी शांति करणेका विधान मुनियोंने कहाहै १ कांस्यका केतु बडे देहवाला और चारभुजोंवाला और लंबी ठोडीवाला और पिंगलवर्णकी दाढी और पिंगलनेत्रोंवाला बनायकर्के स्थितकरे २ और कईक ऐसे केतुओंके बहुतरूपकहतेहैं और कईएकहि कहतेहैं और कईहजार केतूकहतेहैं ३

र महाभयकर, रूप बडा रौद्र। मनुष्योंकोंवडाभयदेनेवाला ओर तिसकेनाम गोत्रकाउच्चारणकर्के आवाहनकरे ४ ओर चाउलोंकर्के पूरितमडलमें चित्रितवर्णकी पीठमें स्थितकरे ओर दोवस्त्रकर्के युक्तओर चदनकर्के पूजित करे ५ ओर पचामृतका स्नानदेकर्के ओर आवाहनकर्के स्थापित करे आवाहनकामंत्रकहतेहैं हेकेतो वडीभुजोंवाले ओर विशाखानक्षत्रमें जन्मलेनेवाले ओर अमावास्यातिथिमें जन्मनेवाले ओर शूद्रवर्णमें उत्पन्नहोनेवाले ७ हेसूर्यचद्रमाको भयकेदेनेवाले हेकालरूपनेरेकोंनमस्कारहोहेवरकेदेनेवालेतुमआनंदके देनेवालेहो हेसुव्रत ८ ओयकर्के इसयज्ञमें स्थित हो वो ओर कामनाकों पूर्णकरो हेप्रभो इसप्रकारकर्केआवाहनकरे ओर केतुकृण्वेति इसवेदके मंत्र के

महाभयमहारौद्रमहाभयकरन्नृणाम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्य्यमंत्रेरावाहयेद्बुधः ४ निवेश्यचित्रितेपीठेतंडुलैःपरिपूरिते वस्त्रयुग्मसमायुक्तंचंदनेनसुचर्चितं ५ पचामृतेनसस्नाप्यसमाहूयनिवेशयेत् तत्रावाहनमंत्रः अहोकेतोमहावाहोविशाखाऋक्षसंभव अमावास्यांतिथौजातशूद्रवर्णसमुद्भव ७ आदित्यचंद्रभयदकालरूपनमोस्तुते आगच्छवरदानदनंदनोभवसुव्रत ८ यज्ञेस्मिन्कुरुसांनिध्यंकामानापूरयप्रभो इत्यावाहन केतुकृण्वेतिमंत्रेणपूजाहोमविधिः स्मृतः ९ चित्रान्नंचाशनचात्रकुशाश्चसमिधस्तथा अयुतंहवनेसंख्याप्रवलघृतमत्रवै १० कृतेस्विष्टकृतेकार्याप्रतिपूजामनीषिभिःछागस्तुदक्षिणाचात्रकेतूनांप्रीतयेमता ११ सपाद्यविधिवद्भक्त्याह्याचार्यायमनीषिणे मूर्तिछागचवस्त्रंचनमस्कुर्यात्प्रयत्नतः १२ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दद्यात्तेभ्यश्चदक्षिणा एवमर्कादिखेटानांपूजनपरिकीर्तितं १३ यस्ययस्यचखेटस्यहोमेवन्हिःपृथक्पृथक् नामानिकथितान्येवयज्ञकर्मविशारदैः १४

के पूजा ओर होमकी विधिकहीहै ९ ओर चित्रान्नभोजन आगेघरे योचित्रान्नपूर्व लिखाहै ओर कुशाको समिधाकर्के दशहजार होमकी संख्या कहिहै ओर निश्चयकर्के घृतसंप्रधानहोम करे १० ओर स्विष्टकृत होमकर्के बुद्धिवाल्योंने फेरप्रतिमाका पूजन करणेयोग्यहै ओर बकरादक्षिणाकेतुकी कहिहै प्रीतिवास्ते ११ इसप्रकारपूजनकर्के बुद्धिवाले आचार्यकेताई मूर्ति ओर बाग ओर वस्त्रदेकर्के नमस्कारकरे यत्नसें १२ ओर पीछेसें ब्राह्मणोंको भोजनदेवे ओर तिन्होंके ताईंदक्षिणादेवे इसप्रकारकर्के सूर्यादिग्रहोंका पूजनकहाहै १३ ओर जिसजिसप्रकारकी शान्तिहोवे तिसतिसकी अग्नि भिन्नभिन्न शान्तिकर्मके जाननेवाल्योंने कहीहै १४

और कहेहैं सूर्यके होममें कपिलनामककें अग्निका पूजनकरे और चंद्रमाकेहोममें पिंगलनामककें और भौमके होममें धूमकेतुनामककेंऔरबुधकेहोममेंजठराग्निनामककें १५ और बृहस्पतिके होममें शिखीनामककें और शुक्रके होममें हाटकनामककें और शनिके होममें महातेजनामककें और राहुकेतुके होममें हुताशन नामककें अग्निका पूजनकरे १६ और योमनुष्यअग्निके नामोंके जानने विना होमकों करताहै सो होमके फलकों नहि प्राप्तहोताहै १७ और इसप्रकारककें केतुयोंका पूजन कराहै पुरुषोंकों और विशेषमें स्त्रीयोंकों संपूर्णकामनाकेदेने वालाहै १८ इतिकेतुपूजाविधानम् अथयोगदानविधानरत्नाकरे अगस्त्य मुनिके प्रतिरामो कार्तिकजीकहतेभये हेअगस्त्य एकराशिमेंग्रह

आदित्यःकपिलोनामपिंगलःसोमउच्यते ॥ धूमकेतुस्तथाभौमोजाठराग्निर्बुधःस्मृतः
१५गुरोश्चैवशिखीनामशुक्रोभवतिहाटकः ॥ शनैश्चरोमहातेजाराहुकेत्वोर्हुताशनः
१६अविदित्वाग्निनामानिहोमंकुर्याद्विचक्षणः ॥ तद्धुतनचसंस्कारनचयज्ञफलंलभेत्
१७ एवंविधानमुद्दिष्टंकेतूनांपूजनंमतं सर्वकामप्रदंन्दृणांनारीणांचविशेषतः १८
इतिकेतुपूजाविधानम् अथयोगदानविधानं रत्नाकरे योगशांतिंप्रवक्ष्यामि
विशेषाच्छृणुतापस ग्रहाणांयोगतोयोगाविविधाख्याःप्रकीर्तिताः १ तत्रयेरिष्टदायोगास्तत्सूच्यारिष्टशांतये योगदानप्रकर्त्तव्यंविचार्यमतिमन्नरैः २
स्वल्पाधिकांशगायेचराशौस्वर्णादिकल्पिते तत्रस्वल्पांशगास्तेतुदक्षभागेधिकांशगाः ३ वामेस्थाप्याविशेषेणपृथकस्थितिविवर्जिताः एवंग्रहयुतराशिंकृत्वाहेमादिनांशुभम् ४

स्थित होनेमें बहुत प्रकारकेयोग कहेहैं १ जिनमेंजोरिष्टके देनेवाले योगहैं तिन्होंकी रिष्टशांतिके वास्ते बुद्धिवानों मनुष्योंने योगदान विचार करके करणे योग्यहै २ और जोग्रह थोडे अंशोंमें स्थित रहें और जोग्रह अधिक अंशोंमें स्थित हैं तिन्होंकों सुवर्णादिकोंकी प्रतिमोंमें जोग्रह थोडे अंशोंमें स्थित हो और तिसराशिमें स्वल्पांश ग्रहकों दक्षिण भागमें और अधिक अंशवालेकों वामभागमें विशेषकरकें स्थापनकरे एकहि राशिमें भिन्न भिन्न मूर्ति नहि बनावे ३ इस प्रकारकी राशिकों सुवर्णादि धातुकी बनायकरकें ग्रहोंकों तिसके ऊपर बनावे ४

और प्रथम राशिका पूजनकरे तदनंतर तिस ऊपरही ग्रहोंका पूजनकरे और तिसमें प्रथम अधिक अंशोंमें स्थित ग्रहोंको पूजे और पीछेसे हीनांश ग्रहका पूजन करे ५ और तिस तिस ग्रहके मंत्रकरके और तिसीतिसराशिके मंत्रकरके बुद्धिवाल्योंने पूजनकरणा कहाहै ॥ ६ और आगेहोने वाले दोषके निमित्त वैदिक मंत्रसे कर्मकरे और प्रवृत्त दोषकी निवृत्ति वास्ते तंत्रोक्त मंत्रोंसे कर्मकरे ७ इस प्रकारकी व्यवस्था करके पूजन करे और योगदानमेंविशेष श्रवण करहे अगस्त्य

तत्रादौपूजयेद्राशिंततःखेटान्प्रपूजयेत् तत्रादावधिकांशस्तुपूज्योन्यूनस्ततः पर ॥ ५ ॥ तत्तद्ग्रहीयमंत्रेणतत्तद्राशिगमंत्रतः राशयश्चग्रहाश्चैवपूजनीयाविचक्षणैः ॥ ६ ॥ आगामिदोषशांत्यर्थंकर्मवैदिकमंत्रतः प्रवृत्तदोषशांत्यर्थंकर्मतांत्रिकमंत्रतः ७ एवंव्यवस्थयाकार्यंग्रहशांत्यर्थकर्मणि योगदानेविशेषतुशृणुष्वमुनिसत्तम ८ आरभ्यादित्यवारंतुक्रमेणग्रहमूर्त्तयः तत्तद्वारेप्रदातव्याः समर्चनपुरःसरा ९ भूशय्याब्रह्मचर्यादिभक्ष्यभोज्यव्यवस्थिते ॥ ग्रहशांतिप्रवृत्तैस्तुसत्तवारेषुमूर्त्तिषु १० दत्तासुचततःपश्चादष्टमेवासरेपुनः ॥ योगदानंप्रकर्त्तव्यंश्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ११ वृत्तिशीलसमोपेतगुणवंतंद्विजंशुभं ॥ अभ्यर्च्ययोगप्रतिमांसर्वालंकरणान्वितां १२

८ आदित्यवारसें लेकरके क्रमसेतिस २वारमें पूजनकरके ग्रहोंकी मूर्तियोंका दान करदेवे ९ और भूमिशयनादि व्यवस्था करके ब्रह्मचर्यमें स्थित होवे और ग्रहमंत्र जोहै तिसमें सूर्यादिवारोंमें प्रत्येक वारमें तिस तिस ग्रहकीमूर्त्तिका दानकरे १० और अष्टमदिनमें श्रद्धाभक्तियुक्त योगमूर्त्तिका दान करणे योग्यहै ११ और श्रेष्ठवृत्तिऔर श्रेष्ठस्वभावकरके युक्तयोगुणवान ब्राह्मणहै तिसका पूजन करके योगदानकी प्रतिमा संपूर्ण उपाकरकरकेयुक्त १२

भक्तिकरके ब्राह्मणकेतांई देदेवे औरयोगारिष्टकेदूरकरणे वास्तेऔरदानकीपूर्णताकेवास्तेदक्षिणादानदेवे १३ इस प्रकार दानदेकरके प्रदक्षिणा करे और ब्राह्मणका विसर्जनकरेऔरविशेषसें कितनाककाल तिसब्राह्मणकादर्शन नहिकरे १४ औरयोगदानकायोद्रव्यहेतिसकोंब्राह्मणसें मोल्यकरकेवी नहिग्रहण करेऔर इसीप्रकारवहुतब्राह्मणोंकोवीयोगदानविभागकरकेकदाचित् नहिदेवे १५वहुतोंकोविभागसें देनेकरके दानकी हानिहोतीहैऔरदान निष्फलहोताहैहेअगस्त्यइह महाशांतिकाविधान संक्षेपकरके कहाहै १६ हजार माष परिमाण सुवर्णकी ग्रहमूर्त्तिवनावे और तिसके अर्धमान करके वा चतुर्थांशकरके वा अष्टमांशकरकेवा सऊ १०० माषकरके ग्रहकी मूर्त्ति वनावे १७ और तिससेंन्यून

दद्याद्विप्रायभक्त्यातुयोगारिष्टप्रशांतये ॥ दक्षिणांचयथाशक्त्यादानसं पूर्त्तिहेतवे ॥ १३ ॥ दत्वाप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणंतुविसर्जयेत् ॥ ॥ नतस्यदर्शनंकुर्यात्कंचित्कालंविशेषतः ॥ १४ ॥ द्रव्यंचयोगदानीयंनग्राह्यंमोल्यतोपिच ॥ नदेयमेवंविप्रेभ्योवहुभ्यस्तुकदाचन ॥ १५ ॥ तेन दानेनहानिःस्यान्निष्फलंतत्प्रजायते ॥ महाशांतिविधानंतुसंक्षेपेणप्रदर्शितम् १६ सहस्रमाषकस्वर्णैर्ग्रहमूर्त्तिंप्रकारयेत् तदर्धेनतदर्धेनतदर्धेनशतेनवा १७ ततोन्यूनप्रमाणेनत्वत्यंताधममीरितं ॥ माषायुतेनकर्त्तव्यायमस्य प्रतिमाशुभा १८ नियुतेनतुमाषाणांकालपुरुषस्तथाभवेत् रौप्यंदशगुणंप्रोक्तंताम्रंविंशतिसंख्यकं ॥ १९ द्वादशांगुलिमानंतुग्रहाणांमूर्त्तिरिष्यते ॥ आत्ममानात्तुकर्त्तव्यात्वन्यैर्धातुभिरीरिता २० द्रव्यमानाधिकत्वेनमानमेतत् प्रकीर्त्तितम् ॥ इतियोगदानादिविधानम् ॥

अत्यंतनिषिद्धमानकहाहैऔरयमकीप्रतिमाकादानकरणाहोवे तवदशहजार १०००० माषकीप्रतिमावनावे १८ कालपुरुषकादानकरणाहोवेतवलक्ष १००००० माषकीप्रतिमावनावे और पांचगुंजाकाएकमाष कहाहै और इसमानसें रौप्यका दशगुणित मान कहाहै और ताम्रकीप्रतिमावीसगुणितमानकरके वनावे १९ और वारां १२ अंगुलोंप्रमाणग्रहोंकी मूर्त्तियांवनावणीयांकहीहै यह सुवर्णके विना और धातुकीप्रतिमावनावे सब अपने देहके प्रमाणकरके कहीहै २० इसमें सुवर्णादिकोंकी प्रतिमाकामान द्रव्यकीवाहुल्यतामें कहाहै ॥ इतियोगदानादिविधानम्

अथग्रंथकेअन्तमेंआशीर्वादरूपकर्मंगलकरतेहैं ॥ श्रीरामचंद्रजीकेचरणकमलकीकृपासेंश्रीरणवीरसिंहमहाराजपुत्रपौत्रोंकरकेंयुक्तजयकोंप्राप्तहो कैसेमहाराजहे याचकोंकीइच्छाभलीप्रकारकरकेंपूर्णकरणेमें कल्पवृक्षकीन्याईहैं और दानकरणेमें इंद्रकी न्याईसभकोंप्रसन्नकर्तेहैं और दरिद्ररूपअग्निकेनाशकरणेमें मेघोंकेसमूहकी न्याईहैं और श्रेष्ठजनोंकेपरिपालनेमें श्रीरामचंद्रजीकीन्याईहैं और श्रेष्ठमंत्रके विचारमें वृहस्पतिकी न्याईहैं १, अबग्रंथकीप्रशंसाकहतेहैं ॥ हेपंडितलोकों अनेकजातकशास्त्रकेग्रंथसंग्रहकरणेमें जोक्लेशतिसकेदूरकरणेवास्तेइह मैंनेकियाजोजातकखंड इसकोंअत्यंतसुखवा…

अथग्रथांतेशिष्टाचारान्मंगलमाचरति ॥ अर्थीच्छापरिपूरणेसुरतरुर्दानेसुराणांपतिर्दारिद्र्यानलनाशनेघननिचयोरामः सतांपालने ॥ सन्मंत्रान्नयनेगिरामधिपतिःश्रीरामपादाब्जतोजीयाच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतिःपुत्रांगनाभिःसह १ अथग्रंथप्रशंसादिकथनं ॥ नानाजातकपुस्तकभाराजनदुःखहानयेकृतिनः ॥ मत्कृतजातकखंडोविलिख्यतामयमतिसुखाय २ नवाश्विनवभूसंख्यामितेविक्रमवत्सरे ॥ पौषेचविशदेपक्षेपंचम्यांभृगुवासरे ३ नानाजातकग्रंथांश्चसमालोक्यप्रयत्नतः कृतंजातकखंडंचमहेशेनसुधीमता ४ अस्मिन्निबंधेयन्न्यूनमधिकंयत्रकुत्रचित् ॥ विचार्यशोधनीयंतत्कृपयाशास्त्रकोविदैः ॥५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशदैवज्ञविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेरिष्टटीकाध्यायश्चतुर्विंशः २४ समाप्तश्चायंजातकखंडः

…तेलिखो २ और कहतेहैं श्रीविक्रमादित्यकेराज्यसें उन्नीसशेउन्नी १९२१ संवतमें पौषमासके शुक्लपक्षमें पंचमीतिथिमें शुक्रवारमें ३ अनेकजातकशास्त्रकेग्रंथोंकोंदेखकरकेंयत्नसें श्रेष्ठबुद्धिवालेमहेशनामकज्योतिषीनेइहजातकखंडसमाप्तकियाहै ४ और इसमेंमेंजोकहींन्यूनहोवे अधिकहोवे न्यूनऔर अधिकइसनिबंधग्रंथमें होवे सोविचारकरकेंविद्वानोंनेंदयाकरशोधनेयोग्यहै ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयाविरचितेजातकखंडेचतुर्विंशोध्यायः २४ शिवम् ॥

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
	२	ह	हुर	९	५	द्धा	दृद्धा	२२	२	कु	कू
१	१६	स्तु	स्तु	१०	६	व	व्य	२२	३	थि	थी
१	६	ष	ष	१०	७	ति	र्ति	२२	६	ते	तो
२	१	द्धा	द्धां	१०	८	व्यवस्थाः	व्यवस्था	२३	३	धि	धी
२	३	द्धा	द्धा	१०	९	ति	र्ति	२४	१	सो	स्त्रि
२	४	प्ति	प्स	१०	११	ततो	त्तो	२४	१०	स्वा	श्वा
३	६	वग	गव	११	१	व	व्य	२६	५	क्रूर	क्रौर्य
३	८	य	ह्य	११	१	थ	र्थ	२८	६	के	क
३	९	क्षा	क्षा	१२	१	स	सम	२८	६	जकः	जितः
३	११	ना	नां	१२	२	मं	मुं	२९	१	पुष्य	पोष
३	११	द्धन्यवं	द्धनिं	१२	३	श्वा	श्व	२९	८	चो	घा
३	११	स्व	स्वा	१३	६	जि	ज्जि	३१	३	त्वि	नृत्वि
४	१	घ	घं	१४	४	छो	छो	३२	१२	टा	छा
४	३	श्रं	स्रं	१४	५	टो	छो	३४	१	न्हाक्षे	न्हूक्ष
४	५	त्वं	त्त्वं	१४	१	छिम	क्रिम	३४	२	येसौ	येस्व
४	११	ण्य	ष्य	१४	९	गता	गता	३४	५	ष	ष
५	१	ध्य	ध्य	१५	३	विहाय	हित्वा	३५	२	स्पा	स्या
५	२	ज्ये	ज्ये	१५	४	प	पा	३५	७	टा	छा
५	८	ज्र्य	ज्र्यं	१६	६	मे	मं	३५	११	वर	व
६	१	तूं	तूं	१६	६	मे	भ	३५	१२	पा	प्रा
६	७	जि	ज्वि	१६	७	रे	रं	३६	७	य	स
इतिप्रथमः				१६	८	मे	म	३७	९	ते	तो
७	१	म	मस्	१७	२	मः	वः	३७	१०	यः	शा
७	१	ते	तै	१७	८	ह	हि	३८	१	पा	ष्प
७	५	कटं	कंट	१७	१०	र्जा	र्जा	३८	२	पि	लि
७	७	ति	रिता	१८	११	न	न	३९	१	गु	सु
७	९	द्धा	द्धां	२०	४	जोनि	ज्योति	३९	१२	टो	टो
७	९	ष्टा	छा	इतिद्वितीयः				५०	६	त्व	त्र
७	१०	न	नं	२१	८	सोप	सानु	६०	१३	ते	तं
८	४	दि	दृदि	२१	१०	ग	गु	६१	२	र्ता	दात्

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
४२	१	क्ष	क्ष्य	६६	५	क्रे	ङ्मे	इतिचतुर्थः			
४२	४	रिठ	रिछ	६६	५	ते	ने	९६	६	द्र	द्र
४२	१२	तुं	तुं	६६	७	र्द्रं	दं	९६	७	रु	रू
४३	६	छः	छः	६६	९	ष्टो	ष्टी	९७	६	ज्ञा	ज्ञः
४४	१३	र्याण	र्याणि	६७	१	टो	ठो	९७	६	ति	सि
४५	१०	त०	तः	६७	१	निम्रः	निर्मोः	९८	१	ष्टा	ष्टा
४५	६	र्द्देर	द्देम	६७	३	मा	माः	९८	२	रा	राव
४५	१२	ज्ये	ज्यै	६७	१	दो	द्दो	९८	३	ग्रि	ग्र
४६	२	मा	माः	६७	७	भक्तः	भक्ताः	९८	५	च	श्व
४७	११	ब	व	६८	२	कॅ	कॅ	९८	५	क्षि	क्षः
४७	१२	ष्टा	ष्ठा	६९	७	धं	ध्वं	९८	९	वाँह	वाँढ
४८	७	द्र	द्रा	६९	९	दो	द्दो	९८	१०	ग्ल्भ	गल्भ
४९	७	वे	वें	७०	९	स्व	स्व	९९	६	द्दे	द्वे
४९	८	ठ्या	ढ्या	७०	२	धू	दू	९९	६	स्प	स्पा
४९	८	ताः	तः	७०	४	ह्वि	वि	१००	१	ष्टिः	ष्टिः
४९	१०	ठ्या	ढ्या	७०	६	क्र	क	१००	३	ग्वृध्य	ग्वृध्वि
५०	१०	पु	पु	७०	७	ज्ञा	ज्ञाः	१००	३	ष्ट	ष्ट
५१	१	पुं	पुं	७०	८	भो	भो	१०१	२	क्षः	क्षाः
५१	२	दि	दि	७६	१	ष्टि	ष्टि	१०१	३	ने	ना
इति तृतीयः				७७	२	श्व	श्वि	१०१	१	छः	छः
५२	६	ज्ये	ज्यो	८२	७	क्र	क्र	१०१	११	स्त्य	स्त्र
५३	१२	तृं	तृं	८३	१	ति	तिः	१०२	५	न	मि
५४	६	र्थ्यं	ध्यं	८९	१	धमा	धमा	१०२	८	पो	प
५६	१	स्ठो	स्त्रो	९०	०	सेम्	समृ	१०२	८	सु	सू
५६	२	त	त	९२	२	ठा	ठा	१०२	८	स्प	स्पा
५६	२	तः	ताः	९२	२	गा	गाः	१०२	९	ज्ञा	ज्ञाः
६६	६	ज्ञो	ज्ञो	९३	६	ष्ठ	ठ	१०३	१	स्या	स्या
६६	२	भयेर्	:	९३	१	त	स्त	१०३	६	तां	तः
६६	२	त	त	९४	१२	पिः	पिः	१०३	१	ष्ट	ष्ट
६६	४	म	मु	९५	२	ठ्य	ब्ल	१०४	१	ज्ञा	ज्ञः

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०४	२	ला	लः	१०९	१०	हे	हे	११९	७	शु	शु
१०४	४	च	च	११०	१	तु	त	११९	८	शाः	सः
१०४	४	ठो	ठः	११०	६	ळुः	च्छुः	१२०	२	त	इप
१०४	८	ता	त	११०	६	णो	णि	१२०	५	स	सः
१०५	२	सु	से	११०	५	न	ना	१२०	७	म	मा
१०५	५	क	क्य	११०	८	हे	हे	१२१	४	ह	ह
१०५	१	मों	मो					१२१	६	ह	ह
१०६	२	ता	द	१११	२	मः	मा	१२१	८	मुं	मुं
१०६	७	स्पष्टपो	स्पष्टः	१११	८	गो	थिरः	१२१	३	हे	हि
१०६	७	ति	ति	११२	७	ह	ह	१२२	७	ता	तू
१०६	१०	भि	भि	११२	१०	हः	हः	१२२	८	सः	श
१०७	४	य	म	११३	२	हः	हः	१२२	८	शि	सि
१०७	४	र्यो	र्यो	११३	२	श्रु	श्रु	१२३	२	साः	साः
१०७	५	स्रा	स	११३	४	नु	सु	१२३	६	ह	ह
१०७	७	थेः	थे	११४	१	क्रि	दूनि	१२३	६	हे	हे
१०७	१०	व्युव	व्य	११४	२	चः	चाः	१२४	६	रा	राः
१०७	१०	ष	ष	११४	६	रव	तूरव	१२४	९	स्रो	लों
१०८	१	दा	द	११४	६	छुः	च्छुः	१२५	१	शाः	ताः
१०८	१	म्भो	म्भः	११४	८	ह	ह	१२५	३	शाः	साः
१०८	२	या	श्रु	११४	८	नसा	नासः	१२५	[illegible]	शाः	ताः
१०८	२	गर्द	गर्द	११४	८	श	स	१२५	९	हा	[illegible]
१०८	२	गस	वसस्	११५	२	नू	नु	१२६	२	धु	धु
१०८	५	र्धा	र्धा	११५	४	स	श	१२६	४	रया	रम्या
१०८	५	न्नि	नृ	११७	१	न	ना	१२६	६	द्धि	द्धि
१०८	८	डु	च्छुः	११७	८	ओ	ओ	१२७	२	ज्ञ	च्छ
१०८	९	गुम	नाम	११७	१	जी	जी	१२७	२	तिः	ति
१०८	१	ऐ	हे	११८	१	स्यो	शो	१२७	६	मो	मा
१०८	७	गो	ष्प	११८	४	मपे	मेप	१२८	१	याः	याः
१०९	८	ट	टि	११८	८	मे	मु	१२८	६	तो	तो
१०९	१	पि	पि	११९	५	द	दः	१२८	७	डो	ट्पो

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१२१	१	स्या	स्यात्	१३८	२	द्वि	द्विर	१५०	६	यांस	यस्से
१२९	६	रो	रस्	१३९	९	ना	न	१५०	६	तोतिः	तते
१२९	७	साल्प	ल्पाक्षि	१३९	९	पु	पु	१५०	६	द्वी	द्वी
१३०	१	क्षः	क्षाः	१३९	१०	शत्रु	शत्रुश्यत्रु	१५१	१	गं	गः
१३०	४	मे	मे	१३९	१२	नि	निस्	१५१	१	के	गे
१३०	५	तुं	तुं	१३९	१२	तं	वे	१५१	२	ल्ले	ल्हे
१३०	७	द्वि	द्विद्वि	१४१	३	वु	वृ	१५१	१०	धं	धि
१३०	९	छ	च्छ	१४१	७	तो	ता	१५१	८	लिः	लिं
१३१	२	छे	छे	१४१	८	त्सा	त्सा	१५१	६	स्ये	स्ये
१३१	३	स्था	३था	१४१	५	तां	त्तां	१५२	४	आ	यो
१३१	३	मः	मा	१४२	८	छ	छ	१५२	५	रस्सी	त्सी
१३१	११	न्तु	न्तू	१४२	११	तं	थ	१५३	१०	वंतो	वर्त्ती
१३२	२	न	ना	१४३	२	ष्टं	छं	१५४	८	फोला	फा
१३२	३	छ	च्छ	१४३	६	नो	नोज्	१५४	८	थं	शु
१३३	३	णा	णस्	१४४	३	तां	त्तां	१५४	१०	छे	छे
१३४	३	द्वि	द्विद्वि	१४५	५	ष्टो	ष्टो	१५८	२	कें	कं
१३४	५	णा	ण	१४७	५	ढू	ढु	१५९	८	ष्टः	छंः
१३५	१	दा	क्षि	१४७	११	ने	नो	१५७	८	मुं	मु
१३५	४	द्या	द्वा	१४७	११	नौ	नुः	१६०	५	व	वि
१३५	४	भाः	भः	१४८	२	घ	द	१६०	५	सुः	सु
१३५	४	भा	भो	१४७	८	द्र	द्य	१६०	८	त	नं
१३५	७	रे	रि	१४८	११	सनि	सिनि	१६०	१४	नो	नी
१३५	९	नथ	नाथ	१४८	१३	छ	च्छ	१६१	२	द्यो	या
१३६	८	स्त्रि	त्रि	१४८	१३	गेतमे	गस्तम.	१६१	२	या	या
इति	पचमः			१४९	२	का	का	१६१	५	वं	यां
१३७	२	तो	त	१४९	८	ष्ठ	ष्ट	१६१	७	स्म	स
१३७	२	रो	र	१४९	९	छे	छे	१६१	९	क	ह
१३७	२	द्रो	द्रो	१४९	९	गेनमे	गस्तमो	१६२	६	ध्यं	र्प्य
१३८	१	निं	निं	१५०	६	पं	य	१६२	१२	जा	या
१३८	२	सु	सि	१५०	६	सुर	स्वं	१६२	१२	स्य	स्यात्

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१६२	१३	क्ष्य	क्ष	१७५	९	मं	म	१८७	११	सृ	हृ
१६३	३	शं	स	१७५	१०	स्थो	स्थे	१८८	२	स्थे	स्थः
१६३	८	क्ष्य	क्ष	१७६	४	कः	कं	१८८	४	तः	तं
१६३	१२	ता	तां	१७७	१	जा	या	१८८	४	स्थो	स्थः
१६४	५	न	म	१७७	६	जा	या	१८८	१२	क्र	क
१६४	६	म्रि	र्ति	१७७	८	श्रि	श्रः	१८९	१	त्त	त
१६४	१०	तो	ते	१७८	११	ष्टा	ष्ठा	१९०	१	श	स
१६४	११	त	ति	१७८	११	त	त्रि	१९१	२	सु	सू
१६४	११	त्तं	त्तं	१७८	२	क्ष	क्ष्य	१९१	२	सं	स
१६५	३	ष्ट	ष्ठ	१८०	३	ऐः	ऐ	१९२	५	ष्टः	ष्ठः
१६५	११	ष्ठः	ष्टः	१८०	१०	णो	णोः	इतिपष्ठः			
१६६	१	ष	थ	१८०	११	रु	गु	१९३	१०	लाः	ला
१६६	८	क्रों	श्रोज्	१८१	२	ह्रस्व	ह्रस्व	१९४	५	कु	कुं
१६६	९	पां	प्यां	१८२	११	स	त	१९६	११	स्यः	स्याः
१६६	७	ता	तो	१८२	१२	ष्ट	ष्ठ	१९६	१५	पा	पाः
१६७	१	स्थो	स्थः	१८४	५	ष्ट	ष्टं	१९६	१७	त्ती	तीं
१६७	५	क्ष्य	क्षि	१८४	५	तं	त	१९७	३	र	रं
				१८४	१०	ना	नाः	१९७	३	छ	च्छ
१६८	२	रों	रं	१८४	१२	स	सु	१९७	८	उु	च्यु
१६८	५	त	त्त	१८५	२	रू	रु	१९९	५	दो	द्वो
१६८	१२	म	न	१८५	५	न	नु	१९९	५	ना	नाः
१६९	४	ठें	ठि	१८५	८	ता	तो	१९९	६	भा	भो
१६९	११	म	न	१८५	१७	र्तिः	र्ति.	१९९	६	ह	हृ
१७०	७	स	पृ	१८६	४	भो	वो	१९९	७	तं	तै
१७०	१२	त्भू	त्भू	१८६	७	त्तः	तः	२००	१	म	र
१७०	१२	नि	शि	१८६	९	न	ना	२००	६	ह	हु
१७२	९	ष्टः	ष्टः	१८७	५	जा	यां	२००	६	घि	घिषु
१७२	६	द्व	ग्र	१८७	७	त्मृ	हृ	२०१	१	ह	हृद
१७३	११	मंद्र	मंद्रि	१८७	८	ष्टि	ष्टि	२०१	२	ह्रे	द्र
१७५	२	तो	तम्	१८७	९	ष्टः	ष्टः	२०१	५	त्दृ	कृप

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
२०२	५	ष्ट	ष्ट	२१२	६	ष्टा	ष्ठा	२२०	३	त	त॰
२०२	५	सें	ते	२१२	६	ष्टः	ष्ट॰	२२०	३	स्युर्नं।	स्याच्च
इतिसप्तमः				२१२	७	द	दं	२२०	३	ष	ष्य
२०३	२	र	रि	२१२	८	न्य	न्याः	२२०	१०	द्दी	द्दि
२०३	३	ष्टां	ष्टा	२१२	८	ष्टा	ष्टा	२२१	१	सं	ऋ
२०३	६	ष्ट	ष्ट	२१२	८	कु	कू	२२१	१	दद्रयां॰	द्रंद्वयाः
२०३	७	सो	शो	२१३	१	ष्टे	ष्ठे	२२१	१	ष्ठ	ष्ट
२०४	४	ष्टाः	ष्ठाः	२१३	७	ष्टा	ष्टः	इतिनवम			
२०४	४	ता	ताः	२१३	२	त	ते	२२२	६	ष्टः	ष्ट
२०४	५	रा	राः					इतिदशमोध्यायः			
२०४	५	नः	नाः	२१३	५	ते	ते	२२५	१	ब	यि
२०४	११	रा	रा	२१३	६	ते	तो	२२६	२	सु	सु
२०५	१	द्र	द्रुभ	२१३	६	तिते॰	मिते	२२७	४		फ
२०५	१	द्र	द्रुभ	२१३	६	ष्टा	ष्टः	२२७	११	जो	जे
२०५	४	व	ब	२१४	२	न्यः	न्योः	२२७	८	तिः	ति
२०५	१	त्रि	त्रिं	२१४	४	मा	म	२२८	५	सिं	म
२०६	५	सा	सौ	२१४	१	री	रि	२२८	६	याम्	याम्
२०६	५	द्रिः	द्रुभि	२१४	११	तो	ता	२२८	६	तुक	त्क
२०६	६	ता	तौ	२१६	२	नं	न	२२८	७	ते	तो
२०६	७	ता	सौ	२१६	४	ल	लि	२२८	१	छ	च्छ
२०६	१२	द्वि	द्व	२१७	६	लि	सैं	२२९	१०	च	च
२०७	९	च्छं	च्छ	२१७	९	न्यु	न्युः	२२९	११	क्ष्य	क्ष
२०८	७	ष्ट	ष्ट	२१७	१४	मो	मे	२३०	२	नौ	नौ
२०९	१०	द्व	द्वं	२१८	१	वं	व्यं	२३०	१	व	यि
इत्यष्टम				२१८	२	यः	य	२३०	१	त	ते
२११	२	च्छि	शाछि	२१८	२	त्तु	स्तु	२३०	९	जा	या
२११	९	ष्टा	ष्ठा	२१८	३	ध	धि	२३०	१२	तो	तो
२११	११	नृ	नृ	२१८	५	वमे	सदे	२३१	२	स्री	मी
२११	१२	नं	र्न	२१८	९	नि।	नि	२३१	६	य	य
२१२	२	ष्टा	ष्टा	२१९	२	स्मा	रमा	२३२	८	स	म

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	१	ल	लं	२४९	६	रे	रः	२६३	५	श	म
२३७	३	क	का	२४९	७	सिः	नौ	२६४	७	त्प	र्प
२३७	१०	वः	वाः	२५०	३	त	ता	२६४	८	शो	शा
२३८	२	खं	पं	२५०	५	धा	दा	२६४	११	न	म
२३९	८	यु	युं	२५०	७	ष्या	ष्या-	२६५	८	च	चैं
२३९	१०	ष्टा	ष्टाः	इत्येका				२६६	४	न	नं
२४०	६	म	मि	दशोऽध्यायः				२६७	६	सः	सि
२४०	७	गे	यें	२५१	३	व	त्रि	२६७	८	किं	कं
२४१	३	क्र	क्रि	२५१	४	ष्टो	ष्टो	२६८	८	नाम्	तोम्
२४१	४	प	ण्याः	२५१	१०	श्र	श्रं	२६८	९	श	श्श
२४१	६	ण्ये	ण्या	२५२	८	स्त्र	स्त्र	२६९	६	कंक्ष	कर्दा
२४१	१०	तस्ये	ताहणोर	२५३	६	स्ते	रस्ते	२६९	१०	स्युः	स्यान्
२४२	३	कां	र्कां	२५३	८	णा	णि	२७०	२	त	न्
२४२	५	ते	ने	२५४	२	ष्टि	ठि	२७०	३	यं	वि
२४३	१	म्र	गृ	२५४	७	षु	षु	२७०	८	मी	र्मी
२४३	९	प	पि	२५५	२	ष्टा	ठि	२७०	१२	सु	सूं
२४४	२	ष्या	ष्या	२५५	३	चः	तः	२७१	३	स्य	र्स
२४५	७	त	ते	२५५	६	नि	निस्	२७१	५	म	मा
२४६	०	ढ्यें	ढ्यें	२५६	१	स्त्र	स्त्रा	२७१	५	म	मान्
२४६	३	में	मे	२५६	१	तौ	नौ	२७१	६	धि	धिप
२४६	५	ष्टो	ष्टो	२५८	३	नौं	चौं	२७१	९	व	वि
२४६	७	व	वे	२५९	१	क्रु	कु	२७१	१०	ना	नो
२४७	१	जा	जो	२५९	७	द्धि	द्वि	२७१	११	ल	लि
२४७	२	ए	ऐ	२५९	१	विं	वीं	२७१	११	शि	ग
२४७	६	याँ	यां	२६०	५	म	व	२७२	९	स्तापसाः	न्तपसः
२४८	४	कै	कः	२६०	८	कृ	कृ	२७२	१०	मून्मी	मुन्मू
२४८	७	तो	ते	२६१	७	ज्ञा	ज्जा	२७२	१०	ध	धि
२४९	२	म	म	२६१	१	न्द्रू	ज्जू	इतिद्वादशोऽध्यायः			
२४९	६	ऐ	ऐः	२६२	१	न्क्र	न्त्र	२७३	२	नू	नूप
२४९	८	षौ	षुः	२६२	५	ष्टू	षु	२७३	४	क्रु	क्रू

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
२७३	५	रीं	रें	२८१	११	जा	या	२९९	७	व	ञ्चा
२७३	६	त्तः	तः	२८२	८	द्व	द्व	३००	४	त	त
२७३	७	श	शा	२८२	८	तात्	त	३००	६	ज्यो	ज्ये
२७४	२	शः	श	२८२	१०	ते	तो	३०१	६	श	स
२७४	६	त्त.	तः	२८३	४	ष्टम	ष्टमं	३०१	७	य	यि
२७४	८	ष्टे	ष्टे	२८३	११	णि	र्णार्श्	३०१	९	शे	शं
२७५	६	ग्र	गृ	२८४	४	शि	र्थो	३०१	१०	ध	धि
२७५	८	म	मु	२८६	१	र्मा	श्मि	३०१	११	द्व	द्व
२७६	१	त्र	प्र	२८६	९	गो	गश्च	३०२	२	य	यि
२७६	२	ति	त	२८८	१	सु	स	३०२	५	ग्यार्धि	ग्यार्द्धे
२७६	२	सि	पि	२८८	९	ह	हा	३०२	९	नि	निस्
२७६	१०	स	स	२८९	४	श्रु	सु	३०४	७	प	पः
२७६	११	वा	यो	२८९	९	र्थो	श्च	३०५	६	र	अ
२७७	१	तो	ता	२८९	१०	ते	ता	३०५	९	न	ं
२७७	५	गु	गू	२८९	१०	भेः	मे	३०५	१०	या	या
२७८	१	सु	स्व	२८९	१०	हि	ही	३०५	१०	तां	ता
२७८	४	ग्रे	थ	२९०	६	वि	विद	३०५	११	ति	ति
२७८	११	तो	त	२९१	६	क्ष्य	क्ष	३०५	११	वा	व
२७८	१२	वि	ति	२९१	९	ष्ठ	ष्ट	३०६	१	गं	गीं
२७९	२	र्थं	श्य	२९२	१	प	स्व	३०६	२	क्षः	क्ष
२७९	२	दै	टा	२९२	२	पं	र्णा	३०६	३	तौ	तै
२७९	३	श्रु	क्षु	२९२	३	छ	च्छ	३०८	१	नो	न
२७९	४	ळ	ड	२९३	८	ते	ते	३०९	४	ति	तिस्
२७९	७	रीं	रीं	२९३	६	मिनौ	हितौ	३०९	७	वा	व
२७९	७	ते	तो	२९३	१०	क्रि	किर	३१०	३	भू	भ्रू
२८०	६	तं	त	२९४	३	ष्ट	ष्ट	३११	१	ष्ट	ष्ट
२८०	९	द	द्	२९४	१०	ग्लिच	ग्वि	३११	७	णो	ण
२८१	२	ष्टो	ष्टो	२९४	११	पि	र्यो	३१२	१	रा	का
२८१	१०	प	रा	२९८	१०	भु	भृ	३१२	४	चो	ञ्चि
२८१	११	ण	न	२९९	२	ष्ठा	ष्ठा	३१२	१०	दि	दी

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
३१३	१	पपा	पाप	३२८	७	ष्टा	ष्ठा	३४०	११	स	सु
३१५	७	ग्र	गृ	३२९	१	न	ना	३४०	११	ष्ट	ष्ठ
३१६	१	ङ्	ग्	३२९	३	ष्ट	ष्ठि	३४१	९	व	वा
३१६	५	हृर्द	यावत्	३२९	५	ष्ट	ष्ठ	३४२	१	भा	भ
३१६	६	ला	ल	३२९	८	प	पा	३४२	२	सु	सू
३१६	७	द्रे	द्रं	३२९	१०	ग्या	ग्य	३४२	७	प	पि
३१६	८	पा	पो	३३०	५	स्तस्यै	यस्याः	३४२	८	ष्ट	ष्ठ
३१६	८	ह्रा	ह्र	३३०	८	ल	लि	३४२	९	ष्ट	ष्ठ
३१६	९	या	जा	३३१	२	खेः	खौ	३४२	९	धा	धां
३१६	११	श	शः	३३१	१०	णं	र्णां	३४३	५	स्वु	शु
३१८	२	स्थे	स्था	३३३	४	प	फ	३४३	८	ष्ट	ष्ठ
३१८	७	णको	कोण	३३३	६	ह्यधाः	ह्यचः	३४४	१०	दु	दुः
३१९	२	[illegible]	सु	३३३	६	द्रे	द्य	३४५	१	च	चा
३२२	४	व्रु	त्रु	३३४	७	ण्याः	ण्या	३४५	८	जा	जो
३२३	२	मो	मे	३३४	८	जि	ज	३४६	१	ढ्य	ट्य
इतित्रयोदशोऽध्यायः				३३५	६	त्ता	त्तो	३४६	३	प	पि
३२४	६	उ	छ	३३५	९	था	श्री	३४६	८	श्रंप	श्विपि
३२४	११	था	ध	३३५	११	न	जा	३४७	१	श्वि	स्वि
३२५	७	लो	लः	३३६	४	क	कास्फिर्	३४८	१	ह्नि	द्वि
३२६	४	का	कांस्	३३६	८	नि	निम्	३४८	८	नि	निस्
३२६	४	द्द	श्र	३३७	२	श्च	श्चैव	३४९	३	ग	गा
३२६	७	ट	टि	३३७	६	नै	नैन्	३४९	१०	ता	त
३२६	७	सु	न	३३८	१	धे	धं	३५०	३	पंता	रताः
३२६	७	टे	छे	३३८	१	का	कं	३५२	७	पितृमातृ	मातृपितृ
३२६	८	ए	छ	३३८	१०	मु	मू	३५३	९	ष्टं	ष्टं
३२६	१०	ष्टो	ठो	३४०	२	नि	निस्	३५३	९	वृंह	बृंह
३२७	७	हे	हस्	३४०	४	ए	ष्ठ	३५४	५	मु	मू
३२८	२	ष्टा	ष्ठा	३४०	६	ए	ष्ठ	३५४	६	तो	तॉ
३२८	४	च	ध्वा	३४०	८	पाः	यः	३५४	७	नि	नी
३२८	५	ष्ट	ष्ठं	३४०	९	पु	पि	३५४	९	तृ	तुं

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
३५५	८	प	पि	३७१	१	ष्टा	ष्टा	४०८	१६	हौम	हुर्म
३५६	८	ष्टा	ष्ठा	३७१	१०	मृदोग्राह्याः	ग्राह्यामृदः	४०९	१२	क्षो	क्षस्
३५७	६	घ	घ	३७२	१	ष्ट	ष्ठ	४१०	१	स्तु	स्त्र
३५८	७	व		३७२	४	ऋ	ऋा	४११	३	यों	यं:
३५९	७	भ	भा	इतिचतुर्दशोध्यायः				४११	३	क्षः	क्षाः
३५९	८	से	शे	३७४	५	नै	नैम्	४१४	६	म्रं	म्रे
३६०	२	र	र्यं	३७४	९	णा	नां	४१६	४	मा	बा
३६०	२	र्दवर्य	र्स्वर्य	३७५	५	न	नं	४१६	९	ष्च	ष्च
३६०	३	प्यिव	प्यवे	३७६	९	न्द्रो	न्द्रो	४१७	७	र्वे	रे
३६०	५	श	शां	३८०	८	त्तक	त्क	४१७	७	चे	च
३६०	७	म	मं	३८४	२	द्दे	द्देष	४२२	४	ह	हि
३६१	२	म्यां	म्याच	३८७	६	जा	ज्ञा	४२२	४	री	रि
३६१	२	त्रू	त्रु	३८९	८	ष्ट	ष्टं	४२४	१०	तू	तू
३६१	४	ड	ढ	३९१	१	म	म	४२५	५	वंग	वर्ग
३६१	६	स्य	स्या	३९१	४	तु	तु	४२५	७	स्या	स्मा
३६१	९	क	कु	३९१	७	जा	या	४२५	८	श	शां
३६१	९	टा	ष्ठां	३९२	८	द्र	द्रे	४२८	४	त्वि	त्त्व
३६२	२	ष्टं	ष्ठ	३९४	६	सत	दश	४३०	८	[illegible]	र
३६२	४	गु	सु	३९५	२	र्वै	र्वेत्व	४३१	४	र्त्व	त्त्वं
३६२	७	ती	तो	३९७	६	ढ्ये	ढ्ये	४३१	८	ङ्ग	ज
३६२	९	ए	ष्ठ	इतिपंचदशोध्यायः				४३४	२	ता	त्र
३६२	९	ष्टि	ष्ठि	४००	२	त्ति	ति	४३४	१०	त्रक्षं	त्वक्ष
३६३	१०	द्रू	द्दू	४०४	११	म	मि	४३८	२	दस्तु	दाँस्तु
३६५	९	मा	मास्	४०५	९	स्ता	स्त्रः	४३९	६	ष्वे	ष्गे
३६६	४	द्धि	द्धि	४०७	१	उ	ऊ	४४१	५	ह्रं	ङ्ग
३६६	९	णि	णी	४०७	८	ष्ट	ष्ठ	४४१	७	रथा	स्थाः
३६६	८	दुः	दु	४०८	८	स	य	४४२	२	ष्टी	ष्ठी
३६८	११	स्ता	स्ता	४०८	१५	ह्ये	हुश्	४४३	१	ष्ठि	ष्टि
३६९	१०	ट	टि	४०८	१५	के	क्रो	४४३	७	ता	स्ता
३७०	९	पाः	पा	४०८	१५	ते	तः	४४४	८	दू	दू

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
४४५	४	स्निश्च	रन्वय	४६६	११	अ	गृ	४९१	३	मे	मं
४४५	४	शो	शस्	४६७	१	क	ह	४९१	६	न्य	न्यान्
४४५	९	स्वसु	श्वशु	४६७	२	स	सा	४९१	८	ग.	गाः
४४७	३	र	म	४६८	२	णि	णी	५००	३	य	जं
४४७	८	का	क्ता	४६९	७	ने	न	५००	५	ता	ताः
४५१	७	त्रे	त्रेधो	४६९	१०	तु	तु	५००	७	का	काश्
४५१	८	वि	ष	४७०	१	त	ता	५००	७	आ	नाः
४५१	९	स्यो	स्यस्	४७०	१	रा	र	५००	७	ता	ताः
४५१	११	य	स	४७०	६	तो	तः	५०१	६	हि	हिं
४५२	१०	द्वे·	तः	४७३	५	शु	सु	५०१	६	स्या	त्स्या
४५२	५	तीन्	न्	४७४	४	घृ	पृ	५०१	७	ह	ह्व
४५२	९	ह	हृ	४७४	५	छर्य	स्थ	५०१	८	मि	म
४५४	९	विं	वि	४७६	५	प	म	५०१	८	णः	णा-
४५५	६	दा	छा	४७८	६	त	तु	५०२	१	द्धरि	द्विर
४५५	९	वै·	वः	४८३	१२	न्यं	न्या	५०२	३	नि	पि
४५५	९	ज	जन	४८५	८	ता	तुः	५०२	४	ल	ला
४५६	१	ह	ठ	४८६	२	को	वम्	५०२	४	रि	रां
४५६	२	श	थं	४८९	८	ण	पां	५०२	५	श्च	
४५६	४	स्थु	स्थुं	४८९	८	ख	खे	५०२	६	व	वि
४५६	५	छ	च्छ	४८९	८	प	प	५०२	७	ठे.	ठे
४५८	११	म्	न्	४९५	८	श्रि	श्र	५०२	८	नै	पै
४६०	५	श्चि	गि	४९५	९	यश्चा	याचा	५०२	१०	त्या	त्स्या
४६०	७	ढे	ठे	४९५	११	ढं	ठ	५०२	१०	धो	थस्
४६१	१	स्ता	स्तु	४९६	५	क	कु	५०५	१	शा	शा
४६१	४	नेव	नैवं	४९६	७	पंद	पान्द	५१०	२	ता	तां
४६१	४	स	सत	४९६	८	य	प	५१०	२	ता	तां
४६१	४	ता	त	४९७	२	ह	ठ	५१०	२	का	को
४६१	२	ह	ठ	४९७	४	त्य	न्त्व	५१०	६	ह	हा
४६३	५	ण·	पी·	४९७	७	दा	छा	५१२	४	यथा	का
४६८	४	तु	फू	४९८	१	तात्	नत्			इतिषोडशोध्याय	

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
५११	६	त्राः	त्रा	५३५	१३	शु	सु	५४३	१	शु	सु
५११	६	छ	छभ	५३६	१	स्व	श्व	५४६	३	स्पू	स्पु
५२०	६	धू	धूस्	५३६	३	त	ता	५४६	७	श्व	श्वे
५२१	१	शु	सु	५३६	१०	ता	त्रो	५५१	३	ष्ट	ष्ट
५२१	४	ज	जि	५३६	१३	स	सु	५५१	२	ख	खि
५२१	४	तें	ता	५३७	२	त्व	त्वा	५५५-३		ष्ट	ष्ट
५२१	८	तें	तैं	५३७	२	छा	च्छा	५५६	३	यः	युः
५२१	११	श	शि	५३७	५	धि	धिं				
५२२	६	भा	घा	५३७	५	ण्णा	ण्या	इत्यष्टादशोध्यायः			
५२३	३	चें	चें	५३७	५	ण्णा	ण्या	५५१	३	ष्ट	ष्ट
५२३	७	द्व	द्व	५३७	७	द्वि	द्विस्	इत्येकोनविंशोध्यायः			
५२४	५	भ्रा	भ्रा	इति सप्तदशोध्यायः				५६५	५	धा	धाव
५२४	८	पु	पुं	५३७	१०	ना	त्रा	५६५	११	श	शा
५२५	१	कृ	क्य	५३७	११	लि	ली	५६६	१	ति	त्ति
५२६	५	मा	मा	५३७	१३	जी	जीं	५६१	७	हः	हाः
५२६	१०	सौं	सौं	५३७	१४	यू	यु	५६१	११	र	रि
५२७	३	रा	री	५३८	१	न्या	न्याः	५७४	११	श्र	श्
५२७	४	भ्र	भ्र	५३८	२	तय	यत	५७१	५	त्व	तुर्व
५२७	५	म	मि	५३८	३	जो	जीं	५८२	१	पि	नि
५२८	८	यनीं	यिनी	५३८	५	दू	दुः	५८२	१	शा	शो
५२८	१०	ष्ठा	ष्टा	५३८	५	स्थ	स्य	५८३	२	त्वा	तुत्वा
५२९	१२	द्व	द्व	५३८	९	स्थ्व	स्त्व	५८८	७	रा	री
५३०	५	न	ना	५३८	१०	ता	तास्	५९०	१३	ह्र	ह्यु
५३०	५	दु	दुः	५३८	१०	नो	नौ	५९२	८	ता	ताः
५३०	११	शु	सु	५३८	११	छिः	छिः	५९२	११	ता	तः
५३४	११	क्षि	क्ष	५३९	७	म्ये	म्यें	५९४	२	न्रू	न्ह
५३५	१	स	सु	५३९	१२	छि	छि	५९५	३	ल्व	त्व
५३५	६	स	सम	५४१	२	छि	छि	५९५	५	का	का
५३५	११	म	म	५४२	३	रं	रे	५९७	४	द्र	द्रे
५३५	१२	स	सु	५४२	८	त्या	त्यं	५९८	१	ने	नं

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
५१८	१	रेत	रेतें	६१६	८	ति	तिशू	६२८	७	त्रा	त्रा
५९८	१	स	सें	६१७	१	नि	निस्	६२९	१	ते	ता
५१८	५	म	त्र	६१७	६	हिः	हि	६२९	७	मू	त्रुव
५१८	८	ष्टं	ष्ठ	६१७	८	णो	णे	६२९	९	द	टे
५१८	८	ष्ट	ष्ठं	६२०	४	हि	ह्नि	६३०	२	भे	र्भः
५१८	६	ठि	ष्टि	६२०	६	गृ	ग्र	६३१	२	ष	ट्ट
६००	२	त	तें	६२०	८	नु	नू	६३१	३	हृदि	दय
६००	२	पा	पां	६२०	८	द्र	द्रे	६३१	३	यां	गा
६०३	६	हा	ह्य	६२०	१०	स	सु	६३१	७	स्थे	स्तु
इतिविंशोऽध्यायः				६२१	२	ष्ठि	ष्ठि	६३२	८	क	के
६०६	१३	नुः	ते	६२१	८	पडि	पीड	६३३	४	ष्टे	ष्ठे
६०६	१५	रोस्य	राघ	६२१	१०	ष्टा	ष्ठा	६३३	६	ष्टे	ष्ठे
६०६	१५	रये	ष्ये	६२२	२	य	वे	६३५	२	हाः	हा
६०७	१	ना	नुः	६२२	८	ष्ठो	ष्टो	६३५	२	कु	कू
६०७	२	द्व	दृह	६२२	१०	ता	तं	६३५	११	र्णा	र्णा
६०७	२	भृ	भ्र	इत्येकविंशतितमोऽध्यायः				६३६	१	त्यः	त्युः
६०७	६	सारि	सूति	६१२	९	शि	शिः	६३६	२	ष्टा	ष्ठा
६०७	१०	त्युजं	त्युंज	इतिद्वाविंशोऽध्यायः				६३६	४	सिम	तिर्म
६०७	११	जा	ज	६२४	४	नक्षं	मंक्ष	६३६	४	रमा	रंमा
६०८	५	छे	ष्ठे	६२६	७	दे	धे	६३७	४	त्यु	त्युः
६१०	५	त्रे	ष्ठे	६२६	११	ष्ट	ष्ठ	६३७	४	यं	यः
६१०	७	र	रै	६२७	३	प्रि	प्री	६३८	७	ताः	तः
६१२	४	ष्टा	ष्ठा	६२७	३	ष्ठ	ष्ट	६३८	७	क्रम्	क्रं
६१२	६	ग	व	६२७	३	त्रि	त्रि	६३९	६	ते	तं
६१४	२	ष्टाः	ष्ठाः	६२७	४	श	श्श	६३९	६	ष्टे	ष्ठे
६१५	६	था	था	६२७	५	शी	शः	इतित्रयोविंशोऽध्यायः			
६१५	६	हा	द्रहा	६२७	६	ष्ठे	ष्टे	६४२	१	ल	लि
६१५	७	ष्ठो	ष्टो	६२७	७	ति	तो	६४२	३	श	श्
६१५	९	णा	ण	६२७	८	र	रु	६४६	३	म्या.	र्म्या
६१६	१	र्ण्या	णीन्	६२८	२	ष्ट	ष्ठ	६४६	९	दो	द्वो

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
६४४	१	त्यः	त्याः	६४६	३	न	ना	६६८	३	न	ना
६४४	२	ग्या	र्ग्या	६४६	४	ए	ए	६६०	१३	मि	म
६४४	३	प	पे	६४६	७	डू	दू	६६१	५	प्र	प
६४४	४	क्र	क्र	६४६	८	ष्व	स्व	६६१	१०	त्वं	त्व
६४४	८	ध्वि	ध्वे	६४६	९	सू	सु	६६८	१	ष्ठ	ष्ट
६४४	१०	ऐ	ऐ	६५३	१	या	या	६६८	५	श	स
६४५	१	धे	धं	६५३	३	धी	धीः	६६३	३	मिर	णाम
६४६	१	ला	लाः	६५७	६	म	म	इतिचतुर्विंशोध्यायः			

एह श्रीमन्महाराजाधिराजजंबूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशश्रीयुतश्रीमहाराजरणवीरसिंहाज्ञप्तज्योतिर्विन्महेशकृतज्योतिर्महानिवंधग्रंथका प्रथमभागजातकखंड ॥ विद्याविलासनामकमुद्रायन्त्रालयमें ॥ पंडितशंकरनाथजीकेअधिकारसेंछपा॥ संवत् ॥ १९३१ फा० प्र० ॥ २१ ॥ इसग्रंथकामुद्रित ४) ॥रुपयाडबल॥